कादम्बिनी

1995 Jan, Feb, Arp, Jul-Aug

G.K.V. Lib.
Hardwar

zed by A

078833

078833

078833

वर्षांक

दम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

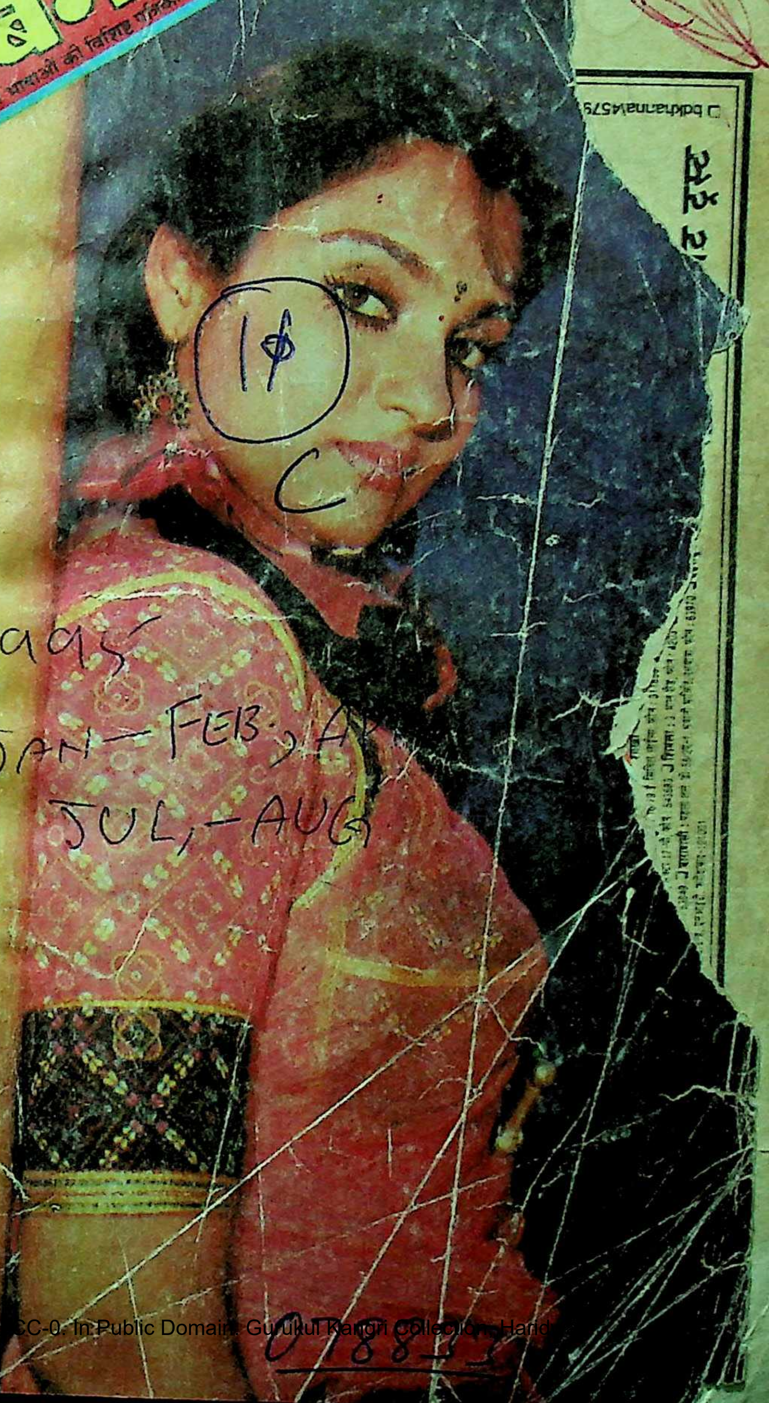

16

C

सो बीता
अब रीता

ठाठ में
बंजारा

यों को
ड़

संबंधी
पैर
चनाएं

1995
JAN-FEB, AP
JUL-AUG

टाइम्स प्रकाशन

07883

स्वाद व सुगन्ध में आज भी

रत्ना छाप
ज़ाफ़रानी पत्ती

भारत में पहली बार
होलोग्राफिक
50 ग्रा० व 10 ग्रा० के पाउच में

IS 2344
CM/L-1081435

आई.एस.आई. के मानदंडों पर
एगमार्क द्वारा एक मात्र ज़र्दा

प्रभात ज़र्दा उत्पादन

वैधानिक चेताव

रत्ना छाप
ज़ाफ़रानी पत्ती
सुगन्धित चबाने की तम्बाकू
नं. 64
नं. 300
PRA
ZAFRAN
FLAVOURED CHEWING TOBACCO

लाट आई ... आपकी अनमोल लाडली का ... विशेषताएं:

[illegible] लौट आई ... आपकी अनमोल लाडली का [illegible]

राज लक्ष्मी

यूनिट प्लान

उसके सुनहरे भविष्य के लिए

विशेषताएं:

- एक असीमित अवधिवाला खुला प्लान.
- न्यूनतम निवेश राशि 1500 रू. उसके पश्चात 500 रू. के गुणकों में. कोई अधिकतम सीमा नहीं.
- कोई भी व्यक्ति, राज्य, केन्द्रीय सरकार, ट्रस्ट, सोसायटी, कॉर्पोरेट बॉडी 5 वर्ष की उम्र तक की किसी भी लड़की के लिए निवेश कर सकता है.
- बच्ची के जन्म पर किया गया 1500 रू. का निवेश 20 वर्षों में बन सकता है 21,000 रू. वृद्धि का परिमाण योजना में प्रवेश के समय आयु पर निर्भर करता है.
- परिपक्वता तिथि की ग[illegible] आवेदन की स्वीकृति व[illegible] तिथि से की जाएगी.
- समय-समय पर यदि बोनस घोषित किए गये तो उनका भुगतान परिपक्वता पर होगा,

[illegible]

मुख्य कार्यालय : बम्बई. आंचलिक कार्यालय : [illegible] 124, [illegible] नई दिल्ली 110001 शाखा कार्यालय : ❑ नई दिल्ली : [illegible] ❑ जयपुर : [illegible] ❑ कानपुर : [illegible] ❑ लुधियाना : मोहन पैलेस, 455, [illegible] ❑ लखनऊ : [illegible] ❑ चंडीगढ़ : [illegible] ❑ शिमला : [illegible] ❑ आगरा : [illegible] ❑ इलाहाबाद : [illegible] ❑ वाराणसी : [illegible] ❑ देहरादून : [illegible] ❑ यूटीआई संग्रहण केन्द्र फरीदाबाद : [illegible]

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

❑ bdkhanna\4579-H

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

१. हृदय— क. दिल, ख. हार्दिक, ग. सौम्य, घ. पारस्परिक ।

२. संयोग— क. मिलन, ख. इत्तफाक, ग. हर्षपूर्ण घटना, घ. अवसर ।

३. वस्तुस्थिति— क. चीज रखने की जगह, ख. सत्य, ग. वास्तविकता, घ. दशा ।

४. उपमित— क. जिससे किसी की तुलना की जाए, ख. समान, ग. जिससे किसी की उपमा दी जाए, घ. सीमित ।

५. परिमार्जन— क. रगड़ना, ख. धोना, ग. त्रुटियां दूर करना, घ. रस्सी बटना ।

६. मांगलिक— क. मंगलवार से संबंधित, ख. संपन्न, ग. सुखी घ. शुभ ।

७. संभ्रांत— क. संदेहजनक, ख. चक्कर खाया हुआ, ग. सम्मानित, घ. अवास्तविक ।

८. परोपदेश— क. दूसरा देश, ख. दूसरे की भलाई, ग. किसी अन्य की शिक्षा, घ. दूसरे को उपदेश ।

९. दिनानुदिन— क. गुजरे हुए दिन, ख. दिन-प्रतिदिन, ग. आनेवाले दिन, घ. एक दिन छोड़कर दिन ।

१०. सक्षम— क. सामने, ख. समान, ग. समर्थ, घ. अत्यंत योग्य ।

११. संवेदनशील— क. भावुक, ख. सहृदय, ग. विवेकपूर्ण, घ. अनुभूत ।

१२. मानुषिक— क. मानवीय, ख. सहृदय, ग. मनुष्य संबंधी, घ. मनु-संबंधी ।

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हो, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

१३. परोक्ष— क. अप्रत्यक्ष, ख. छिपा हुआ, ग. गड़ा हुआ, घ. झूठा ।

१४. दिव्यदृष्टि— क. आकर्षक आंखें, ख. ईश्वरीय बोध, ग. सूक्ष्म दृष्टि, घ. आंतरिक दृष्टि ।

उत्तर

१. ख. हार्दिक, दिली, वांछित । सेवा करना उसकी **हृदय** अभिलाषा है । (व्युत. –हृद्)

२. क. मिलन, मेल । पारस्परिक **संयोग** लाभदायक होता है । ख. इत्तफाक । **संयोग** से ही उनसे भेंट हो गयी । (व्युत्. –सम्, युज्)

३. ग. वास्तविकता, असलियत । तुम्हें **वस्तुस्थिति** का ज्ञान नहीं है । (वस्तु+स्थिति)

४. ग. जिससे किसी की उपमा दी जाए । सुंदरता चंद्रमा से **उपमित** की जाती है । (व्युत्. –उप, मा)

५. ख. धोना । ग. त्रुटियां दूर करना । दोषों का **परिमार्जन** करना चाहिए । (व्युत्. – परि, मृज्)

६. घ. शुभ, कल्याणकारी । **मांगलिक** कार्यों में सभी को सहयोग देना चाहिए । (व्युत्. –मङ्ग्)

७. ख. चक्कर खाया हुआ, घबराया हुआ । आर्थिक कठिनाई से वह **संभ्रांत** ग. सम्मानित । वह **संभ्रांत** परिवार का है ।

(व्युत्. –सम्, भ्रम)

८. घ. दूसरे को उपदेश । **परोपदेश** में बहुत-से आदमी कुशल होते हैं । (पर+उपदेश)

९. ख. दिन-प्रतिदिन । सामान्य उपयोग की वस्तुएं **दिनानुदिन** महंगी होती जा रही हैं । (दिन+अनु+दिन)

१०. ग. समर्थ, क्षमतायुक्त (अंग. –कांपीटेंट) । **सक्षम** व्यक्तियों के लिए उन्नति के अवसरों की कमी नहीं होती । (स+क्षम)

११. ख. सहृदय । सच्चा साहित्यकार पीड़ितों के प्रति **संवेदनशील** होता है । (व्युत्. –सम्, विद्)

१२. ग. मनुष्य-संबंधी । समाज **मानुषिक** परंपराओं से बंधा हुआ है । ('मानुष' से विशेषण)

१३. क. अप्रत्यक्ष । ख. छिपा हुआ, गुप्त । यह तो **परोक्ष** रूप से असहमति है ।

१४. ग. सूक्ष्म दृष्टि । घ. आंतरिक दृष्टि । संत-महात्माओं को **दिव्यदृष्टि** प्राप्त होती है । (दिव्य+ दृष्टि)

पारिभाषिक शब्द

Cash Memo = नक्द पर्ची
Scale = मापक/मापमान
Scale of pay = वेतनमान
Standard = मानक
Standardization = मानकीकरण
Humanities = मानविकी
Publicity = प्रचार

ज्ञान-गंगा

अनीदृशस्य च यथा न भोगसुखमुत्तमम् ।
अशान्तादेस्तथा शुद्धं नानुष्ठानं कदाचन ॥

(योगबिन्दु १८८)

जैसे जो पुरुष धनाढ्य, सुंदर एवं युवा नहीं है । वह उत्तम भोगों का आनंद नहीं ले सकता ; उसी तरह जो व्यक्ति अशांत है, वह शुद्ध क्रियानुष्ठान नहीं कर सकता ।

मनः प्रसादमाश्रित्य सुसुखमापदापगाः ।
धीरास्तरन्ति, नात्मानमवसादं नयन्ति ते ॥

(रश्मि-माला ४६/४)

धीर मनुष्य मनःप्रसाद का सहारा लेकर आपत्ति की नदियों को सुखपूर्वक पार कर जाते हैं । वे अपने को दुःखी नहीं करते ।

धर्मशब्देनमात्रेण बहवः प्राणिनोऽधमाः ।
अधर्ममेव सेवन्ते विचारे जड़चेतसः ॥

(पद्मपुराण ६/२७७)

जिनका चित्त विचार करने में जड़ है ऐसे बहुत-से अधर्म-प्राणी धर्म के नाम पर अधर्म का ही सेवन करते हैं ।

[illegible]लो अनपच्युतः ।

(तैत्तिरीय ब्राह्मण १/५/९)

सच्चा बलवान वह है, जो कभी किसी से डरकर भागता नहीं है ।

(प्रस्तुतिः महर्षि कुमार पांडेय)

प्रतिक्रियाएं

वर्ष '९४ की धुरी पर कादम्बिनी का सफर

● शैलेन्द्र गार्गव

बीते वर्ष में 'कादम्बिनी' ने वर्षभर अपने पाठकों को क्या दिया, पाठकों को उससे क्या अपेक्षाएं थीं या क्या शिकायतें रहीं ? ये कुछ प्रश्न हो सकते हैं, जो हर पाठक के मन में उमड़ सकते हैं । 'कादम्बिनी' पाठकों की कसौटी पर कितनी खरी उतरी । इसके स्थायी स्तंभों में क्या कुछ हुआ । इसी को लेकर पेश है वर्ष की समाप्ति के साथ कादम्बिनी का विस्तृत लेखा-जोखा ।

'कादम्बिनी' ने वर्ष '९४ की शुरुआत ही स्वास्थ्य विशेषांक को पेश कर की थी और इसे संयोग ही कह सकते हैं कि वर्ष की समाप्ति भी स्वास्थ्य विशेषांक को पेश कर की । 'कादम्बिनी' का यही प्रयास रहा कि उसके पाठक वर्षभर स्वस्थ रहें । यूं तो 'कादम्बिनी' का हर अंक एक विशेषांक के रूप में ही होता है, फिर भी जनवरी व दिसम्बर का स्वास्थ्य विशेषांक, होली पर अप्रैल में सबरंग विशेषांक व दीपावली पर नवम्बर में तंत्र विशेषांक विशेष उल्लेखनीय हैं । 'कादम्बिनी' ने लीक से हटकर होली पर विशेषांक मार्च के बजाय अप्रैल में निकाला, जिसे पाठकों ने पसंद भी किया ।

'कादम्बिनी' के सभी अंकों में मुखपृष्ठ पर स्त्रियों के चित्र छाये रहे । अगस्त के अंक में तो गोष्ठी के तहत एक पाठक का प्रश्न भी यही कि, 'कादम्बिनी' के मुखपृष्ठ पर सदा स्त्रियों के चित्र ही क्यों होते हैं ? शब्द-सामर्थ्य ज्ञानेन्दु ने बढ़ायी, तो ज्ञान-गंगा महर्षि कुमार पांडेय ने बहायी । पारिभाषिक शब्द की जानकारी भी हर अंक में मिली । अमूमन हर अंक में ये स्तंभ पत्रिका के प्रथम पृष्ठों पर स्थान पाते थे, लेकिन नवम्बर अंक में इसने पत्रिका के अंतिम पृष्ठों में स्थान पाया । हालांकि 'आस्था के आयाम' स्तंभ का कोई निश्चित स्थान नहीं था, लेकिन अधिकांश अंकों में पत्रिका के शुरुआत में ही स्थान बनाया । यह स्तंभ मात्र जून अंक में प्रकाशित न हो सका ।

विभिन्न विषयों को लेकर 'गोष्ठी' के तहत वर्षभर पाठकों ने १९७ प्रश्न पूछे । दिसम्बर अंक में सबसे कम ९ प्रश्न तथा सितम्बर अंक में सबसे अधिक २२ प्रश्न पूछे गये । 'तनाव से मुक्ति' स्तंभ में डॉ. सतीश मलिक ने वर्षभर ७५ पाठकों की निजी समस्याओं हेतु निदान बताया । मार्च अंक में सबसे अधिक ८ पाठकों की तथा सबसे कम मात्र ३ समस्याएं जुलाई अंक में रहीं ।

'विधि-विधान' स्तंभ के तहत दिल्ली के सुप्रसिद्ध कानून विशेषज्ञ श्री रामप्रकाश गुप्त ने ६९ पाठकों को उनकी समस्याओं के बारे में उचित कानूनी सलाह दी । जनवरी व फरवरी अंक में यह स्तंभ नदारद रहा । सबसे कम ४ समस्याएं अगस्त अंक में व सबसे अधिक ८ समस्याएं अप्रैल, सितम्बर व दिसम्बर अंकों में सुलझायी गयीं । पाठकों की बुद्धि परीक्षावाला 'बुद्धि-विलास' स्तंभ हर माह नियमित रूप से प्रकाशित हुआ । इसमें दस या बारह प्रश्नों से अधिक नहीं पूछे गये ।

पंडित शिवप्रसाद पाठक ने हर अंक में भविष्यफल बताया । 'ज्योतिष समस्या और समाधान' स्तंभ में श्री अजय भाम्बी ने वर्षभर पाठकों द्वारा पूछे गये २६३ प्रश्नों के उत्तर दिये । जिसमें शादी, संतान-प्राप्ति, पदोन्नति, स्थानांतरण, नौकरी लगना, तलाक मिल पाना या नहीं, विदेश योग, परीक्षा में पास या फेल एवं इसी तरह के कई प्रश्न थे । सबसे अधिक २७ प्रश्न अगस्त अंक में पूछे गये । सात अंकों में प्रश्नों की संख्या २३ रही । जून अंक में यह स्तंभ स्थान न पा सका । नयी दिल्ली के ही कविराज वेदव्रत शर्मा ने 'वैद्य की सलाह' स्तंभ में पाठकों के १०२ प्रश्नों के उत्तर दिये । नवम्बर अंक में सबसे कम १० प्रश्न पूछे गये । जनवरी, फरवरी व दिसम्बर अंकों में यह स्तंभ भी स्थान न पा सका ।

नये व उभरते रचनाकारों को आगे बढ़ाने में 'कादम्बिनी' का 'प्रवेश' स्तंभ उल्लेखनीय भूमिका निभा रहा है । वर्षभर इसमें ५४ रचनाकारों ने स्थान पाया । इसमें छह अंकों में छह रचनाकार हर अंक में, जबकि तीन अंकों में, हर अंक में चार-चार रचनाकार ही स्थान पा सके । जनवरी व दिसम्बर अंक में यह स्तंभ नदारद रहा । २८ पुरुष रचनाकार व २६ महिला रचनाकारों की रचनाएं छपीं । मई अंक में एक रचनाकार पुरुष का छायाचित्र नदारद था । जून अंक में रांची (बिहार) की बारहवीं में अध्ययनरत छात्रा अदिति भूषण व अगस्त अंक में श्रीगंगानगर (राजस्थान) के सीनियर हायर सेकेंडरी में अध्ययनरत छात्र संदीप धामू सबसे कम उम्र के रचनाकार थे ।

श्री कुलदीप तलवार की प्रस्तुति 'इनके भी बयां जुदा-जुदा' हर अंक में प्रकाशित हुए । सरोजनी प्रीतम 'हंसिकाएं' लेकर सात अंकों में नजर आयीं । 'व्यंग्य-तरंग' स्तंभ मात्र पांच अंकों में स्थान पा सका । इसी वर्ष जनवरी अंक से प्रारंभ श्री राजेन्द्र अवस्थी का स्तंभ 'आखिर कब तक' पाठकों को बेहद पसंद आया । इस स्तंभ में श्री अवस्थीजी की कलम अपने जौहर दिखाती है । एक पाठक का तो आश्चर्यमिश्रित पत्र था कि, 'उसे विश्वास नहीं होता है कि 'काल चिंतन' और 'आखिर कब तक' स्तंभ का लेखक एक ही है ।' 'कालचिंतन' तो 'कादम्बिनी' की धड़कन है । इन दोनों ही स्तंभों के बारे में प्रतिक्रिया के तहत हर अंक में एक न एक पत्र अवश्य होता है ।

इसमें वर्षभर ५७ कहानियां, ५३ कविताएं, १७ व्यंग्य व ५ लघु-कथाएं प्रकाशित हुईं । जून अंक में विदेशों में बसे भारतीय लेखकों की कहानियां थीं । ग्वालियर में दिसम्बर '९३ में आयोजित पांचवें 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' की पुरस्कृत कहानियां मई अंक, तथा अक्तूबर '९४ में जबलपुर में आयोजित छठवें

'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' की पुरस्कृत कहानियां दिसम्बर अंक में पाठकों को पढ़ने को मिलीं। लेखकों की बिरादरी में श्री अनंतराम गौड़ (नयी दिल्ली) प्रथम रहे, उनके चार आलेख प्रकाशित हुए। श्री गुरमीत बेदी (बैजनाथ), ज्योति खरे (झांसी) व श्री धर्मेंद्र गौड़ (गोरखपुर) के तीन-तीन आलेख प्रकाशित हुए। श्री गौड़ द्वारा प्रस्तुत संस्मरणात्मक युद्ध कथा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

एम. के. पी. कॉलेज, देहरादून की प्राचार्या डॉ. सुधा पांडे द्वारा प्रस्तुत उपनिषद की कहानियों का प्रकाशन मार्च अंक से आरंभ हुआ। उनकी कहानियां मार्च अंक के बाद हर अंक में स्थान पाती रहीं। अब तक वे उपनिषद की दस कथाएं प्रस्तुत कर चुकी हैं।

किसी भी पत्र/पत्रिका का मुख्य स्तंभ पाठकों के प्रतिक्रियात्मक पत्रों का ही होता है। जिसमें प्रशंसा व आलोचना दोनों होती है। 'प्रतिक्रिया' स्तंभ के तहत कुल ११३ पत्र प्रकाशित हुए। जनवरी अंक में सबसे कम मात्र ७ पत्र ही प्रकाशित हुए। अधिकतम पत्रों की संख्या ११ रही। श्री श्रीकांत कुलश्रेष्ठ (बंबई) एकमात्र ऐसे पत्र-लेखक रहे जिनके लगातार दो पत्र जनवरी व फरवरी अंक में पुरस्कृत हुए। श्री ओमप्रकाश बजाज (जबलपुर) का जनवरी अंक में प्रोत्साहन पत्र तथा मार्च अंक में पुरस्कृत पत्र रहा। दिल्ली व जबलपुर के पत्र-लेखक चार अंकों में पुरस्कृत हुए। अक्तूबर अंक में कोई भी पुरस्कृत या प्रोत्साहन पत्र के रूप में शामिल न किया जा सका। प्रोत्साहन पत्रों ने मात्र जनवरी व अगस्त अंकों में ही स्थान पाया। कालचिंतन व आखिर कब तक स्तंभ की प्रशंसा में हर अंक में एक पत्र अवश्य प्रकाशित हुआ।

पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर दिये हुए शीर्षक व छायाचित्र को देखकर कविता लिखनेवाला स्तंभ 'समस्या -पूर्ति' हर अंक में प्रकाशित हुआ। इस स्तंभ में सितम्बर अंक में समस्या-पूर्ति-१८०, 'गिरगिट' शीर्षक के अंतर्गत किसी भी प्रविष्टि को पुरस्कृत नहीं किया जा सका। समस्या-पूर्ति के तहत ऐसा प्रथम बार हुआ। समस्या-पूर्ति के तहत सात अंकों में उ. प्र. के रचनाकारों के शीर्षक प्रथम रहे, जबकि बिहार के रचनाकारों ने चार अंकों में द्वितीय तथा पांच अंकों में तृतीय स्थान पाया। भागलपुर (बिहार) के श्री मतिकांत मधुव्रत फरवरी अंक में समस्या-पूर्ति-१७३ में द्वितीय तथा नवम्बर अंक में समस्या पूर्ति-१८२ में तृतीय रहे। इसी प्रकार गया (बिहार) के डॉ. नरेशप्रसाद शर्मा (जनवरी) अंक में समस्यापूर्ति-१७२ में द्वितीय व अक्तूबर अंक में समस्या पूर्ति-१८१ में तृतीय रहे। लेकिन मई अंक में समस्या पूर्ति-१७६ में जहां मंडला (मध्य प्रदेश) की कु. मिति गुरु तृतीय रहीं, वहीं दिसम्बर अंक में समस्या पूर्ति-१८३ में उनकी मम्मी श्रीमती मंजरी गुरु, मंडला (मध्य प्रदेश) प्रथम रहीं।

विभिन्न लेखकों की प्रकाशित पुस्तकों की संक्षिप्त जानकारी देनेवाला स्तंभ 'नयी कृतियां' हर अंक में प्रकाशित हुआ। जिसके तहत ८६ कृतियों से परिचय कराया गया। जनवरी अंक में मात्र एक कृति से तथा अक्तूबर अंक में सबसे अधिक १७ कृतियों से परिचय करवाया

गया । सितम्बर अंक में डॉ. केशुभाई देसाई के उपन्यास 'दीमक' से दुबारा परिचय कराया गया, जबकि अगस्त अंक में भी इस उपन्यास से परिचय करवाया गया था । जून अंक में अदीस सी. अग्रवाल की पुस्तक 'राजीव गांधी— एन एसेसमेंट' से परिचय कराया गया । जिसकी कीमत १००० रुपये है, जबकि नवम्बर अंक में डॉ. नरेन्द्रकुमार की पुस्तक 'महको महकाओ' से परिचय कराया गया जिसकी कीमत मात्र १० रुपये है ।

'कादम्बिनी' के एक अंक की कीमत मात्र नौ रुपये थी और वर्षभर पाठकों की जेब से मात्र १०८ रुपये ही खर्च हुए और बदले में हर अंक में अलग-अलग सामग्री थी । एक पाठक का अनुरोध था कि इसे मासिक के बजाय पाक्षिक कर दिया जाए । एक अन्य पाठक के लिए यह संजीवनी बूटी है । एक पाठिका लिखती है— 'यदि पत्रिका किसी कारणवश देर से प्राप्त होती है तो यों प्रतीत होता है, मानो बिछुड़ी सखी से युगों बाद मिली होऊं ।'

— शांति निकेतन,
पुनासा (खंडवा)
पिन-४५०११४

खोजबीन के पश्चात

तंत्र विशेषांक के 'समय के हस्ताक्षर' में आपने जो लेखनी चलायी है, वह बड़ी ही सटीक है । इस स्तंभ के अंतिम परिच्छेद में आपका पाठकों से अनुरोध इस बात का प्रतीक है कि 'कादम्बिनी' के हर अंक में (खास तौर से तंत्र-मंत्र संबंधित) लेख बहुत ही खोजबीन के पश्चात ही छपते हैं ।

— दलजीत प्रसाद दुबे
भोपाल

पहले सोच लें

तंत्र विशेषांक में 'समय के हस्ताक्षर' में प्रकाशित शीर्षक 'यह अंक : कुछ संकेत' पढ़ा और फिर इसे पढ़ने के बाद एक-एक करके संपूर्ण अंक को पढ़ लिया । अंत में मैं इस निर्णय पर पहुंचा कि संपूर्ण पत्रिका में समय के हस्ताक्षर में लिखा गया तथ्य अक्षरशः सत्य है, और लोगों को चाहिए कि भावनाओं में बहने से पहले तनिक सोच लें ।

— भागीरथ कुशवाहा,
हजारीबाग

तंत्र साधकों को सचेत

तंत्र विशेकांक में 'समय के हस्ताक्षर' स्तंभ के अंतर्गत 'यह अंक : कुछ संकेत' ने श्रद्धालु और तंत्र साधकों, दोनों को सचेत किया है । यह बहुत अच्छी सलाह है । तंत्र विशेषांक निकालना आपकी विवशता नहीं, बल्कि आज की अत्यधिक आवश्यकता है, जिसका आप भली प्रकार निर्वाह कर रहे हैं ।

— तंत्राचार्य डॉ. विभूतिनाथ,
दतिया

तंत्र विशेषांक में प्रकाशित विभिन्न लेखों पर हमें काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए हैं । कुछ पाठकों के नाम :

वंदना तिवारी, दिल्ली; ब्रजबाला कंसल, इंदौर; ओमप्रकाश बजाज, जबलपुर ; अनूप कुमार बंसल, हरिद्वार ; नलिनी रंजन, हाजीपुर; डॉ. देशबंधु आर्य, सरायसरीन ; संदीप 'अक्षत', चंदौसी; इंद्र प्रकाश गांधी, नयी दिल्ली ; विश्वनाथ सिंहानिया, जयपुर; देवेंद्र पाठक, डॉ. अनूप कु. गक्खड़, जालंधर ; मनोज कुमार उप्रेती, हल्द्वानी ; मधुसूदन आत्मीय, मुंगेर ; शरद जैन पहाड़वाले, नजीबाबाद ; बुद्ध देव तिवारी, ग्राम— वसंतपुर-सीवान-बिहार ।

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
कादम्बिनी
विशेषांक की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय

वर्ष ३५, अंक ३,
जनवरी, १९९५

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

एच. वाई. शारदाप्रसाद
दूसरों के लिए भाषण लिखने की मजबूरी २३
डॉ. हरिमोहन
हमारा शरीर कुंभ २६
डॉ. ऋतुपर्ण शर्मा
कुछ रोचक प्रसंग ३२
हिमांशु शेखर
राजनीति का सबसे आपत्तिजनक शब्द ३५
संगमलाल मालवीय
अंतरिक्ष में उड़ते यांत्रिक गुप्तचर ५०
अशोक स्नेही
ऐसेई होते कंत तो काइको जाते अंत ५९
के. के. देवराज
रेल दुर्घटनाएं क्यों होती हैं ६५
अमिताभ स.
दुनिया का पहला नोट ही सबसे बड़ा नोट ६९
अ. गौ.
नंदबाबू का विकट धर्मसंकट ७३
यमुना दत्त वैष्णव 'अशोक'
शिशु नाग शशांक : इतिहास के दर्पण में ८८
डॉ. प्रेमचंद्र स्वर्णकार
भारत में साढ़े चार करोड़ बीमार हैं ! ९२
कन्हैया अगनानी
एक शव एक वृक्ष को खाता है ! ९८
डॉ. ए. एल. श्रीवास्तव
अग्नि : मानव सभ्यता के विकास की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी १०८
डॉ. रजनीकांत तिवारी
गुप्त संदेश कैसे भेजे जाते थे ११३
डॉ. बिसौहा प्रसाद ताम्रकार
जीवंत बस्तर और स्वस्थ शरीर १२६
आलोक प्रभाकर
मिस लंदन भिखारिन बनी १२८
विनय
विश्व बंधुत्व का शहर १३०
डॉ. सुधा पांडेय
दशावतार १३५
शंकर दयाल सिंह
सत्याग्रह आंदोलन १५०
सुरेश डुग्गर
एक यात्रा बंदूकों के साये में १५७

कविताएं

रामेश्वर शुक्ल अंचल दीप-विसर्जन.
इन्दु जैन असंतुलन .. ३१
मनोहर वंद्योपाध्याय ... है, नहीं है १००
वीरेन्द्र मिश्र/मीरा जैन शब्द पुरुष/ सही १४१

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

हास्य-व्यंग्य एवं कहानियां

कर्त्तार सिंह दुग्गल
पौष के ठिठुरते जाड़े में ४२
आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा
बेवकूफ या बेईमान ५४
डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा
नौकरी की आवश्यकता ७४
अखिलेश तिवारी
पटरी पर लगा तंबू १०२
विजय अग्रवाल
एक कहानी यह भी १४२

सभी स्थायी स्तंभ

स्वास्थ्य संबंधी

डॉ. बी. एन. पटनायक
रेटिना की बीमारी से ज्योति जा सकती है ८४
डॉ. संतोष साही
सामान्य प्रसव १०७
डॉ. जगन्नाथ शर्मा, एम. डी.
आयुर्वेदिक ग्रंथों में प्लेग का उपचार १२०
मलेरिया/तपेदिक की पुनरावृत्ति १२३
श्रीमती सुमन चतुर्वेदी
देशी दवाइंयां १६२

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल,**
मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल,**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज,**
उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह,**
प्रूफ-रीडर : **प्रदीप कुमार,**
कला विभाग-प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी,**
चित्रकार : **पार्थ सेनगुप्त ।**

संपादकीय पता : **'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

मूल्य : वार्षिक : ९५ रुपये; द्विवार्षिक : १८५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, भूटान और नेपाल; विमान से ३४० रुपये, समुद्री जहाज से १४० रुपये । अन्य सभी देशों के लिए : विमान से ५१० रुपये; समुद्री जहाज से १९० रुपये ।

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

काल-चिंतन

बीता सो रीता

— जहां सूरज डूबता है, वहीं से वह उभरता भी है । वर्ष के अर्धांग वहां निरंतर प्रकाश रहता है, अंधकार पहुंच नहीं पाता । शेष अर्धांग वहां घना अंधेरा होता है, प्रकाश नहीं पहुंचता ।

— यह है पृथ्वी का वह हिस्सा जिसे 'लेपलैंड' कहा जाता है ।

— यहीं से एक परम सत्य उजागर होता है ।

— सत्य यह कि पृथ्वी चलायमान है, सूर्य अडिग और स्थिर है ।

□

— महाप्रतापी सूर्य सभी ग्रहों, नक्षत्रों और पृथ्वी तक के लिए प्राण-प्रदाता है ।

— सूर्य शाश्वत प्रकाश है । कल्पना कीजिए सूर्य न होता, तो ?

— तो समूचे प्रभा-मंडल की अर्थ-सत्ता खोजी जाती ।

— नाश, विनाश, मोह, व्यामोह-जैसे शब्द शायद शब्दकोष में न होते ।

— तो शब्दकोष होता हीं क्यों ? कोष तभी होता है जब अर्थ-सत्ता होती है ।

— शब्द से विशाल संपदा दुर्लभ है ।

— शब्द-संपदा संपत्ति है ऐसी कि सारे अर्थ-तंत्र बिगड़कर भंग हो जाते हैं ।

— सूर्य शब्द-संपदा है ।

— महाबली, महा ऊर्जाशाली, अक्षय, अनंत, अविराम प्रज्वलित सूर्य एक नहीं सहस्रों हैं ।

— 'सहस्र सूर्या :' अनंत प्राण-शक्तियों का मूलाधार है ।

□

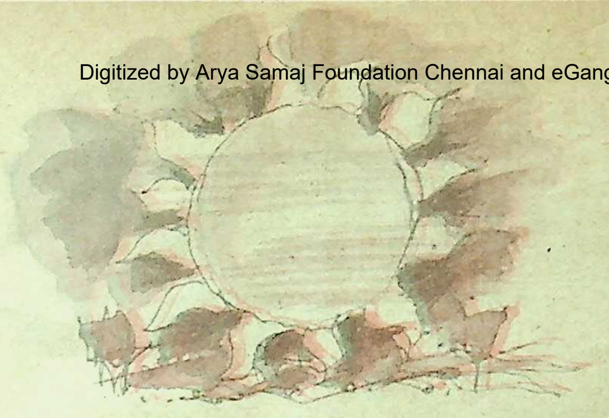

— सूर्य प्रबलतम बलवान है तथापि वह अहंकारहीन है ।

— बल, पौरुष और अहंकार का प्रदर्शन वे करते हैं, जिनके पास क्षमता नहीं होती ।

— क्षमतावान जो जितना होगा, उतना ही विनम्र, अहंकारहीन होगा ।

— विनम्रता जीवन-धर्म है ।

— अहंकारहीनता संस्कार है ।

— सम्यक् और सुव्यवस्थित दृष्टि निष्ठा है ।

—भय को अभयता का बोध कराना आस्था है ।

— आस्था पर विवेक की चादर चढ़ाना अपनी समूची शालीनता का परिचय देना है ।

□

— देखिए, प्रकाशवान एक सूर्य ने कितने अवयव दे दिये : संस्कार, निष्ठा, आस्था, विवेकशीलता, जीवन धर्म और शब्द बोध ।

— इसके बाद संपूर्ण पुरुष या पूर्ण पुरुष बनने के लिए शेष क्या रह जाता है ।

— क्षमता न हो जिसमें इनमें से एक या अनेक गुण पाने को वह अंधकार का भक्षण बनता है ।

— अंधकार जेल की वे दीवारें हैं जो एहसास कराती है अपराध का ।

— अपराध पश्चाताप है और देवत्व से नीचे पहले मनुष्यत्व और फिर पशुता के अभेद्य कुएं में किसी भी संज्ञा को उसी तरह सुला देता है जैसे पृथ्वी केंचुओं का भक्षण करती है ।

— पृथ्वी की क्षमता अपरिमित है । वह चींटी, दीमक, केंचुए, विषधर कीट-पतंगे और विनाशकारी सभी तत्वों का सहज ही भक्षण कर जाती है ।

— लेकिन वही पृथ्वी है जिसके गर्भ में अनेक महासागर हैं, पर्वत-झाड़ियां, और नदी-नाले हैं ।

— रत्नगर्भा है वह । प्राणदाता है और विकास के सभी प्रायोजक अवयव उससे मिलते हैं ।

□

— प्रार्थना गीतों में इसीलिए सूर्य, पवन, धरा, आकाश, प्रकाश और अंधकार को समकक्ष उभारा गया है ।

— हां, संभवतः हां, इसलिए कि जहां सभी नाशवान हैं, यहीं वे अवयव हैं जो अक्षुण्य हैं, अजर और अमर हैं ।

— इनकी अमरता ही व्यक्ति का स्वास्थ्य है, वह व्यक्ति का विनाश भी है ।

□

— व्यक्ति स्थायी भाव नहीं है । व्यक्ति संचारी भाव है, इसीलिए उसके साथ नाश और विनाश का अध्याय जुड़ा है ।

— देहरूप में वह अक्षुण्य नहीं है । वह देवत्व के गुणक का धारक भी बन जाए तो भी उसे देह छोड़नी होगी ।

— देह यहां आकर कुम्हार की शरणागत हो जाती है और उसे अपनी देह-अस्मिता के सभी तत्वों को कुम्हार के हवाले करना पड़ता है ।

— वही कुम्हार फिर निर्णायक बन जाता है और या तो उसे मिट्टी में मिला देता है अथवा उसी मिट्टी को स्वरूप देता है ।

— वही स्वरूप फिर चौराहों, गलियारों, बागों, भवन और शासकीय प्रकोष्ठों में स्वरूप ग्रहण कर एक स्वरूप पा लेता है ।

— शेष रहता है यही स्वरूप और स्वरूप का अर्थ बोधक 'नाम ।'

— जीवन के समस्त क्रिया-कलापों के यही शाश्वत क्षण होते हैं और व्यक्ति-चेतना को अमरत्व की अमरबेल में बदल देते हैं ।

□

— अमरत्व की अमरबेल यहीं से उठती है फिर, सहस्त्र ऊर्जाओंधारी सूर्य के पास तक पहुंचने के लिए ।

— सूर्य-पुत्र की संज्ञा इसी क्रम में मिलती है ।

— इस तरह निरंतर घूमता हुआ हमारा गोलार्ध किस तरह अग्निवेष पाता हुआ चट्टानों की तरह मजबूत स्वरूप पा लेता है जिसे तोड़नेवाली सदियां भी टूटकर चकनाचूर हो जाती हैं ।

— ये प्रस्तर-खंड सदियों का इतिहास लिखते हैं ।

— इतिहास वही लिखवा सकता है जो काल-खंड को पराजित करता हुआ अ-काल की वय: संधि में प्रवेश कर लेता है ।

□

— यह समूची प्रक्रिया पृथ्वी के उस धुरी-केंद्र से उद्भाषित हुई थी जो 'लेपलैंड' की संज्ञा पाकर ऊर्जावान सूर्य का साक्षी है ।

— हमारा समस्त जीवन-ज्ञान उसी सूर्य से उद्भाषित है और उसी को समर्पित है ।

□

— कल की शाम पृथ्वी की यही धुरी सूर्य के सामने नतमस्तक होकर डूबी थी।

— आज की भोर ठीक उसी धुरी से पृथ्वी उद्भाषित होकर सूर्य का अभिनंदन कर रही है।

— समवेत हों हम इस अभिनंदन में, ऋचाओं के स्वर वेद-ध्वनि बनें और समस्त शालीनता के साथ हम नमस्कार करें, नमन करें उस प्रतिभावान अक्षुण्य सूर्य को जिसने हमें अब तक संजीवनी दी है देता रहे वह उसी तरह।

□

— यादों की तराजू लेकर बैठना निरर्थक है।

— यादें कई बार मनुष्य भक्षी चींटियों की तरह काटतीं-कचोटतीं और अंततः विध्वंस कर अस्तित्व को समाप्त कर देती हैं।

— बुद्धिमान वही है जो विगत के सामने भी मस्तक झुकाता है और आगत का भी उत्साह के साथ अभिनंदन करता है।

— विगत को केवल इसलिए याद करना जरूरी है ताकि उसकी नींव पर खड़ा आगत गलतियों से हमें बचाता रहे, इसीलिए आइए हम एक नया स्वर दें और नये वर्ष का अभिनंदन करें:

बीता सो रीता
बन न आगत सीता।

राजेन्द्र अवस्थी

इस रोजगार में आरक्षण नहीं !

मुलायम सिंह और कांशीराम कितना भी आरक्षण कर सवर्ण जातियों और पढ़े-लिखे लोगों के लिए नौकरी के दरवाजे बंद कर दें, वे उनके बुद्धि के दरवाजे नहीं बंद कर सकते ! पिछले एक दशक में जो जंगलीबेल सबसे ज्यादा फैली है वह है— मंचीय कवियों की ! मंच का कवि होना अपने आप में व्यवसाय बन गया है । कवयित्रियों के लिए तो पैसा कमाना और ज्यादा आसान है ! किसी कवि मित्र से दो-चार उधार की कविताएं ले लीजिए । उन्हीं को बार-बार पढ़कर सुनाते रहिए । नौकरी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी । आरक्षण तो अभी शुरू हुआ है, लेकिन कवि सम्मेलन एक ऐसा रोजगार है, जिसमें आरक्षण कभी लागू हो ही नहीं सकता ।

कवियों का दंगल

मंचीय कवि सम्मेलनों की बात आयी है तो पीतलनगरी महोत्सव मुरादाबाद की एक मंचीय कवि द्वारा सुनायी घटना मुझे याद आ रही है । हर शहर में कवि सम्मेलन होते हैं । १३ नवम्बर '९४ को मुरादाबाद में भी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । पता चला कि कुछ अच्छे समझदार कवियों के अलावा उसमें टमटू/ममटू/चमटू, शत्रो/छत्रो/चत्रो— जैसे नामवर कवि आये थे । इनमें एक बहुत नामवर कवि थे— शैल चतुर्वेदी । कवि सम्मेलन का आयोजन जिला प्रशासन ने किया था । पता चला है कि बारह हजार रुपये में इनके साथ सौदा तय हुआ । सोचिए कि एक कवि सम्मेलन में बारह हजार रुपये मिलते हैं । हिसाब लगायें तो इतना पैसा

किस नौकरी में मिलेगा ? मुझे कहावत याद आ रही है कि झगड़े की जड़ है— 'जर-जोरु और जमीन ।' ये कहावत शत-प्रतिशत सही साबित हुई ! यानी धन है तो उसका उपयोग करना चाहिए । भाई शैल ने यहां भी बाजी मार ली । शराब के पैसे बचा लिये क्योंकि संयोजकों ने मनमाने जाम खोल दिये थे । "मुफ़्त माल दिल बेरहम ।" शैल साहब ने जो पीना शुरू किया तो क्या कहने ? आदमी अपने को भूल जाए तो सारी दुनिया बेमानी है । कवि सम्मेलन आखिर अंत में पहुंचा, तब भी ये कवि महोदय ध्यान की अगाध मुद्रा में ही थे । ऐसी मुद्रा में किसे क्या याद रहता है और कौन कविता सुनाता है ? बहरहाल कवि सम्मेलन बिना एक 'महाकवि' के काव्यपाठ के समाप्त हो गया । कार्यक्रम के पश्चात जब इन्होंने अपनी 'फीस' मांगी तो जिला प्रशासन ने टका-सा जवाब दे दिया— "मेहनत नहीं तो मेहनताना नहीं" आखिरकार एक दिन की कमाई परवान चढ़ गयी और झूमते-नाचते नृत्य-मुद्रा में शैलजी मैदाने जंग में कूद पड़े । उनके खास सिपहसालार अशोक चक्रधर ने महाबली शैल की हिमायत करते हुए संयोजक मंडल के स्थानीय कवि मक्खन मुरादाबादी से आनन-फानन में भुगतान करने का फतवा जारी कर दिया । उसकी हालत अजीब थी भाई । एक तरफ था कुआं दूसरी तरफ थी खाई । प्रशासन ने भुगतान करने की कर दी मनाही। न कविता न कमाई । जब वाक्-संग्राम जोर पकड़ गया तो चक्रधर ने मक्खन की कर दी पिटाई । एक बात समझ में नहीं आयी कि कहां जाएगी ये मंच की कविताई ?? ताली बजाइए भाई । पेश है दो सांड़ों की लड़ाई !! वैसे उत्तर प्रदेश की सड़कों पर सांड़ों का लड़ना एक आम बात है । कानपुर के गौरव होटल के सामने एक ऐसी लड़ाई मैंने भी देखी थी । दहशत से लोग ऐसे भाग रहे थे मानो पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया हो ।

इतिहासकार भी झगड़ पड़े ?

लगता है इस सदी के शेष वर्ष लड़ाई-झगड़े में ही बीतनेवाले हैं । दिल्ली में कुछ समय पहले ही इतिहासकारों का एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ । इतिहास को लेकर सम्मेलन होना, समय की आवश्यकता है क्योंकि इतिहास का बहुत-सा हिस्सा

ऐसा है जो हमें गलत पढ़ाया जाता है । ऐसे सम्मेलनों से सही इतिहास की खोज हो तो इससे बेहतर कुछ नहीं । दिल्ली के इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में हुआ कुछ और ही । सम्मेलन में तय हुआ था कि बाबरी मसजिद और रामजन्मभूमि का मुद्दा न उठाया जाए, लेकिन कार्यवाही जब शुरू हुई तो आखिर इन पर भी चर्चा शुरू हो गयी । इसको लेकर सारे विद्वान और पढ़े-लिखे इतिहासकारों में दंगल-जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी । आखिर सम्मेलन मेल-मिलाप बनकर रह गया । इस बात का पता शायद हमारे राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा को पहले ही लग गया था इसलिए उन्होंने अंतिम समय में सम्मेलन का उद्‌घाटन करने से मना कर दिया, मगर धोखे से बेचारे अर्जुनसिंह इस दंगल में फंस गये लेकिन मुझे विश्वास है कि उन्होंने इस दंगल का भी मजा लिया होगा ।

हाय हिंदी ! मेरी मां है अंगरेजी !

हमारे देश में जिस तरह अंगरेजियत फैल रही है उससे लगता है कि अपनी मातृभाषा को और अपनी भाषा को गिरवी रखना हमारा धर्म बनता जा रहा है । मुझे दुःख होता है और वह दुःख तब और भी बढ़ गया जब कुवैत दूतावास द्वारा छपनेवाला पत्र 'कुवैत समाचार' देखने को मिला । उसके संपादकीय में हिंदी में हस्ताक्षर हैं— बासिम अल लोगानी ।

बासिम अल लोगानी

देखिए हस्ताक्षर हिंदी में कितने साफ-सुथरे हैं । कुवैत बहुत छोटा-सा देश है लेकिन इतना समृद्ध है कि उसे भाषा जैसी बातें सोचने की जरूरत नहीं होनी चाहिए । एक कुवैती राजनयिक के इस हिंदी प्रेम को देखकर, मैं अपनी श्रद्धा को नहीं रोक सका । ईश्वर की कृपा है कि इन दिनों चैक प्रजातंत्र और पोलैंड के राजदूत भी हिंदी के जाने-माने लेखक हैं । चीन के सांस्कृतिक सचिव भी धड़ल्ले से शुद्ध हिंदी बोलते हैं । गांधीजी के शब्दों में "...हमारे नेताओं को 'सम्मति दे भगवान ।'

078833

'कादम्बिनी' का ताजा तंत्र अंक ठाट से निकला और ठाट से बिका । इस बार मैंने अपने संपादकीय में सावधान कर दिया था— "अंध श्रद्धा से बचिए । अनेक मामलों में गुरुओं ने जनता की अंधश्रद्धा का पूरा लाभ उठाया है ।"

धनबाद के एक पाठक श्री बृजकिशन शर्मा ०१, जमुना अपार्टमेंट्स, शांति भवन का एक लंबा पत्र हमें मिला है । पाठकों के प्रति अपना *कर्त्तव्य* समझते हुए मैं इस पत्र का शिकायती अंश यहां प्रस्तुत कर रहा हूं—

आदरणीय श्री राजेन्द्र अवस्थी जी,

सादर नमस्कार ।

पत्र लिखने से पहले आपसे क्षमा चाहता हूं कि आपके 'बिजी शेड्यूल' में आपको 'डिस्टर्ब' कर रहा हूं और अपनी 'प्रॉब्लम' लिख रहा हूं । एक बार फिर क्षमा चाहता हूं । उस तकलीफ के लिए जो आपको मेरे इस पत्र को पढ़ने में होगी ।

मैं जिंदगी के हर काम में 'फेलियर' हूं । कोई काम भी नहीं होता । आज तक मेरे जीवन में जो भी आया है धोखा ही दे गया है । जो काम भी किया है नुकसान ही हुआ है और नाकामयाबी हासिल हुई है । कहीं भी सफलता नहीं मिली । जीवन में हर वक्त और हर जगह असफलता ही मिली है । अपनी समस्याओं के लिए जहां भी गया, जिसके पास भी गया, मेरा कोई काम सिद्ध नहीं हुआ । पिछले ३० साल से तनावपूर्ण जीवन रहा और मानसिक रोग से ग्रसित रहा । यहां तक यंत्र-मंत्र-तंत्र पत्रिका पढ़ने के बाद श्रीमाली जी का शिविर जनवरी १९९४ में बोकारो में अटेंड किया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । ३ मार्च १९९४ को १०१ रुपये देकर उनसे दिल्ली में भेंट की । उनसे रो-रोकर अपनी लाइफ के बारे में कहा और उनकी आज्ञानुसार तीन हजार रुपये का यंत्र भी पहना, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । ८ अप्रैल को १०१ रुपये देकर फिर भेंट की तो उन्होंने १५०० रुपये का एक और यंत्र पहनने को कहा कि इस यंत्र से काम जल्द हो जाएगा । पैसे न होने की वजह से मैंने सोचा अगर थोड़ा लेट भी होगा तो चलेगा । लेकिन कोई काम नहीं हुआ । जोधपुर में पत्र लिखो तो कोई जवाब नहीं आता । अगर जवाब आता है तो या तो कोई यंत्र लेने के लिए कहते हैं या गुरुजी से दिल्ली मिलने के लिए कहते हैं । उसके लिए आने-जाने का खर्चा, १०१ रुपये मिलने के और वह सिर्फ यंत्र देंगे या दीक्षा देंगे । जिनके पास पैसे न हों तो वह क्या करें । यह मैं शिकायत नहीं अपनी आपबीती लिख रहा हूं ।'

राजेन्द्र अवस्थी

दूसरों के लिए भाषण लिखने की मजबूरी

● एच.वाई. शारदाप्रसाद

सरकारी संपादक बनने के बाद जो पहला कार्य मुझे सौंपा गया, वह था जवाहर लाल नेहरू के व्याख्यानों को एक जगह एकत्रित करना । आकाशवाणी द्वारा तैयार किये गये व्याख्यानों का एक पुलिंदा मुझे सौंपा गया । उनमें ज्यादातर वैसे थे, जिन्हें हिंदी में लिखने के बाद अंगरेजी में रूपांतरित किया गया था । यह कितने आश्चर्य की बात थी कि जो व्यक्ति सपना तक अंगरेजी में देखता था उसका ही अंगरेजी पर से अधिकार हट रहा था । मेरा काम यही था कि उन्हें अंगरेजी में रूपांतरित करूं । प्रधानमंत्री के व्यक्तिगत स्टाफ के लोगों ने मुझे बताया कि ये भाषण पूर्व तैयार किये गये नहीं थे । इसलिए इनमें पुनरावृति हो सकती है । अतः मुझे यह देखना था कि किसी भी विषय का दुबारा जिक्र नहीं हुआ हो । हम लोगों को पंडितजी के पास पचास-साठ पन्नों का एक व्याख्यान अनर्गल बातें हटाकर भेजना था । इस काम को करने में मेरे सहकर्मियों को घबराहट होने लगी । किंतु मैंने अपनी संपादकीय क्षमता का उपयोग करते हुए उसकी एक प्रति 'तीन मूर्ति भवन' भेजी । दो दिनों के बाद पंडितजी ने मुझे लिख भेजा कि उस व्याख्यान की काट-छांट उनके विचारों के अनुरूप की गयी है ।

विद्वता नहीं जाहिर कर रहा

मैं यह घटना अपनी विद्वता जाहिर करने के लिए नहीं कर रहा, अपितु इसके जरिए यह कहना चाहता हूं कि पंडितजी-जैसे व्यक्ति को भी अहसास हुआ था कि उनके व्याख्यानों को भी संपादित करने की जरूरत पड़ती है । पंडितजी ने कभी पहले से बने-बनाये भाषण नहीं दिये थे । सिर्फ मौलाना आजाद मेमोरियल

यह कितने आश्चर्य की बात थी कि जो व्यक्ति सपना तक अंगरेजी में देखता था उसका ही अंगरेजी पर से अधिकार हट रहा था । मेरा काम यही था कि उन्हें अंगरेजी में रूपांतरित करूं ।

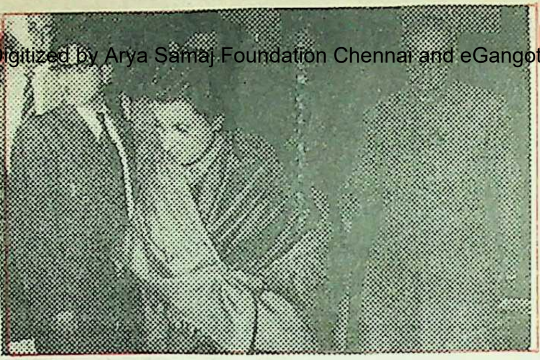

लेक्चरर जो उन्होंने 'भारत आज और कल' पर १९५९ में दिया था, वह कुछ घंटे पहले तैयार किया भाषण था । जब वह शुरू के कुछ पत्रों को पढ़ रहे थे, तब विज्ञान भवन में तैयार पीछे के पत्रों को भेजा जा रहा था । मुझे ऐसा लगता है कि उनके बहुत-से भाषण पहले से तैयार किये हुए रहते थे । संयुक्त राष्ट्र संघ में दिया गया व्याख्यान पूर्व तैयार किया हुआ था । वह एक कुशल वक्ता थे, जो ऐन मौके पर अपना व्याख्यान बनाकर अत्यंत गंभीरता तथा ठोस आधारों पर अपनी बात कह देते थे । सभी महान नेता एक कुशल वक्ता होते हैं । उनका व्याख्यान उसी क्षण की उपज होती है, किंतु ऐसा नहीं कि बोलने से पहले, वह कुछ सोचते नहीं । विंसटन चर्चिल कोई भी भाषण देने से पहले आईने के सामने अनेक बार प्रयास करते थे । पर्चियां देखकर भाषण देने की कला ठीक नहीं समझी जाती, अगर किसी ने ऐसा किया तो वह निश्चित ही चुनाव हार सकता है । परंतु विदेशी सम्मेलनों तथा विश्वविद्यालयों के दीक्षांत समारोहों में व गोष्ठियों में बिना पहले से तैयार किये गये व्याख्यान देने का मतलब है— श्रोतागणों की अवहेलना करना । व्याख्याता को यह दर्शाना पड़ता है— कि उसने उस विषय पर मनन-चिंतन किया है । व्याख्यान अगर बिना किसी 'स्क्रिप्ट' लिपिबद्ध बोला जाए तो वह अत्यंत लंबा व ऊबाऊ हो जाता है । एक बार पंडित मालवीय ने, जब वह कांग्रेस अध्यक्ष थे, तब आठ घंटे तक व्याख्यान दिया था । जब गांधीजी १९२४ में कांग्रेस अध्यक्ष थे, तब उन्होंने बेलगांव में सबसे संक्षिप्त भाषण दिया था । उस समय उन्होंने भाषण की एक-एक प्रति श्रोताओं में बंटवा दी एवं कुछ ही मिनट तक उस विषय वस्तु पर बोले ।

उनसे कुछ आशाएं

हमारे राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री अनेक सभाओं व संस्थाओं के उद्घाटन आदि जैसे उपलक्ष्यों में आमंत्रित किया जाता है तब उनके द्वारा अनेक प्रशंसनीय शब्दों तथा व्याख्यानों की आशाएं की जाती हैं । सिर्फ नेहरूजी तथा राधाकृष्णन में ही यह क्षमता थी कि उसी क्षण व्याख्यान दे सकें, जो शायद हमारे राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह में न थी । कुछ व्यक्ति ऐसा सोचते हैं कि चर्चिल, डीगॉल तथा नेहरू अंतिम व्यक्ति थे, जो अपने भाषण खुद लिखा करते थे । अगर किसी ने अपने प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव को लिखते देखा है तो यही कहेंगे इनके साथ 'अपना काम खुद करो' वाली बात चरितार्थ होती है । किंतु आज सभी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति व्याख्यान लेखक की मदद से काम करते हैं । रिचर्ड निक्सन के लिए विलियम साफायर, जॉन केनेडी के मदद के लिए गैल ब्रेथ तथा

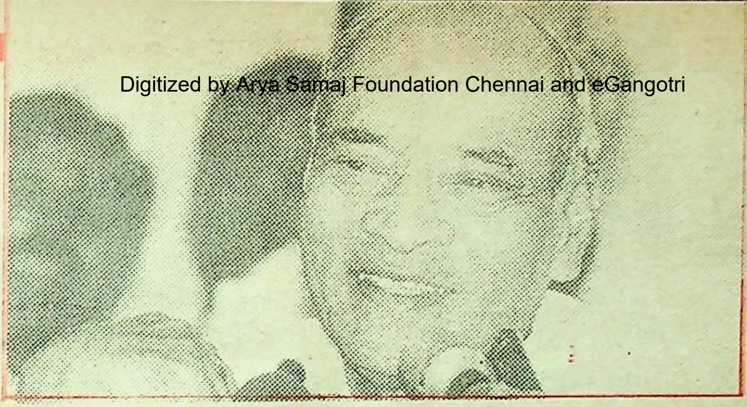

सोरेनसन-जैसे महत्त्वपूर्ण विशेषज्ञ थे ।

श्रीमती इंदिरा गांधी पहले से बनाये व्याख्यानों को अपने ढंग से काट-छांट कर बोला करती थीं, कभी-कभी इन कामों में पूरा दिन भी लग जाया करता था । स्टाकहोम में संयुक्त राष्ट्र महासंघ द्वारा आयोजित वातावरण पर उनका जो भाषण था उसमें अठारह बार परिवर्तन किया गया था । किंतु कुछ ऐसे भी व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने आंखें बंद कर भाषण पढ़ा है, हमारे ही एक राष्ट्रपति ने एक ही भाषण को एक ही समारोह में दो बार पढ़ा था क्योंकि उनके निजी सचिव उसकी एक दफ्तरवाली प्रति अलग करना भूल गये थे ।

आभूषणों जैसा

जिस प्रकार आभूषण महिलाओं की सज्जा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार बड़े लोगों द्वारा कहे गये कथन, भाषण को एक जीवंतता प्रदान करते हैं । दिल्ली के ख्यातिप्राप्त वक्ता अकसर संस्कृत के श्लोकों का प्रयोग करते हैं । जिस प्रकार मार्क्सवादी मार्क्स तथा लेनिन के कथनों, दलित अंबेदकर तथा लोहिया की बातें कहकर अपने व्याख्यानों को वजनदार बनाते हैं । एक प्रासंगिकता देते हैं, उसी भांति हम भी वेद तथा महात्मा गांधी के कथनों से अपनी सभ्यता व संस्कृति को उजागर करते हैं । किसी के कथन को कहने से भाषण की रिक्तिता तो समाप्त होती ही है, व्यक्ति के सोचने की शक्ति भी कम खर्च होती है ।

किसी के लिए व्याख्यान लिखना आसान काम नहीं है । इस कार्य के लिए अनेकानेक प्रकार की विषय-वस्तुओं की जानकारियां, विशेषज्ञों की सलाह के पश्चात वक्ता महोदय के अनुरूप ही व्याख्यान लिखना पड़ता है । इसमें लेखक की क्षमता का ह्रास होता है, वह जो भी लिखता है वक्ता के अनुरूप लिखता है । उसके व्याख्यान के शब्द व तात्पर्य, वक्ता के अनुभव तथा व्यक्तित्व के अनुसार व्यक्त होते हैं । व्याख्यान लेखक की अपनी आवाज दब जाती है, वह दूसरों के धुन पर ड्रम बजानेवाला व्यक्ति बन जाता है ।

अगर आपको कभी दूसरों के लिए भाषण लिखने की मजबूरी आ पड़े तो मुझ-जैसे पुराने छद्म लेखक ('घोस्ट राइटर') की सलाह है जितनी जल्दी हो सके, इससे बाहर निकल जावो । अन्यथा तुम पावोगे कि एक व्यक्ति के लिए छद्म बनना ज्यादा आसान है जितना कि छद्म से पुनः व्यक्ति बनना ।

— १९, मैत्री अपार्टमेंटस
पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-११००६३

संक्रांति १४ जनवरी प्रयाग : कुंभ पर्व—संदर्भ

हमारा शरीर कुंभ

● डॉ. हरिमोहन

आठ-नौ वर्ष का रहा होऊंगा, मौसी प्रयाग के कुंभ से लौटी थीं । वे सभी के लिए वहां से कुछ न कुछ लायी थीं । मेरे लिए भी । मेरे लिए वे खिलौनेनुमा 'कैमरा' लायी थीं, जिसमें प्रयाग के दर्शनीय स्थल, मंदिर, भारत के प्रसिद्ध तीर्थों की तसवीरें थीं । इन्हें घुमाकर देखने में बड़ा आनंद आया था । पर कब तक ? ललिता पड़ोस की हमउम्र लड़की थी । उसे मौसी ने बहुरूपदर्शी (कैलिडियोस्कोप) दिया था । मुझे वह अपने 'कैमरे' से ज्यादा अच्छा लगा । ललिता ने मेरे परस्पर अपनी-अपनी सौगातें बदलने के प्रस्ताव को एक बालसुलभ हिचक के साथ मान लिया ।

अब मेरे पास उसका बहुरूपदर्शी था । थोड़ा घुमाओ, चूड़ियों के रंग-बिरंगे

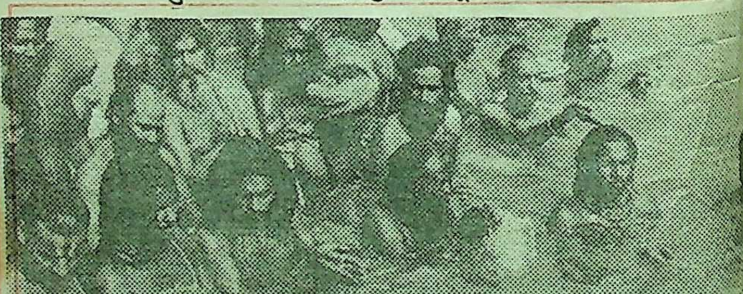

टुकड़ों से नयी डिजायन, नयी रचना बन जाती ! इस नये-नये को रचने, उसके सौंदर्य को देखने में एक नया आनंद हर बार आता । पता नहीं बचपन की वह अनमोल सौगात समय के साथ कहां खो गयी । लेकिन उसकी प्रतिछवियां मन पर अब तक बनी हैं ! ललिता अब भी मिल जाती है, उसकी सौगात याद हो आती है; और कुंभ पर्व पर तो बहुत । तो, प्रयाग के कुंभ का पहला अक्स मेरे मन पर यह है । मैं आज भी जब कुंभ-स्नान की बात सोचता हूं, मेरे हाथों में वह ललित बहुरूपदर्शी न जाने कहां से आ जाता है । इसमें आहिस्ता से हिलते हुए कुंभ के कई बिंब उभरने लगते हैं ! कुंभ मेरे घट में घटने लगता है ।

कुंभ-पर्व : कब और कहां ?

कुंभ-पर्व देश के चार तीर्थों पर लगता है, ऐसी मान्यता है । ज्योतिष के संदर्भ से प्रयाग में मेष राशि में बृहस्पति तथा चंद्रमा और सूर्य दोनों मकर राशि में हों तब कुंभ लगता है । उज्जैन में सिंह राशि में बृहस्पति, मेष राशि में सूर्य हो तब, हरिद्वार में कुंभ राशि में बृहस्पति, मेष राशि में सूर्य हो तब और नासिक में सिंह राशि में बृहस्पति, सिंह राशि में सूर्य हो तब कुंभ जुड़ता है । सूर्य के साथ चंद्रमा का विचार भी किया जाता है, पर वह उसके साथ सदा रहे यह आवश्यक नहीं होता । चारों स्थानों पर बृहस्पति और सूर्य का विचार प्रधान है ।

प्रयाग में दोनों के साथ चंद्रमा का योग तथा संक्रांति की स्थिति विशेषता लिए है । माघ मास की परंपरा इस कुंभ को और अधिक गरिमा सौंपती है । यों तो चारों ही स्थलों में कुंभ का महात्म्य है, लेकिन प्रयाग के कुंभ की विशेषता त्रिवेणी से रंजित है । इसके तट पर अक्षय वट है, जिसके समीप कुंभ का जुड़ना अधिक कल्याणकारी कहा

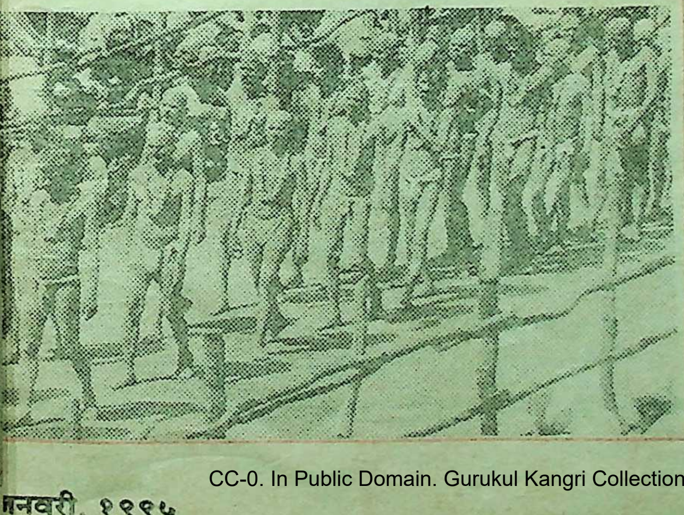

गया है ।

श्रीमद्भागवत का सार

डॉ. जगदीश गुप्त की दृष्टि से कहूं तो लीला-तत्त्व श्रीमद्भागवत का सार है और उसे दर्शन एवं व्यवहार दोनों का बल मिला है । भक्ति के प्रायः सभी संप्रदायों ने लीला-तत्त्व के साथ लय-प्रलय को आनंदात्मक माना है तथा उसे विराट रूप में देखकर सृष्टिव्यापी कल्पना की है जो किसी भी काल में समाप्त नहीं होती और न अपनी महत्ता खोती है । प्रयागस्थ वट-वृक्ष इसी अडिग आस्था का प्रतीक है । प्रलय के बाद भी उसके पत्ते पर लीलामय कृष्ण का दर्शन बाल-रूप में होता है ऐसी भावना लोक-ग्राह्य है तथा कवि-प्रेरक भी । यथा—

करारविन्देनपदारविन्दं
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्यपत्रस्यपुटे शयानं,
बालमुकुन्दं शिरसा स्मरामि ॥

किसी भी अन्य कुंभ-स्थल में आस्था का ऐसा विशाल, आकाशव्यापी, अनंत विराट-वृक्ष जो निरंतर प्रेरणाप्रद हो, दिखायी नहीं देता और न गंगा-यमुना-जैसी प्रत्यक्ष तथा सरस्वती रूपी परोक्ष नदी की कल्पना की गयी है । त्रिवेणी 'मृत' और 'अमृत' दोनों तत्त्वों के समीकरण से उत्पन्न ऐसी धारणा है जो मृत्यु पर मानसिक रूप से विजय प्राप्त करके जीवन में व्याप्त अमृत-तत्त्व को सर्वसुलभ बनाने का संकल्प करती है ।

इन चार स्थलों पर कुंभ जुड़ने का संबंध उस सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा से है, जिसमें समुद्र-मंथन में निकले चौदह रत्नों में से एक अमृत-कलश भी था । देव-दानव दोनों इसे प्राप्त करने के लिए परस्पर युद्ध-सन्नद्ध हो गये थे । तब विष्णु ने मोहिनी रूप धारण किया था और अमृत-कलश को इंद्र-पुत्र जयंत के हाथों सौंप दिया गया था । कलश की रक्षा का दायित्व नवग्रहों में से सूर्य, चंद्र, बृहस्पति और शनि को दिया गया । कलश न टूटे, यह कार्य सूर्य को दिया गया । उसमें से अमृत न छलके यह दायित्व चंद्रमा पर था । राक्षसों से अमृत-कलश बचा रहे इसका उत्तरदायित्व बृहस्पति पर था । शनि की जिम्मेदारी थी कि वे जयंत की रक्षा करते रहें ! इन्हीं चार ग्रहों से चार स्थानों पर होनेवाले कुंभ-पर्व की कथा जुड़ी है । जयंत उस कलश को लेकर नासिक, उज्जैन, हरिद्वार और प्रयाग में गये । कहा जाता है कि इन चार स्थानों पर थोड़ा-थोड़ा अमृत छलक गया । अमृत तत्त्व की कामना से इसीलिए इन चार स्थानों पर यह धार्मिक उत्सव आयोजित होता है ।

एक अद्भुत तीर्थ

कुंभ-पर्व कब से और सर्वप्रथम कहां से आरंभ हुआ, इसका कोई निश्चित उत्तर

कुंभ पर्व कब से और सर्वप्रथम कहां से आरंभ हुआ, इसका कोई निश्चित उत्तर नहीं है । चार कुंभ स्थलों पर भी प्रश्न चिह्न लगा है । एक पांचवां स्थल भी है, जहां प्रति बारह वर्ष बाद ऐसा ही पर्व आयोजित होता है ।

नहीं है । चार कुंभ-स्थलों पर भी प्रश्नचिह्न लगा है । एक पांचवां स्थल भी है, जहां ऐसा ही पर्व आयोजित होता है, वह भी बारह वर्ष बाद । दक्षिण भारत के इस तीर्थ का नाम है—कुंभकोणम् । यह सचमुच आश्चर्य की बात है कि उत्तर-भारत के लोगों को इसकी बहुत कम जानकारी है । यह तीर्थ अद्‌भुत है, जिसका संस्कृत नाम है—'कुंभघोणम्' । कहा जाता है कि ब्रह्मा ने एक घड़ा (कुंभ) अमृत से भरकर रखा था । उस कुंभ की नासिका (घोण) अर्थात मुख के समीप एक छिद्र में से अमृत चूकर बाहर निकल गया । इस अमृत से वहां की पांच कोस तक की भूमि भीग गयी । इसी से उसका नाम कुंभघोण (कुंभकोण) पड़ गया—

कुंभस्य घोणतो यस्मिन् सुधापूरं विनिस्सृतम् ।
तस्मात् तत्पदं लोके कुम्भघोणं वदन्ति हि ॥

(तीर्थांक, पृष्ठ-३६४)

यहां कई दर्शनीय मंदिर हैं, यथा—महामघम्, नागेश्वर, शर्गपाणि, कुंभेश्वर आदि । ये सब दक्षिण शैली के हैं । पहले यह क्षेत्र शैव परंपरा से जुड़ा था, कालांतर में यहां वैष्णव मंदिर भी बन गये । ऐसा माना जाता है कि भृगु-द्वारा नारायण के वक्ष पर पाद-प्रहार यहीं हुआ था । यहां गंगा-यमुना-सरस्वती आदि नौ नदियां तथा अनेक देवी-देवता स्थापित हैं । चिदंबरम् के नजदीक यह तीर्थस्थल समुद्र-तट से पास ही है और यहां की कुंभ के आकार की शिव-मूर्ति असाधारण है । यहां भी कुंभ का मेला लगता है, जिसमें लाखों श्रद्धालु आते हैं ।

अमृत्व की कामना

जो हो, कुंभ नगरी चार हों या पांच; सब में अमृत्व की कामना से बिना बुलाये श्रद्धालु हर बारह वर्ष पर आ जुटते हैं । अर्द्ध कुंभ हरिद्वार और प्रयाग में छह वर्ष बाद भी लगता है । कुंभकोणम् में महामखम् उत्सव ही महाकुंभ है, जिसमें बारह साल बाद व्यापक स्तर पर स्नानार्थी महामखम् तालाब में स्नान कर पुण्यलाभ लेते हैं ।

वस्तुतः कुंभ है क्या ? भौतिक रूप से यह भले ही घट या घड़ा हो, जल आपूरित

मंगल कलश हो या अमृत-कलश हो; मेरे निकट तो यह निज घट का वाचक है। बेशक भारतीय मनीषा ने इस अमृत कलश में त्रिदेवों, सप्त सागरों, सप्त द्वीपों और चार वेंदों के निवास की कल्पना की हैं यथा—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।

और—

कुक्षौ तु सागराः सर्वे, सप्तदीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोथ यजुर्वेदो सामवेदोथर्वणः ।
अग्नेश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रितः ।।

(गत सिंहस्थ पर्व पर ज्योतिर्विद व्यास द्वारा प्रकाशित श्लोक, उद्धृत 'कुम्भ दर्शन' (लखनऊ), पृष्ठ-१०)

रीत गये हैं हम

कुंभ में 'कुं' पृथ्वीवाचक है, तो हमारा शरीर पृथ्वीयुक्त है। यदि '**कं जलं उम्भति पूरयति अवर्षणादि दुर्भिक्षेभ्यो दूरयतीति कुंभः**'; यह व्युत्पत्ति कुंभ की है तो भी हमारा शरीर कुंभ है। यह अलग बात है कि यह अवर्षण और दुर्भिक्ष को दूर नहीं कर पा रहा। मुझे लगता है, हम रीत गये हैं, भीतर से खाली हैं, स्वयं अतृप्त हैं। इसलिए कुंभ के स्व-भाव से विरत हैं।

कुंभ का 'कुं' मंगलकारी भावनाओं का द्योतक है, लेकिन यदि हम इस कुंभ के स्व-भाव से विरत हैं, तब क्या अपेक्षा करें ? कैसे सर्वमंगल मांगल्ये की कल्पना करें ? पाप-प्रक्षालन और पुण्य-प्रवर्धन की धारणा कुंभ के साथ जुड़ी हुई है, यह धारणा मन से जुड़ी है। पाप-पुण्य मन का खेल है। जब मन ही 'बेमन' हो गया, तब क्या अंतर पड़ता है पाप से और पुण्य से ?

मैं तो अपने भीतर अपनी राशि में बृहस्पति को उतारना चाहता हूं, मकर राशि में सूर्य और चंद्रमा की अपेक्षा मुझे है; मेरा जयंत स्वयं उड़कर आएगा अमृत छलकाने। मेरा मन अक्षय वट की तरह जिस दिन थिर हो जाएगा; मेरे भीतर कुंभ जुड़ जाएगा।

मेरी इच्छा तो बस यही है कि '**कुं कुत्सितं उम्भति दूरयति जगद्धितायेति वा कुंभः**' के अनुरूप कुंभ की व्याख्या को साकार करूं। संसार के कल्याण के लिए स्वयं के समस्त कुत्सितों या दोषों को दूर कर लूं ! मेरे घट में तो जन-समुद्र भरा है। मुझे तो बस उसी की चिंता है। मैं भी उसमें से एक बूंद हूं। मुझे ललिता के दिये उस बहुरूपदर्शी में धुंधला-सा अपना यही रूप दिखायी दे रहा है।

—पो. बॉक्स-२०,
श्रीनगर (गढ़वाल), उ. प्र.
पिन-२४६१७४

दीप-विसर्जन

● रामेश्वर शुक्ल अंचल

जल में बह चला

न में बंदी बिछुड़ती ज्योति का आश्वास ले
भीगी वेदना का स्वप्न ले, उल्लास लें
जल में बह चला

झ होते ही नमित मुख आ गयी वह बालिका
-शंकित, वक्षकंपित, अधखिली शेफालिका
प्रिय की कामना में निर्मला

द की माती निशा-सी किरण आंचल में छिपा
र्तिका में मरण-जीवन की जलन-ज्वाला दिया
गयी जल में प्रवाहित झलमला

ऊपर व्योम में मुसका उठी नवतारिका
चली सरि गीत जिसका तृषित वह नीहारिका
जल में बह चला

तरंगों के लिये जाते सुदूर अज्ञात में
ति में निज ज्योति भरने झंझावात में
जल में बह चला

— पचमेढ़ी, दक्षिणी सिविल लाइंस, जबलपुर

असंतुलन का सम

मैं डरी जरूर
लेकिन मरी नहीं
मरती
तो डर मर जाता

जब बंदूक उठी
मैंने हाथ उठाया
डर ने असंतुलन में
सम बैठाया

आंखों से चीखी
पहाड़ को पत्थर
खाई को नाली-सा फ्लाँग
डर को डराया

तभी तो
मरकर भी मरी नहीं मैं
मुट्ठी बन
बंधी रही मैं ।

क्यों कर

कागज की नाव भी
तैरती तो है
जब तक है

डूब कैसे जाऊं

हाथ-पांव साबुत हैं
चलाऊं छटपटाऊंगी
गला घोटते हाथों को
गरदन तक ले जाऊंगी ।

● इन्दु जैन

— ए-१, प्रवक्ता निवास
इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली-५४

कुछ रोचक प्रसंग

● डॉ. ऋतुपर्ण शर्मा

भारतीय साहित्य में ऐसे अनेक प्रसंग मिलते हैं जो हमारे जीवन में प्रेरणा-स्रोत बन जाते हैं और अनजाने ही हमें एक ऐसा संदेश भी दे जाते हैं । वे हमारे संस्कारों को परिष्कृत भी करते हैं । एक ऐसा ही प्रसंग स्वामी विवेकानंद के संदर्भ में आज भी हमें भावविह्वल कर जाता है । बात है उस समय की, जब विवेकानंद जी को शिकागो की धर्मसभा में भारतीय संस्कृति पर बोलने के लिए आमंत्रित किया गया था । उल्लेखनीय है कि स्वामी विवेकानंद भारत के प्रथम संत थे जिन्हें अंतरराष्ट्रीय सर्वधर्म सभा में प्रवचन देने हेतु आमंत्रित किया गया था ।

स्वामी विवेकानंद के गुरु रामकृष्ण परमहंस का देहांत हो चुका था । इसलिए इस महती यात्रा पर जाने से पूर्व उन्होंने गुरु मां शारदा (स्वामी रामकृष्ण परमहंस की धर्मपत्नी) से आशीर्वाद लेना आवश्यक समझा । वे गुरु मां के पास गये, उनके चरण स्पर्श किये और उन्हें अपना मंतव्य बताते हुए बोले, "मां, मुझे भारतीय संस्कृति पर बोलने के लिए अमरीका से आमंत्रण मिला है । मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए ताकि मैं अपने प्रयोजन में सफल हो सकूं ।"

मां शारदा ने अधरों पर मधुर स्मित लाते हुए कहा, "आशीर्वाद के लिए कल आना । मैं पहले देख लूंगी कि तुम्हारी पात्रता है भी या नहीं ? और बिना सोचे-विचारे मैं आशीर्वाद नहीं दिया करती हूं ।"

विवेकानंदजी सोच में पड़ गये, मगर गुरु मां के आदेश का पालन करते हुए दूसरे दिन फिर उनके सम्मुख उपस्थित हो गये । मां शारदा रसोईघर में थीं । विवेकानंदजी ने कहा, "मां मैं आशीर्वाद लेने आया हूं ।"

"ठीक है आशीर्वाद तो तुझे मैं सोच-समझकर दूंगी । पहले तू मुझे वो चाकू उठाकर दे दे मुझे सब्जी काटनी है ।"

मां शारदा ने कहा । विवेकानंदजी ने चाकू उठाया और विनम्रतापूर्वक मां शारदा की ओर बढ़ाया । चाकू लेते हुए ही मां शारदा ने अपने स्निग्ध आशीर्वचनों से स्वामी विवेकानंद को नहला-सा दिया । वे बोलीं, "जाओ नरेन्द्र मेरे समस्त आशीर्वाद तुम्हारे

साथ हैं । तुम अपने उद्देश्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त करोगे । तुम्हारी सफलता में मुझे कोई संदेह नहीं रहा है ।''

स्वामीजी हतप्रभ । उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि गुरु मां के आशीर्वाद और मेरे चाकू उठाने के बीच ऐसा क्या घटित हो गया ? शंका निवारण के प्रयोजन से उन्होंने गुरु मां से पूछ ही लिया, ''आपने आशीर्वाद देने से पहले मुझसे चाकू क्यों उठवाया था ?''

''तुम्हारा मन देखने के लिए ।'' मां शारदा ने कहा, ''प्रायः जब भी किसी व्यक्ति से चाकू मांगा जाता है तो वह चाकू की मूठ अपनी हथेली में समो लेता है और चाकू की तेज फाल दूसरे के समक्ष करता है । मगर तुमने ऐसा नहीं किया । तुमने चाकू की फाल अपनी हथेली में रखी और मूठवाला सिरा मेरी तरफ बढ़ाया । यही तो साधु का मन होता है, जो सारी आपदा को स्वयं झेलकर भी दूसरे को सुख ही प्रदान करना चाहता है । वह भूल से भी किसी को कष्ट नहीं देना चाहता । अगर तुम साधुमन नहीं होते तो तुम्हारी हथेली में भी चाकू की मूठ होती, फाल नहीं ।''

('प्रभु के द्वार' से)

कमला भाभी, तुमने हमारे प्रांत को धीर आदर्श का जो वरदान दिया है, वह तुम्हारे ही अनुरूप है । मोतीलाल नेहरू की पुत्रवधू और जवाहरलाल की सहधर्मिणी हे देवि, तुम महान हो । त्याग में तुम्हारा समकक्ष तो हमें नजर नहीं आता । तुम वेदनामयी, सेवामयी, तपमयी, मूर्तिमयी सुघड़ता हो । हमारे सूबे पर तुमको नाज है । तुम जवाहर लाल की शक्ति हो । हमें याद है उन दिनों जब हमारे सूबे ने और मुल्क ने असहयोग का अमल-मंत्र सीखा था, तब तुमने इस सूबे की महिलाओं में देश-भक्ति और त्याग की अनुकरणशीलता का भाव उत्पन्न किया था । तुम्हारे उदाहरण से इस सूबे का महिला-मंडल बहुत अंशों तक उत्प्राणित और प्राणोदित हुआ है । हम लोगों का प्रणाम स्वीकार करो, देवि, निराशासिकता कुपथ में अश्व-रेखा-सी सुअंकित । वायु-कंपन में धवल-से हिम-शिखर-सी अकंपित । आज प्राणायाम का आखिरी निःश्वास था यह ? देवि इतने दिनों का क्या यहां आवास था यह ?

(बालकृष्ण शर्मा नवीन)

मान लीजिए हमने हस्तक्षेप न किया होता तब भी बांगलादेश को आजादी मिलती, ऐसा मेरा विश्वास है । फिर मुझे एहसास होने लगा कि बांगलादेश मेरे लिए दुखदायी सिद्ध होगा । मेरा मतलब है कि बांगलादेश यह कभी भी याद नहीं रखेगा कि किसी देश ने उसके लिए कुछ किया था, और मैं तो समझती हूं कि दुनिया में शायद ही

कोई ऐसा देश होगा जो इस तरह जीतने के बाद कहे कि "लो, अब तुम्हें हम सब कुछ सौंपकर जा रहे हैं । हमें अब तुम्हारे मामले में बिलकुल दखल नहीं देता है और न हमें तुमसे कुछ बदले में लेने की इच्छा है ।"

(इंदिरा गांधी)

बापू के सामने दिल खोलकर बात लिखने में हम लोगों को कोई संकोच नहीं होता था । एक बार मैंने उन्हें अपने दुराचारपूर्ण असंयत जीवन का कच्चा चिट्ठा लिखकर दिया था और साथ ही यह भी लिखा था कि इसे पढ़कर आपके हृदय को धक्का लगेगा । मेरे पत्र के उत्तर में बापू ने लिखा था, हृदय को धक्का नहीं लगा । आखिर तो आदमी जो कुछ कर सकता है वही करे, मेरी सलाह है कि तुम शादी कर लो, उससे तीन काम सिद्ध होंगे और 'विशाल भारत' का काम भी ठीक चलेगा । बापू का वह पत्र राष्ट्रीय अभिलेखागार में सुरक्षित है । एक चिट्ठी में बापू ने लिखा था जो आदमी अपनी गलती को महसूस करता है और उसे दूर करने का प्रयत्न करता है तो उसका आधा काम तो बन गया, इतना निराश होने का कोई कारण नहीं है ।

शाम के वक्त हम लोग बापू के साथ भोजन के लिए बैठे । श्रीमती सरोजिनी नायडू की पुत्री पद्मजा नायडू भी साथ बैठी थीं । उनके लिए दक्षिण के भोजन का प्रबंध था । उनके थाल में कॉफी का कप भी था । मुझे मजाक सूझा और मैंने कहा, "बापू मेरी वोट बढ़ रही है पद्मजा जी कॉफी पीती हैं, 'बा' भी चाय पीती हैं और मैं भी चाय पीता हूं ।" बापूजी ने कहा, बुरी चीजों के प्रचार के लिए वोट की जरूरत नहीं पड़ती । वे तो अपने आप फैलती है ।

(बनारसी दास चतुर्वेदी)

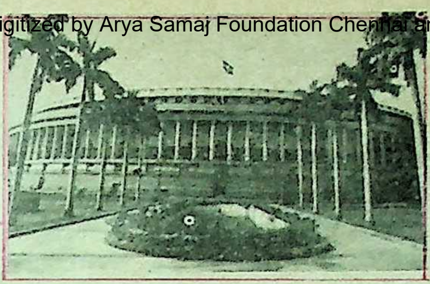

राजनीति का सबसे आपत्तिजनक शब्द

● हिमांशु शेखर

धर्मनिरपेक्षता की संवैधानिक अवधारणा क्या भ्रामक है और उसका व्यवहार अदूरदर्शितापूर्ण ? यह प्रश्न सभी को उद्वेलित कर रहा है । जब सन १९४९ ई. के २६ नवम्बर को भारतीय संविधान के प्रारूप को विधायिका सभा में औपचारिक स्वीकृति मिली, तो उस समय उसकी उद्देशिका में 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द नहीं था । इस शब्द को संविधान में सर्वप्रथम सन १९७६ ई. में बयालिसवें संशोधन अधिनियम के अंतर्गत जोड़ा गया । अनेक व्यक्तियों ने इसे एक आयातित अवधारणा (कांसेप्ट) के रूप में देखा और इस पर अपनी तीव्र प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं । धर्मनिरपेक्षता पर राष्ट्रीय बहस का दौर अभी भी समाप्त नहीं हुआ है ।

यह एक इतिहास सिद्ध सत्य है कि संस्कृति का आयात नहीं हो सकता । ऐसा लगता है कि संविधान में 'सेक्यूलर' शब्द जोड़नेवालों को पाश्चात्य विचारधारा के समारोह ने एक ऐसी अपसंस्कृति के आयात के लिए उत्प्रेरित किया होगा, जो न केवल शत-प्रतिशत विदेशी थी, प्रत्युत जिसका पारंपरिक आधार भी भारतीय संस्कारों के सर्वथा विरुद्ध है । यही कारण है कि संविधान की उद्देशिका में प्रयुक्त होते ही 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द अनगिनत प्रश्नों के घेरे में घिर गया । ये प्रश्न अभी भी अनुत्तरित हैं ।

'सेक्यूलरिज़्म' शब्द की संरचना

कुछ विद्वानों के अनुसार 'सेक्यूलरिज़्म' शब्द की संरचना १८५१ ई. में जॉर्ज जैकब होलियोक ने की थी, परंतु वास्तविकता यह है कि धर्मनिरपेक्षता की राजनीतिक अवधारणा का उदय बहुत पहले १६४८ ई. में ही हो गया था जब गिरजाघरों की संपत्ति को राजकीय कोष में हस्तांतरित किया जा रहा था । धर्मनिरपेक्षता की

इस विचारधारा को १७९८ ई. में काफी बल मिला, जब फ्रांस की सरकार ने वहां की राष्ट्रीय विधायिका सभा में धार्मिक स्थलों में रखी हुई संपत्ति को अपने अधिकार में कर लिया । ऐसा विचार भी प्रगट किया गया है कि धर्मनिरपेक्षता के आंदोलन की वास्तविक शुरुआत लुई ब्लॉक, कुसूली तथा नादौ के समवेत प्रयास से १८५३ ई. में हुई । इस आंदोलन को होलियोक, चार्ल्स ब्राडलॉफ और सबसे बढ़कर वैज्ञानिक समाजवाद के संस्थापक कार्ल मार्क्स ने एक व्यापक आयाम प्रदान किया ।

धर्मनिरपेक्षता और निरीश्वरवाद

मार्क्स के परवर्त्ती विचारकों तथा जननेताओं ने, जिनमें ब्लादीमीर इलिच उलियानोव का नाम सर्वोपरि है, इस वैचारिक आंदोलन को विस्तृत जनाधार प्रदान किया जो पाश्चात्य देशों में अभी तक बना हुआ है । धर्मनिरपेक्षता के इन समर्थकों में अधिकांश निरीश्वरवादी थे । लेनिन ने तो यहां तक घोषणा कर दी थी कि जो धर्म की वकालत करेगा, वह रूस की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य नहीं बन सकता ।

लेनिन की ही तरह चार्ल्स ब्राडलॉफ की भी यह दृढ़ मान्यता थी कि कोई भी व्यक्ति पूर्ण रूप से निरीश्वरवादी हुए बिना धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को व्यवहार में नहीं ला सकता । इस प्रकार कालक्रम में धर्मनिरपेक्षता और नास्तिकता की अवधारणाएं एक ही सिक्के के दो पहलुओं के रूप में उभर कर सामने आयीं ।

धर्मनिरपेक्षता और नेहरू

यद्यपि भारतीय संविधान में 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द का प्रयोग स्वतंत्रता प्राप्ति के काफी बाद किया गया, परंतु एक अभिनव राजनीतिक विचार के रूप में जवाहरलाल नेहरू ने इसे बहुत पहले स्वीकार कर लिया था और वे चाहते थे कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर उभरे और संपूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर ले । इसके पीछे उनका उद्देश्य था पड़ौसी नवनिर्मित देश पाकिस्तान तथा अन्य राष्ट्रों के धार्मिक कठमुल्लापन का विरोध और नवीन वैज्ञानिक परिदृष्टि के अनुकूल एक वैचारिक परिवेश का निर्माण ताकि कहीं भी धर्म, जाति, वंश, रंग, लिंग और जन्म-स्थान के आधार पर मानव-मानव में भेदभाव नहीं किया जा सके । धर्मनिरपेक्षता आंदोलन का समर्थन करने के पीछे उनका एक उद्देश्य वैश्विक स्तर पर उदारतावादी लोकतांत्रिक परंपरा को प्रोत्साहित करना भी था ।

यद्यपि नेहरू महात्मा गांधी के विचारों के अनुयायी थे और गांधीजी ने उन्हें ही अपने एकमात्र राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार किया था, परंतु धर्मनिरपेक्षता-जैसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर दोनों के दृष्टिकोण एक-दूसरे के सर्वथा विपरीत थे । गांधीजी राजनीति के

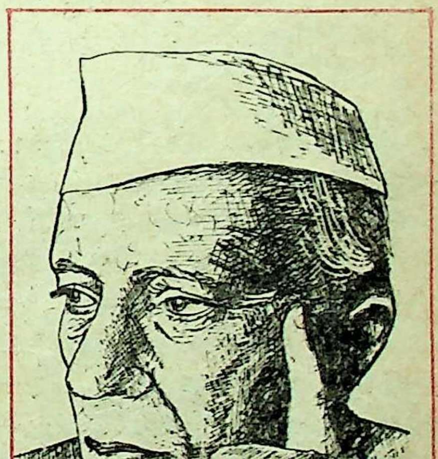

> **"मैंने अपने अल्प अनुभव से यही सीखा है कि धर्म में जो दोष या त्रुटियां लोग देखते हैं उसके लिए धर्म उत्तरदायी नहीं है, उसमें धर्म का दोष नहीं है; कुत्सित-कुटिल राजनीति यदि धर्म के स्थान का अपहरण कर ले, तो यह दोष किसका है ?"**

लिए धर्म को अनिवार्य मानते थे । उन्होंने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कई बार कहा था कि वे धर्महीन राजनीति के विरुद्ध हैं और उसका कभी समर्थन नहीं कर सकते ।

सर्वधर्म समभाव

गांधीजी सभी धर्मों का आदर करते थे । उनका यह विचार ही बाद में सर्वधर्म समभाव के रूप में उभरा और प्रचारित हुआ । नेहरूजी सर्वधर्म समभाव के पक्षधर थे, परंतु उनकी ऐसी धारणा थी कि भारत के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में धर्म बाधक है । इसीलिए उन्होंने राजनीति में धर्म का निषेध किया । उनके आलोचकों के अनुसार उन्होंने विभिन्न धर्मों का, विशेषकर हिंदू-धर्म का विशद अध्ययन किये बिना ही, आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा के प्रभाव में आकर भारतीय जीवन दर्शन के आधारभूत प्रामाणिक मूल्यों की उपादेयता की उपेक्षा कर दी और यह मान लिया कि उदात्त धार्मिक चेतना के बिना ही वे एक नये आत्म-निर्भर तथा खुशहाल भारत के निर्माण के लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे ।

सत्य यह है कि कोई भी स्वस्थ राजनीति सच्ची धार्मिक चेतना के बिना वांछित परिणाम उत्पन्न नहीं कर सकती । धर्मनिरपेक्ष राजनीति का अंततोगत्वा धर्महीन राजनीति में रूपांतरित हो जाना ध्रुव है । भारत में ऐसा ही हो रहा है ।

धर्म सदैव जोड़ता है !

सही मायने में जो धार्मिक है वह कुकर्मी नहीं हो सकता । सारे गर्हित कर्म वे लोग ही करते हैं जिनके लिए नैतिकता का कोई महत्त्व नहीं होता । धर्म बहुत ऊंची चीज है । संसार में अगर कुछ भी अच्छा है तो वह धर्म के कारण ही है । इसलिए 'धर्मनिरपेक्षता' का कोई औचित्य नहीं है । धर्म के नाम पर अगर कभी सांप्रदायिक दंगे होते हैं तो इसमें दोष धर्म का नहीं, बल्कि धर्म के उन 'ठेकेदारों' का है जो या तो धर्म को ठीक-ठाक नहीं समझते अथवा उसको समझते हुए भी उसके नाम पर लोगों को भड़काते हैं ताकि उनके राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति हो सके । भारत-विभाजन के दौर में जितनी

हत्याएं, लूट-खसोट और बलात्कार हुए उनकी आज्ञा न तो इसलाम देता है और न हिंदू-धर्म । धर्म तो वही है जो इनसानों को जोड़ता है, जो तोड़ता है वह धर्म नहीं हो सकता ।

अवधारणा के दोष

'धर्मनिरपेक्षता' के वैधिक प्रावधान में दो गंभीर दोष हैं । पहली बात यह है कि अंगरेजी के 'सेक्यूलर' शब्द का सही भाषांतरण 'धर्मनिरपेक्षता' नहीं है । 'सेक्यूलरिज़्म' एक संकीर्ण अवधारणा है जबकि 'धर्म' एक अत्यंत व्यापक अवधारणा है । 'सेक्यूलर' का शब्दकोशीय अर्थ केवल राज्यसत्ता से जुड़ा हुआ है जबकि 'धर्म' शब्द, जो कुछ सृष्टि में विद्यमान है, उससे जुड़ा हुआ है । 'धर्म' का अभिप्रेत अर्थ है धारण करनेवाला । धर्म वह दिव्यशक्ति है जिस पर यह संपूर्ण जागतिक सत्ता आधृत है ।

'धर्मनिरपेक्षता' का दूसरा दोष यह बताया जाता है—उन नैतिक मूल्यों की विधिक उपेक्षा जिनके बिना स्वच्छ प्रशासन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । धर्म हमें गलत मार्ग पर जाने से रोकता है । इसीलिए भ्रष्ट नंदवंश का उच्छेद करनेवाले महामति चाणक्य ने कहा था— **"न कदाचिदपि धर्मं निषेधयेत्"** अर्थात किसी भी दशा में धर्म का निषेध न करें और न करायें । धर्म तो राष्ट्र के अभ्युदय का अमोघ साधन है— **"यतोभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः ।"** यदि धर्म की रक्षा की जाती है तो धर्म भी अपनी रक्षा करनेवाले की निश्चित रूप से रक्षा करता है । इसके विपरीत यदि धर्म का नाश किया जाता है तो धर्म भी वैसा करनेवाले को नष्ट कर देता है—*'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ।'*

धर्म के दस लक्षण

हिंदू-धर्म के आदि प्रवक्ता मनु ने धर्म की अवधारणा को पूर्ण स्पष्ट करते हुए कहा है कि धर्म के दस लक्षण हैं—धैर्य, क्षमा, अनुत्तेजना, चोरी न करना, शरीर और मन की पवित्रता, इंद्रियों को काबू में रखना, उत्कृष्ट मनीषा, विद्या, सच्चाई तथा क्रोध न करना । क्या कोई भी सरकार धर्म के इन दस लक्षणों के प्रति उपेक्षा की नीति अपनाकर जनता का कल्याण कर सकती है ? धर्म का एक लक्षण है, चोरी न करना । क्या सरकार चोरी के अपराध के प्रति निरपेक्ष होकर समाज को सुरक्षित और सुखी रख सकती है ? अगर नहीं तो 'धर्मनिरपेक्षता' कागज के फूल की तरह संविधान के गुलदस्ते में लगा हुआ उसकी कृत्रिम शोभा ही बढ़ा सकता है, सत्य और न्याय की सुगंध नहीं फैला सकता ।

धर्मनिरपेक्षता के समर्थक यह भ्रम पाल रहे हैं कि राजनीति को धर्म से जोड़ देने पर समाज में उपद्रव होंगे और राष्ट्र आगे नहीं बढ़ेगा । इस परिप्रेक्ष्य में विवेकानंद का विचार ध्यान देने योग्य है—

"मैंने अपने अल्प अनुभव से यही सीखा है कि धर्म में जो दोष या त्रुटियां लोग देखते हैं उसके लिए धर्म उत्तरदायी नहीं है, उसमें धर्म का दोष नहीं है; कुत्सित-कुटिल राजनीति यदि धर्म के स्थान का अपहरण कर ले, तो यह दोष किसका है ?"

केस गळाणे? अकाली पिकणे? कोंडा होणे?

केसांची समस्या?

हे केसांचे रोग नाहीतच, ही केवळ लक्षणे आहेत.
ह्या समस्येच्या संपूर्ण उपचारासाठी डोक्याला
लावण्याचे लोशन तसेच पोटात योग्य औषध घेणे
अत्यंत आवश्यक आहे.

डॉ. सरकार

कोंडा विरहीत सुंदर काळे दाट केस, अर्निकाप्लस ट्रायोफरचा संदेश.
अकाली पिकणे, गळणे आणि पोटांचे विविध विकार,
निरामय होऊन सुंदर नवीन केसांची वाढ,
अप्रतिम नितळ, मोहक आणि आकर्षक कांती उपहार,
हाच एकमेव दुष्परीणाम विरहीत होमिओपॅथीचा उपचार.

जगात प्रथमच

Allen's
ArnikaPlus
TRIOFER
60 ml
ALLEN
Allen's
HAIR VITALIZER
ALLEN

केसांच्या संपूर्ण उपचारासाठी
डॉ. सरकार यांची "संशोधनावर आधारीत
तेलविरहीत हेअर लोशन अर्निकाप्लस
आणि पोटात घेण्यासाठी योग्य होमोओ हेअर टॉनिक,
-ट्रायोफर टॅबलेट्स एक नवीन वेष्टनात."
पॅकींग : ६० मि.ली. आणि १०० मि.ली.

अर्निकाप्लस-ट्रायोफर
ट्रिपल ॲक्शन हेअर व्हायटलायझार
केसांच्या समस्यानिवारण साठी अनुभवलेले आणि प्रमाणित केलेले होमिओ औषध

औषध घेण्याची नियमावली :
वेष्टणात उपलब्ध

सिव्होसिन निर्मिती करणाऱ्या कंपनीच्या
सहयोगी संस्था Allen
यांचे होमिओ उत्पादन.
ॲलन लॅबोरेटरीज प्रा. ली.
ॲलन हाऊस, २२४/एच, माणीकतल्ला मेन रोड,
कलकत्ता-५४, फोन : ३६-३०९६

Emami Allen allen's india Dr. Sarkar Group
ॲलोपाथी
होमोओपाथी
आणि आयुर्वेदीक
औषधीचे निर्माते :
त्यांची प्रबल वढ्ळ मिळतात आपला आरोग्य आणि विश्वास.

Marketed by :
allen's india
Allen's India
Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. India

C & F AGENTS : H. V. ENTERPRISE, MAYO HOSPITAL ROAD, NAGPUR-440018 PH : 720688
SHAMA TRADING CORPORATION JAYA TALKIES BLDG., S. V. ROAD, BORIVLI (WEST) BOMBAY-400 092 TEL : 8054857

मिथ्या प्रचार

भारतीय संविधान के संशोधित अधिनियम में 'सेक्यूलर' शब्द का प्रतिरोपण करनेवालों का कहना है कि भारतीय गणराज्य पंथनिरपेक्ष या संप्रदाय निरपेक्ष है, धर्मनिरपेक्ष नहीं, परंतु यह एक मिथ्या प्रचार है । वोट की राजनीति के तहत सरकार संप्रदाय विशेष के दबाव में आकर संविधान में प्रदत्त समानता के सिद्धांत का उल्लंघन करती रही है ।

धर्म ही नीतियों का स्रोत है और नीतियां ही नेत्र हैं । आज की राजनीति अंधी है, क्योंकि वह नीति-शून्य है ।

'सेक्यूलरिज़्म' का शब्दार्थ

'सेक्यूलरिज़्म' का शब्दकोशीय अर्थ है—'जीवन से धार्मिक तत्वों का उन्मूलन ।' 'सेक्यूलर' शब्द का हिंदी रूपांतरण 'पंथनिरपेक्ष' हो ही नहीं सकता । 'सेक्यूलर' शब्द का मूल अर्थ है सांसारिक, क्षणभंगुर, अथवा पार्थिव । इसका अर्थ 'संप्रदाय-निरपेक्षता' नहीं है ।

अनेक व्यक्ति संविधान में प्रतिरोपित शब्द 'सेक्यूलर' का अर्थ सर्वधर्म समभाव करते हैं । संविधान के परिक्षेत्र में सर्वधर्म समभाव व्यवहार्य नहीं है । डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने धर्मनिरपेक्ष राज्य के समर्थन में कहा था कि ऐसे राज्य में किसी भी व्यक्ति के साथ, उसके धर्म के कारण, किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाएगा, परंतु भारत में संप्रदाय विशेष के कठमुल्लाओं के कारण महिलाओं को समानता के मौलिक अधिकार से वंचित किया गया है । यह सर्वविदित है ।

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि धर्म को व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित रहना चाहिए, उसे राज्य के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए । यह भी एक थोथी दलील है । भारत में ऐसा कभी नहीं हुआ । यहां अनादिकाल से धर्म व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्तरों पर एक रहा है । आंतरिक आचार और बाह्याचार के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती, क्योंकि वैसा करने से मनुष्य का व्यक्तित्व ही द्विभाजित हो जाएगा । द्विभाजित व्यक्तित्व न तो परिवार के लिए कल्याणकारी होता है, न राष्ट्र के लिए ।

धर्म आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है । यदि राजनीति विज्ञान है तो वह धर्म के बिना अंधी है । धर्म ही नीतियों का स्रोत है और नीतियां ही नेत्र हैं । आज की राजनीति अंधी है, क्योंकि वह नीति-शून्य है । इसलिए हमें धर्मनिरपेक्षता के मोहपाश को तोड़कर भारत में फिर से प्रबल धार्मिक चेतना को उत्पन्न करना होगा और उसे अपने गणराज्य की संकल्पना का मूलाधार बनाना होगा ।

—२०४, ग्रेप अपार्टमेंट, पूर्वी आनंदपुरी,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-८००००१

कहानी

पौष के ठिठुरते जाड़े में

● कर्त्तार सिंह दुग्गल

पौष के ठिठुरते जाड़े में लगातार एक सप्ताह से झड़ी लगी हुई थी । गलियां कीचड़-कीचड़ थीं । करमो के आंगन में जगह-जगह पानी अटा पड़ा था । कई वर्षों से लिपा-पुता जो नहीं था । उधर सांझ ढली और इधर पुरवैया चलने लगी । बरफ-जैसी ठंडी । काट-काट खाती । सीटियां बजाती दरो-दीवार चीरती चली जाती । उसका मर्द अभी गुरुद्वारे से नहीं लौटा था । कंबल की बुक्कल मारकर, 'रहरास' सुनने के बहाने दीवार से पीठ सटाये ऊंघ रहा होगा । कई बार तो खर्राटे लेने लगता और 'भाई साहब' को उठकर उसे झंझोड़ना पड़ता । और फिर लोग-बाग उसे घर भेज देते । गुरुद्वारे से चलते समय उसकी छड़ी उसके हाथ में थमा देते । अंधेरे में उसे दिखायी नहीं देता था । रतौंधा जो था । उम्र भी तो खासी ढल चुकी थी ।

इधर करमो से आग नहीं सुलगते बन रही थी । लकड़ियां जो गीली थीं । लकड़ियां गीली, उपले भीगे हुए । आग जले तो कैसे ? फूंके मार-मारकर करमो की आंखों में से जैसे छम-छम पानी बह रहा था । करमो सोचती, यह आंसू बैकड़ झाड़ी के ईंधन के थे जो आज शाम उसने चूल्हे में झोंका था । लेकिन नहीं, असल बात और थी ।

कोसे-कोसे, मिर्चों की भांति, कोरों में चुभ रहे आंसू, बुढ़ापे में करमो की बेबसी के थे । बेटियां ब्याह कर अपने-अपने घर बस गयी थीं और बेटे 'जत्थेदारों' की गिरफ़्त में आ गये थे । कभी कोई गांव में आ धमकता, कभी कोई । एक-एक करके उसके चारों 'लाल' ले गये थे । इधर लड़कों की मसें भीगतीं, उधर वे और की और बातें करने लगते । नये-नये शगूफे खिलाने लगते । मियां-बीवी उनके मुंह की

मुक्खा यूं बंती की ओर देख रहा था । उसका हाथ वैसे का वैसा रिवॉल्वर की हत्थी के साथ खेल रहा था कि कीर्तन समाप्त हो गया । साध-संगत अरदास के लिए उठ खड़ी हुई थी । हाथ जोड़े अरदास के लिए खड़ी मुक्खे को अब बंती नजर नहीं आ रही थी । उसके सामने गांव के श्रद्धांलुओं की एक दीवार-सी खड़ी थी ।

तरफ देखते रह जाते और वे आन की आन में गायब हो जाते । और फिर किसी की गोलियों से छलनी लाश मिलती और किसी की वह भी हाथ न आती । यही सुनने में आता कि फलां शहीद हो गया है ।

करमो की किस्मत में बैन करना ही लिखा था । बिलबिलाती, बाल नोचती, आंगन में बैठकर माथा पीटती, खुद रोती, औरों को भी रुलाती रहती । किस-किसके लिए वह नहीं रोयी थी । हंसता-खेलता खुशियां लुटाता परिवार, आज करमो का आंगन एक हुजरे की तरह भायं-भायं करता था । चार बेटे और चार बेटियां जन कर, आठ बार प्रसूति की पीड़ा झेलकर, करमो आज अकेली पड़ी थी । बेहाल !

सबसे बड़ा संताप करमो को 'मुखे' की बहू का था । कैसे अपने गहने-लत्ते समेटकर घर से निकल गयी थी । उसके घरवाले की तो बुरी खबर तक नहीं आयी थी । कहने लगी—जब इतने दिन लौटा नहीं तो कहीं मर-खप गया

होगा । बाकी जो इस कांड में झोंक दिये गये थे, उसने भी कोई गोली ठंडी कर ली होगी । अगर जीता होता तो कभी फेरा न डालता, कोई सुख-संदेश ही भेजता । उसके हाथों की मेंहदी भी अभी मैली नहीं हुई थी कि बेचारी को बिलखता हुआ छोड़ गया ‘कि मुझे संतजी ने बुला भेजा है कि मेरा वह इंतजार कर रहे हैं । और आज दस बरस होने को आये थे । उसकी कोई खैर-खबर नहीं थी । बेचारी लड़की का कोई कुसूर नहीं था ।

कुसूर क्यों नहीं था ? वह बेचारी कहां से हो गयी ? बदजात, सब कुछ समेटकर किसी खसम के साथ निकल गयी । चलते समय जैसे घर में झाड़ू फेर गयी हो । न जाने किसके आंगन में जा बैठी थी । अब तो उसने किसी के लिए दो-चार पिल्ले भी जन दिये होंगे । “मुझे तो उसका चलन पहले दिन से ही छनालों-जैसा लगता था । एक नजर मैंने देखा और मेरे मन ने यह कहा, यह बसनेवाली शै नहीं । और वही बात हुई । मुक्खे का अकाल तख्तवालों के जाना तो बहाना ही बन गया । कहकर जाती कि मैं पानी भरने जा रही हूं, और न जाने कहां-कहां झक मारती रहती ! कहकर जाती कि मैं गुरुद्वारे माथा टेक आऊं, और न जाने किसके साथ कुकर्म करती रहती । कहकर जाती कि मैं खेत-खलिहान देख आऊं, और पता नहीं किसके साथ जाकर मुंह काला करती रहती । गश्ती न हो तो, कमजात ! अच्छा ही हुआ उससे पिंड छूटा ।”

“लेकिन अगर आज वह यहां होता तो बुढ़ापे में यूं मुझे फूंकें मार-मारकर आग तो नहीं सुलगानी पड़ती । दो रोटियों के लिए इतना

झंझट तो न करना पड़ता । हाय मुई बंती तेरा कुछ न रहे ।”

करमो गीले ईंधन के साथ जूझते यूं बेहाल हो रही थी कि बाहर आंगन में उसे छड़ाप-छड़ाप किसी के कदमों की आवाज सुनायी दी । उसने सोचा, उसका मर्द गुरुद्वारे से लौटा होगा, मुक्खे का बापू । चाहे सात बेटे-बेटियां उसने और जन्मे थे, लेकिन अपने मर्द को वह हमेशा अपने पलौठी के बेटे के नाम के साथ ही याद करती थी । उसका गुरुमुख सिंह ।

“यह बत्ती क्यों नहीं जलायी ? ऊपर से रात हो गयी है ।” हैं, यह किसकी आवाज थी ?

“बेबे, पाय लागन ।”

यह तो उसका मुक्खा था ! मुक्खा कैसे हो सकता है ? और करमो ने आंखें फाड़-फाड़कर अंधेरे में देखा । एक अंधेरा, दूसरे चूल्हे का धुआं ! मुक्खा नहीं हो सकता । उसका सिर फिर गया था । वह कोई सपना देख रही थी ।

“बेबे, मैं मुक्खा हूं ।” और अब वह जूते उतारकर रसोई में आ घुसा, और अगले क्षण करमो ने अपने जाये को बाहु-पाश में ले लिया ।

“हाय, मेरे लाल तू कहां खो गया था ?” कोई पांच मिनट बाद जब करमो सचेत हुई, वह मुक्खे के कद-बुत पर हाथ फेरती उससे पूछ रही थी । उसे तो अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वह मुक्खा था । मुक्खे को तो वह कब

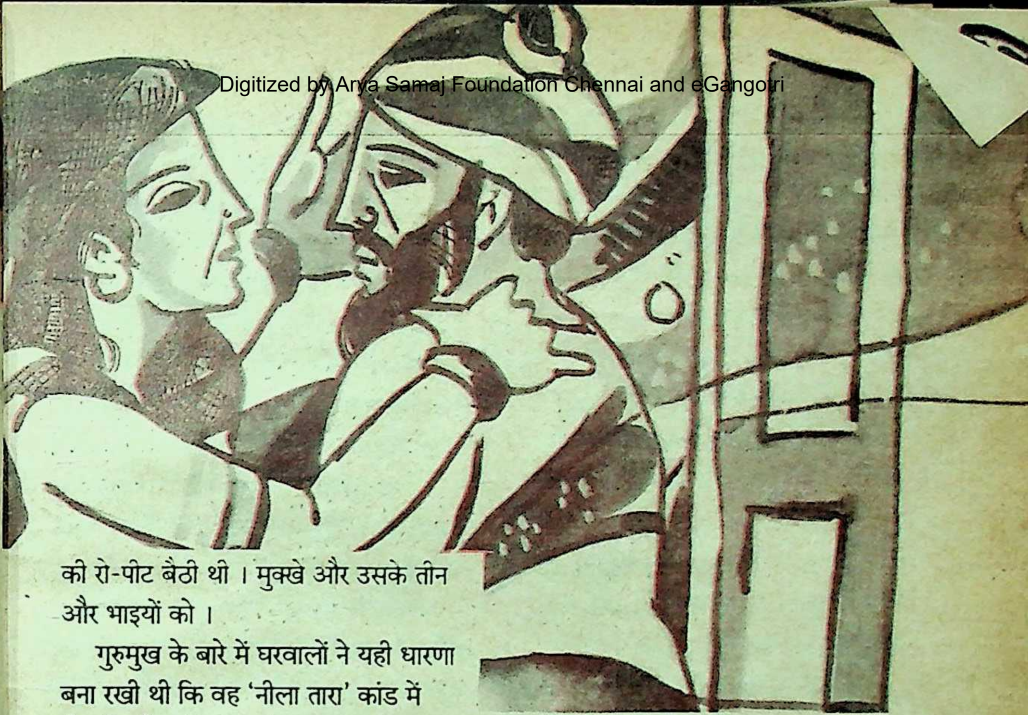

की रो-पीट बैठी थी । मुक्खे और उसके तीन और भाइयों को ।

गुरुमुख के बारे में घरवालों ने यही धारणा बना रखी थी कि वह 'नीला तारा' कांड में सैकड़ों और यात्रियों के साथ शहीद हो गया था । पुलिस के कागज-पत्रों में भी यही दर्ज था । बेशक उसके बाकी तीन भाई, कोई पुलिस के साथ झपट में मारा गया था और कोई आतंकवादियों के आपसी बैर का शिकार हो गया था । उसके माता-पिता ने उसे बताया कि उसके दो भाइयों की तो लाशें मिल गयी थीं, तीसरे का बस नाम ही अखबारों में छपा था । उसके मारे जाने की सूचना ही रेडियो पर सुनी गयी थी ।

"और बंती ?" अगले दिन मुक्खा अपनी पत्नी के बारे में पूछ रहा था । एक क्षणभर के लिए करमो खामोश हो गयी । जैसे उसकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गयी हो । फिर संभलते हुए वह बोली, वह भी इस मार-धाड़ में मर-खप गयी । जब उसका मर्द गुरुद्वारे से लौटा था तो पति-पत्नी ने योजना बनायी थी कि वे मुक्खे को उस कमजात औरत की करतूत के बारे में नहीं बताएंगे । और यही बात उन्होंने अपने अड़ोस-पड़ोस तथा गांववालों को समझा रखी थी । और हुआ भी ऐसा ही था । छपार के मेले पर गयी वह लौटी नहीं थी । वैसे धरती फटी और उसमें वह धंस गयी थी । दिन ही कुछ इस तरह के थे । बुरी हवा चल पड़ी थी । लोग मक्खी-मच्छरों की तरह एक-दूसरे को काटते-पीटते रहते । गोलियां तो यूं तड़-तड़ चलती थीं, जैसे दीवाली के पटाखे छूटते हों । किस-किसको वह याद करता ? कई दिनों तक मुक्खा संताप के उन दिनों की झूठी-सच्ची कहानियां सुनता रहा । कभी अपने किसी भाई के लिए रोता, कभी किसी को याद करके आंसू बहाता ।

लेकिन वह स्वयं इतने दिन कहां रहा था ? न कोई सुख-संदेश, न कोई चिट्ठी-पत्री ? दस

वर्ष कोई थोड़ा समय होता है ? पंजाब में **उथल-पुथल हो गयी थी ।**

जैसे मुक्खा अपने उन दिनों की गुत्थी नहीं **खोल** रहा था, कुछ उसी तरह उसकी दुलहन **बंती के** बारे में हर कोई सच्चाई को छिपाता जा रहा था । क्या घरवाले, क्या अड़ोस-पड़ोसवाले, क्या गांववाले, सबने साजिश कर रखी थी ।

फिर सप्ताह-दस दिन, और मुक्खा भांप गया कि दाल में कहीं काला जरूर है । जब बंतो का जिक्र आता, हर कोई क्षणभर के लिए जैसे चुप्पी साध लेता हो । एक क्षणभर की खामोशी जिसमें वे तय करते कि उसे क्या कहना है, कैसे कहना है ?

इस तरह के खदशे उसे परेशान कर रहे थे कि पुलिसवाले यह सुनकर कि दस वर्ष के बाद वह कहीं से आ प्रकट हुआ है, उसे तफतीश के लिए घर से पकड़ ले गये । गांव का नंबरदार अपने तौर पर पुलिस को समझाता रहा । गांववाले एक-एक करके जामिन होते रहे, लेकिन पुलिसवाले बार-बार यही दुहराते कि वे दो-चार दिन मुक्खे को रखकर गांव लौटा जाएंगे ।

दो-चार दिन कहां, थानेवालों ने पूरे पंद्रह दिन मुक्खे को अपने पास रखकर उसका बुरा हाल कर दिया । उससे यह जानने की कोशिश करते रहे कि वह इतने बरस कहां रहा था ? क्यों उसने घरवालों से संपर्क नहीं किया था ? यह भी कोई बात हुई कि कोई इतने लंबे अरसे के लिए आलोप हो जाए और फिर अचानक धरती में से खुंभी की तरह फूट निकले । जब थाने से लौटा, मुक्खा आधा नहीं रहा था । लेकिन उसके दिल का भेद उसके सीने में वैसे का वैसा दफन था । मुक्खा यही कहता, वह इतने दिन इधर-उधर छिपता-फिरता रहा था । कभी पुलिस से डरता, कभी आतंकवादियों से ।

पुलिसवालों ने उसे गांव लौटा तो दिया, लेकिन उनकी तसल्ली नहीं हुई थी । हर चौथे दिन उसे बुला भेजते और कोई नया किस्सा लेकर पूछताछ करनी शुरू कर देते । लेकिन मुक्खा था कि परों पर पानी नहीं पड़ने देता था ।

आखिर पुलिस ने मुक्खे का पीछा छोड़ दिया । हर हीला वे कर बैठे थे, मगर कामयाबी नहीं हुई थी ।

अब पुलिसवालों से जब उसकी जान छूट गयी, यूं भी इधर-उधर पंजाब में हवा बदल गयी थी । आतंकवादी एक-एक करके गोलियों का निशाना बन रहे थे या पकड़े जा रहे थे । लोग लड़ाई-झगड़ा भुला बैठे थे । जवान-जहान लड़के पुराना जुनून छोड़कर अपने काम-धंधे में लग गये थे । चारों ओर अमन-चैन का वातावरण था । मुक्खे को आजकल बार-बार बंती की याद आने लगी थी । शायद इसलिए कि उसके घरवाले उसकी शादी के लिए लड़की की तलाश करने लगे थे । करमो, उसकी मां को तो सुनसान आंगन खाने को पड़ता था ।

मुक्खे-जैसे एकमात्र बेटे के लिए लड़कियों की कमी नहीं थी । मुक्खे को तो बस हामी ही भरनी थी । लड़कियोंवाले उसकी मां की दहलीज की मिट्टी चाट लेंगे ।

मुक्खा मान नहीं रहा था । उसका मन कहता कि उसकी ब्याहता बंती के बारे में सच्ची बात उसे नहीं बतायी जा रही थी । जो भी

बोलता, यही कहता, मर-खप गयी है । मर-खप कहां गयी ? और फिर उस रात अपने साथियों के साथ दारू पीते हुए मुक्खे को सच्ची बात पता लग गयी । उसके एक दोस्त ने शराब के नशे में उसे असलियत से आगाह कर दिया । बंती उसके घरवालों को धत्ता बताकर माणु माजरे के गंडू के साथ निकल गयी थी । जाते समय अपने गहने-लत्ते भी ले उड़ी । उसके बूढ़े मां-बाप हाथ मलते रह गये थे । उन्हें मालूम था कि वह कहां जा बसी थी लेकिन इन्होंने उसका पीछा नहीं किया । एक के बाद एक, चार बेटों की चोट, वे सब्र-शुक्र करके बैठ गये थे । और फिर जिसके साथ उसने फेरे लिये थे, उसका तो कोई सुराग तक मालूम नहीं था । जवान-जहान लड़की को घर बिठाकर कब तक उसकी पहरेदारी करते ।

मुक्खे ने सुना और आंख झपकने की देरी में, दारू के अपने गिलास को सामने दीवार पर पटक दिया । और वैसे का वैसा अपना हथियार संभाले दोस्तों की महफिल में से निकल गया । घरवालों ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन उन्हें मालूम था कि वह रुकनेवाला नहीं था । रुकनेवाली बात ही नहीं थी । उनमें से चाहे कोई भी होता । यह तो मरने-मारनेवाली बात थी । किसी की औरत कोई अगवा करके अपने घर बिठा ले, कौन इसे सहन करता ? किसका आत्मसम्मान यह इजाजत देता । और फिर मुक्खे-जैसा कड़ियल जवान, वह तो उनका जन-बच्चा कोल्हू में पिसवाकर रख देगा । अपनी औरत को अपने आंगन में ला बिठाएगा । इसके लिए चाहे उसे दस खून करने हों, वह नहीं टलेगा । खून करना मुक्खे के लिए

कौन-सी नयी बात थी ? रिवॉल्वर का उसका निशाना अचूक था । इतने वर्ष वह और करता भी क्या रहा था ?

जैसे यार-दोस्तों की मंडली में बैठा था, मुक्खा वैसे का वैसा माणु माजरे के लिए चल दिया । बीस कोस का फासला था । सारी रात चलता रहा । इधर पौ फटी और वह माणु माजरे जा पहुंचा । बंती के खसम का घर ढूंढ़ने में उसे कोई देरी नहीं लगी ।

लेकिन पहले वह गुरुद्वारे जाएगा । हाथ-मुंह धोकर माथा टेकेगा । अरदास करके अपनी भूल बख्शवाएगा । उसके रिवॉल्वर में सात गोलियां थीं । पहले बंती को ढेरी करेगा, फिर उसके मर्द को । फिर और जो भी उसके सामने आएगा । सात गोलियां, सात छातियों को चीरकर रख देंगी । मुक्खे का निशाना कभी नहीं चूका था ।

गुरुद्वारे में बाहर हौज पर हाथ-मुंह धोया । सारी रात का सफर, वह धूल-धूल हो रहा था । फिर उजला होकर मुक्खा अंदर दरबार साहब के सामने माथा टेकने के लिए गया ।

'आसा दी वार' का कीर्तन शुरू हो गया था । एक क्षणभर के लिए कीर्तन सुनने के लिए

बैठा, और शायद उसकी आंख लग गयी। रातभर जगा जो था। गुरुद्वारे में स्तंभ से पीठ टिकाकर उसकी लौ कीर्तन में जुड़ गयी। कितनी देर मुक्खा आंखें मूंदे, चौकड़ी जमाये बैठा रहा।

कीर्तन वैसे का वैसा चल रहा था, जब उसकी आंख खुली, और मुक्खा क्या देखता है कि सामने औरतों की पंक्ति में बंती बैठी थी। वही थी, बेशक इन दस वर्षों में कुछ दुबला गयी थी। वही थी। मुश्की रंग। मोटी-मोटी भौंरे-जैसी काली अंखियां। गांठ देकर बनाया जूड़ा, जैसे आज से दस वर्ष पहले वह बनाया करती थी, और चुनरी उसके सिर पर नहीं टिकती थी। उसके कानों में झुमके भी तो वही थे, जो बरी में इन्होंने दिये थे।

और, मुक्खे का खून एकदम खौलने लगा। उसका हाथ उसके रिवॉल्वर पर जा पड़ा। गुरुद्वारे में बैठी अपनी बेटी की मेढ़ियां गूंथ रही थी। यही कोई चार-पांच साल की लड़की होगी। रिवॉल्वर पर रखा मुक्खे का हाथ पसीने से तर-बतर हो रहा था। पौष के ठिठुरे जाड़े में उसके पसीने छूट रहे थे। अगर मारना था तो वह अब इंतजार किसका कर रहा था। उसे तो अपनी जगह से उठने की भी जरूरत नहीं थी। शायद इस बात की प्रतीक्षा में था कि बंती अपनी बेटी की चोटियां बना ले। बेचारी मासूम कहीं बीच में न आ जाए। मुक्खे की आंख-जैसे उसके नयन-कटोरों में से निकलने के लिए बेताब हो रही थी। उसका अंग-अंग ऐंठ रहा था। अब तो उसकी बेटी भी बाल बनवाकर चली गयी थी। कितनी सुघड़ बेटी जनी थी कमबख्त ने। और गोरी कितनी थी? सांवली मां की गोरी बेटी। पर वह यह सोच क्या रहा था? जो कुछ उसे करना था करता क्यों नहीं था?

"जुग जुग भगत उपाइदा..." आसा दी वार तो खतम हो रही थी। अब वक्त था। फिर अरदास शुरू हो जाएगा। प्रसाद बांटा जाएगा।

हैं, उसकी बेटी किसी शिशु को उठाये आयी और उसने बच्चे को मां की गोद में ला रखा। अब साध-संगत की तरफ जरा पीठ करके उसने गिरेबान से दूध निकालकर बच्चे के मुंह में दे दिया था। बेशक चुनरी से अपने आपको ढकने की कोशिश कर रही थी, लेकिन देखनेवाली आंख सब कुछ देख सकती थी। साध-संगत कीर्तन में जुड़ी हुई थी तो क्या? कमबख्त ने कैसा सुंदर बेटा पैदा किया था। दूध पीते हुए एक हाथ से मां के स्तनों से खेल रहा था। नटखट, अब स्तन में से मुंह निकालकर मां की छातियों को धक्के दे रहा था। शायद दूसरे दूध के लिए कह रहा था। एक स्तन का दूध उसने पी लिया था। हां, यही बात थी। अब बंती जरा और संभलकर दूसरा स्तन अपने बेटे के मुंह में दे रही थी। कैसे सुभीते से सब कुछ कर रही थी। चुनरी से कभी इस ओर से अपने आपको ढांकती, कभी उस ओर से। मजाल है जो कभी अपनी नंगेज को जाहिर होने दे रही हो। भरी संगत में बैठी अपने जाये को दूध पिला रही थी। वह भी कैसे चुसर-चुसर दूध पी रहा था, जैसे कब का भूखा हो। गोरा-चिट्टा। जैसे हाथ लगाने से मैला हो जाए। यही तो वह कहा करती थी कि मुझे तुम चांद-जैसा गोरा-चिट्टा बेटा देना।

मुक्खा यूं बंती की ओर देख रहा था। उसका हाथ वैसे का वैसा रिवॉल्वर की हत्थी के साथ खेल रहा था कि कीर्तन समाप्त हो गया। साध-संगत अरदास के लिए उठ खड़ी हुई थी। हाथ जोड़े अरदास के लिए खड़े मुक्खे को अब बंती नजर नहीं आ रही थी। उसके सामने गांव के श्रद्धालुओं की एक दीवार-सी खड़ी थी।

अरदास हुई। 'वाक' लिया गया। प्रसाद बांटा गया। लोग अपने-अपने घर चले गये। प्रसाद लेकर मुक्खा वैसे का वैसा अपने गांव के लिए चल दिया। पौष के ठिठुरते जाड़े में, वह सोचता, उसे समय रहते अपने गांव पहुंच जाना चाहिए।

गांव लौट रहे मुक्खे की आंखों के आगे बार-बार एक चित्र उभरकर आ खड़ा होता—एक मां अपने बच्चे को दूध पिला रही है। दूध पीकर मस्ती में आया बच्चा मां की छातियों को धचके दे रहा है। इस चित्र के साथ चलते-चलते मुक्खा अपने आंगन में जा पहुंचा।

—पी-७, हौज खास, नयी दिल्ली-११००१६

अद्‌भुत समानता लिंकन और केनेडी में

लिंकन और केनेडी दोनों अमरीका के प्रसिद्ध राष्ट्रपति थे। हालांकि केनेडी, लिंकन से सौ वर्ष बाद पद पर नियुक्त हुए, पर बहुत कम लोग जानते हैं कि दोनों में अद्‌भुत साम्य था।

१. लिंकन ने सन १८६० में पद संभाला और केनेडी ने सन १९६० में। ठीक सौ वर्ष बाद।

२. इन दोनों वर्षों में अमरीका 'गृह-युद्ध' से पीड़ित था।

३. लिंकन के सचिव का नाम केनेडी और केनेडी के सचिव का नाम लिंकन था।

४. दोनों के सिर के पीछे से गोली चलायी गयी थी।

५. दोनों ही शुक्रवार के दिन अपनी पत्नी की उपस्थिति में मारे गये।

६. लिंकन की हत्या करनेवाला बूथ सन १८३९ में जन्मा था और केनेडी का हत्यारा ओसवाल्ड सन १९३९ में जन्मा। दोनों ही दक्षिण के थे।

७. बूथ लिंकन पर थियेटर से गोली चलाकर गोदाम में प्रविष्ट हो गया, जबकि ओसवाल्ड केनेडी पर गोदाम से गोली चलाकर थियेटर में भाग गया।

८. दोनों ही हत्यारे, ली हारवे ओसवाल्ड और जॉन वाईलक्स बूथ के नाम अंगरेजी के १५ अक्षरों से बने हैं।

९. लिंकन और केनेडी के समय के उपराष्ट्रपतियों का नाम जॉनसन था। एंडरिऊ जॉनसन का जन्म १८०८ में और लिंड़न जॉनसन का १९०८ में हुआ था।

१०. दोनों के नाम लिंकन और केनेडी में सात-सात अक्षर हैं।

—मनोज राय

अंतरिक्ष में उड़ते यांत्रिक गुप्तचर

● संगमलाल मालवीय

अंतरिक्ष से जासूसी करनेवाली इलेक्ट्रानिक आंखों के रहस्यमय किस्से अब दुनिया से छिपे नहीं हैं । लेकिन ये चौंकानेवाले रहस्यमय किस्से सागर में मात्र चंद बूंदों की तरह हैं । दरअसल आज पराये देश की गुप्त गतिविधियों और रहस्यों को जानने के लिए तरह-तरह की अत्याधुनिक वैज्ञानिक तरकीबें इस्तेमाल में लायी जा रही हैं । अकसर इनका पता दुनिया को वर्षों नहीं चलता । तमाम रहस्य तो खुल ही नहीं पाते । शत्रु या मित्र देशों द्वारा समय-समय पर अपने राष्ट्रीय हित में जासूसी करने-कराने की परंपरा सदियों पुरानी है । अब तो जासूसी या गुप्तचरी के लिए अत्याधुनिक भू-उपग्रहों का इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जाने लगा है । तीव्र गति वाले विमानों के जरिये पृथ्वी पर स्थित देशों की जासूसी करने का जमाना अब पुराना पड़ चुका है । उन विमानों की जगह भू-उपग्रहों ने ले ली है । लेकिन यह बेहद खर्चीला साधन विज्ञान और टेकनालॉजी में विकसित चंद अमीर देशों की झोली में ही बंद होकर रह गया है ।

अंतरिक्ष खोज या जासूसी

शीत युद्ध के जमाने में अमरीका और तत्कालीन सोवियत संघ के बीच यांत्रिक गुप्तचरी के एक से एक नायाब आरोप समय-समय पर लगाये जाते रहे हैं । इनके सत्य-असत्य होने की बहस में उलझे बगैर गौरतलब होगा कि ऐसी जासूसी 'यंत्र-मानव' करते थे । स्पष्ट है कि अत्याधुनिक साधनों की दोनों महाशक्तियों के पास कोई कमी न थी । सोवियत संघ में गुप्तचरी करने वाले भू-उपग्रहों पर होनेवाले खर्च का ब्यौरा प्रायः अत्यंत गुप्त रखा जाता था ।

यही बात अमरीका पर भी लागू होती है फिर भी अमरीकी सूत्रों के अनुसार लगभग दो दशक पूर्व अमरीका सिर्फ अपने गुप्तचर उपग्रहों पर ३०० अरब रुपये खर्च करता था । सहज ही अंदाज लगाया जा सकता है कि वर्तमान समय में यह खर्च कितना बढ़ गया होगा ? अकसर अंतरिक्ष में छोड़े गये उपग्रहों के कार्यकलापों के बारे में विशेष जानकारी नहीं दी जाती । अंतरिक्ष की खोज के नाम पर चंद बातें ही रोशनी में आती हैं । जाहिर है कि ऐसे 'मिशन' हमेशा अत्यंत गुप्त रखे जाते हैं । गुप्तचरी के लिए प्रयोग में आनेवाले उपग्रहों पर होने वाला खर्च अकसर रक्षा बजट के खाते में डाल दिया जाता है । ऐसे मुद्दों पर कोई खुली बहस नहीं की जाती । अमरीकी विशेषज्ञों का कहना है कि 'अंतरिक्ष खोज' के नाम पर पचास प्रतिशत से ज्यादा उपग्रहों का इस्तेमाल गुप्तचरी के लिए किया जाता है ।

अंतरिक्ष में दिन-रात चक्कर लगाते यांत्रिक गुप्तचरों की बढ़ती संख्या पृथ्वीवासियों के लिए एक बड़ा खतरा बन चुकी है। अंतरिक्ष में गुप्तचर उपग्रहों के हथकंडों पर नियंत्रण करने का कोई उपाय गरीब देशों के पास नहीं है।

पैकेटों का रहस्य: प्रायः गुप्तचरी के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले भू-उपग्रह संकेतों या टेलीविजन प्रणाली द्वारा सूचनाएं या चित्र वगैरह नहीं भेजते। यह काम गुप्तचरी के लिहाज से सुरक्षित नहीं होता क्योंकि ये सूचनाएं या चित्र आदि आसानी से शत्रु देशों के द्वारा पता कर ली जाती हैं। अतः भू-उपग्रह में लगे विभिन्न सूक्ष्म यंत्रों द्वारा तैयार किये गये अत्यंत गोपनीय फिल्मों के पैकेट धरती पर गिरा दिये जाते हैं। इस तरह के पैकेटों में फिल्मों के अलावा ध्वनियों के प्रिंट भी होते हैं। अंतरिक्ष की सीमा पार कर जब ये पैकेट वायु-मंडल में प्रवेश करते हैं, तो पैकेटों का पैरासूट खुल जाता है, जिसे अमरीकी वायुसेना के टोही विमानों द्वारा दस से पंद्रह हजार फुट की ऊंचाई पर ही वायुमंडल में पकड़ लिया जाता है।

गुप्तचर उपग्रह

पूर्व सोवियत संघ के गुप्तचर उपग्रहों के बारे में अमरीकी रक्षा विशेषज्ञों का खयाल है कि वे प्रति सप्ताह फिल्म पैकेटों और जासूसी सूचनाओं के पुलिंदे पृथ्वी पर भेजते हैं। प्रायः ऐसे मामलों में अमरीकी विशेषज्ञ अपने गुप्तचर उपग्रहों के बारे में मौन ही रहे हैं। सच तो यह है कि इन दोनों महाशक्तियों की 'इलेक्ट्रानिक आंखों (गुप्तचरों) से शायद ही कोई देश बच पाया हो। मजे की बात यह है कि दोनों देश एक-दूसरे पर 'गंभीर गुप्तचरी' के आरोप-प्रत्यारोप लगाते रहे हैं। इनकी सफलता और असफलता के किस्से परी कथाओं की तरह रोचक और रोमांचक हैं। विश्व में गुप्तचरी के लिए इस्तेमाल होनेवाले उपग्रह कई तरह के होते हैं, जिनमें कतिपय प्रमुख ये हैं।

टोही उपग्रह : ये उपग्रह अकसर शत्रु देशों की आंतरिक गतिविधियों पर नजर रखते हैं। ये अकसर पृथ्वी से ढाई-तीन हजार किलोमीटर ऊपर अंतरिक्ष में रात-दिन चक्कर लगाया करते है। टोही उपग्रहों का मुख्य काम है अंतरिक्ष में

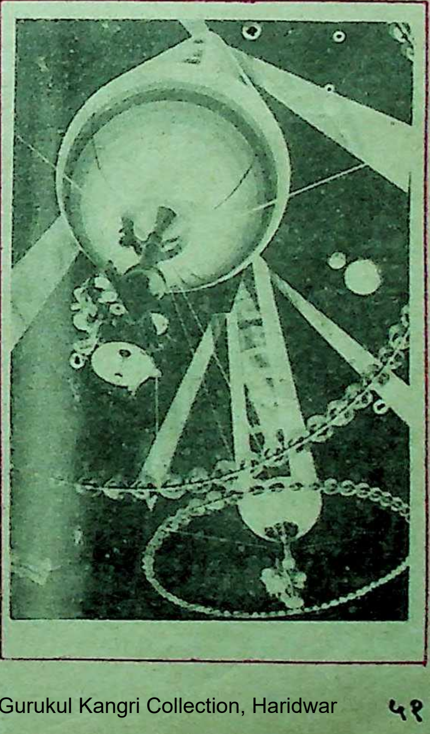

रहकर शत्रु की गुप्त गतिविधियों का पता लगाना और हवाई हमले की स्थिति में सेकेंडों में पूर्व सूचना प्रेषित करना । ऐसे उपग्रहों का पता रडार द्वारा नहीं लगाया जा सकता । जरूरत पड़ने पर ये टोही उपग्रह चंद क्षणों में शत्रु देश नष्ट कर सकते हैं ।

ऐसे भी भू-उपग्रह अंतरिक्ष में इस्तेमाल किये जा रहे हैं, जिन्हें 'फोटोग्राफर' भू-उपग्रह कहते हैं । इस उपग्रह के दोनों ओर राडार होते हैं, जिनकी मदद से बादलों के आर-पार देखा जा सकता है । आवश्यकतानुसार ये उपग्रह पृथ्वी पर स्थित सूक्ष्मतम वस्तुओं, इमारतों, फौजी छावनियों के महत्त्वपूर्ण चित्र तैयार करके पृथ्वी पर भेज सकते हैं । अमरीकी 'भू-उपग्रह-०००' का इस्तेमाल ऐसे ही गुप्त कार्यों में किया जाता है ।

'एलिट' और 'फेरेट'

कमाल की क्षमता : भू-उपग्रहों की एक और किस्म है 'एलिट' और 'फेरेट' । इनमें लगे यंत्रों से पृथ्वी पर सौ-डेढ़ सौ किलोमीटर दूर किसी भी आवाज को आसानी से टेप किया जा सकता है । 'एलिट' और 'फेरेट' भू-उपग्रह विशुद्ध चुंबकीय उपग्रह हैं, जो किसी भी देश में स्थित शक्तिशाली ट्रांसमीटरों और राडार संचालन व्यवस्था को न केवल सूचना देते हैं बल्कि उनकी आंतरिक इलेक्ट्रॉनिक संरचना की भी गुप्त जानकारी खोलकर रख देते हैं ।

ऐसे भू-उपग्रहों के विशेष कैमरों की मदद से पृथ्वी के अत्यंत स्पष्ट चित्र खींचे जा सकते हैं । किसी जमाने में अमरीकी विशेषज्ञ इन्हें 'एडवांस सैमोस' कहा करते थे । अब इसे भू-उपग्रह ९२० के नाम से पुकारा जाता है ।

इस शक्तिशाली भू-उपग्रह के बारे में एक अमरीकी विशेषज्ञ का दावा है कि यह उपग्रह अपने अत्यंत शक्तिशाली लैंसों द्वारा सोवियत संघ (विघटन से पूर्व) के मास्को नगर की किसी भी सड़क पर खड़े हुए आदमी के हाथ का अखबार सैकड़ों किलोमीटर दूर अंतरिक्ष में पढ़ा जा सकता है । सहज ही अंदाज लगायें कि ये जासूसी उपग्रह कितने शक्तिशाली हैं और शत्रु देश की सुरक्षा व्यवस्था के लिए कितने खतरनाक हैं ? सच पूछा जाए तो शीत युद्ध के जमाने में अमरीका और सोवियत संघ की यांत्रिक गुप्तचरी से कितने देश (पक्ष-विपक्ष) प्रभावित रहे होंगे । अब तो ऐसे शक्तिशाली उपकरण तैयार कर लिये गये हैं, जिनके जरिए किसी भी देश में पारमाणविक परीक्षण, एटामिक प्लांट के आंतरिक कार्यकलाप तथा विभिन्न रक्षा फैक्टरियों का पता लगाने के लिए अधिक भाग-दौड़ की जरूरत नहीं । यह काम सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिक एवं शक्तिशाली मैगनेटिक यंत्रों के द्वारा किया जा सकता है । ये यंत्र जासूसी का काम करने में इतने सक्षम बताये जाते हैं कि इनसे धोखे की गुंजाइश ही नहीं रहती ।

शीत युद्ध नहीं, पर जारी है गुप्तचरी

सोवियत संघ के विघटन के बाद महाशक्तियों की आयुध होड़ अब खतम हो चुकी है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय गुप्तचरी का सिलसिला शायद ही कभी कम हो । यह होड़ कमोबेश बरकरार है । ऐसे भी टोही उपग्रह छोड़े जाते हैं, जिनकी कानोंकान खबर तक नहीं होती । अब अमरीका दुनिया पर अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए ऐसी हरकतों से बाज नहीं

आएगा । इधर माइक्रोवेव जासूसी (सूक्ष्म तरंगों के जरिए) ने दुनिया के लिए एक बड़ी समस्या पैदा कर दी है । दो देशों के बीच होनेवाली अत्यंत गुप्त बैठकों के रहस्य यहां तक कि एक-एक मिनट की रिपोर्ट ये यंत्र देने में सक्षम हैं । अकसर इनका पता मित्र राष्ट्रों को नहीं मालूम हो पाता, जबकि शत्रु देश ऐसे गोपनीय रहस्यों को जानकर उसका राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लाभ उठाता है ।

अंतरिक्ष में दिन-रात चक्कर लगाते यांत्रिक गुप्तचरों की बढ़ती संख्या पृथ्वीवासियों के लिए एक बड़ा खतरा बन चुकी है । अंतरिक्ष में गुपतचर उपग्रहों के हथकंडों पर नियंत्रण करने का कोई उपाय गरीब देशों के पास नहीं है । सोवियत के पतन के बाद बने असंतुलन से अमरीका समेत उसके अमीर मित्र राष्ट्रों की चौधराहट दुनिया में बढ़ सकती है । क्या पता हमारा अंतरिक्ष आनेवाले वर्षों में खतरनाक यांत्रिक गुप्तचरों का अखाड़ा बन जाए ?

—१४७, केशव भादुड़ी रोड, लखनऊ-२२६०१९

हृदय का उपचार लेजर सर्जरी से

ब्रिटेन के चिकित्सकों ने लेजर सर्जरी किरण द्वारा हृदय के ऐसे उपचार की विधि खोज निकाली है जो हृदय के बायें भाग में छोटे-छोटे छिद्र बनाकर संभव हो सकी है । इन छिद्रों से हृदय की पेशियों में रक्त का संचार पुनः आरंभ हो जाता है और हृदयाघात से बचा जा सकता है ।

हृदय के चारों ओर लिपटी रक्त धमनियां उसकी पेशियों को ऑक्सीजनयुक्त रक्त की आपूर्ति करती हैं । हृदय रोग की स्थिति में यह धमनियां अवरूद्ध हो जाती हैं और ऑक्सीजनयुक्त रक्त के प्रवाह में अवरोध आ जाता है । इसी कारण हृदयाघात होता है और कई बार रोगी की मृत्यु भी हो जाती है । इस रोग के उपचार के लिए जो नयी विधि खोजी गयी है उसे "ट्रांसवायोकार्डियल रिवैक्सुलराइजेशन" कहा जाता है । इस विधि में हृदय में बायें प्रकोष्ठ के ऊपर छाती में लगभग दस सेंटीमीटर का एक चीरा लगाया जाता है । फिर लेजर यंत्र की नलिका को ठीक हृदय के बायें भाग पर रखकर कंप्यूटर को चालू कर दिया जाता है । हृदय की दो धड़कनों के अंतराल में जब यह बायां प्रकोष्ठ रक्त से भरा होता है, तब कंप्यूटर एक हजार वाट की एक कार्बनडाइऑक्साइड लेजर किरण छोड़ता है । इस किरण से लगभग एक मि.मी. व्यास के छिद्र बायें प्रकोष्ठ में बना दिये जाते हैं । यह छिद्र दस-बारह से बीस-पच्चीस तक हो सकते हैं । हृदय के पुनः धड़कने पर इन छिद्रों के माध्यम से रक्त बायें प्रकोष्ठ और फिर संपूर्ण हृदय में परिचालित हो जाता है । छिद्रों के कारण कुछ रक्त बाहर भी रिसता है लेकिन कुछ ही मिनटों में यह रिसाव बंद हो जाता है । यह छिद्र दो दिन के भीतर ठीक हो जाते हैं । इस तरह हृदय की मांसपेशियों को नया जीवन मिल जाता है और रोगी का जीवन बढ़ जाता है ।

— डॉ. संजीव पाठक

हास्य-व्यंग्य

बेवकूफ या बेईमान

● स्व. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा

(अंतिम रचना)

बात करते-करते एक मित्र आज सहसा पूछ बैठे, ''तुम बेवकूफ हो या बेईमान ?'' मैं सकते में आ गया । जीवन में दर्जनों परीक्षाएं दी हैं, सैकड़ों प्रश्न हल किये हैं पर ऐसे प्रश्न से आजतक पाला नहीं पड़ा था । परीक्षा-भवन में होता तो यह प्रश्न छोड़ देता । मगर यहां तो प्रश्नकर्ता सामने बैठा था और मित्र नामधारी जीव से पिंड छुड़ाना कितना कठिन होता है, यह उन्हें बताने की जरूरत नहीं जो मित्रता का शिकार बन चुके हों । मेरे मित्र की मुद्रा में शतरंज के उस खिलाड़ी की प्रसन्नता झलक रही थी जो एक ही चाल में मात की शह लगा दे । मुझे हतप्रभ देख उनके अधरों पर व्यंग्यमिश्रित मुस्कान खिल आयी । परपीड़नरति इसे ही तो कहते हैं । दूसरे की परेशानी भी कभी-कभी कितनी सुखकर होती है ? एक ओर कुआं; दूसरी ओर खाई । किसमें गिरूं ?

मैंने संकोच से पूछा, ''कोई तीसरा विकल्प ?'' मित्र हंसते हुए बोले, ''तीसरा विकल्प मैं कहां से लाऊं जब कोई अन्य विकल्प है ही नहीं । मैंने बहुत सोच-विचारकर देख लिया कि अपने देश में मनुष्यों के अब दो ही वर्ग हैं । जो बेईमान नहीं हैं, वे बेवकूफ हैं और जो बेवकूफ नहीं, वे बेईमान हैं ।'' उनकी इस व्याख्या से मेरी उलझन सुलझी नहीं । मेरी वाक्शक्ति या प्रत्युत्पन्नमतित्व ने मुझे कभी धोखा नहीं दिया किंतु आज वाणी लड़खड़ा गयी और बुद्धि कुंठित हो गयी । मैंने बात बदलने की कोशिश की लेकिन वे अड़ गये । तब मैंने एक नयी चाल चली मैंने उन्हीं का प्रश्न दुहरा दिया, ''तुम खुद क्या हो ? बेवकूफ या बेईमान ?'' उन्हें उत्तर देने में कोई झिझक नहीं हुई; बोले, ''अब तक तो बेवकूफ था पर अब बेईमान बनने का अभ्यास कर रहा हूं । बेवकूफी के फल काफी भोग चुका । अब बेईमानी के सुफल चखना चाहता हूं ।'' और, अपने कथन के समर्थन में उन्होंने एक लंबी सूची सुनानी शुरू की जिसमें एक से एक हस्तियों के नाम थे । उनकी मुद्रा की प्रसन्नता गंभीरता में बदल गयी थी; बोली में तुर्शी आ गयी थी; आंखों में रोष की लाली छाने लगी थी ।

''तुम भाषा के मर्मज्ञ हो । आकाश-पुष्प, वंध्या-पुत्र, शश-विषाण (खरगोश के सींग) आदि को निरर्थक शब्दों के उदाहरण के रूप में तुमने बहुत बार उद्धृत किया होगा । सत्यनिष्ठ, ईमानदार, कारगुजार आदि शब्द क्या कम निरर्थक हैं ? ये शब्द कभी सार्थक थे; आज केवल शब्दकोशों की शोभा बढ़ा रहे हैं । नेपोलियन का कहना था कि 'असंभव' शब्द

केवल मूर्खों के कोश में पाया जाता है । मैं कहता हूं कि ईमानदार, कारगुजार आदि शब्दों से भी केवल मूर्ख चिपके हुए हैं और शायद इसलिए कि उनमें और कुछ होने की क्षमता ही नहीं है जैसे जन्मजात कायर बहादुर नहीं हो सकता, वैसे ही जन्मजात ईमानदार बद्धमूल कुसंस्कार के फलस्वरूप बेईमान नहीं हो सकता । इसीलिए ईमानदार शब्द आज भी जिंदा है मगर दम तो तोड़ ही रहा है ।

इधर बहुत सारे शब्द प्रचलन में आये हैं । उनमें एक शब्द 'मूल्य' भी है । जिधर देखो उधर मूल्य की चर्चा है । बड़ा सुंदर शब्द है । वाणिज्य-व्यापार का शब्द, खरीद-बिक्री का शब्द चुपके से आचार-शास्त्र में घुस आया । जिसे पहले आदर्श कहते थे, वह अब मूल्य कहलाने लगा । पहले चीजों का मूल्य हुआ करता था क्योंकि वे बिका करती थीं । आज आदर्श भी बिकने लगा, इसलिए मूल्य कहलाने लगा ।

एक नया शास्त्र विकसितत हो गया जिसका नाम है 'मूल्य-मीमांसा' । यह दर्शनशास्त्र की एक अभिनव शाखा है । 'मूल्य-मीमांसा' के अनुसार 'मूल्य' उसे कहते हैं जिससे व्यक्ति की अधिकतम इच्छाओं की अधिकतम तुष्टि हो । तात्पर्य कि किसी विलासी का मूल्य अधिक से अधिक विलास में है; किसी कामी का मूल्य अधिक से अधिक कामेच्छा की तृप्ति में है; किसी शराबी का मूल्य अधिक से अधिक शराब पीने में है; किसी सत्ताधारी का मूल्य अधिक से अधिक सत्ता हथियाने में है । कहने की आवश्यकता नहीं कि इस मूल्य-मीमांसा में साधन का कोई महत्त्व नहीं है; महत्त्व है एकमात्र साध्य का । एक बार जब निश्चय कर लिया कि कुछ प्राप्त करना है तो चाहे-जैसे भी

हो उसे प्राप्त करना ही है । आदर्श में दूसरों की **चिंता थी,** मूल्य में केवल अपनी चिंता है ।

''अतः आदर्श के बदले मूल्य के प्रयोग में केवल नाम या पर्याय का भेद नहीं है बल्कि भावना का, धारणा का, प्रवृत्ति का भेद भी है । सब कुछ मूल्य-परक हो गया है; मनुष्य भी इसका अपवाद नहीं रहा । पात्र के अनुसार किसी का मूल्य पांच रुपये है, किसी का पांच सौ, किसी का पांच हजार, किसी का पांच लाख, किसी का पांच करोड़ । सब बिक रहे हैं; माल के मुताबिक मूल्य चुकाना है । जो नहीं बिकता वह बेवकूफ है; और ठीक भी है, कोई बेवकूफ को खरीद कर करेगा भी क्या ? बेवकूफ तो एकरस होता है । 'भौंदू भाव न जाने, पेट भरे से काम !' ऐसा जीव न तो कुछ अपना भला कर सकता है न दूसरे का । और जो, कुछ कर ही नहीं सकता, उसकी जरूरत क्या ? इसलिए आज ईमानदार बेजरूरत हो गया है, अपने लिए भी, दूसरों के लिए भी । भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी 'गीतफरोश' कविता में बड़ी आजिजी से लिखा कि मैं तो केवल गीत बेचता हूं पर ''लोगों ने तो बेच दिये ईमान !'' मिश्राजी को ईमान बेचना खटकता है पर समाज को तो नहीं खटकता । ईमान का जो जितना बड़ा सौदागर है, उसका उतना ही सम्मान है । उसके दरवाजे की भीड़ कभी देखी है आपने ? लगता है—जैसे मेला लगा हो । हर आदमी चातक की तरह नजर बिछाये उत्सुकता से प्रतीक्षा में है कि कब 'ईमान का सौदागर' मेले में आता है और अपनी उपस्थिति

मैं जिस माहौल की झांकी देख आया हूं, वह पृथ्वी पर स्वर्ग की झांकी है । वहां लक्ष्मी के अतिरिक्त और किसी देव-देवी की पूजा नहीं होती; विलास के कक्ष में विवेक का प्रवेश निषिद्ध है; ईमानदारी बेवकूफों को सौंप दी गयी है; वे बड़े जतन से उसकी देखभाल कर रहे हैं । कभी सोचा है तुमने कि अगर बेईमानी खत्म हो जाए तो समाज की क्या हालत होगी ? हाहाकार मच जाएगा, हाहाकार ! पुलिस, सेना, कचहरी, सब बेकार हो जाएंगे । जब बेईमानी होगी ही नहीं तो पुलिस की क्या जरूरत ?

से लोगों को कृतार्थ करता है । और समाज भी कैसा है ? पीठ पीछे आलोचना करता है और सामने स्तुतिगान; और स्तुति भी वैसी जैसी देव-प्रतिमा के सम्मुख भी मुंह से नहीं निकलती । वह अपना ईमान बेच रहा है; वह स्वाभिमान बेच रहा है । इसकी अपेक्षा तो वही अच्छा जो ईमान बेचकर भी हैकड़ी कायम रखता है । ईमान बेचनेवालों के सामने सभी स्तब्ध हैं, मूक हैं ! मुझसे यदि कोई पूछे कि स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है तो मैं कहूंगा—''ईमान की सौदागरी ।'' तुलसीदास ने अपने युग को देखकर कहा था कि ''सोइ सयान जो परधनहारी ।'' यदि वे आज होते तो पता नहीं क्या कहते ?''

बात बदलने की इच्छा से मैंने पूछा—''चाय मंगाऊं ?'' चाय का नाम सुनते ही उन्होंने जोर का ठहाका लगाया, फिर रुके और बोले—''मैंने चाय छोड़ दी । अब अंगूरी साध रहा हूं क्योंकि जिन लोगों की पांत में बैठना है, वहां चाय नहीं, अंगूरी चलती है । मित्र ! ईमान का खुशनुमा सौदा चाय के बदनुमा प्यालों पर नहीं होता । चाय भी कोई पेय है ? दिलमरों का पेय, जिनहोंने जाना ही नहीं कि मस्ती का आलम क्या होता है ? दिलकश गिलासों की लबरेज रंगीनी से जो मादकता छलकती है, उसकी भीनी खुशबू से गमकते माहौल में ही ईमान का सौदा पटता है ।''

''तो आप शराब पीने लगे ?''

''मेरे सवाल का जवाब मिल गया । मैंने जानना चाहा था कि तुम बेवकूफ हो या बेईमान ? पक्का हो गया कि तुम बेवकूफ हो । शराब का नाम ऐसे लेते हो—जैसे कोई बुरी चीज हो । उर्दू के एक शायर ने क्या कमाल की बात कही है,

अंगूर का अरक, पानी की चार बूंदें;
कोई हराम चीज कहां है शराब में ?

और शराब तो पहला कदम है !

जानते हो ? किसी बौद्ध-भिक्षु को मांस खाते देख तुम्हारे ही जैसे किसी बेवकूफ ने आश्चर्य से पूछा कि तुम बौद्ध-भिक्षु होकर मांस खाते हो ? वह हंस पड़ा । दोनों की बातचीत सुन लो :

'भिक्षु । तुम मांस खाते हो ?'

'मदिरा के बिना मांस का क्या मजा ?'

'तो क्या मदिरा भी तुम्हारे मुंह लगी है ?'

'लगी है, और अकेली नहीं, वेश्याओं के साथ ।'

'पर वेश्याएं तो पैसों में रुचि रखती हैं । तुम्हें पैसे कहां से आते हैं ?'

'जुए से या चोरी से ।'

'मतलब कि तुमने जुआ और चोरी भी अपना रखी है ?'

संस्कृत का श्लोक है—

भिक्षो ! मानसनिषेवणं प्रकुरुषे ?
किं तेन मद्यं विना ?
किं ते मद्यमपि प्रियं ?
प्रियमहो वारांगनाभिः सह ।
वेश्या द्रव्यरुचिः कुतस्तव धनं ?
द्यूतेन चौर्येण वा;
चौर्यं *द्यूत* परिग्रहोऽपि भवतः ?
भ्रष्टस्य कान्या गतिः ?

उन्होंने देखा कि मैं कुछ कहना चाहता हूं । इसके पहले कि मैं मुंह खोलूं उन्होंने अपनी बात का सिलसिला जारी रखते हुए कहा—''जानता

हूं कि वक्ता हो, बहुत अच्छा बोलते हो मगर तुम्हारे बोलने और मेरे बोलने में अंतर है । जैसा कबीर ने कहा है—'तू कहता कागद की लेखी; मैं कहता, आंखिन की देखी ।' तुम शास्त्र की बात बोलेगे; मैं अनुभव की बात कहूंगा । तुम दूसरों की बात दुहराओगे; मैं अपनी बात सुनाऊंगा । आज सुनाने के मूड में हूं, इसलिए सुनते जाओ ।'' मैं उनके चेहरे की ओर ताकता रहा । ऐसे मूड में सचमुच उन्हें कभी नहीं देखा था । जब भी आते, देर-देर तक बड़े स्नेह से मेरी बातें सुनते । बीचबीच में तारीफ भी करते लेकिन आज तो उनका ढब बिलकुल न्यारा था ।

''नैतिकता की, सदाचार की, ईमानदारी की बहुत सारी बातें तुम्हारे मुंह से सुन चुका हूं । सब खोखली हैं; बकवास हैं । बड़े विद्वान हो पर बुढ़ापे में क्या खाओगे ? कुछ सोचा है ? और, आज भी जैसे रहते हो, उसमें 'सादा जीवन, उच्च विचार' के मिथ्या संतोष के अलावा और क्या है ? अभाव की कड़वाहट कम करने के ये मनमोदक हैं । मैं जिस माहौल की झांकी देख आया हूं, वह पृथ्वी पर स्वर्ग की झांकी है । वहां लक्ष्मी के अतिरिक्त और किसी देव-देवी की पूजा नहीं होती; विलास के कक्ष में विवेक का प्रवेश निषिद्ध है; ईमानदारी बेवकूफों को सौंप दी गयी है; वे बड़े जतन से उसकी देखभाल कर रहे हैं । कभी सोचा है तुमने कि अगर बेईमानी खत्म हो जाए तो समाज की क्या हालत होगी ? हाहाकार मच जाएगा, हाहाकार ! पुलिस, सेना, कचहरी, सब बेकार हो जाएंगे । जब बेईमानी होगी ही नहीं तो पुलिस की क्या जरूरत ? सेना किससे रक्षा करेगी ? कचहरी में कोई क्यों जाएगा ? जज, हाकिम, वकील, सैनिक, सिपाही के रूप में रोजी कमानेवाले लाखों-लाखों लोग बेरोजगार हो जाएंगे ! दरवाजा, खिड़की, ताला आदि के फलते-फूलते उद्योग बंद ! राजनीति का उन्मादक आकर्षण समाप्त ! जिधर नजर घुमाओ, उधर सन्नाटा, उदासी । सड़क पर निश्शंक चले जा रहे हैं; गुंडों और उचक्कों के बदले हर कदम पर सत्य हरिश्चंद्र और युधिष्ठिर खड़े हैं । कल्पना से ही रोमांच हो आता है ? एक हाइजैकिंग के कारण सभी हवाई अड्डों पर सुरक्षा-जांच की व्यवस्था हो गयी । हजारों-हजार आदमियों को रोजी-रोटी मिल गयी । आत्मसर्पण की मुद्रा में ऊपर हाथ उठवाकर भले से भले लोगों की तलाशी ली जाती है; जेबें टटोली जाती हैं; विमान के यात्री क्या हुए, अपराधी बन गये ! हाइजैकिंग तो बंद नहीं हुई मगर शरीफ परेशान हो गये ! समझ लो कि रोजी-रोटी के अधिसंख्य साधन बेईमानी की देन हैं; बेईमानी मिटी तो वे साधन छिन जाएंगे । कुहराम मच जाएगा ! एक बात याद रखना—सभी नियम-आईन, कायदा-कानून बनते तो हैं बेईमानों के लिए, पर लागू होते हैं ईमानदारों पर क्योंकि बेईमान बेवकूफ नहीं होते जो पकड़ में आ जाएं !'' यह प्रसंग न जाने कब तक चलता यदि उनकी बच्ची आकर यह न कहती कि 'मां जल्दी बुला रही है'। पत्नी का फर्मान कान में पड़ते ही मेरे मित्र घर की ओर भागे । मैं उनकी बातों में खोया बैठा रहा ।

द्वारा : डॉ. दीप्ति श
टावर अपार्टमेंट्स
एस/डी ३४५ पीतमपु
दिल्ली-११००३

ग्रामीण पाठकों के लिए

ऐसेई होते कंत तो काइको जाते अंत

● अशोक स्नेही

भारत की अधिकांश आबादी ग्रामीण अंचल में निवास करती है । गांव की दिनचर्या बोलचाल साधारणतया लोकोक्तियों में ढली होती है । जनसाधारण अपनी बात को बल देने के लिए बातचीत में लोकोक्तियों का समावेश करते हैं ।

ये लोकोक्तियां कहीं तुकांत तो कहीं अतुकांत होती हैं । इनमें भाषा-विज्ञान का कोई विशेष ध्यान नहीं रखा जाता बल्कि, इनमें क्षेत्रीय भाषा एवं देशज शब्दों का प्रयोग होता है ।

यहां संकलित लोकोक्तियां उत्तरी मध्यप्रदेश के ग्रामीण परिवेश से संकलित की गयी हैं । प्रस्तुत हैं कुछ लोकोक्तियां जो तुकांत हैं—

हंसि कें बोले नारी, ढीलो बेंदु कुलारी ।
हंसि के मांगे दम्मा, जे तीनों काम निकम्मा ।

कोई महिला हंसकर बातचीत करे, कुल्हाड़ी का बैंट ढीला हो और किसी से हंसकर रुपया-पैसा मांगा जाए, तो मान्यता यह है कि ये तीनों कार्य निष्फल जाते हैं ।

मरे चाम पै चाम कटा, भांसकरे में सोबे,
कहें 'घाघ' जे तीनों भकुआ, उडरि गई कों रोबें ।

अगर आदमी ऐसा जूता पहने जो पैरों को काटता हो, जमीन पर सोना पड़े और उसमें भी सोनेवाला सिकुड़कर या अड़चन में सोये तथा ऐसा पुरुष जो भागी हुई औरत के बिछोह में रोता हो, ऐसे तीनों आदमी कवि घाघ के अनुसार भकुआ (बेवकूफ) होते हैं ।

कुचकट खटिया बतकट जोय ।
ऐंसी राम रत्र बैरी कें न होय ।

इतनी छोटी खाट (पलंग) जिस पर आदमी अपने पैर भी न पसार सके और पैर फैलाये, तो पैर कटता हो तथा ऐसी पत्नी जो पति की बात को काटती हो ! ऐसी खाट और पत्नी भगवान दुश्मन को भी नहीं दे ।

दूध बतासे भौजी खांय
भैंस चराइवे देवर जांय

भैंस की रखवाली और चारा-पानी देवर को करना पड़ता हो, जबकि दूध में बतासे (शक्कर खांड) डालकर भाभी खाती हो, अर्थात जो मेहनत करता हो, वह लाभ से वंचित रहे, लाभ और कोई ले !

सागर झोंका लेतुओ,
चम्मच डारो पीव
सींक परोसा मरिगये,
देखो भैया घीव ।

अगर कोई व्यक्ति पाहुने (मेहमान) को खिलाने-पिलाने में लोभ करता है, तब यह

लोकोक्ति उद्धृत की जाती है । अर्थ यह है कि एक पीढ़ी के समय में सागर (पात्र) से घी परोसा जाता था । दूसरी पीढ़ी में पति को पत्नी ने सुझाव दिया, तो चम्मच से घी परोसा गया । उसके बाद सीनक (काड़ी) से घी परसनेवाली पीढ़ी मर चुकी । आज की पीढ़ी तो घी दिखाकर ही छकाना चाहती है ।

सही बात से दुल्लो कहे ।
सिक्के मन ते उतरी रहे ।

मुंह देखी बात न कहने के बजाय, जो सत्य बोलता हो, ऐसा व्यक्ति आज के समय में सबका बुरा माना जाता है ।

खुशी मोहमदा तेरी ।
भैंस दुहाउ चांय छेरी ।।

ईश्वर-अल्लाह में आस्था रखनेवाला मोहम्मद (खुदा) को संबोधन कर कहता है कि हे प्रभु ! यह तेरी मरजी है, चाहे भैंस दुहने को दे अथवा बकरी अर्थात धनवान बना या गरीब !

काम खसम के दोऊ
हर जोतो चांय मूसर ढोऊ ।

जब कोई किसी की इच्छा के अनुकूल कार्य नहीं कराता, बल्कि दूसरा ही कार्य कराता हो । पति चाहे खेत में हल जुतवाये या फिर मूसल उठाये— चाहे जो कराए—उसे तो दोनों काम करने हैं, पति या स्वामी जो चाहे करा ले ।

ऐसेई होत कंत ।
तो काइको जाते अंत ।

जब किसी निकम्मे व्यक्ति के बारे में बात कही जाती है, तब यह लोकोक्ति प्रयुक्त की जाती है ।

कुछ लोकोक्तियां अतुकांत होने के साथ-साथ रोचक ही नहीं होती, बल्कि सारगर्भित भी होती है । यथा—

दमरी की भतेतिनि करके ते गाय चली

उत्तर भारत में शादी के समय बहन का भाई भात देने जाता है । इसमें वस्त्र-आभूषण व धन-धान्य दिया जाता है, प्रस्तुत लोकोक्ति का आशय है कि भात में देने के लिए तो कुछ है नहीं, लेकिन हो-हल्ला खूब किया जा रहा है ।

डेड बार, कनपटी पे जूड़े

सुंदरता तो नाम-मात्र की नहीं लेकिन हाव-भाव खूब प्रदर्शित किये जा रहे हैं ।

डेड भुट्टिया, टीले पें खलियान ।

अल्प सामग्री उसका भी रख-रखाव ऐसी जगह, जहां उसकी कोई व्यवस्था ही नहीं है ।

बहि के बहि गये, उतराई लग गई ।

पारिश्रमिक का भुगतान पहले कर चुके, लाभ तो मिल नहीं पाया, बल्कि हानि और हो गयी ।

घी गुलो मारें, गनपति पालो कतरें ।
मठा सिग धर खाय मों मोड़ी को बिगरे ।

दोनों लोकोक्तियों का आशय एक ही है कि कार्य कोई करे, लाभ अन्य को प्राप्त हो । पहली लोकोक्ति का अर्थ यह है कि घी गुलो नाम की महिला खाती है, जबकि गनपति नाम का व्यक्ति कटिया (चारा) काटकर भैंस को खिलाता है । द्वितीय लोकोक्ति—सबकी बुरी-भली सुनकर मठा तो लड़की मांगकर लाती है, वह उसे तो मिलता नहीं जबकि पूरा परिवार मठा पीता है ।

जबर सोंजिया (साझेदार) भुस की हानि ।

जबरदस्त के साथ यदि कोई कार्य साझे में किया जाए तो कमजोर को नुकसान ही उठाना पड़ता है ।

माते परे पिआर (पुआल) में को कहि बैरी होय ।

महाते यानि श्रीमानजी पुआल में छिपकर सो रहे हैं । बतानेवाले ने दूसरों को बता भी दिया, लेकिन उन्हें जगाकर कौन दुश्मनी मोल ले ।

जाई को राउन्न भाउन, बाई को खड़ा बड़ा ।
जाई को बटेसुर तई कों ठौर नहीं ।

उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में बटेश्वर नामक स्थान पर शंकरजी की विभिन्न मुद्राओं में तत्कालीन राजा ने १०८ मूर्तियों की स्थापना करायी थी । वहां पर कार्तिक पूर्णिमा पर विशाल मेला प्रति वर्ष लगता है । अगर उस राजा को ही वहां रहने को स्थान नहीं मिले, तो यह कहावत चरितार्थ होती है । दोनों लोकोक्तियों का आशय यह है कि जिसका सब कुछ हो, उसे ही कुछ भी न मिले ?

घर में बिहा बहू कंडनि को डोले ।

परिवार के सभी सदस्यों को सुविधा मिले, और एक व्यक्ति सुविधा से वंचित रहे !

दूला को मनु भडिआई पे, श्री कहांते चढ़ें ।

अर्थात, नियत में जब खोट हो, तो प्रशंसा का पात्र नहीं बन सकता ।

अपने नैन मुझे दे तू खोखला मटका ।

अपने कार्य के लिए लोग दूसरों का नुकसान चाहते हैं ।

तालु खुदो नईं मगर कूदि परो ।

तालाब खुदा नहीं मगर आ गये, यानि साधन उपलब्ध नहीं है और उससे लाभ उठाने वाले पहले ही आ गये ।

कतरौल एकई दम की भई ।

किसी व्यक्ति को थोड़े से पराक्रम से पराजित कर दिया जाए ताकि वह दुबारा साहस न करे ! शाब्दिक अर्थ यह है कि एक महात्माजी चिलम में गांजा भरकर दम लगाते थे । एक बार वह एक गांव जिसका नाम था—कतरौल, आये । वहां उन्होंने एक छप्पर के नीचे बैठकर गांजा पिया । चिलम का पहला ही कस लगाया कि चिलम से लौ निकलकर छप्पर से लटक रहे तिनके में लग गयी, भयंकर अग्निकांड में पूरा गांव जलकर राख हो गया ।

भुसु खाइले चांय जेबरा मुराइले ।

मालिक का कथन यह है कि अगर हमारा नुकसान करते हो, तो तुम्हें भी कुछ कष्ट उठाना पड़ेगा । शाब्दिक अर्थ यह है कि एक किसान का बैल रस्सी (जिससे बंधा था) चबा गया, तो किसान ने उसे भूसा खाने को नहीं दिया क्योंकि, जितनी कीमत रस्सी की है उतनी ही कीमत किसान ने दाना तथा भूसा की आंककर बैल को दंड दिया ।

गञ्जू पासंगु नांई देखत ।

कोई गरजदार व्यक्ति जब दूकानदार से सामान उधार लेता है, तो उसकी इतनी हिम्मत नहीं होती कि वह यह देखे कि दूकानदार कम तो नहीं तौल रहा ?

साझे के बापु लडइयन ने खाये ।

अर्थात साझेदारी का हर काम बुरा है । एक पिता के चार पुत्र थे । चारों पुत्र बंटवारा कर अलग-अलग रहते थे । पिता कभी किसी पुत्र के यहां, तो कभी किसी के यहां रहते । पिता की जब मृत्यु हुई तो दाह-संस्कार करने एक भी पुत्र यह सोचकर नहीं आया कि दाह-संस्कार तो किसी दूसरे भाई ने कर ही दिया होगा । उनकी लाश जंगली जानवर खा गये ।

—६५ गांधी मार्ग, मेहगांव,
भिंड-४७७५५७

नगेंद्र सिंह, महू

प्र. : सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक सभ्यता में से कौन-सी पुरानी है ?

☐ सिंधु सभ्यता के बारे में पुरातत्व के विद्वानों का मत है कि वह ५,००० वर्ष पहले अवश्य मौजूद थी, किंतु उसका प्रारंभ काल अभी तक निश्चित नहीं हो सका है । इस खोज से पहले भारत की गणना संसार की प्राचीनतम सभ्यताओं में नहीं की जाती थी । तब केवल सुमेर, अक्काद, बेबीलोन, मिस्र और असीरिया का नाम लिया जाता था । इतिहास में दूसरा काल वैदिक सभ्यता का है । इसका मुख्य आधार वेद हैं । वेदों के रचना काल को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद हैं । एक ओर इन्हें अनादि बतानेवाली भारतीय परंपरा है, तो दूसरी ओर पाश्चात्य विद्वान इसका समय ई.पू. चार हजार से लेकर १ हजार वर्ष तक मानते हैं । तथापि, वैदिक सभ्यता ३५०० वर्ष पुरानी अवश्य है । (स्रोत : 'भारतीय संस्कृति : प्राग्वैदिक तथा वैदिक', डॉ. इंद्रचंद्र शास्त्री)

लटकन चौधरी, पलामू

प्र. : अपराधी को पकड़ने के लिए अंगुलियों की छाप का प्रयोग कब हुआ ?

☐ अंगुलियों की छाप का उपयोग करके अपराधी का पता लगाने का सबसे पहला श्रेय ला प्लाटा, अर्जेंटीना के इंस्पेक्टर ऐल्वरिस को है । उसने सन १८९२ में एक दरवाजे पर बने खून के धब्बों को देखकर उस हिस्से को काटकर सिद्ध कर दिया कि महिला फ्रैंसिस्का रोजेस ने ही अपने बच्चों की हत्या की है ।

सूज़ी साइमन, रांची

प्र. : विलुप्तप्राय पशु-पक्षियों को बचाने का कार्य कैसे होता है ?

☐ वर्ल्ड फंड फ़ार नेचर जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन ने सुनिश्चित किया है कि विलुप्त प्राय पशु-पक्षियों के लिए संरक्षित वनों में शिकार न होने पाये और जंतुशालाओं में सभी देश ऐसे प्राणियों के प्रजनन की व्यवस्था करें । डेविड नस्ल के हिरणों को चीन के लोग मारकर खा गये थे, अब ब्रिटेन ने इनके झुंड तैयार करके चीन के सुरक्षित स्थानों में छोड़ा है ।

शशि भूषण, पटना

प्रः : 'हिंदू' शब्द का इतिहास क्या है ?

☐ जब मुसलमान आक्रमणकारी जातियों ने इस देश में अपना राज्य स्थापित करके बसना शुरू किया, तब से वे मुसलमानों से इतर लोगों को अपने से पृथक करने के लिए सामूहिक रूप से 'हिंदू' तथा उनके धर्म को 'हिंदू मजहब' कहने लगे । 'हिंदू' शब्द निस्संदेह, भारतीय इतिहास में अपेक्षाकृत बहुत अर्वाचीन और विदेशी है । वस्तुतः, यह 'हिंदू' शब्द भौगोलिक है । मुसलमानों को यह शब्द फारस (ईरान) से मिला था । फ़ारसी कोशों में 'हिंद' और इससे व्युत्पन्न अनेक शब्द पाये जाते हैं, जैसे हिंदू, हिंदी, हिंदूकुश, हिंदसा आदि । इन शब्दों के अस्तित्व से स्पष्ट है कि 'हिंद' शब्द मूलतः फारसी है और इसका अर्थ 'भारतवर्ष' है । भारत तो फारस (ईरान) का पड़ोसी था,

इसलिए वहां इसके नाम का प्रयोग होना स्वाभाविक था । अब प्रश्न यह है कि 'हिंदू' शब्द फारसवालों को कहां से मिला ? फारस के पूर्व सबसे महत्त्वपूर्ण भौगोलिक अवरोध एवं दृश्य 'सिंधु नद' और उसकी दक्षिण तथा वामवर्ती सहायक नदियों का जाल है । इन छह नदियों के साथ सिंधु द्वारा सिंचित प्रदेश का नाम 'हफ़्तेहेंदु' (सप्तसिंधु) था । यह शब्द सबसे पहले 'जेंदावस्ता' (पारसी धर्मग्रंथ) में मिलता है । फारसी व्याकरण के अनुसार संस्कृत का 'स' अक्षर 'ह' में परिवर्तित हो जाता है । इसी कारण 'सिंधु', 'हिंदु' हो गया । पहले 'हेंदु' अथवा 'हिंद' के रहनेवाले 'हैंदव' अथवा 'हिंदू' कहलाये । धीरे-धीरे संपूर्ण भारत के लिए इसका प्रवेश होने लगा । (स्रोत : डॉ. राजबली पांडेय कृत 'हिंदू धर्मकोश')

पूर्णिमा श्रीवास, राजगढ़ (म. प्र.)

प्र. क्या भारत में भी कहीं समुद्री ज्वार से विद्युत जनन की परियोजना है ?

☐ समुद्री ज्वार से विद्युत-उत्पादन की प्रथम परियोजना के लिए तमिलनाडु में तिरुचंडूर को चुना गया है । यह स्वामी कार्तिकेय के मंदिर से लगभग दस किलोमीटर दूर समुद्र में स्थित है । इस परियोजना के लिए अमरीका से सहायता प्राप्त होगी ।

दिलीप जैन, पाली (राज.)

प्र. : पृथ्वी पर पौधे कैसे आये ?

☐ विज्ञान के सिद्धांतों के अनुसार एक समय ऐसा था, जब पृथ्वी पर पौधों का अस्तित्व नहीं था । फिर लाखों वर्षों पूर्व जीव-द्रव्य (प्रोटोप्लाज़्म) के कण दिखायी देने लगे । प्रोटोप्लाज़्म उस सजीव पदार्थ को कहते हैं, जो पौधों और पशुओं में समान रूप से पाया जाता है । इस सिद्धांत के अनुसार, प्रोटोप्लाज़्म के ये आदि कण ही हमारे पौधों और पशुओं के जन्म के कारण हैं ।

शब्बीर अहमद, गोंडा

प्र. : क्या कुत्ते रंग में भेद कर सकते हैं ?

☐ कुत्तों को रंग की पहचान नहीं होती । इस संबंध में अनेक परीक्षणों के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचना संभव हो सका है कि कुत्ते रंगों में भेद नहीं कर सकते । वे वस्तुओं की पहचान केवल अपनी घ्राण शक्ति से करते हैं ।

मोदित गर्ग, वलसाड (गुजरात)

प्र : विश्व प्रसिद्ध लंदन ब्रिज का निर्माण कब हुआ था ? क्या उसे किसी भारतीय ने बनाया था ?

☐ यह सेतु सन ११७६ और १२०९ में हुआ था, किंतु इसके स्थान पर नया पुल सन १८२० के दशक में निर्मित किया गया । वर्तमान पुल सन १९७३ में बनकर तैयार हुआ । दूसरे पुल का डिजाइन विख्यात सिविल इंजीनियर जॉन रेनी ने बनाया था, जिसने लंदन और ईस्ट इंडिया गोदी (डॉक) सहित अनेक गोदियां बनायीं । किसी भारतीय ने इसका निर्माण नहीं किया ।

सबीहा कुरैशी, हजारीबाग

प्र. : चाय के सबसे बड़े निर्यातकर्ता देश कौन हैं, भारत या चीन ?

☐ सबसे बड़े निर्यातकर्ता देश भारत और श्रीलंका हैं । चीन की अधिकतर उपज देश में ही खप जाती है । चाय की अंतरराष्ट्रीय नीलामी का केंद्र लंदन है ।

चाय की नीलामी लंदन में

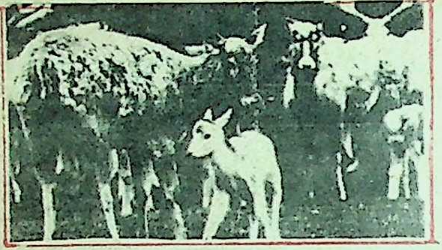

वन्य जीवों का संरक्षण

महेश कुमार, नयी दिल्ली

प्र. : चलते समय ऐसा क्यों प्रतीत होता है कि चांद भी हमारे साथ चल रहा है ?

☐ पृथ्वी से चंद्रमा की दूरी लगभग ३,८४,४०० किलोमीटर है, और इसका व्यास कोई ३,४७६ किलोमीटर आंका गया है । इतनी दूरी पर होने के कारण यह सदा हमें साथ ही रहता प्रतीत होता है । वस्तुतः, यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है । जब हम चल रहे या किसी वाहन में सफर कर रहे होते हैं, तो पृथ्वी के पदार्थ, वृक्ष, मकान आदि पीछे छूटते जाते हैं इस कारण हमारी आंखों के सामने उनके कोण अंतरित हो जाते, परंतु चांद के इतनी दूर होने के कारण इस परिप्रेक्ष्य में कोण के अंतरण बहुत ही सूक्ष्म या नगण्य होता, जिसके फलस्वरूप चांद हमें साथ चलता प्रतीत होता है ।

पल्लवी गौड़, ग्वालियर

प्र. : सूर्य और चंद्रग्रहण क्यों होते हैं ?

☐ जब सूर्य और पृथ्वी के बीच में चंद्रमा स्थित हो जाता है, तो आंशिक या पूर्ण रूप से सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर नहीं आ पाता, जिससे सूर्य ग्रहण की स्थिति हो जाती है । चंद्रग्रहण के समय सूर्य और चंद्रमा के बीच पृथ्वी आ जाती है, तो चंद्रमा का प्रकाश पृथ्वी तक नहीं पहुंच पाता, अथवा पृथ्वी की छाया चांद पर पड़ने से चंद्रग्रहण होता है । ज्ञातव्य है कि चांद को सूर्य से ही प्रकाश प्राप्त होता है ।

कल्पना भारद्वाज, हिसार

प्र. : गायिकी में ध्रुपद कितना प्राचीन है ?

☐ हिंदुस्तानी संगीत में ध्रुपद प्राचीनतम संगीत रचना है, जिसका विकास स्वामी हरिदास और तानसेन ने किया था । अनुश्रुतियों के अनुसार बैजू बावरा और तानसेन दोनों ही स्वामी हरिदास के शिष्य थे ।

ध्रुपद संगीत शैली काफी समय पहले लुप्त हो चुकी थी, किंतु डागर परिवार के प्रयासों से यह पुनः प्रकाश में आयी है, और अपनी शक्ति के कारण पश्चिम के देशों में भी लोकप्रिय होने लगी है ।

चलते-चलते

"मां, मैं कैसे पैदा हुई थी," बच्ची ने अपनी मां से पूछा ।

"तुम्हें एक पक्षी लेकर आया था," मां ने बच्ची को टालना चाहा ।

"और आप ?"

"मेरी मां ने मुझे बाजार में खरीदा था," मां ने फिर टालना चाहा ।

"और दादी ?" जिज्ञासु बच्ची ने अगला प्रश्न किया ।

"वह बंदगोभी में मिली थीं," मां ने उसे टालने का एक और प्रयास किया ।

"तो क्या तीन पीढ़ियों से हमारे परिवार में कोई सामान्य प्रसव नहीं हुआ ?"

अब मां के पास कोई उत्तर नहीं था ।

—सूत्रधा

सुविधाओं के नाम पर रेलवे की सारी शक्ति एवं साधन 'राजधानी' और 'शताब्दी'-जैसी गाड़ियों तक ही सिमटकर रह गयी है । द्वितीय श्रेणी के यात्रियों के लिए रेलवे विभाग के पास लापरवाही और असुविधाओं के सिवाय और कुछ नहीं है ।

रेल दुर्घटनाएं क्यों होती हैं ?

● के. के. देवराज

भारतीय रेल दुर्घटनाओं का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि उसका चलन अर्थात वर्ष १८५३ से जब से रेलों का जन्म हुआ है और लोग इसे भूतल परिवहन के रूप में इस्तेमाल करने लगे, तभी से इसकी दुर्घटनाओं का सिलसिला भी प्रारंभ हुआ और दुर्भाग्य से यह आज भी जारी है । और निस्संदेह रूप से संभवतः यह रेलों की उपस्थिति और उसके चलन तक जारी रहेगा ।

साधारणतया अधिकांश रेल दुर्घटनाएं तकनीकी संयंत्रों में खराबी के कारण अथवा तकनीकी कर्मचारियों की लापरवाही के कारण होती हैं । बहुधा सिग्नल मास्टर के गलत संकेत देने पर रेल गलत पटरी अथवा प्लेटफार्म पर पहुंच जाती है ।

कुछ समय पूर्व जिला गाजियाबाद के रेलवे जंक्शन पर रात्रि ग्यारह बजकर पांच मिनट पर एक भीषण रेल दुर्घटना हुई । इससे पूर्व देवबंद में मालवाहक डीजल गाड़ी के तेल से भरे दर्जनों डिब्बे अग्नि की भेंट चढ़ गये जिससे लाखों रुपयों का डीजल धुआं बनकर उड़ गया । हुआ यूं कि रेल कर्मचारियों की लापरवाही के कारण आमने-सामने से एक मालगाड़ी और छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस सवारी गाड़ी एक ही पटरी पर आ गयीं । संभावित दुर्घटना की निश्चितता को देखते हुए शीघ्र ही मालगाड़ी को दूसरी पटरी पर जाने का संकेत दिया गया और यह मालगाड़ी दूसरी पटरी पर पहुंचकर पहले से खड़ी एक अन्य माल गाड़ी से जाकर भिड़ गयी ।

यह टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि मालगाड़ी के कई डिब्बे माचिस की तरह टूटकर बिखर गये । सहज ही कल्पना की जा सकती है कि जब खड़ी हुई मालगाड़ी से टक्कर का इतना भयंकर परिणाम हुआ तो द्रुतगति से आती छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस से संभावित भिड़ंत का परिणाम कितना दुखदायी एवं विनाशकारी होता ।

ऐसी किसी भी दुर्घटना का खामियाजा भुगतना पड़ता है बेकसूर यात्रियों को । एक

विगत पांच वर्षों में ! दुर्घटनाग्रस्त लोग और मुआवजा

वर्ष	दुर्घटना में मृत यात्री	दुर्घटना में घायल यात्री	मुआवजा (लाख रु. में)
१९८८-८९	१४०	५४८	१४३.४६
१९८९-९०	१४६	६६२	.५३.८८
१९९०-९१	२२०	५९५	२२८.९५
१९९१-९२	९८	४५१	२७५.९४
१९९२-९३	९६	४६७	२३७.१७

वर्ष	टक्कर	पटरी से उतरना	लेवल क्रॉसिंग पर दुर्घटनाएं	ट्रेन में अग्निकांड	योग
१९८८-८९	३०	४५७	५५	३	५४५
१९८९-९०	३४	४५६	४२	८	५४०
१९९०-९१	४१	४४६	३६	९	५३२
१९९१-९२	[illegible]	४४४	४७	९	५३०
१९९२-९३	५०	४१४	५१	९	५२४

आदमी की लापरवाही से सैकड़ों लोगों की जान जोखिम में पड़ जाती है बल्कि कई बार तो जान से भी हाथ धोना पड़ता है ।

सवाल यह उठता है कि यदि एक आदमी 'सिग्नल सूचक मास्टर' के सिर पर पागलपन सवार हो जाए अथवा वह किसी भी कारणवश जाने-अनजाने लापरवाह हो जाए तो निश्चित तौर पर वह रेलवे की करोड़ों रुपये की संपत्ति को ध्वस्त करने के साथ-साथ हजारों लोगों की जान भी ले सकता है ?

भारतीय रेल, समाज के धनाढ्य वर्ग के साथ-साथ गरीब एवं साधनहीन लोगों में मुख्य वाहिनी के रूप में प्रयोग की जाती रही है । लेकिन गुजरे एक दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के नाम पर, देश की उस जनता के साथ अन्याय किया गया है जो आवागमन के समय रेलों को ही परिवहन के मुख्य साधन के रूप में इस्तेमाल करती रही है ।

सुविधाओं के नाम पर रेलवे की सारी शक्ति एवं साधन 'राजधानी' और 'शताब्दी'-जैसी गाड़ियों तक ही सिमटकर रह गयी है । द्वितीय श्रेणी के यात्रियों के लिए रेलवे विभाग के पास लापरवाही और असुविधाओं के सिवाय और कुछ नहीं है ।

रेलवे में भ्रष्टाचार, यात्रियों के साथ चोरी, मारपीट के अलावा रेलों का देरी से पहुंचना तो जैसे आज रेलवे के प्रमुख लक्षण बन गये हैं ।

—श्यामसिंह बिल्डिंग के पीछे, मोदीनगर
(जिला-गाजियाबाद)

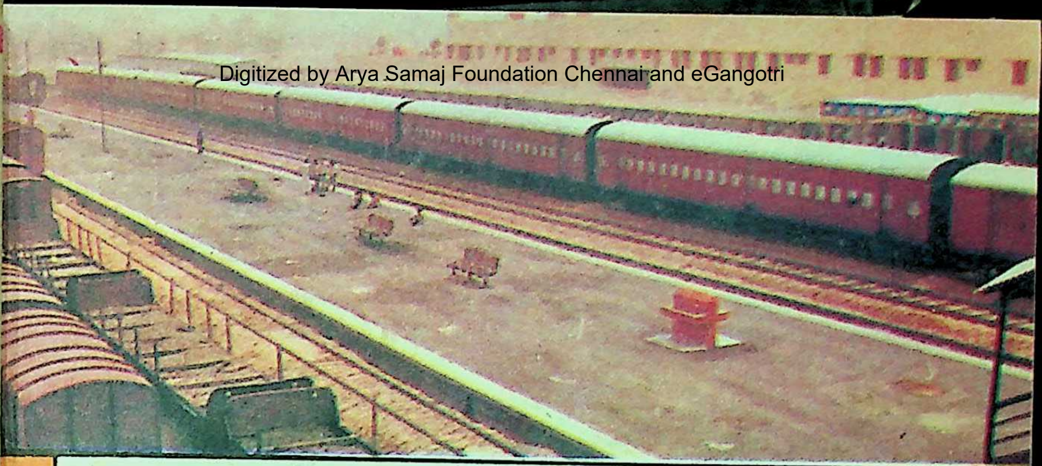

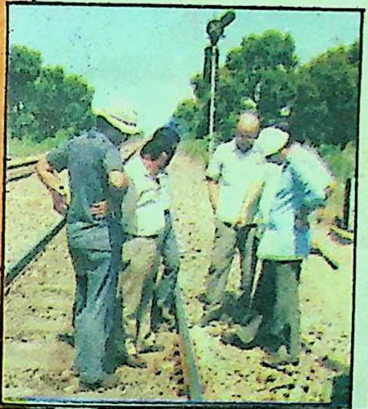

सुरक्षा के बाद भी रेल दुर्घटनाएं

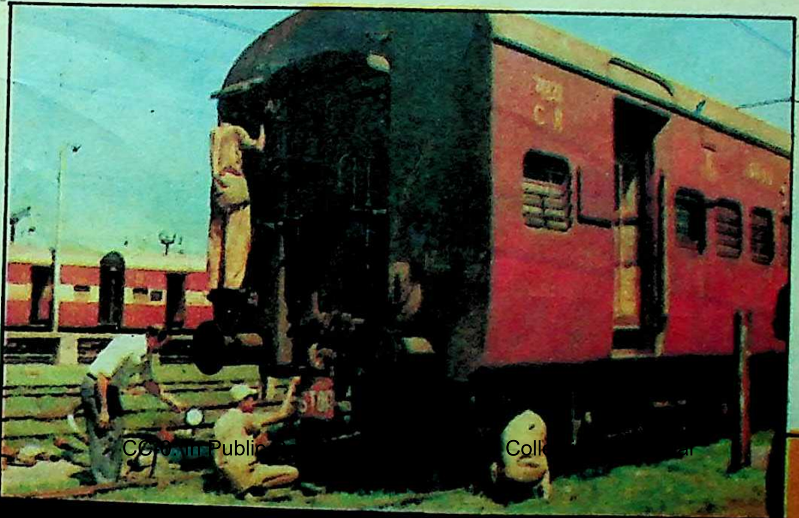

छाया : के.के. देवराज

CC-0. In Public Domain. Collection

दादाजी को है पसंद, दादीमाँ को भी सही,
पापा भी चोरी से खाते, मम्मी तो कम नहीं
हमसब भी जिसके मतवाले, है वही मॉर्टन यही॥
SCRABBLE

MORTON
SWEETS

उस दिन क्या ही आनन्ददायक स्क्रेबल खेल हो रहा था और उसे जमाने का श्रेय था मॉर्टन को। मेरे परिवार की तो सदा से ही पहली पसंद रही है—मॉर्टन। उत्कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा साथ ही अनेकानेक जायकों में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध, ग्लूकोज़ और चीनी की पौष्टिकता से भरपूर। चॉकलेट एवं कोकोनट कुकीज़ रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स, मैंगोकिंग एवं अन्य अनेकों मनलुभावन स्वादों में उपलब्ध। आह्हा! क्या लाज़वाब स्वाद।

जीवन का अनुपम माधुर्य

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार

CCM-3/83 HIN

चेतावनी : स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अपर गैंगेज सूगर एण्ड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापारचिन्ह है। किसी भी प्रकार से व्यापारचिह्न अधिकारों का उल्लंघन अभियोजनीय है।

दुनिया का पहला नोट ही सबसे बड़ा नोट था !

● अमिताभ स.

आज दुनिया के हर देश में सिक्के और नोटों का प्रयोग होता है । दरअसल, मुद्रा की जन्म-कथा सदियों पुरानी है । प्रारंभिक सभ्यताओं के दौरान सिक्के और नोट नहीं हुआ करते थे । तब लोग वस्तुओं की अदल-बदल (बार्टर प्रणाली) से ही गुजारा करते थे । पत्थरों से निर्मित हथियारों और औजारों के अतिरिक्त रोम, स्पार्टा और कार्पेज के लोग सिक्कों की बजाय चमड़े के छोटे-बड़े टुकड़े काम में लाते थे । यूनान में सारा लेन-देन गायों और बैलों से होता था । प्राचीन चीन और तिब्बत के निवासी चाय के पत्तों को असाधारण दबाव द्वारा ईट की आकृति में ढालते थे । वहां चाय के पत्ते लगभग सौ वर्ष मुद्रा के तौर पर प्रयोग किये जाते रहे । और तो और, जरूरत पड़ने पर ये ईटनुमा सामग्री चाय बनाने या ईधन जलाने के लिए भी इस्तेमाल की जाती थी ।

धीरे-धीरे व्यापार और आयात-निर्यात की वृद्धि की वजह से सिक्कों की जरूरत महसूस की गयी । कुछ इतिहासकारों का मानना है कि ईसा से लगभग ३,००० वर्ष पूर्व, बेबीलोन के धर्म-स्थलों में सोने की छड़ें सिक्कों के रूप में इस्तेमाल की जाती थीं ।

वैसे, सिक्कों का प्रमाणित चलन ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी के दौरान आया । एशिया महाद्वीप के तात्कालीन 'लेडीपा' राज्य (अब तुर्की) में, सर्वप्रथम सिक्कों के अस्तित्व के प्रमाण प्राप्त हुए हैं । स्वर्ण व चांदी के मिश्रण से निर्मित ये सिक्के, ईसा पूर्व सन ६८५-६५२ में, सम्राट गीज के शासनकाल के दिनों में जारी किये गये थे । इन सिक्कों के सिर्फ एक तरफ ही चित्र खुदा हुआ था । आजकल के सिक्कों की

चीन : दुनिया का सबसे पहला बड़ा नोट

आज सिक्के और नोट हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गये हैं । दरअसल, प्राचीन सभ्यताओं से आधुनिक युग के दौरान, सिक्कों और नोटों ने अनेक रूप बदले हैं । प्रस्तुत है तब से लेकर अब तक की मुद्रा का सफर ।

भांति दोनों तरफ तसवीरों-युक्त सिक्कों का आविष्कार पहली बार ग्रीक में हुआ था । ग्रीक के सम्राट अलेक्ज़ैंडर की मृत्यु सन ३२३ (ईसा पूर्व) में हुई थी । सम्राट की पुण्य-स्मृति में उसके चित्र सहित इन सिक्कों की ढलाई की गयी थी ।

पंच मार्क सिक्के

इसी बीच, प्राचीन भारतीय सभ्यताओं में 'पंच मार्क' सिक्कों का प्रचलन प्रारंभ हुआ । इन सिक्कों को 'पण' कहते थे और इन्हें एकत्रित करनेवाले व्यक्ति को 'पणि' कहा जाता था । लेकिन इतिहासकारों के अनुसार भारत में सिक्कों का बाकायदा वर्तमान रूप में चलन 'षोड्स महाजन-पद' (बुद्धकाल) के समय हुआ था ।

दुनिया के सबसे बड़े सिक्कों का प्रयोग करीब सौ साल पहले, पश्चिम प्रशांत महासागर में स्थित 'याप' नामक छोटे-से द्वीप में होता था । दिलचस्प बात है कि सिक्कों की क्रय-क्षमता उनके आकार पर निर्भर करती थी । वहां नौ इंच से लेकर १२ फुट से अधिक व्यास के पत्थरनुमा सिक्के उपलब्ध थे । कहते हैं कि एक मध्यम आकार के सिक्के के बदले अठारह फुट लंबी संकरी नाव खरीदी जा सकती थी ।

चूने के पत्थरों से निर्मित कथित सिक्कों का पत्थर 'पालाऊ' द्वीप से नावों द्वारा मंगवाया जाता था । 'याप' के आदिवासी पत्थरों को गोलाकार करने के उपरांत बीचोंबीच एक छेद करते थे । अत्याधुनिक उपकरणों व यंत्रों के अभाव के कारण एक सिक्का बनाने में दो वर्ष का समय लग जाता था । वैसे, ३९ वर्गमील क्षेत्र में फैला 'याप' द्वीप 'अमरीका ट्रस्ट टेरेटरी' के अंतर्गत आता है ।

आधुनिक रूप के सिक्के अंगरेजों की देन हैं । सन १८३१ में हिंदुस्तान में अंगरेजी ढंग के तांबे के सिक्के शुरू हुए । पहले-पहल अंगरेजों ने चांदी का रुपया, अठन्नी और चवन्नी तथा तांबे का दो पैसा, पैसा, आधा पैसा व पाई (एक पैसे का तिहाई) जारी किये । अंगरेज बादशाह जार्ज पंचम के समय में सिक्कों का प्रचलन शुरू हुआ । जार्ज छठे ने पीतल के सिक्के बनवाये । सन १९३९ तक शुद्ध चांदी का रुपया प्रचलित रहा । तत्पश्चात तांबा और निकेल के मिश्रण से रुपया का सिक्का बनने लगा ।

अशोक स्तंभ के सिक्के

सन १९५७ में पहली बार भारत सरकार ने सिक्कों पर अशोक स्तंभ मुद्रित करने की परंपरा शुरू की । सन १९५७ में भारत सरकार ने

10,000
0000000
10,000
TEN THOUSAND DOLLARS IN GOLD
10,000

दस हजार अमरीकी डालर : दुनिया का सबसे अधिक रकम का नोट

सिक्कों की पुरानी पद्धति (रुपया, अठन्नी, चवन्नी, दुअन्नी, इकन्नी, अधन्नी व पैसा) को बदल कर, फ्रांस की दशमलव प्रणाली अपनायी । नयी पद्धति के अनुसार एक पैसा रुपए का सौंवा भाग है । जबकि पहले पैसा रुपये का चौसठवां हिस्सा होता था ।

नोटों के स्वरूप में, कागजी मुद्रा का चलन सातवीं सदी में चीन में हुआ था । कहा जाता है कि चीन में सबसे पहले सन ९१० में नोट छापे गये । लेकिन वे लोकप्रिय नहीं हो सके । पुनः नोटों को सन ९७० में विकसित स्तर पर शुरू किया गया । चीनी नोटों को कामयाब बनाने के उद्देश्य से, चांदी-सोने के सिक्कों के चलन पर सख्त रोक लगा दी गयी ।

बैंक नोटों का मुद्रण चीन के मिंग शासक-वंश के दौरान, सन १३६८ से १३९९ के मध्य किया गया । इस ऐतिहासिक नोट पर १०० नकद की १० पाइलें चित्रित थीं । इस हिसाब से, नोट की मूल कीमत एक हजार पाइल हुई । नोट की चौड़ाई २२.८ सेंटीमीटर और लंबाई ३३ सेंटीमीटर थी । इस प्रकार यह दुनिया का पहला प्रमाणित और सबसे बड़ा नोट है । लंदन में ७ अक्तूबर १९८३ को ऐसे तीन नोटों की नीलामी की गयी थी और एक नोट का मूल्य एक हजार डॉलर आंका गया ।

'गिन्नीज बुक ऑव वर्ल्ड रिकॉर्ड' का दावा है कि जुलाई, १६६१ में बैंक नोटों के पहले-पहल प्रचलन का श्रेय स्वीडन को जाता है । १८वीं शताब्दी के मध्य में, अमरीका ने भी नोटों को छापना शुरू किया । 'बैंक ऑफ इंगलैंड' के पहले नोट का प्रकाशन १९ दिसम्बर १६९९ में हुआ था । लेकिन ब्रिटेन के प्राचीन दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि सन १८५३ में ब्रिटिश डाक-टिकटें छापनेवाले प्रेस के मालिक थॉमस रू ने सरकार के वित्तीय विभाग को, सिक्कों को कागजी मुद्रा में परिवर्तित करने का सुझाव दिया था । सन १८६४ में ब्रिटिश सरकार ने थॉमस रू के सुझाव पर गौर किया । फिर प्रयोग के तौर पर, छोटी रकमों के नोट प्रकाशित किये । नोट सिक्कों की अपेक्षा लाने-ले जाने और रखने में अत्यंत सुविधाजनक सिद्ध हुए । और देखा-देखी दुनिया के सभी देशों में नोटों का प्रचलन फैलता चला गया ।

जाली नोटों का चलन

पुराने जमाने में भी नोटों की ठगी, जालसाजी, हेराफेरी और घपलेबाजी जैसे अपराध होने का अंदेशा रहता था । इसलिए सन १७५९ में छपे एक अमरीकी नोट पर साफ लिखा था कि ऐसे जाली नोट बनानेवाला व्यक्ति

मूल्य-दंड का भोगी होगा । यों तो, आजकल सभी देशों में, मुद्रा जारी करनेवाला पदाधिकारी धारक को नोट का मूल्य अदा करने का वचन देता है ।

आज भारत में पांच सौ रुपये का नोट सबसे अधिक रकम का है । लेकिन 'अमरीकी फेडरल बैंक' द्वारा जारी दस हजार डॉलर का एक नोट, विभिन्न देशों में प्रचलित नोटों के मुकाबले सबसे अधिक रकम का विश्व कीर्तिमान स्थापित करता है । इन नोटों के एक ओर सोलमन पोर्टलैंड चैज (१८०८-७३) का चित्र मुद्रित है । जुलाई १९४४ से अमरीकी वित्तीय विभाग ने भविष्य में, इन नोटों के प्रकाशन पर रोक लगा दी है । सन १९६९ में, सौ डॉलर से ऊपर के नोट न छापने का निर्णय लिया गया । इसके बावजूद, आज दस हजार डॉलर के ४०० नोट अमरीका में चल रहे हैं ।

दिलचस्प बात है कि सत्रहवीं शताब्दी तक एक ही देश के अलग-अलग बैंक भिन्न-भिन्न नोट जारी करते थे । अमरीका में तो अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी तक ऐसा चलता रहा । सन १८६१ में अकेले अमरीका के १६०० बैंकों के १०हजार से भी अधिक किस्म के नोट चलन में थे । परिणामस्वरूप एक ही देश में भांति-भांति के सैकड़ों नोट चलने से अनेक समस्याएं पैदा होने लगीं । अंततः नोटों के प्रसार की व्यवस्था प्रत्येक देश के एकमात्र रिजर्व या सेंट्रल बैंक के अधीन सुरक्षित की गयी । अब केंद्रीय वित्त मंत्रालय के आदेशानुसार राष्ट्रीय स्वर्ण-भंडार के आधार पर सेंट्रल या रिजर्व बैंक निर्धारित संख्या में नोट जारी करता है । भारतीय संविधान के अनुसार नोट छापने का एकाधिकार भारतीय रिजर्व बैंक को ही है ।

—५१, राजपुर रोड,
दिल्ली-११००५४

चींटियों से इलाज

आम धारणा यह है कि चींटियां हमें काटकर कष्ट ही पहुंचाती है और वे हमारे लिए किसी काम की नहीं होती । पेइचिंग (चीन) की एक समाचार एजेंसी 'सिंहुआ' के अनुसार चींटियों के इस्तेमाल से चीन में टॉनिक और खाद्य पदार्थ बनानेवाले अस्पतालों और फैक्ट्रियों का वार्षिक व्यापार अब ११ करोड़ ६० लाख डॉलर (३ अरब ७१ लाख रुपये) तक पहुंच गया है । रिपोर्ट के अनुसार नानकिंग शहर के एक शोध संस्थान के प्रोफेसर झीचेंग ने चींटियों से बनी दवाओं के इस्तेमाल में गठिया के सात लाख से भी अधिक रोगियों को ठीक किया है ।

चीन में चींटियों की मांग इतनी बढ़ गयी है कि कुछ लोग घरों में चींटी पालन करने लगे हैं ।

— प्रकाशचंद्र गंगराड़े

नंदबाबू का विकट धर्मसंकट

एक बार इंगलैंड के प्रसिद्ध चित्रकार और गुरुदेव के अभिन्न मित्र राथेन्स्टीन भारत आये थे । गुरुदेव ने उनके अभिनंदनार्थ भारत के सभी प्रतिष्ठित चित्रकारों को आमंत्रित किया था । उन दिनों रवीन्द्रनाथ ने अमूर्त चित्रांकन का नया प्रयोग प्रारंभ किया था । साठ की आयु के बाद चित्रकला के क्षेत्र में इस नये प्रयोग की ताजगी पर सभी मंत्रमुग्ध थे । बहुतों का तो विचार था कि जैसे काव्य के क्षेत्र में गुरुदेवने नयी दिशा दी थी, वैसे ही चित्रकला के क्षेत्र में भी उसके मौलिक योगदान की संभावना थी । जब सब लोग विश्राम करने चले गये और केवल नंद बाबू और हजारीबाबू रह गये, तब गुरुदेव ने हंसी-हंसी में नंदलाल बोस से कहा, ''क्यों रे ! मेरे चित्रों पर तूने कोई राय नहीं दी ।''

नंदबाबू ने अत्यंत विनम्रता से कहा, ''गुरुदेव ! मेरे गुरु अवनीन्द्रनाथ स्वयं मौजूद थे, फिर पिता-तुल्य आप और अन्य विख्यात कलाकार, इन सबके बीच मैं क्या बोलता

गुरुदेव बोले, ''अच्छा, अब तू अपनी राय बता ।''

नंदबाबू कहते रह गये कि सभी ने तो इन चित्रों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है, फिर मेरी सम्मति का मूल्य ही क्या है, 'महाजनो येन गतःस पंथाः' पर गुरुदेव ने एक न सुनी और नंदबाबू की व्यक्तिगत राय जानने की जिद करते रहे ।

नंदबाबू विकट धर्मसंकट में पड़ गये । उन्होंने बड़े साहस के साथ कहा, ''एक बात पूछूं यदि आप बुरा न मानें ?''

गुरुदेव ने कहा, ''अवश्य पूछें, इसमें बुरा मानने की क्या बात है ?''

इस पर नंदबाबू ने जिज्ञासा की, ''आप अपने चित्रों में सदा मुट्ठियां क्यों बंधा देते हैं, पंजा क्यों नहीं खोलते, अंगुलियों का अंकन क्यों नहीं करते ?''

गुरुदेव ने पूछा, ''तू क्या समझता है !''

नंदबाबू पहले तो कुछ झिझके, फिर अत्यंत विनीत भाव से बोले, ''मैं तो समझता हूं कि आपको अंगुली बनाना नहीं आता ।'' सुनते ही सबको झटका-सा लगा ; पर नंदबाबू नितांत भोलेपन से बोलते गये, ''अंगुलियों का रेखांकन सर्वाधिक कठिन कार्य है । पहले तो यही कठिनाई आती है कि किस मूड में हाथ कैसा और कहां रहना चाहिए और अंगुलियोंकी स्थिति कैसी होनी चाहिए । सूक्ष्मातिसूक्ष्म मनोदशाओं के चित्रण में अंगुलियों की मुद्राओं का प्रशस्त महत्त्व है, आकृति के ही समान उनकी अलग-अलग भाव-भंगिमाएं भी होती हैं ।''

गुरुदेव कुछ क्षण नंदबाबू को एकटक देखते रहे, फिर हर्ष गद्गद होकर बोले कि ''निस्संदेह तू बहुत बड़ा कलाकार है । मुझे सचमुच उंगलियां बनाना नहीं आता, पर एक बात जान लें कि केवल चित्रों में ही नहीं, साहित्य में भी मैंने सदा मुट्ठियां ही बांधी हैं ।''

प्रस्तुति : अ. गौ.

असमिया कहानी

नौकरी की आवश्यकता

• डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा

किताब का नाम 'मेघनाद साहा' है । अंगरेजी किताब है, प्रसिद्ध पदार्थ-वैज्ञानिक की जीवनी का असमिया अनुवाद कर इसी महीने में दिल्ली भेजना है । नयी दिल्ली के नेशनल बुक ट्रस्ट को । इसके निदेशक ने दो बार मुझे इस बात का स्मरण करा दिया है । पर इसी महीने में काम समाप्त कर पाऊंगा या नहीं बता नहीं सकता, फिर भी पांडुलिपि जमा करने की तारीख बीते दो महीने हो चुके हैं । मैंने काम नहीं लेने का ही सोचा था । लेकिन इस वैज्ञानिक के प्रति मेरा अपार लगाव है । किताब का अनुवाद करने की जिम्मेवारी लेकर अच्छा कार्य ही किया है,ऐसा लगता है । इनको मैंने कलकत्ते में दो बार देखा । तब वह आणविक आयोग के अध्यक्ष थे । एक बार उनके कुछ प्रिय छात्रों ने उनसे इस तरह पूछा, 'सर, आप एक बड़े वैज्ञानिक हैं ! लेकिन कुछ वर्षों से राजनीति क्यों कर रहे हैं ?' सवाल सुनकर वह बहुत गंभीर हो गये । छात्रों ने यही समझ लिया था,वह सवाल का जवाब नहीं देंगे । उन लोगों ने सोचा, सवाल से वह असंतुष्ट हुए हैं । पर वह कुछ देर तक चुपचाप रहने के बाद धीरे-धीरे कहने लगे, 'देश के सभी नागरिकों को समान सुविधाएं मिलनी चाहिए । यह ही राजनीति का उद्देश्य होना चाहिए । परंतु देखो, मैं किसी कारणवश इस तरह का व्यक्ति बन गया । सुविधा के अभाव में मुझसे अधिक गुणी लड़का खत्म हो जाएगा या हो गया है, उसकी खबर क्या हमने रखी है ? मेरे जीवन के पहले भाग में जो अवर्णनीय दुख हुआ, वह इस वक्त सोचने पर डर लगता है ।'

इस कथा को जानने के बाद इस वैज्ञानिक के प्रति मेरा विशेष लगाव हुआ, गांव के एक साधारण दूकानदार के पुत्र मेघनाद को, पिता हाईस्कूल में पढ़ाना नहीं चाहते थे । शिक्षकों के अनुरोध पर लड़के की पढ़ाई जारी रखी, उस दौरान मेघनाद के कष्टों की कथा का वर्णन पुस्तक में सुंदरता से किया गया है ।

पुस्तक के उस अंश का अनुवाद कर मुझे बेहद अच्छा लगा । लेकिन एक हिस्से का अनुवाद करने के बाद दो नयी तरह की समस्याएं आ गयीं । मैंने एक दूसरी जीविका ग्रहण कर ली । स्थान का परिवर्तन हुआ । मैं बड़ी असुविधा में पड़ गया । खाने-पीने की बड़ी तकलीफ हुई । बीच-बीच में होटल में खाना पड़ा । भाड़े के घर को खुद साफ-सुथरा

कर रखना पड़ा । इसी ने मेरे कार्य की प्रगति में बाधा पहुंचायी । 'मेघनाद साहा' की असमिया पांडुलिपि समय पर न दे सकने के कारण दिल्ली से मेरे पास प्रायः तकाजा आने लगा ।

इसी बीच मुझे दुख को कम करने की एक तरकीब सूझ गयी । मेरे कार्यालय में एक चपरासी की नौकरी निकली । यह खबर मिलने के साथ ही कई युवा लड़के मुझसे मिलने आये । उनका साक्षात्कार लिया । बहुत सोच-समझकर एक सहज-सरल लड़के का चुनाव कर लिया । वह मेरे साथ रहने को राजी हुआ । मेरे घर रहना मतलब मेरी रसोई आदि करना । निसंदेह अधिक काम नहीं है । घर में सिर्फ मैं ही हूं । परिवार हमारी जगह पर ही है ।

लड़के का नाम गौतम है । बातें कम करता है । करता भी है तो अनिच्छा से करता है । अक्सर आधा वाक्य उच्चारण कर ही काम चला देता है । अक्सर लोगों की आदत होती है जरूरत से ज्यादा बातें करना ; आयं-आयं करना ।

इसलिए अवश्य मुझे सुविधा हुई है । गौतम का चरित्र और एक गुण या अवगुण देखा । युवा लड़के का कोई साथी नहीं है । उसे साथ के चपरासी-चौकीदारों के साथ बचा समय बात कर व्यतीत करते हुए मैंने नहीं देखा है, मेरे घर पर भी कोई चपरासी-चौकीदार उससे मिलने नहीं आता है । वह किस तरह इतना चुपचाप बिना संग के रहता है.देखकर मुझे ही बीच-बीच में अचरज होता है ।

एक बार अवश्य ही उसने मुझे क्षति पहुंचायी । वेतन मिलने के बाद उसे उसके घर भेजा । जाते वक्त उसे इस तरह सावधान कर

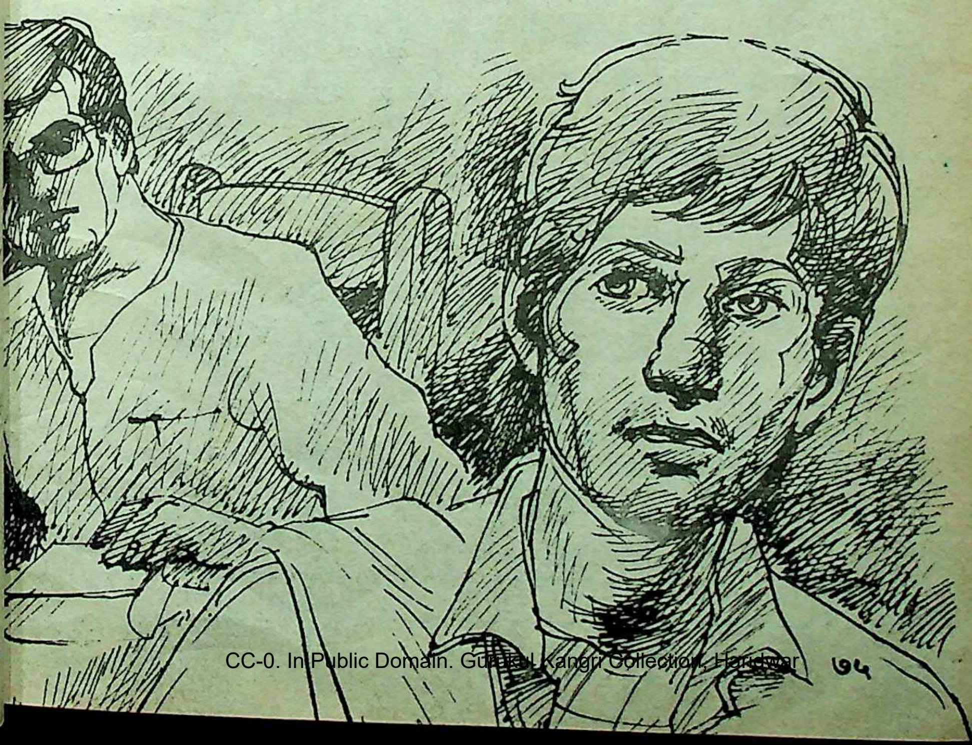

दिया, 'अब तुम बड़े हो गये हो । तुम्हें अपने लिए रुपये जमा करने चाहिए । इसलिए सारे रुपये रिश्तेदारों को देकर मत आना । यहां तुम्हारा खर्च नहीं है । आनेवाले महीने से रुपये बैंक में जमा करना ।'

इतना बढ़िया उपदेश दे उदारता दिखाने के बावजूद उसके मुंह से कृतज्ञता नहीं झलकी और न ही किसी तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त हुई । उसका चेहरा सदैव चिंतित नजर आता है वह जैसे एक रोबोट, काम करनेवाली एक यंत्रचालित काया है । वह अपने घर जाकर दो दिन बाद लौट नहीं आया । सात दिन बाद वापस लौटा । इन सात दिनों में मैं मेघनाद साहा की जीवनी का एक परिच्छेद भी अनुवाद नहीं कर सका था । खुद घर साफ करना पड़ा, चाय बनाकर पीनी पड़ी, भात खाने के लिए आधा मील दूर होटल जाना पड़ा ।

सात दिन बाद गौतम के वापस आने पर मुझे गुस्सा चढ़ गया । मैं इस तरह गरज उठा, 'तुम्हारे—जैसे लोगों को प्यार करने से कोई फायदा नहीं है । मैं तुझे घर नहीं भी भेज सकता था । लेकिन तुम इसको न समझ सके । तुम्हें इतनी देर क्यों लगी ? मैंने तुम्हें तुम्हारी सुविधा के लिए नहीं रखा है, रखा है मेरी सुविधा के लिए, कार्यालय की सुविधा के लिए । इसी तरह होता रहा तो कितने दिनों तक नौकरी करोगे ?'

मेरी कटु बातें सुनकर उसके चेहरे पर असंतोष की लकीरें उभरनी चाहिए थी । परंतु उस चेहरे पर किसी तरह की अनुभूति नहीं है । वह कोई चेहरा नहीं,जैसे लड़के-लड़कियों का बनाया हुआ नकाब है । अवश्य मैं जब गाली-गलौज कर रहा था,तब वह सिर नीचे झुकाये था ।

उसकी प्रतिक्रियाविहीन स्थिति ने मेरे गुस्से को और बढ़ाया । उसके पास जाकर मैंने चिल्लाकर कहा, 'बड़ा जब कुछ पूछता है तो उसका जवाब देना चाहिए । क्यों देरी हुई, बताते क्यों नहीं हो ?'

आखिरकार वह बोला, 'बहन को बुखार है ।'

फिर एक वाक्य । बहन को कितना बुखार है, क्या स्थिति खतरे में है यह तो वह कह सकता था । लेकिन उसने मुझे संतुष्ट कर सकनेवाला जवाब देने की कोशिश नहीं की इसलिए मैंने सवाल कर असली कारण जानने का प्रयास किया ।

'कितना बुखार है ?'

'बहुत ।'

'डॉक्टर ने क्या कहा ?'

'डॉक्टर नहीं है ।'

'डॉक्टर नहीं है' इसका अर्थ यही हो सकता है कि बाईहाटा से बीस मील दूर उसके गांव में डॉक्टर नहीं जाता है या वहां डॉक्टर उपलब्ध नहीं है ।

'क्या दवा खिलायी ?'

'कविराज की ।'

'अब उठ-बैठ सकती है ?'

'नहीं ।'

'बहन की उम्र क्या है ?'

'चौदह ।'

'घर में उसे बोझ समझकर ही इलाज नहीं करवाया है क्या ?'

'इलाज अब होगा ।'

मैंने देखा उसकी आंखें गीली हो गयी हैं । उसने टूट चुकी आवाज में कहा, 'मुझे क्षमा कीजिए सर, नौकरी पाने के लिए मैंने आप से छिपाया । चुपचाप रह मैंने अपनी शिक्षा को छिपाने का प्रयास किया । कुछ फायदा नहीं हुआ सर । पकड़ा गया ।'
अब से मैं गौतम को अलग नजरों से देखने लगा ।

गौतम के मुंह से अब की पहली बार एक पूरा वाक्य सुनने को मिला ।

'कारण.तू पैसा दे आया है ?''

'हां ।'

सूखे बांस की लकड़ी से रस निकालना और हमारे गौतम भट्टाचार्य से बात निकालना एक ही बात है । मैंने और उससे कुछ नहीं पूछा । मेरा गुस्सा उतर गया । वह काम में जुट गया ।

मैं उसके काम से संतुष्ट हूं । उसकी तरह सहज-सरल लड़के के बदले अन्य कोई दूसरा होता तो मुझे बहुत कष्ट होता । भाड़े के घर में अकेले रहनेवाले व्यक्ति को बिना कष्ट रखने के लिए इतने सारे कार्य करने पड़ते हैं यह गौतम का काम देखकर ही समझ सका । वह सुबह उठकर चाय बनाता है । बाद में जगह साफ करता है । कुएं से पानी निकालकर नहाने के लिए घर की टंकी भरनी पड़ती है । उसके बाद दूधवाले से दूध लेकर गरम करना पड़ता है । चक्की के आटे से सूखी रोटियां और साग-सब्जी से तरकारी बनानी पड़ती है । वह नाश्ते के बाद खाना पकाने के काम में लग जाता है । साढ़े नौ बजे खुद खाकर कार्यालय जाने के पहले मेरे लिए खाना हॉटकेस में रख जाता है । वह मुझे घर का कोई भी काम करने का मौका नहीं देता है । सुबह मेरा बिछौना वह ही झाड़-झपटकर ठीक कर देता है । मच्छरदानी भी सजाकर रखता है ।

सूर्यास्त होने के पहले ही वह कार्यालय से लौटकर मेरे जूठे छोड़े गये बरतनों को धोता है । उसके बाद आधा मील दूर बाजार से सामान लाकर रसोई के काम में लग जाता है । रात नौ बजे मैं भात खाता हूं । मैं जब भात खा रहा होता हूं तब वह बीच में पूछता है, 'क्या कुछ चाहिए ।' मुझे कुछ नहीं चाहिए कह देने पर वह भात खाना शुरू करता है । उसके बाद बरतन-वरतन धोकर कुछ देर बरामदे में बैठा रहता है । उसके बाद आकर मेरे बिछौने का बैड-कवर अलग कर सजाने के बाद बांस की कुरसी पर रखता है । मच्छरदानी तानकर वह सोने जाता है ।

मेरे भाड़े के घर से कुछ दूर एक सिनेमा हॉल है । वहां काफी दिनों से बांग्ला फिल्म 'बेदेर मेये ज्योत्सना' चल रही है । यह फिल्म नहीं देखनेवाले युवक-युवती गुवाहाटी में न के बराबर हैं । लेकिन हमारे गौतम ने सिनेमा देखने की इच्छा व्यक्त कर कभी मुझसे अनुमति नहीं ली है ।

अवश्य काम में उसे थोड़ी-बहुत फुरसत मिलती है । उस दौरान उसे मैं बिछौने में पड़ा पाता हूं । सुबह हॉकर जो अखबार दे जाता उसे

वह सतही नजरों से पढ़ता है या नहीं, कह नहीं सकता है । मेरे न रहने पर वह टीवी देखता है या नहीं, मेरे द्वारा पता लगाना असंभव है, परंतु मैं जब टीवी देख रहा होता हूं तब वह मेरे कमरे में नहीं आता है ।

इसलिए मुझे कभी-कभी लगता है कि आजकल इतना सीधा लड़का भाग्य से ही मिलता है ।

लेकिन सांप को पहचाना जा सकता है, पर मनुष्य को पहचानना दुष्कर है । बूढ़े लोगों द्वारा पहले इस तरह की बात अक्सर कहते सुनता था । इसका हाथों-हाथ प्रमाण मिला युवा गौतम भट्टाचार्य में ।

उस दिन रविवार था । मैं सारे दिन घर पर नहीं था । पलाशबाड़ी की ओर गया था । शाम को जब घर लौटा तो पाया रविवार होने पर भी हमारा युवा लड़का घर में ही है । आंगन में घास काट रहा है ।

मैंने उसे देखकर पूछा, 'तुम्हें आज कहीं जाना है तो जा सकते हो । मेरे लिए भात नहीं बनाना पड़ेगा ।'

वह कुछ नहीं बोला । मैं समझ गया, वह घर पर ही रहेगा । मैं जब निकलकर जा रहा था तब उससे कहा, 'मेरे आने में देर हो सकती है । एक दरवाजा खोल इस दरवाजे में ताला लगा तुम सो जाना । मेरे पास चाबी है ।'

सिर्फ रात के नौ बजकर पच्चीस मिनट हुए हैं । मैं दोस्त के घर भात खाकर जायेरिगोग के नयनपुर से होते हुए गणेशगुड़ी चारिआली की ओर आ रहा हूं । सड़क पर लोगबाग न के बराबर हैं । कुछ घरों से दूरदर्शन की आवाज आ रही है । ऐसी आवाज स्तब्धता को और अधिक बढ़ाती है ।

मैं अकस्मात चमक उठा । एक साथ तीन गोलियों की आवाज । कितनी विपदा है । मैं जब एक घर में अतिथि बनकर बैठा था उसी दौरान क्या कहीं संघर्ष होने के कारण शहर में कर्फ्यू लगाया गया है ? मुझे भी क्या कानून तोड़नेवाला समझ गोली मारेंगे ? मैंने सड़क किनारे बल्ब की कम रोशनी से देखा कि एक व्यक्ति मेरी तरफ दौड़कर आ रहा है । उसके पीछे-पीछे बंदूकधारी पुलिस हैं । वह मेरे सामने आकर उलटे गिर गया । उसका शरीर खून से लथपथ है । वह दर्द से कराह रहा है । मैं दौड़ूंगा या पहले की तरह चलूंगा, सोचने का वक्त भी न मिला । मैं पसीने से तर-बतर हो खून से सने शरीर की ओर देख रहा हूं । उसकी मौत की यातना देखने के लिए कितनी देर रुका रहूंगा ? मैं असमंजस में पड़ गया । मेरी चेतना काम नहीं कर रही है ।

इस बीच एक पिस्तौलधारी पुलिस अधिकारी ने पड़े शरीर पर टॉर्च मारी । क्या वीभत्स दृश्य । पूरा शरीर खून से सना । उसके मुंह से खून निकल रहा है । एक कोमल चेहरा । एक युवक लड़के का ।

उस अधिकारी ने मेरी ओर टेढ़ी नजरों से देखते हुए कहा, 'इसमें रुचि मत लीजिए, समझे । खुद को असुविधा होगी ।' यह कह उन्होंने लड़के के हाथ की नांड़ी देख कहा, 'साला, शेष ।'

युवा लड़का अभी मेरे सामने मरा । मैं पूछने को विवश हुआ, 'असली बात क्या है ?'

उन्होंने वितृष्णा से कहा, 'यह ही देश है, समझे । इनकी उद्दंडता के चलते मनुष्य रह नहीं

सकते । डकैती, कई अन्य भाग गये ।'

मैं और वहां नहीं ठहरा । घर पहुंचा । गौतम सो चुका है । उसको उठाने की जरूरत महसूस नहीं हुई । मैं सो गया । परंतु नींद नहीं आयी । मध्य रात्रि तक भी । बार-बार मुझे गोली से मरे उस युवा का चेहरा याद आने लगा ।

मेरे जीवन की भयावह अनुभूति थी वह घटना जो देखी । यातना से कराहती, गोलियों से छलनी एक देह; उसकी मौत के असहनीय दर्द की पुकार, यह दृश्य देखने के पहले ही मेरी मौत का आ जाना अच्छा था ।

अब मैं क्या करूं ? रात मेरे लिए लंबी हो रही है । कहीं मन को लगाना ही अच्छा होगा ।

तभी मुझे 'मेघनाद साहा' की अंगरेजी जीवनी की याद आयी । अब भी इकसठ पेज का अनुवाद बाकी है । उधर नेशनल बुक ट्रस्ट से लगातार तकाजा आ रहा है, इसलिए मैंने मध्यरात्रि को किताब के कुछ पेजों का अनुवाद करने की सोची ।

लेकिन आश्चर्य की बात है कि मैं किताब खोजकर न निकाल सका । दो कमरे देख डाले । किताब नहीं है । अच्छा किताब को कौन ले सकता है ? सुबह किताब टेबल पर ही थी ।

मैंने लाइट बुझा दी । बिछौने में ही इधर-उधर करवट लेता रहा । मैं पुलिस अधिकारी की तरह निर्दय नहीं हो सकता, मेरी आंखों में अब भी था वह दर्दनाक मौत का दृश्य !

आकाश का अंधेरा छटने लगा । परंतु चिड़ियाएं अभी भी जगी नहीं हैं । मैंने सोचा एक कप चाय ही पी ली जाए । रसोई-घर में कहां चाय-चीनी है, मैं नहीं जानता । इसलिए गौतम को जगाने मैं उसके कमरे में गया । लाइट जला दी । आंखें मच्छरदानी के पास ले जाकर देखा । वह पूरी नींद में था । उसे जगाना बुरा लगा । लेकिन एक कार्य को देख मेरी आंखें भी सहसा विश्वास न कर सकीं । टेढ़े होकर सो रहे गौतम के नजदीक किताब अधखुली पड़ी थी । तुरंत स्थिति को समझने में मुझे कठिनाई हुई ।

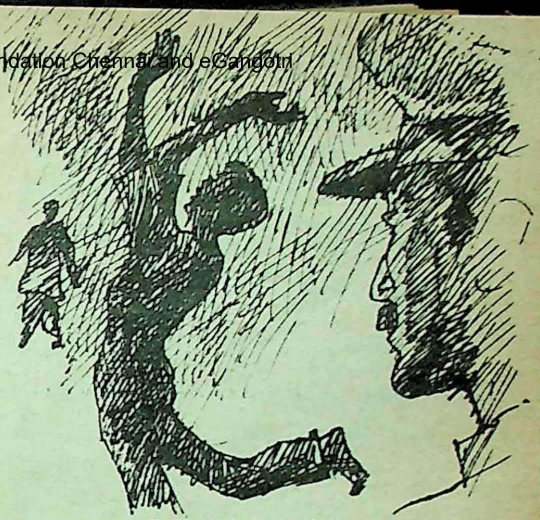

मैं चाय पीने की बात भूल गया । अब गौतम के बारे में मेरा कौतूहल अधिक हो गया ।

मैंने धीरज धर अपेक्षा की । निर्धारित समय पर गौतम उठा । वह हाथ-मुंह धो गैस जलाकर चाय बनाने में लग गया । उसने मेरे सामने एक कप चाय रख दी ।

मैंने पूछा, 'वह किताब तुम्हारे बिछौने में है । गौतम तुम अंगरेजी पढ़ सकते हो ?'

वह कुछ न कह मेरे सामने से हटकर जाना चाहने लगा । मैंने फिर कहा, 'कहा है न मत जाओ । मेरी बात का जवाब दो ।'

मैंने उसकी ओर देखा । वह पूरी तरह तैयार न था । काफी समय बीता । वह निश्चल खड़ा है । आखिरकार उसने कहा, 'मुझे मारिए सर, मुझे नौकरी से निकाल दीजिए सर । मैंने आप—जैसे पिता समान व्यक्ति से झूठ बोला सर ।'

'तुम क्या कह रहे हो, मैं कुछ नहीं समझा । मुझे संदेह हो रहा है तुम काफी पढ़े-लिखे लड़के हो । तुमने तसवीर देखने के लिए यह किताब मच्छरदानी के अंदर नहीं ली थी । इसमें न तसवीर है और न यह सहज है । बताओ, तुम कितने तक पढ़े हो ?'

'सर, थोड़ी-सी पढ़ाई की है । हमारे—जैसे गरीब को शिक्षा अर्जित कर क्या फायदा है ?'

एक-एक लंबे शब्द । भाषा पर गौतम का इतना अधिकार है,मैं सोच भी नहीं सका था ।

मैंने देखा उसकी आंखें गीली हो गयी हैं । उसने टूट चुकी आवाज में कहा, 'मुझे क्षमा कीजिए सर, नौकरी पाने के लिए मैंने आप से छिपाया । चुपचाप रह मैंने अपनी शिक्षा को छिपाने का प्रयास किया । कुछ फायदा नहीं हुआ सर । पकड़ा गया ।' अब से मैं गौतम को अलग नजरों से देखने लगा । मुझे फिर सवाल करना पड़ा । वह मन में दुख के चलते अपने आप कहता गया, 'मैं जानता हूं सर, पदार्थ विज्ञान में प्रथम श्रेणी से बी. एससी पास का, कहता तो आप निश्चय ही मुझे नौकरी पर नहीं रखते । परंतु इस बार की सौ रुपये की नौकरी ही कुछ महीनों से मेरा घर चला रही है ।' मैं गौतम के चेहरे की ओर और देख न सका । मैं व्यथा में डूब गया । मैंने आंखें मूंद लीं । गौतम द्वारा नाक का पानी ऊपर खिसकाने की आवाज सुनी ।

मैंने धीरे-से कहा, 'मुझे तुम्हें क्षमा करने का कोई अधिकार नहीं है, गौतम । हमारे समाज का भी कोई अधिकार नहीं है ।'

अचानक मेरे मुंह से 'तुम्हारा' शब्द निकल आया । गौतम ने पूछा, 'सर,आपने उत्तम महाचार्य का नाम सुना है ना ? अखबार में निश्चय ही उसके बारे में पढ़ा होगा । वह मेरा बड़ा भाई था । सर काफी मेहनत के बाद इंजीनियर हुआ था । उसके लिए हमारी जमीन बिक गयी थी, लेकिन सर, पांच साल तक नौकरी न मिलने पर उसने फांसी लगा ली ।'

मैं उसे और कुछ न कह सका । उसके पास खड़े रहना ही असहनीय हो गया, मैं रास्ते पर निकल आया ।

अनु. : राजीव कुमार
हनुमान मंदिर के पास
पो.—बिलासीपाड़ा
जिला—धुबड़ी (असम)

कामशक्ति को स्वनियंत्रित रखने के लिए बेल का विशेष महत्त्व है । इसका कच्चा फल आम पाचक है । आंतों को बल प्रदान करता है । यह आमाशय के जख्मों को ठीक करता है । अंतड़ियों के शोथ (सूजन) से पैदा हुए रक्त को बंद करता है । संग्रहण के लिए बेल अति महत्त्वपूर्ण है । इसके पत्तों का रस सूर्योदय से पहले प्रतिदिन एक चम्मच पी लेने से मधुमेह पूरी तरह अपने सामान्य रूप में आ जाती है तथा यदि इसका प्रयोग शिलाजीत के साथ किया जाए तो यह मधुमेह को जड़ से मिटा डालता है ।

—सुबोध सहर

झगड़ालू पत्नी से छुटकारा

कखग, विलासपुर : मैं एक शादीशुदा सरकारी कर्मचारी हूं । मेरा एक लड़का भी है । पत्नी बहुत ही बदमिजाज और झगड़ालू है । हर वक्त किच-किच करती रहती है । मैं उससे अत्यंत दुखी हूं । पिछले साल मैं एक हमउम्र महिला के संपर्क में आया, जो शादीशुदा, दो बच्चों की मां है । वह भी अपने पति से बहुत दुखी है । हम दोनों की दोस्ती प्यार में बदल चुकी है और अब हम एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते । हम दोनों आपस में विवाह करना चाहते हैं । क्या हम शादी कर सकते हैं ? यदि मैं उससे शादी कर लूं तो क्या उसका पति हम पर केस कर सकता है ? यदि उसकी पत्नी कोर्ट में यह कहे कि उसे अपने पति से कोई सुख नहीं मिल रहा — तो क्या कोर्ट उसकी बात मान जाएगा ?

आप विवाहित हैं तथा आपका एक लड़का भी है । घर में थोड़ी-बहुत कहा-सुनी तो होती ही रहती है । पत्नी से कानूनन तलाक लिए बिना, यानी पहली पत्नी के रहते हुए कानून आपको दूसरे विवाह की अनुमति नहीं देता । आप जिस महिला को प्यार करते हैं — वह विवाहित है तथा दो पुत्रों की मां भी है । वह महिला भी अपने पति के रहते नियमानुसार आपसे विवाह नहीं कर सकती । उक्त महिला का पति तो आपके विरुद्ध अभी भी कानूनी कार्यवाही कर सकता है क्योंकि किसी अन्य की विवाहित महिला से शारीरिक संबंध बनाना कानूनन अपराध है, जिसके लिए आपको भारतीय दंड संहिता के अंतर्गत दंडित भी किया जा सकता है ।

लुटेरों को छोड़ दिया

शिवपाल सिंह राजपूत, करैया माफी : मेरे चाचाजी को छह माह पूर्व कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने रास्ते में घेरकर मारा-पीटा और उनसे नकद दस हजार रुपया छीनकर भाग गये । चाचाजी ने पुलिस में एफ.आई.आर. दर्ज करायी । पुलिस ने एक संदिग्ध व्यक्ति को हिरासत में लिया, जिसने अपना जुर्म भी कबूल कर लिया और अपने साथी पांच व्यक्तियों के नाम भी बताये, जो उस घटना में शामिल थे । मगर थाना इंचार्ज ने उसी व्यक्ति को अभियुक्त बनाकर जेल भेज दिया, शेष को छोड़ दिया है । अब हम क्या करें ?

आप किस आधार पर यह कह रहे हैं कि अभियुक्त ने पांच व्यक्तियों के नाम बताये थे, जो घटना में शामिल थे । यह भी हो सकता है कि जांच-पड़ताल के बाद जो व्यक्ति दोषी लग रहा हो, उस के विरुद्ध कार्यवाही की गयी हो । किसी भी व्यक्ति पर आरोप लगाने से पहले पूरे तथ्यों की जानकारी प्राप्त करना उचित रहता है । यदि आप पर इस बात के साक्ष्य हों कि कुछ अन्य व्यक्ति उस मामले में शामिल थे, तो आपको उसकी जानकारी संबंधित अधिकारियों को देनी चाहिए । पुलिस द्वारा कार्यवाही न करने पर आप निजी शिकायत भी न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते हैं ।

कब आएगा मेरा नंबर

रामनारायण, दिल्ली : मेरा एक दीवानी मामला दिल्ली हाईकोर्ट में लंबित पड़ा हुआ है ।

इस संदर्भ में मैं वकीलों और कोर्ट के सैकड़ों चक्कर काट चुका हूं कि मेरे मामले की सुनवाई कब होगी, लेकिन कोई भी संतोषजनक जवाब नहीं मिलता । कृपया यह बताने का कष्ट करें कि इस समय कौन से वर्ष के मामलों की सुनवाई हो रही है तथा जब मेरे मामले की सुनवाई की तारीख आएगी, तब मुझे कैसे पता चलेगा ?

मुकदमे की सुनवाई के लिए न्यायालय के चक्कर काटने की आवश्यकता नहीं है । आप अपने मुकदमे की शीघ्र सुनवाई के लिए न्यायालय को आवेदन दे सकते हैं । न्यायालय यदि आपकी मांग उचित समझेगा तो आपके मुकदमे की शीघ्र सुनवाई का आदेश दे देगा ।

सुनवाई के लिए निश्चित मुकदमों की सूची न्यायालय प्रतिदिन प्रकाशित करते हैं तथा न्यायालय के सूचना-पट पर उसे देखा जा सकता है । आपके वकील भी संभवतः यह सूची लेते होंगे । उन्हें यह सूची देखकर ही यह पता चलेगा कि आपके मुकदमे की सुनवाई कब हो सकेगी । इसलिए आप अपने वकील से संपर्क बनाये रखें ।

रुपए लौटाने में आनाकानी

पूनम अरोरा, काठगोदाम (नैनीताल) : मेरे पति ईंटों के भट्टों से ईंटें लेकर सप्लाई का व्यवसाय करते हैं । एक ठेकेदार से हमारा लेन-देन था । बाद में वह उधार लेने लगा । यह उधार दो लाख का हो गया और उसने पैसा नहीं दिया, तो हमने उसे सप्लाई रोक दी । आज दो साल हो गये, वह कोई न कोई बहाना बनाकर रुपये देने में आना-कानी करता रहता है । इससे मेरे पति बहुत परेशान रहते हैं । हमें क्या करना चाहिए ? क्या कानून हमारी कोई मदद कर सकता है ?

उधार की वसूली के लिए कानूनी कार्यवाही की जा सकती है । अपने क्षेत्र के दीवानी न्यायालय में रकम वसूली के लिए कार्यवाही करने का अधिकार आपके पति को है । आपके पति यदि अपने व्यवसाय के एकमात्र स्वामी हैं, तो वह अपने नाम से दावा कर सकते हैं । कारोबार में भागीदार होने की स्थिति में फर्म का पंजीकरण आवश्यक है । यदि आपकी साझीदारी फर्म है, तो दावा करने से पहले फर्म को पंजीकृत करा लें । और फर्म के नाम से दावा कर दें ।

मंडल आयोग का लाभ

राजीव छाबड़ा, रांची : मैं प्रतियोगी परीक्षाओं का एक प्रतियोगी हूं । मेरे परदादा उन्नीसवीं सदी के अंत में रांची में आकर व्यापार करने लगे और फिर यहीं के हो गये । हम लोग वैश्य (अरोड़ा वैश्य) हैं । हमारे वार्ड के कमीश्नर ने मुझे मंडल आयोग की सिफारिशों का फायदा उठाने के लिए कहा है । बिहार में मंडल आयोग की पिछड़ी जातियों की सूची में सभी बनिया-वैश्यों को आरक्षण का लाभ मिल रहा है । क्या मुझे वह लाभ मिल सकता है या नहीं ?

प्रत्येक राज्य में पिछड़ी माने जानेवाली जातियों की अपनी-अपनी सूचियां हैं । आपके अपने क्षेत्र के आयुक्त ने आपको मंडल आयोग के अंतर्गत निर्धारित सूची से आपको अवगत करा दिया है । आपके अनुसार उस क्षेत्र में बनिया-वैश्य को आरक्षण का लाभ प्राप्त है । आपके अनुसार आप अरोड़ा-वैश्य हैं । प्रश्न यह है कि आपको बनिया-वैश्य किस प्रकार मान लिया जाए । क्या इस संबंध में आपके पास कोई प्रमाण उपलब्ध है ? यदि है, तो उसका विवरण आपने अपने पत्र में नहीं दिया । इस प्रकार का विवरण या प्रमाण मिलने पर आप आयुक्त के कार्यालय में प्रमाण-पत्र के

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ

—रामप्रकाश गुप्त

लिए आवेदन कर सकते हैं । आपका प्रमाण सही होने पर ही आपकी समस्या का समाधान निर्भर करता है ।

मैं विकलांग हूं

कृष्ण मोहन सिंह, नारेंगी, कामरूप : मैं अठारह वर्ष का स्नातक छात्र हूं । बचपन से मेरी दाहिनी आंख भैंगी है, पर आंखों की रोशनी सामान्य है । भैंगेपन के कारण मेरी आंखों पर त्रि-आयामी चित्र नहीं बनते । पढ़ने-लिखने का काम करने पर आंखों पर बहुत अधिक तनाव पड़ता है । हलका-हलका दर्द भी महसूस होता है । बावजूद इन सब असामान्यताओं और खामियों के जिला सिविल सर्जन मुझे विकलांगता का प्रमाण-पत्र नहीं दे रहे । मुझे क्या करना चाहिए ?

विकलांगता का प्रमाण-पत्र उन व्यक्तियों को दिया जाता है, जो नियमानुसार निर्धारित विकलांगता की श्रेणी में आते हैं । आपकी आंखों की रोशनी सामान्य है । केवल भैंगेपन के आधार पर आपको विकलांग नहीं माना जा सकता । आपको अपना उपचार किसी नेत्र-विशेषज्ञ से कराना चाहिए, जिससे आपकी समस्या का समाधान हो सके । सिविल सर्जन का निर्णय नियमानुसार उचित लगता है । यदि आप सिविल सर्जन से विकलांगता का प्रमाण-पत्र नहीं देने का कारण पूछते तो उनके उत्तर से आप स्वयं भी संतुष्ट हो जाते ।

समझौता वैध नहीं है

गुरमीत कौर, नयी दिल्ली : मेरा विवाह आज से तीन साल पहले, सिख रीति-रिवाजों के अनुसार एक सिख लड़के से हुआ । शादी के बाद उन्होंने मुझे दहेज के कारण काफी तंग किया, अतः मेरे मां-बाप शादी के तीन महीने बाद मुझे घर वापस ले आये । मायके आने के बाद मेरी सरकारी नौकरी लग गयी । लगभग दो साल अलग रहने के बाद हम लोगों ने आपसी समझौते से संबंध-विच्छेद कर लिया, जो कि दस रुपये के एफीडेविट पर हुआ । इन शर्तों पर कि आज के बाद हम लोगों का आपस में कोई लेना-देना नहीं है और हम एक-दूसरे पर कोई कानूनी कार्यवायी नहीं करेंगे । और हम दोनों दूसरे विवाह के लिए स्वतंत्र हैं । इस शादी से हमारा कोई बच्चा नहीं है । अब मेरे सामने यह समस्या है कि क्या यह समझौता कानूनन वैध है । यदि मैं दूसरी शादी करूं तो कोई कानूनी अड़चन तो नहीं आएगी । वैसे तो समझौते पर हम दोनों, मां-बाप और चार गवाहों के हस्ताक्षर हैं ।

आपने अपने पति से शपथ-पत्र लिखकर संबंध विच्छेद कर लिया । साधारणतयः इस प्रकार से हुए संबंध विच्छेद को कानूनी मान्यता नहीं है । आप स्वयं सरकारी कर्मचारी हैं । सरकारी कर्मचारी एक पति या पत्नी के रहते दूसरा विवाह नहीं कर सकता । आपके आपसी समझौते पर आपके माता-पिता व साक्षियों के हस्ताक्षर हो जाने से समझौता वैध नहीं माना जा सकता । हिंदू विवाह अधिनियम के अंतर्गत आपसी सहमति से संबंध विच्छेद के लिए आवेदन दिया जा सकता है । कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद ही दूसरा विवाह करना उचित रहेगा । ●

रेटिना की बीमारी से ज्योति जा सकती है

● डॉ. बी. एन. पटनायक –
(रेटिना विशेषज्ञ)

डाइबेटिक रेटिनोपैथी

यह पाया गया है कि मधुमेह रोगियों को, मधुमेह के कारण, कुछ वर्षों के पश्चात डाइबेटिक रेटिनोपैथी का रोग प्रारंभ होता है । इससे उनके परदे या रेटिना में कुछ ऐसे, हानिकारक परिवर्तन हो जाते हैं, जिनके फलस्वरूप उनकी दृष्टि क्षीण होने लगती है और धीरे-धीरे वे अंधे हो जाते हैं । इन्हीं परिवर्तनों को डाइबेटिक रेटिनोपैथी कहते हैं ।

वास्तव में मधुमेह का रोग होने के १८-२० वर्षों के पश्चात ही, रेटिनोपैथी का रोग प्रारंभ होता है । यह विडंबना है कि जहां एक ओर चिकित्सा-विज्ञान ने नयी औषधियां तथा अच्छी देख-रेख से, मधुमेह के रोगी को दीर्घआयु प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर इसी दीर्घआयु के कारण वह रेटिनोपैथी का शिकार हो जाता है । आज रेटिनोपैथी की समस्या बढ़ रही है तथा अंधेपन का एक मुख्य कारण हो गयी है ।

रोग का क्या कारण है और क्यों मधुमेह के रोगियों को ही होता है, इसके संबंध में अभी कुछ ज्ञात नहीं हो पाया है । वैज्ञानिक अनुसंधान में लगे हैं । वास्तव में मधुमेह में, शरीर में केवल इंसुलिन की कमी ही नहीं हो जाती, वरन् कुछ और असामान्यताएं या परिवर्तन हो जाते हैं जो रेटिना पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं । किंतु यह असामान्यताएं क्या हैं, क्यों हो जाती हैं, इसके बारे में अभी कुछ पता नहीं है । पश्चिमी देशों में शोध के पश्चात जो आंकड़े प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार नब्बे प्रतिशत मधुमेह के रोगी, रोग के १८ वर्ष के बाद तथा शेष दस प्रतिशत २५ वर्ष के बाद इस रोग के शिकार हो जाते हैं । अभी भारत में इस प्रकार के कोई आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, पर यह देखा गया है कि यहां पर मधुमेह के पश्चात रेटिनोपैथी पश्चिमी देशों की तुलना में देर में प्रारंभ होती है तथा बढ़ती भी धीरे-धीरे ही है ।

रेटिनोपैथी में, रेटिना की सूक्ष्म खून की नलियों में परिवर्तन हो जाते हैं इससे नलियों की दीवारें कमजोर हो जाती हैं, जिससे रक्त और सिरम रिस-रिस कर या छन-छनकर रेटिना में निकलने लगता है । वसा रिसकर जम जाती है । रेटिना या परदे पर पानी जमा होने से परदा

गुब्बारे की तरह सूज जाता है और काम नहीं कर पाता । रेटिना में छोटे-छोटे रक्तस्राव (हेमरिज) हो जाते हैं और नलियां कहीं-कहीं बंद हो जाती हैं । रेटिना को ऑक्सीजन और आहार नहीं मिल पाता । इस स्थिति से निपटने के लिए, रेटिना को ऑक्सीजन और आहार देने के लिए, रेटिना को जीवित रखने के लिए, अपने आप ही कुछ नयी खून की नलियां बन जाती हैं ।

किंतु यह नयी नलियां, पहले की नलियों-जैसी नहीं होतीं । रेटिना में जब रक्त संचार होता है तो खून में मिले विषैले पदार्थ से रेटिना को सुरक्षित रखने के लिए खून की नलियों में, कुछ विशेष परतें होती हैं, जो विषैले पदार्थों को रेटिना में जाने से रोकती हैं तथा शुद्ध खून को ही रेटिना में जाने देती हैं । ये जो नयी नलियां बन जाती हैं, उनमें विशेष परतों की सुरक्षा का यह प्रबंध नहीं होता क्योंकि उनकी दीवारें, बहुत पतली होती हैं । परिणामस्वरूप, विषैला पदार्थ रेटिना के संवेदनशील भाग में चला जाता है । कभी-कभी इन नलियों के फटने से रक्तस्राव हो जाता है ।

विषैला पदार्थ रेटिना के मुख्य भाग में पहुंच जाने से दृष्टि क्षीण होने लगती है । बार-बार रक्तस्राव होने से भी दृष्टि कमजोर हो जाती है और रोगी धीरे-धीरे अंधा हो जाता है । यदि रक्तस्राव के कारण रोगी अंधा नहीं होता तो उसकी रेटिना उखड़ने लगती है और तब भी रोगी अंधा हो जाता है ।

उपचार

रेटिनोपैथी का उपचार यही है कि जो नयी खून की नलियां बन जाती हैं, उन्हें तुरंत बंद कर दिया जाए तथा जो नयी खून की नलियां बनने को हैं, उन्हें बनने से पहले ही दबा दिया जाए । लेजर फोटोकागुलेशन और क्रायोपाक्सी से नयी अस्वस्थ तथा कमजोर नलियों को नष्ट कर, इनकी पुनः वृद्धि को रोका जा सकता है । लेजर फोटोकागुलेशन में बहुत तेज प्रकाश के माध्यम से तथा क्रायोपाक्सी में बहुत कम तापक्रम (-७० डिग्री) का प्रयोग कर इन नलियों को नष्ट कर देते हैं । लेजर फोटो के पश्चात जितनी रोशनी होती है उतनी तो रहती ही है, कभी-कभी बढ़ भी जाती है पर अंधे होने की संभावना लगभग समाप्त हो जाती है । लेजर फोटोकागुलेशन द्वारा रेटिना के मुख्य भाग को

मधुमेह के रोगी को सदैव सतर्क रहना चाहिए और रेटिना-विशेषज्ञ से परीक्षण कराते रहना चाहिए । रोग के निदान के पश्चात तुरंत उपचार अधिक लाभकारी होता है ।

आंख की मांस पेशियां व नसें

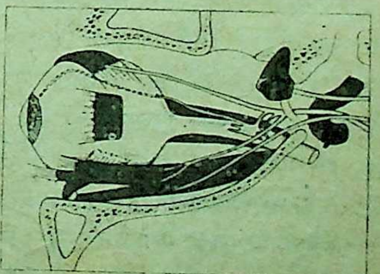

सुरक्षित रखने के लिए, रेटिना के कम उपयोगी भाग को नष्ट करना पड़ता है ।

रेटिना के कुछ भाग को नष्ट करने से, दृष्टि पर अवश्य प्रभाव पड़ता है पर यह इतना कम होता है कि अकसर रोगी को पता भी नहीं चलता । रेटिना के मुख्य भाग मैकुला को सुरक्षित तथा क्षतिग्रस्त होने से बचाने के लिए, बाहरी रेटिना का कुछ भाग नष्ट करना आवश्यक होता है । बाहरी रेटिना उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं होती, जितनी मुख्य रेटिना ।

एक उदाहरण से, इसे समझ सकते हैं । कल्पना कीजिए, घर में आग लग गयी है । आग में परिवारवाले फंस गये हैं, महत्त्वपूर्ण कागज आदि भी हैं । अब अगर फायरब्रिगेड को बुलाते हैं तो पानी द्वारा बहुत सारा सामान तो नष्ट होगा ही, पर प्रियजनों को बचाने के लिए, हमें मूल्यवान वस्तुओं का मोह छोड़ना ही होगा । ठीक इसी प्रकार मुख्य रेटिना को बचाने के लिए, रोगी को अंधा होने से बचाने के लिए, बाहरी रेटिना के कुछ भाग का बलिदान करना ही पड़ता है । वास्तव में यह आदर्श विधि नहीं है, पर इसके अतिरिक्त अभी कोई अन्य उपाय भी, चिकित्सा विज्ञान के पास नहीं है ।

इसके अतिरिक्त, जब रेटिनोपैथी बहुत अधिक बढ़ जाती है, बहुत ज्यादा रक्तस्राव हो जाता है, रोशनी बचने की कोई भी उम्मीद नहीं रहती, तब लेजर के द्वारा, उपचार संभव नहीं होता । इस दशा में विटरियस सर्जरी के द्वारा, आंख से खून को निकालकर, रोगी को अंधा होने से बचाया जा सकता है ।

यदि मधुमेह को, पूर्णतया नियंत्रण में रखा जाए, तो भी मधुमेह का रोगी रेटिनोपैथी का शिकार हो ही जाता है । किसी को जल्दी यह रोग शुरू होता है तो किसी को देर में । ज्यों-ज्यों रोगी की आयु बढ़ती जाती है, रेटिनोपैथी की संभावना उतनी ही अधिक बढ़ती जाती है । जिन लोगों को मधुमेह कम मात्रा में होता है, संभव है उन्हें रेटिनोपैथी न हो, या यदि हो तो गंभीर रूप में न हो । पर जिन्हें मधुमेह का रोग ज्यादा मात्रा में है उन्हें, नियंत्रण से, देर में रेटिनोपैथी होगी तथा धीरे-धीरे बढ़ेगी ।

रोग स्त्रियों को अधिक

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को रेटिनोपैथी का रोग अधिक होता है क्योंकि मधुमेह का रोग भी स्त्रियों में अधिक पाया जाता है । नगरों के संपन्न परिवारों में रेटिनोपैथी अधिक पायी जाती है क्योंकि वहां ज्यादा चिकनाई का खाना खाया जाता है ।

सतर्कता के लिए उपाय

मधुमेह के रोगी को सदैव सतर्क रहना चाहिए । उसे नियमित रूप से, रेटिना विशेषज्ञ से परीक्षण कराते रहना चाहिए । जब उपचार रोग के तुरंत बाद प्रारंभ हो जाता है तो अधिक लाभकारी होता है । कभी-कभी रेटिना में रेटिनोपैथी शुरू हो जाती है, पर दृष्टि ठीक रहती है । इस कारण रोगी को पता नहीं चलता और रोग बढ़ता जाता है । एक बात ध्यान देने योग्य है, कि अकसर आपथलमोस्कोप से रेटिना का निरीक्षण करने से रेटिनोपैथी का पता नहीं चलता और रोग गंभीर रूप ले लेता है । इस कारण 'फ्लोरेसीन एंजोग्राफी' कराना चाहिए । इससे रोग के प्रारंभ में जो सूक्ष्म से सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं, वे भी पता चल जाते हैं । तथा जिन नयी खून की नलियों की, बनने की

संभावना होती है, उन्हें बचने से पहले ही, उपचार से दबाया जा सकता है ।

- मधुमेह के रोगियों को मधुमेह पर नियंत्रण रखना चाहिए ।
- कम चिकनाई और घी तथा कम कैलोरी का भोजन खाना चाहिए ।
- शाकाहारी भोजन अधिक लाभदायक होता है ।
- जो लोग नियमित रूप से इंसुलिन के इंजेक्शन लेते हैं उन्हें बहुत सावधान रहना चाहिए ।
- नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम करना चाहिए । जिन लोगों को मधुमेह नहीं हैं पर यदि उनके परिवार में मधुमेह का रोग है तो उन्हें समय-समय पर मधुमेह का परीक्षण कराते रहना चाहिए ।

यह देखा गया है कि मधुमेह का रोगी गुरदा तथा हृदय रोग से भी पीड़ित रहता है क्योंकि मधुमेह के कारण खून की सूक्ष्म नलियों में जो परिवर्तन होते हैं, वे केवल रेटिना ही में नहीं वरन् हृदय तथा गुरदे की खून की नलियों में भी होते हैं । पर यह परिवर्तन क्यों होते हैं इसका कारण अभी हमें पता नहीं है । जिस प्रकार रोगों के कारण जानकर उन्हें रोकने में चिकित्सा विज्ञान सफल हो गया है, उसी प्रकार जब डाइबेटिक रेटिनोपैथी का कारण ज्ञात हो जाएगा तब इसे भी प्रारंभ होने से पहले ही रोका जा सकता है । और तब तक केवल लेजर फोटोकागुलेशन ही इसका उपचार है

—रेटिना एसोसिएट आई इंस्टीट्यूट
ई-५८४, ग्रेटर कैलाश पार्ट ।।, नयी दिल्ली

प्रस्तुति : रश्मि स्वरूप जौहरी

● प्रिंस्टन विश्वविद्यालय में आयोजित एक समारोह के दौरान महान वैज्ञानिक आइंस्टाइन के बगल में बैठा एक भौतिक विज्ञानी बार-बार अपनी डायरी में कुछ नोट करता जा रहा था । आइंस्टाइन द्वारा यह पूछे जाने पर कि वह क्या लिख रहा है, उसने जवाब दिया, ''मस्तिष्क में उपजे प्रत्येक नये विचार को मैं तत्काल नोट कर लेता हूं ।'' फिर वह कुछ सोचते हुए बोला, ''संभवतया आप भी ऐसा करना चाहेंगे— यह तरीका आसान है ।''

आइंस्टाइन ने उदास लहजे में कहा, ''मुझे ऐसा करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि आज तक मेरे मस्तिष्क में सिर्फ दो या तीन नये विचार आये हैं ।''

×× ×× ××

● यह सन १८९० की बात है । ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए इच्छुक एक छात्र से परीक्षक ने पूछा कि वह बिजली के विषय में क्या जानता है ?

छात्र ने घिघियाते हुए कहा, ''श्रीमान, मैंने बिजली के विषय में पढ़ा है । निश्चित ही मैं जानता था किंतु फिलहाल भूल चुका हूं ।''

''कितने दुर्भाग्य की बात है ?'' परीक्षक ने तिक्त स्वर में कहा, ''इस विषय के अब तक सिर्फ दो जानकार थे— सृष्टि रचियता और तुम । और अब केवल एक ही शेष रह गया है ।''

— सुभाष लखेड़ा

शिशुनाग शशांक : इतिहास

• यमुना दत्त वैष्णव 'अशोक'

भारत में जो सबसे प्राचीन मूर्तियां प्राप्त हैं वे ईसा पूर्व आठवीं शती के उत्तरार्द्ध की हैं । उनमें से कुछ पर खुदे हुए नामों से यह पता चलता है कि वे शेशुनाक वंश की हैं । इस वंश के एक राजा की मूर्ति जो २६४ सें.मी. लंबी है, मथुरा जिले के परखम गांव में मिली थी । आजकल मथुरा संग्रहालय में है । कलकत्ता संग्रहालय में भी दो और पुरुष मूर्तियां सुरक्षित हैं । ये सभी मूर्तियां साधारण मानव की ऊंचाई से अधिक ऊंची हैं । कुछ विद्वानों ने इन मूर्तियों को यक्ष की मूर्तियां बताया है । कुछ अन्य विद्वानों ने इन मूर्तियों की सजीव मानवता से यही निष्कर्ष निकाला है कि ये वास्तव में शेशुनाक वंश के राजाओं की मूर्तियां हैं । एक मूर्ति उस उदय नामक राजा की है जिसने पाटलिपुत्र नगर बसाया था । दो स्त्री मूर्तियां तथा एक पुरुष मूर्ति जो खंडित हैं और मिली हैं । इन पर कोई नाम अंकित नहीं है । इनमें से एक स्त्री मूर्ति कलकत्ता संग्रहालय में है, यह ग्वालियर से प्राप्त हुई थी तथा शेष दो मूर्तियां मथुरा संग्रहालय में हैं ।

आदि मूल भाषा

ऋग्वेद में राजनीतिक इतिहास विषयक अनेक तथ्य हैं । इन सभी तथ्यों की विश्वसनीयता अब मैसोपोटामिया की अमरु वंश की राजधानी मारी के उत्खनन से स्पष्ट हो गयी है तथा सुमेरी भाषा की जननी नॉर्डिक, जिसे पाणिनि ने उदीच्य कहा है, मानव की आदि मूल भाषा सिद्ध हो गयी है । यह भाषा इतनी पुरानी है कि प्राचीन किसी भी राष्ट्र के वर्तमान नाम से मानव को विभाजित करना अब निरर्थक सिद्ध हो गया है । कैंब्रिज विश्वविद्यालय के भाषा विशेषज्ञ ई. जे. रैप्सन ने इस भाषा को कोई भौगोलिक नाम न देकर 'वीरो' अभिहित किया है क्योंकि संसार की आठ प्राचीनतम भाषाओं के हमारे पूर्वजों की यह सार्वभौम मातृभाषा थी । इस आदि भाषा से जनित हेलेनिक, इटैलिक, कैल्टिक, ट्युटोनिक, स्लाव, अनातोल, फारसी, इंडिक (वैदिक) में मनुष्य शब्द के लिए वीर या विरो शब्द आया है । इसीलिए इस भाषा को वीरोस् (विरोस्) नाम दिया गया है ।

असुर : असीरियन लोग

प्राच्य इतिहास के विशेषज्ञ चैडविक ने सन १८९९ में अपनी पुस्तक बिबलिकल आर्क्योलॉजी में यह प्रतिपादित किया था कि यहूदी बाइबिल में वर्णित असुर वे ही असीरियन लोग हैं जिन्हें प्राचीन भारतीय साहित्य में असुर कहा गया है । बाद में रायल-एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में प्रकाशित लेखों में (१९/२४, पृष्ठ २६५) अन्य विद्वानों ने इसी तथ्य की पुष्टि की । प्राचीन सुमेर के अनेक नगर, राज्यों में असुर (कहीं इसे अशुर और कहीं अश्शुर भी कहा गया है) एक प्रमुख राज्य था । इस राज्य की राजधानी का नाम असुर था और इस राज्य के प्रमुख इष्ट देव का नाम भी असुर था । असुर नगर के ध्वंसावशेषों का पुरातत्ववेत्ताओं ने उत्खनन करके पता लगा लिया है । यह दजला (टिगरिस) नदी के दाहिने किनारे पर स्थित था । असुर राज्य के अन्य प्रसिद्ध नगर सिपपार, निपपुर, कालेय तथा निनेवा थे ।

के दर्पण में

नगर : व्यापार के केंद्र

सुमेरी भाषा के सबसे अधिक अभिलेख मारि नाम के स्थान के ध्वंसावशेषों से मिले हैं । फुरात नदी के दक्षिण में मारि के खंडहर ३७०० वर्ष विस्मृति के गर्त में पड़े रहे । आधुनिक काल में मारि के खंडहरों का उत्खनन पुरातत्व की सबसे बड़ी खोज मानी जाती है । लायर्ड नामक पुराविद ने मारि से लायी २४००० मृद् बटिकाएं ब्रिटिश म्यूजियम को दी हैं । इन अभिलेखों से पता चलता है कि उस समय कौन-कौन से बड़े नगर किस व्यापार के लिए प्रसिद्ध थे तथा भू-मध्य सागर से लेकर बलूचिस्तान के पश्चिम स्थित ईलाम (सिंधु देश) तक के देशों में किन-किन राजाओं का राज्य था ।

तीनों महाद्वीपों पर शासन

शशांक प्रथम नाम के शासक द्वारा दजला-फुरात घाटी पर किये गये आक्रमण का ऐतिहासिक प्रमाण भी असुरबाण पाल (६६८-६२६ ई. पू.) के एक अभिलेख में मिलता है जिसमें उसने कहा है : *'सुषा के शासक ने बैबीलोन पर १६३५ (अथवा १५३५) वर्ष पहले अधिकार किया था । उसी का बदला मैं अब सुषा पर विजय पाकर चुका*

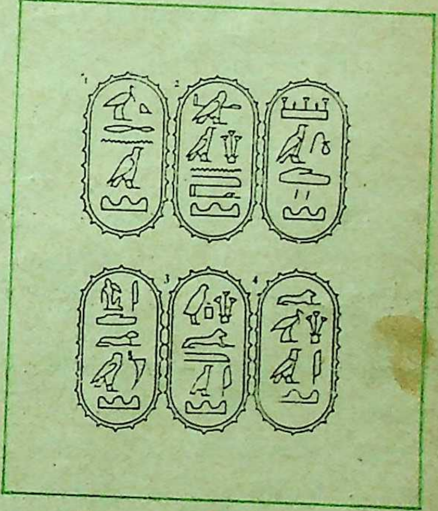

कीलाक्षर लिपि में अभिलेख : मृद् बटिकाएं

प्राचीन सुमेर के अनेक नगर, राज्यों में असुर (कहीं इसे अशुर और कहीं अश्शुर भी कहा गया है) एक प्रमुख राज्य था । इस राज्य की राजधानी का नाम असुर था और इस राज्य के प्रमुख इष्ट देव का नाम भी असुर था । असुर नगर के ध्वंसावशेषों का पुरातत्ववेत्ताओं ने उत्खनन करके पता लगा लिया है ।

पाया हूं । (पश्चिम एशिया के कीलाक्षर पुरालेख-खंड-५, प्लेट-६-स्त. ६-१-१०७) इस पुरालेख से मिस्र, मध्य-पूर्व तथा प्राचीन ईलाम (राजधानी सुषा) के ऐतिहासिक तथ्यों का ताल-मेल बैठ गया है और यह प्रमाणित होता है कि शशांक प्रथम ने ९५० ई. पू. मिस्र देश की शासन सत्ता संभाली थी तथा पूर्वोक्त महाद्वीपों पर शासन किया था ।

हरिहर वंश : पांच शशांक

मिस्र देश के इतिहास में शशांक द्वारा स्थापित यह राजवंश हरिहर वंश कहलाता है । इन पुरोहितों ने तब राज सत्ता मिस्र देश के परंपरागत फराओ के हाथों से छीनकर अपने अधिकार में कर ली थी । यह राजवंश मिस्र देश का २२वां राजवंश कहलाता है । शशांक द्वितीय इस राजवंशावली में पांचवें क्रम पर है और शशांक तृतीय का क्रम सातवां है । शशांक चतुर्थ का उल्लेख, जो अपिस सॉड के स्मारक में अंकित है, वर्णित करता है कि वह अपिस शशांक चतुर्थ के राज्यकाल के सैंतीसवें वर्ष में मरा था । इस प्रकार पांच शशांक नाम के राजा मिस्र देश की गद्दी पर बैठे । तदोपरांत उनके शासन का अंत दजला-फुरात घाटी से मिस्र पर आक्रमण करनेवाले असुर साम्राज्य का अधिकार हो गया ।

एशिया की प्राचीनतम नगरी

मिस्र देश में असुर बाण काल के शासन काल के दौरान नियुक्त २० नगर प्रशासकों की नामावली कीलाक्षर लिपि के साथ-साथ मिस्र की हाइरोग्लिपिक्स में भी उपलब्ध है । कीलाक्षरों में १२वें नगर के शासक का नाम शिशनाक है किंतु मिस्री भाषा में यही नाम शशांक लिखा मिलता है । जैसा कि संलग्न सूची से स्पष्ट है । असुर बाण के ग्रंथागार से प्राप्त अभिलेखों में पूर्वोक्त इलाम राज्य के इष्ट देव का नाम शिशुनाग अथवा शेषनाग लिखा मिला है । सुसा भारतीय महाकाव्यों की पश्चिम के दिग्पाल वरुण की राजधानी कही गयी है । यह एशिया की सबसे प्राचीन नगरी है जिसे ६००० पूर्व की माना गया है । जहां तक शिशुनाग अथवा शशांक प्रथम की दिग्विजय की प्रामाणिकता का संबंध है, यह नील नदी के वर्तमान लक्षोर नगर के समीप 'कोलोसस ऑव मैम्नौन' कहे गये विशाल भवन से स्पष्ट है । मैम्नौन कुश देश का शासक था जो ग्रीक महाकाव्य इलियड के अनुसार १३वीं ई.पू. सदी में ट्रॉय के युद्ध में ग्रीक लोगों की सहायता करने कुश देश के अपने धनुर्धरों को लेकर आया था ।

कारनक (कर्णाक) का सूर्य मंदिर का मुख्य द्वार १० मंजिल ऊंचा और ५० फीट चौड़ा है ।

इसके सभागार में १३४ विशाल खंभों का जाल बना है । इस सभागार में पत्थरों पर नक्काशी है और चप्पे-चप्पे पर पुरालेख और चित्रांकित ऐतिहासिक विवरण हैं । इनमें से एक विवरण कुश फराओ शशांक (शेशांक या शेषनाग) की पूर्वी देशों की दिग्विजय का भी है । शशांक का विशाल उभरा हुआ चित्र नीले रंग से बना है । शशांक स्वयं नंगे पांव हाथ में गदा लिए हुए अनेक देशों के राजाओं पर प्रहार करता हुआ दिखाया गया है । पृष्ठभूमि में विजित राजाओं के नाम तथा उनके देश के बीजाक्षर प्रतीक, जिन्हें पुराविद कारतूश कहते हैं, सैकड़ों की संख्या में अंकित हैं । इन कारतूशों के भीतर उन देशों के कीलाक्षर प्रतीक अंकित हैं । चित्र के नीचे आठ बड़े कारतूश अंकित हैं । इनके नाम स्पष्ट पढ़े जाते हैं—

१. गिबौन, २. महान्यम, अज्ञात, ३. हफरायम, ४. रिह्रेब, ५. बेथसीन, ६. सुनेम, ७. तानत ।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार अनेक असुर उपनिवेश ईसा पूर्व पहली सहस्राब्दी में सिंधु नदी के देश से लेकर मगध तक फैल गये थे । कठ जाति का उल्लेख कठोपनिषद में हुआ है । यह कैथी (सीथियन) जाति थी जिसके नाम पर प्राचीन काल में गुजरात सीथिया कहलाता था । यही नाम कालांतर में काठियाबाड़ हो गया । देशवासियों के सामूहिक निर्वासन के अनेक दृष्टांत हमें प्राचीन मध्य-पूर्व तथा भू-मध्य सागरीय देशों के इतिहास में मिलते हैं । असुर राजा तिगलाथ पिलेसर तृतीय ने अपने शासनकाल में विजित देशों के समस्त निवासियों को देश निकाला देकर जलपोतों द्वारा दूर-दूर देशों में जाकर बसने के लिए विवश किया था । अतः मगध देश में मौर्य शासन से पहले नंद वंश और उससे पहले शिशुनाग वंश के राजाओं अथवा मगिद्दो (भूमध्य सागर के मगध) देश से निर्वासित मगी तथा लौह कर्मी भृगु लोगों का शासन रहा होगा ।

अकमीनी शासक

मौर्यों के मूल के बारे में अब यह निश्चित हो गया है कि वे कुश देश की राजधानी मेरोई के मूल निवासी थे और इस मेरोई नगर की स्थापना मिस्र पर आक्रमण करनेवाले अकमीनी शासक कुंबुज्य ने की थी । यह भी प्रमाणित हो चुका है कि हरिहर राजवंश का एक शासक पिय-अंखी (देवत्व को प्रिय) 'पियी' कहलाता था । कुश देश का राष्ट्र प्रतीक शेर के मुखौटे पहने उसी प्रकार का था जिसे अशोक ने अपना राजचिह्न बनाया तथा जो सारनाथ (वाराणसी) के इस मौर्य सम्राट के स्तंभ पर आरूढ़ है ।

— कुमाऊं संस्कृति परिषद
नैनीताल

एक संन्यासी जो अपने चमत्कार का प्रदर्शन आर्थिक लाभ के लिए करता है, वह उस स्त्री की भांति है, जो अपनी देह का प्रदर्शन पैसे के लिए करती है ।

—चूल वेगा

एड्स और अन्य यौन-रोग

एड्स का यौन-रोगों से घनिष्ठ संबंध है । यह देखा गया है कि यौन-रोगियों में एड्स रोग अथवा एड्स विषाणु का संक्रमण अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक होता है । दोनों तरह की बीमारियों में कुछ समानता भी है, जैसे यौनजनित रोग तथा एड्स, यौन-संपर्क द्वारा अधिक फैलते हैं । यौन रोगी या तो वेश्याओं के पास जाते हैं अथवा उनके प्रायः एक से अधिक यौन सहभागी होते हैं । इसलिए उनमें एड्स संक्रमण होने का खतरा भी बना रहता है । इसके अलावा जिन एड्स संक्रमित रोगियो में संक्रमण यौन संपर्क द्वारा होता है, उनमें से अधिकतर रोगियों में कोई-न-कोई यौनजनित बीमारी भी पायी गयी है ।

संक्रमण का प्रमुख कारण

अब प्रश्न उठता है कि यौन-रोगियों को एड्स संक्रमण का खतरा अधिक मात्रा में क्यों होता है ? इसका प्रमुख कारण तो यह है कि यौन-रोगियों, (चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष) के यौन-अंगों में छाले या घाव हो जाते हैं, जिससे यौन-संबंध के दौरान क्षतिग्रस्त रक्त वाहिकाओं द्वारा ये विषाणु खून में पहुंच जाते हैं एवं स्वस्थ स्त्री अथवा पुरुष रोगग्रस्त हो जाते हैं । तिरुपति के एक ५० वर्षीय विधुर को रोग इसी तरह हुआ था । १८ नवम्बर, १९८८ को वह एच. वी. आर. हॉस्पिटल तिरुपति में आया । जांच करने पर पता चला कि उसके शिश्न पर एक घाव था, जो इलाज के बावजूद ठीक नहीं हो पा रहा था । चिकित्सक द्वारा पूछे पर उसने कई औरतों से यौन-संबंधों की बात

भारत में साढ़े चार

प्रायः सभी यौन-रोग दवाइयों से ठीक हो जाते हैं, लेकिन शर्म और सच सामने आ जाने के डर से लोग इन रोगों को छिपाये रखते हैं और इलाज भी नहीं कराते । अब जबकि देश में एड्स रोग द्रुत गति से फैल रहा है—यौनजनित बीमारियों पर नियंत्रण करना आवश्यक हो गया है । यह नियंत्रण लोगों को सही जानकारी देकर तथा यौन-रोगियों का इलाज करके ही किया जा सकता है ।

करोड़ बीमार हैं !

● डॉ. प्रेमचंद्र स्वर्णकार

भी स्वीकार की । तीन दिन पश्चात उस रोगी को अस्पताल में भरती कर दिया गया । यौन-रोगों के लिए की जानेवाली जांच, वी. डी. आर. एल. के परिणाम तो इस मरीज में धनात्मक पाये ही गये, साथ ही एड्स विषाणु (एच. आई. वी.) के लिए की जानेवाली जांचों के परिणाम भी धनात्मक मिले ।

अधिक खतरेवाला समूह

भारत में यौन-रोगियों की संख्या बहुत अधिक है । एक अनुमान के अनुसार यहां लगभग ५% आबादी विभिन्न तरह के यौन-रोगों से ग्रसित है । इसका मतलब यह हुआ कि लगभग साढ़े चार करोड़ व्यक्तियों को कोई-न-कोई यौनजनित बीमारी है । देश में यौन-रोगों को छिपाने की प्रवृत्ति भी बहुत ज्यादा है । प्रायः सभी यौन-रोग दवाइयों से ठीक हो जाते हैं, लेकिन शर्म और सच सामने आ जाने के डर से लोग इन रोगों को छिपाये रखते हैं और इलाज भी नहीं कराते । अब जबकि देश में एड्स रोग द्रुत गति से फैल रहा है—यौनजनित बीमारियों पर नियंत्रण करना अत्यंत आवश्यक हो गया है । यह नियंत्रण लोगों को सही जानकारी देकर तथा यौन-रोगियों का इलाज करके ही किया जा सकता है । यह बात ध्यान देने योग्य है कि यौन-रोगियों को एड्स संक्रमण का खतरा अन्य लोगों की अपेक्षा दस गुना अधिक होता है । इसलिए एड्स संक्रमण के मामले में यौन-रोगियों को अधिक खतरेवाले समूह में रखा गया है ।

यौनजनित रोग क्या है ?

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, कि जो बीमारियां यौन-संपर्क द्वारा होती हैं उन्हें यौनजनित रोग कहते हैं । ये रोग कई तरह के होते हैं और अज्ञानतावश यौन सहभागी परस्पर एक-दूसरे को रोग बांटते रहते हैं । यौन-रोगों के जीवाणु रोगी की जननेन्द्रियों में उपस्थित होते हैं

और सहवास के दौरान अन्य साथी के जननांगों में पहुंचकर रोग उत्पन्न करते हैं । कुछ रोग एक कोशीय परजीवी एवं विषाणु द्वारा भी फैलते हैं ।

यौन-रोगों के कुछ प्रमुख लक्षण हैं—

(१) जननांगों (लिंग अथवा योनि) पर घाव अथवा छाले होना,
(२) गुप्तांगों से मवाद या अन्य तरह का पदार्थ निकलना,
(३) मूत्र-त्याग के समय जलन एवं दर्द होना,
(४) जांघों की लसिका ग्रंथियों (गांठों) का बढ़ना और छूने से दर्द होना,
(५) गुप्तांगों में खुजलाहट या जलन होना ।

एक बात ध्यान देने योग्य है कि कुछ यौन बीमारियां शुरू में बगैर किन्हीं लक्षणों के भी शरीर में मौजूद रह सकती हैं ।

प्रमुख यौनजन्य रोग

वैसे तो बहुत-से यौन-रोग (अथवा गुप्त रोग) फैलते हैं, लेकिन यहां सामान्यतः होनेवाले कुछ रोगों का संक्षिप्त वर्णन किया जा रहा है—

सूजाक (गॉनोरिया)

यह रोग गोनोकॉकस नामक जीवाणु द्वारा होता है । संक्रमित व्यक्ति से यौन-संपर्क के २ से ५ दिन पश्चात पेशाब के रास्ते में जलन और दर्द होता है । पेशाब बार-बार लगता है और तकलीफ से पेशाब उतरता है । मूत्र मार्ग से स्राव भी निकलता है जो गाढ़ा, हलके हरे-पीले रंग का होता है ।

यदि रोग का इलाज न किया जाए, तो १० से १४ दिन के अंदर रोग और भी अंदर तक बढ़ जाता है । वैसे सही इलाज से यह रोग जल्दी ठीक हो जाता है ।

शेंक्रॉयड

यह भी एक तरह के जीवाणु अथवा बैक्टीरिया द्वारा फैलनेवाला रोग है । इसके कारण जननांगों पर छाले पड़ जाते हैं । रोगग्रस्त व्यक्ति से यौन संपर्क के लगभग एक सप्ताह पश्चात यौन-रोग के लक्षण मिलना आरंभ होते हैं ।

शिश्न अथवा योनि में छालों के साथ ही जांघों की लसिका ग्रंथियों में सूजन भी आ जाती है । यह बीमारी वेश्यावृत्तिवाले इलाकों तथा गंदे रहन-सहनवाले लोगों में अधिकतर पायी जाती है । रोग इलाज से बिलकुल ठीक हो जाता है, लेकिन यदि इलाज न किया जाए, तो रोग के कारण शिश्न के आकार में विकृति तक आ सकती है ।

ट्राइकोमोनियासिस

यह बीमारी भी यौन-संपर्कों से स्वस्थ व्यक्तियों में हो जाती है । बीमारी का कारण ट्राइकोमोनास वेजाइनेलिस नामक एककोशीय परजीवी प्राणी होता है । भारत में यह रोग बहुत ही सामान्य है ।

स्त्रियों में संक्रमण के पश्चात योनि में सूजन आ जाती है तथा योनि-मार्ग से स्राव भी निकलता है, जो मवादयुक्त होता है । इसी तरह पुरुषों में भी मूत्रमार्ग में सूजन तथा मवादयुक्त तरल पदार्थ निकलता है तथा प्रभावित यौनांगों में लालामी आ जाती है । साथ ही खुजलाहट, दर्द एवं जलन भी होती है । जांघों की लसिका ग्रंथियों में सूजन भी आ सकती है । इस रोग में भी इलाज से फायदा हो जाता है । लेकिन यदि इलाज न किया जाए, तो कई जटिलताएं, जैसे पेशाब के रास्ते का संकरा हो जाना, इत्यादि

यौन-रोगों के संबंध में आम लोगों में कुछ गलत धारणाएं भी प्रचलित हैं । वे इन रोगों को गंभीरता से नहीं लेते । कुछ तो इन्हें रोग ही नहीं मानते । इसका कारण उनमें जानकारी का अभाव है । शिक्षित व्यक्ति तक यह नहीं समझते कि यौन-रोग और एड्स में परस्पर कुछ संबंध भी होता है ।

उत्पन्न हो जाती हैं ।

कैंडिडोसिस

यह भी एक सामान्य यौन-रोग है, जो विशेषकर औरतों को होता है । गर्भ-निरोधक गोलियों एवं अधिक मात्रा में जीवाणुरोधी दवाओं के उपयोग से भी रोग होता है । इसके अलावा यौन-संबंधों से भी रोग हो जाता है ।

इस रोग के कारण स्त्रियों में योनिमार्ग से गाढ़ा सफेद द्रव निकलता है । कई मामलों में पानी-जैसा द्रव भी निकलता है एवं बहुत अधिक खुजलाहट होती है । योनि स्राव में बदबू होती है और इससे कई बार कपड़े तक गंदे हो जाते हैं । कैंडिडा संक्रमण जब पुरुषों में होता है, तो कई बार जलन भी होती है एवं छाले भी पड़ जाते हैं । कुछ मामलों में शिश्न के अग्रभाग पर फफोले पड़ते हैं । इस रोग का भी प्रभावी इलाज संभव है ।

ग्रेन्युलोमा इंग्वायनेल

इस बीमारी में यौन अंग, जांघें एवं जांघों के बीच का हिस्सा प्रभावित होता है । यह रोग पिछड़े देशों में अधिक पाया जाता है । यह रोग जीवाणुओं द्वारा होता है । जिसे डोनोवान बॉडीज कहते हैं ।

रोग में जननेंद्रिय पर अथवा जांघों के ऊपर अथवा उनके बीच में लाल रंग के उभार दिखते हैं, ये उभार दर्द रहित होते हैं । बाद में फैल जाते हैं और फूट भी जाते हैं, लेकिन इनमें दर्द नहीं होता ।

फिर इसके पश्चात अन्य जटिलताएं उत्पन्न होती हैं, जैसे छाले बन जाना, मूत्र मार्ग का संकरा हो जाना, लसिका ग्रंथियों में सूजन आना इत्यादि । जैसा कि बतलाया गया है कि बीमारी के समय शुरू में दर्द नहीं होता, लेकिन उपर्युक्त अन्य जटिलताएं उत्पन्न होने पर दर्द होता है । इस रोग के इलाज में जीवाणुरोधक दवाएं अच्छा असर दिखलाती हैं । यह बीमारी दक्षिण भारत में बहुत अधिक पायी जाती है । चूंकि मरीजों को रोग में शुरू में दर्द नहीं होता, इसलिए वे इलाज की ओर ध्यान नहीं देते और रोग बढ़ता जाता है ।

यौनजनित परिसर्प

यह एक विषाणु द्वारा उत्पन्न रोग है, जो यौन-संसर्ग के माध्यम से फैलता है । एड्स के बहुत से मरीजों में भी यह रोग देखने को मिलता है ।

इसमें अंगूर-के गुच्छे सरीखे अर्बुद, शिश्न पर होते हैं । स्त्रियों में कई बार ये अंदर होते हैं, जिससे बीमारी का पता नहीं चल पाता । ये अर्बुद बाद में फूट जाते हैं । इस समय दर्द भी होता है । जंघाओं की लसिका ग्रंथियों में सूजन भी आ जाती है । यदि इलाज न किया जाए, तो

महिलाओं में रोग गंभीर स्थिति में पहुंच जाता है ।

हर्पीज सिंप्लेक्स नामक विषाणु अथवा वाइरस भी लगभग इसी तरह की बीमारी उत्पन्न करता है ।

सिफलिस

सिफलिस एक बहुत पुराना यौन रोग है, जो प्रायः सभी देशों में पाया जाता है । द्वितीय विश्व युद्ध के समय ब्रिटेन तथा अन्य यूरोपीय देशों में इस रोग के बहुत से मामले पाये गये थे । वास्कोडिगामा ने इस बीमारी को सन १४५८ में भारत में एवं सन १५०५ में चीन में देखा था । लेकिन इजिप्ट, ग्रीक और रोम के चिकित्सा साहित्य में इस तरह की बीमारी का कोई उल्लेख नहीं मिलता ।

रोग ट्रेपॉनिमा पेलिड्म नामक सर्पिल बेलनाकार जैविक इकाई स्पाइरो कीट्स से होता है तथा प्रमुख रूप से यौन संसर्गों द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है । लेकिन दूषित रक्ताधान द्वारा भी रोग एक मरीज से दूसरे मरीज में फैल जाता है । यह रोग पैतृक भी हो सकता है । अर्थात यदि मां को है, तो उसके बच्चों को भी सिफलिस की बीमारी हो सकती है । इसे पैतृक सिफलिस कहते हैं ।

सिफलिस एक भयंकर रोग है, जिसमें यौनांगों के साथ ही शरीर के अन्य अंग भी प्रभावित होते हैं । यहां तक कि यह संक्रमण अस्थियों में भी पहुंच जाता है ।

इस रोग की तीन अवस्थाएं होती हैं । प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक । रोगाणु के प्रवेश के औसतन २५ दिन बाद यौनांग पर अंडाकार फफोला बनता है । इसकी बाहरी सतह टूटने से यह एक छाले का रूप ले लेता है । छाले को प्राथमिक शैंकर भी कहते हैं । इससे खून नहीं आता और सामान्य तौर पर द भी नहीं होता । ९५% यौन रोगियों में घाव शिश्न के ऊपर बनता है, लेकिन समलिंगी रोगियों में यह गुदा के किनारे पर होता है, इस अलावा यह ओंठों अथवा जीभ पर भी हो सकता है । स्त्रियों में योनि द्वार के आसपास बनता है ।

रोग की द्वितीयक अवस्था में ८०% मरीज़ में त्वचा के रोग भी हो जाते हैं । कुछ मरीजों यकृत, तिल्ली, मस्तिष्क की झिल्लियों में भी रोग फैल जाता है । इसके साथ ही बुखार, सिरदर्द, गले में दर्द इत्यादि लक्षण पैदा होते हैं ।

पूरे शरीर की त्वचा में विभिन्न तरह की फुंसियां भी उभरती हैं । ये फुंसियां गुलाबी अथवा तांबिया रंग की होती हैं । इनमें खुजलाहट नहीं होती । रोग की द्वितीयक अवस्था अधिक संक्रामक मानी जाती है । इस अवस्था में शरीर की प्रायः सभी लसिका ग्रंथियों में सूजन आ जाती है ।

रोग की तृतीयक अवस्था में शरीर के विभिन्न भागों पर ठोस गांठों का निर्माण होता जिन्हें गुम्मा कहते हैं । ये अनियमित आकार होती हैं ।

तृतीयक सिफलिस पुरुष अथवा स्त्री के प्रायः सभी अंगों, संस्थानों में फैल जाती है । उदाहरणार्थ यह हृदय एवं रक्त वाहिकाओं, फेफड़ों, पाचन संस्थान, अस्थि तंत्र, तंत्रिका इत्यादि को प्रभावित कर इनके कार्यों में बाधा उत्पन्न करती है, यहां तक कि रोगी पागल हो

सकता है, उसको लकवा लग सकता है, उसकी हृदय गति रुक सकती है ।

भारत में जयपुर, मद्रास तथा तमिलनाडु के देहाती इलाकों में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार रिमांडवाले कैदियों में पुरुष वर्ग में सिफलिस के मरीजों का प्रतिशत ६% था तथा स्त्रियों में १०% पाया गया । इसी तरह देहाती इलाकों के पुरुष एवं स्त्रियों में रोगियों का प्रतिशत क्रमशः ३.६ तथा ३.३ था । चूंकि सिफलिस रोग में भी यौनांगों पर घाव अथवा छाले बनते हैं, इसलिए यदि ऐसे रोगी एच. आई. वी. (एड्स विषाणु) से संक्रमित व्यक्ति से यौन संपर्क करनेवाले व्यक्ति को भी एड्स हो सकता है ।

यौन रोगों पर नियंत्रण के उपाय

उपर्युक्त यौन-रोगों के विवरण से स्पष्ट है कि यदि हमें एड्स रोग पर नियंत्रण पाना है, तो विभिन्न तरह के यौन-रोगों पर भी नियंत्रण रखना होगा ।

रोग से बचने के उपाय

यौन-रोगों की रोकथाम के लिए प्रमुख तौर पर निम्न बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए—

- **यौन-संबंधों के बारे में लोगों को शिक्षित करना, साथ ही उन्हें यौन-रोगों के बारे में जानकारी देकर मर्यादित यौन-संबंध रखने की सलाह देना ।**
- **कंडोम के उपयोग को बढ़ावा देना ।**
- **यौन-रोगियों के लिए प्रभावी चिकित्सा सेवा प्रत्येक जगह उपलब्ध करवाना ।**
- **ऐसे यौन-रोगी जो अपना रोग छुपाते हैं उन्हें यौनजनित रोग चिकित्सालय तक लाकर इलाज करवाना ।**

—मेन रोड
पो.—हटा
जि.-दमोह (म.प्र.)
पिन-४७०७७५

इनके भी बयां जुदा-जुदा

मुट्ठियों में खाक लेकर दोस्त आये वक्ते दफन
जिंदगी भर की मोहब्बत का सिला देने लगे
—साकिब

ख़ुदा जाने यह दुनिया जलवागाहे नाज है किसकी
हजारों उठ गये लेकिन वही रौनक है मजलिस की
—अमीर

समझ सके तो समझ जिंदगी की उलझन को
सवाल इतने नहीं हैं जवाब जितने हैं
—जां निसार अख्तर

इनमें ही कहीं होगा अब जिक्र हमारा भी
जो बंद किताबें हैं दुनिया तेरे हाथों में
—साहिर लखनवी

एक मुद्दत से तेरी याद भी आयी न हमें
और हम भूल गये हों तुझे ऐसा भी नहीं
—फिराक

अब भी आ जाता तो रह जाती हमारी जिंदगी
बाद मरने के अगर खत का जवाब आया तो क्या
—हैरत इलाहाबादी

छोड़ेंगे न तुझको तेरे एहसास के शोले
यूं गैर के घर को न लगा आग मेरे भाई
—इसहाक मलिक

मैंने जब वादिए गुरजत में कदम रखा था
दूर तक यादे वतन आयी थी समझाने को
—वहीद-उल-दीन वहीद

तुम्हारे आसरे पर डाल दी जब नाव तूफां में
उभर आता है साहिल जिस जगह साहिल नहीं होता
—बेदिल सरहदी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

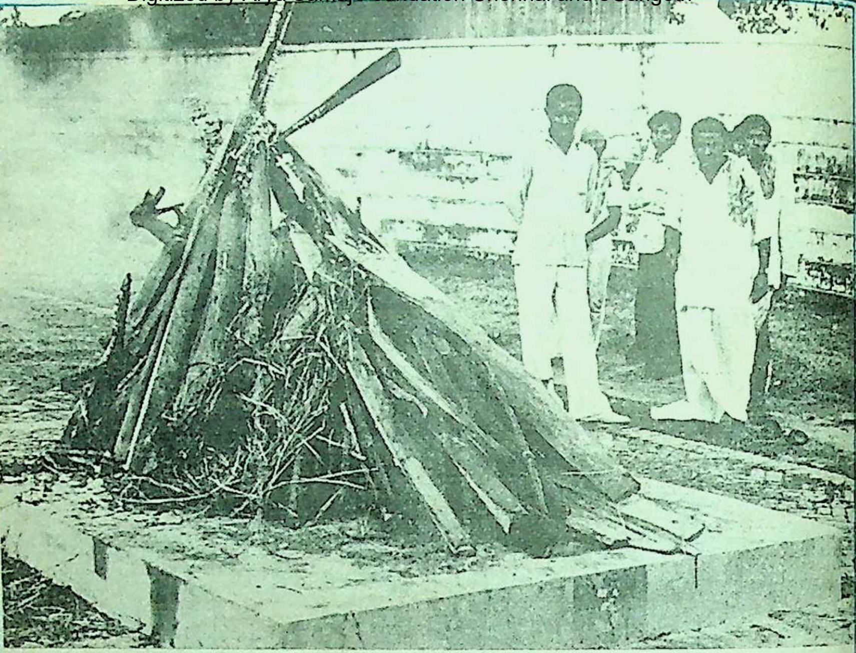

एक शव का दाह-संस्कार :
एक शव के जलाने में एक वृक्ष की लकड़ी जल जाती है

एक शव एक वृक्ष को खाता है !

• कन्हैया अगनानी

यह कितनी चौकानेवाली बात है कि प्रतिवर्ष सत्रह मिलियन हेक्टेयर की दर से इस पृथ्वी से जंगल खतम होते जा रहे हैं । यही नहीं, प्रतिदिन लगभग एक सौ चालीस पौधे एवं जीव-प्रजातियां हमेशा-हमेशा के लिए विलुप्त होती जा रही हैं ।

अंधाधुंध वनों की कटाई के कारण समूचे विश्व के सामने एक गंभीर समस्या पैदा हो गयी है, जिसे लेकर सभी चिंतित हैं, और महसूस करने लगे है कि यदि इस खतरे का कारगर ढंग से मुकाबला नहीं किया गयां, तो पशु-पक्षियों का ही नहीं बल्कि मानव का भी विकास रुक

जाएगा ।

दुनिया के विकासशील देशों में, विशेषकर भारत में प्राचीनकाल से ही वनों का विशेष महत्त्व रहा है । यहां बड़, खेजड़ी, तुलसी आदि पेड़-पौधों की पूजा ही नहीं की जाती है, बल्कि पीपल, तुलसी आदि पेड़-पौधों का बाकायदा मनुष्यों के विवाहों की तरह पूर्ण परंपरा के साथ विवाह भी रचाया जाता है । वृक्ष केवल पूजा के लिए ही नहीं होते, बल्कि प्राचीनकाल से लेकर आज तक देशी पद्धति द्वारा किये जानेवाले इलाज में भी पेड़-पौधों का विशेष महत्त्व है । वृक्षों की जड़ी-बूटियों से जहां कई असाध्य रोगों का इलाज किया जाता है, तो वहीं आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में भी पेड़-पौधों से निकलनेवाले रसों, पत्तों तथा जड़ों आदि से दवाइयां बनायी जाती हैं ।

यदि हम पेड़ों के इतिहास को देखें, तो इस धरती पर दुनिया का सबसे पुराना पेड़ माना जाता है— 'चीड़', इसकी एक जाति 'पाईनस एरिस्टटा' का पेड़, जो उत्तर अमरीका के मेसावर्डे पार्क में लगा हुआ है । वनस्पति विशेषज्ञों के अनुसार इसकी आयु लगभग पैंतालीस हजार वर्ष है । इसके बाद नंबर आता है अमरीका के ही 'सिकोया जाइगैंटिया' का, जो दुनिया का सबसे भीमकाय वृक्ष है तथा इसकी उम्र मानी जाती है ३,२०० वर्ष ।

इस देश की अमूल्य संपदा अर्थात वनों में मिलनेवाली लकड़ियों में मुख्यतः आम, बबूल, शीशम, सागवान, चीड़, नीम, अखरोट, बादाम, चाप, लाली, धनसराय, पाईन, ब्लयू पाईन, फर पाईन, भोला, चंदन आदि कोई तीन हजार प्रकार की लकड़ियां हैं । अलग-अलग प्रदेशों में से महाराष्ट्र में चंदन की लकड़ी बहुतायत से मिलती है तो राजस्थान में बबूल । इसके अलावा मध्य प्रदेश, आसाम, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि में जहां कई प्रकार के वृक्ष उगा करते हैं— उनके कटाव के पश्चात भी भारत में मलेशिया, नेपाल, बर्मा तथा भूटान से काफी मात्रा में लकड़ी आती है ।

लगभग पचास प्रतिशत लकड़ी दरवाजों पर, बीस प्रतिशत फर्नीचर पर और पंद्रह प्रतिशत पेटियों आदि की पैकिंग व ईंधन में और शेष पंद्रह प्रतिशत शव-दाहों में खर्च हो रही है

एक शव : एक पेड़

इस देश में काम आनेवाली पूरी लकड़ी में से कोई १५ प्रतिशत लकड़ी शमशानों में शवों को जलाने के काम में आती है, यानी एक शव के दाह में एक पेड़ की लकड़ी लग जाती है, एक शव के पीछे एक पेड़ जल जाता है । आजकल लगभग हर बड़े शहर में शव-दाह के लिए विद्युत शव-दाह गृह हैं फिर भी धार्मिक मान्यताओं के कारण लकड़ी द्वारा शव-दाह को ही प्राथमिकता दी जा रही है । लगभग ५० प्रतिशत लकड़ी दरवाजों पर खर्च हो रही है । लगभग २० प्रतिशत लकड़ी कुरसियों, सोफासेटों आदि फर्नीचर के बनने के काम में आती है । शेष १५ प्रतिशत लकड़ी पेटियों आदि की पैकिंग व ईंधन के रूप में खर्च की जा रही है । दरअसल, पेड़ों के बारे में यह कथन बिलकुल सही है कि **'कट गये दरखत बन गयी कुरसियां, अब उनका परिंदों से नाता न रहा ।'**

है, नहीं है

महाशून्य के बीच
अंतरिक्ष है
अंतरिक्ष में
तैरती हुई पृथ्वी है
पृथ्वी पर
मैं हूं ।

पृथ्वी नहीं है
अंतरिक्ष नहीं है
महाशून्य है
और नहीं है ।
वह है
जो नहीं है
जैसे
मैं
मेरा शरीर
मेरी चेतना !
सब कुछ हैं
और
नहीं हैं ।

— मनोहर वंद्योपाध्याय
२०३, सेक्टर ३७
फरीदाबाद-१२१००३

हमारे यहां भी आधुनिकीकरण और आबादी के भारी दबाव के कारण वर्तमान में पेड़ों की कटाई से पर्यावरण की जटिल समस्या पैदा हो गयी है जिसे देखते हुए जहां दिवंगत श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रेरणादायक नेतृत्व में तब से सरकारी स्तर तक वनों को बचाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं, तो वहीं स्वर्गीय युवा नेता संजय गांधी ने भी पेड़ लगाने के लिए भारतवासियों को प्रोत्साहन दिया था ।

पूर्व केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी ने भी पशु-पक्षियों की सुरक्षा स्वरूप वनों को बचाने के लिए प्रयत्न किये । समाजसेवी सुंदरलाल बहुगुणा 'चिपको आंदोलन' को आगे बढ़ाकर प्रयास कर रहे हैं कि किसी तरह हमारी इस संपदा को बचाया जाए । राजस्थान में विश्नोई समाज का वनों के बचाव के लिए सराहनीय योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है वहीं आध्यात्मिक दृष्टि का भी महत्त्व है कि वृक्षों में भी 'ईश्वर' है, क्योंकि यह भी मनुष्य की तरह प्राण रखते हैं, खाते हैं-पीते है तथा अन्य सभी जीवों की तरह जीते हैं और तथ्य को तो विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु ने अपनी खोजों से यह सिद्ध भी कर दिखाया था ।

आज यह हम सभी का दायित्व है कि हम अपनी अमूल्य वन संपदा की रक्षा करें, चाहे वह किसी भी तरह हो ।

— ४१३, आदर्श नगर
गीता भवन के पास
जयपुर-३०२००४

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

---

१. वे निरंतर तीन अंक कौन-से हैं जिनका जोड़ उनके गुणनफल के बराबर है ?

ख. क. जमीन से निकले किसी जीवाश्म में निहित किस चीज से पता चलता है कि वह कितनी पुरानी है ?

ख. उन वानरों के जीवाश्म जिनसे मानव का विकास हुआ है, भारत में कहां पाये गये हैं ?

३. क. **प्राचीन** काल में आर्यों की भाषा क्या थी ?

ख. कालांतर में उसके साथ-साथ किस भाषा का विकास हुआ, जिसके अनेक रूप हुए ?

४. **उत्तरी** भारत में एकल चट्टान पर उकेरी गयी ५० फुट ऊंची भगवान बुद्ध की मूर्ति कहां स्थित है ?

५. क. **मध्य** भारत में सबसे बड़ा समाचार-पत्र संग्रहालय कहां है ?

ख. उसकी स्थापना कब हुई थी ?

६. क. **'बोस्टन** की चाय-पार्टी' से किस घटना का तात्पर्य है ?

ख. अमरीकी 'स्वतंत्रता की घोषणा' कब हुई थी ?

ग. संयुक्त राज्य अमरीका संघ की स्थापना का संविधान कब लागू हुआ था ?

७. क. **हाल** में देश में संक्रामक रूप से प्लेग का प्रकोप कहां से फैला था ?

ख. भारत में सबसे भयावह संक्रमण कब हुआ था ?

८. क. **हाल** में सबसे बड़ी समुद्री जहाज डूबने की दुर्घटना कहां हुई थी ?

ख. इस घटना से अतीत की किस घटना की याद ताजा हो आती है ?

९. क. **१९९३** का दादासाहब फाल्के पुरस्कार किसे प्रदान किया गया है ?

ख. के. के. बिड़ला फाउंडेशन ने भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के निमित्त शोधवृत्तियों के लिए किसे चुना है ?

ग. विश्व हिंदी समिति ने हिंदी व साहित्य में योगदान के लिए किसे सम्मानित किया है ?

१०. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

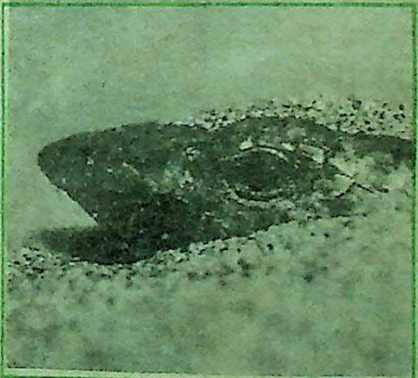

कहानी

पटरी पर लगा तंबू

● अखिलेश तिवारी

"होली बीत गयी, फागुन खतम हो गया, पर दिल्ली का जाड़ा है कि कम्बख्त जाने का नाम ही नहीं लेता ।" तंबू के कोने में रखी पत्थर के कोयले की अंगीठी पर हाथ सेंकते हुए नसीरा बड़बड़ाया ।

"क्यों बेटा, तुझे क्या तकलीफ इस जाड़े से । अभी तो जवान है । फिर किले-जैसे तंबू की छत के नीचे बैठा गरमा रहा है ।" रामनरेश ने जरा सख्ती से कहा ।

"वह तो ठीक है काका, पर यह भी सावन-भादों का टाइम है जो पानी पर पानी पड़े जा रहा है ।"

"अबे, अपनी बक-बक करता रहेगा तब तक सब्जी सुलगकर राख हो जाएगी" रामनरेश ने फिर घुड़का ।

उस त्रिकोणीय तंबू में पांच लोग रहते हैं । वह उनके रहने, सोने, खाना बनाने के अलावा ठेकेदार के गोदाम का भी काम करता है । रामनरेश उम्र में सबसे बड़ा है । बरसों काम करते-करते बेलदार बन गया है । ठेकेदार का खास आदमी था । पर दो महीने से एक नया छोकरा आ गया । बड़ा अंगरेजी दां है । ठेकेदार ने सिर पर चढ़ा रखा है । तभी से रामनरेश उखड़ा रहता है । फिर भी सब उसकी इज्जत करते हैं । नसीरा उस पंच मंडली में सबसे छोटा है । काम सीख रहा है, पर मेहनती है । बातें लच्छेदार बनाता है, खाना उससे भी अच्छा । इसलिए उसकी बचकानी और कभी-कभी बेतुकी बातों का कोई बुरा नहीं मानता । महुआ और दुलारे रामनरेश के लगाये पुराने मजदूर हैं । दोनों बिहार से आये हैं ।

पिछले बीस सालों में यह आठवां ठेकेदार का अड्डा पकड़ा है । कन्नी और बसूली चलाते-चलाते या ईंट, बालू, रोड़ी, सीमेंट, चूना व लोहा-लंगड़ ढोते-ढोते तीनों में मनुष्य होने का अहसास भी मर चुका है । हां, गांव में बीवी-बच्चों को मनीऑर्डर भेजते समय या नारी देह को पाने की भूख जागते समय आदमी होने की चेतना जागती है । राजू तंबू के दूसरे कोने में खाली बोरियों के ढेर के ऊपर बैठा नसीरा और रामनरेश की बात सुनी-अनसुनी कर रहा है । न जाने क्यों उसका आना रामनरेश को भारी पड़ रहा है ।

टिपटिपाता पानी और जोर पकड़ गया है । तेज हवा आंधी बन गयी है । बिजली कड़कने के साथ ओले भी पड़ने लगे हैं ।

"क्यों काका, तुम्हारा यह किला रहेगा जा गुब्बारा बन के आसमान में उड़ जाएगा..." नसीरा ने रामनरेश की चुटकी ली ।

"तुझे क्या फिकर । वह बाबू तो बैठे हैं । वह क्या किसी इंजीनियर से कम हैं । आंधी, पानी सब काबू में कर लेंगे ।"

रामनरेश रोज ही कुछ जली-कटी कहता है । बहुत बरदाश्त कर रहा है । पर आज उसकी देह में आग-जैसी लग गयी । आखिर देवरिया के ठाकुर का एकलौता ग्रेजुएट बेटा है । इन गंवारों के बीच किस मजबूरी में पड़ा है इन्हें क्या पता । उसने काफी प्रयत्न के बाद अपने को शांत किया ।

तंबू सड़क से नीचे की पटरी पर लगा है । इतनी देर की बारिश से सड़क का पानी छोटा नाला बनकर अब तंबू में घुसने लगा है । पानी अंदर आते देख राजू झटककर उठ खड़ा हुआ ।

"अरे दुलारे, महुआ ! जल्दी उठ ! पानी अंदर आ रहा है सीमेंट की बोरियां डाल तखत पर, वरना सब अभी पत्थर हो जाएंगी ।"

दुलारे और महुआ दोनों तखत का सहारा लिये सिकुड़े ऊंघ रहे थे ।

राजू की कड़कती आवाज सुनकर चौंक गये ।

"अरे सुना नहीं । पीनक में हो क्या ?"

दिनभर की कड़ी कमरतोड़ मेहनत के बाद शरीर इतनी जल्दी काबू में नहीं आ रहा था । रामनरेश अपनी संदूकची उठाकर ईंटों के बने छोटे-से टीले पर जमाने लगा । राजू के दुबारा चिल्लाने पर व्यंग्यात्मक स्वर में बोला—

"उठ जाओ, बाबू का कहना मान लो । नहीं तो नौकरी से भी हाथ धो बैठोगे..."

राजू ने फिर अपने को संयत किया । फिर भी उसकी आवाज में निहित आक्रोश स्पष्ट

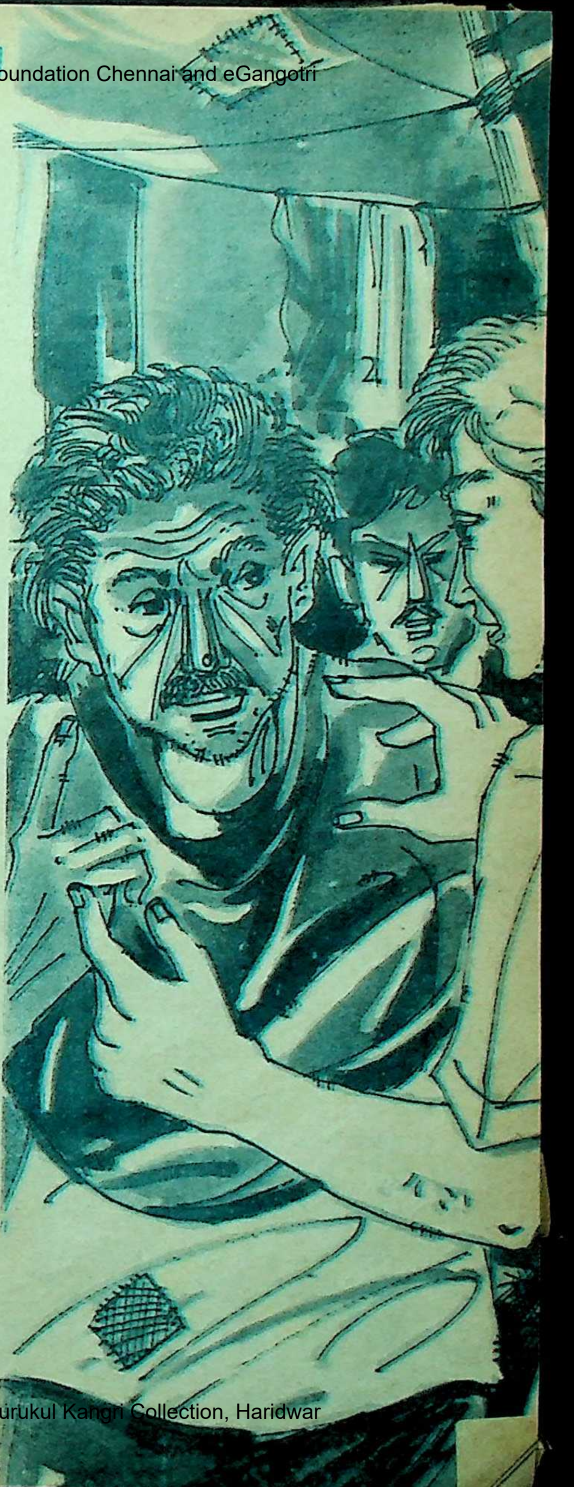

चीते की तरह झपटकर उसने रामनरेश का गला अपने दोनों फौलाद-जैसे पंजों में जकड़ लिया । रामनरेश के लिए यह अप्रत्याशित था । उसका दम घुटने लगा, आंखों और मुंह से पानी टपकने लगा । दुलारे और महुआ दोनों निर्विकार रूप से खड़े रहे । उनके लिए ऐसी घटनाओं का कोई महत्त्व नहीं था ।

था ।

''देख काका, न यह मेरा माल है न मेरा ठेका । मैं तो सबके भले के लिए कह रहा हूं । कुछ नुकसान हो गया तो जिम्मेदारी सभी की होगी...''

''अरे बाबू, मैं तो बेपढ़ आदमी, मेरी काहे की जिम्मेदारी ।''

धैर्य की भी सीमा होती है । और व्यंग्य तथा कटाक्ष सह पाना राजू के लिए असंभव हो गया ।

चीते की तरह झपटकर उसने रामनरेश का गला अपने दोनों फौलाद-जैसे पंजों में जकड़ लिया । रामनरेश के लिए यह अप्रत्याशित था । उसका दम घुटने लगा, आंखों और मुंह से पानी टपकने लगा । दुलारे और महुआ दोनों निर्विकार रूप से खड़े रहे । उनके लिए ऐसी घटनाओं का कोई महत्त्व नहीं था । जब से होश संभाला दोनों यही देखते आ रहे थे । पंडितों की पंडिताई और पूजा-पाठ की धौंस । मंदिरों की चढ़ायी रकम की गरमी । जो चाहे करें सब सही । ठाकुर लोग उनसे भी चार हाथ आगे । सारी जमीन के मालिक, बाकी सब दो कौड़ी के गुलाम । जब मरजी तब आदमी को आदमी समझा, वरना लावारिस कुत्ता । जूता, चप्पल, लाठी, बल्लम जो मन में आया हाथ में लेकर साले को अधमरा कर दिया । और हुआ तो दुनाली निकाली और दाग दी । आगे कोर्ट-कचहरी सब पैसे के बल पर ।

लेकिन नसीरा से नहीं देखा गया । उछल भागा । राजू के पैर पकड़ लिये । ''नहीं बाबू, ऐसा गजब मत करो । बाल-बच्चे वाला है । मिनट में दम निकल जाएगा । सब यतीम हो जाएंगे... ।''

''छोड़ दे मुझे नसीरा । जब से मैं आया हूं यह मेरे पीछे पड़ा है । आज इसकी जुबान ग से बाहर निकाल कर फेंक दूंगा । जिससे फिर किसी को जली-कटी नहीं कह सके...''

क्रोध से राजू का चेहरा रक्ताभ हो गया था आंखों से अंगारे निकल रहे थे । रामनरेश की सांस बंद हो रही थी । आंखें फटने लगी थीं

''नहीं मालिक आपके पैरों पड़ता हूं । इस गरीब पर रहम कर दें । अगर यह चल बसा आप भी बिला वजह पुलिस और अदालतों के चक्कर में पड़ेंगे ।''अचानक राजू के हाथ ढीले पड़ गये । उसने रामनरेश को आखिरी बार क्रोध से जलती आंखों से देखा फिर धक्का दे पीछे ढकेल दिया ।

रामनरेश धम्म से गीली धरती पर बैठ गया । महुआ, दुलारे, नसीरा और राजू सब गये सीमेंट की बोरियां जल्दी-जल्दी तखत प

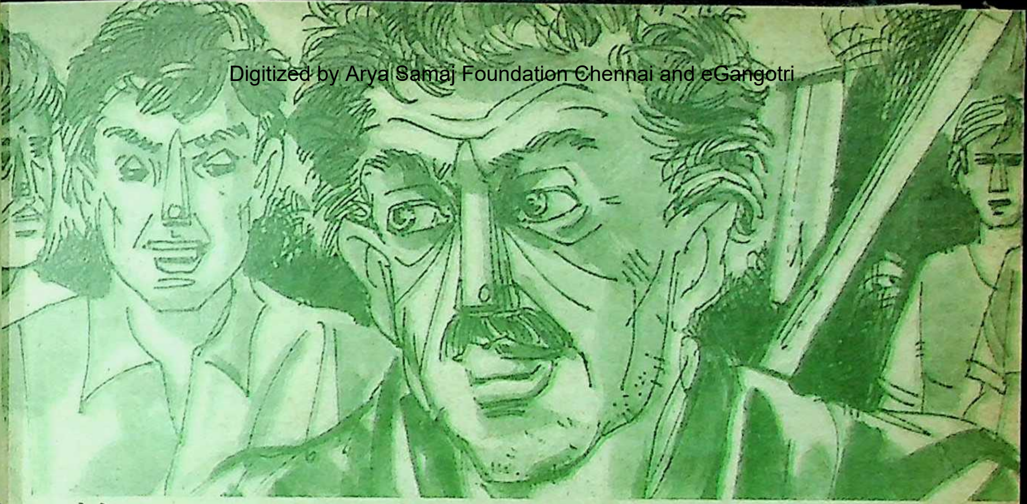

जमाने में ।

पानी काफी अंदर आ गया था । रामनरेश अभी भी जमीन पर अधमरा-सा पड़ा था । राजू जरा झिझका । हृदय में संवेदना-सी जागी । सहसा उसने रामनरेश की बांहें पकड़ीं, “उठो काका, जो हो गया उसके लिए हमें माफ करो...” राजू की शक्तिशाली बांहों ने निर्जीव से पड़े रामनरेश को उठाकर तखत पर बैठा दिया । रामनरेश बुत की तरह निर्जीव-सा बैठा रहा । राजू ने फिर ध्यान से उसे देखा । “काका मेरे रहने न रहने से यहां कोई फरक नहीं पड़ेगा । अगर तुम्हें हमारा रहना अच्छा नहीं लगता, तो हम चले जाते हैं । पर तुम कारीगर हो । तुम नहीं होगे तो ठेकेदार का काम कैसे चलेगा ।”

रामनरेश फिर चुपचाप गरदन नीची किये बैठा रहा । जैसे उसने कुछ भी नहीं सुना । राजू पुनः कोने में खाली बोरियों के ढेर पर बैठ गया । नसीरा ने पतीला खोला, फिर बड़बड़ाया, “सब्जी वैसे ही कम थी, इस झमेले में आधी जल गयी ।” फिर उसने रामनरेश की तरफ देखा और मनाते हुए बोला— “अरे काका अब ठंडे भी पड़ जाओ । बाबू ने तो माफी तक मांग ली...” अब रामनरेश ने गरदन ऊपर उठायी । चारों उसी की तरफ देख रहे थे । उसे लगा उसका आत्म सम्मान पुनः लौट आया । वह आत्मविश्वास से बोला, “अरे नसीरा है तो कल का छोकरा लेकिन बात अक्लमंदी की करता है...”

फिर राजू की तरफ देखकर कहने लगा । “बाबू की बात का क्या बुरा मानना । पढ़े-लिखे है तो क्या, मेरे छोटे बेटे की उमर के हैं । जरा जोश में हाथ उठ गया तो क्या मैं बुरा मान बैठूंगा...”

सहसा तंबू के अंदर व्याप्त तनाव समाप्त हो गया । युद्धविराम जैसी शांति छा गयी ।

बारिश बंद हो चुकी थी । पर ठंडी हवा अभी भी पेड़ों को झकझोरे जा रही थी । राजू बाहर निकला । जेब से बीड़ी का बंडल निकाला । घर में विल्स किंग साइज ही पीता था, पर अब पैसे कहां है । बीड़ी सुलगाने लगा तब याद आया, नसीरा को छोड़कर सभी बीड़ी पीते हैं और जब से वह आया बीड़ी के बंडल वही खरीदता है । वह तंबू के अंदर आ गया । उसने क्रमशः तीनों को बीड़ी पकड़ायी ।

रामनरेश ने सबसे पहले अपनी बीड़ी सुलगायी, फिर उससे लेकर सबकी बीड़ियां सुलग गयीं ।

रात काफी हो गयी थी । पर आज सोने की किल्लत थी । जमीन पर अब भी पानी था । तखत पर पैर रखने की जगह नहीं । सबके बिस्तर और कपड़े दो टूटी कुरसियों पर लदे थे । रामनरेश ने महुआ और दुलारे को बुलाया ।

''तुम लोगों की जिंदगी बीत गयी पर अकल नहीं आयी । जाओ बाहर से दस-बीस ईंटें उठाकर लाओ । कम-से-कम बैठने के लिए सूखी जगह तो मिलेगी ।''

राजू का कोना ऊंची सतह पर था । पानी वहां नहीं पहुंचा था । वह उसी ढेर पर तंबू की टेक लगाकर सोने का नाटक करने लगा । नसीरा ईंटों पर अपनी रजाई लपेटे नींद बुलाने की कोशिश कर रहा था । जब काम नहीं बना तो फिर बोलने लगा 'काका', एक दिन ठेकेदार साहब से भी कहो इस किले में अपना पड़ाव डालें, कितना लुत्फ उन्हें हासिल होगा...'' उसकी बात सबने अनसुनी कर दी ।

पर राजू ने आज महसूस किया कि नसीरा कितना समझदार है । आज अगर उसने नहीं रोका होता तो उसके हाथों खून हो गया होता । वैसे ही अपने इलाके के विधायक को अधमरा करने के जुर्म में घर-बार छोड़कर यहां भागकर आना पड़ा । पिताजी की लगभग सारी जमीन-जायदाद उसे बचाने में बरबाद हो गयी । उसे अपने पर कभी-कभी बेहद गुस्सा आने लगता है । पर वह क्या करता । उस विधायक ने उसी की बहन के साथ बलात्कार करने की कोशिश की । वह क्या चुप बैठ जाता । साला मुकद्दर का तेज था । बच गया । वरना उसने तो मरा समझकर ही उसे छोड़ा था ।... फिर न जाने क्या-क्या बातें उसके दिमाग में घूमने लगीं ।

दुलारे और महुआ बैठे-बैठे नींद में झोंके ले रहे थे । दुलारे की बीवी तो बरसों पहले भाग गयी थी । एक लड़का था उसे भी साथ ले गयी । पहले बड़ा बुरा लगता था । पर अब सोचता है कि साली छिनार थी । जितनी जल्दी छुटकारा मिल गया उतना ही अच्छा । महुआ उसके गांव के बगलवाले पुरवे का ही था । घर में खाने के लाले पड़े थे तो शादी किस बूते पर होती । मां-बाप ने कुल मिलाकर चौदह बच्चे पैदा किये । पर बचे कुल पांच । तीन बहनें दो भाई । बड़ी बहन की शादी में लड़केवालों से बाप ने कुछ पैसे ऐंठ लिये तो जरा सहारा मिला । दो बहने मां-बाप के शह से भाग ही गयीं । ईश्वर जाने कहां है ? महुआ के छोटे भाई को उसने अपनी कमाई से पैसे दिये । तब बड़ी मुश्किल से कहीं एक लुगाई ला पाया । तब से महुआ जब भी घर जाता है अपनी कमाई भाई और उसका लुगाई को दे देता है ।

सुबह पांचो नशाड़या का तरह उठे । नींद भले नहीं आयी । पर सबके मन की पीड़ा निकल चुकी थी । कम-से-कम अगली रात तक के लिए । राजू और रामनरेश दोनों ने जैसे साथ ही आवाज लगायी, ''नसीर मियां, कल रात इतना जाड़ा-जाड़ा चिल्ला रहे थे । अब कम-से-कम चाय तो पिलवाओ...''

''क्यों नहीं काका... पर कल की तरह नाटकबाजी मत करना...''

सब के सब हंस पड़े । तंबू बदलकर सचमुच एक परिवार का घर बन गया ।

सेक्टर-३७ नोएडा-२०१३०

सामान्य प्रसव

● डॉ. संतोष साही

सामान्य सक्रिय प्रसव का अर्थ है—प्रसवकाल के दौरान शरीर की सहज प्रवृत्ति, यानी चलना, घूमना, फिरना, खड़ा होना, बैठना व घुटनों के बल झुकना आदि सब क्रियाओं का बिना किसी रुकावट के होते रहना।

स्वाभाविक प्रसव के समर्थकों के अनुसार, ''महिला जन्मदात्री है। किसी भी स्त्री के लिए संतान की उत्पत्ति एक आनंददायक अनुभव है। जिसे आज के प्रसूति-विज्ञानियों ने समाप्त प्रायः कर दिया है 'फौर सेप' और उपकरणों की सहायता से बच्चे का जन्म 'चिकित्सक' और 'उपकरण' को मुख्य बनाकर मां की भूमिका को गौण बना देता है।

उनके अनुसार सीधे खड़ी अवस्था में शिशु को जन्म देना सर्वश्रेष्ठ है। इस अवस्था में शिशु को जन्म देने के कई लाभ हैं—इसमें गुरुत्वाकर्षण का अधिकतम प्रभाव, क्योंकि शिशु के नीचे आने की दिशा का समन्वय गुरुत्वाकर्षण बल के साथ होता है। शिशु को अधिकतम ऑक्सीजन का मिलना क्योंकि इस अवस्था में गर्भाशय मेरुदंड के अग्रभाग के साथ-साथ जानेवाली रक्त शिराओं पर दबाव नहीं डालता है। गर्भाशय के संकुचन से होनेवाली पीड़ा में कमी होना।

आरामदायक सामान्य प्रसव की कुछ सहायक विधियां

योग और श्वसन क्रिया

योग व्यायाम की एक प्राचीन विधि है। प्रसव की तैयारी के लिए यह सर्वाधिक प्रभावशाली तरीकों में से एक है। यह मानसिक और शारीरिक रूप से होनेवाले उन नाटकीय परिवर्तनों का आंनद उठाने में सहायक होता है, जो गर्भस्थ शिशु मां के जीवन और शरीर में लाता है। श्वसन क्रिया के साथ योगासन शरीर को अधिक लचीला बनाने और प्रसव के दौरान खुलने में मदद करता है।

गर्भावस्था और शिशु के जन्म के लिए एरोमा थिरेपी

विभिन्न प्रकार के पौधों से तेल निकाला जाता है और प्रत्येक पौधे से निकाले गये तेल में उस पौधे की प्राणशक्ति होती है, जिसका शरीर, दिमाग और मनोदशा पर सीधा प्रभाव पड़ता है। सामान्य स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए इन तेलों का प्रयोग हजारों वर्षों से चला आ रहा है। एरोमा थिरेपी आज व्यापक रूप से अपनायी जाने वाली तकनीक बन गयी है, मालिश गर्भ में शिशु से संपर्क स्थापित करने का एक सर्वोत्तम तरीका है और प्रसव की तैयारी करने व शिशु की देखभाल करने की प्रक्रिया में एक अतिरिक्त आयाम जोड़ देती है।

एक्टिव बर्थ सेंटर
न्यू फ्रेंडस कालोनी नयी दिल्ली

अग्नि :
मानव सभ्यता के विकास की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी

● डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
होतारं रत्नधातमम् ।
अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे
यशसं वीरवत्तमम् ।

अर्थात, 'यज्ञ के देवों को बुलानेवाले तथा रत्नों के श्रेष्ठ दाता अग्नि की स्तुति करता हूं जिनके द्वारा दिनों-दिन बढ़नेवाला धन, संपत्ति और यश प्राप्त हो ।' ऋग्वेद के प्रथम मंडल के प्रथम सूक्त (अग्नि सूक्त) में अग्नि की प्रार्थना में आगे कहा गया है— 'अंधकार को प्रकाशित करनेवाले हे अग्नि ! तुम हमारे लिए सुगम बनो, जैसे पिता अपने पुत्र के लिए सुगम होता है और हमारे कल्याण के लिए हमारे साथ रहो ।'

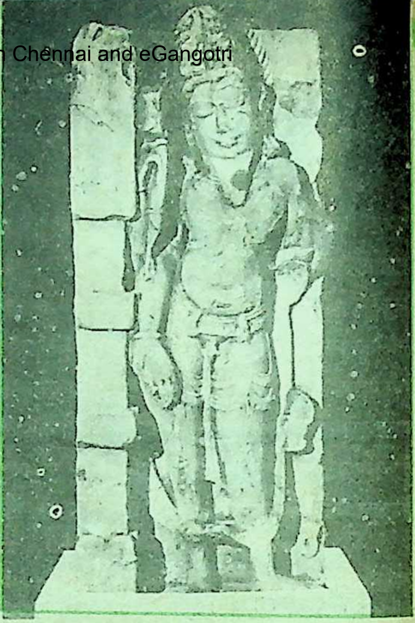

कड़ा (इलाहाबाद) से प्राप्त अग्निदेव की प्रतिमा

ऋग्वैदिक युग में अग्नि के उपयोगी स्वरूप को भली-भांति समझ लिया गया था और तभी उसे देवमंडल में सम्मिलित किया गया था । अग्नि की महत्ता इसी बात से समझी जा सकती है कि ऋग्वेद-जैसे अपौरुषेय ग्रंथ के प्रारंभ में ही स्वस्ति प्रदान करने के लिए उसकी स्तुति की गयी है । क्यों न हो ? अग्नि यज्ञ का माध्यम था और यज्ञ धन-धान्य, यश, सुख, आरोग्य आदि प्रदान करने का सबल साधन । यज्ञ करवानेवाला यजमान यज्ञवेदी में हविष या बलि अर्पित करता था और अग्नि उस हविष को निमित्त देवता तक पहुंचाकर यजमान का कल्याण-मार्ग प्रशस्त करता था । इसीलिए

ऋग्वैदिक युग में अग्नि के उपयोगी स्वरूप को भली-भांति समझ लिया गया था । अग्नि की महत्ता इसी बात से समझी जा सकती है कि ऋग्वेद—जैसे अपौरुषेय ग्रंथ के प्रारंभ में ही स्वस्ति प्रदान करने के लिए उसकी स्तुति की गयी है ।

अग्नि धन-धान्य और यश का प्रदाता माना जाता था ।

आविष्कार अग्नि का

अग्नि का आविष्कार मानव सभ्यता के विकास की महत्त्वपूर्ण कड़ी था । जिस प्रकार कृषि और पहिये की जानकारी ने मानव सभ्यता के विकास में, क्रांतिकारी योगदान दिया था, उसी प्रकार का योगदान अग्नि का रहा । सच कहा जाए तो अग्नि ने ही मनुष्य को मनुष्य बनाया, अन्यथा वह किसी पशु से अधिक नहीं था ।

जैसे अन्य वन्य-प्राणी शिकार करके भोजन पाते थे, वृक्षों के कोटरों या पर्वतों की खोहों में छिपकर आंधी, धूप, बारिश और अपने से बड़े हिंसक पशुओं से अपनी रक्षा करते थे, उसी प्रकार पहले मनुष्य का भी जीवन था । वह जंगलों में इधर-उधर घूमा करता था । पत्थरों के टुकड़ों को घिसकर उन्हें नुकीला बनाकर वह वृक्षों से फल तोड़-तोड़कर खाता था या फिर छोटे-मोटे जंगली जानवरों का शिकार करके उनके कच्चे मांस से अपना पेट भरता था । सोचिए, कितना हिंसक था मनुष्य । क्या वह किसी पशु से कम था ?

एक दिन मनुष्य द्वारा मारा गया कोई पशु अनायास जंगल की आग में भुन गया । मनुष्य ने जब उसे खाया, तो वह उसे रोज से अधिक स्वादिष्ट लगा । तब से मनुष्य ने आग की खोज शुरू कर दी, ताकि वह मांस को उसमें भूनकर खा सके । और अंततः मनुष्य को आग मिल गयी । चकमक पत्थरों की रगड़ से आग की चिनगारियां निकलती हैं, यही ज्ञान तत्कालीन मनुष्य को आग की खोज का कारण बना । तब से मनुष्य ने पशुओं के मांस को भूनकर खाना प्रारंभ कर दिया । उस काल में मनुष्य को आग से और भी कई उपयोग सूझे । सरदी के मौसम में आग की आंच से उसे बड़ा सुख मिला । आग जलाकर हिंसक पशुओं से अपनी रक्षा करने का उपाय भी उसने ढूंढ़ निकाला और अग्नि के प्रकाश से अंधकार को दूर करने का भी ।

अग्नि की इस खोज से मानव के जीवन में युगांतरकारी परिवर्तन हुए । आगे चलकर जब मनुष्य ने कृषि की जानकारी प्राप्त कर ली, तो उसने अपने खेतों के पास ही अपने स्थायी घर बना लिए । कृषि के लिए पशुपालन आवश्यक था । गाय का दूध और खेती से उत्पन्न अनाज ने मनुष्य को शाकाहारी बना दिया । अब नियमित रूप से वह अनाज को अग्नि में पकाकर अपने भोजन को स्वादिष्ट बनाने लगा । शायद, इसी अवस्था में मनुष्य ने दाल, रोटी

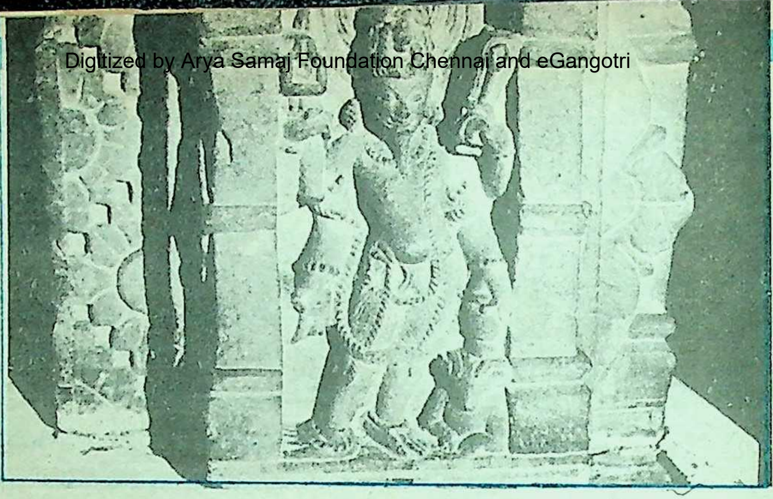

इलाहाबाद संग्रहालय में संग्रहित मानिकपुर से प्राप्त अग्निदेव की प्रतिमा

और शाक-सब्जी बनाना सीखा होगा ।

धीरे-धीरे मनुष्य सूर्य, आकाश, पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि आदि के गुणों और उनके उपयोगी स्वभाव से परिचित होता गया । अपने जीवन में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान का ज्ञान होने पर उसने उन्हें देवता मानकर उनकी पूजा-अर्चना आरंभ कर दी । प्रारंभिक वैदिक देवमंडल में प्रकृति के यही अंग सम्मिलित थे । सूर्य और चंद्र आकाश के, इंद्र, मरुत (वायु) आदि अंतरिक्ष के और जल, वनस्पति, अग्नि आदि पृथ्वी के देवता माने गये । आकाश और पृथ्वी भी देव-कोटि में ही थे ।

तीन तरह की अग्नियां

अग्नियां तीन प्रकार की मानी गयी हैं— दावाग्नि, वड़वाग्नि और जठराग्नि । जंगल में पेड़ की सूखी शाखाओं व पत्तों के घर्षण से उत्पन्न अथवा आकाश से गिरी बिजली से लगी आग को दावानल कहते हैं । वड़वाग्नि समुद्र के भीतर होती है । दिन-रात नदियों का पानी समुद्र में गिरने के बावजूद उसमें कभी बाढ़ नहीं आती, क्योंकि नदियों से आनेवाले पानी को समुद्र की अग्नि वडवा उसे सदैव सोखती रहती है । जठराग्नि शरीर के भीतर होती है । इससे एक तो शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है, जिससे वह सदैव चुस्त-दुरुस्त रहता है, और दूसरे जो भी खाया-पिया जाता है वह जठराग्नि द्वारा पचा दिया जाता है ।लिंगपुराण में भी तीन प्रकार की अग्नियों का उल्लेख है । मंथन से प्राप्त अग्नि को पवमान, सूर्य से प्राप्त अग्नि को शुचि और आकाश के बादलों से प्राप्त अग्नि को वैद्युत कहा गया है । वैदिक कर्मकांड में गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणात्य नामक तीन प्रकार की अग्नियों का उल्लेख मिलता है । वैदिक देवताओं में इंद्र के बाद अग्नि का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्थान था । अग्नि के माध्यम से ही देवताओं को, आहुतियों में डाले गये उनके बलि-भाग उन्हें प्राप्त होते थे । गृहस्वामी का कल्याण करने और सदैव गृह में वास करने के कारण ही अग्नि को गृहदेवता का सम्मानित पद प्राप्त हुआ था । अग्नि को घर में सदैव बनाये रखने का विधान था, ताकि जब भी आवश्यकता हो अग्नि का उपयोग किया जा

सके ।

कालांतर में अग्नि का कल्याणी स्वरूप विकसित हुआ । अपने कल्याणकारी स्वभाव के कारण ही अग्नि ने सती को उनके पिता दक्ष प्रजापति द्वारा किये जानेवाले यज्ञ में अपमान से मुक्ति दिलायी, लंका से वापसी में सीता की पवित्रता प्रमाणित की, भगवद्भक्ति में लीन बालक प्रह्लाद की रक्षा की और जौहर की ज्वाला बनकर कर्मवती तथा अन्य राजपूत ललनाओं की लाज बचायी ।

अग्निदेव का अंकन शिल्प में

भारतीय मूर्ति-शिल्प में अग्निदेव की अनेक प्रतिमाएं अंकित हैं । इन प्रतिमाओं का स्वरूप-निर्धारण, पूजा-विधान और कर्मकांड के ध्यान मंत्र में परिकल्पित अग्नि के स्वरूप के आधार पर किया गया था । ध्यान मंत्र इस प्रकार है—

सप्तहस्तश्चतुश्रृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः
त्रिपाद प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मित : ।।
स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधां तथा ।।
विभ्रद्दक्षिणइस्तैस्तु शक्तिमन्नं स्त्रुचं स्वरम् ।।
तोमरं व्यजनं वामैर्घृतपात्रं च धारयन्
मेषारूढ़ो जटाबद्धो गौरवर्णः महौजसः ।।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः
आत्माभिमुखमासीनः एव रूपो हुताशनः ।।

अर्थात, अग्नि के सात हाथ, चार सींग, सात जिह्वाएं, दो मस्तक और तीन पैर हैं । उनके दायें-बायें पार्श्वों में उनकी पत्नियां—स्वाहा तथा स्वधा हैं । अग्नि के दायें हाथ में शक्ति, अन्न, स्रुक तथा स्रुव और बायें हाथ में तोमर, व्यंजन और घृत-पात्र है । मेष पर सवार हैं और उनका वर्ण गौर है । उनके शरीर पर जटाजूट है, उनकी प्रसन्न मुखमुद्रा पर तेज विराजमान है, उनकी ध्वजा धूम की है, उनके नेत्र लाल हैं । सर्वकामनाओं को फलीभूत करनेवाले अग्नि का यही स्वरूप है ।

महाभारत के खिलपर्व हरिवंश में भी अग्नि को गांठ बंधा जटाजूट और उगते सूर्य के समान लाल नेत्रोंवाला बताया गया है । भारतीय शिल्प ग्रंथों में अग्नि को द्विभुजी अथवा चतुर्भुजी तपस्वी के रूप में बनाने का प्रावधान है । उनके हाथों में वर, कमंडल, शक्ति, अक्षमाला अथवा ज्वाला, स्रुक, स्रुव आदि आयुध बताये गये हैं । उनका वाहन मेष अथवा छाग (अज यानी बकरा) है । जटाजूट, श्मश्रु तथा यज्ञोपवीत उनकी पहचान के अन्य चिह्न हैं ।

भारतीय कला में अग्नि का प्राचीनतम अंकन पंचाल-नरेश अग्निमित्र के सिक्कों पर पाया गया है, किंतु उनकी प्रस्तर प्रतिमाएं कुषाणकाल से बनायी जाने लगी थीं । इस युग की गढ़ी गयी अग्नि की प्रतिमाएं राजकीय संग्रहालय, मथुरा तथा राज्य संग्रहालय, लखनऊ में प्रदर्शित हैं । मानव रूप में अंकित इन प्रतिमाओं के शीश पर जटाजूट, कंधे पर यज्ञोपवीत और हाथ में कमंडल है । वे तुंदिल बनाये गये हैं । उनके पीछे उकेरी गयी ज्वालाओं से उनकी पहचान सरल हो जाती है । गुप्तकाल में मेष पर सवार अथवा पैरों के निकट मेष वाहन समेत अग्नि की मूर्तियां बनायी जाने लगी थीं ।

अष्ट दिक्पाल

आगे चलकर अग्नि अष्ट दिक्पालों में सम्मिलित कर लिये गये । वे दक्षिण-पूर्व दिशा के लोकपाल माने गये थे । इस रूप में अग्नि का उल्लेख विष्णुधर्मोत्तर पुराण और मत्स्य पुराण में पाया जाता है । एलोरा की सोलहवीं गुफा में

अग्नि की चार मूर्तियां हैं, जिनमें उन्हें द्विभुज दिखाया गया है और अज उनका वाहन है ।

मध्यकाल में अग्नि की उत्कीर्ण स्थानीय मूर्तियां इलाहाबाद, झांसी तथा लखनऊ संग्रहालयों में देखी जा सकती हैं । इलाहाबाद संग्रहालय में चित्रकूट (जिला बांदा), मानिकपुर (जिला प्रतापगढ़) तथा कड़ा (जिला इलाहाबाद) से पायी गयी मूर्तियां हैं । श्मश्रु, यज्ञोपवीत और पैरों के निकट मेष वाहन से इन चतुर्भुजी मूर्तियों की पहचान निःसंदिग्ध है । कड़ा वाली मूर्ति की दोनों बायीं भुजाएं टूट चुकी है । उसकी दायीं भुजाओं में स्रुक तथा अक्षमाला है । मानिकपुर वाली मूर्ति के ऊपरी हाथों में स्रुक तथा स्रुव है, निचले बायें हाथ में कमंडल है और निचला दायां हाथ वरद मुद्रा में है । इन मूर्तियों में ज्वालाओं से युक्त प्रभामंडल भी है ।

झांसी संग्रहालय में ललितपुर जिले के सिरोन खुर्द नामक स्थान से मिली दो मूर्तियां उल्लेखनीय हैं । इंद्र के साथ उकेरी गयी अग्नि की ये मूर्तियां त्रिभंगी मुद्रा में हैं । जटाजूट, श्मश्रु, यज्ञोपवीत, वनमाला और मेषवाली इन मूर्तियों की ऊपरी भुजाएं खंडित हैं, निचली बायीं भुजा में कमंडल है और दायीं वरद मुद्रा में है । एक मूर्ति में ज्वालाओं से बने प्रभामंडल का कुछ हिस्सा बच रहा है ।

इन्हीं लक्ष्णों से युक्त तथा ज्वालाओंवाले प्रभामंडलवाली दो अग्नि की मूर्तियां लखनऊ संग्रहालय की शोभा बढ़ा रही हैं । ये मूर्तियां मिर्जापुर तथा गोरखपुर से प्राप्त हुई हैं । मध्यकालीन ये सभी मूर्तियां ११वीं शती की हैं ।

खजुराहो के मंदिरों में अष्ट दिक्पालों का उल्लेखनीय अंकन पाया गया है । पार्श्वनाथ नामक जैन मंदिर में अन्य ब्राह्मण देव-प्रतिमाओं के साथ चतुर्भुजी, तुंदिल अग्नि का भी अंकन है । उनके पैरों के निकट उनका वाहन मेष बैठा दिखाया गया है । अग्नि की प्रतिमाएं नालंदा, बादामी, ओसियां, कुंभकोणम आदि अनेक स्थानों पर भी पायी गयी हैं, जो उनकी सर्वव्यापकता की सूचक हैं ।

— ५डी/४, लिडिल रोड,
जार्ज टाउन, इलाहाबाद-२११००२

ब्रिटेन के तत्कालीन वित्त मंत्री विलियम ग्लेडस्टोन को माइकेल फैराडे के बिजली बनानेवाले छोटे-से उपकरण को देखने के लिए आमंत्रित किया गया था । फैराडे जब अपना प्रयोग दिखा चुके तो कुछ देर की चुप्पी के बाद वित्त मंत्री ने कहा, ''मिस्टर फैराडे, आपका प्रयोग तो बहुत रोचक है, किंतु इससे पैदा होनेवाली बिजली की व्यावहारिक उपयोगिता क्या है ?''

फैराडे महोदय ने तपाक से कहा, ''श्रीमन्, भविष्य में आप इस पर भी टैक्स लगा सकेंगे ।''

— सुभाष लखेड़ा

गुप्त संदेश कैसे भेजे जाते थे

● डॉ. रजनीकांत तिवारी

गुप्त संदेशों का हर काल में अपना विशिष्ट महत्त्व रहा है । यह महत्त्व आज भी अपनी यथोचित भूमिका में लोकप्रिय है । वास्तविकता तो यह है कि मनुष्य ने जब से अपने विचारों को लिखकर व्यक्त करना आरंभ किया, संदेशों को गोपनीय बनाने की कला का विकास भी तबसे आरंभ हो गया । आंखों ही आंखों से गोपनीय संदेशों का आदान-प्रदान हो या गुप्त खजानों के ठिकानों का सूत्र, पति-पत्नी के मध्य प्रेमालाप के गुप्त-संकेत हों या प्रेमियों की सांकेतिक अभिव्यक्ति—'गुप्त संदेश' की अपनी विशिष्ट भूमिका रही है । इसका प्रयोग युद्ध, राजनीति, व्यापार, तस्करी तथा अपराध की दुनिया तक ही सीमित नहीं है बल्कि आम जिंदगी में भी इसका महत्त्व कम नहीं है । यदि आप भी चाहें तो एक कूट (कोड) बना सकते हैं और प्रेमिका (या प्रेमी) को अपना गुप्त संदेश भेज सकते हैं । प्रेमिका ही क्यों पति-पत्नी भी अवश्यकता पड़ने पर परिवार के अन्य सदस्यों से गुप्त रखकर, एक दूसरे के लिए गोपनीय संदेश बीज लेख के रूप में खुली चिट्ठी में भेज सकते हैं । क्या आप जानते हैं कि बीज लेखन क्या है ?

क्या है बीज लेखन

आम भाषा के संदेशों को गोपनीय बनाने के लिए उसको विशेष सांकेतिक भाषा में परिवर्त्तित करने की प्रक्रिया को 'बीज लेखन' (क्रिप्टोग्राफी) कहते हैं । अंगरेजी का शब्द 'क्रिप्टोग्राफी' यूनानी भाषा के दो शब्दों 'क्रिप्टोस' अर्थात गुप्त तथा 'ग्राफिया' अर्थात

> *आम भाषा के संदेशों को गोपनीय बनाने के लिए उसको विशेष सांकेतिक भाषा में परिवर्त्तित करने की प्रक्रिया को 'बीज लेखन' (क्रिप्टोग्राफी) कहते हैं । अंगरेजी का शब्द 'क्रिप्टोग्राफी' यूनानी भाषा के दो शब्दों 'क्रिप्टोस' अर्थात गुप्त तथा 'ग्राफिया' अर्थात लेखन से मिलकर बना है । प्रारंभ में बीज लेखन केवल एक कला थी और अब यह एक विज्ञान का विषय बन चुका है । 'कूट' बनाने और 'कूट' विच्छेदन के लिए गणितज्ञों तथा कंप्यूटर विशेषज्ञों की सेवाएं ली जाने लगी हैं और अब महाशक्तिशाली कंप्यूटरों का प्रयोग भी किया जाने लगा है ।*

लेखन से मिलकर बना है । प्रारंभ में बीज लेखन केवल एक कला थी और अब यह एक विज्ञान का विषय बन चुका है । 'कूट' बनाने और 'कूट' विच्छेदन के लिए गणितज्ञों तथा कंप्यूटर विशेषज्ञों की सेवाएं ली जाने लगी हैं और अब महाशक्तिशाली कंप्यूटरों का प्रयोग भी किया जाने लगा है ।

बीज लेखन का इतिहास

बीज लेखन का इतिहास लगभग ४,००० वर्ष पुराना है । सन् १९०० ई. पू. में नील नदी के तट पर बसे मेनेट सूफू नामक कस्बे में एक कुशल व्यक्ति ने अपने मालिक खनुमहोटेप (द्वितीय) की जीवन कथा को उसके पिरामिड के मुख्य कक्ष में रखी एक बड़ी-सी शिला पर अलंकृत अक्षरों तथा चित्रों के माध्यम से खोद दिया । इस लेख का मुख्य उद्देश्य लिखावट को गोपनीय बनाना नहीं था वरन् लेखक की कुशलता दिखाना तथा लेख की प्रतिष्ठा तथा प्रभुत्व बढ़ाना था । इसमें बीज लेखन के मूल सिद्धांत—'रूपांतर'—का प्रयोग तो अवश्य था पर यह शिलालेख गोपनीय नहीं था । यहां से 'बीज लेखन' के विशिष्ट अंग-गोपनीयता—की भी झलक मिलती है । इसका ध्येय कभी पाठकों/दर्शकों की उत्सुकता जागृत करना होता था और कभी लेख को रहस्यमय (विशेषकर धार्मिक उद्धरणों की दैविक शक्ति का द्योतक) बनाने के लिए । सत्य तो यह है कि प्रारंभ में 'बीज लेखन' की कला केवल आमोद-प्रमोद के लिए विकसित की गयी और 'बीज विश्लेषण' था पहेली बूझने का-सा कार्य । लक्ष्य यह नहीं था कि लेख गुप्त रहे या उसको समझने में समय अधिक लगे ।

गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान

भारतवर्ष में भी प्राचीन समय से ही गुप्त संदेशों के आदान-प्रदान का महत्त्व विदित था । सन् ३०० ई. पू. में लिखे कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रंथ, जिसमें राजनीति के गूढ़ रहस्यों और नियमों का वर्णन है, में सुझाव दिये गये हैं कि राज्य में गुप्तचरों की वृद्धि के कारण प्रत्येक राजकीय अधिकारी को महत्त्वपूर्ण विषयों से संबंधित संदेशों का आदान-प्रदान गुप्त रूप से करना चाहिए और राजदूतों को दूसरे देशों में सूचना एकत्र करने के लिए 'बीज-विश्लेषण' (क्रिप्ट एनालिसिस) की प्रणालियों का यथेष्ट ज्ञान होना चाहिए । यह विश्व की प्रथम पुस्तक है जिसमें राजनीति के संदर्भ में 'बीज विश्लेषण' की आवश्यकता तथा महत्ता का उल्लेख है । परंतु आश्चर्य की बात है कि इस पुस्तक में कहीं भी बीज विश्लेषण करने की विभिन्न विधियों का वर्णन है ही नहीं । इससे यह आभास होता है कि संभवतः उस समय यह कला इतनी विकसित थी कि इसके वर्णन की आवश्यकता समझी ही नहीं गयी, ऐसा कुछ विद्वानों का मत है ।

'ललित विस्तार' नामक एक भारतीय पुस्तक में वर्णन है कि महात्मा बुद्ध ६४ प्रकार की विभिन्न लिखावटें जानते थे और एक बार उनको लिखकर उन्होंने अपने गुरु को ही अचंभित कर दिया । इनमें से कुछ का प्रयोग अवश्य ही गुप्त संदेशों को भेजने के लिए किया जाता रहा होगा ।

सबसे रोचक विवरण तो वात्सायन के जगप्रसिद्ध ग्रंथ 'कामसूत्र' में है । इसमें उन ६४ कलाओं का वर्णन है जिनमें प्रत्येक स्त्री को दक्ष

होना चाहिए । इन कलाओं की सूची में कंठ-संगीत, पहेली बूझना, गूढ़ कविताओं के अर्थ समझने के साथ साथ गुप्त संदेशों के आदान-प्रदान की कला भी सम्मिलित थी । इस कला को 'म्लेच्छिता-विकल्प' कहा गया और इसकी भी विभिन्न श्रेणियों—जैसे 'कौटिल्यम', 'मुलादेव्या', 'दुर्बोध' एवं 'गूढ़ लेख' का वर्णन है ।

इन बीज लेखन के अतिरिक्त भारतवर्ष में सांकेतिक माध्यमों से गुप्त संकेत भेजने का कार्य तो पहले से ही होता रहा है । अंगुलियों से संदेशों को व्यक्त करने को 'निर्भाष' कहते थे । इसमें अंगुलियों के पोरों से 'व्यंजनों' को और अंगुलियों के जोड़ों से 'स्वरों' को दर्शाया जाता था इसका प्रयोग बधिर और व्यापारी तो अभी भी करते हैं । कवि बिहारी के एक दोहे ''**कहत, नटत, खीझत, रिझत, मिलत, खिलत, लजियात । भरे भवन में करत हैं नैनन ही सब बात ।।**'' के अनुसार आंखों ही आंखों से गोपनीय संदेशों का आदान-प्रदान तो आदि काल से ही होता रहा है ।

इस लेख में कुछ रोचक एवं सरल विधियां जिनका उपयोग आज भी कर सकते हैं दी गयी हैं ।

एक अजीबोगरीब विधि

पांचवी शताब्दी ई. पू. के समय में पर्शियन दरबार में नियुक्त हिस्टियस ने यूनान स्थित अपने दामाद, एरिस्टोगोरस, को बगावत करने का संदेश एक अजीबोगरीब ढंग से भेजा । उसने अपने एक निष्ठावान दास के सिर के बाल मुंडवाकर उस पर अपना संदेश गोद दिया और सिर के बाल उग आने के बाद ही यूनान भेजा । ऐरिस्टोगोरस को संदेश मिल गया और उसने सत्ता से बगावत कर दी । वैसे तो यह विधि संदेशों को तत्काल और शीघ्र भेजने के लिए उपयुक्त नहीं है, फिर भी इसका प्रयोग प्रथम विश्व युद्ध तक होता रहा । इस युद्ध में जासूसों को उनके शरीर की त्वचा पर अदृश्य स्याही से लिखकर संदेश सीमा पार भेजे जाते रहे हैं ।

यूनानी पुस्तक में वर्णित विधियां

पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि विश्व में यूनान ही पहला देश था जहां एक पुरातन पुस्तक 'ऑन दि डिफेंस ऑव फार्टीफाइड पैलेसेज' (लेखक ऐनीस एवं टैक्टीशियन) में संदेशों को गोपनीय बनाने के सिद्धांत, उनकी विधियां और उनसे संबंधित निर्देशों पर पूरा एक अध्याय लिखा गया था । इस सामरिक शास्त्र की पुस्तक में 'बीज लेखन' के लिए स्वरों (वॉवेल्स) को बिंदुओं से (जैसे अल्फा के लिए एक बिंदु) प्रदर्शित किया गया परंतु व्यंजनों (कांसोनेंट्स) में कोई परिवर्तन नहीं किया । इससे ज्ञात होता है कि वर्णमाला में स्वरों का कितना महत्त्व है कि बिना व्यंजनों को बदले केवल स्वरों के रूपांतर से ही संदेशों को गोपनीय बनाया जा सकता है ।

इसी पुस्तक में वर्णित एक अन्य विधि में किसी पुस्तक या दस्तावेज के विभिन्न अक्षरों, जिनसे गोपनीय संदेश बन सकता है, के ऊपर या नीचे छेद करके संदेश भेजने का उल्लेख है । यह विधि तो सरल थी और और बीज लेख आसानी से पढ़ा जा सकता था पर विशेष बात यह थी कि शत्रु को यह ज्ञान होना आवश्यक है कि अमुक पुस्तक/दस्तावेज एक गुप्त संदेश का माध्यम है और उसमें इस

प्रणाली का प्रयोग किया गया है । इस विधि का प्रयोग कुछ परिवर्तित रूप में जर्मनी के बीज लेख विशेषज्ञों ने द्वितीय विश्व युद्ध में भी किया । उन्होंने अक्लमंदी यह की कि आम समाचार पत्रों के विशिष्ट अक्षरों को अदृश्य स्याही से चिह्नित किया और गोपनीय संदेशों को समाचार पत्रों के माध्यम से भेजने में सफल रहे ।

धागे की रील के माध्यम से गुप्त संदेश

पत्र के स्थान पर यदि साधारण धागे की रील भेज दी जाए तो शत्रु के हाथ यदि वह पड़ भी गयी तो उनके गुप्तचरों को लेशमात्र भी संदेह नहीं हो सकता कि यह भी एक गोपनीय संदेश का माध्यम हो सकती है । इस रोचक विधि में वर्णमाला के 'ए' से 'जेड' तक के सारे अक्षर कागज पर एक रेखा में लिख लिये जाते हैं और 'ए' तथा 'जेड' पर आलपिन गाड़ दी जाती है । धागे का एक सिरा 'ए' पर लगी पिन से बांध देते हैं । अब धागे को जेड पर लगी पिन तक ले जाते हैं और संदेश के पहले अक्षर की स्थिति के ठीक नीचे धागे पर स्याही से निशान लगा देते हैं । दूसरे घुमाव में धागा 'जेड' से 'ए' तक लाते हुए इस लंबाई पर संदेश के दूसरे अक्षर की स्थिति पर निशान लगा देते हैं । धागे को दोनों पिनों के बीच में घुमाने की और निशान लगाने की प्रक्रिया संदेश पूरा होने तक चलती रहती है । इसके पश्चात धागा फिर से मशीन द्वारा रील पर लपेटकर निर्दिष्ट व्यक्ति/स्थान पर भेज दिया जाता है । संदेश को पढ़ने के लिए पानेवाले के पास वर्णमाला के अक्षरों की प्रयुक्त आपसी दूरी का ज्ञान आवश्यक है । इनका अर्थ निकालना तो दूर रहा शत्रु को आसानी से संदेह भी नहीं हो सकता कि उनमें गुप्त संदेश है । इस प्रणाली में वर्णमाला के विभिन्न अक्षरों की आपसी दूरी बार-बार बदली जाए और अलग-अलग समय पर प्रयुक्त की जाए तो गोपनीयता और बढ़ जाएगी ।

बीज लेखन में वैज्ञानिक आधार

उपर्युक्त सभी प्रणालियों में संदेशों को गोपनीय बनाने के लिए उनको किसी न किसी तरह छिपाकर भेजा जाता था और यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गोपनीयता प्रदान नहीं करती । धीरे-धीरे बीज लेखन को वैज्ञानिक आधार मिला और दो मुख्य विधियां—'क्रम परिवर्तन' (ट्रांसपोजीशन) तथा 'स्थानापन्न' (सब्सट्टीट्यूशन' विकसित हुई । 'क्रम परिवर्तन' विधि में संदेश के अक्षरों को किन्हीं और अक्षरों, अंकों, संख्याओं या चिन्हों से विस्थापित किया जाता है । मूलतः इन्हीं दो विधियों का विभिन्न रूपों में अभी तक प्रयोग होता चला आ रहा है ।

क्रम परिवर्तन विधि

क्रम परिवर्तन विधि का सबसे पुराना उदाहरण स्काईटेल यंत्र है जो कि दक्षिणी यूनान के प्रसिद्ध पुरातन नगर स्पार्टा में विकसित हुआ । वहां की किंवदंतियों में कहा जाता है कि लेसेमोनियन जनरल आपस में गोपनीय सामरिक महत्त्व के संदेशों के आदान-प्रदान के लिए एक बेलनाकार दंड पर पतली-सी रेशमी कपड़े की पट्टी को चक्राकार लपेटकर ऊपर से नीचे पूरा संदेश लिख देते थे । संदेश पूरा हो जाने के बाद पट्टी खोलकर उसे वांछित व्यक्ति को भेज देते थे । पट्टी की चौड़ाई केवल एक

अक्षर की ऊंचाई के बराबर होती थी । चूंकि संदेश ऊपर से नीचे लिखा गया था पट्टी खुलने के बाद उस पर अंकित अक्षरों का सही क्रम तो नष्ट हो जाता है । केवल वही व्यक्ति जिसके पास ठीक उसी व्यास का बेलन हो, उस पट्टी को फिर से लपेटकर संदेश पढ़ सकता था । इस स्काईटैल यंत्र का विकास यूनान में पांचवी शताब्दी ई. पू. में हुआ था और आजकल बीज लेखन के इतिहास में क्रम परिवर्तन विधि पर आधारित कुछ यंत्रों में से एक है । इसके प्रयोग का वर्णन थुसाइडाइड के लेखों में भी है ।

क्रम परिवर्तन की एक और प्रचलित विधि में वाक्य के अक्षरों को मैट्रिक्स के रूप में बांयें दायें लिख लेते हैं और उनको ऊपर से नीचे पढ़कर एक साथ लिखकर बीज लेखन बना लेते हैं । जैसे संदेश —

RUSH MORE TROOPS IMMEDIATELY की मैट्रिक्स बनी

R	U	S	H	M
O	R	E	T	R
O	O	P	S	I
M	M	E	D	I
A	T	E	L	Y

और ऊपर से नीचे पढ़ने से बीज लेख बन गया—

ROOMA UROMT SEPEE HTSDL MRIIY

इस विधि के पूर्णतः ज्ञान के बिना यह संदेश तो निरर्थक लगता है । इसमें तो ५×५ की वर्गाकार मैट्रिक्स बनायी गयीं पर वाक्य के अक्षरों की संख्या के अनुसार वर्गाकार या आयाताकार मैट्रिक्स बनायी जा सकती हैं । इस प्रक्रिया में यदि जगह खाली बच जाए तो उसको × × से भर देते हैं । इस विधि को अनेकानेक रूप दिये जा सकते हैं और बदल बदलकर प्रयोग कर सकते हैं जिससे अनचाहे व्यक्ति को सूत्र का पता ही न चले । यदि एक विधि शत्रुओं ने तोड़ भी ली तो दूसरे संदेशों की गोपनीयता फिर भी बनी रहे । इसके अन्य रूपांतरों में ऊपर से नीचे पढ़ने के बदले नीचे से ऊपर पढ़ना, स्तंभों का क्रम परिवर्तन करके पढ़ना, रेखाओं का क्रम परिवर्तन करके पढ़ना, कर्णरिखावत पढ़ना संभव है ।

स्थानापन्न विधि

यूनान के एक प्रसिद्ध लेखक, पॉलीबियस ने 'स्थानापन्न' विधि पर आधारित अंकीय बीज लेखन का विकास किया । इसमें अंगरेजी भाषा के २६ वर्णों में से २५ को पांच वर्णों के स्तंभों में रखकर हर रेखा और स्तंभ को अंकों से प्रदर्शित किया । इनमें से कोई एक वर्ण-जोड़ा (जैसे आइ और जे) एक ही संख्या से प्रदर्शित करते हैं—जैसे निम्नलिखित कूट बना लिया गया —

	1	2	3	4	5
1	A	F	L	Q	V
2	B	G	M	R	W
3	C	H	N	S	X
4	D	I	O	T	Y
5	E	K	P	U	Z

अब हर अक्षर को उसकी रेखा तथा स्तंभ के अंकों को एक साथ रखकर दर्शाया जा सकता है जैसे सी के लिए ३२, एच के लिए ३२ इत्यादि । संदेश के हर अक्षर की जगह संख्या लिखकर बीज लेख बना लेते हैं । अब एक संदेश भेजा गया —

33-51-35-44
11-42-24
11-44-44-11-31-52
11-44
23-42-41-33-42-22-32-44

यदि संदेश पानेवाले के पास उपरोक्त 'पॉलीबियस अंकीय वर्णक्रम वर्ग' की प्रतिलिपि है तो वह सरलता से ज्ञात कर सकता है कि संदेश है (नेक्स्ट एयर अटैक एट मिडनाइट) पर किसी अन्य व्यक्ति के लिए ये संख्याएं निरर्थक हैं या एक पहेली ।

इस पॉलीबियस अंकीय वर्णक्रम वर्ग में अंकों या वर्णों के क्रम/स्थान को परिवर्तित करके सैकड़ों विभिन्न वर्ग बनाये जा सकते हैं और अलग-अलग समय पर प्रयुक्त कर सकते हो गयी तो भी अगला संदेश सुरक्षित रहेगा । हैं । इससे बीज विश्लेषण कठिन हो जाएगा और गोपनीयता बढ़ जाएगी । बीज लेखन प्रणाली बदलते रहने से संदेश अधिक सुरक्षित हो जाते हैं क्योंकि यदि एक प्रणाली विच्छेदित

बीज लेख सर्वथा गुप्त नहीं रह सकता पर निरंतर प्रयास किया जाता है कि उसका विंच्छेदन कठिन से कठिन हो जाए । बीज लेखन की गोपनीयता का मापदंड है 'समय' अर्थात अमुक बीज लेख अमुक समय तक तो विच्छेदित नहीं ही किया जा सकता है । इसी आधार पर बीज लेखन प्रणाली की क्रिष्टता बढ़ायी या घटायी जा सकती है । कुछ बीज लेख तो ऐसे होते हैं कि थोड़े समय तक गोपनीय रह सकें तो पर्याप्त हैं । जैसे दो घंटे के

ग़ालिब-'उग्र'
ग़ालिब के दीवान की टीका

महान् शायर मिर्जा गालिब के सम्पूर्ण दीवान का हिन्दी में डीलक्स संस्करण : उर्दू-फारसी के रसज्ञ विद्वान और हिन्दी के लब्ध प्रसिद्ध कथाकार श्री पाण्डेय बेचन शर्मा ''उग्र'' की विस्तृत टीकाओं, सहित प्रकाशन ।

है और भी दुनियां में सुखनवर बहुत अच्छे
कहते हैं कि ग़ालिब का है अन्दाज़े बयां और

अपने काव्य के बारे में यह मिर्ज़ा ग़ालिब का प्रसिद्ध शेर है । सचमुच ग़ालिब अपने ज़माने के ही सर्वश्रेष्ठ कवि नहीं थे, बल्कि उनकी सानी का शायर आज तक पैदा ही नहीं हुआ । इसलिए एक सदी से ज्यादा बीत जाने के बाद भी वे सबसे लोक-प्रिय कवि हैं । उनकी कविता में संसार के हर इन्सान के दिल की वे सुक्ष्मत्तर धड़कनें हैं जो वह अपने जीवन के अच्छे-बुरे अनुभवों के दौरान महसूस करता है । उर्दू शायरी के प्रेमियों के लिए यह दीवान उनका सबसे बड़ा जीवन साथी है क्योंकि उसमें दुख-दर्द और हंसी-खुशी के क्षणों में वह अपनी आवाज़ सुनता है ।

एक अनमोल ग्रंथ ★ कागज, मुद्रण, जिल्द आदि सभी उपकरणों से एक सुन्दर, प्रामाणिक, आकर्षक. डीलक्स संस्करण ★ डिमाई साइज़ में 584 पृष्ठ की इस बृहद् काव्य ग्रंथ का मूल्य केवल 495.00 रु. है । ☆ 16 रंगीन चित्र

1. निजी आर्डर पर पुरा एडवांस भेजने वाले को डाक-व्यय मुफ़्त
2. संस्था या लाइब्रेरी के आर्डर पर विशेष छूट और डाक-व्यय मुफ़्त ।
3. व्यापारिक निबन्धन के लिए पत्र-व्यवहार करें ।

RANJIT PUBLISHERS
APT. NO. 31, MAYFAIR GARDENS, NEW DELHI-110016.
PHONE: 6867592, 6863096 & 661597. FAX 6866635

बाद आक्रमण करने के आदेश का संदेश यदि तीन घंटों तक गुप्त रह गया तो प्रयास पूर्णतः सफल रहा ।

मध्य युग में शार्लेमैगने ने स्थानापन्न विधि के आधार पर पूरी वर्णमाला को विभिन्न चिन्हों से विस्थापित किया जो कि उसके जनरलों को याद करना अत्यधिक कठिन हो गया । रेनांसा से पहले सबसे अधिक प्रचलित स्थानापत्र कूट जो कि सोलहवीं शताब्दी तक चला, इस प्रकार है —

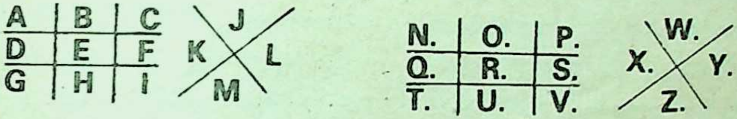

यदि संदेश मिला

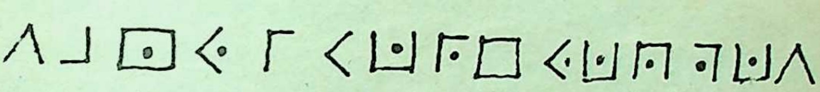

उपरोक्त स्थानापत्र कूट का ज्ञान होने पर बीज लेख विच्छेदित हुआ

MARY I LOVE YOU — TOM

इस विधि में भी वर्णो की स्थितियों में उलटफेर करके विभिन्न कूट बनाये जा सकते हैं । हर बार अलग-अलग कूट का प्रयोग करके शत्रु को विस्मय में डाल सकते हैं । इस प्रणाली को 'चित्र कूट' कहते हैं । इसी के समुन्नत रूप के कूटों का प्रयोग करके आजकल भी गुप्त संदेशों को चित्रों, नक्शों, फोटो तथा बधाई पत्रों के आवरण में भेजा जाता है । सैनिक कूट शास्त्री और निरीक्षक किसी भी साधारण चित्र को ऐसे संदेह से देखते हैं कि कहीं उनमें ऐसे संदेश न छिपे हों ।

यह सभी पुरातन प्रणालियां केवल पेन/पेंसिल की सहायता से बना ली जाती थी और इनका हल करना सरल होता था । आज के युग में गणित और कंप्यूटरों का प्रयोग करके इन प्रणालियों को बहुत जटिल बना दिया गया है और जटिलतम बनाने के निरंतर प्रयास हो रहे हैं । इनका प्रयोग भी केवल इस विषय के विशेषज्ञ ही कर सकते हैं । निर्धारित समय से पहले इनका विश्लेषण तो लगभग असंभव-सा ही हो गया है ।

आर.-११, एंड्रयूगंज एक्सटेंशन
जोसिप ब्राज टीटो मार्ग
नयी दिल्ली-११००४९

प्रथम पोलिश विश्वकोष में घोड़े की परिभाषा यूं लिखी हुई है, "घोड़ा क्या होता है, यह सभी को मालूम है ।"

— सुभाष लखेड़ा

आयुर्वेदिक ग्रंथों में

आयुर्वेदिक ग्रंथों का सिंहावलोकन करने से पता चलता है कि प्लेग अत्यंत प्राचीन रोग है । चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता में मूषक-विष द्वारा उत्पन्न होनेवाली बीमारियों का जिक्र है । इन ग्रंथों में इस रोग के कारण, निदान एवं चिकित्सा के बारे में वर्णन मिलता है । चरक संहिता के विमानस्थान में वर्णन आया है कि मूषकों द्वारा जनपद-उद्ध्वंशक महामारी उत्पन्न होती है जो अकाल मृत्यु का कारण बन जाती है ।

इसी प्रकार सातवीं-आठवीं शती में लिखे गये माधवनिदान ग्रंथ में एक स्थान पर प्राणहर मूषक-विषों का जिक्र है जिसके लक्षण प्लेग से मिलते-जुलते हैं । कहा गया है :

मूर्च्छागशोथवैवर्ण्यकलेदशब्दाश्रुतिज्वराः ।
शिरोगुरुत्वं लालासकछर्दिश्चासाध्यामूषिकै : ।।

—माधव निदान

अर्थात :

प्राणहर मूषक विष के लक्षण हैं, सिर दर्द, ज्वर, सूजन, शरीर पर चूहे के आकार की ग्रंथियां बनना, त्वचा की विकृति होना, क्लेद होना, लार गिरना, वाणी अवरोध एवं मूर्च्छा होना, इत्यादि ।

वर्तमान विज्ञान की जानकारी के अनुसार उपर्युक्त लक्षणों में से बहुत से ब्यूवोनिक प्लेग में पाये जाते हैं । यह दिलचस्प बात है कि माधव निदान के रचयिता ने शोथपूर्ण लिंफ नोड्स को मूषिकाकार बताया है वास्तव में प्लेग में इसी प्रकार की ग्रंथियां बनती हैं । सुश्रुत संहिता में भी इसी प्रकार के लक्षण बताये गये हैं । लेकिन कुछ विद्वानों ने नाहक ही इसे मूषक-दंश का वर्णन बताया है, जो न्याय संगत प्रतीत नहीं होता, क्योंकि उपर्युक्त श्लोक में मूषक-विष का ही उल्लेख है न कि मूषक-दंश का । इसके अतिरिक्त चूहे के काटने पर 'रैबीज' नामक बीमारी होती है न कि प्लेग । वैसे भी इन दोनों रोगों के लक्षण बिलकुल भिन्न होते हैं ।

अतः उपर्युक्त प्राणहर मूषक-विष-रोग चूहों के संपर्क द्वारा फैलनेवाला रोग है । दूसरे शब्दों में इसे यों भी कहा जा सकता है कि प्राचीन आयुर्विज्ञों को इस बात की जानकारी थी कि चूहों द्वारा कोई विष फैलता है जिसे माधव निदान के रचयिता ने **प्राणहर मूषक-विष** कहा है । संभवतः उन दिनों के उसी विष को आजकल की भाषा में **यरसीनियां पैस्टिस** नामक बैक्टीरिया दिया गया हो ।

यह बताना भी आवश्यक है कि सभी प्रकार के प्लेगों में तीव्र ज्वर की शिकायत प्रधान रूप में पायी जाती है । चरक संहिता में ऐसे ज्वरों को तिर्यक योनियों द्वारा उत्पन्न होनेवाले रोगों की श्रेणी में रखा है और हमारी दृष्टि में यह बात अत्यंत वैज्ञानिक है, क्योंकि प्लेग एवं मलेरिया आदि रोगों के ज्वर तिर्यक योनियों द्वारा ही होते हैं ।

चरक ने लिखा है :—

स सर्वरोगाधिपतिः, नानातिर्यग्योनिषु च बहुविधैः शब्दैरभिधीयते ।

अर्थात

सभी प्रकार की (मारक) व्याधियों में ज्वर प्रधान

प्लेग का उपचार

● डॉ. जगन्नाथ शर्मा, एम. डी.

(लक्षण) होता है जो नाना प्रकार की तिर्यक योनियों द्वारा उत्पन्न होता है ।

हमारे मत में यहां पर तिर्यक योनियों का उल्लेख रोगवाहक जीवाणुओं (योनियों) के लिए किया गया है, क्योंकि इन रोगों के विस्तार में तीन जीवों का हाथ होता है । प्लेग भी ऐसा ही रोग है जिसके विस्तार के लिए तीन प्राणियों (योनियों) की आवश्यकता होती है, जैसे : **यरसीनियां पैस्टिस नामक बैक्टीरिया, २. मूषक, ३. पिस्सु**

स्मरण रहे, मलेरिया भी इसी श्रेणी में आता है, क्योंकि इस बीमारी के विस्तार में तीन प्राणियों की आवश्यकता होती है जैसे, **मलेरियल पैरासाइट, २. मच्छर और ३. मनुष्य ।**

स्मरण रहे, मनुष्य को मलेरिया पैरासाइट का वाहन कहा गया है, क्योंकि वह रोग से मुक्त हो जाने पर भी अपने शरीर में इस पैरासाइट को धारण कर सकता है । लेकिन यह बात प्लेग के साथ लागू नहीं हो सकती । अतः सच्चे अर्थों में मनुष्य को प्लेग का वाहक नहीं कहा जा सकता ।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि आयुर्वेदीय ग्रंथों में प्लेग-जैसी बीमारियों का उल्लेख है ।

चिकित्सा

इस रोग के इलाज के बारे में चरक ने लिखा है :

त्वचं च नागरं चैव समांशं श्रक्ष्णपेषितं ।
पेयमुष्णाम्बुनां सर्व मूषिकाणां विषापहम् ।।

—चरक संहिता)

अर्थात—

दालचीनी एवं सोंठ को समान भाग लेकर पीसें और गरम पानी के साथ लें । इससे चूहों के सभी प्रकार के विष समाप्त हो जाते हैं ।

चरक ने आगे लिखा है :

इन्द्रजौ, तगर, जालमालिनी, तितलौकी को समान भाग लेकर क्वाथ बनायें और पियें ।

यहां पर वर्णित सभी जड़ी-बूटियों की पहचान नहीं हो पायी है । अतः आगे अनुसंधान की आवश्यकता है ।

अन्य योग

चरकादिक संहिताओं के अतिरिक्त अन्य ग्रंथों में कुछ ऐसी जड़ी-बूटियों का जिक्र है जो प्लेग—जैसी महामारी के इलाज और बचाव में काम आती हैं । परंतु अभी तक इन औषधियों पर वैज्ञानिक रीति से अनुसंधान नहीं हुआ है । हमारी राय में वर्तमान एंटीबायटिक्स के साथ-साथ इन वनौषधियों का भी प्रयोग करना चाहिए । संभव है कि इन योगों के संयुक्त प्रयोग से रोगियों को द्विगुणित लाभ मिले । ऐसा होने पर आयुर्वेदीय दवाओं का स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जा सकता है । यहां पर यह लिखना भी आवश्यक है कि इन दवाओं के संयुक्त प्रयोग से रोगियों को लाभ तो मिल सकता है, लेकिन किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती, क्योंकि अधिकतर दिव्य जड़ी-बूटियां दोष रहित होती हैं ।

हाल में एक जानकार व्यक्ति से हमें ऐसी ही

जड़ी-बूटियों युक्त कुछ देशी दवाएं प्राप्त हुई हैं जो प्लेग के लिए बहुत लाभकारी बतायी गयी हैं। हमारा मत है कि अन्य लोगों के पास भी इसी प्रकार जड़ी-बूटियों की जानकारी हो सकती हैं, क्योंकि वैज्ञानिक परीक्षण के अभाव में ऐसी जानकारी भारतवर्ष के कोने-कोने में बिखरी पड़ी हैं।

जापान में सम्मेलन

अगस्त '९४ में टोकियो (जापान) में परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों पर एक विश्व सम्मेलन हुआ था जिसमें भाग लेने के लिए मुझे आमंत्रित किया गया था। इस सम्मेलन में पच्चीस देशों से आये लगभग पांच सौ शोधकर्ताओं ने भाग लिया था। वहां पर आस्ट्रेलिया के एक वैज्ञानिक ने अपने शोधपूर्ण पत्र में बताया कि सोलहवीं शती में लिखे गये पुर्तगाली ग्रंथों में मलेरिया, पेचिस एवं अतिसार आदि, बिमारियों का जो इलाज लिखा है, वह उन दिनों भारतवर्ष के पश्चिमी घाट पर उपलब्ध था। शोधकर्ता ने यह भी बताया कि वैसी जानकारी चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता में नहीं मिलती। इससे स्पष्ट हो जाता है कि इन संहिताओं के बाहर भी बहुत-सी जड़ी-बूटियों का ज्ञान उपलब्ध है, जो आयुर्वेद के लुप्त हुए अथवा नष्ट किये गये ग्रंथों के पन्नों के बाहर बिखर गया है।

इसी सम्मेलन में एक अन्य शोधकर्ता ने बताया कि चीन में वहां की परंपरागत चिकित्सा पद्धति में अभी लगभग सोलह सौ पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके विपरीत आयुर्वेद के उपलब्ध ग्रंथों को अंगुलियों पर गिना जा सकता है। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि हमारे अधिकतर प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथ या तो नष्ट हो गये अथवा विदेशों में चले गये। अतः आज इस ज्ञान के संकलन की महती आवश्यकता है। इस कमी को पूरा करने के लिए हमारा सुझाव है कि दिल्ली नगर में एक ऐसा आयुर्वेदीय शोध संस्थान बने, जहां पर आधुनिक साधनों द्वारा नाना प्रकार के अनुसंधान हो सके।

बचाव संबंधी साधन

रोग से बचाव के लिए घर और आसपास की सफाई आवश्यक है। घर में जंतुनाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गुग्गुल, नीम की पत्तियां, गंधक, लोहवान, अगर, कपूर एवं मंजीठ आदि वस्तुओं को कूट-पीस कर देशी घी में मिलाकर घर में धूप की तरह जलाने से वायुमंडल शुद्ध हो जाता है। इसी प्रकार तुलसी, काली मिर्च, अदरक (सौंठ) और दालचीनी मिलाकर चाय पीने से बचाव और इलाज संभव है। रोजाना नीम की कोमल पत्तियां चबाना भी उचित है। इसी प्रकार घर से बाहर निकलने पर मुंह पर मास्क लगाना उचित है। जो व्यक्ति रोगग्रस्त क्षेत्र में जाएं, उन्हें बचाव के लिए टैट्रासाइक्लीन आदि एंटीबायोटिक्स का प्रयोग करना चाहिए।

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, आजकल प्लेग अथवा ताऊन का इलाज संभव है। अतः इससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि आवश्यकता है जागरूकता की। अतः रोग संबंधी लक्षण दिखायी देते ही तुरंत इलाज करना चाहिए।

मलेरिया एवं तपेदिक की पुनरावृत्ति

मलेरिया रोगों के इतिहास से पता चलता है कि तपेदिक और मलेरिया दोनों ही भारतवर्ष के अति प्राचीन रोग है जिनका उल्लेख वैदिक ग्रंथों के समान चरकादिक संहिताओं में भी मिलता है । इन ग्रंथों में तपेदिक को राजयक्ष्मा नाम दिया है तो चरक ने मलेरिया को तृतीयक और चतुर्थक रोगों की श्रेणी में रखा है । इतना ही नहीं, चरक ऋषि ने रिलेप्सिंग मलेरिया जैसे तृतीयक ज्वर के संबंध में लिखा है कि इस रोग को उत्पन्न करने वाले दोष अस्थि-मज्जा में छिप जाते हैं और समय पाकर वही बीज के समान अंकुरित होकर तृतीयक ज्वर का कारण बन जाते हैं । वर्तमान युग में प्लाज़्मोडियम वाइवैक्स जन्य मलेरिया की भी यही कहानी है । ये परजीवी जीवाणु बीमारी की एक अवस्था के पश्चात रोगी की मज्जा अथवा यकृतीय कोशिकाओं में छिप जाते हैं और रोगी को लगता है कि बीमारी समाप्त हो गयी ।

मलेरिया और मच्छर

मलेरिया इटली भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है—दूषित वायु । उन्नीसवीं शती के अंत तक पश्चिमी देशों में मलेरिया का कारण दूषित वायु ही मानी जाती थी, क्योंकि यह रोग गंदी वायु वाले प्रदेशों में अधिक होता था । लेकिन अब पता चला है कि मलेरिया वाहक एनाफिलीज मच्छर सड़े और बदबूदार पानी में अंडे नहीं देती, बल्कि वह अंडा देती है स्वच्छ लेकिन रुके हुए जलाशयों में, जैसे पानी की टंकी, कुएं, रुका हुआ पानी आदि । अतः इस संदर्भ में भी मलेरिया और दूषित वायु में कोई आपसी संबंध नहीं हैं, लेकिन फिर भी इस रोग को मलेरिया कहकर पुकारा जाता है, जो सर्वथा अनुचित है ।

मलेरिया के मूल कारण हैं कुछ परजीवी जीवाणु, जो चार प्रकार के बताये गये हैं, जिनके नाम हैं :

—प्लाज़्मोडियम वायवैक्स
—प्लाज़्मोडियम फैल्सीपैरम
—प्लाज़्मोडियम मलेरियाइ
—प्लाज़्मोडियम ओवेल

भारतवर्ष में होने वाले मलेरिया के मूल कारण हैं प्रथम दोनों प्रकार के परजीवी प्लाज़्मोडिया । अर्थात् हमारे देश में मूल रूप से प्ला. वायवैक्स और प्ला. फैल्सीपैरम द्वारा मलेरिया ज्वर फैलता है और जिसे फैलाते हैं

एनाफिलीज नामक मादा मच्छर । इन मच्छरों को अपने अंडों के पालन-पोषण के लिए मानव-रक्त की आवश्यकता पड़ती है और उसी के पूर्ति के लिए वे मनुष्य का रक्त चूसते हैं । वस्तुतः मानव-रक्त उसका आहार नहीं होता । इस प्रकार एनाफिलीज मच्छर के पेट में जब किसी मलेरिया से पीड़ित मानव का रक्त आ जाता है, तो मलेरिया कारक जीवाणु मच्छर के पेट में बढ़ने लगते हैं । ऐसा मच्छर जब किसी स्वस्थ व्यक्ति को काटता है, तो ये जीवाणु उसके रक्त में प्रविष्ट होकर मलेरिया का कारण बन जाते हैं ।

अथर्ववेद में एक स्थान पर मच्छरों द्वारा उत्पन्न होने वाले रोग को 'स्त्रिभा' नाम दिया है, जो हमारे मत में मलेरिया का ही वर्णन प्रतीत होता है । अब पता चला है कि उपर्युक्त दोनों परजीवी जीवाणुओं द्वारा तीसरे दिन आने वाला ज्वर उत्पन्न होता है जिसे 'तृतीयक ज्वर' अथवा जनसाधारण की भाषा में 'तिजारी' कहा जाता है ।

महात्मा सुश्रुत ने सर्वप्रथम मलेरिया और मच्छर के आपसी संबंधों के बारे में विशद वर्णन किया है और मच्छर को इस रोग का कारण बताया है । इतना ही नहीं, सुश्रुत ने पांच प्रकार के मच्छर बताये हैं और कहा है कि इनमें से पार्वतीय नामक मच्छर के काटने पर मारक-रोग उत्पन्न होता है, जो मलेरिया ही है । कहा जाता है कि इसी जानकारी के आधार पर उन्नीसवीं सदी के अंत में सर रोनैल्ड रौश ने सर्वप्रथम मच्छर का पेट चीर कर मलेरिया पैरासाइट दिखाया था और इसीलिए उन्हें सन् १९०२ में नावेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था । यह भी उल्लेखनीय है कि मच्छर और मारक-रोग के बारे में यह जानकारी उन्हें उनकी विदुषी ब्राह्मण पत्नी द्वारा मिली थी, जो मूलरूप से अल्मोड़ा की रहने वाली थीं । सन् १९०५ के आसपास यह जानकारी ब्रिटिश मैडिकल जनरल (लंका शाखा) में छपी थी ।

महात्मा सुश्रुत ने सर्वप्रथम मलेरिया और मच्छर के आपसी संबंधों के बारे में विशद वर्णन किया है और मच्छर को इस रोग का कारण बताया है । इतना ही नहीं, सुश्रुत ने पांच प्रकार के मच्छर बताये हैं और कहा है कि इनमें से पार्वतीय नामक मच्छर के काटने पर मारक-रोग उत्पन्न होता है, जो मलेरिया ही है । कहा जाता है कि इसी जानकारी के आधार पर उन्नीसवीं सदी के अंत में सर रोनैल्ड रौश ने सर्वप्रथम मच्छर का पेट चीर कर मलेरिया पैरासाइट दिखाया था और इसीलिए उन्हें सन् १९०२ में नावेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था । यह भी उल्लेखनीय है कि मच्छर और मारक-रोग के बारे में यह जानकारी उन्हें उनकी विदुषी ब्राह्मण पत्नी द्वारा मिली थी, जो मूलरूप से अल्मोड़ा की रहने वाली थीं । सन् १९०५ के आसपास यह जानकारी ब्रिटिश मैडिकल जनरल (लंका शाखा) में छपी थी ।

तिर्यकयोनि जन्य ज्वर

प्लेग के समान मलेरिया भी तिर्यक-योनियों द्वारा उत्पन्न होने वाला रोग है, क्योंकि इस रोग के प्रसार में भी तीन प्राणियों का हाथ होता है, जैसे—मलेरिया पैरासाइट, मच्छर और मानव । अतः इस रोग का विनाश तभी संभव है, जब इनमें से एक योनि समाप्त हो जाए । वर्तमान काल में मच्छरों को समाप्त करने के बारे में

बहुत प्रयत्न हुए हैं और आज भी हो रहे हैं, लेकिन अभी तक उन पर काबू नहीं पाया जा सका है । कुछ ऐसे भी प्रयत्न हुए हैं कि एनाफिलीज मच्छर की प्रजनन शक्ति समाप्त कर दी जाए ताकि मादा मच्छर को मानव रक्त की आवश्यकता ही नहीं रहे, और मलेरिया-चक्र समाप्त हो जाए ।

मलेरिया के मुख्य कारण हैं—तीव्र ज्वर, शीत अथवा कंपकंपी, पसीना आना, सिर एवं शरीर में वेदना और कभी-कभी कनवल्ज़न होना, आदि । यह भी स्मरणीय है कि मलेरिया का ज्वर एक दिन छोड़ कर आता है ।

उपलब्ध आंकड़ों से यह भी पता चला है कि अब प्ला. वायवैक्स की अपेक्षा प्ला. फैल्सीपैरम जन्य मलेरिया में वृद्धि हो रही है और यह रोग अधिक भयानक होता है और मारक भी । इस रोग में मस्तिष्कीय ज्वर पैदा हो जाता है जिसे प्राण लेवा बताया जाता है ।

मच्छरों की संख्या बढ़ने के कारण यह रोग बरसात के पश्चात अधिक होता है । इसीलिए आजकल मलेरिया अधिक हो रहा है । राजस्थान में मलेरिया के कारण सैकड़ों लोग जान खो बैठे हैं । इसी प्रकार दक्षिणी भारत में मलेरिया का प्रकोप बढ़ रहा है ।

कुछ सावधानियां :

- मलेरिया संबंधी लक्षण दिखायी देते ही अपने चिकित्सक से संपर्क करें ।
- मलेरिया संबंधी रक्त परीक्षण आवश्यक है ।
- निदान होते ही चिकित्सक द्वारा दी गयी मलेरिया संबंधी दवाओं का पूरा कोर्स लें ।
- खाली पेट मलेरिया की दवाएं न लें ।
- मलेरिया के बचाव के लिए घरों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव आवश्यक है ।
- ग्रामीण-जन अपने घरों में बोबई का धुआं करें ।
- संभव हो तो मच्छरदानी का उपयोग करें ।
- तुलसी और काली मिर्च युक्त चाय उपयोगी होती है

तपेदिक

राजयक्ष्मा या तपेदिक का मूल कारण है माइकोबैक्टीरियम टुबरकुलोसिस नामक विषाणु, जो अत्यंत सूक्ष्म होता है और पारदर्शी यंत्र द्वारा ही देखा जा सकता है । विषाणुजन्य होने के नाते यह रोग संपर्क द्वारा फैलता है और इसी कारण उसे संक्रामक कहा गया है । यह आश्चर्य की बात है कि महर्षि सुश्रुत ने भी इसे संक्रामक रोगों की श्रेणी में रखा है ।

आयुर्वेद एवं परंपरागत चिकित्सा पद्धतियां

आयुर्वेद एवं परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों में मलेरिया और राजयलक्ष्मा के लिए गुणकारी औषधियां उल्लेख है, परंतु विधिवत शोध के अभाव में वे अधिक प्रचलित नहीं हैं । हमारी जानकारी में वसा एवं रुदन्ती के अतिरिक्त कई ऐसी औषधियां हैं जो तपेदिक से पीड़ित रोगियों के वक्षस्थल पर लगाने से लाभ पहुंचाती हैं ।

लेकिन इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि अभी तक वनौषधियों पर विशेष अनुसंधान नहीं हुआ है ।

अब संसार के कई देशों में इस संबंध में विशेष जागरूकता उत्पन्न हुई है और अब वह दिन दूर नहीं है जबकि आयुर्वेद और परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों पर विशेष अनुसंधान होगा एवं मलेरिया और तपेदिक जैसी प्राणघाती बीमारियों के लिए अत्यंत सक्ष्म औषधियां बन सकेगीं ।

ए/१४ विकल्प अपार्टमेंट प्लाट-९२, माइन्थ
एवेन्यू, आई. पी. एक्सटेंशन दिल्ली-११००९०

जीवंत बस्तर और स्वस्थ शरीर

● डॉ. बिसौहा प्रसाद ताम्रकार

वनस्पतियां हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं । पुराने समय से ही वनस्पतियों के माध्यम से चिकित्सा कार्य सहज एवं प्रभावशाली ढंग से संपन्न होता आ रहा है, जिसका प्रतिबिंब आज भी ग्राम्य वैद्यों की लोक परंपरा की चिकित्सा विधि में देखने को मिलता है । कुछ वनस्पतियों का नाम तो उसके उपयोग के आधार पर स्पष्ट है तथा कुछ वनस्पतियों का नाम वैद्यों द्वारा गुप्त रखने की प्रक्रिया के अंतर्गत उसे गुप्त रखा गया है । जैसे जीयापोता **पुतरजीवा** पुत्र प्राप्ति के लिए, **मुस्केनी भाजी** मुस्कराने (मन प्रसन्न रखने के लिए), **पथरी भाजी** शोथ—पत्थर जैसे कड़े भाग की चिकित्सा के लिए । यहां प्रस्तुत है, कुछ ऐसी ही लोकोपयोगी वनस्पतियों का परिचय :

श्वास चिकित्सा के लिए अडूसा

यह सदाबहार हरे रंग का एक पौधा है । श्वासकास की चिकित्सा में इसका उपयोग सर्वविदित है । चिकित्सा के लिए इसका पत्र स्वरस १०-२० मि.लि., पुष्प स्वरस १०-२० मिलीलीटर, मूल क्वाथ ४०-५० मि.लि. की मात्रा में उपयोग किया जाता है । इसमें मुख्य कार्यकारी तत्व वासकेनिन है, जो कफशामक/कफ निस्सारक है । शास्त्रीय योग के अंतर्गत यह वासावलेह/वासारिष्ट/वासा पातक/वासा चंदन तेल के रूप में विशेष प्रचलित है ।

मणिपुर के आदिवासी इलाकों में इसकी पत्ती/जड़ का प्रयोग श्वासकास की चिकित्सा में किया जाता है ।

रक्तशोधक, कफ, वात शामक : अनंतमूल

इसे सारिप के नाम से भी संबोधित किया जाता है । यह लता प्रजाति की वनस्पति है । इसकी दो जातियां प्राप्त होती हैं । इसके मूल/तने का प्रयोग चिकित्सा में फांट के रूप में ५०-१०० मि.लि. तथा कल्क के रूप में ५-१० ग्राम की मात्रा में किया जाता है । इसका सारिवादिवटी/सरिवाद्यासव शास्त्रीय योग विशेष प्रचलित है । परंपरागत रूप से यह रक्तशोधक/कफ वात शामक/श्वासरोग/अलर्जी से संबंधित त्वचा रोग की चिकित्सा में ज्यादा उपयोग किया जाता है । मणिपुर में इसकी पत्ती का प्रयोग रक्ताल्पता/कमजोरी में करते हैं । आधुनिक चिकित्सा अनुसंधान कार्य के अंतर्गत

अलर्जी जन्य त्वचा रोग/श्वास रोग की चिकित्सा में यह उपयोगी पाया गया है । यह स्वेद जलन/मूत्रल है तथा शरीर के किसी भी प्रकार के अतःकोशीय जलसंचय को मिटाती है । यह कार्य इसमें उपस्थित तैलीय भाग इंजाइम तथा सेंपोनिम के कारण होता है ।

अमलतास : रेचन के लिए

इसको क्षाग धनवहेर कहते हैं । इसको मूल/पत्र/फल-मज्जा/पुष्प चिकित्सा के लिए उपयोग किया जाता है । इसका फल-मज्जा रेचक/दस्तावर के रूप में परंपरागत रूप में विशेष प्रचलित है । उत्तर भारत/राजस्थान में दूसरा स्वादिष्ट रेचन योग काफी लोकप्रिय है । इसकी पत्ती का मुख के लकवे में, यकृत व प्लीहा वृद्धि में पत्ती, छाल/पुष्प के स्वाध का प्रयोग त्वचा रोग में, पुष्प का क्वाथ विवंध एवं विषम ज्वर में प्रयोग किया जाता है । इसके फल-मज्जा में एंथ्रा क्विलोन, रेशा शक्कर, ग्लूटीन व पेक्टीन पाया जाता है, जो इसमें रेचक गुण होने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं ।

अस्थि श्रृंखला : हड्डी जोड़ने के लिए

यह लता प्रजाति की वनस्पति है । इसे हरजोड़ के नाम से भी संबोधित किया जाता है । यह अपने नाम के अनुरूप अस्थिभग्न की चिकित्सा में परंपरागत रूप में भारत के विभिन्न प्रांतों में उपयोग किया जाता है । छत्तीसगढ़ में हड़जोड़, गुजरात में हाड़-साकल, बस्तर में हाड़ाजोड़ी नाम से जाना जाता है । महाराष्ट्र में इसके कोमल तनों की सब्जी खायी जाती है । मद्रास में इसके कोमल पत्तों/कांड का प्रयोग अंर्तधूम विधि से भस्म बनाकर अजीर्ण/अतिसार में उपयोग किया जाता है । इसी प्रकार इसके कांड स्वरस को कर्ण शोथ कर्णपूय में उपयोग करते हैं तथा उड़द दाल के आटे के साथ इसके पकोड़े बनाकर सेवन कराते हैं ।

अशोक : स्त्री रोगों के लिए

यह अपने नाम के अनुरूप स्त्रियों के विभिन्न प्रकार के रोग को दूर कर, शोक को दूर करनेवाली वनौषधि है । इसके छाल का प्रयोग चिकित्सा कार्य में चूर्ण के रूप में ५-६ ग्राम की मात्रा में किया जाता है । इसका अशोकारिष्ट, अशोक घृत, अशोक क्षीर विशेष प्रचलित योग है ।

परंपरागत रूप में अशोक की छाल, त्वक चूर्ण का प्रयोग स्त्रियों द्वारा रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, कटिशूल की चिकित्सा में किया जाता है । इस पर आयुर्वेद, होम्योपैथ, आधुनिक चिकित्सा विधि के चिकित्सकों, वैज्ञानिकों ने पर्याप्त रूप से अनुसंधान कार्य किया है, जिन्होंने इनको स्त्रियों के विभिन्न प्रकार के रोगों की चिकित्सा में उपयोगी पाया है । इसकी छाल में हीमेटा, क्लीसिन, टैनिनकेटरोल, आक्सीटोसिन से मिलता-जुलता एक ग्लाइकोसाइड षीटू सैपोनिन एवं कार्बनिक कैल्सियम पाये गये हैं । छाल में विद्यमान ये संघटक गर्भाशय को उत्तेजित कर संकुचन बढ़ाते हैं । यह हानिरहित होता है । ●

गाथा विश्व सुंदरियों की

मिस लंदन भिखारिन बनी

● आलोक प्रभाकर

जो रूपवती महिलाएं सौंदर्य प्रतियोगिताओं में विजयिनी होती हैं, क्या उन्हें जीवन में शांति नसीब हो पाती है ? सुख नसीब हो पाता है ? जिस रूप के बल पर वे इठलाती हैं, क्या वह सौंदर्य हाहाकारी बनकर उन्हें एक दिन डस नहीं लेता है ? उनका अभिशप्त सौंदर्य उनके जीवन को किस तरह दुख और यंत्रणा के अथाह सागर में डुबा देता है । आइए, कुछ रूपगर्विताओं के जीवन में झांककर उनके दिलकश सौंदर्य के पीछे ढकी त्रासदी का परिचय प्राप्त करें ।

मिस लंदन भिखारिन बनी

एक रूपवती युवती यू.बी.सांद्रे सन १९३१ में मिस लंदन चुनी गयी । वह एक होटल में स्वागताधिकारी थी । लंदन सुंदरी घोषित होने पर वह जनसाधारण की दृष्टि में आ गयी । देश-विदेश से उसके लिए पत्र आने लगे, बड़ी-बड़ी कंपनियों से उसके लिए बुलावा आ गया । एक थियेटर कंपनी ने उसे बड़ी भारी रकम देकर अपने यहां अभिनेत्री बना लिया । उसने नृत्य और संगीत भी सीख लिया, पर यह सौदा उसे महंगा पड़ा । दो-चार साल में उसके अंग-प्रत्यंग ढीले पड़ गये । मुंह चुसे हुए आम की तरह हो गया । आंखें गड्ढे में धंस गयीं । यौवन का मधुमास बीत गया । वह कई रोगों से ग्रसित हो गयी । नौकरी भी छूटी और चिकित्सा कराने में उसकी संचित धनराशि भी स्वाहा हो गयी । अंततः उसे भीख मांगने के लिए मजबूर होना पड़ा ।

मिस अफरीका उर्फ क्षय रोग की मरीज

'मिस अफरीका' दक्षिण अफरीका में टेलीफोन ऑपरेटर थी । सौंदर्य प्रतियोगिता में प्रथम आयी, तो उसे सैकड़ों पुरस्कार मिले और फोटोग्राफर आसपास मंडराने लगे । टेलीफोन पर बतियानेवाले बीसियों मनचले भंवरे उसे तंग करने लगे । जब वह टेलीफोन एक्सचेंज से बाहर निकलती तो प्रेमियों का एक मेला-सा लग जाता । कई बार तो प्रेमियों की प्रतिद्वंद्विता के कारण उसे एक्सचेंज में ही बंद हो जाना पड़ा । कई बार उसका अपहरण हुआ । कई बार झगड़ा-फसाद होने से कई लोगों के सिर फूटे और दिल टूटे ।

अंततः 'मिस अफरीका' ने इस बवंडर को रोकने के लिए एक टेलीफोन इंजीनियर से विवाह कर लिया । विवाह के दूसरे दिन ही किसी दिलजले ने इंजीनियर को मार डाला । अगले महीने उसने एक अभिनेता से विवाह किया । अभिनेता उसका सारा धन खर्च करने के बाद किनाराकशी कर गया । तब उसने एक डॉक्टर से विवाह कर लिया, फिर एक बस

कंडक्टर से और फिर एक पत्र-संपादक से। इस तरह पतियों को अदलते-बदलते दो वर्ष में ही क्षय रोग से ग्रसित होकर उसकी मृत्यु हो गयी। मरते समय उसके अंतिम शब्द उसके आखिरी पति एक कसाई ने सुने। मिस अफरीका ने कहा, 'काश! मैं 'मिस अफरीका' न चुनी जाती!'

मिस फ्रांस : भोजन में विष

ओर्तो नाम था 'मिस फ्रांस' का। कहा जाता है कि वह इतनी सुंदर थी कि निर्णायकों में से एक तो उसे देखते ही बेहोश होकर गिर पड़ा और उसे एंबुलेंस में डालकर घर पहुंचाया गया। वह ठीक होने के बाद ओर्तो को देखने प्रतिदिन जाता। ओर्तो से उसने विवाह करना चाहा किंतु ओर्तो ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। रूप की रानी ने किसी दूसरे नवयुवक से विवाह कर लिया तो उस निर्णायक ने रसोइए से सांठ-गांठ कर ओर्तो के भोजन में विष मिलवाकर उसे मरवा डाला। बाद में रसोइया और निर्णायक दोनों को फांसी की सजा हो गयी।

विश्व सुंदरी : २५ वर्ष की कारावास

डोरथी ने डबलिन, पेरिस और बर्लिन में शिक्षा पायी थी। सन १९१४ में वह स्नातिका होकर निकली। सन १९३६ में उसका विवाह मिस्टर लक से हुआ। सन १९३७ में वह विश्व सुंदरी चुनी गयी। संभवतः वह पहली विश्व-सौंदर्य प्रतियोगिता थी। डोरथी बड़ी पवित्र और चरित्रवान स्त्री के रूप में जानी जाती थी। एक दिन समाचार-पत्र में समाचार प्रकाशित हुआ कि डोरथी की लड़की बंदूक देख रही थी, अचानक उसका हाथ घोड़े पर जा पड़ा, बंदूक चल गयी और डोरथी का पति, जो सामने बैठा काम कर रहा था, गोली का शिकार हो गया।

जो रूपवती महिलाएं सौंदर्य प्रतियोगिताओं में विजयिनी होती हैं, क्या उन्हें जीवन में शांति नसीब हो पाती है? सुख नसीब हो पाता है? जिस रूप के बल पर वे इठलाती हैं, क्या वह सौंदर्य हाहाकारी बनकर एक दिन उन्हें डस नहीं लेता है?

एक सप्ताह बाद लड़की ने मजिस्ट्रेट के सामने स्वीकार किया कि उसके पिता की मृत्यु एक षड्यंत्र के तहत हुई है। लड़की ने बताया कि उसकी मां एक चरवाहे युवक से प्रेम करने लगी थी। वह चाहती थी कि मिस्टर लक उसे तलाक दे दें, किंतु मिस्टर लक ने नहीं माना। अंततः मां ने आत्माओं को बुलाकर पूछा, "क्या मैं अपने पति मिस्टर लक की हत्या कर दूं?" उत्तर मिला—"हां।" मां ने पूछा, "हत्या किस प्रकार की जाए?" उत्तर मिला—"उसे बंदूक का निशाना बनाया जाए और ऐसे किया जाए कि आकस्मिक घटना जान पड़े।" मैंने पूछा—"हम किसी विपत्ति के शिकार तो नहीं हो जाएंगे?" उत्तर मिला—"नहीं।" मैंने फिर पूछा—"क्या मेरी मां का विवाह चरवाहे युवक से हो जाएगा?" उत्तर मिला—"हां।"

लड़की ने कहा—"अपने पिता को मैंने ही गोली का निशाना बनाया था।" यह बयान सुनकर अदालत ने लड़की को सुधार-गृह में भेज दिया और विश्व-सुंदरी को २५ वर्ष के लिए जेल में।

—पो. जाजल टिहरी गढ़वाल-२४९१४७

विश्व बंधुत्व का शहर

● विनय

गया से बारह किलोमीटर दक्षिण निरंजना नदी के तट पर बसा है बोधगया । इसी नदी में बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद स्नान किया था । बोधगया का प्राचीन नाम उरूबिल्व था । समूचा बोधगया बुद्ध को समर्पित-सा जान पड़ता है बल्कि इसे 'विश्व बंधुत्व का शहर' कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । कहीं चीन, कहीं बर्मा, कहीं जापान, कहीं थाईलैंड, कहीं तिब्बत—सबने अपनी आस्था को मंदिर का रूप दे दिया है । एक साथ अलग-अलग देश की स्थापत्य कला और उनकी संस्कृति का भव्य प्रदर्शन शायद ही कहीं मुमकिन होगा । मंदिरों की नक्काशी स्वयं अपनी संस्कृति का परिचय कराती है ।

महाबोधि मंदिर मुख्य मंदिर कहलाता है । बौद्धों की दृष्टि में सबसे ज्यादा पवित्र है । ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में, ज्ञान प्राप्ति के स्थान पर, सम्राट अशोक ने चिकने बलुआ पत्थर से निर्मित वज्रासन की स्थापना की थी । बनावट से भी यह गुप्तकालीन ढांचा मालूम पड़ता है । शुंगकाल में वज्रासन के चारों ओर बलुआ पत्थर की वेदिका बनायी गयी । ऐसा माना जाता है कि वर्तमान मंदिर का निर्माण ईसा की छठी सदी में हुआ । परवर्ती काल खंडों में इस मंदिर का जीर्णोद्धार कई बार किया गया जिसमें बर्मा निवासियों का विशेष योगदान रहा । सातवीं सदी में ह्वेनसांग ने बोधि वृक्ष को मंदिर एवं सैकड़ों स्तूपों तथा चैत्यों के साथ समुन्नत अवस्था में देखा था । सन १८८३ में ब्रिटिश पुरातत्ववेत्ता सर ए. कनिंघम और जे. डी. एम. बैंगलूर और भारतीय पुरातत्वविद् डॉ. राजेन्द्र लाल मित्र के निर्देशन में इस मंदिर का विधिवत पूर्ण जीर्णोद्धार किया गया । पुनः १९५६ में भारत सरकार ने मंदिर का पुनरुद्धार किया ।

माया देवी की मूर्ति

मंदिर आकार में वर्गाकार है । इसके चारों कोनों पर इसी की तरह के चार छोटे मंदिर खड़े हैं । मंदिर का प्रवेश द्वार पूरबमुखी है । मंदिर के तोरण द्वार में शेर, हिरण आदि जीवों के चित्र उकेरे गये हैं जो मंदिर को भव्यता और कलात्मकता प्रदान करते हैं । मुख्य द्वार के पास ५०० किलोग्राम का घंटा टंगा है । मंदिर के अंदर सोने की पालिशवाली बुद्ध की एक मूर्ति ऊंचे आसन पर रखी है । मंदिर दो मंजिल का है । ऊपर वाली मंजिल में बुद्ध की माता माया देवी की प्रतिमा है ।

सप्त स्थानों का महत्त्व

तथागत के ध्यानावस्थिति तथा 'सम संबोधि' प्राप्त करने के अवसर पर सात सप्ताह तक बिताये जानेवाले स्थान को कहते हैं

(१) बोधि वृक्ष : मुख्य मंदिर के पश्चिम

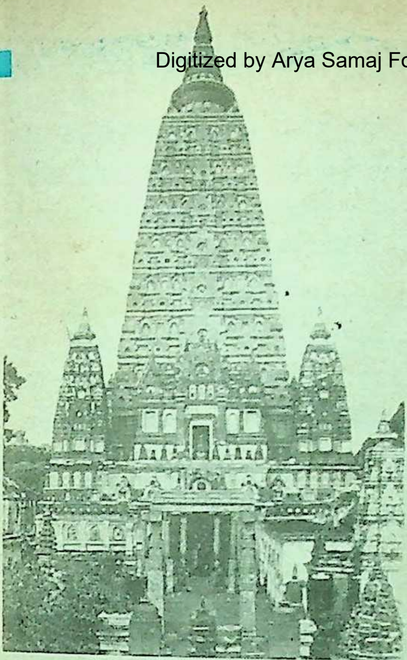

में पीपल का वृक्ष है । इसी स्थान पर बुद्ध ने पूरब मुख बैठकर तपस्या की और ज्ञान प्राप्त किया । अशोक द्वारा निर्मित वज्रासन की वेदी इसी वृक्ष के समीप है । कहा जाता है कि इसी वृक्ष की शाखा को अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा के द्वारा श्रीलंका भेजा था ।

(२) अनिमेषलोचन स्तूप : यह ५५ फुट ऊंचा एक स्तूप है । ज्ञान प्राप्ति के बाद इसी स्थान से बुद्ध ७ दिनों तक बोधिवृक्ष को श्रद्धापूर्वक देखते रहे थे ।

(३) चंक्रामना : यहां बुद्ध के पद चिह्न हैं । इस स्थान पर घूम-घूम कर उन्होंने सोचा कि प्राप्त किये ज्ञान का प्रसार करना चाहिए । जहां-जहां उनके चरण पड़े, वहां-वहां कमल उग आये ।

(४) रत्नागार : तथागत ने यहां एक सप्ताह तक ध्यानावस्था में बिताया । यह उनका ध्यानकक्ष था । ऐसी मान्यता है कि यहीं उनके शरीर से पांच रंग बाहर निकले ।

> *''सुनी हुई बातों पर विश्वास न करो, परंपराओं में विश्वास न करो, क्योंकि वे पीढ़ी दर पीढ़ी चली आयी हैं, किसी बात पर इसलिए विश्वास न करो कि वह जनश्रुति है और बहुत लोग उसे कह रहे हैं । किसी बात में केवल इसलिए विश्वास न कर लो कि किसी प्राचीन ऋषि का लिखित वक्तव्य प्रस्तुत किया गया है । ख्याली बातों में विश्वास न करो, किसी बात पर इसलिए विश्वास न कर लो कि उसे तुम्हारे शिक्षकों और अग्रजों ने कहा है । किसी बात पर केवल तब विश्वास करो जब तुम उसे जांच-परख लो और उसका विश्लेषण कर लो, जब यह देख लो कि वह तर्कसंगत है, तुम्हें नेकी के रास्ते पर लगाती है और सबके लिए लाभदायक है, तब तुम उसके अनुसार ही आचरण करो ।(कालाम सूत्र : अंगत्तुर निकाय)''* ।

(५) राजायतन वृक्ष :

(इसके यथार्थ प्राचीन स्थान का पता नहीं लग सका है ।

(६) अजपाल निग्रोध वृक्ष : इसके भी यथार्थ स्थान का पता नहीं लग सका है ।

(७) बोधि सरोवर : मंदिर के दक्षिण में एक तालाब है जिसमें बुद्ध ने तपस्या करने से पूर्व स्नान किया था ।

दाईबुत्सु : अर्थात विशाल मूर्ति

यह एक जापानी शब्द है जिसका अर्थ होता है विशाल बुद्ध मूर्ति । इस प्रतिमा का निर्माण जापान के नागोया स्थित दाइजोक्यो नामक संस्था ने कराया है । ४ वर्ष में बनी इस मूर्ति का नक्शा दक्षिण भारत के प्रसिद्ध मूर्तिकार गणपति सत्पथी ने तैयार किया । मूर्ति की ऊंचाई ६४ फुट है । आधार की ऊंचाई १० फुट और कमल की ऊंचाई ६ फुट है । चुनार के गुलाबी

पत्थरों को जोड़कर बनायी गयी प्रतिमा खुले गगन में स्थित है । मूर्ति के ललाट पर जो स्वर्ण बिंदु है, वह कांस्य निर्मित है । बुद्ध की विशाल मूर्ति इतनी प्राणवान लगती है, मानो बुद्ध अपने दर्शनार्थियों से कह रहे हों ।

तिब्बत मठ :

तिब्बतियों का यह मठ दरअसल गदेन फेल ज्ञेलिंग तिब्बती महायान बुद्ध मंदिर है । यह अपने विशाल 'धर्म चक्र' के लिए मशहूर है । कानून का यह चक्का श्रद्धालुओं में लोकप्रिय है । ऐसा माना जाता है कि इस चक्र को तीन बार घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं ।

डुंगेश्वरी

बोधगया से सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थल 'प्राक्‌बोधि' कहलाता है । ज्ञान की खोज में भटकने के दौर में तथागत ने डुंगेश्वरी गुफा में भी ध्यान लगाया था । बौद्धों के लिए यह भी महत्वपूर्ण स्थल है ।

बुद्ध जयंती के अवसर पर दुनियाभर से बौद्ध धर्मानुरागी यहां आते हैं । इस अवसर पर मेलानुमा वातावरण रहता है । मई माह में मनाया जाने वाला यह त्यौहार तथागत का जन्म दिवस, ज्ञान प्राप्ति का दिन और निर्वाण तिथि है । बुद्ध पूर्णिमा के दिन पूरा नगर प्रार्थनाओं के स्वर से गुंजित होता रहता है ।

बोधगया बिहार के गया जिले में जिला मुख्यालय से १२ किलोमीटर की दूरी पर है । यह सड़क मार्ग द्वारा डोभी और गया से जुड़ा है । यहां से २२ किलोमीटर की दूरी पर ग्रैंड ट्रंक रोड है । ग्रैंड कौर्ड लाइन पर गया एक महत्त्वपूर्ण रेल जंक्शन है । जो कलकत्ता, पटना, लखनऊ, दिल्ली से सीधी जुड़ी है । गया से बोधगया तक जाने के लिए निजी बस, तांगा और रिक्शा उपलब्ध रहते हैं । ठहरने के लिए बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम के दो होटल हैं । इसके अलावा कई निजी होटल और धर्मशालाएं हैं । बोधगया घूमने का मौसम वैसे तो अक्टूबर से मार्च है, पर यदि बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर मई माह में वहां जाया जाए तो आनंद दुगुना हो जाएगा ।

—सी ६/८५, सेक्टर-१५, रोहिणी
दिल्ली-११००८

शुद्धता के परीक्षण हेतु स्ट्रिप

अब हमारे ही देश के वैज्ञानिकों ने तेल की शुद्धता के परीक्षण हेतु एक ऐसी स्ट्रिप तकनीकी का विकास कर लिया है, जिससे विशेष रूप से सरसों के तेल की शुद्धता का परीक्षण हो सकेगा ।

औद्योगिक विष विज्ञान अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. आर. सी. श्रीमाल के अनुसार आजकल सरसों के तेल में बटर येलो नामक घुलनशील पदार्थ की मिलावट खूब हो रही है । इससे यह तेल विषाक्त हो सकता है । इस स्ट्रिप तकनीक के द्वारा भी सरसों के तेल में मिलावट को परख सकता है ।

बाजार में इस स्ट्रिप को उपलब्ध करवाने के लिए विभिन्न उद्योगों से उत्पादन हेतु विचार-विमर्श चल रहा है ।

ा जन्म
तिथि
ओं के
ा
है।
जुड़ा
ग्रैंड
क
पटना,
ा से
ांगा
लिए
होटल
र
म वैसे
र्णिमा के
तो
रोहिणी
१०००५
हेतु
म्बिनी

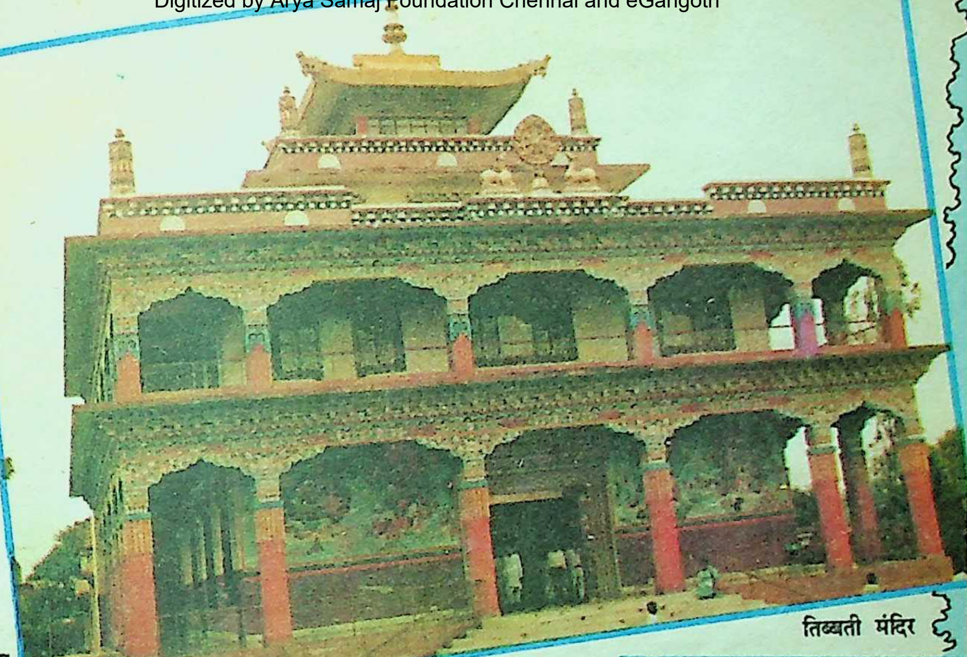

तिब्बती मंदिर

थाई मंदिर

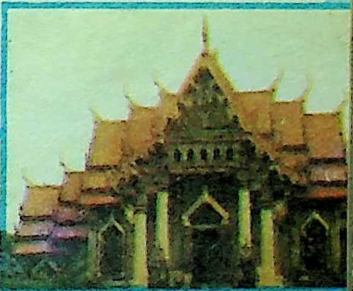

छाया : सर्वेश

बौद्ध मंदिर

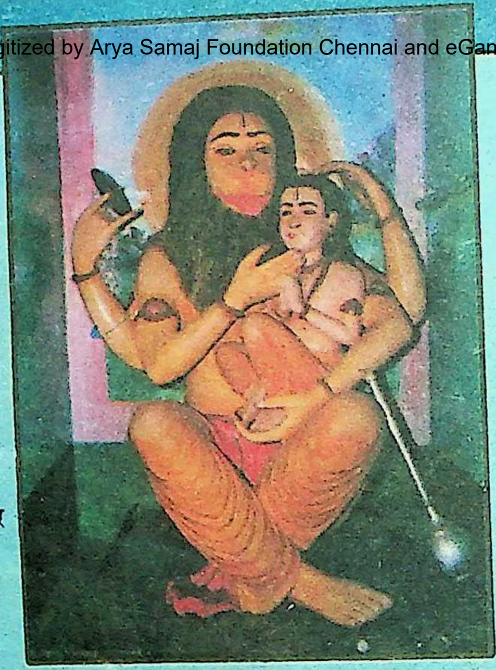

नृसिंह अवतार

बराह अवतार

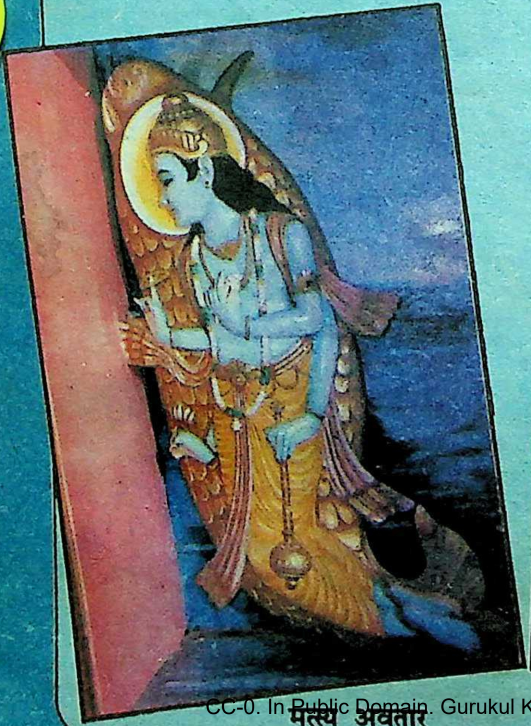

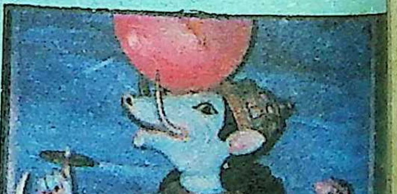

मत्स्य अवतार

स

के अ
अवत
ही उ
आर्य
प्रमाण
अ
श्रीम
मिल
कुमा
हयग्री
मन्वन
व्यास
इ
कि ल

जन

भारतीय संस्कृति में अवतारों की अवधारणा

● डॉ. सुधा पांडे

नवंबर— ९४ के अंक में डॉ. सुधा पाडेंय के लेख 'पुरुष की सोलह कलाएं' में भगवान के दशावतारों के विषय में चर्चा की गयी थी । उसी क्रम में प्रस्तुत है यह लेख ! अवतार क्यों, कब और कैसे होते हैं, यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है । इस लेख में भगवान के अवतारों की अवधारणा के विषय में विस्तृत चर्चा की गयी है ।

सर्वव्यापक परमात्मा की शक्ति जब किसी विशेष केंद्र द्वारा प्रकट होती है, उस शक्ति के अवतरित होने को अवतार कहते हैं । अवतारवाद की भावना मूलतः ब्राह्मण-ग्रंथों से ही उदित हुई । उसके बाद से भारतीय आर्य-ग्रंथों में अवतार के विषय में अनेक आप्त प्रमाण उपलब्ध होते हैं ।

अवतारों की संख्या अपरिमिति है । श्रीमद्भागवत् में २४ अवतारों का उल्लेख मिलता है— वराह, यज्ञ, कपिल, दत्तात्रेय, कुमार चतुष्टय, नर-नारायण, ध्रुव, पृथु, ऋषभ, हयग्रीव, मत्स्य, कूर्म, नृसिंह, हरि, वामन, हंस, मन्वन्तर, धन्वंतरि परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, व्यास, बुद्ध और कल्कि ।

इन अवतारों के संदर्भ में उल्लेख मिलता है कि लोक-सृष्टि की इच्छा करके महत्तत्व की आश्रय से भगवान ने पहले षोड्शकलापूर्ण रूप ग्रहण किया था, यही वह रूप है जो प्रलयकाल में योगनिद्रामय था और इसके नाभिकमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई और इसी विराट रूप से भिन्न-भिन्न अंगों द्वारा अनेक लोकों की कल्पना हुई, यही रूप नाना-अवतारों का कारण अविनाशी और बीज रूप है । इसी रूप के अशांश से देव तिर्यक् और मनुष्य आदि योनियों की सृष्टि होती है । आदि देव के इसी रूप ने सर्वप्रथम सनत्कुमार आदि के रूप में ब्राह्मण शरीर धारण करके अखंड ब्रह्मचर्य का पालन किया । अतः सनत्कुमार आदि देव के प्रथम अवतार माने जाते हैं । उपरिलिखित २४ अवतारों में प्रमुख दशावतार हैं । इनके साथ अवतार विज्ञान और अवतार लीला के संदर्भ जुड़े हैं । समस्त शास्त्रों में इन्हीं दशावतारों की

चर्चा मिलती है—

'मत्स्य कूर्मो वराहश्च नृसिंहों वामनस्तथा
रामो रामश्च रामश्च बुद्धः कल्किर्दशस्मृतः ।।

दशावतारों के आविर्भाव के पीछे जो कथाएं छिपी हैं, वे संकेत करती हैं कि गो, ब्राह्मण, देवता, साधुगण, वेद धर्म तथा अर्थ की रक्षा के लिए भगवान अवतार रूप से स्थूल शरीर धारण करके प्रकट होते हैं, किसी भी योनि में (पशु-पक्षी-मनुष्य आदि) भ्रमण करने पर वायु की भांति वे दोषमुक्त रहते हैं, गुणातीत होने से व प्राकृतिक बंधनों से भी मुक्त हैं । दशावतारों की कथा संक्षेप में इस प्रकार है :

मत्स्यावतार

यह अवतार हयग्रीव नामक असुर का वध करके वेदों का उद्धार करने के लिए हुआ । श्रुतियों का उद्धार और उनकी परंपरा शुद्ध रखने के लिए भगवान विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया । भगवान मत्स्य विश्वसंस्कृति के रक्षक एवं प्रतिष्ठापक रूप में प्रसिद्ध हुए । इस अवतार की विस्तृत कथा और संदर्भ तैत्तिरीयं संहिता, अथर्ववेद संहिता, श्रीमद्भागवत एवं अग्नि पुराण सदृश आर्य ग्रंथों में मिलते हैं ।

कूर्मावतार

इस अवतार का आविर्भाव देवताओं और असुरों के सागर-मंथन के समय हुआ; उस समय मंदराचल के नीचे कोई आधार न होने के कारण भगवान विष्णु ने कूर्म रूप (कछुआ) धारण कर अपनी पीठ पर मंदर पर्वत को धारण किया, उसके बाद ही क्षीर-सागर को मंथने से विष, वारुणी पारिजात, कौस्तुभ, गौ, अप्सराएं श्री (लक्ष्मी) तथा अमृत निकले । भगवान विष्णु ने ही लीला द्वारा असुरों के हाथ से अमृत कमंडल छीनकर देवताओं को अमृत बांटा इस प्रकार देवताओं को अमरत्व मिला तथा सभी तेजस्वी देवता असुरों को पराजित कर सके । कूर्मावतार द्वारा असुरों की पराजय त दैवराज्य की स्थिति द्वारा भगवान ने धर्मशक्ति की रक्षा की थी ।

वराहावतार

इस अवतार का आविर्भाव पाताल गयी 'पृथिवी' के उद्धार के लिए हुआ था । दिति हिरण्याक्ष पृथिवी पर अधिकार जमाकर उसे रसातल को ले गया था, श्री भगवान विष्णु वराह रूप धारण करके जल-मग्न रसातल पृथ्वी का उद्धार किया था । मायामय शूकर देह से उन्होंने अपने विशाल दांत से पृथिवी ऊपर उठाकर जल से बाहर कर दिया और हिरण्याक्ष को अनायास मार दिया । वराहाव हिरण्याक्ष निधन द्वारा पृथिवी के उद्धार, देवताओं की शांति और देवराज्य के पुनरुद्धा का आख्यान प्रस्तुत करनेवाला अवतार है । श्वेतवराह-कल्प की सृष्टि पृथिवी की उसी पु प्रतिष्ठापना के समय से आरंभ हुई है ।

नृसिंहावतार

वराहरूपधारी भगवान द्वारा हिरण्याक्ष क वध होने के बाद उसका भाई हिरण्यकश्यप बहुत रुष्ट हुआ और भ्रातृवध के कारण वि भगवान के प्रति द्वेष मानयुक्त हो गया और अपने देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया । अपने पुत्र विष्णु भक्त प्रह्लाद से भी द्वेष रख लगा था और नाना प्रकारों से उसका वध क चाहता था । हिरण्यकश्यप को यह वरदान कि न नर और न पशु उसका नाश कर सकें विष्णु भगवान ने देवद्रोही हिरण्यकश्यप का

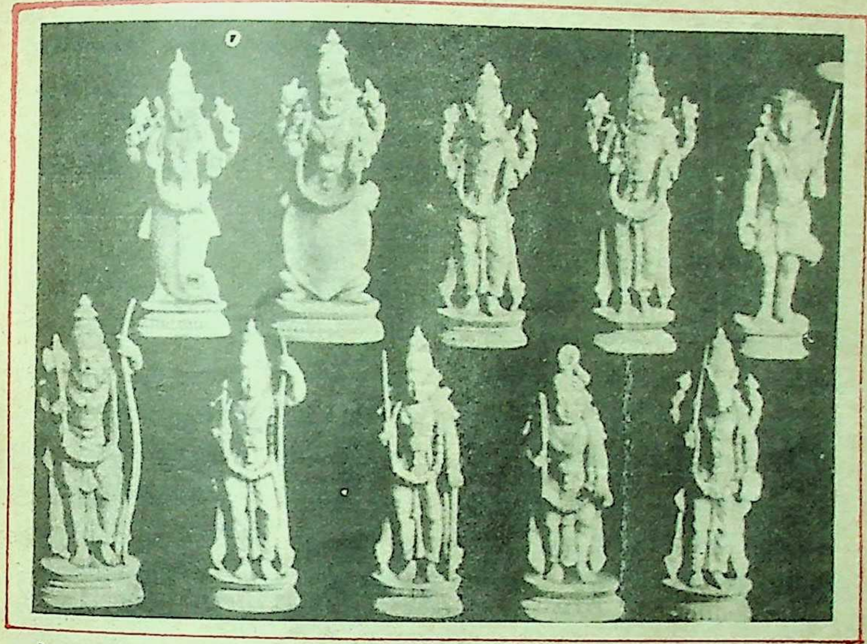

आधे नर तथा आधे सिंह के रूप में किया । वीर्यवान और श्रेष्ठतम नर और सिंह रूप एकाधार में मिलाकर संसार के उद्धार के लिए भगवान रूप में प्रकट हुए थे उनका वह रूप अतीव भयंकर था ।

वामनावतार

दैत्यराज बलि ने इंद्रादि देवताओं को स्वर्गच्युत कर दिया था, और ब्रह्मांड प्रकृति में विश्रृंखलता होने लगी थी, भगवान ने वामनावतार धारण करके अपने तीन पग से पृथिवी, स्वर्गादिलोक और अंतरिक्ष नाप कर इंद्र को पुनः त्रिलोक प्रदान किया और दैत्यराज बलि का दमन किया । वामन साक्षात विष्णु भगवान थे । अलौकिक पद प्रसारणकारी भगवान विष्णु ने तीन-पद प्रसारित किये थे । इस प्रकार भगवान ने वामनावतार द्वारा दैत्यराज बलि का उद्धार और सृष्टि की रक्षा व भक्तों की मनोकामना पूरी की थी ।

परशुराम अवतार

ब्राह्मण शक्ति के प्रति विद्वेषयुक्त और नाश की इच्छुक प्रबल क्षत्रिय शक्ति को देख भगवान ने इक्कीस बार पृथिवी को क्षत्रिय विहीन कर दिया था । दत्तात्रेय के वर से उत्पन्न सहस्त्रबाहु कार्तवीर्यार्जुन जैसे क्षत्रिय राजाओं ने अपनी शक्ति को धर्मनाश और ब्रह्मनाश के कार्य में लगा दिया था फलतः सर्वत्र अव्यवस्था फैल गयी थी इसीलिए भगवान को परशुराम के रूप में अवतार लेकर अधार्मिक क्षत्रिय शक्ति के नाश द्वारा संसार में शांति स्थापना और धर्मरक्षा करनी पड़ी थी । दुर्दांत क्षत्रियों द्वारा पीड़ित पृथिवी का भार हरने के लिए इक्कीस बार पृथिवी को क्षत्रिय विहीन करके क्षत्रियों के रक्त से

कुरुक्षेत्र में पांच कुंड का निर्माण कर परशुराम ने पितरों का तर्पण किया तथा महर्षि कश्यप के हाथ पृथिवी को समर्पित कर महेंद्र पर्वत में चले गये ।

रामावतार

परशुराम अवतार के बाद ब्रह्मांड प्रकृति में रामावतार के प्रकट होने का विशेष प्रयोजन था रामायण के उल्लेख बताते हैं कि राम विष्णु के अर्धांश भरत, चतुर्थांश लक्ष्मण और शत्रुघ्न अष्टमांश थे, इस प्रकार रामावतार में विष्णु भगवान का पूर्ण रूप में अवतरण हुआ था । रामावतार नरदेव रूप में भगवान का अवतार आदर्श मानव जीवन बताने के लिए और प्रकृति रूप में शक्ति सीता का अवतार आदर्श नारी जीवन के दृष्टांत के लिए हुआ ! समस्त अवतारों में रामावतार इसलिए महत्त्वपूर्ण रहा है कि चिन्मय विष्णु रघुकुल में राजा दशरथ के पुत्र रूप में रावण वधार्थ उत्पन्न हुए थे उन्होंने भार्गव परशुराम को अपना विश्व रूप दिखाया था । रामायण के प्रसंगों से ज्ञात होता है कि श्री भगवान के रामावतार धारण करने पर परशुराम की अवतार शक्ति रामचंद्र में खिंच गयी थी । भारतीय संस्कृति का व्यापक रूप रामावतार के प्रसंगों में देखने को मिलता है । 'रामावतार' की महिमा से भरे अनेक ग्रंथ असत् पर सत् की विजय और सार्वभौम कल्याण की उदांत भावनाओं से भरे हैं ।

भगवान कृष्ण बलराम अवतार

श्रुतियां बलराम को द्वापर का युगावतार कहती है । द्वापर में पृथिवी का भार हरण करने के लिए बलराम पधारे थे, बलराम में अंश कला का विकास हुआ । श्रीमद्भागवत् में ये उल्लेख आया है— श्री भगवान के अंश सहस्त्रमुख अनंतदेव कृष्ण के प्रिय कार्य करने के लिए बलराम रूप से पहले ही उत्पन्न होंगे श्रीकृष्ण बलराम परस्पर नित्य अभिन्न है उनकी बरित चर्चा भी एक-दूसरे से पृथक नहीं है । कृष्ण पूर्णावतार होने से साक्षात ईश्वर स्वरूप हैं— 'एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवानस्वयम्' पूर्णावतार श्रीकृष्ण द्वारा जीवों का जो कल्याण हुआ है नित्य पूर्ण और सदाफल देनेवाला कल्याण है । असुरों के भा से बोझिल पृथिवी का उद्धार करने के लिए समयानुसार धर्म की धारा को प्रवाहित करने लिए पूर्ण कला में श्रीकृष्ण का और अंशकला में बलराम का अवतारों में भगवान कृष्ण का नाम न होकर बलराम का नाम ही उल्लिखित हुआ है । श्रीमद्भागवत, श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत जैसे सभी ग्रंथों में भगवान के लीलाविग्रह की कथाएं और उपदेश समूह त कृष्ण के ज्ञानमय जीवन का अपूर्व आदर्श प्रस्तुत है ।

बुद्धावतार

बुद्धावतार कलियुग में हुआ था । बुद्धावतार के विषय में अनेक बौद्धशास्त्रों, विष्णु पुराण, अग्नि पुराण आदि में उल्लेख आया है । अग्नि पुराण में बुद्ध अवतार को म मोहावतार कहा गया है बुद्धदेव ने अवतार धारण कर असुरों को मायामुग्ध कर दिया था तथा वेद और आस्तिकताविहीन बौद्धर्म का उपदेश दिया उस उपदेश से जब असुरों ने वे का परित्याग कर दिया तो वेद बलविहीन अ पर विजय प्राप्त करना देवताओं के लिए सह हो गया । भगवान ने बुद्धावतार धारण कर प

हत्या से उत्पन्न अधर्म की धारा को रोका और असुरभाव को नष्ट करके देवभाव को पुष्ट किया था ।

कल्कि अवतार

दशावतारों में अंतिम अवतार कल्कि अवतार है । 'कल्कि अवतार होने में अभी लाखों वर्ष शेष हैं । जब कलियुग के दोषों से देहधारियों के देहक्षीण होने लगेंगे और वर्णाश्रम धर्म का नाश तथा वेद मार्ग का नाश हो जाएगा, क्षुधा, तृष्णा, व्याधि, संताप और चिंता से अनेक लोग नष्ट हो जाएंगे । उस समय चराचर भगवान विष्णु का अवतार कल्कि रूप में होगा । भगवान परशुराम स्वयं कल्कि भगवान को वेदों का उपदेश देंगे । भगवान शिव उन्हें शस्त्रास्त्र की शिक्षा देंगे, तब भगवान कल्कि पृथ्वी के समस्त आसुरी वृत्ति के प्राणियों का वध कर सकेंगे । भगवान के पुनः पृथिवी पर होने से नवीन संततियां शुद्ध भावापन्न और सशक्त होंगी और कलियुग की आयु बीत जाने पर पुनः सत्ययुग का उदय होगा, ऐसा शास्त्रों में अनेकशः उल्लेख आया है ।

पहले उल्लेख किया जा चुका है कि अवतारों की संख्याएं अनेक हैं । अवतारों की चर्चा के क्रम में यह उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा कि सगुण पञ्चोपासना के अनुसार भगवदवतार के अनेक भेद शास्त्रों में कहे गये हैं । शैव पुराणों में शिवावतारों का वर्णन मिलता है, गणेश पुराण और गाणपत्यतंत्रों में गणपति अवतारों का वर्णन आया, शक्तितंत्र और शक्ति-पुराणों में शक्ति के अनेक अवतारों का उल्लेख आया है, सूर्योपासना संबंधी ग्रंथों में सूर्य देव के अवतारों का भी वर्णन मिलता है, अतः पंचोपासना के सिद्धांत के अनुसार विष्णु, शिव, गणपति, सूर्य और देवी इन सबके भी अवतार होने का प्रमाण मिलता है । कला भेद से— पूर्णावतार अंशावतार, विशेषावतार, अविशेषावतार और नित्यावतार होते हैं । आगम ग्रंथों में भगवान का अवतार 'विभव' कहलाता है ।

किसी निमित्त विशेष से विशेषावतार और अविशेषावतार होते हैं । अंतःकरण में भगवान का नित्यावतार होता है । विशेषावतार, अवेशावतार के रूप में भी अभिहित किया जाता है । भगवान स्वयं सनत्कुमारादि, मुनिगण तथा नारद में आविष्ट हुए । अथवा जैसे चैतन्य महाप्रभु भगवतभाव के आवेश द्वारा अवतार की तरह आलौकिक जगतकल्याणकारी अनेक कार्य करते थे । यही आवेश अवतार का स्वरूप कहा जाएगा ।

श्री भगवान का अविशेषावतार श्री गुरु में दीक्षा देते समय प्रकट होता है । गुरु रूपी केंद्र में दीक्षा देते समय भागवद्भाव का जो विकास है, वह अविशेषावतार है । विशेष और अविशेष दोनों अवतारों से सृष्टि में धर्म की उन्नति, साधना और कल्याण वृद्धि होती है ।

भगवान का 'नित्यावतार' अंतःकरण में होता है प्रत्येक मनुष्य की सत्कर्म में प्रवृत्ति और असत्कर्म के प्रति उदासीन भार की जो चेष्टाएं वही मनुष्य के अंतःकरण में भगवान का नित्यावतार है । प्रभु प्रत्येक जीव में विद्याशक्ति की सहायता से अवतीर्ण होकर सत्कर्म की प्रेरणा देते रहते हैं, मनुष्य अपने कर्मों से जितना उन्नत होता जाता है उतना ही उसका नित्यावतार होना स्वाभाविक है ।

भगवान के उपरिलिखित अवतारों के अतिरिक्त ऋषि और देवताओं के भी अवतार होते हैं । अंगिरा वशिष्ठ वेदव्यास आदि अनेक महर्षियों के अवतारों का उल्लेख मिलता है । देवीभागवत में वेदव्यास के अट्ठारह अवतारों का उल्लेख आया है, जो प्रत्येक द्वापर युग में अवतार लेकर संसार की हित कामना से एक वेद को अनेक रूप से विभक्त करते हैं पुराण संहिता का निर्माण करते हैं । उन्तीसवें व्यासावतार— द्रोणपुत्र अश्वत्थामा की भी उत्पत्ति का संकेत देवीभागवत में आया है ।

अवतार किसी एक जीव के कल्याण के लिए नहीं होता है परंतु, समष्टि जीवों के कल्याण के लिए होता है— 'समष्टि कर्माधीनं तत् चाहे महाशक्तिभाव को लेकर अवतार हो अथवा महाविष्णुभाव, महागणपति भाव को लेकर हो या महादेव भाव अथवा महा सूर्यभाव को लेकर अवतार हो सभी सर्वशक्तिमान सगुण ब्रह्म के अवतार माने गये हैं और सभी ब्रह्मा, विष्णु और महेश में विष्णु शक्ति द्वारा जगत के रक्षार्थ अवतीर्ण होंगे । अवतार अनंत है और उनकी नाना भावमयी लीला में अंतर्हित है । ज्ञान दृष्टि संपन्न लोग उस अवतारी रूप को साक्षात ब्रह्म के रूप में पाते हैं, शत्रुभाव वाले उन्हें साक्षात काल के रूप में पाते थे और कहीं वे पुत्र रूप में विराजमान है, यह भगवान की लीला ही रही कि कहीं वे अपना विराट रूप दिखाते हैं, कहीं मोहन और कहीं भयंकर रूप अपनी आध्यात्मिक शक्ति से अभिन्न प्रभु का रूप अनेक प्रकार से भक्तों के आनंद का हेतु बनता है । युगानुसार धर्म की धारा को निराप तथा साधुओं के परित्राण के लिए युग-युग में अवतीर्ण भगवान के अंशावतार और पूर्णावत के विश्रुत चरितधारा अनादिकाल से चली आ रही है और अनंत काल तक चलेगी ।

— प्राचा

एम. के. पी. पी. जी. कॉले
देहरा

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (१, २, ३), २. क. रेडियो-धर्मी कार्बन-१४ से, ख. शिवालिक पहाड़ियों में, ३. क. संस्कृत, ख. प्राकृत—पाली, मागधी, शौरसेनी, ४. लद्दाख में, ५. क. भोपाल में माधवराव सप्रे स्मृति समाचार-पत्र संग्रहालय, ख. १९८४ ई. में, ६. क. अमरीकी उपनिवेशवादियों ने बोस्टन बंदरगाह पर इंगलैंड से आयी चाय समुद्र में फेंक दी—१७७३ ई., ख. ४ जुलाई, १७७६ ई., ग. १७८९ में, ७. क. सूरत से, ख. १९०७ ई. में—१३ लाख १५ हजार ८९२ लोग मरे, ८. क. एस्तोनिया का जहा फिनलैंड के पास दक्षिण-पश्चिम समुद्र में डूबा—करीब ६४० लोगों के मरने की आशंका, ख. ब्रिटेन का 'टिटानिक' जहाज डूबने की घटना-१९१२ ई., ९. क. मजरूह सुल्तानपुरी, ख प्रो. नवनीता देव सेन (जाधवपुर वि. वि.) और प्रो. के. अमप्पा पाणिकर (केरल वि. वि. से सेवानिवृत्त), ग. डॉ. दाऊजी गुप्त (लखनऊ के पूर्व मेयर), डॉ. छिन तंग हन (पेइचिंग वि. वि.) १० छिपकली का सिर

शब्द-पुरुष

सौ-सौ चेहरे क्यों हैं
हम रचनाकारों के
मन की भाषाओं में
संवाद नहीं क्यों है

◆

मानुस कैसे-कैसे
तरते हैं वैतरणी
कुछ है जिनकी कथनी
कुछ है जिनकी करनी
क्यों कुंठा, छद्म, अहं
हैं केंद्र विचारों के
आस्थाओं का होता
अनुवाद नहीं क्यों है

◆

शब्दों के सौदागर
या नदियों के पंडे
सब राजपथों पर हैं
हर मंजिल के झंडे
कुछ मठ-मंदिर के हैं
कुछ ठाकुर-द्वारों के
खुलकर होती कोई
फरियाद नहीं क्यों है

◆

कितने चिकने-चुपड़े
है खुशबू के अंचल
बाहर-बाहर नंदन
भीतर-भीतर जंगल
मुरझाये-से क्यों हैं
कुछ फूल बहारों के
खिलने का पाठ उन्हें
अब याद नहीं क्यों है

◆

पानी की ही बैरी
ये कैसी फसलें हैं
निश्चिंत आत्महंता
ये कैसी नस्लें हैं
सपने शिकार क्यों है
दिल्ली-दरबारों के
गीतों का शब्द-पुरुष
आजाद नहीं क्यों है

● वीरेन्द्र मिश्र

— डी/११६ सरोजिनी नगर, नयी दिल्ली-११००२

सही जाती है

याद मुझको भी तेरी आती है
रात नदिया-सी बही जाती है ।

लिख दिया हाल अपना पाती में,
बात कुछ फिर भी रही जाती है ।

छा गये तुम किसी सावन की तरह
पुरवाई शाम हुई जाती है ।

दूर आस्मां है तो क्या गम है ।
अब तो हर बात सही जाती है ।

—मीरा जैन

अंगूरी भवन, गली गालमक अलीगढ़

व्यंग्य

कहानी यह भी

● विजय अग्रवाल

महान साहित्यकार होने के बावजूद मैं गोष्ठियों में जाने से इसलिए कतराता हूं, कि कहीं मेरी महानता के पाजामे का नाड़ा ढीला होकर गिर न पड़े । लेकिन इस बार इसलिए जाने को मजबूर हुआ, क्योंकि एक ऐसी साहित्यिक पत्रिका अपनी उम्र का अर्द्धशतक मना रही थी, जिसका मैं संयोग से कुछ समय के लिए संपादक बना दिया गया था, या किसी तरह उल्टा-सीधा करके बन गया था । इसलिए उस पत्रिका का उत्पादन करनेवाले संस्थान का यह मजबूरी से भरा दायित्व था कि वह इस अवसर पर उन सभी लोगों को तो आमंत्रित करे ही, जो खटिया पर लेटे, उस मरीज को अपने कंधों पर ढोकर यहां तक ले आये थे । अतः मैं भी गोष्ठी में शामिल हुआ, बावजूद इसके कि शामिल होने के लिए किसी तरह के कैन्वेंस खर्च की कोई शासकीय अथवा अशासकीय व्यवस्था नहीं थी ।

गोष्ठी में हमेशा से उड़ती रहनेवाली मेरी नजर इस बार किसी नारी-लेखिका पर न पड़ एक अत्यंत वृद्ध एवं प्रसिद्ध साहित्यकार पर पड़ी । ये वे साहित्यकार थे, जिनकी पुस्तकों शीर्षक हम लोग 'जनरल नॉलेज' की तैयारी लिए रटा करते थे । आप अंदाजा लगा ही सकते हैं कि ऐसे महान साहित्यकार से 'वुड ग्रेट साहित्यकार' को मिलकर कितनी अधिक खुशी हुई होगी ।

धीरे-धीरे गोष्ठी की जवानी बुढ़ाने लगी। स्त्री-लेखिकाओं के होंठों की लिपिस्टिकियां धुलने लगीं, अतः लोग खिसकने लगे । लेकिन मैं किसी एक आशा में उन महान साहित्यकार के साथ जुड़कर उनकी महानता बखान करता रहा । अंत में जब हम कुछ गिने-चुने लोग ही रह गये, तब शायद उन महान साहित्यकार की आत्मा को कुछ बेचैनी हुई । इसीलिए उन्होंने मुझसे पूछा—

"तुम किससे आये हो विराग ?"

जी हां, 'निराला' ज़ी के पंथ का अनुयायी होने के कारण मैंने अपना सर नेम विराग रख लिया था ।

उनके इस प्रश्न ने मेरी अब तक की सारी आशाओं पर मटकों पानी उड़ेल दिया । मैंने हताशा के साथ उनके प्रश्न के उत्तर में प्रश्न दागते हुए प्रश्न किया —

"आप किससे आये हैं ?"

अपने प्रश्न के उत्तर में मेरा प्रश्न पाकर उन मुख कमल कबीरदास की कमलिनी की तरह कुम्हला गया । सच तो यह था कि इन प्रश्नों हम दोनों को कुम्हलवा दिया । एक तो मैं था कि अपने साहित्यिक जीवन की इस भरी-पूरी

जवानी में जवान एवं अधेड़ लेखिकाओं को छोड़कर सत्तर साल के इन सज्जन से इसलिए चिपका रहा कि वे मुझे गोष्ठी के बाद अपनी गाड़ी में साथ ले जाएंगे । कहां अब ये सज्जन मुझ से ही पूछ रहे थे कि "तुम किससे आये हो ?" मुझे लगा कि दुविधा में दोनों चले गये— न तो सुंदरी रूपी माया मिली, न कन्वेंस रूपी राम । फिर भी जो लोग महान होते हैं, या महान होने की प्रक्रिया में होते हैं, वे अंत तक अपना धैर्य नहीं खोते । मैंने भी बिना धैर्य खोये पूछा—

"क्या आप अपनी गाड़ी से नहीं आये ?"

मुझे ऐसा लगा मानो मैंने उनकी दुखती हुई रग छेड़ दी हो । उन्होंने एक लंबी सांस भरी, और उसे धीरे-धीरे छोड़ते हुए कहा—

"गाड़ी हो, तब न लाऊं ।"

मुझे उनकी बात सच नहीं लग रही थी, जबकि गलत होने का कोई कारण भी नहीं था । इसके बाद मैं न जाने क्या-क्या सोचने लगा । वे भी शायद कुछ सोचने लगे थे । इसलिए हम दोनों के बीच कुछ देर तक मरघट की-सी शांति छा गयी । इस शांति को उन्होंने ही भंग किया, और मुझसे अत्यंत अंतरंग संबंध स्थापित करते हुए बोले—

"बेटे, सच बताऊं । यदि प्रकाशक ठीक होते, तो आज मेरे पास भी अपना घर होता, अपनी गाड़ी होती ।"

उनकी यह बात सुनकर तो मुझे सांप ही सूंघ गया । कहां तो मैं लेखक बनकर महान बनना चाहता था, और कहां मैं एक महान लेखक की यह आत्मव्यथा सुन रहा था । अब मेरी महानता निश्चित रूप से संदेह के घेरे में आ गयी थी । मैं अंदर ही अंदर बेचैन हो उठा । श्री व्हीलर लाने की बात कहकर मैं वहां से उठा । बाहर की हवा में जी भरकर सांस ली । बाद में हम दोनों श्री व्हीलर में सवार होकर उनके किराये के कमरे की ओर चल दिये । मुझसे रहा नहीं गया, क्योंकि मुझे आज ही यह निर्णय लेना था कि महान बनने के लिए मैं कौन-सा रास्ता चुनूं ? इसलिए मैंने उनसे इस बारे में और बातें जाननी चाहीं । रास्ता काफी लंबा था । इसलिए बात के पूरा हो जाने की पूरी-पूरी संभावना थी । अब मेरे कान उनकी बातों की ओर तथा आंखें ऑटो के मीटर की ओर लग गयी । और मेरा दिल किराये के मीटर के साथ तेजी से चलने लगा । हृदय के साथ-साथ मैंने अपना मुंह भी चलाया—

"लेकिन आपने अपने 'कोठियोंवाले' उपन्यास में जिस तरह कारों का वर्णन किया है,

गोष्ठी में हमेशा से उड़ती रहनेवाली मेरी नजर इस बार हमेशा की तरह किसी नारी-लेखिका पर न पड़कर एक अत्यंत वृद्ध एवं प्रसिद्ध साहित्यकार पर पड़ी । ये वे साहित्यकार थे, जिनकी पुस्तकों के शीर्षक हम लोग 'जनरल नॉलेज' की तैयारी के लिए रटा करते थे ।

उसे पढ़कर तो यही लगता है कि आप कार तो **क्या, उसके** पुरजे-पुरजे से परिचित होंगे आखिर बिना अनुभव के इतना सजीव वर्णन कैसे किया जा सकता है ?''

मैंने देखा, उन महान साहित्यकार के होठों पर वितृष्णा से घुली हुई व्यंग्यात्मक मुसकान उभर आयी । उन्होंने मेरी इस जिज्ञासा का समाधान इतनी सहजता से किया, मानो कि उन्हें पहले से ही मालूम हो कि मैं यह ही मालूम करना चाहूंगा । उन्होंने बताया—

''विराग, कारों का वर्णन मेरे अनुभवों की उपज नहीं, बल्कि अनुभव के अभाव से उत्पन्न पीड़ा की उपज है । ईश्वर न करे कि तुम्हें कभी यह पीड़ा झेलनी पड़े ।''

वे थोड़े से रुके । लगा कि शायद अपने-आपको अंदर से व्यवस्थित कर रहे हैं । इसके बाद फिर चले—

''मेरा पहला प्रकाशक मेरे पास सेकिंड हैंड साइकिल पर सवार होकर पांडुलिपि लेने आता था । हां, सेकिंड हैंड पर, यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं । लेकिन कुछ ही वर्षों बाद वह मेरे कमरे के सामने से कार से गुजरने लगा । वह कार से गुजरता, और मैं अपनी खिड़की के सींकचों से उस कार को टुकुर-टुकुर ताकता रहता ।

''साहित्यकार हुआ तो क्या हुआ, आखिर मैं भी आदमी ही तो था । मेरे मन में एक दिन यह बात आयी कि इसने अवश्य ही मेरी किताबों की कमाई से कार ली है । मैंने उससे यह बात कही । मेरी बात सुनकर वह कमोवेश गुर्राया, और बाद में मेरे यहां आना ही छोड़ दिया । इसी घटना के बाद मैंने 'कोठियोंवाले' उपन्यास लिखा था ।''

मैंने तुरंत ही इससे एक साहित्यिक सिद्धांत निकाला कि ''वस्तुतः पूंजीवादी साहित्य अनुभव का नहीं बल्कि अभावों का साहित्य है । वह भावों का नहीं बल्कि कुंठाओं का साहित्य है ।'' मैंने सोचा कि बातों का यह सिलसिला रुकना नहीं चाहिए । न जाने किस बात से किस साहित्यिक सिदधांत और किस रचना से साहित्यिकवाद का जन्म हो जाए । इसलिए मैंने उनसे आपबीती कहानी जारी रखने की विनती की । वे जारी हुए—

''लेकिन आखिर मैं था तो साहित्यकार । बिना रचना छपे जीवन कैसे चलता । अतः एक ऐसे प्रकाशक को पकड़ा, जिसके पास पहले से ही कार-बंगला थे । मैंने उसका चयन अपनी इस नवीन धारणा के अनुसार किया था कि जिसके पास पहले से ही कार-बंगला हो, वह भला लेखक की रायल्टी की रकम क्यों मारेगा । पर ऐसा लगता है विराग, कि हम तो पैदा ही हुए हैं, मोह-भंग के लिए । और शायद यह ही किसी सच्चे लेखक की नियति भी है, और उपलब्धि भी ।

''इसी समय कुछ हुआ यों कि मेरे लंगोटिया क्लास फेलो एक राज्य सरकार में प्रौढ़ शिक्षा के निदेशक हो गये । बाल-विद्घार्थी के रूप में मैंने अनेक कविताएं और कहानियां लिखी थीं, जो स्कूल और कॉलेज की पत्रिकाओं में उसके नाम से छपती थीं । बाद में भी मैंने उसके लिए कुछ लिखा था । अतः सरकार ने लेखन के प्रति उसकी गहरी रुचि को देखते हुए उसे प्रौढ़

शिक्षा का निदेशक बना दिया । उन दिनों यह पद काफी 'पेइंग पद' माना जाता था ।

मेरे ये मित्र राजमोहन मेरी सुदामागिरी से अच्छी तरह परिचित थे । अतः मैंने उनकी सलाह पर 'जागरण' शीर्षक से एक पुस्तिकानुमा पुस्तक लिखी । और लिखकर इसी कार-बंगलावाले प्रकाशक को दे दी । पुस्तक छपी । अच्छी छपी । चूंकि मैंने अपने लेखकीय सम्मान की रक्षा करते हुए तरीके से प्रकाशक को यह बता दिया था कि राजमोहन मेरे अभिन्न मित्र हैं, इसलिए उन्होंने भी तरीके से अपनी प्रकाशकीय उदारता का परिचय देते हुए मुझे एडवांस में रायल्टी दे दी । लेकिन दुर्भाग्यवश कुछ ही दिनों में राजमोहनजी का तबादला पशुपालन विभाग में हो गया । राजमोहनजी की बदली के साथ ही प्रकाशक के भी तेवर बदल गये और मैं हताश हो गया ।

एक दिन राजमोहनजी का पत्र आया—

"प्रिय मित्र, बधाई हो । तुम्हारे भाग्य से मेरे एक मित्र शिक्षा निदेशक हो गये थे । उन्होंने 'जागरण' पुस्तक की २५ हजार प्रतियों के बल्क परचेज का ऑर्डर दिया था । बिल का भी भुगतान हो गया है । चूंकि मैं तुम्हें सरप्राइज देना चाहता था, इसलिए अब तक कुछ नहीं बताया था ।"

विराग बेटे, यह पत्र पाकर मैं गद्‌गद् हो उठा । लगा कि इस धरा पर जन्म लेना सार्थक हो गया । मैं भागा-भागा प्रकाशक के पास गया । मैंने अपने जन्मजात संकोचवश बात का सिलसिला घुमा-फिराकर चलाया—

"कैसी चल रही है चावलाजी 'जागरण' ।"

उन्होंने हमेशा की तरह भड़कते हुए पूर्व रिकॉर्डेड उत्तर दिया—

"अजी, किताबें आजकल चलती कहां हैं । वह तो चलानी पड़ती है ।"

मैंने सोचा कि वे शायद ब्याज अथवा वक्रोक्तिमूलक अलंकार में बात कर रहे हैं, और मुझे मेरे मित्र की तरह ही 'सरप्राइज' देना चाह रहे हैं । इसलिए मैंने पुनः दुहराया—

"ठंड आ रही थी । सोच रहा हूं कि जिंदगी का दूसरा सूट सिलवा लूं । (पहला सूट शादी के समय श्वसुरजी ने सिलवा दिया था) । एक प्लाट की भी बकाया किस्तें ब्याज सहित जमा करनी थीं । यदि आपकी ओर से कुछ हो जाता, तो मेरा भी 'जागरण' हो जाता है ।"

सोचो विराग कि मैं लेखक था । मैं उस पुस्तक का पिता था । माता भी मैं ही था । इसके बावजूद उसकी रायल्टी मैं इस दीन स्थिति में मांग रहा था, मानो कि भीख मांग रहा होऊं । खैर... । मेरी बात को चालाकी के साथ अनदेखी करते हुए वे पूरे आत्मविश्वास से बोले—

"लेकिन लेखकजी, रायल्टी तो तब न

मिलेगी, जब किताब बिके ।''

मुझे उस दिन पहली बार लगा कि कोई कवि वीर और रौद्र रस की चाहे जितनी भी कविताएं लिख ले, लेकिन वह मूलतः होता नपुंसक ही है । अब देखो, मेरे पाकेट में मेरी किताबों की बिक्री संबंधी मेरे दोस्त का प्रमाण-पत्र पड़ा था । इसके बावजूद मेरी यह कहने की हिम्मत नहीं हुई कि ''आप (तुम) झूठ बोल रहे हैं (हो) ।'' मैं बिना कुछ बोले चुपचाप उठा, और अपने कमरे में आ गया । तथाकथित घर आते ही मैंने गुस्से में भरकर प्रकाशक को एक अनुरोधनुमा पत्र लिखते हुए उसके साथ अपने मित्र का पत्र नत्थी किया और उसे पोस्ट बॉक्स में डालने से पहले न जाने कितनी बार झिझका और सोचा । यदि मैंने इतना चिंतन अपने कैरियर का फैसला लेने के लिए किया होता, तो सच बताऊं, म और चाहे जो कुछ भी होता, कम-से-कम लेखक तो नहीं ही होता ।

कुछ ही दिनों बाद मेरे पास प्रकाशक का टाइप किया हुआ एक पत्र आया —

''आपको पुस्तक 'जागरण' के बदले में आजीवन रायल्टी अग्रिम रूप में दी जा चुकी है । पावती की प्रतिलिपि पत्र के साथ संलग्न है । फिर भी यदि आपको कोई शिकायत हो, तो उसका निर्णय न्यायालय ही कर सकेगा ।''

भईया, इतना पढ़ना था कि हमारी लुंगी (उस समय हम लुंगी ही पहने हुए थे) खराब होते-होते बची । हमने अपना सिर पीट लिया, और फैसला किया कि अब हम रचना रचेंगे ही नहीं, ताकि न तो किताब होगी, और न ही प्रकाशक की जरूरत होगी ।''

मैं अब उनकी व्यथा को न केवल सुन रहा था, बल्कि उसे अनुभव भी कर रहा था । मुझे लगा कि शायद ऑटोवाले को भी उनकी बातों में मजा आ रहा था, इसलिए उसने जान-बूझकर रफ़्तार धीमी कर दी थी, ताकि बातों का रस ले सके । मैंने उन महान रचनाकार की वेदना के सम अपनी वेदना का तालमेल बिठाते हुए पूछा—

"लेकिन आपने तो उसके बाद भी रचनाएं कीं । पिछले साल ही आपका मोटा-सा उपन्यास आया, जिस पर अकादमी का पुरस्कार भी मिला ।"

उन्होंने मुझे समझाने के लहजे में बात की—

"वह तो ठीक है । लिखें नहीं तो बोलो क्या करें ? इस लिखायी के धंधे ने अब किसी और काम के लायक छोड़ा ही नहीं है ।"

फिर जहां तक अकादमी पुरस्कार का सवाल है, उसमें मेरे उपन्यास का योगदान कम, मेरे प्रकाशक का योगदान अधिक है । वे प्रकाशक अकादमी के अध्यक्ष और सचिव से लेकर अकादमी के चपरासी तक के प्रकाशक हैं । उन्होंने मेरी यह किताब 'लमसम रायल्टी' पर ले ली थी । लेकिन किताब बिकी नहीं । अब करें तो क्या करें । अतः उन्होंने अध्यक्ष का ध्यान मेरी रचनात्मक महानता की ओर आकर्षित किया । फलतः मुझे पुरस्कार मिल गया, और प्रकाशक की किताबें बिक गयीं ।"

अब तक महान लेखक का घर (घर नहीं कमरा) आ गया था । हम लोग उतरे । मैंने ऑटोवाले को पैसा दिया । पहली बार कोई ऑटोवाला बिना तकरार किये पैसे लेकर चुपचाप चला गया । शायद उसे महान लेखक पर दया आ गयी हो । मैंने भी उनसे इजाजत चाही । उन्होंने कुछ देर और बैठने की औपचारिकता करने के बाद इजाजत दे दी ।

मैं अपने घर (फ़्लैट) की ओर पैदल चल दिया । अब मेरे सामने रास्ता साफ था । मैंने निर्णय ले लिया था कि मैं लेखक नहीं बल्कि प्रकाशक बनूंगा । यदि इस जन्म में नहीं बन सका, तो ईश्वर से प्रार्थना करुंगा कि वह कम-से-कम अगले जन्म में तो मुझे प्रकाशक बना ही दे । और यदि भगवान और भी अधिक खुश हुआ, तो उनसे कहूंगा कि इस समय जितने भी प्रकाशक हैं, उन्हें अगले जन्म में मेरे यहां छपनेवाले लेखक बना दें ।

— **टाइप-५/२४-ए, राष्ट्रपति एस्टेट,**
नयी दिल्ली-११०००४

व्यंग्य

भावी पति-पत्नी जेवरों की एक दूकान में विवाह की अंगूठी खरीदने गये । एक कीमती अंगूठी पसंद करते हुए भावी पत्नी ने प्रौढ़ दूकानदार से पूछा, ''विवाह की अंगूठी को सुरक्षित रखने का सबसे बेहतर उपाय ।''

''दिन में तीन बार उसे बरतन साफ करने के पानी में डुबोया कीजिए ।'' उत्तर मिला ।

●

—''फादर, एक उलझन है, बाइबिल में लिखा है कि ईश्वर ने 'जब जॉब की परीक्षा ली तो सब कुछ ले लिया केवल पत्नी को छोड़कर । क्यों ?''

—''इसलिए बेटे कि ईश्वर जॉब को ली हुई चीजें दुगुनी कर लौटाना चाहते थे । अगर पत्नी को भी छीन लेते तो उन्हें उसे दो पत्नियां देनी पड़तीं और ईश्वर यह अन्याय नहीं करना चाहते थे ।''

●

—''मैंने जिंदगी में तुम्हें खतरों से सही-सलामत निकाला है, है न ?'' पति ने पत्नी से कहा ।

—''हां, और मेरा खयाल है कि तुमने कोई खतरा हाथ से जाने भी नहीं दिया ।''

●

—''वे तुम्हें जेल में नहीं डाल सकते ।'' टेलीफोन पर अपने मुवक्किल को आश्वस्त करते हुए वकील ने कहा ।

—''खूब ! क्या तुम सोचते हो कि मैं पब्लिक बूथ से तुम्हें टेलीफोन कर रहा हूं ।'' झुंझलाया हुआ उत्तर मिला ।

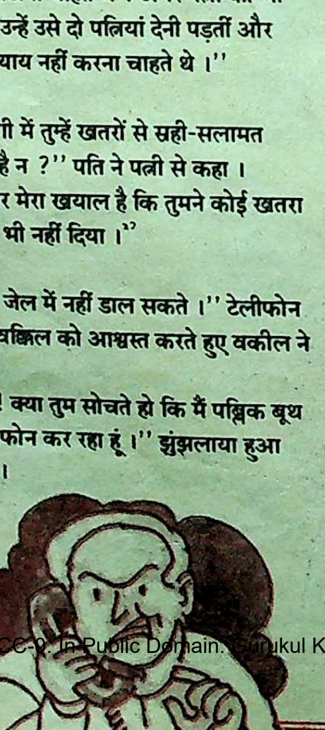

सभाध्यक्ष ने कहा, ''आज से पहले मैंने इसे कभ देखा ही नहीं । खैर, यदि वह अच्छा वक्ता है तो ह सब उसे सुन लें और यदि वह अच्छा वक्ता नहीं है तो फिर उसे सह लें ।''

●

नेताजी धुंआधार भाषण देते हुए बोले, ''भाइयों, आपने मुझे पिछले चुनाव में जिताया थ तो मैंने आपके गांव में नलों की व्यवस्था की थी, यदि आप उन नलों में पानी चाहते हैं तो इस बार भ वोट मुझे दीजिए !''

●

''क्या नारी का सौंदर्य ईश्वर की ओर से पुरुषों को भेंट है ?''

''नहीं, यह तो रिश्वत है ।''

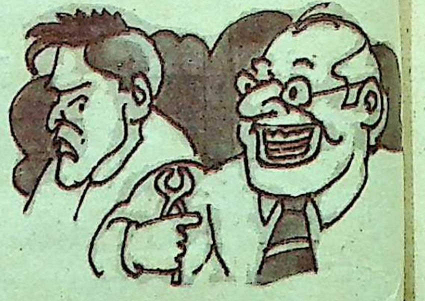

●

''यह दांत वह नहीं है जिसे मैं आपसे उखड़वान चाहता था !'' झल्लाकर दांत के रोगी ने डेंटिस्ट से कहा !

''आप किसी बात की चिंता न करें ! मैं क्रमानुसार उसी दांत को उखाड़ने जा रहा हूं ।'' डेंटिस्ट ने कहा !

●

अचानक बस अपने बस स्टाप पर रुकी । झटके से दरवाजे पर खड़ा एक लड़का स्टैंड के पास खड़े गधे के पैरों पर गिर गया । खिड़की के निकट खड़ी एक लड़की हंसती हुई बोली, ''अपने बड़े भाई को प्रणाम कर रहे हो क्या ?''

लड़का, ''नीचे उतर आइए भाभीजी आपके पांव छूकर आशीर्वाद भी ले लूं ।''

तरंग

कुछ परिभाषाएं

मंत्रिमंडल
मन 'तर'
दिमाग 'डल'

●

वकील
जंगदार कील

●

आज का प्रेम
सड़ी लकड़ी का फ्रेम

●

डंकल
आज डंक
विष कल

●

दंगा
शैतान कपड़े में
इनसान नंगा

—विषाद कुमार 'व्यथित'

नेता (१)

मधुर बोल कुटिल मुसकान
पास है, जिसके
वादों की खान ।
देकर आश्वासन ठग लेता
नेता है, उसका नाम ।

नेता (२)

वे गिरगिट की तरह
रंग बदलते हैं ।
खुद ही करते हैं
अमन की बातें
खुद ही फसाद की
जड़ होते हैं ।

—स्वाति खरे

कारण

क्या कहा
वे कॉलिज में
पढ़ाते हैं ?

लगता है छात्र
घर पर पढ़ने
नहीं आते हैं !

प्रश्न-उत्तर

पत्नी से कौन
नहीं डरता ?

एक वही
जो शादी
नहीं करता !

ऊर्जा

खाने के
आरोपों पर
वे झल्लाये

खायें नहीं
तो क्या देश
भूखे पेट चलायें ?

—इंद्रजीत कौशिक

सत्याग्रह आंदोलन और गांधी की स्मृति

गांधीजी ने चंपारण में सत्याग्रह कर अंगरेजों के अत्याचारों का विरोध ही नहीं किया था, दीन-हीन समझी जानेवाली ग्रामीण जनता में एक नयी शक्ति एवं स्फूर्ति का भी संचार किया था । गांधीजी को चंपारण आने के लिए किस तरह अनुरोध किया गया, उन्होंने वहां किस तरह आंदोलन किया इत्यादि बातों पर प्रस्तुत है उन लोगों के संस्मरण जिन्होंने गांधीजी से भेंट की थी, उन्हें निकट से देखा था और प्रेरणा पायी थी ।

ये संस्मरण प्रस्तुत कर रहे हैं श्री शंकर दयाल सिंह

नौ जनवरी, १९१५ में गांधीजी दक्षिण अफरीका से भारत पहुंचे और लगभग दो वर्षों बाद १० अप्रैल, १९१७ को पहली बार उनका बिहार आगमन हुआ । गांधीजी चंपारन की राह में पटना और मुजफ्फरपुर तीन-चार दिनों तक रुके । उन्हें बिहार लाने का श्रेय एक मामूली-से किसान कार्यकर्ता श्री राजकुमार शुक्ल को है । राजकुमार शुक्ल चंपारन के उन हजारों किसानों में से एक थे जो निलहों के शोषण के शिकार थे ।

१९१७ में गांधीजी ने चंपारन में अपने सत्याग्रह की शुरुआत की, जिसने उन्हें पूरे देश में चर्चित और विश्व में प्रसिद्ध किया । उस समय तक दक्षिण अफरीका से आये गांधी, मोहनदास कर्मचंद गांधी थे लेकिन चंपारन-सत्याग्रह के बाद वे 'महात्मा गांधी' के रूप में प्रसिद्ध हो गये ।

५ मार्च, १९४७ को स्वयं गांधीजी ने पटना के गांधी मैदान में यह उद्गार प्रकट किये— ***''बिहार ने ही मुझे सारे हिंदुस्तान में जाहिर किया । उसके पहले तो मुझे कोई जानता भी न था । बीस साल अफरीका में रहने के कारण मैं हब्शी-सा बन गया था । उसके बाद मैं चंपारन में आया और सारा हिंदुस्तान जाग उठा । पहले मैं जानता भी न था कि चंपारन कहां है ? लेकिन जब यहां आया तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मैं बिहार के लोगों को सदियों से जानता था और वे भी मुझे पहचानते थे ।''***

आज से लगभग पच्चीस वर्षों पूर्व जब गांधी शताब्दी का आयोजन किया जा रहा था, मैंने अनेक लोगों से मुलाकातें कर उनसे ऐसे संस्मरण लिखवाये थे, जिनमें सरलता के साथ गांधीजी के प्रथम दर्शन की झांकी मिलती थी । निश्चय ही ऐसे संस्मरणों से एक ओर जहां हमारा साहित्यिक भंडार भरता है, वहीं दूसरी ओर उस

समय के इतिहास पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

जिन लोगों के संस्मरणों के सहारे मैं १९१६ और १९१७ को आज याद कर रहा हूं, वे हैं—श्री राम दयाल प्रसाद साह, श्री रामनवमी प्रसाद, श्री विशंभर प्रसाद एवं श्री सरयू प्रसाद। आज इनमें से कोई भी हमारे बीच नहीं है।

सरिता और सागर का मिलन

श्री रामदयाल प्रसाद साह ने मेरे अनुरोध की रक्षा करते हुए मुझे पत्र में लिखा था, 'जीवन की इस संध्या में जबकि मैं इक्कासी वर्षों का हो चुका हूं, जिससे शरीर के अवयव जवाब दे रहे हों, स्मृतियां क्षीण होती जा रही हों, वहां संस्मरण पूर्ण रूप से लिख पाना मेरे लिए कठिन है। फिर भी जो बन पड़ा है, आपके स्नेहपूर्ण आग्रह को ध्यान में रखते हुए पहली मुलाकात संबंधी संस्मरण का एक संक्षिप्त रूप भेज रहा हूं।'

सन १९१६ के दिसम्बर की बात है। मैं, श्री गोरख बाबू वकील, श्री ब्रजकिशोर बाबू वकील तथा अन्य स्थानीय लोगों के साथ कांग्रेस में भाग लेने लखनऊ गया था। विचार यह था कि अपने जिले चंपारन के किसानों पर गोरे निलहों के अत्याचार, अपमान और उत्पीड़न की कहानी कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं तक पहुंचायी जाए। यहां यह बता देना अप्रासंगिक न होगा कि ब्रजकिशोर बाबू यदा-कदा दरभंगा से आकर गोरखबाबू के साथ स्थानीय लोगों की मदद निलहों के अत्याचारों के विरुद्ध किया करते थे। निलहों का अत्याचार हम चंपारनवासियों पर उस समय अपनी पराकाष्ठा पर था। यहां तक कि बहू-बेटियों की इज्जत दिन-दहाड़े लूट लेना इन निलहों के लिए एक मन-बहलाव से अधिक कुछ नहीं महत्त्व रखता था। घर में आग लगवा देना तो एक साधारण बात थी। साधारण लोग तो सदा त्रस्त और भयभीत रहा करते थे।

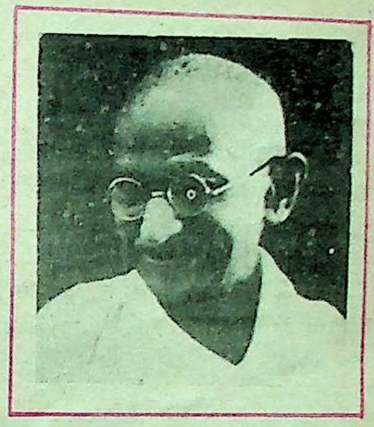

अस्तु, अपने पूर्व निर्णयानुसार हम लोगों का एक दल चंपारन के प्रतिनिधि स्वरूप चंपारन की व्यथा छिपाये २३ सितम्बर, १९१६ को लखनऊ के लिए प्रस्थान किया। दल में दरभंगा से श्री ब्रजकिशोर बाबू वकील, मोतिहारी से मैं (रामदयाल प्रसाद साह) तथा श्री गोरख बाबू वकील, बेतिया से श्री हरवंश सहाय तथा श्री पीर मुहम्मद मुनीश और नरकटियागंज से श्री संत राउत तथा श्री राजकुमार शुक्ल आदि सम्मिलित थे। श्री राजकुमार शुक्ल सतबरिया के श्री संत राउत के सहायक थे। वे उनके कार्य से यदा-कदा मेरे

पास आया करते थे । उस समय सतवरिया का इलाका एमन साहब के क्षेत्र में पड़ता था । एमन साहब अमोलबा का एक क्रूर और कुचरित्र निलहों में से था । उसी ने श्री संत राउत के घर में प्रतिशोधवश आग लगवा दी थी । इसी दुखड़े के साथ श्री हरवंश बाबू मास्टर के कहने पर श्री संत राउतजी ने श्री राजकुमार शुक्ल को मेरे पास भेजा था ।

हम लोग सुबह की गाड़ी से बगहा होते हुए चले । उन दिनों गोरखपुर के लिए बगहा होकर भी गाड़ी जाती थी । हम लोग गोरखपुर से संध्या समय गाड़ी बदलकर प्रातःकाल लखनऊ पहुंच गये । ठहरने का स्थान कांग्रेस कैंप जिलानुसार पूर्वनिश्चित था । अतः प्रतिनिधियों के लिए सुरक्षित टेंट में ठहरने की व्यवस्था सरलतापूर्वक हो गयी । दिनभर के काम के पश्चात संध्या समय श्री राजकुमार और मैं अधिवेशन की झांकी लेने के लिए निकले । कुछ आगे बढ़ने पर पूज्य लाकमान्य तिलकजी आते हुए दिखायी पड़े । हम लोग मार्ग में ही उनसे मिले तथा चंपारन की दुःस्थिति से उन्हें अवगत कराया । परंतु उन्होंने अपना उद्देश्य सेल्फ गवर्नमेंट लेना बतलाकर तत्काल चंपारन की सहायता करने में अपनी असमर्थता प्रकट की । आगे बढ़ने पर महामना मालवीयजी के दर्शन हुए । उनसे भी चंपारन का दुखड़ा कह सुनाया । उन्होंने भी काशी विश्वविद्यालय के झंझटों के कारण समयाभाव बतलाया । पर साथ ही उन्होंने पूज्य बापू को इन सारी बातों से अवगत कराने के लिए कहा । उनके विचार से वे ही चंपारन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति थे । दूसरे दिन तिथि २५ को हम और शुक्लजी को मालवीयजी के निर्देशानुसार गांधीजी से मिलने प्रातःकाल उनके टेंट में गये । पहुंचने पर पाया कि गांधी दातुन से मुख धो रहे थे । चेहरे पर शांति और गंभीरता एक साथ विराजमान थी । मेरे लिए वह क्षण अविस्मरणीय है । वही मेरी गांधीजी से पहली मुलाकात थी । यद्यपि मुझे गांधीजी का प्रथम दर्शन तो गत वर्ष ही (१९१९ ई.) काशी विश्वविद्यालय के शिलान्यास के अवसर पर ही काशी में हो चुका था । पर, यह मेरी उनसे मुलाकात थी । सरिता और सागर का मिलन था ।

प्रकृतिस्थ होने पर मैंने ब्यौरेवार अपने जिले की सारी व्यथा कह सुनायी । वे बड़े ही धैर्यपूर्वक सुनते रहे । उनका मुखमंडल पहले से अधिक गंभीर हो गया । मैं अपनी बात समाप्त कर उनकी ओर प्रतिक्रिया के लिए उत्सुक हृदय से देखने लगा । मौन टूटा । व्यथित स्वर में उन्होंने कहा कि 'तुम लोगों का दुख तुम्हारे कथन से कहीं अधिक जान पड़ता है ।' हृदय को थोड़ा संतोष मिला । बापू कम-से-कम हम लोगों के दुखों से प्रभावित तो हुए, विश्वास तो किया । उन्होंने पूछा, 'क्या चाहते हो ?' मैंने कहा, 'चंपारन के संबंध में कांग्रेस में एक प्रस्ताव पास करा दिया जाए, पर उन्होंने कहा कि वे स्वयं चंपारन की स्थिति को देखना चाहेंगे । साथ ही उन्होंने कहा कि अहिंसात्मक ढंग से दुखों का सामना करने पर ही दुखों का अंत होगा । उन्होंने अधिकाधिक चंपारनवासियों को इसके लिए जेल जाने को तैयार रहने पर जोर डाला । एतदर्थ, मैंने बड़े ही उत्साह से चंपारन चलने का आमंत्रण किया । इस पर उन्होंने मुझे अप्रैल माह में कलकत्ते

बुलाया, क्योंकि अप्रैल में कलकत्ता जाना था । कलकत्ते से ही उनके चंपारन आने की बात थी ।

अब गांधीजी से चंपारन आमंत्रण की स्वीकृति पाकर हम लोग फूले नहीं समा रहे थे । ऐसा महसूस होता था कि चंपारनवासियों का आधा कष्ट उसी क्षण दूर हो गया हो ।

अप्रैल आने पर गांधीजी को लाने के लिए कलकत्ते आना था । बड़ी इच्छा थी कि गांधीजी को अपने साथ लाऊं ? परंतु पारिवारिक कार्यों की उलझनों के कारण मैं नहीं जा सका । अतः अपने सहयोगी श्री शुक्लजी को सारी व्यवस्था के साथ भेजा, जिनके साथ गांधीजी आये । और मोतिहारी में ही रहकर उन्होंने चंपारन के लिए कार्य किया ।

मोतिहारी में उनकी सारी व्यवस्था तथा सेवा करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था । साथ ही साहू परिवार ने गांधीजी के साथ काफी सहयोग किया । गांधीजी द्वारा चंपारन में किये कार्यों का वर्णन श्रद्धेय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भू.पू. राष्ट्रपतिजी) ने अपनी पुस्तक में किया है ।

यह है गांधीजी से मेरी पहली मुलाकात की छोटी-सी कहानी जो मेरे लिए बड़े गौरव और अमूल्य निधि के रूप में आज भी मानसपटल पर सुरक्षित है ।

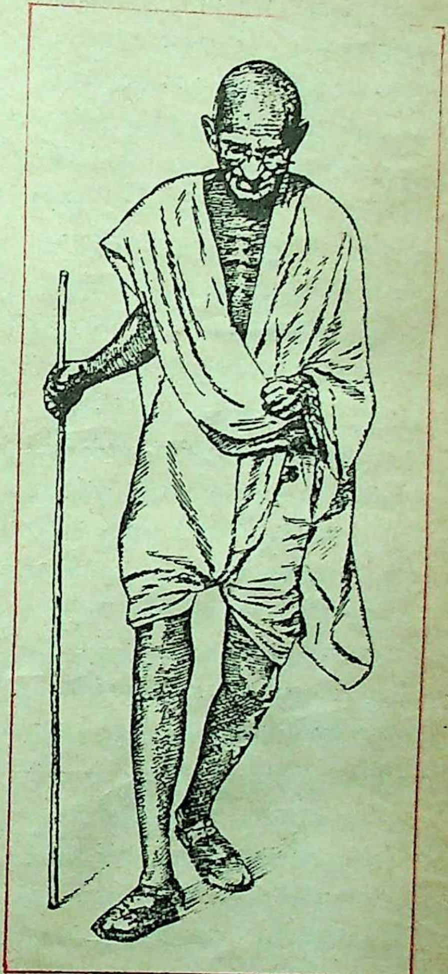

सरकार को झुकना पड़ा

महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत में पहला सत्याग्रह चंपारन में निलहों के अत्याचारों के खिलाफ हुआ । रामनवमी बाबू गांधीजी की सेना के एक महत्त्वपूर्ण और सफल सिपाही थे । बापू ने अपनी आत्मकथा में ऐसे महान त्यागी, तपस्वी, कर्मठ, निर्भीक एवं राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत व्यक्तियों का स्वयं वर्णन किया है । उन्हीं रामनवमी बाबू की कलम से—

गांधीजी का दर्शन मुझे पहले-पहल सन १९१६ में लखनऊ कांग्रेस के अवसर पर हुआ था । चंपारन में उस समय निलहे साहबों के जुल्म से वहां की प्रजा ऊब गयी थी । पंडित राजकुमार शुक्ल वहां के एक

साहसी गृहस्थ थे जो स्वयं इन कोठीवालों से सताये गये थे । उन्होंने गांधी से भेंट की और चंपारन की रैयतों की दुखभरी कहानी सुनायी और बाबू ब्रजकिशोर प्रसादजी द्वारा उन्हें चंपारन में आने का आग्रह किया । वहां की प्रजा की हालत सुनकर उनका दिल पिघल गया और उन्होंने अगले अप्रैल तक वहां जाने का वादा किया । यह हाल सुनकर वहां की प्रजा उनके आने के दिन गिनने लगी ।

महात्मा अपने वादे के अनुसार अप्रैल १९१७ के दूसरे सप्ताह में पटना होते हुए पहले-पहल मुजफ्फरपुर पधारे और यहां श्री जे.बी. कृपलानी के साथ, जो उस समय यहां के कॉलेज के प्रोफेसर थे, ठहरे । वहां हम लोग और कुछ वकील महात्माजी से जाकर मिले और यहां के नीलवारों का हाल सुनाया । हम लोगों की बातों को सुनकर महात्माजी ने निश्चय किया कि वह शीघ्र से शीघ्र चंपारन जाकर वहां की नीलवरों तथा रैयतों के बीच अनबन तथा उसकी जांच करेंगे ।

इस संबंध में उन्होंने तिरहुत डिवीजन के कमिश्नर तथा प्लैंटर्स एसोसिएशन के मंत्री से यहां भेंट की । पर उन लोगों ने महात्माजी को चंपारन जाने से मना किया । पर इन सब बातों से महात्माजी विचलित होनेवाले न थे । अतः वह १५ अप्रैल, १९१७ को मुझे तथा बाबू धरनीधर वकील दरभंगा को अपने साथ लेकर मोतिहारी के लिए रवाना हो गये और वहां जाकर बाबू गोरख प्रसाद वकील के मकान पर ठहरे । वहां पहुंचकर महात्माजी ने निश्चय किया कि वह हम लोगों को साथ लेकर दूसरे दिन जसौलीपट्टी गांव जाएंगे, जहां से नीलवरों के अत्याचार की खबर आयी थी । अतएव निश्चित प्रोग्राम के अनुसार हम लोग महात्माजी के साथ उस गांव के लिए एक हाथी पर रवाना हुए ।

कुछ ही दूर जाने के बाद जब महात्माजी एक गांव में उतरकर वहां की प्रजा का हाल सुन रहे थे कि इसी बीच एक पुलिस के दरोगा ने महात्मा को खबर दी कि उन्हें जिला मजिस्ट्रेट ने सलाम किया है । महात्माजी ने हम लोगों को आवश्यक आदेश देकर आगे बढ़ने को कहा और वह स्वयं दरोगा के साथ एक बैलगाड़ी पर मोतिहारी लौटे । रास्ते में ही उन्हें जिला मजिस्ट्रेट की ओर से एक नोटिस दफा १४४ धारा की मिली, जिसमें उनको चंपारन छोड़कर शीघ्र चले जाने का आदेश था । यह नोटिस तिरहुत डिवीजन के कमिश्नर के आदेशानुसार दिया गया था । महात्माजी ने नोटिस पाकर जिला मजिस्ट्रेट को फौरन उत्तर में लिख भेजा कि वह जिस उद्देश्य से वहां आये हैं, उसे छोड़कर नहीं जा सकते हैं तथा इस अवहेलना के लिए जो सजा हो वह भुगतने के लिए तैयार हैं । आखिर उन्हें १४४ धारा की अवहेलना के जुर्म में मजिस्ट्रेट के इजलास में ता १८ अप्रैल, १९१७ को हाजिर होना पड़ा । वहां हाजिर होकर वे जुर्म स्वीकार कर उसकी सजा भुगतने को तैयार हो गये ।

मजिस्ट्रेट महात्माजी के बयान को सुनकर असमंजस में पड़ गया और उस समय कोई हुकुम न देकर प्रांतीय सरकार से इस विषय में राय पूछी । इस बीच में प्रांत तथा बाहर के भी मुख्य-मुख्य नेता जैसे श्री राजेन्द्र प्रसाद, श्री ब्रजकिशोर प्रसाद, श्री सी.एफ. ऐंड्रूज, श्री पोलक आदि वहां इकट्ठे हो गये और अपना

सहयोग देने के लिए तैयार हो गये । इधर खबर मिलने पर प्रांतीय सरकार ने मजिस्ट्रेट को मुकदमा उठा लेने का हुकुम देकर उन्हें जांच में हर तरह से मदद देने का आदेश दिया । हम लोगों ने महात्माजी के साथ लगभग छह महीने तक चंपारन में रहकर करीब दस हजार रैयतों का बयान दर्ज किया । अंत में सरकार ने एक जांच कमेटी कायम की, जिसके एक सदस्य महात्माजी भी थे । अंत में जांच कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर नया कानून 'चंपारन ऐग्रेरियन एंक्ट बना, जिसके जरिये वहां के रैयतों को हर प्रकार से लाभ मिला और वहां के नीलवर एक-एक करके चंपारन छोड़कर चले गये । यह महात्मा गांधी का भारतवर्ष में प्रथम सत्याग्रह आंदोलन का फल था, जो स्मरणीय रहेगा ।

पगड़ी-मिरजईवाले महात्मा

श्री सरयू प्रसाद पुराने गांधीवादी रचनात्मक कार्यकर्त्ता : समाजसेवा:स्वतंत्रता-आंदोलन के एक प्रमुख सेनानी : मंत्री, बिहार राज्य गांधी-स्मारक संग्रहालय : मंत्री-गांधी-जन्म शताब्दी समारोह समिति ने अपना संस्मरण इस प्रकार भेजा था—

साल १९१७ का था । महीना और दिन याद नहीं । निलहे कोठीवालों के अत्याचार से पीड़ित चंपारन के किसानों को त्राण दिलाने के लिए गांधीजी ने जो अपने ढंग का नया, निराल और निर्भीक ढंग सरकारी अधिकारियों के आदेश के विरुद्ध अखतियार किया उससे बिजली के समान बिहार के कोने-कोने में उनका नाम फैल गया था । दूर-दूर से लोग पगड़ी, मिरजईवाले महात्मा के दर्शन के लिए मोतिहारी में उनके निवास पर भीड़ लगाये रहते थे ।

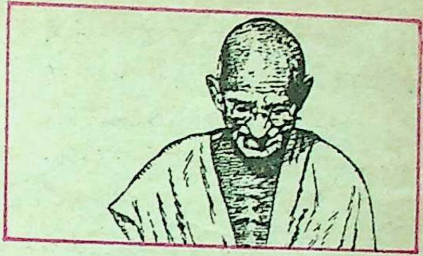

एक दिन पटना में यह खबर पहुंची कि ये महात्मा किसी काम से चंपारन से पटना होकर अन्यत्र कहीं जानेवाले हैं । दूसरे ही दिन ११ बजे दिन में पटना कॉलेज के हाते में यह समाचार फैल गया कि वह पटना आ गये और फ्रेजर रोड में बैरिस्टर हक साहब के मकान पर ठहरे हुए हैं । साथ ही यह भी सूचना मिली कि वे तीसरे पहर की गाड़ी से चले जानेवाले हैं । कॉलेज के प्रारंभिक वर्ग इंटरमीडिएट साइंस का मैं उस समय विद्यार्थी था । अपने साथियों के साथ महात्माजी के दर्शन की प्रबल इच्छा रखता था । यह अवसर हाथ से निकल न जाए, यह सोच हम लोग पैदल कॉलेज से निकल पड़े । दौड़ते, हांफते गांधी-मैदान पार करते हम लोग हक साहब की कोठी पर पहुंचे ।

हक साहब की कोठी की बरसाती के सामनेवाली सबजी पर हम लोग बैठ गये । किसी ने जाकर भीतर खबर दी । दो-तीन मिनट में ही पगड़ी और मिरजईधारी महात्मा हम लोगों के सामने उपस्थित हो गये । झुककर हम लोगों ने उन्हें प्रणाम किया । तुरंत एक कुरसी लायी गयी । उस पर हम लोगों के सामने वे बैठ

गये । हम लोगों ने बतलाया, हम दर्शनार्थ उपस्थित हुए हैं, सभी पटना कॉलेज के विद्यार्थी हैं ।

उस समय पटना कॉलेज के प्रिंसिपल जेकसन साहब थे । चंद मास पूर्व पटना कॉलेज में एक घटना हो गयी थी । प्रिंसिपल से अनुमति लेकर पटना कॉलेज के मिंटो हिंदू होस्टल के हम विद्यार्थियों ने अनंत पूजा का समारोह किया था । पूजा के अवसर पर घंटी भी बजी थी । घंटी की बात से प्रिंसिपल साहब रोष में आ गये । उन्होंने कुछ विद्यार्थियों को यह कहकर सजा दी कि उन्होंने पूजा की अनुमति दी थी, न कि घंटी बजाने की, विद्यार्थियों का कहना था कि घंटी बजाना पूजा का ही एक अंग था । पर प्रिंसिपल साहब को यह मान्य नहीं । इधर मुसलिम होटल में कुछ विद्यार्थियों ने सुबह नमाज के समय अजान दिया जिससे भी प्रिंसिपल खफा हुए । इन्हीं बातों को लेकर कॉलेज के विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी थी । हड़ताल शहर के कुछ गणमान्य व्यक्तियों के बीच में पड़ने से समाप्त की गयी थी । गांधीजी ने हम लोगों से मिलते ही इस हड़ताल के संबंध की सारी बातें संक्षेप में उनके सामने रखीं । तब से जिज्ञासाभरी नजरों से देखते हुए बोले— क्या कुछ पूछना है ?

मेरे मन में कई तरह के प्रश्न उठ रहे थे । मैंने नम्र भाव से संकोच के साथ कहा, 'मेरे दो प्रश्न हैं, एक यह कि आप अहिंसा में विश्वास करते हैं, फिर आप यूरोपीय युद्ध में अंगरेजों की मदद के लिए लोगों को रंगरूट में भरती होने के लिए क्यों कहते हैं ? दूसरा यह है कि देश के स्वतंत्र हो जाने पर यदि कोई बाहर से आक्रमण हो तो क्या हम अहिंसा से अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा कर सकेंगे ?

गांधीजी ध्यान से बातें सुन रहे थे । प्रश्न के समाप्त होते ही उनके होंठों पर मुसकराहट दौड़ पड़ी । फिर बोले , ''यह ठीक है कि मैं अहिंसा में विश्वास करता हूं, यह भी ठीक है कि मैं लोगों से लड़ाई के लिए रंगरूट में भरती होने की अपील करता हूं पर यह समझना चाहिए कि यह अपील किनके लिए है । ज्यादा लोग अहिंसा में नहीं हिंसक प्रतिकार में विश्वास करते हैं । जबकि सरकार भीषण युद्ध में फंसी हुई है, कोई कारण नहीं जो अपने विश्वास के अनुसार लोग सरकार की सेना में भरती होकर मदद न करें । जो अहिंसा में विश्वास करते हैं उन्हें लड़ाई में भरती तो नहीं ही होना चाहिए बल्कि भरती होने के लिए उन्हें मजबूर किया जाए तो जो भी सजा इसके लिए उन्हें भुगतनी पड़े, उन्हें इनकार करना चाहिए ।''

यह वाक्य समाप्त हो ही रहा था कि इतने में एक सज्जन ने कोठी से आकर बोला, ''गाड़ी का समय हो रहा है, अब हम लोगों को तुरंत स्टेशन चलना है ।'' महात्मा फिर एक बार मुसकराते हुए मेरी ओर देखते हुए बोले, ''दूसरे सवाल का जवाब तो बाकी रह गया । अच्छा फिर कभी आगे मौका मिलेगा तो देखा जाएगा ।''

यह है राष्ट्रपिता के प्रथम दर्शन का संस्मरण जो आज भी मेरी स्मृति पर विराजमान है ।

—१५, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड
नयी दिल्ली-११०००१

एक यात्रा बंदूकों के साये में

• सुरेश डुगर

अमरनाथ की यात्रा हर यात्री के लिए स्मरणीय होती है, क्योंकि वह ४६ कि. मी. लंबे, खतरनाक तथा बर्फीले मार्ग को तय करके १३,५०० फुट की ऊंचाई पर स्थित गुफा में बर्फ से स्वतः निर्मित शिवलिंग के दर्शन कर पाता है, लेकिन इस बार की यात्रा विशेष रूप से स्मरणीय रहेगी, क्योंकि 'प्रतिबंध' से आरंभ होनेवाली यह यात्रा इस बार बंदूकों के साये में हुई ।

बंदूकों के बल पर लोगों को इसमें भाग न लेने देने के लिए धमकानेवाले आतंकवादियों के प्रयासों को उस समय धक्का लगा, जब वह यात्रा बंदूकों के कारण ही सफल हो गयी । यह बात अलग है कि ये बंदूकें भारतीय सुरक्षा बलों की थीं, जिन्हें सैकड़ों की संख्या में इस सारे क्षेत्र में आतंकवादियों की बंदूकों से निपटने के लिए तैनात किया गया था ।

इस पवित्र यात्रा पर आतंकवाद का काला साया उस समय पड़ा, जबकि गत वर्ष ५ जुलाई को पाक अधिकृत कश्मीर के विदेशी भाड़े के सैनिकों के आतंकवादी दल हरकत-उल-अंसार ने श्रीनगर में हजरत बल दरगाह के बाहर स्थापित सुरक्षा बलों के बंकरों को मुद्दा बनाते हुए, इस यात्रा पर 'प्रतिबंध' घोषित किया और यात्रियों को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी । इस प्रतिबंध को हटाने के लिए यह शर्त भी रखी गयी कि हजरत बल के बंकरों को बिना शर्त हटाया जाए । हालांकि, इस प्रतिबंध में

आतंकवादियों के निर्देशों का उल्लंघन करके कश्मीरी यात्रियों को चाय पिलाते हुए । पीछे सुरक्षाकर्मी सतर्कता बरतते हुए ।

हरकत-उल-अंसार अकेला नहीं, बल्कि एक **अन्य खतरनाक** आतंकवादी संगठन हिज्बुल **मुजाहिदीन** सहित करीब ११ दलों ने इसका **समर्थन** किया था।

जब यात्रा का दिन आया, तो इसमें भाग लेनेवालों की संख्या नगण्य ही थी, साथ ही उनके चेहरों पर अलिखित भय भी था। यह भय सिर्फ यात्रियों में ही नहीं, बल्कि सरकारी तंत्र तथा यात्रा के आयोजकों में भी था। हालांकि, केंद्र सरकार एक बार फिर झुककर आतंकवादियों की शर्तों को मानते हुए हजरतबल से बंकरों को ६ अगस्त को हटा चुकी थी, लेकिन हरकत-उल-अंसार अपने प्रतिबंध से पीछे हटने को तैयार नहीं था। वह इसके लिए नयी-नयी शर्तें जोड़ता जा रहा था। वह चाहता था कि जम्मू-कश्मीर की उन सभी मसजिदों के ताले खोले जाएं, जो सरकार के कब्जे में हैं (वैसे यह आश्चर्यभरी शर्त थी क्योंकि, जम्मू-कश्मीर में कोई ऐसी मसजिद नहीं है, जिस पर ताला लगाया गया हो), दूसरे, सरकार यह आश्वासन दे कि कश्मीर की जनता के धार्मिक मामलों में दखलंदाजी नहीं की जाएगी। तीसरे, अमरनाथ यात्रा बिना सुरक्षा बलों की तैनाती के होगी।

हरकत-उल-अंसार द्वारा प्रतिबंध को हटाने के लिए रखी गयी नयी शर्तों के कारण आतंकवादी दलों में आपसी मनमुटाव बढ़ गया और हिज्बुल मुजाहिदीन ने अपने आप को अलग कर लिया।

हरकत-उल-अंसार इस प्रतिबंध में बिलकुल अकेला पड़ गया था, लेकिन वह पीछे नहीं हट सकता था क्योंकि, पाकिस्तानी सेना की खुफिया संस्था आई. एस. आई. ऐसा नहीं चाहती थी, क्योंकि वह अपनी योजना के अंतर्गत भारत में सांप्रदायिक दंगे करवाना चाहती थी। क्योंकि, यात्रियों पर हुए हमले की

गुफा में प्रवेश से पूर्व मेटल डिटेक्टर द्वार से गुजरना आवश्यक है।

प्रतिक्रिया में देशभर में दंगे भड़क सकते थे ।

सेना की सक्रियता

सरकार ने तत्परता दिखाते हुए इस यात्रा के प्रबंध तेज कर दिये, क्योंकि, उसे कई मोरचों पर जूझना था । इसमें सबसे बड़ा मोरचा उसके कर्मचारियों तथा स्थानीय लोगों द्वारा इस यात्रा में भाग न लेने के कारण खड़ा हुआ था ।। अनंतनाग जिले में तैनात सभी सरकारी कर्मचारियों व अधिकारियों ने आतंकवादियों के डर से इस यात्रा के प्रबंधों में शामिल होने से इनकार कर दिया था । सरकार ने जम्मू से करीब ३०० सरकारी कर्मचारी तथा २,००० पुलिसकर्मी रवाना किये । हजारों की संख्या में सुरक्षाकर्मी— जिनमें सेना, सीमा सुरक्षा बल तथा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान शामिल थे— सारे मार्ग में तैनात किये । स्थानीय दुकानदारों तथा व्यापारियों की कमी से निपटने के लिए सुरक्षा बलों द्वारा लंगरों का आयोजन किया गया, जिन्हें सभी खाद्य सामग्री राज्य सरकार ने हवाई मार्ग से पहुंचायी । कई स्वयंसेवी संगठनों ने भी लंगर लगाये, जिनके बारे में यही कहा जा सकता है कि अगर वे न होते, तो बहुत कठिनाई पैदा हो जाती । सरकार ने ३५,००० यात्रियों की रहने-खाने-पीने की व्यवस्था की थी, क्योंकि, सरकार का अनुमान था कि आतंकवादी धमकी के कारण इससे अधिक यात्री नहीं आएंगे ।

इस बार यात्रियों को अभूतपूर्व सुरक्षा प्रबंधों के दौर से गुजरना पड़ा क्योंकि, सरकार तथा सुरक्षा बल आतंकवादियों को कोई मौका देना नहीं चाहते थे ।

चप्पे-चप्पे पर निगरानी

जम्मू से लेकर अमरनाथ की गुफा तक के ३२८ कि.मी. लंबे मार्ग पर चप्पें-चप्पे पर तैनात सैनिकों की मौजूदगी हमें यह अहसास बराबर दिलाती रही कि हमारी सुरक्षा का कितना तगड़ा

गुफा के बाहर लगी लोगों की कतार

प्रबंध किया गया है तथा आतंकवादी धमकी का खतरा भी कितना गंभीर है। जिस भी पहाड़ी पर नजर जाती, वहां हाथों में अत्याधुनिक हथियार थामे, पीठ पर वायरलेस सेटों को टांगे तथा मोर्टार, रॉकेट, लांचर व मशीनगनों की तैनाती के मोरचे दिखायी देते थे।

हेलिकोप्टरों की गड़गड़ाहट कुछ पलों के लिए यात्रियों का ध्यान अवश्य बंटाती थी, जो हवाई कवर देने के लिए लगातार उड़ानें भरते थे, लेकिन यह शोर अस्थायी चौकियों में मोरचा जमाये सैनिकों का ध्यान नहीं बंटा पाता था क्योंकि, वे लगभग एक माह पूर्व स्थित इन चौकियों में तैनाती के कारण इस शोर के वे आदी हो चुके थे। गुफा से करीब दो कि. मी. पहले से सुरक्षा जांच का, जो सिलसिला आरंभ होता था, वह गुफा के द्वार तक चलता था। वहां पर लगे दो मेटल डिटेक्टर से यात्रियों को गुजरना पड़ता था।

सुरक्षा व्यवस्था में कोई कसर बाकी नहीं ! गुफा के बाहर चौकसी बरतते जवान तथा खतरे से निपटने के लिए तैयार खडा हेलिकॉप्टर

आतंकवादियों ने इस यात्रा में विघ्न डालने के अपने प्रयासों में कोई कमी नहीं रहने दी। इतने कड़े सुरक्षा प्रबंधों के बावजूद वे हमले करके यात्रियों में दहशत फैलाने में सफल रहे। वैसे, यात्रियों की सुरक्षा का सेहरा नौ आतंकवादियों की गिरफ़्तारी के साथ ही सुरक्षा बलों के सिर पर बंधा।

धमकी काम कर गयी

यात्रियों की कम संख्या से यह स्पष्ट था कि आतंकवादी धमकी कारगर रही क्योंकि, विगत वर्ष यह संख्या एक लाख से ऊपर थी और इस बार मात्र ५५,०००, जिसमें २०,००० के लगभग सुरक्षाकर्मी भी शामिल हुए थे। जिन स्थानों से यात्रियों से यात्रा के काफिले गुजरे वहां पर लगा 'नागरिक कर्फ्यू' इस बात को स्पष्ट करता था कि आतंकवादियों के भय से लोग मजबूर थे। सिर्फ पहलगाम में ही नहीं, काजीकुंड, खन्नाबल तथा अनंतनाग में भी 'नागरिक कर्फ्यू'-जैसा दृश्य था। फिर भी आतंकवादियों के निर्देशों का उल्लंघन करनेवालों की संख्या भी कम नहीं थी। करीब तीन हजार खच्चरवाले, एक हजार पिट्ठूवालों के अतिरिक्त कई अन्य व्यापारी भी इन निर्देशों की अवहेलना करते हुए यात्रा-प्रबंध में शामिल हुए थे। वैसे आतंकवादी धमकी का यह प्रभाव अवश्य देखने को मिला कि वहां मलिक परिवार का कोई भी सदस्य चढ़ावे के उस हिस्से को लेने नहीं आया जो हमेशा गुफा में चढ़ावे का एक हिस्सा लेने के लिए आता रहा है।

हिमाच्छादित पहाड़ों पर मौसम का प्रभाव

पर्यावरण में आये बदलाव के कारण कश्मीर का मौसम भी बदलता जा रहा है क्योंकि, इस बार अमरनाथ की गुफा में शिवलिंग नहीं बना । इतना ही नहीं बर्फ का वह पुल भी बड़ी तेजी के साथ पिघलता जा रहा है, जो सदियों से अमरावती पर बना हुआ है । इसका सबसे बड़ा कारण है वृक्षों का अंधाधुंध कटाव । आतंकवाद की आड़ में पेड़ों की कटाई का कार्य इस क्षेत्र में जोरों पर है ।

१४८०० फुट की ऊंचाई पर स्थित महा गुनस शिखर भी इस बार बर्फरहित था । गुफा के भीतर भी पात्ती का स्रोत सूखता जा रहा है, जिससे गुफा में 'अमर जल' में कमी आ गयी है, साथ ही ऊपर से टपकनेवाला जल भी अब कम हो गया है ।

आतंकवादी अपनी हरकतों से बाज नहीं आये । उन्होंने सबसे अधिक हमले १६ अगस्त को उस दिन किये, जिस दिन पारंपरिक छड़ी मुबारक जम्मू से आरंभ हुई । इस दिन खन्नाबल में काफिलों पर गोलीबारी, पहलगाम के आधार शिविर पर रॉकेटों से हमला तथा रामबन में हथगोलों से हमले किये । इसी प्रकार के प्रयास पंजतरणी तथा शेषनाग व पिस्सू घाटी में भी किये गये लेकिन, वे असफल रहे ।

यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने, आतंकवादियों के हमलों को नाकाम करने तथा खच्चरवालों की लूट-खसोट से बचाने में सेना की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही । जनता का कहना था कि अगर सेना न होती, तो उनकी यात्रा निर्विघ्न संपन्न नहीं हो पाती । सेना ने सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ यात्रियों को हर तरह की सहायता उपलब्ध करायी । 'सचमुच सेना के जवान हमारे लिए फरिश्ते थे ।' अंडमान से आयी एक महिला ने यह बात मुझसे उस समय कही जबकि, उसे गुफा तक पहुंचने के लिए सैनिकों ने उचित दर पर खच्चर करवाकर दिया था ।

शिवलिंग नहीं मिला

अमरनाथ की गुफा में श्रावणी पूर्णिमा से कुछ दिन पूर्व बर्फ से शिवलिंग निर्मित होता है, जो पूर्णिमा के बाद धीरे-धीरे पिघलकर विलुप्त हो जाता है, लेकिन इस बार शिवलिंग बना ही नहीं । इससे यात्रियों को भारी निराशा हुई । लगभग दो सौ साल, जब से अमरनाथ की गुफा का पता चला है, तब से यह पहला अवसर था कि शिवलिंग नहीं बना ।

शिवलिंग के बनने से जहां यात्रियों में निराशा हुई वहां जम्मू-कश्मीर की जनता में भी बेचैनी है क्योंकि, इसे प्रदेश के लिए एक अशुभ संकेत माना जा रहा है । नंदलाल कौल कह रहे थे कि 'लगता है कि यहां बहाये जा रहे मासूमों के खून से बाबा अमरनाथ भी नाराज हो गये हैं ।'

—७१-एम, राजपुरा मंगोत्रियां,
जम्मू-१८०००१

उपयोगी होती हैं देशी दवाइयां

● श्रीमती सुमन चतुर्वेदी

वनस्पतियों के साथ ग्रामीण जीवन पुरातनकाल से जुड़ा है । ये वनस्पतियां मानव जीवन के लिए प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमृत हैं । इसीलिए इन वनस्पतियों के प्रति लोक-जीवन में कृतज्ञ-भाव है, देव-भाव है । आज भले ही परिस्थितियां आयातित मेडिकल साइंस के लिए अनुकूल हैं और देशी दवाइयां तिरस्कृत और उपेक्षित हैं, पर हमें यह बात भूलनी नहीं चाहिए कि ग्राम क्षेत्र में देशी इलाज की परंपरा बहुत प्राचीन है और यदि वह उपयोगी न होती तो गरीब किसान और मजदूर का तो इलाज होता ही नहीं । ऐसी लोककथाएं ग्राम जीवन में आज भी प्रचलित हैं, जिनमें ये वनस्पतियां स्वयं मनुष्य को स्वप्न में या समाधि अवस्था में बतला देती हैं कि इस रोग की चिकित्सा अमुक फूल, पत्ती, जड़ या बीज से होगी । आवश्यकता इन नुस्खों को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने की है । इनमें से कुछ नुस्खे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

नुस्खे

खांसी में करोंदे के पत्ते शहद में मिलाकर खाने से लाभ होता है । पीपल के फल को कूटकर-छानकर शहद में खाने से भी खांसी दूर हो जाती है । कटेहरी के फूलों के बीच में एक पीला अंग होता है, उसे खाने से भी खांसी दूर हो जाती है । आक की जड़ की छाल का चूर्ण शहद में लेने से भी खांसी का उपचार किया जा सकता है । भटकैया के फूलों और जड़ों के सेवन से बच्चों की पुरानी खांसी अच्छी हो जाती है । खांसी में काला नमक तथा बहेड़े का चूर्ण मिलाकर लेना भी लाभप्रद होता है । तंबाकू की लकड़ी जलाकर राख कर लें तथा काला नमक मिला दें, फिर अजवायन या पान के साथ लें, यह भी खांसी की दवाई है ।

बवासीर में मूली तथा भुने चने खाना लाभदायक है । बवासीर में अंडी के पत्ते का बफारा लेने से भी लाभ होता है ।

वायु बढ़ने पर आक के टेमने को गाय के मूत्र या शुद्ध देशी घी में मिलाकर खाया जाता है, ज्वार के पट्टे का गूदा रोटियों में मिलाकर या लड्डू बनाकर खाया जाता है । मुंह में छाले होने पर दुग्धी के पत्तों को पानी से धोकर चबाया जाता है या चमेली के पत्तों का काढ़ा बनाकर उससे कुल्ले किये जाते हैं । फिटकरी के टुकड़े को मुंह में रखकर लार टपकाने से भी मुंह के छाले दूर हो जाते हैं । झरबेरी की जड़ गरम पानी में औटाकर कुल्ला करना भी छालों की दवा है ।

पेट के दर्द में नाभि में हींग का लेप किया जाता है या आम की गुठली को भूनकर नमक

ईश्वर ने कहा

ईश्वर ने कहा
मेरे लिए बनाओ मंदिर
और खुद रहो बेघर
ईश्वर ने कहा
मुझे पहनाओ नये-नये कपड़े
और खुद रहो नंग-धड़ंग निर्वस्त्र

ईश्वर ने कहा
मुझे खिलाओ फलफूल
कंदमूल, नारियल, मिठाइयां

ईश्वर ने कहा
करो मेरी पूजा
मेरे लिए जलाओ अगरबत्तियां

मैंने तुम्हें बच्चे दिये
मुझे खुश करने के लिए
अपने बच्चों की दो बलि

● कमलेश्वर साहू

शिक्षा : हायर सेकंडरी
पता : सड़क-६, क्वार्टर-१६-ए सेक्टर-२, भिलाईनगर
म.प्र.-४९०००१

आत्मकथ्य : अपने आस-पास के लोगों, अपने आस-पास की जिंदगी, अपने आस-पास के सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक माहौल के प्रति सक्रिय, सतर्क, संवेदनशील होकर, उसे किसी 'कोण विशेष' से देखने/पढ़ने या अवलोकन/मूल्यांकन करने की बेहद ईमानदार कोशिश के परिणामस्वरूप जन्म लेती है कविताएं ।

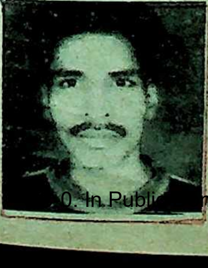

आग

भयग्रस्त हैं संपूर्ण मनुष्य
जाति कुछ मुट्ठी भर
लोगों से
मनुष्य देह में पशु है
कहां तक यह पशु
बचेगा मनुष्य के
हाथ की धार से
अरे ओ ! आग जलानेवालों
यह आग बुझाना तो सीखो
वरना भस्म करोगे तुम
अपने घरों, शहरों को
चिंताग्रस्त कई जोड़ी आंखें
ताकती हैं उन ताबूतों को
जो उतर रहे हैं रोज
तुम्हारे महल्ले के मैदान में
देखो उस किशोर को
जो देखता है लाश अपने रक्त की
क्या पता ! एक नयी आग
लगा रहा हो, वह अपने हृदय को

● अनीता गौड़

पता : द्वारा श्री इन्दु भास्कर भट्ट
१०३, विज्ञान-सदन
सैक्टर-१०, आर. के. पुरम् नयी दिल्ली-२२

आत्मकथ्य :

अपने आस-पास होनेवाली घटनाओं से कविताएं उकेरने का प्रयास करती हूं ।

शिक्षा :

बी. एस-सी., बी. एड.

एक दृष्टि

ताक पर रख
व्यक्तिगत सत्य
स्वयं ही
स्वयं के प्रति असत्य ।
असह्य है मेरे लिए
जीवन का यह अर्थ !
आंखों के रहते
आंख मूंदकर चलना
क्या हद दरजे की बेवफाई नहीं
जीवन के साथ ?
तथाकथित इज्जतदारों के,
समाज के ठेकेदारों के,
नपे-तुले पैमानों से
स्वयं को नापना
क्या हनन नहीं
अपनी बौद्धिक ईमानदारी का !
नहीं चाहता मैं
ऐसी जीवन-पद्धति
चाहता हूं मैं
गढ़ना ऐसी जीवन-दृष्टि
जो हो इतनी स्पष्ट उर्वर
कि निरे अंधकार-भरे दिन भी
आदमी काट ले आनंद से

● सुशील 'कुमार मिश्र

शिक्षा : विधि-स्नातक, (महाराजा कॉलेज आरा)
पता : ग्राम+पत्रा.— कौलोडिहरी, भोजपुर, बिहार ।

आत्मकथ्य: अंतर की संवेदनशीलता अक्सर स्व सत्ता की, बाह्य परिवेश की सत्ता से 'टक्कर' के रूप में प्रतिफलित होती है । यह प्रतिफलन की प्रक्रिया ही स्वतः स्फूर्त होकर कविता का रूप धर आविर्भूत होती है ।

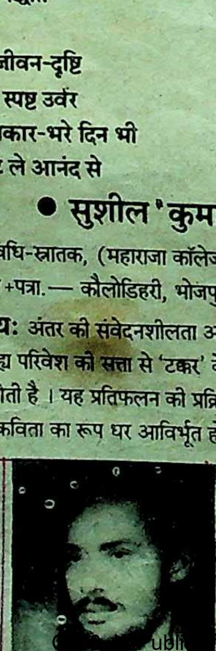

रावण

मैं
यहीं बैठकर देख रहा हूं
उस रावण को
जो अनवरत साम्राज्य कर रहा है
मेरे मनोमस्तिष्क की स्वर्णिम लंका पर
काम, क्रोध, लोभ-मोह बनकर ।
और
वध कर रहा है
मेरी सात्विक आकांक्षाओं का
प्रतिक्षण, प्रतिपल ।

और रावण !
छुप-छुपकर चुराता रहा
मेरी शांति, सुषुप्ति
और सुविधाओं को ।
मैं हतप्रभ,
मौन रहकर देखता रहा
सारे अमानवीय कृत्यों को
धर्मपरायण विभीषण की तरह !

● नारायण नेपाल

पता : महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय
केंद्रीय विद्यापीठ दाङ्ग, नेपाल
संप्रति : सहा.-प्राध्यापक

आत्मकथ्य : रावण दाह की पृष्ठभूमि पर जन्मी यह कविता है मेरी ! रावण का चरित्र मेरे लिए चुनौती बनकर उभरता रहा है । उसी का प्रस्फुटन आत्म-अभिव्यक्ति बनकर शब्दों में उतर आया है ।

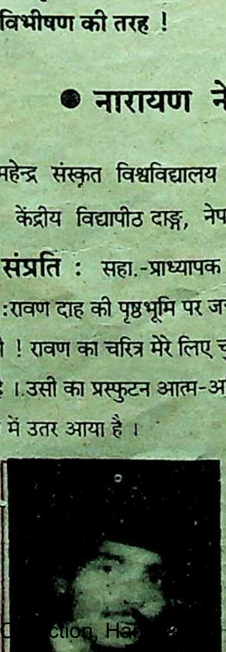

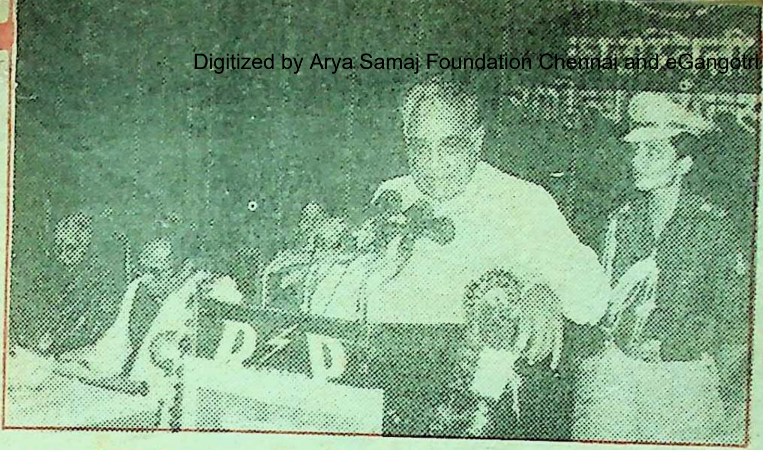

पुरस्कार वितरण के पूर्व सभा को संबोधित करते हुए राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा

सातवां कादम्बिनी साहित्य महोत्सव कानपुर में

कादम्बिनी ने साहित्य परंपरा का निर्वाह कर रही है— श्री मोतीलाल वोरा

कानपुर में सातवां 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' उत्साह के साथ संपन्न आ। इसमें लगभग ९५० रचनाकारों ने भाग या। लेखन प्रतियोगिता-अरमापुर डिग्री लेज, कानपुर और जुहारी देवी गर्ल्स कॉलेज, ाल रोड, कानपुर में २७ नवम्बर को आयोजित की गयी। इस लेखन प्रतियोगिता में उन्नाव, फतेहपुर, इटावा तथा कानपुर के निकट के क्षेत्रों के रचनाकारों ने भाग लिया। इनमें सरकारी अधिकारी, चिकित्सक, गृहणियां और छात्र-छात्राएं थे। 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने दोनों प्रतियोगिता स्थलों पर

ज्यपाल श्री वोरा और श्री अवस्थी

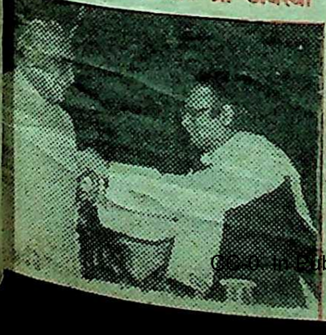

दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल श्री वोरा। एकदम दायें श्रीमती शांति वोरा

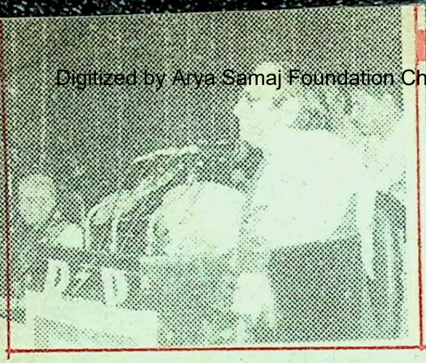

कादम्बिनी साहित्य महोत्सव के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी

कुछ पुरस्कार विजेताओं के बीच रा
मोतीलाल वोरा

युवा रचनाकारों का उद्बोधन किया और प्रतियोगिता के विषय में बताया। साहित्य महोत्सव का पुरस्कार वितरण समारोह लाजपत भवन में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री मोतीलाल वोरा द्वारा २८ नवम्बर को संपन्न हुआ।

राज्यपाल का उद्बोधन

अपने भाषण में श्री वोरा जी ने कहा कि देश में हावी हो रहे जातिवाद व संप्रदायवाद पर रोक स्वस्थ साहित्य के माध्यम से ही लग सकती है। साहित्यकारों की पुरानी पीढ़ी ने देश की आजादी के लिए माहौल तैयार किया और अब इस आजादी को बचाने का दायित्व युवा साहित्यकारों के कंधों पर है। उन्होंने कहा कि हालांकि कानपुर की धरती स्व. गणेश शंकर विद्यार्थी की कर्मभूमि रही है, पर उन्हें
प्रदेश व मध्य प्रदेश की सीमा से बांध
रखा जा सकता। यह संतों, ऋषि-मुनि
देश है। इस देश की संस्कृति हमारी
जिसमें न जाने कितनी संस्कृतियां मिलीं
हमारा देश शुरू से ही हर विधा में आ
है। हमारी संस्कृति काफी प्राचीन है,
संस्कृति काफी सम्पन्न हो चुकी थी, तब
देशों की संस्कृतियां विकसित हो रही थीं

श्री वोराजी ने कहा कि अब जिन
'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' हुए वहां
प्रतिभाओं की लेखन क्षमता की खोज
इससे पहले देश की प्रतिभाओं को उ
मौका नहीं मिलता था, पर 'कादम्बिनी
के साथ-साथ उसके साहित्य महोत्सवों

समारोह में उपस्थित गणमान्य नागरिक

प्रतियोगियों को संबोधित करते हुए कादम्बिनी-संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी

बात स्पष्ट हो गयी है कि हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है । इनमें साहित्य को सही तरह से प्रस्तुत करने की क्षमता है । उन्होंने इस बात पर दुःख जताया कि अच्छी पत्रिकाएं बंद होती जा रही हैं । इसके बावजूद 'कादम्बिनी' देश की साहित्यिक परंपरा का निर्वाह लगातार कर रही है ।

संपादक लेखकों के बीच

'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने बताया कि कानपुर में 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' में साढ़े नौ सौ से अधिक युवा रचनाकारों ने भाग लिया । इनमें सभी ने जातिवाद, सत्ता में भ्रष्टाचार, दहेज—जैसी सामाजिक बुराइयों को अपना विषय बनाया । युवा साहित्यकारों को जरूरत है कि अपनी बात मजबूती से रखकर देश की एकता,अखंडता बनाये रखने में योगदान दें । अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाने के लिए साहित्यिक संपदा को सुरक्षित रखने में युवा साहित्यकारों के योगदान की आवश्यकता है । उन्होंने यह भी बताया कि आज ही कानपुर में 'कादम्बिनी क्लब' की स्थापना करके कवि राम स्वरूप सिंदूर को इसका संयोजक बनाया गया है ।

प्रसार व्यवस्थापक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन

इसके पूर्व हिन्दुस्तान टाइम्स समूह के प्रसार व्यवस्थापक श्री राकेश शर्मा ने स्वागत भाषण दिया और 'कादम्बिनी साहित्य महोत्सव' के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला । बाद में धन्यवाद ज्ञापन भी उन्होंने ही किया । इस अवसर पर कानपुर के प्रतिष्ठित कवियों ने काव्यपाठ भी किया ।

इसके बाद राज्यपाल श्री वोरा ने कहानी व गीत प्रतियोगिता के चयनित प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया ।

गीत विधा में पुरस्कार :-

प्रथम पुरस्कार कु. रचना शर्मा व श्रीमती नारायणी शुक्ला,

द्वितीय : कमलनयन शर्मा व संतोष गुप्ता तथा

तृतीय पुरस्कार : सुशील कुमार व आशुतोष नारायण द्विवेदी ।

प्रोत्साहन पुरस्कार : अवधेश कुमार सिंह, डॉ. सुबोध तिवारी, हरीश प्रकाश गुप्ता, प्रदीप शुक्ला, कु. साधना पाण्डेय, गौरव कुमार शुक्ला, कमलेश द्विवेदी, मिथिलेश कुमार कैथवाल, संजय खरे और रवीन्द्र तिवारी ।

कहानी लेखन में पुरस्कार :

प्रथम पुरस्कार डॉ. सैयद मेहंदी,

द्वितीय डॉ. अलका सक्सेना

तृतीय पुरस्कार श्री गोविंद उपाध्याय ।

प्रोत्साहन पुरस्कार : कु. प्रियंका गुप्ता, मुजाहिरा बेगम, शरद मिश्रा, कु. आरती पांडया, विजय पंडित, अनुराग शुक्ला, कु. अनीता मिश्रा, सुधीर मिश्रा, कु. कविता भदौरिया व राकेश कुमार पाण्डेय ।

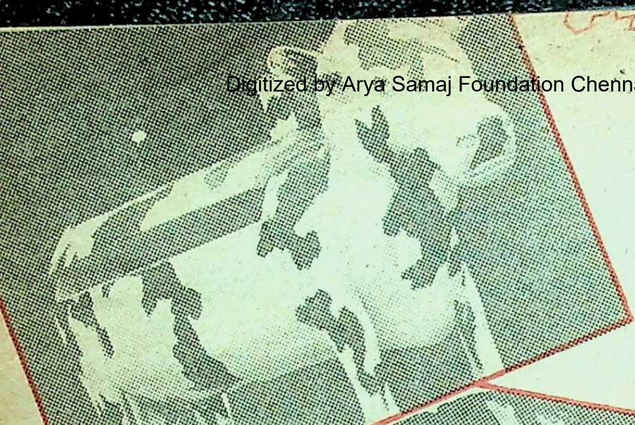

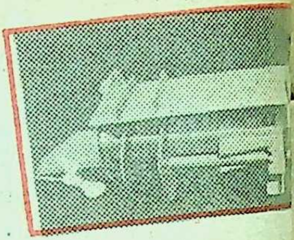

उन दि
था ।
निकला त
दुकानें दे
सुंदर औ
कार, ट्रक
मॉडलनुम
लिहाजा मै
आश्चर्य क
साथियों ने

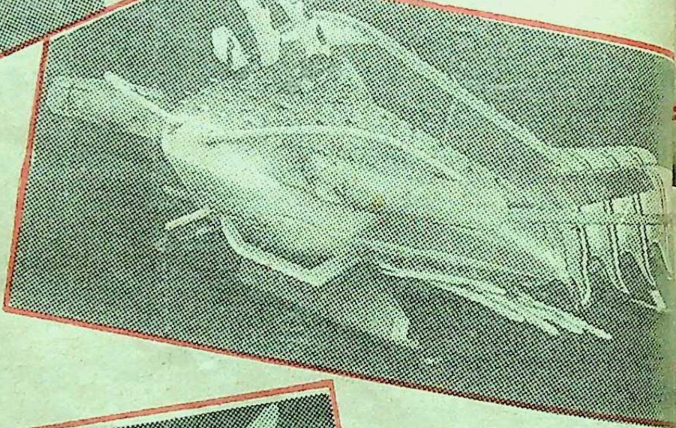

श

खेल-खिल
ताबूत हैं।
'क्या ताबूत
यहां ?'

'हां, ता
साथी ने ब

हालांकि
त्रासद होती
के सौंदर्य-
बना दिया है
तो अपना
पीछे भरा-पू
रूप में खूब
उसकी शव-
उत्सवमय ज

भिन्न-भिन्न प्रकार के ता

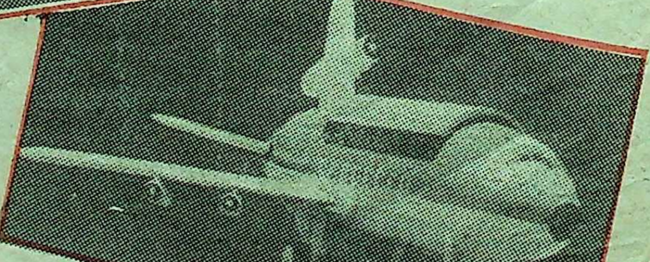

शाही ठाठ में चला बंजारा

● सालिम एन. कुरैशी

उन दिनों मैं घाना की राजधानी अकरा में था । एक शाम कुछ परिचितों के साथ घूमने निकला तो शहर के बाहरी हिस्से में मैंने कुछ दुकानें देखीं जिनमें बड़े-बड़े आकार-प्रकार की सुंदर और सजीली, लकड़ी की बनी मोटर, कार, ट्रक, पशु-पक्षी और मछलियों की मॉडलनुमा चीजें थीं । सुंदर और आकर्षक थीं, लिहाजा मैं गौर से देखने लगा । उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जबकि, मेरे साथियों ने मुझे यह बताया कि ये मॉडल खेल-खिलौने या सजावटी सामान नहीं, बल्कि ताबूत हैं । मेरे मुंह से एकाएक निकल गया कि 'क्या ताबूत भी इतने सुंदर बनाये जाते हैं यहां ?'

'हां, ताबूत भी इतने सुंदर बनाये जाते हैं,' साथी ने बताया ।

हालांकि, मौत डरावनी होती है, दुःखद और ासद होती है, लेकिन मुझे लगा कि मानव-मन के सौंदर्य-बोध ने उसे भी सजा-धजाकर सुंदर ना दिया है । किसी वृद्ध हिंदू की अर्थी को, ो अपना पूरा जीवन जी चुका है और अपने ीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गया है, विमान के ूप में खूब सजा-संवारकर निकाला जाता है । सकी शव-यात्रा गाजे-बाजे के साथ एक त्सवमय जलूस के रूप में निकाली जाती है । व्यक्ति को मृत्यु से भय तो लगता है लेकिन, ऐसी सजी-धजी शव-यात्रा को देखकर एक बार तो उसका अचेतन मन चाहने लगता है कि उसकी शव-यात्रा भी ऐसी ही धूम-धाम से निकले ।

क्योंकि, हमारे यहां हिंदुओं में अर्थी पर शव को रखकर शमशान घाट ले जाया जाता है और फिर अर्थी से उठाकर शव को लकड़ियों पर रखकर दहन कर दिया जाता है, इसलिए हमारे यहां ताबूत (कफन बॉक्सों) की प्रथा नहीं है, जैसी कि इसाइयों आदि में है । उनके यहां शव को मुसलमानों की तरह केवल शव को खाके-सुपुर्द करने की बजाय, मय कफन-बॉक्स के कब्र में उतार दिया जाता है ।

ताबूत सजाता है शव को

कफन-बॉक्स सहित शव को कब्र में उतार देने की प्रथा ने कफन-बॉक्सों का प्रचलन ही नहीं बल्कि, उनको सुंदर से सुंदर, आकर्षक और भव्य बनाने का पथ प्रशस्त किया है । यूरोप के नगरों में कफन-बॉक्सों को बनाने और बेचनेवाली अनेक दुकानें हैं, जहां महंगे से महंगे कफन-बॉक्स बनाये और बेचे जाते हैं । मजेदार बात यह है कि लोग अपने जीते-जी ही अपनी मनपसंद के कफन-बॉक्सों का ऑर्डर दे जाते हैं । कफन-बॉक्सों के बनाने और बेचने का

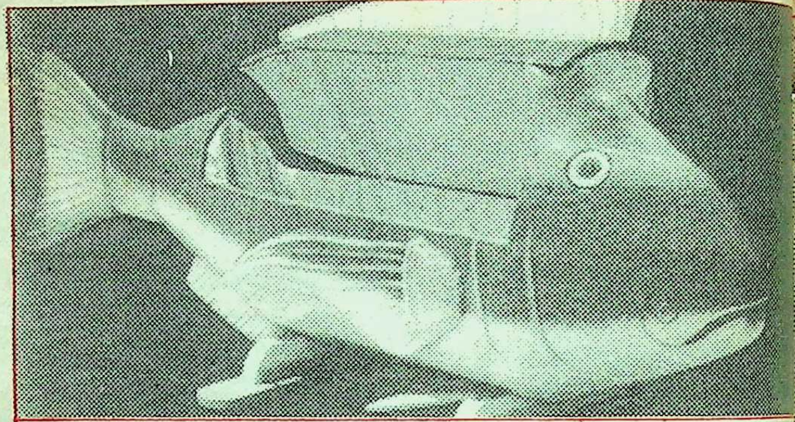

धंधा कई देशों में खूब जोर-शोरों पर है ।

यूरोप के देशों में ही नहीं, बल्कि अफरीका के देशों में भी कफन-बॉक्सों का धंधा जोरों पर है । मालूम पड़ता है कि उनके यहां यह परंपरा बहुत प्राचीन है, जिसका मूल स्रोत मिस्र के पिरामिडों में दफन राजा-रानियों की ममियों में है । मिस्र की सभ्यता में शव की ममी बनाने का विज्ञान बहुत उन्नत था, जिसकी जानकारी और रहस्य आज तक नहीं खोजा जा सका है । हालांकि, रूस के लेनिनग्राद में महान नेता लेनिन के शव को सुरक्षित रखा गया है लेकिन यह विधि ममियों के बनाने की विधि से अलग है ।

प्रतिष्ठा का प्रतीक

अफरीकी देशों में ताबूत व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सामाजिक हैसियत के प्रतीक माने जाते हैं, वैसे ताबूत तो हर गरीब और अमीर के लिए जरूरी हैं, लेकिन अमीरों के तो कहने ही क्या हैं ? वह अपनी मनपसंद आकृति और रंग-रूप का कीमती से कीमती ताबूत बनवाना चाहते हैं । आप यह समझ सकते हैं कि इन लोगों के लिए अंतिम संस्कार भी एक उत्सव है, वे अधिक से अधिक खर्च करने की आ रखते हैं । दरअसल, यहां मौत का यह जिंदगी के अन्य उत्सवों से भी महंगा हो एक अच्छे -से सामान्य ताबूत की कीमत लगभग चार सौ अमरीकी डॉलर बैठती है, अन्य खर्च अलग होते हैं ।

हमारे यहां जैसे ही लड़की पैदा होती है मां-बाप उसके दहेज के लिए चिंतित हो, बचाने लगते हैं, ठीक उसी तरह यहां के अपने कफन-दफन के लिए जोड़ने लगते कफन-दफन में कोई कमी न रह जाए, इ लिए पहले से ही इंतजाम कर जाते हैं । वहां एक परिचित ने बताया कि यहां के अपने अंतिम संस्कार के खर्च को जुटाने लिए ही जीवन में कड़ा संघर्ष और मेहनत हैं । यदि यह खर्च न हो, तो वे अपने सी साधनों में ही बड़े मजे से जीवन जी सकते

पा जो की दुकान

ताबूतों की एक सबसे बड़ी दुकान मैं नुंगुआ कस्बे में पा जो की देखी । पा जो

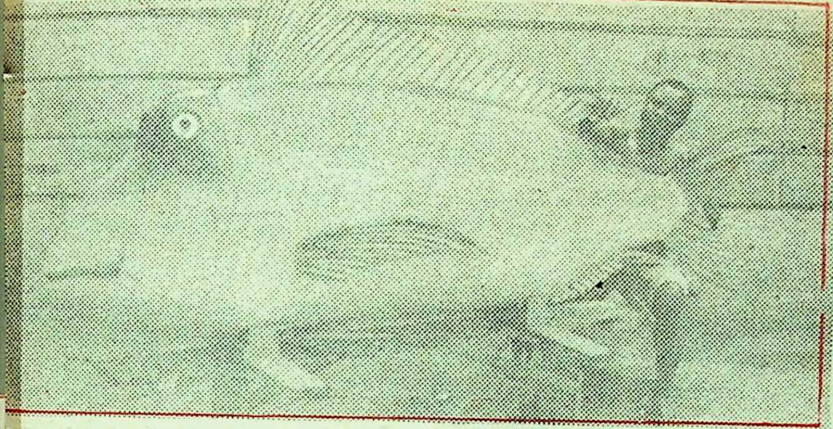

अच्छा कारीगर है । जिस समय मैंने दुकान कदम रखा, देखा कि पा जो एक बहुत बड़े आकार की मछली की शक्ल के ताबूत को ंतिम रूप दे रहा था । यह विचित्र-सी खनेवाली मछली नूनू नामक एक व्यक्ति ने ना के समुद्री तट पर पकड़ी थी । नूनू ने पना ताबूत इसी मछली के आकार का नवाया था । नूनू की मृत्यु के बाद उसके रिवारीजन इस ताबूत को लेने आये थे । बाद नूनू का शव इस ताबूत में रखकर शव-यात्रा काली गयी, जिसमें दो सौ के लगभग व्यक्ति शामिल हुए थे । दरअसल, नूनू स्थानीय मछुआरों का मुखिया था । मुखिया का कफन-दफन शान से होना ही था ।

एक दिन मैंने पा जो से बातचीत की तो उसने बताया कि ताबूत बनाने की कला उसने अपने चाचा से सीखी थी । उसके चाचा ने भी अपने लिए ताबूत पांच साल पहले बनाकर रख लिया था । पा जो की दुकान में उसके कई सहायक हैं । वह साल में लगभग दस महत्त्वपूर्ण ताबूत बनाता है, जिन्हें या तो उसकी दुकान में ही रखा जाता है या फिर मुर्दाघर में ।

''तुम इतने सुंदर ताबूत बनाते हो, जो वास्तव में कला के नमूने होते हैं, उनको इस तरह जमीन में दफन हो जाने पर तुम्हें जरा भी दुख नहीं होता क्या ?'' मैंने पूछा तो जो का कहना था कि ''होता है, मैं चाहता हूं कि मेरी कलाकारी को लोग देखें, सराहना करें, लेकिन जब उसका उपयोग हो गया, तो उसका मकसद पूरा हो गया । यह तो जमीन की चीज थी, जो जमीन में मिल गयी ।''

— प्रस्तुति : कृष्णकांत

वैद्य की सलाह

डी. पी. गुप्ता, अमृतसर

प्र. उम्र ६५ साल । मूत्र की समस्या है । मूत्र आने में दस मिनट का समय लग जाता है । फिर भी १० प्रतिशत मूत्र शेष रह जाता है । कुछ समय तक प्रवाह नली में पीड़ा रहती है ।

उ. चंद्र प्रभावटी व गोक्षुरादि गूगल एक-एक वटी । सुबह-शाम पानी से तीन माह नियमित लें ।

हताश बहन, भोपाल

प्र. तीस वर्षीया विवाहिता हूं । सात वर्ष विवाह को हो गये । गृहस्थ सुख नहीं मिल पाया । पति काफी दुखी रहते हैं । काफी समझाती हूं, संतान नहीं है । किसी भी चिकित्सक से बात करने में घबराते हैं तथा अपने में हीन भावना लाते हैं । सभी कुछ लिख दिया, सुखी जीवन जी सकूं ऐसा उपाय सुझायें ।

उ. मानसिक रूप से अधिक परेशान हैं, मनोबल बढ़ायें चिंता की बात नहीं है । नियमित औषधियां सेवन करें, अवश्य लाभ होगा । वृहद पूर्ण चंद्र रस दस ग्राम व स्वर्ण बंग दस ग्राम मिलाकर अस्सी मात्राएं बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच सम भाग पानी मिलाकर भोजन बाद पीयें । वृहद वंगेश्वर रस एक वटी, च्यवनप्राश एक बड़ा चम्मच रात दूध से लें । रात्रि भोजन जल्दी करें । खटाई-दही, शीतल पेय का परहेज कर छह माह औषधि से करें ।

संजय राय, नारायणपुर

प्र. उम्र ४५ वर्ष है । अति दुर्बल व्यक्ति हूं, मांसपेशियों के असाध्य रोग से पीड़ित हूं बहुत बनता है । पाचन क्रिया ठीक नहीं ।

उ. रस राज रस ५ ग्राम, चंद्रामृत रस १ अश्वगंधा चूर्ण ६० ग्राम, लक्ष्मी विलास ग्राम, सभी औषधियों की अस्सी मात्रा सुबह-रात एक-एक मात्रा दूध से लें ।

सितोपलादि चूर्ण ३० ग्राम, मालती रस ३ ग्राम, मुक्ताशुक्ति मात्र ३ ग्राम ले औषधियों की तीस मात्रा बनायें । एक दोपहर शहद से लें । द्राक्षारिष्ट दो चम्म अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच खाना खाने के दोनों समय लें । दही, खटाई, शीतल परहेज करें, ६ माह नियमित औषधियां करें ।

श्रीमती शीला, रेवाड़ी

प्र. उम्र ६० वर्ष । साइटिका दाहिने पांव में सूनापन । अंगुलियों, पोरवों में अपने आ जाते हैं, फिर फूट जाते हैं । बहुत-सी गरम खा चुकी हूं ।

उ. केशोरगूगल वटी सुबह-शाम गरम लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन पियें । रसमाणिक्य १० ग्राम, रस राज ग्राम । गिलोय सत्व १० ग्राम लेकर अ मात्रा बनायें । दोपहर, रात एक-एक मा से लें । शीतल पेय, खटाई, मिर्च-मसा चावल आदि का परहेज कर तीन माह नि औषधियां सेवन करें ।

अबस, रतलाम

प्र. उम्र तेईस वर्ष । अविवाहित, रक्त अल्प

कारण दुर्बल । क्षीण स्मरण शक्ति, मुहांसे व गैस है । कृपया सुझाव दें ।

उ. पुनर्नवामंडुर तीस ग्राम, नवायस लोह दस ग्राम, शंखभस्म दस ग्राम, आरोग्यवर्धनी वटी की दस ग्राम की अस्सी मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम जल से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, द्राक्षारिष्ट दो चम्मच का सम भाग जल मिलाकर भोजन के बाद लें ।

उपेन्द्र, विज्ञान नगर

प्र. उम्र ५१ वर्ष । पिछले ४ वर्ष से मधुमेह से पीड़ित हूं, दांपत्य जीवन दुखी है । नसें चिपक गयी हैं ।

उ. बसंत कुसमाकर एक वटी सुबह दूध से लें । चंद्रप्रभा वटी रात दूध से लें । ६ माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

इंद्र बहादुर, रसूलाबाद

प्र. उम्र २८ वर्ष । दाहिना हाथ व गरदन का दाहिना भाग हमेशा दर्द करता है । एलोपैथी तरीके से सभी प्रकार की जांच कराकर इलाज कराया । पर विशेष लाभ नहीं हुआ । ठीक प्रकार से लिख भी नहीं पाता हूं ।

उ. त्रयोदशांग गूगल तीस ग्राम, अश्वगंधारिष्ट चूर्ण साठ ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा गरम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, दशमूलारिष्ट दो चम्मच का सम भाग जल मिलाकर भोजन के बाद पीयें । महायोगराज गूगल एक-एक वटी रात दूध से लें ।

अ. ब. स., दिल्ली

प्र. २१ वर्षीया अविवाहिता हूं। पेट में दर्द, भारीपन, वायु अधिक बनती है । दो-तीन दिन तक शौच नहीं होता । मसूड़ों में सड़ांध,पस व रक्त निकलता है । अनेक इलाज तीन वर्षों से करा रही हूं, लाभ नहीं ।

उ. आरोग्यवर्धनी दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से लें । कांकायन वटी दो-दो वटी भोजन के बाद पानी से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक बड़ा चम्मच, त्रिफला चूर्ण एक बड़ा चम्मच लें । रात दूध में देर से पचनेवाली वस्तुएं— दही, खटाई सेवन न करें । तीन माह औषधियां सेवन करें ।

एक दुखी बहन, पटना

प्र. उम्र २४ वर्ष । स्तन सामान्य हैं, किंतु विकास नहीं हो रहा है । किशोर अवस्था में जब उभार प्रारंभ हुआ, तब कसकर दो दिन बेल्ट बांधती रही । शायद इस कारण ही ऐसा हो । एक वर्ष से स्तनों में दर्द भी रहता है । मासिक दो-तीन दिन पूर्व हो जाता है, शीघ्र विवाह होनेवाला है । तनाव में जी रही हूं । कृपया उपाय लिखें ।

उ. चिंतित न हों, यह कोई रोग नहीं है । विवाह के बाद सभी ठीक होगा । सरसों के शुद्ध तेल से शनैः-शनैः मालिश करें ।

अमरपाल, नयी दिल्ली

प्र. उम्र ३० साल, अविवाहित हूं । लगभग एक साल पहले टी. बी. हुई थी । अब ठीक हूं । किंतु शारीरिक दृष्टि से कमजोर हूं । कामुकता बनी रहती है । सात्विक विचार का व्यक्ति हूं । विवाह करते डर लगता है ।

उ. च्यवनप्राशव्लेह एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । द्राक्षासव दो चम्मच सम भाग पानी मिलाकर भोजन के बाद पीयें । विवाह कर सकते हैं । एक वर्ष नियमित औषधियां सेवन करें ।

यशपाल सिंह, देवरी

प्र. उम्र २१ वर्ष है । दो वर्ष से घुटनों और सिर में दर्द रहता है । अंगरेजी दवा की, लाभ नहीं हुआ ।

उ. शिरशूलादिवग्रास एक वटी, महायोगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम दूध से लें ।

● कविराज वेदव्रत शर्मा

बी ५/७, कृष्णनगर दिल्ली-११००५१

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

चिंता में डूबा रहता हूं

क., पटना : मैं मध्यम परिवार का २६ वर्ष का बेरोजगार इंटर पास युवक हूं । समस्या है, छाती में अधिक दर्द का होना साथ ही, दोनों अंडकोष भी काफी बड़े हो गये हैं तथा उनमें दर्द रहता है । कमजोरी है । खाना खाने के बाद नशा छा जाना व सोकर उठने के बाद सर चकराता है । छाती-दर्द का बहुत इलाज कराया कोई लाभ नहीं हुआ । २० वर्ष की आयु से शराब, सिगरेट आदि का चार वर्ष तक अधिक सेवन किया । इससे पूर्व हस्तमैथुन अधिक करता था । अभी तक मेरी शादी भी नहीं हुई है । अब तो खाना खाने की रुचि तक समाप्त हो गयी है । हमेशा चिंता में डूबा रहता हूं तथा मन करता है कि आत्महत्या कर लूं । कृपया सही रास्ता बताने का कष्ट करें ।

समस्या का कारण वह नहीं है जो आप सोचते हैं । शराब और तंबाकू (सिगरेट) का सेवन हानिकारक अवश्य ही है । आपकी समस्या है 'शर्म' । आप बिना किसी हिचक के एक अच्छे शल्य चिकित्सक से जांच करवाइए । शायद दवा द्वारा ही आप ठीक हो सकते हैं । छाती का दर्द तथा और तकलीफें आपको तनाव और चिंता से उत्पन्न हो रही हैं । वह स्वयं ही ठीक हो जाएंगी, जब आपकी मूल समस्या ठीक हो जाए, तब हमारी सलाह है आपको कोई नौकरी नहीं मिलती तो स्वयं ही कोई काम खोल लें । फिर आप सामान्य व्यक्ति की भांति जीवन व्यतीत कर सकते हैं ।

सुस्त रहना

रंजन, पटना : समस्या मेरे ३४ वर्ष के भाई की है जो एक दिन मेरी फैक्टरी में आया तथा काम करने लगा । काम करते समय उसके माथे पर बिजली का करंट गलती से फैक्टरी में लगा, जिससे वह बेहोश हो गया । तब से वह सुस्त रहता है तथा हल्का नशा भी करता है । कृपया सुझाएं कि क्या उसकी समस्या का कारण बिजली का शॉक लगना है अथवा कुछ और ।

आपका भाई इस दुर्घटना से पूर्व कैसा था ? यह जान लेना आवश्यक है । क्या वह काम-काज में फुर्तीला व चुस्त था । क्या उसे कोई मानसिक अथवा मनोवैज्ञानिक समस्या—जैसे उदासीनता थी । मेरे विचार में उसकी एक अच्छे तंत्र शल्य चिकित्सक तथा मनोचिकित्सक द्वारा जांच अवश्य कराएं । नशीले पदार्थों से उसे दूर रखें । साथ ही उसे कार्य में व्यस्त रखें । कई बार 'चोट या बिजली के झटके' की आड़ में व्यक्ति कार्य करने से भागता है तथा कोई जिम्मेदारी नहीं लेता । जांच कराकर इलाज संभव है ।

दवाई खाने की सलाह

बी. स., ग्वालियर : २० वर्षीय एक परेशान युवती आपको पत्र लिख रही है । हाथ-पैर में दर्द की शिकायत के कारण डॉक्टर ने रक्त परीक्षण करवाने को कहा जिसमें 'सिकिल सेल' निकला । डॉक्टरों ने मुझे उसकी दवा दी और सारी उम्र खाने की सलाह दी । साथ ही पूर्ण रूप से स्वस्थ भी बताया । मैंने सुना है कि दवाई खाने से गुर्दे में पथरी बन जाती है । विस्तारपूर्वक जानकारी दें, क्योंकि मैं हर समय चिंता करती रहती हूं । डॉक्टर

लोग मुझे कुछ बताते ही नहीं ।

डॉक्टर ने सूझ-बूझ से काम लिया और आपकी समस्या का सही निदान कर इलाज बताया । परंतु हम इस बात से सहमत नहीं कि मरीज को कुछ बताने की आवश्यकता नहीं । वास्तव में न बताने से कई बार सुनी सुनायी बातों से भ्रम का शिकार बन आदमी और तनावग्रस्त बन सकता है । जैसा कि आपके केस में हुआ । आपके रक्त के कण गोल न होकर 'सिकिल' की तरह हैं यह बीमारी आपको जन्म से है, इसीलिए आपको यह दवा खाते रहनी चाहिए । इससे पथरी आदि बनने की कोई संभावना नहीं है ।

बार-बार शौच

संतोष कुमार सिन्हा, जमुई : आयु ३२ वर्ष, सरकारी सेवा में कार्यरत हूं । पिछले पांच वर्षों से पेट साफ नहीं होता । बहुत देर तक बैठना पड़ता है । पांच बार शौचालय जाता हूं । कहीं बाहर जाने के नाम से घबराहट हो जाती है । शौच जाने की इच्छा प्रबल हो जाती है । शौच करने की इच्छा बनी रहती है । शरीर में अंदर से बिलकुल ताकत नहीं । कृपया कुछ दवा लिखें ।

आप यदि बहुत दवा सेवन कर चुके हैं तो दवा बंदकर दें । यह लक्षण 'इरेटेबल बाउल सिंड्रोम' के हैं । मानसिक तनाव की इस रोग में अधिक भूमिका है । व्यावहारिक जीवन, पारस्परिक संबंध अथवा पारिवारिक क्लेश पर नियंत्रण रखें । शांत चित मन से अवश्य लाभ होगा । २-३ चम्मच इसबगोल की भूसी दही में अथवा पानी में रोज रात को सेवन करने से शौच की समस्या ठीक होगी ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।
—संपादक

पति को खोना नहीं चाहती

अ. ब. स., गोरखपुर : २८ वर्ष की विवाहिता हूं, दो छोटे बच्चे भी हैं । इधर कुछ महीनों से मेरे पति अपने विभाग के लोगों को प्रायः घर बुलाकर शराब पिलाते हैं व दावत देते हैं । शराब से मुझे सख्त नफरत है । मैं उनको प्यार से व लड़कर समझा-बुझाकर थक गयी हूं । बच्चे बोतल देखकर कहते हैं, हम भी लेंगे । वैसे तो मेरे पति केवल दोस्तों के कहने पर थोड़ा-बहुत लेते हैं, परंतु मुझे डर है यह उनकी आदत न बन जाए । डर की वजह है मेरे पिता,जिनका स्वर्गवास जिगर के सिरोसिस नाम की बीमारी जो शराब के कारण से होती है, उससे हुआ । मैं अपने पति को खोना नहीं चाहती ।

आपके पति सामाजिक होने के कारण पीते हैं । वह शराब के आदी नहीं हैं या शराबी नहीं, परंतु यह बात सच है कि कई लोग इस प्रकार आरंभ करते हैं तथा बाद में शराबी बन जाते हैं । अभी आपको चाहिए कि पति से झगड़े के बजाय, उनके करीब आयें तथा उनकी पार्टी व शराब की मात्रा की एक हद बना लें जिसे वह न लांघें । आपके पारस्परिक संबंध अच्छे होने लगेंगे तो आप एक दूसरे को समझने भी लगेंगे तथा बहुत-रोक-थाम से या अत्यधिक चिंता से बात संभलने के बजाय कई बार बिगड़ जाती है ।

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : प्रतिकूल वातावरण में पुरुषार्थ से सफलता मिलेगी। नवीन दायित्वों में जोखिम की अधिकता होगी। काम-काज की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा। न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा। स्वजनों के सहयोग से राजकीय कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। आध्यात्मिक अभिरुचि बढ़ेगी।

वृषभ : आजीविका की दिशा में उल्लेखनीय परिवर्तन होगा। नवीन संपर्कों से राजनीतिक दिशा में सफलता मिलेगी। संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्ययाधिक्य होगा। रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा। परोपकारी कार्यों से यश वृद्धि होगी। आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, भ्रमण की अधिकता होगी। स्वजनों से संभाषण में संतुलन रखें।

मिथुन : आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। भौतिक उपलब्धियों से उत्साह वृद्धि होगी। नवीन मित्रों का समागम होगा। शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता तथा गुप्त षड्यंत्रों से सावधानी रखें। उदर विकार अथवा रक्त विकार से पीड़ा होगी। प्रियजनों से संभाषण में संतुलन रखें। जोखिमपूर्ण कार्यों से धन लाभ होगा।

कर्क : मास में आसक्ति की अधिकता होगी। नवीन दायित्वों से प्रसन्नता होगी। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। संपत्ति कार्यों की पूर्ति हेतु अनुकूल स्थिति होगी। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। आमोद-प्रमोद में संयम हितकर होगा। परोपकारी कार्यों से यश वृद्धि होगी। जोखिमपूर्ण कार्यों में लाभ होगा। रक्त संबंधियों से संयमित संभाषण करें।

सिंह : पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी। उच्चाधिकारियों से व्यर्थ मतांतर होंगे। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी। संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय होगा। शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से चिंतनीय स्थिति का उदय होगा। परिवारजनों से व्यर्थ विरोधाभास होगा।

कन्या : मास में प्रतिकूल स्थितियों का शमन होगा। पारिवारिक समभाव से धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों की पूर्ति होगी। आजीविका संबंधी नवीन संसाधनों का उदय होगा। शत्रु-पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि बिगाड़ने का प्रयास करेगा। सामाजिक अथवा रचनात्मक

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ जनवरी से मकर में, मंगल सिंह में, बुध ३ से मकर में, गुरु, शुक्र, वृश्चिक में, शनि कुंभ में, राहू तुला में, केतु मेष में, हर्षल मकर में, नेप्च्यून धनु में एवं प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे।

पर्व और त्योहार

१. दर्श अमावस्या, ४. वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी, ८. भानुसप्तमी, ९. अन्नपूर्णाष्टमी, १२. पुत्रदा एकादशी, १४. शनि प्रदोष, सूर्य की मकर संक्रांति (खिचड़ी), १६. स्नानदान, व्रतादि की पौषी पूर्णिमा, शाकंभरी जयंती, १८. शब्बे बारात, २० संकष्टी श्री गणेश चौथ, २४. कालाष्टमी, २६ भारतीय गणतंत्र दिवस, २७. षट्तिला एकादशी, २८ शनिप्रदोष, ३०. सोमवती दर्श अमावस्या, मौनी अमावस्या, ३१. श्री वल्लभावतार वल्लभ जयंती ।

कार्यों से यश वृद्धि होगी । संपत्ति कार्यों की पूर्ति से उत्साह वृद्धि होगी । पारिवारिक अस्वस्थता से व्यय तथा व्यथा होगी ।

तुला : आर्थिक समस्या का समाधान होगा । विशिष्ट व्यक्ति अथवा राजनेता से निकटता बढ़ेगी । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि के अवसरों का उदय होगा । संपत्ति कार्यों में धन व्यय होगा । नवीन संपत्ति के कार्यों की पूर्ति होगी । भ्रमण के अवसरों की अधिकता होगी । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । आमोद-प्रमोद में संयम रखना हितकर होगा ।

वृश्चिक : स्वजनों के सहयोग से नवीन योजनाओं में सफलता मिलेगी । संपत्ति कार्यों में व्यवधान उपस्थित होंगे । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । रक्त संबंधियों से सहयोग मिलेगा । निकटजनों से व्यर्थ विरोधाभास का सामना करना होगा । शत्रु-पक्ष से सतर्कता रखें ।

धनु : मास भाग्यवर्धक रहेगा । आजीविका की दिशा में चले आ रहे प्रयास सार्थक होंगे । संपत्ति, वाहनादि के क्रय में सावधानी रखें । पुरुषार्थ एवं पराक्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय मिलेगी । मनोरंजन, भ्रमण, आमोद-प्रमोद में व्ययाधिक्य होगा । उच्चाधिकारियों के सहयोग से विशिष्ट कार्य की पूर्ति होगी ।

मकर : मास उत्साहवर्धक एवं उपलब्धिपूर्ण होगा । साहसिक कार्यों से धनलाभ होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति हेतु प्रवास होगा । पारिवारिक वातावरण खिन्नतापूर्ण होगा । शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से उच्चाधिकारी वर्ग प्रभावित होंगे । न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी । आकस्मिक धन लाभ से लंबित समस्या का समाधान होगा ।

कुंभ : उद्यम के नवीन अवसरों का उदय होगा । शत्रु-पक्ष के अवरोधों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी । प्रवास से नवीन संपर्कों का समागम होगा । आर्थिक दिशा में विशिष्ट प्रगति के अवसर होंगे । संपत्ति कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा ।

मीन : साहस तथा आत्मविश्वास से कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक कार्यों की अधिकता से मानसिक तनाव तथा अस्थिरता का उदय होगा । लेखन-सृजन तथा रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । पराक्रम, धैर्य तथा पुरुषार्थ से उच्चाधिकारी अनुकूल होंगे । जोखिमपूर्ण कार्यों से प्रतिष्ठा प्रभावित होगी ।

—ज्योतिष धाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर,
गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.)

देश का राज छुपाने के लिए जीभ काट दी

लड़ाई दो दिन से बंद थी । अबीसीनियां के सैनिक-सिपाही अपने-अपने कैंपों में मीठी नींद सो रहे थे । अचानक उन्हें खबर मिली कि इटली की सेना बढ़ती आ रही है । आगे बढ़कर मुकाबला करने का समय नहीं रह गया था । नगर में मोरचा बनाकर लड़ने का अर्थ था अपने ही देश की तबाही-बरबादी । देखते ही देखते पूरा नगर किसी विधवा की मांग की तरह सूना और वीरान हो गया । पंद्रह वर्षीया लायना ने भयभीत होकर भागना कायरता समझा । अपने देश का एक झंडा उसने अपने मकान पर लगा दिया और झंडे की बल्ली के सहारे टिककर वह खड़ी हो गयी । थोड़ी ही देर में इटली की सेना नगर में प्रविष्ट हो गयी । सैनिकों के बूटों की धमक और उनके नारों से सारा नगर गूंज उठा । अबीसीनियां के लहराते हुए झंडे ने सैनिकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया । वे उसी ओर बढ़ते चले गये, जहां लायना अपने विचारों में खोयी हुई चुपचाप खड़ी थी ।

"तुम कौन हो ?" कप्तान ने सप्रेम पूछा ।

"अबीसीनियां की एक लड़की ।"

"नगर के सारे लोग कहां जा छुपे हैं बेटी ?" कप्तान ने विनम्रता से पूछा ।

"यह बात बताने की नहीं है कप्तान ।"

विनम्रता और मानवता का परिचय समाप्त हो गया । उसने डपटकर कहा, "यह तुम्हें बताना होगा शैतान लड़की ।"

कप्तान की इस सख्ती और झुंझलाहट ने दी जानेवाली शारीरिक यातनाओं की ओर संकेत कर दिया था, परंतु दिलेर लायना के होंठों पर एक मासूम-सी मुसकराहट फैल गयी जो कप्तान के लिए एक चुनौती थी ।

क्रोध से बिफरा हुआ कप्तान कांप रहा था । उसकी आंखों से अंगारे बरस रहे थे, होंठ फड़फड़ा रहे थे, मुट्ठियां बंध गयी थीं । उसका भारी बूट लायना के घुटने पर जा पड़ा और वह हलकी-सी कराह के साथ चुप हो गयी ।

कप्तान आगबबूला हो गया । अपने दोनों बूटों से उसने मासूम लायना के नन्हे-नन्हे पैरों को लहूलुहान कर दिया, लेकिन वह अपनी जगह पर शांत और स्थिर होकर रह गयी थी । उसने ठहरे हुए एवं ठोस स्वर में कहा, "मेरे दिल में जो राज छुपा है उसे तुम मेरे पूरे शरीर को भी कुचल कर नहीं पा सकते हो ।"

अपनी हार पर कप्तान झुंझला उठा । उसने लायना का सर पूरी शक्ति से झंडे की बल्ली से टकरा दिया । खून की एक पतली-सी धार उसके सर से बह निकली । उसके पैर पहले ही खून में लथपथ हो चुके थे ।

लायना शत्रुओं के घेरे में खड़ी थी । चारों

ओर से उसे नाना प्रकार की शारीरिक यातनाएं दी जा रही थीं । वह तड़प रही थी और कठोर दिल सैनिक उसकी बेबसी पर ठहाके लगा रहे थे ।

फिर लायना को नग्न करके घुटनों तक धरती में गाड़ दिया गया और उसके स्तनों को काट दिया गया । इनसानियत कांपकर रह गयी । और वह उत्साहभरी आवाज में कह रही थी,

"तुम-जैसे शैतानों की हवस (कामपिपासा) की शिकार होने के बदले अपने शरीर को देश की आजादी पर निछावर कर देने में तुमने मेरा हाथ बटाया है कप्तान, जिसके लिए मैं तुम्हारी आभारी हूं ।"

अधमरी लायना पर धीरे-धीरे बेहोशी छाने लगी । शारीरिक यातनाएं झेलते-झेलते दिल-दिमाग जवाब देने लगे थे । कप्तान की अनुभवी निगाहों ने उसकी यह कमजोरी भांप ली थी । उसने समझाते हुए विनम्र लहजे में कहा, "तुम दूसरों के लिए यह मुसीबत क्यों झेल रही हो लड़की ? बता दो ना कि दूसरे लोग कहां छुपे हुए हैं ?"

अत्याचारों-यातनाओं के भय से उसकी जुबान राज उगलने ही वाली थी कि अचानक उसे खयाल आया, "यह कमबख्त जुबान तो सारा रहस्य खोल देगी ।"

अंतिम क्षणों में अपने बाप के कहे हुए शब्द भी उसे याद आये, "देश की मर्यादा तुम्हारे हाथ में है लायना, दुश्मन को यदि हमारा पता चल गया तो देश सदा के लिए गुलामी की बेड़ियों में जकड़कर रह जाएगा ।"

एक नयी शक्ति का संचार उसके अंदर हो गया और वह दिल ही दिल में कहने लगी, "नहीं, यह कभी नहीं हो सकता । मैं अपनी जान बचाने के लिए हजारों औरतों का सुहाग नहीं उजड़ने दूंगी । मेरे प्राणों से अधिक कीमती उन मुजाहिदों की जान है जो अपने देश की आजादी की खातिर अत्यचारों के विरुद्ध पंक्तिबद्ध हैं ।"

बड़ी फुरती से उसने निकट खड़े एक सैनिक से तलवार छीन ली और जब तक वे लोग मामले की तह तक पहुंचते, लायना ने अपनी पूरी जीभ काटकर कप्तान के आगे फेंक दी । उसके मुंह से खून उबल पड़ा, मगर वह हंसने की कोशिश कर रही थी । उसकी हंसी में अब खिलखिलाहट की मिठास नहीं थी, बल्कि ओअ...ओअ की कंपा देनेवाली भयावह आवाज थी ।

पत्थर दिल सैनिक भी एक बार कांप उठे थे । गड्ढे से निकालकर लायना को मरने के लिए सैनिकों के बूटों तले फेंक दिया गया, जहां उसका पूरा शरीर कुचल डाला गया । लेकिन मरते दम तक उसने यह नहीं बताया कि उसके नगर के लोग कहां छुपे हैं ।

आज लायना नहीं है, लेकिन अबीसीनियां के एक चौराहे पर स्थापित उसकी प्रतिमा दुनियावालों को उसकी दिलेरी और देश के लिए उसकी अभूतपूर्व कुरबानी की याद दिलाती है ।

—तनवीर अख्तर 'रूमानी'

ज्योतिष : समस्या और समाधान

● अजय भाम्बी

विक्रम मदान, दिल्ली

प्रश्न : इस कुंडली में श्रीकंठ, केसरी, शुभवेसिपाश एवं अधम योग हैं या नहीं ? यदि कोई अन्य भी है तो बतलायें ?

उत्तर : प्रत्येक कुंडली में लगभग ३० से ५० तक योग होते हैं । अधिकतर योग आंशिक रूप से ही कुंडली में बनते हैं । अतः उनका फल भी जो किताबों में लिखा होता है वह नहीं होता । ऐसे ही योग आपकी कुंडली में हैं ।

राकेश कुमार टांक, मथुरा

प्रश्न : क्या मानसिक शांति मिलेगी ? कब ?

उत्तर : कुंडली गलत है दोबारा सही कुंडली भेजें ।

अशोक कुमार अग्रवाल, जयपुर

प्रश्न : पिताजी की संपत्ति पर चाचाओं का कब्जा है । हमें मिलेगी या नहीं ?

उत्तर : मिलेगी, लेकिन आसानी से नहीं ।

प्रियंका पंचोली, इंदौर

प्रश्न : सन १९९६ की पी. एम. टी. परीक्षा में चयन होगा या नहीं ?

उत्तर : हो सकता है, यदि आप अत्यधिक प्रयास करें ।

मीनाक्षी शर्मा, अजमेर

प्रश्नः विवाह कब तक ?

उत्तर : विवाह इस वर्ष होगा ।

दीपेन्द्र कुमार उपाध्याय, बरेली

प्रश्नः सितार वादन में प्रयासरत हूं, प्रसिद्धि कब मिलेगी ?

उत्तर : अभी समय लगेगा ।

अशोक कुमार त्यागी, देहरादून

प्रश्नः अपना भवन व कार कब तक ?

उत्तरः तीन वर्ष के भीतर दोनों कार्य संपन्न होंगे ।

अरुण कुमार श्रीवास्तव, नयी दिल्ली

प्रश्नः दूरदर्शन तथा फिल्मों में प्रवेश कब तक होगा ?

उत्तर : प्रयास करें, सफलता मिल सकती है ।

अन्नपूर्णानंद पांडेय, देवरिया

प्रश्नः आर्थिक उन्नति का योग कब से है ?

उत्तर : १९९५ आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहेगा ।

आशा शर्मा, कोटा

प्रश्नः तीन पुत्रियां हैं, क्या पुत्र होगा, कब ?

उत्तरः यदि शुक्र की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा में या मंगल की अंतर्दशा में गर्भाधान हो तो पुत्र पैदा हो सकता है ।

चन्द्रा रामसाय, इंदौर

प्रश्नः लेखन कार्य द्वारा नाम-यश-पैसा फिल्मों/टी.वी. में मिलेगा क्या ? कब से ?

उत्तर : वास्तविक प्रसिद्धि तो शनि की महादशा में ही मिलेगी ।

जया कुमारी, गिरिडीह

प्रश्नः शादी के लिए रत्न ?

उत्तर : पुखराज पहनें ।

राधेश्याम गुप्ता, भरतपुर

प्रश्नःस्वयं के नाम से गृह-निर्माण कार्य कब तक एवं किस दिशा में ?

उत्तर : शनैः-शनैः सभी कार्य संपन्न हो जाएंगे । निश्चिंत हो जाएंगे ।

राजीव कुमार, मुजफ्फरनगर

प्रश्नः वैवाहिक जीवन में सुख-शांति कब आएगी अथवा ऐसे ही चलता रहेगा ?

उत्तर : १९९५ वैवाहिक सुख प्रदान करेगा ।

प्रियंका कंठ, रांची
प्रश्न: मेडिकल में दाखिला कब या कैरियर किसमें ?
उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों के उपरांत ही दाखिला संभव है ।

डॉ. विश्वेशदत्त तिवारी, भोपाल
प्रश्न: शासन के पास काफी पैसा रुका है, न्यायालय के निर्णयानुसार मिलना है । कब तक मिलेगा ?
उत्तर : आपको यह पैसा अवश्य मिलेगा ।

प्रदीप कुमार, गाजीपुर (बिजनौर)
प्रश्न: क्या आई. ए. एस./पी. सी. एस. में सफलता मिलेगी । उपाय बतायें ?
उत्तर : संभावना कम है ।

जयराम, जयपुर
प्रश्न: विदेश से व्यापारिक अनुबंध कब ?
उत्तर : १९९५ में संभावना है ।

उर्मिला सिंह, रामपुर (म.प्र.)
प्रश्न: विवाह कब ? रत्न बतायें ?
उत्तर : विवाह जल्द ही संपन्न होगा ।

प्रेमलता, दिल्ली
प्रश्न: पदोन्नति कब होगी ?
उत्तर : इसी वर्ष हो जाएगी ।

उज्जवल वरण मुखर्जी, वाराणसी
प्रश्न: पूर्ण रूप से कब तक स्वस्थ हो पाऊंगा ? कुछ उपाय बतायें ?
उत्तर : पुखराज और मोती धारण करें, जल्द लाभ मिलेगा ।

नंदिनी बालापुरे, इटारसी
प्रश्न: प्रथम विवाह शून्यवत्, पुनर्विवाह कब ? रत्न सुझायें ?
उत्तर : द्वितीय विवाह १९९६ में ।

— 'नक्षत्र निकेत'
४०६, ढाका चेंबर-१
२०६८-६९/३८, नाईवाला
करोलबाग नयी दिल्ली-११०००५

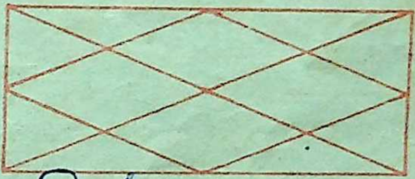

१५४

नाम..
जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख................ महीना .... सन.................
जन्म-स्थान..
जन्म-समय ....
वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण..
पता..
आपका एक प्रश्न ....
इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें...

संपादक (ज्योतिष विभाग) — प्रविष्टि १५४, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० जनवरी, १९९५

नयी कृतियां

कहानी लेखन की कला और शैली में समय-समय पर अनेक परिवर्तन हुए हैं । विगत अर्द्ध-शताब्दी में हिंदी कहानी लेखन की कला में जो गुणात्मक परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं, उनसे पाठकों को परिचित कराने के लिए सामयिक प्रकाशन ने आधुनिक कथाकारों की रचनाओं की 'चर्चित कहानियां' शीर्षक से एक और श्रृंखला प्रकाशित की है । इसमें निर्मल वर्मा, शिव प्रसाद सिंह, रमेश चंद्र शाह, मिथिलेश्वर, चित्रा मुद्गल, मंजुल भगत, महीप सिंह और प्रदीप पंत की कहानियों के संकलन सम्मिलित किये गये हैं ।

निर्मल वर्मा : की गणना महत्त्वपूर्ण हिंदी कथाकारों में की जाती है, यद्यपि इनकी कहानियां अकसर भारतीय परिवेश की न्यूनता, या शून्यता भी, से आरोपित रही है किंतु प्रस्तुत संकलन में 'डायरी का खेल' कहानी उन पर लगे इस आरोप को नकारती है । इस कहानी की नायिका, बिट्टो, की भावुकता और नायक, बब्बू, का दिल की गहराइयों तक उतर जानेवाला व्यवहार नितांत भारतीय है । किंतु 'धागे' तथा 'दूसरी दुनिया' कहानियों में इस परिवेश की शून्यता स्पष्ट है । कहानी 'अमालि या' भी ऐसी ही है । परंतु यह पूरा संकलन पठनीय अवश्य है ।

शिव प्रसाद सिंह : को कहानी लिखने के लिए जो चीज सबसे अधिक विवश करती है वह है मनुष्य का चरित्र । 'मंजिल और मौत', 'आदिम हथियार', 'अंधकूप', 'महुवे के फूल'— जैसी कहानियां उनकी इस विवशता के उदाहरण हैं । किंतु 'बिंदा महाराज' पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे हमारी जीभ पर कोई तिक्त वस्तु रख दी गयी है । लगता है कि शिव प्रसादजी 'मुसहर, कंजड़, नटों के खेमों से बाहर आना ही नहीं चाहते ।

रमेश चंद्र शाह : को कहानी लिखने की प्रेरणा 'अपने आस-पास की जीवन लीला से और उभरनेवाले वास्तविक मानव चरित्रों के प्रति उपजनेवाले सच्चे कुतूहल से मिली थीं ।' किंतु आलोच्य संकलन की अधिकतर रचनाएं रोचक होते हुए भी कहानियां कम स्केच अधिक हैं ।

मिथिलेश्वर : की कहानियों के इस संग्रह की प्रथम रचना 'बावूजी' पढ़कर निराशा होती है । इस कहानी के माध्यम से वह क्या सार्थक

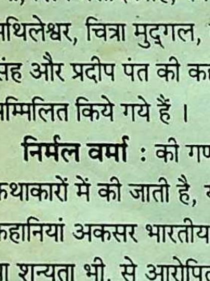

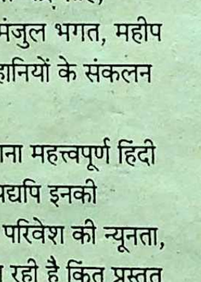

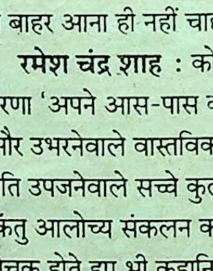

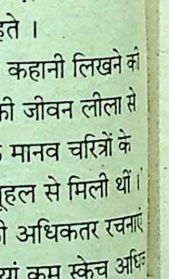

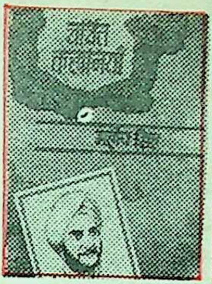

संदेश देना चाहते हैं यह स्पष्ट नहीं होता । 'मेघना का निर्णय' और 'एक थे प्रो. बी. लाल' कहानियां रोचक हैं ।

चित्रा मुद्गल : की 'अपनी वापसी' और 'भूख' कहानियां पर्याप्त चर्चित रही हैं, किंतु 'जगदंबा बाबू गांव आ रहे हैं' कहानी में अशक्त जनता की जिस मजबूरी और पीड़ा का चित्रण किया गया है वह किसी को भी द्रवित कर सकता है । यह कहानी संग्रह आद्योपांत पढ़ने योग्य है ।

मंजुल भगत : की 'कसर' शीर्षक कहानी उनके इस संग्रह की सिरमौर है । इसके अतिरिक्त अन्य रचनाएं भी रोचक हैं । इनकी 'दहलीज के पार' कहानी ने 'कादम्बिनी कथा प्रतियोगिता' में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था ।

महीप सिंह : के इस कथा-संग्रह में २१ कहानियां संकलित हैं । इनकी अधिकतर रचनाओं के कथानक मानव रिश्तों से जुड़े-बुने हैं । इनमें मानव संबंधों का भावुकतापूर्ण विश्लेषण है ।

प्रदीप पंत : 'केवल मनोरंजन के लिए कहानियां नहीं लिखते', वरन इनका प्रयास यह रहता है कि इनकी रचनाएं पाठकों को सोचने के लिए विवश कर दें । प्रस्तुत संकलन की 'आम आदमी का शव' और 'प्रश्न' ऐसी ही कहानियां हैं ।

चर्चित कहानियां, प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाड़ा, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२, मूल्य : प्रत्येक का ९० रुपये मात्र ।

विवेक के आनंद से : स्वामी विवेकानंद के उपदेशों पर आधारित १०० लघु कथाओं का यह संकलन प्रत्येक वर्ग के पाठक के लिए उपयोगी है । इसकी समस्त कथाएं रोचक, अनुकरणीय और प्रेरक हैं ।

विवेक के आनंद से;
लेखक : ब्रजभूषण, प्रकाशक : किताब घर, गांधी नगर, दिल्ली-११००३१, मूल्य : पचहत्तर रुपये ।

सूरज चमके सारी रात : यह एक यात्रा-वृत्त है जिसमें स्वीडन, फिनलैंड तथा नारवे के उत्तरी ध्रुव अंचल की यात्रा-कथा रोचक शैली में प्रस्तुत की गयी है । स्वीडन के भौगोलिक तथा ऐतिहासिक वर्णन पाठक की ज्ञान वृद्धि करते हैं । अर्द्धरात्रि में चमकते सूर्य का वर्णन मोहक है ।

सूरज चमके सारी रात
लेखक : डॉ. कुमुद; प्रकाशक : शील प्रकाशन, ए/३५ सोनारी पश्चिम, जमशेदपुर-८३१०११; मूल्य : सत्तर रुपये ।

खंडहर!
तुम
लौट
जाओ

जिन वाणी के मोती : में लेखक ने भगवान महावीर की जीवनगाथा तथा उनकी मूल वाणी के साथ जैन आगमन ग्रंथों का सार बहुत सरल भाषा में प्रस्तुत किया है । यह एक उपयोगी ग्रंथ है ।

जिन वाणी के मोती
लेखक : दुलीचंद जैन; प्रकाशक : जैन विद्या अनुसंधान प्रतिष्ठान, १८ रामानुज अय्यर स्ट्रीट, साहूकारपेट, मद्रास-६०००७९; मूल्य : पचास रुपये ।

मानस मंथन : को लेखक ने अपने छोटे-छोटे निबंधों से एक ऐसी माला का रूप दिया है जिसके धारण करने से मनुष्य अपने मन का मंथन करके जीवनोपयोगी नवनीत प्राप्त कर सकता है । इसके समस्त निबंध शिक्षात्मक, प्रेरणाप्रद और वास्तविक जीवन से संबंधित हैं ।

मानस मंथन
लेखक : ब्रजभूषण; प्रकाशक : आर्य प्रकाशन मंडल, सरस्वती भंडार, गांधीनगर, दिल्ली—११००३१; मूल्य : पचहत्तर रुपये ।

—अनंतराम गौड़

नायक : नीर शबनम का एक मर्मस्पर्शी उपन्यास है । नीर शबनम मराठी भाषी हैं लेकिन हिंदी पर उनका पूरा अधिकार है । इस उपन्यास में उन्होंने एक ऐसी स्त्री की व्यथा-कथा को अभिव्यक्ति दी है, जो पहले देवर की कुदृष्टि और बाद में पति के संदेह का शिकार होती है । नायिका 'मृण्मयी देवी' के छद्म नाम से उपन्यास लिखती है और शीघ्र ही लोकप्रिय भी हो जाती है । उसके जीवन में तरह-तरह के उतार-चढ़ाव आते हैं । एक लेखक से उसका आत्मीय परिचय भी होता है, इतना कि मृत्यु के बाद उसको ही अपने अंतिम-संस्कार की वसीयत कर जाती है । पति भी उसकी इस इच्छा को पूरा करते हैं । वस्तुतः वही इस कृति के 'नायक' भी सिद्ध होते हैं । उपन्यास पठनीय है ।

नायक
लेखिका : नीर शबनम, प्रकाशक : अनुभूति प्रकाशन ५३, करनपुर, प्रयाग स्टेशन, इलाहाबाद, मूल्य : पचहत्तर रुपये ।

महायोगी गोरखनाथ : भारतीय वाङ्मय और आस्थापूर्ण जनमानस के लिए गोरखनाथ— महायोगी गोरखनाथ— का नाम चिरपरिचित है । डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी गोरखनाथ को मेधा और क्रियाशीलता की दृष्टि से आचार्य शंकर के बाद सबसे बड़े धार्मिक नेता और घुमंतू योगी मानते हैं । गोरखनाथ के जीवन और दर्शन पर प्रकांड पंडितों द्वारा पर्याप्त काम होने पर भी उचित प्रमाणों के अभाव में सारा कुछ ऊहापोहों का झंखाड़ लगता है । इस कारण अभी तक भारतीय योग-परंपरा में गोरखनाथ की तत्वसंहिता का सही स्थान-निर्धारण संभव नहीं हो पाया है । इस अभाव को काफी हद तक पूर्ण करने में सक्षम है, शैव-दर्शन और भक्ति साहित्य के जाने-माने विद्वान डॉ. के. आर. नंजुंडन की शोधपूर्ण कृति 'महायोगी गोरखनाथ ।'

पुस्तक में तीन अध्याय हैं । पहले अध्याय

में प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्यकाल तक नाथ-संप्रदाय के विकास का क्रमबद्ध विवरण है । दूसरा अध्याय महायोगी गोरक्षनाथ के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डालता है । तीसरे अध्याय में गोरक्षनाथ के सिद्धांत और साधना-पक्ष का निरुपण मिलता है । विद्वान लेखक कहीं भी पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं है न ही वे अपनी मान्यताओं को पाठकों पर थोपना चाहते हैं ।

लेखक— डॉ. के. आर. नंजुण्डन, प्रकाशक— विद्या भारती प्रकाशन, ११-९५९, २४वां मार्ग, एच ब्लॉक, अण्णा नगर पश्चिम, मद्रास-६०००४०, मूल्य १२० रुपये ।

— बाल सुब्रमण्यम

खंडहर ! तुम लौट जाओ : इस कविता संकलन में महेंद्र शर्मा की ३१ कविताएं हैं । कवि ने प्रत्येक विषय को छूने का प्रयास किया है । अधिकांश कविताओं में प्रकृति के प्रति अनुराग का उद्घोष कवि ने अपने शब्दों के माध्यम से किया है । 'मैं हरियाली से प्यार करता हूं' कविता के माध्यम से कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं—

जब भी कोई बदली
वीरान रेगिस्तान में
दसों दिशाओं से भय खाती
सूरज के अग्नि-रथ से
लिपट जाना चाहती है

सामाजिक संदर्भ में 'चौराहा बोलता' है में—

कोलाहल की छाती पर
खामोशी का इतिहास
कौन आया

संकलन की कविताओं को पढ़ने के बाद लगता है कवि के अंदर सामाजिक बदलाव की जो ललक है, उसे अभिव्यक्त कर रही है ।

कवि : महेन्द्र शर्मा
प्रकाशक : मगध प्रकाशन
४६४९/१२३ ए, न्यू मॉर्डन शाहदरा, मंडोली रोड, दिल्ली-३२
मूल्य : चालीस रुपये

उत्तराखंड की सैन्य परंपरा : उन्नीस लेख, जिनमें चार अंगरेजी में हैं, का संकलन है यह पुस्तक । पुस्तक में गढ़वाल और कुमायूं की सैन्य परंपरा का विवरण है । महाभारतकाल से लेकर आधुनिक काल में हुए युद्धों आदि में उत्तराखंड के वीरों के अवदान का उल्लेख कर उनकी एक अलग पहचान स्थापित करने का प्रयत्न इस पुस्तक की अन्य विशेषता है । आलेखों का पूर्वापर संबंध निर्वाह का अभाव है जिसे पुस्तक के संपादक ने भी स्वीकार किया है । उत्तराखंड के दोनों क्षेत्रों की अपनी सैन्य या जातीय विशेषता का उद्घाटन इस दृष्टि से द्रष्टव्य है— १. कुमाऊंनियों के परिवेश की कष्ट सहिष्णुता ने उनको सहारा और अरब के तपते रेगिस्तानों, मध्यपूर्व एशिया के ऊबड़-खाबड़ प्रदेशों, द.पू. एशिया के मानसूनी वर्षा के देशों और अन्य भू भागों में लड़ने की अपार क्षमता प्रदान की है ।

२. गढ़वाली सैनिकों ने पश्चिम एशिया के रेगिस्तानी भू-भागों, बर्मा के घने जंगलों एवं इटली के पठारी क्षेत्रों में कई सीधी लड़ाइयां लड़कर अदम्य साहस और शौर्य का प्रदर्शन किया ।

उत्तराखंड की सैन्य रेजीमेंट में वीरों को मिले

शौर्य पदकों का विवरण अंगरेजी आलेखों की विशेषता है ।

संपादन : डॉ. यशवंत सिंह कटोच

प्रकाशक : उत्तराखंड शोध संस्थान, बरेली, मूल्य : सजिल्द १०० रुपये, पेपरबैक ५० रुपये, पृ. सं. १०३ ।

युग पुरुष अंबेडकर : किसी की जीवनी को केंद्र में रखकर औपन्यासिक कृति में विवेच्य जीवनी में पूर्णता लाने की क़ोशिशें हजारीप्रसाद द्विवेदी (बाणभट्ट की आत्मकथा) अमृतलाल नागर (नाच्यो बहुत गुपाल) जैसे चिंतनशील लेखकों द्वारा की गयी हैं । इन लेखों की चिंतनधारा उक्त कृतियों में देखी जा सकती है । युगपुरुष अंबेडकर की विचारधारा ही इस कृति को नियंत्रित करती है । यह इसलिए कि यह सत्य घटनाओं पर आधारित जीवनीपरक उपन्यास है ।

बाबा साहब को प्राय: टकराव पैदा करनेवाले के रूप में ही प्रस्तुत किया जाता है । किंतु अंदर तक झांककर लेखक ने उनके अन्य रूपों का चित्रण भी किया है ।

बाबा साहब की मांग थी कि एक धर्म के लोगों के बीच धार्मिक समानता और सम्मान होना चाहिए । दादर में गणेशोत्सव में डॉ. अंबेडकर ने पुजारी से कहा— "....आप इस उत्सव का आनंद सबको लेने देंगे, किसी को रोकेंगे नहीं ।" बाहर भीड़ उमड़ रही थी । अंत में प्रधान प्रबंधक ने सुझाव रखा— "बाहर खड़ी भीड़ पंडाल के अंदर आ सकती है ।

लेखक : राजेन्द्र मोहन भटनागर

प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; मूल्य : २०० रुपये; पृष्ठ ४६७ ।

फोन से जानें अपनी जन्म कुंडली
24
☎ 0011 22 3333 4+ ☐ ☐
ऊपर दिये गये सभी ग्यारह अंक डायल कीजिये और अंत में
नीचे दिये गये अपनी राशि के दो अंक भी अवश्य जोड़िये.
21 मेष
24 कर्क
22 वृषभ
25 सिंह
23 मिथुन
26 कन्या
ज्योतिष फोन
आपके लिये व्यक्तिगत
साप्ताहिक भविष्यवाणी
27 तुला
30 मकर
28 वृश्चिक
31 कुम्भ
29 धनु
32 मीन
स्वामी योगानंद फोन
नौकरी? धन? प्रेम–सबंध? संतान? कानूनी समास्या?
1008 महामंडलेश्वर स्वामी योगानद से फोन पर तांत्रिक उपाय जानिये और अपनी हर समस्या का समाधान करिये
☎ 0011 2222 11 842
जोड़ी तालमेल
आप और आपके
जीवनसाथी के बीच
कितना तालमेल है?
☎ 0011 22 3333 149
यह अन्तर्राष्ट्रीय फोन कॉल है सामान्य अन्तर्राष्ट्रीय फोन शुल्क ही लागू एम एण्ड ए, यू.एस.ए.

कादम्बिनी-क्लब

सदस्यों की रचनाएं

खादी बाबा

आपकी बात ही
कुछ और है...
शैंपू की महक में
घुंघराले बाल हैं
हाथी के बच्चे-सी
डगमग-सी चाल है
परफ्यूम की सुगंध में
महका पोर-पोर है
आपकी बात ही
कुछ और है...

खादी के कुरते में
चकाचक क्रीज है
गाड़ी है मारुति
उसमें भी फ्रिज है
ठंडी-ठंडी व्हिस्की से
हर मय गुलजार है
आपकी बात ही
कुछ और है...
जनता की भीड़ में
लंबे-चौड़े वादे हैं
दूर करने के, दिखते
नहीं इरादे हैं
बुलेट प्रूफ गाड़ी में
सुरक्षा पुरजोर है
आपकी बात ही
कुछ और है...

● रूपेश दिग्विजय

गांधी नगर, बोरिंग रोड
पटना-८००००१

सब जाति, धर्म मानव हितार्थ

सब जाति, धर्म मानव हितार्थ,
अभिशाप न हम बनने देंगे ।
कल्याण सभी का हो इससे,
यह शपथ आज जन-जन लेंगे ।।

यह धरा रहेगी अमृत-घट,
विष कभी न हम भरने देंगे ।
मानव मन होवे दिव्य कमल
पाषाण न हम बनने देंगे ।

अब होगा नूतन विकास,
विनाश न अब होने देंगे ।
हम मुक्त-कंठ से कहें आज,
हथियार न अब चलने देंगे ।।

अब जहां मिलेंगे शांति-दूत,
यह भाल वहीं झुकने देंगे ।
मानव-मानव सब एक रहें,
संदेश यही प्रति-पल देंगे ।।

सब जाति, धर्म मानव हितार्थ,
अभिशाप न हम बनने देंगे ।।

● शिवाकांत मिश्र 'शिवेश'

किसान उ. मा. विद्यालय,
सल्लहपुर (देवरिया)

बर्फ में पांगी घाटी का जनजीवन

● अशोक सरीन

पांगी घाटी हिमाचल प्रदेश की अति दुर्गम घाटी है । पांगी उपमंडल का मुख्यालय किलाड़ प्रदेश की राजधानी शिमला से लगभग ५६० कि. मी. की दूरी पर है । जिला चंबा में पड़नेवाली यह घाटी सैलानियों की प्रमुख सैरगाह है ।

चन्द्रभागा (चिनाब) नदी-घाटी में बसा यह क्षेत्र मानव के लिए कुदरत का अनुपम उपहार है । पांगी घाटी का सफर प्रकृति के साथ सीधा साक्षात्कार करने का रोमांचक अनुभव है । मई-जून के महीनों में जब मैदानों में चिलचिलाती धूप से त्राहि-त्राहि मच जाती है, तब इस घाटी का प्रवेश द्वार पर्यटकों के स्वागत के लिए खुल जाता है ।

चंबा मंदिरों का नगर

हिमाचल प्रदेश में चंबा खूबसूरत पहाड़ी नगर है । रावी नदी के किनारे स्थित चंबा को मंदिरों का नगर भी कहा जाता है । यहां भरमौर नामक स्थान पर चौरासी मंदिरों का समूह है, जो अपनी शिल्प तथा कला के कारण सैलानियों का आकर्षण है । यहीं से पांगी घाटी का सफर शुरू होता है । चंबा से ७५ कि. मी. दूर 'तरेला' नामक स्थान तक बस सुविधा है । इससे आगे पांगी-जैसी मनोरम घाटी के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद उठाने तथा यहां रह रहे लगभग १५ हजार लोगों के विषय में जानने के लिए पैदल चलना पड़ता है । बीच में १६,६४७ फुट ऊंचा 'साच' दर्रा पार करना पड़ता है । जिन सैलानियों को मोटरगाड़ी द्वारा पांगी घाटी जाना हो, उन्हें रोहतांग दर्रे (ऊंचाई १३०५० फुट) को पार करना पड़ता है । यह रास्ता अभी हाल ही में बनकर तैयार हुआ है । इसके अतिरिक्त इस घाटी के लिए जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ क्षेत्र की पड्डर घाटी से भी एक रास्ता जाता है, पर यह काफी लंबा और कठिन है ।

पांगी घाटी १,२३२ कि. मी. क्षेत्र में फैली हुई है । इस घाटी में कुल ६१ गांवों में से मात्र ४५ गांवों में लोगों की आबादी है । शेष में घाटियां अथवा चारागाहें हैं । पांगी घाटी के निचले क्षेत्रों में रहनेवाले जन जातिय़ लोगों को पंगवाल और ऊंचाईवाले क्षेत्रों में निवास करनेवालों को भोटिया कहा जाता है । भोटिया लोग बौद्ध धर्मी हैं तथा इनकी संख्या कम है ।

पांगी घाटी अक्तूबर से मई तक आकाश से गिरते बर्फ के फूलों से भर जाती है । सरदियों के दिनों में यह घाटी पश्चिमी हवाओं के प्रभाव में आ जाती है । ऊंचे पर्वतों पर भारी बर्फबारी और बहुत हल्की वर्षा होती है । इस समय यह

पांगी घाटी का अनोखा गांव है मिंघल । इस गांव की विवाह प्रथा भी अनोखी है । यहां लड़की भगाकर ले जाने का रिवाज है । इनमें लड़का अपनी मनपसंद लड़की को अपने साथ भगाकर घर ले जाता है । यदि लड़की लड़के के घर में खाना खा ले तो शादी की रजामंदी मानी जाती है । और लड़की खाना न खाये, तो गांव की प्रजा (पंचायत) लड़केवालों को हर्जाना डालती है, जो उन्हें दंड-स्वरूप लड़केवालों को देना पड़ता है ।

का तापमान जमाव बिंदु से ३५ से ४० डिग्री तक गिर जाता है । इस कारण सामान्य काम-काज व विकास कार्य बिलकुल ठप्प होकर रह जाते हैं ।

लगभग आठ माह बर्फ से ढंके रहने पर भी पांगी घाटी के लोग सामान्य जीवन बसर करते हैं । इनके घर इस प्रकार के बने होते हैं, जिसमें बर्फ व बर्फानी हवा का प्रभाव नहीं पड़ता । मकान मिट्टी की भित्ति के तीन मंजिले बने होते हैं । मुख्य दरवाजे से पहले चारों ओर दीवारें बनायी जाती हैं, ताकि हवा का प्रवेश न हो सके । मुख्य दरवाजा निचली मंजिल में होता है । इसी मंजिल में याक तथा भेड़-बकरियां रखी जाती हैं । दूसरी मंजिल में रसोईघर व रिहाइश के कमरे होते हैं । रसोईघर अपक्षाकृत बड़ा बनाया जाता है, ताकि बर्फ के दिनों में सारा परिवार वहीं सो सके । रसोईघर में धुआंरहित चूल्हे होते हैं, जिसमें लकड़ी जलायी जाती है ।

दूसरी ही मंजिल में शौचालय बनाया जाता है, ताकि बर्फ में घर से बाहर न जाना पड़े । रसोई के बाहर एक बड़ा चूल्हा बनाया जाता है जिस पर पीतल का एक बड़ा पतीला रखा रहता है, जिसमें बर्फ पिघलाकर पानी की पूर्ति की जाती है । पांगी के हर घर में 'ऐलो' (जौ की एक किस्म) की शराब बनायी जाती है । हिमपात के दिनों में शराब ही एकमात्र मनोरंजन तथा स्वास्थ्यवर्द्धक टॉनिक इस क्षेत्र के लोगों

का है । घर में शराब बनाने के लिए दो रुपये का परमिट प्रशासन से लेना पड़ता है । यह परमिट अपने इस्तेमाल के लिए शराब बनाने के लिए होता है, बिक्री के लिए नहीं । पांगी घाटी में पंगवाली महिलाएं कम शराब पीती हैं । अलबत्ता भोट महिलाएं भोट पुरुषों के बराबर शराब पीती हैं ।

हैलिकॉप्टर सेवा

सरदियों में पांगी घाटी में पंद्रह फुट से अधिक बर्फ पड़ जाने से इस घाटी का संपर्क अन्य क्षेत्रों से टूट जाता है तब आपातकालीन सेवाओं तथा डाक एवं तार-संचार सेवाओं को बनाये रखने के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार हैलिकॉप्टर सेवा उपलब्ध करवाती है । इसके अतिरिक्त घाटी के भीतरी भाग में बनी हुई सड़कों पर चलाने के लिए जीपें भी हैलिकॉप्टर द्वारा पहुंचायी जाती हैं ।

इस दुर्गम घाटी के लोगों की विषम परिस्थितियों के मद्देनजर प्रदेश सरकार ने वहां प्रत्येक आवश्यक सुविधाएं प्रदान की हैं । तुरंत और प्रभावी निर्णय लेने के लिए वहां आवासीय आयुक्त को नियुक्त किया गया है । विकास के लिए आवश्यक सभी कार्यालय वहां आवासीय आयुक्त के अधीन कार्य करते हैं । विद्युत सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए लगभग सारी घाटी में जेनरेटर द्वारा बिजली दी जा रही है । जहां यह सुविधा उपलब्ध नहीं है, वहां बिजली का प्रबंध है । विकास की गति में सबसे बड़ी रुकावट मौसम है । पांगी घाटी वर्ष में लगभग आठ माह बर्फ और सरदी के प्रकोप से जकड़ी रहती है । जिस कारण विकास कार्यों का हो पाना लगभग असंभव होता है ।

पांगी घाटी का मुख्यालय किलाड़ समुद्रतल से ८४११ फुट की ऊंचाई पर स्थित है । यहां बिजली, पानी, टेलिफोन की सुविधा है । किलाड़ में जमा दो तक स्कूल है । स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अस्पताल भी है । वास्तव में पांगी घाटी के ६१ गांवों, जिनमें मात्र ४५ गांवों में आबादी है, की गतिविधियों का केंद्र किलाड़ ही है ।

पांगी घाटी में पहुंचने के लिए जितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उससे कहीं अधिक यहां प्रकृति सुख और आनंद प्रदान करती है । यह घाटी बहुत हरी-भरी है । इस घाटी का 'साच' गांव तो पर्यटकों के लिए स्वर्ग है । चारों ओर से बर्फ से ढकी पहाड़ियों के मध्य ७८८६ फुट समुद्रतल की ऊंचाई पर स्थित यह गांव प्रकृति की अनमोल विरासत है । यहां पर पैंतीस परिवार रहते हैं । वन व लोक-निर्माण विभागों के विश्राम गृह पर्यटकों को किसी पांच सितारा होटल से कम नहीं लगते ।

इस घाटी में एक अनोखा गांव है—मिंघल । इस गांव का नामकरण यहां की मिंघलदेवी के नाम पर हुआ है । गांव में मिंघलदेवी का भव्य मंदिर है । एक बार कुछ चोर मिंघल माता के मंदिर से लाखों रुपये के आभूषण चुराकर ले गये थे, पर अचानक उन्हें रास्ता दिखायी देना बंद हो गया । अपनी भूल स्वीकार कर उन्होंने आभूषण मंदिर में रख दिये तथा गांववालों से अपने कृत्य की माफी मांग ली । इस गांव में एक ही बैल से लोग खेती करते हैं, दो बैलों से खेती की जाए तो एक बैल मर जाता है । गांव के किसी घर में चारपाई नहीं

है । गांव के लोग चारपाई पर मिंघल मां के शाप के कारण सो नहीं सकते । भूलवश कोई चारपाई पर सो भी जाए तो चारपाई को अज्ञात शक्ति उलट देती है ।

इस घाटी की विवाह प्रथा भी अनोखी है । यहां लड़की भगाकर ले जाने का रिवाज है । पांगी में फलातर और उढान भटोरी दो उत्सव होते हैं । इनमें लड़का अपनी मनपसंद लड़की को अपने साथ भगाकर घर ले जाता है । यदि लड़की लड़के के घर में खाना खा ले तो शादी की रजामंदी मानी जाती है । और लड़की खाना न खाये तो गांव की प्रजा (पंचायत) लड़केवालों को हरजाना डालती है, जो उन्हें दंड स्वरूप लड़की वालों को देना पड़ता है ।

जून से सितंबर माह तक पांगी घाटी का दृश्य पूर्णतया बदल जाता है । इन दिनों यहां सैकड़ों गडरिये अपने भेड़ों के रेवड़ सहित डेरा डालते हैं । पांगी में उगनेवाली हरी घास बड़ी पौष्टिक होती है । इन दिनों गद्दी लोग यहां अपने रेवड़ सहित डेरा डाले रहते हैं । वे यहां भेड़-बकरियों को चरवाना पसंद करते हैं ।

पांगी घास-पौष्टिकता से भरपूर

कृषि और बागवानी की आधुनिक तकनीकों की जानकारी के बावजूद इस क्षेत्र में अभी भी रबी और खरीफ की फसलें एक समय में, एक ही खेत में साथ-साथ उगायी जाती हैं । प्रकृति का यह करिश्मा यहीं देखने को मिलता है, अन्यत्र कहीं नहीं । इस घाटी में आलू भी पर्याप्त मात्रा में होता है ।

पांगी के लोग जनजातीय श्रेणी में आते हैं । उन्हें राजकीय सेवाओं में विशेष आरक्षण मिलता है । इस सुविधा के कारण इस घाटी के कई युवक उच्च पदों पर कार्यरत हैं ।

पांगी घाटी में प्रायः कर्मचारी नौकरी करने से कतराते हैं । वे इस घाटी को 'काला पानी' की संज्ञा देते हैं । इस क्षेत्र में लोग कैसे बसे ? इस संबंध में ऐसा माना जाता है कि जब भारतवर्ष में मुगलों का राज स्थापित हो रहा था, तो कुछ राजपूत राजाओं ने अपने परिवारों को आक्रमणकारियों से बचाने के लिए उन्हें सुरक्षित स्थानों में भेजने की मन में सोची, ताकि वे अपने परिवारों की चिंता से मुक्त होकर शत्रुओं से डटकर मुकाबला कर सकें । पांगी घाटी की भौगोलिक स्थिति को देखकर तात्कालिक राजपरिवारों ने महिलाओं तथा बच्चों को सुरक्षा सैनिकों एवं नौकरों की देखरेख में छोड़, उन्हें यहां रहने के लिए भेज दिया । दुर्भाग्यवश पीछे रह गये राजा मुगलों के साथ लड़ते हुए या तो मारे गये या लड़ाई में गंभीर रूप से घायल होने के कारण, यहां पहुंचने में असमर्थ रहे । ऐसा मानना है कि वर्तमान पांगी घाटी के लोग उनके ही वंशज हैं ।

—सिटी लाईट प्रिंटर्ज
पालमपुर-१७६०६१
कांगड़ा (हि. प्र.)

कादम्बिनी क्लब समाचार

क्लब का वार्षिक समारोह संपन्न

सहारनपुर । स्थानीय रामतीर्थ हॉल में 'कादम्बिनी' क्लब का वार्षिक समारोह संपन्न हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में कादम्बिनी के संपादक राजेन्द्र अवस्थी व विशेष अतिथि के रूप में डॉ. सुधा पांडेय पधारे । कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला विकास अधिकारी श्री डी. एन. लाल ने की ।

सर्वप्रथम क्लब के सदस्यों वी. पी. सिंघल, रमेश चन्द्र छबीला, कृष्ण शंकर भटनागर, ब्रिजेश जोशी, रविन्द्र जैन, अनिता कथूरिया, सुषमा बजाज, प्रमोद अग्रवाल, विनोद भृंग, श्याम कुमार सैनी, रमेश लूथरा, मेधावनी कथूरिया, सुरेश कथूरिया, ममता सिंघल, केदार नाथ प्रभाकर, सुभद्रा खुराना आदि ने अतिथियों का स्वागत किया ।

विनोद भृंग ने मां सरस्वती की वंदना प्रस्तुत की । अनिता कथूरिया ने स्वागत में एक गीत प्रस्तुत किया ।

रमेशचन्द्र छबीला ने स्वामी रामतीर्थ के जीवन का एक प्रेरक प्रसंग सुनाया और लघुकथाओं पर अपने विचार प्रकट किये । प्रहलाद आतिश ने एक कविता प्रस्तुत की ।

डॉ. राजेन्द्र अवस्थी ने कहा कि हमने जो आजादी की लड़ाई लड़ी थी, उसमें बुद्धिजीवियों का बड़ा हाथ था । लेखक को चुप बैठकर रहना और सहना शोभा नहीं देता । मैं आशावान हूं क्योंकि हमारा इतिहास वर्तमान नहीं और वर्तमान भूत नहीं बनेगा । साहित्य को जीवन के परिवेश और विचारधारा से अलग देखने का प्रयत्न न कीजिए ।

डॉ. सुधा पांडेय ने कहा कि साहित्य मनुष्य और मनुष्य के हृदय के तारों को जोड़ता है । अपने ही चिंतन से साहित्य समाज को बदल सकता है ।

संचालन ब्रिजेश जोशी ने किया ।

हिंदी की वर्तमान स्थिति

बोकारो । 'कादम्बिनी' क्लब की ओर से हिंदी की वर्तमान स्थिति पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसकी अध्यक्षता बोकारो इस्पात संयंत्र के राजभाषा विभाग के सहायक महाप्रबंधक श्री नामदेवजी ने की । कॉलेज की प्राचार्या डॉ. सुमेधा त्रिपाठीजी का इस आयोजन में पूर्ण सहयोग रहा ।

इस अवसर पर श्री नामदेव, राजभाषा विभाग के अधिकारी श्री योगेंद्र साहू, शिक्षा विभाग के उपमुख्य प्रबंधक श्री कौशल किशोरजी ने अपने विचार व्यक्त किये ।

क्लब की संयोजिका श्रीमती मंजु मेहारिया, सचिव सुश्री जयश्री अखौरी, वरिष्ठ सदस्याएं श्रीमती उषा गुप्ता, श्रीमती कुमकुम गुप्ता, श्रीमती मनोरमा सहाय, श्रीमती हेमलता आदि ने भी अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये ।

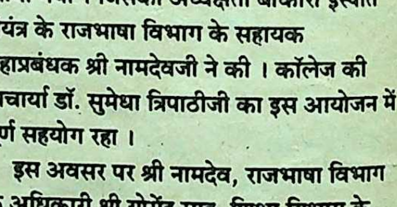

'कादम्बिनी क्लब' की रचना-संगोष्ठी

पटना । 'कादम्बिनी क्लब' की रचना-संगोष्ठी हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. भगवतीचरण मिश्र ने की एवं संचालन क्लब के संयोजक डॉ. शिवनारायण ने किया ।

जिन रचनाधर्मियों ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया, उनमें सर्वश्री राजकुमार प्रेमी, आनंद रस्तोगी, रामलखन सिंह मयंक, आनंद किशोर शास्त्री, दिनेश मिश्र, भूपालशरण, डॉ. शिवनारायण आदि प्रमुख थे ।

प्रस्तुतिः भूपाल शरण

आज शरद-पूनम सखी बन-ठनकर आयी है

पिपरिया । शरद पूर्णिमा पर हिंदी साहित्य परिषद एवं कादम्बिनी क्लब के संयुक्त तत्वावधान में 'शरदोत्सव' का आयोजन कवि श्री पी. एन. पाठक की अध्यक्षता में किया गया ।

शरदोत्सव पर काव्य निशा का प्रारंभ सरस्वती की वंदना से हुआ । पं. शोभाराम शास्त्री, श्री अवधेश पाराशर एवं श्री बसंत व्यास ने सरस्वती की स्तुति की । कवि श्री अनंत साहू का गीत 'आज शरद पूनम सखी बन-ठनकर आयी है ।' की सुमधुर प्रस्तुति को काफी सराहना मिली । श्री नंदकिशोर राय ने गजल सुनायी । श्री हरिशंकर अग्रवाल की कविता 'घर' एवं 'कचहरी' को काफी सराहना मिली । नवोदित कवि नितिन नेमा ने अपनी प्रतिनिधि कविताएं सुनायीं ।

'कादम्बिनी' क्लब के संयोजक श्री ओमप्रकाश सोनी ने अपनी व्यंग्य क्षणिकाएं सुनायीं । श्री बद्रीप्रकाश परसाई, श्री देवेन्द्र रावत, नवोदित कवि श्रीकृष्ण शर्मा, अरविंद परिहार, आशुतोष व्यास, अजय मौर्य, राजीव जायसवाल, विजय जैन आदि ने भी अपनी कविता सुनायी । हिंदी साहित्य परिषद के अध्यक्ष श्री खूबचंदजी मंडलोई एवं [illegible]क्रम के अध्यक्ष श्री पी. एन. पाठक ने [illegible]ने विचार व्यक्त किये ।

मानसिकता बदल गयी

'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेंद्र अवस्थी ने देहरादून में स्थापित किये गये कादम्बिनी क्लब का उद्घाटन किया । इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आजादी के पूर्व साहित्यकारों के पास लिखने को बहुत कुछ था क्योंकि वे तब विदेशी शासकों के खिलाफ लड़ रहे थे । अब स्थिति उलटी है । उन्हें अब अपनों के ही खिलाफ लड़ना व लिखना पड़ रहा है । इसके अलावा बदलते सामाजिक परिवेश के कारण लेखकों की मानसिकता भी बदल गयी है जिसका असर उनकी रचनाओं पर दिखायी देता है । उनके पात्र संघर्षशील हो गये हैं । मुंशी प्रेमचंद आज के संदर्भ म या तो अप्रासंगिक हो जाते या फिर उन्हें अपनी सोच बदलनी पड़ती ।

श्री अवस्थीजी ने कहा कि पत्रकारिता जगत में आज व्यापक परिवर्तन आ गया है । आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तिपाये पर बैठकर स्वयं प्रूफ व रचनाएं देखते थे । आज के संपादक प्रशासक अधिक, और लेखक या पत्रकार कम हैं । कादम्बिनी क्लब के बारे में उन्होंने बताया कि पूरे देश में इस तरह के ३०० क्लब कार्य कर रहे हैं । अंडमान निकोबार तथा पाक सीमा से एकदम सटे अनूपगढ़ में भी इस तरह के क्लब हैं ।

उन्होंने बताया कि कादम्बिनी क्लबों के गठन का उद्देश्य नवोदित लेखकों तथा साहित्यकारों को प्रोत्साहित करना है ।

भारत तिब्बत सीमा पुलिस के उप महानिरीक्षक सुधीर अवस्थी ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये । स्थापना गोष्ठी का संचालन रजनीश त्रिवेदी ने किया । अन्य प्रमुख वक्ता थे—एन.के.पी. कॉलेज की प्राचार्या डॉ. सुधा पांडेय, डी.ए.वी. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. जे.पी. निगम, डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी, ठाकुर विश्वनारायण सिंह, कवि कुल्हड़, कादम्बिनी क्लब के संयोजक डॉ. जयभगवान याद तथा आनंद प्रकाश जैन ।

सांस्कृतिक समाचार

निराला मूर्ति स्थापना समारोह

महाकवि पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के पैतृक ग्राम एवं कर्म भूमि गढ़ाकोला जनपद उन्नाव के निकट ग्राम ओसियां में महाकवि की स्मृति में स्थापित 'महाप्राण निराला महाविद्यालय' परिसर में निरालाजी की मानवाकार प्रतिमा का अनावरण निराला निर्वाण दिवस १५ अक्तूबर ९४ को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा ने किया ।

महाप्राण निराला को अपने श्रद्धा प्रसून अर्पित करते हुए श्री वोरा ने कहा कि निरालाजी सच्चे अर्थों में कवि थे और साथ ही उदार हृदय महामानव भी । उनकी रचनाएं शाश्वत हैं और समाज के अति निकट भी । यथार्थ की धरती पर उन्होंने साहित्य की रचना करके चतुरी चमार, बिल्लेश्वर बकरिहा और कुल्लीभाट-जैसे पात्रों को भी अमल कर दिया ।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने निरालाजी के अनेक संस्मरण सुनाये तथा उन्हें युग सृष्टा बताया ।

कवि सांसद उदय प्रताप सिंह ने निराला को सामाजिक क्रांति का कवि बताया ।

इस अवसर पर लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. महेंद्र सिंह सोढ़ा, हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, नवनीत हिंदी डाइजेस्ट के संपादक डॉ. गिरजाशंकर त्रिवेदी, मानस संगम कानपुर के संस्थापक बद्री नरायन तिवारी, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष शिवनाथ सिंह कुशवाहा, डॉ. नरेंद्र द्विवेदी, डॉ. उपेंद्र बहादुर सिंह तथा जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष फतेह बहादुर सिंह ने भी महाकवि को श्रद्धांजलि अर्पित की । संचालन महाविद्यालय के प्रबंधक कमला शंकर अवस्थी ने किया ।

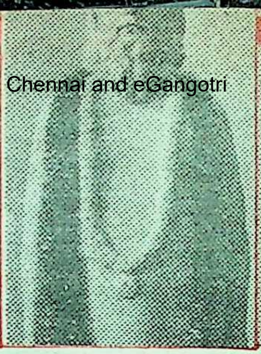

चित्तौड़गढ़ में 'मीरा महोत्सव'

चित्तौड़गढ़ में आयोजित 'मीरा महोत्सव' के दौरान पद्मश्री बिरजू महाराज के निर्देशन में तीस कलाकारों ने मिलकर मीरा के जीवन वृत्तांत पर आकर्षक नृत्य रूपक प्रस्तुत किया ।

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ के तत्वावधान में संपन्न इस तीन दिवसीय मीरा महोत्सव का उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल बलिराम भगत ने किया । उद्घाटन समारोह में पद्मश्री तीजनबाई, सपेरा नृत्यांगना गुलाबो एवं कजरी गायिका व अजिता श्रीवास्तव के कार्यक्रम हुए । दूसरे दिन भक्ति संगीत सभा और अग्निनृत्य प्रमुख आकर्षण का केंद्र बने रहे ।

इतिहास झूठ बोलता है

पटना, अखिल भारतीय हिंदी प्रसार प्रतिष्ठान की ओर से सिद्धेश्वर की काव्य कृति इतिहास झूठ बोलता है, का लोकार्पण डॉ. भगवतीशरण मिश्र ने किया ।

समारोह के मुख्य अतिथि पंजाब नेशनल बैंक के महाप्रबंधक एवं चर्चित कवि जगदीश चंद्र पंडया थे ।

पेड़ छनी परछाइयां—एक गीतोत्सव

हिंदी भवन न्यास समिति की साहित्य-मंदाकिनी द्वारा नवगीत की कवयित्री श्रीमती इंदिरा मोहन के प्रथम गीत—संग्रह 'पेड़ छनी परछाइयां', का त्रिवेणी सभागार में लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया ।

संग्रह को लोकार्पित करते हुए विख्यात राजनेता और कवि श्री अटल विहारी वाजपेयी ने कहा, 'गीतों का युग बीत चुका—सा लगता है परंतु अगला प्रारंभ भी नहीं हो पा रहा है । इस सबके होते हुए भी विश्वास है इस गीत युग की शुरुआत अवश्य होगी, क्योंकि पांच हजार वर्षों की हमारी यह परंपरा है, यूं ही लुप्त नहीं हो सकती । आज गीतकार इस ओर गंभीरतापूर्वक ध्यान दे रहे हैं, इसका एक प्रमाण यह है कि गीत यात्रा का अनुभव पक्ष लेकर श्रीमती इंदिरा मोहन अपने पहले गीत संग्रह में उपस्थित हुई हैं जहां मंच के गीत और साहित्य के गीत के बीच की दीवार स्वतः ढह गयी है ।

पेड़ छनी परछाइयां
लोकार्पण उत्सव
साहित्य मंदाकिनी हिंदी भवन

इस अवसर पर गीत विधा के समर्थ आलोचक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, गीतकार डॉ. कुंवर बेचैन, गीतकार रमानाथ अवस्थी, पं. गोपाल प्रसाद उपस्थित थे ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता समीक्षक डॉ. विजयेंद्र स्नातक ने की । सफल संचालन गीतकार श्री मधुर शास्त्री ने किया ।

व्यास सम्मान और शंकर पुरस्कार

के. के. बिड़ला फाउंडेशन ने १९९४ का व्यास सम्मान हिंदी के प्रख्यात कवि, साहित्यकार और संपादक डॉ. धर्मवीर भारती को उनके कविता संग्रह 'सपना अभी भी' (प्रकाशन वर्ष १९९३) के लिए घोषित किया । इसकी सम्मान राशि १.५० लाख रुपये है ।

प्रो. विद्यानिवास मिश्र

श्री धर्मवीर भारती

फाउंडेशन ने इस वर्ष का शंकर पुरस्कार प्रो. विद्यानिवास मिश्र को उनकी कृति 'महाभारत का काव्यार्थ' के लिए घोषित किया । इसकी सम्मान राशि एक लाख रुपये है ।

के. के. बिड़ला फाउंडेशन ने चतुर्थ सरस्वती सम्मान (१९९४) के लिए वर्ष १९८४-९३ की अवधि में प्रकाशित साहित्यिक कृतियों पर विचार करने के बाद प्रख्यात कवि डॉ. हरभजन सिंह की काव्य कृति रुख ते ऋषि (प्रकाशन : १९९२, पंजाबी भाषा) का चयन किया । इसकी सम्मान राशि तीन लाख रुपये है ।

भावी पीढ़ी बचाने की शपथ

दिल्ली पब्लिक स्कूल आर. के. पुरम के नन्हें बच्चों ने 'पर्यावरण शिक्षा परिषद' के माध्यम से पर्यावरणविद मौरिस एफ. स्ट्रांग का अपने स्कूल में स्वागत किया ।

मौरिस स्ट्रांग संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यावरण एवं विकास सम्मेलन के महासचिव रह चुके हैं । श्री स्ट्रांग भारत में जवाहरलाल नेहरू अंतरराष्ट्रीय सम्मान ग्रहण करने आये हुए थे ।

29/5/95

समस्यापूर्ति-१८४

जड़मति

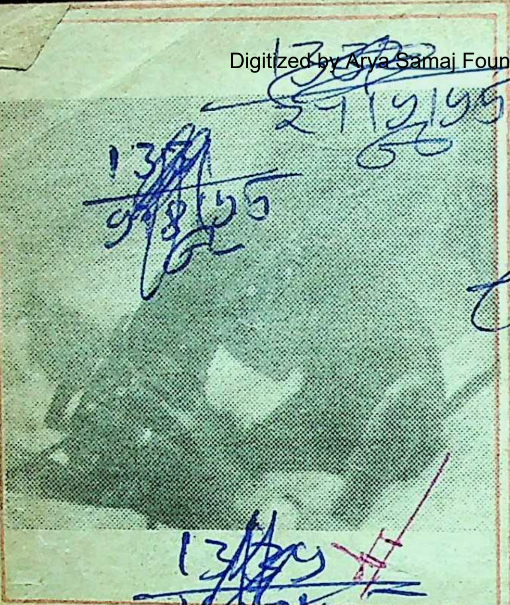

185
126
357

द्वितीय पुरस्कार

परमाणु से जींस तक किया रहस्यों को उजागर
पर आपसी फूट के जींस न खोज पाया मानव
थक-हारकर यह कार्य सौंपा पूर्वज को
खोजकर उसने यह समाधान बतलाया
हंसना मुसकराना ही एकता का मूलमंत्र
ऐसा जो न करे जो जड़मति

• जय कुमार मूलचंदानी

ए-५/४, नेपियर रोड कॉलोनी
ठाकुरगंज चौक, लखनऊ-२२६००३

तृतीय पुरस्कार

चित्र खींचना तुम भी सीखो
हम भी हैं तेरे वंशज,
अक्ल और अभ्यास के जरिये
कोई भी
हो सकता दक्ष
कल का जड़मति

• विजय आनंद 'ध्रुव'

दूरसंचार विद्युत मंडल,
जी.पी.ओ., पटना-८००००१

समस्या पूर्ति-१८४ के लिए प्राप्त प्रविष्टियों में से कोई भी प्रविष्टि प्रथम पुरस्कार योग्य नहीं पायी गयी अतः इस बार प्रथम पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

— सं.

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से [illegible] द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित

मासिक प्रकाशन ● फरवरी '९५

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

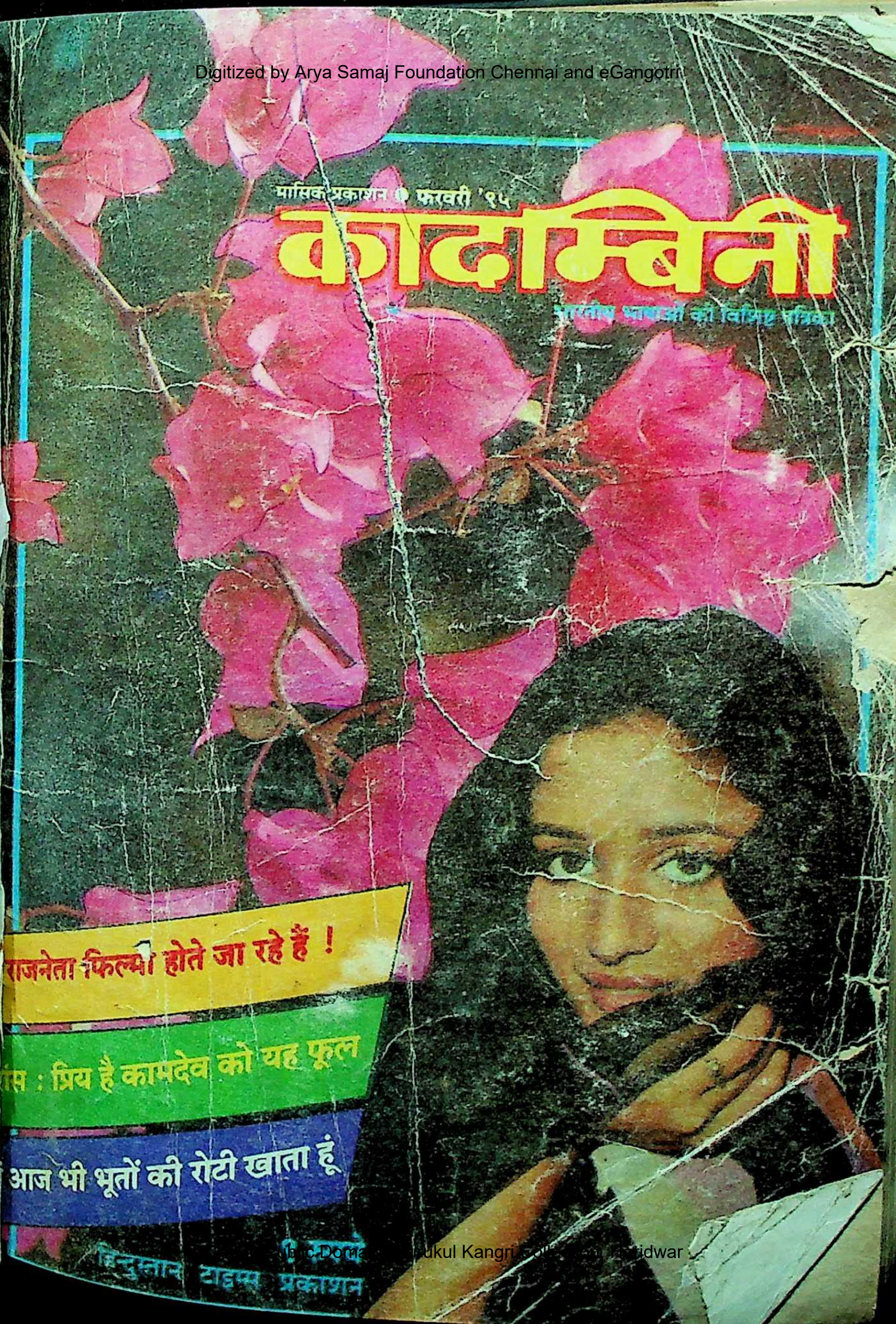

राजनेता फिल्मी होते जा रहे हैं !

स : प्रिय है कामदेव को यह फूल

आज भी भूतों की रोटी खाता हूं

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

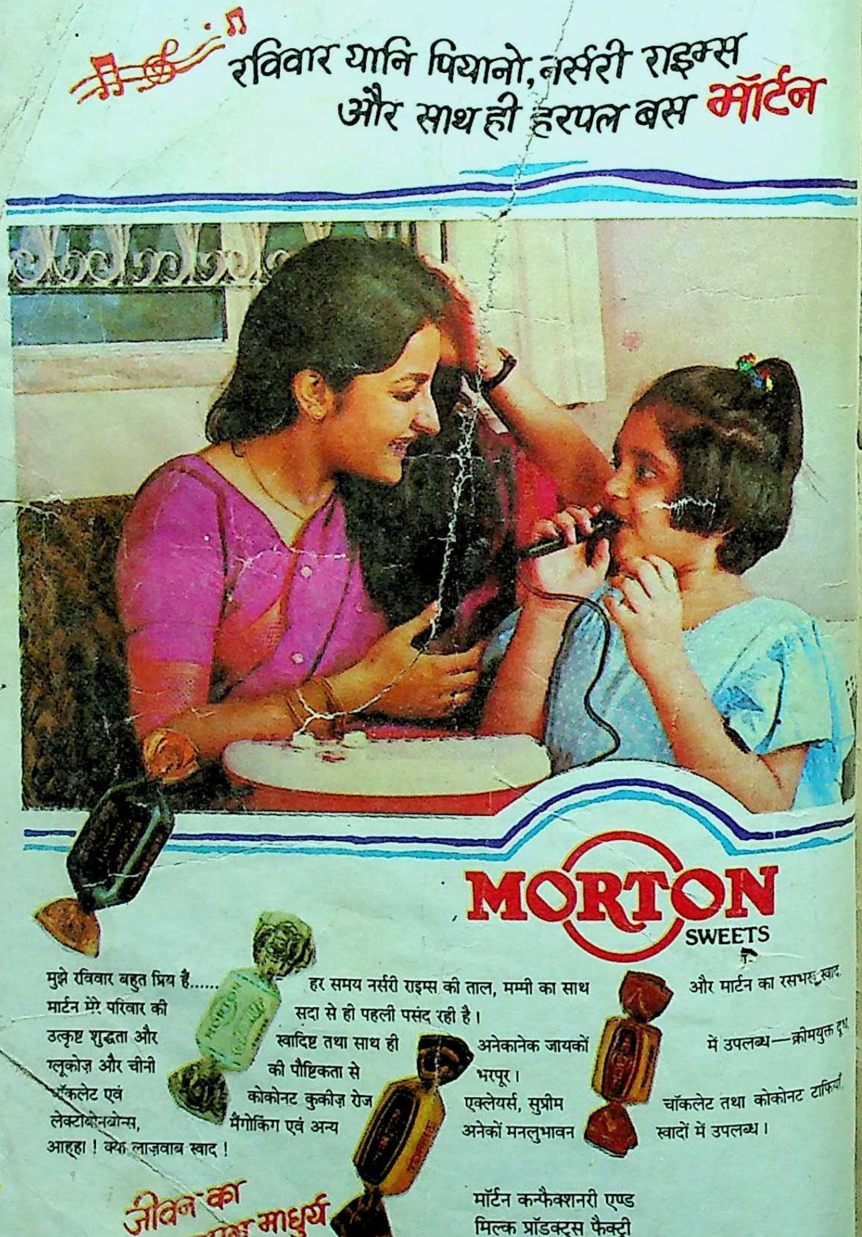
रविवार यानि पियानो, नर्सरी राइम्स
और साथ ही हरपल बस मॉर्टन
MORTON
SWEETS
जीवन का
अनुपम माधुर्य

मुझे रविवार बहुत प्रिय है...... हर समय नर्सरी राइम्स की ताल, मम्मी का साथ और मार्टन का रसभरा स्वाद

मार्टन मेरे परिवार की
उत्कृष्ट शुद्धता और
ग्लूकोज़ और चीनी
चॉकलेट एवं
लेक्टोबोनबोन्स,
आहहा ! क्या लाज़वाब स्वाद !

सदा से ही पहली पसंद रही है।
स्वादिष्ट तथा साथ ही
की पौष्टिकता से
कोकोनट कुकीज़ रोज
मैंगोकिंग एवं अन्य

अनेकानेक जायकों
भरपूर।
एक्लेयर्स, सुप्रीम
अनेकों मनलुभावन

में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध
चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ
स्वादों में उपलब्ध।

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड
मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार

चेतावनी : MORTON मढ़ौरा का लोगो एवं रैपर [illegible] अधिकारों का उल्लंघन अभियोज्य।

प्रसिद्ध भविष्यवक्ता, प्रकाण्ड ज्योतिषी व हस्तरेखा विशेषज्ञ
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली की अनमोल पुस्तकें

बृहद हस्त रेखा शास्त्र

प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्म

पृष्ठ: 312 • मूल्य: 48/-
डाकखर्चः 6/-

बृहद् हस्तरेखा शास्त्र

आप खुद अपने हाथ की रेखाएं पढ़कर अपना भविष्यफल जान सकते हैं। किसी पण्डित अथवा ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। इस पुस्तक में पहली बार हस्तरेखा का प्रैक्टिकल ज्ञान चित्रों सहित समझाया गया है।

हस्तरेखा के 240 विभिन्न योगों का पहली बार प्रकाशन जैसे–आपके हाथ में धन-संपत्ति का योग, पुत्र योग, विवाह योग, विदेश यात्रा योग आदि हैं या नहीं ?

आपके हाथ की रेखाएं क्या कहती हैं? कौन से व्यापार से आपको लाभ होगा ? नौकरी में तरक्की कब तक होगी ? पत्नी कैसी मिलेगी ? प्रेम में सफल होंगे या नहीं ? विवाहित जीवन सुखी होगा कि नहीं, कब होगा आदि। नेता बनेंगे या अभिनेता ? लेखक बनेंगे या प्रोफेसर ? विदेश यात्रा पर कब जायेंगे ? मन की शांति एवं कष्टों का कब अन्त है ? इत्यादि सैकड़ों प्रश्नों के उत्तर।

पृष्ठ: 272 • मूल्य: 48/-
डाकखर्चः 6/-

प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्म

- सम्मोहन क्षेत्र का अद्भुत प्रायोगिक प्रामाणिक ग्रंथ, जिसमें हिप्नोटिज्म के मूल सिद्धांतों का सचित्र बेबाक प्रामाणिक विवरण है।
- ग्रंथ में भारतीय व पाश्चात्य दोनों विद्याओं का अपूर्व संयोजन होने से पुस्तक प्रामाणिक एवं संग्रहणीय हो सकी है।
- पुस्तक में हिप्नोटिज्म को सरल-सरस ढंग से चित्रों द्वारा समझाया गया है जिससे साधारण पाठक भी एक अच्छा सम्मोहन विशेषज्ञ बन सकता है।
- पुस्तक में हिप्नोटिज्म के प्रकार, प्रयोग, शक्ति, हिप्नोटिज्म के सिद्धांत, त्राटक, भावना, इच्छा-शक्ति, न्यास, ध्यान, सम्मोहन के तथ्य आदि पर पूर्ण प्रामाणिकता के साथ सचित्र विवरण है।
- रोग-निवारण, कष्ट दूर करने व जीवन में प्रतिदिन आने वाली बाधाओं, समस्याओं व कठिनाइयों के निराकरण में इस पुस्तक का विवरण पूर्ण उपयोगी है।

पृष्ठ: 380 • मूल्य: 48/-
डाकखर्चः 6/-

मंत्र रहस्य

मंत्र-शक्ति के चमत्कारों का अभूतपूर्व ग्रंथ

- मंत्र, मंत्र का मूल स्वरूप, मंत्र की मूल ध्वनि व उसके सफल प्रयोगों पर एक प्रामाणिक सचित्र पुस्तक।
- असंख्य दुर्लभ मंत्र व उसके प्रामाणिक प्रयोग, जिसके माध्यम से साधक एक सफल मंत्र-शास्त्री एवं ज्ञाता बन सकता है।
- जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए अद्भुत एवं आश्चर्यजनक ग्रंथ, जिसके माध्यम से साधक स्वयं के कष्टों को दूर करने में समर्थ हो सकता है।
- तांत्रिक, मांत्रिक एवं अन्य सभी विद्याओं के प्रामाणिक मंत्रों का अपूर्व संग्रह।
- मंत्रों के मूल स्वरूप, मंत्र चैतन्य, मंत्र कीलन-उत्कीलन, मंत्र ध्वनि, मंत्र प्रयोग, मंत्र विनियोग एवं मंत्रों के सफल प्रयोगों के लिए एक प्रामाणिक सचित्र ग्रन्थ।

अपने निकट के बुक स्टॉल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टॉलों पर मांग करें। वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता:

पुस्तक महल 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-2 फोन: 3268292-93
शाखाएं: • बंगलौर • बंबई • पटना फोन: 653644

VAN.007/93.H

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हो, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

● ज्ञानेन्दु

१. समकक्ष— क. एक ही कक्षा में, ख. बराबरी का, ग. समान पेशेवाला, घ. एक ही साथ होनेवाला ।

२. बुभुक्षा— क. लालसा, ख. लालच, ग. भूख, घ. जानने की इच्छा ।

३. अनुकृति— क. नकल, ख. चित्रांकन, ग. पीछे चलना, घ. आज्ञा ।

४. सर्वतः— क. सदा, ख. चारों ओर, ग. सब प्रकार से, घ. अक्षय ।

५. मायावी— क. जादूगर, ख. वेश बदलनेवाला, ग. जिसने अनुचित मार्ग अपनाया हो, घ. फरेबी ।

६. परिपाक— क. समाप्ति, ख. अच्छी तरह पकना या पकाया जाना, ग. पूर्ण विकास, घ. किसी बात का अधिक होना ।

७. चिरपोषित— क. पुराना, ख. जो सदा याद रहे, ग. संरक्षित, घ. जिसका बहुत दिनों तक पोषण किया गया हो ।

८. निरानंद— क. आनंद-ही-आनंद, ख. इच्छारहित, ग. आनंदरहित, घ. आनंद का अभाव ।

९. परोपजीवी— क. दूसरे की भलाई करनेवाला, ख. दयालु, ग. दूसरों के सहारे जीनेवाला, घ. दूसरों के लिए कष्टदायक ।

१०. दिव्य— क. अलौकिक, ख. देवताओं से संबंधित, ग. आत्मिक, घ. आध्यात्मिक ।

११. संयमित— क. बाधित, ख. नियंत्रित, ग. सिद्ध, घ. रोगयुक्त ।

१२. वाक्सिद्धि— क. प्रण, ख. सत्य, ग. वचन का पक्का, घ. जो बात कहे वह सच सिद्ध हो ।

१३. परिबोध— क. ज्ञान, ख. प्रतिभा, ग. अनुभव, घ. जानकारी ।

१४. अद्यावधिक— क. आवश्यकता से अधिक, ख. आज से संबंधित, ग. आज से आगे, घ. बिलकुल आज तक का ।

उत्तर

१. ख. बराबरी का । दोनों साहित्यकार **समकक्ष** हैं । (सम+कक्ष)

२. ग. भूख । **बुभुक्षा** मनुष्य से क्या नहीं कराती है ! (व्युत्. -भुज्, सन्)

३. क. नकल । यह रचना किसी श्रेष्ठ रचना की **अनुकृति** प्रतीत होती है । (अनु+कृति)

४. ख. चारों ओर, सर्वत्र । ग. सब प्रकार से पूर्णतः । कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने **सर्वतः** ख्याति अर्जित की । (व्युत्. -सर्व)

५. घ. फरेबी, छली । रावण अत्यंत **मायावी** था । (व्युत्. -माया)

६. ख. अच्छी तरह पकना या पकाया जाना । ग. पूर्ण विकसित । अन्न का **परिपाक** होने पर ही वह खाने योग्य होता है । (व्युत्. -परि, पच्)

७. घ. जिसका बहुत दिनों तक पोषण किया

गया हो, चिरकांक्षित । उसकी वैज्ञानिक बनने की **चिरपोषित** आकांक्षा पूर्ण हुई । (चिर+पोषित)

८. ग. आनंदरहित । घ. आनंद का अभाव । अर्थाभाव प्रायः मनुष्य को **निरानंद** बना देता है । (निर्+आनंद) ।

९. ग. दूसरों के सहारे जीनेवाला (अंग. -पैरसाइट) । कुछ जीव तथा वनस्पति दोनों ही **परोपजीवी** होते हैं । (पर+उप+जीवी)

१०. क. अलौकिक । संत-महात्माओं में **दिव्य** शक्ति का आविर्भाव होता है । (व्युत् -दिव्, यत्)

११. ख. नियंत्रित । **संयमित** जीवन व्यतीत करनेवाला दीर्घायु होता है । (व्युत्. -संयम्)

१२. घ. जो बात कहे वह सच सिद्ध हो । सदा सत्य बोलने से ही **वाक्‌सिद्धि** होती है (वाक्+सिद्धि)

१३. क. ज्ञान । अध्ययन-मनन से ही किसी विषय में **परिबोध** उत्पन्न होता है । (परि+बोध)

१४. घ. बिलकुल आज तक का (अंग. -अपटुडेट) । जो समाज **अद्यावधिक** विचार नहीं रखता वह पिछड़ जाता है । (व्युत्. -अद्, यत्, अव, धा)

पारिभाषिक शब्द

Delegate	= प्रतिनिधि
Signature	= हस्ताक्षर
Finger-print	= अंगुलि-छाप
Medical Certificate of Sickness	= बीमारी का प्रमाण-पत्र
Fitness Certificate	= आरोग्य प्रमाण-पत्र
Economic	= आर्थिक
Financial	= वित्तीय

ज्ञान-गंगा

मनोरोधे निरुध्यन्ते कर्माण्यपि समन्ततः ।
अनिरूद्धमनस्कस्य, प्रसरन्ति हि तान्यपि ।

(योगशास्त्र ४/३८)

मन का निरोध होने पर कर्म का भी निरोध हो जाता है, क्योंकि कर्म का आस्रव मन के अधीन है । किंतु जो पुरुष मन का निरोध नहीं कर पाता है, उसके कर्मों की अभिवृद्धि होती रहती है ।

कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः ।
मूर्घ्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा ।

(नीतिशतक २५)

फूलों के गुच्छे की तरह स्वाभिमानी व्यक्तियों की दो ही वृत्तियां होती हैं, या तो सभी लोगों के ऊपर रहते हैं, या वन में शीर्ण हो जाते हैं ।

सत्कृतं स्वजनेनेह परोऽपि बहु मन्यते ।

(महाभारत, शान्तिपर्व ६७/३५)

अपने भाई-बंधु जिसका आदर करते हैं उसका दूसरे लोग भी आदर करते हैं ।

शिवः शक्तया युक्तो यदि भवति शक्तः
प्रभवितुम् ।

(सौन्दर्यलहरी १)

जब शिव शक्ति से युक्त होते हैं तभी वह कुछ करने में समर्थ होते हैं ।

पत्नी धर्मार्थकामानां कारणं परमं मतम् ।
विशेषतश्च धर्मस्य ।

(मार्कन्डेय पुराण ६८/९)

पत्नी ही धर्म, अर्थ और काम का प्रधान कारण है और विशेषकर धर्म का ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय)

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

'स्वास्थ्य विशेषांक' में 'दमाः दम के साथ जाता है...' लेख पढ़ा । मैंने अपने चिकित्सकीय अनुभव में पाया है कि दमे का रोगी समुचित व व्यवस्थित आहार विहार के सेवन से बिना औषधि के भी रोग को नियंत्रित कर सकता है ।

इस के लिए उसे निम्नलिखित बातों का पालन करना आवश्यक है ।

१. दमे के रोगी को रात्रि भोजन सूर्यास्त से पूर्व कर लेना चाहिए । देर हो जाने की स्थिति में उसे भोजन की जगह केवल दुग्धाहार का सेवन करना चाहिए । ऐसा करने से रात का दौरा पड़ने की संभावना क्षीण हो जाती है ।

२. गाजर का रस कम से कम आधा किलो की मात्रा में प्रतिदिन पीना चाहिए । इससे न केवल रोग दूर होता है अपितु उत्तम स्वास्थ्य लाभ की प्राप्ति भी होती है ।

३. रोगी को कूलर, ए. सी. के प्रयोग व ठंडी वस्तुओं का सेवन सर्वथा परित्याग कर देना चाहिए । पीने के लिए सदैव उष्ण जल का ही प्रयोग करना चाहिए ।

दमे के रोगियों को इस बात को सुनिश्चित मान लेना चाहिए कि इस रोग का इलाज औषध चिकित्सा से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण तथा अपने 'खान-पान के नियमों के पालन करने में ही निहित है । सुलभ घरेलू उपचार के रूप में सरसों, पुराना गुड़ व अजवायन चूर्ण के प्रयोग से आशातीत लाभ होता है ।

—डॉ. अनूप कु. गक्खड़
एम.डी. आयुर्वेद
डब्लयू. एच. १०/२ बस्ती रोड़ (अड्डा बस्ती)
जालंधर शहर १४४००८

स्वास्थ्य अंक उपयोगी

'कादम्बिनी' का एक पाठक हूं, विशेषांकों का मुख्य रूप से, दिसम्बर' ९४ का 'स्वास्थ्य विशेषांक' हाथ में है । प्रभावशाली लगा, इसी संदर्भ में कुछ निवेदन करना चाहता हूं । मार्च' ९४ के अंक में 'प्रतिक्रियाएं' स्तंभ में श्री ओमप्रकाश बजाज, सेवानिवृत्त वरिष्ठ मंडल प्रबंधक, भारतीय जीवन बीमा निगम, इंद्राणी अपार्टमेंट जबलपुर, का स्वयं परीक्षित 'संधिवात' 'रियूमेटिक आर्थराइटिस' के संदर्भ में देशी इलाज पढ़ा था, मेरी भांजी जिसकी उम्र १४ वर्ष है, को एकाएक हाथ-पांव की अंगुलियों आदि में सूजन हो गयी थी, मैंने उन्हें सलाह दी कि चिकित्सक से बीमारी की जानकारी करें चिकित्सक का इलाज चल रहा था, दवाई लेने पर आराम और छोड़ने पर पुनः वही अवस्था, उसे उठने-बैठने में भी तकलीफ होने लगी, डॉ. साहब द्वारा उपरोक्त बीमारी बताने पर 'अरंड के बीज' वाली दवा जो उक्त अंक में दी गयी थी, का प्रयोग किया । प्रथम प्रयास में उसकी दुर्गंध एवं उल्टी की शिकायत

के कारण उसने दो-तीन दिन में छोड़ दी, एलोपैथिक दवाइयों का असर न होने के कारण पुनः चीनी मिलाकर आरंभ की । उससे पूर्ण आराम है । श्री बजाज साधुवाद के पात्र हैं, मेरी राय में हम सभी को आपकी प्रतिष्ठित पत्रिका के माध्यम से अपने ऐसे अनुभव लोकहित में प्रकाशित करने चाहिए । मेरे पिताजी को भी एक वैद्य ने इसी प्रकार दवा बतायी थी । उसका प्रयोग स्वयं मेरी माताजी ने किया तथा पिताजी ने अन्य कई परिचित महिलाओं को भी वह दवा दी है और फ़ायदा हुआ है ।उस पर अनुसंधान की आवश्यकता है कि किस कारण से वह फायदा देती है । महिलाओं में रक्त प्रदर की समस्या होती है, जिसमें माहवारी की निर्धारित अवधि के बाद भी रक्त प्रवाहित होता रहता है, उसकी दवा निम्न है—दो तोला सफेद संगरात पत्थर, छह दक्खिनी (चिकनी) सुपारी, ३० छोटी इलायची, चौथाई तोला श्रृंग भस्म । इन्हें कूटकर महीन कपड़े से छानकर ३६ पुड़िया सम भाग बनाकर, एक-एक पुड़िया सुबह-शाम गाय के कच्चे दूध के साथ सेवन करें । इस बीच तेल, गुड़, मिर्च, खटाई का परहेज रखना है ।

—बृजमोहन पंत,
रूद्रपुरा, नैनीताल ।

कादम्बिनी साहित्य महोत्सव

कादम्बिनी दिसम्बर, ९४ के स्वास्थ्य विशेषांक में प्रकाशित पुरस्कृत कहानियां—प्रथम बहुत-बहुत अच्छी लगी, द्वितीय बहुत अच्छी लगी और तृतीय भी अच्छी लगी । खुशी होती है कि 'कादम्बिनी'-परिवार और खासतौर पर संपादक (श्री राजेन्द्र अवस्थी) जी समय-समय पर नया, नवीन, अभिनव, सार्थक और उपयोगी सृजनात्मक आयोजनों और कार्यक्रमों के द्वारा श्रेष्ठ रचनाकारों और ज्ञानवर्द्धक सामग्रियों की खोज परख में लगे रहते हैं । 'कादम्बिनी' साहित्य महोत्सव नयी प्रतिभाओं की खोज परख की दिशा में एक श्लाघनीय प्रशंसनीय और सराहनीय कदम है ।

सम्मान की कोई श्रेणी नहीं होती, इसलिए पुरस्कृत तीनों कहानियां समानरूप से सम्मानित हैं । पुरस्कृत तीनों कथा शिल्पियों का हार्दिक स्वागत है । हां, इतना जरूर है कि डॉ. मीनाक्षी जोशी की कहानी कथा शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ और चमत्कारिक लगी । जब कहानी को पढ़ना प्रारंभ किया तो लगा कि स्वयं के भीतर ही कहीं कथा गंगा का उद्‌भव फूट पड़ा है । कहानी अपने हर मोड़ पर नारी मन की छटपटाहट, स्त्री होने की त्रासदी, प्रेम की पीड़ा और नारी जीवन की पूर्णतया के लिए पुरुष की सहभागीय अनिवार्यता को सुभाषित शैली में व्याख्यायित करती हुई गंगा सागर की ओर बढ़ती जा रही है । कथाकार का दार्शनिक अंदाजे बयां भी कम रोचक नहीं है । मैं तो कहूंगा कि यह अंदाजे बयां कथाकार का अपना रेयर आर्ट है ।

इस प्रकार की श्रेष्ठ कहानी की खोज, परख, चयन और प्रकाशन के लिए आपको कोटिशः बधाइयां ।

—शेख जैनुल आब्दीन
मियापुरा, गाजीपुर

दिसम्बर में प्रकाशित पुरस्कृत कहानियों पर हमें और भी अनेक पाठकों की प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं ।

हस्तरेखा, ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र का अनूठा साहित्य, सरल हिन्दी भाषा टीका सहित:

हस्त रेखाओं का गहन अध्ययन अमरीकी विद्वान **बेहनम** का प्रामाणिक ग्रंथ *(दो भाग)*	रु० 80
हस्तरेखाएं बोलती हैं: *कीरो (Cheiro)*	रु० 40
अंकों में छिपा भविष्य: *कीरो (Cheiro)*	रु० 40
भाग्य त्रिवेणी: *कीरो (Cheiro)*	रु० 40
नास्त्रेदाम की भविष्यवाणियां	रु० 40
अंक विद्या रहस्य: सेफ़ेरियल	रु० 40
आपकी राशि भविष्य की झांकी	रु० 40
हस्त संजीवन, प्राचीन पुस्तक	रु० 40
मंत्र शक्ति	रु० 25
तंत्र शक्ति	रु० 25
यंत्र शक्ति *(दो भाग)*	रु० 50
महामृत्युंजय साधना एवं सिद्धि	रु० 40
दत्तात्रेय तंत्र *भा०टी०*	रु० 80
रुद्रयामल तंत्र	रु० 100
लाल किताब—*साइक्लोस्टाइल* उर्दू की प्राचीन पुस्तक अब हिन्दी लिपि में	रु० 600
ज्योतिष सर्वस्व: *डॉ० सुरेशचन्द्र मिश्र* ज्योतिष शिक्षा के लिए क्रमबद्ध सम्पूर्ण ग्रंथ, पृष्ठ 500	रु० 150
वृद्ध यवन जातकम्: *आचार्य मीनराज कृत, हिन्दी टीकाकार, डॉ० सुरेशचन्द्र मिश्र:* 1800 वर्ष पूर्व लिखा गया फलित ज्योतिष का 4500 संस्कृत श्लोकों का महान संदर्भ ग्रंथ, सर्वप्रथम हिन्दी व्याख्या सहित पृष्ठ 1000 से अधिक दो भागों में सम्पूर्ण ग्रंथ	रु० 400
जातक तत्त्वम्: *पं० महादेव पाठक विरचितम्* फलित ज्योतिष का सौ वर्षों से अधिक प्राचीन ग्रंथ	रु० 100
जैमिनि सूत्रम् सम्पूर्ण: *महर्षि जैमिनिकृत* अनेक फलित पद्धतियां — अन्यत्र दुर्लभ	रु० 100
रत्न प्रदीप: *डॉ० गौरीशंकर कपूर* नवरत्नों एवं उपरत्नों का विस्तृत विवेचन	रु० 80
रणवीर ज्योतिर्महानिबन्ध: *प्राचीन दुर्लभ ज्योतिष ग्रंथ* (फोटोकापी रूप में उपलब्ध)	रु० 1800

डाक व्यय अलग लगेगा, बृहद् सूची पत्र मंगायें। वी०पी०पी० से मंगाने के लिए पत्र लिखें:

रंजन पब्लिकेशन्स, 16, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2 ✆ 3278835

कादम्बिनी के मूल्य में वृद्धि

बाजार में कागज की कीमतें बेहद बढ़ गयी हैं। कीमतें अब भी बढ़ती ही जा रही हैं। और कागज मिलने में भी कठिनाई हो रही है। इन परिस्थितियों को देखते हुए हमें मार्च अंक से कादम्बिनी के मूल्य में दो रुपये की वृद्धि करनी पड़ रही है जबकि अन्य पत्रिकाओं ने अपने मूल्य बहुत बढ़ा दिये हैं। हमें विश्वास है कि इतनी अधिक सामग्री के साथ मात्र दो रुपये अधिक देने में हमारे पाठकों को शिकायत नहीं होगी। स्मरणीय है कि कादम्बिनी में यह मूल्य वृद्धि हम पांच वर्ष बाद कर रहे हैं, वह भी विवश होकर।

—संपादक

क्या नेता शब्द गाली बनता जा रहा है।

'कादम्बिनी' के दिसम्बर ९४ अंक में श्री शांता कुमार जी का विचारोत्तेजक लेख 'क्या नेता शब्द गाली बनता जा रहा है' पढ़ा। वास्तव में नेता शब्द की फजीहत जितनी पिछले कुछ वर्षों में हुई है उतनी शायद पहले कभी नहीं हुई। लालबत्ती व संसद, विधानसभा की ऐश्वर्यपूर्ण कुरसीकी लिप्सा ने तथाकथित नेताओं की एक ऐसी भीड़ पैदा की है, जो सच को झूठ और झूठ को सच बनाने का पूरा माद्दा रखती है। इन नेताओं के धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय, आरक्षण के ढोंगी नारों ने समाज में संघर्ष व तनाव के बीज बोये हैं, ऐसे में तो नेता शब्द गाली लगेगा ही!

—मनोज कुमार बाजपेयी
ग्राम धोबड़ा जि. रायबरेली

इस लेख पर हमें बहुत बड़ी संख्या में पत्र प्राप्त हुए हैं। कुछ पाठकों के नाम : ललित कुमार शर्मा, भोपाल; राजसिंह, रेणुकूट; आरती घई, देहरादून ; अवनीश कुमार सिंह, कानपुर ; इंदर प्रकाश, नयी दिल्ली ; महेन्द्र सिंगला प्रसाद, पलवल ; उमाकांत सिंह, हरदोई ; स्वास्थ्य विशेषांक में प्रकाशित विभिन्न लेखों पर इन पाठकों ने भी हमें पत्र भेजे हैं : अजीत कुमार चावला, जयपुर ; डॉ. शकुन चंद गुप्त विशारद आर्य, लाल गंज, (रायबरेली) डॉ. एस. के. दुआ, फरीदाबाद ; जयशंकर, औरंगाबाद ;

कादम्बिनी सर्वोपरि

कादम्बिनी का नवीन पाठक हूं। इस पत्रिका की सभी रचनाएं क्रमबद्ध एवं ज्ञानवर्धन से परिपूर्ण रहती हैं। नवम्बर माह का 'पुनर्जन्म होता है। नहीं होता' तार्किक रचना मन पर एक अमिट छाप छोड़ देने वाली है, जो हमें बहुत अच्छी लगी।

स्वास्थ्य विशेषांक में मेरी रुचि अत्यधिक है। अतः मैंने बहुत सारी पत्रिकाओं के स्वास्थ्य विशेषांक का अध्ययन किया, लेकिन अन्य पत्रिकाओं की तुलना में कादम्बिनी का 'स्वास्थ्य विशेषांक' अति सरल, प्रभावशाली एवं प्रायोगिक रूप में प्रस्तुत किया गया है, आम व्यक्ति इससे लाभ उठा सकता है।

यह पत्रिका हिंदी भाषा की उन्नति, प्रचार तथा साथ-साथ देश को एक सूत्र में बांधने में सहायक सिद्ध होगी।

—रमेश चंद श्रीवास्तव
गुजेनी, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

तंत्र विशेषांक का अंक काफी विलंब से मिला और एक रुपये अधिक देकर खरीदना पड़ा। तंत्र विशेषांक निकालना आपके दृष्टिकोण से जो भी हो (विवशता या आवश्यकता), मेरी समझ से यह आपकी उदारवादी नीति का परिणाम है जो अपने पाठकों को हर विद्या से रूबरू कराना चाहते हैं।

—आशुतोष कुमार पोद्दार बेलदौर,

कादम्बिनी

वर्ष ३५, अंक ४, फरवरी, १९९५

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

परिचर्चा :
राजनीति में भ्रष्टाचार रोकता है धर्म..........२६
डॉ. सुधा पांडे
अभिमानी बालाकि ------------------ ३५
आचार्य महाप्रज्ञ
नये मानव और नये विश्व की कल्पना ----- ५२
डॉ. मंजू बलोदी
कामदेव का प्रिय बुरांस -------------- ६२
अशोक सुमन
नष्ट हो रही है बिहार की पहचान--------- ६८
नूतन पांडेय
सांप्रदायिकता जिसे छू तक नहीं पायी ----- ८९
शैलेंद्र गार्गव
सोना बरसानेवाला विचित्र पहाड़ -------- ९८
डॉ. एस.डी.एन. तिवारी
जर्जर हो गया है समूचा प्रशासकीय तंत्र १०८
सुरेन्द्र श्रीवास्तव
यूं जन्मा वह भयानक उपन्यास --------- १११
डॉ. एम.एस. अग्रवाल
हमारी आंखें ------------------------ ११४
इंद्र मोहन सहाय
मैं आज भी भूतों की रोटी खा रहा हूं----- १२०
धर्मेन्द्र गौड़
असम के बीहड़ों में सपेरों के बीच ------ १२३
अशोक रिछारिया
भारत बसता है : सिओल में ---------- १२८
ज्योति खरे
अब ऐसे हितैषी मंत्री कहां ------------ १३४
अमिताभ फरोग
जूतों में मोर पंख पहनना अनिवार्य ------ १४५
अश्विनी कुमार दुबे
राजधानी : तीन संदर्भ --------------- १५०
प्रमोद शाह
राजस्थानी लोकगीतों की परंपरा -------- १५६
संजय कुमार
राजनेता फिल्मी होते जा रहे हैं --------- १६१
सत्यनारायण भटनागर
नाम में क्या रखा है १७६
भगवानदास मोरवाल
मुसलमान कवि जिसके गीत हिंदू उत्सवों में गाये जाते थे................ १८३

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य—६, ज्ञान-गंगा—७, आस्था के आयाम—८, प्रतिक्रियाएं—१०, काल चिंतन—१६, आखिर कब तक—२१, कुछ रोचक प्रसंग—३०, तनाव से मुक्ति—१६८, व्यंग्य-तरंग—१७०, यह महीना और आपका भविष्य—१७२, ज्योतिष : समस्या और समाधान—१७४, इनके भी बयां जुदा-जुदा—१७८, प्रवेश—१७९, हंसिकाएं—१८९, नयी कृतियां—१९०, सांस्कृतिक समाचार—१९४, क्लब रचनाएं—१९६, समस्या-पूर्ति—१९८।

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

हास्य-व्यंग्य एवं कहानियां

जया वेंकटरमन
कीमत ---------------------------४३
डॉ. सैयद मेहदी
निकाहनामा---------------------------७४
डॉ. अल्का सक्सैना
उड़ान ---------------------------७९
गोविंद उपाध्याय
यहां इलाज मुफ्त है ---------------------८४
यशपाल जैन
धूप-छांह---------------------------१०२
परिपूर्णानंद वर्म्मा
दंगा---------------------------१४०

कविताएं

गोपाल चतुर्वेदी
प्रहर जिंदगी के ---------------------९७
राधेश्याम बंधु/अल्पना
शब्द बोलेंगे/रहने दो ---------------------१४८
डॉ. अहिल्या मिश्र/राजमणि राय 'मणि'
शरदचांदनी/गीत ---------------------१४९
विश्वंभर तिवारी
गजल.................... १६५
डॉ. श्याम निर्मम/मीना गुप्ता/
एक नौका/देख पाया है.................. १६७

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल**
मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज**
उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह**
प्रूफ-रीडर : **प्रदीप कुमार**
कला विभाग प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी,**

संपादकीय पता : **'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

मूल्य : **वार्षिक : ९५ रुपये; द्विवार्षिक : १८५ रुपये**; विदेशों में : **पाकिस्तान, भूटान और नेपाल; विमान से ३४० रुपये, समुद्री जहाज से १४० रुपये** । अन्य सभी देशों के लिए : **विमान से ५१० रुपये; समुद्री जहाज से १९० रुपये** ।

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

आवरण : (युवती) प्रमोद

छाया : (फूल) देव

काल-चिंतन

— *अंतरंग संगोष्ठी : दो मित्रों का वार्तालाप :*

एक : जीवन का प्रथम मूलाधार क्या है ?

दूसरा : गर्भ से धरती पर अवतरण ।

एक : नहीं, यही सब-कुछ नहीं है ।

दूसरा : यही सब-कुछ है । अस्तित्व ही नहीं होगा तो व्याख्या क्या, परिभाषा क्या; प्रश्न क्या, उत्तर क्या ?

एक : विज्ञान सर्वोपरि है । उसने बहुत कुछ झुठला दिया है !

दूसरा : नहीं, धारणा गलत है । विज्ञान मनुष्य-चेतना की उपज है । मस्तिष्क की ऊर्जा को जिसने नहीं पहचाना, उसके लिए उसका अस्तित्व ही अनचीन्हा है ।

□

— विवाद चलता रहा । अंततः 'एक' को स्वीकार की सीमा में आना पड़ा : अस्तित्व ही नहीं है तो व्याख्या किसकी ?

— अस्तित्व अवतरण है; अवतरण के बाद मस्तिष्क नहीं तो मनुष्यता की मूल-चेतना-विश्व श्रेष्ठता कहां !

— धरती प्राणी-जगत का चारागाह है ।

— इस चारागाह का अनंत विस्तार है, किंतु सीमातीत और सीमाबद्ध प्राणी मात्र एक है—मनुष्य, मात्र मनुष्य ।

— मनुष्य की श्रेष्ठता है मात्र मस्तिष्क ।

— मनुष्य के मस्तिष्क ने ही विश्व के विस्तीरण में धुरी का काम किया है ।

— मस्तिष्क ही मूलाधार बना है और अपने को स्थिर बनाये रखने के लिए

उसने मेरुदंड का सहारा लिया है ।

— मेरुदंड दूषित होगा तो शरीर अपंग बनेगा । अपंग शरीर में ऊर्जावान मानसिक चेतना नहीं होती ।

— मानसिक चेतना ही समूचे शरीर का प्राणाधार है । मानसिक चेतना ही सहस्त्र सूर्यों को पहचान देती है और उनसे प्राण-तत्व लेकर अपनी पथ-यात्रा में निरंतरता, चिरंतरता और शाश्वत्ता का अध्याय लिखती है ।

— ज्ञान-विज्ञान के समूचे आविष्कार, उनका वैभव और कलात्मकता के आगार, मानव-मस्तिष्क के चरण-चिह्नों को पूजाघर की तरह वंदनीय स्वरूप में स्वीकारते हैं और स्वीकार के पश्चात ही विकास-मार्ग की ओर अग्रसर होते हैं !

☐

— स्पष्ट है, अस्तित्व के बाद मस्तिष्क ।

— मस्तिष्क के बाद चेतना ।

— चेतना के बाद शरीर-पोषण ।

— शरीर-पोषण के साथ ही एक साथ अनेक अंकुर उपजते हैं, मानवीय संवेदनाएं, दैहिक प्राण-इच्छाएं और फिर क्रियाशीलता के शालीन और विकृत परिवेश ।

— मानवीय संवेदनाओं का कोई धर्म नहीं होता ।

— मानवीय संवेदनाएं वर्ग और वर्ण में विभाजित नहीं होतीं ।

— मानवीय संवेदनाएं देश, काल और स्थान की पहचान नहीं करतीं ।

— मानवीय संवेदनाएं किसी को बांटती भी नहीं—मनुष्य हो या मनुष्येतर

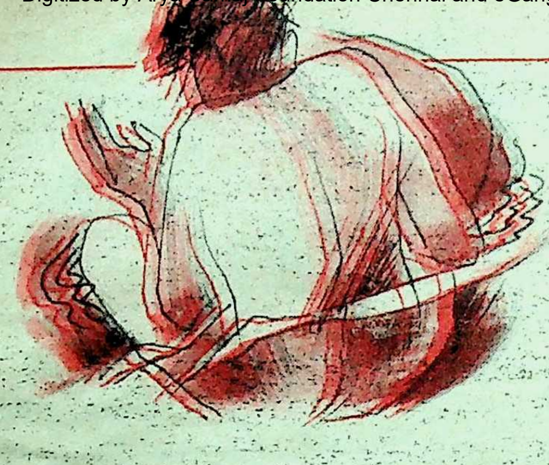

कोई भी प्राणी, अवयव, धरा, आकाश, क्षितिज, महासागर, पर्वत-पहाड़, पेड़-पौधे, जीव-जंतु या परिभाषेय कोई भी अवयव जो धरती पर अवतरित हुआ है, विशाल आकाश-गंगा में दैदीप्यमान है या छिपा है कहीं भी, किसी भी छोर में, बगल में, संधि में, संधि-रेखा में, संवेदनाओं के जालों से परे नहीं है ।

— मानवीय संवेदनाएं शाश्वत हैं, इसलिए जाति, धर्म, देश, अंतरिक्ष, अतल सभी कुछ चिंतनीय नहीं है ।

□

— प्रश्न उठते हैं तब, जब शाश्वत मानवीय चेतनाएं हवा की तरह हिल उठती हैं । उनके हिलते ही बंटवारों के आगार अपना द्वार खोल देते हैं ।

— द्वार खुलेगा तो हलचल होगी ही । गंध-सुगंध आएगी, धूल हो या शीशे के चूरण भरे अंबार कुछ भी प्रवेश कर सकते हैं ।

— प्रवेश के लिए संधि चाहिए, संधि मिली नहीं कि अ-प्रवेश से बचना पर्वत की शीर्षतम शिखा को केश राशि-सा सहज समझकर खींचने का उपक्रम करना है ।

— सारे प्रश्न यहीं अवतरित होते हैं ।

— प्रश्न अवतरित होंगे तो उत्तर का अन्वेषण आरंभ होगा ही । उत्तर नहीं मिलेगा तो भाषा मूक-बधिर होगी, वह 'नेति नेति' जैसे पराजय का भक्षण बनेगी ।

— प्रदत्य मानसिकता और उनके मूलाधार को सम्यक् रखिए जाति, धर्म, वर्ग, नीति-रीति, समाज, राजनीति, अर्थनीति, विज्ञान, अविज्ञान सभी

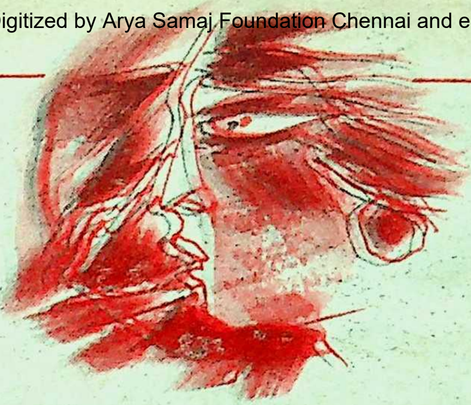

अपने-अपने मार्ग को पहचानने लगेंगे । उन्हें सीख नहीं चाहिए, कक्षा नहीं, पाठशाला नहीं और न शब्दों-अक्षरों की दीवारें ।

— इस सशक्त सामर्थ्य की पहचान के बाद सभी मार्ग सुगम हैं ।

— पानी पर हस्ताक्षर कीजिए; सागर-महासागर पर अपने पद-चिह्न बनाने की चेष्टा कीजिए, आकाश मार्ग से आकाश-गंगा और ग्रह-नक्षत्रों तक पहुंचने का उपक्रम कीजिए; शक्ति की चेतना कांच को काटनेवाली हीरे की कनी होगी तो हवाएं भी सहचरी बनेंगी और भाषाएं मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम रहेंगी ।

□

— जीवन के स्थायीकरण के बाद भूख और प्यास की आकांक्षाएं-इच्छाएं वैसे ही उठती हैं जैसे धरती में कंपन, कंपन में परिवर्तन के पर्वत, पर्वत में क्षितिज के शिलालेख, शिलालेखों में कलात्मकता और कलात्मकता में किसी अदृश्य-दृश्य अंगुलियों के ज्ञान-बोध ।

— भूख और प्यास के अंकुर ही फिर व्यतिक्रम का इतिहास लिखते हैं ।

— अकारण नहीं है वह ।

— भूख और प्यास क्षण-भंगुर नहीं है, वह निरंतरता में विश्वास रखती है ।

— भूख और प्यास की यात्रा-कथा जीवन के अ-शेष होने तक निरंतर चलती रहती है ।

— चलने के इस उपक्रम में ही व्याख्याएं उदित हुई हैं ।

— व्याख्याएं वैसे ही उदित होती हैं जैसे वेदों के बाद पुराण और पुराण के बाद संहिताएं ।

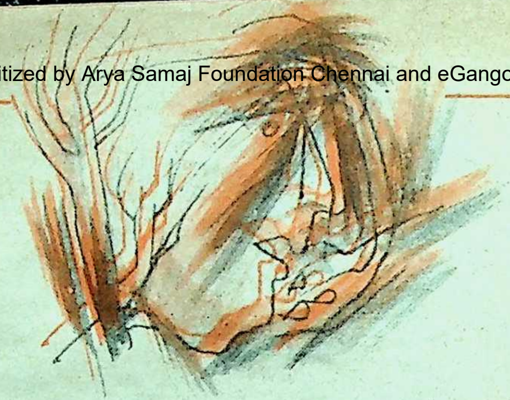

— सत्य स्वीकारा जाए तो मूल-धारा यानी वेद अपने आपमें महान मस्तिष्क की फेकी हुई छुद्र ऊर्जा शब्द-शक्ति है ।

— शब्द बनेगा तो अर्थ निकलेंगे । निकलेंगे ही नहीं निकाले भी जाएंगे । निकाले भी नहीं जाएंगे उनके अर्थ बोध अपना-अपना गंतव्य खोजने में लग जाएंगे । आविष्कार की प्रक्रिया आरंभ होगी ।

— आविष्कार ने ही सभ्यता के द्वार खोले हैं । उसी आविष्कार ने नाश-विनाश का खेल गिलहरी की तरह सहज सौंदर्य और छलनामी बनाकर मनुष्य के सामने प्रस्तुत किये हैं ।

— प्रस्तोता का अध्याय महालम्बी है । उसने अपनी क्षमता का भरपूर उपयोग किया है और आदमी को आदमी से बांटा है; देश और देशों को अभिव्यक्ति दी है; धरती को छैनी और हथौड़े से तराशा है और उसे अपनी जन्मावस्था में नहीं रहने दिया ।

— यही क्षण है, जहां आकर विभाजन हुआ है :

- एकस्वर से स्वरों का
- हम से मैं का
- मैं से मैं-मैं का
- मैं-मैं से तू का
- तू से तू-तू का

— क्या नहीं बचा । सभी विघटित हुए, विलगित हुए, लगाव-अलगाव आया और विभाजन के वाष्पकणों ने ओसकणों का भक्षण आरंभ कर दिया ।

— शांति यहीं टूटी है । युद्ध के द्वार यहीं खुले हैं । चेतना यहीं मूक हुई है । शब्दों ने यहीं अर्थ खोया है । इतिहास ने यहीं से अनर्थ को सार्थकता का शोक-कवच पहनाया है ।

— ज्ञान-विज्ञान के सभी अभेद्य आयाम टूटे हैं यहां आकर । क्या-कुछ नहीं हुआ, क्या-कुछ निरंतरता में नहीं बदला और दया, क्षमा, माया, ममता तथा शक्ति सभी का अभिषेक नहीं किया गया ।

□

— अनंत है, यहां पहुंचकर अध्यायों का लिखना ।

— धर्म-ग्रंथों से लेकर विज्ञान-ग्रंथों तक सभी अपूर्ण हैं । अपनी अपूर्णता को स्वीकारते हैं वे, अतः विराम हो यहां ।

□

— विराम, आराम नहीं है ।

— अवतरण की अवधारणा का अनंत इतिहास है । उसके साथ जुड़े भक्षण का अक्षय, अनवरत इतिहास है । समाप्त करें हम इसे यहीं ।

— अगला अध्याय होगा : तो फिर क्या ? अस्तित्व और भक्षण के बाद फिर क्या ?

(अगले अंक में)

आखिर कब तक?

कांग्रेस और लखनवी तीतर-बटेर के दंगल

इन दिनों देश में जो राजनीतिक उथल-पुथल मची है, उसे देखकर तरस आता है— प्रजातंत्र का अर्थ क्या यही है ? लखनऊ में तीतर-बटेर और मुरगों की लड़ाई हुआ करती थी । इस लड़ाई को देखने के लिए खासी भीड़ जमा होती थी क्योंकि यह लड़ाई नहीं होती थी । इसे लखनवी तमाशा कहा जाता था । तमाशा अपनी जगह है, वह मनोरंजन के लिए होता है । इस तमाशे में लड़नेवाले दो प्राणी होते हैं । राजनीति में इन दिनों लखनवी बहार पूरे देश में फैल गयी है और कांग्रेस-जैसी महत्त्वपूर्ण और सबसे पुरानी पार्टी तमाशे के दंगल में आकर खड़ी हो गयी है । लड़ाई दो आदमियों के बीच में है । लेकिन तमाशबीन पूरा दल नहीं बल्कि पूरा देश है ।

मजे की बात यह है कि चारों तरफ चुनाव के नगाड़े बज रहे हैं, लेकिन ढोल पीटा जा रहा है राजधानी में । यदि नगाड़े और ढोल कला के माध्यम मान लिए जाएं तो उसकी भी एक परंपरा है । नृत्य के लिए एक मंच होता है और फिर उसी मंच पर सभी साजो-सामान सजते हैं । पूरे देश को मंच बनाकर उस पर जो सरगरमियां फैलायी जा रही हैं, उससे कांग्रेस-जैसी उस महान पार्टी में कालिख लग रही है जिसके लिए हमारे दिग्गज नेताओं ने अपनी जान की बाजी भी लगा दी थी ।

एक विदेशी नागरिक-सर ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना की थी । फिर उसमें तिलक, गोखले, गांधी, सुभाष और जवाहर लाल तक एक लंबी परंपरा जो सिर पर कफन ओढ़े आजादी के दीवाने बनकर अपनी जिंदगी के साथ खेलते रहे । आज इसी दल का हाल यह है कि दो खेमों में बंटकर अपने स्वार्थ के लिए उस लड़ाई में लग गया है जहां न किसी को जनता की परवाह और न देश की । हमें यह कहने का आज साहस हो रहा है कि कुछ अच्छे बुद्धिजीवी सामने आएं और जगह-जगह पोस्टर लगा दें— 'कांग्रेस का काम समाप्त हो गया, अब एक दल के रूप में इसे नहीं रहना चाहिए'

—महात्मा गांधी

मुझे लगता है कि महात्मा गांधी की हत्या का पश्चाताप करने का यह सबसे उपयुक्त मौका है ।

न रही वह मथुरा और न वह वृंदावन

अभी कुछ दिन पहले ही मैं एक विशिष्ट कार्य से मथुरा और वृंदावन गया था । ये दोनों स्थान मैं कई बार देख चुका हूं । बरसाने की लठमार होली भी देखी है और नंदगांव में आकर रंग भी खेला है । गोवर्धन भी देखा है और कृष्ण का वह जन्म स्थान भी जिसके ऊपर एक ठाठदार आलीशान मसजिद बनी हुई है । यहां मैं मंदिर-मसजिद का झगड़ा नहीं उठाना चाहता क्योंकि एक झगड़ा जो चल रहा है उसी ने देश को सांप्रदायिकता की आग में बुरी तरह झोंक दिया है । मुझे तो सिर्फ यह कहना है कि इसी स्थान को देखकर एक कवि ने लिखा था—

''करील के कुंजन ऊपर वारों ।''

निश्चय ही कृष्णजी का जमाना रहा है, जब इस पूरे क्षेत्र में केवल जमुना का अथाह पाट नहीं था शायद पानी की तरह घी-दूध की नदियां बहती थीं । इस बार तो बहुत खोज के बाद भी शुद्ध दूध नहीं मिला । देखने को मिली गरीबी, बेबसी, लाचारी, कीचड़ से भी ऊबड़-खाबड़ टूटी सड़कें और सूखती हुई जमुना । धीरे-धीरे पहलवानों के अखाड़े भी कम होते जा रहे हैं और छोटी तथा संकरी सड़कों पर जनसंख्या का सैलाब कीड़े-मकोड़ों की तरह बह रहा है । साधारण आदमी के लिए कार चलाना भी मुश्किल है । इन सबके बावजूद वहां सब-कुछ सूखा नहीं है । सरगरमियां हैं मंदिरों की, तथाकथित धर्मलोलुप संस्थाओं की और कृष्ण-जैसे महान व्यक्तित्व का हनन करनेवाले धर्मगुरुओं की ।

अब तो मथुरा के पेड़े में भी वह स्वाद नहीं रहा जिसके लिए लोग खास तौर से भागकर आया करते थे । मैंने बहुत गौर से इस पूरे क्षेत्र के मूलतः रहनेवाले स्त्री-पुरुषों और लड़के-लड़कियों के चेहरे देखे हैं । इन्हें देखकर लगता है, क्या ऐसे ही रहे होंगे कृष्ण, क्या ऐसे ही रही होंगी राधा । राधा-कृष्ण की तसवीरें देखी हैं । उसके बाद इस विरोधाभास को समझना बहुत मुश्किल है । वृंदावन में लोगों को नमस्ते या नमस्कार की जगह 'राधे-राधे' बोलते मैंने सुना है । मैं समझ नहीं पा रहा कि यह सब मिलकर किस राधा की याद कर रहे हैं ।

बहरहाल हमारे मेजबान थे मथुरा के जिलाधीश श्री कौशलेन्द्र प्रताप सिंह । उन्हीं के घर मुझे मिल गये कनाडा में बसे सरस कावसमी । इनके साथ जो समय बीता वह अविस्मरणीय है । के. पी. सिंह प्रशासनिक अधिकारी हैं लेकिन उनकी पत्नी हिंदी की अच्छी लेखिका और 'कादम्बिनी' की पाठिका हैं । दो-चार घर भी ऐसे मिल जाएं तो मथुरा की बलिहारी !

लेखकीय अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न

तसलीमा नसरीन इन दिनों स्टाकहोम में आराम से मजे कर रही हैं । सलमान रुशदी लंदन में ठाठदार मकान में रह रहे हैं । पता लगा है कि तसलीमा नसरीन ने भारत आने के लिए वीसा चाहा था जो नहीं दिया गया । मेरे लिए यह बात महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण यह है कि आखिर इतने बड़े खतरे के बाद नसरीन भारत क्यों आना चाहती हैं । भारत सरकार को सुरक्षा का अतिरिक्त भार उठाना पड़ेगा । ये दोनों लेखक मुसलमान हैं और इन्होंने अपनी ही धर्म व्यवस्था की आलोचना की है । इसके बदले में फतवा दिया गया है कि इन्हें सजा-ए-मौत दी जाए । इसे लेकर लेखक की स्वतंत्रता का प्रश्न उठाया जा रहा है । मैं सोचता हूं कि यदि मैं या मेरे-जैसा लेखक इसलाम की व्यवस्था के विरोध में कुछ लिखे तो वह एक बात है । यानी वह नादानी भी हो सकती है और जानबूझकर प्रहार भी । यदि ऐसे समय में फतवा दिया जाता है तब तो निश्चय ही उस संप्रदाय की धर्मांध मान्यताओं का विरोध किया जाना चाहिए । मुसलमान होते हुए और अपने धर्म गुरुओं की मदांध दृष्टि को समझते हुए भी जब कोई लेखक विरोध में कुछ लिखता है तो निश्चय ही वह नादानी नहीं है । यह अपने ही धर्म के विरोध में जेहाद बोलना है, और फिर वे सारे ऐशो-आराम पाने की लालसा है जो स्टाकहोम और लंदन में मिल रहे हैं ।

इसलिए यहां लेखक की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न बेमानी हो जाता है । हमारे देश में फैशन परस्ती की कमी नहीं है । और इस फैशन के बाजार में हमारे तथाकथित प्रगतिवादी जो अपनी दूकान सजाये हुए हैं और अपने वक्तव्य देते रहते हैं, उनसे अब कहने के लिए यही शेष रहता है, 'प्यारे भाई, अब तो तुम्हारे आका भी तहस-नहस हो गये । जब नहीं हुए थे तब बोरिस पास्तरनाक, सोलजेनित्सिन और उनके समकालीन लेखकों के साथ उन्होंने कम ज्यादती की थी । भारत में यह प्रगतिवाद अब है क्या ? बंदर और रीछ का नाच और उसके साथ बजनेवाला डमरू ।'

बेहतर हो कि रुशदी साहब और बेगम तसलीमा जो शान की जिंदगी बिता रहे हैं, वही बिताते रहें । भारत की सड़कों में छोटे-से-छोटे मंत्री के लिए सुरक्षा के खतरनाक भोंपू ही नहीं बजते सारा यातायात रोक दिया जाता है । ऐसी हालत में हमारी सड़कों पर यह सुरक्षा का भारी वजन और क्यों ?

लड़कियों को घूरना बंद कीजिए

अमरीका में काम करने वाले ब्रिटेन के एक प्रशासक का मजेदार किस्सा 'दि डेली टेलीग्राफ' में हमें पढ़ने को मिला है । इसका संबंध रोनाल्ड ग्रीन नाम के एक अधिवक्ता से है, जो अमरीका में लंदन की एक कंपनी में काम करते हैं । शायद हर

समझदार आदमी यह जानता है कि अमरीका, यूरोप और ब्रिटेन में लड़के-लड़कियों के बीच में कितनी आजादी है । मैं स्वयं कई बार इन देशों में गया और आजादी का पूरा लुत्फ़ उठाने का मुझे मौका मिला है । बेचारे रोनाल्ड ग्रीन से मेरी हमदर्दी है, जिस पर लड़कियों ने लांछन लगाया कि वह हमें घूरता है, कार्यकाल के बाद मदिरापान के लिए आमंत्रित करता है या खुलकर मजाक करता है । ये तो वहां के जीवन की आम बातें हैं ।

लेकिन रोनाल्ड साहब जिस संस्था में काम करते हैं, उस पर १८,००० पौंड दंड का दावा करना मुझे इस सोच पर छोड़ जाता है कि यह दोनों की मिलीभगत तो नहीं है । जो भी हो, वहां की कंपनी ने 'ग्रीस रूल्स' सूचना पटल पर लगाये हैं, वे हमारे पाठकों का मनोरंजन अवश्य करेंगे, ये नियम इस प्रकार हैं :—

१. किसी पर कोई रिमार्क मत कीजिए— मत कहिए कि नया सूट बहुत अच्छा है, हेयर स्टाइल आकर्षक है, और टांगें सुंदर हैं ।

२. यौन संबंधी न तो कहानियां सुनाइए और न मजाक कीजिए ।

३. अपने कार्यालय में चुपचाप यह समझकर काम करिए कि टेलीविजन का एक कैमरा लगा हुआ है जो आप पर पूरी तरह निगाह रखे है । इतना ही नहीं, यदि आपके पास कोई आदमी बैठा है या स्त्री तो उसकी तरफ भी मत देखिए ।

४. अपने कर्मचारियों से कतई निजी संबंध बनाने की कोशिश मत कीजिए ।

५. शारीरिक संबंध स्थापित करने की कोशिश कभी मत कीजिए ।

६. कार्यकाल के बाद किसी पर तरस खाकर उसे लिफ्ट मत दीजिए ।

७. कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए यदि किसी कर्मचारी को किसी दूसरे कर्मचारी से शिकायत है तो उसकी जानकारी बॉस को दीजिए ।

ये सारे नियम केवल पुरुषों के लिए नहीं हैं, ये महिलाओं के लिए भी लागू होते हैं । यदि किसी पुरुष की आंखें सुंदर हैं और उनमें आकर्षण है तो महिलाओं को वहां फिसल नहीं जाना चाहिए । यदि कोई महिला बहुत खूबसूरत साड़ी पहनकर आयी तो न उसकी साड़ी की तारीफ कीजिए और न उसकी पसंद की दाद दीजिए । ध्यान रहे कि आजकल शांति के नोबल पुरस्कार इन्हीं गुणों में मिलते हैं । यदि मेरी यह बात असत्य है तो किसी के पास इसका कि महात्मा गांधी को शांति का नोबल पुरस्कार क्यों नहीं मिला ।

—राजेन्द्र अवस्थी

राजनीति में भ्रष्टाचार रोकता है धर्म

मेरा विशेष जोर इस बात पर है कि हमारे समाज को सबसे पहले 'धर्म' और 'धर्मनिरपेक्षता' का सही अर्थ समझाना होगा । वस्तुतः मैं समझता हूं कि इन दोनों शब्दों के गलत इस्तेमाल या गलत ढंग से प्रचारित किये जाने के कारण ही ऐसी स्थिति आयी है कि हमें आज इस विषय पर बातचीत करनी पड़ रही है । यह बात बहुत साफ की जानी चाहिए कि न तो धर्म का अर्थ 'संप्रदाय' है, जैसा कि आजकल अकसर भ्रमवश ऐसा समझा जाने लगा है, और न ही 'धर्मनिरपेक्षता' का अर्थ धर्म-विहीनता से है।

धर्म लोगों को जोड़ता है

● राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा

धर्म और संप्रदाय

वस्तुतः धर्म किसी भी जाति, वर्ग और क्षेत्र के लोगों की धरोहर नहीं है। जैसे ही इसे एक वर्ग विशेष की धरोहर समझ लिया जाता है, वैसे ही यह 'संप्रदाय' में बदल जाता है । ऐसा होते ही धर्म अपना मूल मकसद खो देता है । धर्म का अर्थ तोड़ना नहीं बल्कि लोगों को जोड़ना है । धर्म एक संयोजक तत्त्व है । धर्म लोगों को जोड़ता है जबकि 'संप्रदाय' लोगों को तोड़ता है ।

आजादी के बाद हमारे संविधान निर्माताओं ने अपनी ऐतिहासिक परंपरा का सम्मान करते हुए भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया । बाद में इस शब्द को संविधान की प्रस्तावना में ही शामिल कर लिया गया, जो हमारे संविधान की आत्मा है । यह धर्मनिरपेक्षता क्या है ?

सर्वधर्मसमभाव

मैं समझता हूं कि अंगरेजी के 'सेक्यूलर' शब्द के लिए हिंदी में 'सर्वधर्मसमभाव' शब्द अधिक उपयुक्त होगा, बजाय 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द के ।

अपने धार्मिक अधिकार का उपयोग करने तथा अन्य लोगों को उनके धार्मिक

हमारे संविधान में 'सेक्यूलर' शब्द का अनुवाद 'पंथ निरपेक्ष' किया गया है, न कि धर्म निरपेक्ष । राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा का मत है कि सेक्यूलर शब्द के लिए हिंदी में 'सर्व धर्मसमभाव शब्द अधिक उपयुक्त होगा बजाय धर्म निरपेक्ष शब्द के । 'धर्म स्वतंत्रता' शब्द भी 'सेक्यूलर' शब्द की भावना को भलीभांति व्यक्त करता है । इसी विषय पर प्रस्तुत हैं : राष्ट्रपति एवं कुछ प्रबुद्ध नेताओं के विचार । प्रस्तुति : मयूरी भारद्वाज

अधिकार का उपयोग करने देने की भावना तभी आ सकती है, जब हमारे नागरिकों के मन में सभी धर्मों के प्रति समान भाव हो । जब धर्म के प्रति समान श्रद्धा की यह भावना केवल अपने धर्म तक सिमट जाती है, तभी टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है । बापू इस सचाई को समझते थे । इसलिए उन्होंने हरिजन के २२ सितंबर, १९४६ के अंक में लिखा था, "मैं अपने धर्म से बंधा हुआ हूं । मैं इसके लिए मर सकता हूं । लेकिन यह मेरा निजी मामला है । राज्य को इससे कुछ लेना-देना नहीं है ।"

मेरी समझ में धर्मनिरपेक्षता का यही सही अर्थ है । हमें इन्हीं तथ्यों के संदर्भ में एक धर्मनिरपेक्ष राज्य में धर्म का स्थान निर्धारित करना होगा ।

वर्तमान राजनीति सांप्रदायिकता की नींव पर

● **मदन लाल खुराना** मुख्यमंत्री, दिल्ली राजधानी क्षेत्र

शुद्ध भाषायी दृष्टि से संप्रदाय शब्द अपने आप में नकारात्मक नहीं है । संप्रदाय, यानी किसी पंथ विशेष के माननेवाले लोग । उनका आचरण हुआ, सांप्रदायिक । किंतु आज इस शब्द को एक ग़लत अर्थ दे दिया गया है । ऐसे ही मात्र अर्थ की दृष्टि से कोई भी राष्ट्र पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष कभी हो ही नहीं सकता और न कोई समाज, क्योंकि अपने यहां धर्म का अर्थ पूजा पद्धति नहीं बल्कि वह सूत्रात्मकता है, जिससे समाज का पोषण, रक्षण, भौतिक, आध्यात्मिक दृष्टि से होता है, व्यष्टि और समष्टि के रिश्ते तय होते हैं तथा जो बुद्धि और चरित्र का विकास करता है । यही राष्ट्र के अतीत को भविष्य से जोड़ने वाला एक सेतु भी है ।

सभी पंथों का समान आदर

हमारे प्रायद्वीप में भारत प्रचलित अर्थों में धर्मनिरपेक्ष जनतंत्र शायद इसीलिए रह

सका है कि वह हिंदू बहुल है । पाकिस्तान तथा बांग्ला देश जन्म के समय जनतंत्र तो बने पर घोषित रूप से मुसलिम देश भी बनते गये । भारत धर्मनिरपेक्ष जनतंत्र के रूप में इसलिए टिका रह सका है कि हिंदू धर्म ने अपने शुद्ध रूप में सभी पंथों को समान भाव से आदर दिया है ।

वर्तमान राजनीति सांप्रदायिकता की नींव पर खड़ी है । आज से पचास वर्ष पूर्व जाति और संप्रदाय-भेद होते हुए भी परस्पर इस प्रकार का वैमनस्य नहीं था । अतः राजनीति से अलग करके वर्तमान सांप्रदायिकता का निदान संभव हो सकता है ।

मंदिर निर्माण : राष्ट्रीय प्रश्न

प्रश्न मंदिर और मसजिद का नहीं है । भारतीय अस्मिता से भगवान राम जुड़े हुए हैं। अतः प्रत्येक सच्चा भारतीय श्री राम जन्मभूमि का निर्माण अवश्य चाहेगा । यह राष्ट्रीय प्रश्न है ।

अब्राहम लिंकन ने कहा था कि यदि देश का विभाजन और युद्ध में से कोई बात स्वीकार करनी होगी तो हम युद्ध स्वीकार करेंगे । एक बार भारतवर्ष के विभाजन के बाद दुबारा कोई विभाजन किसी को स्वीकार नहीं होगा ।

राजनीति में भ्रष्टाचार रोकता है धर्म

• मौलाना वहीदुद्दीन खान (अध्यक्ष—इस्लामिक सेंटर)

धर्म और राजनीति, दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं । धर्म ही तो सिखाता है कि समाज में अच्छे स्वभाव से, अच्छे व्यवहार से कैसे रहा जाए । इस तरह धर्म एक प्रकार से व्यक्ति का गुरु है । यदि धर्म को राजनीति से अलग करेंगे तो राजनीति में भ्रष्टाचार आएगा, भ्रष्टाचार को रोकनेवाली चीज धर्म है ।

किसी भी धर्म को जोर-जबरदस्ती से देश या समाज में लागू नहीं किया जा सकता है । पाकिस्तान में लगभग ४० वर्षों से मौलवी और मुल्ला इसलाम को जोर-जबरदस्ती से लागू करने में लगे हुए हैं । इस बीच कई धार्मिक नेता मारे गये, दंगे-फसाद हुए । क्या धर्म आगे बढ़ गया ?

सरकार पांच वर्ष चलने दें

देश में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि जिस पार्टी को ज्यादा वोट मिले हों, वही सरकार चलाये और उसे पांच साल तक काम करने का पूरा मौका मिले, बीच में उसे खत्म न किया जाए । इस बीच राजनीतिज्ञ भी शांति के साथ लोगों की भावनाओं को

समझकर कार्य करें । जिसे जनता नहीं चाहती है उस पार्टी को पांच साल बाद हटाने का अधिकार फिर जनता को तो है ही । इससे हर पार्टी को काम करने का अवसर मिलेगा, राजनीति में भ्रष्टाचार कम होगा, देश में शांति और व्यवस्था भी बनी रहेगी ।

राष्ट्रीय निष्ठा : सर्वोच्च निष्ठा

मेरे दिमाग में निष्ठाओं की एक सीढ़ी है । सर्वोच्च निष्ठा मैं राष्ट्रीय निष्ठा को मानता हूं चूंकि हमारा राष्ट्र मानव जाति का और जगत का एक अंश है, मैं इस जगत के प्रति भी निष्ठावान रहना चाहता हूं । बाकी सारी निष्ठाएं मेरी दृष्टि में गौण हैं— जैसे संप्रदाय और पंथ, भाषायी गुट या अपना क्षेत्र । मेरी राय में सांप्रदायिकता का उद्‌गम इस बात में है कि व्यक्ति अपने संप्रदाय के प्रति अपनी आस्था और निष्ठा को सर्वोपरि मानने लगते हैं और राष्ट्र के प्रति निष्ठा और राष्ट्रहित को नजरअंदाज करने लगते हैं । विशिष्ट गुट के प्रति अपनत्व और दूसरों से अलगपन या पृथकता सांप्रदायिक भावना पैदा करती है ।

नफरत से विकृति का जन्म

जब व्यक्ति एक संप्रदाय विशेष से संबंधित होकर दूसरे संप्रदाय से नफरत करता है तब सांप्रदायिकता विकृत रूप में जन्म लेती है । सच्ची धार्मिकता है अपने धर्म पर गौरवान्वित होने के साथ-साथ दूसरे धर्म का आदर करना । धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सर्वधर्म समभाव है । दुर्भाग्य से आजादी के बाद धर्मनिरपेक्षता का अर्थ या तो धर्म विरोधी अथवा नास्तिकता के संदर्भ में लिया जाता रहा या धर्मांधता को किसी न किसी रूप में भड़काने की दृष्टि से ।

संकीर्ण मानसिकता एक अपराध

कुछ राजनीतिक पार्टियां वोट के लिए सांप्रदायिकता का सहारा लेती हैं । लोगों के जज्बात से खेलकर उन्हें संकीर्ण मानसिकता देना अपराध है, इससे संपूर्ण संस्कृति नष्ट हो सकती है । यदि धर्म का अर्थ संकीर्णता है तो मैं उसके खिलाफ हूं । संकीर्ण धार्मिकता की भावना राजनीति के लिए प्रयुक्त की जाए या राजनीति को धर्म में प्रतिस्थापित किया जाए तो मैं उसके खिलाफ हूं ।

बंदूक से इसलाम नहीं आएगा

मैंने कश्मीर का दौरा करके वहां के नवयुवकों को काफी समझाया है । मेरा उनसे कहना है कि बंदूक उठाने से इसलाम नहीं आएगा, शांति मिठास से आएगी । नफरत को नफरत से नहीं खत्म कर सकते, प्यार से कर सकते हैं । इस देश को देश समझें, कश्मीर भारत का अंग है, भारत का छोटा-सा टुकड़ा है । कश्मीरी पंडित या कश्मीरी मुसलमान कहकर तो लोग छोटे बन जाते हैं, भारतीय कहकर बड़े बन जाओगे । यह बात सभी पार्टियों के नेताओं को जनता को प्यार से समझानी चाहिए, जोर जबरदस्ती से

नहीं । भारत में सांप्रदायिकता, प्रादेशिकता, भाषायी अस्मिता आदि को प्रधानता मिलेगी तो देश की एकता टूट जाएगी ।

बाबरी मसजिद भूल जाएं

अयोध्या में मंदिर-मसजिद विवाद के बारे में भारतवर्ष की जनता की राय क्या है यह निश्चित रूप से कहना कठिन है । मोटे तौर पर भारत की जनता चाहती है कि विवाद शांतिपूर्ण ढंग से निपटे । मुझे लगता है कि साधारण हिंदू राम मंदिर बने, इसके पक्ष में हैं पर तीन या तीस हजार मसजिदों को तोड़ने का वह पक्षधर है, ऐसा नहीं कहा जा सकता । मैंने पूरे देश में घूम-घूमकर मुसलमान भाइयों को समझाया है कि वे बाबरी मसजिद को भूल जाएं । इसी तरह हिंदू भाइयों को समझाया कि वे दूसरी मसजिदों को भुला दें । यदि दोनों नहीं समझेंगे तो देश टूटेगा, देश में दंगे-फसाद होंगे, देश बनेगा नहीं बल्कि देश का नाम बिगड़ेगा । क्या इन बातों से कोई भी धर्म आगे बढ़ेगा ?

धर्मनिरपेक्षता की गलत व्याख्या

• **कृष्णलाल शर्मा** (भाजपा महामंत्री)

कुछ समय से हमारे देश में राजनीति को धर्म से और धर्म को राजनीति से अलग रखने के विषय पर एक व्यापक बहस चल पड़ी है । वास्तव में इस बहस की सबसे बड़ी विसंगति यह है कि धर्म का अर्थ ठीक प्रकार से नहीं समझा जाता । फलतः राजनीतिक स्तर पर धर्मनिरपेक्षता की भी गलत व्याख्या की जा रही है । यहां यह उल्लेख प्रासंगिक होगा कि भारत के संविधान का जो हिंदी अनुवाद हुआ है, उसमें 'सेक्युलरिज़्म' का अनुवाद पंथनिरपेक्षता किया गया है, धर्मनिरपेक्षता नहीं । इसलिए सबसे पहले इस बहस को सही दिशा देने के लिए इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि धर्म और पंथ में बहुत बड़ा अंतर है और 'रिलीजन' एवं धर्म दो ऐसी व्याख्याएं हैं जिनका सही अनुवाद उपलब्ध नहीं है । एक बार यह अंतर समझ में आ जाए तो अनेक भ्रांतियां स्वतः दूर हो जाएंगी ।

एक बात विशेष उल्लेखनीय है, सांप्रदायिक आधार पर देश के विभाजन के बाद जहां पाकिस्तान ने अपने देश को एक धार्मिक राज्य अर्थात मुसलिम राज्य घोषित किया, वहां भारत ने इन कटु अनुभवों के बाद भी अपने देश को 'सेक्यूलर' राज्य घोषित किया और इस देश को सेक्यूलर संविधान दिया । आज भारत में करोड़ों की संख्या में मुसलमान समान नागरिक का अधिकार प्राप्त कर सुख-शांति से निवास कर रहे हैं ।

एक बात और भी उल्लेखनीय है कि यद्यपि भारत एक सेक्यूलर राज्य बना और

उसका संविधान भी सेक्यूलर बना, उसके बावजूद सेक्यूलर शब्द को संविधान में कहीं लाने की आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई । इसका कारण यह है कि भारत की संस्कृति और मूल प्रकृति परंपरा से सेक्यूलर है ।

संविधान में अनावश्यक संशोधन

संविधान में पहली बार सेक्यूलरवाद का शब्द संविधान संशोधन के द्वारा १९७६ में उस समय डाला गया, जब देश में आपातकाल घोषित किया गया और उस समय सभी विपक्षी सांसद जेलों में थे और एक अनावश्यक संविधान संशोधन करके संविधान के आधार को ही विकृत कर दिया गया । इससे भी अधिक उपहासजनक बात यह है कि सेक्यूलरवाद को संविधान में डालने का यह संशोधन आज तक जम्मू-कश्मीर पर लागू नहीं हुआ और यहां से शुरू हुआ सेक्यूलरवाद के नाम पर अल्पसंख्यक तुष्टीकरण का दुर्भाग्यपूर्ण अध्याय । इस तुष्टीकरण की विकृति इस परिसीमा तक चली गयी कि प्रायः सभी राजनीतिक दल और अनेक तथाकथित बुद्धिजीवी हिंदू विरोध को ही सेक्यूलरवाद की संज्ञा देने लगे ।

'सेक्यूलरवाद' की स्पष्ट व्याख्या आवश्यक

अच्छा होगा कि सेक्यूलरवाद की इस बहस के संदर्भ में एक ओर तो संविधान में सेक्यूलरवाद की स्पष्ट व्याख्या की जाए और दूसरी ओर सेक्यूलरवाद के नाम पर सामाजिक वैमनस्य फैलाने या राष्ट्र को दुर्बल करने के प्रयासों के विरुद्ध देश में एक जेहाद छेड़ा जाए ।

राम राष्ट्र के प्रतीक

भारतीय जनता पार्टी की मान्यता है कि भारत एक पंथ निरपेक्ष राज्य है किंतु यह एक प्राचीन सांस्कृतिक राष्ट्र भी है । हम राम को राष्ट्र का प्रतीक मानते हैं और यह बात चुनौतीपूर्वक कह सकते हैं कि भारत में राम और राष्ट्र को अलग नहीं किया जा सकता । हम यह भी बात कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार से भारतीय जनता पार्टी ने अपनी यह नीति स्पष्ट की है कि वह अयोध्या में राम जन्मभूमि गर्भगृह में राम मंदिर का निर्माण चाहती है और पंचकोसी परिक्रमा से हटकर कुछ दूरी पर मसजिद के निर्माण को भी समर्थन देती है ।

अब जबकि उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रपति द्वारा संविधान की धारा १४३ (१) के अंतर्गत अयोध्या के बारे में कोई मत देने से मना कर दिया है और रैफ्रेंस को वापस कर दिया है तो इस सिद्धांत की भी पुष्टि हो गयी है कि इस विषय का हल न्यायपालिका द्वारा संभव नहीं और सरकार को कानून बनाकर इसका हल निकालना होगा ।

कुछ दुर्लभ शिव प्रतिमाएं

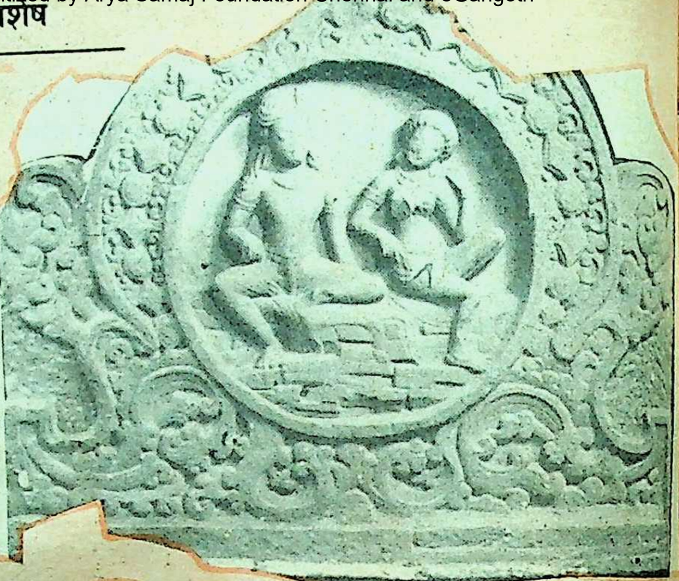

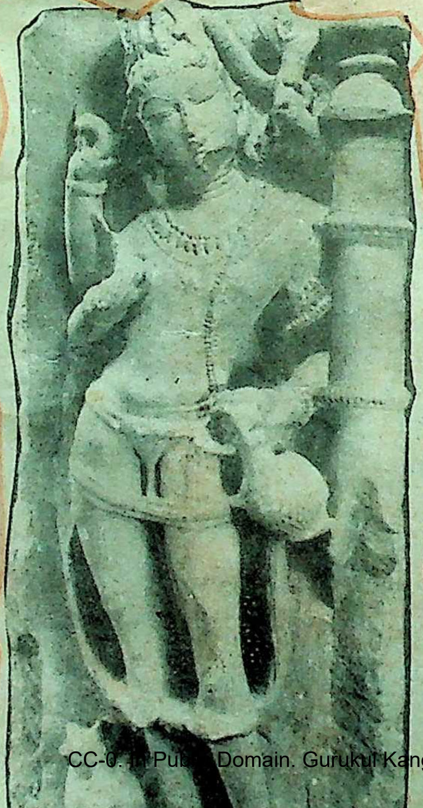

▲ रामवन (सतना) से प्राप्त उमा सहि
प्रतिमा (६-७वीं सदी)
◀ दमोह से प्राप्त शिव प्रतिमा
३. हिंगलाजगढ़ (मंदसौर) से प्राप्त
प्रतिमा ▼

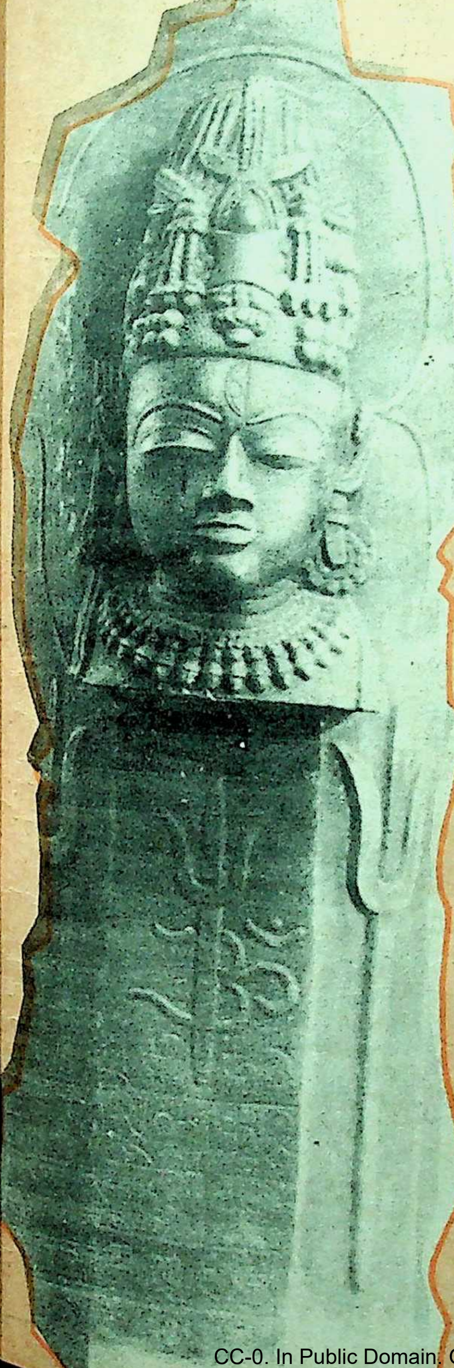

▲ बिलहरी (जबलपुर) से प्राप्त एकमुख लिंग

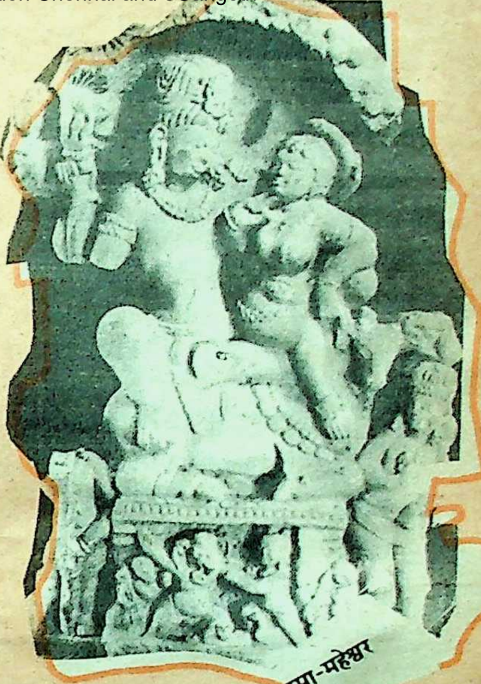

५. हिंगलाजगढ़ (मंदसौर) से प्राप्त उमा-महेश्वर की प्रतिमा (६-७वीं सदी)

चित्र : अभिनव तैलंग

कुछ रोचक प्रसंग

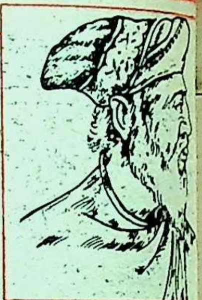

टूटे सुजन मनाइए

रहीम के बारे में कहा जाता है कि एक बार मियां तानसेन ने दरबार में एक पद गाया। बादशाह अकबर की मौजूदगी में । वह था—

जसुदा बार-बार यों भाखै ।
है कोऊ ब्रज में हितू
हमारो चलत गोपालहिं राखै ।

अकबर ने दरबारियों से कहा कि इस पद का अर्थ समझाएं ।

तानसेन ने बताया कि यशोदा 'बार-बार' यानी पुनः यह पुकार करती हैं कि कोई भी ऐसा हितू है क्या, जो ब्रज में गोपाल को रोक सके ।

शेख फ़ैजी ने कहा 'बार-बार' यानी रो-रोकर यह रट लगाती हैं ।

बीरबल ने तुरंत अर्थ किया कि 'बार-बार' माने द्वार-द्वार जाकर यशोदा पुकार करती हैं ।

खाने आजम कोका का कहना था कि 'बार' का मतलब दिन से है और यशोदा हर दिन यही रटती रहती है ।

सबसे आखिर में अब्दुर्रहीम खानखाना बोले कि तानसेन गायक हैं । अतः यह एक ही पद को 'बार-बार' अलापते रहते हैं । सो इसका अर्थ पुनरुक्ति है । फैजी फारसी के शायर हैं, यह रोने के सिवा और कोई काम नहीं कर सकते । बीरबल द्वार-द्वार घूमने वाले ब्राह्मण हैं । कोका साहब ज्योतिषी हैं । इसलिए यह दिन-तारीख का हिसाब रखते हैं । एक क्षण चुप रहने के बाद वह बोले, ''लेकिन जहांपनाह, यशोदा का बाल-बाल यानी रोम-रोम पुकारता है कि कोई तो मिले, जो मेरे गोपाल को ब्रज में रोक ले ।''

रहीम के उत्तर ने सबको मुग्ध कर दिया । वास्तव में रहीम भाषा, संस्कृति, समाज और मिथकीय प्रयोगों के कारण स्पष्ट रूप से हिंदुस्तानी रंग में रंगे हुए लगते हैं । २७ दिसम्बर, १५५६ में जन्मे रहीम के दोहे भारतीय सांस्कृतिक परिवेश के लिए प्रासंगिक हैं, लीजिए एक दोहा प्रस्तुत है—

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार ।
रहिमन फिरि-फिरि पाहिए, टूटे मुक्ता हार ।

सेवा का सच्चा अर्थ

महात्माजी (स्वामी श्रद्धानंद) में स्नेह, प्रेम और नम्रता के रूप में एक ऐसा जादू था कि छात्रगण अनायास ही उनकी ओर आकर्षित हो जाते थे ।

एक बार नवम श्रेणी के एक विद्यार्थी ने अपने साथी सोमदत्त नामक विद्यार्थी को यह सूचना दी कि चूंकि पंचम श्रेणी का एक ब्रह्मचारी टाइफाइड से पीड़ित है अतः उसकी सेवा के लिए उस दिन नवम श्रेणी के विद्यार्थियों को बारी-बारी उसकी देखभाल करनी है । बीमार ब्रह्मचारी का नाम था देवदत्त ।

उसकी देखभाल करता सोमदत्त उसके सिरहाने बैठा था कि देवदत्त के कराहने की आवाज सुनकर वह उसके करीब गया और पूछा, ''क्या बात है ?''

''कै होने-जैसा लग रहा है ।'' देवदत्त ने कहा ।

सोमदत्त ने झुककर नीचे रखी चिलमची को देखा । वह थूक, पानी आदि से भरी हुई थी । सोमदत्त तेजी से कमरे से बाहर निकला ताकि जल्दी जाकर चिकित्सालय के सामने बरामदे में सोते भंगी को बुला लाए ।

भंगी को साथ लेकर जब वह लौटा तो सामने का दृश्य देखकर स्तब्ध रह गया ।

देवदत्त के बिस्तर की बगल से कुलपिता महात्मा मुंशीरामजी दोनों हाथों की अंजुली बनाये खड़े थे और देवदत्त उसमें कै कर रहा था ।

लज्जा से सोमदत्त का माथा झुक गया ।

जब देवदत्त कै कर चुका तो महात्माजी बाहर गये । अपने हाथ साफ कर वह लौटे और सोमदत्त से पूछा, ''तुम कहां चले गये थे ?''

सोमदत्त ने सारी बात स्पष्टता से कह दी ।

इस पर महात्माजी बोले, ''तुम्हारे वश का यह काम नहीं है । तुम जाओ और आराम करो और अपने किसी और साथी को यहां भेज दो ।''

सोमदत्त के मुंह से कोई बात न निकल सकी

महात्माजी ने कुछ रुककर पुनः कहा, ''मान लो, मैं वक्त पर न आता तो जानते हो क्या होता ? इसका सारा बिस्तर कै से खराब हो जाता ।''

१९१६ में घटी इस घटना का जिक्र पं. सोमदत्तजी विद्यालंकार ने 'गुरुकुल पत्रिका' के श्रद्धानंद अंक में किया है और स्पष्टीकरण यह स्वीकार किया है कि 'महात्माजी के इस कृत्य ने मुझे कर्त्तव्य का ज्ञान तो कराया ही, साथ ही सेवा का सच्चा अर्थ भी स्पष्ट कर दिया ।'

(श्री जगतराम आर्य कृत 'महान देशभक्त स्वामी श्रद्धानंद से)

'मैं बड़ा हूं या मेरा सचिव'

एक प्रातः अपने सचिव को भेजकर गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की धर्मपत्नी को बुलाया । श्रीमती द्विवेदी आश्चर्यचकित थीं कि उनके पति को तो गुरुदेव बुलाते ही रहते हैं, आज उन्हें क्यों बुलाया । किंतु कुछ समझ में नहीं आया । विस्मित और भयभीत श्रीमती द्विवेदी निर्धारित समय पर गुरुदेव के निवास पर पहुंच गयीं । वह कमरे में टहल रहे थे, जैसे कि किसी बहुत गंभीर समस्या में फंसे हों । इनको आदर से बैठाया, और फिर पूछा, "यह बताओ कि मैं बड़ा हूं या मेरा सचिव ?"

"निश्चय ही आप बड़े हैं, गुरुदेव ।" श्रीमती द्विवेदी ने सकपकाते हुए उत्तर दिया ।

"तो फिर मुझे खिलाने से पहले मेरे सचिव को लहसुन की इतनी स्वादिष्ट चटनी तुमने कैसे खिला दी ? दंडस्वरूप मुझे दुगुनी खिलाओ ।" गुरुदेव ने जवाब तलब किया और, दंड भी निर्धारित कर दिया ।

हुआ यह था कि उस दिन संध्या को किसी कार्यवश सचिव महोदय आये थे तो चटनी बनी थी तथा पकौड़ियों के साथ उनको भी खिला दी । सचिव ने गुरुदेव से चटनी की प्रशंसा की और बताया कि अभी खाकर आ रहे हैं । बस, श्रीमती द्विवेदी तलब कर ली गयीं ।

— श्रीमती हजारी प्रसाद द्विवेदी के संस्मरणों से

चपटी नाक ही भली

स्वामी विवेकानंद अकसर यह कहानी सुनाया करते थे : एक गरीब मनुष्य ने देवता से वर प्राप्त किया था । देवता संतुष्ट होकर बोले, "तुम यह पासा लो । इस पासे को जिन किन्हीं तीन कामनाओं से तीन बार फेंकोगे, वे तीनों पूरी हो जाएंगी ।" वह आनंदोल्लासित हो घर जाकर अपनी स्त्री के साथ परामर्श करने लगा, "क्या वर मांगना चाहिए" ? स्त्री ने कहा— "धन-दौलत मांगो" । किंतु पति ने कहा— "देखो, हम दोनों की नाक चपटी है, उसे देखकर लोग हमारी बड़ी हंसी करते हैं, अतएव प्रथम बार पासा फेंककर सुंदर नाक की प्रार्थना करनी चाहिए ।" किंतु स्त्री का मत वैसा नहीं था, अंत में दोनों में खूब तर्क प्रारंभ हुआ । आखिर पति ने क्रोध में आकर यह कहकर पासा फेंक दिया— "हम लोगों को केवल सुंदर नाक मिले, और कुछ नहीं चाहिए ।" आश्चर्य ! जैसे ही उसने पासा फेंका, वैसे ही उसके शरीर में ढेर-सी नाक उत्पन्न हो

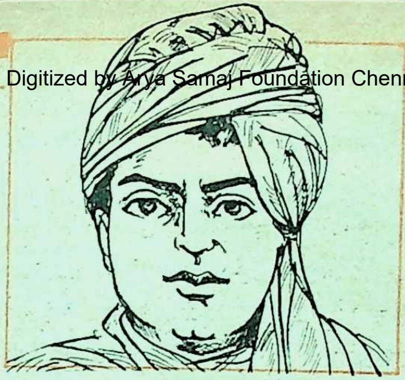

गयीं । तब उसने देखा— यह क्या विपत्ति हुई; फिर उसने दूसरी बार पासा फेंककर कहा— "नाक चली जाए ।" इस बार सभी नाक चली गयीं— साथ ही अपनी नाक भी चली गयी । अब शेष रहा था एक वर । तब उन्होंने सोचा— यदि इस बार पासा फेंककर चपटी नाक के बदले में अच्छी नाक प्राप्त करें, तो लोग अवश्य ही चपटी नाक के स्थान पर अच्छी नाक देखकर उसके बारे में पूछताछ करेंगे । फिर तो हमें सभी बातें बतानी पड़ेंगी । तब वे हमें मूर्ख समझकर हमारी और भी हंसी उड़ाएंगे; कहेंगे कि ये लोग ऐसे तीन वरों को प्राप्त करके भी अपनी अवस्था की उन्नति नहीं कर सके । यह सोचकर उन्होंने पासा फेंककर अपनी पुरानी चपटी नाक ही मांग ली ।

—स्वामी विवेकानंद की जीवनी से

निजाम के आम

निजाम मीर उस्मान अली खां के बाग के अनेक झावे भरकर आम तोड़ लाये गये । उन्होंने कुछ आम उसमें से निकालकर अपने खाने के लिए रख दिये और शेष वेंकट राम रेड्डी से बेच देने के लिए कहा । हैदराबाद के पुलिस अधीक्षक वेंकट राम रेड्डी ने निवेदन किया कि ये आम बहुत अधिक पक चुके हैं जिनका बिकना संभव नहीं है । इस पर निजाम के खुशामदी मुसाहबों ने कहा कि हुजूर, ये आम तो इतने अच्छे हैं कि एक आम २५ रु. तक का बिक सकता है । अब रेड्डी की मुसीबत आ गयी, क्योंकि निजाम ने उस पर दवाब डाला कि जब ये आम इतने उच्चकोटि के हैं तो क्यों नहीं बिकेंगे ? बेच कर आओ । होशयार वेंकट राम रेड्डी को एक तरकीब सूझी । उसने ये आम उन्हीं मुसाहबों के पास भेज दिये जिन्होंने एक-एक आम की कीमत २५ रु. बतायी थी और उनसे इसी दर से आमों के मूल्य वसूल कर लिये और फिर निजाम को बता भी दिया । निजाम हंसी से दीवाला हो गये ।

—बिलकीस लतीफ कृत 'हर इंडिया' से

अम्लरोग? भूख की कमी? कब्

पेट की गड़बड़ी?

स्वास्थ्य और सुन्दरता का रक्षक-लिवर।
सर्वाधिक रोगों का कारण – पेट की
खराबी, अस्वस्थ्य लिवर, और अनिद्रा।
स्वस्थ्य लिवर हर रोग का निदान।
....डा. सरकार

220 ml
LIVOSIN
LIVER CORRECTIVE
CARMINATIVE · APPETISER
RESTORATIVE & TONIC
Jupiter
LIVOSIN

पेट की गड़बड़ी दूर करने
और लिवर सुरक्षित रखने के लि

डा. सरकार का एक अनोखी
आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक।
लिवो

सेवन विधि :
जब तक सीने की जलन, पाचन शक्ति में वृद्धि
अम्लरोग, कब्ज़ियत, भूख की कमी, पेट की
यकृत की अस्वस्थ्यता दूर न हो तब तक एक
गुनगुने पानी के साथ **लिवोसिन** सुबह खाली
और रात को सोने के समय नियमित सेवन क

लिवोसिन
एक आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर निर्माता का
सहयोगी संस्था Jupiter की
आयुर्वेदिक खोज का एक अनोखा उपहार।
जुपिटर फार्मासिटिकल्स प्रा० लि०
२५, इडन हॉस्पिटल रोड़, कलकत्ता-७३
दूरभाष-२६०१५६/२७-०२२४

Jupiter
Embirs Allen
allen's india
Dr. Sarkar Group
एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषध प्रस्तुतकारक

Marketed by
allen's india
Allen's
Marketing
ArnikaPlus Apartment
35, A. P. C Road, C
Phone : 350-90

Allen's

जिसके सहयोग से आपको मिले आरोग्य में विश्वास।

Branch Office : Duggal House, Bank Road, Patna-800 001, Ph : 23-4953
Branch Office : 84/77B, Narayan Bagh, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph : 24-

उपनिषद की कथाएं— ११

अभिमानी बालाकि

● डॉ. सुधा पांडे

प्राचीन काल में जब सर्वत्र वेदज्ञों और शास्त्र विद्या का महत्त्व फैला हुआ था, उस समय व्यर्थ का अहंकार करनेवाले झूठे ज्ञानियों की भी कमी नहीं थी। इस कोटि के अहंकारी पुरुषों में कोसल प्रदेश का एक गर्ग गोत्री ब्राह्मण भी था। बगुला भगत-जैसी प्रवृत्ति और अभिमानभरी लंबी-लंबी बातें हांकने के कारण उसे 'दृप्त बालाकि' के नाम से जाना जाता था। इसी अभिमानी वृत्ति के कारण उसका यही नाम प्रसिद्ध हो गया था। उसने लगातार ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करते हुए विधिवत अध्ययन किया था और गुरु आश्रम में रहने के कारण वह अपनी विद्या पर अभिमान करने लगा था। निरंतर आश्रम में रहनेवाले और बाहर से आनेवाले विद्वान ऋषियों को पराजित कर नीचा दिखाने की कुचेष्टा में लगा रहता था। गुरुओं ने उसे कई बार समझाने का प्रयास किया कि विद्या गर्व में उन्मत्त होकर विद्वानों का अपमान नहीं करना चाहिए। गुरु ने उसे आश्रम छोड़ते समय भी प्रबोध देते हुए कहा— "वत्स बालाकि, तुम गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर रहे हो, अपनी इस प्रवृत्ति को छोड़ देना, नहीं तो तुम्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। तुमने मेरे आश्रम में निरंतर अनेक विद्वानों का अपमान किया है। उनके पराजित होने पर विजय गर्व में भरकर तुम मुझ पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने कई बार आते रहे हो, किंतु शायद तुममें सद्बुद्धि का प्रकाश हो और तुम निरभिमानी होकर, विनम्र होकर अपने ज्ञान को सत्कार्य और कल्याणार्थ प्रकाशित कर सकोगे।"

बालाकि अहंकार के उद्दाम सागर में मग्न था, गुरु की बातें उसे कड़वे विष की भांति प्रतीत हुईं और गुरु की मुखमुद्रा देखकर वह घर

लौटने की बात भी मानो भूल गया । फिर भी गुरु ने उससे कहा— "हे वत्स ! यह सच है कि तुम्हारे-जैसा प्रखर बुद्धि बालक मैंने नहीं पाया, मेरे अब तक के शिष्यों में तुम-जैसे परिश्रमी शिष्य कम ही रहे हैं । तुम्हारे जाने के बाद आश्रम में तुम्हारा अभाव सदैव अनुभव होता रहेगा, किंतु फिर भी मैं तुम्हें अंतिम बार पुनः समझा रहा हूं कि अपने ज्ञान के गर्व में विद्वानों का अपमान मत करना ।"

बालाकि का अंतर्मन विकसित हो उठा था । गुरु के चरणों में नतमस्तक होकर उसने उन्हें विश्वास दिलाया— "भगवन ! मेरे व्यवहार से आश्रमवासियों को पीड़ा पहुंची, मैं निश्चय ही इस बात के लिए लज्जित हूं । यह भी सच है कि आज ही मेरे स्वाभिमान को ठेस लगी है । परंतु अब मैं आश्वस्त हूं । आपके उपदेशों का अनुसरण करता हुआ अब मैं कभी विद्वानों का अपमान नहीं करूंगा ।" और वह गुरु चरणों में प्रणाम निवेदन कर प्रस्थान करने लगा । अंत में गुरु ने पुनः कहा— "वत्स जाओ, तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो, तुम्हारे संताप दूर हों ।" बालाकि नतमस्तक हो प्रस्थान करने को तत्पर हुआ । उसके मन में एक विचित्र भाव उमड़ रहा था । आश्रमवासी साथियों, गुरुपत्नी सभी से विदा लेकर वह अपने गृह की ओर लौट गया ।

प्राचीनकाल में वेदज्ञानी ब्राह्मणों की स्थिति संपन्न नहीं होती थी । बालाकि के परिवार की अवस्था भी कुछ ऐसी ही थी । उसने देखा कि निर्धनता के कारण परिवार विपन्न अवस्था में पहुंच चुका है । घर के सदस्यों को ठीक से भोजन भी नहीं मिल पा रहा था । वृद्ध माता-पिता की स्वास्थ्य चिंता अलग थी, फलत बालाकि ने धन प्राप्ति के लिए प्रवास को निकलने का निर्णय लिया और चल पड़ा ।

उस समय काशीराज अजातशत्रु की ख्याति अपनी विद्या और दान के कारण सारे देश में हो चली थी । उसके पास केवल याचक ही नहीं आते थे, अपितु उसने विद्वानों और मुनिकुमारों के लिए बड़े-बड़े भवन भी बनवा दिये थे, जिनमें निवास करते हुए ये सभी लोग ब्रह्म विद्या का अध्ययन करते रहते थे । इतना ही नहीं, क्षत्रिय-ब्राह्मण-जैसे भेदभाव को भुलाकर अनेक ब्राह्मण-पंडित भी क्षत्रिय राजा अजातशत्रु के समीप जाकर ब्रह्मविद्या संबंधी अपनी शंकाएं मिटाते थे और प्रभूत दक्षिणा और धन-धान्य से संतुष्ट होकर लौटते थे । राजा अजातशत्रु की ख्याति से बालाकि भी सुपरिचित था । आश्रम में भी अपने गुरु के मुख से उसने कई बार अजातशत्रु की प्रशंसा सुनी थी । अतः बालाकि ने सोचा वह काशिराज के समीप जाकर ही धन प्राप्ति की चेष्टा करेगा । मन में यह निश्चय करने के बाद उसने काशी की ओर प्रस्थान किया । काशी तक का मार्ग पार करते हुएं बालाकि को कई दिन कई रातें व्यतीत हो गयीं । वह बहुत अधिक थक गया था । कई दिन बीत जाने पर वह गंगातट पर बसी काशी नगरी में पहुंचा । गंगा में स्नान करके पूजन-ध्यान से निवृत्त हो उसने काशिराज के भवन की ओर प्रस्थान किया ।

राजभवन की ओर जाते समय मार्ग में उसे एक आचार्य दिखलायी पड़े, जो शिष्यों को उपदेश दे रहे थे । बालाकि का पूर्व मन फिर उनसे शास्त्रार्थ करने को विकल हो उठा, पर

बालाकि, जो अजातशत्रु के पास ब्रह्म-उपदेश करने की इच्छा से गया था केवल याचना करने नहीं, मुनि की बात सुनते ही उसके अंदर का अभिमान फिर जाग गया और वह काशिराज अजातशत्रु की ओर उन्मुख होकर कहने लगा— "मेरा यहां आने का प्रयोजन मुख्य रूप से यह है कि आपकी ब्रह्मविद्या की ख्याति सुनकर मैं आपसे उसी विषय पर चर्चा करने आया हूं। यही नहीं, मैं आपको ब्रह्मविद्या की शिक्षा दूंगा।"

तत्काल उसे गुरु के उपदेश याद आ गये। वह चुपचाप जाकर आचार्य के द्वार पर खड़ा हो गया। आचार्य प्रवर की दृष्टि उस पर पड़ी तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, "जाओ देखो द्वार पर कौन खड़ा है ?" उनके एक शिष्य ने आकर बालाकि का परिचय जानकर गुरु को उसके बारे में बताया। गुरु ने बालाकि को अपने समीप बुलाया और पूछा— "वत्स ! देखने में तुम कोई परदेशी प्रतीत होते हो। तुम कौन हो और तुम्हें कहां जाना है ?" बालाकि ने उत्तर दिया, "मुझे काशिराज अजातशत्रु के यहां जाना है, पर भगवन आपके दर्शन करके मैं कृतकृत्य हो गया हूं।" बालाकि को यह जानकर और प्रसन्नता हुई कि वे मुनि इसके गुरु भारद्वाज से परिचित थे और बालाकि के नाम की चर्चा भी इन तक पहुंच चुकी थी। बालाकि का प्रयोजन जानकर मुनिवर ने कहा— "वत्स ! अभी कुछ क्षण भोजन आदि करके तुम यहीं विश्राम करो। सायंकाल जब महाराज अभ्यागतों से भेंट करते हैं, तब मैं तुम्हें उनके समीप लेकर चलूंगा।"

सायंकाल जब मुनिवर के साथ बालाकि अजातशत्रु के दरबार में पहुंचा, तब उसकी सभा में अनेक पंडित, ज्ञानी और कई सभासद विद्यमान थे। महामुनि के साथ आये ऋषिकुमार को देखकर सब उत्कंठित हो गये और शीघ्र ही जानना चाहते थे कि मुनिवर के साथ कौन है ? कहां से आया है ? इसके आने का क्या प्रयोजन है ?

राजा अजातशत्रु ने तभी मुनिप्रवर से पूछा— "भगवन आपके साथ यह नवयुवक कौन है ? मुझे इसका परिचय दीजिए।" मुनिवर ने राजा को संबोधित करते हुए कहा— "हे राजन ! यह भारद्वाज ऋषि का शिष्य बालाकि है। वेद-वेदांगों का अध्ययन कर ब्रह्मविद्या में पारंगत हो यह आपके समीप आय हैं। संभवतः इसका कोई प्रयोजन है।"

बालाकि, जो अजातशत्रु के पास ब्रह्म-उपदेश करने की इच्छा से गया था केवल याचना करने नहीं, मुनि की बात सुनते ही उसके अंदर का अभिमान फिर जाग गया और वह काशिराज अजातशत्रु की ओर उन्मुख होकर कहने लगा— "मेरा यहां आने का प्रयोजन मुख्य रूप से यह है कि आपकी ब्रह्मविद्या की ख्याति सुनकर मैं आपसे उसी विषय पर चर्चा करने आया हूं। यही नहीं, मैं आपको ब्रह्मविद की शिक्षा दूंगा।"

बालाकि की ऐसी बात सुनकर सारी सभा

राजा का यह उपदेश सुनकर बालाकि का दर्प विगलित हो गया था । वह अब तक ब्रह्मांड के भौतिक पदार्थों को देखकर उन्हें ही ब्रह्म समझता था । अजातशत्रु के द्वारा प्राप्त वास्तविक ब्रह्मज्ञान से उसके अंतर से अज्ञान के बादल छंट गये और आत्मग्लानि की पीड़ा से वह भर उठा । किंतु प्रखर बुद्धि से प्राप्त वह विद्या जो उसने योग्य गुरु से प्राप्त की थी, वह वास्तविक रूप प्राप्त कर सकी और उसके मुख पर ब्रह्मतेज की अपूर्व दीप्ति छा गयी ।

स्तब्ध रह गयी । ब्रह्मविद्या का ज्ञानी ऋषि इस प्रकार की दंभभरी गर्वोक्ति कह सकता है, इसका भान किसी को भी नहीं था । सभा में उपस्थित अन्य पंडित भी विस्मित होकर एक-दूसरे का मुख देखने लगे । कुछ के मुख पर क्रोध की रेखाएं भी उभर आयीं— किंतु अजातशत्रु अत्यंत विनम्र स्वर में बोले— "भगवन आप-जैसे प्रकांड पंडित से मैं शास्त्रार्थ नहीं कर सकता, किंतु इस समय आप अतिथिशाला में विश्राम कीजिए, कल संध्या तक मैं आपकी सेवा-सुश्रुषा करूंगा ।"

बालाकि को और आश्चर्य हुआ । उसने सोचा कि राजा मानो मुझ पर व्यंग्य कर रहा है । उसने राजा से कहा— "मैं आपकी सेवा लेना नहीं चाहता हूं, अपितु मैं केवल यही जानना चाहता हूं कि आपकी ब्रह्मविद्या और ब्रह्म-ज्ञान की ख्याति सर्वत्र फैली हुई है, और आप क्षत्रिय हैं, वीतराग ब्राह्मणों के रहते क्षत्रिय वेद-विद्या के अधिकारी कैसे हो सकते हैं ?"

राजा की सारी सभा बालाकि के प्रबुद्ध पांडित्य के समक्ष अवाक हो उठी थी, अधिक विवाद न बढ़े यह विचार राजा ने बालाकि से कहा— "भगवन ! मुझे क्षमा करें । मैं आप-सदृश मनस्वी के आदर-सत्कार से विमुख हो गया । आप मेरी अतिथिशाला को पवित्र करें । कल सायंकाल मैं स्वयं आपके समक्ष आऊंगा ।" बालाकि का अभिमानी पांडित्य और अधिक प्रखर हो उठा और उसने कहा— "हे राजन ! मुझे आपकी सेवा की आवश्यकता नहीं है । मैं आपकी ब्रह्मविद्या की परीक्षा लेना चाहता हूं ।" राजा भी प्रसन्न हो गये । उन्होंने विचार किया कि यह स्वयं ही मुझे ब्रह्मविद्या का उपदेश करने को उत्सुक है तो उन्होंने प्रसन्न होकर कहा— "ठीक है, यदि आप कहते हैं कि मैं तुम्हारी ब्रह्मविद्या की परीक्षा लूंगा और तुम्हें ब्रह्म की शिक्षा दूंगा तो दीजिए, मैं आपको इतना कहनेभर के लिए एक सहस्त्र गौएं देता हूं ।"

राजा अजातशत्रु इसलिए भी प्रसन्न हुए कि उनकी ब्रह्मविद्या की महत्ता से प्रभावित होकर ही यह ऋषि उनकी परीक्षा लेने को तत्पर हुआ है । राजा के द्वारा गौएं दिये जाने की बात से बालाकि का अभिमान और बढ़ चला । उसने अनुमान लगाया कि राजा ने जब बात प्रारंभ करते ही मुझे एक सहस्त्र गौएं दे डाली हैं, निश्चय ही इसके पीछे कोई दूसरा कारण छिपा

होगा । बालाकि ने राजा से कहा— "इस प्रकार सेवा-सत्कार की बातों में समय नष्ट न करें । हे राजन ! मैं आपसे केवल ब्रह्म के स्वरूप की चर्चा करना चाहता हूं ।" राजा ने कहा— "पूछिए, आप क्या जानकारी चाहते हैं ?"

बालाकि ने गर्वभरी वाणी में कहा— "आदित्य में जो पुरुष स्थित है, मैं इसी की उपासना ब्रह्मरूप में करता हूं..." अभी वह बात पूरी कर ही रहा था कि अजातशत्रु ने उसे रोक दिया और कहा— "अरे ! नहीं-नहीं ऐसा संवाद मत कीजिए । यह क्या कह रहे हैं । यह आदित्य तो संसार में सबसे ऊपर स्थित है । सब पदार्थों का मूर्धा है । इस रूप में ही मैं इसकी उपासना करता हूं । मैं जो इसकी उपासना करता हूं, वैसे ही जो आदित्य पुरुष को ब्रह्म मानकर नहीं इसकी इस रूप में उपासना करता है, वह सभी का अतिक्रमण करके शीर्ष हो जाता है ।"

बालाकि बोला— "भगवन ! मैं आपसे उस ब्रह्म के बारे में जानना चाहता हूं जो हम में, आप में है । हे राजन ! एक ब्रह्मज्ञानी की भांति मुझे विस्तार से बताइए ।" राजा ने विचार किया कि अभी इस मुनिकुमार के मन में ब्रह्म के प्रति कितना भ्रम बना है । राजा अजातशत्रु ने विनत भाव से फिर बालाकि से पूछा— "हे मुनिकुमार ! मैं तो ब्रह्म को इसी रूप में जानता हूं, यदि आप किसी और ब्रह्म को जानते हों, तो कृपया मुझे बताइए, तभी मैं आपके प्रश्न का समुचित उत्तर दे सकूंगा ।" बालाकि को भी यह आशा नहीं थी कि राजा इस प्रकार के तर्क भी कर सकेंगे । फिर उसने अपनी बात का क्रम बढ़ाते हुए आगे कहा— "यह जो चंद्र में पुरुष है, मैं इसे ब्रह्म मानकर उपासना करता हूं ।" अजातशत्रु ने उसे फिर रोका और कहा, "यह तो मानो छिटकती चांदनी के श्वेत वस्त्रधारी महान सोमराजा हैं । मैं चंद्र को ब्रह्म मानकर नहीं किंतु जिस रूप में मैं उपासना करता हूं, उस रूप में मानकर जो इसकी उपासना करते हैं, उनके घर में निरंतर सोमरस प्रवाहित रहता है । उनके घर में सदा समृद्धि बनी रहती है ।"

बालाकि को इस बार भी मौन रह जाना पड़ा । अब उसने ब्रह्म के नये स्वरूप का वर्णन किया और बोला, "यह विद्युत में जो पुरुष है, उसकी मैं ब्रह्म के रूप में उपासना करता हूं ।" अजातशत्रु किंचित मुसकराये और बोले— "ऐसा संवाद मत कीजिए, यह विद्युत एक तेजस्वी अचेतन शक्ति है, मैं इसकी इसी रूप में उपासना करता हूं, ब्रह्म मानकर नहीं । इसकी ऐसी उपासना करनेवाले तेजस्वी हो जाते हैं और उनकी संतान भी तेजस्वी होती है ।" राजा अजातशत्रु निरंतर उत्तर देते जा रहे थे और मुनिकुमार की अल्पज्ञता पर क्षुब्ध भी हो रहे थे, किंतु निरंतर शांत-गंभीर स्वर में उसके तर्क काटते जा रहे थे । बालाकि अभी भी शांत नहीं हुआ । अब उसने आकाश और वायु को ब्रह्म स्वरूप मानने की बात कही । अजातशत्रु की दृष्टि में यह भी उचित नहीं था क्योंकि उसने बताया कि 'आकाश तो अप्रवर्ति है । गतिशून्य

है, जो आकाश को आकाश मानकर ही उपासना करते हैं, वे आकाश की भांति पूर्ण हो जाते हैं । इसी प्रकार वायु की उपासना भी वायु के रूप में ही करनेवाले शत्रुओं का पराभव करनेवाले होते हैं, वे सर्वजयी हो जाते हैं ।’

बालाकि मन-ही-मन पश्चात्ताप भी कर रहा था कि प्रवास में वह कुछ धन अर्जित करके अपने परिवार की विपन्नता दूर करना चाहता था, किंतु यहां तो विपरीत गति हो गयी । उसने विचार किया कि यदि में साधारण ब्राह्मण के रूप में राजभवन में रहता चला आता तो शायद मेरी इतनी अपमानजनक स्थिति न होती पर अब पीछे लौटने का भी कोई उपाय नहीं था । अपने पराजित भाव को छिपाते हुए, बाहरी भाव से वह फिर उसी गर्व में भरकर राजा से बोला कि ‘अग्नि के रूप में मैं ब्रह्म की उपासना करता हूं ।’ अजातशत्रु फिर भी कहां माननेवाले थे । उन्होंने कहा— “इसकी उपासना मैं विषसिद्धि रूप में करता हूं । इसकी उपासना करनेवाले राजा और प्रजा दोनों सहनशील हो जाते हैं ।” अब बालाकि का धैर्य मानो समाप्त हो चला था, फिर भी उसे अपनी हार मानना सहज रूप में स्वीकार्य नहीं हो रहा था । वह और आगे बढ़ा और बोला— “यह जो जल में पुरुष है, मैं इसे ब्रह्म मानकर उपासना करता हूं ।” राजा अजातशत्रु ने उसे फिर रोका— “अरे, ऐसा मत कहिए, जल तो आकर्षण की वस्तु है, जो जल-पुरुष को ब्रह्म मानकर नहीं अपितु जल मानकर ही उपासना करते हैं, वह सभी शत्रु का पराभव कर देते हैं ।”

ब्रह्मांड के सभी तत्व सूर्य, चंद्र, विद्युत, आकाश, वायु, जल, अग्नि आदि पर बालाकि तर्क कर चुका था । अब उसने दर्पण का सहारा लिया और कहना शुरू किया कि “दर्पण में जो पुरुष दिखायी देता है या नाद में जो पुरुष विद्यमान है, मैं उन्हें ब्रह्म मानकर उपासना करता हूं ।” अजातशत्रु को फिर हंसी आयी और बोले— “नहीं-नहीं, उसकी उपासना मैं रोचिष्णु अथवा दैदीप्यमान रूप में करता आया हूं । उसमें तो अपना ही प्रतिबिंब दिखता है । नाद में अपने ही प्राण की ध्वनि सुनायी पड़ती है, वह ब्रह्म कैसे हो सकता है ? मैं इसी प्राण रूप में उपासना करता हूं, जो इसकी इसी रूप में उपासना करता है उसको पूर्ण आयु प्राप्त होती है ।” बालाकि फिर भी शांत न हुआ । पुनः बोला कि ‘मनुष्य की छाया के रूप में स्थित ब्रह्म की मैं उपासना करता हूं ।’

अजातशत्रु पराजित होनेवाले न थे । उन्होंने कहा— “मैं तो इसकी उपासना मृत्यु के रूप में करता हूं ।” बालाकि आश्चर्यचकित था कि इतने वर्षों तक शास्त्रों की शिक्षा पाकर भी वह अधूरा कैसे रह गया ? निराश मन से फिर बोला कि, ‘आत्मा में जो पुरुष है, मैं इसी को ब्रह्म मानकर उपासना करता हूं’...अबकी बार उसने सोचा था कि शायद इस अंतिम वाक्य में मेरी विजय होगी, किंतु अजातशत्रु कहां हार माननेवाले थे । उन्होंने कहा— “अरे, यह संवाद मत कीजिए । उसकी उपासना तो मैं आत्मन्वी कहकर करता हूं । ऐसी उपासना करनेवाला आत्मावान हो जाता है और उसकी संतान भी आत्मावान हो जाती है ।”

अब बालाकि को चुप रह जाना पड़ा । उसका विद्यामद चूर हो गया । उसने हाथ जोड़ लिये । लज्जा और विकंपित स्वर में बोला—

"हे राजन ! मुझे ब्रह्म के बारे में जितना ज्ञान था वह सब मैंने आपको बता दिया है । इससे अधिक मुझे कुछ ज्ञात नहीं ।" अजातशत्रु ने कहा— "इस ज्ञान से तो ब्रह्म का कुछ भी पता नहीं चल सकता ।"

बालाकि और गड़ गया और बोला— "भगवन् मैं भ्रम में था । अब आप ही मुझे उपसंपदा दें । निश्चय ही ब्रह्म के बारे में मेरी ये मान्यताएं अपूर्ण हैं ।"

अजातशत्रु ने कहा— "अभी तक तो ब्राह्मण क्षत्रियों को दीक्षा देते आये थे । मैं एक क्षत्रिय होकर एक विद्यासंपन्न ब्राह्मण को यदि उपदेश देने की बात करूं, तो यह उलटी बात होगी, फिर भी मैं तुम्हें ब्रह्म का उपदेश दूंगा । आज काफी विलंब हो गया है । तुम अतिथिशाला में विश्राम करो । अगले दिन मैं तुम्हें ब्रह्म का वास्तविक निरुपाधि रूप बताऊंगा । तुम अनुताप बिलकुल न करो ।"

दूसरे दिन प्रातःकाल अंधेरे में ही राजा अजातशत्रु मुनिकुमार को लेकर राजभवन से बाहर गये । अभी सवेरे की लालिमा कुछ-कुछ फूटने लगी थी । राजा धीरे-से वीथिका की ओर वहां गये जहां एक शय्या पर कोई राजपुरुष सो रहा था । राजा ने उसके समीप जाकर 'हे शुक्ल वस्त्रधारी, हे पांडववासा, हे सोमराजा' कहकर पुकारा पर उस पर कोई प्रभाव न पड़ा । फिर उसके पास जाकर उसे हाथ से हिलाया तो अटपटाकर उठ गया और राजा के समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा हो गया । अजातशत्रु ने बालाकि से पूछा कि 'इस राजपुरुष को जगाने का तात्पर्य तुम समझ गये होगे ।' बालाकि विनम्र स्वर में बोला— "राजन, मेरे ब्रह्म ज्ञान की अपूर्णता तो आपको विदित हो ही गयी है, अब आप ही इसका रहस्य बताइये ।" अजातशत्रु ने पूछा— "क्या तुम बता सकते हो कि यह विज्ञानमय पुरुष सोते समय कहां चला गया था, कि जब इसे आवाज दी तो इसे कुछ भी आभास नहीं हुआ और जब इसे हिलाया तब यह कहां से आ गया ।"

बालाकि फिर चुप था, उसे कोई उत्तर न सूझा ।

अजातशत्रु ने उसे बताया— "सोते समय यह विज्ञानमय पुरुष इंद्रियों के ज्ञान को अपने भीतर खींच लेता है, कहने को वह सोता है किंतु वह अपने स्वरूप में पहुंचा होता है । उस समय स्वप्नलीला में जहां-जहां वह विचरता है, वे ही इसके लोक होते हैं । स्वप्न में कभी यह महाराजा बनता है कभी ब्राह्मण, कभी ऊंचा और कभी नीच, जैसे कोई महाराजा अपने सेवकों को लेकर विचरण करता है, वैसे ही यह विज्ञानपुरुष इंद्रियों को लेकर विचरण करता रहता है ।"

बालाकि विस्मित भाव से सारी बात सुनता जा रहा था । अजातशत्रु ने बात को संक्षिप्त करते हुए उसे बताया कि 'सुषुप्ति या गहरी निद्रा में यह कुछ नहीं जानता । यह पूरी तरह अचेत हो जाता है । तब हृदय से निकली अनेक

नाड़ियों से पुरीतत नाड़ी में चला जाता है और उसके माध्यम से पूरे शरीर में व्याप्त होकर बुद्धि के साथ उसी प्रकार शयन करता है जैसे कोई महाराजा या महाब्राह्मण या कोई कुमार आनंद की पराकाष्ठा में होता है ।'

अंतिम सूत्र की व्याख्या करते हुए अजातशत्रु ने उसे और स्पष्ट करते हुए बताया कि 'जैसे मकड़ी अपने महीन धागे के सहारे चढ़ती-उतरती है, वैसे ही यह आत्मा जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था में विज्ञान रूपी तंतु के सहारे अंदर-बाहर आता-जाता है । जब यह सुषुप्ति अवस्था में होता है, तब ब्रह्म के निकट पहुंच जाने के कारण इसे भी आनंद का अनुभव होता है । **यही ब्रह्म का स्वरूप है** । जैसे जलती अग्नि से अनेक क्षुद्र स्फुलिंग निकलते हैं, उसी प्रकार ये प्राण, ये सारे लोक, ये देवगण और समस्त भूत समुदाय आत्मा से विविध रूप में उत्पन्न होते हैं । यही उपनिषद है या ब्रह्मविद्या है ।'

राजा का यह उपदेश सुनकर बालाकि का दर्प विगलित हो गया था । वह अब तक ब्रह्मांड के भौतिक पदार्थों को देखकर उन्हें ही ब्रह्म समझता था । अजातशत्रु के द्वारा प्राप्त वास्तविक ब्रह्मज्ञान से उसके अंतर से अज्ञान के बादल छंट गये और आत्मग्लानि की पीड़ा से वह भर उठा । किंतु प्रखर बुद्धि से प्राप्त वह विद्या जो उसने योग्य गुरु से प्राप्त की थी, वह वास्तविक रूप प्राप्त कर सकी और उसके मुख पर ब्रह्मतेज की अपूर्व दीप्ति छा गयी ।

राजा अजातशत्रु के पास कुछ दिन व्यतीत कर वह बालाकि कोसल निवासी गार्ग्य राजा से प्रभूत धनधान्य द्वारा सम्मानित होकर उनकी राजधानी से अपने गृह को लौट गया और ब्रह्म-ज्ञान का सच्चा अधिकारी बनकर ब्रह्मोपासना में ही लग गया । अब ब्राह्मण और क्षत्रिय के बीच ज्ञान के कारण ऊंच-नीच का भेद मानो मिट गया । राजा गुरु थे और ब्राह्मण शिष्यवत ।

('वृहदारण्यकोपनिषद' से)

—प्राचार्या,
एम.के.पी. (पी.जी.) कॉलेज,
देहरादून

कैंसर और आत्महत्या

ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने शरीर की कोशिकाओं के विनाश और विकास से जुड़ी 'एपाप्टोसिस' नामक प्रक्रिया की मदद से कैंसरग्रस्त कोशिकाओं के स्वयं नष्ट होने की प्रक्रिया का गहन अध्ययन किया है । लंदन विश्वविद्यालय के प्रो. मार्टिन राफ ने अपने प्रयोगों से यह पाया कि 'एपाप्टोसिस' के जरिए कोशिकाओं को यह रासायनिक संकेत प्राप्त होता है कि उन्हें कब तक जीवित रहना है । इन संकेतों के बंद होते ही ये कोशिकाएं स्वतः नष्ट हो जाती हैं ।

शोधकर्ता कैंसरग्रस्त कोशिकाओं को अधिक संख्या में एवं शीघ्रता से इस 'आत्महत्या' के लिए प्रेरित करने हेतु प्रयासरत हैं ।

• विनोद कुमार लाल

तमिल कहानी

कीमत

● जया वेंकटरमन

“मिस्टर नरेन ! आखिरी बार कहता हूं । मानना या न मानना आपकी इच्छा । कृपा करके उस नोटिंग को वापिस ले लीजिए और जैसा मैं कहता हूं लिख दीजिए । हमारे अफसर ने ऐसा ही आदेश दिया है । आपकी बात से मैंने उन्हें अवगत करा दिया था, लेकिन उन्होंने नहीं मानी । उनके आदेश का उल्लंघन कर अपनी इच्छानुसार लिखेंगे तो व्यर्थ ही उनके कोप का भाजन बनेंगे । वह नोटिंग ज्यों-का-त्यों ऊपर आफिस में जाए, तो उसका परिणाम कुछ विपरीत ही होगा । कई लोगों के विरोध का सामना करना पड़ेगा ।” इतना कहकर परमेश्वरन चुप हो गये ।

उम्र में बड़े और अनुभवी हैं । उनका विचार है, समय के साथ मिलकर चलना चाहिए । ऐसा नहीं सुना कि उन्होंने कभी भी किसी का विरोध किया हो । स्वभाव से बड़े ही उपकारी । ऐसा व्यक्ति आज मुझ पर दबाव डाल रहा है ।

कई लाखों के अनुमान के एक कांट्रेक्ट से संबंधित बात है । इस कांट्रेक्ट में किस-किस का हाथ है यह भी मैं अच्छी तरह जानता हूं । कुछ ही महीने पहले मैं इस सीट पर बदली होकर आया हूं । मेरे आने के पूर्व यहां क्या-क्या हुआ, मुझे सब अच्छी तरह मालूम है । कांटों का ताज है, जानते हुए भी मैं इसमें फंस गया ।

जहां अनियमितताएं अधिक हों, वहां ईमानदारी से काम कर कई लोगों के विरोध का पात्र बनने एवं कुछ लोगों की प्रशंसा का पात्र बनने में मुझे बड़ी खुशी होती है ।

कुछ लोग मुझे पागल कहते हैं, कुछ लोग घमंडी और कुछ लोग आग कहकर भी पुकारते हैं । वह तो उनके मनोभावों पर निर्भर करता है ।

इतना होने पर भी उस कांट्रेक्ट को लेकर मेरे और परमेश्वरन के बीच उत्पन्न टकराहट की स्थिति अपरिहार्य-सी हो गयी थी । मेरी टकराहट का अंतिम व्यक्ति परमेश्वरन ही थे ।

“सर ! इस विषय में अपने निर्णय को बदलने में मैं असमर्थ हूं । मैंने जो लिख दिया उसे पत्थर की लकीर समझिए । फिर आप तो मुझे जानते ही हैं । जानकर भी आप ऐसी जिद करें तो कैसे क्या हो ?”

“यह सब तो ठीक है नरेन ! फिर भी बात थोड़ी-सी उलझी हुई है । वह जो रेड्डी है न, बहुत खराब व्यक्ति है । उसके साथ क्यों टकराना ? उसकी पहुंच बड़े-बड़े लोगों तक है...इसीलिए तो...”

“उससे क्या ? इनसे टकराने में क्या रखा है ? मैं हमेशा कानून एवं नियम के अनुसार चलनेवाला हूं । यह तो आप जानते ही हैं । मैंने जिन नियमों का अनुसरण किया अगर वे गलत हों, तो बताइए मैं सुधार लूंगा ।”

“नियम गलत हैं ऐसा मैं नहीं कहता । कभी-कभी नियम या कानून को थोड़ा सरल बनाकर अनुकूल भी बनाना पड़ता है । एकदम नियम के अनुसार चलना तो असंभव है ।”

मैं ऐसा नहीं कर सकता । नियम और

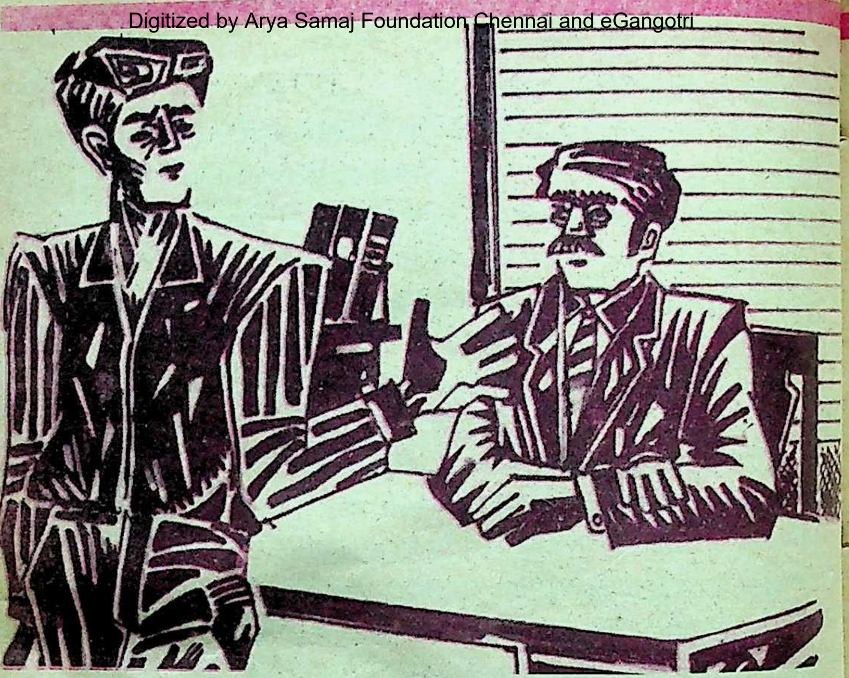

कानून सरकार द्वारा निर्मित होते हैं । उन नियमों का पालन करना हर एक सरकारी नौकर का नैतिक कर्त्तव्य है । उसी के लिए वेतन दिया जाता है । जहां तक मेरा प्रश्न है, मेरी दृष्टि में एक उच्चपदस्थ अधिकारी एवं अदना कर्मचारी दोनों एक ही हैं । हम जो वेतन लेते हैं उसके प्रति तो हमें ईमानदार रहना ही चाहिए । मैंने जो टिप्पणी लिखी है, आपकी दृष्टि में वह सही नहीं है, तो क्यों नहीं उसके ऊपर आप अपना विरोध प्रकट कर देते ?''

''वह कैसे ? तुम्हारी टिप्पणी को अगर मैं गलत कहूं तभी न ? इसीलिए तो समस्या है ।''

''तब फिर मैं क्या करूं ? नियम के अनुसार चलें, तो गलती है । लोग कहेंगे कि बड़ा अहंकारी है, दूसरों की सहायता करना नहीं चाहता । अगर नहीं चलें, तो कहेंगे नियम तो कुछ जानता नहीं, बड़ा बेवकूफ है । इसके लिए और कोई उपाय है ?''

''नरेन ! तुम उम्र में अभी बहुत छोटे हो । अधिक अनुभव भी नहीं है । इस टिप्पणी को ज्यों-का-त्यों ऊपर भेज दिया जाए, तो जानते हो क्या होगा ? रेड्डी के अपने लोग मिनिस्ट्री तक में हैं । तुम्हारी नोटिंग को छिपाकर दूसरी नोटिंग लिखवा लें तो क्या होगा ? लिखें या न लिखें पर होगा वही । बेमतलब सबकी दुश्मनी मोल लेने से क्या लाभ ?''

''इसके विपरीत अगर अपने ऑफिसर के कहे अनुसार कर दें तो फिर पूरा उत्तरदायित्व उनका हो जाता है और फिर वे क्या वेतन नहीं लेते ? अगर उन्हें चिंता नहीं है तो हमें ही चिंता क्यों करनी चाहिए ?''

''आपका कहना तो ठीक है । उसके लिए यदि मैं गलत रास्ता दिखाऊं, और उससे कोई समस्या उत्पन्न हो जाए, तो उस समय सब सा

छोड़ देंगे । पूरी बदनामी हमारी होगी । आफिसर तो किसी प्रकार बच जाएंगे । फिर ये सब किसलिए किया जाए ? नियम के विरुद्ध चलने के लिए मैं तैयार नहीं हूं—फिर आपकी इच्छा !"

"कुछ भी हो यह कांट्रेक्ट रेड्डी को ही मिलेगा । इसके बीच में पड़कर व्यर्थ ही तुम क्यों अपना नाम बदनाम करते हो, यही मेरा कहना है ।"

"बदनामी से मैं नहीं डरता इसका परिणाम जो भी हो, स्वीकार करने के लिए तैयार हूं ।" मैंने एकदम निर्णयात्मक जवाब दे दिया ।

दो दिन तक फाइल उनकी टेबुल पर रखी रही । शायद परमेश्वरन यह सोचते हों कि इस बीच मैं अपना विचार बदल लूंगा ।

दो दिन की छुट्टियों के बाद सुबह, मैं एक आवश्यक कार्य में डूबा हुआ था, उस समय रेड्डी आये और बोले—

"सर ! नमस्कारम ।"

बोलते समय उनके सामने के सोने के दांत चमक रहे थे, तलवार की नोंक-जैसी मूंछें लंबी-लंबी, सिल्क का कुरता-धोती पहने थे, मेरे उत्तर का इंतजार किये बिना मुसकराते हुए सामने वाली कुरसी को सरकाकर बैठ गये ।

बिल को देखते ही मुझे चक्कर-सा आ गया । बेंगलूर का बहुत बड़ा अस्पताल । मैं तो इस लायक भी नहीं था कि बरसात के समय सिर छिपाने के लिए भी वहां खड़ा हो सकूं । बच्ची ही सब कुछ है सोचकर अगर परमेश्वरन इस अस्पताल में आये, तो उनकी भी कोई गलती नहीं ।

मैं अपने काम में ऐसा डूबा था, जैसे मैंने उन्हें देखा ही न हो ।

"लगता है आप बहुत व्यस्त हैं ।" उन्होंने अपने आप बातें करने की पहल की ।

"क्या बात है बोलिए । दो दिन की छुट्टियां पड़ गयीं थीं । काम अधिक है । व्यर्थ की बातो के लिए समय नहीं है ।"

मेरी बातें सुनकर रेड्डी का चेहरा विकृत हो गया, फिर भी तुरंत अपने को संयमित कर कहा, "बाद में समय निकालकर आपके घर पर आऊंगा ।"

हरी मिर्च मुंह से काटने पर चरपराहट जैसे लगती है, वैसे ही उनकी बातें सुनकर मेरे तन-बदन में आग लग गयी ।

"घर पर आने की आवश्यकता नहीं । ऑफिस का काम ऑफिस में ही होता है । मुझे यह कतई पसंद नहीं कि कोई मुझे ऑफिस के काम से घर पर मिले । वैसे क्या बात है बताइए ।"

रेड्डी ने दृढ़ता से कहा, "उसी ठेके के बारे में... परमेश्वरन ने आप को बताया होगा ।"

उस समय मैंने परमेश्वरन की ओर देखा । बनावटी ढंग से सिर झुकाकर फाइल में डूबने का वह नाटक कर रहे थे । मैंने अपने गुस्से को

दबाकर शांति से बातें कीं ।

“उसके संबंध में जो लिखना था, लिखकर उनकी टेबुल पर रख दिया है । उसे चार दिन हो गये हैं । उनके पास से फाइल कार्रवाई के लिए ऊपर—आफिसर के पास चली जाएगी । उसकी चिंता न करें ।”

“मालूम है ! परमेश्वरन ने बताया था । आप मेरे लड़के के समान हैं । उनके अनुकूल चलना सही रहेगा । मेरे बारे में तो आप जानते ही हैं ।”

“मिस्टर ! यह मेरा आफिस है । यहां क्या करना है और क्या नहीं करना है, क्या अच्छा है और क्या बुरा, सब मुझे मालूम है । उसके बारे में दूसरों को मुझे बताने की कोई जरूरत नहीं ।”

“देखो भैया ! मिनिस्टर ने मुझे बताया है कि यह ठेका हर हालत में मुझे ही मिलेगा । उससे तुम्हारे लिए कोई समस्या उत्पन्न न हो, इसका मैं ध्यान रखूंगा । फिर आप क्यों अनावश्यक चिंता करते हो ?”

“फिर आप क्यों मेरे पास आते हैं ? आपको तो सीधे मंत्री महोदय के पास जाना चाहिए ।”

“उसके लिए एकदम अंत में जाएंगे । मेरी मान्यता है, हर चीज को पहले नियमित ढंग से करना चाहिए । इसके अतिरिक्त मेरे रास्ते में घास-फूस भी बाधा स्वरूप नहीं होना चाहिए । सबकी अपनी एक कीमत है । कुछ की कम हो सकती है और कुछ की अधिक । व्यापार में ये सब नहीं देखे जाते । तुम्हारी कीमत क्या है पता नहीं चल पा रहा है ।”

मेरा क्रोध चरम सीमा पर पहुंच चुका था । “मुझे सब मालूम है । ऐसा कुछ भी नहीं जो तुमसे नहीं हो सके । जो भी सरकार बनेगी, उसके आदमी तुम्हारे पीछे होंगे । लेकिन एक बात याद रखना—तुम मुझे किसी भी कीमत पर खरीद नहीं सकोगे”—मैं चिल्लाया । सेक्शन के सभी लोग अपने-अपने काम को छोड़ हम दोनों को देखे जा रहे थे ।

उस समय आरुमुगम नामक एक चपरासी ने सूचना दी कि मेरा अर्जेंट फोन कॉल है—पत्नी बोल रही है ।

फोन में मेरी पत्नी गायत्री । मुंह से कोई शब्द नहीं निकल रहा था, मात्र रोना सुनायी दे रहा था ।

“क्या हुआ गायत्री ! क्या बात है ? क्यों रो रही हो ? उसका रोना बंद नहीं हो रहा था । उसकी बातों से मैं बस इतना समझ सका कि हमारी बच्ची पर कोई संकट आया हुआ है । फिर तो मेरे हाथ-पैर फूल गये । घर कैसे पहुंचा, मैं खुद नहीं जानता । घर पहुंचने पर मैंने देखा तो गायत्री बेहोश पड़ी थी ।

तीन साल की मेरी इकलौती बेटी—सड़क पर खेल रही थी—कार से टकरा गयी—खतरे की स्थिति में अस्पताल में भरती करते समय मेरे साथ परमेश्वरन थे । उन्होंने मुझे कुछ करने नहीं दिया ।

चीख-चीख कर रोने से गायत्री का स्वर बदल चुका था । अब रोने के लिए कुछ भी नहीं है, सोचकर आंसू भी मानो सूख गये थे ।

"बताइए न ! हम लोगों ने क्या पाप किया था ? हमें ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ रहा है । अच्छा होता बेटी के बदले मैं ही चली जाती ।"

"गायत्री ! अपने को संभालो । हमारा क्या बस चलता है ? इस भार को भगवान पर छोड़ने के सिवाय हम और क्या कर सकते हैं ?"

वह घर के अंदर थी । मैं जब सब्जी खरीदने बाहर निकली, तो आंचल पकड़े मेरे पीछे-पीछे चली आयी । बाहर जाते समय सड़क पर बिल्ली के बच्चे को देख उसे पकड़ने के लिए जैसे ही दौड़ी, तभी पीछे से आती कार न उसे धक्के से नीचे गिरा दिया इससे बच्ची को बहुत चोट आ गयी । आप तो सत्य, धर्म, न्याय से चला करते थे—हमारे लिए यही सजा है ? हे भगवन ! हे भगवन !" कहते हुए उसने अपना सिर दीवार पर दे मारा ।

उसे कैसे समझाएं ? बहत्तर घंटे का समय ... तीन दिन । कैसे बिताएं ? हमारे चारों तरफ क्या हुआ यह भी हमलोगों को नहीं मालूम । बेचारे परमेश्वरन ही दिन-रात पीने के पानी से लेकर खाने का सामान सब कुछ लेकर आते थे । यही नहीं बच्ची का खयाल रखते, जब भी डॉक्टर आते उनके पीछे-पीछे जाते, साथ ही हमलोगों का खयाल भी रखते ।

इंटेंसिव केयर यूनिट में दिन-रात बच्ची का इलाज चल रहा था जब भी वार्ड-बॉय बाहर आकर हमें बुलाता, हमारा दिल धक-धक करने लगता—पेट में अजीब-सा भय समा जाता ।

तीन दिन के बाद...

बच्ची आपात स्थिति से निकल आयी । अब किसी प्रकार का कोई भय नहीं । डॉक्टर ने जब दृढ़ स्वर में कहा, तब हमारे पेट में ठंडक-सी पहुंची ।

डॉक्टर ने कहा, "दो महीने के बाद बच्ची को डिसचार्ज कर घर ले जा सकते हैं " और मुझे बिल पकड़ा दिया ।

बिल को देखते ही मुझे चक्कर-सा आ गया । बेंगलूर का बहुत बड़ा अस्पताल । मैं तो इस लायक भी नहीं था कि बरसात के समय सिर छिपाने के लिए भी वहां खड़ा हो सकूं । बच्ची ही सब कुछ है, सोचकर अगर परमेश्वरन इस अस्पताल में आये, तो उनकी भी कोई गलती नहीं ।

चालीस हजार रुपये । ...करीब-करीब मेरी तो सांस ही रुक गयी थी । क्या करूं ? मुझ पर विश्वास करके कौन इतने रुपये देगा ?

परमेश्वरन टिफन कैरियर, फ्लास्क लेकर उधर से आ रहे थे । उन्हें देखकर मुझे तो रोना ही आ गया ।

"क्या हुआ नरेन ? छोटे बच्चों-जैसा क्यों रो रहे हैं ? अब तो सब कुछ ठीक हो गया है ! बच्ची ठीक हो गयी !"

"महोदय ! मैं आपका बहुत आभारी हूं । अगर आप न होते, तो मैं बच्ची को देख ही नहीं पाता । रिश्तेदार भी ऐसे देखभाल नहीं कर पाते ।"

"रिश्तेदार भी क्या ? मुझे ही अपना रिश्तेदार समझ लीजिए न ? मैं तो ऐसा ही सोचता हूं । ऐसे रहते आप मुझे धन्यवाद क्यों देते हैं ? बड़े-बड़े शब्दों का प्रयोग क्यों करते हैं ? आंसू पोंछ लीजिए । वह क्या है ?" उन्होंने पूछा ।

चुपचाप मैंने उन्हें बिल पकड़ा दिया ।

"बिल है क्या ? मैंने उसी समय पैसे दे दिये थे । यह रसीद है । घर चले चलिए ।"—परमेश्वरन ने भावावेश में आये बिना स्वाभाविक ढंग से कहा ।

"क्या ? आपने बिल चुका दिया ? यह सब कैसे ? मैं तो इतने रुपयों के बारे में सोचकर भी नहीं देख सकता था । कहां से आपने इतने रुपयों का इंतजाम किया ?"

"कहीं से भी इंतजाम किया हो, इससे क्या ? रुपये तो चुका दिये हैं न ? बाद में सब बातें बताऊंगा । अभी जानकर क्या करोगे ?"

पीछे से किसी के खड़े होने का आभास हुआ । मुड़कर देखा तो रेड्डी खड़े-खड़े हंस रहे थे । उनके आगे के सोने के दांत चमक रहे थे ।

"क्यों महोदय ! कैसे हैं ? अब बच्ची कैसी है ? लो बेटी !" बिस्कुट का पैकेट ! निकालकर उसे दिया ।

मुझे थोड़ा-थोड़ा समझ में आ रहा था । अब मुझे स्पष्ट समझ में आ गया था कि क्या हुआ होगा । बिस्कुट का पैकेट देने से मैंने इनकार किया ।

"क्यों ! बच्ची को देने से मना क्यों कर रहे हैं ?"

"आपके कहने का अभिप्राय है कि मैंने आपके द्वारा दिये रुपयों से क्यों नहीं मना किया ? यही कहना चाहते हैं ? अब तो आप खुश हैं न ?"

"नरेन ! टेक इट ईजी ! अब क्या हो गया है ? आप पूरी बात जाने बिना शोर क्यों मचा रहे हैं ? कृपा कर मेरी बात मानकर घर चलिए । वहां चलकर बातें कर लेंगे । अस्पताल में शोर मचाकर तमाशा खड़ा मत कीजिए ।" परमेश्वरन ने कहा ।

"महोदय ! आपने ऐसा क्यों किया ? आपको तो मैंने साक्षात परमेश्वर के रूप में अपना रक्षक माना था । अन्यायपूर्वक आपने तो मुझे कीमत लगाकर बेच दिया, बेच दिया महोदय ! अब मैं किसी के सामने मुंह दिखाने लायक नहीं रह गया । आपने मुझे किसी लायक नहीं रखा ।" कहते हुए सिर पीटने लगा ।

परमेश्वरन ने मेरा हाथ थामकर कहा, "कृपया मेरा कहा मान लीजिए । उस दिन रेड्डी को बिना सोचे-बिचारे अंडबंड गालियां दे रहे थे । फोन करने के एकदम बाद आप बेहोश होकर गिर पड़े थे । आपको मालूम नहीं कि यही रेड्डियार आपको घर तक अपनी कार से पहुंचा गये थे । आप जब अपनी पत्नी को ढाढस बंधा रहे थे, तब रेड्डी ने ही आपकी बच्ची को तुरंत अस्पताल ले जाकर जो करना था, सब-कुछ किया । उस दिन अगर रेड्डियार की जान-पहचान न होती, तो बच्ची को बचा पाना मुश्किल था । रेड्डी की सिफारिश के कारण ही बड़े डॉक्टर ने स्वयं इलाज कर बच्ची की रक्षा की है ।"

"आपने मुझे तो किसी तरह बेच ही डाला । अब आप संतुष्ट हैं न रेड्डी ?" मैंने कहा ।

भावशून्य चेहरे से रेड्डी ने मुसकराते कहा,

''उसे तो आप ही बता पाएंगे ।''

''आप तो यही सोचते हैं कि आपने कीमत अदा कर मुझे खरीद लिया है ! यही बात है न ? एक बात ध्यान में रखिएगा । मुझे कीमत देकर कोई खरीद नहीं सकता ।''

''कृपया आप जरा शांति से मेरी बातों पर ध्यान दें ।'' परमेश्वरन ने बीच में ही टोककर कहा—''महोदय ! कुछ मत बताइए । वह जो भी कहना चाहते हैं, कहकर खतम करने दीजिए ।'' फिर हम बात करेंगे ।

''क्या बात करेंगे ? मेरी असमर्थता आपकी कार्य सिद्धि में अनुकूल पड़ गयी ।''

''महोदय ! उसके बारे में बाद में बात करेंगे । आपकी श्रीमतीजी को ही सब विवरणपूर्वक बताने दीजिए"। रेड्डी ने कहा ।

मुझे बात लग गयी, ''क्या कहा ? गायत्री जानती है ? तब तो ऐसा लगता है सब लोगों ने मिलकर षड्यंत्र रचा है ?''

''घर चलिए, विवरणपूर्वक बताऊंगी ।'' गायत्री ने कहा ।

''गायत्री ! तुम भी इन लोगों से मिली हुई हो ! तुम्हारी सहमति से ये सब हुआ ? ऐसा करने के लिए तुम्हारा मन कैसे हुआ ? बेचारी ! तुम क्या करतीं ? तुम्हें अपनी संतान का मोह था, तो मुझ पर अपने आदर्श का पागलपन सवार था । आप लोगों ने कैसे अन्यायपूर्वक मुझे बेच दिया ?''

''महोदय ! आप यह न सोचिए कि आप ही भावुक हो सकते हैं । आप को ही शोर करना आता है । अभी क्या हो गया कि आप इतना शोर मचा रहे हैं ?''

''अब और क्या होना है ? मेरी बच्ची की चोट के दर्द से ज्यादा तो यह हादसा दर्द दे गया । इसकी क्या दवा है !''

''इस सहायता को इतनी उपेक्षा की दृष्टि से क्यों देख रहे हैं ? एक ठेकेदार, व्यापारी का अर्थ यह तो नहीं कि उसमें मानवता नाम की चीज ही नहीं होती, ऐसा आप क्यों सोचते हैं ? मानवता के नाते एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के प्रति किया गया उपकार है, ऐसा क्यों नहीं सोचते ?''

''ओहो ! मानवता ! इसी मानवता को सड़क चलते हर व्यक्ति के प्रति दिखा सकते हैं ? मुझसे काम बनाना था, इसीलिए सहायता करने चले आये । अर्थात सहायता करने का दम भरकर आपने समझ लिया कि कीमत देकर मुझे खरीद लिया है ।''

''कृपया बार-बार एक ही बात को दुहराकर मेरे अच्छे विचारों पर पानी न फेरिए । आपको अपना सिद्धांत बड़ा लग सकता है, लेकिन उसके लिए दूसरों का अपमान न कीजिए । कोई जान-पहचान का हो या फिर कभी किसी की कोई बात पसंद आ गयी हो, तो उन्हीं लोगों की सहायता करता हूं । सड़क पर जानेवाले सभी की सहायता करने के लिए मैंने कोई धर्मशाला खोल नहीं रखा है ।''

''उन सबके लिए ...'' मैंने समाप्त नहीं किया ।

''अब आप नहीं बोलेंगे । आपकी सारी बातें मैंने सुन ली हैं । अब मैं जो कुछ कहूंगा, आप उसे ध्यान से सुनेंगे । मैंने आपसे अपने ठेके के बारे में कुछ करने के लिए कहा था क्या ? उस दिन की बात उसी दिन खतम हो गयी । उसके बाद मैंने आपसे मिलने की चेष्टा

भी नहीं की थी । आपकी अनुपस्थिति में मैं आपकी लड़की को देखने आया था । क्योंकि अगर आपने मुझे देख लिया होता, तो कुछ गड़बड़ी की संभावना होती, इससे डरकर ही मैं आपके सामने नहीं दिखा । चोरों की तरह आपकी लड़की को चुपचाप देखकर चला जाता । पहले तो आपकी श्रीमती से मिलने से डर रहा था । पर परमेश्वरन ने बाद में सभी बातों से उन्हें अवगत कराया कि मैं छिपकर क्यों आता हूं । अपने ही एक संकुचित घेरे में रहकर आप दूसरे लोगों को चोर क्यों समझते हैं ? अब समझ में आ रही है आपकी संकुचित नीच मनोवृत्ति । अगर आपके साथ ऐसी एक दुर्घटना नहीं घटी होती तो मैं आपको रास्ते में लाने का उपाय जानता हूं । खटमल को कुचलने-जैसा आपको कुचलकर रख देता । मेरी शक्ति से आप परिचित हैं । आपकी नोटिंग को अपने हाथ से फाड़कर फेंक देता और बड़ी जगह से अपने अनुकूल लिखवा लेता । अब मैं यह काम कर सकता हूं ।''

मैं बोला नहीं । उनके अपनी बात खतम करने का इंतजार कर रहा था, ''फिर आप पूछ सकते हैं, फिर मैंने ये सब क्यों किया ? यही तो ध्यान देने योग्य बात है सुनिए । आप जैसे-जैसे जोर से शोर मचा रहे थे—उसे सुनकर क्रोधित होने के बदले मैं हंसता ही जा रहा था । आपका क्रोध किस सीमा तक जाता है, देख-देखकर उसका आनंद लेना चाहता था । लेकिन उसी समय दुर्भाग्यवश आपकी बच्ची की दुर्घटना का समाचार मिला । एक तरफ यह समाचार सुनकर आप बेहोश हो गये थे । फिर तो सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो गया । उसी दिन बच्ची को अपनी गोद में बिठाकर आपकी पत्नी का क्रंदन करना अब भी मेरे कानों में गूंज रहा है । ईमानदारी, न्याय के लिए जान देनेवाले इस व्यक्ति के लिए ऐसी सजा क्यों ? हमने क्या पाप किया ? भगवान की आंखें नहीं हैं क्या ? कहकर रुदन कर रही थीं । तब मुझे एक सत्य का आभास हुआ । मैं एक व्यापारी हूं, लेकिन मुझमें मानवता है । मेरे भी बच्चे हैं । मेरे खर्च किये रुपयों से या मेरी जान-पहचान से या फिर डॉक्टर की निपुणता से आपकी बच्ची बच गयी, ऐसी बात नहीं । लेकिन आपकी ईमानदारी, आपकी न्याय नीति से ही वह बच सकी है । आप पूछ सकते हैं कि वह कैसे ? सुनिए—अगर मेरी जान-पहचान एवं धन ही सब कुछ होता तो दस वर्ष पूर्व मैंने लाखों रुपये खर्च किये, यही डॉक्टर और यही अस्पताल । इसी अस्पताल में मेरी पत्नी का इलाज चल रहा था, लेकिन वह अपने दोनों बच्चों को अनाथ बनाकर इस दुनिया से चल बसी । उसे कोई नहीं बचा पाया । ऐसा क्यों हुआ ? अब भी मैं आपके आत्मसम्मान का आदर करता हूं । उसके सामने सिर झुकाता हूं । आपके समान सभी लोग ईमानदार हों, तो हम गलत रास्ते पर या टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर क्यों जाएंगे ?

अंत में एक बात और । इन पैसों को यों ही आपको देना नहीं चाहता । अगर मैं ऐसे देता भी हूं, तो वह आपका और आपके आत्मसम्मान

का अपमान करने-जैसा होगा ।''

यह सब कहते हुए रेड्डी ने अपनी जेब से एक कागज निकाला । जिसमें लिखा था :

''आपको जो रुपये मैंने दिये हैं वह ऋण के रूप में दिये हैं । जब भी आप से हो सके, थोड़ा-थोड़ा करके चुका दीजिएगा । साथ में जन्मे नहीं, फिर भी अपने इस भाई की सहायता को उदारमन से स्वीकार करें ।'' पढ़कर सुनाने के बाद रेड्डी ने बांडपत्र एवं कलम को मेरे हाथ में पकड़ा दिया ।

भारी मन से चुपचाप मैंने उसमें हस्ताक्षर कर दिये ।

''नरेन ! तुम्हें एक बात मालूम है ?'' परमेश्वरन ने पूछा ।

''अब कुछ न कहें—चलिए-चलें ।''

''नहीं रेड्डी ! नरेन को भी मालूम होना चाहिए । नरेन ! एक शब्द भी बिना बदले उस फाइल को वैसे ही उच्चाधिकारी को भेज दिया है ।''

आश्चर्य से मैं जड़ हो गया था, ''तब तो रेड्डी को बहुत नुकसान हुआ होगा ।''

''उसे जाने दीजिए—छोड़िए । भगवान की कृपा से जिंदा रहा, तो बहुत पैसे कमा लेंगे । पैसा ही तो है । मनुष्य को पा सकना अत्यंत कठिन है ।''

''रेड्डी ने उस कांट्रेक्ट के टेंडर को वापस ले लिया नरेन !''

''ऐसी बात है !'' मैंने आश्चर्यपूर्वक उसे देखा ।

''जी हां ! उसके बाद भले ही मैं अपनी सामर्थ्य से उस ठेके को ले भी लूं, वह आपकी ही कृपा से हुआ समझकर लोग आश्चर्यचकित हो आपके बारे में ऐसी-वैसी बातें न करें, इसीलिए मैंने उसे वापस ले लिया ।''

मैं अपनी उमड़ती रुलाई को रोक नहीं पाया । रेड्डी को करबद्ध नमस्कार किया ।

''आप महान हैं । ऐसा कहकर मुझे और छोटा न बनाइए ।''

''मिस्टर रेड्डी ! एक और उपकार कर सकते हैं ? अपनी कार से बच्ची एवं हम लोगों को घर पहुंचा दीजिए''—मैंने कहा ।

''उसमें क्या है ? छोड़ दूंगा ।'' रेड्डी ने बच्ची को संभाला । परमेश्वरन ने कपड़े तथा अन्य सामान को उठा लिया । गायत्री ने मेरा अनुगमन किया ।

टी. एस. वेंकटरमन
सी-२९/११, डी. आर. डी. ओ.
रेजिडेंशियल कांपलैक्स,
सी. वी. रमन नगर (पोस्ट),
बंगलौर-५६००९३

(अनुवाद : डॉ. वासवदत्ता पाण्डेय)

सबसे लंबी हड्डी

मानव शरीर में जांघ की हड्डी— फीमर, शरीर की सबसे लंबी हड्डी मानी गयी है, जो पूरे अस्थि-समूह का २८ प्रतिशत होती है । एक सामान्य व्यक्ति में इस हड्डी की लंबाई लगभग ५० सेंटीमीटर होती है । जरमनी के कांटेस्टाइन नामक व्यक्ति में इसकी लंबाई ७६ सें.मी. थी ।

— संजय शर्मा

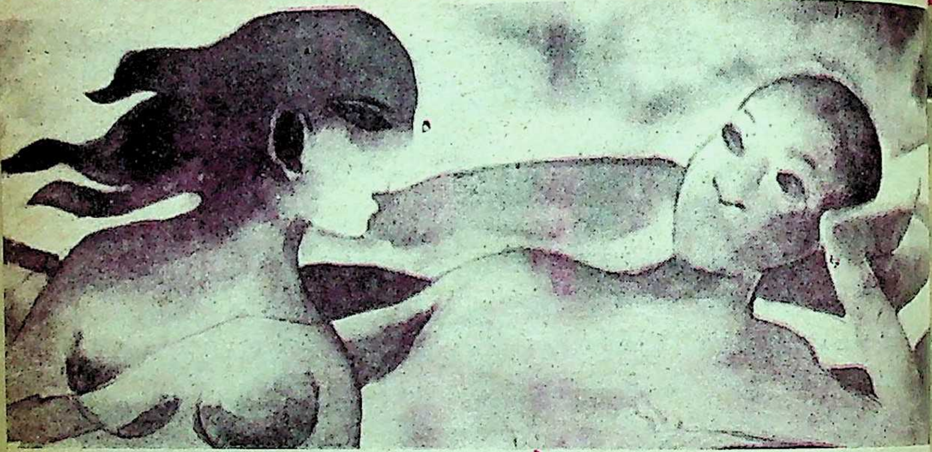

नये मानव और नये विश्व की कल्पना करें

● आचार्य महाप्रज्ञ

बिंदु और सिंधु का संबंध बहुत पुराना है । पिंड और ब्रह्मांड का संबंध भी दर्शन जगत में प्रचलित रहा है । दार्शनिक भाषा को छोड़ें, तो बहुत सीधा शब्द है मानव और विश्व । विश्व में केवल एक मानव नहीं है, मानव भी है, प्राणीजगत और जड़जगत भी है । इन सबका समुच्चय विश्व है ।

आंतरिक संबंध

प्रत्येक मानव का संबंध विश्व के साथ है । एक मानव को समझना है, तो पूरे विश्व को समझना जरूरी है और पूरे विश्व की व्याख्या करनी है, तो मानव को समझना जरूरी है । इनमें इतना आंतरिक संबंध और अंतःक्रिया है कि एक को छोड़कर हम दूसरे की व्याख्या नहीं कर सकते । परमाणु की व्याख्या करनी है, उसे समझना है, तो पूरे विश्व को समझना जरूरी है । महावीर ने कहा था —

'जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ । जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ ।'

जो एक को जानता है वह सबको जानता है और जो सबको जानता है, वह एक को जानता है । सबको जाने बिना एक को जाना नहीं जा सकता । बाहर से सब पृथक-पृथक प्रतीत होते हैं, किंतु अंतर्जगत में सब परस्पर जुड़े हुए हैं । मेरे हाथ में एक कपड़ा है । यह कपड़ा इतना छोटा है, किंतु पूरे विश्व के साथ जुड़ा हुआ है । इसके साथ एक आकाश प्रदेश जुड़ा हुआ है, उससे दूसरा और फिर तीसरा जुड़ा हुआ है ।

एक पूरी श्रृंखला है हमारे जुड़ाव की । इस कपड़े में कंपन होता है — इसका मतलब पूरे विश्व में कंपन होता है ।

समीचीन व्याख्या

दर्शन जगत में दो विचारधाराएं चलीं — अद्वैत और द्वैत की । द्वैत ने माना — दो तत्व हैं — चेतन और अचेतन । जड़ जगत भी स्वतंत्र है और चेतन जगत भी स्वतंत्र है । अद्वैतवाद ने स्वीकार किया — एक ही जगत है चेतन । जड़ तत्व का अस्तित्व नहीं है । वस्तुतः द्वैत और अद्वैत को पृथक नहीं किया जा सकता । अनेकांतवाद ने दोनों को एक साथ देखा है, इसीलिए मानव की समीचीन व्याख्या हुई है, विश्व की समीचीन व्याख्या हुई है । हम अपनी सुविधा के लिए, मानव और विश्व को समीचीन बनाने के लिए, आचार और व्यवहार को समीचीन बनाने के लिए मानव की व्याख्या करें, तो उसका अर्थ होगा वैयक्तिक चेतना का विकास । विश्व की व्याख्या करें, तो उसका अर्थ होगा— सामुदायिक चेतना का विकास ।

चेतना के दो आयाम

प्रत्येक मनुष्य की चेतना को दो आयाम चाहिए । अणुव्रत वैयक्तिक चेतना के विकास का सूत्र है । जब तक वैयक्तिक चेतना का विकास नहीं होता है, तब तक सामुदायिक चेतना के विकास की पृष्ठभूमि में छलना-प्रवंचना चलती है, धोखा चलता है, अनेक समस्याएं पैदा होती हैं ।

राजनीतिक प्रणालियों ने समाजवाद और साम्यवाद के विकास का प्रयास किया । भावना गलत नहीं थी, बहुत उदात्त और करुणापूर्ण थी, किंतु एक बात को भुला दिया । सामुदायिक विकास की चेतना का प्रयत्न किया, किंतु उसकी पृष्ठभूमि में जो वैयक्तिक चेतना है, उसको भुला दिया । परिणाम यह हुआ — जो पवित्रता आनी चाहिए थी, वह नहीं आयी । छलना पनपती रही और उस छलना ने सामुदायिक चेतना को भी ग्रस लिया ।

अणुव्रत की आचार संहिता

वैयक्तिक चेतना का विकास बहुत आवश्यक है । अणुव्रत की आचार संहिता, वैयक्तिक चेतना के विकास की आचार संहिता है । कहा जाता है — अणुव्रत का प्रयत्न सामाजिक चेतना को जगाने का प्रयत्न नहीं है । पश्चिम की ओर से बहुत बार यह स्वर आता है कि हम लोग सामाजिक दिशा में काम कर रहे हैं और आप लोग वैयक्तिक दिशा में काम कर रहे हैं । इस तरह एक-एक व्यक्ति को कब तक ठीक किया जा सकेगा ? पांच-छह अरब आदमी हैं दुनिया में । सामुदायिक चेतना जाग जाए, तो पूरा समाज एक झटके में ठीक हो जाएगा । कल्पना बहुत अच्छी है किंतु जब तक वैयक्तिक चेतना की पवित्रता का आधार नहीं मिलेगा, समाज-चेतना जग नहीं पाएगी ।

समाज-चेतना का परिणाम

राजा ने मंत्री से कहा — 'एक आदेश प्रसारित करो — राज्य का प्रत्येक नागरिक आज रात्रि में एक-एक लोटा दूध खाली तालाब में डाले । प्रातःकाल हम तालाब को लबालब दूध से भरा हुआ देखना चाहते हैं ।' मंत्री ने राजाज्ञा प्रसारित कर दी । प्रातः राजा तालाब देखने गया । तालाब पूरा भरा था, दूध से नहीं, पानी से । सबके मन में एक ही बात आयी — 'इतने लोग दूध डालेंगे, मैं एक लोटा पानी डाल

दूंगा तो क्या फर्क पड़ेगा । इतने दूध में एक लोटा पानी का क्या अस्तित्व ? वह दूध में मिल जाएगा ।' एक ने सोचा, दूसरे ने सोचा, तीसरे ने सोचा और सबने यही सोचा, वैसा ही किया । परिणाम था — तालाब दूध के स्थान पर पानी से भर गया ।

वैयक्तिक चेतना जिस धरातल पर, जिस स्तर पर काम कर रही थी, उस स्तर का चिंतन यही था — एक लोटा पानी इतने दूध में चल जायेगा । जिस स्तर की चेतना होती है, चिंतन भी उसी स्तर का होता है ।

कहा जाता है — सुभोग नाम का चक्रवर्ती समुद्र के ऊपर से जा रहा था । उसके विमान को सोलह हजार देवता उठाये हुए ले जा रहे थे । एक देवता के मन में आया — 'इतने सारे लोग उठाये हुए हैं, एक मैं छोड़ दूं, तो क्या फर्क पड़ेगा ?' दूसरे ने भी यही सोचा, तीसरे ने भी यही सोचा । सामुदायिक चेतना का ऐसा जागरण हुआ कि सोलह हजार देवताओं ने यही सोचा और सबने एक साथ हाथ खींच लिया । विमान समुद्र में गिर गया ।

प्रत्येक मनुष्य की चेतना को दो आयाम चाहिए । अणुव्रत वैयक्तिक चेतना के विकास का सूत्र है । जब तक वैयक्तिक चेतना का विकास नहीं होता है, तब तक सामुदायिक चेतना के विकास की पृष्ठभूमि में छलना-प्रवंचना चलती है, धोखा चलता है, अनेक समस्याएं पैदा होती हैं ।

आधारशिला है अणुव्रत

जब तक वैयक्तिक चेतना का आधार सामुदायिक चेतना को नहीं मिलता है, तब तक कल्पना नहीं की जा सकती — विश्व अच्छा बनेगा या मानव अच्छा बनेगा । अणुव्रत का आधार सूत्र रहा — वैयक्तिक चेतना को पवित्र बनाओ, उसका आधार ऐसा निर्मित करो, जिस पर सामुदायिक चेतना का प्रासाद खड़ा किया जा सके । प्रासाद बड़ा और मजबूत बनाना है, मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बनानी है, तो उसका आधार, उसकी नींव मजबूत बनानी होगी । मजबूत आधार के बिना कोरा प्रासाद खड़ा किया जाए, तो प्रासाद खड़ा नहीं होगा और खड़ा भी हो जाएगा, तो टिकेगा नहीं । अणुव्रत एक आधारशिला है, जिस पर सामुदायिकता का विकास किया जा सकता है ।

सामुदायिकता का आधार

जिस समाज में अहिंसा की पृष्ठभूमि नहीं है, वह समाज चल नहीं सकता । हम समाज के इतिहास को देखें । जब समाज का संगठन बना था, तब अहिंसा की पृष्ठभूमि पर ही बना था । आदमी जंगल में रहता था । आदिम युग में उसका जीवन जंगली था । एक जोड़ा रहता, छोटा परिवार रहता, स्वतंत्र रहता । किंतु जब जंगल छोड़ा, गांव बसाये, नगर बसाये, तो एक

समझौता हुआ । उस समझौते का नाम था परस्परता । 'तुम मुझे कष्ट नहीं दोगे, मैं तुम्हें कष्ट नहीं दूंगा । हम सब मिलकर रहेंगे, सहयोग के साथ रहेंगे, एक-दूसरे को बाधा नहीं पहुंचाएंगे ।' इस समझौते के आधार पर समाज की रचना हुई ।

वैयक्तिक चेतना का आधार

सामुदायिक चेतना का आधार है परस्परता और वैयक्तिक चेतना का आधार है संयम । ये दो ही तत्व हैं, जिन पर हमारा ध्यान केंद्रित होना चाहिए । वैयक्तिक चेतना को पवित्र बनाना है, तो संयम के अलावा और कोई विकल्प नहीं है । अपनी इच्छा का संयम, अपनी वृत्ति का संयम, मन का संयम, इंद्रियों का संयम, शरीर का संयम, आहार का संयम । यह संयम हमारी पवित्रता है । यदि संयम के आधार पर सामुदायिक चेतना का विकास किया जाए, तो परस्परता का विकास होगा । जहां संयम के अभाव में परस्परता का प्रयत्न होता है, वहां समाज टूट जाता है । दो भाई हैं । संयम नहीं है तो एक भाई सोचेगा — 'अच्छा अवसर है । भाई तो आ नहीं रहा है । जितना हजम कर सकूं, अपने खाते में कर लूं ।' अधिकारी सोचेगा — 'कोई दूसरा देखनेवाला नहीं है । धन सरकारी है, जनता का है, इसे अपना बनाया जा सकता है ।' इसी चिंतन के आधार पर गबन होता है, भ्रष्टाचार होता है, हेराफेरी होती है । कभी शेयर मार्केट में, कभी बैंकों में और कभी सरकारी खजाने में घोटाले हो जाते हैं । इसका कारण क्या है ? एक ही कारण है कि पवित्रता नहीं है, वैयक्तिक चेतना का विकास नहीं है । वैयक्तिक चेतना का विकास किये बिना, संयम का विकास किये बिना, समाज कभी स्वस्थ नहीं रह सकता ।

दूसरा प्रस्थान

प्रश्न यह है — वैयक्तिक चेतना कैसे बने, उसका विकास कैसे हो ? संयम कैसे आये ? इच्छा बहुत बलवती है, उसका निरोध कैसे किया जाए ? इसके लिए हमें दूसरे प्रस्थान पर जाना होगा । संयम पहला प्रस्थान है और अभ्यास दूसरा प्रस्थान । अभ्यास के बिना संयम नहीं सधेगा, पवित्रता नहीं आएगी । संयम को पुष्ट करने के लिए अभ्यास करना होगा । संयम को दुर्बल बनानेवाली हैं मन और वृत्तियों की चंचलता । हम ऐसा अभ्यास करें, जिससे मन की चंचलता कम हो, शरीर और वाणी की चंचलता भी अनावश्यक न हो, वृत्तियों का निरोध किया जा सके । प्रेक्षाध्यान की साधना व्यक्ति को इस भूमिका पर ले जाती है, संयम को पुष्ट करती है । प्रेक्षाध्यान की साधना चित्त की निर्मलता के लिए करें या संयम के लिए, एक ही बात है । जैसे-जैसे चित्त की निर्मलता बढ़ेगी, संयम बढ़ेगा । जैसे-जैसे संयम बढ़ेगा, चित्त की निर्मलता बढ़ेगी ।

गेहूं और रोटी

संयम को पुष्ट या परिपक्क करने का अभ्यास कच्चे माल को पक्का बनाने का उपक्रम है, गेहूं से रोटी में बदलने का उपक्रम है । इस दृष्टि से

अणुव्रत को हम गेहूं कह सकते हैं । उसे रोटी बनाये बिना कैसे खाएंगे ?

किसे परोसें ?

जब तक रोटी न बने, गेहूं काम में नहीं आता । जब तक कपड़ा न बने, रुई भी काम की नहीं होती । गेहूं से रोटी बनाने की एक प्रक्रिया है । बिनाई, पिसाई, गुंथाई, फिर रोटी । अणुव्रत मूल आधार है संयम का । उसे परिपक्व या उपयोगी बनाने की जो प्रक्रिया है, साधना है, वह है प्रेक्षाध्यान । रोटी बन जाने के बाद फिर परोसने की बात आती है । प्रश्न है — 'किसको परोसें ? कुछ लोगों को ही क्यों परोसें ? खुला निमंत्रण क्यों न दें ?' सबको निमंत्रित कर लिया, इतना व्यापक रूप दे दिया कि कोई भी आये । विद्यालय ही वह स्थान है, जहां हजारों की संख्या में छात्र पढ़ते हैं । छात्रों के जीवन विकास की दृष्टि से जीवन विज्ञान को प्रस्तुत किया ।

राजनीतिक प्रणालियों ने समाजवाद और साम्यवाद के विकास का प्रयास किया । भावना गलत नहीं थी, बहुत उदात्त और करुणापूर्ण थी, किंतु एक बात को भुला दिया । सामुदायिक विकास की चेतना का प्रयत्न किया, किंतु उसकी पृष्ठभूमि में जो वैयक्तिक चेतना है, उसको भुला दिया । परिणाम यह हुआ — जो पवित्रता आनी चाहिए थी, वह नहीं आयी । छलना पनपती रही और उस छलना ने सामुदायिक चेतना को भी ग्रस लिया ।

वैयक्तिक चेतना के सूत्र

जब आधारभूमि मजबूत बन जाती है, नींव और खंभे मजबूत बन जाते हैं, तब प्रासाद को खड़ा किया जा सकता है । जब वैयक्तिक चेतन पवित्र बनती है, तब सामुदायिक चेतना के विकास की बात आती है ।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान — ये प्रारंभ में वैयक्तिक चेतना के सूत्र हैं, किंतु बाद में सामुदायिक चेतना के सूत्र बन जाते हैं । ये तीनों सध जाएंगे, तो संवेदनशीलता जागेगी, करुणा जागेगी और परस्परता का सूत्र मजबूत बन जाएगा । हमारा परस्पर का व्यवहार ऋजुतापूर्ण और विनम्रतापूर्ण बन जाएगा । जिनका व्यवहार बड़ा विनम्र होता है, उनमें सामुदायिक चेतना जागृत रहती है । सामुदायिक चेतना के जागरण के बिना न समाजवाद सफल हो सकता है, न साम्यवाद सफल हो सकता है ।

विनम्र व्यवहार का निदर्शन

पश्चिमी विचारक ट्रिपलिंग बहुत सधे हुए व्यक्ति थे । समाचार-पत्र में छपा — 'ट्रिपलिंग की मृत्यु हो गयी' । ट्रिपलिंग ने पढ़ा — मेरी मृत्यु का समाचार छपा है । संपादक को पत्र लिखा — 'आप बड़े प्रामाणिक व्यक्ति हैं ।

आपका समाचारपत्र बहुत प्रतिष्ठित है । पूरी छानबीन के बाद ही किसी समाचार को प्रकाशित करता है । आपको सही सूचना मिली है, तभी आपने ट्रिपलिंग की मृत्यु का समाचार छापा है । अब कृपया अपनी ग्राहक सूची से मेरा नाम काट दें, क्योंकि अब मैं इस दुनिया में नहीं हूं ।' पत्र पढ़कर संपादक को बड़ी ग्लानि हुई । पत्र लिखनेवाला कितना विनम्र था । गालियां नहीं बकीं, आक्रोश नहीं जताया, मुकदमा दायर करने की धमकी नहीं दी ।

विश्वमानव

यह है वैयक्तिक चेतना की पवित्रता पर होनेवाला विनम्र व्यवहार । जिस व्यक्ति में यह व्यवहार है, वह सामुदायिक चेतना को भी निश्चित रूप से प्रभावित करेगा । व्यवहार में ही विश्व है । एक में व्यवहार नहीं होता । जब एक से दो हुए तब हम विश्व के साथ जुड़ गये । जहां व्यक्ति की चर्चा करते हैं, वहां मानव और विश्व — यह रूप बनेगा और जहां सामुदायिक चेतना की चर्चा हो, वहां हमारा तार्किक आधार बदल जाएगा, भाषा का आकार बदल जाएगा, और वह होगा विश्वमानव । विश्व पहले आ जाएगा और मानव बाद में । विश्वमानव हमारी सामुदायिक चेतना है । इस भूमिका पर कोई भी व्यक्ति अपने आपको पहले नहीं देखेगा । वह पहले विश्व को देखेगा, फिर अपने आपको देखेगा । किंतु यह स्पष्ट है — यह हमारी परस्परता की भूमिका बन सकती है, व्यवस्था की भूमिका बन सकती है, किसी समाज या राजनीतिक प्रणाली की भूमिका बन सकती है, किंतु हमारी पवित्रता की भूमिका नहीं बन सकती ।

दूसरी भूल

विश्वमानव के आधार पर होनेवाली प्रणाली तभी पवित्र रहेगी, जब उसकी पृष्ठभूमि में मानवीय चेतना या वैयक्तिक चेतना की भूमिका पवित्र बनी हुई है । इतिहास को देखें । जितनी को-ऑपरेटिव सोसायटियां हुई हैं, उनका रेकॉर्ड अच्छा नहीं रहा है । वैयक्तिकता के पुट के बिना सामुदायिकता कभी चलती नहीं है । इसीलिए जहां साम्यवादी प्रणाली थी, वहां भी व्यक्तिगत स्वामित्व की स्वीकृति देनी ही पड़ी । सोवियत संघ ने अपने अंतिम दिनों में दी और चीन को भी देनी पड़ी । आंशिक ही सही, पर इस सच्चाई को स्वीकार करना पड़ा — 'वैयक्तिक स्वामित्व की स्वीकृति के बिना कम्यून की बात या सामुदायिक राष्ट्रीय संग्रह की बात आगे नहीं बढ़ती ।' यह अनुभव किया गया — जो पूंजीवादी राष्ट्र थे, वे आर्थिक क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ गये और समाजवादी पिछड़ गये । एक भूल हुई — वैयक्तिकता को सर्वथा नकार दिया गया और केवल सामुदायिकता को स्वीकार कर लिया गया । अब दूसरी भूल होने जा रही है — वैयक्तिकता को पवित्रता की भूमिका न देकर केवल उपभोक्ता की भूमिका पर विकसित किया जा रहा है । पूंजीवाद भी कितना टिक पायेगा, कहा नहीं जा सकता । इसकी भूमि भी लड़खड़ाती प्रतीत हो रही है । यह भी उतनी ही खतरनाक है । आप यह सोच सकते हैं — 'यह कैसी बातें कही जा रही हैं कि वैयक्तिकता की भूमि को भी खतरा है और सामुदायिकता की भूमि को भी खतरा है, फिर आखिर जाएं कहां ? गति क्या होगी ?' यह बात बिना सोचे नहीं कही जा रही है । हमारे

पास उसका आधार है और वह है अनेकांत ।

तीसरी प्रजाति

अनेकांत ने जो दर्शन दिया, वह विचित्र दर्शन है । उसे तीसरी प्रजाति कह सकते हैं । दर्शन की भाषा है — 'न नित्यवाद, न अनित्यवाद, किंतु तीसरी प्रजाति — नित्यानित्यवाद । न वैयक्तिकता, न सामुदायिकता । किंतु वैयक्तिकता+सामुदायिकता — वैयक्तिकतायुक्त सामुदायिकता और सामुदायिकतायुक्त वैयक्तिकता ।' इस आधार पर हम नये समाज की रचना की बात सोचें, नये समाज की रचना का संकल्प करें, तो मुझे लगता है — हम सच्चाई के बहुत निकट पहुंच जाएंगे और एक दिन सच्चाई तक भी पहुंच जाएंगे ।

अनेकांत की सच्चाई

विद्यार्थी स्कूल से लौटकर घर आया । वह बड़ा प्रसन्न था । मां ने प्रसन्नता का कारण पूछा । वह बोला — "मां आज स्कूल में मुझे पुरस्कार मिला है ।' 'किस बात का पुरस्कार ?' 'मास्टरजी ने परीक्षा लेते हुए पूछा — 'गाय के कितने पैर होते हैं ?' सब इस सवाल पर अटक गये । सबने कहा — 'दो ।' मैंने कहा — 'तीन'।" मास्टरजी बोले — "तुम्हारा उत्तर पूरा सही तो नहीं है, किंतु तुम सच्चाई के निकट आ गये हो, इसलिए तुम्हें पुरस्कार मिलेगा' ।

हमें भी पहले तीन तक पहुंचकर, फिर चार तक पहुंचना है । यह सच्चाई अनेकांत की सच्चाई होगी । न साम्यवाद और न पूंजीवाद, न वैयक्तिकता और न सामुदायिकता — दोनों को मिलायें, दोनों की अच्छाइयों को एकत्र करें, एक तीसरी प्रजाति बन जाएगी । न अस्तित्व और न नास्तित्व, किंतु अस्तित्वनास्तित्व — यह तीसरा प्रकल्प है । आज पूरे विश्व को एक नये प्रकल्प की खोज है ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ विचारक दत्तोपंत ठेंगड़ी का एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने लिखा — 'अनेकांत पर कुछ कहा जाए, लिखा जाए । क्योंकि अब विश्व की जो व्यवस्था होगी, उसका आधार अनेकांत ही बन सकता है ।' बड़ी उदारता के साथ उन्होंने इस बात की चर्चा की । हम किसी एकांगी दृष्टिकोण में न जाएं । न इधर झुकें, न उधर झुकें । किंतु अनेकांत के द्वारा सबको समन्वित कर नये मानव और नये विश्व की कल्पना करें । नया मानव और नया विश्व ही वर्तमान समस्या का समाधान बन सकता है ।

(प्रस्तुति : ललित गर्ग)

— अ.भा. अणुव्रत समिति
२१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००२

जमीने चमन गुल खिलाती है क्या-क्या
बदलता है रंग आसमां कैसे-कैसे
—आतिश

दोस्त होते तो मुझे मुंह पे बुरा कह देते
बज़्म में सबने किया मेरा गिला मेरे बाद
—शहजाद अहमद

गोष्ठी

अवध बिहारी शरण, सीतामढ़ी

● वेदों के प्रणेता कौन थे ? पुराणों की रचना क्या वेदव्यास ने की थी ?

□ 'वेद' शब्द का प्रयोग पूर्व काल में संपूर्ण वैदिक वांगमय के अर्थ में होता था जिसमें संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद सभी सम्मिलित थे । इस वैदिक ज्ञान का साक्षात्कार ऋषियों को हुआ था । जिन व्यक्तियों ने अपने योग और तपोबल से इस ज्ञान को प्राप्त किया वे ऋषि कहलाये । इनमें पुरुष तथा स्त्रियां दोनों थे । परंतु चारों वेदों का सम्यक विभाजन और संपादन वेदव्यास ने किया । और पुराणसंहिता के रचयिता, परंपरा के अनुसार, महर्षि वेदव्यास थे । उन्होंने लोमहर्षण नामक अपने सूतजातीय शिष्य को यह संहिता सिखा दी । लोमहर्षण के शिष्य हुए और उनके भी शिष्य हुए । संभवतः सी शिष्य परंपरा ने अठारह पुराणों की रचना की, और यह भी हो सकता है कि वेदव्यास द्वारा स्तुत पुराणसंहिता के अठारह विभाग रहे हों, सके आधार पर इन शिष्यों ने अलग-अलग राण निर्मित किये । (स्रोत : हिंदू धर्मकोश)

य कुमार कर्ण, औरंगाबाद

● सौरमंडल का दसवां ग्रह कौन-सा है ?

□ प्लूटो को दसवां ग्रह कह सकते हैं । यह सूर्य से ५ अरब ९० करोड़ किलोमीटर दूर है ।

बुद्धदेव तिवारी, सीवान; जयप्रकाश मिश्र, सीतामढ़ी

● संगीत में राग कितने प्रकार के होते हैं ?

□ कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीत में लगभग ६०० राग हैं, इन दोनों में अनेक रागों के भाव तो समान हैं किंतु उनके नाम भिन्न हैं । (स्रोत : 'इनक्विजटिव', सिद्धार्थ वसु)

प्रेम शंकर शर्मा, फीरोजाबाद

● गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि राजापुर (बांदा) है या सोरों ?

□ विद्वानों में अभी तक इस संबंध में मतभेद बना हुआ है । एक वर्ग उनकी जन्मभूमि सोरों (सूकरक्षेत्र) मानता है और दूसरा राजापुर, तथा दोनों के अपने-अपने तर्क हैं । किंतु संतोषजनक प्रमाण किसी ने अब तक प्रस्तुत नहीं किया है । 'हिंदू धर्मकोश' में डॉ. राजबली पांडेय ने भी संभवतः इसी कारण उनके जन्म स्थान के बारे में कोई चर्चा नहीं की है ।

रजनीश मंगा, करनाल

● महात्मा गांधी-आंबेडकर समझौता क्या था ?

□ हिंदुओं और मुसलमानों को आपस में विभाजित करने के साथ ही हिंदुओं को भी विभाजित करने की अपनी कुटिल योजना के अंतर्गत ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैमृजे मैक्डॉनल्ड ने अगस्त, १९३२ में घोषित किया कि भारतीय विधायिका चुनावों में अनुसूचित जातियों के प्रतिनिधियों का चुनाव उसी जाति के लोग करेंगे । उनकी इस चाल को निरस्त करने के लिए २६ सितम्बर, १९३२ को गांधीजी ने आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया । इस पर सवर्णों तथा अनुसूचित जाति के नेताओं ने बीच में पड़कर पुणे में एक समझौता कर लिया, जिसे

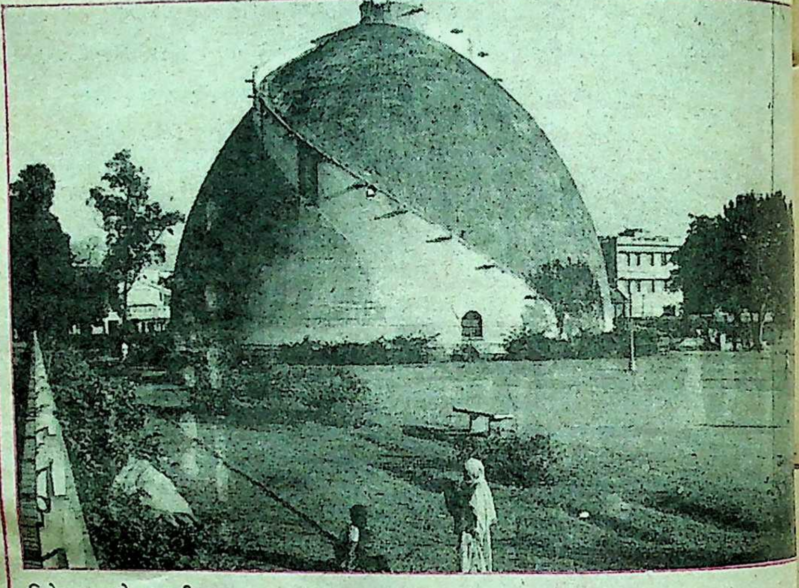

डिगेश्वर महतो, हजारीबाग

● पटना स्थित गोलघर का निर्माण कब और किस उद्देश्य से हुआ था ?

☐ इसका निर्माण लगभग २०० वर्ष पूर्व हुआ था । दुर्भिक्ष से जनता की रक्षा के उद्देश्य से इसमें अनाज भंडारित किया जाता था । इसक निर्माण अंगरेज शासनकाल में हुआ था । य २५ मीटर ऊंचा है ।

पुणे समझौता या गांधी-आंबेडकर समझौता कहते हैं । इसके अंतर्गत अनुसूचित जातियों के लिए सीटें तो विधायिका में सुरक्षित कर दी गयीं, किंतु चुनाव में सभी हिंदू एक साथ मिलकर वोट देते थे ।

अमरनाथ मेहरोत्रा, मुजफ्फरपुर

● 'पासपोर्ट' और 'वीजा' में क्या अंतर है ?

☐ 'पासपोर्ट' हमें अपनी सरकार देती है, जो देश से (पोर्ट से) बाहर जाने की अनुमति है और 'वीजा' उस देश की सरकार देती है, जहां हम जाना चाहते हैं । यह उस सरकार की अनुमति होती है ।

कामाख्या प्रसाद गौड़, नौगांव (असम)

● डी-डे क्या है ?

☐ डे ऑव डेलिवरेंस— जरमनी पर विज बाद मित्रराष्ट्रों ने मई, १९४५ में बरलिन के पतन पर मनाया था । किंतु 'डी-डे' की शुरुआत ६ जून, १९४४ को ही हो गयी थी जब जनरल आइज़नहोवर के नेतृत्व में नि युद्ध लड़ने के लिए नारमंडी (फ्रांस) पर ह किया था । इस प्रकार युद्ध से नजात (डेलिवरेंस) मिली थी ।

राधाकृष्ण मिश्र, लोहरदगा

● द्रौपदी को 'पांचाली' क्यों कहते हैं ?

☐ महाभारत में पंचाल देश का वर्णन अ

है। इसके राजा द्रुपद थे और उनकी पुत्री द्रौपदी। पंचाल की होने के कारण उसे पांचाली कहते हैं।

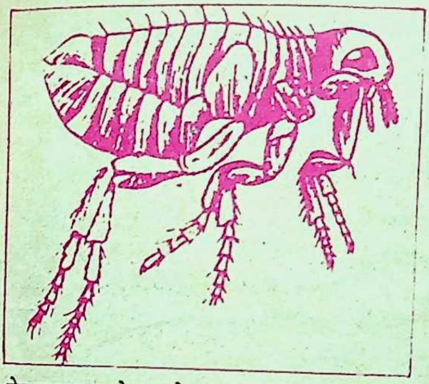

केदारनाथ सक्सेना, भोपाल

● प्लेग कब से होता आया है ?

☐ प्लेग एक पुरातन रोग है। इसकी पहली चर्चा ईसा पूर्व ४० में लीबिया में हुई थी। ईसवी सन २५१-२६० में यह रोमन साम्राज्य में देखने को मिला। सन ५३१-५८० में भूमध्यसागर क्षेत्र की आधी आबादी इससे प्रभावित हुई थी। एशिया में सन १३३३ में प्लेग फैला। यूरोप में सन १३४७ में प्लेग से तिहाई आबादी के लोग (२ करोड़ ५० लाख) मर गये थे। पेरिस में ५० हजार लोग सन १४३७ में मरे। वियना में १ लाख लोग सन १६७९ में मरे थे। इसी तरह सन १७०९ में प्रशिया में ३ लाख लोग कालकवलित हो गये थे। मारसिली में १७२० में ४८,००० मौतें हुईं। वर्तमान शती के पिछले दो दशकों में लातीनी अमरीका और अफरीका में भी यह रोग फैला था। भारत में गत वर्ष के अंत में १,५०८ रोगी पहचाने गये, और ५० मौतें दर्ज की गयीं।

के.एस. कार्की, बनबसा (नैनीताल)

● यूरेशिया किसे कहते हैं ?

☐ यूरोप तथा एशिया की सम्मिलित भूमि को यूरेशिया कहते हैं। भौगोलिक दृष्टि से यूरोप को एशिया महाद्वीप का पेनिनशुला माना जाता है जिसे उत्तर से दक्षिण तक फैली २००० किलोमीटर लंबी यूरल पर्वत श्रृंखला विभाजित करती है।

सुरेन्द्र झा, बरौनी

● भारत में कितने सिद्धपीठ हैं ?

☐ कुल ५१ सिद्धपीठ बताये जाते हैं।

प्रभात रंजन, नयी दिल्ली

● आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने स्त्री को श्रेष्ठ रत्न किस पुस्तक में माना है ?

☐ 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद' में।

मनोज कुमार श्रीवास्तव, मुजफ्फरपुर

● ट्रेन में वैक्युम का क्या महत्त्व है ?

☐ इंजन की ब्रेक प्रणाली में एक सिलेंडर होता है जिसमें ड्राइवर द्वारा ५० सेंटिमीटर का वैक्युम सदा बनाये रखा जाता है ताकि इसके अंदर का पिस्टन नीचे रहे। इस सिलेंडर को पाइपों के माध्यम से डिब्बों के पहियों से जोड़ दिया जाता है। जंजीर खींचने पर सिलेंडर का क्लैपर वाल्व खुल जाता है और बाहर की हवा पिस्टन के नीचे से आकर उसे ऊपर उठा देती है जिससे पहियों के ब्रेक शू फैल जाते हैं जो पहियों को जाम कर देते हैं।

चलते-चलते

एक जरमन कहावत : भगवान और बस के सामने सब समान हैं।

—सूत्रधार

गढ़वाल के सांस्कारिक गीतों में पुष्प

कामदेव का प्रिय—बुरांस

• डॉ. मंजू बलोदी

सृष्टि के आरंभ से ही प्रकृति मनुष्य की चिरसंगिनी बनकर उसे विविध रूपों में आकर्षित करती रही है। गढ़वाल हिमालय की सुंदर, रमणीय वसुंधरा के अंक में स्थित है। यहां के नदी-नद, गिरि-गह्वर, निर्झर, वन-वृक्ष-लताएं, सुंदर पुष्प-राजियां, धुंधली, कफ्फू, मुनाल पक्षी एवं विविध पशु मिल-जुलकर गीतियों का सृजन करते हैं। प्रकृति-प्रेमी गढ़वाली युवक-युवतियां, बाल एवं वृद्ध सभी रंगमयी, कलामयी इस नैसर्गिक धरा पर युग-युग से नृत्य-गीत में डूबे रहे हैं। नृत्य-गीतमयी इस धरती पर यद्यपि जीवन अति दुष्कर है तथापि नव-रमणीय प्रकृति के नृत्य-गीत के संग ताल-लय एवं स्वर मिलाकर यहां का मानव सदैव उमंग एवं उल्लासमय जीवन व्यतीत करता रहा है।

नृत्य एवं गीतमयी वसुंधरा

गढ़वाल हिमालय की वसुंधरा नृत्य एवं गीतमयी है। गीत एवं नृत्य यहां के सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को सर्वात्मना सूचित करते हैं। नैसर्गिक सुषमा व नित नवता धारण करनेवाली इस देवभूमि के कण-कण में संगीत झंकृत होता है। यही नहीं कलापूर्ण प्रकृति के सुरम्य अंक में क्रीड़ा करते-करते गढ़-मानव कला का इतना अभ्यस्त हो गया है कि नृत्य एवं गीत-जैसी सुंदर कलाएं उसके जीवन की अभिन्न अंग बन गयी है।

प्रकृति ने गढ़वाल को बहुविध रंग-बिरंगे, आकर्षक पुष्पों का उपहार दिया है, जो सदैव अपनी सुमधुर मुसकान से यहां के वनों एवं पर्वतों की नैसर्गिक चारुता को जीवंत रखते हैं। सुमन, प्रसून, कुसुम इत्यादि ललित एवं सार्थक संज्ञाओं से अभिहित किया जानेवाला पुष्प ईश्वरीय सृष्टि का उत्कृष्टतम नमूना है। जो अपनी कमनीयता से मानव चित्त को आकृष्ट करता रहा है। गढ़वाल के लोक-जीवन को यहां के रंगीन एवं लुभावने प्रसूनों ने सदैव ही प्रभावित किया है। साकिना, कुंजू, फ्योंली, बुरांस, जयेड़ी, लयेड़ी, राड़ा, गुलाब, कमल, सिरताज-मखमल, इत्यादि कुसुम गीतियां प्रत्येक काल में गढ़ निवासियों की लोक-संस्कृति का गुंजन करती रही हैं। जैसा कि इस लोकगीत में उल्लिखित है—

कखि फ्यूंलड़ी फुलदि पीली, कखि लाल बुरांस
कनु प्यारो छ मेरो गढ़वाल

भारतीय संस्कृति से पुष्पों का अभिन्न संबंध रहा है। विश्व का शायद ही कोई ऐसा ग्रंथ, काव्य या रचना होगी जिसने पुष्पों की सुगंधित वायु का आघ्राण न किया हो। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कुसुम सभ्यता ने साधारण

देवभूमि गढ़वाल जहां अनेक सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण उल्लेखनीय है वहीं पर पुष्पप्रियता यहां की अन्यतम विशेषता है । रंग-बिरंगे लुभावने पुष्पों के प्रति सांस्कारिक अनुरक्ति का भाव-निर्झर यहां गीतों एवं नृत्य-गीतों के रूप में दृष्टिगोचर होता है ।

प्राणियों को ही नहीं प्रत्युत कवि, कलाकार, ग्रंथकार व गीतकार सभी को समानभाव से आकृष्ट किया है । हिमालय अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्व-विश्रुत है । हिमालय की रंगीन पुष्पराजियों ने गढ़वाल के लोक-जीवन एवं संस्कृति को सदैव ही प्रभावित किया है ।

पुष्पों के प्रति सांस्कारिक अनुरक्ति

सकल जगत में यत्र-तत्र ईश्वर की अनुपम, रुचिर व कलात्मक रचना के दर्शन होते हैं । इस रचना में मनोहर प्रसूनों का महत्त्व जीवन-सिद्ध है । मानव जीवनोपयोगी ये पुष्प आज ही मनुष्य के लिए महत्त्वपूर्ण हैं ऐसा नहीं अपितु मानव या प्राणि वर्ग के जीवन में इन पुष्पों की सदैव ही अहम भूमिका रही है । जीवन के साथ-साथ पुष्प हमारी सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, कलात्मक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय बहुविध परंपराओं का निर्वाह करने में भी विशिष्ट महत्त्व रखते हैं । यद्यपि गढ़वाल हिमालय की संस्कृति पर अनेकानेक गीत व नृत्य-गीत रचे गये तथापि समय-समय पर गढ़वाली विद्वान, गीतकारों, रचनाकारों तथा कवियों ने हिमालय वनश्री के मंजुल कुसुमों का चयन अपने लेखन-विषय में किया ।

देवभूमि गढ़वाल जहां अनेक सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण उल्लेखनीय है वहीं पर पुष्पप्रियता यहां की अन्यतम विशेषता है । रंग-बिरंगे लुभावने पुष्पों के प्रति सांस्कारिक अनुरक्ति का भाव-निर्झर यहां गीतों एवं नृत्य-गीतों के रूप में दृष्टिगोचर होता है ।

गढ़वाली लोककला एवं संस्कृति की पावन-सलिला जिन गीतों तथा नृत्य-गीतों में प्रवाहित होती है वे निम्न हैं— १. मांगल या मांगलिक गीत, २. जागर गीत, ३. पंवाड़ा, ४. तंत्र-मंत्रात्मक गीत, ५. थड्या गीत, ६. चौंफुला गीत, ७. झुमैलौ, ८. खुदैड़, ९. वासंती गीत, १० होरी गीत, ११. कुलाचार, १२. बाजूबंद गीत, १३. लामण, १४. छोपती, १५. लौरी, १६. पटखाई में छूड़ा, १७. नौन्याली, १८. दूड़ा, १९. चैती पसारा गीत, २०. बारहमासा गीत, २१. चौमासा गीत, २२. फौफती, २३. चांचरी, २४. झौड़ा, २५. केदरा नृत्य-गीत, २६ सामयिक गीत, २७. अन्य नृत्य-गीतों में— हंसौड़ा, हंसौडणा, जात्रा, बनजारा, बौछड़ों, बौंसरेला, सिपैया, इत्यादि प्रमुख नृत्य-गीतों में गढ़वाल की लोक-विश्रुत संस्कृति की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है ।

गढ़-गीतों में प्रसून

गढ़वाल-सौंदर्य, प्रणय और जीवंतता की क्रीड़ाभूमि है । प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ यहां का मानवीय सौंदर्य भी उच्च एवं प्रभावी कोटि का है । गढ़वाली गीतों व नृत्य-गीतों में मानवीय रूप-सौंदर्य तथा या रमणीक प्राकृतिक

ऐश्वर्य बिखरा हुआ है । जैसा इस झुमैलो नामक नृत्य-गीत में वर्णित है कि एक ओर लयेड़ी, लया सरसों, राडौड़ी या राड़ा पुष्प विकसित हो गये हैं, दूसरी ओर बुरांस अपनी अरुणिम आभा में वन-वृक्षों को डोलियों की भांति सजाने लगा है—

फूलीक ऐ मैने झमैलो लयेड़ी राडोड़ी झुमैलो
नीं गंधा बुरांस झुमैलो डोला सी गच्छैने झुमैलो

हिमालय हिम की शीतल पवन और वन के वृक्षों के आड़ू, घिंगारू, बांज, बुरांस, साकिना इत्यादि वृक्षों में पुष्पोद्भव देखकर मनरूपी मयूर का नृत्य हेतु विवश होना स्वाभाविक ही है । जैसा इस मयूर नृत्य-गीत से स्पष्ट है—

हैंयुचलि डांड्यूं की चली हिवांली कांकोरा
रंगम तुबहे, नाचण लगे मेरा मन कू मोर
आरू, घिंगारू, बांज, बुरांस
साकिनी झका झोर

बसंत उमंग, उल्लास व हास्य का पर्व है । इस रमणीयकाल में गढ़वाल की प्राकृतिक सुषमा का अपना महत्त्व है । इसके आगमन से वन-वृक्षों की कमनीयता तथा कुसुमों का मनोमुग्धकारी सौंदर्य मुखरित हो जाता है । पुष्पोद्भव के इस रम्य अवसर पर सभी हृदयों में चेतना, स्फूर्ति एवं उल्लास का स्वतः संचरण हो जाता है । इस समय न केवल मानव अपितु प्रकृति का रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठता है—

हंसदो बसंत ऐगी गिंवाड़ी सारी
पिंगली फ्योंलड़ी नाचे घागरी पसारी

गढ़वाल में रमणीक बसंत ऋतु की सूचना यहां के ग्वीराल, मालू, फ्योंली, साकिनीं, कूंजू, तुषरी व बुरांस इत्यादि मनोहर पुष्पराजियों से मिलती है ।

गढ़-साहित्य एवं गीतों में वासंतिक वैभव, वनश्री व उसके मंजुल कुसुमों का रूप-चित्र यत्र-तत्र बिखरा हुआ है । बसंत-श्री में अभिवृद्धि करनेवाले लयेड़ी (लया या सरसों) तथा जयेड़ी (जौ) का उल्लेख इस लोकगीत में किया गया है— '*ऋतु बसंत मां फुली लयेड़ी जौवन जोर जताली जयेड़ी* ' यही नहीं पुष्पोत्सव के इस रम्यकाल में जब कानन-कानन बुरांस की अरूणिमा से और डाली-डाली हिलांस पक्षी के गीतों से गूंजने लगे तब हिमालय क्षेत्र के गांव और अधिक प्रिय लगने लगते हैं—

मेरो गांव भलो प्यारो, डांड्र फूली बुरांसी, बासदौं हिंलासी

वास्तव में बांज, बुरांस व कुलैं (चीड़) के सघन वन ही गढ़वाल का सौंदर्य हैं । चैत्र में चित्ताकर्षक बुरांस से वन्य शोभा और भी दर्शनीय हो जाती है—

गदन्यों मां पांणी सेरों मा छ कूल, खिल-खिल

गढ़वाल-सौंदर्य, प्रणय और जीवंतता की क्रीड़ाभूमि है । प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ यहां का मानवीय सौंदर्य भी उच्च एवं प्रभावी कोटि का है । गढ़वाली गीतों व नृत्य-गीतों में मानवीय रूप-सौंदर्य तथा रमणीक प्राकृतिक ऐश्वर्य बिखरा हुआ है ।

हंसदू बुरांस कु फूल

गढ़वाल के पक्षियों में घुघती को मयालू या अत्यंत मायादार कहें तो अनुचित न होगा । पर्वत पुत्रियां अपने हृदय की बात इसी से कहना उचित मानती हैं । प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण तथा रंग-बिरंगे पुष्पों के बीच वे अपने समस्त दुःखों को विस्मृत कर घुघती नृत्य-गीत गाती हैं । वे कहती हैं— 'देखो धरती के गले में पुष्पहार सज गया है तथा पयां, धौलू, फ्यूंली, आरू, लया व बुरांस पुष्प विकसित हो गये हैं—

फूलों की हंसुली
पयां, धौलू, फ्यूंली, आरू
लया, फूले बुरांस

फुलारी महीनों के आते ही मायके के लिए व्यथित गढ़-रमणियां अपनी आत्मिक क्षुधा की अभिव्यक्ति जिन नृत्य गीतों के माध्यम से करती हैं उन्हें खुदेड़ नृत्य-गीत संज्ञा प्रदान की गयी है । खुंदेड़ नृत्य-गीतों के विषय-अपना घर, गांव, वन, वृक्ष, पशु-पक्षी, हरीतिमा, निर्झर, नदी एवं प्रसून होते हैं । यहां पर खुदेड़ नृत्य गीत के माध्यम से कांस तथा बुरांस प्रसून के साथ-साथ मेल्वड़ी पक्षी की सुमधुर गीत ध्वनि का स्मरण किया गया है—

फूली जालो कांस वूबै, फूली जालो कांस वूबै
मेल्वड़ी बांसली वूबै, फूली गै बुरांस

हिमालय के कवियों ने नायक एवं नायिका के रूप-सौंदर्य वर्णन हेतु जिन पुष्प गीतों का सृजन किया है उनमें बुरांस तथा फ्योंली प्रमुख हैं । इनके अतिरिक्त इन विद्वान कवियों ने पोस्त, कूंजू, गुलाब, कमल प्रसूनों को अपनी गीतमाला में पिरो-पिरोकर रूप-सौंदर्य का सुंदर एवं स्वाभाविक चित्रण किया है । कहीं पर गीतकार नायिका को रक्ताभ बुरांस की भांति कमनीय तथा आकर्षक कहता है और कहीं उसे फ्योंली की तरह सुंदर, सजीली राजकन्या कहता है—

बुरांस जनो फूल, फ्योंली जनी रौतेली

एक स्थल पर गीतकार नव-यौवना की कोमल काया से प्रभावित होकर उसे फ्योंली की कली कह बैठता है— ''फ्यूंली की-सी कली ।''

अन्यत्र सुई नृत्य-गीत के माध्यम से कवि 'गालू मां बुरांस ।' यानि गढ़ रमणी के स्वेत कपोलों पर रक्तवर्ण बुरांस का आरोपण कर अपनी श्रृंगार प्रसाधन विशेषज्ञता का सुंदर परिचय प्रस्तुत करता है । इनके अतिरिक्त गढ़वाली गीत सृजकों ने 'पोस्तू का छुम्मा, त्वेसरी गुलाबी फूल मेरी भग्यानी बौ ।' इत्यादि नृत्य-गीतों के द्वारा उन्होंने पोस्त तथा गुलाब प्रसूनों से नायिका के रूप-सौंदर्य की वर्णना की है ।

नायिका सौंदर्य चित्रण ही गढ़ कवियों का एकमात्र उद्देश्य रहा हो, ऐसा नहीं अपितु इन्होंने नायक सौंदर्य वर्णन हेतु भी पुष्प गीतों की सृष्टि

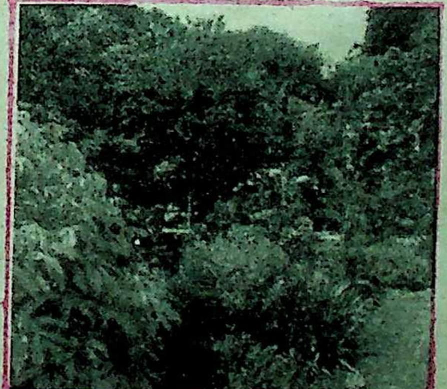

की । 'कमल-सी फूल छ्वा । इस तलवार नृत्य-गीत के माध्यम से नायक के सौंदर्य को कमल की भांति कमनीय बतलाया है ।

वैसे तो पुष्प कहीं भी, कैसा भी हो सहृदय मानव सहजता से उसकी कमनीयता पर आकृष्ट हो जाता है । परंतु सभी राहगीरों के मनों को मुग्ध करनेवाले प्रसूनों में यहां की कटीली झाड़ियों में लगनेवाला कूंजा नामक पुष्प विशेष उल्लेखनीय है । लामण नामक इस नृत्य-गीत में गीतकार कूंजा कुसुम की महत्ता के साथ-साथ प्रणय की गहनता का सुंदर चित्रण करता है—

मैं बणलू बाठ कूजींण चैत बैसाख फूली जौलो
भल-भल बैखू की टोपली मां सज्यूं रौला

गढ़-नायिका की हार्दिक अभिलाषा है कि यदि वह पुष्प का जन्म धारण करे तो कूंजा पुष्प बने । जिससे उसे राहगीरों की टोपियों में अलंकृत होने का सुअवसर प्राप्त हो सके ।

गढ़वाल के लोकप्रिय पुष्प गीतों में पिंगली फ्योंली और लाल बुरांस विशिष्ट चर्चित हैं । गढ़-गीतकारों ने सौंदर्योपमा हेतु कहीं पर फ्योंली को सुंदर राजकुमारी कहा है, तो कहीं उसे पीला घाघरा पहनकर नृत्य-मग्न नृत्यांगना की संज्ञा प्रदान की है ।

विपश्चित गढ़-कवियों ने हिमालय के रम्य पुष्पों से प्रभावित होकर इनमें मानवसुलभ गुणों का आरोपण भी किया है—

निष्ठुर फ्योंली तू इखुलीन फूल
तथा

निरमोही फ्योंली, तू कैकी छई पिठाई

इन लोक-गीतों में फ्योंली को 'निष्ठुर' और 'निरमोही' कहकर उसका सुंदर मानवीयकरण किया है ।

इस प्रकार हिमालय गढ़वाल अपने में शुद तथा पुण्य प्राकृतिक वैभव संजोये हुए है । गढ़वाल के विद्वान गीतकारों ने अपने रचना-कौशल को हास्य, व्यंग्य, सामाजिक उत्थान, रूढ़ियों का खंडन, धार्मिकता, संस्कृति, लोक-जीवन, आचार-विचार, प्रकृति, पशु-पक्षी, पादप-प्रसून इत्यादि नृत्य-गीतों में दर्शाया है । गीतकारों की पुष्पप्रियता विविध पुष्प गीतों द्वारा प्रकट होती है । पुष्प को जीवन कहें तो अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि पुष्प ही मानव को सुखी व कलात्मक जीवन प्रदान करता है । यही कारण है कि सुख, कला, हर्ष, आशा व उत्साह गुणों का जीवन में संचरण करनेवाली इन हिम पुष्पराजियों एवं हरित वनश्री ने यहां के गीतकारों को आकृष्ट ही नहीं किया अपितु गीत-सृजन हेतु प्रेरित भी किया—

गंगा यमुना काली धौली का
यूंका युखछ मैत,
यखि बसंत फ्योंली बुरांस
कामदेव को चैत

इस प्रकार स्पष्टरूपेण कहा जा सकता है कि गढ़वाल हिमालय के कंटकों में विकसित होनेवाला कूंजू, रक्ताभ बुरांस, रौतेली फ्योंली, जयेड़ी, लयेड़ी, ग्वीराल, मालू, पोस्त, गुलाब, कमल, साकिनी, सिरताज-मखमल, पयां, धौलू, आरू, कांस, तुषरि, घिंघारू, बांज इत्यादि प्रसून हिमालय के रम्य वन-वैभव के साथ-साथ यहां की लोक विश्रुत संस्कृति के द्योतक भी हैं ।

— ३९बी आराघ
देहराद

डेहलिया चित्र : ब्रह्मदेव

चित्ताकर्षक बुरांस चित्र : डॉ. मंजू बलौदी

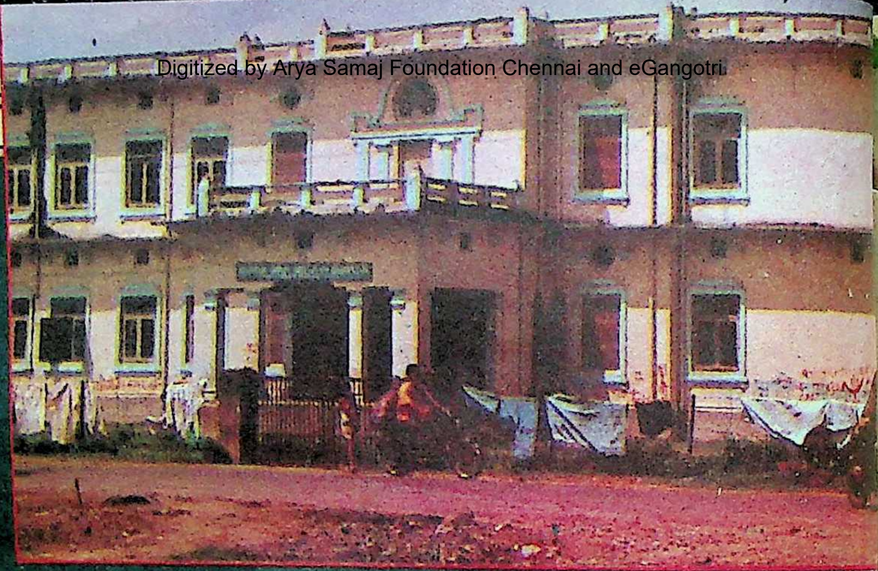

पटना कला महाविद्यालय
आरोप है कि यहां से अनेक मूल्यवान कलाकृतियां यहां से गायब हो गयीं हैं।

चित्र : ललित जिलोका

नष्ट हो रही है बिहार की ऐतिहासिक पहचान

पटना संग्रहालय : गायब हैं दो सौ पंद्रह से अधिक मूल्यवान कलाकृतियां

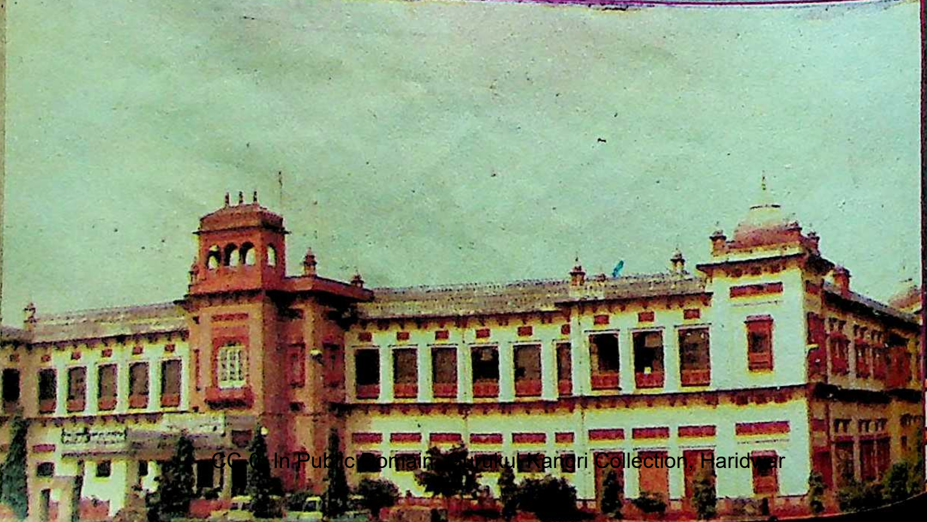

● अशोक सुमन

बिहार के लिए वर्तमान में पिछड़ा, पतनशील एवं मरणासन्न-जैसे कटु विशेषणों का इस्तेमाल करनेवाले लोग भी यह बात स्वीकारते हैं कि इस राज्य के पास समृद्ध एवं गौरवमय अतीत का एक लंबा इतिहास है। इतिहासकारों की नजर में सदियों तक भारत का इतिहास बिहार का इतिहास रहा है। बिहार के इस प्राचीन वैभव को उजागर करनेवाली सांस्कृतिक धरोहरें, भवन, मूर्तियां, कलाकृतियां, शिलालेख एवं पांडुलिपियां इत्यादि आज भी राज्य के कोने-कोने में बिखरी पड़ी हैं, लेकिन हमारी उपेक्षा का शिकार हो नष्ट हो रही हैं। पुरातत्व विभाग की लापरवाही और सुरक्षा का उचित इंतजाम न होने के कारण उनकी चोरी और तस्करी धड़ल्ले से हो रही है।

सांस्कृतिक धरोहरों का केवल इतना ही अर्थ नहीं होता कि वे अतीत की झांकी प्रस्तुत करती हैं, बल्कि वे सही अर्थों में जनमानस की अस्मिता होती हैं, उनकी पहचान होती हैं। इसलिए सांस्कृतिक धरोहरों को संजोये रखना और उन्हें तस्करों से बचाना राष्ट्रीय अस्मिता को बचाना है।

स्थिति इस कदर गंभीर है कि उसका अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि देश से जितनी भी मूर्तियां तस्करों द्वारा विदेशों में बेची जाती हैं, उसमें से लगभग चालीस प्रतिशत मूर्तियां बिहार की होती हैं। एक अनुमान के अनुसार पिछले पांच वर्षों के दौरान लगभग सात सौ मूर्तियां गायब हो चुकी हैं, जिनका मूल्य अंतरराष्ट्रीय बाजार के अनुसार लगभग पच्चीस करोड़ रुपये है।

पुरातत्व-विशेषज्ञों के अनुसार राज्य में लगभग पांच दर्जन ऐसे ऐतिहासिक स्थल हैं, जहां जमीन के अंदर मूर्तियां दबी पड़ी हैं, जो समय-समय पर जमीन की खुदाई में प्राप्त होती रहती हैं। इन ऐतिहासिक स्थलों में नालंदा, बोधगया, वैशाली, मधुबनी, रोहतास, बेगूसराय, मुंगेर, पटना, जमशेदपुर, राजगीर, पावापुरी, भभुआ, देवघर, सीवान और बेतिया आदि प्रमुख हैं।

पुरातत्व विभाग द्वारा अभी तक उक्त ऐतिहासिक स्थलों के मात्र कुछ हिस्से में ही खुदाई की गयी है, जबकि अधिकांश भाग वैसे ही पड़े हुए हैं। यदि इन स्थलों की विभाग द्वारा खुदाई करायी जाए तो प्राचीन भारतीय सभ्यताओं से संबंधित कई नये तथ्य प्रकाश में आ सकते हैं।

उचित देखभाल का अभाव

पुरातत्व विभाग द्वारा जहां उत्खनन कार्य किये गये हैं, वहीं उन स्थलों तथा वहां से प्राप्त कलाकृतियों की उचित देखभाल की व्यवस्था नहीं की गयी है। अतः वहां से कलाकृतियां गायब होती जा रही हैं। बिहार के कई अन्य

जिलों में भी खेत जोतते समय या मकान के लिए नींव खोदते समय अकसर मूर्तियां मिल जाती हैं । ऐसी मूर्तियों की तस्करी अर्से से जारी है ।

चोरी का सिलसिला केवल ऐतिहासिक स्थलों के आसपास मिलनेवाली मूर्तियों तक ही सीमित नहीं है । मूर्ति चोरों के पांव मंदिरों व राजकीय संग्रहालयों तक भी पहुंच गये हैं । पटना के राजकीय संग्रहालय से विगत कुछ वर्षों के दौरान २१५ से अधिक कलाकृतियों की चोरी हो चुकी है । इसमें प्राचीन मूर्तियों के अलावा इंडोनेशिया के राष्ट्रपति द्वारा देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भेंट की गयी सोने की तलवार की मूठ, गोल्ड मेडल सहित कई अन्य दुर्लभ चीजें भी शामिल हैं । इसी तरह कटिहार, भागलपुर, रांची, दरभंगा तथा मुजफ्फरपुर सहित कई अन्य संग्रहालयों से भी चोरियां हो चुकी हैं । सन १९९२ के अंतिम सप्ताह में रांची संग्रहालय से चोरी गयी देवी तारा की एक प्राचीन महत्त्वपूर्ण मूर्ति का अभी तक कोई पता नहीं चल सका है ।

मूर्तियों की चोरियों के कारण राज्य के आधे से अधिक पुराने मंदिर मूर्तिविहीन हो चुके हैं । १३ मार्च, ९४ को नवादा के वारसलीगंज के मिसिर स्थान से भगवान विष्णु की कई दुर्लभ मूर्तियां चोरी चली गयीं । ये सभी मूर्तियां काले पत्थरों की बनी हुई थीं । इसके एक महीने बाद नवादा के चंडीनामा स्थित एक प्राचीन मठ से अष्टधातु और स्वर्ण की बनी देवी-देवताओं की मूर्तियों को भी चोर उठा ले गये । लगभग दस लाख रुपये मूल्य की वे मूर्तियां आज तक बरामद नहीं हो सकी हैं । नवादा जिले के ही हेरो ग्राम स्थित एक ऐतिहासिक मंदिर से सितंबर महीने में राधा-कृष्ण, विष्णु, पार्वती, लक्ष्मी, चंद्रमा तथा सूर्य देव की काले पत्थर से निर्मित एक दर्जन दुर्लभ मूर्तियां चोरी की जा चुकी हैं । बोध गया स्थित विश्व प्रसिद्ध महाबोधि मंदिर के पिछले भाग में पीपल का एक वृक्ष है, जिसके नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था । इसलिए इस वृक्ष को पवित्र व ऐतिहासिक माना जाता है । चोरों की गिद्ध दृष्टि से वह वृक्ष भी नहीं बचा है । इस बोधि वृक्ष के पत्तों और लकड़ियों की तस्करी भी बराबर होती रहती है ।

लगभग दो वर्ष पूर्व औरंगाबाद जिले के चेवोग्राम से भगवान विष्णु की सात फीट ऊंची दुर्लभ मूर्ति चोरी चली गयी थी, जिसका पता लगाने में पुलिस अभी तक विफल रही है । कहा जाता है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में यह मूर्ति कम से कम तीस लाख डॉलर में बिकी होगी । बेतिया के शिकारपुर गांव के एक प्राचीन मंदिर से वहां के पुजारी को नशीला प्रसाद खिलाकर राम, सीता, लक्ष्मण व कृष्ण की कई दुर्लभ एवं आकर्षक मूर्तियां चुरा ली गयीं । इस साल गत चार सितंबर को ही सुगौली के महादेव स्थान मंदिर से पुरातात्विक महत्त्व की, धातु एवं पत्थर की बनी उमा-महेश्वर, विष्णु एवं लक्ष्मी की दुर्लभ मूर्तियों के चोरी हो जाने की खबर है ।

रोहतास जिले के गांवों से भी मूर्तियों की चोरी का सिलसिला वर्षों से जारी है । १९६३ से अब तक मूर्ति चोर और तस्कर जिले के अधिकांश प्राचीन मंदिरों को खोखला कर चुके हैं । औसतन हर सप्ताह इस जिले के मंदिरों से कोई न कोई मूर्ति अवश्य गायब होती रहती है ।

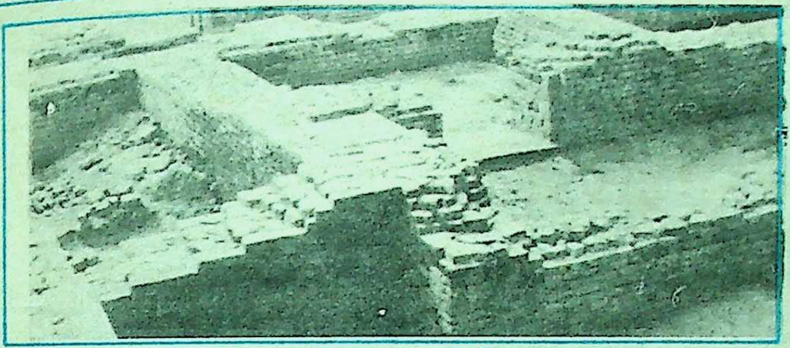

हमारी उपेक्षा का शिकार एक पुरातात्विक स्थल

मूर्ति चोरी की ये कुछ घटनाएं सिर्फ मिसालभर हैं।

चोरों का जाल

सूत्रों के मुताबिक राज्य में मूर्ति चोरों का एक ठोस नैटवर्क है, जो प्राचीन व दुर्लभ मूर्तियों की टोह में लगा रहता है। जैसे ही गिरोह के सदस्यों को किसी महत्त्वपूर्ण मूर्ति का पता चलता है, वे सक्रिय हो जाते हैं। पहले उस मूर्ति की तसवीर ली जाती है। उस तसवीर को दिल्ली, बंबई, कलकत्ता और मद्रास के बड़े तस्करों को भेजकर उसका भाव तय किया जाता है। भाव तय हो जाने पर उस मूर्ति को गायब करने की योजना बनायी जाती है। निर्धारित योजना के तहत संबंधित स्थल के कुछ दबंग एवं असामाजिक तत्वों को पटाकर मूर्तियों की चोरी करायी जाती है। चुरायी हुई मूर्ति को साल दो साल तक गांवों में ही छिपाकर रखा जाता है और मौका मिलते ही मूर्ति तस्कर उसे लेकर बंबई, दिल्ली कलकत्ता और मद्रास जा पहुंचते हैं और वहां के बड़े तस्करों के जरिये मूर्ति विदेश पहुंच जाती है। इन चुरायी हुई मूर्तियों को न्यूयार्क के ब्रुकलिन संग्रहालय, ऑक्सफोर्ड के ऐशमोलियन संग्रहालय तथा बर्लिन के पारगैमान संग्रहालय में आज भी देखा जा सकता है। सन १९५५ में नालंदा से चुरायी गयी भगवान बुद्ध की एक कांसे की मूर्ति को बाद में तत्कालीन राजदूत एल.के. झा ने 'बोस्टन म्यूजियम' में देखा था।

हमारे यहां की प्राचीन व कलात्मक मूर्तियां व कलाकृतियां विदेशों में बहुत ऊंचे दामों पर बिकती हैं। इसलिए यह धंधा खूब फल-फूल रहा है। चूंकि ये धंधा कम खतरनाक लेकिन अधिक लाभ देता है, इसलिए इस धंधे में असामाजिक तत्वों की संख्या बढ़ती जा रही है और तस्कर मालामाल हो रहे हैं।

पुर्जा-पुर्जा पांडुलिपियां

बिहार में प्राचीन पांडुलिपियों का खजाना भी रहा है। राज्य के विभिन्न सरकारी व निजी संग्रहालयों में आज भी प्राचीन एवं मध्यकालीन युग की हस्तलिखित पांडुलिपियां मौजूद हैं। दरभंगा, पटना, मधुबनी, जयनगर, पूर्णिया, बिहारशरीफ, मनेर, छपरा और सीवान आदि में कुछ वर्ष पहले तक कई ऐसी पांडुलिपियां मौजूद थीं, जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण थीं लेकिन उनमें से अधिकतर अब तस्करों की भेंट चढ़ चुकी हैं। जो थोड़ी-बहुत बची हैं, वे भी उचित

संरक्षण के अभाव में समय की मार और दीमकों का शिकार हो रही हैं । पटना के हिंदी साहित्य सम्मेलन भवन के पुस्तकालय में इसनी लाल द्वारा सन १३२५ में रचित रामचरितमानस की मूल प्रति, जैम्स हेस्टिंगस लिखित एनसाईक्लोपीडिया ऑव रीलिजन, ईस्ट इंडिया अफेयर्स एवं विश्व प्रसिद्ध पुस्तक एनसाईक्लोपीडिया ऑव ब्रिटेनिका के प्रथम संस्करण के २६ खंडों सहित अनेक दुर्लभ ग्रंथ उपलब्ध हैं । इनमें से अधिकांश ग्रंथ या तो सड़ चुके हैं या सड़ने के क़गार पर हैं । लगभग एक दर्जन प्राचीन पांडुलिपियां गायब भी बतायी जाती हैं ।

चित्र भी गायब हैं

सन १९७३ में पटना जिलांतर्गत भरतपुरा की पब्लिक लाइब्रेरी से चोरी गयी 'शाहनामा सिकंदरनामा' तथा 'मुताला-ए-हिंद' जैसी महत्त्वपूर्ण पांडुलिपियों का अभी तक कोई पता नहीं लग सका है, जबकि उन पांडुलिपियों के ऐतिहासिक महत्त्व को देखते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस मामले की जांच का जिम्मा सी.बी.आई. को सौंपा था । बताया जाता है कि उक्त पांडुलिपियां कैलिफोर्निया (अमरीका) चली गयी हैं ।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक अठारहवीं सदी के आसपास रचित तंत्र की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'चकनिन कौमुदी' की पांडुलिपि गुम हो गयी है । कहा जाता है कि भारतीय अध्यात्म शक्ति का जीवंत प्रमाण उस पांडुलिपि में लिपिबद्ध था । बेतिया घराने के महाराजा आनंद किशोर द्वारा रचित ध्रुपद की मूल प्रति 'आनंद सागर' के कुछ पन्ने तस्करों द्वारा विदेश भेजे जा चुके हैं । शेष प्रति जर्जर अवस्था में बेतिया रा के महंत के पास पड़ी हुई है । लेकिन उसके पन्ने इतने जीर्ण-शीर्ण हो चुके हैं कि वे स्पर्श मात्र से चूर-चूर हो जाते हैं ।

इसी तरह पटना कला महाविद्यालय के आर्ट गैलरी में 'पटना कलम' व बंगाल के पटचित्र के सैकड़ों दुर्लभ चित्र विदेशी कलाका लैगमेर, रूसी चित्रकार रोरिक, प्रख्यात चित्रका अवनींद्रनाथ ठाकुर, यामिनी राय आदि सहित अनेक महत्त्वपूर्ण चित्रकारों के चित्र थे । लेकि हाल ही में जब एक मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में इस आर्ट गैलरी की जांच-पड़ताल की गयी, तो प चला कि अधिकांश चित्र गायब हैं ।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन मूर्तियों एवं पांडुलिपियों की सुरक्षा के लिए सन १९७२ में केंद्र सरकार द्वारा एक कानून बनाया गया था । उस कानून के तहत सांस्कृतिक धरोहरों की तस्करी करनेवालों के लिए तीन वर्ष तक की कैद का प्रावधान रखा गया है । लेकिन आज तक तो इस कानून के अंतर्गत किसी को सजा नहीं मिली । इस कानून के बनने के बाद तस्कर घटने के बजाय और बढ़ी है । पिछले सात-आठ वर्षों के दौरान राज्य से जितनी भी मूर्तियों, पांडुलिपियों की चोरी हुई उनमें से दो-चार मामलों को छोड़कर बाकी के मामलों का पता लगाने में बिहार पुलिस बुरी तरह विफल रही है । नतीजन, मूर्तिकला के उत्कृष्ट नमूनों एवं दुर्लभ पांडुलिपियों का भंडार खाली होता जा रहा है ।

—३, नव विकास कॉलोनी, फेज-२
पो.- आशियाना नगर, पटना-८०००२५

पुरस्कृत कहानियां

कानपुर में आयोजित कादम्बिनी साहित्य महोत्सव के अंतर्गत संपन्न कहानी-प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित कहानियां

प्रथम पुरस्कार

निकाहनामा

● डॉ. सैयद मेहदी

यह कहानी 'निकाहनामा' इस पत्र के बिना, यह कहानी अधूरी है । यह कहानी सुखद वातावरण में, धार्मिक अधूरेपन से उपजी एक दुखद स्थिति का चित्रण मात्र है, जिसका मुख्य कारण संज्ञाशून्य कठमुल्लावाद है । 'निकाहनामा' के शीर्ष पर छपी वह इबारत जिसने कहानी बनायी है, यदि वह न भी होती, तब भी निकाह हो सकता था और होता है । इस कहानी का उद्देश्य मात्र धार्मिक कट्टरता और मर्महीनता के विरुद्ध शंखनाद है, किसी तसलीमावाद अथवा रुशदीत्व की पुनरावृत्ति नहीं—कदापि नहीं ।

जमील, क्या हो गया है तुम्हें, गाड़ी तेज चलाओ ना, देखो, शाम हो गयी । [redacted] ने लगभग ठुनकते हुए, जमील को [redacted] व उससे और सटकर बैठ गयी । [redacted] ने विंड-स्क्रीन पर नजरें जमाये हुए रोमांटिक स्वर में जवाब दिया, "अब किस बात का डर है जानां, अब तो आप हमारी मंगेतर हो गयीं हैं ।"

"मंगेतर ही तो हुई हूं ना— बीवी थोड़े ही ।"

"अच्छा जी, मंगेतर और बीवी में क्या फर्क होता है ?"

"जनाब, अक्ल से पैदल साहब, बीवी निकाह के बाद होती है ।" शाजिया ने जमील को प्यार से घूरते हुए जवाब दिया ।

"अजी, निकाह भी हो जाएगा, पूरे चार बरस इसी निकाह के इंतजार में गुजर गये । कभी आपकी अम्मी ऐंठ गयीं, कभी हमारे अब्बू गरम हो गये । चलो, खुदा-खुदा कर ह दोनों के घरवाले राजी तो हुए," जमील ने शां स्वर में कहा ।

'हूं', शाजिया ने सुरीली-सी हुंकार भरी औ जमील के कंधे पर सिर टिका दिया । कार धीरे-धीरे रास्ता तय करती हुई शाजिया के घर की तरफ बढ़ती रही ।

× × ×

जमील और शाजिया इस दौर के लैला-मजनूं कॉलेज से लेकर महल्ले तक औ महल्लों से लेकर दोनों के खानदानी रिश्तेदारों तक आशिक-ओ-माशूक के रूप में मशहूर थ

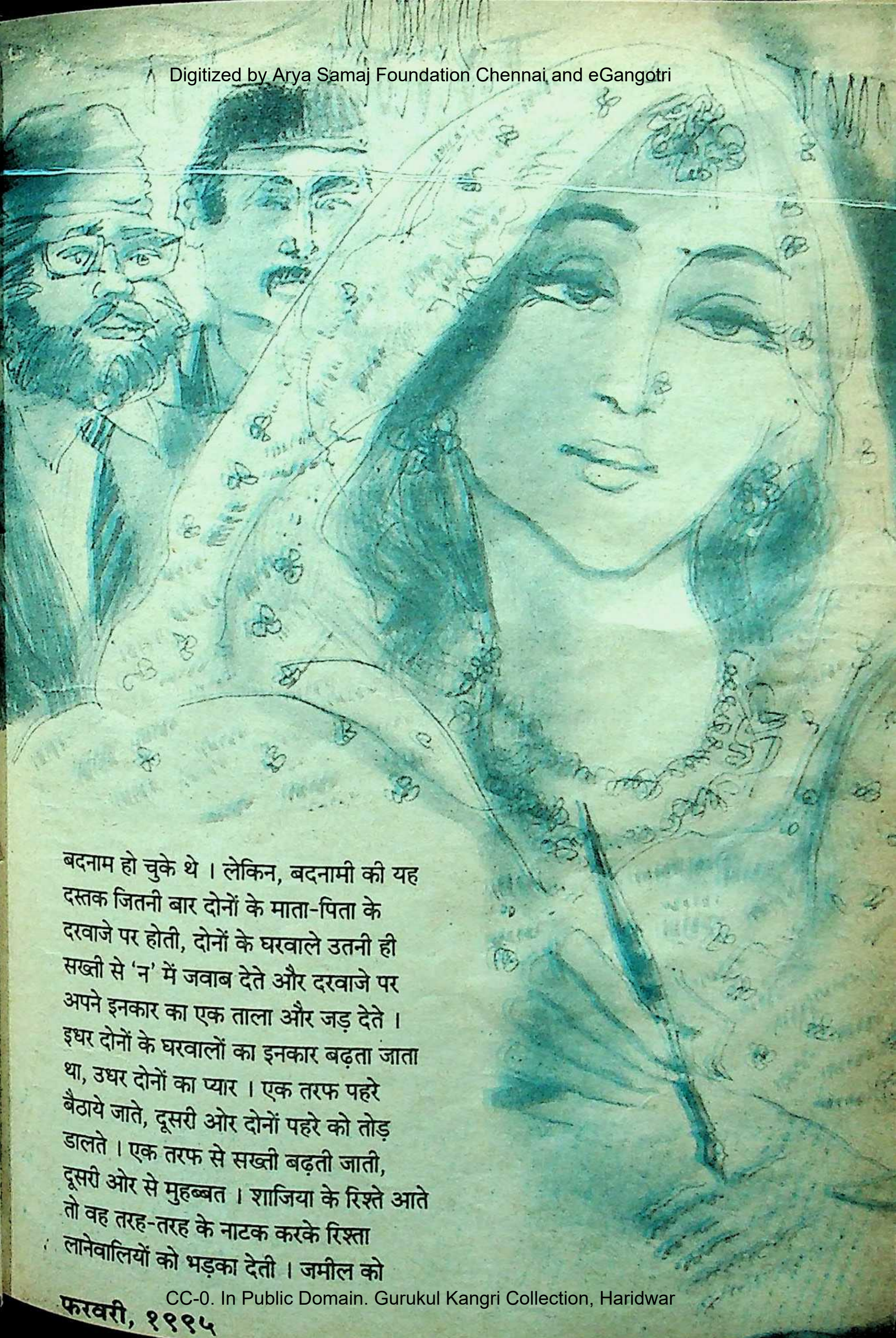

बदनाम हो चुके थे । लेकिन, बदनामी की यह दस्तक जितनी बार दोनों के माता-पिता के दरवाजे पर होती, दोनों के घरवाले उतनी ही सख्ती से 'न' में जवाब देते और दरवाजे पर अपने इनकार का एक ताला और जड़ देते । इधर दोनों के घरवालों का इनकार बढ़ता जाता था, उधर दोनों का प्यार । एक तरफ पहरे बैठाये जाते, दूसरी ओर दोनों पहरे को तोड़ डालते । एक तरफ से सख्ती बढ़ती जाती, दूसरी ओर से मुहब्बत । शाजिया के रिश्ते आते तो वह तरह-तरह के नाटक करके रिश्ता लानेवालियों को भड़का देती । जमील को

डॉ. सैयद अहमद मेहदी कामर्स में एम.ए. करने के उपरांत उर्दू साहित्य में एम.ए. एवं 'जोश मलीहाबादी की मरसिया निगारी' पर शोध-प्रबंध

उत्तर प्रदेश हैंडलूम कारपोरेशन में आडीटर

चार कृतियां प्रकाशित

पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कहानियां, कविताएं एवं गजलें प्रकाशित

तथा अनेक सम्मानों से सम्मानित

उसके घरवाले कारोबार के लिए कहीं दूर भेजना चाहते, तो वह बारह घंटे के अंदर अपने शहर में फिर मौजूद हो जाता । आखिर, ताकत हार गयी और मुहब्बत जीत गयी ।

दोनों के घरवाले राजी हो गये और दोनों की मंगनी हो गयी ।

बारात बड़ी धूम-धाम से शाजिया-विला की तरफ बढ़ रही थी । अतिशबाजी के धमाकों और बैंड बाजे के बेढंगे शोर ने सुरों का सीना और स्वर के कान फाड़ डालने की कसम खा रखी थी । धूम-धड़ाके के बीच बारात शाजिया के खूबसूरत विला के सामने सड़क पर लगे शानदार शामियाने में सज गयी । दूल्हे को एक ऊंचे से मंच पर बैठाया गया । दूल्हे मियां के आस-पास उसके अपने चार दोस्त घेरा डाल कर बैठ गये । शामियाने के पीछे कनात में रेशमी कपड़ों और रेशम से ज्यादा महीन सुरों की सरसराहट साफ सुनायी देने लगी । बीच-बीच में कॉफी की मशीन की खौफनाक फुंकार इस बात का अहसास दिलाती रहती थी कि नागिनों के बीच कहीं अजगर भी मौजूद है । एक पुर शोर सन्नाटा, एक खामोश हंगामा, जैसा कि किसी तूफान के ठीक पहले या तूफान के तुरंत बाद होता है । कॉफी के कप जो अभी थोड़ी देर पहले मेज पर लगी दूधिया चांदनी और खूबसूरत ट्रे में सजे हुए एक बार, सिर्फ एक बार खाली हो जाने के बाद, कुरसियों के नीचे मेहमानों की एड़ियों और ठोकरों से अपना

इधर दोनों के घरवालों का इनकार बढ़ता जाता था, उधर दोनों का प्यार । एक तरफ पहरे बैठाये जाते, दूसरी ओर दोनों पहरे को तोड़ डालते । एक तरफ से सख्ती बढ़ती जाती, दूसरी ओर से मुहब्बत ।

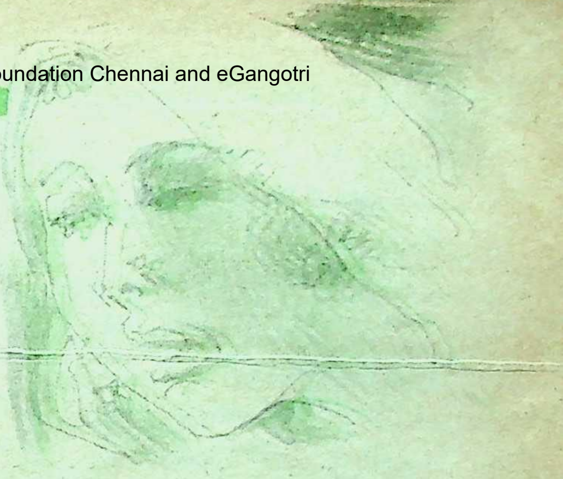

चिटकता-टूटता बजूद बचाने के लिए चकराते घूम रहे थे । कितना दुखदायी होता है, यह खालीपन लेकिन उन प्यालों का क्या कुसूर, लूटनेवाले तो खुद भी बहुत साफ-सुथरे और अच्छी सूरतवाले थे । बड़े प्यार से छुआ था उन्होंने सहेजकर होंठों तक लाये थे । बूंद-बूंद निचोड़ा था । घूंट-घूंट ग्रहण किया था और फिर अचानक ठोकरों में डाल दिया । खाली कप की चिंता किसे हो सकती थी ?

अचानक मेहमानों की भीड़ में हलकी-सी हलचल हुई । किसी कोने से आवाज आयी कि मौलाना साहब आ गये और रोशनी के जमघट में एक नूरानी चेहरा दिखायी दिया । लंबी सफेद दाढ़ी, काली शेरवानी से सजा-सजाया एक वजूद, चार-छह स्वागतकर्ताओं के बीच घिरा मंच की ओर बढ़ रहा था । एक हाथ में सुंदर-सा डंडा,एक हाथ में मोटी-सी पोथी, लगता था कोई धार्मिक व्यक्ति नहीं, बल्कि समूचा धर्म अपने शाश्वत अथवा तथाकथित प्रतीकों के साथ इस शामियाने में आ गया है । काली अचकन, सफेद दाढ़ी, व्यक्तित्व का दोरंगापन अथवा स्याह-सफेद कुछ भी करने की संस्तुति पर आधारित प्रमाण-पत्र-जैसा था । किताब और डंडे के प्रति कुछ ठीक से नहीं कहा जा सकता था कि पोथी पढ़ते समय डंडा अनिवार्य था अथवा पोथी पढ़ाते समय । । नवाब हुसैन ने जमील के कान में चुपके से कुछ कहा, फूलों के सेहरे ढके हुए जमील ने चौंककर डंडाधारी मौलाना को देखा, फिर सीधा होकर बैठ गया जैसे डंडे के प्रति मौन समर्पण हो कि शब्द-विहीन स्वीकृति— 'आप जो चाहो मनवा लो, हम तैयार हैं ।'

मौलाना को मंच पर बैठने में उतना ही समय लगा, जितनी देर में अमरीका का चुनाव आयोग अपनी चुनाव प्रक्रिया पूरी कर लेता है । पोथी खोली गयी । मौलाना ने घूर-घूर कर मंच पर बैठे उन ला-मजहब नौजवानों को देखा, जो अंगरेजी कपड़ा पहने मजहब के खिलाफ काम कर रहे थे और मजहब को पहनने की चीज नहीं समझ रहे थे । फिर उन्होंने खरखराते स्वर में गरजते हुए कहा, 'गवाह' ? और एक सूटेड-बूटेड बुजुर्ग शर्मिंदा से आगे बढ़े । मौलाना ने पैनी निगाहों से बल्कि,बींधती और छेद करती नजरों से उन्हें घूरते हुए पूछा, "आप ? आपकी तारीफ ?"

'जी,मैं लड़की का बाप हूं', मिमयाते स्वर में जवाब दिया गया, इतनी शर्मिंदगी से कोई मुजरिम भी इकबाल-ए-जुर्म नहीं करता । लग रहा था जैसे कह रहे हों, 'जी मैं चोर हूं ।'

"एक गवाह और लाइए", मौलाना गरजे । एक गवाह और हाजिर हुआ ।

मौलाना ने निकाहनामे पर रिक्त स्थानों की पूर्ति करनी शुरू कर दी । सवाल के रूप में वह एक या दो शब्द बोलते थे । मंच पर गवाह की गुहार पर आये बुजुर्गों में से कोई एक तुरंत उत्तर देता था । जैसे यदि उत्तर देने में देर हुई तो

किसी दूसरे कोने से बजर बज जाएगा और टीम 'ए' के स्थान पर टीम 'बी' का स्कोर बढ़ जाएगा ।

"नौशा !" मौलाना दहाड़े ।

"जमील अहमद खां," उत्तर मिला ।

"नौशा के वालिद ?"

"शकील अहमद खां ।"

"उम्र ?"

सन्नाटा . . . .

मौलाना ने घूरते हुए दोनों गवाहों को देखा,

"जी पैंसठ साल," लड़की के बाप ने सहम कर उत्तर दिया ।

"मैं लड़के की उम्र पूछ रहा हूं," मौलाना पूरी ताकत से चीखे ।

थोड़ी देर के बाद दूल्हे की उम्र बतायी गयी ।

इसी तरह सारे खाली खाने भरे गये । फिर मौलाना ने दोनों गवाहों को यह समझा-बुझा कर निकाहनामा सौंपकर अंदर भेजा कि वकील और गवाह दोनों ही लड़की की 'हूं' अपने कान से सुन लें और तीन बार कहला लें, फिर लड़की से निकाहनामे पर दस्तखत करवा लें । दोनों गवाह और एक वकील एक बड़ी जिम्मेदारी लेकर उस ओर चले, जहां दुल्हन बैठी थी ।

× × ×

कमरे में शाजिया फूलों और कपड़ों में सजी-धजी सहेलियों के झुरमुट में बैठी थी । गवाह और वकील कमरे में दाखिल हुए । वकील साहब ने गला साफ करते हुए खंखार कर कहा, "बेटी शाजिया मैं करम अली वल्द रफी अहमद तुम्हारा निकाह जमील अहमद खां वल्द शकील अहमद खां व एक मेहर मवज्जिल मुबलिग एक लाख रुपया सि राएजुल वक्त पढ़वाने के लिए तुम से मंजूरी ले आया हूं । क्या तुम मुझे अपना वकील बनाते हो ?"

थोड़ी देर की खामोशी के बाद शाजिया ने 'जी हां' कह दिया । यह वाक्य तीन बार कहा गया । दोनों गवाहों ने भी सुना और सभी के चेहरे पर मुसकान खेलने लगी । करमअली साहब ने शाजिया की एक सहेली की ओर निकाहनामा बढ़ाते हुए कहा, "बेटी शाजिया, निकाहनामे पर दस्तखतकर दो ।"

दुल्हन का घूंघट सरकाया गया । निकाहनामा उसके हाथ में दिया गया । पूरे कमरे में सन्नाटा था । शाजिया ने दाहिने हाथ में कलम थामा । कलम की नोक निकाहनामे के शीर्ष पर छपी इबारत से कुछ ऊपर दायीं से बायीं ओर को सरकने लगी । जैसे, शाजिया कलम की नोक से शब्द-शब्द पढ़कर मन ही मन उसका विश्लेषण कर रही हो । इबारत खतम होते ही उसके हाथ में पेन कांपने लगा और एक लंबी-सी चीख के साथ 'नहीं' कहती हुई शाजिया बेहोश हो गयी ।

निकाहनामे में सबसे ऊपर लिखी गयी इबारत कुछ इस तरह थी—

'और तुम नेक रहने के लिए निकाह करो, एक औरत से, दो से तीन से या जो तुम्हें अच्छी लगें ।'

—८९/१५६ बांस मंडी
कानपुर-२०८००

द्वितीय पुरस्कार

उड़ान

● डॉ. अल्का सक्सैना

आज फिर उसका पत्र आया है । नीला लिफाफा देखते ही मैं समझ गयी कि यह पत्र गायत्री के लिए है । मैं पत्र उठाकर रख देती हूं । गायत्री अभी अभ्यास कर रही है । उसके कंठ से उठते मधुर स्वर सुनकर यह अहसास नहीं होता कि उसके अंदर इतने दुख भरे हैं—स्वर के उतार-चढ़ाव, तानपूरे की झंकार और तबले की ताल से पूरा घर गूंज रहा है । नित्य प्रातः दस बजे से साढ़े ग्यारह बजे तक वह गायन का अभ्यास करती है । तबले पर संगत करने छोटे मियां दस बजे से कुछ पहले ही आ जाते हैं। मैं पत्र को अपने पलंग पर रखकर घर के अन्य कार्यों में लग जाती हूं । छोटे मियां के जाने के बाद मैंने गायत्री को पत्र दिया । उसने पत्र उठाकर अलमारी में रख दिया । मुझे साफ दिख रहा था कि अलमारी में कम से कम बीस वैसे ही लिफाफे और रखे थे । उन्हीं पर उसने, बिना पत्र खोले ही, वह पत्र रख दिया । बड़े ही सहज भाव से बोली, "मां,मैं चाय बनाने जा रही हूं—क्या तुम्हारे लिए भी बना दूं ?" मैंने कोई उत्तर नहीं दिया । वह कमरे से चली गयी ।

गायत्री को यहां आये तीन महीने हो गये हैं । तब से हर सप्ताह उसके नाम पत्र आता है । वह बिना पढ़े ही उसे रख देती है । यह पत्र उसका पति राजीव किसी आशा में लिखता होगा । वह शायद यह नहीं जानता कि यहां उन्हें खोला भी नहीं जाता है । मेरे सामने राजीव का चेहरा आ जाता है । कितना मासूम, प्रभावशाली, प्रसन्नचित्त मुखड़ा है उसका । जब गायत्री ने मुझे उससे पहली बार मिलवाया था और कहा था कि मैं राजीव से शादी करना चाहती हूं तो मैं तुरंत मान गयी थी । आकर्षक व्यक्तित्व, अच्छा घर-परिवार व डॉक्टर लड़के को देखकर मैं क्यों और कैसे इनकार करती !

गायत्री की पसंद पर मुझे हमेशा से गर्व रहा है । सच तो यह है कि मुझे अपनी इकलौती संतान गायत्री पर आज भी नाज है । आज जब वह अपने पति को छोड़कर आयी है, तब भी मैं उसके निश्चय से खुश हूं । मुझे नहीं पता था कि उसमें इतना साहस भी है । मुझे एक बेटी की उतनी ही इच्छा थी, जितनी कि और लोगों को पुत्र के लिए होती है । यदि भगवान मुझे बेटी न देता तो मुझे उन लोगों से अधिक कष्ट होता, जिन्हें पुत्र नहीं मिलता । गायत्री का जन्म मेरी शादी के दो वर्ष और मेरे पति की असामयिक मृत्यु के चार माह बाद हुआ था । ऐसी परिस्थिति में मेरे रिश्तेदार व हितैषी यही प्रार्थना कर रहे थे कि मेरी गोद में पुत्र ही आये । पर शायद, भगवान की असीम कृपा थी कि उन्होंने मेरी कामना पूर्ण की । ऐसी प्रतिभाशाली योग्य पुत्री दी, जिससे शायद, मेरे दुख दूर हो सकें । उसके लालन-पालन में मैंने कोई कसर नहीं छोड़ी थी । हर अवसर पर मैंने उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया था ।

मुझे आज भी वे दिन याद हैं, जब उस

डॉ. अल्का सक्सैना डी. ए. वी. कॉलेज में अंगरेजी की प्रवक्ता हैं । कहानी एवं कविता लिखती हैं ।

'आस-पास जो घटनाएं घटती हैं, उनसे हृदय इतना उद्वेलित हो जाता है कि बरबस लेखनी उठ जाती है । रचनाओं में यथार्थ का चित्रण करते हुए, जीवन सत्य को सही एवं सरलतम ढंग से प्रस्तुत करूं— बस यही मेरा प्रयास है ।'

फूल-सी नन्हीं बच्ची के पहला टीका लगा था । दर्द से वह चीख पड़ी थी और मेरी आंखें नम हो आयीं थीं । आज जब उसके मन पर इतना गहरा घाव लगा है, मैं नहीं रोई हूं । सारे आंसू जैसे सूख गये हैं । मैं आज भी उसके साथ हूं—उसे प्रेरित कर रही हूं कि वह जो करना चाहे करे, मैं उसके साथ हूं ।

वह अब राजीव के पास वापस नहीं जाना चाहती । सब कुछ जानते हुए मैं उसे वापस जाने के लिए कैसे कह सकती हूं ? शादी के बाद जब वह मेरे पास पहली बार आयी थी, तो वह कितनी प्रसन्न थी । राजीव की प्रशंसा करते नहीं थक रही थी । राजीव उसी शहर में कार्यरत था, तो उन लोगों से टेलीफोन पर तो रोज ही बात हो जाती थी । राजीव एक कुशल डॉक्टर है । धीरे-धीरे उनकी कुशलता बढ़ती गयी और मरीजों की संख्या भी बढ़ती गयी । जहां एक तरफ उसकी शौहरत बढ़ी, वहीं दूसरी तरफ अधिक से अधिक पैसे कमाने की उसकी लालसा भी बढ़ने लगी । वह एक बड़ा नर्सिंग होम बनवाना चाहता था । उसे यह धुन सवार हो गयी कि जल्दी ही नर्सिंग होम बन जाना चाहिए ।

जब मनुष्य में लालच आ जाता है, तो उसमें मानवता के गुण समाप्त हो जाते हैं । राजीव को भी अमानुष बनने में देर नहीं लगी । वह गायत्री से कहता, पैसों का प्रबंध करना आवश्यक है । चूंकि उसके माता-पिता को अभी दो भाई-बहनों को पढ़ाना है और ब्याह-शादी करनी है, अतः वह उनसे कुछ नहीं मांग सकता । और चूंकि तुम्हारी मां एक विधवा है, अपने पति का व्यवसाय संभालती हैं, उनकी कोई और जिम्मेदारी नहीं है, अतः वह अपना बंगला उसे दे दें और हम लोगों के साथ रहें ।

गायत्री इस सुझाव से स्तब्ध रह गयी । उसने इस बात का जिक्र मुझसे नहीं किया । राजीव उसे रोज मुझसे बात करने के लिए कहता रहा, पर वह टालती रही ।

एक दिन जब गायत्री ने साफ इनकार कर दिया, तो राजीव ने पहली बार उस पर हाथ उठा दिया । फिर यह सिलसिला बढ़ता ही चला गया । वह राजीव जो कभी उसकी आवाज पर, गायन पर मंत्रमुग्ध था, वही उसे ताने देने लगा । गायत्री को गाते सुन उस पर चिल्लाता था—'अब बंद भी कर, सुबह-शाम गाने बैठ जाती है । मैंने तुम-जैसी घरेलू लड़की से नाहक ही शादी कर ली । डॉक्टर लड़की होती, तो मेरा

हाथ बंटाती । चार पैसे कमाकर लाती ।'

घरेलू लड़की कहकर राजीव ने गायत्री का जो अपमान किया, यह सुनकर गायत्री दंग रह गयी । गायत्री एक प्रतिष्ठित गायिका थी । साल में एक-दो बार वह प्रतिष्ठित बड़े प्रोग्रामों में आमंत्रित होती थी । वह घर पर भी लड़कियों को संगीत की शिक्षा देती थी । कितनी ही बार कॉलेज में उसे नौकरी करने के अवसर मिले, पर वह उसके लिए इच्छुक नहीं थी । इन सबके अलावा वह कुछ समय अनाथालय व अन्य सामाजिक संस्थाओं में जाकर समाज-सेवा में लगा देती थी । यदि इस तरह से घर और बाहर में सामंजस्य बनाये रखनेवाली युवती को घरेलू लड़की कहकर अपमानित किया जाए, तो यह बहुत ही लज्जाजनक बात थी ।

कभी-कभी भगवान भी निष्ठुर हो जाते हैं । गायत्री के कोई संतान नहीं हुई । डॉक्टर ने जांच कर बताया कि वह मां कभी नहीं बन सकती । इस वज्रपात से वह बिलकुल टूट-सी गयी । मुझे भी यह सुनकर बहुत दुख पहुंचा । पर इस बात का सबसे अधिक फायदा उठाया राजीव ने । अन्य सारी बातों के साथ वह अब उसे बांझ होने का भी ताना देने लगा । अपने भाग्य को कोसता कि उसे कैसी पत्नी मिली है । गायत्री का आत्मविश्वास धीरे-धीरे टूटने लगा ।

एक दिन फोन पर उसने मुझे सारी बात बतायी । मेरे तो पैरों तले धरती खिसक गयी । तो क्या यही राजीव का असली चेहरा था ? वह आकर्षक, प्रसन्नचित्त व्यक्तित्व एक दिखावा था ? मानवता के बिना एक आकर्षक चेहरे का क्या महत्त्व, जो व्यक्ति एक औरत, अपनी पत्नी का सम्मान न कर सके, उस पर लानत है । आज आदमी-औरत के समान अधिकार की बात हो रही है—पर जो घर-घर हो रहा है, वह इसके विपरीत है ।

जब गायत्री ने रुंधे कंठ से पूछा, 'मां, मैं आपके पास आना चाहती हूं । आप मुझे राजीव के पास वापस मत भेजना । यदि आप भेजना चाहें तो फिर मैं कहीं और चली जाऊं ?'

मैंने उसे हमेशा की तरह सांत्वना दी और उसे यह विश्वास दिलाया कि मैं उससे बिलकुल सहमत हूं ।

मैंने तुरंत गायत्री का कमरा साफ किया । उसका तानपूरा पोंछा, उसे मिला कर । तार छेड़कर, स्वर मिलाकर, देखा । उसे यथा स्थान रखा । उसके पसंद का खाना बनाया और बेसब्री से उसके आने का इंतजार करने लगी । इसी बीच छोटे मियां को भी कहलवा दिया कि वह अगले दिन से आना शुरू कर दें ।

शाम छह बजे जब टैक्सी रुकने की आवाज आयी, तो मैं समझ गयी थी कि गायत्री ही होगी । उसका निर्जीव चेहरा, लाल-सूजी आंखें और निढाल शरीर देखकर मुझे जो कष्ट हुआ, मैं उसका वर्णन नहीं कर सकती । मैंने आगे बढ़कर उसे गले लगा लिया । आंसुओं की अविरल धारा हम दोनों की आंखों से बहती रही । हम दोनों चुप थीं । कहने-सुनने को कुछ नहीं था । उसके आने और मेरा उसे गले लगा लेने से ही सब कुछ कह दिया था । वह राजीव को बता कर मेरे पास आयी थी । उस रात शायद, हम दोनों ही नहीं सोयीं थी । गायत्री मेरे पास लेटी थी और सोने का बहाना कर आंखें बंद किये लेटी थी । मैं भी आंखें बंद किये—मन में उठते तूफान से जूझ रही थी ।

सुबह सूर्य की पहली किरणें मेरी खिड़की से होकर कमरे को प्रकाशित कर रही थीं । वह लंबी अंधेरी रात का अंत करते हुए सुखद संदेश सुनाती हुई चेहरे पर पड़ रही थीं । चिड़ियों की चहचहाहट भी मानो नयी सुबह का स्वागत कर रही थीं । यह सब देखकर लगा कि वास्तव में आज एक नयी सुबह है । मेरी प्यारी बेटी की जिंदगी का नया मोड़ है । उसे फिर से उलझे ताने-बाने को सुलझाना है । एक नयी तसवीर बनानी है ।

मैंने सोती हुई गायत्री को अपने हृदय से लगा लिया । उसने आंखें खोल मुझे देखा ।

> ***'पति का घर ही लड़की के लिए सब कुछ होता है । वह तो परायी है । उसे वापस भेज दो ।' मैं सबकी बातें सुन-सुनकर हैरान रह गयी । मुझे उन पर क्रोध आया ।***

मेरी आंखों की भाषा पढ़ते ही वह समझ गयी कि उसे हताश नहीं होना है ।

बहुत साहसी है मेरी बेटी ।

छोटे मियां आये तो उन्हें देख, वह खुशी से झूम उठी । उस दिन पूरे एक साल बाद मेरे घर में वही पुरानी मिठासभरी आवाज गूंज रही थी । पूरे दिन गायत्री अपनी संगीत की पुस्तकें व्यवस्थित करने में व्यस्त रही । सुबह कई बार फोन की घंटी बजी । जब-जब मैंने फोन उठाया तो उधर से कोई नहीं बोला । जब गायत्री ने फोन उठाया तो मैंने सुना कि गायत्री फोन पर कह रही थी कि 'मैं बात नहीं करना चाहती ।' इसके बाद उसने फोन काट दिया, राजीव ने फिर कई बार फोन मिलाया, पर बाद में तो गायत्री ने हर बार फोन काट दिया ।

शीघ्र ही सबको पता चल गया कि गायत्री पति को छोड़कर आ गयी है । मेरे सभी मित्र व रिश्तेदार मुझसे कहते कि गायत्री को समझा-बुझाकर भेज दो । इस तरह कैसे चलेगा ? पति का घर ही लड़की के लिए सब कुछ होता है । वह तो परायी है । उसे वापस भेज दो । मैं सबकी बातें सुन-सुन कर हैरान रह गयी । मुझे उन पर क्रोध नहीं आया । उनकी कायरता पर तरस आया । इन्हीं कायरों की वजह से आज निर्दोष लड़कियां अपमानित हो रही हैं । जलायी जा रही हैं । इन्हें कैसे समझाया जाए कि अब शांत, चुपचाप रहकर

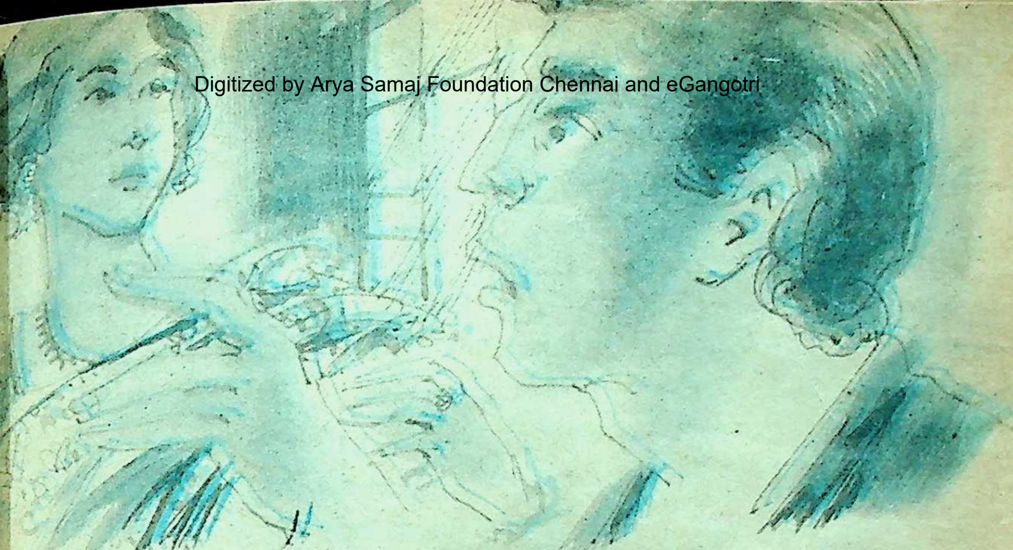

सहने का जमाना बीत गया है । निर्दोष होकर भी चुपचाप सब कष्ट सहना एक अपराध है । तुम सब अपराधी हो । पर यह कैसी विडंबना है कि इस पुरुष प्रधान समाज में आज मेरी बेटी और मैं अपराधी ठहरायी जा रही हूं ।

शायद, यह सिलसिला यूं ही चलता रहेगा । पर मैं संतुष्ट हूं कि मैंने सही कदम उठाया है । मुझे इस कायर समाज की आवश्यकता नहीं है । यदि हम ही आगे नहीं आएंगे और केवल कहते रहेंगे कि ऐसा होना चाहिए, तो कुछ नहीं हो पाएगा । पति के जुल्मों के प्रति आवाज उठाकर आज गायत्री आ गयी है, तो यह एक कलंक लगनेवाली बात नहीं है । वह सर्वगुण संपन्न है । पूरी जिंदगी उसके सामने है । वह सक्षम है—तो क्यों असफल विवाह की चार दीवारी में कैद रहे । जहां उसका दम घुट जाए । उसके मधुर स्वर मंद पड़ जाएं । क्यों न वो उस पिंजड़े से उड़कर स्वच्छंद हो खुले आसमान में उड़ान भरे ?

'मां,चाय लो,' गायत्री की आवाज सुन मैं चौंक जाती हूं । चाय पी कर मैं अपने कार्य में व्यस्त हो जाती हूं । तभी फोन की घंटी बजती है । गायत्री फोन उठाती है और कुछ बात करती है । मेरे गले में बाहें डाल खुशी से झूमकर बताती है कि न्यूयार्क में उसके प्रोग्राम का आयोजन हुआ है और अगले हफ़्ते ही उसे वहां जाना होगा । भागकर वह अपने कमरे में जाती है और बाहर बगीचे में मुझे भी खींच ले जाती है ।

वह अलमारी से निकालकर नीले लिफाफों को ढेर बना देती है । और फिर उनमें आग लगा देती है । मिनटों में वे जलकर राख हो जाते हैं ।

आज गायत्री को छोड़ने हवाई अड्डे जाना है । गायत्री की खुशी देख मेरा मन गद्‌गद् हो उठता है । वह हाथ हिलाती हुई 'सिक्योरिटी चैक' के लिए चली जाती है । उड़ान के समय की घोषणा होती है । दूर उड़ता विमान—दूर उड़ता स्वतंत्र पक्षी और हवा में उड़ती मैं और मेरी खुशी ।

— १७, [illegible] कॉलोनी
पोस्ट : जूही, कानपुर-२०८०१४

तृतीय पुरस्कार

यहां इलाज मुफ्त है...

गोविंद उपाध्याय

सुबह भोले बाबू की आंख खुली तो हतप्रभ थे । बाबूजी लुंज-पुंज से रिक्शे से उतर रहे थे । साथ ही छोटा भाई भी था ।

'क्या बात है सुरेश ? क्या हो गया ? कैसे आना हुआ है ?' प्रश्नों की बौछार कर दी भोले बाबू ने ।

'बड़े भइया,बाबूजी की आंत फिर उतर आयी है । एक तो बुढ़ापा ऊपर से यह बीमारी । गांव के डॉक्टर ने कहा कि शहर में ऑपरेशन ही इसका इलाज है ।' सुरेश का मायूस व भर्राया हुआ स्वर भोले बाबू को भी अंदर तक भेद गया ।

भोले बाबू को यह अहसास था कि बाबूजी ही तो हैं, जिन्होंने तमाम कष्टों को सहकर उसे इस योग्य बनाया कि वह एक सम्मानपूर्वक जीवन जी रहा है । भोले बाबू बाबूजी को बहुत चाहते हैं ।

वह बाबूजी के लिए सब कुछ कर सकते हैं, लेकिन उसके लिए पैसे का कहां से इंतजाम करें । यक्ष प्रश्न के समान एक जटिल समस्या थी उनके सामने । तनख्वाह का एक तिहाई हिस्सा किश्तों में खरीदे सामानों पर ही चला जाता था । फिर सुरसा के समान मुंह बाये खड़ी मंहगाई के उदर में शेष तनख्वाह मात्र कुछ निवाले के समान थी । ऐसे में बाबूजी का ऑपरेशन... ।

जीवन का आदर्श वहीं तक साथ देता है, जहां तक अर्थ रूपी नवयौवना का साहचर्य हो, नहीं तो सारे आदर्श नगर पालिका के कूड़े का ढेर से लगने लगते हैं, जिसमें अभाव, भौतिक सुविधाओं को न पाने की कुंठा, नैतिकता के पतन की सड़ांध ही सड़ांध होती है ।

बहुत सोचा-विचारा, दोस्त-शुभचिंतकों से सलाह-मशवरा लिया । निजी चिकित्सालयों में लंबी-चौड़ी फीस का ब्यौरा भोले बाबू का अपना ही ब्लड प्रेशर बढ़ाने के लिए काफी था । सरकारी चिकित्सालय पर भरोसा कम हो रहा था । पर कहीं न कहीं समझौता तो करना ही था ।

फिर घर में एक अदद पत्नी भी थी । उसकी सलाह भी जरूरी थी । पत्नी ने तो साफ-साफ कह दिया था, 'ऐसे ढंग से सोचो कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे । बुड्ढे का इलाज भी हो जाए । यह भी न लगे कि हमने कोई कमी की है और पैसे भी ज्यादा खर्च न हों ।'

बाबूजी दो दिन से अस्थायी इलाज से जीवन की सांसें खींच रहे थे । ऑपरेशन जरूरी था । भोले बाबू का मस्तिष्क कोई काम नहीं कर पा रहा था ।

अचानक भोले बाबू के दिमाग में एक खयाल कौंध ही गया । खयाल बुरा भी नहीं कहा जा सकता था । ऑपरेशन तो कराना ही था । उन्होंने अपने विभागीय अस्पताल के डॉक्टर को पकड़ा और जिला अस्पताल के लिए 'रेफर' करा लिया । वहां बड़े डॉक्टर थे । उनके अभ्यस्त हाथों से बाजूजी का ऑपरेशन ठीक-ठाक हो जाना निश्चित था ।

जिला अस्पताल में ओ.पी.डी. के पास अभी रिक्शा खड़ा ही हुआ था कि एक छोकरा उनके सामने चिराग के जिन्न की भांति प्रगट हुआ । बोला, 'क्या हो गया बाबूजी, कैसे आया ?'

भोले बाबू ने दुखड़ा बता डाला ।

जीवन का आदर्श वहीं तक साथ देता है, जहां तक अर्थ रूपी नवयौवना का साहचर्य हो, नहीं तो सारे आदर्श नगरपालिका के कूड़े का ढेर से लगने लगते हैं, जिनमें अभाव, भौतिक सुविधाओं को न पाने की कुंठा, नैतिकता के पतन की सड़ांध से सड़ांध होती है ।

लड़का जैसे प्रगट हुआ था, वैसे ही अंतर्ध्यान हो गया । ओ.पी.डी. की लंबी लाइन देखकर भोले बाबू का तिरपन कांप गया, 'बाप रे, शाम तक का समय तो परची ही बनाने में निकल जाएगा । फिर इलाज क्या खाक होगा ?'

बाबूजी को अस्पताल के गंदे फर्श पर लिटाकर, वह लाइन में परची बनवाने के लिए खड़े हो गये । बाबूजी गंदे फर्श पर पड़े कराह रहे थे । पास ही पड़ा एक खजहा कुत्ता जीभ निकाले उनकी तरफ टुकुर-टुकुर तक रहा था । भोले बाबू ने लाइन से खड़े ही खड़े अपने जन्मदाता को देखा । एक बार उनके अंदर का पुत्र जागा कि चलें किसी निजी चिकित्सालय में, लेकिन फिर घरवाली का तमतमाया हुआ चेहरा आंखों में कौंध गया और वे ठंडे पड़ गये ।

'अरे बाबू, आप लाइन में काहे खड़ा हो गये ? थोड़ा-सा सब्र करना था । मैं डॉक्टर से बात करके आया हूं । आपका काम फिट समझो...,' चिराग के जिन्न की तरह वह लड़का फिर प्रगट होकर बोला ।

भोले बाबू को किसी फरिश्ते से कम नहीं

गोविंद उपाध्याय केंद्रीय सरकार के एक प्रतिष्ठान में अनुरेखक । सन १९८० से लेखन कर्म में प्रवृत्त । अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां प्रकाशित ।

लगा वह लड़का । डूबते के लिए तिनके का सहारा था वह । भोले बाबू उसके पीछे हो लिये ।

डॉक्टर के केबिन में बाबूजी को सहारा देकर बैठाया । डॉक्टर ने सरसरी तौर पर मुआयना किया और फिर उस लड़के के कान में कुछ फुसफुसाकर कहा । लड़के ने जल्दी-जल्दी सिर हिलाया और फिर भोले बाबू की तरफ देखा । भोले बाबू को लगा कि अभी डॉक्टर ऑपरेशन से इनकार के लिए कहेगा । लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ ।

डॉक्टर ने मुसकराकर कहा, 'आप बिलकुल ही परेशान न हों,मामूली-सा ऑपरेशन है । कल हो जाएगा । बाकी, सारा इंतजाम यह लड़का कर ही देगा । आपकी तकदीर अच्छी है, जो आपसे यह टकरा गया । अब आप निश्चिंत हो जाएं ।'

भोले बाबू की जान में जान आयी । आधा बोझ तो मानो एक झटके से उनके सिर से उतर गया । शेष...

भोले बाबू के बाबूजी को बिस्तर मिल गया । बाबूजी उस पर लेट गये । कुछ सफेद-लाल दवाएं भी मिल गयीं । यह सारा काम अस्पताल का वह लड़का श्रद्धा भाव से करता रहा । भोले बाबू की आत्मा उस पर सौ-सौ जान से न्यौछावर हो गयी । इतना तो उनका अपना सगा भाई सुरेश भी न करता ।

'भाई साहब, अब कल डॉक्टर साहब ऑपरेशन करेंगे ही । लेकिन आपने डॉक्टर साहब को कुछ दे दिया है न । नहीं दिया है तो दे दीजिए... डॉक्टर हैं भाई, खुश होंगे, तो आपका मरीज जल्दी अच्छा हो जाएगा । नहीं तो...,' लड़के ने शेष वाक्य वैसे ही छोड़ दिया ।

'नहीं तो...' के आगे तो भोले बाबू को कुछ समझना भी शेष नहीं था । वे डॉक्टर के केबिन में वापस पहुंचे । डॉक्टर के गंभीर चेहरे पर एक बार फिर मुसकराहट चमक गयी, 'आपका सब काम हो गया न ! लड़के ने सब बता दिया है न आपको ? बहुत अच्छा लड़का है । अरे, आपने उसको कुछ दे दिया कि नहीं... गरीब लोग हैं, सौ-पचास दे दो भाई, तभी तो जमकर सेवा करेगा तुम्हारे मरीज की... ।''

भोले बाबू को लगा कि वे व्यवस्था के एक ऐसे मकड़जाल में फंसने लगे हैं, जहां सब एक ही भाषा बोलते हैं—रिश्वत की भाषा । लेकिन मजबूरी की बेड़ियां उन्हें इस मकड़जाल से निकलने भी नहीं दे सकतीं ।

अंततः एक हजार रुपये डॉक्टर को और सौ

रुपये उस लड़के को देकर अस्पताल में पहले दिन की उपस्थिति दर्ज करा ली भोले बाबू ने ।

शाम को छोटा भाई सुरेश बाबूजी की रात की देखभाल के लिए आ गया था । भोले बाबू आठ घंटे की जेल के बाद घर की तरफ चल पड़े । मगर बस में बैठे-बैठे वह कल के बारे में सोच रहे थे—कहीं वह गलती पर तो नहीं हैं । क्या बाबूजी ठीक हो जाएंगे ? डॉक्टर तो अच्छा ही है । यदि बाबूजी को कुछ हो गया तो... तो क्या ? वैसे भी उनका जीना या न जीना क्या मायने रखता है । सत्तर से ऊपर के तो हो ही चुके हैं— ठीक हुए तो दो-चार वर्ष और जी लेंगे... वैसे ही बीमार घिस-घिस कर.. ।

घर आकर पत्नी को उन्होंने बस इतना ही बताया कि कल ऑपरेशन है । पत्नी का तनाव भी जैसे कुछ कम हुआ । बिना गांठ के पैसे खर्च किये हुए सब कुछ हो जाए, इससे बेहतर भला और क्या हो सकता है ?

दूसरे दिन सात बजे ही भोले बाबू जिला अस्पताल में उपस्थित थे । दो-चार मित्र भी उनके साथ थे । बाबूजी बिना कुछ खाये-पीये बारह बजे तक ऑपरेशन थियेटर के दरवाजे पर पड़े रहे । डॉक्टर ने पहले पुलिस केस वाले मरीजों को निपटाया, फिर कथित बड़े ऑपरेशन किये । ठीक बारह बजकर पंद्रह मिनट पर बाबूजी का नाम पुकारा गया । ऑपरेशन थियेटर के अंदर बाबूजी को स्ट्रेचर पर ले जाते देख एक बार फिर भोले बाबू को लगा कि बाबूजी जा रहे हैं कसाई बाड़े में, जहां उनकी बोटियां-बोटियां अलग कर दी जाएंगी और वह पित्रंहंता का दोष लिए सारी जिंदगी जिएंगे । पर

ऐसा कुछ भी नहीं हुआ । भोले बाबू के सामने ही ऑपरेशन थियेटर दुबारा खुला और बाबूजी बेहोश हालत में उसमें से बाहर निकलते दिखायी दिये ।

'बधाई हो, तुम्हारे बाबूजी का ऑपरेशन सफल रहा । हां,उनके हार्निया के ऑपरेशन के साथ ही अंडकोष भी निकालना पड़ा । वे दोनों भी खराब हो चुके थे... ।' डॉक्टर ने भोले बाबू की पीठ थपथपाते हुए कहा ।

भोले बाबू को एक क्षण के लिए अटपटा-सा लगा कि बाबूजी को बधिया भी कर दिया इस डॉक्टर ने । पर तत्काल ही उन्होंने इस विचार को झटक दिया । सोचा, जान है तो जहान है ।

'अरे हां, बेहोशी के डॉक्टर व ऑपरेशन थियेटर के कर्मचारियों को बख्शीश दे देना,' डॉक्टर को जैसे कुछ याद आया ।

'जी कितना ऽऽऽ कितने पैसे देने पड़ेंगे ।' भोले बाबू की सांसें टूटने लगी थीं, उनका अपना मन फिर बैठने लगा था ।

'ज्यादा नहीं, एक एनेसथिसिया डॉक्टर, दो सहायक... एक ऑपरेटर... आठ सौ दे दो,' डॉक्टर ने सोचने की मुद्रा में हिसाब लगाते हुए कहा ।

भोले बाबू ने वह भी कर दिया । जब तक बाबूजी के टांके नहीं कटे, तब तक पट्टीवाले को, स्वीपर को, इंजेक्शन लगानेवाले को... यानी हर काम का एक अघोषित पारिश्रमिक भोले बाबू को देना पड़ा ।

आखिरकार, वह दिन आ ही गया, जब भोले बाबू को बाबूजी को रिक्शे पर बैठाकर अस्पताल से घर के लिए प्रस्थान करना था । बाबूजी कमजोर थे । बढ़ी हुई दाढ़ी से उनका चेहरा और ज्यादा दयनीय लग रहा था । सुरे रिक्शा लाने गया था । भोले बाबू गेट पर बाबूजी को थामे खड़े थे । पास ही नीले अक्ष में बड़ा-सा साइनबोर्ड लगा था—जिला अस्पताल । उसके पास ही एक पीले रंग का छोटा बोर्ड था । जिसको अनचाहे ही भोले बा पढ़ने लगे—'यहां सभी प्रकार की चिकित्सीय सलाह व इलाज मुफ्त होता है । कृपया किसी भी व्यक्ति को कोई भी राशि न दें ।'

भोले बाबू के चेहरे पर एक फीकी हंसी उभर आयी । बोर्ड के नीचे वही खजहा कुत्ता जीभ फैलाये हांफ रहा था ।

—२५७/जी.वन.टी

अरमापुर स्टेट, कानपुर-२०८०

शादी की एक शर्त्त

फिलीपींस की राजधानी मनीला के ३०० कि.मी. उत्तर स्थित अबरा प्रांत में विवाह के इच्छुक हर जोड़े को कम से कम दस पौधे लगाने और उनकी उचित देखभाल करने की शर्त्त पूरी करनी पड़ती है ।

विगत दो वर्षों में वहां हजारों पेड़ लगाये जा चुके हैं । इनकी उचित देखभाल में विवाहित जोड़े पूरी तन्मयता के साथ लगे रहते हैं ।

● विनोद कुमार लाल

सांप्रदायिकता जिसे छू तक नहीं पायी

• नूतन पांडेय

हाजो ! असम का ऐतिहासिक नगर सांप्रदायिकता जिसे छू तक नहीं पायी है । यह महज एक छोटा-सा कस्बा नहीं, वरन असम और भारत के लिए सांस्कृतिक धरोहर है ।

विशाल ब्रह्मपुत्र के तीर पर बसा है महानगर गुवाहाटी । परंतु सराईघाट पुल से ब्रह्मपुत्र को पार करते हीं, जैसे सब कुछ पीछे छूट जाता है—लोगों की भीड़ । भीड़ का कोलाहल और वाहनों का शोरगुल । अर्थात एक ओर गुवाहाटी है, तो दूसरी ओर अनेक छोटे-बड़े कस्बे । इन्हीं कस्बों में एक कस्बा है—हाजो ।

महानगर से मात्र ५० किलोमीटर की दूरी पर है हाजो । नदी की दूसरी ओर की सड़क ददरा होती हुई, वहां तक पहुंचती है । सड़कें सकरी हैं, लेकिन पक्की हैं । हालांकि, कोलतार से बनी इस पक्की सड़क की जर्जरता ऐसे नजर आती है, जैसे कोई परित्यक्त नारी हो, जिसकी सुध लेनेवाला कोई नहीं हो ।

इस टूटी ऊबड़-खाबड़ सड़क से गुजरते हुए भी यहां के प्राकृतिक सौंदर्य के कारण एक सुख का एहसास होता है । महानदी ब्रह्मपुत्र के साथ-साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है यह सड़क । ब्रह्मपुत्र से उठती शीतल बयार सड़क से गुजरनेवालों को छूती हुई आगे निकल जाती है । पर यह क्या ? सड़क को मुड़ना पड़ता है क्योंकि, सामने खड़ी हैं दृढ़, काली, पथरीली चट्टानें । बायें नजर घूमती है तो ब्रह्मपुत्र का विशाल पाट । किनारों का दूर-दूर तक कहीं पता नहीं । दाहिनी ओर नजर जाती है, तो दिखायी देती हैं चट्टानों की ऊबड़-खाबड़ कतारें । चट्टानों की छाती को फोड़कर निकले कुछ जंगली पेड़-पौधे, अपने अस्तित्व का आभास कराकर हौले-हौले झूम रहे हैं । अत्यंत मनोरम है यहां का दृश्य ।

दृश्य एकरसता पैदा करे, इससे पहले ही इसमें परिवर्तन आता है । सड़क अपनी दिशा में आगे बढ़ रही है, परंतु नदी को उसने अलविदा कह दिया है । दूर रह जाती है ब्रह्मपुत्र और उसे निहारती चट्टानों की कतारें ।

हाजो के रास्ते में

अब शुरू होता है खेर और धान के लहलहाते खेतों का सिलसिला और गले मिलने को आतुर कतारबद्ध फूस और टीन के छप्परवाले घर । जहां-तहां विद्यमान हैं सुपारी, नारियल के पेड़ और बांस के झुरमुट ।

सोंधी मिट्टी की खुशबू जहां एक ओर ग्रामीण जीवन के रंग को दर्शाती है, वहीं निरंतर गुजरती मारुति व एम्बेसडर कारें, खचाखच भरी सरकारी व निजी बसें और ट्रकों की कतारें शहरी जीवन का आभास दिलाती हैं । ब्रह्मपुत्र के इस ओर बसे इस क्षेत्र का परिवेश एवं रहन-सहन ऊपरी असम से बिलकुल भिन्न है—घरों की बनावट, आंगन, वातावरण एवं इस वातावरण के साथ रचे-बसे लोग और उन की वेशभूषा ।

दुर्गा की विदाई

यह टूटी-फूटी सकरी सड़क, शायद आये दिन ब्रह्मपुत्र की बाढ़ के थपेड़ों के कारण ही दयनीय हालत में है । फिर भी, अपने सीने पर निरंतर यातायात के बोझ को सहती हुई लोगों को खुशी-खुशी हाजो कस्बे तक पहुंचाती है । हमें भी उसने हाजो पहुंचा दिया । हाजो की तीर्थस्थली माधव-मंदिर के पास ।

दशहरे का दिन था उस दिन । मंदिर की सीमा क्षेत्र में ही एक दुर्गा प्रतिमा विसर्जन की तैयारी में खड़ी थीं । चारों ओर धूप और अगरबत्ती की खुशबू । पंडाल दस दिनों की चहल-पहल के बाद बीरान हो चुका था । दुर्गा की विदाई ने माहौल में एक सूनापन भर दिया था ।

जहां सड़क खतम होती है, वहां से बायीं ओर पहाड़ पर अवस्थित है—माधव का मंदिर तथा दायीं ओर है एक चौकोर तालाब । इस धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल पर गाड़ी से उतरते ही पंडों की मारामारी नहीं, बल्कि दुकानदारों की खींचातानी से दो-चार होना पड़ा । कई दुकानदार एक साथ करीब दौड़ आये । असमी और हिंदी की खिचड़ी भाषा, हल्ला-गुल्ला करते पांच-सात लोग पीछे लग ही गये । दो तरफ कतारबद्ध दुकानें थीं । कुछ स्थायी ए कुछ दुर्गापूजा के अवसर पर लगायी गयी स्थायी । अस्थायी दुकानों में छोटे-छोटे बिस् और चावल के मूढ़ी के पैकेट । साथ ही दो में सजे फूल, दीपक, सिंदूर, धूपबत्ती और इलायचीदानों के पैकेट ।

पांच सौ साल का कछुआ

बिस्कुट-मूढ़ी के पैकेट को देख उत्पन्न हु हमारी जिज्ञासा को शांत किया एक दुकानदा ने, जो हमें पास के तालाब में मछलियों औ कछुओं की उपस्थिति का बयान एक कुशल गाइड की तरह कर रहा था । वाकई ! जीव पहली बार मैंने इतने बड़े कछुओं के दर्शन किये । लोग इन कछुओ व मछलियों को खिलाने के लिए मूढ़ी और बिस्कुट खरीदते हैं हमने भी कुछ पैकेट खरीदे और सीढ़ियां उ घाट तक जा पहुंचे । दृश्य वास्तव में अद्भु था । सीढ़ियों पर से भोजन डालते लोग औ उन पर खाने के लिए टूटते बड़े-बड़े तीन-चा कछुए । कछुओं की लंबाई करीब साढ़े ती चार फुट और चौड़ाई दो फुट के लगभग ज होगी । निर्भय होकर भोजन स्वीकार रहे थे विभिन्न आकारों के और भी अनेक कछुए थे इन कछुओं के साथ मछलियां भी खाने को उछल-उछल कर लपक रही थीं । मछली कछुओं का यह समूह लोगों का अपना मि बना बैठा था । छोटे-छोटे बच्चे भी कछुओं निडर होकर छू रहे थे ।

हमने भी एक कछुए की पीठ पर हाथ फिराये । पत्थर जैसी सख्त थी उसकी पीठ

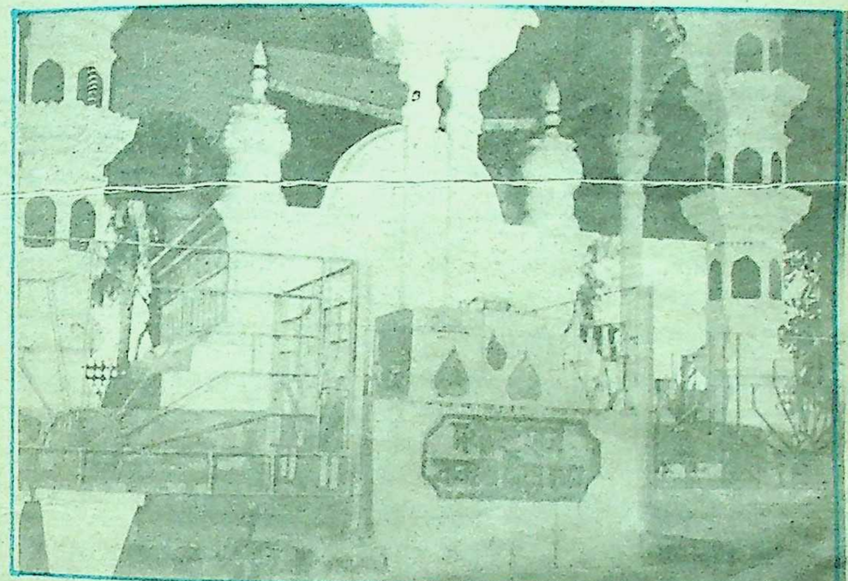

औलिया का मजार

लेकिन सिर पर हाथ छुआते ही उसने किसी शर्मिली दुल्हन की तरह अपने सिर और गरदन को छाती में गढ़ा लिया ।

हमारे गाइड ने सबसे बड़े कछुए की उम्र पांच सौ वर्ष बतायी । सच्चाई जो भी हो । लेकिन उस अनुभवी कछुए को देखकर अनायास ही यह एहसास हुआ कि इस बूढ़े कछुए ने अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं । असम के इतिहास का यह कच्छप प्रत्यक्ष गवाह रहा है और इसके सुख-दुख को अपने कठोर आवरण में बखूबी सहेज रखा है ।

तालाब में जलचरों की क्रीड़ा का आनंद लेने के बाद हम चले माधव मंदिर की ओर । खड़ी चढ़ाई पर चौड़े पत्थरों की फिसलनदार सीढ़ियां । सीढ़ी शुरू होने से पहले पड़ता है एक चबूतरा । विजयादशमी का दिन था, सो चबूतरे के चारों ओर दर्शकों की भीड़ जमा थी और तीन कलाकार अपनी कला में डूबे रामायण की कथा सुना रहे थे । कला थी—असम की प्राचीनकला 'ओझापाली' । पालियों (कलाकारों) के नृत्य, भाव एवं लयबद्ध कथा वाचन-गायन का आनंद दर्शक भाव-विभोर होकर लूट रहे थे ।

एक वृद्ध से मैंने उस नृत्य-नाटिका का सार जानना चाहा । जवाब में उसने अपने पोपले मुंह से कामरूपी भाषा में, जो बताया उससे यही समझ में आया के इस समय कलाकार रावणवध की कथा कह रहे हैं ।

हम पुनः आगे बढ़े । ऊंची-ऊंची सीढ़ियां चढ़ते हुए हम पहुंचे माधव मंदिर के प्रांगण में । चारों ओर शांति ही शांति । अन्य तीर्थ-स्थानों के समान यहां लोगों की भीड़ नहीं थी ।

पंद्रह-बीस लोग अलग-अलग समूहों में इधर-उधर घूम रहे थे । बाहर पंडितजी संकल्प कराकर लोगों को मंदिर में प्रवेश के लिए तैयार कर रहे थे । मुख्य कक्ष के बाहर एक समूह किसी अनुष्ठान के लिए यज्ञ कर रहा था । यज्ञ का धुंआ और धूप की सुगंध वातावरण में पवित्रता बिखेर रही थी ।

मंदिर की परिक्रमा कर माधव (विष्णु) के दर्शन के लिए मंदिर में हमने प्रवेश किया । अंदर विष्णु की एक छोटी-सी मूर्ति विराजमान थी । परिक्रमा के दौरान बूढ़े पुजारी ने बताया था कि यह मंदिर करीब पांच हजार साल पुराना है । बाद में मुख्य कक्ष में उपस्थित प्रमुख पुजारी ने बताया कि '५८९३ वर्ष पहले औडव मुनि ने यहां मंदिर स्थापित किया था, तब उन्हें मुक्ति मिली थी । यह मंदिर रामायणकाल से भी पुराना है ।'

अद्भुत है पांच हजार साल पुराने माधव मंदिर और मक्का से लायी गयी पावभर मिट्टी से बनी मसजिद का यह कस्बा—हाजो

मंदिर के प्रांगण में मुख्य कक्ष के अतिरिक्त एक यज्ञ-शाला भी है । दूसरी ओर मंदिर से लगा जो कक्ष है, उसके द्वार पर हाथ में भाला लिए दो प्रहरियों की आदमकद प्रतिमाएं हैं । उस कक्ष में फगुआ खेला जाता है ।

इन सब के अतिरिक्त मुख्य कक्ष से लगा एक काफी लंबा-चौड़ा बरामदा है, जिसके ऊपर का छप्पर टीन का है । बरामदे में एक छोटा चबूतरा है, जिसे भजन-कीर्तन एवं प्रवचन आदि के लिए मंच के रूप में काम में लाया जाता है ।

मिट्टी मक्का की

मंदिर से निकलकर हम मुख्य सड़क पर आये । यहां से दाहिनी ओर एक रास्ता मुड़ जाता है, जहां बोर्ड लगा था 'पूवा-मक्का जाने का मार्ग' । 'पूवा मक्का' मसजिद का जितना महत्त्व मुसलमानों के लिए है, उतना ही हिंदुओं के लिए भी । सांप्रदायिक सद्भाव की प्रतीक इस पूवा मक्का मसजिद का निर्माण औरंगजेब के काल में 'गियाशुद्दीन औलिया' ने करवाया था । कहते हैं इस मसजिद के निर्माण के लिए मक्का से एक पाव मिट्टी लायी गयी थी, इसलिए इसका नाम पड़ा—' पूवा मक्का' यानी एक पाव मक्का की माटी से निर्मित ।

पहाड़ी पर स्थित यह मसजिद काफी ऊंचाई पर है, जिस पर चढ़ाई भी खड़ी है । चढ़ने के लिए रास्ता मिट्टी काटकर बनाया गया है । रास्ता कच्चा होते हुए बुरा नहीं है । हां ! बरसात में अवश्य ही यात्रियों को ही परेशानी होती है ।

पहाड़ी पर पहुंचने के बाद सबसे पहले एक पेड़ के तले बने मजार के दर्शन हुए । हमें देख एक व्यक्ति आगे बढ़ आया और उसने गाइड की तरह हमें बताया कि यह मजार 'कालू काजी' की है, जो एक पहुंचे हुए फकीर थे । वहां से हम मसजिद की ओर चले । रास्ते पर दुकानें सजाये कुछ दुकानदार धूपबत्ती, मोमबत्ती और इलायचीदानों का प्रसाद बिक्री कर रहे थे । हमने भी धूपबत्ती और मोमबत्ती खरीदी ।

मसजिद के प्रवेश द्वार पर पहुंचकर हमारे 'गाइड' ने बदना में जल लेकर मुंह-हाथ धुलवाया । सीढ़ियां चढ़ते ही सामने गियाशुद्दीन

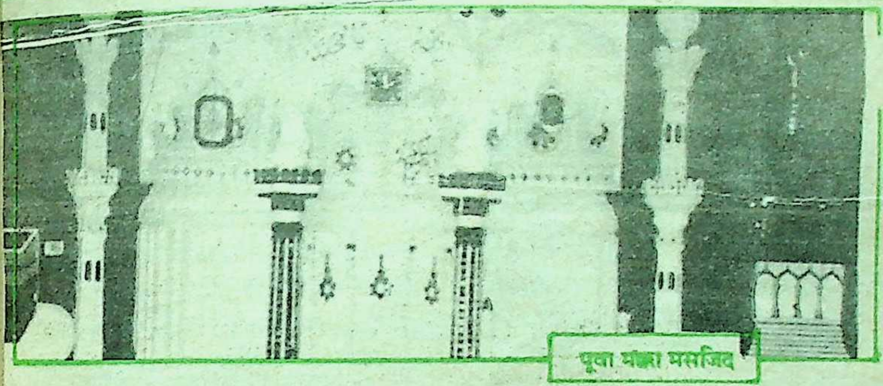

पूवा मक्का मसजिद

औलिया की मजार थी । उसने बताया कि वहां श्रद्धा एवं मन से मांगी मुराद अवश्य पूरी होती है ।

मजार से लगा है मसजिद का कक्ष । कक्ष के द्वार पर ले जाकर द्वार से ही मसजिद के दर्शन कराये । मसजिद के द्वार पर पत्थर के ऊपर खुदी है—खुदा की इबादत । हमने अगरबत्ती जलायी । मौलवी ने हमें वहां बैठाकर मजार पर प्रार्थना करायी । मजार पर मत्था टेकाकर हम एक सुखद अनुभव संजोये बाहर निकल आये । बाहर आकर सोचने पर बाध्य हो गये कि कुछ भी तो फर्क नहीं है मंदिर और मसजिद में । फर्क है तो सिर्फ इंसानों की सोचों में । हालांकि, इंसान भी एक ही है और उसे बनानेवाला खुदा या भगवान भी एक ही है । फिर यह भेद आखिर क्यों ?

हाजो का तीसरा दर्शनीय स्थल है केदार मंदिर । यह शिव का मंदिर है, जो पूवा मक्का के सामने एक अन्य पहाड़ी पर है । आमने-सामने हिंदू और मुसलमान के भगवान और अल्लाह विराजमान हैं, परंतु क्या सर्वशक्तिमान को किसी रूप में ढालना स्वार्थी मानव का कार्य नहीं ? प्राचीन तथा आधुनिक धर्मों के इतिहास के साथ यदि मानव-विज्ञान का अध्ययन किया जाए, तब पता चलेगा कि धार्मिक भावनाओं का जन्म मनुष्य के आगमन के साथ-साथ हुआ था । परंतु आज भी ऐसे लोग हैं जो धर्म को मानव-धर्म के रूप में ही देखते हैं । ऐसे ही एक सज्जन हैं पूवा मक्का के मौलवी, जिन्होंने हमें बहुत ही प्रेमपूर्वक केदार मंदिर का रास्ता बताया । बताया कि यहां हाजो में क्या हिंदू और क्या मुसलमान—सभी समान भाव से आते हैं । अल्लाह तो एक ही है, बस, जिसके नाम ही अलग-अलग रख छोड़े हैं लोगों ने । उनका विश्वास है कि एक समय ऐसा भी आएगा जबकि यह दीवार भी गिर जाएगी और तब एक ही धर्म होगा—'मानव-धर्म' ।

कड़ी धूप में लगातार घूमकर हम थक चुके थे । सो केदार मंदिर की खड़ी चढ़ाई चढ़ने की हिम्मत नहीं हुई । दूर से ही भगवान शंकर को प्रणाम किया और उनके दर्शन अगली बार पर छोड़, हम गुवाहाटी लौट पड़े ।

—द्वारा, श्री सुनंद पांडेय,
प्रोजेक्ट मैनेजर (मार्केटिंग)
इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लि.
(असम ऑयल डिवीजन)
डिग्बोई-७८६१७१

विधि-विधान

लड़की को ले गये

क ख ग : एक वर्ष पहले मेरे एक मित्र की शादी हुई । शादी के बाद लड़की के मां-बाप हर दूसरे-तीसरे दिन लड़की से मिलने आते रहे । वह शुरू से ही लड़की को अपने पास रखना चाहते थे । दो बार वह लड़की को ले गये । तीसरी बार जब ले गये, तो लड़की को लौटाते ही नहीं । कहते हैं कि जिस बिचौलिया ने शादी करायी है, उसी के कहने पर भेजेंगे । बिचौलिया चुप है । क्या तलाक लिया जा सकता है ?

विवाह के बाद लड़की को ससुराल में रहना चाहिए । आपके मित्र की पत्नी ससुराल में क्यों नहीं रहना चाहती, यह आपके पत्र से स्पष्ट नहीं है । हो सकता है कि बीच में पड़े व्यक्ति या अन्य किसी व्यक्ति से वह अपनी स्थिति स्पष्ट कर दे । तलाक की कल्पना आपकी है या लड़कीवालों ने इसके बारे में कुछ इशारा किया है ? उचित तो यह रहेगा कि दोनों पक्ष आपस में बातचीत कर के कोई समाधान निकाल लें । अन्यथा हिंदु विवाह अधिनियम की धारा ९ के अंतर्गत वैवाहिक संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए कार्यवाही कर सकते हैं ।

स्वामित्व का हस्तांतरण

क. : मेरे बाबा के तीन लड़के व तीन लड़ थीं । तीन लड़कों में मेरे पिताजी का नंबर ती है । पिताजी के दोनों बड़े भाई यानी मेरे ताऊ की मृत्यु हो चुकी है । बड़े ताऊजी ने बाबा की जमीन में से अपने हिस्से की जमीन पर मकान बनवा लिया था, जिसका हाऊस टैक्स व पानी बिजली का बिल ताऊजी व अब ताइजी के ना आता है ।

हम और हमारे पिताजी तथा छोटे ताऊजी लड़के एक ही मकान में रहते हैं जिसका हा टैक्स, पानी व बिजली का बिल छोटे ताऊ पिताजी के नाम आता है । छोटे ताऊजी व में मकान का बंटवारा अभी नहीं हुआ है । या मेरे पिताजी अपने हिस्से का मकान बेच हैं ? मकान के स्वामित्व का हस्तांतरण किस हो सकता है ?

अच्छा यह रहेगा कि आप अपने मका बंटवारा करवा लें तथा उसके बाद अपना बेच दें । मकान बेचने के बाद विक्रय-पत्र लिखा जाता है, जिसका पंजीकरण होना आवश्यक है । इस प्रकार विक्रय-पत्र पं के साथ ही स्वामित्व बदल जाता है । अ मकान नगर पालिका क्षेत्र में आता है । व स्वामित्व बदलवाया जा सकता है ।

हिस्सा तो बनता ही नहीं

रामकिंकर सिंह, सोनपुर : मेरे तीन लड़ चार लड़कियां हैं । बड़े लड़के को एक सह समिति में प्लाट एलॉट हुआ था, जिसके लि लड़के ने मुझ से ऋण मांगा । मैंने सन १९६ उसे पैंतालीस हजार रुपये ऋण के रूप में दे

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—

रामप्रकाश गुप्त

लेकिन एक बीमारी में अगले साल उसकी मृत्यु हो गयी, अतः वह प्लाट का रजिस्ट्रेशन अपने नाम नहीं करा सका । मैंने लड़के की मृत्यु के बाद प्लाट का रजिस्ट्रेशन उसकी विधवा के नाम करा दिया । दुर्भाग्य से कुछ समय बाद उसका भी देहांत हो गया । मृतक दंपत्ति के तीन लड़के और एक लड़की है । बड़े लड़के और लड़की की शादी हो चुकी है ।

क्या उक्त प्लाट में मेरे दिवंगत बड़े बेटे के दोनों छोटे भाइयों यानी मेरे लड़कों का कोई हिस्सा बनता है या नहीं ? उन्हें उसका हिस्सा मिल सकता है तो कैसे ?

आपके बड़े लड़के ने सहकारी समिति के प्लाट को खरीदने के लिए आपसे ऋण के रूप में धनराशि मांगी, जो आपने अपने बेटे को ऋण के रूप में ही दी । प्लाट आपके लड़के को प्राप्त होना था तथा उनके स्वर्गवास के बाद उसका पंजीकरण उसकी पत्नी के नाम से करवा दिया गया, वह उचित ही था । उस प्लाट पर आपका या आपके अन्य पुत्रों का कोई अधिकार नहीं है । आपने धनराशि देते समय ही वह ऋण के रूप में दी थी । इसलिए आपका अधिकार ऋण में दी हुई धनराशि को वापस प्राप्त करने का ही हो सकता था और अब वह अधिकार भी केवल कहने को रह गया है क्योंकि, ऋण सन १९६९ में दिया गया था, और उसकी वापसी के लिए अब पच्चीस साल बाद कोई कानूनी कार्यवाही भी संभव नहीं है । आपको या आपके दो लड़कों को उक्त प्लाट में से कोई हिस्सा प्राप्त नहीं हो सकता ।

भाई ने जमीन क्यों दाबी

चितरंजन राव, जमशेदपुर : विलासपुर जिले में मेरे पास खेती की ३.६४ एकड़ जमीन है और मेरे भाई के पास २.६५ एकड़ । खेत में सिंचाई पंप के लिए ऋण देने के लिए भूमि विकास बैंक, विलासपुर की शर्त छह एकड़ भूमि थी । अतः भाई ने मेरी और अपनी, दोनों की जमीन का विवरण दर्ज कराया । दोनों खेतों की ऋण पुस्तिका जमा करा दी । हम दोनों को ऋण लेने के लिए बैंक के शेयर भी खरीदने पड़े । बैंक ने बाद में हम दोनों को एक-एक पत्र दिया । जुलाई, ९२ से भाई मेरे खेत पर कब्जा किये हुए है । मैं पिछले दिनों भाई के पास गया और उससे अपने उस कर्ज का पैसा मांगा, जो मैंने उसे उधार दिया था, तथा बैंक के कागजात मांगे और उपज की लाभ का आधा हिस्सा मांगा, तो उसने कुछ भी देने से मना कर दिया । बल्कि उसने यह भी कहा कि बैंक के कर्ज को लौटाने में पंद्रह वर्ष लगेंगे अतः वह कुछ नहीं दे सकता ।

आपके पत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि आपने अपने भाई का सहयोग करने के लिए अपने खेत के मूल-पत्र प्रलेख आदि बैंक को दे दिये । साथ ही आपने उस हेतु बैंक के शेयर भी खरीदे । बैंक में उन पत्र-प्रलेखों का उपयोग किस रूप में किया गया, यह आपके पत्र से स्पष्ट नहीं है । कुछ भी कहा जाए, बैंक से ऋण प्राप्त करने में आपकी स्वीकृति व सहमति रही है । परंतु इस आधार पर आपकी खेती पर भाई का कब्जा करने का तो कोई आधार नहीं है । यह ठीक है कि बैंक प्रलेख आदि वापस करने से पहले ऋण की रकम वापस मांगेगा, परंतु

आपको अपनी भूमि पर स्वयं कृषि करने से कोई नहीं रोक सकता ।

यह तो अन्याय है

इंद्रसेन वर्मा, इलाहाबाद : मैंने जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स में सुपरिंटेंडेंट बी/आर-२ पद के लिए ऋषिकेश केंद्र से लिखित परीक्षा तथा मैडीकल टैस्ट दिया, जहां मुझे दोनों में सफल घोषित कर बताया गया कि ट्रेनिंग पूना में होगी और वहीं से नियुक्ति-पत्र आयेगा । एक महीने बाद पूना से नियुक्ति-पत्र मिला, जिसमें यह भी लिखा था कि यदि मैडीकल टैस्ट नहीं हुआ होगा, तो पूना में मैडीकल टैस्ट किया जा सकता है । पूना में मुझसे कहा गया कि मेरा दोबारा मैडीकल टैस्ट होगा क्योंकि, मेरी मैडीकल रिपोर्ट में सिर के बाल झड़ने का कारण एलोपसिया लिखा था । लिखा था— 'सिलाइट डिफेक्ट विच इज नोट कौज फॉर रिजेक्शन— लो डिग्री ऑफ एलोपसिया' और अंततः परिणाम के तौर पर 'फिट' लिखा था ।

मेरा दोबारा मैडीकल किया गया और मुझे 'टैंपरेरी अनफिट' घोषित कर इक्कीस दिन बाद फिर आने के लिए कहा गया । क्या यह मेरे साथ अन्याय नहीं है ।मुझे इस अन्याय के खिलाफ क्या करना चाहिए ?

यह आपके साथ निश्चित रूप से अन्याय है । ऐसा लगता है कि आपको सफल घोषित किये जाने के बाद भी, सर्विस नहीं दी जा रही । सरकारी क्षेत्र में नौकरी करने का समान अधिकार नागरिकों को दिया जाता है । नौकरी देने में अनावश्यक परेशान किये जाने या पक्षपात की स्थिति में नागरिक को अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए भारत के संविधान के अंतर्गत समादेश याचिका दायर करने का अधिकार है । आपको भी अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए उच्च न्यायालय में समादेश याचिका प्रस्तुत करनी चाहिए । इससे आप अधिकारियों की मनमानी प्रवृत्ति को रुकवाने तथा अपना अधिकार प्राप्त करने के संबंध में न्यायालय का निर्णय तथा आदेश प्राप्त कर सकेंगे ।

दिनेश चंद्र सिंघल, जयपुर : मेरे पिताजी के नाम से जयपुर में एक मकान है । हम पांच भाई हैं । बड़े भाई दस साल से उसमें रहते हैं तथा उसमें उन्होंने एक और कमरा बनवा लिया है । वह मुझे मकान में रहने देने से मना करते हैं, लिहाजा मैं किराये के मकान में रह रहा हूं । तीन भाई गांव में रहते है, इसलिए वे चुप हैं । मकान में हिस्सा प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ? पिताजी की संपत्ति का अभी बंटवारा नहीं हुआ है ।

मकान आपके पिताजी के नाम है अतः पिताजी के जीवित रहते मकान में आपको अपना हिस्सा मांगने का कोई अधिकार नहीं है । यह नहीं लिखा कि आपके पिताजी जीवित हैं या नहीं । मकान के किसी हिस्से के किसी के कब्जों में होने से आपके अधिकार पर कोई अंतर नहीं पड़ता । कुछ हिस्से पर निर्माण करा लेने से आपके भाई का कोई विशेष अधिकार नहीं हो जाता । आप मकान के बंटवारे के लिए न्यायालय में आवेदन दे सकते हैं । आप भाइयों के अतिरिक्त आपकी मां, दादी तथा बहनें भी आपके पिता की संपत्ति की उत्तराधिकारी हैं ।●

प्रहर जिंदगी के

प्रहर जिंदगी के कुछ
यों कट रहे हैं
बस बढ़ते जाते दिन
हम घट रहे हैं

जो दिखता सच-सा है
जानो तो माया
माटी में रोज मिले
फूलों की काया
अपना है कौन और
कौन है पराया
उलझन ऐसी तन से
मन बंट रहे हैं
बस बढ़ते जाते दिन
हम घट रहे हैं

रेतीली बस्ती है
बालू के घर हैं
रौंद दिये भीड़ों ने
चिड़ियों के स्वर हैं
गलियों से संकरे
सारे महानगर हैं,
मन के आकाश रोज
क्यों सिमट रहे हैं
बस बढ़ते जाते दिन
हम घट रहे हैं

जब से कुछ लोग
लगे बेपर ही उड़ने
अब हर वन पांखी के
पंख हैं कतरने
सजा मिलेगी जिसने
देखे हैं सपने
अंधे ही कु[illegible]
बस निकट रहे हैं
प्रहर जिंदगी के कुछ
यों कट रहे हैं
बस बढ़ते जाते दिन
हम घट रहे हैं

—गोपाल चतुर्वेदी

डी- १/५, सत्यमार्ग, चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली-२१

सोना बरसानेवाला विचित्र पहाड़

● शैलेंद्र गार्गव

पाइलीन बीवर के जीवन का वह सबसे अधिक रोमांचक दिन था, जब उसने किसी पहाड़ को स्वर्ण-जैसी चमकती हुई धातु उगलते देखा । खेमे पहाड़ी से कुछ ही दूरी पर थे, जहां बीवर के अन्य सब सहकर्मी प्रगाढ़ निद्रा में सो रहे थे । बीवर अकेले ही उठकर गया और धातु का एक टुकड़ा हाथ में लेकर देखा । वह विस्मित रह गया । शत-प्रतिशत शुद्ध सोना था वह । जल्दी-जल्दी में उसने काफी टुकड़े इकट्ठे किये और खेमे की ओर चलने के लिए खड़ा हुआ, तभी उसके पैरों के नीचे की ज़मीन धंसती हुई जान पड़ी । उसने देखा खेमे का कहीं पता नहीं है, वह स्थान जली हुई राख की ढेरी के समान लग रहा है ।

बीने हुए सोने के ढेर सारे टुकड़े वहीं बिखर गये । भय से शरीर कांप गया । बात क्या है, यह समझने के लिए फिर दृष्टि पीछे घुमायी तो एक विलक्षण दृश्य दिखायी दिया । पर्वत की चोटी पर से हजारों छायाएं उतर रही थीं और भयंकर आवाज के साथ उसी की ओर, सेना के सिपाहियों की तरह, दौड़ी आ रही थीं । बीवर चिल्लाया और अचेत हो, वहीं ढेर हो गया । चेतना वापस लौटी, तब वहां कुछ भी नहीं था । बीवर ने फिर कभी उधर जाने की हिम्मत नहीं की ।

सोलह वर्ष बाद ठीक वैसी ही घटना मैक्सिको के युवक डॉन पैरेलटा के साथ घटी । उसके सभी साथी इस अभियान में मारे गये । वह तो उसका भाग्य था, जो किसी तरह वह स्वयं शैतानी शिकंजे से बचकर निकल आया ।

पाइलीन बीवर और डॉन पैरेलटा दोनों ने अपने-अपने संस्मरण प्रकाशित कराये, तब लोगों को सोना बरसानेवाले इस अद्भुत पहाड़ का पता चला, जिसके बारे में यह कहा जाता है कि आज तक वहां सोने के लालच में जो गया, जीवित नहीं लौटा । जो जिंदा लौटा भी वह सोने का एक कण भी साथ नहीं ला पाया । हां, वह भय अवश्य लाया, जिसके बाद फिर उसने उधर जाने की कभी हिम्मत नहीं की । यह पहाड़ अमरीका के एरिजोना प्रांत में स्थित है और आज तक यह प्रकृति के एक विलक्षण आश्चर्य के रूप में विद्यमान है । एरिजोना रूस के

साइबेरिया प्रांत जैसा क्षेत्र है, जिस तरह साइबेरिया अत्यंत विकिरणवाला क्षेत्र है, वैसे ही यह भी विचित्र आश्चर्यों से परिपूर्ण है । एक लंबा और ६०० फीट गहराईवाला बहुत बड़ा क्रेटर, जो किसी उल्का पिंड के आघात से बना बताया जाता है, यहीं पर है ।

खूनी पहाड़

डॉन पैरेलटा की यात्रा के दो वर्ष बाद सोने के लालच में दुनिया के सैकड़ों लोगों ने एरिजोना की यात्रा की । इनमें अमरीका के ही युवक सबसे अधिक संख्या में गये और अपने प्राणों की बलि चढ़ा बैठे ।

एक बार अमरीका के प्रसिद्ध डॉक्टर लबरेन रोअली भी उधर पहुंच गये । लबरेन किसी प्रकार पहाड़ी के पास तक पहुंचने में सफल हो गये, पर घूर्णन—जैसी एक भयंकर आवाज और सैकड़ों मायाविनी छायाओं ने उनको भी घेर लिया । थोड़ी देर में वह मृत होकर गिर पड़े । उनकी मृत्यु ने अमरीका में खलबली मचा दी । डॉक्टरी जांच से पता चला कि रोअली का रक्त चूस लिया गया था, पर कैसे ? यह पता किसी भी तरह नहीं चल पाया । तब से इस पहाड़ का नाम 'खूनी पहाड़' भी पड़ गया ।

इस पहाड़ के बारे में यह विचित्र बात है कि यह निश्चित समय पर ही सोना बरसाता है । उसी प्रकार वहां पर जितनी भी हत्याएं अब तक हुई हैं, वह दिन के ठीक चार बजे हुई हैं । चार बजे हीं इस चोटी की परछाई पृथ्वी को छूती है । मरनेवालों के शरीरें की एफ.बी.आई. द्वारा जांच की गयी । यहां आकर जो भी हत्या हुई, वह रक्त चूस लेने के कारण हुईं । जबकि किसी भी शव पर घाव या चोट का कोई निशान नहीं मिला । सबसे रोमांचक प्रसंग जरमनी के इंजीनियर वालूज का है । वालूज इस पहाड़ के रहस्यों का पता भले ही न लगा पाया हो, पर उसकी खोज में संघर्ष तथा अंतिम प्रयासों का समावेश है ।

सोना बरसानेवाले पहाड़ का आज तक कोई रहस्य नहीं जान सका, क्योंकि जो भी वहां गया, जिंदा नहीं लौटा

तांत्रिकों के पास

वालूज इंजीनियर के रूप में एरिजोना की खानों में काम कर रहा था, तभी उसके मन में सोना बरसानेवाले इस पहाड़ के रहस्य को जानने की तीव्र जिज्ञासा हुई । वालूज का अनुमान था कि पहाड़ी का रहस्य अपैची कबीले के प्रमुख तांत्रिकों के पास हो सकता है, क्योंकि वही लोग उसके आस-पास बसे हैं । अपैची बड़े खूंख्वार होते हैं । श्वेतों से उन्हें बहुत ही घृणा है क्योंकि, अमरीकियों ने उनका संहार किया है, जिससे उनके मन में गोरों के प्रति तीव्र घृणा घर कर गयी है । सन १८७२ का 'अपैची लीप' विश्व-प्रसद्धि है, जिसमें जॉन वाकर ने अपैचियों को बुरी तरह मार डाला था । इसके बाद अपैचियों ने सरदार गैरोनियों के नेतृत्व में सन १८८६ में नेपल्स में युद्धकर उन्हें पीछे धकेल दिया था । तब से यह तांत्रिक इसी पहाड़ पर शरण लिए हुए है, जो भी वहां गया, आज तक वापस नहीं लौटा ।

वालूज ने चतुराई से काम लिया । उसने एक अपैची युवती केन.टी. से प्रेम कर लिया

और उसी से शादी भी कर ली । आदिवासियों का सद्भाव प्राप्त करने के लिए यह एक बड़ी बात थी, जिससे वालज को पहाड़ तक आने-जाने का रास्ता खुल गया । उसने केन.टी. से भी रहस्य जानने का प्रयास किया । उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि केन.टी. तो क्या तमाम आदिवासियों में कुछ ही तांत्रिक ऐसे हैं, जो इस रहस्य को जानते हैं, सब नहीं ।

उसने पहले तो केन.टी. के सहयोग से काफी सोना इकट्ठा किया, फिर जैकब विजनर नामक युवक से मित्रता करके इस पहाड़ के अंतरंग रहस्यों का पता लगाने का काम शुरू किया । वह कई बार सामने से पहाड़ की ओर गया, पर हर बार उसे जान बचाकर भागना पड़ा । इन्हीं प्रयत्नों में केन.टी. का अपहरण कर लिया गया और अपैचियों ने उसकी जीभ काट ली, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी । अंततः निराश हो वालज ने रास्ता बदला और वह लंबा रेगिस्तान पार कर पीछे से पहाड़ी के पास पहुंचने में सफल हो गया ।

रेगिस्तानी मैदान में तंबू गाड़कर वालज जैकब के साथ बाहर निकला । अभी वह कुछ ही दूर जा पाया था कि उसे आग की चिंगारियां अपनी ओर बढ़ती दिखायी दीं । रात थी—पर देखते-देखते दिन का-सा प्रकाश फैल गया । उस प्रकाश में विचित्र भयंकरता थी । दोनों वहां से भागे, तभी कुछ पत्थर उसके आस-पास गिरे । वालज ने भागते हुए एक पत्थर को छुआ, तो देखा वह बिलकुल ठंडा था, वह रुक गया । पीछे मुड़कर देखा तो आग बरसानेवाली लपटें भी शांत हो चली थीं । इसलिए वह फिर पहाड़ की ओर लौट पड़ा । उसे केन.टी. से इतना मालूम हो गया था कि पहाड़ के अंद जाने के लिए एक सुरंग है । वालज को कुछ देर में सुरंग का दरवाजा मिल गया । वह सहमता हुआ भीतर घुसा । वहां कुछ उसे क और हजारों की संख्या में नर-कंकाल पड़े मिले । देखने से लगता था यह कंकाल हज वर्ष पूर्व तक के हैं । आगे बढ़ने पर उसे वह खड्ड भी दिख गया, जहां सोने का लावा निकलता था, पर सोने के वास्तविक स्रोत का पता नहीं चल सका । न ही उसे आगे बढ़ने क रास्ता मिल सका । वहां की भीषण गरमी के कारण आगे बढ़ना कठिन हो गया । दल-द के पास उन्हें बहुत-सा सोना भी मिला, पर लौटते समय तांत्रिकों ने उन्हें देख लिया । जैकब को तो वहीं मार दिया गया, पर वालज किसी तरह बच निकला । सन १८९१ में उसकी मृत्यु हो गयी । उसकी डायरी के सहारे कई लोगों ने यात्राएं कीं, पर सोना बरसानेवाले इस पहाड़ के मूल स्रोत का कोई पता न लग सका ।

सन १८५० से लेकर अब तक सैकड़ों लोगों ने कोशिशें कीं, लेकिन अधिकतर अ प्राणों से हाथ धो बैठे । इस क्षेत्र में घुसने के पश्चात उन्हें यहां के रखवाले तूफानी देवताओं अथवा तांत्रिकों का शिकार बनना पड़ा ।

समझा जाता है कि अपैची कबीले के आदिवासी इस रहस्य को जानते हैं । पर आ तक सोना बरसानेवाली इस पहाड़ी की वास्तविकता पर परदा ही पड़ा हुआ है । न क मृत्यु के कारणों को जानता है, और न सोने के मूल स्रोत को ।

—शांति निकेतन, पुनासा, खंडवा-४५०१

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।

—संपादक

१. पूरे दिन को २४ घंटों, १ घंटे को ६० मिनट तथा १ मिनट को ६० सेकंडों में बांटने की प्रणाली किसकी देन है ?

२. क. पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर एक चक्कर लगाने में ठीक कितना समय लगता है ?

ख. चंद्र-वर्ष तथा सौर-वर्ष में कितना अंतर है ?

३. क. दसों दिशाओं के रक्षक देवताओं को क्या कहा जाता है ?

ख. पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण के रक्षक देवता कौन हैं ?

४. क. विगत अक्तूबर में भारत द्वारा किस दूर-संवेदी उपग्रह को ध्रुवीय सौर-कक्षा में स्थापित किया गया था ?

ख. वह किस प्रक्षेपण-यान से और कहां से प्रक्षेपित किया गया था ?

५. क. प्लेग की प्रभावी दवा टेट्रासाइक्लिन की किसने और कब खोज की थी ?

ख. मच्छरों से मलेरिया के अलावा और कौन-सी बीमारियां फैलती हैं ?

६. गत अक्तूबर में किन-किन देशों के बीच दो ऐतिहासिक समझौते हुए हैं ?

७. क. एशियाड-९४ में भारत का कौन-सा नंबर रहा और उसे कितने पदक प्राप्त हुए ?

ख. प्रथम कौन-सा देश रहा और उसे कितने पदक प्राप्त हुए ?

८. वर्ष १९९४ के शांति, साहित्य तथा चिकित्सा-विज्ञान के नोबेल पुरस्कार किन्हें मिले हैं ?

९. निम्नलिखित सम्मान तथा पुरस्कार पानेवाले कौन हैं ?— **क.** प्रथम दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान, **ख.** १९९३ का दादासाहब फाल्के पुरस्कार

ग. १९९३ का इंदिरा गांधी पुरस्कार (राष्ट्रीय एकता में उल्लेखनीय योगदान), **घ.** आर्थर आयार बुक पुरस्कार (इंगलैंड), **च.** वोल्वो पर्यावरण पुरस्कार ।

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिये और बताइये यह क्या है—

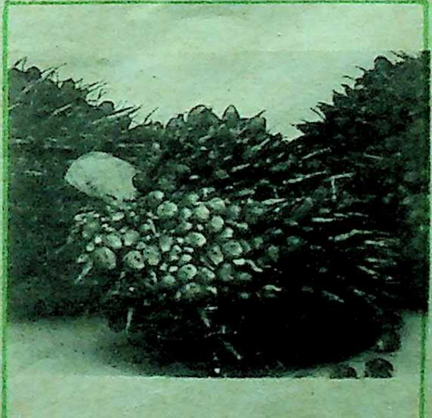

कहानी

धूप-छांह

यशपाल जैन

"अरे, मेरे मोजे कहां हैं ? ओफ, टाई भी दिखायी नहीं दे रही है । मुझे दफ़्तर को देर हो रही है ।" चिंतामणि हैरान होकर कभी इस अलमारी को टटोलता तो कभी उसको । सारे कपड़े अस्त-व्यस्त हो गये, फिर भी मोजे उसे नहीं मिले ।

"हे भगवान, जरा-जरा-सी बात के लिए घर सिर पर उठा लेते हो । खुद चीजें संभालकर रखते नहीं । यहां-वहां पटक देते हैं और धरती-आसमान एक कर देते हैं ।" खीजती हुई रसोई में से उमा मुंह बनाती आयी । अलमारी में एक किनारे रखे हुए मोजे निकालकर पति के हाथ में थमाते हुए बोली, "चीजें सामने रखी रहती हैं और इन्हें दिखायी नहीं देतीं ! कितनी बार कह चुकी हूं कि अपनी चीजें अपने-आप रखा करो, पर... हे भगवान !"

चिंतामणि ने लंबी सांस लेते हुए कहा, "और टाई ?"

उमा रुआंसी हो आयी । सिर पर हाथ मारकर बोली, "मैं आपकी चीजें खोजूं या नाश्ता तैयार करूं ? टिम्मी की बस आनेवाली है और चीकू ने अभी कपड़े भी नहीं पहने हैं । मैं तो तंग आ गयी हूं ।" इतना कहकर उस सपाटे से हैंगर पर कमीज की आड़ में लट टाई उतारकर दे दी और बड़बड़ाती रसोई मे चली गयी ।

अपराह्न में बच्चे स्कूल से और चिंताम दफ़्तर से लौटा, तो रोज की तरह उमा घर-गिरस्ती के काम में लगी थी । कपड़े धोनेवाली नहीं आयी थी, सारे कपड़े उसी धोने पड़े थे । घर की सफाई तो हर दिन क होती ही थी । खाना बनाना पड़ता था । ऊ बच्चों की फरमाइश रहती थी कि 'हम यह खाएंगे, वह नहीं खाएंगे । हमारे लिए यह बनाना, वह बनाना ।' उमा उनकी फरमाइ करती थी । बेचारी थक जाती थी । काम होता था कि उसे घड़ीभर पैर सीधे करने क अवसर नहीं मिलता था ।

वह काम से उतना परेशान नहीं होती जितनी इस बात से कि घर में न पति, न ब कोई भी उसके काम में हाथ नहीं बंटाता उलटे उसके काम को बढ़ा देते थे । दस की टिम्मी इतनी छोटी तो नहीं थी कि अप बस्ता और किताबें भी संभालकर न रख

और आठ बरस का चीकू इतना अबोध तो नहीं था कि अपनी कमीज भी स्वयं न पहन सके । टिम्मी की किताबें, कापियां, पेंसिल, होल्डर भी उसी को संभालने पड़ते और चीकू गुसलखाने से निकलकर तोलिया लपेटे बाहर आ खड़ा होता है, तो उसका बदन और सिर पोंछकर बनियान, कमीज भी उसी को पहनानी होती है । बार-बार समझाती है, लेकिन उनके कान पर जूं नहीं रेंगती ।

जब से शादी होकर उसने अपना घर बसाया है, तब से वह अकेली घर का बोझ उठाती रही है और बच्चे हो जाने पर तो उसकी हालत और भी बदतर हो गयी है । दिनभर काम करते-करते जब वह बेहाल हो जाती है, तो तय करती है कि शाम को पति आएगा, तो वह उससे साफ-साफ कह देगी कि 'लो, संभालो अपना घर । मुझसे नहीं संभलता ।' लेकिन जब दफ़्तर के काम से थका-मांदा चिंतामणि शाम को घर लौटता है, तो उसके उदास चेहरे को देखकर वह सब-कुछ भूल जाती है । झट एक प्याला चाय बनाकर उसके सामने रख देती है ।

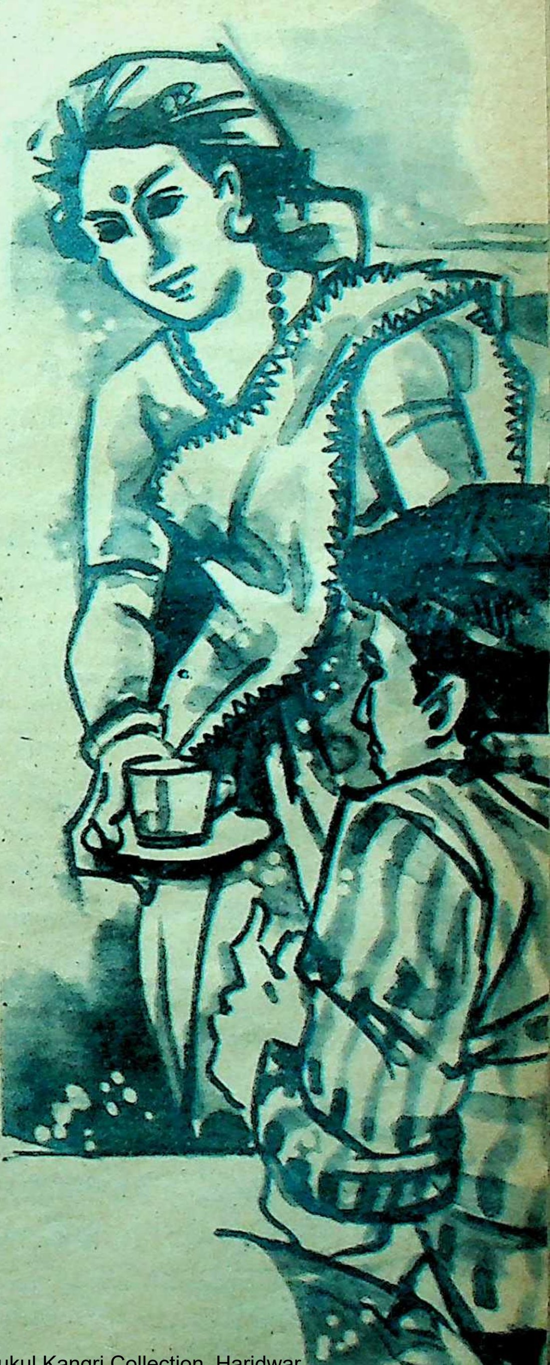

एक दिन रविवार को चिंतामणि घर पर था । छुट्टी के दिन भी उसको कोई-न-कोई काम लगा रहता था, लेकिन संयोग से उस रविवार को वह खाली था । बड़ी शांति से उमा उसके पास बैठ गयी । बोली, ''देखोजी, तुम घर पर ऐसे रहते हो, जैसे घर तुम्हारा न हो । मैं काम के मारे मरी जाती हूं । तुम्हें उसकी चिंता नहीं । इतना तक नहीं कर सकते कि बाजार से साग-भाजी तक लाकर दे दो । मेरे घुटनों में दर्द रहता है, फिर भी इतनी सीढ़ियां उतरकर नीचे जाती हूं और सब्जी लेकर उतनी सीढ़ियां चढ़ती हूं ।''

कहते-कहते उसका गला भर आया । रुंधे गले से ही वह आगे बोली, "तुम्हें रहम नहीं आता । एक दिन मर गयी तो तुम क्या करोगे ?"

चिंतामणि सुनता रहा, पर उमा के अंतिम वाक्य ने उसे झकझोर दिया । बोला, "ऐसी अशुभ बात मुंह से मत निकालो । मैं तो शादी से पहले अपने सारे काम अपने हाथ से किया करता था । तुमने ही मुझे अपाहिज बना दिया । अब तुम यह सब कहती हो, लेकिन वह दिन भूल गयीं, जब तुम..."

बात चिंतामणि के मुंह से आगे नहीं निकली । वह पुराने दिनों की याद में एकदम खो गया । संभला तो बोला, "मैं जानता था कि घर का काम बहुत होता है । इसलिए नौकर रखा, पर वह टिका नहीं । उसके लिए उमा, मैं तुम्हें दोष नहीं देता । अब समय ही ऐसा आ गया है कि भरोसे के नौकर मिलते नहीं और मिल भी जाते हैं तो टिकते नहीं ।"

उसने निगाह उठाकर उमा की ओर देखा । उसकी आंखें डबडबा रही थीं । बोली, "मुझे बताओ, मैं क्या करूं ?"

चिंतामणि ने कहा, "कल से मैं तुम्हारी मदद करूंगा । साग-सब्जी लाऊंगा और अपना काम स्वयं करूंगा ।"

इतना कहकर उसने टिम्मी और चीकू को आवाज दी । वे दोनों टी. वी. देख रहे थे । पहली आवाज को उन्होंने अनसुना कर दिया, लेकिन चिंतामणि ने जरा जोर से दुबारा आवा दी, तो मुंह बनाते दोनों सामने आ खड़े हुए । चिंतामणि ने कहा, "टिम्मी, कल से तुम अप सारा काम अपने हाथ से करोगी और चीकू, तु भी अपने कपड़े अपने-आप पहना करोगे । सामान भी खुद ही संभाला करोगे । समझे ।"

दोनों बच्चों की जान तो टी. वी. में पड़ी थी । उन्होंने पीछा छुड़ाने के लिए कहा, "ठी है, हम अपना सारा काम अपने हाथ से करेंगे ।" इतना कहकर फिर दोनों टी. वी. से जा चिपके ।

फटाफट नयी व्यवस्था कर देने पर उमा को हंसी आ गयी । बोली, "देखूंगी, कल से क्या होता है !"

अगले दिन सवेरे ही चिंतामणि ने पत्नी से पूछा, "मैं सब्जी लेने जा रहा हूं । बोलो, क्या-क्या लाना है ।"

उमा ने पांच-छह सब्जियों के नाम गिना दि और कहा, "देखकर लाना, सड़ी-गली चीजें

चिंतामणि सुनता रहा, पर उमा के अंतिम वाक्य ने उसे झकझोर दिया । बोला, "ऐसी अशुभ बात मुंह से मत निकालो । मैं तो शादी से पहले अपने सारे काम अपने हाथ से किया करता था । तुमने ही मुझे अपाहिज बना दिया । अब तुम यह सब कहती हो, लेकिन वह दिन भूल गयीं, जब तुम..."

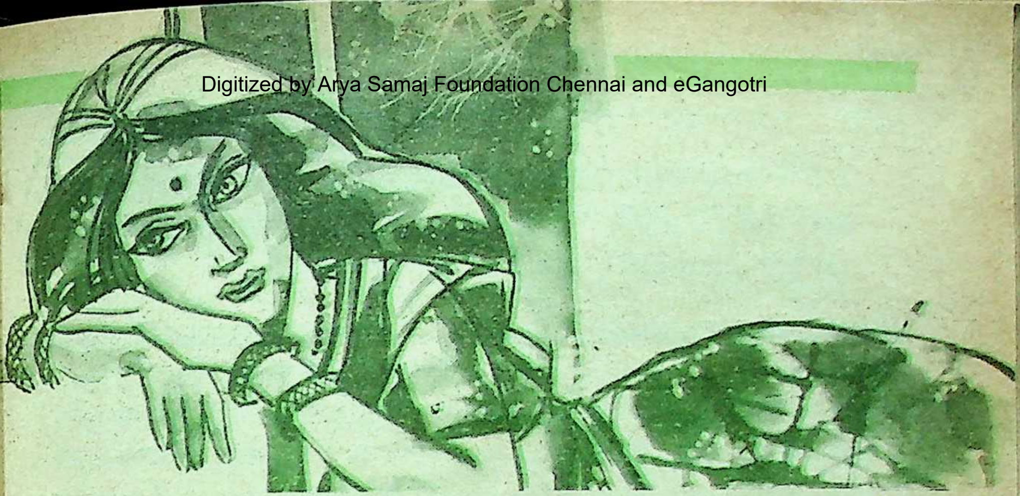

मत उठा लाना ।''

चिंतामणि सब्जीवाले के यहां गया । सारी सब्जियां सामने फैली थीं । उसने हरी-हरी मेथी खरीदी, बड़े-बड़े पत्तों का पालक खरीदा । फिर यह सोचकर कि उमा को रायता बहुत पसंद है, बथुए की एक गड्डी ली । ये सब चीजें लेकर अपनी महान उपलब्धियों पर मन-ही-मन पुलकित घर लौटा और बड़ी प्रसन्न मुद्रा में सारी सब्जियां थैले में से निकालकर उमा के सामने रख दीं । सोचता था कि उमा उसके चुनाव पर बहुत खुश होगी, लेकिन उमा के चेहरे के रंग ने उसके सारी गर्वभरी खुशी पर पानी फेर दिया । बोली, ''मैंने तुमसे जिन सब्जियों को लाने को कहा था, वे कहां हैं ?''

चिंतामणि तो भूल गया था कि उमा ने कुछ फरमाइश की थी । अब उसे ध्यान आया । एक अपराधी की भांति बोला, ''तुम तो जानती हो हरी सब्जियां मुझे कितनी पसंद हैं । सामने ये सब देखीं तो ले आया ।''

उमा ने कहा, ''आजकल गरमी के दिन हैं । तुमने यह नहीं सोचा कि सारी हरी सब्जियां एक दिन में तो बन नहीं जाएंगी, और कल तक ये टिकेंगी नहीं ?''

चिंतामणि के दिमाग में यह बात नहीं आयी थी । बोला, ''तुम ठीक कहती हो, उमा ।''

उमा ने समझ लिया कि उसके अव्यावहारिक पति के बूते का यह काम नहीं है । बोली, ''मैं पहले से ही जानती थी कि तुम इस काम को नहीं कर सकोगे । अब मैं ही कल से मरूंगी ।''

चिंतामणि को बुरा लगा । लेकिन अपने स्वभाव से वह लाचार था । अपने काम स्वयं करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध चिंतामणि दफ़्तर जाते समय अगले दिन अपना सामान संभालने में लगा, पर उसे रुमाल नहीं मिला । पैन भी कहीं रख दिया था, याद नहीं आया । वह कमरे में इधर से उधर उनकी तलाश में चक्कर लगाने लगा । बार-बार घड़ी देखता, बड़बड़ाता, लेकिन... नहीं-नहीं, वह उमा को हैरान नहीं करेगा, खुद ही खोजेगा ।

उमा चौके में से पति की हैरानी देख रही थी । मन-ही-मन दुःखी हो रही थी । पांच-सात मिनट निकल गये, तो उसने रसोई में से चिल्लाकर पूछा, ''क्या नहीं मिल रहा ?''

''कुछ नहीं, कुछ नहीं,'' चिंतामणि ने बड़े दयनीय स्वर में कहा, ''तुम फिक्र मत करो । मैं

उमा ने समझ लिया कि उसके अव्यावहारिक पति के बूते का यह काम नहीं है । बोली, "मैं पहले से ही जानती थी कि तुम इस काम को नहीं कर सकोगे । अब मैं ही कल से करूंगी ।"

खोज लूंगा ।"

लेकिन उमा से न रहा गया । वह बड़ी तेजी से आयी । बोली, "आखिर ढूंढ़ क्या रहे हो ?"

चिंतामणि ने कहा, "अजी, रुमाल नहीं मिल रहा और पैन भी कहीं इधर-उधर हो गया है । उमा, तुम अपना काम करो ।"

पर उमा रुकी नहीं । क्षणभर में दोनों चीजें उसे देकर फिर रसोई में अपना काम निबटाने गयी कि टिम्मी चीख उठी, "यह चीकू का बच्चा मेरी सब चीजें यहां-वहां पटक देता है । मम्मी, मेरा ज्योमैट्रीकल बॉक्स नहीं मिल रहा ।"

उधर चीकू स्नानघर के बाहर खड़ा चिल्ला रहा था, "मम्मी, मेरा अंडरवियर कहां है ?"

"फिर वही रोना ! फिर वही रोना !" उमा बड़बड़ायी ।

चिंतामणि ने यह सब सुना तो दफ़्तर जाने के लिए दरवाजा खोलते-खोलते बोला, "टिम्मी, चीकू, तुम्हें मम्मी को परेशान नहीं करना चाहिए । अपना काम अपने-आप करना चाहिए ।"

पिछले दिन की सारी व्यवस्था ज्यों-की-त्यों धरी रह गयी । उमा ने समझ लिया, रोग लाइलाज है ।

इसके बाद उमा को अचानक एक चिंता ने आक्रांत कर लिया । यदि कल को उसे कुछ हो गया तो पति का क्या हाल होगा ? बच्चों का क्या होगा ? सोचते-सोचते उसके मन में एक कल्पना का उदय हुआ । उस कल्पना से वह कांप उठी, परंतु...

उस दिन से वह ईश्वर से रोज प्रार्थना करने लगी कि 'हे प्रभो, मेरे पति को मेरे सामने ही उठा लेना ।'

नारी के लिए यह अशुभ कल्पना कितनी भयावह है, यह वह जानती थी, लेकिन पति के दुःख को भी वह कैसे सहन कर सकती थी ? वह चली गयी, तो उसका पति बिना पतवार की नाव की भांति भटकता रहेगा । उसका जीवन नर्क बन जाएगा । तब वह जहां भी होगी, उसकी हालत को देखकर चैन से नहीं रह सकेगी । बच्चे भी लावारिस-जैसे हो जाएंगे ।

अब वह अपने अंतर्यामी से नित्य प्रति अपने पति की भलाई के लिए यही प्रार्थना करती कि उसे कहीं से भी हो, उन्हें दुःखी न देखना पड़े । वह पति की दीर्घायु के लिए कामना करती, लेकिन साथ ही उन भारतीय नारियों की तरह, जो अपने पति के कंधे पर जाने में ही अपने जीवन की धन्यता मानती हैं, वह वैसी प्रार्थना न करती ।

एक दिन उमा की एक अंतरंग सहेली उसके घर पर आयी । उमा उस समय प्रार्थना कर रही थी । उसे काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी । प्रार्थना

कर चुकी तो दोनों मिलकर बैठीं । सहेली ने सहज भाव से पूछा, ''उमा, इतनी देर तक तुम क्या प्रार्थना करती हो ?''

उमा ने उसे टालने का प्रयत्न किया, लेकिन जब वह बहुत पीछे पड़ी, तो उसने सारी बात साफ-साफ कह दी । सुनकर रत्ना भौंचक्की रह गयी । उसने कहा, ''ऐसी बात उमा, तुम कैसे सोच पाती हो ?''

उमा ने थोड़ा रुककर उत्तर दिया, ''तुम ठीक कहती हो रत्ना, ऐसी बात मुझे क्या, किसी को भी नहीं सोचनी चाहिए । लेकिन पति को कोई कष्ट न हो, यह सोचना भी तो पत्नी का परम पुनीत कर्त्तव्य है । रत्ना, मेरे रोम-रोम से यही आवाज उठती है कि मेरे पति सौ साल जीवित रहें, लेकिन मैं जानती हूं कि उनका स्वभाव कभी नहीं बदलेगा और बिना सहारे के वह एक कदम भी नहीं चल सकेंगे ।''

कुछ देर इधर-उधर की बातें करके रत्ना चली गयी । उमा घर के काम-काज में लग गयी ।

धीरे-धीरे कई साल गुजर गये । चिंतामणि ने अपनी नौकरी से अवकाश ग्रहण कर लिया । बच्चे भी बड़े हो गये । पर उमा की चर्या में कोई अंतर नहीं आया । वह पहले की तरह काम में खटती रही । जब वह बहुत झींकती तो टिम्मी उसकी थोड़ी-बहुत मदद कर देती ।

नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के बाद चिंतामणि का स्वास्थ्य गिरने लगा । अब उमा के लिए एक काम और बढ़ गया, रोगी पति की देखभाल करना । दिलासा देती और प्रसन्न रखने का प्रयत्न करती । चिंतामणि बार-बार कहता कि अब मैं बचूंगा नहीं । वह उसका मुंह पकड़ लेती और कहती, ''आगे ऐसी बात अपने मुंह से मत निकालना ।'' चिंतामणि सजल नेत्रों से कहता, ''उमा, मैं जीवन में तुम्हें कभी कोई सुख नहीं... ।'' उमा उसे वाक्य पूरा नहीं करने देती, ''तुम जैसा पति भगवान सबको दे ।'' चिंतामणि कहता, ''मेरे जाने के बाद तुम दुःखी मत होना । वह कहती, ''मरना-जीना अपने हाथ थोड़े ही है ।''

इसके बाद ज्यों ही उमा को समय मिलता, वह पूजाघर में जाकर भगवान से प्रार्थना करती, ''हे प्रभो, तू इनको जल्दी-से-जल्दी अच्छा कर दे । इनकी हमें बड़ी जरूरत है ।'' अब उसके मुंह से यह नहीं निकलता था कि वह उसके सामने ही उठ जाए ।

लेकिन उसकी प्रार्थना चिंतामणि को बचा नहीं सकी ,वह चला गया ।

उसके जाने के बाद जब बच्चे बहुत बिलखने लगे, तो आंसुओं की धारा के बीच उमा बस इतना कह सकी, ''वह हमें छोड़कर कहीं जा नहीं सकते ।... हमें उनकी जरूरत है तो उन्हें भी तो उमा की जरूरत है ।''

— द्वारा : सस्ता साहित्य मंडल,
एन-७७, कनॉट सरकस
नयी दिल्ली-११०००१

जर्जर हो गया है समूचा प्रशासकीय तंत्र

• डॉ. एस. डी. एन. तिवारी

शासन जिस कला से अपने क्षेत्र में अपनी नीतियों का पालन करता है, उसे प्रशासन कहा जा सकता है । इस कला का क्रियान्वयन प्रशासक तंत्र कराता है । जनता प्रशासित वर्ग में आती है ।

किसी कार्य का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन करने के लिए यह आवश्यक है कि उससे संबंधित मशीन या संगठन सही और अच्छी दशा में हों । इसलिए सफल शासन के लिए प्रशासनिक मशीन और संगठन का ठीक रखा जाना अत्यंत आवश्यक है । मशीन को अच्छी दशा में रखना मालिक की जिम्मेदारी रहती है और तभी वह सुचारू रूप से चल सकती है ।

ब्रिटिश काल में

ब्रिटिश सरकार ने राजपत्रित व अराजपत्रित वर्ग बनाये थे । राजपत्रित अधिकारी शासन के अंग माने जाते थे और वे शासन के लाभ के लिए अपने विवेक से कार्य कर सकते थे । इन अधिकारियों के लिए उन्होंने बहुत उच्च वेतन, ऊपरी कार्य के लिए अर्दली, आवास के लिए बंगले, पेंशन इत्यादि की सुविधाएं रखीं थीं । उन्हें समय पर वेतन वृद्धि, पदोन्नति, पेंशन इत्यादि बिना मांगे मिलती थी । विशेष गलतियों पर उन्हें सजाएं भी नियमानुसार जांच करके दी जाती थीं, जिस पर आपत्ति करने का प्रावधान था । उनके स्थानांतरण पर उन्हें बंगले, बच्चों को स्कूलों में दाखिला इत्यादि सरलता से मिल जाता था, जिससे कि कोई अधिकारी स्थानांतरण से भयभीत नहीं होता था ।

संक्षेप में शासन अपनी प्रशासनिक मशीनरी को हर प्रकार की सुविधा प्रदान करता रहता था एवं इसके एवज में वह उनसे निष्ठापूर्वक कार्य की अपेक्षा करता था । उत्कृष्ट कार्य के लिए नाना प्रकार की पदवियां प्रदान कर उन्नति के अवसर दिये जाते थे ।

अराजपत्रित कर्मचारियों में से जो कार्यपालन वर्ग के थे, उनके लिए आवास की व्यवस्था होती थी । उन्हें भी उपरोक्त सभी सुविधाएं थीं । लिपिक वर्ग जो अधिकाधिक स्थानीय रहता था एवं जिनके स्थानांतरण बहुधा पदोन्नति के समय ही होते थे, उनके लिए आवासगृह की सुविधा नहीं थी और उनके वेतनमान की तुलना में कम थे । उस समय बिना किसी कठिनाई के मकान सस्ते किराये पर प्रायः हर शहर व गांव में मिल जाया करते थे । इस प्रकार शासकीय वर्ग हर प्रकार से शासन

संतुष्ट था और शासन को अपने तंत्र पर पूर्ण विश्वास । इसी विश्वास पर मुट्ठीभर अंगरेज इस देश में राज्य करते थे ।

पहले शासन अपने प्रशासनिक कर्मचारियों के हितों का पूरा ध्यान रखता था । आज प्रशासनिक कर्मचारी शासन की उपेक्षा का शिकार हैं । देश में व्याप्त भ्रष्टाचार का यह भी एक कारण है ।

स्वाधीनता के बाद

स्वतंत्रता के पश्चात स्व. वल्लभ भाई पटेल ने प्रशासनिक सेवाओं पर प्राथमिकता से ध्यान दिया । उनके बाद इस मशीन की ओर ध्यान नहीं दिया गया । मंहगाई बढ़ी, शासन ने कुछ नहीं किया । अधिकारियों व कर्मचारियों को काले झंडे का प्रदर्शन करना पड़ा, तब कहीं मंहगाई भत्ता आरंभ किया गया, परंतु यहां पर भी निम्न श्रेणियों का ध्यान नहीं रखा गया क्योंकि उनकी संख्या अधिक और उनके काले झंडे भी अधिक थे । जो अधिकारी २५०० रुपये महीने का वेतन पाते थे, उन्हें वर्ष १९७६ तक कोई मंहगाई नहीं मिली । इसका कारण केवल यही था कि उनकी संख्या कम थी और वे अपने उत्तरदायित्व को समझते थे ।

उपेक्षा की नीति

आज भी शासन अपने तंत्र की ओर आंखें बंद रखे है । जो उच्च अधिकारी १५ वर्ष पूर्व सेवा से निवृत्त हुआ, उसकी पेंशन कुछ सेवानिवृत्त निम्न अधिकारी की पेंशन से कम है । कुछ मामलों में वह चपरासियों से कम है । फौजी अफसरों ने इसके लिए लड़ाई 'वन रैंक वन पेंशन' (एक स्तर के अधिकारी की पेंशन एक हो) प्रारंभ कर दी है । दूसरे विभाग भी यह कार्य शीघ्र हाथ में लेंगे । पदों की संख्या बढ़ती गयी परंतु आवास गृह बनाने की चिंता नहीं की गयी । भूमि व मकान सीमा और रेंट-कंट्रोल इत्यादि झगड़ों से धनवान लोगों ने किराये के लिए मकान बनाना बंद कर दिया । अधिकारियों को कौटुंबिक जिम्मेदारियां संभालने के लिए कोई सहायता नहीं मिली । उनके बच्चों को स्कूलों में प्रवेश कठिन हो गया । उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रोत्साहन का जो प्रावधान रखा गया था, उसमें जातिवाद लाया गया । इसके साथ ही प्रशासकीय मशीन की जो छवि बनी थी, उसके भी गिराने का प्रयास होता रहा । यदि कुछ लोग सरकारी कर्मचारी को कचहरी के मामले मे घसीटते थे या उसके विरुद्ध समाचार पत्रों में बदनामी छापते थे तो ऐसे मामले लड़ने के लिए शासन उन्हें वित्तीय सहायता करता था । यह सुविधा अब बंद कर दी गयी है । उनकी पदोन्नति, दक्षता विरोध, स्थायीकरण इत्यादि की चिंता शासन ने करीब-करीब छोड़ ही दी है । इसके विपरीत समझदार अधिकारी को सेवानिवृत्ति के बाद भी सेवावृद्धि दी जाने लगी, जिससे उनके नीचे के कई अधिकारी बिना पदोन्नति के सेवानिवृत्त हो गये ।

सबसे बड़ा हथियार

शासन को यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रशासनिक मशीनरी ही उसका सबसे बड़ा हथियार है और उसे संभालकर रखना उसका

विशेष दायित्व है । टूटी-फूटी मशीनरी से अच्छे परिणामों की आशा कैसे की जा सकती है । आज भ्रष्टाचार को बढ़ाने का सबसे बड़ा कारण मंहगाई के अतिरिक्त शासन का प्रशासनिक तंत्र को गैर समझना व उसके प्रति उसकी अपनत्व की भावना की कमी है । कर्मचारी व अधिकारी न्याय मांगने हेतु व अपनी कठिनाइयां दूर करने हेतु यहां-वहां भटकते हैं । क्या यह प्रशासन व शासन के उच्च अधिकारियों का काम नहीं है कि वे उनकी समस्याओं की ओर ध्यान दें जिससे ये लोग निष्ठापूर्वक कार्य कर सकें । 'मात्र कांटेक्ट' दौरों पर मंत्री लोग जनता की कठिनाइयां पूछते हैं । क्या वे अपने उस तंत्र के लिए जिसके माध्यम से जनता का कार्य किया जाता है, कुछ नहीं कर सकते ?

प्रशासकीय तंत्र जर्जर

प्रशासकीय तंत्र आजकल अंदर से ही जर्जर हो गया है । एक ही कार्यालय में कार्यरत कर्मचारी एक-दूसरे से घूस लेते हैं । स्थानांतरण एक व्यवसाय के रूप में उभर रहा है । विशेष तौर से मध्य प्रदेश में जो एक विशाल क्षेत्र है, एक छोर से दूसरे छोर पर स्थानांतरण से कर्मचारी को नाना प्रकार की कौटुंबिक, आर्थिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्य संबंधी हानियों को झेलना पड़ता है । ऐसे स्थानांतरणों से स्पष्ट है कि शासन अपने तंत्र को अपना व अपने परिवार का एक हिस्सा या अंग नहीं मानता । अकुशल कार्य के लिए उपरोक्त कठिनाइयां पैदा करना शासकीय नियमों में दंड नहीं माना गया है और इसलिए कर्मचारी भी उसे दंड नहीं मानते और न इससे उनमें सुधार की अपेक्षा करनी चाहिए । इसे वे शासन का अन्याय कोप मानते हैं ।

शासन ने भी अपनी नीतियों से अपरोक्ष रूप से यही मान्यता बना रखी है कि प्रशासकीय तंत्र एक आराम व मौज करने की जगह है और इसलिए वह निम्न जातियों का उत्थान इस तंत्र में भरती कर उनको ऊंचा उठाना चाहती है । यदि शासन की यही धारणा है तो इस तंत्र से वह किस प्रकार से यह आशा रखती है कि वह देशभक्त, निष्ठावान, चरित्रवान इत्यादि रहेगा ।

शासन की इन गलत धारणाओं व नीतियों का परिणाम उन प्रशासित लोगों को झेलना पड़ता है जो गणतंत्र में शासन व प्रशासन तंत्र के असली मालिक हैं । शासन की छवि वे प्रत्यक्ष में शासन तंत्र से देखते हैं और उसी को दोष देते हैं, जबकि इसकी पूरी जिम्मेदारी शासन की है । प्रायः हर अधिकारी व कर्मचारी शासन की मरजी से काम करता है और वह शासन की असली छवि है । जिस दिन शासन इस गूढ़ मंत्र को समझेगा, उसी दिन ही सब कुछ सुधर जाएगा । स्वस्थ प्रशासकीय तंत्र ही किसी देश को खुशहाल, स्वतंत्र व शक्तिशाली रख सकता है ।

—'समय', प्रोफेसर्स कॉलोनी
भोपाल, ४६२००२

- क्षय रोग की चिकित्सा संभव है और सस्ता भी ।
- इसका इलाज ६ से ८ महीनों तक लगातार करना होता है, जो बीच में ही छोड़ देने पर इसके रोगाणु बलशाली होकर औषधि की शक्ति को सहकर उसे नकार देते हैं । फिर इसका इलाज खर्चीला और लंबा हो जाता है ।

यूं जन्मा वह भयानक उपन्यास

● सुरेन्द्र श्रीवास्तव

यह रोमांचक कथा एक महान उपन्यासकार तथा दो प्रख्यात कवियों के अलौकिक मिलन व मिलन के फलस्वरूप एक विश्व प्रसिद्ध भयानक उपन्यास की उत्पत्ति की है । वैसे तो ये तीनों रचनाकार ही प्रसिद्ध थे, किंतु इस उपन्यास के जन्म की रोचक घटना व उपन्यास की अपार सफलता ने इन तीनों को एकाएक प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचा दिया ।

ये तीनों महान कलमजीवी थे— कवि लार्ड बायरन, प्रसी तथा मैरी शैली । तीनों में मित्रता थी और अकसर एक साथ उठते-बैठते, साहित्य पर चर्चा करते थे । इन चर्चाओं में अकसर नये-नये विषयों व प्रसंगों का जिक्र होता, जिन पर ये रचनाओं का सृजन करते ।

इस घटना के समय कवि लार्ड बायरन जेनेवा झील के तट पर एक सुंदर भवन में रह रहे थे । उनके पड़ोस में अन्य दोनों रचनाकार प्रसी तथा मैरी शैली भी ठहरे हुए थे । ये तीनों नाव चलाने के और तट की रेत पर नंगे पैर घूमने के शौकीन थे । इन समान रुचियों के कारण इनके समय बड़े आराम से बीत रहे थे ।

जिस दिन इस घटना ने जन्म लिया, उस दिन निरंतर वर्षा हो रही थी । दरअसल मौसम कई दिन से खराब चल रहा था, जिस वजह से लोगों का बाहर निकलना लगभग नहीं के बराबर हो गया था । मौसम की मार से प्रभावित ये तीनों कलमकार भी मजबूरी में अपने कमरों में कैद होकर रह गये थे । दिन तो किसी प्रकार तीनों ने अकेले-अकेले काट लिया, लेकिन शाम घिरते ही उन्हें अकेलेपन से ऊब हो गयी । प्रसी और मैरी शैली से अकेले रहा नहीं गया । दोनों ने एक-दूसरे से मिलकर सलाह की और समय काटने के इरादे से लार्ड बायरन के घर चलने का निश्चय किया ।

दोनों अपने मकानों से निकलकर लार्ड बायरन के यहां पहुंच गये । लार्ड बायरन ने महज आराम के लिए वह मकान खरीदा था और उसको सजाकर उसका नाम 'बायरन विला' रख दिया था । मैरी शैली ने दरवाजे की घंटी बयायी । लार्ड बायरन ने दरवाजा खोला और दोनों को अपने दरवाजे पर देखा, तो प्रसन्न होते हुए कहा— 'आप लोगों का स्वागत है ।

जब तीनों ने अपने-अपने विचार पर लिखते हुए कहानियां पूरी कर लीं, तो सुनाने का क्रम प्रारंभ हुआ । पहले लार्ड बायरन से कहानी सुनाने को कहा गया । उन्होंने पूरे उतार-चढ़ाव के साथ अपनी कहानी सुनायी, जिसे काफी पसंद किया गया । इसके बाद प्रसी ने अपनी लिखी भूत-प्रेत की भयानक कथा सुनायी । यह भी सनसनीखेज रही । इसे भी पसंद किया गया । अब बारी थी मैरी शैली की ।

मौसम ने परेशान ही कर दिया । ईश्वर की सौगंध, मैं स्वयं इतनी उकताहट महसूस कर रहा था कि यदि आप दोनों इस समय न आते, तो मैं इस ऊब से पागल हो जाता ।'

लार्ड बायरन ने दोनों को अंदर आने को कहा और उनके अंदर आ जाने पर दरवाजा बंद कर लिया । तीनों बायरन के ड्राईंग रूम में कुरसियों को अग्निकुंड के पास खींचकर बैठ गये । अब उनमें विभिन्न साहित्यिक विषयों पर बातचीत होने लगी ।

कुछ देर तक तो तीनों यूं ही विभिन्न विषयों पर बातचीत करते रहे । तभी, एकाएक बायरन के मस्तिष्क में एक विचार बिजली की तरह कौंधा । बायरन ने दोनों मित्रों के सम्मुख एक नायाब प्रस्ताव रखा । उन्होंने कहा— 'समय काटना इस समय हम तीनों के लिए एक समस्या बन गया है । मेरा विचार है कि समय बिताने के लिए हम तीनों क्यों न इसी समय भूत-प्रेतों से संबंधित एक-एक रोमांचक कहानी लिखें । कहानी पूरी करके हम बारी-बारी से अपनी कहानी बाकी दोनों को सुनायें । इस प्रकार हम सबका समय भी कट जाएगा और हम लोग इ ऊब व उकताहट से भी छुटकारा पा सकेंगे ।'

प्रसी और शैली ने बायरन के इस सुझाव का समर्थन किया । फिर क्या था ? तीनों अलग-अलग मेजों पर बैठ गये और कहानी का प्लाट सोचने लगे । उपयुक्त प्लाट सोचकर उनकी कलमें हरकत में आ गयीं । सर्वप्रथम बायरन की कलम ही चली । पिछले कुछ दिनों से वे इसी समस्या पर सोच रहे थे । उनकी कल्पना का विषय था कि संसार में अपने शरीर को छोड़ने के बाद आत्मा की वापसी संभव है या नहीं । अतः उन्होंने इसी के अनुरूप कहानी लिखनी आरंभ कर दी ।

यह भी संयोग ही था कि स्वयं मैरी शैली भी कई दिनों से इसी विषय पर एक अनोखी कहा लिखने की सोच रही थी । वस्तुतः हुआ यह था कि इस दिन से एक सप्ताह पूर्व उसने एक विचित्र स्वप्न देखा था । उसने स्वप्न में देखा था कि एक चित्रकार ने एक लौह पुरुष का चित्र बनाया । वह चित्र एकदम जीवंत था । चित्रकार उस चित्र को अपने सिरहाने रखकर सो गया ।

लगभग आधी रात को एक अनहोनी हुई । रात को चित्र में बना लौह पुरुष एकाएक अंगड़ाइयां लेता हुआ चित्र के फ्रेम से बाहर आ गया । उसने अपने दोनों हाथों से सोते हुए चित्रकार को उठाया और खिड़की के रास्ते बाहर फेंक दिया ।

मैरी शैली ने स्वप्न यहीं तक देखा था कि उसकी आंख खुल गयी थी । तभी से वह भयानक स्वप्न मैरी शैली के विचारों में घूमता रहा था और उसे स्वप्न की एक-एक घटना हूबहू याद थी । शैली इसे अनूठी कथा के रूप में लिखने की सोचती रही थी । उस रात जब वह बायरन के कमरे में लेखनी हाथ में लिए भयानक कहानी की रूपरेखा बना रही थी, तब अचानक उसे अपना वही स्वप्न याद आ गया । मैरी शैली ने तुरंत निश्चय किया कि इस कहानी को लिखने का इससे अच्छा मौका और कौन-सा मिलेगा ? वह अपने इसी स्वप्न को आधार बनाकर कहानी लिखने लगी । उसकी कलम तेजी से चलने लगी ।

उधर प्रसी ने भी भूत-प्रेत से जुड़े एक प्रसंग का विचार किया और अपने विचारानुसार एक भयानक कहानी लिखने लगी ।

रात के दो बजे तक तीनों मित्र एक- दूसरे से बात किये बिना अपनी-अपनी कहानी लिखते रहे और कमरे में तीन लोगों की उपस्थिति के बावजूद एक रहस्यमय मौन छाया रहा ।

जब तीनों ने अपने-अपने विचार पर लिखते हुए कहानियां पूरी कर लीं, तो सुनाने का क्रम प्रारंभ हुआ । पहले लार्ड बायरन से कहानी सुनाने को कहा गया । उन्होंने पूरे उतार-चढ़ाव के साथ अपनी कहानी सुनायी, जिसे काफी पसंद किया गया । इसके बाद प्रसी ने अपनी लिखी भूत-प्रेत की भयानक कथा सुनायी । यह भी सनसनीखेज रही । इसे भी पसंद किया गया । अब बारी थी मैरी शैली की ।

मैरी शैली ने अपने स्वप्न के आधार पर लिखी कहानी सुनानी प्रारंभ की, तो कदम-दर-कदम रोमांच व रहस्य का समां बंधता गया । उसकी कहानी सुनकर दोनों साथियों के रोंगटे खड़े हो गये । यही नहीं, मैरी शैली तो कथा सुनाते-सुनाते खुद पसीने से लथपथ हो ही गयी । भयानकता के हिसाब से उसकी कहानी सबसे अधिक पसंद की गयी ।

उसने अपनी उस हैरतअंगेज, भयानक कहानी को एक उपन्यास के रूप में लिखना शुरू कर दिया ।

शीघ्र ही उसका यह उपन्यास पूरा हो गया । मैरी शैली ने इसका नाम रखा— 'फ्रेंकस्टीन' ।

१९१८ में यह उपन्यास छपा, तो सारे संसार में इसकी धूम मच गयी । इसकी जबरदस्त बिक्री हुई और इसे विश्व प्रसिद्धि मिली । भयानक उपन्यासों में आज भी यह सर्वाधिक भयानक उपन्यास माना जाता है ।

इस विश्व प्रसिद्ध भयानक उपन्यास के जन्म के संबंध में सबसे बड़ी आश्चर्यजनक बात यह है कि मैरी शैली ने जब यह विश्व प्रसिद्ध भयानक उपन्यास लिखा था, तब उसकी आयु केवल अठारह वर्ष थी ।

—आसाम कॉटन मिल्स
पो. चारद्वार, जिला : शोणितपुर, आसाम

हमारी आंखें

डॉ. एम. एस. अग्रवाल

समय के साथ दृष्टि-दोष से बचने के लिए किसी भी वस्तु को प्रयत्न करके नहीं देखना चाहिए । कम प्रकाश या तेज प्रकाश में पढ़ने से नेत्रों पर तनाव पड़ता है, उचित प्रकाश में ठीक तरह बैठकर पढ़ना चाहिए, लेटकर पढ़ने या लिखने से नेत्रों में दोष हो जाते हैं और छोटी-सी आयु में विशेषज्ञ द्वारा ऐनक लगाने की सलाह दी जाती है । यदि समय पर जल-नेती, योग एवं त्राटक की क्रिया करायी जाए, तो दोष में सुधार हो जाता है । भोजन में ठीक विटामिन आहार नहीं मिलने से नेत्रों की ज्योति पर प्रभाव पड़ता है ।

आज के युग में नेत्र-प्रकृति की महान देन हैं । जन्म के समय नेत्रों का दुखना कभी-कभी नेत्र ज्योति के लिए घातक सिद्ध पाया गया है, थोड़ी-सी लापरवाही से कार्निया मंडल (कोरनिया) पर फूल के छोटे-छोटे चिह्न और अंधेपन की अवस्था दिखायी देने लगती है, अगर बालक का जन्म अच्छी स्त्री विशेषज्ञ द्वारा कराया जाए, तो नेत्रों की सफाई के साथ उचित औषधि का प्रयोग नेत्रों को स्वस्थ रखता है । घरेलू दाइयों या अयोग्य स्त्री डॉक्टरों द्वारा भूल से नेत्रों की सफाई न होने से नेत्रों में विकार रह जाते हैं, बच्चे को दूध उचित मात्रा में समय पर देना चाहिए, जिससे उसके विकास में बाधा नहीं आये, मां का दूध बच्चे को अनेक रोगों से बचाता है ।

बच्चा जैसे बड़ा हो, उसके नेत्रों को अच्छे नेत्र विशेषज्ञ द्वारा परीक्षण कराना चाहिए । अगर हलका भेंगापन या अन्य दोष दृष्टिगोच हों, तो आज के वैज्ञानिक युग में अनेक ऐसे उपचार आ गये हैं, जिनसे बच्चे की अवस्था परिवर्तन सुगमता से हो सकता है । ध्यान रहे बच्चों के पेट में कीड़े होने से नेत्र के साथ शारीरिक विकार हो जाते हैं । अगर बच्चे को ठीक भूख न लगती हो, चिड़चिड़ा रहता हो और विकास में कमी अनुभव करता हो तो शौच-परीक्षा के बाद उचित औषधि से रोग का निवारण किया जा सकता है । मीठी गोलियां, चिंगम, टॉफी और मिठाइयों के सेवन से कीड़ों में बढ़ोतरी हो जाती है और कभी-कभी बच्चे को ठीक करने में काफी समय लग जाता है ।

अधिक टी. वी. देखना हानिकारक

युवा अवस्था में अधिक टेलीविजन या वीडियो खेल से नेत्रों में तनाव पैदा हो जाता है और दृष्टि दोष दिखायी देने लगते हैं । प्रारंभिक

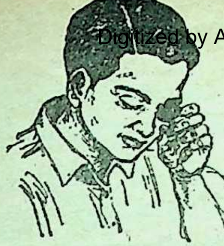

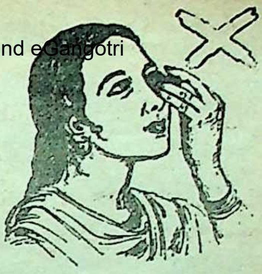

अवस्था में नेत्रों से पानी आना, खुजली और चौंध की शिकायत होती है । लेटकर पढ़ना या टेलीविजन देखने से तनाव में बढ़ोतरी के साथ सिर दर्द और आंखों का मिचमिचाना आरंभ हो जाता है । ऐसी अवस्था अनुभव होने पर विशेषज्ञ की सलाह के साथ लेटकर पढ़ना या टेलीविजन देखना बंद कर देना चाहिए । दूरदर्शन के कार्यक्रम समीप से न देखकर १० फीट की दूरी से बैठकर देखने चाहिए । अगर समय पर नेत्रों को तनाव से बचाया जाए, तो अनेक तकलीफें नहीं होतीं । समय-समय पर शीतल जल से नेत्रों को धोने या त्रिफले के जल प्रयोग से नेत्रों में शक्ति का संचार होता है और स्वस्थ्य रहती हैं ।

आज के युग में रोहे का रोग नेत्र-ज्योति के लिए काफी घातक सिद्ध हुआ है । जो युवा अपने नेत्रों को अच्छी तरह साफ नहीं रखते, उनको पलकों में भारीपन अनुभव होता है और समय के साथ छोटे-छोटे दाने पलकों के भीतरी भाग में उभर आते हैं । ऐसी अवस्था में सोडियम क्लोराइड एक या आधी चम्मच एक कटोरे पानी में डालकर धोने से लाभ होता है । तुलसी के पत्तों की हल्की भाप भी लाभप्रद रहती है, रोग में बढ़ोतरी अनुभव हो तो विशेषज्ञ से उचित सलाह लेनी चाहिए । इस रोग में थोड़ी-सी लापरवाही से दृष्टि दोष के साथ नेत्रों के कार्नियानिका-मंडल एवं अन्य भागों में विकार होने लगता है । प्रदूषणयुक्त वातावरण इस रोग में हानिकारक पाया गया है ।

समय के साथ दृष्टि-दोष से बचने के लिए किसी भी वस्तु को प्रयत्न करके नहीं देखना चाहिए, कम प्रकाश या तेज प्रकाश में पढ़ने से नेत्रों पर तनाव पड़ता है, उचित प्रकाश में ठीक तरह बैठकर पढ़ना चाहिए । लेटकर पढ़ने या लिखने से नेत्रों में दोष हो जाते हैं और छोटी सी आयु में विशेषज्ञ द्वारा ऐनक लगाने की सलाह दी जाती है । अगर समय पर जल नेती, योग एवं त्राटक की क्रिया करायी जाए, तो दोष में सुधार हो जाता है ।

भोजन में ठीक 'विटामिन' आहार नहीं मिलने से नेत्रों की ज्योति पर प्रभाव पड़ता है । प्रातः जलपान के समय दूध के साथ अंकुरित मूंग या मोठ लेनी चाहिए । मध्यांतर के भोजन में एक कप हरी तरकारियों का सूप, सलाद, हरी तरकारियां, दाल, दही एवं फुलके लेने चाहिए । तेल के अचार प्रयोग में न लायें । चार बजे के समय दूध एवं समय के फल लिये जा सकते हैं, रात्रि का भोजन देर रात में न लें । सूप,

सलाद, हरी तरकारियां एवं फुलके लें। ध्यान रहे भोजन हलका लें। अधिक भोज्य पदार्थ सेवन से पेट भारी हो जाता है। तले मसालेदार एवं दोषपूर्ण तरीकों से बनाये भोजन से शरीर के साथ नेत्रों में भी विकार आ जाते हैं।

मोतियाबिंद : सफेद धब्बे

आज के युग में आयु के बढ़ते ही मोतियाबिंद का रोग काफी देखने में आया है। इस दृष्टि-दोष में तिलमिलों के साथ सफेद धब्बे दिखायी देते हैं, प्रारंभिक अवस्था में रोगी इस अवस्था पर अधिक ध्यान नहीं देते, और कभी-कभी जल्दी में नेत्र-परीक्षा के समय रोग ठीक पकड़ाई में नहीं आता। इस रोग का उचित्त औषधि डालकर ओपथोलमोस्कोप यंत्र द्वारा ठीक जांच करने पर रोग की ठीक अवस्था का ज्ञान होता है। प्रारंभिक अवस्था में त्रिफला के जल से नेत्र धोने से और शुद्ध शहद के प्रयोग से काफी लाभ अनुभव होता है। होम्योपैथी की औषधि सबकस सीनेरेरिया मैरीटीमा का प्रयोग इस रोग में लाभप्रद पाया गया है। रोग बढ़ जाने पर ऑपरेशन एकमात्र इलाज है।

स्वास्थ्य और भोजन पर ठीक ध्यान नहीं देने से मधुमेह का रोग नेत्रों की ज्योति पर प्रभाव डालता है। इस रोग से छायापट में विकार आ जाते हैं और दृष्टि हलके-हलके क्षीण होने लगती है। कुछ रोगियों में ऐनक का नम्बर शीघ्र परिवर्तित करना पड़ जाता है और ज्योति में कुछ रुकावट-सी अनुभव होती है, रोगी को प्रारंभिक अवस्था में अपने विशेषज्ञ से उचित सलाह लेनी चाहिए और नीम के दो या तीन पत्ते प्रातः मुख में डालकर चबायें और बाद में उनका रस अंदर जाने के बाद पत्तों को थूक दें और एक या दो काली मिर्च पानी के साथ निगल जाएं। ध्यान रहे इस रोग में आहार के साथ व्यायाम और योग-क्रियाओं पर ध्यान देना चाहिए। रोग के अधिक बढ़ने पर निदान में कठिनाई आ जाती है और कभी-कभी नेत्र-ज्योति इतनी कमजोर हो जाती है कि ऐनक का ठीक नंबर देना कठिन हो जाता है।

छायापट के रोगों में काला मोतिया का एक ऐसा रोग है, जिसका अगर प्रारंभिक अवस्था में उचित उपचार नहीं कराया जाए, तो ज्योति में गिरावट बहुत शीघ्र होने लगती है। रोग में नेत्रों में भारीपन के साथ सिर दर्द और बल्ब के चारों तरफ प्रकाश का हल्का-सा घेरा दिखायी देता है। समय पर उचित औषधि और भोजन स्वास्थ्य के अन्य नियमों को प्रयोग में लाने से रोग की विकट अवस्था से बचा जा सकता है। छायापट के रोगी को टेलीविजन अधिक नहीं देखना चाहिए। थोड़ा तनाव नेत्रों में अन्य विकार पैदा कर देता है जिसका कभी-कभी उपचार करना कठिन हो जाता है, नेत्र के इन विकारों में विशेषज्ञ आपका सच्चा मित्र रहता है। समय-समय पर सलाह बहुत लाभप्रद रहती है।

आजकल सभी आयु के लोगों में ऐनक क नंबर काफी देखने में आ रहा है। छोटे-छोटे स्कूली बच्चों को संभालना कठिन होता है। अगर प्रारंभिक अवस्था में प्राकृतिक साधनों के साथ भोजन पर विशेष ध्यान दिया जाए, तो ऐ की बढ़ोतरी से बचा जा सकता है। प्रातः हरी घास पर घूमना, त्राटक क्रिया और योगाभ्यास काफी लाभप्रद पाये गये हैं। जिन बच्चों या

बड़ों को अधिक नंबर की ऐनक लग जाती है, उन्हें रेडियल कैरोटोमी कराने की सलाह दी जाती है । यह एक रूसी पद्धति है, लेकिन न्यूयार्क टाइम्स ने इस क्रिया को नेत्रों के लिए काफी दोषी पाया है, इससे अच्छा कांटेक्स लेंस या ऐनक का प्रयोग ठीक रहता है ।

विटामिन ए का प्रयोग

नेत्रों को स्वस्थ रखने के लिए विटामिन ए खाद्य पदार्थ प्रयोग करने चाहिए । अनाज में मक्का या बाजरे की रोटी, दालों में सोयाबीन, मसूर, चने की दालें बहुत लाभप्रद रहती हैं । दुग्ध पदार्थों में दूध, दही, मक्खन और पनीर । हरी तरकारियों में मूली के पत्ते की सब्जी, पालक की सब्जी, पत्ता गोभी, चने का साग, मेथी, गाजर, धनिया-पोदीने की चटनी, करेले की तरकारी । फलों में आम, संतरे, पपीता, तरबूज एवं पके अंजीर, कभी-कभी केले का सेवन लाभप्रद है ।

आयुर्वेदिक औषधियों में च्यवनप्राश एवं त्रिफलाघृत, नाग भस्म शहद के साथ और सप्तामृतलौह की दो गोलियां भोजन के बाद सेवन करनी चाहिए । नेत्रों के लिए नेत्रामृत बूंद डालने से ज्योति-वर्धन में लाभ और विकारों से बचावट होती है ।

बनाने की विधि : दो औंस गुलाब जल में १० ग्राम पुनरनवा, त्रिफला चूर्ण, मुलहठी, ५ ग्राम सेंधा नमक और लाल फिटकरी डाल दें । तीन दिन के बाद इसके जल को अच्छी तरह छानकर १२ औंस गुलाब जल की शीशी या डिस्टिल जल में डाल दें । नेत्रों में तीन या चार बार भोजन आदि के बाद प्रयोग करें ।

नेत्रामृत चूर्ण : (१०० ग्राम प्रति) बादाम, सौंफ, खसखस, धनिया एवं चारों मगज अलग-अलग पीस लें । इसके बाद १० प्रति : काली मिर्च, सफेद मिर्च, हरी इलायची, छोटी पीपल और ब्रह्मी बूटी बारीक पीस लें, ६ ग्राम चूर्ण पिसने के बाद ५०० ग्राम मिश्री बारीक पीसकर सबके साथ मिला दें । यह चूर्ण प्रातः दूध के साथ एक चम्मच नित्य सेवन करना चाहिए । यह चूर्ण नेत्र ज्योति के साथ छायापट के रोगों में लाभप्रद पाया गया है ।

प्रातः स्नान के बाद पैरों के अंगूठों एवं उंगलियों में सरसों या तिल के तेल भरें और तलबे की मालिश करें । नाभि, लिंग एवं गुदा पर तेल लगाने से नेत्रों में शक्ति संचारित होती है । कानों में इसी तेल की छोटी सी फुरेरी फेरने से कान के साथ नेत्रों में शक्ति अनुभव होती है । ध्यान रहे कब्ज की शिकायत से बचें । आजकल के बाजारू भोजन से बचें और सादी घर की चीजें खायें ।

आज के जीवन में सादगी कम देखने में आती है, लेकिन अगर जीवन में इसको ठीक तरह से अपनाया जाए, तो नेत्रों के साथ शरीर अनेक रोगों से बचा जा सकता है । संयत जीवन और यम नियम के पालन से अनेक रोग दूर रहते हैं और नेत्र-ज्योति अच्छी बनी रहती है ।

सेक्टर डी-३, पाकेट ४, हाउस नं. ४००२
वसंत कुंज, नयी दिल्ली-३०

वैद्य की सलाह

ओमप्रकाश गुप्ता, जोधपुर

प्रश्न : उम्र २३ साल, १६ साल से हाथ-पैर में पसीना बहुत आता है ।

उत्तर : आंवला चूर्ण आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें ।

रेखा, औरंगाबाद

प्रश्न : उम्र १७ साल, पहले खुजली होती है, फिर जलन के साफ घाव बन जाते हैं । शरीर में किसी भी जगह हो जाता है । ऐलोपैथी दवा ली फायदा नहीं ।

उत्तर : रसमाणिक्य १० ग्राम, प्रवाल पिष्टी १० ग्राम, चालीस मात्राएं बनाएं । एक मात्रा सुबह शहद से लें । सारिवाद्यासव दो चम्मच भोजन के बाद पिएं । गंधक रसायन एक-एक मात्रा दोपहर-रात पानी से लें । ६ माह नियमित दवा सेवन करें ।

मधुरिका, दमोह

प्रश्न : उम्र ३८ वर्ष, कार्यरत हूं । १२ वर्षीय पुत्र है । मासिक नाममात्र को होता है । मानसिक तनाव बना रहता है ।

उत्तर : रजप्रवर्तनी वटी एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । दशमूलारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

एम. अग्रवाल, कानपुर

प्रश्न : लगभग डेढ़ साल से दायें हाथ का अंगूठा जोर नहीं डालता । कलम भी नहीं पकड़ सकता ।

उत्तर : रसराजरस तीन ग्राम, अश्वगंधाचूर्ण ग्राम, इनकी तीस मात्रा बनाएं । एक मात्रा सुबह दूध से लें । महायोगराज गूगल एक वटी रोज दूध से लें । माह नियमित औषधि सेवन करें ।

विजेन्द्र कुमार, दरभंगा

प्रश्न : उम्र २५ साल । रीढ़ की हड्डी व पीछे दोनें कूल्हों में दर्द व जलन । कभी-कभी फो की तकलीफ हो जाती है । कमजोरी हो है ।

उत्तर : त्रिफलागूगल एक वटी, त्रयोदशांग गूगल एक वटी, कैशोर गूगल एक सुबह-शाम गरम पानी से लें । आरोग्यवर्धनीवटी एक-एक वटी भो के बाद पानी से ।

श्रीमती गुप्ता, लखनऊ

प्रश्न : उम्र ५५ साल । नींद नहीं आती । टांग में सरसराहट । पेट में वायु । ऐलोपैथी की ली, लाभ नहीं ।

उत्तर : ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच सुबह- दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्म भोजन के बाद पिएं ।

राम अधीन यादव, धनुषा (नेपाल)

प्रश्न : कुछ समय से अम्लपित्त रोग से पीड़ित हूं । काफी परेशान हो चुका हूं । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : स्वर्ण सूत शेखर रस दस ग्राम, प्रवालपंचाम्रत दस ग्राम, इनकी अ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । नारिकेल चौथाई चम्मच भोजन के बाद पानी से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक च रात दूध से लें ।

कृष्ण कुमार शाह, कॉंजो

प्रश्न : उम्र २८ वर्ष । शरीर में दर्द होता था । दोनों पैर एवं जंघाएं पतली होती जा रही हैं । बिना सहारे सीधा चलने में परेशानी होने लगी है । दवा लिखकर भेजें ।

उत्तर : योग्य चिकित्सक को प्रत्यक्ष दिखाकर निदान अवश्य कराएं । अश्वगंधाचूर्ण साठ ग्राम, त्रयोदशांग गूगल तीस ग्राम, इनकी साठ मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा सुबह-शाम गरम पानी से लें । महायोगराज गूगल एक-एक वटी दोपहर-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

हरिप्रसाद जालान, बेतिया

प्रश्न : उम्र ३८ वर्ष । १५ वर्ष से खांसी है । सुबह-शाम अधिक रहती है । खट्टा पित्त भी निकलता है । कभी-कभी चक्कर भी आ जाते हैं ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, प्रवालमात्र दस ग्राम, इनकी साठ मात्रा बनाएं । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच पानी से लें । खंदिरवटी एक-एक गोली दिन में ६ बार चूस लें ।

अंजनी कुमार गोस्वामी, पटना

प्रश्न : माताजी की उम्र ६० वर्ष । डिसेंट्री, हाई ब्लड प्रेशर है । याददाश्त कमजोर है ।

उत्तर : सिद्धप्राणेश्वर रस दस ग्राम, प्रवालपिष्टी दस ग्राम इनकी साठ मात्रा बनाएं । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । सर्पगंधावटी एक-एक वटी दोपहर-रात पानी से लें । चित्रकादि वटी एक-एक वटी भोजन के बाद पानी से लें ।

शिव कुमार, श्रीनगर

प्रश्न : कृपया डिप्रेशन के लिए आयुर्वेदिक दवा सुझाएं ।

उत्तर : ब्राह्मीवटी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

सुनील जाट, जबलपुर

प्रश्न : एम.ए. का छात्र हूं । मसूड़ों से मवाद बहता है । एलोपैथी दवा ली । आराम नहीं है ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक वटी सुबह-दोपहर-रात पानी से लें । स्फटिक भस्म मंजन के रूप में सुबह-रात प्रयोग करें ।

नरेश चंद्र पुनोठा, पिथौरागढ़

प्रश्न : उम्र २१ वर्ष । पांच वर्ष से पेशाब रोकने की शक्ति नहीं है । एक-एक घंटे में पेशाब जाना पड़ता है । यदि रोक लूं तो कमर में दर्द होने लगता है । सभी प्रकार की जांच करा चुका हूं । कोई रोग नहीं है ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । च्यवनप्राश अवलेह एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

मनोज मोदी, महेश्वर

प्रश्न : मां की उम्र ४५ साल है । चार साल से साइटिका रोग से परेशान हैं । असहनीय दर्द दाहिने पैर में ऊपर से नीचे तक रहता है । सभी प्रकार के इलाज कराये, लाभ नहीं ।

उत्तर : समीरथ भगरस दस ग्राम, गिलोयसत्व दस ग्राम, इनकी साठ मात्रा बनाएं । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । रास्नादि गूगल दो-दो वटी दोपहर-रात गरम पानी से लें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

बी. ५/७ कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१

व्यंग्य

मैं आज भी भूतों की रोटी खा रहा हूं !

● इंद्र मोहन सहाय

सब्जी मंडी में मेरी एक छोटी-सी पंसारी की दुकान है । दुकान ने छोटेपन का साथ निभाने की-जैसे कसम ही खा ली थी, न तो वह चली थी और न कभी बड़ी ही हुई थी । जो सामान दुकान में आता मानो 'फिक्सड डिपोजिट' अर्थात स्थायी खाते में जमा हो जाता । कुछ दिन बाद माल में घुन लग जाते या वह बुस जाता और जो ग्राहक भी उसे ले जाता तुरंत वापस दे जाता । मैं उन्हें लाख समझाता कि भाई घुन तुम्हारे देर से माल खरीदकर ले जाने के कारण लगे हैं, यदि पहले से ही माल ले जाते तो घुन क्यूं लगते, पर मेरी सुनता कोई नहीं था, खरी-खोटी सुनाकर सभी चले जाते थे । कभी मैं दुकान की गद्दी पर बैठता और पिछड़ी में मेरा लड़का ऊंघता और कभी वह गद्दी पर बैठता तो मैं पिछाड़ी में ऊंघता । दुकान तो खुली रखनी ही पड़ती थी । हां इस खुली दुकान से मैंने केसर के एक डिब्बे से ढाई-तीन हजार रुपये अवश्य कमाये हैं । न जाने कौन-सा एक सेल्समैन मुझे दो सौ ग्राम नकली केसर का डब्बा तेईस रुपये में दे गया था, जिसमें से ढाई-तीन हजार का केसर तो मैं बेच चुका हूं और अभी आधा डब्बा शेष है । इसका कारण यह है कि कोई दस रुपये का भी केसर मांगे तो बहुत जरा-सा देता हूं । शुरू-शुरू में मैंने एक ग्राहक को पांच रुपये में ढेर-सारा केसर दे दिया, तो वह अगले दिन आकर बोला, "यह लो लाला अपना केसर, नकली माल बेचते हो, कहीं पांच रुपये में भी इतना सारा केसर आता है ।" अब मैं चौकन्ना हो गय हूं और नकली केसर को असली केसर के भा ही बेचता हूं । नकली केसर के एक डब्बे से दुकान तो नहीं चल सकती, मेरे तो भूखों मरने की नौबत आ गयी होती वह तो भला हो उन भूतों का जिन्होंने मुझे बचा लिया ।

किस्सा यूं हुआ कि गरमी की एक दोपहर को मेरा लड़का दुकान में गद्दी पर बैठा था औ मैं अपने ऊंघने की ड्यूटी निभा रहा था कि मु कुछ ऐसा-सा वार्तालाप सुनायी दिया—

ग्राहक : भूतदाना है ?

मेरा लड़का : नहीं है ।

ग्राहक : दिलमिली है ?

मेरा लड़का : नहीं है ।

ग्राहक : धुएं का तेल है ?

मेरा लड़का : नहीं है ।

ग्राहक : चीते की खाल है ?

मेरा लड़का : नहीं है ।

ग्राहक : तो दुकान में है क्या, बेकार क्यूं

कौन कहता है कि भूत नहीं होते, मैं आज रोटी ही भूतों की बदौलत खा रहा हूं । मैं सोचता हूं कि जिस दिन लोगों को भूतों की यथार्थता का पता चल गया उस दिन मेरा धंधा चौपट हो जाएगा, परंतु निकट भविष्य में कुछ डरने की बात नहीं है । मेरी दो-तीन पीढ़ियां तो आराम से रोटी खा सकती हैं, यदि उनके मस्तिष्क में इस काम की अनैतिकता के बोध का कीड़ा उत्पन्न न हो जाए तो ।

खोल रखी है ।

मेरे कान खड़े हुए कि यह ग्राहक है कौन ? मैं फौरन बाहर आया और ग्राहक को नमस्ते करके पूछा, "कहां से आये हो ?"

ग्राहक बोला : "यहीं सब्जी मंडी से ।"

मैं बोला, "ओ हो तो अपने ही आदमी हैं, सब कुछ मिल जाएगा भाईसाहब, सब कुछ है ।"

ग्राहक बोला, "यह लड़का तो कह रहा था कि कुछ भी नहीं है ।"

मैंने कहा, "भाई, पकड़ा-धकड़ी बहुत है इसलिए ये सामान हम केवल अपने खास आदमियों को ही देते हैं ।"

अब मैंने सामान की पुड़ियां बांधनी शुरू कीं, भूतदाना बनाया साबूदाने में नील और काला रंग डालकर, दिलमिली बनी राई । धुएं के तेल के लिये काम आया सड़ा हुआ सरसों का तेल । समस्या उत्पन्न हुई चीते की खाल की । ग्राहक उसे तो पहचान जाता, फिर मुझे एक युक्ति सूझी । मैंने कहा, "चीते की खाल साबुत नहीं है पिसी हुई है ।" ग्राहक बिचारा मान गया और मैंने आटे में थोड़ी-सी हल्दी और काला रंग मिलाकर थमा दिया ।

ग्राहक ने माल ले तो लिया परंतु कुछ संकोच उसके मन में बना रहा । कुछ दबी जबान से उसने पूछ ही लिया, "माल तो सही है न !" मैंने उसे आश्वासन दिया कि ओझाजी के सब मरीजों का सामान हमारे यहां से ही जाता है, किसी चीज में शक लगे तो नमूना ले आना हम वैसा ही माल दे देंगे । मैं जानता था कि जब भूतदाना, दिलमिली और धुएं के तेल-जैसी संसार में कोई चीज होती ही नहीं है तो ओझाजी उसका नमूना कहां से देंगे । और जब भूत ही असली नहीं होते तो उन्हें उतारने का सामान क्या असली होगा ? असलियत यह थी कि उस ओझा ने जानकर ऐसी चीजें लिखायी थीं जो बाजार में मिलनी ही नहीं थीं, जब मरीज दुखी होकर लौटता तो फिर उसने वे अपने पास से बेच देनी थीं । क्योंकि ओझाजी दान दक्षिणा न लेने का नाटक करते थे तो, बस सामान की कीमत से ही उनका गुजारा चलता था । जैसा मैंने सोचा था, वही हुआ, ओझाजी अपने शिकार के हाथ में सारा सामान देखकर बौखला गये और बोले, "यह नकली है," परंतु जब ग्राहक ने माल का असली नमूना मांगा तो उन्हें कहना ही पड़ा "कि चल जाएगा, उस सामान से

भी काम ।''

उस ग्राहक के अन्य भूतों से पीड़ित सगे-संबंधी तथा अड़ोसी-पड़ोसी भी मेरी दुकान से भूतों का सामान ले जाने लगे । मेरी डूबती हुई दुकान चलने लगी । प्रोत्साहित होकर मैंने दुकान के बाहर एक बोर्ड भी लगवा दिया जिस पर लिखा था, ''यहां भूतों का सामान मिलता है ।'' मेरी दुकान तो चल पड़ी पर ओझाजी की कमाई बंद होने लगी । सो ओझाजी ने बात फैलानी आरंभ कर दी कि मेरी दुकान का माल सही नहीं है, परंतु वे किसी दूसरी दुकान का पता भी तो बतला नहीं सकते थे और हरेक व्यक्ति को अपने पास से सामान देने से उन पर से मरीजों का विश्वास उठ सकता था,-अतः वे अंदर ही अंदर सुलग रहे थे । अब मैंने पुराने ओझा का पत्ता काटना आरंभ किया । उसका जो भी मरीज आता मैं उससे कहता, ''वह ओझा बहुत लालची है, धुएं का तेल और भूतदाने-जैसी मेंहगी चीजें तो भूतों को चढ़ाता ही नहीं है, अपने पास रख लेता है और बाद में मुझे वापस कर जाता है तो भूत क्यूं भागने लगे हैं, भाई ये आजकल के पढ़े-लिखे भूत हैं, कोई अनपढ़-गंवार भूत नहीं हैं जो धोखा खा जाएं ।

इधर मेरी दुकान पर लगा बोर्ड भी रंग लाने लगा था । अब आते-जाते लोग मेरे से किसी अच्छे ओझा का पता पूछने लगे थे जो उन्हें भूतों के सामान के प्रयोग की विधि बतला सके । अब भूतों के सामान की आपूर्ति ने एक ओझा की सेवाओं की मांग उत्पन्न कर दी थी सो मैंने एक नया ओझा भी खड़ा कर दिया । एक बेरोजगार, महामूर्ख व्यक्ति को इस काम के लिए तैयार किया, मोर पंख का एक झाड़ू उसके हाथ में पकड़ायी और समझा दिया कि मैं जिसको भी उसके पास भेजूं वह उसी को बतला दे कि उस पर भूत चढ़ गया है और मेरी दुकान का पता बताकर वे ही चार-पांच चीजें-जैसे भूतदाना, दिलमिली, धुएं का तेल लाने को कहें । सामान आने पर मरीज के सिर पर चार-पांच बार मोर-पंख की झाड़ू मारे और सारा सामान आग में डाल दे । किसी से कोई पैसा न ले, मैंने हर महीने पंद्रह सौ रुपये उसे देने का प्रबंध कर दिया था । ये नये ओझाजी का धंधा भी खूब चल निकला, साथ में वे निस्वार्थी भी विख्यात हो गये कि किसी से एक कौड़ी भी नहीं लेते । जैसे-जैसे नये ओझा के मरीज या शिकार मेरे पास बढ़ने लगे मैंने भी उसका वेतन बढ़ा दिया । महीने के बीच में भी चिलम-पानी के लिए उसे थौड़े-बहुत पैसे दे देता । इस नये ओझा को भी वहम हो गया था कि उनके इलाज से काफी लोगों को लाभ होने लगा है ।

कौन कहता है कि भूत नहीं होते, मैं आज रोटी ही भूतों की बदौलत खा रहा हूं । मैं सोचता हूं कि जिस दिन लोगों को भूतों की यथार्थता का पता चल गया उस दिन मेरा धंधा चौपट हो जाएगा, परंतु निकट भविष्य में कुछ डरने की बात नहीं है । मेरी दो-तीन पीढ़ियां तो आराम से रोटी खा सकती हैं, यदि उनके मस्तिष्क में इस काम की अनैतिकता के बोध का कीड़ा उत्पन्न न हो जाए तो ।

— एच-१६-बी
साके
नयी दिल्ली-१

संस्मरणात्मक युद्ध-कथा

असम के बीहड़ों में सपेरों के बीच

● धर्मेंद्र गौड़

पूर्वी युद्ध-क्षेत्र में फोर्स वन-थ्री-सिक्स की गतिविधियां लगातार बढ़ती जा रही थीं ।

छल-कपट के सभी दांव-पेंच आजमाने की गरज से पुणे के निकट देहू रोड पर 'प्राइजनस सब्सटेंस-हेडक्वार्टर्स' का गठन हुआ और उसकी शाखा खोली गयी कलकत्ता में लॉर्ड सिन्हा रोड पर ८ नंबर की विशाल कोठी में । रासायनिक और जीवाणु युद्ध (केमिकल एंड बक्टीरियोलॉजिकल वारफेयर) के लिए अनेक प्रकार की जहरीली गैसों और विषैले पदार्थों का तो भंडार था ही वहां, कुछ खास किस्म के सांपों का जहर भी जमा किया जाने लगा । इसके इस्तेमाल के बारे में न तो कभी किसी ने बताया, न ही सुरक्षा नियमों के अंतर्गत किसी साथी या अफसर से पूछने की हिम्मत हुई । मुशाहिदे (ऑब्जरवेशन) के आधार पर इतना अलबत्ता जाना, कि बर्मा के अलावा पूर्वी क्षेत्र के अन्य भू-भागों में ब्रिटिश गुप्तचरों को भेजा जाता था यह जहर ।

सन १९४३ की मानसून अपने अंतिम जोश में थी । भारत-बर्मा सीमा पर जापानी सैनिक मित्र-राष्ट्रों की फौजों का विधिवत सफाया कर रहे थे । उनका आक्रमण पूरे जोश पर था । इस भयंकर विनाश ने फोर्स वन-थ्री-सिक्स के उच्चतम अधिकारियों—सर कालिन हरक्युलीज मिकेंजी, सर गाल्विन वी. स्टुअर्ट, लॉर्ड जॉन लिनार्ड कॉली और चार्ल्स ओ'नील को बर्बर हथियार अपनाने की प्रेरणा दी । गोलियों में फास्फोरेट विषैले पदार्थ मिलाये जाने लगे । शायद, इसी से मिलते-जुलते किसी खास मकसद के लिए सांप के जहर की भी जरूरत महसूस हुई हो । पहली बार जहरीले जिंदा सांपों से भरा 'कंटेनर' पहुंचाया मैंने जबलपुर से बंबई में मेडिकल सर्विसेज के डायरेक्टर मेजर-जनरल सर साहिब सिंह सोखी के पास । फिर मुझे भेजा गया असम । तभी की दास्तान है ।

रियर हेडक्वार्टर्स फोर्स वन-थ्री-सिक्स, ५३/ए, गरियाहाट रोड, बालीगंज, कलकत्ता का चौमंजिला भवन । 'प्राइजनस सब्सटेंस' की कलकत्ता शाखा के सर्वेसर्वा मेजर ब्राइन नगालैंड के डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स पोजी के साथ कोई गुप्त मंत्रणा कर रहे थे । तभी बगलवाले बंगले से बुलाकर पोजी से मेरा परिचय कराया

गया । फिर मेजर ब्राइन ने मुझे थमाये आठ हजार रुपये नकद और कर्नल ई. ग्रेमरी के नाम एक मोहरबंद लिफाफा । 'मूवमेंट ऑर्डर' अलग से दिया गया । आदेश था रंगपुर जाकर कर्नल ग्रेगरी से मिलना और फिर उन्हीं के साथ असम में कुछ खास स्थानों पर जाना ।

दूसरे दिन स्यालदह रेलवे स्टेशन (कलकत्ता) से रवाना होकर भोर में पहुंचा रंगपुर (वर्तमान बंगलादेश) । कर्नल ग्रेगरी वहां के मिलिटरी इंटेलिजेंस ऑफिसर होने के अलावा एडीशनल सुपरिंटेंडेंट ऑव पुलिस भी थे । सेना से अवकाश ग्रहण करते ही उनकी नियुक्ति पुलिस विभाग में कर ली गयी थी, क्योंकि वे बंगाल, असम, बर्मा के चप्पे-चप्पे से वाकिफ थे । जंगली जीव-जंतुओं के विशेषज्ञ होने के नाते चार्ल्स पोजी से उनकी पटती भी खूब थी । दोनों ही अच्छे शिकारी थे । चूंकि मेरे पहुंचने की पूर्व-सूचना मेजर ब्राइन ने वायरलैस द्वारा भेज दी थी, कर्नल ग्रेगरी मुझे स्टेशन पर ही मिले ।

गोलकगंज जाने के लिए गाड़ी प्लेटफार्म पर लगी मिली । कर्नल ग्रेगरी के साथ ही मुझे असम में कुछ दूर तक आगे बढ़ना था । हमारे कंपार्टमेंट में दो फौजी अफसर और भी थे—एक अंगरेज और दूसरा हिंदुस्तानी । इसीलिए सफर के दौरान मेरे और ग्रेगरी के बीच कोई गुप्त वार्ता नहीं हुई । उल्लेखनीय है कि उन दिनों बंगाल अकाल के भीषण दौर से गुजर रहा था, जिसकी काली छाया असम के सीमावर्ती इलाके में भी स्पष्ट नजर आ रही थी । रास्ते में अधिकांशतः भूखे-नंगे शरीर ही देखने को मिले ।

दोपहर बाद गोलकगंज पहुंचे । सेना के आर. टी. ओ. (रेलवे ट्रांशिपमेंट ऑफिसर) कैप्टेन रिचर्डसन के क्वार्टर पर ही कुछ देर विश्राम किया । फिर चाय-नाश्ते के बाद सवार हुए सरकारी जीप में और निकल पड़े ऊबड़-खाबड़ रास्ते पार करके ब्रह्मपुत्र नदी की ओर और आधे घंटे में जा पहुंचे सपेरों की एक छोटी-सी बस्ती में ।

बांस और घास-फूस के कई झोंपड़े थे । कर्नल ने गाड़ी की रफ़्तार धीमी कर दी । वहीं जमीन पर बैठे दो सपेरे एक साथ बीन बजा रहे थे । बगल के झोंपड़े से धुआं उठ रहा था, और तेज, तीखी दुर्गंध भी आ रही थी । कर्नल ने बताया, कि खाने के लिए सांप पकाया जा रहा है । कुछ आगे बढ़ने पर एक छोटा-सा कॉटेज नजर आया । दो मर्तबा हॉर्न बजाकर कर्नल ने गाड़ी वहीं रोक दी ।

इस एक-मंजिला कॉटेज की सतह जमीन से लगभग एक-डेढ़ मीटर ऊंचे लकड़ी के खंभों पर आधारित थी । लकड़ी के बरामदे से ही सटा कमरा भीतर दूर तक दिखायी दे रहा था ।

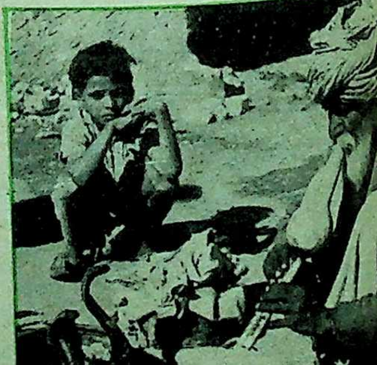

बाहर हरे-भरे बांस के झुंड, नारियल और सुपारी के पेड़ । जहां-तहां मुरगियां अपने चूजों के साथ मटरगश्ती कर रही थीं । सामने खंभे से बंधे दो दुबले-पतले शिकारी कुत्ते हमें देखते ही पिछले पैरों पर खड़े होकर आक्रमण करने की मुद्रा में जोर-जोर से भूंकने लगे ।

तुरंत कमरे से निकलकर इकहरे बदन का एक गोरा-चिट्टा अधेड़ बाहर आया और कर्नल को देखते ही हमारी ओर लपकते-लपकते दूर ही से सलाम ठोंका । चारखाने की लुंगी लपेटे, बनियाइन पहने था वह । असमी भाषा में फिसलते हुए कर्नल ने मेरा उससे परिचय कराया । नाम था उसका तनु ओजा । जहरीले सांपों का धंधा करता था । तभी तो उसकी माली हालत अपने सगे-संबंधियों से कहीं बेहतर थी । कुछ देर तक दोनों असमी में बातें करते रहे । मेरे पल्ले तो कुछ पड़ा नहीं । फिर हम तीनों ने प्रस्थान किया गोपालपाड़ा के लिए । उसका एक घर वहां भी था ।

निर्भीकता तो देखिए तनु की । हमारे निरंतर इसरार के बावजूद न तो उसने जीप में रखे घुटनों तक ऊंचे जूते पहने, न ही मोटी जीन की ढीली-ढाली खाकी पतलून । सांपों से सुरक्षा के लिए दोनों ही जरूरी हैं । वह वैसे का वैसा ही चप्पलें चटखाते, लुंगी लपेटे हमारे साथ हो लिया ।

विशाल ब्रह्मपुत्र पार करके पहुंचे गोपालपाड़ा । यहां कई सपेरों से भेंट हुई । उनसे ज्ञात हुआ कि कई पीढ़ियों से उनके परिवारवाले गोपालपाड़ा, मालीगांव, नौगांव, जोरहाट, लुमडिंग और दीमापुर में यही धंधा करते आ रहे हैं—जहरीले सांप पकड़ना और उनका जहर निकालकर सोने के भाव बेचना । तभी पता चला कि मिरगी, पागलपन, पोलियो, कुष्ठ रोग, लकवा और औरतों को बांझपन से छुटकारा दिलाने के लिए सांप का जहर अचूक औषधि है । युद्ध में इसका क्या अंशदान है, यह तो उन्हें भी मालूम न था ।

गोपालपाड़ा में मुझे कुद्दूस और बेज की सुपुर्दगी में देकर कर्नल ग्रेगरी रंगपुर वापस लौट गये । उनका बस इतना ही काम था कि इन दोनों से मेरा संपर्क हो जाए । शेष मंजिल तो मुझे ही तय करनी थी । इस इलाके में कुद्दूस और बेज सपेरों के मुखिया माने जाते थे । इन्हीं के माध्यम से फोर्स वन-थ्री-सिक्स ने लाखों रुपये का जहर खरीदा था । इस बार की खरीदारी के लिए मुझे आठ हजार रुपये देकर भेजा गया था एक किलो सौ ग्राम जहर लाने ।

मेरे ठहरने और खाने-पीने का इंतजाम शहर के एक निहायत सड़े-से होटल में किया गया था, जो वहां सबसे अच्छा होटल माना जाता था । विशुद्ध शाकाहारी होने के नाते भोजन तो भला क्या करता वहां, दूध, डबल रोटी और फलों पर ही गुजारा किया दो रोज । दिन में एक-दो घंटे के लिए जाता अवश्य रहा इन सपेरों के डेरों पर । कई किस्म के जहरीले सांप भी देखने को मिले, जिनका ध्यान आते ही आज यह संस्मरण लिखते समय भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

तभी पता चला कि संसार का सर्वाधिक विषैला सर्प आस्ट्रेलिया के जंगलों में पाया जाता है, जो भारत के ही 'किंग कोबरा' का भाई-बंधु है । एशियाई सर्पों में सबसे ज्यादा विषैला बताया गया 'करैत' । भारत में इनकी लगभग

दो सौ किस्में हैं, जिनमें जहरीले होते हैं महज पचास । इनमें 'रसेल्स वाइपर', 'किंग कोबरा' 'करैत' और 'सा-स्केल्ड' वाइपर ही ऐसे हैं जिनके डसने से आदमी मरता है ।

बेज ने अपने तजुर्बे के आधार पर बताया कि विषैले से विषैला सर्प भी आदमी से कतराता है । वह उसके सामने कभी नहीं पड़ना चाहता, बल्कि देखते ही तेजी से रेंगकर इधर-उधर छिपने की कोशिश करता है । अपने ऊपर आक्रमण होने पर ही काटने के लिए विवश होता है, अन्यथा नहीं ।

करैत और सा-स्केल्ड तो वहां थे नहीं, कई चकत्तेदार रसेल्स वाइपर और किंग कोबरा अवश्य देखे । कभी तो बेज उन्हें माला की तरह अपने गले में लटका लेता, तो कभी बड़े प्यार से उन पर हाथ फेरता ।

मेरी जिज्ञासा देख वह रसेल्स वाइपर के बारे में बताने लगा कि ये असम के बीहड़ों और नगालैंड की पहाड़ियों पर पाये जाते हैं । वहीं कुंडली मारे छिपे पड़े रहते हैं । घने जंगलों और खेतों में रहना उन्हें बहुत भाता है । रेंगने की रफ़्तार धीमी होती है । गुस्सा आने पर ही तेजी दिखाकर हमला करता है । इसका मुख्य भोजन है चूहे और गिलहरियां ।

किंग कोबरा को बहुत डरपोक बताया । दिन में छिपा पड़ा रहता है और अक्सर रात में ही दिखायी देता है । चूहे के बिल में आराम फरमाना उसे बहुत पसंद है । कभी-कभी दीमक के पुराने महल में भी मिल जाता है । आदमी के कदमों की आहट पाते ही सतर्क हो जाना उसका प्राकृतिक स्वभाव है । शत्रु को देखकर पहले तो उसे डराने के लिए फन फैलाता है, फिर मजबूर होने पर ही डसता है । उसका मुख्य आहार है—मेंढक, चूहे, छिपकली और गिरगिट ।

मेरे जहर निकालने की विधि पूछने के प्रश्न को बेज बड़ी खुबसूरती से टाल गया, लेकिन सतर्कता बरते जाने के सवाल पर कुद्दूस तपाक से बोला, कि जूता पहने हुए व्यक्ति को अपने आपको सुरक्षित समझना चाहिए । जूते की ध्वनि से सर्प खुद-ब-खुद आप का रास्ता छोड़कर इधर-उधर हट जाएगा । तभी तो खेतों

उन्होंने सैकड़ों व्यक्तियों को मौत के मुंह में जाने से बचाया है । उनका कहना था कि सांप काटने से घबराना नहीं चाहिए । काटे गये स्थान से नौ इंच ऊपर रस्सी बांधकर कस देनी चाहिए । इसके तीन इंच ऊपर एक और रस्सी कसनी चाहिए, जो थूक में चूना मिलाकर भिगो ली गयी हो । न किसी डॉक्टर को बुलाने की जरूरत, न सर्प को मारने की । वे सांप को पकड़कर स्वयं ले आते और उसी से जहर को उतरवा भी देते । वे सदा से ही इस काम में माहिर माने गये हैं ।

और जंगलों में नंगे पैर काम करनेवालों को ही वे अधिकतर डसते हैं। इस नियम के अंतर्गत जानवर भी मुस्तसना नहीं। उनके गले में भी घंटी लटका दी जाती है।

× × × ×

बेज और कुद्दूस के साथ दो दिन का सफर तय करके मालीगांव और गोहाटी होता हुआ पहुंचा नौगांव। असम में जहरीले सांपों का विशाल भंडार मैंने यहीं देखा। काले, पीले, हरे, बैंगनी, गेंहुआं, चितकबरे, चकत्तेदार, धारीदार—न जाने कितनी किस्म के। लगभग पांच सौ व्यक्ति उनका जहर निकालने और बेचने का कार्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी से करते चले आ रहे हैं। उनकी रोजी-रोटी का एकमात्र सहारा भी तो वही था।

गरमी का मौसम बीत चुका था। तभी तो वे सब वहां दिखायी दिये। वरना, मई से अगस्त तक उन्हें ढूंढ़ना मुश्किल है। सांपों की तलाश में मारे-मारे फिरते हैं। छोटी-छोटी टोलियां बनाकर देश के सभी प्रांतों में छा जाते हैं। इनके मुखिया अवश्य अपने आप को लुमडिंग, जोरहाट, कोहिमा और दीमापुर तक ही सीमित रखते हैं। इनका सारा सफर रुक-रुककर पैदल होता है।

उन्होंने सैकड़ों व्यक्तियों को मौत के मुंह में जाने से बचाया है। उनका कहना था कि सांप काटने से घबराना नहीं चाहिए। काटे गये स्थान से नौ इंच ऊपर रस्सी बांधकर कस देनी चाहिए। इसके तीन इंच ऊपर एक और रस्सी कसनी चाहिए, जो थूक में चूना मिलाकर भिगो ली गयी हो। न किसी डॉक्टर को बुलाने की जरूरत, न सर्प को मारने की। वे सांप को पकड़कर स्वयं ले आते और उसी से जहर को उतरवा भी देते। वे सदा से ही इस काम में माहिर माने गये हैं।

चीनी मिट्टी के चार छोटे जारों में जहर भरकर उनका मुंह बंद कर दिया गया। फिर उन पर तार लपेटकर मैंने अपनी सील ठोक दी और कलकत्ता पहुंचकर यह कीमती जहर मेजर ब्राइन के हवाले कर दिया। ●

—रूंगटा बिल्डिंग, सिनेमा रोड
गोरखपुर-२७३००१

जीवनदायक सांप का विष

यह अब कल्पना ही नहीं, सत्य है कि सांप का वह विष जो जीवन समाप्त करने की क्षमता रखता है, जीवन दे भी सकता है। कुछ अमरीकी और यूरोपीय अनुसंधानकर्ताओं का मत है कि खून को न जमने देनेवाला (एंटी क्लागिंग) पदार्थ मलेशिया के पिट वाइपर सांप के विष से निकाला जाता है। वैज्ञानिकों ने इस औषधि का परीक्षण किया है। उन्होंने इस विष से निकाले गये पदार्थ को उन ६४ रोगियों को दिया जिनके खून के थक्के जमने के कारण मस्तिष्क को रक्त का प्रवाह रुक गया था। इन रोगियों को एक सप्ताह तक आई वी इंजेक्शन के द्वारा यह दवा दी गयी। वैज्ञानिक इसके परिणामों और दवा की बेहतर उपयोगिता पर अभी शोध कर रहे हैं, परंतु वे यह निश्चित कर चुके हैं कि इस दवा से मृत्यु का भय कुछ कम तो हो ही जाता है।

— डॉ. संजीव पाठक

यात्रा-संस्मरण

भारत बसता है : सिओल में

अशोक रिछारिया

ऊंची-ऊंची पहाड़ियों और घनी वृक्षावली से आच्छादित, रंग-बिरंगे फूलों से महकता औलंपिक खेलों का तीर्थ— सिओल, जहां तक दृष्टि जाती है, लाल-नीले-पीले फूलों की मनोरम छटा, हर सैलानी का मन मोह लेती है। यूं भी अक्तूबर का मास बसंत ऋतु का मास होता है, कोरिया में। दक्षिण कोरिया की ये खूबसूरत राजधानी सिओल आज फिर एक अंतरराष्ट्रीय संदर्भ का चश्मदीद गवाह बनने जा रही थी। उपलक्ष्य था— प्रशांत तथा एशिया क्षेत्र के गैर-सरकारी युवा संगठनों का प्रथम सम्मेलन। जिसमें कि इन देशों से आये प्रतिनिधियों को युवाओं संबंधी समस्याओं पर विचार करना था और उन स्थितियों को तलाशना था जिससे कि गैर-सरकारी युवा संगठनों को सक्रिय कर सामाजिक विकास की प्रक्रिया में उन्हें शामिल किया जा सके। आयोजन स्थल था— 'यूनेस्को यूथ सेंटर'। ऐसे ही युवा संगठनों का सम्मेलन लैटिन अमरीका तथा अफरीकन देशों का बारसेलोना में हुआ था। प्रशांत तथा एशिया देशों के युवा संगठनों का यह प्रथम सम्मेलन था। और भारत से इसको प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य मुझे मिला था। सम्मेलन का उद्घाटन यूनेस्को की योजना विशेषज्ञ (युवा एवं क्रीड़ा) सुश्री नगुयेन शी एन.पी. ने किया। उन्होंने अपने भाषण में युवाओं के क्षेत्रीय स्तर से अंतरराष्ट्रीय स्तर तक के विकास में योगदान एवं उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला तथा विश्व संस्कृति के विकास के लिए युवा कलाकारों, संगीतकारों, लेखकों, अभिनेताओं और गायकों की अंतरंगता पर जोर दिया।

अनुभवों का आदान-प्रदान

स्वागत भाषण श्री कंग-दाई-जिअन, डाइरेक्टर कोरियन यूनेस्को यूथ सेंटर ने किया। उन्होंने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि स्वतंत्र रूप से युवा और छात्र इस मंच के माध्यम से अपने अनुभवों का आदान-प्रदान कर महाद्वीप के विकास के लिए एक आपसी समझ का निर्माण कर सकते हैं। इन औपचारिकताओं के बाद एक विचार संगोष्ठी हुई जिसकी अध्यक्षता क्रिश्चियन इंस्टीट्यूट फॉर सोशल जस्टिस एंड डवलपमेंट के निदेशक पार्क संग जंग ने की।

तटस्थ एजेंसियों की आवश्यकता

अपने पैंतालीस मिनट के भाषण में

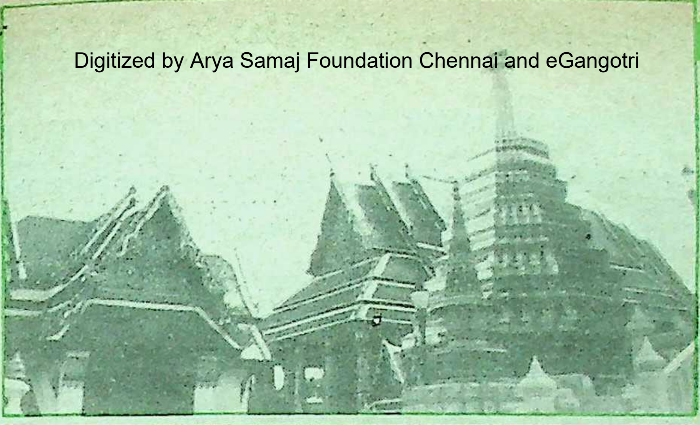

सिओल का एक मंदिर

एन.जी.ओ. संस्थाओं की भूमिका पर उन्होंने विस्तृत प्रकाश डाला तथा सूचना एवं समाचारों के संप्रेषण के लिए तटस्थ एजेंसियों की भूमिका की भी चर्चा की । उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इनफो यूथ नामक संस्था का गठन भी किया गया है जिसका मुख्यालय फ्रांस में बनाया गया है । बीजिंग और हनोई में इसके केंद्र स्थापित किये गये हैं । चीन और वियतनाम ने इसके गठन में काफी रुचि दिखायी है । सूचनाओं के संप्रेषण के साथ संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण भी इस संस्था के मुख्य ध्येय होंगे । परिचर्चा में सामूहिक चिंतन के बाद 'रीजनल कंसल्टेशन ऑव यूथ एन.जी.ओ. इन एशिया' नामक एक रीजनल इकाई का गठन भी किया गया, जो दो वर्ष में अपनी मीटिंग करेगी । इसकी कार्यकारिणी प्रतिवर्ष कुछ कार्यक्रमों को अनुशंसित कर यूनेस्को भेजेगी । इस अवसर पर मैंने भी एन.जी.ओ. को लेकर कुछ सुझाव दिये, जिसकी सदन ने काफी प्रशंसा भी की । मैंने कहा कि गैर-सरकारी संगठन समाज के अधिक निकट रहकर कार्य करते हैं । इसलिए उनके कार्यक्रमों के कार्यान्वयन, प्रभाव एवं सफलता के अवसर सरकारी संगठनों से अधिक होते हैं । एन.जी.ओ. संगठन अधिक व्यापक एवं प्रभावी हों इसके लिए जरूरी है कि १५ से २०% तक की राशि यह संगठन लगायें तथा अन्य अनुदान यूनेस्को से प्राप्त हों । संगठनों की कार्यपद्धति एवं गुणवत्ता का मापन आई.एस.ओ.— ९००० से किया जाना चाहिए । आई.एस.ओ.— ९००० अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता का मापदंड है । इससे एन.जी.ओ. की सार्थकता बढ़ेगी तथा यूनेस्को की इन संस्थाओं पर निर्भरता भी बढ़ेगी और यूनेस्को का जो धन 'साईफन' होकर शासकीय संस्थाओं को चला जाता है, वह भी रुकेगा ।

आयोजन स्थल

कार्यक्रम स्थल सिओल से पचास किलोमीटर दूर घने वृक्षों से आच्छादित पहाड़ी पर था । जो काफी भव्य इमारत में था । इस बिल्डिंग में एक तरफ 'एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक' था, दूसरी तरफ 'ऑडीटोरियम' तथा दूसरे ब्लॉक में विश्व साहित्य से भरपूर एक विशाल लाइब्रेरी थी । पीछे की तरफ तीन होस्टल थे जहां

बौद्ध मंदिरों की तो बहुतायत है— सिओल में । भारत को बड़ा समृद्धशाली देश मानते हैं, यहां के लोग । यहां के 'फोक विलेज' में आकर तो ऐसा लगता है मानो भारत में ही आ गये हों । कच्ची मिट्टी के फूसवाले घर, खेत को जोतनेवाले हल, धान को कूटनेवाले खलबट्टे । और तो और शादी में दूल्हे की घोड़े पर सवारी, बारात का जुलूस, दुल्हन के लिए सजी डोली, या पालकी भारतीय शादी की याद दिला देते हैं । बस शादी में दूल्हा-दुल्हन फेरे नहीं लेते हैं । यहां के लोकनृत्य भी हमारे चाचर और गरबा डांस की शैली के ही हैं । और तो और इस 'फोक विलेज' में हस्तरेखाओं को पढ़कर भाग्य बतानेवाली ज्योतिष महिला को देखना तथा मनौती मानकर पेड़ पर रंगीन कपड़े बांधना भी यहां काफी प्रचलित है ।

आनेवाले प्रतिनिधियों को ठहराया गया था । महिलाओं को अलग होस्टल में ठहरने की व्यवस्था की गयी थी । इसी से लगा सुंदर-स्वच्छ डाइनिंग हॉल (भोजन कक्ष) था जिसमें बैठकर पांच सौ लोग एक साथ खाना खा सकते थे ।

जूते उतारकर प्रवेश

सिओल में कई-कई बार भारत मुझे याद आया । संस्कृति के मामले में मैंने भारतीय संस्कृति का काफी प्रभाव यहां पाया । मसलन— बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण स्थलों एवं घरों के बाहर जूते उतारकर भीतर जाने की यहां परंपरा है । दरवाजे के बाहर 'रैक' रखी होती है । जहां जूते उतारकर रख दिये जाते हैं । और पहनने के लिए कपड़े की 'स्लीपर' दी जाती हैं । शौचालयों में बैठनेवाले 'पश्चिमी कमोड' की जगह भारतीय पद्धति के 'कमोड' का प्रचलन ही अधिक है । प्रातःकाल 'म्यूजिकल सायरन' सात बजे बजता है ताकि लोग तैयार होकर अपने कामकाज पर जा सकें । भारतीय पद्ध के पटे पर बैठकर खाना खिलानेवाले अनेक होटल सिओल में देखने को मिल जाएंगे । औ तो और भारत जैसे पटरी बाजार और दुकान से मोल-भाव करते ग्राहक भी बरबस भारत याद दिला जाते हैं । मगर ये पटरी बाजार कु निर्धारित स्थानों पर ही लगाये जा सकते हैं । मन चाहे जहां नहीं । एक-आध जगह इक्का-दुक्का भीख मांगते भिखारी दिख जाते हैं सोचता हूं सिंगापुर-जैसी व्यवस्था यहां क्यों है ? सिंगापुर में सभी भिखारियों को एक 'यूनीफॉर्म' दी गयी है तथा उनके लिए एक 'पार्क' निर्धारित कर दिया है । सारे भिखारी

वृक्ष जहां मन्नतें मानी जाती हैं

मिलेंगे और जिसे जो दान-दक्षिणा देनी है, वह उसी पार्क में जाकर दे आये ।

भारतीय संस्कृति और सिओल

बौद्ध मंदिरों की तो बहुतायत है— सिओल में । भारत को बड़ा समृद्धशाली देश मानते हैं, यहां के लोग । यहां के 'फोक विलेज' में आकर तो ऐसा लगता है मानो भारत में ही आ गये हों । कच्ची मिट्टी के फूसवाले घर, खेत को जोतनेवाले हल, धान को कूटनेवाले खलबट्टे । और तो और शादी में दूल्हे की घोड़े पर सवारी, बारात का जुलूस, दुल्हन के लिए सजी डोली, या पालकी भारतीय शादी की याद दिला देते हैं । बस शादी में दूल्हा-दुल्हन फेरे नहीं लेते हैं । यहां के लोकनृत्य भी हमारे चाचर और गरबा डांस की शैली के ही हैं । और तो और इस 'फोक विलेज' में हस्तरेखाओं को पढ़कर भाग्य बतानेवाली ज्योतिष महिला को देखना तथा मनौती मानकर पेड़ पर रंगीन कपड़े बांधना भी यहां काफी प्रचलित हैं । हमारे गांवों की तरह मिट्टी-गारे और फूस की बनी झोपड़ी में बैठी ज्योतिष महिला को मेरे मलेशियन एवं सिंगापुर के मित्रों ने अपना हाथ दिखाया । और भविष्य जाना । उसकी भविष्यवाणियां इतनी सटीक थीं कि दोनों मित्र बड़े प्रभावित हुए । मगर मैं उसकी फीस से बड़ा चकित हुआ । उसने एक हाथ देखने की फीस 'बीस हजार' वन (कोरियन मुद्रा) लीं, जो कि एक अच्छी-खासी राशि हुई । यहां के लोग भारतीय सौंदर्य के भी बड़े प्रशंसक हैं । उन्हें वे अपने से ज्यादा खूबसूरत मानते हैं । एक बात जो गौर करनेवाली है, वह ये है कि यहां के लोग मोटे नहीं होते । हर आदमी-औरत चुस्त-दुरूस्त और फुरतीला है । हां इनकी लंबाई भारतीयों से अपेक्षाकृत कम ही है । हां एक बात और, यहां

नेपाल, सिंगापुर एवं फ्रांस के प्रतिनिधि यूनेस्को यूथ सेंटर में

भी भारत की तरह आज भी संयुक्त परिवार जिंदा है । चाचा, ताऊ, मौसा, मौसी जैसे संबोधन अभी विलुप्त नहीं हुए हैं ।

बदलाव की लहर

दस वर्ष पहले भी मैं सिओल आया था । तब के और अब के सिओल में काफी बदलाव आ गया है । स्काईस्क्रेपर, गगनचुंबी अट्टालिकाएं, भूमिगत पारपथ, बांहें फैलाये विशाल फ्लाईओवर, सड़कों पर दौड़ती आलीशान कारें, सिओल के तेजी से हो रहे औद्योगिक विकास की कहानी कह रहे हैं । टोक्यो बन जाने की अदम्य लालसा है सिओल की । पर यह अभी महज एक सपना ही है । टोक्यो देखने का भी मुझे अवसर मिला है । पचास वर्ष पीछे है टोक्यो से अभी सिओल । हां ऑटोमोबाइल बाढ़ में जरूर यह टोक्यो के नजदीक हैं । आप यहां से दो हजार से पांच हजार यू.एस. डॉलर में बेहतरीन से बेहतरीन कार खरीद सकते हैं । मगर बाजार में भाषा की समस्या जरूर आती है । बिना दुभाषिये के गुजारा नहीं । इन लोगों को न अंगरेजी आती है और न ही हिंदी । हां ये लोग इस भ्रम में जरूर हैं कि हिंदुस्तान के लोग अंगरेजी भाषा बहुत अच्छी जानते हैं । भारत से जो भी यहां आएगा, कपड़े खरीदकर यहां से जरूर ले जाएगा । होटल यहां के बहुत महंगे हैं । पर लोगों के मन में आतिथ्यभाव खूब है । मुझ सहित कुछ प्रतिनिधियों ने यहां कुछ दिन और रुकने की जब इच्छा की तो चार दिन अतिरिक्त, उस होटल के खर्चे सहित उन लोगों ने हमें वहां ठहराया । कई स्थानों पर घुमाया और काफी परिवारों से मिलवाया । आतिथ्यभाव का इस बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि भा में अधिकारियों के उपेक्षा भाव के कारण वहां जाना मुश्किल था, मंत्री स्तर तक भागदौड़ के बाद भी मेरा नाम एयर इंडिया की फ्लाइट में प्रतीक्षा सूची में ही था । और मुझे एयरपोर्ट से वापस आना पड़ा । कोरिया के यूनेस्को आफि ने फिर सिंगापुर एयर लाइन से व्यवस्था करवाकर मेरे सिओल जाने की व्यवस्था की । वरना शायद यह यात्रा संस्मरण मैं लिख ही न पाता । यात्रा न होने के कारण ।

यह उनका आतिथ्यभाव ही था जिसके कारण प्लेग के आतंक में भी वह यात्रा संभव हो सकी । एन.डी.एम.सी. के स्वास्थ्य प्रमा के बावजूद सिंगापुर और सिओल में मेरा बा स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, और जब प्लेग निगेटिव पक्का हो गया तभी अंदर देश की सीमाओं में प्रवेश हो सका । सोचा भारतीय दूतावास में राजदूत से भी मुलाकात करता च तो पता चला कि उनका ट्रांसफर हो गया है अ नये राजदूत अभी पहुंचे नहीं हैं । एक बार फि भारत याद हो आया । अलबत्ता यूं ही घूमते

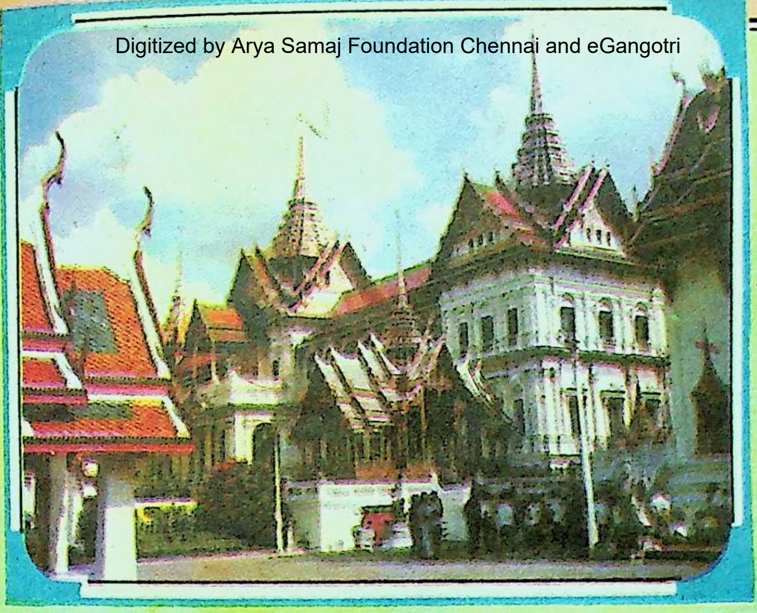

बैंकॉक शैली में बना बौद्ध मंदिर

भारतीय संसदसदस्य भूपिंद्र सिंह हुड्डा से जरूर मुलाकात हो गयी। भारतीय राजदूत का शेष स्टाफ भूतल मंत्री श्री जगदीश टाइटलर की व्यवस्था में जुटा था। एक बार भ्रमण के समय जब ट्रेफिक जाम में फंस गया तो मुझे लगा कि मैं अनायास चांदनी चौक में आ पहुंचा हूं। और भारत से बहुत दूर होकर भी कहीं न कहीं फिर अपने देश से जुड़ गया हूं। आज भी सिओल की अनेक मधुर स्मृतियों को अपने हृदय में समोये सोच रहा हूं कि एक देश को दूसरे देश से बांधनेवाले सूत्र संस्कृति के ही होते हैं। सरकारों के नहीं।

—अध्यक्ष : भारतीय युवा संस्थान
२५४, ओखला इस्टेट फेज-३
नयी दिल्ली-११००२०

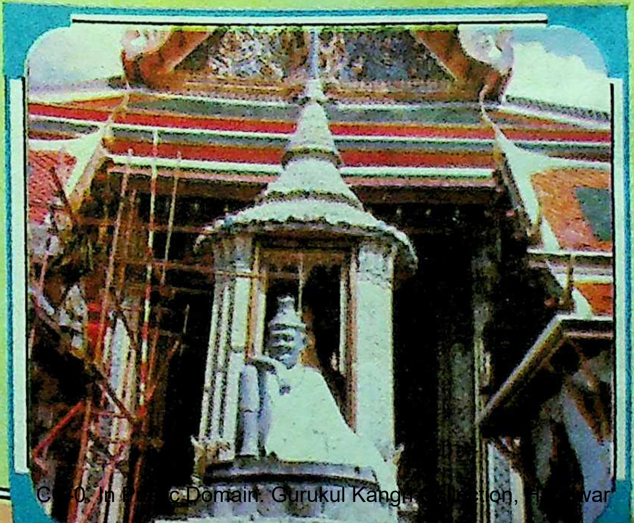

सिओल का बौद्ध मंदिर : भारतीय शैली

चित्र : अशोक

नर्मदा घाट ▶

श्री कृष्ण का विराट रूप
(ओंकारेश्वर)
▼

ममलेश्वर मंदि
▼

◀ सिद्धेश्वर मंदिर

(चित्र : ज्योति शर्मा)

ओंकारेश्वर

अब ऐसे हितैषी मंत्री कहां हैं ?

● ज्योति खरे

ओंकारेश्वर मध्य प्रदेश का मनोरम तीर्थस्थल है । भारतभर के तीर्थ स्थानों की परंपरा में इसका भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है, शस्य-श्यामला भारत भूमि में भगवान शंकर के बारह ज्योर्तिलिंग हैं । प्रत्येक ज्योर्तिलिंग की महिमा और उसका महत्त्व अपने आप में विशिष्ट है । कोटिरुद्ध संहिता के अनुसार ओंकार-तीर्थ में ज्योर्तिलिंग परमेश्वर हैं इसीलिए इसका नाम ओंकारेश्वर पड़ा । जिस प्रकार केदारनाथ में सौरुद्र हैं, ओंकार में एक सौ एक रुद्र और अड़सठ तीर्थ हैं, समुद्रपर्यंत पृथ्वी पर जितने शिवलिंग हैं, उनमें ओंकार को छोड़कर पांच मुख किसी ज्योर्तिलिंग के नहीं हैं ।

धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुसार ओंकार सिद्ध-क्षेत्र मांधात क्षेत्र कहलाता है । यह रेवा खंड तपोभूमि है । देवताओं, ऋषि-मुनियों, सिद्धों-तपस्वियों और राजाओं की यह जप-तप यज्ञ और कर्म भूमि रहीं है । इक्ष्वाकुवंश में यौवनाश्वर नाम के राजा हुए, जिन्होंने हजारों अश्वमेघ यज्ञ किये । यौवनाश्वर अपने दृढ़व्रत के कारण राजाओं में ऋषि कहलाये । उनका कोई पुत्र नहीं था । जीवन के उत्तरार्द्ध में अपने मंत्रियों को राज्य सौंपकर राजा वन में तपस्या करने चले गये । फलों व जड़ों का भक्षण करते हुए घोर तप किया । वे एक दिन प्यास के मारे बहुत विकल हो गये, पानी की खोज में भटकते हुए राजा संयोग से एक यज्ञ-स्थल पर पहुंचे, वहां पानी मांगा । रात का समय था । सब सो रहे थे, किसी ने आवाज नहीं सुनी । राजा वहां पानी ढूंढ़ने लगे, वहां यज्ञ की वेदी के पास अभिमंत्रित जल रखा था । राजा ने कलश उठाया और गटागट जल पी गये । पुनः तपस्यार्थ वन को चले गये ।

अभिमंत्रित जल

इधर मंत्रियों ने राज सूना देखकर विचार किया कि राजा तो वन को चले गये, रानी यहीं पर हैं, यदि वरुण का यज्ञ करें और यज्ञ पूर्ण होने पर अभिमंत्रित जल रानी को पिलायें, तो संभव है, संतान उत्पन्न हो जाए । इस तरह के राजहितैषी मंत्री तब हुआ करते थे । मंत्रियों ने वनस्थली में यज्ञ शुरू किया तथा जल को मंत्रों द्वारा श्रीवृद्ध किया । योग से उसी दिन रात को तपस्वी राजा को प्यास लगी और वही कलश का मंत्रपूरित जल पी गये । सुबह कलश खाली पाया गया । यज्ञस्थल पर हड़कंप मच गया । खोज हुई जल कौन पी गया ? पता चला राजा यौवनाश्वर ही रात को आकर पुत्रेष्टि हेतु मंत्रित नीर पी गये । राजा ने यह बात स्वीकार की ।

यज्ञ करानेवाले ऋषियों ने कहा कि यह कार्य प्रारब्धवश हो गया लेकिन जल अकारथ नहीं होगा । अब तुम गर्भवान हो गये, सौ वर्ष बाद राजा की बायीं कोख फोड़कर सूर्य के समान तेजस्वी पुत्र पैदा हुआ । पुरुष की कोख से पैदा हुए पुत्र को देखने देवता आये, इंद्र आये । इंद्र ने कहा— ''माता के बिना इसका पालन कैसे होगा ?'' इसे दूध कौन पिलाएगा ? इंद्र ने अपनी तर्जनी अंगुली पुत्र के मुख में रखी । मतलब इंद्र ने पोषण किया । मां का दूध न पीने की वजह से ही उसका नाम मांधाता रखा गया ।

धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुसार ओंकार सिद्ध-क्षेत्र मांधाता क्षेत्र कहलाता है । यह रेवा खंड तपोभूमि है । देवताओं, ऋषि-मुनियों, सिद्धों-तपस्वियों और राजाओं की यह जप-तप-यज्ञ और कर्मभूमि रही है । इक्ष्वाकुवंश के यौवनाश्वर नाम के राजा हुए, जिन्होंने हजारों अश्वमेध यज्ञ किये । यौवनाश्वर अपने दृढ़व्रत के कारण राजाओं में ऋषि कहलाये ।

बड़े होकर मांधाता राजा बने । उनके ऐश्वर्य धर्मावरण तथा प्रजापालक क्षमता से एक समय इंद्र के मन में डाह पैदा हो गयी । इंद्र ने वर्षा करना बंद कर दिया । मेघों का रास्ता बंद हो गया, तब राजा मांधाता ने अपने तपोबल से जलवर्षण करवाकर प्रजा को प्राणदान दिया ।

इसी मांधाता ने अमरकंठी नर्मदा के किनारे वैदूर्य पर्वत पर स्थित ओंकार क्षेत्र में एक सौ यज्ञ किये । शिव का आराधन किया । शिवजी प्रसन्न हो गये । मांधाता ने वरदान मांगा— यह वैदूर्य नाम का पर्वत मांधाता नाम से विख्यात हो, यहीं देवताओं का वास हो तथा आप द्वादश ज्योर्तिलिंगों सहित यहां रहें, तब से यह क्षेत्र ओंकार-मांधाता नाम से विख्यात है ।

नदी की दो धाराएं

ओंकारेश्वर मंदिर से थोड़ा पहले नर्मदा नदी दो धाराओं में प्रवाहित होती हुई कुछ दूर जाकर एक हो जाती है । इन दोनों धाराओं में से एक को नर्मदा और दूसरी को कावेरी कहते हैं । इस प्रकार इन दोनों धाराओं के मध्य में एक शैलद्वीप बन गया है । इसी द्वीप पर महाराजा मांधाता ने भगवान शंकर की आराधना की थी । अतः उन्हीं के नाम से इस शैलद्वीप का नाम मांधाता पड़ा । जिसका क्षेत्रफल लगभग डेढ़ वर्ग किलोमीटर का है । यहां की बस्ती ती भागों में बंटी है । पहले भाग को ब्रह्मपुरी कहते हैं, जहां ब्रह्मेश्वर मंदिर परमेश्वर ज्योर्तिलिंग एवं अन्य कई मंदिर हैं । दूसरे भाग को विष्णुपुरी कहते हैं, जहां विष्णु मंदिर, बाजार तथा बस स्टैंड है, मांधाता द्वीप को शिवपुरी कहते हैं, य ओंकारेश्वर आदि मंदिर हैं । सरकारी कागजों इन तीनों पुरियों का नाम मांधाता है, अतः स्थानीय निवासी इस संपूर्ण क्षेत्र को मांधाता कहते हैं ।

श्री द्वारिकाधीश

ओंकारेश्वर मंदिर जाते समय सर्वप्रथम पंचमुखी गणेश मंदिर आता है । कहा जाता है कि राजा मांधाता के पिता यौवनाश्वर ने यज्ञ के समय जब गणेशजी का आवाहन किया था, तब इसी स्थान पर ऋद्धि-सिद्धि भगवान गणपति ने पंचमुखी स्वरूप में राजा मांधाता को दर्शन दिये थे । इस मूर्ति के चार मुख अग्रभाग पर तथा शेष एक मुख पृष्ठ भाग पर दृष्टव्य है । मंदिर में ही वेदमाता गायत्री की संगमरमर की निर्मित सुंदर मूर्ति है । जिसके पांच मुख हैं ।

ओंकारेश्वर मंदिर के बाहर पूर्वाभिमुख विशाल नंदी प्रतिमा है । यह नंदीगण देवी अहिल्याबाई होल्कर ने बनवाकर प्रतिस्थापित किया था ।

मंदिर के बगल में ही हनुमान प्रतिमा है ।

उत्कृष्ट कारीगरी के नमूने

ओंकारेश्वर मंदिर में प्रवेश करते ही प्राचीन भारतीय कलाकारों के हाथों का जादू देखने को मिलता है । मंदिर के सभी स्तंभ पर उत्कृष्ट कारीगरी के नमूने दिखायी देते हैं । मंदिर में अनेकों छोटी-बड़ी घंटियां टंगी हैं ।

आधुनिककाल के झूमरों के समान ही प्राचीनकाल का पीतल निर्मित झूमर भी देखने योग्य है । मंदिर के एक प्रकोष्ठ में सुखदेव मुनि की प्राचीन प्रतिमा बनी है, कहा जाता है कि रात्रि में भगवान शंकर पार्वती व अन्य देवतागण चौपटपासे खेलने मंदिर में आते हैं । इस तथ्य को अपनी आंखों से देखने के लिए स्वतंत्रतापूर्व एक अंगरेज अधिकारी इस सुखदेव प्रकोष्ठ में छुप गया था, यद्यपि वह जीवित नहीं लौट सका, तथापि उसकी डायरी के आधार पर उक्त तथ्य की प्रामाणिकता अवश्य सिद्ध हो गयी । प्रकोष्ठ के सामने बने ओटले पर बैठकर राजा मांधाता ने तपस्या की थी ।

मंदिर के आगे बढ़ने पर ज्योर्तिलिंग भगवान शंकर के प्रणव लिंग के दर्शन होते हैं । कहा जाता है कि लिंग के नीचे हमेशा बने रहनेवाला जल नर्मदा का जल है । इस जल को चरणामृत के रूप में ग्रहण किया जाता है । सामने ही जगतमाता पार्वती की मनोहारी पाषाण प्रतिमा है । प्रतिमा के आसपास चांदी के पतरों से सज्जा की गयी है । मंदिर में घृत का अखंड दीप जलता रहता है, यहां अभिषेक करने का बहुत महत्त्व है । यह मंदिर पांच मंजिला है । मंदिर की द्वितीय मंजिल पर भगवान महाकालेश्वर के दर्शन किये जा सकते हैं । जैसा कि महाकालेश्वर मंदिर की द्वितीय मंजिल पर भगवान ओंकारेश्वर की मूर्ति स्थापित है । तृतीय मंजिल पर सिद्धनाथ, चतुर्थ पर केदारेश्वर और पंचम मंजिल पर गुप्तेश्वर महादेव के मंदिर हैं ।

ओंकारेश्वर मंदिर की परिक्रमा के समीप ही भगवान द्वारकाधीश की भव्य प्रतिमा है । आठ फीट ऊंची यह प्रतिमा काले पाषाण से निर्मित है । प्रतिमा की ठोड़ी पर जड़ा हुआ हीरा आकर्षण का केंद्र है । मंदिर की परिक्रमा में रामेश्वर, जालेश्वर, विशालेश्वर व अंधकेश्वर नव

ग्रहणेश्वर एवं अन्नपूर्णा प्रतिमाएं भी हैं तथा समीप ही संतोषी माता, झुमकेश्वर महादेव का मंदिर तथा रेबा मंदिर हैं । रेबा मंदिर में माता नर्मदा की संगमरमर निर्मित मनभावन प्रतिमा स्थित है । मंदिर के बाहर की ओर अभिमुक्तेश्वर, बटुक भैरव, मंगलेश्वरनाग, नाग चंद्रशेखर, दत्तात्रय, कालभैरव तथा धृष्णेश्वर के मंदिर दर्शनीय हैं ।

कुंती की भव्य प्रतिमा

गौरी सोमनाथ मंदिर मांधाता शैलद्वीप के सर्वोच्च शिखर पर है । नर्मदा तट से ३५० सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं । मंदिर में मनुष्य की ऊंचाई से भी अधिक ऊंचा एक शिवलिंग है जिसका व्यास लगभग ४ मीटर का है । इसी शिखर पर सिद्धनाथ, ऋणमुक्तेश्वर आदि कई दूसरे देव मंदिर हैं । सिद्धनाथ मंदिर के पास ही विशाल वृक्ष के नीचे माता कुंती की प्राचीन प्रतिमा है । प्रतिमा वर्तमान में भग्नावस्था में है । आयोजना में भूगर्भ, अंतराज एवं मंडपयुक्त मंदिर भग्नावशेषों के रूप में विद्यमान हैं । समीप ही शिव के भीमशंकर एवं मल्लिकार्जुन रूप की विशाल प्रतिमाएं दर्शनीय हैं । प्रतिमाएं काफी ऊंचाई पर स्थित हैं । यह स्थान प्राचीन नगर का पूर्वी प्रदेश द्वार होकर बारहवीं शताब्दी में निर्मित है । पांडव वनवास के दौरान यहां आये थे । यहीं किरातार्जुन और परशुराम के युद्ध की कथा भी प्रचलित है ।

ओंकारेश्वर के प्राचीनतम मंदिरों में सिद्धनाथ बारहद्वारी (सिद्धेश्वर मंदिर) की गणना की जाती है । यह मंदिर आठ फीट ऊंचे चबूतरे पर निर्मित है । चबूतरे के चारों ओर विभिन्न मुद्राओं में हाथी उत्कीर्ण हैं । मंदिरों के स्तंभों व छत प देवी-देवताओं की मूर्तियां उत्कीर्ण की गयी हैं । मंदिर के मूल स्वरूप में बारह द्वार होने से इस मंदिर का नाम सिद्धनाथ बारहद्वारी भी पड़ा ।

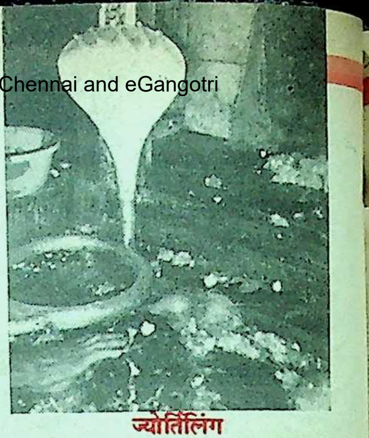

ज्योतिर्लिंग

प्रसिद्ध आश्रम

ओंकारेश्वर में विष्णुपुरी में दो प्रमुख आश्रम हैं । प्रथम मार्कण्डेय योग आश्रम तथा द्वितीय मार्कण्डेय संन्यास आश्रम । मार्कण्डेय योग आश्रम अन्नपूर्णा मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है । मंदिर का प्रवेशद्वार भव्य एवं मनोहारी है । द्वार के दोनों ओर सिंह और प्रतिहारिणी की प्रतिमाएं हैं । द्वार के ऊपर देव-विवाह का दृश्य है । दृश्य में ब्रह्मा, शंकर-पार्वती तथा नारदमुनि दिखायी दे रहे हैं । आसपास गणेशजी और कार्तिकेय की मूर्तियां हैं । द्वार के पृष्ठ भाग पर मंदिर के संस्थापकों की प्रतिमाएं हैं । मंदिर में भगवान कृष्ण के विराट रूप की विशाल प्रतिम पैंतीस फुट ऊंची है । प्रतिमा के शीर्ष पर शेषनाग है । प्रतिमा के सत्रह मुख हैं जो विभिन्न देवताओं को प्रकट करते हैं । प्रतिमा के बीस कर हैं, जिनमें चक्रमाला, भाला, कमल, त्रिशूल, धनुषबाण, नाग, गदा, पद्म, हल, ढाल, शंख, फरसा आदि दिखायी देते हैं । प्रतिमा का एक हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठ

है । प्रतिमा की ग्रीवा पर सरस्वतीजी, सीने पर शंकरजी व भगवान कृष्ण तथा नाभि में ब्रह्माजी की सुंदर व मनमोहक प्रतिमाएं हैं । प्रतिमा के चरणों के पास भगवान श्रीकृष्ण वीर अर्जुन को गीता का संदेश सुनाते हुए प्रतिमा बनी है । प्रतिमा दक्षिण भारत के शिल्पकारों द्वारा सीमेंट कांक्रीट से निर्मित है । मंदिर के पश्चिम भाग में मार्कण्डेय ऋषि का प्राचीन किंतु जीर्णोद्धारित मंदिर है । मंदिरों में शिवलिंग के अतिरिक्त मार्कण्डेय ऋषि की काले पत्थर से निर्मित प्राचीन प्रतिमा दृष्टव्य है । मंदिर के मध्य में यज्ञशाला है, पास ही माता अन्नपूर्णा का भव्य मंदिर है, जिसमें दुर्गाजी की शेर पर सवार मनभावन प्रतिमा है । इस प्रतिमा के बायीं ओर महाकाली तथा दायीं ओर हंसवाहिनी वीणापाणि मां महा सरस्वती की प्रतिमा है । मंदिर के ठीक सामने नीचे नर्मदा नदी में एक विशाल शिला है, जिसे मार्कण्डेय शिला कहा जाता है । ऐसी मान्यता है कि इस शिला पर गुलाटी लगाने से मनुष्य के पापों का नाश होता है । मार्कण्डेय संन्यास आश्रम ऋषि-मुनियों की साधना स्थली है ।

पांच मंजिला मंदिर

सौराष्ट्र के सोमनाथ, श्री शैल पर्वत के मल्लिकार्जुन तथा उज्जैन के महाकाल के समान ही ओंकारेश्वर में ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग है । यह मंदिर पांच मंजिला है । प्रत्येक मंजिल में शिवलिंग स्थापित है । मंदिर प्रांगण में छह अन्य मंदिर भी हैं । मंदिर की दीवारों, प्रवेशद्वारों व स्तंभों पर देवासुर इतिहास से संबंधित चित्रकारी स्थित है । वर्तमान में यह मंदिर पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है ।

ओंकारेश्वर के लगभग एक कि.मी. की दूरी पर जहां कावेरी धारा नर्मदा से पृथक हुई है, वहां चौबीस अवतारों और पशुपतिनाथ के मंदिर हैं । यहां से कुछ दूरी पर कई जैन मंदिर हैं, जिनके निकट रावण की लेटी हुई एक मूर्ति है ।

नर्मदा-कावेरी संगम के तट पर रणछोड़जी और ऋणमुक्तेश्वर शिव के प्राचीन मंदिर हैं । इस संगम को 'त्रिवेणी' कहते हैं । यहां से लगभग छह कि.मी. की दूरी पर च्यवन ऋषि का आश्रम है । चौबीस अवतार मंदिर से लगभग ग्यारह कि.मी. की दूरी पर सीता वाटिका है । कहा जाता है कि यही वाल्मीकि आश्रम था जहां सीताजी ने वनवास के दौरान निवास किया था । यहां चौसठ योगनियों एवं ५२ भैरवों की विशाल मूर्तियां हैं । इसी के निकट सीताकुंड, रामकुंड और लक्ष्मणकुंड नाम के तीन कुंड भी हैं ।

मांधाता द्वीप से लगभग १५ कि.मी. पूर्व की ओर नर्मदा का सबसे बड़ा जलप्रपात है । जिसके नीचे कई विस्तृत और गहरे कुंड हैं, जिन्हें धावड़ी कुंड कहते हैं ।

पश्चिमी रेलवे के खंडवा-रतलाम-अजमेर रेलमार्ग पर खंडवा से साठ कि.मी. दूर मोरटक्का ग्राम में ओंकारेश्वर रोड स्टेशन है । यहां से बारह कि.मी. की दूरी पर ही मांधाता, अर्थात ओंकारेश्वर तीर्थ है । इंदौर, उज्जैन, खंडवा से बसों द्वारा सीधे भी ओंकारेश्वर पहुंचा जा सकता है । ओंकारेश्वर में ठहरने के लिए कई धर्मशालाएं, आश्रम तथा होटल-लॉज उपलब्ध हैं ।

—संपादक 'अभिसारिका'
आर.बी.-२/९९६/सी, रानी लक्ष्मी नगर,
झांसी (उ.प्र.) २८४००३

दंगा

● परिपूर्णानंद वर्म्मा

मेरे अखबार में छपने के लिए नीचे लिखा पत्र आया है । मैं निर्णय नहीं कर पा रहा हूं कि इसे छापूंगा या नहीं । जिन्होंने लिखा है, उनसे मैं परिचित हूं । बड़े सज्जन, सीधे-सादे पुरुष, पति-पत्नी हैं— न किसी के लेने में, न देने में । फिर भी इतनी बड़ी घटना— क्या विचित्र तथा गंदा हमारा समोज हो रहा है । पत्र है :—

"हम पति-पत्नी दोनों ही पढ़े-लिखे थे— दोनों भिन्न स्कूलों में अध्यापक थे । तड़के उठकर नहा-धोकर तैयार हाना पड़ता था । बड़ी कठिनाई से एक मजदूरनी मिली थी, वह भी शाम को आती थी । सुबह का काम तो पत्नी बेचारी निपटा देती थी । जब तक मेरी दाढ़ी छिलती, चाय बन जाती थी हमें घड़ी देखने की जरूरत नहीं पड़ती थी । पास की मसजिदों में अजां हुई, नमाज पढ़ने की आवाज आयी और हम उठ बैठे । घर में झाड़ू-बुहारु भी वही करती थी— उसने कूड़ा इकट्ठा किया और हर भारतीय स्त्रियों की तरह उसे सड़क पर खिड़की से उड़ेल दिया । उसको क्या मालूम कि महल्ले के पंडितजी रामायण की चौपाई पढ़ते उधर से उसी समय निकलेंगे । कूड़े का कुछ अंश जो उन पर गिरा, तो रामायण की चौपाई भी वे भूल गये । गंगा स्नान को जा रहे थे । उन्होंने भाषा और भाव पलटकर कूड़े फेकनेवाले या गाली के साथ मां-बहन का रिश्ता जोड़ना शुरू कर दिया । मुझे बड़ा बुरा लगा । पत्नी भी बड़ी लज्जित हो रही थी पर सबेरे-सबेरे गालियों का भंडार किसे अच्छा लगेगा ।

इत्तफाक की बात की उधर से ही हमारे परिचित इरफानअली नमाज पढ़ने निकले थे ।

> ***हम पति-पत्नी दोनों ही पढ़े-लिखे थे— दोनों भिन्न स्कूलों में अध्यापक थे । तड़के उठकर नहा-धोकर तैयार होना पड़ता था । बड़ी कठिनाई से एक मजदूरनी मिली थी, वह भी शाम को आती थी । सुबह का काम तो पत्नी बेचारी निपटा देती थी । जब तक मेरी दाढ़ी छिलती, चाय बन जाती थी हमें घड़ी देखने की जरूरत नहीं पड़ती थी । पास की मसजिदों में अजां हुई, नमाज पढ़ने की आवाज आयी और हम उठ बैठे । घर में झाड़ू-बुहारु भी वही करती थी— उसने कूड़ा इकट्ठा किया और हर भारतीय स्त्रियों की तरह उसे सड़क पर खिड़की से उड़ेल दिया ।***

पंडितजी का हमारे मकान के सामने यह पाठ उन्हें बड़ा बुरा लगा । वे उलझ पड़े :—

"अरे, क्या सबेरे-सबेरे खुदा का नाम न लेकर गलीज निकाल रहे हो !"

पंडितजी का क्रोध भभक पड़ा :—

"तुम कौन होते हो मुझे उपदेश देनेवाले । गंगा नहाने जा रहा था, सब अशुद्ध हो गया ।"

"अ मियां, तुम्हारी गंदी जुबान से गंगाजी ज्यादा नापाक होंगी ।"

बस यहीं से बात बढ़ गयी । अब पंडितजी मौलाना पर बरस पड़े । मैं अपनी आधी दाढ़ी खरोंचते हुए सोच रहा था कि कुछ बीच-बचाव करूं, माफी मांगूं, इतने में सुबह तड़के सड़क पर झाड़ू देनेवाली आ गयी । उधर, क्रुद्ध तेज हवा चली, तो कुछ कूड़ा लौटकर हमारे घर की तरफ आ लगा । जमादारिन ने पंडितजी की हां में हां करते हुए चिल्लाकर कहा—

"घरवाली निपूतिन कूड़ेदान में कूड़ा न फेककर सड़क गंदा करती है और फिर हमारी शिकायत होती है कि सड़क गंदी है ।"

पर, उसकी पूरी बात कौन सुनता । कई नमाजी और गंगाजी जानेवाले इकट्ठा हो गये थे । झगड़ा बढ़ता गया । एक पर एक नयी गाली सुनायी पड़ने लगी । हम मियां-बीवी डर के मारे सकते में खड़े रहे । बाहर शोर बढ़ता गया । पता नहीं कहां से लाठियां निकल पड़ीं । नमाज हुई या नहीं, गंगा स्नान कोई गया या नहीं, खिड़की से साफ दिखायी दे रहा था कि पुलिस आ गयी थी और कुछ को पकड़े हुए थाने की ओर घसीट रही थी और घसीटे जानेवाले अपने मजहब के हिसाब से नारे लगा रहे थे । स्कूल में हमें सूचना मिली कि कर्फ्यू लग गया है । स्कूल-कॉलेज एक सप्ताह के लिए बंद । इस समाचार से विद्यार्थी तथा अध्यापक दोनों बड़े प्रसन्न थे । न हमें पढ़ाने का शौक न पढ़नेवालों को पढ़ने का शौक— वह जमाना तो चला गया, जब स्कूल-कॉलेज में पढ़ाई होती थी । हमारी चले तो सालभर कर्फ्यू ही लगा रहे ।

× × ×

"हम डरे भी थे । कहीं कूड़ा फेकने की घटना न सामने आ जाए । पर हमारा काम

दैनिक अखबारों ने कर दिया । खबर छपी कि नमाज के समय रामायण का जोर-जोर से पाठ करने से दंगा हो गया । चलो, हमें तो छुट्टी मिली । पर, सब राजनीतिक पार्टियां दंगे की जांच के लिए मैदान में उतर पड़ी थीं । एकता की गुहार के भीतर वोट की पुकार ने सबकी आंखें बंद कर रखी थीं । मियां इरफान और पंडितजी बिचारे तो जेल में थे— एक ही बैरक में बंद । मेरे मन में पश्चात्ताप का चोर बैठा था । मेरी पढ़ी-लिखी बीवी ने सड़क पर कूड़ा फेककर दंगा करवा दिया । मेरे मित्र इरफान साहब जेल में— मेरा महल्ला काफी बड़ा था । पंडितजी से परिचय नहीं था । दंगे हुए, कर्फ्यू हटे दस दिन हो गये थे । आग बुझ चुकी थी । जिन लोगों को चोट-चपेट आयी थी, उन्हें सरकार की ओर से आर्थिक सहायता भी मिल गयी थी । मरा भी एक ही था । उसके घरवालों को जो मुआवजा मिला, उससे घर में खुशहाली आ गयी थी, इसलिए कि मरनेवाला बिना कमानेवाला माता-पिता-हीन आवारा भतीजा था । पर असली 'दोषी' पंडित और इरफान मियां पर मुकद्दमा था— जमानत तब आसान थी, अगर वे चोर-डाकू होते । वे अदालत से जल्दी जमानत करा लेते हैं । इन दोनों के घर में पैरवी करनेवाला भी नहीं— जेल में पड़े थे ।

मेरी तबियत नहीं मानी । अपने मित्र इरफान साहब के यहां शाम को जा पहुंचा । उन्हें बड़ा भाई मानता था, अतएव परदेवाली भाभी बुरका नहीं डालती थीं मेरे सामने । मैंने दरवाजा थपथपाया, वह खुल गया । वहीं जमीन पर दो अधेड़ औरतें सिसक रही थीं । दोनों को एक या दो बच्चे घेरे हुए रो रहे थे ।

जो सुना, कलेजा दहल उठा । इरफान घ साग-सब्जी बेचकर घर चलाते थे । दूसरी सं उनकी पड़ोसिन पंडितानी थीं, जिनके पति से झगड़ा हुआ था । दोनों पड़ोसिनें मित्र थीं, आना-जाना होता था । दोनों कलप रहीं थीं । पंडितजी रोज कहीं पूजा-पाठ कर दक्षिणा ला थे । वह भी बंद । दोनों के घर चूल्हा नहीं ज रहा था । बच्चे बिलबिला रहे थे । भूख दोनों तरफ बराबर, मजहब का भेद न बच्चों को मालूम न स्त्रियों को, पेट की ज्वाला बराबर दहक रही थी । बड़ी कठिनाई से 'भाभी' ने कु रुपये स्वीकार किये थे, जो मैंने बड़े संकोच से उनके सामने रख दिये । मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई, जब भाभी ने आधी रकम पंडितानी को जबरदस्ती पकड़ा दी ।

× × ×

बड़े आत्म-संतोष के साथ घर आया । वह संतोष क्रोध में बदल गया । मेरे मकान को पुलिस घेरे खड़ी थी और पुलिस को घेरे भीड़ मैं न केवल घबरा गया, आतंकित भी हो गया अवश्य कूड़ा फेकने की घटना की सूचना मिल गयी होगी । पर भीड़ में लोग कह रहे थे कि "मास्टर साहब के यहां चोरी का लुटा बक्सा पकड़ा गया है ।" चोरी का लुटा माल ! मैं सीधे घर में घुसा । स्थानीय थाना के इंस्पेक्टर साहब तफतीश कर रहे थे । उनके सामने लोहे की एक छोटी संदूकची खुली रखी थी । उसमें कुछ जेवरात थे । मेरी पत्नी चिल्ला-चिल्लाकर रोकर कह रही थी, मेरे ही स्कूल के एक अध्यापक उसे दो दिन पूर्व रखा गये थे ।

बात तो खुली । थानेदार भी समझ गये थे दंगा के बाद शासन ने उन मकान-मालिकों के

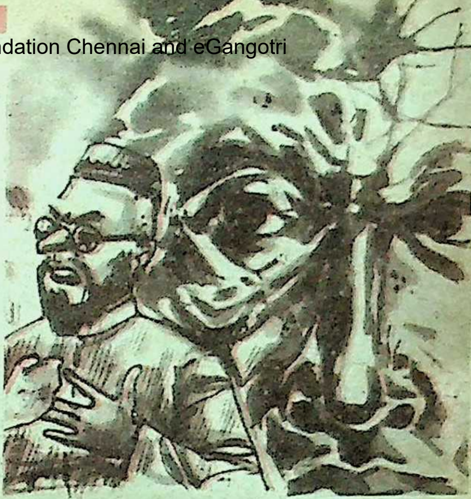

जिनका मकान लुटा था, कुछ मुआवजा देना शुरू किया था । दंगा बीता, कर्फ्यू भी छूट चुका था । पर मेरे ही स्कूल के एक सहयोगी अध्यापक ने यह अच्छा मौका समझा कि घर में लूट-पाट दिखाकर सरकार से कुछ वसूल कर लिया जाए । कुछ सामान जो बेकार था, सड़क पर फेककर वे अपनी पत्नी का कपड़े तथा गहने का बक्सा मेरे घर रिक्शे पर ले आये और चूंकि हमारे परिचित थे, उन्होंने मेरी पत्नी से कहा कि वे बाहर छुट्टी पर जानेवाले हैं, अतः हिफाजत के लिए यह सामान रख लिया जाए । आपस में ऐसा होता ही है । दो बक्से रख लिये गये । पर उस महाशय ने लुटे हुए माल में वे दोनों बक्से भी लिखा दिये थे ।

इधर पुलिस में हड़कंप मच गयी थी । जब दंगा शांत हो चुका था, तब भी घर लुट रहा है— थाना की पुलिस अवश्य निकम्मी तथा बदहोश है । अभी भी गुंडे और बदमाश घूम रहे हैं । डाके पड़ रहे हैं । पुलिस बहुत परेशान थी कि यह लूट कैसे हुई— कई लोग संदेह में पकड़े गये पर पता कुछ नहीं चला । धीरे-धीरे महल्ले में यह बात खुली कि उसे मास्टर साहब के मकान में एक रिक्शे पर कुछ सामान गया था । महल्ले में जितने रिक्शेवाले आते थे, उनसे पूछताछ में मेरे मकान पर सामान आने का पता चला और अब !

मेरे सहयोगी अध्यापक यह स्वीकार करते हैं कि उन्होंने यह हरकत की तो वे फंसते हैं और नहीं तो मैं या मेरी पत्नी डाकू हुए— सजातीय, सहधर्मी के घर डाका डाला सामान की शिनाख्त के लिए वे साहब बुलाये गये थे । वहीं खड़े थे । मेरा उनका सामना हुआ । पर वे जैसे मुझे पहचान भी नहीं रहे थे— मैं पूछता ही गया कि बक्से आपने यहां क्यों भेजे । मेरी पत्नी ने मुझे बताया भी नहीं था कि कोई सामान आया है । साधारण-सी बात थी । आपसदारी की । उसने कोई जरूरत नहीं समझी । यह तो स्पष्ट था कि थानेदार साहब असली बात समझ गये थे पर रिपोर्ट लिखानेवाले ने झूठी रिपोर्ट लिखायी है, यह कैसे तुरंत सिद्ध हो जाए । इतनी मेहरबानी क्या कम थी कि मेरी पत्नी को मुलजिम न बनाकर मुझे ही थाने जाना पड़ा । रातभर दुर्गंधभरे हवालात में मैं पड़ा रहा । हर थाने में हवालात का नर्क कुंड होता है, जिसका पहला नियम है— कभी साफ न करना, मल-मूत्र का ढेर लगे रहने देना ।

× × ×

लड़कों को तो पढ़ने से निजात पाने का बहाना चाहिए था । दूसरे दिन छात्र संगठन में हलचल मच गयी । जिनके घर में डाका पड़ा था, वे अपने समर्थक छात्रों को शांत रखने की चेष्टा में थे । हर स्कूल में, मास्टरों में गुटबाजी न हो और एक-दूसरे के विरोधी न हों यह शिक्षण संस्था कैसी । वही हमारे यहां भी हुआ । एक

अध्यापक पुलिस पकड़ ले गयी, यही क्या कम महत्त्व की बात है । छात्रों में गुटबंदी न हो, ऐसा छात्र-संगठन भी कैसा । एक पक्ष हड़ताल पर उतारू, दूसरा उसका विरोधी । फिर क्या था— जरा देर में मारपीट, सर फूटे । प्रबल पक्ष थाने पर चढ़ आया । बड़ी उग्र भीड़ थी । मुझे छोड़ देने की, रिहाई की मांग थी । थानेदार ने समझाने की चेष्टा की— कौन सुनता है । बड़े अफसरान आ गये । पत्थर-ढेले चले । हवाई फायर से काम नहीं चल रहा था, तब तक मुझे हवालात से निकालकर लाया गया । काफी समझाने-बुझाने से लड़के शांत हो रहे थे । कुछ घायल लड़कों को अस्पताल ले जाने का प्रबंध हो रहा था । इतने में एक नेताजी आ गये । उन्होंने नारा लगाया— 'थानेदार को मुअत्तल करो ।' उसका क्या दोष था— यह कौन पूछता है ? सड़क जाम हो गयी । शायद इस वा पर सड़क का मार्ग खुला कि थानेदार के खिलाफ कार्यवाही होगी ।

× × ×

हम तीनों निरपराध तीन-तीन महीने जेल रहकर अदालत से निर्दोष छूटकर बाहर नि हैं । पंडितजी, इरफान मियां और मैं, तीनों ए ही बैरक में थे । झूठी रिपोर्ट लिखानेवाले म साहब का कुछ नहीं बिगड़ा । सुना है मेरी नौकरी जानेवाली है । एक डाकू को कौन अध्यापक रखेगा— बतलाइए, मेरी रक्षा क कोई उपाय है ? सड़क पर कूड़ा फेकने का इतना भयंकर परिणाम ।

—४, एल.आर. बं
कालपी रो
कानपुर-२०८०

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. प्राचीन मेसोपोटामिया की (लगभग ढाई हजार वर्ष ई.पू.), २. क. ३६५ दिन ५ घंटे ४८ मिनट ४६, सेकंड, ख. चंद्र-वर्ष सौर-वर्ष से लगभग ११ दिन कम, ३. क. दिक्‌पति या दिक्‌पाल, ख. क्रमशः इंद्र, वरुण, कुबेर, यम, ४. क. आई.आर.एस.पी.-२ (८७० कि.ग्रा.), ख. पी.एस.एल.वी.डी.-२— श्रीहरि कोटा से, ५. क. भारतीय मूल के डॉ. वाई. सुब्बाराव के नेतृत्व में न्यूयार्क में वैज्ञानिकों के एक समूह ने (सन १९४८) ख. पीत ज्वर, फाइलेरिया, इंसिफैलाइटिस और काला आजार, ६. (१) उ. कोरिया और अमरीका के बीच— कोरिया प्रायद्वीप को परमाणु-अस्त्रों के प्रसार से मुक्त रखना, (२) इसराइल और जोर्डन के बीच शांति-संधि, ७. क. ८वां (४ स्वर्ण, ३ रजत, १ कांस्य=२२ पदक), ख. चीन (१३७ स्वर्ण, ९ रजत, ६० कांस्य=२८९ पदक), ८. फिलिस्तीन यासर अराफात (शांति), जापान के केनजाबुरो ओए (साहित्य), अमरीका के एल्फ्रेड जी. गिलमैन और मार्टिन रॉडबेल (जी-प्रोटीन्स की खोज), ९. क. अशोक वाजपेयी, ख. मजरूह सुल्तानपुरी, ग. डॉ. विशंभरनाथ पांडेय, घ. आर्थोपेडिक सर्जन विक्रम मारवाह, च. अर्थशा गीता सेन, १०. खजूर के बीज

दतिया नहीं दंतवक्र

दतिया में सैकड़ों मंदिर होने के कारण इसे छोटा वृंदावन भी कहा जाता है । इस छोटे वृंदावन में एक ही स्थान पर ३६ कोटि देवताओं के अनूठे संगम का एक ऐतिहासिक मंदिर है, जिसे ३६ कोटि के मंदिर के नाम से संबोधित किया जाता है । जीर्ण-शीर्ण हालत में पड़ा यह मंदिर धार्मिक ग्रंथों में एक अनूठा महत्त्व रखता है, क्योंकि एक ही स्थान पर शिव, शनीचर, हनुमान, ब्रह्मा आदि ३६ कोटि देवताओं के दर्शन होना इस मंदिर के अलावा असंभव है ।

जूतों में मोरपंख पहनना अनिवार्य है !

• अमिताभ फरोग

देश के सबसे बड़े भू-भाग वाले प्रदेश मध्य प्रदेश के विशाल आंगन में अपनी संगीत, साहित्य, कला की किलकारियों से समृद्ध दानवराज दंतवक्र की साधना स्थली दतिया नगरी अपने हृदय में संजोयी हुई अकूत ऐतिहासिक संपदाओं एवं समृद्ध लोक संस्कृति के कारण शोधार्थियों को सदैव ही आकर्षित करती रही है । इतिहासवेत्ता और पर्यटक अपने आप को रोक नहीं पाते, इस समृद्धिशाली ऐतिहासिक दतिया नगरी का भ्रमण करने से ।

दतिया शब्द की व्युत्पत्ति

दतिया शब्द की व्युत्पत्ति कब और किन परिस्थितियों में हुई ? या दतिया शब्द का मूल स्रोत एवं उद्भव क्या है ? इस संदर्भ में विविध प्रकार से वर्णित किया गया है, एवं इतिहासकारों ने अपनी-अपनी रुचि-रुझान से इसे अपने संस्कारों के अनुसार खोजा है, चूंकि अपनी मातृभूमि और कर्मस्थलों के इतिहास को सर्वाधिक प्राचीनयुग से संबंधित करने की प्रवृति इतिहासवेत्ताओं में पायी जाना कोई अचरज की बात नहीं है । शायद इसी प्रवृत्ति के मोहपाश में फंसने का कारण माना जा सकता है कि कतिपय मूर्धन्य विद्वानों ने दतिया को महाभारतकालीन युग से जोड़ने की उदारता दिखायी है । एवं भगवान श्रीकृष्ण के विरोधी दानवराज दंतवक्र की उपासनास्थली दतिया को बताया है ।

परंतु दानवराज दंतवक्र में श्रीकृष्ण विरोधी

विचारधारा के उद्भव का कोई यथार्थ उल्लेख किसी धार्मिक ग्रंथ में पढ़ने को नहीं मिलता । दंतवक्र ने लोकजीवन में और गांवों में पहनी जानेवाली कलात्मक जूतियों, जिन्हें कनोरा (बुंदेली) के नाम से जाना जाता था, के ऊपर सुनहरी जड़ी से श्रीकृष्ण के मुकुट का मोरपंख लगवा दिया था, और उनका पहनना आम जनता के लिए अनिवार्य घोषित कर दिया था । ऐसा कहा जाता है कि, दंतवक्र ने भगवान श्रीकृष्ण का मान-मर्दन एवं अपमान करने की दृष्टि से इस प्रकार की जूती का प्रचलन करवाया था ।

इतिहासवेत्ताओं के अनुसार दतिया शब्द की उत्पत्ति इसी दानवराज दंतवक्र के नाम से हुई है । सर्वप्रथम इस नगरी का नामकरण दंतीवक्र के नाम से प्रचलित हुआ । और समय-गति के थपेड़ों को झेलती दंतीवक्र नगरी— दतिया, दांती, दांतानगर और अंत में दतिया के नाम से पहचानी जाने लगी ।

भौगोलिक स्थिति

दानवराज दंतवक्र भगवान शिव का अनन्य भक्त था, जिसने दतिया के बीचोंबीच शिवलिंग की स्थापना करवायी थी । मढ़िया का मंदिर के नाम से प्रचलित इस ऐतिहासिक शिव मंदिर से अब ऐतिहासिकता का बोध करानेवाली चमक आधुनिक नवनिर्माण ने छीन ली है । जो भी हो इस महाभारतकालीन मंदिर का अपना एक विशिष्ट ऐतिहासिक महत्त्व है ।

भौगोलिक दृष्टिकोण से दतिया जिला २५-३४ एवं २६×१८ उत्तरी अक्षांश तथा ७८-१३ एवं ७८×५३ पूर्वी देशांतर पर स्थित है, जिसे सेंवढ़ा और दतिया दो तहसीलों में बांटा गया है ।

सेंवढ़ा का इतिहास भी दतिया के सम है, क्योंकि इसका उद्भव भी महाभारतकाल हुआ माना जाता है । इतिहासवेत्ताओं ने इसे सनतकुमारों की साधना स्थली माना है ।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सेंवढ़ा शब्द मूल शब्द सेंहुडा तत्पश्चात सेंधवा, सिंधुवा का अपभ्रंश है, जो कई यु का साक्षी रहा है । सन १०१८ में मोहम्मद गजनवी चांदराय का पीछा करता हुआ सेंव आया और अपने बाहुबल के द्वारा,किन्नरग किले पर कब्जा करने में सफल रहा । इस के लिए ऐतिहासिक घटनाओं के तौर पर शत्रुजीत का ऐतिहासिक युद्ध प्रसिद्ध है, जो मार्च, १८१० के लगभग हुआ मानते हैं ।

मराठों के सेनानायक पेरो एवं शत्रुजीत क इस युद्ध में इतने घाव लगे थे कि परिणामस्वरूप दोनों की मृत्यु हो गयी । पेरो मृत्यु युद्ध स्थल पर ही शत्रुजीत की तलवार मारक प्रहारों से हो गयी थी, जबकि शत्रुजी की मृत्यु लगभग तीन माह बाद ३ मई, १८ को हुई । युद्ध शत्रुजीत ने जीता था ।

वैसे अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों में दतिया क उदय ओरछानरेश मधुकरशाह के सबसे छो पुत्र वृहसिंह देव के द्वारा हुआ अंकित है ।

वृहसिंह देव महत्त्वाकांक्षी, न्यायप्रिय औ कलाप्रेमी शासक थे, जिन्होंने मुगल सम्राट जहांगीर के बागी पुत्र शहजादे सलीम से मि कर, उपहार के तौर पर अकबर के सेनाना एवं उनके नवरत्नों में से एक अबुल फजल सिर काटकर भेंट किया था । अबुल फजल दक्षिण की विजय यात्रा से वापस आगर

साज-सामान एवं लूट के धन के साथ लौट रहा था । (घटनाकाल ९ अगस्त, १६०२) ।

शहजादे सलीम जो बाद में जहांगीर कहलाये, ने बादशाह बनने पर अपने मित्र वृहसिंह देव को ओरछा के राजकीय पद की गरिमा मुगलिया सनद से प्राधिकृत किया ।

दतिया का सप्तखंडा महल

नृहसिंह देव विलक्षण प्रतिभासंपन्न थे और महत्त्वाकांक्षा के धनी, इसी कारण दतिया नगरी ने जितनी तरक्की, कला, साहित्य एवं संगीत के क्षेत्र में वृहसिंह देव के कार्यकाल में की संभवतः उतनी अन्य किसी शासक के शासनकाल में नहीं कर सकी ।

वृहसिंह देव ने माघ सुदी ५ संवत १६७५ के शुभ मुहूर्त में इष्टपूर्ति यज्ञ करके जिन ५२ इमारतों की नींव डाली थी, उनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं स्थापत्यकला का सजीव उदाहरण माना जाता है दतिया का सप्तखंडा पुराना महल ।

नगर की पश्चिम दिशा की ओर एक विशाल टीले पर स्थित इस सप्तखंडे महल के संदर्भ में बुंदेलखंड में कई जनश्रुतियां हैं जिसमें इस महल के भूगर्भ में सात खंड होना और वहां से एक सुरंग निकलकर झांसी और कालपी के किलों से जुड़ना भी प्रचलित है ।

शिल्पकला और भवन-निर्माणकला की इस अमूल्य ऐतिहासिक धरोहर को देखकर सन १८३५ में दतिया दर्शन को आया स्लीमैन अभिभूत हो गया था । प्रसिद्ध इतिहासकार हेवेल ने इसे सत्रहवीं सदी का सर्वोत्तम महल बताया है ।

सम्राट अशोक की यात्रा भी इस भूखंड के लिए चिरस्थायी स्मृति के रूप में दतिया से पूर्व की ओर १० कि. मी. की दूरी पर स्थित ग्राम गुजर्रा में शिलालेख पर अंकित है ।

ग्राम गुजर्रा में स्थित इस अशोककालीन शिलालेख को सन १९५४-५५ की अग्रगण्य खोजों में प्रमुख माना गया है । वाहिनी लिपि और मगधी में लिखा यह शिलालेख इस तथ्य का साक्षी है कि बुंदेलखंड उस काल में मौर्य साम्राज्य का एक मुख्य अंग था ।

छत्तीस कोटि देवताओं का मंदिर

उन्नाव में स्थित सूर्य मंदिर इस क्षेत्र के लिए धार्मिक आस्था और विश्वास का केंद्र है, जिसके दर्शन और मंदिर के नीचे बहनेवाली पहूज नदी के स्नान करने से चर्मरोग से मुक्ति मिलती है तथा सूर्योदय की प्रथम किरण इसका अभिवादन करती है ।

दतिया में सैकड़ों मंदिर होने के कारण इसे छोटा वृंदावन भी कहा जाता है । इस छोटे वृंदावन में एक ही स्थान पर ३६ कोटि देवताओं के अनूठे संगम का एक ऐतिहासिक मंदिर है, जिसे ३६ कोटि के मंदिर के नाम से संबोधित किया जाता है । जीर्ण-शीर्ण हालत में पड़ा यह मंदिर धार्मिक ग्रंथों में एक अनूठा महत्त्व रखता है, क्योंकि एक ही स्थान पर शिव, शनीचर, हनुमान, ब्रह्मा आदि ३६ कोटि देवताओं के दर्शन होना इस मंदिर के अलावा असंभव है ।

धार्मिक क्षेत्र के अलावा इस नगरी को वीरता, साहित्य और संगीत क्षेत्रों में दिये गये योगदानों के लिए भी याद किया जाता है ।

भूमिगत अवस्था में महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद भी इसी नगरी में दीवान नाहरसिंह के अतिथि के रूप में सुरक्षित रहे ।

—अजयपाल की गली, दतिया

शब्द बोलेंगे

जो अभी तक—
मौन थे वे शब्द बोलेंगे,
हर महाजन की बही का भेद खोलेंगे !

पीढ़ियां गिरवी फसल के
बीज की खातिर,
लिख रहा है भाग्य मुखिया
गांव का शातिर !

अब न पटवारी—
घरों में युद्ध बोएंगे !

आ गयी खलिहान तक
चर्चा दलालों की
बिछ गयी चौपाल में
शतरंज चालों की !

अब न सौदागर—
खुशी की फसल लूटेंगे ।

कौन होली ईद की
खुशियां लड़ाता है !
औ,' हवेली के लिए
झुग्गी जलाता है ?

वोट-नोटों की
सभी दूकान तोड़ेंगे,
जो अभी तक मौन थे वे शब्द बोलेंगे !

• **राधेश्याम 'बंधु'**

सी-९/९३, यमुना विहार
दिल्ली-११००५३

रहने दो

रहने दो
मुझे यहीं
भूली-बिसरी
यादों के
जंगल में
मुझे नहीं जुड़ना
वर्तमान से
वर्तमान के
नुकीले पंजों की
खरोंच
जब-तब
देखती हूं
आदमी के
चेहरे पर
सिहर जाती हूं
अंदर तक
मुड़ जाते हैं पांव
स्वयं ही
पेट की ओर
मानो उसमें
समा जाना
चाहते हैं
फिर से ।

• अल

४४६ ए, बिहारीपुर सिविल
बरेली (उ

शरद चांदनी

सुरमई सांझ में सिंदूर लिए
रवि ने जयति के सफर तय किये
चलनेवालों ने स्वत्व होश खोये
झूमते-नाचते गाते गीत रस पीये

शरद अमिए, अमृत ऋतुवरों
चंद्रिका में गाने के बुनकरों

चेतना चपल चंचल मतकरो
चांदनी निशा के मदहोश सहचरों
वसुधा के दूधिया झील में डूब लो
ताज के धवल मखमली पत्थरों

शुभ्रज्योत्सना हिम अंकित करो
चंद्रिका में गीत के बुनकरों

अनजाना-सा रूप अब क्यों दीखें ?
स्नेह विरह वेदना क्यों आज सहे ?
अनबुझी अतृप्ति क्यों बाकी रहे ?
नयननीर अकारथ क्यों अब बहे ?

प्रश्न ही प्रश्न क्यों स्व उत्तर बनो
शरद अमिय के अमृत ऋतुवरों

मुसकान सजा चार क्षण जी लिए
निशा नीर के मंजुल कण पी लिए
जीवन अतुल सुमन मन बन गयी—
सुगंध वातावरण को वरण किये

पाखुरी पाखुरी रस राग झरों
चंद्रिका में गीत के बुनकरों ।

• डॉ. अहिल्या मिश्र

९३/सी, राज सदन,
वेंगलराव नगर,
हैदराबाद-५००८९०

गीत

महुए से भरा हुआ गांव—
गांव मेरा है ।

अनछुआ रहा सब दिन
शहर के कुएं से
पीता है गंगा जल
खोदकर कुएं से

खुशबू की बांहों में गांव,
गांव मेरा है ।

तपी-तपी पगडंडी
जेठ का महीना,
सोख रही धूल
अंग-अंग का पसीना,

जेठी मधु-सा मीठा गांव,
गांव मेरा है ।

मिहनत भर गीत है
हर चेहरा सादा है
यहां नहीं बादशाह
यहां यही ज्यादा है ।

यादों में टापू-सा गांव,
गांव मेरा है ।

• राजमणि राय 'मणि'

ग्रा./पो. घमौकन (पट्टी)
वाया-महनार
पोस्टल जिला—वैशाली (बिहार)

व्यंग्य

राजधानी : तीन संदर्भ

● अश्विनी कुमार दुबे

"मेरा ट्रांसफर रुक जाएगा न भैया !" अफसर ने मिमयाते हुए कहा ।

"अरे, क्यों नहीं रुकेगा ? यह तो स्साला पिद्दी-सा काम है । मैंने तो मंत्रीजी से बड़े-बड़े काम कराये हैं । आपने पूरा इंतजाम कर लिया है न ?" मुन्नू भैया ने सिगरेट का कश लेते हुए अफसर से पूछा ।

चुनाव जीतकर कस्बे के नेताजी मंत्री हो गये । अब वे राजधानी में रहते हैं और विदेशों का दौरा करते हैं । कस्बे में रह गये उनके कार्यकर्ता, सेवक और एजेंट मुन्नू भैया । ये पूरे क्षेत्र की जन-समस्याएं निपटाते हैं । जिस प्रकार मंत्रीजी सरकारी खर्चे पर देशी समस्याएं विदेश में निपटाते हैं, उसी प्रकार मुन्नू भैया समस्याग्रसित व्यक्ति के खर्चे पर राजधानी की सैर करते हैं । फिलहाल एक अफसर जो मुन्नू भैया के कस्बे में पंचवर्षीय योजना पूरी कर चुका है । अपना स्थानांतरण रुकवाने के लिए वह मुन्नू भैया को अपने खर्चे पर राजधानी लेकर आया और एक बड़े होटल में ठहरा हुआ है । मुन्नू भैया पिछले तीन दिनों से उस अफसर के साथ राजधानी में घूम रहे हैं । अब कहीं जाकर मंत्रीजी से मिलने का मुहूर्त निकला है । सुबह भरपेट नाश्ता करके मुन्नू भैया मंत्रीजी से मिलने निकले । जाते वक्त अफसर ने उनके हाथ में ब्रीफकेस थमा दिया ।

"आप बिलकुल चिंता न करिए । आपके काम के लिए हम जान लड़ा देंगे ।" मुन्नू भैया ने जाते-जाते अफसर को दिलासा दी । वे होटल की सीढ़ियां उतरकर सड़क पर आ गये । उनकी जान उनके हाथ में थी । जैसे पुरानी कथाओं में किसी जादूगर की जान किसी पक्षी में हुआ करती थी । पक्षी की गरदन मरोड़ दो तो जादूगर टें हो जाता था । ठीक आजकल के जो जादूगर हैं, उनकी जान रंग-बिरंगे ब्रीफकेसों में होती है । इन्हें इस प्रकार के ब्रीफकेस मिलते रहें, तो इनका स्वास्थ्य हरा-भरा रहता है । और यदि ब्रीफकेस मिलने बंद हो जाएं तो इनके चेहरे पर मुर्दनी छा जाती है । फिर लगता है कि अब मरे कि तब मरे । एक भरोसेवाले के घर में ब्रीफकेस को सुरक्षित रखकर मुन्नू भैया मंत्रीजी से मिलने उनके बंगले में पहुंचे । संतरी ने बताया कि मंत्रीजी बहुत व्यस्त हैं । थोड़ी देर प्रतीक्षा के बाद मुन्नू भैया मंत्रीजी की बैठक में दाखिल हुए ।

"पांव लागी मंत्रीजी ।" मुन्नू भैया भावविभोर मुद्रा में मंत्रीजी के चरणों की तरफ लपके ।

"खुश रहो । कैसे आना हुआ ? हुआं के का हाल हैं ? मुझे अभी एक जरूरी मीटिंग में जाना है । कल हाइकमान के साथ एपाइंटमेंट है । जो कुछ कहना होए, जल्दी कहो ।"

चुनाव जीतकर कस्बे के नेताजी मंत्री हो गये । अब वे राजधानी में रहते हैं और विदेशों का दौरा करते हैं । कस्बे में रह गये उनके कार्यकर्ता, सेवक और एजेंट मुन्नू भैया । ये पूरे क्षेत्र की जन-समस्याएं निपटाते हैं । जिस प्रकार मंत्रीजी सरकारी खर्चे पर देशी समस्याएं विदेश में निपटाते हैं, उसी प्रकार मुन्नू भैया समस्याग्रसित व्यक्ति के खर्चे पर राजधानी की सैर करते हैं ।

मंत्रीजी बड़ी फुरती में यह सब कह गये, फिर किसी फाइल को आंखें गड़ाकर देखने लगे ।

"बस, आपकी कुशल-क्षेम पूछने आये रहे । यहां सब ठीक है न ? भाभी, माताजी, गुड्डू, बेबी सब मजे में तो हैं ।" मुन्नू भैया ने आत्मीयता उंड़ेली ।

"हां सब मजे में हैं । मंत्रीजी ने फाइल में आंखें गड़ाये हुए कहा ।

"दद्दा वो एक-दो ठो काम लेके आये रहे । आप जरा... ।" मुन्नू भैया ने धीमे स्वर में बात आगे बढ़ायी ।

"तुम्हें अपने काम की पड़ी है । यहां अपोजीशनवालों ने हमारी नाक में दम कर रखा है । दल में भी विरोधी गुटवाले दिन-रात टांग खींचते रहते हैं । इस समय तो मैं स्वांस भी लेता हूं, तो पत्रकार पट्ट से अखबार में छाप देते हैं कि आजकल मैं स्वांस में ज्यादा आक्सीजन लेने लगा हूं । और तुम हो कि मुझे ज्यादा आक्सीजन लेने पर विवश करते हो । पिछली बार तुम्हारी लिस्ट देखकर मैंने स्थानांतरण की सूची जारी कर दी थी । देखा तुमने, कितना विवाद हुआ ! और वो जिसे तुमने एक बड़ी सप्लाई का ठेका दिलवाया था, चुनाव के दिनों में निरा निकम्मा साबित हुआ । अब तुम जाओ । मेरा भेजा मत चाटो । मैं पहले ही बहुत परेशान हूं । पता नहीं हाइकमान के कान किसने भर दिये हैं ।" मंत्रीजी फाइल टेबुल पर पटककर खड़े हो गये ।"

"प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदय राखि कौसलपुर राजा ।" दद्दा, आप तो बड़े अनुभवी हैं । कूटनीति में तपे हुए हैं । भला आपका कौन बाल बांका कर सकता है ! ठीक है । अभी आप जल्दी में हैं । फिर कौनउं दिन आपके दर्शन के लिए पधारेंगे । अच्छा पांव लागू दद्दा !" इतना कहकर मुसकराते हुए मुन्नू भैया कमरे के बाहर आ गये । कमरे के बाहर मुन्नू भैया को जाननेवाले उन्हीं उन्हीं के क्षेत्र के कई प्रार्थी खड़े हुए थे । मुन्नू भैया ने घोषणा की— "मंत्रीजी आज किसी से न मिल पाएंगे । एक जरूरी मीटिंग में जा रहे हैं ।"

कुछ लोग अपनी दरख्वास्तें लेकर मुन्नू भैया के पीछे दौड़े । मुन्नू भैया ने सबकी समस्याएं सुनीं । फिर तौल-मौलकर बोले, "आप सबका काम हो जाएगा । आप लोग शाम को मुझसे होटल 'भारत-भारती' में आकर मिलिए ।"

इस प्रकार मुन्नू भैया पूरे एक सप्ताह राजधानी में रहे । रात में बार जाते, दिन में बढ़िया रेस्टोरेंट में भोजन करते । दोपहर को

किसी थियेटर में घुस जाते । शेष समय में लोगों की समस्याएं सुनते । साथ आये अफसर से उन्होंने कहा, ''आपका काम जल्द हो जाएगा । कुछ समय लग सकता है । वैसे मंत्रीजी ने पूर्ण आश्वस्त किया है । आप चिंता न करिए ।''

''सुफल मनोरथ होहुं तुम्हारे, राम लखन मुनि भये सुखारे''— यह मंत्र वाक्य, राजधानी में मुन्नू भैया ने जाने कितने लोगों से कहा । राजधानी से वापस जाकर वे फिर इसी मंत्र वाक्य का सहारा लेंगे । कौन कहता है, मंत्रों में शक्ति नहीं होती ?

(दो)

मुन्नू भैया अबकी राजधानी एक रैली लेकर आये हैं । पांच साल पूरे होने को आये और उनके क्षेत्र में अभी तक कोई अकाल नहीं पड़ा, कोई बाढ़ नहीं आयी और राहत कार्य नहीं खुले ! यह सरासर अन्याय है । दूसरे क्षेत्रों में साल में दो-दो बार अकाल पड़ गया । पास के जिले में तो गरमी के दिनों में बाढ़ राहत फंड आया और खतम हो गया । फिर भी वे लोग राजधानी में आये-दिन बाढ़ पीड़ितों के लिए रैली, अनशन और प्रदर्शन करते रहते हैं । इधर पांच साल पूरे हो रहे हैं और अभी तक एक अदना-सा सूखा भी नहीं पड़ा । यह कार्यकर्ताओं की कमजोरी है । सब अलाल हो गये हैं । क्षेत्र की किसी को कोई चिंता ही नहीं है । अरे, क्षेत्र में जब अकाल, सूखा और बाढ़ नहीं आएगी तो क्षेत्र का विकास कैसे होगा ? विकास के लिए ये सब जरूरी हैं । इस आदर्श को लेकर मुन्नू भैया ने गांव, शहर, महल्ले और अपनी गली से लगभग दो सौ अकाल पीड़ित लोगों को इकट्ठा किया और राजधानी की ओर कूच कर गये ।

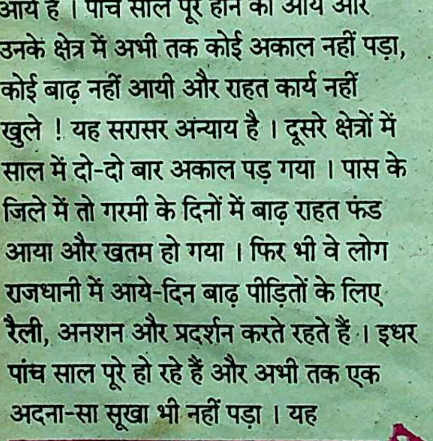

मुन्नू भैया के साथ जानेवाले शहर के उठाईगीर, छुटभैये नेता, कुछ किसान, मजदूर और छात्र थे । सबके सब अकाल पीड़ित ठहरे, इसलिए किसी को भी ट्रेन की टिकिट लेने की कोई जरूरत न पड़ी । पूरी एक बोगी में ये लोग घुस गये । रास्तेभर ये अकाल पीड़ित लोग जोशीले नारे लगाते रहे । कई स्टेशनों पर इन्होंने फलवाले, चायवाले, खोमचेवाले और बुक स्टॉलवालों तक के यहां लूटपाट की । लुटनेवाले लुटते हुए हाय-तौबा मचाते रहे । परंतु कोई कुछ नहीं बोला । अब अकाल पीड़ित हैं, वे तो लूटेंगे ही । राजधानी में रैली निकालने जा रहे हैं । उनको कौन छेड़े ? जो उन्हें छेड़े उसी की शामत आ जाए । लोग कहेंगे, अकाल पीड़ितों पर अत्याचार कर रहे हैं । इस प्रकार इठलाती, मचलती और धूम मचाती अकाल पीड़ितों की यह टोली राजधानी पहुंची ।

दूसरे दिन राजधानी में अकाल पीड़ितों की जोरदार रैली निकली । मुन्नू भैया उस रैली का नेतृत्व कर रहे थे । आम सभा में मुन्नू भैया ने आंखों में आंसू भरकर बताया, ''किस प्रकार उनके क्षेत्र में भीषण अकाल पड़ा हुआ है ।

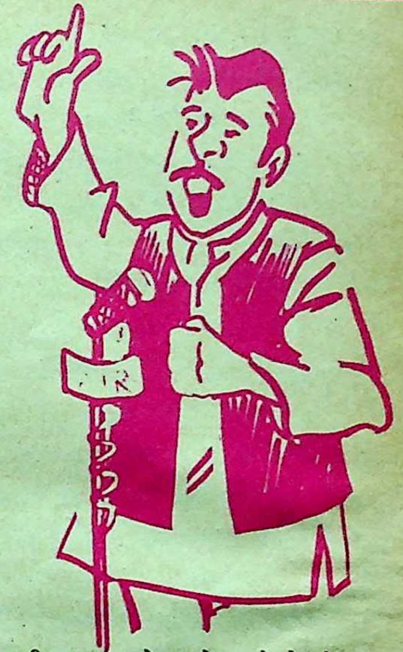

आदमी घास की रोटियां खाने को विवश है । अनाज के चंद दानों के लिए माताएं अपने बच्चे बेच रही हैं । माताओं-बहनों की अस्मत असुरक्षित है । थोड़े-से अनाज के लिए लोग एक-दूसरे का सर फोड़ रहे हैं । खेतों में दरारें पड़ गयी हैं । पूरे क्षेत्र में कोई विकास नहीं चल रहे । सैकड़ों मजदूर, किसान रोजी-रोटी की तलाश में पलायन कर रहे हैं । सरकार ने अभी तक वहां राहत कार्य क्यों नहीं खोले ? यहां उपस्थित सैकड़ों भूखे-नंगे अकाल पीड़ितों की सरकार से दरख्वास्त है कि उनके क्षेत्र के लिए तुरंत राहत फंड एलाट करे । जब तक सरकार फंड एलाट नहीं करती, हमारा क्रमिक धरना यहां चलता रहेगा ।" (तालियों की जोरदार गड़गड़ाहट)

मुन्नू भैया के भाषण का असर हुआ । क्षेत्र के नेता, अफसर और पत्रकार चाहते थे कि क्षेत्र में राहत कार्य खोले जाएं । सबने मिलकर अकाल की ऐसी भूमिका बांधी कि सरकार को झुकना पड़ा और उनके क्षेत्र को 'अकालग्रस्त' घोषित कर दिया गया । इस महत्कार्य के लिए मुन्नू भैया बधाई के पात्र हैं । वैसे क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता का भी सराहनीय योगदान रहा ।

मुन्नू भैया की रैली बहुत सफल रही । इधर जैसे ही हाइकमान ने उनके क्षेत्र को अकाल पीड़ित घोषित किया, वैसे ही पूरे क्षेत्र में अपार खुशी की लहर दौड़ गयी । एक करोड़ रुपये राहत कार्यों के लिए स्वीकृत किये गये, यह बात दफ्तर-दफ्तर फैलते देर न लगी । सब अफसर मुन्नू भैया को बधाई देने लगे । लोग कहते, "नेता हो तो मुन्नू भैया जैसा । देखो एड़ी-चोटी का पसीना एक करके उसने अपने क्षेत्र में अकाल पड़वा ही दिया । कई नेता अपने-अपने क्षेत्र में अकाल, सूखा, महामारी और बाढ़ की फाइलें लिए घूमते रहे, परंतु मुन्नू भैया की रैली रंग ले आयी ।"

राजधानी के अखबारों ने रैली के फोटो मुख्य पृष्ठों पर छापे । मुन्नू भैया का 'इंटरव्यू' भी कई समाचार पत्रों में छपा, जिसमें मुन्नू भैया ने कहा— "मैं अपने क्षेत्र के विकास के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर कर सकता हूं ।"

किसे मालूम है कि मुन्नू भैया के प्राण तो 'ब्रीफकेस' में रहते हैं ।

(तीन)

मुन्नू भैया राजधानी से प्रकाशित होनेवाले एक नये दैनिक के संपादक हो गये । क्षेत्र के बड़े नेता दद्दाजी को राजधानी में अपने लिए एक अखबार की जरूरत पड़ी । हर राजनीतिक

को पड़ती है । वह नेता, नेता ही क्या, जिसका अपना एक अखबार न हो । जो सक्षम हैं, वे किसी भी सेठ-साहूकार को उपकृत करके अपना अखबार शुरू करवा लेते हैं । कुछ लोग पुराने अखबारों के मालिकों से मधुर संबंध बनाते हैं । उन्हें अखबार का दफ़्तर खोलने के लिए राजधानी में मिट्टी मोल जमीनें दिलवा देते हैं । इस प्रकार वे लोग समझदार और दूरदृष्टिवाले हैं, जो समय रहते मीडिया में अपनी पकड़ बना लेते हैं । उन्हें कालांतर में विरोधी गुट की पोल खोलने, दूसरों को भ्रष्ट और निकम्मा कहने और खुद को एकमात्र गरीबों का मसीहा साबित करने में कोई कठिनाई नहीं होती ।

कहते हैं, आवश्यकता आविष्कार की जननी है । इस सिद्धांत को ध्यान में रखकर दद्दा ने राजधानी से अपना एक अखबार शुरू किया । जब अखबार अपना है तो संपादक भी अपना ही होना चाहिए । भला मुन्नू भैया से अच्छा संपादक दद्दा के लिए कौन हो सकता है ? वैसे तो एक-से-एक लिख्खाड़ और बुद्धिजीवी संपादक दद्दा को मिल सकते थे, पर वे हर जगह अपनी बुद्धि की टांग अड़ाते ! इसलिए बुद्धि, विवेक और तर्क को बलाये ताक में रखकर काम करने के लिए मुन्नू भैया को एक महत्त्वपूर्ण पत्र का प्रधान संपादक बना दिया गया ।

अब मुन्नू भैया राजधानी में एक बढ़िया सरकारी बंगले में रहते हैं । मारुति में भ्रमण करते हैं और बड़े-बड़े नेताओं के साथ विदेश जाते हैं । गांव की गलियों में 'दद्दा जिंदाबाद के नारे लगानेवाले आठवीं पास मुन्नू भैया सहसा देश के बहुत बड़े बुद्धिजीवी हो गये । वे साहित्य सम्मेलनों में जाते हैं । विश्वविद्यालय की सभा में अध्यक्ष पद से शिक्षा, साहित्य और कला पर गंभीर मीमांसाएं प्रस्तुत करते हैं । उनके दफ़्तर में उनसे मिलने के लिए कई बड़े लेखक, कवि और कलाकार लाइन लगाये रहते हैं । उनका अखबार जिसे उछाल दे, वह मसीहा, जिसे उधेड़ दे उसकी मिट्टी पलीद । वे खुद अखबार के दफ़्तर से पांच हजार रुपये महीने तनख्वाह लेते हैं । दीगर लाभ बेहिसाब हैं । परंतु अखबार के लिए लिखनेवाले लेखकों, कवियों को वे कोई पारिश्रमिक नहीं देते । उनका कहना है, ''यह तो सेवा का काम है । लिखकर के लेखक-कवि राष्ट्रभाषा की निश्छल सेवा करते हैं । सेवा का कोई मोल नहीं होता । वह अनमोल है । साहित्य सेवा-जैसे महान कार्य के लिए चंद रुपयों की बात करना उस महान कार्य का अपमान है । रुपये और साहित्य का क्या संबंध ? एक तुच्छ माया है और दूसरा कृत्य महान साधना !''

उनके ये विचार बहुत लोकप्रिय हैं । धीरे-धीरे राजधानी के कई अखबार इन विचारों से प्रभावित होते जा रहे हैं ।

पिछले दिनों राजधानी में साहित्य का एक बड़ा समारोह हुआ । मुन्नू भैया उस कार्यक्रम के अध्यक्ष थे । लच्छेदार भाषणबाजी के पश्चात मैंने भोजन कक्ष में उनका रौद्र रूप देखा । वे आयोजकों को इस बात के लिए डांट रहे थे कि वहां 'पीने' का इंतजाम नहीं था । साहित्य का इतना बड़ा जलसा और पीने की कोई व्यवस्था

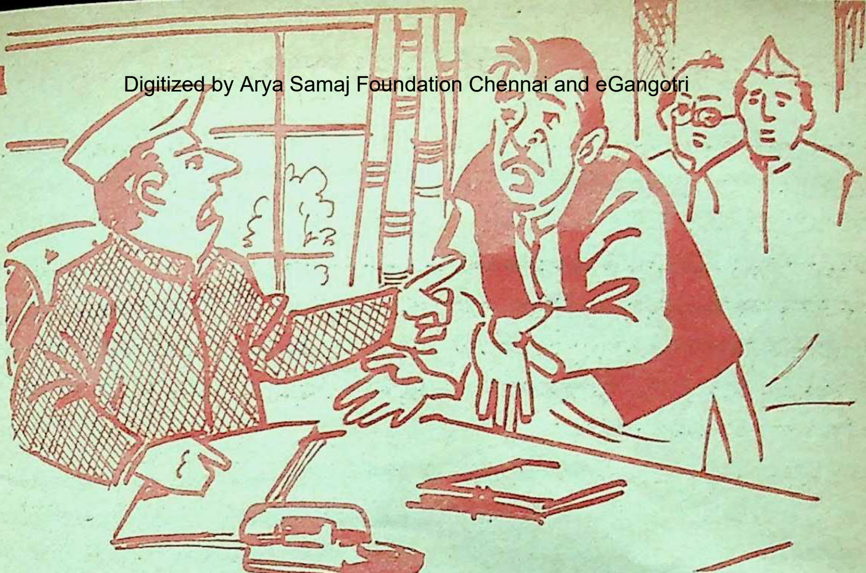

नहीं !! सचमुच आयोजकों का यह बहुत बड़ा अपराध था । इस जघन्य अपराध के लिए अध्यक्ष महोदय उन्हें न डांटते तो क्या शाबासी देते ! बुला लेते हैं, अध्यक्ष पद के लिए और अध्यक्ष का मीनू तक नहीं जानते ! कैसे नासमझ हैं, ये आयोजक । पीने की बात को लेकर कई साहित्यकारों ने भी आयोजकों को लताड़ा ।

आयोजकों को हारकर पीने का इंतजाम करना पड़ा । वहां जाम टकराने की बजाय सुरा प्राप्त करने की होड़ में साहित्यकारों के सर टकरा रहे थे । बहरहाल सबको थोड़ी-थोड़ी मिली परंतु नशा लोगों को ज्यादा चढ़ा । बड़े-बड़े नामी लेखक और पत्रकार मुन्नू भैया के चरणों में पड़े हुए दिखे । कुछ लोग निवेदन कर रहे थे, ''भैया, अगले हफ्ते वो डेलिगेशन विदेशी दौरे पर जानेवाला है । सुना है, आप ही उसमें प्रमुख हैं, अपना भी ध्यान रखिएगा ।'' दूसरे कुछ प्रार्थना करते दिखे, ''भैया अकादमी के पुरस्कारों की घोषणा होनेवाली है । आप तो उसमें मेंबर हैं । हमारी किताबें भी लगी हैं । जरा ध्यान...दूरदर्शन के महानिदेशक को आप जरा फोन कर देते...मेरा साक्षात्कार आपके कार्यालय में अब तक विचाराधीन है ?...राजभाषा समिति में मेरा नाम आ जाता तो...भैयाजी, इस वर्ष आपको पद्मश्री मिलनेवाली है... । क्रांति, संवेदना, यथार्थ और मानवता का ढोल पीटनेवाले लिख्खाड़ों के गले में अभी छटांकभर ही उतरी होगी कि उनके सही चेहरे दिखायी देने लगे ।

मुन्नू भैया अब देश के बहुत बड़े बुद्धिजीवी हैं । उनके नाम के लंबे-लंबे लेख छपते हैं । राजनीति की हर छोटी-बड़ी घटना पर उनकी त्वरित टिप्पणी आती है । किसी भी विषय पर विचार व्यक्त करने के लिए उन्हें अकसर दूरदर्शन पर आमंत्रित किया जाता है । मुन्नू भैया को राजधानी की आबो-हवा रास आ गयी ।

फिलहाल दद्दा की दयादृष्टि उन पर बनी हुई है ।

—रेस्ट हाउस के पीछे, यादव निवास
जांजगीर
(म.प्र.) ४९५-६६८

राजस्थानी लोक-गीतों की एक परिक्रमा

• प्रमोद शाह

“माटी हैलो पाड़े रै” राजस्थानी गीत की यह पंक्ति, जिसका अर्थ है ‘मिट्टी पुकार रही है’, इस बात की ओर संकेत करती है कि लोक गीतों का मिट्टी से कितना गहरा जुड़ाव होता है ।

राजस्थानी लोक गीतों की चर्चा होते ही एक राजपूती शान-बान, परदेश गये हुए नायक के बिछोह में गाये जानेवाले विरह गीत, पनघट पर चुहलें करती हुई पनहारियां, चक्की पीसती हुई, गाती हुई गृहिणियों के ‘हरजस’, मेलों, ऋतुओं व त्योहारों के अवसरों पर गाये जानेवाले गीत, जन्म व विवाह पर चाव भरे गीत-संगीत इत्यादि का कानों में रस घोलता हुआ एक मधुर सिलसिला शुरू हो जाता है ।

वास्तव में किसी भी जनपद के लोक गीतों को ठीक से समझने व उनका आनंद लेने के लिए वहां की सांस्कृतिक, सामाजिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जान लेना आवश्यक होता है । इस सिलसिले में हकीम ‘युसुफ’ झुनझुनवी का राजस्थान के संबंध में यह काव्यात्मक किंतु वास्तविकता लिए वर्णन देखिए—

‘इसके कण-कण में अनगिनत शहीदों की अमर-ज्योति, इसका चप्पा-चप्पा प्यार की दास्तां, इसकी गलियां अतीत की कहानी, इसकी सरणियां वीरों का रासा, इसके बाजार आलोक के झरने, इसके घर अतिथियों की शरणें, इसके कुटुंब स्नेह के लेख, इसके महल्ले एकता की किताब, इसकी हवेलियां कलाओं के ग्रंथ, इसके महलात नवाबी शान-औ-शौकत के गवाह, इसके गढ़ राजसी ठाठ-बाट के वकील, इसके मंदिर आत्म-ज्ञान के प्रमाण, इसकी मसजिदें रूहानियत की सबूत, इसके मठ दर्शन सशरीर, इसकी दरगाहें इनसानियत का नमूना, इसके संत प्रेम के प्रतीक, इसके सूफी मुहब्बत के निगहबां, इसकी छतरियां जीवित उपदेश, इसके मकबरे अमर पैगाम, इसकी कुटियाएं उपासना केंद्र, इसकी बगीचियां साधना स्थल, इसके मुनि ब्रह्मज्ञानी, इसके यति सत्य के पुजारी, इसके कवि मानवता के प्रहरी, इसके निवासी शांति के दूत, इसकी भाषा साहित्य-स्रोत, इसकी हवाएं दुःख निवारक, इसका वातावरण मनभावन और इसकी धरती, ममता की कोख कहिए ।’

इन सबका मिला-जुला प्रभाव यहां के लोक गीतों पर पड़ा है ।

सोलह संस्कार : जीवन का एक भी अवसर ऐसा नहीं है, जो बिना गीतों के पूरा होता है । चाहे वह अवसर जन्म का हो या मरण का । जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कार माने गये

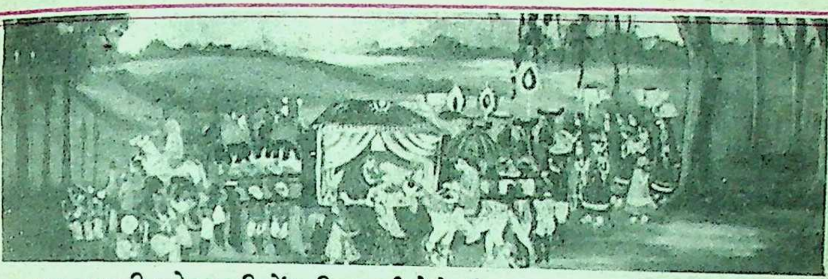

राजस्थानी लोक गीतों की चर्चा होते ही एक राजपूती शान-बान परदेश गये हुए नायक के बिछोह में गाये जानेवाले विरह गीत, पनघट पर चुहल करती हुईं पनिहारियां चक्की पीसती हुईं, गाती हुई गृहिणियों के 'हरजस', मेलों, ऋतुओं व त्योहारों के अवसरों पर गाये जानेवाले गीत, जन्म व विवाह पर चाव भरे गीत-संयीत इत्यादि का कानों में रस घोलता हुआ एक मधुर सिलसिला शुरू हो जाता है

हैं, वे इस प्रकार हैं—

१. गर्भाधान, २. पुसवन, ३. सीमन्तोन्नयन, ४. जातकर्म, ५. नामकरण, ६. निष्कृपण, ७. अन्नप्राशन, ८. पूड़ाकर्म, ९. कर्ण-बंध, १०. उपनयन, ११. वेदारंभ, १२ समावर्तन, १३. विवाह, १४. वान-प्रस्थ, १५. संन्यास एवं १६. अंत्येष्टि संस्कार ।

यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

जन्म के गीत : जन्म के संस्कार के गीतों को 'हालरिया' और मृत्यु के गीतों को 'सापा' कहा जाता है । हालरिया में— 'दाई', 'हारलोगोरों', 'धतूरों', 'खांवली', 'खटोलड़ी', 'धूधरी', 'पीलो', 'अनुवों', 'गीगों', 'लोरी' इत्यादि गाये जाते हैं । लोक कवि सूरजमल्ल मिसण का यह मशहूर दोहा देखिए—

'इला न देणी आपणी हालरिए हुलराय
पूत सिखावै पालणै मरण बढ़ाई माय'

(मां बच्चे को पालने में लोरी सुनाते हुए मातृ-भूमि के लिए मरने का महत्त्व समझा रही है ।)

इसी तरह का एक भाव अन्य लोरी में प्रस्तुत है, जिसमें भाव यह है कि बालक जब कोख से बाहर आता है, तो मां कहती है कि तुझे सत्य की घूंटी दे रही हूं । जिस तरह मैं तुम्हारा कोख से जुड़ा हुआ नाला काट रही हूं, वैसे ही तू शत्रुओं का सिर रण-भूमि में काटना—

'बालो पाखां बाहर आयो, माता बैण सुणावैं यूं
म्हारी कूख सलाइजे रे बाला, मैं तनै सत री घूंटी दयूं
तेज कटारो नालो काट्यो, नालो काटत बोली यूं
रण-भूमि से बैर्यां रै इण बिद शीश काट घर आये तूं

विवाह गीत : विवाह के अवसर पर 'विनायक' से लेकर 'औल्यूं' तक अलग-अलग नेगचार के गीत गाये जाते हैं ।

जैसे 'विनायक', 'न्यूंतो', 'मैंदी', 'आरतो', 'भात-न्यूंतणों', 'भात भरणों', 'घोड़ी', 'बनड़ा-बनड़ी', 'जखड़ी', 'हल्द-हाथ', 'कामण', 'वर माला', 'वर दरसण', 'डेरो, मंडोरों', 'लगाम-छुड़ाई', 'ढुकाव', 'चंवरी', 'फेरा', 'सिंणगार', 'सेवरों', 'काजल', 'घुड़चढ़ी', 'स्वागत सत्कार', 'मिलणी रा बधाव', 'सीठणों', 'आसिरवाद', 'जीजाजी', 'जंवाई', 'सिर गुंथाई', 'सीख', 'ओल्यूं', 'बधावौं' (बाड़ रुकाई— बहु रो गृह प्रवेश), 'बधावो' (बहु री भावना) इत्यादि । उदाहरणस्वरूप—

'म्हें तो सगलां स्यूं पैली पूजां, बिड़द बिनायक
रणथंभवर सू पधारज्यौं'

'कूदूं कूदूं ऊंखलिया री कौर, रंग मैंदी राचणी रै लाल
छाणूं छाणूं स्यालूं री कौर, रंग मैंदी राचणी रै लाल'

शास्त्रीय पुटवाले लोक गीत : किसी भी तरह के लोक गीत हों, केवल गृहिणियों या आम आदमी द्वारा ही नहीं बल्कि पेशेवर गायक-गायिकाओं द्वारा भी ताल-वाद्य के साथ शास्त्रीय पुट देते हुए गाये जाते हैं । वाद्यों में ढोल, नक्कारा, ढोलक, सितार, सारंगी, ढोलकी, खड़ताल, अलगोजा, भपंग मोरचंग, रावण-हत्था एवं हारमोनियम इत्यादि प्रयोग में लाये जाते हैं । प्रमुख रागों में मांड, शुद्ध देश, सारंग, सूप, सामेटी, मारु तथा सिंधु इत्यादि हैं ।

'मांड' तो बड़ा मशहूर राग है । इस राग का यह गीत किस गीत प्रेमी ने नहीं सुना होगा—

'केसरिया बालम आओनीं, पधारो म्हारै देस
मारुं थारै देस में निपजै तीन रतन
इक ढोलो, दूजी मरवण अर तीजो कुसुमल रंग
पधारो म्हारै देस'

'सिंधु राग' युद्ध के लिए गाया जाता रहा है । एक दोहा देखिए, जो नायिका को इंगित कर रहा है कि तेरे लिए युद्ध हो रहा है, सिंधु राग गायी जा रही है—

'बधनोरे केसर बटे, गावे संधवा गीत
तुझ गोरी रे कारणे, बाज रह्या रणजीत'

इसी तरह लाखा गीत, ब्रह्म मुहुर्त में राग बिलावल तथा तीसरे पहर में 'रिड़मल' सामेरी राग में गाया जाता है । भोंपा भोंपी द्वारा 'पाबूजी' भी बहुत तन्मयता के साथ गाया जाता है ।

इन रागों पर आधारित गीतों के अतिरिक्त गृहिणियों द्वारा गाये जानेवाले गीतों में 'लावणी', 'तीज', 'गणगौर', 'हिचकी', 'कलाली', 'दारुड़ी', 'सांवण', 'चौमासा', 'लेहर्‌या', 'जच्चा', 'म्होरतिया', 'झालो', 'पीपली', 'सुपनो', 'कुरजा' इत्यादि है ।

लोक गीतों को सुरक्षित रखनेवाले लोग

हमारे देश की परंपरा रही है कि कोई भी धरोहर हो, किसी-न-किसी जाति विशेष द्वारा सुरक्षित रखी जाती रही है । इसी तरह लोक गीत रूपी धरोहर को भी जीवित रखनेवाली जातियां हैं— राणा, दमामी, लंघा, मांगिया, ढाढी, मिरासी, जांगड़, नंगारची, इत्यादि, जिनके गायकी-गायिकाओं की संख्या पचास हजार से भी अधिक है । इन जाति की गायिकाओं को 'मंगलामुखी' कहा जाता है । गवर बाई (जोधपुर), खुशाली बाई (जैसलमेर), मांगी

बाई, नारायणी बाई, तुलसी बाई (उदयपुर), ललितां बाई (किशनगढ़), अल्लाह जिलाई बाई (बीकानेर) एवं बसंती बाई (फतेहपुर) कुछ प्रमुख नाम हैं ।

पारिवारिक वातावरण की झलक

एक और बात ध्यान आकर्षित करती है, वह यह कि यहां के लोक-गीतों में अरबी, फारसी के शब्द भी मिलते हैं । इसका मुख्य कारण है राजस्थान के शासकों का मुगलों से सीधा संपर्क होना ।

यहां के लोक गीतों में पारिवारिक वातावरण की झलक बहुत मिलती है । पति-पत्नी एक-दूसरे को सीधा संबोधन नहीं करते हैं । प्रातः किसी अन्य रिश्ते के माध्यम से बात करते हैं । जैसे पत्नी पति को 'बाई -सा रा बीरा' या पति पत्नी को 'बाई-सा री भावज' कहकर बुलाते हैं, गीतों में ।

इस इलाके के गीतों में एक बात और आकर्षित करती है कि पति या पत्नी के लिए अलग-अलग २५० से अधिक शब्दों का प्रयोग हुआ है । शोधकर्ताओं के लिए यह शोध का विषय हो सकता है कि क्या विश्व की अन्य किसी भाषा में भी एक रिश्ते के लिए इतने शब्द हैं या अधिकतम कितने शब्द हैं ? खैर, फिलहाल कुछ उदाहरण देखें—

पति

अलबलियो, आलीजो, उमराव, कामणगारो, केसरियो बालम, गायड़मल, ईसर, गढ़पतियो, चतर, जलाल, ढोला, गुमानीड़ो, छैलभंवर, पिव, भरतार, मूंछालो, राईवर, रावतियो, पांवणां, ललबलिया, नवलबनो, भंवर, मारुजी, रसियो, राजकंवर, रायजादो, लसकरियो, सास सपूती रा पूत, साहिबां, सुगणो, नणद-रो-वीर, सायबो, सरदार इत्यादि ।

पत्नी

अरधंगी, कामणगारी, गौरी, चितहरणी, चूड़ाहाली, अलबेली, कांमणी, नखराली, चंदाबदनी, फूलवंती, मरवण, मिरगानैणी, रमणी, लाडी, सुगणीनार, पद्मणी, नार, मारु, सुवागण, स्याणी, जोड़ायत इत्यादि ।

राजस्थान के लोक गीतों की पृष्ठ भूमि पर एक

दृष्टिपात करने के पश्चात अब ऋतुओं, मेलों, त्योहारों, रजवाड़ी, श्रृंगार, पारिवारिक व अन्य गीतों की एक झांकी प्रस्तुत है—

फागुन के गीत

फागुन के गीतों की मस्ती किसे नहीं मोह लेगी ? राजस्थान के फाग का अपना अलग रंग है । लोग रात-रात भर चंग बजाते हैं, धमाल गाते हैं घूमर व गींदड़ नृत्य करते हैं । एक तो ऋतु का असर, फिर ताल, वाद्य और गीतों का नशा— एक मस्ती भरा आलम छा जाता है, बसंत से लेकर होली तक । कुछ रंग देखिए—

फाग

सारो नगर भीज रह्यो रंग में
राजा राणी संग होली खेलत है
परजा भी खेलै संग में
सारो नगर भीज रह्यो रंग में

फागुन में पुरुष जो गीत गाते हैं, उन्हें 'फाग कहते हैं, स्त्रियां जो गाती हैं उन्हें 'लूर' तथा 'गाली' । 'लूर' के उदाहरण देखें—

लूर

'चंग धीमै रे बजावण हाला
अमर रहीज्यो रै, चंग धीमै रै'
'खाई में कूकरियो बालै
मसाणां में भूत रै
लूर गाता बरजै, उणरां मरज्या पूत रे
फागण अेलौजा, हां हां फागण अेलौजा
फेर बरजै तो लगावो जूत रे
फागण अेलौजा'

गाली

गाली भी दो तरह की गायी जाती है— एक गृहिणियों द्वारा और दूसरी पेशेवर गायिकाओं द्वारा ।

गृहिणियों का रंग देखें

आला में पड़ियो सूत जी, म्है घर चाल्या
ब्यायां न लागौ भूत जी, म्है घर चाल्या
आला में पड़ियो पावजी, म्है घर चाल्या
ब्यायां नै लागौ तावजी, म्है घर चाल्या

पेशेवर द्वारा

नाथूराम-सा वाला बैठ रेल में
निकली भरी बजर सूं रै
अे जी परण्यां नै छिटकाय यार कियौ
नवी कदर सूं री, आज रंग बरसै

गवरजा के गीत

फागुन के बाद गणगौर का त्योहार 'गवरजा' के रूप में राजस्थान में बड़े उत्साह और लगन के साथ मनाया जाता है । गणगौर कन्याओं के जीवन का आदर्श है । इनके माध्यम से वे एक आदर्श पति व दीर्घ सुखदायी वैवाहिक जीवन की कामना करती है । 'खेलन द्यो गणगौर, भंवर म्हानै पूजण द्यो गणगौर' बहुत प्रसिद्ध है । अन्य गीतों में 'गबरल रुड़ो है निजारो तीखे नैणा रो, गंवर गिणणौर माता खोल कवाड़ी', 'आठ कपूर की इंडाणी' इत्यादि परंपरागत गीतों—में आते हैं । ऐसा ही एक और लोकप्रिय गीत है—

'ओ तो गहरौ गहरौ बिरमाजी रौ छावै, बालम
रसिया
गहरौ जी फूल गुलाब रो'

इसी अवसर पर घुड़लै के गीतों में

'म्हारै तेल बलैजी, घी बलै
घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै'
'जालोड़ी जल नीपजै रै वीरा बासै'
'ईट तपै चकलो तपै'
'माट म माटेली घूमै, कोठी में जुआरा ए'

गीत बड़े लोकप्रिय

—द्वारा श्री एम.सी. भंडा
चंपा महल, ५८८, एशिया विले
नयी दिल्ली-

फिल्म और राजनीति दो सर्वथा अलग-अलग क्षेत्र हैं । इनके बीच अगर कोई साम्य है, तो यह है कि दोनों क्षेत्र के लोग आम जनता के लिए कार्य करते हैं । फिल्मवाले उनका मनोरंजन करते हैं, तो राजनीति के लोग सत्ता के माध्यम से उनकी सुख-सुविधाओं का खयाल रखते हैं ।

फिल्म और राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय हस्तियां आम जनता के बीच काफी लोकप्रिय होती हैं और लोग उन्हें अपना प्रेरणास्रोत भी मानते हैं ।

राजनेता फिल्मी होते जा रहे हैं

● संजय कुमार

हाल के दिनों में फिल्मवालों की राजनीति में और राजनीतिक लोगों की फिल्मों में आवाजाही काफी बढ़ गयी है और 'नेता' और 'अभिनेता' के बीच की दूरी सिमटकर काफी हद तक कम हो गयी है ।

वर्ष १९९४ में भी इस तरह की कई घटनाएं सामने आयीं । मसलन बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने निर्देशक पी. एन. घोषाल की फिल्म 'गुदड़ी कें लाल' में मुख्य भूमिका में अभिनय करना स्वीकार किया । वहीं निर्देशक आकाश योगी की फिल्म 'महुआ' में उन्होंने मुख्यमंत्री लालू प्रसाद के चरित्र में ही अपनी संक्षिप्त उपस्थिति दर्ज करायी और अभिनेत्री मीरा माधुरी और विजय राणा के साथ शूटिंग में हिस्सा लिया ।

इसी वर्ष कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री राम कृष्ण हेगड़े ने एक कन्नड़ फिल्म 'प्रजाशक्ति' में अभिनय किया । यह फिल्म एक सामाजिक कार्यकर्ता के जुझारू जीवन पर आधारित है, जो समाज के उत्थान के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर देता है । इस चरित्र को श्री हेगड़े ने ही सिनेमाई परदे पर साकार किया है ।

इससे पूर्व भी श्री हेगड़े ने हिंसा और मसालों से भरपूर कन्नड़ फिल्म 'मरण मृदंग' में एक राजनेता की भूमिका निभायी थी, जिसकी आधी फिल्म के बाद हत्या कर दी जाती है । हेगड़े के प्रशंसकों को यह बात नागवार लगी और उन्हें कर्नाटक के कोने-कोने से हजारों पत्र, तार और फोन मिले, जिसमें यह अनुरोध किया गया था कि वे अपने शिखरपुरुष को परदे पर अंत तक जीवित देखना चाहते हैं ।

अपने इन्हीं असंख्य प्रशंसकों की भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्हें फिल्म 'प्रजाशक्ति' में एक निष्ठावान राजनेता के किरदार को अंजाम देना पड़ा ।

इसी वर्ष हिंदी सिनेमा के लोकप्रिय अभिनेता राजबब्बर समाजवादी पार्टी की ओर से उत्तर प्रदेश से राज्यसभा में चुनकर आये, वहीं अभिनेत्री जयाप्रदा ने तेलुगुदेशम की

फिल्मी दुनिया के लोगों की राजनीति में रुचि या भागीदारी की परंपरा काफी पुरानी है। हाल के दिनों में फिल्मवालों की राजनीति में और राजनीति के लोगों की फिल्मों में आवाजाही काफी बढ़ गयी है और 'नेता' और 'अभिनेता' के बीच की दूरी सिमटकर काफी हद तक कम हो गयी है।

सदस्यता स्वीकार कर विधिवत राजनीति की दुनिया में प्रवेश लिया।

राजनीति में दखलंदाजी नयी नहीं

फिल्मी दुनिया के लोगों की राजनीति में रुचि या भागीदारी की परंपरा काफी पुरानी है।

अभिनेता पृथ्वीराज कपूर हिंदी फिल्मों के प्रथम अभिनेता थे, जिन्हें सांसद बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। राष्ट्रपति ने दो टर्म के लिए राज्यसभा के मनोनीत सदस्यों की कोटि में उनका मनोनयन किया था।

१९८० में इंदिरा गांधी जब दूसरी बार सत्ता में आयीं, तो उन्होंने अभिनेत्री नरगिस दत्त को राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया था।

दक्षिण में फिल्मी सितारों की राजनीति में शुरू से ही सक्रिय भागीदारी रही है। तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री एम. जी. रामचंद्रन और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. टी. रामाराव अपने-अपने प्रदेश की सत्ता के शिखर पर पहुंचने से पूर्व सौ से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुके थे। तमिलनाडु की वर्तमान मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता भी अपने समय की तमिल फिल्मों की लोकप्रिय अभिनेत्री रह चुकी हैं। उन्होंने दो सौ से भी अधिक फिल्मों में काम किया है। कन्नड़ फिल्मों के लोकप्रिय अभिनेता डॉ. राजकुमार तथा तमिल फिल्मों के जाने-माने अभिनेता शिवाजी गणेशन, कर्नाटक तथा तमिलनाडु की राजनीति में मजबूत दखल रखते आये हैं।

बंबई के फिल्मी सितारों का चुनाव अभियानों में भाग लेने की शुरुआत छठे दशक में संपन्न चुनावों से हुई। उस चुनाव में पूर्व प्रतिरक्षामंत्री वी. के. कृष्ण मेनन बंबई से कांग्रेस के प्रत्याशी थे और पहली दफा दिल कुमार, देवानंद, नरगिस आदि सितारों ने उन समर्थन में सभाएं कीं और प्रचार कार्य किया परिणामस्वरूप मेनन भारी बहुमत से लोकस में चुनकर आये।

आपातकाल की घोषणा के बाद १९७७ हुए लोकसभा चुनावों के दौरान फिल्मकारों राजनीतिक सक्रियता अद्भुत रूप से मुखर

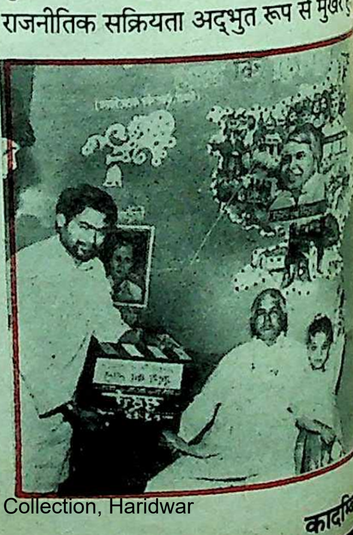

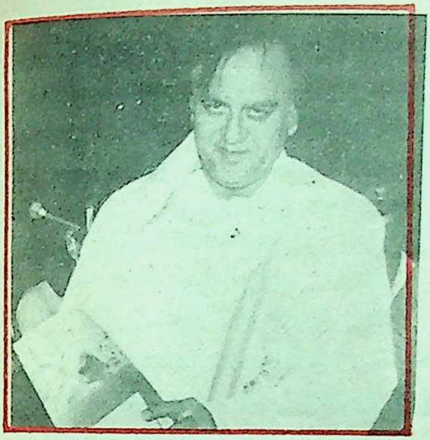

जब 'तानाशाही का अंत करो' के नारे के साथ दर्जनों फिल्मी सितारे तत्कालीन जनता पार्टी के समर्थन में सड़कों पर उतर आये । देवानंद, शत्रुघ्न सिन्हा, प्राण, डैनी, विजय आनंद, अमोल पालेकर, आत्माराम आदि फिल्मी हस्तियों ने जमकर कांग्रेस विरोधी अभियान में भाग लिया ।

जनता शासन के दुखद एवं असामयिक अवसान के बाद १९८० में हुए मध्यावधि चुनाव के समय राजनीति के रंग में बॉलीवुड पूरी तरह रंग गया । अभिनेता देवानंद के नेतृत्व में फिल्मवालों ने अपनी एक राजनीतिक पार्टी 'नेशनल पार्टी' का गठन किया और चुनाव में अपने प्रत्याशी खड़े करने की भी घोषणा की । नेशनल पार्टी के सक्रिय नेताओं में जी. पी. सिप्पी, शत्रुघ्न सिन्हा, डैनी डेंग्जोंग्पा, रणजीत आदि प्रमुख थे । किंतु पंचसितारा होटलों में हुई दो-चार बैठकों के बाद ही नेशनल पार्टी का वजूद टांय-टांय फिस्स हो गया । इस चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अभिनेता आई. एस. जौहर जरूर खड़े हुए, किंतु उनकी जमानत जब्त हो गयी ।

चुनावी मैदान में सितारे

हिंदी फिल्मी सितारों का चुनावी जंग में खड़े होने का सिलसिला १९८४ के आम चुनाव के समय शुरू हुआ । जब बहुचर्चित सुपर स्टार अमिताभ बच्चन इलाहाबाद, अभिनेता सुनील दत्त बंबई (उत्तर-पश्चिम) तथा अभिनेत्री वैजयंती माला मद्रास (दक्षिण) से कांग्रेस (इ) के प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतरे । इस चुनाव में तीनों फिल्मी सितारे विजयी हुए, और उन्होंने क्रमशः हेमवती नंदन बहुगुणा, रामजेठमलानी और बॉयलर रवि- जैसे तपेतपाये नेताओं को परास्त किया ।

बाद के दिनों में तो दर्जनों फिल्मी सितारों ने राजनीति के गलियारे में अपने पदचाप से कमोबेश अनुगूंज छोड़ी ।

१९९१ के चुनाव में रामानंद सागर के धारावाहिक 'रामायण' की 'सीता' दीपिका चिखलिया बड़ौदा और 'रावण' अरविंद चतुर्वेदी साबरकांठा से भाजपा के टिकट पर लोकसभा में निर्वाचित होकर आये । जबकि बंगला फिल्मों के अभिनेता विक्टर बनर्जी इसी पार्टी के प्रत्याशी के रूप में कलकत्ता से चुनाव हार गये । उधर अभिनेता सुनील दत्त १९८४ के बाद १९८९ और १९९१ के चुनावों में भी बंबई से सांसद निर्वाचित हुए ।

बहुचर्चित स्टारवार

८ जून १९९२ को नयी दिल्ली संसदीय सीट के लिए हुआ उप-चुनाव देश का अब तक का सबसे ग्लैमरस बहुचर्चित और रंगीन नजारों से भरा चुनाव था, जिसमें दो प्रमुख उम्मीदवारों के रूप में भाजपा के शत्रुघ्न सिन्हा और कांग्रेस (इ) के राजेश खन्ना मैदान में आमने-सामने थे। इस 'स्टारवार' को न सिर्फ भारत, वरन विदेश के मीडिया तंत्रों ने भी शिद्दत से प्रचारित-प्रसारित किया।

हालांकि दो सिनेमाई सितारों के इस चुनावी द्वंद्व के प्रति फिल्मी दुनिया ने तटस्थ रुख अपनाये रखा। सिर्फ राजेश खन्ना के पक्ष में उनकी अभिनेत्री पत्नी डिंपल कापड़िया और उनके बच्चों ने प्रचार कार्य किया।

इस बहुचर्चित चुनावी संघर्ष में राजेश खन्ना ने शत्रुघ्न सिन्हा को २८ हजार मतों से पराजित किया।

राजनीतिवाले फिल्मों में भी

कुछ पेशेवर राजनेताओं ने भी समय-समय पर फिल्मी परदे पर अपनी कलाबाजी दिखायी है। भूतपूर्व केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री तथा अपनी मसखरी के लिए मशहूर राजनेता राजनारायण ने निर्माता-निर्देशक मनु नारंग की फिल्म 'मनु द ग्रेट' में मुख्य भूमिका में अभिनय किया था। इस फिल्म में राजनारायण के अलावा राजकिरण, कोमल महुआकर, फेरिटा बॉयस-जैसे बंबइया सितारे भी मौजूद थे।

महाराष्ट्र के एक प्रमुख नेता एवं सांसद जांबुवंतराय घोटे ने भी मुख्य भूमिका में ' फिल्म में अभिनय किया था।

बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री सतीश प्र सिंह ने भी एक फिल्म 'जोगी और जवानी' अभिनय किया था, जो तकनीकी कारणों परदे पर नहीं पहुंच पायी। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री गुंडूराव ने भी कुछ फिल्मों में तौर पर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

गीतकार के रूप में दो प्रखर राजनेता फिल्मी दुनिया में पर्याप्त लोकप्रियता हासि की। मध्य प्रदेश के भूतपूर्व मंत्री विट्ठल पटेल ने कई सफल फिल्मों में गीत लिखे, जिनमें 'बॉबी' का गीत 'झूठ बोले कोव्वा काटे . . . . .' काफी लोकप्रिय हुआ

मध्य प्रदेश के ही एक अन्य भूतपूर्व मंत्री तथा सांसद बालकवि बैरागी भी एक सुशब्द गीतकार के रूप में काफी सफल साबित हुए। सुनीलदत्त की फिल्म 'रेशमा और शेरा' का उनका गीत 'तू चंदा मैं चांदनी . . . .' को कई गौरवपूर्ण पुरस्कारों से नवाजा गया।

बिहार के पूर्व मंत्री अर्जुन विक्रमशाह ने प्रकाश झा के धारावाहिक 'विद्रोह' में अंगरेज कमिश्नर टेलर की भूमिका निभायी। रॉबिन हुड छवि वाले बिहार के एक अन्य बहुचर्चित नेता आनंद मोहन और उनकी सांसद पत्नी लवली आनंद लेखक-निर्देशक संजीव बबुटा की आगामी फिल्म में मुख्य भूमिका में अभिनय कर रहे हैं। झारखंड क्षेत्र के जुझारू नेता और सांसद सूरज मंडल भी शीघ्र ही निर्देशक मनमोहन पाठक की कलात्मक फिल्म 'खीर' में रजतपट पर नमूदार होंगे।

आम धारणा यही है कि राजनीति से जुड़े लोग फिल्मों में 'फन' और 'चेंज' के लिए प्रवेश करते हैं, जबकि फिल्मी हस्तियों का राजनीति से लगाव का कारण अपनी पहुंच व हैसियत बढ़ाना और आयकर की खाताबही दुरुस्त रखना होता है।

बहरहाल राजनीतिक क्षेत्र और फिल्मी दुनिया के बीच निरंतर घटती दूरी और बढ़ती निकटता आनेवाले दिनों में क्या-क्या गुल खिलाएगी, इसकी बस रंग-बिरंगी कल्पना ही की जा सकती है।

—फ्लैट नं.-२०/४८,शास्त्रीनगर,
पटना-८०००२३ (बिहार)

गजल

हमने अब तक जो किस्से कहे हैं
उनसे ज्यादा कहीं अन कहे हैं।

न आंधी न तूफां बवंडर—
खुद ब खुद ये किनारे बहे हैं।

किस इमारत पे कीजे भरोसा,
आसमां जब यहीं पर रहे हैं।

वो हैं दरियाओं के रुख से वाकिफ,
जो हमेशा कुओं में रहे हैं।

उनके धीरज की भी हो प्रशंसा,
जिनने सदियों से प्रवचन सहे हैं।

रात-दिन की व्यथा को कथा-सी,
कह रहे शाम के कहकहे हैं।

हमको भी तो खरीदो हुजूर अब—
हम भी तो एक शायर रहे हैं।

अब चले जाएंगे हम यहां से—
हम से काबिल हैं जो आ रहे हैं।

● **विश्वम्भर तिवारी**
१० सावरकर नगर, खामला रोड नागपुर

नंदन

नंदन

नंदन

बच्चे पढ़ें
किशोर पढ़ें
माता-पिता और दादा-दादी भी
चार पीढ़ियां पढ़ती हैं नंदन को साथ-साथ

नंदन
नंदन
नंदन
नंदन
नंदन

बच्चों को
कान्वेन्ट में पढ़ाइए या सरकारी स्कूल में
उन्नति और विकास के लिए
नंदन का हर अंक उन्हें अवश्य दें

नंदन जब भी घर में आया
तरह-तरह की खुशियां लाया

एक नौका कांपती है

बंधी तट से
एक नौका कांपती है,
फिर किसी तूफान ने
संकेत में ही
पाल से
कुछ कह दिया है ।

□

है समुद्री ज्वार भीतर
मारती लहरें हिलोरें
देह से चुभते पवन के
तीर-से पावन झकोरे
फिर किसी मल्लाह-गन ने
सोनमछरी पीर वाले
जाल से
कुछ कह दिया है,
बंधी तट पर
एक नौका हांफती है ।

□ □

दूर तक दुख के ही बादल
और सुख के द्वीप ओझल
सांस में मरुस्थल दहकते
प्यास मे है कंठ बोझल
फिर किसी भटकी हुई जलधार ने
टूटती पतवार वाले
हाल से
कुछ कह दिया है,
बंधी तट पर
एक नौका भांपती है ।

□ □ □

मंत्रमुग्धा गर्जना में
मंजिलें ही खो न जाएं
स्वार्थ की जलकुंभियों में
बेल विष की बो न जाएं
फिर किसी डूबे हुए जलयान ने
अंधे सफर की
चाल से
कुछ कह दिया है,
बंधी तट पर
एक नौका झांकती है ।

□ □

● डॉ. श्याम निर्मम

ई-२८, लाजपतनगर
साहिबाबाद-२०१००५ (उ.प्र.)

देख पाया है कोई

बसंत की गहमागहमी में
बहारों के मौसम में
क्या कोई
देख पाया है
कि नवकिसलयों
और कोंपलों को
खिलाने
मुसकराने में
उन पत्तियों का हाथ था/जो
झरकर
जा गिरी थीं
पेड़ की जड़ों में ।

● मीना गुप्ता

ई. २६ आई.डी.पी.एल. कॉलोनी
बालानगर, हैदराबाद-५०००३७

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

तंतु शोध

रा. व., सीतापुर (उ. प्र.) : मैं कई वर्ष से तंबाकू खाता था परंतु पंद्रह दिन पहले छोड़ चुका हूं । मेरा मुंह केवल एक अंगुली जानेभर को खुलता है । एक डॉक्टर से पूछा तो बताया, तुम्हारे तंतु शोध हो गया है । मेरी उम्र २५ वर्ष है । स्थायी लाभवाली दवा बताएं ।

तंबाकू और अधिक पान मसाला या पान खानेवाले व्यक्तियों को कई बार क्रोनिक इनफ्लेमेशन होकर 'सबम्यूकस फाइब्रोसिस' नामक बीमारी हो जाती है । इस पर भी यदि सेवन बंद न किया जाए तो कभी-कभी कैंसर तक हो सकता है । इसलिए इसे मामूली तंतु शोध समझना तथा सोचना कि यह किसी वैद्य या डॉक्टर की दवा से ठीक हो जाएगा गलत है । आपको तुरंत दांत अथवा गले के डॉक्टर को दिखाना चाहिए तथा पूरी जांच करानी चाहिए । तंबाकू की आदत छोड़कर उसकी जगह पान अथवा पान मसाले की आदत भी उतनी ही हानिकारक है । तंबाकू भी वास्तव में नशीला पदार्थ है जो अत्यंत हानिकारक है ।

पसीना आना

वि. ब., वाराणसी : मेरी आयु २२ वर्ष है । बचपन से ही हाथ-पैर के तलवे में पसीने को लेकर परेशान हूं । मैं जब भी पढ़ाई करने बैठता हूं या कोई कार्य करता हूं तो हाथ-पैर में पसीना आ जाता है । पसीने की वजह से लिखने या हाथ में कोई वस्तु लेकर कार्य करने में कठिनाई होती है । विभिन्न चिकित्सकों की सलाह है कि मेरा हृदय कमजोर है, इस कारण ऐसा होता है । मुझे डर है कि किसी नौकरी की परीक्षा में शारीरिक अस्वस्थ घोषित न कर दिया जाऊं ।

आपको कोई हृदय रोग नहीं है । न ही हृदय रोग का यह लक्षण है । यह केवल आपकी मनोवृत्ति की वजह से है तथा कोई भी व्यक्ति किस प्रकार से अपने तनाव को प्रकट करता है यह वंशानुगत कारण है । आपको तनाव से दूर रहना सीखना चाहिए ।

जोखिमभरा काम क्यों

मं. ना. बासा गांव, बिहार: समस्या डेढ़ साल की लड़की है । चौदह महीने तक बहुत सुशील थी । चार माह से दुष्ट हो गयी है । सर्वदा घर से भागती है । जो चीज लेकर भागती है उसे वापस नहीं लाती । खाने की चीजें फेंक देती है, चाहे वे कच्ची हों या पक्की । कुछ दिन पहले साईकिल खींचकर उसने अपने ऊपर गिरा ली थी । वह जोखिमभरे काम ही क्यों करती है, अच्छा काम क्यों नहीं करती ?

आप छोटे गांव में रहकर भी कादम्बिनी में रुचि रखते हैं सराहनीय है । आपकी बेटी की समस्या कुछ तो बड़े होने की सामान्य प्रक्रिया है— यानि बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता है हर चीज को जानना चाहता है, परखता है और कभी-कभी मुंह में डालकर भी देखता है । उनके लिए यह दुनिया नयी निराली है तथा उसका जानने का यही एक तरीका है । मां-बाप के लिए भी इस समय क्या सही है, क्या गलत, आदि का ध्यान देना आवश्यक है । कुछ बच्चे बहुत अधिक परेशान करते हैं । एक मिनट के लिए भी टिककर नहीं बैठते । इसका कारण मस्तिष्क में

खराबी आना है, खासकर कोई तेज बुखार आदि के पश्चात । दवा देकर ऐसी स्थिति पर काबू पाना आजकल संभव है ।

पागलपन का डर

अ. च. गिरिडीह, बिहार: २५ वर्ष का अविवाहित और सरकारी नौकर हूं । सात साल पहले दो बार टायफायड हुआ, तत्पश्चात शारीरिक और मानसिक परेशानी होने लगी । फिर सही हो गया । ४-५ वर्ष पूर्व पड़ोस के कुत्ते ने काटा । मैंने झाड़-फूंक कराया और टीके के लिए अस्पताल गया परंतु उन्होंने कुत्ते पर नज़र रखने को कहा । कुत्ता अभी तक जिंदा है, परंतु मेरे मन में पागलपन का डर बैठ गया है । कुछ भी अच्छा नहीं लगता । हर समय यही डर मुझे अंदर से खोखला कर रहा है ।

आपमें कई प्रकार के भ्रम और गलत धारणाएं हैं । कुत्ते के काटने से पागलपन नहीं होता परंतु 'रेबीज' एक बीमारी है जो आवारा कुत्तों में होती है । उसे पागल कुत्रा कहते हैं । परंतु मनुष्य की पागलपन की बीमारी इस कारण नहीं होती । 'रेबीज' की-बीमारीवाला कुत्ता दस दिन में मर जाता है तथा जिसे काटता है वह भी कुछ दिन में मर जाता है । चूंकि कुत्ता अभी भी जिंदा है, उसको रेबीज की बीमारी नहीं है, न ही आपको उससे डरने की आवश्यकता है ।

आपके पत्र से स्पष्ट है कि पागलपन नहीं है । आपमें 'डिप्रेशन' और डर अवश्य है । डिप्रेशन के लिए दवा कीजिए । डर के लिए पहले आपको कुत्ते के पिल्लों से फिर पालतू कुत्तों आदि से जितना हो सके मिलना-जुलना चाहिए । जिनके घर में कुत्ता हो वहां जाकर कुत्ते से मिलें । इससे कुत्ते के डर और डिप्रेशन से आप जल्द ही छुटकारा पा जाएंगे ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । —संपादक

सपने और सच्चाई में अंतर

त्रि. कौ., चित्तरंजन (बंगाल) समस्या बड़ी विचित्र है । नौ वर्ष से ऐसे सपने देखती हूं, जो बाद में जाकर सच हो जाया करते हैं । जीवन, मृत्यु, विवाह आदि सभी कुछ देख चुकी होती हूं । सपनों को अक्षरशः सत्य देख, मारे दहशत के रूह कांप उठती है । उदाहरण के तौर पर मैंने अपनी भाभी के पहले से ही उन्हीं कपड़ें, गहनों में देख रखा था हालांकि मैं शादी में भी नहीं गयी थी । अब समस्या है कि सपने और सचाई में अंतर करने में कठिनाई होती है । काम में मन नहीं लगता । सपने इतने आते हैं कि लगता है कि रातभर जागी हूं तथा थकावट महसूस होती है । क्या करूं ? हंसी का पात्र भी न बनूं ? कोई विश्वास नहीं करता । मुझे भी यकीन नहीं आता परंतु जब स्वयं को झेलना पड़ता है तो लगता है क्या करूं ?

कुछ लोगों को ऐसा महसूस होता है कि जो भी घटना वह उस समय देख रहे हैं, वह पहले भी उनके साथ हो चुकी है— इसको 'डी जा वु फिलोमिनन) कहते हैं तथा इसका संबंध (मस्तिष्क के टेंपरल लॉब्स) से होता है । इसकी जांच और इलाज संभव है । आप जो कह रही हैं, यह देखना आवश्यक है कि कहीं यह रोग तो नहीं । हां, यदि सचमुच ही आपको पहले से सपने आ जाते हैं तो इस तथ्य को विज्ञान की कसौटी पर परखना आवश्यक है । आप चाहें तो जांच के लिए हमसे कादम्बिनी के संपादक द्वारा मिल सकती हैं । इस प्रकार की क्षमता को परा मनोविज्ञान कहा जाता है । ●

व्यंग्य

दो व्यक्ति आपस में बात कर रहे थे । पहले ने कहा, ''पिछले सप्ताह मेरी पत्नी की आंख में बालू का एक कण समा गया था । मुझे उसे डॉक्टर के पास ले जाना पड़ा और वहां २५ रु. खर्च करने पड़े ।''

''यह तो कुछ भी नहीं हुआ । गत सप्ताह मेरी पत्नी की आंख में सोने की नेकलेस समा गयी और मुझे ५००० रुपये देने पड़े ।''

* * *

''न्यायाधीश महोदय, मेरी पत्नी विवाह के समय से ही मुझ पर चीजें फेंकती रहती है ।''

''विवाह कब हुआ था ?''

''छह वर्ष हो गये हैं ।''

''तो आज तक तुमने इसकी शिकायत क्यों नहीं की ?''

''जी, पहली बार आज इसका निशाना ठीक बैठा है और मैं शिकायत लेकर आया हूं ।''

* * *

पति (शिकायत के स्वर में), ''हर द्वार खटखटानेवाले भिखमंगे को खाना खिलाने से फायदा । इससे कुछ बनता तो है नहीं ।''

''मैं जानती हूं, लेकिन मुझे यह देखकर बेहद संतोष होता है कि आखिर कोई तो मेरे हाथ का खाना बगैर उसकी बुराई किये खा रहा है ।''

* * *

बशेशरनाथ ने दफ्तर से घर पर फोन किया और बोला, ''प्रिय, आज रात के लिए मैंने दो मित्रों को भोजन के लिए निमंत्रण दिया है ।''

उत्तर आया, ''कोई बात नहीं । अतिथियों के लिए भोजन तैयार कर लूंगी ।''

बशेशरनाथ अचंभे में हक्का-बक्का रह ग क्योंकि श्रीमती बशेशरनाथ को मेहमान ना चिढ़ है ? कुछ सोचकर पुनः फोन में बोला, ''क्षमा कीजिएगा, लगता है गलत नंबर मिल है ।''

* * *

पत्नी ने प्रातः उठकर देखा और पति बशेशरनाथ से पूछा, ''क्या रात को आंधी- और वर्षा हुई ?''

बशेशरनाथ बोले, ''पूछो मत, रात तो इ तूफान-आंधी रही कि क्या बताऊं ।'' पत्नी झुंझलाकर बोली, ''तब मुझे उठा क्यों नहीं तुम्हें तो पता है कि आंधी-तूफान में मैं सो नहीं पाती ।''

* * *

पत्नी उबल रही थी, ''मैं तो शरम के मारे गरदन ऊपर नहीं कर सकती । मां हमारे मका किराया देती हैं । मेरी मौसी कपड़े देती हैं और बहन हमारे खाने-पीने का सामान भेजती हैं । हमारी स्थिति सुधर नहीं सकती ?''

पति बोले, ''स्थिति सुधरने में देर ही क्या लगेगी ? तुम्हें शरम तो आनी ही चाहिए कि दो-दो चाचा हैं जो एक दमड़ी भी नहीं भेजते ।

* * *

दो मित्र विवाह संबंधी चर्चा कर रहे थे । ए बोला, ''तुम सरला से केवल उसके धन के विवाह करना चाहते हो, यह अच्छी बात नहीं है

दूसरे ने उत्तर दिया, ''लेकिन यह तो सोचो कितना बुरा होगा अगर सरला केवल अपने लिए आजन्म कुंवारी रह गयी ।

* * *

प्रस्तुति : कु. सुनीता वर्मा

तरंग

महानगर

कीचड़ में धंसा हुआ
दुर्गंध से सना हुआ
अंधकार की ओढ़नी ओढ़
कूड़ों में बड़ा हुआ
ये महानगर अपना

दुष्कर्म में धंसा हुआ
राजनीति से सना हुआ
स्वार्थ की ओढ़नी ओढ़
कुरसी में बड़ा हुआ
ये महानगर अपना

रिश्वत में धंसा हुआ
हिंसा से सना हुआ
लूटमार की ओढ़नी ओढ़
चीखों में बड़ा हुआ
ये महानगर अपना

—रीतू गोयल

एक

सही
दर्द का अहसास
कहां
हो पाता है
बिना दर्द हुए ?

दो

उसने मुझसे कहा,
''किसी एक फूल का नाम लो''
मैंने कहा,
''क्या फरक पड़ता है
किसी भी फूल का
नाम लूं—
तो सीने से चुभता हुआ
उठता है दर्द ।''

तीन

जब दर्द था
तो लगता था
दर्द ही दर्द है—
और
आज दर्द नहीं है
तो
कितना खाली-खाली
लगता है ।

—ब्रहम देव

पतिव्रता

पति ने पत्नी को बताया—
''कल रात मुझे सपना आया
कि मैं विधुर हो गया हूं,''
पत्नी ने पति की बात टटोली
फिर वो भी कुछ यूं बोली—
बस कीजिए
''मैं आगे और नहीं सुन पाऊंगी,
इससे पहले कि आप विधुर हों
मैं विधवा हो जाऊंगी ।''

—दीपक गुप्ता

यह महीना और आपका

भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास के आरंभ में नवीन कार्यों में भाग्यदायी सफलता मिलेगी । आजीविका की दिशा में पदोन्नति इच्छित पद-प्रतिष्ठा का योग होगा । आमोद-प्रमोद की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से चिंता होगी । पारिवारिक कार्यों में धन व्यय होगा । मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी । व्यर्थ यात्राओं का योग उपस्थित होगा ।

वृषभ : आत्मविश्वास तथा साहसिक प्रयासों से प्रतिकूल परिस्थितियों पर नियंत्रण होगा । पारिवारिक वातावरण खिन्नतापूर्ण होगा । व्यर्थ संभाषण से पीड़ा होगी । उच्च अधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु प्रक्ष का पराभव होगा । नवीन योजनाओं पर व्यय की अधिकता होगी । स्वास्थ्य संबंधी सतर्कता हितकर होगी । आध्यात्मिक सत्संग से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी । नवीन मित्रों से सावधानी रखें ।

मिथुन : आजीविका की दिशा में वांछित कार्य की पूर्ति होगी । उच्च अधिकारियों के सहयोग से उत्साह में वृद्धि होगी । न्यायालयीन अथवा संपत्ति के कार्य की पूर्ति होगी । वाहनादि से व्यर्थ कष्ट का सामना करना होगा । पारि वातावरण में बाह्य हस्तक्षेप से विषमता का उदय होगा । जीवनसाथी का सहयोग सम निदान में सहायक होगा ।

कर्क : पारिवारिक कार्यों की अधिकता हो नवीन दायित्वों की अधिकता से उत्साह में होगी । प्रियजनों के सहयोग से लंबित कार्य सफलता मिलेगी । जोखिमपूर्ण कार्यों से धनलाभ होगा । राजकीय कार्यों में शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्रों से सावधानी रखें । प्रवास में सतर्कता रखें । अपरिचितों पर विश्वास हानि होगा । संपत्ति कार्यों की पूर्ति के अनुकूल अवसरों का उदय होगा ।

सिंह : प्रतिकूल परिस्थितियों में धैर्य तथा से सफलता मिलेगी, न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा । पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । व्यय में नियंत्रण होगा, उदर वि अथवा रक्तचाप संबंधी पीड़ा होगी । मित्रों के सहयोग से लंबित समस्याओं का समाधान होगा, शत्रु पक्ष के षड्यंत्रों से सावधानी रखें परोपकारी कार्यों में जोखिम लेना हितकर न है । आकस्मिक धनलाभ से वांछित कार्यों की पूर्ति होगी । प्रवास में विशिष्ट सफलता का होगा ।

कन्या : आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी भौतिक उपलब्धियों के उन्नत अवसरों का उ होगा । न्यायालयीन कार्य में विलंब होगा । आजीविका की दिशा में वांछित सफलता मिलेगी ।

ग्रह स्थिति : सूर्य १३ फरवरी से कुंभ में, मंगल वक्री ९ फरवरी से कर्क में, बुध मकर में शुक्र वृश्चिक में, शुक्र २५ से मकर में, शनि कुंभ में, राहू तुला में, केतु मेष में, हर्षल मकर में, नैपच्यून ३ से मकर में, प्लेटो वृश्चिक में, परिभ्रमण करेंगे ।

तुला : आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी । आय के नवीन संसाधनों का उदय होगा । आमोद-प्रमोद की अधिकता से अस्वस्थता होगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी । भवन अथवा वाहन संबंधी कार्यपूर्ति होगी । धार्मिक कार्यों से मान-सम्मान की प्राप्ति होगी ।

वृश्चिक : आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन अथवा पदोन्नति से उत्साह में वृद्धि होगी । पारिवारिक वातावरण में खिन्नता होगी । मित्रों के सहयोग से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी । न्यायालयीन अथवा संपत्ति के कार्यों में व्यवधान होंगे । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर हानि पहुंचाने का प्रयास करेगा ।

धनुः मास उपलब्धिपूर्ण होगा । शत्रु-पक्ष को प्रयासों में विफलता मिलेगी । स्वजनों के सहयोग से आर्थिक कार्यों की पूर्ति होगी । नवीन संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय होगा । परोपकारी कार्यों की अधिकता होगी । दिनचर्या की अनियमितता से अस्वस्थता का उदय होगा ।

मकर : मास में नवीन स्थान की यात्रा होगी । निकटजनों के सहयोग से आर्थिक योजनाओं में सफलता मिलेगी । प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों की अधिकता होगी । व्ययों की अधिकता से चिंता होगी । मासांत में सुखद समाचार मिलेगा । संपत्ति अथवा विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा ।

कुंभ : नवीन उत्तरदायित्व एवं कार्यों की अधिकता से प्रसन्नता होगी । व्यावसायिक कार्यों में राजकीय सहयोग मिलेगा । स्वास्थ्य में अस्थिरता से कार्यों में अवरोध उपस्थित होंगे । शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता चिंतनीय रहेगी । जोखिमपूर्ण कार्यों से धन लाभ होगा । न्यायालयीन कार्यों में विलंब होगा । पारिवारिक कार्यों में व्ययाधिक्य होगा ।

मीन : आत्मविश्वास तथा परिश्रम से प्रतिकूल स्थितियों में विजय मिलेगी । प्रियजनों से क्लेश होगा । आर्थिक एवं व्यावसायिक अवरोधों का शमन होगा । आय में वृद्धि होगी । प्रवास की अधिकता से अस्वस्थता होगी । आध्यात्मिक कार्यों से आत्मबल बढ़ेगा । शत्रु-पक्ष से सावधानी हितकर होगी ।

— १२/४, पुराना सुभाष नगर गोविंदपुरा,
भोपाल (मध्य प्रदेश)

पर्व और त्योहार

३. फरवरी वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, ४ वसंत पंचमी, श्रीपंचमी, सरस्वती पूजा, वसंतोत्सव
५. शीतलाषष्ठी, ६ अचला सप्तमी, श्री माधवाचार्य जयंती,
७. दुर्गाष्टमी, ९ महानंदा नवमी, श्री हरसू ब्रह्मदेव पुण्य तिथि,
११. जया एकादशी, १२. प्रदोष, १४. व्रत की पूर्णिमा, १५ स्नानदान माघी पूर्णिमा, १८ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, २२ श्री सीताष्टमी जानकी जयंती, २३. गुरु रामदास जयंती, २५. विजया एकादशी, २७. सोम प्रदोष, महा शिवरात्रि व्रत, महानिशीथकाल रात्रि २३.४५ से २४.३५ तक, श्री वैद्यनाथ जयंती, २८ शबे कदर ।

ज्योतिष : समस्या और समाधान

—अजय भाम्बी

विष्णुकान्त खण्डेलवाल, अजमेर

प्रश्न : संसद सदस्य बन पाऊंगा ?

उत्तर : राजयोग तो है लेकिन विस्तृत कुंडली देखने से ही पता चलेगा कि यह कब घटित होगा ।

दिवाकर प्रताप सिंह, इलाहाबाद

प्रश्न : स्थान परिवर्तन कब ?

उत्तर : अप्रैल के बाद ।

विश्वबन्धु, बंबई

प्रश्न : बीमारी से छुटकारा कब मिलेगा ? क्या कोई रत्न सहायक होगा ?

उत्तर : नीलम धारण करें, स्वास्थ्य लाभ मिलेगा ।

लक्ष्मी लाल पालीवाल, सूरत

प्रश्न : स्वयं का व्यापार कब तक ?

उत्तर : इसी वर्ष ।

डॉ. ओउम कान्त सिंह, फीरोजाबाद

प्रश्न : नर्सिंग होम कब चालू हो सकेगा ?

उत्तर : जून के बाद चालू करना उचित रहेगा ।

रत्ना भारती, गाजियाबाद

प्रश्न : विवाह कब तक ?

उत्तर : इस वर्ष विवाह होने की संभावना है ।

कदम सिंह, जालंधर

प्रश्न : जालंधर से ग्वालियर के लिए ट्रांसफर कब तक होगा ?

उत्तर : नवम्बर '९५ में ।

कैलाश, नयी दिल्ली

प्रश्न : क्या कभी विदेश जा सकेंगे ?

उत्तर : १९९६ में संभावना है ।

जयन्त कुमार, नान्धा (रेवाड़ी)

प्रश्न : मेडिकल में प्रवेश कब तक संभव ?

उत्तर : निश्चिंत रहें और प्रयास बढ़ायें । सफलता मिलेगी ।

राकेश साहू, जबलपुर

प्रश्न : साहित्य में सफलता कब मिलेगी ? क्या पहनें ?

उत्तर : सफलता तो मिलेगी, परंतु अभी इंतजार करें ।

ओमप्रकाश गुप्ता, उन्नाव

प्रश्न : दो पुत्रियां हैं, पुत्र कब तक होगा ?

उत्तर : ज्योतिष की मान्यता है कि कन्यादान से बड़ा कोई दान नहीं होता । इस जन्म में कन्यादान अगले जन्म के लिए पुण्यों का संचय करना है ।

ज्योति चावला, सूरतगढ़

प्रश्न : क्या पुनर्विवाह का योग है ? कब तक ? उपाय क्या हो ?

उत्तर : पुनर्विवाह अवश्य होगा । हीरा धारण करें ।

आलोक, कलकत्ता

प्रश्न : तलाक होगा या नहीं ? होगा तो कब तक ?

उत्तर : तलाक होने की संभावना १९९६ में है।

मेहर सिंह, हिसार

प्रश्न : मकान कब बनेगा ?

उत्तर : अगले दो वर्ष में मकान बन जाएगा।

राधा मोहन बरुआ, ग्वालियर

प्रश्न : पी. एम. टी. में चयन कब तक, रत्न सुझायें ?

उत्तर : अगले साल अधिक संभावना है ।

अरुण करः, नयी दिल्ली

प्रश्न : पिछले ७ वर्षों से नौकरी व आर्थिक संकट है। क्या कुंडली में कालसर्प योग इसका कारण है ? उपाय बतायें ?

उत्तर : कालसर्प इसका कारण नहीं है और दूसरा राहू-केतु के घेरे में ग्रह हों तो तब अधिक घातक होता है। आपके केस में उल्टा है। केतु और राहू के घेरे में है। १९९६ से दिन अच्छे हैं।

शशि अरोड़ा, फरीदाबाद

प्रश्न : रोग से मुक्ति कब ? विदेश यात्रा का योग कब ?

उत्तर : विदेश यात्रा १९९६ में और रोग से राहत १९९५ मार्च से प्रारंभ होगी।

सुनिता केशरी, जमुई

प्रश्न : पति के स्वास्थ्य में सुधार, साधारण उपाय ?

उत्तर : जून '९५ के बाद पति के स्वास्थ्य में सुधार होगा। संभव हो तो बृहस्पतिवार का उपवास कर लें।

हरिदत्त पंत, सूफी भगवानपुर (नैनीताल)

प्रश्न : क्या अधूरा घर पूरा हो सकेगा ? कब तक ?

उत्तर : पूरा तो अवश्य होगा लेकिन थोड़ा इंतजार करें।

शिप्रा शर्मा, मेरठ

प्रश्न : विवाह कब ? रत्न बतायें ?

उत्तर : डेढ़ वर्ष के भीतर।

मालाराम सुखाड़िया, जोधपुर

प्रश्न : अधिकारी पद में प्रमोशन कब होगा ?

उत्तर : जल्द होने की संभावना है।

—'नक्षत्र-निकेत'
४०६, ढाका चेम्बर-।
२०६८-६९/३८, नाईवाला
करोलबाग,
नयी दिल्ली-५

१५५

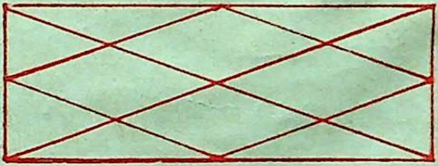

नाम --

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख -------------- महीना -------------- सन ---------------

जन्म-स्थान--

जन्म-समय --

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण--

पता --

आपका एक प्रश्न --

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें --

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि १५५, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० फरवरी, १९९५

आस्था के आयाम

भारत की प्रथम महिला तबलावादक-श्रीमती आबान मिस्त्री

वह कत्थक नृत्यांगना बनना चाहती थी, इसी संकल्प के लिए वह मात्र ११ वर्ष की आयु में कत्थक नृत्य का अभ्यास करने लगी । नृत्य में संगीत के सुरीले समन्वय के लिए वे ८ वर्ष की आयु से अपनी मौसी से गायन की शिक्षा भी ले रही थी । उस बालिका के गायन और नृत्य में लगन और कड़े परिश्रम को देखकर गुरुजन उसे विश्व विख्यात कलाकार बनाना चाहते थे । तभी एक घटना घटी, जिसने उसका जीवन ही बदल दिया । वह बालिका बीमार पड़ी और उसके पेट का ऑपरेशन हुआ, तब उसके डॉक्टरों ने कत्थक नृत्य छोड़ने की सलाह दी और वह निराश हो गयी ।

ऐसे निराशामय दौर में उस बालिका के गुरु पं. केकी एस जिजिना ने हौसला बढ़ाते हुए कहा, कि "तुम्हें घबराना नहीं चाहिए, नृत्य में तुम जिस मुकाम पर पहुंचना चाहती थी, उसी मुकाम पर मैं तुम्हें तबलावादन के क्षेत्र में पहुंचाऊंगा ।" गुरु के शब्दों से उस बालिका के जीवन में नवजीवन का संचार हुआ और उस बालिका ने मात्र १४ वर्ष की उम्र में तबले कठिन साज को सीखना शुरू किया ।

मात्र १५ वर्ष की उम्र से ही वह बालि तबलावादन के कार्यक्रम प्रस्तुत करने लगं समूचे संगीत जगत में आश्चर्य की लहर दौ गयी कि एक बालिका तबले के गणित पर सहज अधिकार रखती है । एक कार्यक्रम मे तबलानवाज उस्ताद अमीर हुसैन खां ने इस बालिका को देखा तो वे भी पं. जिजिना से तबला सिखाने की इच्छा व्यक्त कर बैठे, अमीर हुसैन खां ने उन्हें तबले के सभी प्र घरानों की बारीकियां सिखायीं और वह व आज से तीन दशक पहले ही संगीत जगत प्रथम महिला तबलावादक के रूप में डॉ. श्रीमती आबान ई. मिस्त्री प्रतिष्ठित हुईं ।

डॉ. श्रीमती आबान ई. मिस्त्री ने तबलावादन के गणित पर अधिकार ही स्थ न किया, बल्कि अपने शोध कार्य से लय त के क्षेत्र को समृद्ध बनाया । वे देश के तिह बजानेवाले गिने-चुने संगीतज्ञों में शुमार की जाती हैं । उनका एकल तबला वादन खास महत्त्व रखता है । वे चक्रदार, परमाईशी, कमाली को नये अंदाज में प्रस्तुत करती हैं ।

तबलावादन के सफर में डॉ. आबान ई. मिस्त्री ने १९७४ में 'ताल त्रिताल' ग्रामोफोन रेकॉर्ड जारी किया था । यह किसी महिला तबलावादक का प्रथम रेकॉर्ड था ।

आज देश में तबले पर तिहाई बजानेवा बहुत कम हैं । डॉ. आमान मिस्त्री उन गिने तबलावादकों में से एक हैं जो तबले की ग पर पूर्ण अधिकार रखती हैं साथ ही साथ परमाईशी, चक्रदार, कमाली भी नये अंदा

प्रस्तुत करती हैं ।

डॉ. श्रीमती आबान ई. मिस्त्री ने तबलावादन के साथ-साथ गायन, सितार पर साधना की है । उन्होंने पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के शिष्य पं. लक्ष्मण राव बोडस से २७ वर्ष तक गायन की शिक्षा ली । पं. केके एस. जिजिना से सितार की भी शिक्षा प्राप्त की । डॉ. आबान गायन में संगीत प्रवीण, संगीत अलंकार तथा सितार में संगीत विशारद एवं तबले पर संगीत प्रवीण, संगीताचार्य (पी-एच. डी.) हैं । वे हिंदी व संस्कृत में एम. ए. कर चुकी हैं ।

भारत की प्रथम महिला तबलावादक डॉ. श्रीमती आबान ई. मिस्त्री ने संगीत व साहित्य पर व्यापक अधिकार रखते हुए भी तबले पर सर्वाधिक जोर दिया । आज तबला ही उनका प्रिय साज बन चुका है । उन्होंने मात्र १६ वर्ष की आयु से तबले पर कार्यक्रम शुरू किया था । तब से वे देश-विदेश में सैकड़ों कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुकी हैं । १९८३-८४ में इंगलैंड, फ्रांस, जरमनी, नीदरलैंड, रोम, स्विट्ज़रलैंड आदि देशों में अपने कार्यक्रमों से इस भारतीय साज को प्रतिष्ठा दिलायी । १९८६ में वे दुबई, मस्कत, बहरीन भी कार्यक्रम प्रस्तुत करने गयी ।

संगीत जगत में अपार सफलता के बावजूद आबान मिस्त्री की साधना जारी है । १९७५ से

१९८३ तक उन्होंने देशभर में भ्रमण कर अपना शोध ग्रंथ, 'पखावज और तबलावादन के घराने एवं परंपराएं' तैयार किया, जो आज संगीत के क्षेत्र में संग्रहणीय ग्रंथ बन गया है । यह ग्रंथ कई विश्वविद्यालयों में संदर्भ ग्रंथ के रूप में सम्मिलित है । आजकल वे पखावज और तबला के कलाकारों के जीवन चरित्र एवं उनके योगदान व घरानेदार बंदिशों पर शोध कार्य कर रही हैं । आजकल वे संगीत के प्रचार के लिए 'स्वर साधना समिति' चला रही हैं जो सैकड़ों प्रोग्राम कर चुकी है ।

—एम. अशफाक कादरी
मोहल्ला चूनगरान,
बीकानेर ३३४००५ (राज.)

चांदी का कलश

दो चांदी के कलश जयपुर के राजघराने के निजी संग्रहालय सिटी पैलेस में स्थित हैं । इनका निर्माण जयपुर के तत्कालीन महाराजा श्री माधोसिंह ने विक्रम संवत १९५५ में पौष सुदि दूज को शुरू करवाया था ।

१०८ सेंटीमीटर ऊंचाई के इन कलशों की भराव क्षमता ८१८२ लीटर तथा प्रत्येक का वजन २४२.७ किलोग्राम है । इन्हें तत्कालीन कारीगर श्री गोविंद नारायण ने सात वर्ष में तैयार किया था ।

— रामअवतार बैरवा

आपका बेटा भी ऐसा हो सकता है!

अपनाइए चिलड्रन्स कॉलेज एंड कैरियर फंड

यू टी आई के चिलड्रन्स कॉलेज एंड कैरियर फंड में निवेश, पढ़ाई-लिखाई का बढ़ता हुआ खर्च भी जुटाए, और आपके बच्चे के कैरियर के सपनों को सच बनाए.

विशिष्टताएं :

● खुली अवधि-वाली योजना. ● 15 वर्ष की उम्र तक के बच्चों के लिए विशेष योजना ● प्रति. यूनिट रु. 10/- न्यूनतम निवेश राशि रु. 2000/- और इसके बाद रु. 1000/- के गुणकों में ● इस फंड से होने वाली वृद्धि बोनस यूनिट के रूप में समय-समय पर निवेशकर्ता के खाते में जमा की जाएगी. ● वर्ष में दो बार आंशिक रकम निकालने की सुविधा- 18 वर्ष की उम्र में 50% और अतिरिक्त 10% हर वर्ष, 23 वर्ष की उम्र तक. ● दूसरे बच्चे को नामांकित करने की सुविधा.

CHILDREN'S COLLEGE
AND CAREER FUND
UNIT PLAN-93
क्योंकि आपके बच्चे के भविष्य की जिम्मेदारी है आप पर

भारतीय
यूनिट ट्रस्ट
आपके बेहतर कल के लिए

म्युच्युअल फंड और सिक्योरिटी निवेश के साथ बाज़ार का जोखिम होता है तथा सिक्योरिटी बाजार को प्रभावित करनेवाले घटकों एवं शक्तियों के अनुसार योजनाओं के एन ए वी घट-बढ़ सकते हैं, पिछला कार्यनिष्पादन अनिवार्यतः भावी परिणामों का द्योतक नहीं है. चिल्ड्रन्स कॉलेज एंड कैरियर फंड केवल योजना का नाम है यह किसी भी रूप में योजना की गुणवत्ता, उसके भविष्य की संभावनाओं या आमदनी की ओर इंगित नहीं करता है. निवेश करने से पूर्व ऑफर डॉक्यूमेंट पढ़ने की कृपा करें

मुख्य कार्यालय : बम्बई. आंचलिक कार्यालय : जीवन भारती, 13वीं मंजिल, टावर-II, 124, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001. **शाखा कार्यालय :** ☐ **नई दिल्ली :** तेज बिल्डिंग, 8-बी, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, फोन : 3318638, 3319786. ☐ **जयपुर :** आनंद भवन, तीसरा तल, संसार चंद्र रोड, फोन : 365212. ☐ **कानपुर :** 16/79 ई, सिविल लाईन्स, फोन : 311858. ☐ **लुधियाना :** सोहन पैलेस, 455, माल रोड, फोन : 400373 ☐ **लखनऊ :** रिजैंसी प्लाज़ा बिल्डिंग, 5, पार्क रोड, फोन : 232501. ☐ **चंडीगढ़ :** जीवन प्रकाश, सैक्टर 17-बी, फोन : 543683. ☐ **शिमला :** 3, माल रोड, फोन : 4203. ☐ **आगरा :** सी-ब्लाक, जीवन प्रकाश, संजय प्लेस, महात्मा गांधी रोड, फोन : 350551. ☐ **इलाहाबाद :** यूनाईटेड टावर्स, 53, लीडर रोड, फोन : 53849. ☐ **वाराणसी :** पहला तल, डा-58/2ए-1, भवानी मार्किट, रथयात्रा, फोन : 63970. ☐ **देहरादून :** दूसरा तल, 59/3 राजपुर रोड, फोन : 26720. ☐ **यूटीआई संग्रहण केन्द्र फरीदाबाद :** बी-614, नेहरू ग्राउन्ड, एनआईटी, फरीदाबाद-121001.

☐ bdkhanna/4613-H

प्रवेश

असंतुलन

जिंदगी की कशमकश
आदमी मर रहा है,
हर रोज...
मृत्यु को मात्र बहाना चाहिए,
वो भी वैसी मृत्यु के लिए
जिसे सर्वसम्मति से पारित करके
मृत घोषित किया जाता है
पर, वैसी मृत्यु,
जहां हर क्षण, हर पल,
मृत होने का अहसास हो,
परंतु, प्रत्यक्ष में जिंदा
शायद, जीवित लाश
इसके लिए, किसी बहाने
की जरूरत नहीं,
शायद नियति
कभी सोचा है,
एक आदमी,
क्यूं मर रहा है हर क्षण
शायद इसलिए,
कि, कुछ लोगों ने,
छोड़ दी है, जीने की कोशिश,
और कुछ ने
प्रकृति के अस्तित्व तक,
जीने की ठान ली है...
शायद, यह असंतुलन ही,
जीने नहीं दे रहा,
सहजता से !

—रश्मि

शिक्षा : स्नातकोत्तर (विज्ञान)

पता : फ्लैट नं. २ 'सीटाडेल', चारकोप
कांदिवली (पश्चिम) बंबई—४०००६७

आत्मकथ्य : जो कुछ भी दिल की गहराइयों में महसूस करती हूं शब्दों का रूप लेकर कविताओं में ढल जाती है ।

तुमसे मिलते ही

तुमसे
मिलते ही
होठों का मुहल्ला
रंगीन हो जाता है
आंखों का समुद्र
और गहरा हो जाता है
जीवद्रव्य में
संवेदनाएं
उमड़ कर
मस्तिष्क के आनंद प्रकोष्ठ की ओर
प्रवाहित होने लगती हैं
सारा जीवन
मेला बन जाता है
और हरेक वस्तु
उसमें शामिल होने
चल पड़ती है
जैसे पंक्ति में
दाना ढोती चींटियां

—शुभेश कर्ण 'आकाश'

शिक्षा : एम. एस-सी. (अध्ययनरत)

आत्मकथ्य : स्वप्न और यथार्थ : सत्य और सौंदर्य ; अनुभूति और क्षण : भय और प्यार : का दबाव झेलने में जब असमर्थ होता हूं, तो कविता जन्म लेती है ।

पता : द्वारा श्री गया प्रसाद कर्ण
नेशनल कानवेंट के निकट ; वार्ड नं.-१२,
गंगजला : सहरसा-८५२२०१

वृक्ष

वृक्ष,
तुम ऐसे क्यों हो ?
वह शाख
जो अनजाने ही
तूफान से डर गई
हवा के जोर से
नीचे गिर गई
नहीं लगाते उसे
आलिंगन से भर गले
पर क्यों तब देते हो
सहारा उसे
वह लता
जो अनजाने ही
तुम्हारे करीब
उग आई,
उठाकर उसे
बुलंदियों तक
पहुंचाने लगते हो

—रेणुका रावत

शिक्षा : बी. एस.सी.

आत्मकथ्य : किसी की भी पीड़ा से असंबद्ध नहीं रह पाती और उन भावों को कागज पर उतार लेती हूं ।

पता : प्रोडक्शन बी. ई. एल.
कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल-२४६१४९

हाथों में रोटी नहीं फफोले हैं

जिन हाथों ने स्वयं को कभी आराम नहीं दिया ।
लगे हैं दिन-रात नव निर्माण में,
और कर्त्तव्य-निष्ठा से तन्मय
करते हैं—अपना कर्म—श्रम का ।
वे देते हैं हमें रोटी
बनकर किसान—बनकर मजदूर कहीं,
वे हाथ, तोड़ते हुए पत्थर दब जाते हैं,
कभी—आलीशान उठनेवाली हवेली तले ।
वे बुनते हैं सपने, कपड़े बुनते-बुनते

लेकिन वे रह जाते है नंगे ।
इन श्रमिक हाथों की
कहानी तो सब जानते हैं,
पर पीड़ा कब पहचानते हैं ?
वे चाहते हैं बस दो वक्त की रोटी—
दुर्भाग्य है,
उन हाथों में रोटी नहीं फफोले हैं
और निवालों के लिए—
हमारे आगे मुंह खोले हैं ।

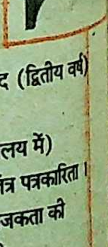

— शिवानंद सोनी

शिक्षा : हायर सैकंडरी, वेदविशारद (द्वितीय वर्ष) पत्रकारिता डिप्लोमा ।

संप्रति : न. पा. होशंगाबाद (वाचनालय में) लायब्रेरियन (दैनिक वेतन) तथा स्वतंत्र पत्रकारिता ।

आत्मकथ्य : समाज में फैलती अराजकता की विषैली-हवा,, निर्दोषों की हत्या । यही सब-कुछ देख-सुन मन की पीड़ा कलम के माध्यम से कागज पर प्रकट होती है ।

पता : जुमेराती मसजिद गली, होशंगाबाद-४६१००१

बदलता परिवेश

कहकहों में
उल्लास-परिहास नहीं
चिर खामोशी है
मुसकराहट
महज औपचारिकता
अंतात्मा से प्रकाश्य
सहज-सुलभ कांति नहीं
जीवन
स्वजनों हेतु
समर्पित
परोपकार हेतु नहीं
हां । यही स्वरूप है
आज के बदलते
परिवेश का ।

—**भावना**

शिक्षा : बी. एस-सी. (रसायन शास्त्र प्रतिष्ठा) द्वितीय वर्ष

आत्मकथ्य : भीतर की घुटन के खिलाफ जब मन की खिड़कियां खोलती हूं, शब्दों के झोंके कविता में ढलकर राहत देते हैं

पता : द्वारा डॉ. शांति कुमारी शैल बाबू कैम्पस

शिवहर, (बिहार), जिला-सीतामढ़ी,
पिन-८४३३२९

बिखरी हुई किताब हूं

उजड़ा हुआ चमन हूं
सिमटा हुआ स्वप्न हूं
लूटे अरमानों की कब्र का
फटा हुआ कफन हूं
नजरों का आफताब हूं
दिलों का ख्वाब हूं
न हारा वक्त से
मुहब्बत की हार हूं
साकी का जाम हूं
महफिल की शान हूं
शराब खुद झूम जाए
मैं वो शुमार हूं

दर्द का खिताब हूं
अश्क का सैलाब हूं
तुम नहीं समझ पाओगे
मैं बिखरी हुई किताब हूं ।

—**संजय 'सनम'**

शिक्षा : बी. एस. सी.

आत्मकथ्य : जब भावनाओं का ज्वार थामे नहीं थमता था, तब कागज पर उतर आती दिल की आवाज । लेखन शौक मजबूरी से बढ़कर आत्म संतुष्टि का कारक बन गया है ।

संप्रति : स्वतंत्र लेखन, जीवन बीमा अभिकर्ता

पता : द्वारा : श्री जेठमल बाफना आठ लेन
पो. लाडनूं (राज.) पिन : ३४१३०६९

जीवन के सर्वांगमुखी विकास के लिए पढ़

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

महाशिव रात्रि विशेषांक

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान

क्या मध्यावधि चुनाव निकट में है?

संरक्षक : डॉ० नारायण दत्त श्रीमा

एक हिन्दी मासिक पत्रिका, जो आप को देगी
माह **एक नवीन ज्ञान ○ नई साधनाएं ○**
○ ज्योतिष ○ आयुर्वेद ○ कुण्डलिनी जा
○ राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट ...जी
में उन्नति के सभी क्षेत्र को अपने में समेटती हु

और इस माह "फरवरी" में

हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में उपलब्ध

"महाशिवरात्रि विशेषांक

(२० जनवरी १९९५ तक)

भारत के समस्त बुक स्टॉलों पर उपल

प्रति - १८/-

विशेष आकर्षण –

○ क्या मध्यावधि चुनाव निकट भविष्य में सम्भव है?

○ ऐश्वर्य प्रदायक तारा ○ खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण ○ आत्म कुण्डलिनी ○ त्राटक ○ शिवरात्रि ○ कि
का महाश्मशान, साथ में – ज्योतिष, हस्त रेखा, शेयर मार्केट, राजनीतिक भविष्य, राशिफल, पाठकों

सहित सभी आकर्षणों से युक्त

नोट : वार्षिक सदस्यता शुल्क १९९/- (डाक व्यय सहित)

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : ०२९१-
सिद्धाश्रम,३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१

मुसलमान कवि जिसके गीत हिंदू-उत्सवों में गाये जाते हैं !

• भगवानदास मोरवाल

डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में, *'हमारे देश में बुद्धिजीवियों को जो भूमिका निभानी चाहिए वह यह कि जहां-जहां हिंदू और मुसलमान मिलकर शत्रु के खिलाफ लड़े हैं उसे जनता की चेतना का अंग बनाएं ।'* कश्मीर के संदर्भ में *'जिस कश्मीर में हिंदू-मुसलमान भेद का पता नहीं चलता था, वहां जीना मुश्किल हो गया है । १९५१ में मैं कश्मीर गया तो एक मित्र के घर पर ठहरा हुआ था । पड़ोस में जनेऊ के गीत गाये जा रहे थे । मैंने कहा कि ये गीत किसने लिखे हैं, तो मेरे मित्र ने कहा कि 'ये गीत महजूर के लिखे हुए हैं ।' क्या हम सोच भी सकते हैं कि आज कश्मीर में कोई मुसलमान कवि है जिसकी रचनाएं हिंदुओं के उत्सवों में गायी जाएं ? हमारे देखते-देखते कितना बड़ा परिवर्तन हो गया है ।'*

मेवात के मेव

राजधानी दिल्ली से महज सौ-सवा सौ किलोमीटर दूर बसे मेवात के मेवों की भूमिका भी इस मायने में कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । प्रासंगिक इस मायने में कि हिंदू-मुसलमानों की सांस्कृतिक समन्वयता में जितना बड़ा योगदान कश्मीर के मुसलमान कवि महजूर का रहा है, उतना ही बड़ा योगदान मेवात के अनेक लोक कवियों और मीरासियों का भी रहा है । बल्कि कश्मीर और मेवात में मुझे सांस्कृतिक दृष्टि से बेहद समानता दिखायी देती है ।

सबसे बड़ी समानता तो यह है कि जिस तरह कश्मीरी मुसलमान अपने आपको हिंदू गूजरों का वंशज मानते हैं, उसी तरह मेवात के मेव भी अपने-आपको चंद्रवंशी और सूर्यवंशी राजपूतों का वंशज मानते हैं । 'इंडियन काउंसिल ऑव कल्चरल रिलेशंस' के द्वारा इस तथ्य की जानकारी मिलती है कि मेव जाति एक प्राचीन क्षत्रिय जाति है, जो कुछ समय बाद इसलाम धर्मावलंबियों में परिवर्तित हो गयी थी । ज्यादातर इतिहासकारों का एक मत है कि मेवों के वंशज चंद्रवंशी, सूर्यवंशी राजपूत थे जो तोमर, यादव, चौहान और राठौर के नाम से जाने जाते हैं ।

लगभग तीन दशक पूर्व एक कश्मीरी गूजर नेता का यह कथन इसी सांस्कृतिक समन्वय को पुख्ता करता है कि भारतीय नागरिक होने के

> ***जिस तेजी के साथ हमारे यहां सांस्कृतिक समन्वयता का ह्रास होता जा रहा है और अतिवादी शक्तियां जिस तेजी के साथ अपना वर्चस्व कायम करती जा रही हैं, उसके कारण भारत की अखंडता और निरपेक्षता की चूलें हिलने लगी हैं । इस अतिवाद को यदि भोंथरा किया जा सकता है तो केवल सांस्कृतिक और एकता के उन उदाहरणों और सूत्रों का हवाला देकर, जिनके कारण आज भी भारतीय समाज की विभिन्न इकाइयां और अनेक वर्ग माला के कुछेक मणकों के बिखरने के बावजूद एक धागे में पिरे हुए हैं ।***

नाते हम गूजर उतने ही अच्छे हिंदू हैं जितने कि अन्य भारतीय हैं । हमारे मुसलमान हो जाने से क्या हुआ ? इसलाम मत ग्रहण करने पर हिंदुस्तान के हिंदू गूजरों से हमारे रक्त-संबंधी आनुवांशिक संबंध तो समाप्त नहीं होते । अरब में कुरैशी जिर्गे के सब लोग मुसलमान नहीं हो गये थे, किंतु हजरत मोहम्मद ने अपने आपको कुरैशी कहना नहीं छोड़ा, और उनके वंशज उत्तराधिकारी आज भी अपने को कुरैशी कहते हैं, तो भला हम गूजर जो कि उनसे संख्या में कहीं अधिक हैं, जिन्होंने इसलाम मत ग्रहण नहीं किया, उन हिंदू गूजरों से अपना संबंध क्यों तोड़ें ?

इसी तरह कुछ समय पूर्व मेवात की एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए मेवात के दो मेव नेताओं ने अपने आपको चंद्रवंशी और सूर्यवंशी कहा था ।

दो अलग-अलग राज्यों के अलग-अलग नेताओं द्वारा इस तरह कहना जहां सांस्कृतिक समन्वय को बल प्रदान करता है, वहीं एकता के सूत्रों की पुनर्स्थापना भी करता है । इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि दोनों की उत्पत्ति का स्रोत एक-जैसा है ।

सांस्कृतिक समन्वय के मुख्य स्रोत

लोक संस्कृति : किसी भी समाज के सामाजिक परिवर्तन में जितनी बड़ी भूमिका इतिहास की होती है, उससे कहीं बड़ी भूमिका सांस्कृतिक कारकों की होती है । संस्कारों में बदलाव चूंकि लंबी प्रक्रिया के तहत आता है इसलिए जिन रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक उत्सवों के बीच से हम गुजरते हैं, उनका प्रभाव हमारे संस्कारों में घुला रहता है । शायद इसीलिए अपने संस्कारों का परित्याग हम आसानी से नहीं कर पाते हैं ।

लाख कोशिशों के बावजूद अपनी बोली-बानी या अन्य क्रिया-कलापों के चलते कहीं-न-कहीं हमसे जाने-अनजाने ऐसे सूत्र छूट जाते हैं जो हमारी 'आइडेंटिटी' को उद्घाटित कर देते हैं । इस 'आइडेंटिटी' में स्थानीय भूगोल का भी बड़ा योगदान होता है । सच तो यह है कि हमारी 'आइडेंटिटी' हमें, हमारे भविष्य के प्रति आश्वस्त करती है, बेशक इस

आश्वस्ति पर हमारी लोक संस्कृति के छींटें पड़े होते हैं ।

पंडून कौ कड़ा

यदि ऐसा नहीं होता तो इसलाम कबूल करने के सैकड़ों साल बाद आज भी मेवों में मीरासियों द्वारा महाभारत पर आधारित 'पंडून कौ कड़ा' जैसी काव्य-रचना को गाया नहीं जाता । इस विशाल काव्य-रचना में, जो कि पूरी तरह बात साहित्य पर आधारित है, वीर-रस की प्रधानता है । मेव शुरू से ही शौर्य, पराक्रम, वीरता और साहस के प्रतीक के रूप में जाने जाते है, मीरासी मेवों की वंशावली के संबंध में अपना यह मत रखते हैं कि मेव अर्जुन के वंश से संबंध रखते हैं और इसीलिए ये अपने-आपको चंद्रवंशी मानते हैं । दरअसल, अर्जुन यहां किसी समुदाय विशेष या परंपरा का पर्याय नहीं, बल्कि शौर्य और वीरता का प्रतीक है ।

शायद, इसी प्रतीक को मद्देनजर रख सन १९३३ में बिहार के चंपारन जिले में कांग्रेस के एक अधिवेशन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा भी था, "**अगर मेव कौम-जैसी बहादुरी, हिम्मत और देशभक्ति पूरे देश में पैदा हो जाए तो मैं चौबीस घंटे में भारत को आजाद करा सकता हूं ।**"

यह सच नहीं है कि सांस्कृतिक समन्वय के प्रमुख स्रोत लोक संस्कृति अब धीरे-धीरे दम तोड़ रही है, लेकिन बावजूद इसके आज भी मेवात के कुछ हिस्सों में न केवल हिंदुओं की भांति शादी के अवसर पर कुम्हार के यहां चाक पर हल्दी से स्वास्तिक बनाकर उसे पूजा जाता है, बल्कि बहन द्वारा भाई से 'भात' ग्रहण किया जाता है और रुंधे हुए गले से एक बहन, एक भाई से गुहार करती हुई गाती भी है—

भाई अच्छो भरियो भात, बहाण टेटा में
थाली में डेढ़ हजार, मोहर लोटा में... ।

आज भी कुछ अपवादों को छोड़कर जहां-जहां लड़के-लड़कियों में भाई-बहन का नाता बनता है, वहां उनके बीच रिश्ता तय करना सामाजिक परंपराओं का निषेध माना जाता है, यानी जिस उत्तर भारत के ज्यादातर राज्यों (हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश) में लड़के या लड़की का रिश्ता तय करते समय मां, दादी, नानी और स्वयं का गौत्र बचाया जाता है, उसी तरह मेवों में भी बचाने की पूरी कोशिश की जाती है ।

एक त्रासद पहलू

लोक परंपराओं और संस्कृति के खत्म होने का सबसे त्रासद पहलू यह है कि जीवन से जीवंतता समाप्त होने लगती है । एकता और सौहार्द मात्र कथाओं और उदाहरणों में सिमटकर रह जाता है या फिर कुछ चालाक किस्म के बुद्धिजीवियों की मौलिक खुराक बनकर रह जाती है । इसके चलते समाज में अनेक भ्रांतियां और संकीर्णताएं पैदा होने लगती हैं । इन्हीं भ्रांतियों और संकीर्णताओं का परिणाम है कि हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को खोने लगे हैं ।

यहां एक छोटा-सा उदाहरण देकर मैं इसे और स्पष्ट करना चाहूंगा । जैसे जिन सेंवइयों को सावन-भादों के महीनों में रक्षा-बंधन और तीज के अवसर पर पूरे ब्रज क्षेत्र और उससे जुड़े हुए निकटवर्ती क्षेत्रों में, जिनमें मेवात भी सम्मिलित है, मेहमान नवाजी का प्रमुख भोज्य पदार्थ माना

जाता है तो यहीं सेंवइयां इन क्षेत्रों की सीमा के बाहर सिर्फ 'ईद' जैसे त्योहार पर बनाये जानेवाला भोज्य पदार्थ बनकर रह जाता है । कहने का आशय यह है कि एक भोज्य पदार्थ एक क्षेत्र में लोक संस्कृति और परंपरा का संवाहक माना जाता है, वहीं दूसरे क्षेत्र में एक संप्रदाय विशेष का पदार्थ बनकर रह जाता है ।

गहरा हिंदुस्तानी रंग

सांस्कृतिक समन्वय के रूप में तो कवि रहीम को देखा जा सकता है । जी हां, वही अब्दुर्ररहीम खानखाना जिनके कवित्त और सवैयों में गहरा हिंदुस्तानी रंग देखा जाता है और जिनका उदाहरण भारतीय सुख-शांति और संस्कृति के लिए बेहद उपयोगी हो सकता है ।

यह बहुत कम लोगों को मालूम है कि अब्दुर्ररहीम खानखाना का संबंध मेवात से कितने गहरे तक जुड़ा है । हां, शायद इतना भर मालूम है कि रहीम की मां एक मेव सरदार की पुत्री थी, लेकिन यह मेव सरदार कौन था, नहीं मालूम ।

दरअसल, अब्दुर्ररहीम खानखाना मेवात के अंतिम सरदार हसन खां मेवाती के रिश्ते में नाती लगते थे, क्योंकि हसन खां के चचेरे भाई जमाल खां के दो पुत्रियां थीं, जिनमें से बड़ी पुत्री का विवाह अकबर के साथ हुआ और छोटी का विवाह उसके वजीर बैरम खां के साथ । (यहां इतिहासकारों में दो मत हैं— कुछ का कहना है कि रहीम की मौसी का विवाह अकबर से हुआ, कुछ का कहना है कि हुमायूं से हुआ) । रहीम जमाल खां की छोटी पुत्री, जिसका विवाह बैरम खां से हुआ था, के पुत्र थे ।

यही एक बड़ा कारण लगता है कि रहीम के कवित्त और सवैयों में पूरा ब्रज समाया हुआ उनके दोहों में ठेठ ब्रज का रंग घुला हुआ यहां यह तथ्य उल्लेखनीय है कि ब्रज का रंग रहीम की बोली-बानी में यूं ही नहीं घुल हुआ है बल्कि, इसके पीछे स्थानीय भूगोल, लोक परंपरा और संस्कारों की बहुत गहरी है । और वह यह कि रहीम की मां का माय मेवात में था और मेवात में चूंकि ब्रज का बड़ा हिस्सा आता है, इसलिए मेवाती बोली ब्रज बोली का अधिक प्रभाव है । आज मेवाती बोली जाती है, उसमें ब्रज के असं शब्दों की प्रचुरता देखी जा सकती है ।

मेवात में सांस्कृतिक और एकता के एक और महत्त्वपूर्ण कड़ी है जग्गाओं या जागाओं द्वारा मेवों और हिंदुओं की कुछ जातियों की कुल पुरोहिताई करना । इस में सबसे दिलचस्प तथ्य यह है कि अपने आपको ब्राह्मणों में भारद्वाज ऋषि के वंश बतानेवाले ये 'जग्गा' या 'जागा' आज से बल्कि शताब्दियों से यह कुल पुरोहिताई का कार्य करते आ रहे हैं । जहां शुरुआत में केवल हिंदुओं की कुल पुरोहिताई करते थे बाद में मुसलिम शासकों के देश पर आ के बाद, इनकी भी कुल पुरोहिताई शुरू कर दी ।

शताब्दियों से चली आ रही इस परं जीवित रखते हुए आज 'जग्गा' राजस्थान, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के मेवों के कुल पुरोहित की भूमिका निभाते आ रहे हैं । मे कुल पुरोहिताई के अलावा ये हिंदुओं में गु माली, कोली, ब्राह्मण, अहीर और गूजरों कुल पुरोहिताई का कार्य करते आ रहे हैं ।

सादल्लाह के बिरहड़े

मेवात के जनकवि सादल्लाह का जिक्र न किया जाए तो इस लेख के साथ ज्यादती होगी । एक ऐसा कवि जिसके बिरहड़े (दोहे) आज भी पूरे मेवात के जनमानस पर छाये रहने के बावजूद यह कवि हिंदी साहित्य के परिदृश्य से पूरी तरह अदृश्य रहा है । ऐसा नहीं है कि यह उपेक्षाभाव या उदासीनता केवल सादल्लाह के प्रति रही है, अपितु मेवात के अन्य लोक कवि गद्द, दानशाह, मीर खां, नत्थू खां, खक्के, उमर खां, नबी खां और यहां तक कि संत लालदास के प्रति भी रही है ।

इन लोक कवियों के काव्य-संसार में सिर्फ मेवात ही नहीं बल्कि भारतीयता, प्रेम, भक्ति, वैराग्य, वीरता और श्रृंगार की ऐसी मिश्रित भावना निहित है, जिस पर भारतीय परंपराओं और विचारधाराओं का गहरा रंग चढ़ा हुआ है ।

दर्शन, अध्यात्म, प्रेम, भक्ति और श्रृंगार इन कवियों के काव्य-संसार में केवल जातीय उपबंधों तक सीमित नहीं है बल्कि, भविष्य के प्रति चिंता और समाज को संपूर्णता में देखने की एक व्यापक दृष्टि भी है, ठीक कबीर, तुलसी, रहीम और अन्य भारतीय सूफी-संतों की तरह । उदाहरण के लिए सादल्लाह ने अपने अनेक दोहों में तुलसी का उपयोग किया है, जैसे—

तुलसी हर सू मिलन कू, ऐसो जतन करो ।
जैसे तिरिया गरभ सू, अचके पांव धरो ।।

तुलसी आग बुझाइये, जब तक पार बसाए ।
आग लगी बंगान में, जाने कोई किरोड़पति जल जाए ।।

इसी तरह अन्य कवियों के दोहों को देखें—

कहा कल्लर को खेत, कहा सुपना की माया ।
कहा ओस को मेह, कहा बादल की छाया ।।
(दानशाह)

संपत में सपूत में, साझो सबको होए ।
'नत्थू' काल-कपूत सू, बोसाए न कोए ।।
(नत्थू खां)

जल हीरा, जल जौहरी, जल दुनिया को माल ।
जल की माया 'मीर खां', जल बिन जगत कंगाल ।।

(मीर खां)

कभी-कभी तो कुछ दोहों को पढ़कर लगता है कि हम तुलसी या नजीर अकबराबादी को पढ़ रहे हैं । जिस तरह तुलसीदास ने नारी की स्थिति को समाज में देखकर कहा है कि 'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी; ये सब ताड़न के अधिकारी ।' इसी तरह सादल्लाह ने भी नारी की उसी स्थिति को देखकर कहा है कि—

बाबल तेरा देस में, एक बेटी एक बैल ।
हाथ पकड़ के दीना जामे, परदेसी के गैल ।।

मेवात के एक लोक कवि 'राजू' के इस दोहे— ***'राजू' दुनिया बावली, पक्का चिणे मकान; सभी पड़ा रह जांगा, जा दिन निकल जाएगी जान ।*** को पढ़कर तो नजीर अकबराबादी की ये पंक्तियां ताजा हो उठती हैं —

'सब ठाठ पड़े रह जाएंगे,
जब लाद चलेगा बंजारा ।'

मेवात के इन लोक कवियों का काव्य-संसार बेशक एक अशिक्षित सृजक का काव्य-संसार हो लेकिन इतना अवश्य है कि अन्य भारतीय संत-कवियों की तरह इनमें निहित भाव भारतीय दर्शन, अध्यात्म और सांसारिक क्रिया-कलापों पर आधारित है ।

इन्होंने इनकी रचना सांप्रदायिक भावना या संकीर्णता के तहत नहीं की बल्कि, मानव कल्याण और मनुष्यता को ध्यान में रखकर की। इसीलिए इनके एक-एक दोहे पूरे जनमानस पर छाये हुए हैं।

ऐतिहासिक सत्य और स्वतंत्रता संग्राम

इस देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि स्वतंत्रता के बाद से ही अतिवादियों ने भारतीय मुसलमानों को लेकर अनेक भ्रमात्मक धारणाएं गढ़ी हैं। सबसे बड़ी धारणा है देश के प्रति उनकी निष्ठा। लेकिन ऐसे अनेक अवसर आये हैं, जब उन्हें निष्ठा की इन अग्नि परीक्षाओं से गुजरना पड़ा है और हर बार न केवल वे अपनी कसौटी पर खरे उतरे हैं, बल्कि इन धारणाओं को तोड़ा भी है।

इसका सबसे बड़ा उदाहरण है हसन खां मेवाती द्वारा वह ऐतिहासिक निर्णय, जिसके कारण हसन खां को खेत हो जाना पड़ा था। वह निर्णय था बाबर द्वारा राणा सांगा के विरुद्ध लड़ने का आह्वान। इतिहास चूंकि संस्कृति का गवाह और पूरक दोनों होता है, इसलिए जरूरी है कि तमाम निषेधों के बावजूद उसमें थोड़ी-सी ताक-झांक कर ली जाए।

बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' में एक जगह ९३३ हिजरी की घटनाओं के अंतर्गत मेवात का उल्लेख किया है। मेवात का यह उल्लेख बाबर द्वारा इसलिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है क्योंकि भारतीय मुसलमानों की देश-भक्ति और हसन खां मेवाती द्वारा बाबर का प्रस्ताव ठुकराने के बाद उसे अपनी कूटनीति में बेहद सतर्कता और दूरदर्शिता बरतने पर मजबूर कर दिया था।

इतिहास गवाह है कि बाबर को इतना राणा सांगा से नहीं था जितना हसन खां मे से था। बाबर ने अपनी आत्मकथा में लि कि 'मैंने बिना किसी सोच-विचार किये ह खां के साथ समझौता करना चाहा, क्योंकि पूरी तरह हिंदुओं से प्रेम रखता था और बा का उससे यह कहना कि हसन खां खुशी-खु उसकी अधीनता स्वीकार कर लेगा, गलत साबित हुआ।'

उस समय सिर्फ हसन खां मेवाती ही न बल्कि अन्य मुसलमान सरदारों ने बाबर के विरुद्ध राणा सांगा का साथ दिया था, जिन सलाऊद्दीन, कायम खां, निजाम खां, मोह जैतून, तातार खां, हुसैन खां, कुतुब खां औ आलम खां प्रमुख थे।

बाबर को मेवात की ओर से बराबर भ रहता था, हालांकि उसने राणा सांगा पर वि हासिल कर ली थी। इसीलिए उसने अप 'आत्मकथा' में फिर लिखा है कि 'फतेहपु सीकरी की विजय के बाद हिंदुस्तान के अ क्षेत्रों को छोड़कर सर्वप्रथम मेवात का इं करना आवश्यक समझा। इसलिए उसने से प्रस्थान कर, लगातार चार या पांच दिन यात्रा करके अलवर से छह कोस दूर अप पड़ाव डाल दिया और कुछ सरदारों को आ दिया कि मेवात के विद्रोही 'खानजादों' को सख्त सजा दें, ताकि भविष्य में यहां कोई रह जाए।

हसन खां मेवाती को अपना सहयोगी ब के लिए राणा सांगा और बाबर दोनों ने ब की कोशिश की थी। बाबर ने तो हसन खं बहादुरी का फायदा उठाने और उसे अपनी

मिलाने के लिए मजहब का इस्तेमाल करते हुए यह संदेश भेजा था कि 'हममजहबी होने के नाते आपको राणा सांगा का नहीं मेरा साथ देना चाहिए ।' अफगानी शासक अहमद शाह अब्दाली ने भी मराठों के प्रमुख सेनापति और तोपची इब्राहिम गार्दी को अपनी तरफ मिलाने के लिए पानीपत के सूबेदार सलीम सिद्दीकी को इब्राहिम के पास यह कहकर भेजा था कि उसे यानी इब्राहिम को एक मुसलमान होने के नाते गैर-मुसलमान मराठों का नहीं बल्कि, अहमद शाह अब्दाली का साथ देना चाहिए । इस पर इब्राहिम गार्दी ने सलीम सिद्दीकी को यह कहकर कि यदि मराठा मुझे गैर समझते तो अपनी सेना का सेनापति नहीं बनाते, तोप से उड़वा दिया होता ।

मेवात के इस महान सपूत हसन खां मेवाती ने इब्राहिम गार्दी की तरह बाबर के प्रस्ताव को यह कहकर ठुकरा दिया था कि 'मैं एक हिंदुस्तानी हूं और मैं किसी भी विदेशी हमलावर को अपने मुल्क को जीतने या गुलाम बनाने नहीं दूंगा ।'

इस तरह यदि पूरे ऐतिहासिक प्रसंगों को भारतीयता की दृष्टि से देखा जाए तो पक्के तौर पर कहा जा सकता है सांस्कृतिक समन्वय और एकता के सूत्रों की जड़ें अभी हमारे देश में इतनी गहरी हैं कि उन्हें आसानी से उखाड़कर तितर-बितर करना मुश्किल है । इन जड़ों को मजबूती प्रदान करने में भारतीय मुसलमानों का बहुत बड़ा योगदान रहा है, जिनमें मेवात के मेवों का योगदान भी उतना बड़ा है, जितना अन्य भारतीय मुसलमानों का है ।

— डब्लूयू. जेड-५२८, पालम गांव नयी दिल्ली

हंसिकाएं

घोषणा

लोग जीती मक्खी निगल गये, पचा गये
हैजा उन्मूलन की घोषणा के—
दिन आ गये ।

कारण

ब्लडप्रेशर के कारण
स्वयं तो नमक नहीं लेते थे
औरों के जख्मों पर
बेहिसाब छिड़क देते थे

जी

उन्होंने पूछा
'जी' शब्द सम्मान सूचक है या प्रेम सूचक
कृपया विस्तार से बतायें
वे हंसकर कह उठे
'जी लग जाए' तो 'जी' न लगायें

आंच

प्रेम के संबंधों पर टिप्पणी देते
—मचल गयी
बोली ''मेरी प्रेम कथाएं क्या पूछते हो
कभी दाल कच्ची रही, कभी दाल जल गयी''

● डॉ. सरोजनी प्रीतम

नयी कृतियां

कुछ काव्य संग्रह

शब्दसेतु : साहित्य अकादमी द्वारा दिसम्बर १९९३ में कविता-अनुवाद कार्यशाला में आमंत्रित दस भारतीय भाषाओं के कवियों की कविताएं 'शब्द सेतु' में संकलित है । संकलित कवि हैं— सिद्ध लिंगैया (कन्नड़), गुलाम मोहम्मद शेख (गुजराती), हीरेन भट्टाचार्य (असमिया), अरुण कोलटकर (मराठी), प्रवासिनी महरकुड़ (ओड़िया), जयप्रदा (तेलुगु), सुरजीतपातर (पंजाबी), सुकुमारन (तमिल), अनुराधा महापात्र (बांग्ला), सावित्री राजीवन (मलयालम) इस तरह पूरा भाषाक्षेत्र इन कविताओं में प्रतिबिंबित है । भावनात्मक एकीकरण की दृष्टि से ऐसे प्रयास की जितनी प्रशंसा की जाए उतना कम है । इसके द्वारा कवियों और अनुवादकों के बीच संवाद कायम हुआ और कविता की आत्मा में झांकना भी संभव हुआ ।

संकलित कवियों में नये पुराने— सभी का समावेश है ।

कविताओं के अनुवाद हिंदी के विख्यात कवियों द्वारा तथा सब का संपादन गिरधर राठी द्वारा किया गया है ।

प्रकाशक : साहित्य अकादमी, रवींद्र भवन, ३५ फीरोजशाह मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१, मूल्य : चालीस रुपये ।

विसंगतियों के घेरे : विसंगतियां कहां नहीं हैं ? निश्चय ही आज विसंगतियां अपने-आप उग आती हैं । इन्हें कविता का विषय भी बनाया जाता है । यही भाव-बोध कविता को आधुनिकता की संज्ञा भी देता है। सुबोध मिश्र की यहां संकलित ३१ कविताओं में विसंगति की बानगी भी है किंतु गीत-गजल की मानसिकता अधिक है ।

हम सुबह से बैठकर
सीते रहे हैं फटी चादर
वक्त का बालक बड़ा जिद्दी
उसे फिर फाड़ देता ।

में विसंगति का उदाहरण है जबकि अधिकांश कविताएं :

'द्वार खड़ा है मादक यौवन,
फिर भी तुझमें कितना बचपन'

जैसी भावधारा की कविताएं हैं ।

कवि— सुबोध मिश्र, प्रकाशक— जुही प्रकाशन ४४३०-बी-५ तथा ६ वसंत कुंज, नयी दिल्ली, मूल्य— तीस रुपये ।

पेड़ छनी परछाइयां : 'प्रश्न अनुभूति का नहीं, अभिव्यक्ति का भी नहीं । प्रश्न है समग्रता का, पूरे परिवेश के साथ जुड़ने का, जोड़ने का ।' कवयित्री का उक्त कथन उनके प्रस्तुत कविता संकलन की विशेषताओं को प्रकट करता है ।

छंदोबद्ध कविता या गीत इंदिरा मोहन की अपनी विशेषता हैं । वे मानती हैं छंद केवल शब्द और अर्थ की दरारें ही नहीं भरते वे कवि और पाठक के बीच सेतु की तरह हैं । छंद को सेतु बनाना बड़ा परिश्रम का काम है । इंदिराजी ने इस ओर विशेष ध्यान दिया है :

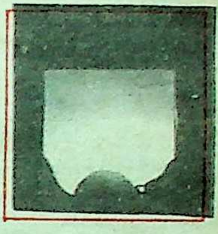

गंध सुगंध झरो
और न मंद रहो
तरु पल्लव की पांख हिली है
धीरे-धीरे आंख खुली है
कण-कण शुभ संवाद सहेजे
गर्व सनी अनुभूति घुली है,
छंद अ मंद कहो ।

संवेदन के स्तरों को भी कवयित्री ने छूने की कोशिश की है :

कवयित्री : इंदिरा मोहन
प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस २३, दरियागंज नयी दिल्ली-११०००२ । मूल्य : पचास रुपये ।

अनन्ता : कविता वाचिक, लिखित रूपों में सीमित नहीं हो सकती । कविता में अभिव्यक्ति ही सर्व प्रमुख है । इस दृष्टि से 'अनन्ता' के कवि ने पूरा प्रयास किया है ।

'अनन्ता' में हर मनः स्थिति की रचना का संकलन है । यह संकलन की कविताओं के शीर्षकों से ही अनुमानित है— काली, षोड्षी, सुहाना सफर, एकता, आस्तिक, खबर, पथिक, वर्ण संकर, बेचारा मशीन, अंधविश्वास, अपने-पराये,महत्ता— पूंछ और मूंछ आदि-आदि ।

लंबी कविताओं में सपाट बयानी भी है और इससे बचने के प्रयत्न भी । कतिपय छोटी कविताएं बेहतर हैं । जैसे :

धन न सफेद होता है
न काला
धन तो धन होता है
काला— सफेद तो
आदमी का मन होता है ।

कवि : भगवानस्वरूप नागर
प्रकाशन : दीक्षा प्रकाशन, १५३९, रामकृष्ण मार्केट, गली मुकेश, गांधी नगर, दिल्ली-११००३१, मूल्य : अस्सी रुपये ।

मेरी प्रिय गजलें : हिंदी गजल छंदोबद्ध कविता की मुख्य विधा बनती जा रही है । हिंदी गजल वर्तमान परिवेश की सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं को भी उजागर करने में प्रयत्नरत है किंतु गजल का प्रेमिल स्वरूप ही काफी हद तक गजलकारों पर हावी है । यह बात अंजुम की गजलों में भी है । तथापि बेहतर नमूने भी हैं :

सिर से होकर गुजर गया पानी !
ख्वाहिशों के जो घर गया पानी !
जिंदगी में गमों का सहारा था
उसकी खुशियों का डर गया पानी !
देखते... सभ्यता का चीर हरण
मेरी आंखों का मर गया पानी !

संकलन में कुल ५८ गजलें हैं ।

कवि : अशोक अंजुम
प्रकाशक : संवेदना प्रकाशन, कासिमपुर (पावर हाउस), अलीगढ़-२०२१२७ । मूल्य : तीस रुपये ।

चिंतन संवाद : रामकथा भारतीय चेतना की अप्रतिम ऊर्जा है । वाल्मीकि से लेकर तुलसीदास और आधुनिक युग में निराला से

लेकर मैथिलीशरण गुप्त ने रामकथा को समसामयिक प्रश्नों से जोड़ा । ऐसे प्रयत्न आज भी जारी हैं । रामकथा की विभिन्न केंद्रीय घटनाओं को केंद्र बिंदु बनाकर खंड काव्यों की रचनाएं हुई हैं । पंचवटी, शबरी जैसे खंड काव्य इसी विचारणा के उदाहरण हैं ।

'चिंतन संवाद' में राम की 'वन गमन' एवं 'सीता के परित्याग' के प्रसंगों को केंद्र बनाया गया है । एक तरह से सीता और राम का संवाद ही 'चिंतन संवाद' है । यह कथ्य भी चिरपरिचित है किंतु आधुनिक प्रश्नों की अनुगूंज और उनके उत्तरों को ढूंढ़ने या उन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने की दृष्टि से 'चिंतन संवाद' पठनीय है ।

चाहे भीड़तंत्र की सुनो या मेरी
यह राज प्रजातंत्र का है
यह प्रजातंत्र है राम !

कवयित्री : भारती पांडे
प्रकाशक : अमर भारती संस्थान
१०८४, विवेकानंदनगर, गाजियाबाद । मूल्य : साठ रुपये ।

स्वयं धरित्री ही थी : सीता की पति-परायणता, सत्यवादिता, निश्छलता, सहिष्णुता, आदर्शप्रियता, उदारता आदि गुणों को केंद्र में रखकर सीता पर लिखा गया प्रबंध काव्य 'स्वयं धरित्री ही थी' नौ सर्गों में विभाजित है, जिनमें पूरी रामकथा की अभिव्यक्ति हुई है ।

कवि : रमाकांत श्रीवास्तव
प्रकाशक : रुक्मिणी-श्याम सुंदरी स्मृति संस्थान, एल ६/एल ९६, लोक विहार, कुर्सीरोड, अलीगंज, लखनऊ । मूल्य : सजिल्द पचास रुपये ।

कहो सदाशिव : जीवन की अंतरंगता और उसके सामाजिक सरोकारों की कविताओं का संकलन है— **'कहो सदाशिव'** यहां संकलित गीतों/नवगीतों को जीवन और मानवीय रिश्तों की अंतरंगता का संकलन कहा जा सकता है । इन गीतों में आम अ का विश्वास 'बीज' के रूप में अभिव्यक्त है—

हम उगेंगे जंगलों से
तुम हमें चाहो न चाहो ।

××

खाद खुद के लिए हम बनते रहे हैं
औ' स्वयं के रक्त में सनते रहे हैं
बांध लेंगे गति पलों से
तुम हमें चाहो न चाहो

'सूर्योदय है सबका' जैसी कविता में भी मानवीय संवेदना का विस्तार देखा जा सक है । कुल मिलाकर कविताएं प्रभाव छोड़ती

कवि : यश मालवीय
प्रकाशक : आशु प्रकाशन, ११४३/३१ पुरा कटरा इलाहाबाद-२११००२ । मूल्य : सजि सत्तर रुपये ।

नावक के तीर : कम शब्दों में बात कहना या गागर में सागर भरना दोहे का हं है । ऐसे ही दोहे 'नावक के तीर' में संक हैं । 'अनन्त' ने वक्तव्य में कहा है कि उन् सहस्राधिक दोहों की रचना की है । उनमें सात सौ सात दोहे नावक के तीर में संकलि हैं ।

विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत दोहों का संयोजन कर कवि ने इनकी पठनीयता में की है । ***'आयी किरणें जोगिया, इठलायी है शाम,' 'पाले से पाला पड़ा'***— जैसे शीर्षकों अंतर्गत दोहों में यह बात देखी जा सकती यथा :

कुहरे का घूंघट किये
दिखाएं छविधाम

खोल, दिखते सूर्य-कर
सुख सौंदर्य ललाम ।
कुहरे की माया प्रबल
आकर अड़ी समक्ष
हुआ जीव—हित ब्रह्म-सा
दिनकर अप्रत्यक्ष ।

कवि : अनन्तराम मिश्र 'अनन्त'
प्रकाशक : भारती भाषा प्रकाशन दिल्ली, मूल्य : पचास रुपये ।

— डॉ. हीरालाल बाछोतिया

साधना योग किरण : पं. राम अवतार शर्मा की इस कृति में सूर्य नमस्कार, योगासन, प्राणायाम, ध्यान योग, ज्ञान कर्म तथा भक्तियोग, मंत्र जप, कुंडलिनी जागरण आदि पर सरल भाषा में विचार किया गया है । पुस्तक में दिये विभिन्न आसनों के चित्रों तथा विवरण की सहायता से इन्हें सरलता से सीखा जा सकता है । स्वास्थ्य तथा साधना-पथ पर अग्रसर होनेवाले लोगों के लिए पुस्तक उपयोगी है ।

लेखक : पं. राम अवतार शर्मा, प्रकाशन संस्थान : आयुर्वेदिक विवेकानंद आश्रम, पटपड़गंज रोड, दिल्ली । मूल्य : ४० रुपये ।

—भ.प्र.

प्राप्ति स्वीकार

बर्फ ढोती संवेदनाएं
लेखक : डॉ. सुधाकर आशावादी, प्रकाशक : प्राची प्रकाशन, शास्त्री भवन, ब्रह्मपुरी, मेरठ-२५०००२, मूल्य : बीस रुपये ।

अक्षरभर छांव
रचनाकार : डॉ. हरीश निगम, प्रकाशक : ऋचा प्रकाशन, जय स्तंभ चौक, सतना-४८५००१, मूल्य : चालीस रुपये ।

इनके भी बयां जुदा-जुदा

जम्हूरियत इक तर्जेहकूमत कि जिसमें
बंदों को गिना करते हैं तौला नहीं करते

— इकबाल

उठकर तो आ गये हैं तेरी बज़्म से मगर
कुछ दिल ही जानता है कि किस दिल से आये हैं

— फ़ैज अहमद फ़ैज

सारी दुनिया की निगाहों से गिरा है मजरूह
तब कहीं जाके तेरे दिल में जगह पायी है

— मजरूह सुल्तानपुरी

ढल गयी उम्र बालों में सफेदी आयी
इश्क तेरा है कि हर रोज जवां होता है

— मौलाना मोहम्मद अकरम

गैर से मिली हो कोई चीज तो वापस कर दें
कर्ज अपनों का भला किससे अदा होता है

— मुश्ताक अली शाहिद

हमारा घर तुम्हारा घर ये बातें दिल दुखाती हैं
मोहब्बत हो तो यह अपना पराया छोड़ देते हैं

— मोहम्मद आजम

इक नयी रुत के सफर पर जानेवाले काफिले
अपनी मिट्टी अपने मौसम अपना घर मत भूलना

— फिरोज शाह

शरीके जलर्म न होते तो मुखबरी करते
हमें खबर है लुटेरों के हर ठिकाने की

—अजहर दरानी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

सांस्कृतिक समाचार

राष्ट्रीय एकता में हिंदी का योगदान

'राष्ट्रभाषा संस्थान' के तत्वावधान में जबलपुर में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। 'राष्ट्रीय एकता में हिंदी का योगदान' चर्चा का विषय रहा।

संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती मंजु द्विवेदी ने गोष्ठी का संचालन किया। मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित डॉ. डी. मालाकोंडैया (हैदराबाद) ने सभा की अध्यक्षता की। प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. ब्रह्मानंद द्विवेदी ने अपना पत्र 'हिंदी साहित्य एवं दक्षिण भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन' पढ़कर 'हिंदी' को राष्ट्रीय एकता का आधार बताया। डॉ. कोंडैया ने हिंदी को गौरव की भाषा बताया।

डॉ. द्विवेदी ने डॉ. (प्रो.) यू. एस. पुल्सिपाणी द्वारा 'बिहारी सतसई' को तमिल में अनुवाद करने का समाचार बताते हुए, भाषायी एकता को चरितार्थ किया।

अन्य विद्वानों में डॉ. रामकदम, डॉ. बासाराव, श्री के. रामैया, डॉ. सी. एच. वेंकटेश्वर ने अपने विचार प्रकट किये।

गोष्ठी में आये दक्षिण भारतीय विद्वानों का सम्मान श्रीफल व शाल से किया गया।

सभा का समापन, 'जय हिंदी जय मां भारती' के गान से हुआ।

अलवर महोत्सव

राजस्थान के तोरण द्वार और अरावली की पर्वतमालाओं की गोद में रचे-बसे सांस्कृतिक, प्राकृतिक, आध्यात्मिक व ऐतिहासिक वैभव से परिपूर्ण अलवर नगर की २२०वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में देश की प्रसिद्ध सांस्कृतिक व साहित्यिक संस्था—संस्कार भारती व साहित्य परिषद द्वारा अलवर महोत्सव मनाया गया।

अलवर महोत्सव का उद्घाटन राजस्थान सरकार के उच्च शिक्षा एवं सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्री ललित किशोर चतुर्वेदी ने किया।

अलवर महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर श्रीमती अचला बालियान के निर्देशन में कु. आभा शर्मा व कु. आस्था द्वारा नृत्यों का प्रदर्शन किया गया तथा हनुमान शर्मा द्वारा मेवाती में अलवर गाथा सुनायी गयी। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भपंग वादक, जहूर खां व उसके पुत्रों ने अपनी भपंग व गायन का जादू भी बिखेरकर दर्शकों को आनंदित व भाव विभोर कर दिया।

इस अवसर पर श्री चतुर्वेदी द्वारा अलवर के प्रसिद्ध चित्रकार महावीर भट्ट को चित्रकला के क्षेत्र में, वयोवृद्ध कवि रूपनारायण चंहुल को काव्य के क्षेत्र में, व अलवर के युवा अभिनेता व नाट्य निर्देशक रमेश कुमार को नाट्य क्षेत्र में योगदान के लिए शॉल उढ़ाकर, प्रतीक चिह्न व श्रीफल तथा अलवर शिरोमणि की उपाधि देकर सम्मानित किया।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता उद्योगपति निरंजन लाल ने की तथा श्री गिर्राजप्रसाद खंडेलवाल (प्रसिद्ध समाजसेवी) कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष थे। नगर न्यास के अध्यक्ष जीतमल जैन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे तो जिलाधीश अलवर श्री मनोहरकांत व श्री पी. एल. जालान समारोह के विशिष्ट अतिथि।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

हिंदी हितकारिणी समिति-सकलडीहा रेलवे स्टेशन वाराणसी के तत्वावधान में दसवां अखिल भारतीय कवि सम्मेलन संपन्न हुआ । कवि सम्मेलन की अध्यक्षता गीतकार डॉ. रवीन्द्र भ्रमर ने की । भाग लेने वाले कवि थे बाबू भोलानाथ गहमरी, मुहम्मद सलीम राही, डॉ. अशोक सिंह, मोहन कुशवाहा, हरि नारायण सिंह 'हरीश' तथा वेद प्रकाश पांडेय समिति के महामंत्री माहेश्वरी सिंह ने सहभागी कवियों को धन्यवाद ज्ञापित किया ।

संस्कृत ही संस्कृति की आधारशिला है

संस्कृत सेवक संघ द्वारा राजधानी में आयोजित एक अभिनंदन समारोह में संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. वाचस्पति उपाध्याय को श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ का कुलपति पद संभालने पर अभिनन्दित किया गया । इस अवसर पर विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डॉ. मंडन मिश्र, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. धर्मपाल एवं संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. पुष्पेन्द्र कुमार सहित अनेक गणमान्य अतिथि, संस्कृत-प्रेमी उपस्थित थे । समारोह के अध्यक्ष एवं दिल्ली विश्वविद्यालय संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. पुष्पेन्द्र कुमार ने 'त्रिभाषा सूत्र' के अंतर्गत विद्यालयों में स्वतंत्र विषय के रूप में संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था की आवश्यकता रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया कि संस्कृत ज्ञान के आधार पर विद्यार्थी अन्य भाषाओं एवं समाज शास्त्रीय विषयों ही नहीं, वैज्ञानिक विषयों में भी अधिक पारंगत हो सकते हैं । उन्होंने प्रो. उपाध्याय की समस्त कार्य-योजनाओं में समूचे संस्कृत जगत के पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया ।

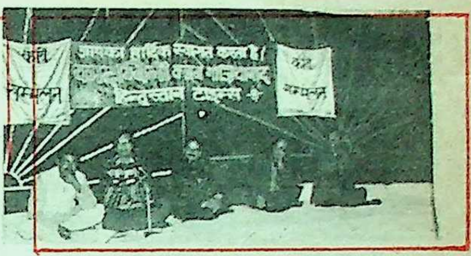

सरस कवि सम्मेलन

गाजियाबाद : नववर्ष की पूर्व संध्या पर 'कादम्बिनी क्लब गाजियाबाद' ने स्थानीय प्रताप विहार में एक सरस कवि सम्मेलन का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने दीप प्रज्वलित कर किया । अध्यक्षता हिंदी अकादमी दिल्ली के सचिव डॉ. रामशरण गौड़ ने की । मुख्य अतिथि गाजियाबाद के स्पेशल जज श्री जे.एस. दुबे थे । कवि सम्मेलन का सफल संचालन कवि श्री सुरेश 'नीरव' ने किया । इस सरस कवि सम्मेलन में सर्वश्री सत्यदेव शास्त्री 'भौंपू', वेद प्रकाश 'सुमन', सरदार मंजीत सिंह, बृजलाल 'गुंजन', कृष्ण मित्र, नित्यानंद 'तुषार', बृजेश भट्ट, वत्सला शर्मा, विश्वमोहन तिवारी, धनंजय सिंह एवं सोमदत्त शर्मा ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया । कवियों का स्वागत बलराम दुबे ने किया तथा अंत में आभार प्रदर्शन क्लब के संयोजक महेन्द्रपाल शर्मा ने किया । इस अवसर पर नगर के बुद्धिजीवी एवं अनेक गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे । इस अवसर पर विंग कमांडर श्री पूर्णानंद शर्मा ने भारतीय वायुसेना के विभिन्न विमानों की ध्वनियां उत्पन्न कर श्रोताओं का मनोरंजन किया ।

छाया : राजकिशन नैन

समस्या-पूर्ति-१८७
सांस

यहां दिये गये शीर्षक को लेकर आपको कविता लिखनी है । समस्या-पूर्ति के नियमों के अनुसार इस शीर्षक का कविता के अंत में होना आवश्यक है । लेकिन इस बार आपको अतुकांत कविता ही लिखनी है । कविता अधिक से अधिक छह पंक्तियों की हो ।

प्रथम पुरस्कार : १२५ रु.
द्वितीय—१०० रु.
तृतीय—७५ रु.

अंतिम तिथि : २० फरवरी, १९९५

मैं कायर हूं

मैं जानता हूं, मैं मानता हूं ।
मैं कायर हूं, मैं बुज़दिल हूं ।।
...क्योंकि हर रोज
चोरी, लूटमार, डकैती,
सरे आम होती है,
पर मेरी आंख जागकर भी सोती है ।
...क्योंकि मैं कायर हूं बुज़दिल हूं ।।
शिक्षा के नाम लूट ही लूट
रिश्वतखोरी को यहां पर है छूट
दहेज की बलिवेदी पर नारी जली,
धर्म के नाम गोली चली
न्याय के घर अन्याय की जीत हो जाती ।
पर मेरी चेतना दुबककर सो जाती
...क्योंकि— मैं कायर हूं, बुज़दिल हूं ।।
बंदूक की आवाज
रक्त-बहता लाल ।
बंधुवा मजदूरों की
उधेड़ी जाती है खाल ।।
मानव के सीने पर दानव के वार
अनगिनत होते अत्याचार
पर मेरी भुजाओं की शक्ति,
कुछ कर नहीं पाती
...क्योंकि— मैं कायर हूं, बुज़दिल हूं ।।
हमको वोट दो ।
गरीबी हम मिटा देंगे ।
तन पे कपड़ा और
हर हाथों को श्रम
मुफ़्त मकान दिला देंगे ।
हम सहे जाते हैं इन
छल-कपट की बातों को ।
पर मेरी जुबां कुछ
कह नहीं पाती है ।
...क्योंकि मैं कायर हूं, बुज़दिल हूं ।।

● जी. राजेन्द्र कुमार

—५-३-१२८, गोषामहल,
हिंदी नगर, हैदराबाद-५०००१२

प्रश्न आज भी प्रश्न

ात, मटमैले मेघों के बीच
गती अरुणिमा को देखकर
प्रश्न कर उठा था— मेरा मन
कौन ? ऊषा
तुझे हिमकर की राधा कहूं
या दिनकर की परिणीता ?
कितना बड़ा विरोधाभास जुड़ा है
ऊषा की नियति से
एक की अभिशप्त बांहें
स्पर्श से पूर्व ही
आकाश के नीलांचल में
भटक जाती हैं/और दूसरा
जैसे ही इसकी मांग में
सिंदूर भरता है
ऊषा, ऊषा नहीं रह जाती
उसकी लालिमा/उसका स्वर्णिम प्रकाश
सब कुछ विलीन हो जाता है
दिवाकर की अरुण रश्मियों में ।
जगती का उजियारा
ऊषा के उत्सर्ग की
करुण कहानी नहीं तो/और क्या है ?
पाने-खोने की यह आंख मिचौनी
युगों से चली आ रही है ।
राकेश की प्रेयसी/रवि की परिणीता
ऊषा आज भी प्यासी है
तृप्ति का आलिंगन/आज भी अधूरा है
सिंदूरी लालिमा में/सुहाग का वैभव है
या चिर विरह के आंसुओं की
अनचाही मुसकान
प्रश्न आज भी प्रश्न है ।।

—डॉ. प्रतिभा गर्ग

७-१-५० बी. अमीरपेट, हैदराबाद-१६

स्मृति

स्मृति...
वैसे तो,
एक रंगहीन, गंधहीन,
मुरझाया-सा गुलाब ।
किंतु खटकती है,
खटकती रहेगी सदा,
कांटे की तरह,
उसकी मीठी चुभन ।

स्मृति...
तीत की बनायी हुई
एक धुंधली तसवीर,
मेल नहीं खाता जिससे
वर्तमान का चेहरा;
संजोये रखते हैं जिसे
फिर भी,
दिल के खजानों में

स्मृति...
टूटा-फूटा, पुराना,
एक ऐसा खिलौना,
जो न दिल ही
बहला सकता है,
और न जिसे
फेंका ही
जा सकता है ।

स्मृति...
जीवन की तपती
मरुभूमि में
एक मरीचिका,
जो और भी
बढ़ा देती है
क्लांत राही की
अनबुझ-सी प्यास ।

• एलिजाबेथ कुरियन 'मोना'

९३, मेथॉडिस्ट कॉलोनी,
बेगमपेठ, हैदराबाद-५०००१६

180
25/5/85

समस्या पूर्ति—१८५

सुरक्षा

8/83
21/5/85

प्रथम पुरस्कार

सपनेभर आसमान, जड़भर जमीन
सांझभर हवा, आंखभर पानी
जिंदगी गुलमोहर
भूल गये अपने गणगोत
परिधि और कक्षा
मिली जो सुरक्षा

148
2

—श्रीमती अरुणा दुबे

द्वारा—श्री पी. एल. दुबे
ए. सी. सी. फैक्टरी, कटनी-४८३५०४

द्वितीय पुरस्कार

आतंक-कातर आंखों ने सर्वस्व बचाने की लालसा
तीव्र और तीव्र कुलांचें, प्रण-प्राण की, बोध सेतु पर
शिकारी द्वारा आखेट गमन कस्तूरी लंघन
कृपण पंजों में कसमसाता चेतन, यौवन,
जीवन-भविष्य
''एक समाचार-कस्तूरीधारी मृग लुप्तता की ओर''
कभी नहीं—
वह कस्तूरी-स्वामिनी जननी, कामिनी, भार्या,
प्रेयसी भी है
कहीं मैं ही विषांध भुजंग बन बैठा, फन कुचले
जाएंगे मेरे
कल की अबला आज नेवला है जो सक्षम है करने
को अपनी सुरक्षा

—राजेश रंजन 'शैलेय'

रू. क्र. २३६, गवर्नमेंट कालेज हॉस्टल,
'सी' रोड, चर्चगेट,
बंबई-२०

तृतीय पुरस्कार

नहीं बच पाते
बुलट-प्रूफ में शिखर पुरुष
और
गर्भाशय के रक्षा-कवच में
कन्या-भ्रूण...
तब भला कैसी सुरक्षा ?

—डॉ. मदन

भारतीय विद्या मंदिर शोध
रतन बिहारी पार्क

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२०

सुरक्षा का... प्यार भरा उपहार

गृहलक्ष्मी

यूनिट प्लान

उस विशिष्ट महिला के लिए जिसने पूरे कर लिए हैं 18 साल:
वह आपकी बेटी, भतीजी, भांजी, पोती हो सकती है या कोई और जिसे आप अपना मानते हैं. या फिर आप स्वय हो.
विवाह के शुभ अवसर पर एक बेहतरीन उपहार जिस पर मिले उपहार कर मे 1 लाख रु. तक की विशेष छूट.

विशेषताएं

- एक असीमित अवधिवाला खुला प्लान.
- न्यूनतम निवेश 5000 रू. और उसके बाद 1000 रु. के गुणकों में. कोई अधिकतम सीमा नहीं.
- कोई भी व्यक्ति या अविभक्त हिंदू परिवार (एच यू एफ) किसी महिला के लिए इस प्लान में निवेश कर सकता है. महिला की उम्र कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए. इसके अलावा जिसने 18 वर्ष पूरे कर लिए हों ऐसी कोई भी भारतीय महिला अपने स्वयं के लिए भी इस प्लान में निवेश कर सकती है.
- पहिले वर्ष लाभांश नहीं दिया जाएगा. दूसरे वर्ष से वार्षिक लाभांश दिया जाएगा. जैसे के यदि आपका आवेदन अगस्त '94 में स्वीकार किया गया तो आपको जुलाई '96 के बाद से लाभांश मिलेगा.
- डिवीडेंड के पुनर्निवेश की सुविधा भी.
- एन ए वी आधारित पुनर्खरीद मूल्य पर आप तीन वर्ष के बाद किसी भी समय धन वापस पा सकते हैं.
- पूंजी वृद्धि की संभावना है.
- इस प्लान से प्राप्त आय पर धारा 80 एल की समग्र सीमा के अंतर्गत 10000 रु. तक कर लाभ मिल सकेगा.
- सामान्य उपहार कर छूट 30,000 रू. तक यदि अपनी आश्रित महिला को विवाह के समय पर यह उपहार दिया जाए तो उपहार कर में छूट 1 लाख रू. तक.

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

आपके सुनहरे भविष्य के लिए

म्युचुअल फंड्स और सिक्योरिटीज़ में किए गये सभी निवेशों में बाज़ार जोखिम होता है तथा सिक्योरिटीज़ बाजार को प्रभावित करनेवाले तत्वों व शक्तियों के अनुसार योजनाओं के एन. ए. वी में उतार-चढ़ाव आ सकता है. पिछला कार्यनिष्पादन अनिवार्यतः भावी परिणामों का द्योतक नहीं है. गृहलक्ष्मी केवल योजना का नाम है और किसी भी रूप में योजना की गुणवत्ता इसकी आगामी संभावनाओं या आय का द्योतक नहीं है. निवेश करने से पहले कृपया ऑफर डॉक्यूमेंट पढ़ लें.

मुख्य कार्यालय : बम्बई. आंचलिक कार्यालय : जीवन भारती, 13वीं मंजिल, टावर-II, 124, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001. **शाखा कार्यालय :** ☐ **नई दिल्ली :** जेम बिल्डिंग, 8-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, फोन : 3318638, 3319786. ☐ **जयपुर :** आनंद भवन, तीसरा तल, संसार चंद रोड, फोन : 365212. ☐ **कानपुर :** 16/79 ई, सिविल लाईन्स, फोन : 311856. ☐ **लुधियाना :** गोल्ड पैलेस, 455, माल रोड, फोन : 400373. ☐ **लखनऊ :** रिजैंसी प्लाज़ा बिल्डिंग, 5, पार्क रोड 232501. ☐ **चंडीगढ़ :** जीवन प्रकाश, सैक्टर 17-बी, फोन : 703683. ☐ **शिमला :** 3 माल रोड फोन : 4203. ☐ **आगरा :** सी-ब्लाक, जीवन प्रकाश, संजय प्लेस, महात्मा गांधी रोड, फोन : 350551. ☐ **इलाहाबाद :** यूनाईटेड टावर्स, 53, लीडर रोड, फोन : 53849. ☐ **वाराणसी :** पहला तल, डी-58/2ए-1, भवानी मार्किट, रथयात्रा, फोन : 63970. ☐ **देहरादून :** दूसरा तल, 59/3 राजपुर रोड, फोन : 26720. ☐ **यूटीआई संग्रहण केन्द्र :** ☐ **फरीदाबाद :** बी-614, नेहरू ग्राउन्ड, एनआईटी, ☐ **गाजियाबाद :** 41 नवयुग बाज़ार, निकट सिंघानी गेट.

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

१. दिवंगत—क. व्यतीत, ख. अतीत, ग. स्वर्गगत, घ. पूर्व ।

२. दिवास्वप्न—क. दिन में तारे दीखना, ख. हवाई किला, ग. खामख्याली, घ. अर्थहीन बात ।

३. सखाभाव—क. साथ चलना, ख. सद्‌भाव, ग. दानशीलता, घ. मैत्री ।

४. योगक्षेम—क. जोड़, ख. परिणाम, ग. कल्याण, घ. शुभ वार्ता ।

५. मनुहार—क. विनती, ख. सिफारिश, ग. कोमल वार्ता, घ. मन की हार ।

६. मनोग्राही—क. मन के अनुकूल, ख. मन द्वारा ग्रहण किया हुआ, ग. आकर्षक, घ. इच्छित ।

७. मनोमालिन्य—क. कलह, ख. संघर्ष, ग. मन की अपवित्रता, घ. मनमोटाव ।

८. वाग्युद्ध—क. फर्जी झगड़ा, ख. शब्दों का झगड़ा, ग. अभियान में कहे गये शब्द, घ. कड़वा बोल ।

९. वाङ्मय—क. वचन-संबंधी, ख. साहित्य, ग. वाणी, घ. कथन ।

१०. लावण्य—क. कोमलता, ख. भोलापन, ग. सुंदरता, घ. सुशीलता ।

११. लिप्सा—क. कामना, ख. पाने की इच्छा, ग. बदनीयती, घ. लालच ।

१२. संलाप—क. बातचीत, ख. संगीत का स्वर, ग. भाषण, घ. झगड़ा निबटाने की बातचीत ।

१३. वाग्मिता—क. पांडित्य, ख. भाषण-पटुता, ग. चतुराई की बातचीत, घ. निर्णायक बातचीत ।

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हो, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

उत्तर

१. ग. स्वर्गगत । जनता ने **दिवंगत** नेता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की ।

दिवम्=स्वर्ग । (व्युत्. -दिव्)

२. ख. हवाई किला, मनोराज्य । वह दिवास्व देखने का आदी है ।

(दिवा+स्वप्न)

३. घ. मैत्री, घनिष्ठता । सहपाठियों में **सखाभाव** होना चाहिए ।

(सखा+भाव)

४. ग. कुशल, मंगल । अतिथियों से पहले **योगक्षेम** पूछना चाहिए ।

(योग+क्षेम)

५. क. विनती, खुशामद । ट्रेन में बैठने के लिए यात्रियों की **मनुहार** करनी पड़ी ।

६. ग. आकर्षक, सुंदर । यह चित्र **मनोग्राही** है ।

(मनः+ग्राही)

७. घ. मनमोटाव । मित्रों के बीच किसी बात पर **मनोमालिन्य** पैदा हो गया ।

(मनः+मालिन्य)

८. घ. शब्दों का झगड़ा, कहा-सुनी । दोनों में सहसा **वाग्युद्ध** शुरू हो गया ।

(वाक्+युद्ध)

९. क. वचन-संबंधी । ख. साहित्य । हिंदी **वाङ्मय** का विश्व में महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

(वाक्+मय)

१०. ग. सुंदरता । घ. सुशीलता । **लावण्य** ही स्त्री का आभूषण है ।

(व्युत्. -लवण)

११. ख. पाने की इच्छा । धन की **लिप्सा** किसे नहीं होती ।

१२. क. बातचीत, वार्ता, गपशप । वह **संलाप** में संलग्न है ।

(व्युत्. -सम् -लप्)

१३. क. पांडित्य । ख. भाषण-पटुता । वह **वाग्मिता** में सर्वोपरि है ।

पारिभाषिक शब्द

Protection =संरक्षण
Abridgement =संक्षेप/संक्षेपण
Afforestation =वन-रोपण
Deforestion =वनक्षय
Presentation =प्रस्तुतीकरण
Demonstration =प्रदर्शन/निदर्शन

ज्ञान-गंगा

एवमेव नाई जीयते खलात्तत्र का
नृपतिवल्लभे कथा ।
पूर्वमेव हि सुदुःसहाऽनलः किं पुनः
प्रबलवायुनेरितः ।।

(सुभाषितावलिः ४२८)

खल से मनुष्य यों ही नहीं जीत सकता फिर वह यदि राजवल्लभ अर्थात राजा का प्रिय पात्र बना हुआ हो तो क्या कहा जा सकता है । अग्नि स्वाभाविक रूप से असह्य होता है फिर यदि वह प्रचंड वायु से प्रेरित हो तो क्या कहना है ।

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं
रतिः ।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते ।।

(महाभारत, उद्योगपर्व ३३/१९)

सरदी और गरमी, भय और अनुराग, संपत्ति और दरिद्रता जिसके प्रारब्ध कार्य में विघ्न नहीं डालते, वही व्यक्ति पंडित कहलाता है ।

यावच्च कुर्यादन्योऽस्य कुर्यादभ्यधिकं
ततः ।

(महाभारत, आदिपर्व ५६/१४)

दूसरा मनुष्य जितना उपकार करे, उससे अधिक ही उसका उपकार करना चाहिए ।

भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये ।

(युजर्वेद १९/३९)

पाप को विनाश करने के लिए अपने मन को भद्र-भावनाओं से युक्त बनाओ ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

हाथों में ही निहित है रोग क्षय की शक्ति

योगियों का कथन है कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक गोपनीय अलौकिक एवं अनुपम शक्ति का भंडार है । यह सुषुप्तावस्था में विद्यमान है । साधारण व्यक्ति इसका समुचित उपयोग कर पाने में पूर्णतः असमर्थ रहता है । फलस्वरूप इससे प्राप्त होने वाली महत्त्वपूर्ण चमत्कारिक उपलब्धियों से सर्वथा वंचित रहता है ।

परंतु यदि उन शक्तियों का सूक्ष्म निरीक्षण किया जाए एवं उन्हें जागृत किया जाए तो पायेंगे कि हम एक अनूठी ज्योति के स्रोत हैं । हमारा अंग-प्रत्यंग दिव्य शक्तियों से ओत-प्रोत है । हमारे अंतःकरण में शक्ति का महान सागर लहरा रहा है । केवल इसे पहचानने की आवश्यकता है । इस असीम शक्ति के बल पर संसार में असंभव कार्य भी संपन्न किये जा सकते हैं । इसके लिए इच्छा शक्ति के साथ-साथ आत्मचिंतन की भी आवश्यकता है ।

जब हमारी काया को कोई सूक्ष्म रोग सताता है तो हम तत्काल किसी चिकित्सक की शरण में जाते हैं । नाना प्रकार की औषधियों का सेवन करना प्रारंभ करते हैं । ये औषधियां तत्काल राहत तो प्रदान करती हैं, परंतु इनके दूरगामी प्रभाव होते हैं । कुछ समय पश्चात दबा हुआ रोग पुनः किसी अन्य जटिल रोग के रूप में सिर उठाता है जो शरीर को अत्यधिक कष्ट देता है । यदि हम अपने पंचतत्त्व से निर्मित शरीर की संरचना को भली-भांति समझ लें तो प्राकृतिक एवं यौगिक आध्यात्मिक क्रियाओं से उसे सदैव स्वस्थ रख सकते हैं और यदा-कदा रोगी होने पर अपनी चिकित्सा स्वयं कर सकते हैं । केवल इच्छा शक्ति व प्रभु की प्रार्थना की आवश्यकता है । शरीर में निहित असीम अलौकिक शक्तियों को अपनी हथेलियों में प्रविष्ट करानेभर की आवश्यकता है ।

अपनी दोनों भुजाओं को दोनों ओर फैलाकर हथेलियां आकाश की ओर ले जाएं । जैसे प्रभु से कुछ मांग रहे हों । मंत्र बोलकर हथेलियों को अपने सिर पर उलट दें । प्रभु से मांगी हुई जीवन शक्ति स्वयं हमारे शरीर में प्रविष्ट हो जाएगी । हम एक नवीन निर्मल दिव्य-स्फूर्ति से भरपूर हो जाएंगे । चेहरा अनुपम-आभा से जगमगा जाएगा ।

मंत्र निम्नलिखित हैं :

तेजो असि तेजो मयि धेहि
हे प्रभु ! तू तेजोमय है । मुझे तेज से भर दे ।
वीर्य असि वीर्य मयि धेहि
हे प्रभु ! तू वीर्यमय है । मुझे वीर्य से भर दे ।
बलं असि बलं मयि धेहि
हे प्रभु ! तू बलवान है । मुझे बल से भर दे ।
ओजो असि ओजो मयि धेहि
हे प्रभु ! तू ओजमय है । मुझे ओज से भर दे ।
मन्युं असि मन्युं मयि धेहि
सहो असि सहो मयि धेहि

हे प्रभु ! तू उत्साहमय है । मुझे उत्साह से भर दे ।

हे प्रभु ! तू सहनशक्ति युक्त है । मुझे सहनशीलता दे ।

उपरोक्त मंत्रों का पाठ करते हुए हम यदि अपने शरीर के रोगी अंगों का स्पर्श करेंगे तो वह क्रमंशः निरोग होकर आकर्षक व सुष्ठ होना प्रारंभ कर देगा ।

अंय मे हस्तो भगवानयं में भगवत्तर ।
अयं में विश्व भेषजोहयं शिर्षाभिभर्शन ।

(ऋग्वेद १०.६०.१२ अथर्ववेद ४.१३.६)

(अर्थात मेरा यह हाथ भगवान है । मेरा यह हाथ अतिशय भगवान है । मेरा यह हाथ सर्वऔषधि है । मेरा यह हाथ सर्वत्र शिव स्पर्शवाला है ।)

इस मंत्र से हमारे हाथ इतनी अधिक शक्ति प्राप्त कर सकते हैं कि हाथ को जहां-जहां स्पर्श करेंगे, वहां निरोगता स्वास्थ्य एवं सौंदर्य का बढ़ना शुरू हो जाएगा । मंत्र बोलते हुए हथेलियों को परस्पर रगड़कर गरम कर लेना चाहिए । सिर से लेकर पैरों तक स्पर्श करते हुए प्रभु से संपूर्ण शरीर हेतु स्वास्थ्य, बल व सौंदर्य मांगना चाहिए ।

मनुष्य की दोनों हथेलियों में रोग निवारक औषधियां निहित हैं । रगड़ कर गरम करने से औषधियों का प्रभाव हथेलियों की त्वचा में आ जाता है । सिर को स्पर्श करते हुए यह अनुभव करना चाहिए कि हमारी मेधा, बुद्धि व स्मरण शक्ति किस प्रकार सुविकसित हो रही है । पेशानी का स्पर्श करते हुए यह अनुभव करें कि पेशानी किस तरह ज्योतिमय एवं तेजोमय हो रही है । आंखों का स्पर्श करेंगे तो लगेगा कि आंखें किस प्रकार सुंदर एवं आकर्षक होती जा रही हैं । इसी प्रकार शरीर के प्रत्येक अंग को स्वस्थ, निरोगी व आकर्षक और कांतिमय बनाया जा सकता है । शरीर के जिस अंग में कोई कष्ट व पीड़ा हो, मंत्र पाठ करके, हथेलियों को परस्पर रगड़कर उन्हें गरम कर लेना चाहिए और रोगी अंग को कम से कम पांच मिनट तक सेंक देना चाहिए । इससे देखेंगे कि रोग शीघ्रता से दूर होगा ।

समस्त उपरोक्त क्रियाओं में मानसिक पवित्रता, श्रद्धा, प्रभु के प्राप्त समर्पण व चित्त की एकाग्रता का होना आवश्यक है । आत्मचिंतन, सत्संग व सरल सात्विक जीवन शैली से ही मनुष्य पवित्र रह सकता है । पवित्रता के बोध से शोध व शोध से सौंदर्य एवं स्वास्थ्य प्राप्त होता है ।

—अनिता कथूरिया

पांच लाख वर्ष पुराना जीवाश्म

ब्रिटेन के वेस्ट ससेक्स क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने लाखों वर्ष पुरानी पिंडली की हड्डी का जीवाश्म ढूंढ़ निकाला है । वैज्ञानिक इसे लगभग ५ लाख वर्ष पुराना मान रहे हैं । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह जीवाश्म दो मीटर लंबे और ८२ किलोग्राम वजनवाले पुरुष का है ।

— लक्ष्मी सोनी

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत-पत्र

हमारे देश में आजकल बेकार की बातों में ज्यादा बहस की जा रही है ।

धर्मनिरपेक्षता बनाम सेक्युलरिज़्म या राजनीति से धर्म को पृथक्करण से संबंधित बहसों को इस श्रेणी में तो नहीं रखा जा सकता । पर यह जरूर है कि ये महज बहसें ही हैं । व्यावहारिक तौर पर इनसे कोई फायदा हो रहा हो या होगा— कम से कम यह तो नजर नहीं आता ।

भाषाई बनावट के झगड़े को त्याग देना चाहिए । धर्मनिरपेक्षता का वास्तविक अर्थ क्या है ? यह प्रयत्न करना चाहिए कि धर्म के नाम पर जो कुत्सित राजनीति की जा रही है वह बंद हो— उस पर बंदिश लगायी जाए ।

अन्य लोगों के मतों के अनुरूप मेरा भी मत यही है कि 'सेक्युलर' शब्द का उचित हिंदी स्थानापन्न 'सर्वधर्म-सम-भाव' होना चाहिए । पर मैं इस बात का कतई पक्ष नहीं लेता कि हम 'धर्मनिरपेक्षता' बनाम 'सर्वधर्म समभाव' की बहस में ही खो जाएं । यह राक्षस की पूंछ हो सकती है, खुद राक्षस नहीं । हमें उस राक्षस का नाश करना है, जो देश को खाये जा रहा है— उसकी पूंछ को नहीं ।

सरकार द्वारा राजनीति से धर्म के पृथक्करण के प्रयास की जहां तक बात है तो जरूरत राजनीति को 'धर्म से नहीं' अपितु संकीर्ण सांप्रदायिकता से अलग करने की है । राजनीति में तो धर्म की मात्रा बढ़ाने की जरूरत है, ताकि अधर्म की शक्ति का नाश हो ।

संकीर्णताएं लोगों का भावनात्मक शोषण करती हैं । वास्तविक जरूरत तो इस बात की है कि हम हर ऐसी संकीर्णता को राजनीति से हटायें जो लोगों के भावनात्मक शोषण की माध्यम हैं । हमें अपनी बहस को इसी मुकाम तक लाने की आवश्यकता है । हमारा राक्षस तभी मरेगा— धर्मनिरपेक्षता या सर्वधर्म-सम-भाव की बहस से नहीं । कानून बनाने से ही अन्य समस्याओं की तरह इस 'भावनात्मक शोषण' को रोकना संभव नहीं होगा । इसे रोकने का उपाय है कि हरेक उस व्यक्ति को — जो मत देने का अधिकार रखता है—बौद्धिक रूप से इतना सबल बना देना कि वह इन का मूल्यांकन कर सके और भावनाओं की रौ में न बहे । उसे इतना सबल बुद्धिजीवी ही बना सकते हैं ।

—अरविंद कुमार

द्वारा श्री एस. पी. चौधरी, ह. लाहैरी, पो. एम. आई. टी.; मुजफ्फरपुर (बिहार) पिन-८४२००३

प्रत्येक अंक पठनीय

कादम्बिनी का कई वर्षों से नियमित पाठक हूं । कादम्बिनी के स्थायी स्तंभ हों या निबंध एवं लेख, हास्य-व्यंग्य एवं कहानियां हों या कविताएं, प्रत्येक का मैं भरपूर आनंद लेता हूं ।

'कादम्बिनी' का प्रत्येक अंक अपने आप में एक विशिष्टता लिए रहता है । प्रत्येक अंक चाहे वह विशेषांक हो या सामान्य अंक अपने-अपने स्थान पर वह खरा उतरता है । पत्रिका का प्रत्येक अंक पठनीय व संग्रहणीय होता है । साहित्य जगत में 'कादम्बिनी' ने एक विशेष पहचान बनायी है । **—चरण सिंह बघरी**

खाती, कपकोट अल्मोड़ा (उ.प्र.)

प्यारा दोस्त

कादम्बिनी पत्रिका हमारे घर की पुरानी दोस्त है । यह सभी को पसंद है । इस अंक (फरवरी) की कहानियां, काफी रोचक थीं । परंतु यात्रा संस्मरण 'हाजो' असम का नगर जो सांप्रदायिक एकता की मिसाल है, काफी रोचक रहा ।

कविताएं भी अच्छी थीं । कादम्बिनी इतनी स्वस्थ और उत्कृष्ट पत्रिका है जिसका इंतजार मैं माह के पहले दिन से ही करती हूं ।

—निवेदिता मिश्र 'हेना'

वन परिसर सिमडेगा, जि. गुमला, बिहार

हर अंक संग्रहणीय

'कादम्बिनी' इतनी सशक्त, ज्ञानवर्द्धक व उपयोगी पत्रिका है कि इसका हर अंक संग्रहणीय है । प्रत्येक लेख पठनीय होता है ।

—श्रीमती शशी मालू

वैशाली नगर, अजमेर (राज.)

बालाकि त पूरा समाज

फरवरी '९५ का अंक पढ़लीं । बहुत नीमन लागल ।

इहौ बुझाइल जे आपन पुरान रूप मा 'कादम्बिनी' लौटत बिया । इहै संतोष के बात बा !! राऊर, हमहनि के 'धनबाद' राखीं । ए अंक मा आजकाल के नेतवन पर अऊर उनकरा धतकरम से गंदा होत शासन प्रशासन पर बीचार पढ़े के आईल !!

फिलमवां मा जौन नंगा भड़ैती दिखावल जात बाऽऽ ओकरा से तनिको कम भंड़ैती इ नेता लोग नइसे करत !! आपन देसवा के गांधी बाबा भा अउरो लोग जौना रास्ता ले जाए चाहत रहे । का उहै रस्तवा पर हमहनीं के चलत बानी ?

हमार बाप दादा त हमहनीं के सपना देखवा -देखवा बना दिहलै ऊ का-स्वप्न दृष्टा !! अइसन भारत ओइसन भारत !! मिलल का ? आपो तऽ बाप-दादा के उमर के भइलीं— आपो गांधी-विनोबा के जमाना देखले बानीं ! हम नौजवानन के कौना भारत के दर्शन करवावत बानीं ! आपन नेता लोग विधान सभा भा संसद के चंडूखाना बूझत बारे !!

बेजान काया बन गईल बा समाज के— कौनो परान चिन्हानि देखात बा?? कौना देस में आज अजातशत्रु बाड़े जिनकरा से बलाकी जइसन लोगन के दरप दूर हो सकत बाऽऽ ! बालाकी त पूरा समाज भइल बा, लेकिन अजातशत्रु कहावै के कूबत के करा में बाऽऽ । आप हमनीं के बताइब ??

—आशुतोष पाण्डेय

सा.२/३९८ डी, पाण्डेयपुर, वाराणसी-२

सांस्कृतिक धरोहरों की उपेक्षा

फरवरी अंक में 'नष्ट हो रही है बिहार की...' शीर्षक से अशोक सुमन के तथ्यपरक लेख में यह तो स्पष्ट कर ही दिया गया है कि बिहार में पुरातात्त्विक और सांस्कृतिक धरोहरों की उपेक्षा चरम सीमा पर है ।

लेखक न शत-प्रतिशत सही कहा है कि सांस्कृतिक धरोहरों को संजोये रखना और उन्हें तस्करों से बचाना राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा करना है ।

—मोहन कुमार सरकार
भागलपुर

नष्ट हो रही बिहार की पहचान

लेख 'नष्ट हो रही बिहार की ऐतिहासिक पहचान' (फरवरी अंक) पढ़ा । यह सत्य है कि बिहार के चप्पे-चप्पे में पुरातात्त्विक अवशेष बिखरे पड़े हैं । किंतु केवल उत्सुकतावश पुरातात्त्विक धरोहरों/मूर्तियों को धरती के गर्भ से बाहर निकालने से क्या फायदा है ? जब हम उनका उचित रख-रखाव और उनकी सुरक्षा का प्रबंध नहीं कर सकते ।

—वनिता सिन्हा
विंध्यनगर, सीधी (म. प्र.)

इस लेख पर हमें ढेरों पत्र प्राप्त हुए हैं इनमें हैं—राजनंदन, सुलतानपुरी, नयी दिल्ली; हरिनारायणाचारी मिश्र, वाराणसी ।

वास्तविकताओं से सीधा साक्षात्कार

वैसे तो हर अंक ही संग्रहणीय होता है । 'कालचिंतन' यदि व्यक्ति पढ़े तदनुसार सोचे, और आचरण करे तो वस्तुतः जीवन की कला और वास्तविकताओं से सीधा साक्षात्कार होगा ।

मानवीय संवेदनाओं का कोई धर्म नहीं होता । मानवीय संवेदनाएं वर्ग औ वर्ण में विभाजित नहीं होतीं । मानवीय संवेदनाएं देश, काल और स्थान की पहचान नहीं करतीं...."

कालचिंतन के इन सूत्रों पर यदि जरा भी व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया जाए तो कदाचित आज के माहौल की गंदगी में 'सुपर पर्फ' की सफाई आ जाए । सुसंपादन एवं स्पष्टवादिता के लिए साधुवाद ।

—लालसालाल तरंग, जटेपुर, गोरखपुर

फरवरी ९५ अंक हाथों में है । काल-चिंतन पढ़ते-पढ़ते अचानक रुक जाना पड़ा । विचारों का अवतरण, अवधारणा और अनंत अनवरत अध्याय । उसके बाद लिखा मिला (अगले अंक में) तो अब मुझे और मुझ जैसे अनेक पाठकों को कादम्बिनी प्रणेता की प्रतीक्षा करनी होगी । **—सतीश गुप्ता,** भटनी, देवरिया

कादम्बिनी क्लब के संयोजकों से

आपको ज्ञात ही है कि कादम्बिनी का मूल्य बढ़ाकर ११/- रुपए कर दिया गया है । इन परिस्थितियों में हमें कादम्बिनी क्लब के वार्षिक शुल्क में भी कुछ वृद्धि करनी पड़ रही है ।

कादम्बिनी क्लब का शुल्क बढ़ाकर हमने ९०/- रुपये प्रति सदस्य एक वर्ष के लिए कर दिया है । कादम्बिनी का सामान्य वार्षिक ग्राहक शुल्क ११५/- रुपए प्रति सदस्य है । इस प्रकार अब भी पहले की तरह पच्चीस रुपए प्रति सदस्य की विशेष छूट 'कादम्बिनी क्लब' के सदस्यों को दी जा रही है । आशा है आपका सहयोग पूर्ववत् मिलता रहेगा ।

— संपादक

'राजनीति में भ्रष्टाचार रोकता है धर्म' में मौलाना वहीदुद्दीन खान का कथन धर्म और राजनीति दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, यथार्थ से बहुत दूर है । धर्म और राजनीति का मिलाप असंभव है, क्योंकि धर्म सत्य की खोज करता है तो राजनीति का सत्य से दूर का भी वास्ता नहीं ।

इतिहास गवाह है कि राजनीतिज्ञों ने हमेशा सत्ता प्राप्ति के लिए हर तरह का नैतिक और अनैतिक विधान ग्रहण किया है । राजनीति मूलतः विकृत नहीं लेकिन इसे समय-समय पर राजनीतिज्ञों ने विकृत किया है और अब वर्तमान राजनीति तो शालीनता, मानवता और कर्त्तव्यपरायणता की सीमाओं से कहीं आगे जा चुकी है ।

वर्तमान राजनीतिज्ञों की ख्वाहिश का इजहार शायर बशीर बद्र का निम्न शेर बखूबी व्यक्त करता है—

"तमाम मुल्क अंधेरों में डूब जाए तो क्या, वह चाहते हैं कि सूरज बस उन्हीं के घर में रहे"

—नवल भारतीय, अलीगढ़ (उ. प्र.)

इस लेख पर हमें ढेरों प्रतिक्रियाएं मिली हैं । इनमें प्रमुख हैं :—सुश्री शीला वैद्य, ऋषिनगर, उज्जैन, डॉ. शकुनचंद गुप्त आर्य लालगंज, रायबरेली (उ. प्र.), दिलीप 'राष्ट्रवादी', श्रीमाधोपुर (राज.), सूर्यकांत चतुर्वेदी सुदामानगर, इंदौर, इंद्रप्रकाश, नयी दिल्ली, रामप्रसाद वैशुब्राक्ष, नयी दिल्ली, शशिकांत झा गोड्डा (बिहार), बिजेंद्र चौरसिया मंडला (म. प्र.) ।

डॉ. गणेश नारायण चौहान
(होमियोपैथ राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर) द्वारा लिखित पुस्तकें

क्या खायें और क्यों
(भोजन के द्वारा चिकित्सा का व्यावहारिक रूप)
स्वस्थ रहने का रहस्य
मौसम के फलों, सब्जियों, मसालों आदि के सेवन से ही रोगों को दूर कर देने वाली और हर प्रकार की चिकित्सा में सहायक। 225 पृष्ठ की उक्त पुस्तक का नवां संस्करण, 35 रु. में मंगाएं।

भोजन के द्वारा चिकित्सा
मौसम के फल, सब्ज़ियाँ, मसाले आदि के उपयोग से अनेक रोगों की चिकित्सा स्वयं करें। पृष्ठ - 300, मूल्य: 50 रु. (सोलहवां संशोधित परवर्द्धित संस्करण)

शक्तिवर्धक भोजन
ताकतवर व स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक एवं विशेष शक्तिप्रद भोजन की सम्पूर्ण जानकारी हेतु अत्यन्त उपयोगी पुस्तक। पृष्ठ - 96, मूल्य : 16 रु. (पांचवा संस्करण)

श्रीमती राजकुमारी गुप्ता
द्वारा लिखित

इनको भी आजमाइये
घरेलू प्रयोगों द्वारा गृहस्थी की अनेक वस्तुओं का सही उपयोग करके अपने घर को सजाने-संवारने की कला सीखने के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक।
पृष्ठ - 96, मूल्य : 20 रु.

श्रीमती मिथिलेश गुप्ता
द्वारा लिखित

शाकाहारी व्यंजन विधियां
आधुनिक स्वादिष्ट शाकाहारी व्यंजनों का बेजोड़ संकलन। पृष्ठ - 248, मूल्य 50 रु.

उपर्युक्त पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा मंगाने के लिए 20 रु. एडवांस निम्नांकित पते पर भेजें।

नारायण प्रकाशन
213, राधा दामोदर की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
कादम्बिनी
विशेषांक की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय

वर्ष ३५, अंक ६,
अप्रैल १९९५

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

पी. सी. अलेक्जेंडर
मत बनो प्रधानमंत्री राजीव....................२३
डॉ. सुधा पांडे
वैदिक संस्कृति की जीवन यात्रा ----------२८
डॉ. लक्ष्मीशंकर व्यास
भारतेंदु के पत्र-प्रकाशकों के नाम--------४३
डॉ. रामजी सिंह
इंगलैंड में १२५ मील की पदयात्रा -------४८
हरि जोशी
शुभकामनाओं पर टिका देश -----------५७
धर्मेन्द्र रावत
खुलेंगे पट केदारनाथ के ---------------६०
अर्चना सौशिल्य
सिंदूर लगा देने से ही पति नहीं-----------६८

स्थायी स्तंभ : शब्द-सामर्थ्य- ४, ज्ञान-गंगा-५, आस्था के आयाम- ६, प्रतिक्रियाएं- ८, कालचिंतन-१४, आखिर कब तक-२० हंसिकाएं-४७, गोष्ठी-५४, इनके भी बयां जुदा-जुदा-७९, विधि-विधान-८०, बुद्धि-विलास-१०१, प्रवेश-१६७, यह महीना और आपका भविष्य-१७०, ज्योतिष : समस्या और समाधान-१७२, वैद्य की सलाह-१७४, तनाव से मुक्ति-१७६, नयी कृतियां-१७९, क्लब समाचार-१९४, क्लब रचनाएं-१९५, सांस्कृतिक समाचार-१९६, समस्या पूर्ति-१९८ ।

डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा
फैजाबाद अवध की नवाबी शुरुआत -----८३
डा. कपिलदेव द्विवेदी
वेदों में आयुर्वेद----------------------८८
बद्री प्रसाद जोशी
वे फिल्मी उद्योग के बादशाह -----------९३
कैलाश जैन
सफरनामा दियासलाई का ------------१०८
प्रह्लाद रामशरण
मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता -----------१११
डॉ. जगन्नाथ शर्मा
पीलिया का जड़ी-बूटियों द्वारा इलाज ----११६
डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी
पुराण कथाओं के पात्र पशु-पक्षी -------१२०
हबीब खान
किंडर गार्टन : के. जी. की शुरुआत -----१२६
गुरमीत बेदी
सुंदर और मेहनती : गद्दिनें-------------१३१
पद्म संभव
अपंग बच्चों का सहारा-----------------१३५
सुमन आदित्य
अपराध की दुनिया के शहंशाह --------१४५
डॉ. सच्चिदानंद झा
पौराणिक आख्यानों का वैज्ञानिक स्वरूप - १५१
रश्मि रमानी
प्रेम करना वास्तविकता है-------------१५१

आवरण छाया : योगेश आनंद ।

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

रमेश सर्राफ
शेखावाटी की नयनाभिराम हवेलियां-----१६२
डॉ. कृष्ण नारायण पांडेय
जल चिकित्सा ---------------------१६५

सार संक्षेप

पेट में पलते जानवर ----------------१८४

कहानियां

गुलाबदास ब्रोकर
मुझे और कुछ नहीं चाहिए -------------३५
मसऊद मुफ़्ती
मटका--------------------------७४
अनिता अनिलाभ
वह तीसरा-----------------------९७
बाला शर्मा
अधिकार-----------------------१०२
डॉ. हरिदत्त भट्ट शैलेश
वापसी-------------------------१४०

कविताएं

डॉ. गायत्री माहेश्वरी
नैनीताल : दृश्य-परिदृश्य -------------४०
प्राण शर्मा/डॉ. वीरेन्द्र शर्मा
मायूस है हर आदमी/पावन प्रीतिभरी नवगीत ४१
लक्ष्मी नारायण पांडेय/बृज अभिलाषी
नयन-कटोरे/गजल ----------------१३०

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल,**
मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल,**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज,**
उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह,**
प्रूफ-रीडर : **प्रदीप कुमार,**
कला विभाग-प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी ।**

....

संपादकीय पता : **'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

मूल्य : अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : **पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)** अन्य सभी देशों के लिए : **अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०) ।**

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।

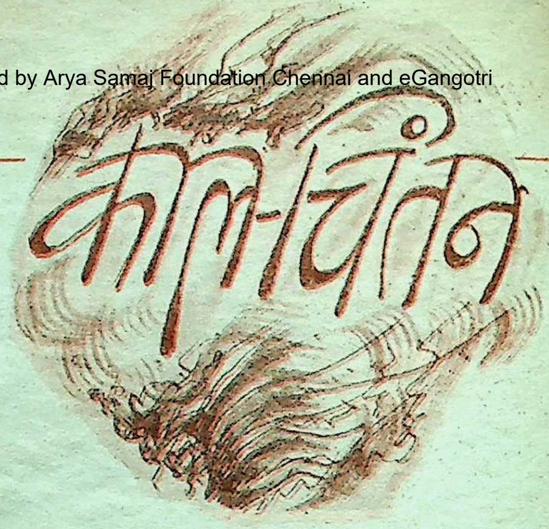

काल-चिंतन

— प्रश्न एक पाठक का : मन क्या है ?

□

— प्रश्न सहज नहीं है; मन की व्याख्या अनेक प्रकार से की गयी है । अनेक में से एक की खोज चेतना के द्वार खोजती है । खोजने का मार्ग सहज नहीं है ।

— मान लीजिए आप चंबल के वनों-घाटियों में फंस गये हैं ।

— मान लीजिए आप महासागर के बीच हैं, जहां से पृथ्वी के सभी छोर मीलों दूर हैं । अथाह जल, जल में चलता जहाज, जहाज के सर्वोच्च शिखर के बीच घिरा हुआ आपका शरीर और शून्य क्षितिज के नाम नितांत शांत बहते पानी से उभरते चीखते-चिल्लाते स्वर और फिर कहीं आंखें रुक सकें तो मात्र उछलती हुई छोटी मछलियां जो विद्युत की तरह श्वेत रोशनी बार-बार छोड़ती हैं ।

— मछलियां मात्र श्वेत हैं, वे जुगनू नहीं हैं ।

— आकाश निरभिमानी, पराजित धराशायी और तारों के चंदेवों से टंका सीधा पसरा है ।

— पानी और आकाश में अटूट मैत्री है ।

— महासागर का चलगामी व्यक्ति दोनों के बीच स्थित है, पिसता नहीं है लेकिन वह दोनों के बीच अपनी सजग चेतना का अस्तित्व बनाये हुए है ।

— पानी में ईमानदारी नहीं है । वह बरबस आंखों को पकड़ता है और मूक भाषा में मौन निमंत्रण देता है । चेतना छलनी हुई नहीं कि आप छलांग लगा देंगे ।

— आपका विश्वासी मन भी हथेलियों से झरते पसीने की तरह फिसल

जाएगा ।

— यात्राओं के बीहड़ मार्ग ऐसे ही छल-प्रपंचों से सावधान करते हैं और सोचने की प्रक्रिया को संपूर्णता का आयाम देते हैं ।

□

— बीहड़ वनों की गाथा कोरे कागजों में लिखी परिभाषाएं हैं । कलम नहीं हैं, उपक्रम लिखने का है ! विवेक-शून्यता का ऐसा दिवालियापन !

— कोरे कागज पर अंगुलियों के हस्ताक्षर । महासागर के अतल जल में परिभाषाओं की ऋचाएं ! महाशून्य क्षितिज को अंतिम सीमा स्वीकारना ! आकाश गंगा के सौंदर्य को देखकर सोचना कि यह सीधे दुपट्टे-सा मलमल की तरह हमारी सुकोमल हथेलियों में आकर आवृत्त हो जाएगा ।

□

— यह सब सोच नहीं है ।

— सोच नहीं है, तो वह कुछ भी हो सकता है कम से कम मन नहीं है ।

— (प्रश्नकर्त्ता ने परिभाषा की थी कि मन का अर्थ है सोचना)

— जीवन स्वयं गलत परिभाषाओं में आबद्ध है ।

— जीवन का तत्व और सत्व क्या है, कोई नहीं जान पाया ।

— नहीं कह सका कोई कि जीवन का धर्म क्या है ? जीवन कर्म क्या है ? जीवन का मर्म क्या है ?

— जीवन जगत है अथवा जगत जीवन है या दोनों के अस्तित्व-बोध किसी तीसरे चिंतन से जुड़े हैं ।

— यह तीसरा चिंतन जीवन और जगत के बीच एक लक्ष्मण-रेखा खींचता

है ।

— अलक्ष्मण रेखा विभाजन है । संयत करने का आदेश है और सावधान करना है कि विश्वास की सीमा होती है और विश्वास को विश्वास की सीमा में रखना आवश्यक है ।

— विश्वास का आरोग्य-धाम मानव-मस्तिष्क है ।

— मस्तिष्क पर्वतों, सागरों, महासागरों, धरती और धरती के कण-कणों से अधिक प्रभावी है ।

— मस्तिष्क ही चेतना का महाद्वार है ।

— महाशून्य मस्तिष्क से ही उभरता है और महाज्ञान भी मस्तिष्क की कोशिकाओं से बूंद-बूंद इस तरह टपकता है जैसे हिमसागर का एक छुत्र बिंदु अयाचित पड़े हुए पत्थर के किसी कोने से—अनजाने-अचानक नीचे आ गिरता है ।

— सोचना, समझना, पहचानना और परखना—ये सब विश्वास के अंग-रक्षक हैं ।

□

— इस लंबी पृष्ठभूमि में मनुष्य का अस्तित्व टिका है, ठीक उसी तरह जैसे विशाल महुए के वृक्ष में अनंत फल लगते हैं, लेकिन वर्षारंभ में वे सूर्योदय के पहले अपने आप श्वेत वस्त्रों में धरती पर टपकते हैं ।

— सूर्योदय के बाद महुए का श्वेत सौंदर्य रक्त कमल में बदलने लगता है । उसकी सुरभि समाप्त होने लगती है और मन की चेतन और अवचेतन

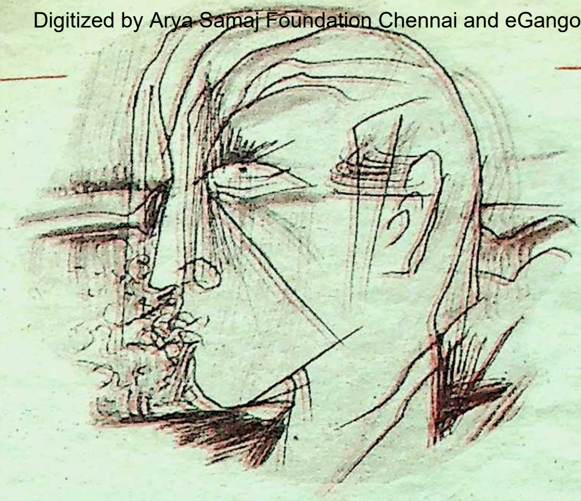

धारणा विवश कर देती है—ग्रहण करें तो किसे ? श्वेत पुष्प स्वादिष्ट है । परिवर्तित रक्त कमल मदिरा की आधारशिला है ।

— जीवन को स्वाद भी चाहिए और मदिरा भी ।

— प्रवंचनकारी मस्तिष्क दोनों का भक्षण चाहता है ।

— सोच लें, यहां आकर कि मस्तिष्क ही मन है तो ?

— मस्तिष्क की विशाल चेतना मात्र सोचने तक सीमित नहीं है ।

— वही मस्तिष्क कभी सोच के सभी द्वार अवरोधित कर हमें वाधित कर देता है ।

— वही मस्तिष्क सारे अवरोधों को पसीने की तरह बहा देता है और उभरा हुआ ज्वार पवित्र चेतना-खंड में बदल जाता है ।

— मस्तिष्क चेतन है ।

— मस्तिष्क अवचेतन है

— मस्तिष्क पराभूत क्षुन्न लौहपुंज है

— मस्तिष्क शक्ति है

— मस्तिष्क पराजय और पराभव है

— मस्तिष्क विकास है तो मस्तिष्क अवरोध भी है

— मस्तिष्क की अवधारणा परिभाषाओं की मोहताज नहीं है इसलिए कि संजीवनी है तो सुरा भी है, कृति है तो विकृति भी है, जीवन है तो निष्प्राण भी है ।

— शरीर की समग्रता में मस्तिष्क विविध आयामी है ।

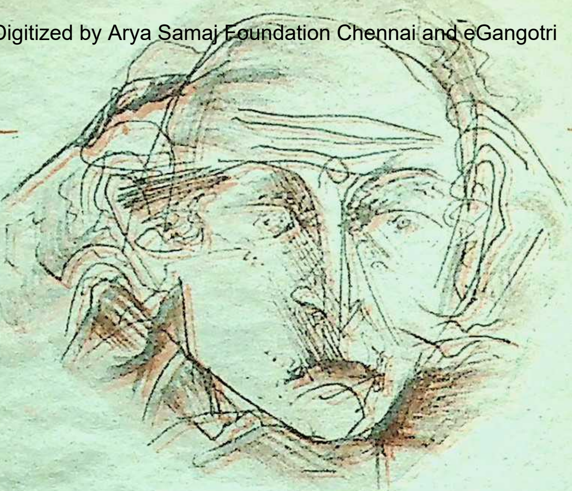

— विविध आयामी व्यक्ति या वस्तु या अवयव का कोई धर्म नहीं होता ।

— धर्म से परे हमारी जीवन-यात्रा का कोई भी क्षण या कण हो या न हो मस्तिष्क धर्म से परे है ।

— धर्म नहीं होगा तो सांस्कृतिक उपादान नहीं होंगे, मनुष्य का चरित्र नहीं होगा, मनुष्य का बहु आयामी व्यक्तित्व नहीं होगा; लेकिन मनुष्य धर्म के लिए ये सभी उपादान न तो जीवन दर्शन हैं और न जीवन-रक्षक हैं ।

— धर्म, जीवन और शरीर (यानी उपस्थिति) को भली-भांति समझकर यह मान लें कि इनका संचालक मस्तिष्क है तो अनेक भ्रम टूट जाएंगे ।

— मन को मस्तिष्क के साथ नहीं जोड़ा जा सकता ।

— मस्तिष्क व्यापक और अपार धनागार है ।

— मन मस्तिष्क के भीतर पलता हुआ वह कीड़ा है जो सीपियों में पलता है ।

— सीपियों से मोती निकलते हैं ।

— मन मोती हो सकता है, चिंतन का समग्र केंद्र नहीं, क्योंकि मन भ्रम भटकाव है । त्रासदी है और मनुष्य शरीर की विभीषिका है ।

— वही मन मनुष्यता की शालीनता है, वही मन मनुष्य को मनुष्येत्तर बनाता है और वह मन लौकिक और अलौकिक द्वार की कुंजियों को खोलता है ।

— यह सब तो है, लेकिन यही सब नहीं है । समंदर में सीप, सीप में पानी, पानी में पलता सचल जीवन और वही जीवन बदलता मोती; कहते हैं जिसके सीप में है मोती ।

— चेतना न सीप में है, न मोती में है, न समंदर में है, चेतना कहीं है तो उस

धरती में जिसके ऊपर तैर रहा है जहाज की तरह समंदर ।

— तब सत्य धरती हुई ।

— धरती का काम धारण है ।

— धरती सोच से परे है ।

— सोच कहीं मस्तिष्क से जुड़ा है, इसलिए सोच का संबंध कुछांश मस्तिष्क से है ।

— मस्तिष्क अंतिम सोच नहीं है ।

— अपने आप में जो अंतिम न हो वह अनश्वरता का दीप किसके लिए और कैसे जला सकता है ।

□

— मेरे दोस्त, मन सोचना नहीं है, सोचना मन की एक प्रक्रिया हो सकती है ।

— सोच भटकाव है और सोच निर्माण का दीप भी । उसे मन से मत जोड़िए ।

— मन तो भ्रम, विभ्रम, वेग, आवेग, आरोहण, अवरोहण, श्रम, विश्रम, शांत, अशांत और जीवन की नियति का स्थायी भाव अथवा संचारी-भाव सभी कुछ हो सकता है; हो सकता है वह कुछ भी न हो ।

— मन रेगिस्तान और मधु-मरीचिका के बीच पालने में झूलता हुआ जीवन-सुरभि है । मन को सोच के साथ जोड़कर अपने दिवालियापन का परिचय देना उचित नहीं है ।

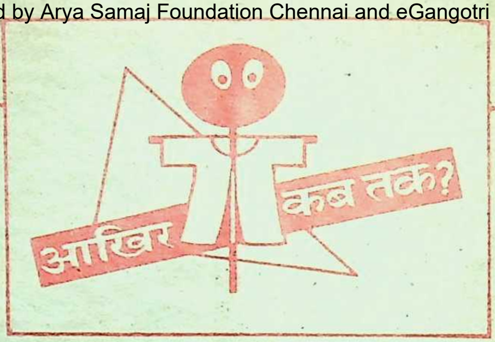

हमारे मनीषियों के मन में सदियों पहले जीवन के प्रति आस्था और विश्वास के मूल्य रहे हैं, तभी तो उन्होंने कहा था,

देखें शत शारदों की शोभा
जिएं सुखी सौ वर्ष
देखें नव कलरव में
सौ वसंत के हर्ष !

सौभाग्य से वसंत के महीने में ही मोरारजी भाई ने सौवें वर्ष में प्रवेश कर यह दिखा दिया कि आदमी अपने आचरण और दिनचर्या से व्यतीत के सपने को सच कर सकता है, मोरारजी भाई को मैं शुभकामना नहीं अपना प्रणाम निवेदित करता हूं ।

मोरारजी भाई को बहुत पास से वर्षों देखने-जानने-पहचानने का मुझे सौभाग्य मिला था । वे जितने विनम्र हैं, उतने ही अक्खड़ भी । कभी किसी के सामने वे झुके नहीं । मुझे याद है, उपप्रधानमंत्री के रूप में वे ५, राजेन्द्र प्रसाद रोड में रहा करते थे। माह में एक बार उनके यहां दिल्ली के साहित्यकार मिला करते थे । इसका आयोजन लगातार मैंने ही किया इसलिए हर घटना का दिव्य दृष्टा हूं । मोरारजी भाई अकसर पीछे के लान में सबके साथ बराबरी से बैठते थे और साहित्य, समाज तथा राजनीति से संबंधित अनेक विषयों पर चर्चाएं होती थीं । सबको खुले रूप से चर्चा करने का अधिकार था । मोरारजी भाई में विशेषता यह थी कि वे घड़ी के कांटे को देखकर ठीक पांच बजे लान में आकर बैठ जाते थे । हमारे साहित्यकार बंधु अपनी आदत के अनुसार कभी समय पर नहीं आये, लेकिन यदि दो-तीन लेखक भी आ गये हैं तो चर्चा शुरू हो जाती थी । एक बार एक अजीब घटना हो गयी । मोरारजी भाई ने गांधीजी के साथ बीते क्षणों के संस्मरण सुनाने शुरू कर दिये । हमारे साहित्यकार धीरे-धीरे आते गये । लगभग आधा घंटे में पचास-साठ लेखक पहुंच गये थे । मोरारजी भाई ने जो संस्मरण बताने शुरू किये तो बस, बोलते ही चले गये ।

मुझे याद आता है, देर से आये मोहन राकेश ने मोरारजी भाई को रोककर कहा, ''हम आपके यहां गांधीवाद का घोंटा सुनने नहीं आते हैं ।'' वास्तव में यह मोहन राकेश की ज्यादती थी, क्योंकि देर से वे ही आये थे । मोरारजी तो अपनी बात बहुत पहले से

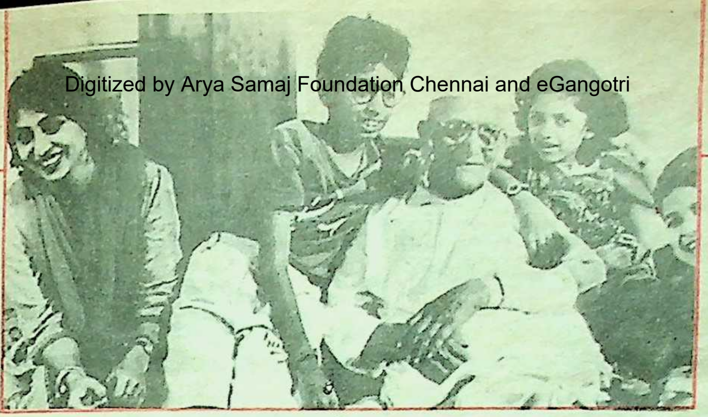

कह रहे थे । मोरारजी भाई आपा खो बैठे और जोर से बोले, ''यदि आप समय के पाबंद नहीं तो आपको अधिकार नहीं है कि आप मुझे बाध्य करें कि कुछ मैं कह रहा हूं, उसे अधूरा छोड़ दूं ।'' इस पर मोहन राकेश ने फिर कुछ कहा । यहां तक कह गये कि आप यह मत समझ लीजिए कि आप उपप्रधानमंत्री हैं, इसलिए हम आपकी चाटुकारिता करने आते हैं । बात जरूरत से ज्यादा बढ़ गयी थी । मोरारजी भाई ने मुझसे उसी समय पूछा, ''ये कम्युनिस्ट तो नहीं हैं ?'' मैंने कोशिश की कि इसका जवाब न देकर माहौल शांत करूं । मैंने विनम्रता से कहा, ''मोरारजी भाई, अब सभी लेखक आ चुके हैं । हम आज के निर्धारित विषय पर बातचीत शुरू करें ।'' मोरारजी भाई अपनी बात पर अड़े रहे । फल यह हुआ कि वह लेखकों की अंतिम मीटिंग सिद्ध हुई । न मोरारजी भाई झुकने को तैयार थे, न लेखक बंधु ! मोहन राकेश का साथ देनेवाली वहां कई आवाजें उभरने लगीं । अंत में यही हुआ कि मोरारजी भाई के साथ मैं भीतर चला गया । फिर उन्हें वहीं छोड़कर मैंने सभी मित्रों को चाय-नाश्ता कराया । मोरारजी भाई के इस अक्खड़पन को मैं कभी नहीं भूल सकता । मैंने मोरारजी भाई से इतना जरूर कहा कि ये सब लेखक आपके मेहमान हैं और आपके बुलाने पर आये हैं तो आपको धैर्य रखना चाहिए । उनका टका-सा जवाब था, ''मैंने उन्हें नहीं बुलवाया । पत्र तो आपने अपने हस्ताक्षर से भेजे ।''

मेरा खयाल है, पाठक आगे का पूरा प्रकरण समझ गये होंगे । उसे विस्तार से लिखना एक लेख का विषय है ।

एक दूसरी घटना रघुवीर सहाय को लेकर । रघुवीर सहाय को फोर्ड फाउंडेशन का निमंत्रण मिला था लेकिन वित्त मंत्रालय ने, जो मोरारजी भाई के पास था, उन्हें जाने की इजाजत नहीं दी । रघुवीर सहाय ने मुझसे आग्रह किया कि मोरारजी भाई से मैं उन्हें मिलवा दूं । मेरा सौभाग्य रहा है कि मोरारजी भाई से हमेशा बिना 'एप्वाईंटमेंट' लिए मिला हूं । यहां तक कि जब वे प्रधानमंत्री थे, तब भी मैं धड़ल्ले से उनके कार्यालय में पहुंच जाता था । अपनी आदत के अनुसार मैं रघुवीर सहाय को लेकर मोरारजी भाई के घर पहुंच गया । उन्होंने बहुत संयम से पूरी बात सुनी और फिर रघुवीर सहाय से कहा

कि फोर्ड फाउंडेशन के डॉयरेक्टर से कहिए कि वे मुझसे मिल लें । फोर्ड फाउंडेशन के डॉयरेक्टर का मिलना विनाशकारी सिद्ध हुआ । उन्होंने डायरेक्टर से कहा, "यू पैक अप इमीजिएटली एंड लीव दिस कंट्री विदिन थ्री डेज ।" बहुत-कुछ कहने के बावजूद फोर्ड फाउंडेशन के डॉयरेक्टर को भारत छोड़ना पड़ा और रघुवीर सहाय विदेश-यात्रा नहीं कर सके । मुझे लगता है, फोर्ड फाउंडेशन की गतिविधियों के बारे में मोरारजी भाई को पूरी जानकारी थी । अन्यथा वे इतना सख्त कदम कभी नहीं उठाते ।

मेरी यादों के दराज में बहुत कुछ है । अंत में एक छोटा-सा प्रसंग देकर अपनी बात खत्म करूंगा ।

मोरारजी भाई लगातार दस वर्षों तक 'नंदन' (बाल पत्रिका) में बच्चों के प्रश्नों के उत्तर देते रहे । 'ज्ञान वार्ता' शीर्षक स्तंभ में वे ये उत्तर लिखते । मोरारजी भाई प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपने हाथ से लिखते थे । मैं उन दिनों 'नंदन' का संपादक था । बातचीत के दौरान हमारे संस्थान के अध्यक्ष श्री कृष्णकुमारजी बिरला ने मुझसे पूछा कि तुम मोरारजी भाई को पारिश्रमिक देते हो ? मैंने कहा, 'नहीं' न उन्होंने कभी पारिश्रमिक मांगा । इतने बड़े आदमी को पारिश्रमिक देना ठीक नहीं समझा । वैसे भी मोरारजी भाई जो कुछ पैसा लेते थे, वह गुजरात विद्यापीठ को चला जाता था । श्री बिरलाजी ने मुझसे कहा कि उन्हें पारिश्रमिक देना चाहिए । पारिश्रमिक की एक राशि भी हमने तय कर ली । मैंने मोरारजी भाई को यह सूचना दी और कहा कि हम इस अंक से आपको पारिश्रमिक भी देंगे । उन्होंने तपाक से उत्तर दिया, "मैंने पारिश्रमिक नहीं मांगा । न मैं चाहता हूं । लेकिन यदि देना ही है तो जिस अंक से मैं लिख रहा हूं, उस अंक से पारिश्रमिक देना पड़ेगा ।" मैं सन्नाटे में आ गया लेकिन मैं जानता था कि उनके कहने में पूरी ईमानदारी है । दूसरे दिन ही कई वर्षों का पारिश्रमिक जोड़कर एक चेक हमने तैयार किया और मैंने स्वयं जाकर मोरारजी भाई को वह चेक दे दिया । यह बात इसलिए भी मुझे याद रहेगी कि उन दिनों हमारे संस्थान में हड़ताल चल रही थी और इसलिए चेक मुझे बनाना पड़ा और हस्ताक्षर उस समय के जनरल मैनेजर श्री जी.एन. साही से लेने पड़े । यह भी एक मिसाल है मोरारजी भाई के चरित्र की !

कुछ समय पहले बंबई के नये घर में जिसका नाम सारंग है, मैं उनसे मिला था । इस भेंट के बारे में मैं पहले भी लिख चुका हूं । इस समय इतना लिखना काफी है कि शरीर से अत्यंत क्षीण होने के बाद भी मोरारजी भाई में गजब की जीवनी शक्ति है । यदि वे एक दशक और पूरा कर लें तो मुझे आश्चर्य नहीं । ईश्वर उन्हें दीर्घायु करे और वे इच्छा मृत्यु के धनी भीष्म पितामह बनें ।

—राजेन्द्र अवस्थी

सोनिया का भर्राया हुआ गला

मत प्रधानमंत्री बनो राजीव !

डॉ. पी. सी. अलेक्ज़ेंडर भारत सरकार के अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे हैं । ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त व तमिलनाडु के पूर्व राज्यपाल भी रहे । इस समय डॉ. अलेक्ज़ेंडर महाराष्ट्र के राज्यपाल हैं । १९८१ से लेकर १९८५ तक उन्होंने इंदिरा गांधी तथा राजीव गांधी, इन दोनों प्रधानमंत्रियों की प्रमुख सचिव के रूप में सेवा की । वह गांधी परिवार के सबसे निकट रहे । इंदिरा गांधी की हत्या से लेकर बाद तक के घटनाक्रमों का उन्होंने अपनी पुस्तक 'द पेरिल्स ऑव डेमोक्रेसी' में वर्णन किया है । पाठकों के लिए प्रस्तुत है उसी के महत्त्वपूर्ण अंश :—

२९ अक्तूबर का दिन । इंदिरा गांधी दिल्ली से उड़ीसा के लिए रवाना हुईं । ३० को वह रात ८.४५ पर दिल्ली लौटीं । मैंने उनसे रात ९.१० पर एक सफदरजंग रोड पर मुलाकात की । यही मुलाकात मेरी उनसे आखिरी मुलाकात के रूप में भी तब्दील हो गयी । उस दिन भी वह वही संतरे के रंगवाली साड़ी में थीं । यही साड़ी उन्होंने उस दिन भी पहन रखी थी जिस दिन उड़ीसा में एक जनसभा में उन्होंने ऐलान किया था कि मेरे रक्त की प्रत्येक बूंद देश के लिए होगी । इन पंक्तियों ने और उनके ओजस्वी भाषण ने लाखों लोगों के दिलों को झकझोर दिया था, और यही पंक्तियां जनमानस के दिलो-दिमाग में छा गयीं, जिन्होंने उस दिन दूरदर्शन के परदे पर उनका भाषण सुना ।

उस रात वह कुछ थकी लग रही थीं । उन्हें यह कतई पसंद नहीं था कि कोई उनसे कहे कि आप आज कुछ थकी लग रही हैं । वह कभी अपनी थकावट का इजहार भी नहीं करती थीं । किंतु उस रात उन्होंने मुझसे कहा कि गरम मौसम में कई स्थानों पर कार और हेलीकॉप्टर की लगातार यात्रा से वह कुछ थकावट महसूस कर रही हैं ।

मैंने भी उन्हें कुछ थोड़ा चिंतित पाया । उस दिन सुबह एक कार जिसमें प्रियंका और राहुल बैठे थे, वह दिल्ली में ही किसी अन्य कार से भिड़ गयी थी । मुझे लगा कि शायद इस घटना से वह कुछ विचलित हैं ।

मैंने उन्हें बताया कि मैं परमाणु ऊर्जा आयोग

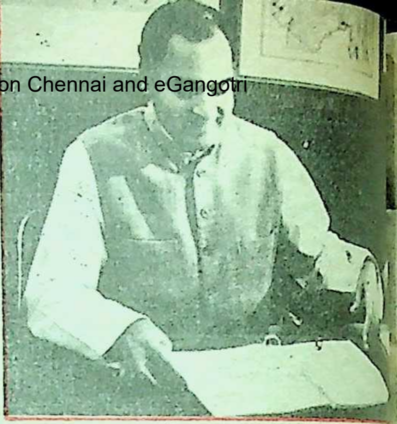

की बैठक में भाग लेने के लिए अगले दिन सुबह बंबई के लिए रवाना हो जाऊंगा । उन्होंने आर. के. धवन को बुलाया और कहा कि वह कल साउथ ब्लाक कार्यालय नहीं जा पाएंगी । अचानक उन्होंने निर्णय किया कि ३१ को वह आराम करेंगी ।

सर ! बुरी खबर है

आयोग के अध्यक्ष राजा रामन्ना ने बैठक में हमारा स्वागत करते हुए मजाकिया लहजे में टिप्पणी की कि मुझे कैबिनेट सचिव तथा प्रमुख सचिव दोनों का स्वागत करते हुए बेहद खुशी है । पर इसी के साथ वे दिल्ली में अनुपस्थित रहेंगे और इसका मतलब यह है कि अब देश की स्थिति शांतिपूर्ण हो गयी है । किंतु रामन्ना ने बहुत शीघ्र यह टिप्पणी की थी । कार्यक्रम के आयोजन में लगा एक व्यक्ति महत्त्वपूर्ण संदेश लेकर मेरे पास आया और बोला कि दिल्ली से आपके लिए एक बेहद जरूरी फोन है । दिल्ली से मेरा व्यक्तिगत सहायक फोन पर था । उसने बड़े दर्द भरे स्वर में कहा, सर मेरे पास बड़ी बुरी खबर है । प्रधानमंत्री को कुछ मिनट पहले ही गोली मार दी गयी है और उन्हें मेडिकल संस्थान ले जाया गया है । उनकी हालत अत्यंत गंभीर है ।

कुछ ही मिनटों के भीतर रामन्ना के कार्यालय ने हमारे लिए एक हेलीकॉप्टर की व्यवस्था की, ताकि हम एयरपोर्ट तक पहुंच सकें । मैं यह सोचकर बड़ा विचलित हो रहा था कि राष्ट्रपति, गृहमंत्री, वित्तमंत्री और यहां तक कि राजीव गांधी भी दिल्ली से बाहर हैं । अपना नियम ही पालन न कर पाने के अपराधबोध से मेरा मन स्वयं बैठा जा रहा था । एयरपोर्ट पर पहुंचने पर भी हम इंदिरा गांधी की हालत की ताजा जानकारी प्राप्त कर पाने में विफल रहे । वास्तव में प्रधानमंत्री के चिकित्सा दल के डॉक्टरों के अलावा उनकी हालत के बारे में जानकारी किसी बाहरी डॉक्टर को नहीं थी । उड़ान के आधे मार्ग पर कैप्टन हमारे पास आया और बोला कि दिल्ली से यह संदेश है कि चिकित्सा कार्य प्रगति पर है ।' इसका तात्पर्य यह था कि सर्जरी का काम चल रहा था । हमने सोचा कि अब उनके जीवन का खतरा नहीं होगा और उससे वह बाहर निकल आयी होंगी । पर आधे घंटे के बाद कैप्टन फिर आया और बड़े धीमे स्वर में भर्राये गले से बोला, 'सर ! दिल्ली से यह संदेश है कि सब कुछ हाथ से निकल गया है ।' इसका अर्थ यह था कि वह अब हमारे बीच नहीं रहीं । दिल्ली में उतरने के पहले कैप्टन ने हमें यह भी बताया कि प्रधानमंत्री पर उनके सुरक्षाकर्मियों ने ही गोलियां चलायीं ।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के बाहर हजारों लोग एकत्र थे । उनकी आंखों में आंसू थे । उन्हें तब तक यह नहीं पता था कि यह सब कैसे हुआ । इंदिरा गांधी की मृत्यु की खबर की तब तक घोषणा नहीं की गयी थी । यहां तक कि पार्टी के वरिष्ठ नेता और अन्य अधिकारी जो संस्थान के भवन के भीतर प्रवेश कर गये थे, उन्हें भी तब तक चिकित्सा दल के प्रमुख ने कुछ नहीं बताया था ।

उपराष्ट्रपति वेंकटरामन अपराह्न २.३० पर पहुंचे । वह सुबह भी संस्थान आ चुके थे तथा उन्हें पता था कि इंदिरा गांधी की मृत्यु हो चुकी है । जी. पार्थसारथी भी, जो पहले भी संस्थान आ चुके थे, पहुंच गये

सत्ता में शून्यता

हम सत्ता में एक शून्यता का सामना कर रहे थे । राष्ट्रपति देश से बाहर थे । प्रधानमंत्री की मृत्यु के साथ ही उनके मंत्रिमंडल की भी अपनी वैधानिकता खत्म हो गयी थी । राजनीतिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति के कुछ वरिष्ठ सदस्यों में गृहमंत्री पी. वी. नरसिंह राव, वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी-जैसे पार्टी के वरिष्ठ सदस्य भी दिल्ली से बाहर थे । यदि वे दिल्ली में होते तो प्रधानमंत्री की मृत्यु के बाद मंत्रियों के रूप में वे स्थिति पर नियंत्रण कर सकते थे । कांग्रेस शासित राज्यों के अधिकांश मुख्यमंत्री दिल्ली पहुंच चुके थे और आपस में वे विचार-विमर्श कर रहे थे । केंद्रीय मंत्रियों में शंकरानंद तथा शिवशंकर ऑपरेशन कक्ष के बाहर बरामदे में हमारे साथ शामिल हो गये ।

अंतरिम प्रधानमंत्री

उपस्थित लोगों में आपस में ही यह फुसफुसाहट शुरू हो गयी थी कि क्या कोई अंतरिम प्रधानमंत्री बनेगा ।

पहले की बात है जब दो पूर्व प्रधानमंत्रियों की प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए मृत्यु हुई तब अंतरिम प्रधानमंत्री के रूप में गुलजारी लाल नंदा को शपथ दिलायी गयी थी क्योंकि वह केंद्रीय मंत्रियों में उस समय सबसे वरिष्ठ थे । इंदिरा गांधी के मंत्रिमंडल में हालांकि स्पष्ट वरिष्ठताक्रम का कोई विभाजन नहीं किया गया था । पर प्रणव मुखर्जी को केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठकों के अनुमोदन के लिए तथा शिष्टाचार के अन्य कार्यों में सबसे वरिष्ठ माना जाता था । इसलिए यदि किसी को अंतरिम प्रधानमंत्री बनाया जाना है तो उन्हें शपथ दिलायी जा सकती थी । फिर भी, जो लोग उपस्थित थे, उनमें कुछ का दृढ़ विचार था कि अंतरिम प्रधानमंत्री नहीं बनाया जाना चाहिए तथा राजीव गांधी को ही, वह जैसे ही दिल्ली पहुंचे, तत्काल प्रधानमंत्री के रूप में शपथ दिलायी जानी चाहिए । उपस्थित दो केंद्रीय मंत्रियों का विचार था कि अंतरिम व्यवस्था टाली जानी चाहिए । वे इस वजह से एक सप्ताह के लिए भी प्रणव

चेन लगाकर
चैन की नींद सोयें

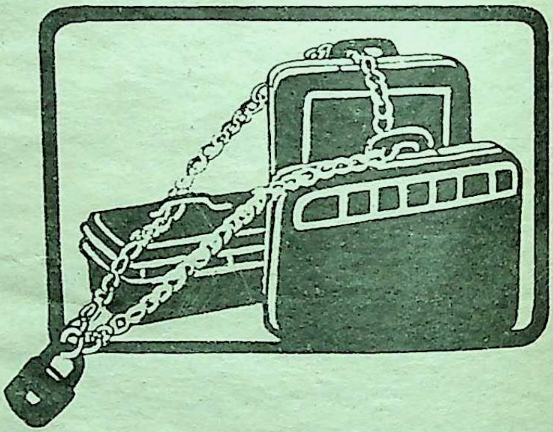

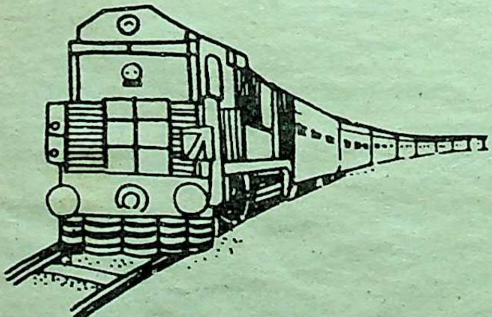

रेलयात्रा करते समय बेफिक्र रहें,
लापरवाह नहीं।
अपने सामान को सीट के नीचे
लगी चैन से बांधकर निश्चिंत रहें
और चैन से सोयें।

उत्तर रेलवे
– आप की सेवा में

मुखर्जी को अंतरिम प्रधानमंत्री बनाये जाने के विचार के विरोध में थे । प्रणव ने भी अंतरिम व्यवस्था के संबंध में कुछ नहीं कहा ।

सोनिया मना रही थीं

जब सभी इस बात में राजी थे कि राजीव का निर्णय इस संबंध में बहुत महत्त्वपूर्ण है तो मैंने कहा कि मैं राजीव से बात करूंगा । मैं कमरे के भीतर गया । मैंने भीतर जाकर जो दृश्य देखा वह अत्यंत दुखद था । राजीव शोक में डूबे थे । राजीव उस कमरे के कोने में सोनिया को दोनों हाथों से पकड़े हुए थे ।

राजीव ने मुझे तत्काल देखा कि मैं उनके पीछे खड़ा हूं और यह सोचा कि मैं उनसे बातचीत का उत्सुक हूं । मैंने निर्णय किया कि मैं सोनिया से उन्हें अलग करने की कोशिश करूं । पर वह सोनिया से अलग हुए । उनकी आंखों में इस आशय के भाव थे कि वह मान गयीं हैं ।

गांधी परिवार के निकट रही कुछ महिलाएं भी उस कमरे में आयीं । उन सबके बीच मुझसे बातचीत मुश्किल होते देख राजीव मुझे छोटे बाथरूम की ओर ले गये । राजीव तत्काल मेरी बात से सहमत हो गये कि राष्ट्रपति के आने तक सही और उचित प्रक्रिया की प्रतीक्षा की जाए और उनकी संस्तुति के साथ ही शपथ ग्रहण की जाए ।

इस्तीफे की पेशकश

व्यक्तिगत रूप से जहां तक मेरी बात है तो ३१ अक्तूबर १९८४ की सुबह मेरे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय अचानक खत्म हो गया था । मैंने शपथ ग्रहण के एक दिन बाद नये प्रधानमंत्री से कहा कि इंदिरा गांधी द्वारा प्रमुख सचिव के रूप में की गयी मेरी नियुक्ति उनकी व्यक्तिगत नियुक्ति थी और मैं अपना इस्तीफा उन्हें सौंप रहा हूं ताकि वह खुद अपना सचिव चुन सकें । बाद में मैंने लिखित इस्तीफा उन्हें सौंप दिया । किंतु प्रधानमंत्री ने मुझसे बड़ी आत्मीयता से कहा कि 'मैं चाहता हूं कि आप प्रमुख सचिव के रूप में कार्य करते रहें । राजीव के साथ काम करते हुए भी मुझे कोई खास परिवर्तन नहीं लगा क्योंकि मैं उन्हें तब से भली-भांति जानता था जब से मैंने उनकी मां के सचिवालय में काम करना शुरू किया था ।

प्रधानमंत्री और शिष्टाचार

३ नवंबर की बात है । उस दिन काफी रात हो चुकी थी । प्रधानमंत्री ने कुछ जरूरी कार्य के लिए मुझे फोन किया । एक सवाल के उत्तर में मैंने कहा, 'यस, सर !' इन बीते दिनों में मैं उन्हें 'राजीव' के नाम से ही संबोधित करता था । उस रात पहली बार मैंने उन्हें 'सर' कहा । दूसरी तरफ कुछ क्षण की चुप्पी रही और फिर राजीव ने मुझसे बड़ी कोमल एवं मधुर आवाज में कहा, 'डियर अलेक्जेंडर ! आप मुझे 'सर' क्यों कह रहे हैं ? आपको ऐसा नहीं करना चाहिए ।'

मैंने कहा, '३१ की शाम से आप प्रधानमंत्री हैं और मैं आपका सचिव हूं । मुझे अब या तो मि. प्राइम-मिनिस्टर कहना चाहिए या 'सर' । मेरे लिए मि. प्राइम-मिनिस्टर शब्द बेहद औपचारिक था । इसलिए मैं 'सर' कहना ज्यादा पसंद करूंगा । फिर कुछ क्षणों की चुप्पी रही और इसके बाद उन्होंने मुझसे बातचीत शुरू की । शायद राजीव ने यह तथ्य स्वीकार कर लिया कि शिष्टाचार का भी प्रधानमंत्री के जीवन में एक अपना अलग स्थान है । ●

वैदिक संस्कृति की जीवन यात्रा-१

अभी तक पाठकों ने उपनिषद् की कथाएं पढ़ी हैं । संस्कृति के प्रारंभिक सोपान को चित्रित करनेवाली कथा वेद, ब्राह्मण ग्रंथों एवं पुराणों के स्त्रोतों पर आधारित है । समस्त वैदिक ग्रंथों में नीरस दर्शन और विज्ञान के जटिल सूत्रों का संगुफन है । पाठकों के लिए कथा रूप में प्रस्तुत करने एवं सरसता बनाये रखने के लिए कहीं-कहीं काल्पनिकता का प्रश्रय लेना अनिवार्य प्रतीत हुआ है । प्रस्तुत है वेद पुराण में वर्णित मानव संस्कृति के विकास के पूर्व की 'कथा' और देवों-असुरों की जीवन यात्रा :

सहजन्या की मुक्ति

● डॉ. सुधा

ऋतुपर्व का चिरप्रतीक्षित दिन समीप आ गया था । असुरों की राजधानी चतुर्दिक नव वधू की भांति सुसज्जित की जा चुकी थी । हरी भरी चादर ओढ़े लहलहाती कृषि नवयौवना-सी इठला रही थी । कुछ खेतों से फसल कट चुकी थी । दानों को भूनकर बांटने की तैयारी हो रही थी ।

केलिविलास का प्रमुख उत्सव ऋतुपर्व का वह दिन ! मार्गों पर विपुल कौलाहल बढ़ चला । संपूर्ण जनसमूह गढ़ के उसी ओर एकत्रित होने लगा था, जहां खेल का मैदान वनाया गया था । लंबे-चौड़े मैदान के चारों ओर मिट्टी का ढाल था, जहां से दर्शक अंदर की क्रीड़ाओं का आनंद ले रहे थे । एक तरफ पाषाण शिला के कक्ष में व्याघ्रचर्म पर असु राजा वृत्रासुर बैठे थे और क्रीड़ा करनेवाले असुरों को प्रोत्साहन दे रहे थे तो दूसरी तर आसपास दूसरे कुलों के अधिपति भी विराजमान थे !

महिष पर आरूढ़ एक युवक राजधानी ओर बढ़ा जा रहा था । श्यामल कांति, वि नेत्र, सुडौल नासिका और अपूर्व लावण्यम वह युवक हठात् दूसरों को अपनी ओर अ कर रहा था । पथ पर सभी लोग आश्चर्य उसी युवक की ओर देख रहे थे ।

"पता नहीं यह किस कुल का पुरुष है शत्रु है या मित्र है ?" एक असुर ने दूसरे कान में फुसफुसाते हुए कहा ।

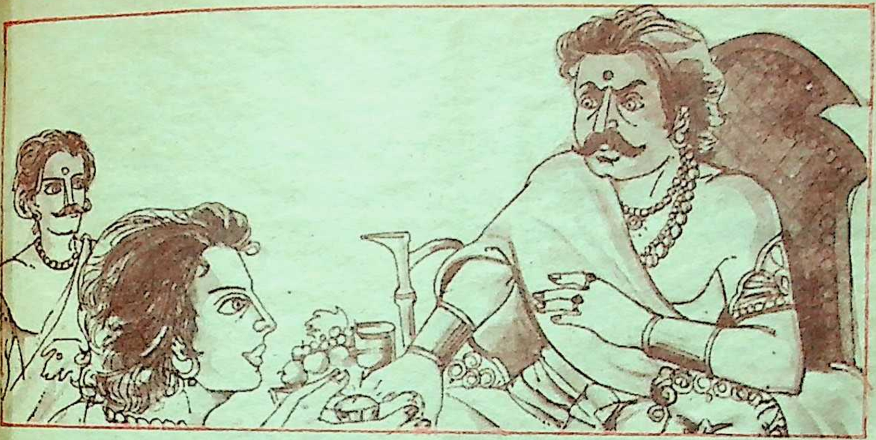

"असुराधिपति वृत्र से शत्रुता करने का किसे साहस है ? हमारे महाराज का यश, वैभव और प्रताप सर्वत्र फैला है । उसी को देखने लोग दूर-दूर से आते हैं"—दूसरे असुर ने उत्तर दिया ।

लेकिन इसका लावण्य भी तो कम नहीं । देखो हमारी असुर स्त्रियां उसकी ओर कैसी मुग्धदृष्टि से निहार रही हैं । देखना हमारी रमणियां अवश्य उसे नृत्य में साथी बनाने को उत्कंठित रहेंगी । एक असुर व्यंग्य कर रहा था । देखो उसने कैसी मणियां धारण की हैं, वैसी तो हमारे यहां नहीं होतीं !

युवक इन सब बातों से अनभिज्ञ, मार्ग में रेंगती बैलगाड़ियों की रेखा को पार कर गढ़ के द्वार तक पहुंच गया था । उसे देख एक असुर ने दौड़ कर द्वारपाल से कुछ कहा और कुछ पल बाद वही असुर द्वारपाल के साथ अंदर चला गया ।

"सेनापति की जय हो ।" युवक असुर ने कहा "वरुण राज तुम पर कृपा करें" सुसज्जित कक्ष में विराजमान सेनापति कालिकेय का स्वर था । "मैं असुर राज की सेवा में उपस्थित होने जा रहा हूं, कोई विशेष बात हो तो कहो चर ।"

सेनापति, गढ़ में इस समय एक नाग ने प्रवेश किया है ।

सेनापति चिंतित हो उठे । क्षणभर मौन रहकर बोले—"नाग ! वह किस कुल का है । तुमने उसे वहीं रोक क्यों नहीं दिया ।"

"आज ऋतुपर्व का दिन है । असुराधिपति के आदेश से आज सब स्वतंत्र हैं । किसी पर कोई प्रतिबंध नहीं है । यहां तक कि आज असुर स्त्रियां भी आमोद-प्रमोद मनाने को स्वतंत्र हैं । असुरराज ने यह उत्सव और ये नियम इसीलिए बनाये थे कि इस धरती पर रहनेवाले सभी प्राणी मिल-जुलकर रहें और असुर सभ्यता का प्रताप देखें । शत्रु विचलित हों और मित्र समृद्ध हों । अधिक से अधिक संख्या में नाग, गंधर्व, यक्ष, किरात, पिशाच असुरधर्म को स्वीकारें, वरुण के उपासक बनें । युवक ने सेनापति से कहा ।

"ठीक है चर, तुम उसे देर तक बाहर रोक रखो । उसे इस बात का पता न चले कि हम वृत्रासुर से इस बात पर विचार करने जा रहे हैं",

यह कहते हुए सेनापति लंबे-लंबे पग बढ़ाते हुए असुरराज के कक्ष की ओर चल पड़े ।

इस समय कक्ष के सामने दो असुरों में मल्लयुद्ध हो रहा था । बलशाली योद्धा दो विशाल पर्वतों की भांति आपस में भिड़े हुए थे । प्रखर सूर्य के ताप से उनका सारा शरीर पसीने से नहा गया था । सुदृढ़ मांसपेशियां मानो संपूर्ण शक्ति के साथ बाहर आने को व्यग्र थीं । 'असुराधिपति की जय हो' कहते हुए सेनापति ने कक्ष में प्रवेश किया ।

"अरे सेनापति ! आज तुमने बड़ी देर कर दी । ठीक है आलस्य दूर करने के लिए इन दोनों में जो विजयी हो, उसके साथ तुम्हारा युद्ध होना चाहिए ।"

"असुराधिपति की जो आज्ञा" कहकर अन्यमनस्क भाव से सेनापति ने पुनः विनम्र भाव से निवेदन किया—"असुरराज गढ़ में एक नाग आया है ।"

"अवश्य अहिराज का चर होगा । उन्होंने हमारे लिए भेंट भेजी होगी । अहिराज व नागों ने हमारी अधीनता स्वीकार कर ली" असुराधिपति बोले ।

अचानक क्रीड़ागार में भीषण कोलाहल होने लगा । विजयी असुर पराजित हिरण्यनाभ की छाती पर पैर रखकर हर्षध्वनि कर रहा था । दर्शक आनंदित होकर उसका अभिनंदन करने को आतुर हो उठे ।

वृत्र ने संकेत कर विजयी असुर को अपने समीप बुलाया । पास रखे भांड से चषक में वारुणी भरकर पुरस्कार स्वरूप उसे प्रदान किया । विजयी असुर गदगद हो उठा । क्रीड़ागार में पुनः आनंद की लहर दौड़ने ल अब मल्लखंभ क्रीड़ा शुरू हो चुकी थी । नारियां भी उत्साह से इस क्रीड़ा में सम्मिलि हुई ! सहसा एक चर ने कक्ष में प्रवेश कि "असुरराज की जय हो ! एक नाग महाराज दर्शनों के लिए द्वार पर प्रतीक्षा कर रहा है ।

"उसे उपस्थित किया जाए" वृत्र ने क्रीड़ा का आनंद लेते हुए कहा ।

महान तेजस्वी, पुष्ट देह और प्रबल आत्मविश्वास से भरे व्यक्तित्ववाले वृत्र के स पहुंचकर, वह आगंतुक पलभर को स्तब्ध ठिठक गया । किंतु दूसरे ही क्षण अपने को संयत कर उसने प्रणाम करते हुए कहा—"असुरराज की जय हो । मुझे अहि ने भेजा है ।"

"महान वरुण तुम पर कृपा करें । अहि कुशल से तो हैं ।" वृत्र ने पूछा ।

"आपकी अनुकंपा है, महाराज ।" यह कहते हुए उसने उत्तरीय से बहुमूल्य मणि निकाली और कहा—"असुरराज के लिए में यह बहुमूल्य मणि भेजी है ।" मणि पर की किरणें पड़ रही थीं । द्विगुणित किरणों वह चमचमाती मणि सभी के नेत्रों को चक करने लगी ।

"पर यह मणि अहिराज को कहां से मिली ?"

"इसे एक पणि से क्रय किया था असुरराज ! दक्षिण पूर्व के घने वनों में ये मणियां भूमि पर मिलती हैं । उस ओर के कुलों में ये मणियां बहुत हैं ।" युवक ने उत से कहा ।

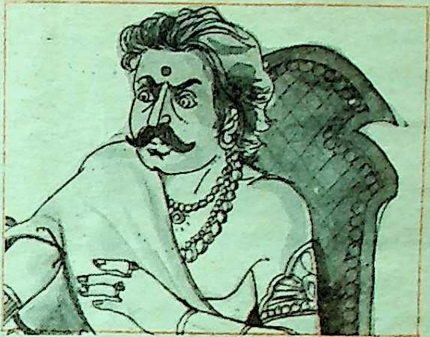

"असुरराज ! अहिराज ने एक विशेष संदेश के लिए भेजा है मुझे ।"

"निसंकोच कहो ।"

"अहिराज ने कहा है कि 'उत्तर में जिन देवों को आपने आश्रय दिया है, उनमें विद्रोह के लक्षण पनपने लगे हैं । अतः असुरराज उन्हें पीछे भगा दें ।'"

वृत्र उत्तेजना से भर गया । मेघ गर्जना की भयंकर अट्टहास करते हुए बोला—"अहिराज उन देवों से घबड़ा गये, जो असुर वर्ग का ही एक कुल हैं जो गायें और अश्व पालते हैं । कुछ कृषि करना भी सीख ली है । फिर भी वे कृषि के लिए तो हम पर ही निर्भर हैं । वे भी शिकार करते हैं । हमारे ही समान वरुण और अग्निपूजा करते हैं । बिलकुल असभ्य ! केवल एक बात में कुशल हैं वे, रमण में ।" असुरराज ने गर्व से अपनी दृष्टि चर पर जमा दी । असुरराज अधिक मदिरापान के कारण अहंकार से अनर्गल प्रलाप करते जा रहे थे ।

"चर ! अहिराज से कहना देवों की ओर से वे बिलकुल चिंता न करें...असुरों के रहते देवताओं का आधिपत्य संभव नहीं ।"

'सर्वनाग ! सुना है नाग भी वर्ष में कई उत्सव मनाते हैं...' असुरराज अब प्रसंग बदल चुके थे ।

"हां ! महाराज ! कुछ उत्सव धार्मिक होते हैं, कुछ क्रीड़ोत्सव, युवकों के साथ युवतियां भी सम्मिलित होती हैं ।"

"अगले वर्ष ऋतुपर्व में तुम्हारे यहां की क्रीड़ाओं को भी स्थान दिया जाएगा ।" वृत्र ने सूचनाओं में रुचि लेते हुए कहा ।

सर्वनाग गर्व से भर उठा । उत्साह में वह कहता गया—"सबसे रोमांचक क्रीड़ा मत्त महिष के साथ क्रीड़ा होती है । यह हमारी प्रमुख क्रीड़ा है । मेरी पत्नी स्वयं प्रसिद्ध महिषमर्दिनी है । क्रीड़ागार में मत्त महिष के सामने कटि में छोटा वस्त्र धारण कर वह उतर पड़ती है और नाना मुद्राओं से क्रीड़ा नृत्य करते हुए महिष को खिझाती है । देहसुषमा और चपलता से वह सारे नगर को विस्मित कर देती है । काफी देर तक महिष से क्रीड़ा करने के बाद उसे बांधकर मातृदेवी के सामने बलि देती है । सारा नगर इस क्रीड़ा को देखने उमड़ पड़ता है ।

कक्ष में उपस्थित सभी सर्वनाग के इस विस्मयकारी खेल के बारे में सुनकर स्तब्ध थे । तभी 'असुरराज की जय हो' कहते हुए एक तरुणी ने प्रवेश किया, उसके साथ दो अन्य युवक भी थे ।

अनावृत्त यौवन, विद्युतप्रभामयी काया, नीलमणी रक्ताभ नेत्र, मदिरारंजित अधर, गहन केश राशि और क्षीण कटि पर शोभायमान मेष चर्म...उस तरुणी की छवि को वृत्र अपलक देखते रह गये ।

यह सहजन्या अप्सरा है, असुरराज ! हम गंधर्व हैं । सोम बेचकर लौट रहे थे । मार्ग में

उत्सव देखकर रुक गये हैं । उनके हाथ में एक काष्ठ यंत्र था ।

"मैं सहजन्या अप्सरा नृत्य दिखाने की अनुमति चाहती हूं..." उन्नत यौवन तरंगित हो उठा था ।

वृत्र मुग्ध हो चुका था, नेत्रों के संकेत से उसने नृत्य करने की अनुमति दी ! गंधर्व काष्ठ यंत्र बजाने लगे ।

सूचीभेध नीरवता व्याप्त हो गयी । कुछ क्षणों तक अप्सरा नृत्यमग्न थी । लंबे केश बिखरकर मुख मंडल के सौंदर्य को और अधिक सुंदर बना रहे थे । अनावृत्त देहवल्लरी, उन्मुक्त केशराशि में बिजली के समान थिरकने लगी । अद्भुत सुर बंध गया था । तन्मय होकर नृत्य करती अप्सरा के वस्त्र कब शिथिल हुए उसे ज्ञात नहीं हुआ । नृत्य सम पर आया... । सहजन्या ने भूमि पर पड़ा कटि वस्त्र उठाया । मुक्त कुंतल राशि संवारी और मुग्ध भाव से असुरराज को नमन किया ।

"अति सुंदर ! असुरराज करतल ध्वनि कर उठे और सर्वनाग की ओर मुड़े...'सर्वनाग ! आज हम प्रसन्न हैं तुमने हमें नयी सूचनाएं दी हैं, और इस अप्सरा ने सुंदर नृत्य दिखाया है । हम इस सहजन्या को तुम्हें प्रदान करते हैं ।"

"असुरराज ! बिना मुझसे पूछे आप मुझे किसे प्रदान कर रहे हैं ?" सहजन्या कातर हो उठी ।

वृत्र की भृकुटियां तन गयीं । क्रोध से नथुने फड़कने लगे । उपस्थित जनसमूह कांप उठा । तभी सेनापति ने बात आगे न बढ़े, इस आशा से कहा—"सहजन्या तुम्हारे नृत्य से प्रसन्न होकर असुरराज ने तुम्हें सर्वनाग-जैसा सुंदर पति दिया है ।"

"अप्सरा पति का वरण नहीं करती असुरराज । यदि आपकी इच्छा है तो मैं इसकी भोग्या बनकर इसे संतुष्ट कर सकती हूं ।"सहजन्या ने कुछ सहज होते हुए कहा।

"वृत्र की आज्ञा की अवहेलना का साहस किसी में नहीं है ।" अपने आदेश पर आघात होते देख वृत्र और अधिक क्रोधित हो उठे थे

एक गंधर्व हाथ जोड़कर याचना करने लगा—"असुरराज ! अप्सरा क्रीड़ा नारी होती है । अपनी इच्छा की स्वामिनी । गंधर्वों में विवाह की अलग प्रथा है ।"

दुःसाहसी ! व्यर्थ संवाद मत कर । असुर विवाह में स्त्री के बदले धन देकर विवाह होता है...वृत्र गरजे ।

"लेकिन असुरराज...इस प्रकार छल कर यह विवाह । गंधर्वराज अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाये थे कि सेनापति झपटे और एकबारगी ही उसका सिर धड़ से अलग कर दिया । वलय, शुंभ आदि अनेक असुर दौड़े आये । दूसरे गंधर्व की ओर मुड़ते इससे पहले वृत्र ने उन्हें रोक दिया । "क्या तुम्हें भी उसी गंधर्व के पास जाना है ।" वृत्र ने दूसरे गंधर्व से पूछा । निरुपाय पराजित गंधर्व उनके पैरों में गिर पड़े ।

"उठो ! हम तुम्हें अभयदान देते हैं । अपने राजा से कहो कि वह भी अपने राज्य में असुर विवाह की पद्धति प्रारंभ करे । इस नारी के मूल्य में यह स्वर्ण खंड उसे दे देना ।" वृत्र अधिकार गर्व से भर उठा...अप्सरा थर-थर कांप रही थी, क्षणभर में गंधर्व उठा और दौड़कर वहां एकत्रित भीड़ में लुप्त हो गया ।

वृत्र ने सर्वनाग की ओर उन्मुख होकर कहा—"सर्वनाग ! जाओ इस अप्सरा पत्नी के

साथ अपने घर लौट जाओ । वरुण तुम्हारी रक्षा करें । अहिराज से कहना इन देव चरवाहों से न डरें, व्यर्थ की चिंता छोड़ें ।''

उत्सव का उन्माद उतार पर था...अप्सरा के नृत्य के आनंद और गंधर्व की हत्या के विषाद से उत्पन्न अंतर्द्वंद्व के भार से बोझिल पग भरता सर्वनाग, शांत शिथिल सहजन्या को लेकर अपनी वासस्थली की ओर चल पड़ा ।

घने वनों में गहरा अंधकार था । निःशब्द वायु, रह-रहकर गूंजनेवाली वन्य पशुओं की आवाजें, उस परिवेश को और अधिक भयावह बना रही थीं ।

''सहजन्या ! तू बोलती क्यों नहीं ? इस अंधकार में यदि बातें करते चलें तो हिंस्र पशु आ भी गया, तो प्राणियों की ध्वनि सुनकर मार्ग छोड़ देगा'' सर्वनाग ने कहा ।

''मुझे बहुत डर लग रहा है ।'' कहकर सहजन्या फिर चुप हो गयी ।

''अरे तेरी जिद और व्यर्थ लड़ाई-झगड़े के कारण ही तो इतना विलंब हो गया, नहीं तो अब तक नगर के पास पहुंच गये होते । सर्वनाग क्षुब्ध हो रहा था । सहजन्या फिर मौन रही...भावनाओं का ज्वार अंतर्तम को उद्वेलित किये था ।''

''क्या मैं तुझे प्रिय नहीं लगता सहजन्या ।'' सर्वनाग उसे अपने समीप ला आलिंगनबद्ध करते हुए बोला ।

''तू अत्याचारियों का साथी है, तू भी अत्याचारी है ।'' अपने को सर्वनाग से अलग करते हुए कठोर स्वर में सहजन्या ने उसे दुत्कारा । उसका मुंह क्रोध से आरक्त हो उठा ।

सर्वनाग पुनः सहजभाव से बोला—''वीरों का धर्म है कि वे दी हुई वस्तु नहीं लौटाते । उसके मुख की कांति मलिन पड़ने लगी थी... ।''

''और मैं अपना अप्सरा धर्म नहीं छोड़ूंगी ।''

सर्वनाग क्रूर हंसी हंसा...अंधकार और बढ़ चुका था...वे आगे बढ़ते जा रहे थे । एक वन्य व्याघ्र उनका कब से अनुसरण कर रहा था, बातों के क्रम में उन्हें ज्ञात न हो सका । आकस्मात व्याघ्र गरजा और छलांग मारी । सहजन्या भूमि पर गिर गयी...सर्वनाग ने बचने का प्रयास किया । पर पूरा नहीं बच पाया । उसे प्रतीत हुआ कि उसके एक हाथ पर किसी ने खड्ग का प्रहार किया । वह रक्त से लथपथ हो उठा ।

व्याघ्र ने झपटकर उस पर वार किया । उसके धक्के से सर्वनाग नीचे गिर पड़ा । शिकार पूरी तरह न पकड़ पाने के कारण व्याघ्र पागल-सा हो उठा । दिल दहलानेवाली दहाड़ के साथ वह फिर शत्रु की ओर पलटा... । कराहते सर्वनाग ने लेटे-लेटे परशु उठाया और किसी तरह घायल हाथ के सहारे उठने का प्रयास किया । सर्वनाग ने निश्चय किया । बस कुछ पलों की देर है अबकी बार वह पशु उसकी जीवनलीला समाप्त कर देगा...नेत्र बंद कर सर्वनाग ने इष्ट देवता का स्मरण किया ।

यह क्या ? विलक्षण आश्चर्य हुआ सर्वनाग को, व्याघ्र अपने स्थान से हिल भी न पाया कि उसी स्थान पर आहत पड़ा वह निष्प्राण हो चला था । दो सुंदर युवक, जो उजले वस्त्र धारण किये थे, सहजन्या को उठाने में व्यस्त थे ।

''तुम लोग कौन हो ?'' लड़खड़ाते हुए

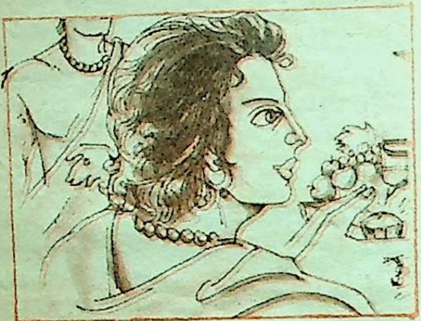

उठने की कोशिश करते हुए सहजन्या ने पूछा । उसकी सांस धौंकनी की तरह चल रही थी...विस्मय का भाव चेहरे पर छाया था ।

"हम मरुत् हैं..." युवकों में से एक ने उत्तर दिया ।

"मरुत् ! कौन मरुत्... ?"

"हम देवकुल के हैं । हमारा एक साथी ब्रह्म की शरण में गया था । इंद्र ने हमें इस नाग को मारने व तुझे छुड़ाकर गंधर्वराज के पास भेजने का आदेश दिया है !"

घायल सर्वनाग इस वार्तालाप को सुन रहा था । उसने किसी प्रकार उठने की पुनः चेष्टा की । पर विफल रहा । उसे हिलते देख एक मरुत् का ध्यान उसकी ओर गया... । लपककर मरुत् ने सर्वनाग को मारने के लिए खड्ग उठाया । तभी—"घायल शत्रु को मारने से क्या लाभ ?" दूसरे मरुत् ने उसे रोकते हुए कहा । फिर क्षणभर रुककर "हम सहजन्या को लिये जा रहे हैं, यदि तू बाधा डालना चाहता है तो पहले हममें से एक से युद्ध कर ले ।"...मरुत् आवेग से आगे बढ़ा ।

"ले मेरा कहा पूरा हो गया ।" किंचित मुसकराते हुए सहजन्या ने कटाक्ष किया सर्वनाग पर । वह इतनी देर में खड़ी हो चुकी थी । मन और देह आनंद तरंगित हो रहे थे । अपूर्व विजय का भाव उसके मुख पर था ।

"मैं बुरी तरह घायल हो चुका हूं, अन्यथा वीरों के धर्म का पालन अवश्य करता ।" क्षीण-भाव से गहरी सांस लेते हुए सर्वनाग ने कहा ।

"अरे मूर्ख धर्म का पालन न करने के का वरुण ने तुझे यह दंड दिया है । वरुण महान हैं ।" एक मरुत् ने कहा ।

"वरुण ? वह तो असुरों का देवता है ।"...सर्वनाग आश्चर्य से बोला ।

"असुरों का ही नहीं देवों का भी । असुर संस्कृति से च्युत होते जा रहे हैं । देव अभी भी वरुण के वास्तविक उपासक हैं ।" यह मरुत् का स्वर था ।

"देव ? वे देव जो अभी भी पूर्वाग्रही हैं । असुरों के ही कुल के व्यक्ति । असुरों को कृषि कर्म करते देख ईर्ष्या से भर उठे और शस्त्र के सामने देखते ही भाग गये ।" कहते सर्वनाग देवों का उपहास करने लगा ।

मरुत् ने फिर प्रहार किया—"कृषि हम भी करते हैं...नाग तू झूठ बोलता है ।"

"मैं झूठ नहीं बोलता...तुम असुरों के जी में समानता करने लगे । तुम्हारे बंधु-बांधव असुरों ने सैकड़ों वर्ष पूर्व हमारे कुल से सीखा था, उसे आज तुम अपना कह रहे हो और उसे अपनी संस्कृति कहते हो ? सर्वनाग शिथिल पड़ने लगा, उसकी आवाज कांप रही थी । वाक्य समाप्त करते-करते वह शांत हो गया...पूर्ण निश्चेष्ट ।

—प्राच

एम. के. पी. पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज
देहरादून (उ. प्र.)

गुजराती कहानी

मुझे और कुछ नहीं चाहिए...

● गुलाबदास ब्रोकर

तब जीवराम भाई वैद्यक नहीं करते थे। वैद्यक तो उन्होंने जीवन के आखिर में अपनायी। तब वह काठियावाड़ के एक छोटे-से राज्य के पुलिस-विभाग में नौकरी करते थे और मामूली पद से तरक्की करते-करते उस समय वह फौजदार के पद पर पहुंच चुके थे।

गांव छोटा था। राज्य भी छोटा था। अधिकारी थोड़े थे और जीवराम भाई अपनी नौकरी में सुखी थे। गांव के लोगों में उनके प्रति आदर था। राज्य के स्वामी की उनके ऊपर कृपा-दृष्टि थी। उस जमाने में सत्तर-पचहत्तर रुपये की छोटी-सी नौकरी में भी उनके दिन

आनंद से गुजर रहे थे । वह खुद को सुखी मानते थे ।

पर वह अकेले ही खुद को सुखी नहीं मानते थे । दूसरे लोग भी उन्हें कुछ ज्यादा ही सुखी मानते थे । और यह ही एक बड़े दुःख की बात थी, क्योंकि दूसरों का ऐसा मानना उनके प्रति ईर्ष्या उपजाता था और ईर्ष्या का परिणाम बुरा होता है, यह कौन नहीं जानता ।

ईर्ष्या करनेवालों में खासतौर से तो उनके ही विभाग में काम करनेवाला एक काठियावाड़ी भाई था । उसका नाम था राजसूर भाई । फौजदार के गौरवमय पद की तनख्वाह थी पचहत्तर रुपये । राजसूर भाई सोचते थे कि यह पद उन्हें मिल जाए तो ? तो आकाश की अप्सराओं को भी नचाया जा सकता है । और यदि मालिक की कृपा-दृष्टि भी इसमें शामिल हो जाए, तो फिर क्या कुछ नहीं किया जा सकता !

पर यह उन्हें मिले कैसे ? राजसूर भाई सोचते रहते ।

जीवराम भाई यह पद छोड़ें, तभी यह संभव था । पर जीवराम भाई उसे किसलिए छोड़ते ? वह अभी जवान थे । हट्टे-कट्टे थे । राजा और प्रजा दोनों के चहेते थे और अपने काम में निपुण थे । पद छोड़ने के लिए उन्हें कौन कह सकता था । फिर ऐसी बात कोई मानता भी क्यों ? एक ही तरीका था उनसे पद छुड़वाने का कि जीवराम भाई राजा की नजर में गिर जाएं ।

राजसूर भाई भी जवान थे, महत्त्वाकांक्षी और मेहनती भी थे । जीवराम भाई को राजा की नजर से गिराने के लिए हर संभव उपाय उन्होंने कर देखे । और उन्हें ऐसा करते-करते एक वर्ष का समय निकल गया । फिर भी सफलता नहीं मिली । बल्कि खुद को ही नीचा देखना पड़ा । जीवराम भाई का आसन तो जहां-का-तहां ही रहा । शायद थोड़ा ऊंचा ही उठ गया था ।

लेकिन राजसूर भाई उनमें से नहीं थे, जो हार मानकर बैठ जाते हैं । आखिर उनको एक मार्ग मिल गया ।

गीगा उसी गांव का एक जवान था— बड़ा ही शातिर बदमाश । ताजा-ताजा ही जेल से छूटकर आया था । अपराध कबूल करवाने के लिए उसे जेल में बड़ी यातनाएं दी गयी थीं । लाठियों की उस पर वर्षा करवानेवाले गांव के फौजदार जीवराम भाई ही थे, ऐसी अफवाह फैली हुई थी । राजसूर भाई इसी गीगा से मिले । उन्होंने समझा-बुझाकर उसे बहलाया,

काली अंधेरी रात थी । रास्ता सुनसान था । किसी अपराध की जांच करने गये हुए जीवराम भाई का घोड़ा उन्हें लिये हुए अपने इसी परिचित रास्ते से लौट रहा था ।

गांव की सीमा अभी दूर थी । तभी किसी ने घोड़े को रोका । ऊंघते-ऊंघते जीवराम भाई अचानक आयी इस रुकावट से सावधान हो गये ।

फुसलाया और लालच देकर वैर-भाव को जागृत किया और आखिर में जीवराम भाई से बदला लेने को वह राजी हो गया। उन्होंने गीगा को वचन दिया कि इस काम के बदले में वह उसे पच्चीस रुपये नकद देंगे और यदि उसे कुछ हो गया या वह जेल चला गया, तो उसके आश्रितों का ध्यान रखेंगे। पांच रुपये पेशगी देकर आखिर उन्होंने संतोष की सांस ली।

गीगा हथियार तेज करने लगा और राजसूर भाई उसका उत्साह बढ़ाने लगे। आखिर उनके मन की मुराद पूरी होने की रात आ पहुंची।

राजसूर भाई ने गीगा को अंतिम हिदायतें दीं, हिम्मत भी बढ़ायी, "देखना, आखिरी वक्त पर डर मत जाना।"

गीगा बोला, "आप खुद निर्भय रहें राजसूर भाई! इस गीगा को कुछ बताने की जरूरत नहीं है।"

और रात घनी हो जाने पर वह अपने काम पर निकल पड़ा।

काली अंधेरी रात थी। रास्ता सुनसान था। किसी अपराध की जांच करने गये हुए जीवराम भाई का घोड़ा उन्हें लिये हुए अपने इसी परिचित रास्ते से लौट रहा था।

गांव की सीमा अभी दूर थी। तभी किसी ने घोड़े को रोका। ऊंघते-ऊंघते जीवराम भाई अचानक आयी इस रुकावट से सावधान हो गये।

"होशियार रहो, फौजदार साहब!" यह चेतावनी भी उन्होंने सुनी। और फिर पलभर में ऐसा बानक बना कि जिसकी कल्पना न राजसूर भाई ने की थी, न जीवराम भाई ने।

गीगा ने उठाया हुआ हथियार जीवराम भाई के हाथ में सौंप दिया।

"भाई साहब, आपका एहसान भूलूं तो मेरे रोम-रोम से रक्त-पित्त फूट निकले। मुझसे यह नीच कर्म कैसे हो सकता है! पर मैं अभागा 'ना' करता, तो फिर यह काम किसी दूसरे को सौंप दिया जाता और जरूर कुछ अघट घट जाता। इसलिए मैंने उसे अपने जिम्मे ले लिया। लो अब, संभल जाएं, मैं भागता हूं।" इतना कहकर संक्षिप्त में राजसूर भाई का पूरा किस्सा सुनाकर गीगा अंधेरे में गायब हो गया। सिर्फ जीवराम भाई भगवान की असीम कृपा को याद करके आश्चर्यचकित और आनंद से गदगद ढंग से खड़े रह गये।

'कैसे छोटे-से काम का कितना बड़ा बदला भगवान देता है।'— जीवराम भाई ने सोचा। गीगा पर किये गये उपकार में तो कहने लायक कुछ था ही नहीं।

गीगा जब सरकारी जेल में सड़ रहा था, तब उस पर गंभीर आरोप और आक्षेप थे। वह उन्हें स्वीकार नहीं कर रहा था। ऊपर से सरकारी आज्ञा थी कि उससे चाहे जैसे हो, अपने अपराध कबूल करवाने हैं। वह छटा हुआ बदमाश है। सीधी तरह कबूल न करे, तो डंडे का जोर दिखाओ। लेकिन बहुत समझाने-बुझाने के बाद जीवराम भाई को लगा कि शायद गीगा गुनाहगार नहीं है। तो फिर मार-पीट से क्या होगा? लेकिन सरकारी हुक्म की अवमानना भी नहीं की जा सकती थी। क्योंकि गीगा अव्वल दरजे का प्रख्यात बदमाश था। वह जो न कर गुजरे, वह थोड़ा था।

'कैसे छोटे-से काम का कितना बड़ा बदला भगवान देता है ।'— जीवराम भाई ने सोचा । गीगा पर किये गये उपकार में तो कहने लायक कुछ था ही नहीं ।

बहुत सोचने पर भी कुछ नहीं सूझ रहा था । ऐसे जवान मनुष्य को मार-मारकर भुरता बना दिया जाए, जीवराम भाई का मन इसे स्वीकार नहीं कर पा रहा था । अचानक ही उन्हें उपाय सूझ गया । जीवराम भाई ने गीगा से कहा कि 'सरकारी हुक्म के अनुसार बिना मारे छुटकारा नहीं है । लेकिन तू ईश्वर की साक्षी मानकर वचन दे कि भविष्य में अपराध नहीं करेगा, तो मैं तुझे बचा लूंगा ।'

यह बचाने का अद्भुत उपाय गीगा को पसंद आया । उसने फौरन ही उसे मान लिया । बस, फिर क्या था । अंधेरा होने के बाद उसकी कोठरी में डंडों की बौछार शुरू हो गयी । गाली-गलौज की बौछारें पड़ने लगीं और गीगा की करुण चीखों से वातावरण भर उठा । केवल गीगा को छोड़कर गांव के और जेल के हर व्यक्ति को लगने लगा कि गीगा पर भारी मार पड़ रही है । मन-ही-मन हंसते फौजदार साहब और चीख-पुकार मचाता गीगा ही जानते थे कि मार पड़ रही थी जरूर, पर, गीगा के शरीर पर नहीं ।

इस छोटे-से काम का बदला भगवान ने इस तरह जिंदगी बचाकर जीवराम भाई को दिया था । वह सोच रहे थे कि गीता में कहा गया है कि किसी भी भले काम को करनेवाले की दुर्गति नहीं होती और बुरा काम करनेवाले को उसका फल जरूर भुगतना पड़ता है ।

'राजसूर भाई बेचारा कितनी छोटी-सी बात के लिए कितना बड़ा पाप करने के लिए तैयार हो गया था । पर वह अपने पाप का फल खुद भोगेगा, मुझे क्या ?' ऐसा सोचते-सोचते और किसी के सामने इस घटना का जिक्र न करने का निश्चय करके जीवराम भाई घर पहुंचकर आराम से सो गये ।

और फिर जब तक उस राज्य में नौकरी की तब-तक उन्होंने राजसूर भाई या किसी अन्य को इस बात की गंध तक नहीं लगने दी । जीवराम भाई को इस घटना का पता है या नहीं, यह जानने का राजसूर भाई ने प्रयत्न जरूर किया । लेकिन पहले की अपेक्षा अपने प्रति उनके व्यवहार में और मिठास आ गयी है इसके सिवा और कुछ पता नहीं लगा ।

दो-तीन साल बाद राज्य के साथ सिद्धांतों को लेकर मतभेद हो जाने पर जब जीवराम भाई ने नौकरी छोड़ी, तो जितनी मधुरता से उन्होंने अपनी मित्र-मंडली और सारे गांव से विदा ली, उतनी ही मधुरता से राजसूर भाई से भी उन्होंने विदा ली और उसे आशीर्वाद दिया ।

राज्य की नौकरी छोड़ने के बाद जीवराम भाई अपने वतन राजकोट आकर रहने लगे । आर्थिक तंगी तो होनी ही थी । क्योंकि कमाई का और कोई साधन नहीं जुट पाया था । ऐसे में एक दिन उन राजसूर भाई का राजकोट आना हुआ । वह जीवराम भाई के यहां भी आये ।

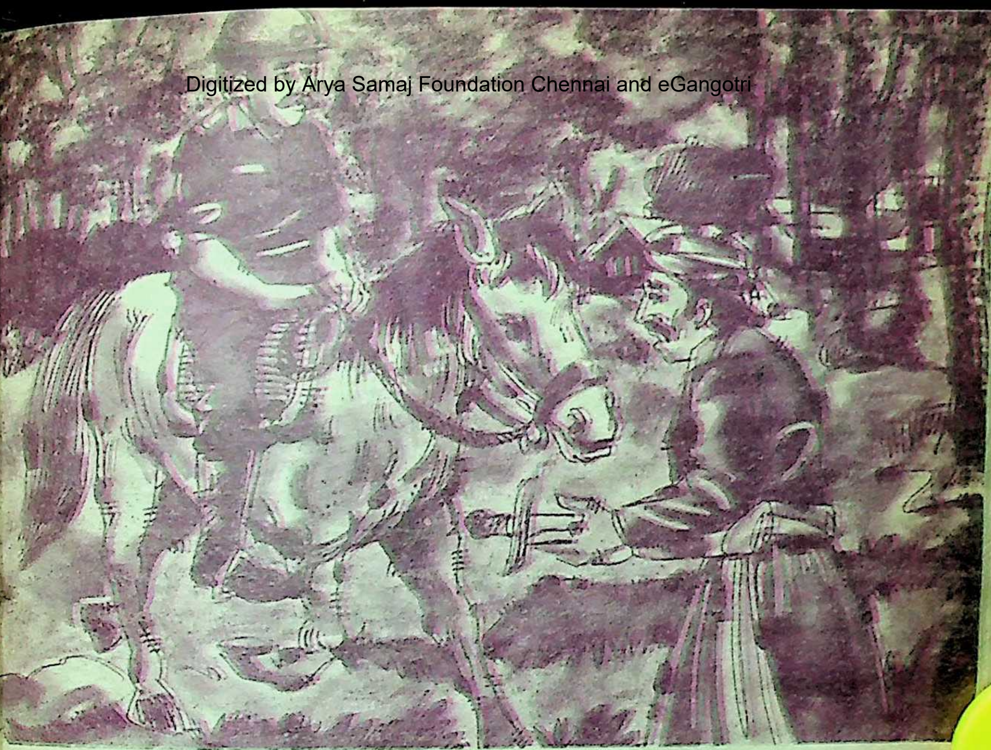

जीवराम भाई ने बड़े आनंद से उनका स्वागत-सत्कार किया और किचन में जाकर पत्नी से बोले, “आज हलुवा बनाना !’

पत्नी ने धीमी आवाज में कहा, ‘तुम तो हुक्म दे रहे हो, पर घर में घी नहीं है । कौन आया है ऐसा ?’

“राजसूर भाई आये हैं ।”

“मुआ वह ?” पत्नी ने दबी आवाज में कड़ुवाहट से कहा, “खानी होगी तो रोटी खा लेगा । उसने ऐसा क्या किया है जो ...”

“पागल हो गयी हो ?” जीवराम भाई हंसे, “इतने वर्षों तक मेरे साथ रहीं, तो भी न समझीं ? अरे, भलाई करनेवाले को तो सभी खिलाते हैं पर बुराई करनेवाले को जो और प्रेम से खिलाता है वही सच्चा मनुष्य है । घी नहीं है, तो कोई बात नहीं ? पड़ोस से उधार मांग लाओ, लेकिन आज बनाना हलुआ ही ।”

जीवराम भाई जब इस तरह बात करते थे, तो तर्क की गुंजाइश नहीं रहती थी । पत्नी ने मौन भाव से पति की आज्ञा का पालन किया ।

घी से तरबतर हलुआ और गरम-गरम पकौड़ियां जीवराम भाई ने आग्रह कर-करके राजसूर भाई को खिलायीं । फिर आनंदपूर्वक गप-शप करके जब राजसूर भाई चले गये, तो जीवराम भाई हर्ष से बोल उठे, “मेरे हाथों किसी का भी बुरा न हो । मेरी यह बात रखना भगवन ! मुझे और कुछ नहीं चाहिए ।”

— ३९७, स्वामी विवेकानंद रोड,
विले पार्ले (वेस्ट),
बंबई-४०००५६

(अनुवाद : गोपालदास नागर)

नैनीताल : दृश्य-परिदृश्य

दृष्टि विशेष

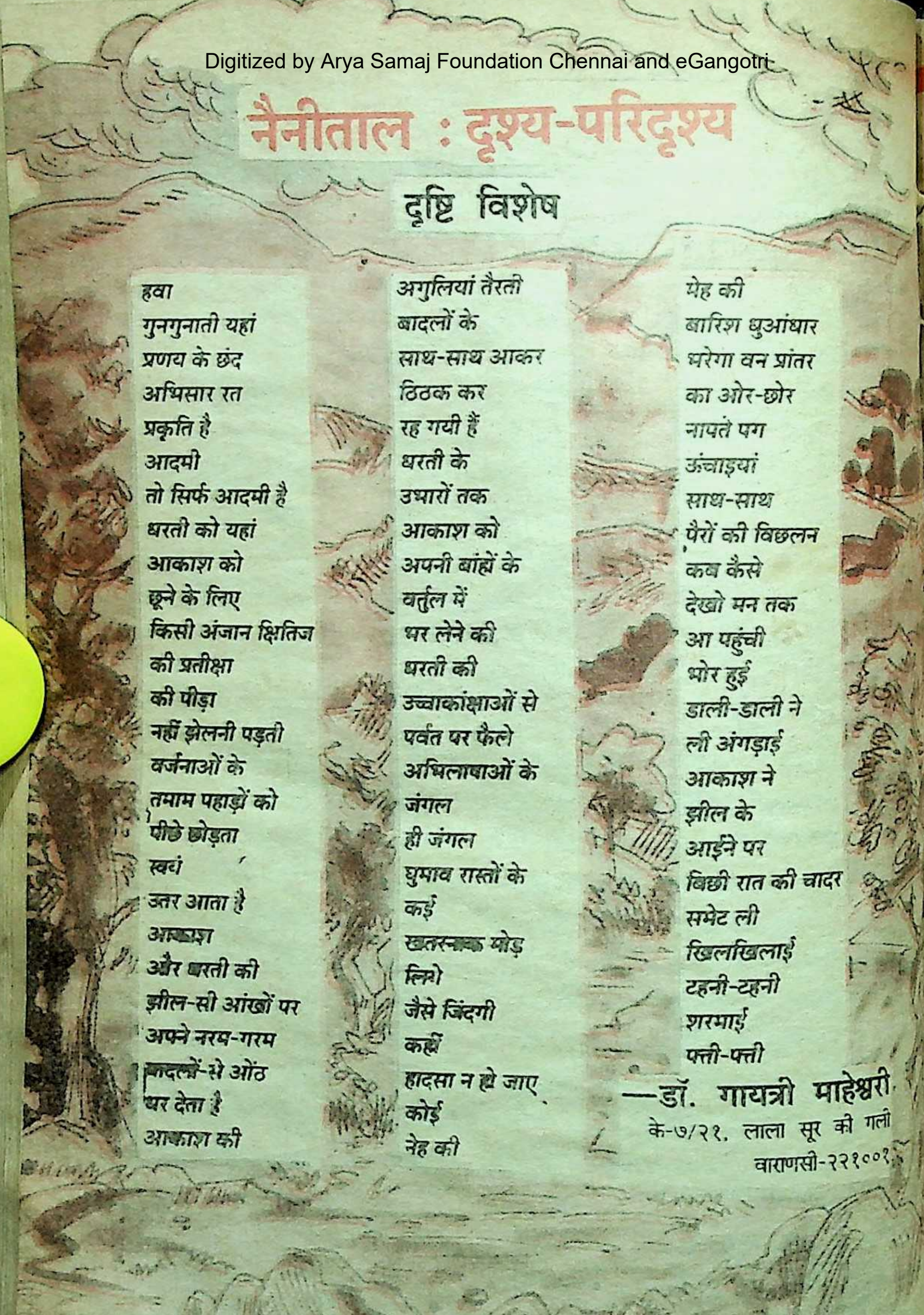

हवा
गुनगुनाती यहां
प्रणय के छंद
अभिसार रत
प्रकृति है
आदमी
तो सिर्फ आदमी है
धरती को यहां
आकाश को
छूने के लिए
किसी अंजान क्षितिज
की प्रतीक्षा
की पीड़ा
नहीं झेलनी पड़ती
वर्जनाओं के
तमाम पहाड़ों को
पीछे छोड़ता
स्वयं
उतर आता है
आकाश
और धरती की
झील-सी आंखों पर
अपने नरम-गरम
बादलों-से ओंठ
धर देता है
आकाश की
अगुलियां तैरती
बादलों के
साथ-साथ आकर
ठिठक कर
रह गयी हैं
धरती के
उभारों तक
आकाश को
अपनी बांहों के
वर्तुल में
भर लेने की
धरती की
उच्चाकांक्षाओं से
पर्वत पर फैले
अभिलाषाओं के
जंगल
ही जंगल
घुमाव रास्तों के
कई
खतरनाक मोड़
लिये
जैसे जिंदगी
कहीं
हादसा न हो जाए
कोई
नेह की
मेह की
बारिश धुआंधार
भरेगा वन प्रांतर
का ओर-छोर
नापते पग
ऊंचाइयां
साथ-साथ
पैरों की विछलन
कब कैसे
देखो मन तक
आ पहुंची
भोर हुई
डाली-डाली ने
ली अंगड़ाई
आकाश ने
झील के
आईने पर
बिछी रात की चादर
समेट ली
खिलखिलाई
टहनी-टहनी
शरमाई
पत्ती-पत्ती

—डॉ. गायत्री माहेश्वरी

के-७/२१, लाला सूर की गली
वाराणसी-२२१००१

मायूस है हर आदमी !

इक सुई की ही तरह है लापता सबकी खुशी
किसको लिखवायें रपट मायूस है हर आदमी
त्रस्त है, लाचार है, बेजार है, बेचैन है
जिंदगी पहले कभी इतनी नहीं गमगीन थी
कौन झंझट में पड़ें औ' कौन संकट मोल ले
खून होता देखकर छिप जाते हैं घर में सभी
इक समय था जब इसकी चर्चा सुनते थे बहुत
ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल पाती है अब सादगी
बात दिल की क्या सुनायी जानकर अपना उसे
बात जैसे पर लगाकर हर तरफ उड़ने लगी
लाख या दो लाख में आबाद है जनता यहां
विरला ही मिलता है, लेकिन इस नगर में आदमी
बाग में माली कोई अब रोकने वाला नहीं
किसके हाथों से लुटेगी क्या पता सुंदर कली
पालता है आदमी रहने की इच्छा चांद पर
कोई बतलाये हमें इस धरती पर है क्या कमी
गीत गूंजेंगे कभी दिन-रात बच्चों के यहां
क्या हुआ जो आजकल सूनी पड़ी है हर गली
दर्द के स्वर में सुना दो इक अछूती सी गजल
ताकि कह उठें सभी क्या बात तुमने है कही
रोज तेरे ही लिए सपने हजार बुनती है
देखले कितनी फिदा है 'प्राण' तुझ पर जिंदगी

—प्राण शर्मा

३, क्रेकस्टन क्लोज
स्टोक हिल एस्टेट
कोवेंट्री—यू. के.

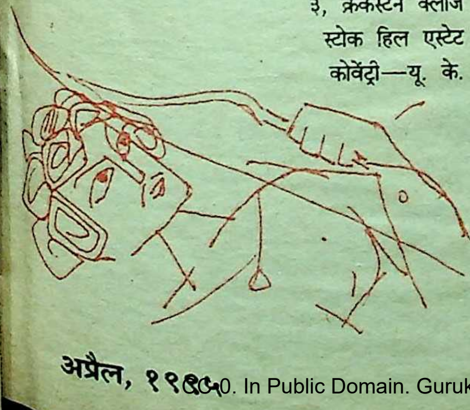

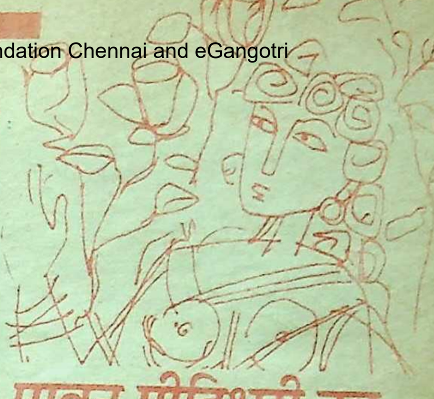

पावन प्रीतिभरी नव भोर

अंतर्हित होता व्यतीत अब, उद्भासित होता है नूतन
कुछ अनुभूति सुखद-सी होती, भाव लोक में तिरता-सा मन
पल-सम दिवस, कभी क्षण युग-सम
धूप-छांह-सा बीता साल
कभी होड़-सी लगी दौड़ में
कभी चला कछुए की चाल

कभी हिलोरें उठीं राग की, कभी रहा वैराग्य मगन
भूल-भाल कर पिछली बातें
करें नये संकल्प विचार
ज्योति जलाकर अंधकार में
खोलें नये क्षितिज के द्वार
भेद-भाव की तोड़ श्रृंखला करें समन्वय-भाव सृजन
नहीं निराशा रहे कहीं भी
बढ़ें नयी आशा की ओर
आओ देखो झलक रही है
पावन प्रीतिभरी नव भोर
नव प्रतीक नव प्रतिभा मंडित नये वर्ष का अभिनंदन

—डॉ. वीरेन्द्र शर्मा

राजदूत भारतीय दूतावास
आशगाबात (तुर्कमेनिस्तान)
द्वारा : विदेश मंत्रालय
नयी दिल्ली-११००११

अम्लरोग? भूख की कमी? कब्ज़?

पेट की गड़बड़ी?

स्वास्थ्य और सुन्दरता का रक्षक-लिवर।

सर्वाधिक रोगों का कारण – पेट की खराबी, अस्वस्थ्य लिवर, और अनिद्रा। स्वस्थ्य लिवर हर रोग का निदान।

....डा. सरकार

LIVOSIN
LIVOSIN

पेट की गड़बड़ी दूर करने और लिवर सुरक्षित रखने के लिए

डा. सरकार का एक अनोखी खोज आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक।

लिवोसिन

सेवन विधि :
जब तक सीने की जलन, पाचन शक्ति में वृद्धि, अम्लरोग, कब्ज़ियत, भूख की कमी, पेट की गड़बड़ी, यकृत की अस्वस्थ्यता दूर न हो तब तक एक ग्लास गुनगुने पानी के साथ **लिवोसिन** सुबह खाली पेट और रात को सोने के समय नियमित सेवन करें।

लिवोसिन
एक आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर निर्माता का सहयोगी संस्था Jupiter की आयुर्वेदिक खोज का एक अनोखा उपहार।

जुपिटर फार्मासिटिकल्स प्रा० लि०
२५, इडन हॉस्पिटल रोड़, कलकत्ता-७३
दूरभाष-२६०१५६/२७-०२२४

Jupiter
Emars Allen
allen's india
Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषध प्रस्तुतकारक

जिसके सहयोग से आपको मिले आरोग्य में विश्वास।

Marketed by :
Allen's India Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. India

Branch Office : Duggal House, Bank Road, Patna-800 001, Ph : 23-4953
Branch Office : 84/77B, Narayan Bagh, G. T. Road, Kanpur-208005, Ph : 24-2844

भारतेंदु के पत्र-प्रकाशकों के नाम

● डॉ. लक्ष्मीशंकर व्यास

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी भाषा के उन्नयन तथा श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन में लाखों रुपये लुटा दिये । हिंदी के कवियों तथा साहित्यकारों का भी वे मुक्तहस्त से सम्मान करते थे । अपनी प्रमुख कृतियों का तो आपने स्वयं प्रकाशन किया, किंतु दूसरे संस्करण के मुद्रण के लिए उन्हें प्रकाशक से अनुरोध करना पड़ा । जनता में भारतेंदुजी की कृतियों की अच्छी मांग थी अपनी रचनाओं के प्रथम संस्करण के समाप्त हो जाने पर पुस्तकों की मांग के कारण उन्हें शीघ्र प्रकाशित करने का अनुरोध किया था । भारतेंदु हरिश्चन्द्र के तथाकथित मित्रों ने उनकी अनेक पुस्तकों के प्रकाशन का आर्थिक लाभ उठाया । किंतु कोई अंश भारतेंदुजी को नहीं दिया । भारतेंदु हरिश्चन्द्र को आर्थिक कष्ट के दिनों में इसका हार्दिक खेद था । यह बात उन्होंने कलकत्ता स्थित अपने एक मित्र को लिखी थीं, तथा उन्हें यह भी सूचित किया था कि उन्होंने अपनी समस्त रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार पटना स्थित खड्ग विलास प्रेस के स्वत्वाधिकारी तथा 'क्षत्रिय मित्र' संपादक महाराज कुमार श्री रामदीन सिंह को दे दिया । जिन दिनों भारतेंदुजी आर्थिक कष्ट और ऋण से ग्रस्त थे, उस संकट के समय बाबू रामदीन सिंह ने उन्हें चार हजार रुपये देकर ऋण मुक्त किया था ।

भारतेंदु ने संपादकों तथा प्रकाशकों को जो पत्र लिखे थे, उसमें एक में सार्वजनिक रूप से गो-हत्या के संबंध में भारत व्यापी आंदोलन करने की मार्मिक अपील की थी । दूसरे पत्र में उन्होंने बाबू रामदीन सिंह को सिद्ध प्रश्नावली छापने का अनुरोध किया है तथा यह भी कहा कि कालांतर में इसकी लाखों प्रतियों की मांग होगी । आपने मुहम्मद साहब, फातिमा बीबी तथा हसन हुसैन की जीवनी शीघ्र प्रकाशित करने पर बल दिया था, तीसरे पत्र में भारतेंदु ने अपने ग्रंथों के दूसरे संस्करण मुद्रित करने का अनुरोध कर अपनी रचनाओं के प्रकाशन के संबंध में व्यापक चर्चा की है । इससे उनकी पुस्तकों के संबंध में अनेक नवीन तथ्यों का पता चलता है । यथा 'अंधेर नगरी, चौपट राजा' को उन्होंने 'अंधेर नगरी चौपट्ट राजा' लिखा है । डुमराव के राजा के यहां इस नाटक के मंचन की भी इससे सूचना मिलती है । इससे यह भी विदित होता है कि 'भारत-दुर्दशा' सर्वप्रथम उनकी पत्रिका 'कवि-वचन सुधा' में प्रकाशित

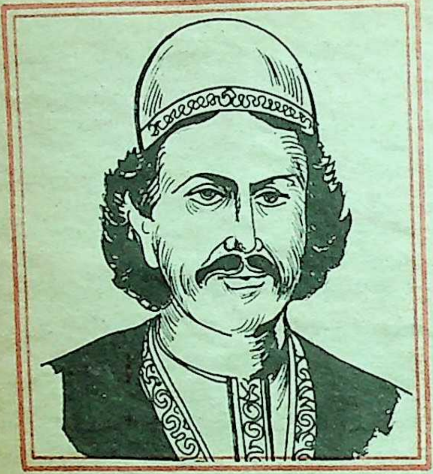

हुई थी । चौथे पत्र में बूंदी की राज-वंशावली, टाड साहब के राजस्थान तथा 'भक्तमाल' की प्रतियों को भेजने की चर्चा है । चौथा पत्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जिसमें भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने अपनी समस्त कृतियों के प्रकाशन का सर्वाधिकार बाबू रामदीन सिंह को दे दिया था, तथा उनको प्रभूत आर्थिक सहायता की थी । सन १८९३ ई. में इस संदर्भ में 'भारत मित्र' में प्रकाशित 'हिंदी भाषा' शीर्षक लेख विशेष प्रासंगिक है ।

गोहत्या-विरोधी आंदोलन

"प्रियवरेषु— महाराज कुमार श्री बाबू रामदीन सिंहजी, अबकी बकरीद में भारतवर्ष के प्रायः अनेक नगरों में मुसलमानों ने प्रकाश रूप से जो गोवध किया है, उसमें हिंदुओं की सब प्रकार से जो मानहानि हुई है, वह अकथनीय है । पालिसी— पर-तंत्र गवर्नमेंट पर हिंदुओं की अकिंचितकरता और मुसलमानों की उग्रता भलीभांति विदित है, यही कारण है कि जानबूझकर भी वह कुछ नहीं बोलती ! किंतु हम लोगों को जो भारतवर्ष में हिंदुओं के ही वीर्य से उत्पन्न हैं, ऐसे अवसर पर गवर्नमेंट के कान खोलने का उपाय अवश्य करणीय है । इस हेतु आपसे इस पत्र द्वारा निवेदन है कि जहां तक हो सके इस विषय में प्रयत्न कीजिए । भागलपुर, मिरजापुर, काशी इत्यादि कई स्थानों में प्रकाश्य रूप से केवल हमारा जी दुखाने को हांकाठोकी यह अत्याचार हुआ है, जो किसी-किसी समाचार-पत्र में प्रकाशित भी हुआ है । आप भी अपने पत्र में इस विषय का भली-भांति आंदोलन कीजिए । सब पत्र एक साथ कोलाहल करेंगे तब काम चलेगा । हिंदी, उर्दू, बंगाली, मराठी, अंगरेजी सब भाषा के पत्रों में जिनके संपादक हिंदू हों, एक बेर बड़े धूम से इसका आंदोलन होना आवश्यक है, आशा है कि अपने शक्य पर आप इस विषय में कोई बात उठा न रखेंगे ।

भवदीय— हरिश्चन्द्र ।"

मुहम्मद साहब की जीवनी

"बाबू रामदीन सिंहजी,

प्रियवरेषु, कल पुस्तकें ठीक समय पर ही मिल गयीं । उनमें कई ऐसी हैं, जो मेरे यहां हैं । सिद्ध-प्रश्नावली बहुत बिकने की वस्तु है, अर्थात हजारों नहीं काल पाकर लाखों ही बिकेगी । एक तो इसको छाप लीजिए और एक मुहम्मद अली, बीबी फातिमा और हसन हुसैन का जीवनचरित्र को मुसलमान मात्र लेंगे ! मुझको बड़ी लज्जा है कि ऐसी कोई वस्तु आपने नहीं छापी जो बहुत बिके । पत्रों का संग्रह भी आप छापने को थे ? और जो इच्छा हो । मैं आपके अनुग्रहों का ऋणी हूं ।— हरिश्चन्द्र ।"

पुस्तकों के नवीन संस्करण का अनुरोध

"प्रियवर :

आपका पत्र पाया । पुस्तकें भी पहुंचीं । दीपनारायण सिंह ने अपने ताश के खेल में मेरा नाम नहीं दिया है, यह अनुचित किया है, जबकि उन्होंने स्वयं एक वस्तु को उलट-पुलटकर छापा है, तो फिर रजिस्टरी कराके दूसरों को क्यों निषेध करते हैं । आप जानते हैं कि मेरी पुस्तकें लाभ के लिए नहीं, छपतीं । मुझे इसमें कुछ खयाल नहीं है परंतु कृतज्ञता मनुष्य के शरीर का रत्न है । भला और कुछ नहीं तो कृतज्ञता को स्वीकार करना था ।

उदैपुर (उदयपुर) की वंशावली मेरे पास बिलकुल नहीं लिखी है । टाड का राजस्थान अंगरेजी में और उर्दू में छप गया है और थोड़ा-सा बंगला में भी छपा है । वह बहुत अच्छा है । उसमें और भी कई जगह में उससे मिलान करके लिखा है । कुछ कागजात उदैपुर के मेरे पास हैं और एक उदैपुर की तवारीख खास दर्बार में की लिखी हुई है, कुछ मेरी लिखी हुई है । यदि आप उन सबों को इकट्ठा करके आप लिखना चाहें, तो मैं भेज दूं । आपको 'राजस्थान' (टाड का) लेना होगा, क्योंकि यह मेरे पास नहीं है । इस विषय में आपकी क्या सम्मति है ?

पुरानी पुस्तकों के विषय में जो आपने लिखा है पहिले यह लिखिये कि किस शास्त्र की पुस्तकें आपके पास पहिले भेजी जायं ? आपको जो कुछ पूछना हो लिखिये उत्तर बराबर जायगा ।

'अंधेर नगरी चौपट्ट राजा' जाता है, इसे शीघ्र ही छाप दीजिये, इसकी आवश्यकता है । 'भक्तमाल' आप अवश्य छाप दीजिये परंतु आपके पास जो भक्तमाल है, वह भी मुझे देखने को भेज दीजिये । हिंदी प्रदीप का लैक्चर आप अवश्य छाप सकते हैं । 'अंधेर नगरी' यदि आप मेरे तरफ से छापना चाहिये तो ३०० कापी मैं लूंगा परंतु मैं छपाई इत्यादि अवश्य दूंगा । यदि आप स्वयं छापना चाहें तो मैं १० कापी लूंगा बाकी आप बेच लें ।

कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह वही विक्रम हो । यह बंगला के जयदेवजी के जीवनचरित्र में लिखा है कि 'हरिदास हीराचंद बंबईवाले ने लिखा है कि 'ये विक्रम के दर्बार में थे' मेरी भी यही सम्मति है कि यह वही विक्रम हैं, क्योंकि यह वह विक्रम नहीं हो सकते जिनका संवत् चलता है । जयदेवजी उनके कई सौ वर्ष बाद हुए हैं ।

महाराज कुमार लालबहादुर मल्ल की विद्योत्साहिता, शील देखकर मैं बड़ा प्रसन्न हूं । उनका एक पत्र और नाटक मेरे पास भी आया है हमारी उनको मिलने की बड़ी इच्छा है । ईश्वर करे वे शीघ्र ही आवें । बूंदी की वंशावली जाती है ।

इस समय निम्नलिखित पुस्तकों के छपने की बहुत आवश्यकता है । लोग बहुत ढूंढ़ते हैं—

(१) सत्य हरिश्चन्द्र— (एकबेर मुद्रित) इसकी बहुत मांग आती है ।

(२) विद्यासुंदर— (एकबेर मुद्रित) इसकी ५० कापी गवर्नमेंट लेगी ।

(३) कर्पूरमंजरी— (एकबेर मुद्रित)

(४) प्रेम फुलवारी— (एकबेर मुद्रित) इसकी बहुत ही मांग आती है ।

(५) भारत दुर्दशा— (कवि वचन सुधा में

भारतेंदु ने संपादकों तथा प्रकाशकों को जो पत्र लिखे थे, उनमें से एक में सार्वजनिक रूप से गो-हत्या के संबंध में भारत-व्यापी आंदोलन करने की मार्मिक अपील की थी । दूसरे पत्र में उन्होंने बाबू रामदीन सिंह को सिद्ध प्रश्नावली छापने का अनुरोध किया है तथा यह भी कहा कि कालांतर में इसकी लाखों प्रतियों की मांग होगी । आपने मुहम्मद साहब, फातिमा बीबी तथा हसन—हुसैन की जीवनी शीघ्र प्रकाशित करने पर बल दिया था । तीसरे पत्र में भारतेंदु ने अपने ग्रंथों के दूसरे संस्करण मुद्रित करने का अनुरोध कर अपनी रचनाओं के प्रकाशन के संबंध में व्यापक चर्चा की है ।

मुद्रित)

भवदीय— हरिश्चन्द्र''

अंधेर नगरी का मंचन

''श्री बाबू साहिबप्रसाद सिंह ।

प्रियवर— आपका कृपा पत्र आया था, परंतु मेरी माता का देहांत हो गया, इससे पत्रोत्तर में विलंब हुआ, क्षमा कीजियेगा । बूंदी की राज— वंशावली का 'नोट' और दोहे भेजे जाते हैं । यह इतनी ही है । इसमें एक गलती है उसे बना लीजियेगा । वह यह है कि ''टाड साहब के मत से हर्षि राय)'' इसके आगे जो सन लिखा है उसको ७५५ बना दीजिये ।

'अंधेर नगरी' का एक दृश्य यहीं रह गया था वह जाता है । इसे शीघ्रता से मुद्रित कीजिये क्योंकि ७ फर्वरी को एक नाटक महाराज डुमरांव के यहां खेला जायगा । उस अवसर पर बांटने के लिए इसकी अत्यावश्यकता है । अतएव इसका प्रूफ बहुत ही शीघ्र भेजिये । परिश्रम देना क्ष कीजियेगा । और भक्तमाल भी भेजियेगा 'भारतमित्र' के संपादक श्री टाड साहिब राजस्तान छापना चाहते हैं दोनों जगह छ अच्छा न होगा । आप उनको पत्र लिख तै कर लें ।

— हरिश्च

संपूर्ण साहित्य के प्रकाशन का अधि

प्रियवर— इतने दिनों के अनंतर मुझे ए हिंदी के सच्चे प्रेमी मिले हैं, जो अपने व के सच्चे और कार्य में पक्के हैं । इन्होंने मे पुस्तकों को छापने का प्रण लिया है और मे अर्थ सहायता भी यथेष्ट कर रहे हैं, जिस मैं निश्चिंत होकर कुछ लिखने में प्रवृत्त हूं परंतु खेद है कि उक्त मित्र कुछ काल पू मिले, नहीं तो मैं बहुत कुछ कर सकता, क्योंकि मेरा शरीर स्वस्थ रहता था । अ मेरा स्वास्थ्य भंग हो गया है इससे मैं यथायोग्य श्रम नहीं कर सकता । यों तो मैं

मित्र बहुत हैं, परंतु प्रायः सर्व सम्पत के साथी ही निकले, अधिकांश स्वार्थी निकले । किसी से कुछ आशा नहीं । हां, इनमें अधिकांश मित्र हैं, जो मेरे ग्रंथों को छापकर नित्य उदरपूर्ण करके ही मित्रता का निदर्शन समझते हैं । परंतु ईश्वर का धन्यवाद है कि उसने इतने दिनों बाद एक सच्चा प्रेमी मिला दिया जो कि, हिंदी के लिए बड़े व्यग्र हैं और हिंदी की उन्नति के लिए ठीक मेरी तरह तन-मन-धन श्रीकृष्णार्पण करने को कटिबद्ध हैं, आप इस समाचार से प्रसन्न होंगे कि ये बीच-बीच में मेरी अर्थ सहायता तो करते ही जाते हैं । परंतु संप्रति इन्होंने एक साथ ४००० रुपये देकर मुझे ऋण से मुक्त किया है । क्या आप ऐसे महात्मा का नाम भी सुनना चाहते हैं ? लीजिये सुनिये— इनका नाम महाराजकुमार श्री रामदीन सिंह 'क्षत्रीय पत्रिका' संपादक हैं । मैं अब किसी को पुस्तकें छापने न दूंगा, प्रकाशित-अप्रकाशित समस्त पुस्तकों का सत्व ही इन्हीं को दिये देता हूं आज अपनी सम्मति लिखियेगा :

विशेष दूसरे पत्र में ।— हरिश्चन्द्र

भारतेंदु ने लाख का घर खाक किया !

— भारतमित्र, सन १८८३''

— पराड़कर संग्रहालय
के३२/५१ कालभैरव
वाराणसी-२२१००१

हंसिकाएं

काम

उसने उच्चाधिकारी से कहा
मैं शर्मिंदा हूं, 'काम' ठीक से न कर सका
अधिकारी बेजोड़ थे
बोले, 'आप स्वयं अपमानित न हों,
यह 'काम' आप मुझ पर छोड़ दें !

चलन

प्रत्येक वस्तु गति पकड़ने लगी
उनींदा, शहर उठा...सड़कें चलने लगी

प्रक्रिया

गुणों की दोष में परिणति यों हुई
राई घर की छोकरी दिल खट्टा कर गई

अन्योन्याश्रित

चोर सिपाही का खेल क्या होता है
समझाइए ?
पहले सिपाही चोर...
फिर गायब, क्योंकि उसे
वर्दी बदलने के लिए वक्त चाहिए

प्रचलन

उसका कथन गढ़ रहा है
कह रही है वह...
''संबंधों का जीर्ण चोला उतार कर फेंक गये
पैबंद लगे कपड़ों का
चलन बढ़ रहा है''

अन्योन्य

शायर ने कहा, शेर, सबने दाद दी, देर तक सोचा
शेर ने कहा 'शायर, और धर दबोचा

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

बापू की १२५वीं वर्षगांठ पर

इंगलैंड में १२५ मील की पदयात्रा

डॉ. रामजी सिंह

इस पदयात्रा की समाप्ति पर, चाहे वह सनराइज रेडियो हो या बी. बी. सी. या अन्य समाचार-पत्र, सब का मुझसे एक ही प्रश्न होता था कि 'आप इस पदयात्रा में भाग लेने के लिए इतनी दूर भारत से क्यों आये ?' मेरा संक्षिप्त उत्तर था कि—

'वस्तुतः भारत में विचार-प्रचार एवं जन-चेतना जागृत करने की यह पुरानी परंपरा है जो आज तक चली आ रही है । भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, आद्य शंकराचार्य से लेकर गांधी एवं विनोबा तक पदयात्रा करते रहे हैं । शायद जन-चेतना जगाने का यह सशक्त माध्यम माना गया है । यों पहले तो तीर्थ-यात्रा में पदयात्रा स्वाभाविक रूप से हो जाती थी, किंतु इंगलैंड-जैसे अत्याधुनिक एवं प्रौद्योगिकी में उन्नत देश में १२५ मील की पदयात्रा और वह भी बापू के नाम पर सचमुच अपने आप में एक अत्यंत आकर्षण का विषय था ।'

यात्रा उपभोक्तावाद के विरोध का प्रतीक

इंगलैंड में पदयात्रा की कल्पना ही आकर्षक एवं अनोखी है, वहां के लोगों को भी मैंने आश्चर्यचकित होते देखा । इस जेट युग में पदयात्रा की कल्पना शायद इक्कीसवीं सदी की आहट हो ।

सन २०६०-७० ई. तक कोयला एवं तेल के प्राकृतिक भंडार समाप्त हो जाएंगे, फिर या तो ऊर्जा के वैकल्पिक साधन ढूंढ़ने होंगे अथवा फिर अतीत की ओर लौटने को बाध्य होना पड़ेगा । शूमाखर ने 'लघुता में सौंदर्य' देखा, शायद कोई अन्य समाज वैज्ञानिक हमें 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' की याद कराएगा । इटली में रैडिकल पार्टी ने पर्यावरण में प्रदूषण के महानाश से बचने के लिए 'साइकिल' की सवारी को लोकप्रिय करने का वर्षों से अभियान छेड़ रखा है । हमारे सामने केवल दो ही विकल्प हैं कि आधुनिकता के व्यामोह एवं भोग की असीमित तृप्ति के लिए अपने रक्षा कवच ओजोन की छतरी को ही क्षत-विक्षत कर महाप्रलय को निमंत्रित करें या आत्मसंयम करें । जो भी हो, यह पदयात्रा उपभोक्तावाद एवं प्रकृति के साथ बढ़ते हुए व्यभिचार के विरुद्ध प्रतिवाद का एक प्रतीक है ।

पूरा जीवन जीना चाहते थे

दूसरा प्रश्न जो पूछा जाता था कि '१२५ मीलों की पदयात्रा क्यों ?' इसी बहाने बापू के जीवन-दर्शन के साथ भारतीय संस्कृति की प्रवृत्ति-साधना को समझाना पड़ता था । पहले तो कहता था कि 'चूंकि यह बापू की १२५वीं वर्षगांठ है, इसलिए १२५ मील की पदयात्रा का अनुषंग बैठता है ।' फिर कहता था कि 'बापू

१२५ वर्ष तक जीना चाहते थे ।' यों शास्त्रों के अनुसार 'जिजीविशेत शतं समाः' या 'जीवेम शरदः शतम्, अदीना शरदः शतम्' के आर्ष वाक्यों के अनुसार १०० वर्ष जीने का सामान्य संकेत है । इसीलिए एक बार बापू के जन्मदिन पर पं. मदनमोहन मालवीयजी ने उन्हें १०० वर्ष तक जीने की बधाई दी । लेकिन बापू हास्य से कब चूकनेवाले थे ? उन्होंने बधाई स्वीकार करते हुए उपालंभ दिया, ''आपने इसमें २५ वर्ष क्यों कम कर दिये ? मैं तो १२५ वर्ष जीना चाहता हूं ।''

इंगलैंड में पदयात्रा की कल्पना ही आकर्षक एवं अनोखी है, वहां के लोगों को भी मैंने आश्चर्यचकित होते देखा । इस जेट युग में पदयात्रा की कल्पना शायद इक्कीसवीं सदी की आहट हो ।

इसका अर्थ था कि बापू इस जीवन को संपूर्णता में जीना चाहते थे ।

यदि पलायन उनकी वृत्ति होती, तो हिमालय की गुफाओं में चले जाते । उनका जीवन कर्ममय था, वह कर्मयोगी थे—'' कुर्व्वन्नेवेह कर्माणि'' । उनका जीवन समाज-विमुख कभी नहीं रहा । इसीलिए लोक-संग्रह के लिए ही पूरा जीवन जीना चाहते थे ।

विश्व एक नीड

यात्रा-पथ भी विलक्षण ही चुना गया, वह था लगभग २०० वर्ष पूर्व निर्मित ब्रिटेन का 'ग्रैंड यूनियन कनाल' महासंघ नहर । यह उस युग की याद दिलाता है, जब न तो हवाई जहाज थे, न पथ-परिवहन का ऐसा विकास था । सामान ढोने के लिए नहर का रास्ता ही सबसे सुगम माना जाता था । फिर इंगलैंड के बाजारों एवं कस्बों में सड़कों पर भले ही लोग चलें, किंतु राष्ट्रीय राजपथों पर शायद ही लोग चलते हों । वहां ग्रुप में चलने के लिए सरकार की अनुमति की भी व्यवस्था होती एवं रास्ते में वाहनों को छोड़ किसी पथ-यात्री से भेंट नहीं होती । इसीलिए व्यवस्था यह की गयी कि इस नहर के किनारे-किनारे चलते जाएं एवं जहां समाप्त करना हो, उसके बगल के किसी कस्बे या शहर में रात बिताएं । इस मुख्य नहर में जिस पर अनेक नहर मिल जाते हैं, उसी प्रकार इस पदयात्रा में भी अनेक देशों के लोग मिलकर एक वैश्विक भाव से चल रहे थे— *'अत्र भवति विश्व एक नीडम्'* ।

बकरी प्रार्थना में शामिल हुई

यात्रा की शुरुआत २२ सितम्बर, ९४ को बरमिंघम से वुडब्रोक कॉलेज स्थित क्वेकर स्टडी सेंटर से हुई, जहां सन १९३१ में आकर ठहरे थे, बापू ! महादेव देसाई, प्यारेलाल एवं मीरा बहन के मूल हस्ताक्षर मौजूद भी थे । यही नहीं बापू के संस्मरण संबंधी कुछ आलेख भी संजोये थे । लोगों ने बताया कि यहां गुरुदेव रवीन्द्रनाथ भी ठहरे थे । छोटी जगह किंतु शांत एवं पवित्र । यहीं से वहां के प्रिंसिपल, प्रोफेसरों ने शुभेच्छाएं दीं । भारत के बरमिंघम स्थित उप-उच्चायुक्त भी आये । पदयात्रा देर से शुरू हुई । पहले दिन रास्ता खोजने में कठिनाई हुई क्योंकि कई नहर आकर मिलते थे, पता नहीं

चल पाता था कि किस पर चलना है । पहले दिन हमें किम्सवुड जाना था । पूर्व तैयारी के अभाव में यात्रियों के लिए ठहरने की व्यवस्था उस दिन तक ग्रामीण लॉज-लैपवर्थ में हुई । लगा कि उनके हम सभी व्यक्तिगत मेहमान हैं । सारी थकान एवं पूर्व तैयारी का अभाव भूल गये । एक युवा दंपत्ति एवं उनका एक छोटा शिशु कितनी सफाई एवं कितनी सुंदरता से देखभाल कर रहे थे । दूसरे दिन चलने के समय जब प्रार्थना करने लगे, तो उस आवास का देखभाल करनेवाली दंपत्ति ने सहर्ष उसमें भाग लिया, उसे मैंने संत असीसी की प्रार्थना पढ़ने को दी, जिसका उसने हर्षित होकर पाठ किया । उस समय एक बकरी भी प्रार्थना में आकर शामिल हो गयी । शायद यह बताने के लिए कि बापू की प्राण रक्षा बकरी के दूध से हुई थी, क्योंकि उन्होंने गाय का दूध लेना छोड़ दिया था । उस लॉज की दीवार पर मां के विषय में एक आकर्षक कविता थी, जिसे मैंने लिख लिया कि 'मां तो दूसरी होती नहीं, उसका कोई विकल्प नहीं होता ।' यह वेनेस विलियम्स की रचना थी ।

गांधी का रास्ता भूल गये हैं

फिर हम लोग लगभग १५ मील चलकर लगभग ढाई बजे दिन अपने दूसरे पड़ाव लैमिंगटन स्पा पहुंचे, जहां सनातन हिंदू मंदिर में ठहरने की जगह थी । यहां यह भव्य मंदिर मात्र ४० भारतीय परिवारों द्वारा बनाया गया है । संध्या समय गांधीजी के रामराज्य की कल्पना पर चर्चा हुई एवं प्रार्थना में सबने भाग लिया । लोगों ने आतिथ्य में अकृत्रिम स्नेह दिखाया । भारतीय मूल के लोगों की यह जिज्ञासा थी कि 'भारत इतना महान होते हुए भी आज इतनी विपदाओं से क्यों आक्रांत है । अभी तक इतनी गरीबी, अशिक्षा और भ्रष्टाचार क्यों व्याप्त है ।' सीधा-सा उत्तर दिया गया कि 'चूंकि गांधी के रास्ते को भूल गये ।' लेमिंगटन में एक भारतीय मूल की बच्ची ने सती प्रथा पर एक लघु शोध-प्रबंध लिखा था, जिसकी एक कापी मुझे दी गयी ।

लेमिंगटन से हम लोगों की यात्रा ब्राउंस्टन की थी, जहां हम लोगों को लगभग २० मील चलना पड़ा । रास्ते में कीचड़ और कंटीली झाड़ियां और दूसरी तरफ नहर में पानी । ब्राउंस्टन में हम लोग २४ तारीख की रात में एक सामुदायिक भवन में ठहरे, जहां हम लोग भूदान यात्रा की तरह फर्श पर कंबल बिछाकर सोये और ठंडक में कंबल ओढ़कर रात बितायी । लेकिन इसमें से किन्हीं को भी कोई शिकायत नहीं थी ।

दूसरे दिन २५ सितम्बर को वहां एक चर्च में प्रार्थना की । चर्च में एक वृक्ष भी लगाया । चर्च के पादरी ने अपने प्रवचन में बहुत भक्ति-भाव से गांधी की चर्चा की । २५ की रात में हम लोग बिलूशवर्थ पहुंचे । संपूर्ण यात्रा में एक भी व्यक्ति नहीं मिला, जिसे गांधी के प्रति असीम श्रद्धा न हो । साथ में एक अंगरेज यात्री अलीस्टर ने भगवान कृष्ण के गो प्रेम पर एक गीत सुनाया । शाम को गांधीजी की आखिरी वसीयत पर चर्चा हुई ।

गीता पर कान्फरेंस

२६ सितम्बर को बिलूशवर्थ से चलकर हम लोग मिल्टनकेंस पहुंचे । वहां सनातन हिंदू

एक बार बापू के जन्मदिन पर पं. मदन मोहन मालवीयजी ने उन्हें १०० वर्ष तक जीने की बधाई दी । लेकिन बापू हास्य से कब चूकनेवाले थे ? उन्होंने बधाई स्वीकार करते हुए उपालंभ दिया, ''आपने इसमें २५ वर्ष क्यों कम कर दिये ? मैं तो १२५ वर्ष जीना चाहता हूं ।''

मंदिर में ठहरने का अच्छा प्रबंध था । आज की यात्रा भी लगभग साढ़े सत्रह मील की थी । लेकिन ८१ साल के श्री रामजी भाई पटेल और गोवर्धन भाई पटेल कहीं थकते नहीं थे । आज लोगों ने गांधीजी के स्वाध्याय की अवधारणा पर चर्चा की । मिल्टनकेंस में हम लोग गीता के भक्त विनोद भाई के यहां गीता निवास में ठहरे । उन्होंने पद-यात्रियों के लिए सारा घर खाली कर दिया और स्वयं सपरिवार जमीन पर सोये । विनोदजी ने लंदन में गीता पर एक अंतरराष्ट्रीय कान्फ्रेंस भी आयोजित किया था ।

२७ को मिल्टनकेंस से चलकर हम लोग डंसटेबुल पहुंचे और वहां से दूसरे दिन चलकर हैंपस्टीड पहुंचे, जहां विकलांगों की एक संस्था में रात में ठहरे । हैंपस्टीड में एक सहयात्री मि. रोडरिक का घर था । फिर लायंस क्लब के अध्यक्ष भी कार्य छोड़कर हमारे स्वागत में आये । रोडरिक महोदय ने अपनी ओर से हम सबको जलपान के लिए एक होटल में निमंत्रित किया, किंतु एक साथी अलीस्टर नहीं आया । पीछे उसने बताया कि भले ही हम लोगों को निरामिष आहार परोसा गया हो, किंतु चूंकि वहां मांस भी बनता है, अतः वह नहीं जा सकेंगे । विकलांग केंद्र, जहां हम ठहरते थे उसकी देख-भाल करनेवाली बहन अपने कार्य करने के समय भी बातें करने के लिए ठहरी रही । दूसरे दिन एटनबरो के गांधी फिल्म का वीडियो ले आयी और कहा मैं जरूर देखूंगी । इस केंद्र में वृद्ध लोग दिन का अपना समय बिताने के लिए इसमें कार्य करने आते हैं, क्योंकि परिवार में तो कोई रहता नहीं । यह है आधुनिकता का दंड । सब लोगों ने प्रार्थना में योगदान दिया । लायंस क्लब के अध्यक्ष इतने प्रभावित हुए कि २ अक्तूबर को यात्रा के समावर्त्तन के समय लंदन आये एवं बापू को श्रद्धांजलि दी ।

गांधी एवं हिंदूधर्म पर चर्चा

हैंपस्टीड से २९ सितम्बर की प्रातः चलकर संध्या में रिकमैंसवर्थ में भरत भाई के घर ठहरे, जहां गांधी एवं हिंदू धर्म पर चर्चा चली । ३० सितम्बर को हम लोग अलपर्टन आये और वहां सनातन धर्म मंदिर में ठहरे । इतना प्रशांत स्थान, व्यापक परिसर, भगवान की जीवंत बोलती प्रतिमाएं, प्रातः-शाम सामूहिक प्रार्थना— लगा कि यहां भारतीय मूल के लोगों में भारतीय धर्म एवं राष्ट्र के प्रति अधिक स्नेह है, शायद यह अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की चिंता के कारण हो । इसी जगह अयोध्या कांड

के बाद मंदिर को जलाया गया था, उसके अवशेष देखे । लेकिन आश्चर्य, भगवान की मूर्तियां सही-सलामत बच गयीं । शाम को मंदिर में स्वागत कार्यक्रम । भारतीयों का इतना बड़ा बाजार है कि लगा मैं भारत में ही हूं ।

कारवां बनता गया

१ अक्तूबर से अलपर्टन से जब चले, तो बेन इंडियन एसोसियेशन परिसर में वृक्षारोपण कर ८ से हम १८ हो गये । लंदन शहर ही था । लोग मिलते गये एवं कारवां बनता गया । हम लोग लंदन के पास जहां नहर समाप्त होता है, वहां रुके । इस स्थान का नाम है छोटा मेंनिस । जीवन भाई जो हमारे इस यज्ञ के ऋत्विक हैं वे किसी का हृदय दुखाना नहीं चाहते । आज कूटनीस बहन से बातें हुईं, जो बी. बी. सी. में हैं । एक प्रकार से आज यात्रा की समाप्ति ही थी ।

२ अक्तूबर को तो टैविटस्क्वायर में बापू की विशाल प्रतिमा पर श्रद्धांजलि देनी थी । २ अक्तूबर को हम सभी पदयात्री बापू उद्यान पहुंच गये । भारत के उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी ने हमारा अभिनंदन किया । वहां तो काफी बड़ी भीड़ जुट गयी जिनमें कुछ अंगरेज भी थे । गांधी के नाम पर ३-४ जो संस्थाएं थीं, उन सबके प्रतिनिधि आये । संयोग था कि भारत सरकार के दो मंत्री श्री संतोषमोहन देव एवं श्री माधवसिंह सोलंकी भी आये । फिर हम लोग क्वेकरकेंड आये, जहां हम लोगों का हृदय से स्वागत किया गया, क्योंकि क्वेकर लोगों का गांधीजी से बहुत संपर्क था । वे भी अहिंसा के निष्ठावान कार्यकर्ता हैं । फिर भारतीय मूल की हाउस ऑव लॉर्ड्स की एक सदस्या ने वहां हम लोगों का उत्साह एवं उमंग से स्वागत किया एवं गांधीजी की महत्ता बतायी । गांधी जयंती के अवसर पर कई कार्यक्रम थे, लेकिन मैं बेंट एशोसियेशन की सभा में ही मुख्य अतिथि होकर रहा, जहां हॉल बिलकुल भर गया था । सन राइज रेडियो ने मेरा इंटरव्यू लिया एवं श्री संतोषमोहन देव के भाषण हुए । उस अवसर पर लॉर्ड माउंटबैटन की लड़की आयी एवं बापू के साथ अपने संस्मरण भी सुनाये । मेयर महोदय ने भी श्रद्धांजलि दी । हम लोगों की पदयात्रा ने गांधी जयंती कार्यक्रम में एक आकर्षक आयाम जोड़ दिया, जिसे जानकर लोगों को काफी खुशी हुई ।

लंदन की गांधीवादी संस्थाएं

लंदन में गांधी के नाम पर कई संस्थाएं हैं— बापू— गांधी स्मारक ट्रस्ट, जिसके अध्यक्ष जीवन भाई हैं, सच्चे गांधीवादी । अपने घर में गांधीजी की मूर्ति एवं सभी धर्मों के धर्मग्रंथ रखकर पूजा करते हैं । उन्होंने ही यह यात्रा आयोजित की । इसके पूर्व उन्होंने गांधीजी पर कई प्रदर्शनियां आयोजित कीं । गांधी साहित्य का वितरण किया, गांधी फिल्म दिखायी । सर्वोदय सम्मेलनों में भी यदा-कदा आते रहते हैं । दूसरी संस्था का नाम 'गांधी फाउंडेशन' है, जिसके अध्यक्ष रिचार्ड एटनबरो हैं । तीसरी संस्था है— 'महात्मा गांधी फाउंडेशन' जिसके अध्यक्ष प्रख्यात गुजराती

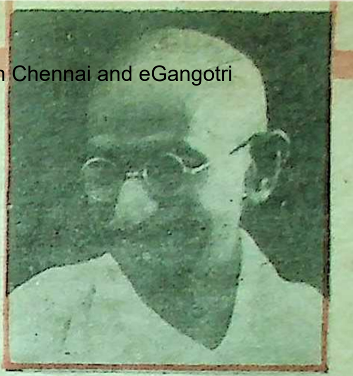

कवि दया भाई पटेल हैं । गांधी जयंती के अवसर पर इनका आयोजन काफी भव्य होता है । मेरा एक इंटरव्यू लिया जिसका अंतिम सवाल था कि 'भारत में गांधी विचार की क्या स्थिति है ?' मुझे सब औपचारिकता को छोड़ यह कहना पड़ा कि 'बापू अपने देश में ही निर्वासित हैं ।' इसी प्रकार बी. बी. सी. ने भी जब मेरा साक्षात्कार लिया और इस प्रश्न को दूसरे रूप में रखा, तो यह कहना पड़ा कि 'हम भारत में बापू को भूल गये हैं ।'

३ तारीख को लंदन से लगभग १५० मील दूर लेस्टर में भी सनातन धर्म सभा मंदिर हॉल एवं जैन सेंटर में गांधीजी की जयंती मनायी गयी । हर जगह मैंने यही निवेदन किया कि अपनी नयी पीढ़ी को हम गांधीजी की आत्मकथा एवं अन्य रचनाओं से परिचित कराएं एवं उनके रचनात्मक कार्यक्रम में जो यहां के अनुरूप हो उन्हें करें । गांधी विचार जानने की भूख तो यहां बहुत है ।

गांधीजी के प्रति अगाध निष्ठा

भारतीय मूल के निवासियों में गांधीजी के प्रति वहां अगाध निष्ठा है, जिसके आधार पर वहां गांधी विचार का प्रचार करने के लिए अत्यंत अनुकूल भूमिका है । सबसे बड़ी बात तो यह है कि ब्रिटेन के लोगों का चरित्र इतना उदार एवं ऊंचा है कि वे गांधी एवं गांधी विचार के प्रति अत्यंत श्रद्धावान हैं । बापू स्वयं लंदन को अपना दूसरा घर मानते थे । भारत को चीनी आक्रमण के समय पहली और बिना शर्त की सहायता इंगलैंड ने भेजी । अभी भी वहां काफी भारतीय हैं । मुझे लगता है कि गांधी एक सुरक्षित सेतु हैं जिसके द्वारा हम इंगलैंड एवं भारत की मैत्री को दृढ़ कर पाश्चात्य जगत में सुगमता के साथ प्रवेश कर सकते हैं । इंगलैंडवासी भारत की सभ्यता एवं संस्कृति से भी अधिक अवगत हैं एवं गांधी के प्रति तो उनकी अपूर्व श्रद्धा है । अतः गांधी को हम गुजराती या भारतीय नहीं बनाकर वैश्विक बनाने की दिशा में प्रयत्नशील हों, तो हम गांधी को उदार अंगरेज बुद्धिजीवियों के द्वारा पाश्चात्य जगत में अधिक सरलता से प्रवेश करा सकते हैं ।

सबसे दुःख की बात है कि गांधी के सवा सौ साल में गांधी भारत से ही निर्वासित दीखता है, क्योंकि हम उनके सांप्रदायिक सद्भाव एवं आपसी प्रेम को जलांजलि दे चुके हैं । उनकी आखिरी वसीयत को भूलकर भी हिंसा को बढ़ाकर तानाशाही के निकट आ रहे हैं । यही कारण है कि बापू के भारत में अंतिम व्यक्ति की हालत आज पहले से भी अधिक दयनीय हो रही है । आर्थिक विषमता एवं उच्च स्तरों पर इतना भ्रष्टाचार एवं जन-जीवन में भोगवाद की उद्दाम लालसा ने यह साबित कर दिया है कि वर्तमान भारत गांधी का भारत नहीं है ।

— गांधी विद्या संस्थान
राजघाट, वाराणसी-२२१००१

कृष्णदेव चतुर्वेदी, भोपाल; कृष्णानंद गुप्त, गोरखपुर

□ 'कफन' शब्द का हिंदी पर्याय क्या है ?

— इसका हिंदी पर्याय 'शवाच्छादन-वस्त्र' या प्रेतवस्त्र है । वैदिक साहित्य में प्रेत (देह से निर्गत) का अर्थ मृत व्यक्ति होता है (शत. ब्रा. १०.५.२.१३) ।

संजयलाल कपरदार, बोकारो

□ 'सूखी बर्फ' क्या होती है ?

— सामान्य बर्फ पानी से बनती है, किंतु 'सूखी बर्फ' कार्बन डायक्साइड से बनायी जाती है । खुश्क बर्फ को 'सालिड कार्बन डायक्साइड' कहते हैं । सामान्य तौर पर तो कार्बन डायक्साइड एक गैस है, किंतु जब इस पर निम्नतम तापमान पर अत्यधिक दबाव डाला जाता है (सामान्य वातावरण से लगभग पांच गुना अधिक) तब यह ठोस पदार्थ में परिवर्तित हो जाती है । कार्बन डायक्साइड का यह ठोस रूप ही सूखी बर्फ है । यह अत्यधिक ठंडी होती है, लगभग ७८.५ अंश सेंटिग्रेड । इस बर्फ की विचित्रता यह है कि पिघलने पर यह तरल रूप में नहीं आती, बल्कि सीधे गैस बनकर निकल जाती है । यह बहुत भारी होती है ।

धीरज मंडल, डाल्टनगंज; प्रहलाद जसवानी, मंडला

□ चमगादड़ का अस्तित्व कब से है ? इसके आंखें होती है ?

— जीवाश्मों के अध्ययन से पता चला है कि चमगादड़ों का अस्तित्व ६ करोड़ वर्ष पूर्व भी पृथ्वी पर था । चमगादड़ के आंखें होती हैं, किंतु वह इनका उपयोग नहीं करता । उड़ते समय चमगादड़ अपने मुंह से उच्च आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) की ध्वनि तरंगें उत्पन्न करता है । इनको पराध्वनिक (अल्ट्रासोनिक) तरंगें कहते हैं । इनकी आवृत्ति लगभग एक लाख हर्ट्ज होती है । आवृत्ति की यूनिट को हर्ट्ज कहते हैं । यदि कोई वस्तु एक सेकेंड में एक कंपन उत्पन्न करती है तो उसकी आवृत्ति एक हर्ट्ज बतायी जाती है । इतनी उच्च आवृत्ति की तरंगें सीधी रेखाओं में चलती हैं । ये पराध्वनिक तरंगें किसी वस्तु से टकराकर जब चमगादड़ के कानों में पहुंचती हैं, तो वह उस वस्तु से टकराने से बचने के लिए मार्ग बदल देता है ।

मनोज बोहरा, बड़नगर

□ साबुदाना कैसे बनाया जाता है ?

— आप 'कादम्बिनी' के नियमित पाठक हैं । कृपया विगत अंक देखें ।

विनय पंकज, दरभंगा

□ भारतीय संविधान में हमारे देश का नाम क्या है ?

— 'इंडिया' अर्थात 'भारत' ।

सुरेश साह, बछवाड़ा

□ आशुलिपि के आविष्कारक कौन थे ?

— अधिकतर इतिहासकारों का मत है कि यूनानी इतिहासकार जेनोफन ने सुकरात के संस्मरण लिखने के लिए किसी पुरानी ग्रीक प्रणाली का उपयोग किया था, जो आशुलिपि

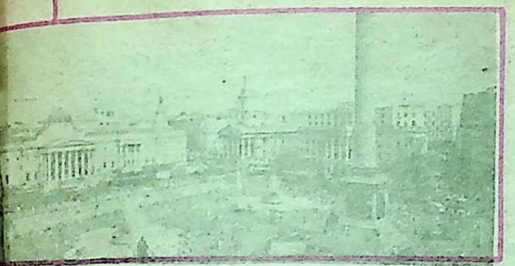

पुनीत धवन, अकोला

☐ ब्रिटिश इतिहास में लॉर्ड नेलसन क्यों प्रसिद्ध है ?

— लॉर्ड नेलसन (सन १७५८-१८०५) ब्रिटिश एडमिरल था । युद्ध में उसकी एक आंख जाती रही थी, फिर भी अंगरेजों के लिए केप सेंट विंशेंट की विजय में उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही । कुछ समय बाद एक अन्य युद्ध में उसका दाहिना हाथ भी कट गया, परंतु सन १७६८ में उसने भूमध्यसागर में फ्रांस की नौ-सैनिक शक्ति को नष्ट करके दिखा दिया । फ्रांसीसियों पर उसकी सबसे बड़ी विजय ट्रफालगर के युद्ध (सन १८०२) में हुई, जिसने फ्रांस की कमर ही तोड़कर रख दी थी । लंदन में ट्रफालगर स्क्वेयर पर उसकी प्रतिमा के साथ इसी युद्ध का स्मारक बना है ।

थी । रोम के मैरकस टुलियस टिरो ने ईसा पूर्व ६३ में लैटिन आशुलिपि का आविष्कार किया था । लेकिन आशुलिपि का सुव्यवस्थित ढंग से विकास १७वीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ । जॉन विलिस को आधुनिक आशुलिपि का जनक माना जाता है । परंतु सन १७८६ में ब्रिटिश आशुलिपिक सैमुअल टेलर ने जो प्रणाली विकसित की, उसका अनुसरण फ्रांसीसी, स्पेनिश, पुर्तगाली, इतालवी, स्वेडिश, जरमन, डच तथा कई अन्य भाषाओं में किया गया । टेलर की प्रणाली के आधार पर सर आइजक पिटमैन ने सन १८३७ में जिस प्रणाली का आविष्कार किया था, आज उसी का उपयोग किया जाता है ।

सुभाष अग्रवाल, बरेली

☐ राष्ट्रपति भवन का पूर्ववर्ती नाम क्या है ?

— वायसरिगल हाउस— इसमें ब्रिटिश ताज का प्रतिनिधि रहता था ।

श्याम सुंदर शर्मा, हिसार

☐ महाभारत के रचयिता वेदव्यास को 'कृष्ण द्वैपायन व्यास' क्यों कहते हैं ?

— व्यास का अर्थ है 'संपादक' । यह उपाधि अनेक पुराने ग्रंथकारों को प्रदान की गयी है, यही नाम 'महाभारत' के संकलनकर्ता, वेदांत दर्शन के स्थापनकर्ता तथा पुराणों के व्यवस्थापक को भी दिया गया है । ये सभी व्यक्ति वेदव्यास कहे गये हैं । विद्वानों में मतभेद है कि ये सभी एक ही व्यक्ति थे या विभिन्न । भारतीय परंपरा इन सभी को एक ही मानती है । महाभारतकार व्यास, ऋषि पराशर एवं सत्यवती के पुत्र थे । ये सांवले रंग के थे और यमुना के बीच स्थित एक द्वीप में उत्पन्न हुए थे । अतएव अपने रंग के कारण 'कृष्ण' और जन्म स्थान के कारण 'द्वैपायन' कहलाये । पुराणों में १८ व्यासों का उल्लेख है, जो ब्रह्मा या विष्णु के अवतार कहलाते हैं तथा पृथ्वी पर विभिन्न युगों में वेदों की व्याख्या और प्रचार के लिए अवतीर्ण होते हैं ।

पंकज आनंद, मुजफ्फरपुर

☐ दूरदर्शन के समाचारवाचकों के सामने क्या

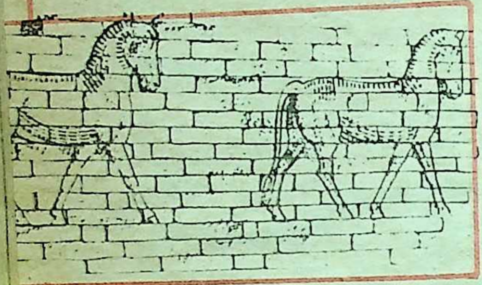

राजेश माथुर, जयपुर

☐ **ईंटों का प्रयोग कब से शुरू हुआ ?**

— ईंटें उतनी ही पुरानी हैं जितनी कि हमारी सभ्यता । बेबीलोन और मिस्र के लोग तो ईसा से ३००० वर्ष पूर्व ही ईंटों का इस्तेमाल शुरू कर चुके थे । कुछ खुदाइयों से तो पता चलता है कि इनका प्रयोग इससे भी पहले हुआ करता था । पहले ईंटें बनाने के लिए मृत्तिका (मिट्टी) को पैरों से कुचलकर साना जाता था, और उसमें भूसा मिलाया जाता था, ताकि ईंट फटने न पाये । फिर इसे धूप में सुखाया जाता था । बाद में यह पता चला कि धूप में सुखाने के बजाय आग में पकाने से ईंटें अधिक मजबूत रहेंगी । अतः पकायी गयी ईंटों में भूसा मिलाने की आवश्यकता नहीं रही । ये ईंटें इतनी टिकाऊ निकलीं कि प्राचीन बेबीलोनिया की ईंटें अब भी देखी जा सकती हैं ।

कोई स्क्रीन होता है ?

— जी, हां । उन पर मोटे अक्षरों में समाचार आते रहते हैं, जिनको पढ़कर वे बोलते हैं ।

गोवर्द्धन तिवारी, हजारीबाग

☐ **संगीत निर्देशक युवा शारंगदेव किस महान संगीतकार के पुत्र हैं ?**

— पंडित जसराज के ।

अनीसा खातून, जौनपुर

☐ **पशु भी हमारी तरह क्यों नहीं बोल पाते ?**

— वह इसलिए कि पशुओं के मस्तिष्क मानव मस्तिष्कों की तुलना में कम विकसित होते हैं । पशुओं में भी भावनाओं की उत्पत्ति तो होती है, किंतु उनको व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं होते । वे अपनी भावनाएं संकेतों या ध्वनियों से व्यक्त करते हैं । जैसे कि कभी-कभी हम भी 'हां' या 'ना' कहने के लिए सिर हिला देते हैं, या किसी को ठहरने का संकेत देने के लिए पंजे खोलकर हाथ दिखा देते हैं । अतः मस्तिष्क के समुचित रूप से विकसित न होने के कारण वे हमारी तरह शब्दों का विकास नहीं कर सके हैं । यही कारण है कि वे मनुष्यों की तरह बोल नहीं सकते ।

रेखा अग्रवाल, झांसी

☐ **पाम्पी कहां है और क्यों प्रसिद्ध है ?**

— इटली में नेपल्स के निकट एक प्राचीन नगर था, जो ज्वालामुखी के विस्फोट की राख में लगभग दो हजार वर्ष पूर्व (सन ७९) दब गया था । सन १७४८ में इसकी खुदाई की गयी, जिससे तत्कालीन सभ्यता के अनेक प्रमाण प्राप्त हुए ।

चलते-चलते

शांति निकेतन में रांगेय राघव ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को अपने विवाह की सूचना देते हुए कहा— 'पंडितजी, अब मैं शरीफ हो गया हूं ।' मुसकराते हुए द्विवेदीजी का प्रश्न था 'आखिर कितने दिन ?'

— सूत्रधार

व्यंग्य

शुभकामनाओं पर टिका देश

● हरि जोशी

कई लोग जो दीवारों में चुन दिये जाने योग्य हैं, वे उनको तो मंगलकामनाएं देते ही हैं, जो समाज को और देश को चूना लगा रहे हैं, मंगलकामनाओं का सहारा लेकर स्वयं भी यहां-वहां भरपूर चूना लगाने में पीछे नहीं हैं । शुभकामना देते जाइए, चूना भी लगाते जाइए, आपका जीवन तो मंगलमय बना रहेगा । कोई भी आपकी ओर अंगुली उठाने का साहस नहीं करेगा ।

मैं मंगलकामनाएं व्यक्त करने के मामले में बहुत अलाल हूं । सोचता हूं निकट भविष्य में कोई बड़ी आफत किसी के सिर पर यदि मंडरानेवाली न हो, तो क्यों दी जाएं, मंगलकामनाएं ? दंगलकामनाएं ही दे दी जाएं ? दंगलकामना इसलिए कि सामनेवाला वर्जिश करता रहे, निरंतर तैयारी में निमग्न रहे तथा भविष्य में आनेवाली हर मुसीबत से जूझने की क्षमता अर्जित कर सके ? कम-से-कम दंगलकामना करने से वह स्वस्थ तो होगा ?

शुभ-अशुभ, मंगल-अमंगल सभी कुछ साथ-साथ यात्रारत हैं, एक ही सिक्के के दो पहलू । एक परिचित जो बहुत दिनों से मेरी टांग खींच रहा था, आज हाथ मिलाने दौड़ा और टिका गया मंगलकामनाएं । मैं समझ गया शाम तक कुछ और गंभीर, कुछ अधिक खतरनाक घटनेवाला है । सब तो मंगलकामनाएं व्यक्त कर ही रहे थे, वह भी कर गया ।

मेरी समझ में मंगलकामनाएं तीन तरह की होती हैं । धनात्मक शुभकामनाएं, उदासीन शुभेच्छाएं तथा ऋणात्मक मंगलकामनाएं । जब कोई अंतरंग मित्र या संबंधी हृदय खोलकर सच्चे हृदय से शुभकामनाएं देता है, तो मैं धनात्मक शुभकामनाएं कहता हूं । भले ही आत्मिक न हो धन देनेवाली तो हो ? कई लोग टेबिल-कुरसी के काम को नये वर्ष में भी हाथ

नहीं लगाना चाहते, वे उदासीन मंगलकामनाएं व्यक्त करते हैं । वे सोचते हैं, जमानेभर को मंगलकामनाएं देते रहो, ताकि समय नस्तियों और प्रकरणों से युद्ध करने में न बीते बल्कि कुछ मीठी-मीठी बातों में निकल जाए, इसीलिए एक ही शब्द रटंतू तोते की तरह दोहराते रहते हैं । आफिस के प्रत्येक कक्ष में हार्दिक मंगलकामनाएं, हैपी न्यू ईयर, शुभकामनाएं, घड़ी की टिक-टिक की तरह करते रहते हैं ।

यह अनुभूतिजन्य सत्य है कि वर्षांत में ३०-३१ दिसम्बर के लिए एक-दो आकस्मिक अवकाश प्रत्येक कर्मचारी, अधिकारी बचाकर रखता है । इन दो दिनों में तो कार्यालयों में बहुधा अघोषित सामूहिक अवकाश ही रहता है । यदि अस्सी-नब्बे प्रतिशत कर्मचारी आकस्मिक रूप से बीमार हो जाएं, तो पूरा कार्यालय ही अस्वस्थ नहीं हो जाएगा ? न कर्मचारी चलते-फिरते दिखते हैं, न नस्तियां । कर्मचारी घरों में बिस्तरों पर पड़े रहते हैं, प्रकरण और नस्तियां कार्यालयों में टेबिलों पर ।

एक जनवरी को या दीपावली, होली, रक्षाबंधन, दशहरा, पंद्रह अगस्त आदि पर्वों के ठीक आगामी दिन; सभी कार्यालय मात्र मंगलकामनाओं में ही बीत जाते हैं । बार-बार दी जाती मंगलकामनाएं सचमुच जरूरी भी होती हैं । सभी समझते हैं कि मंगलकामनाएं दी जानी चाहिए । देश को इनकी जरूरत है । सभी को भी ।

कुछ देशों में नौकरियां दो या तीन साल के अनुबंध पर होती हैं । जहां-जहां नौकरियां असुरक्षित होती हैं, वहां का काम सुरक्षित तरीके से हो जाता है । जहां-जहां नौकरियां सुरक्षित रहती हैं, वहां का काम असुरक्षित हो जाता है । जहां नौकरियां जा सकती हैं, वहां के कर्मचारी को प्रतिदिन तथा नियमित रूप से काम हेतु आना पड़ता है । जहां नौकरियां नहीं जातीं, वहां बहुधा कर्मचारी भी काम हेतु नहीं जाते । 'नौकरी' का 'कर्मचारी' से 'रिश्ता' यों ही नहीं हो जाता । रंगीन मिजाज व्यक्ति इनके बिना जी ही नहीं सकता ।

शुभकामनाओं की आवश्यकता इसलिए भी अधिक होने लगी है, क्योंकि नौकरियां अब दुर्लभ हो गयी हैं । फिर जिस देश में जान के खतरे कदम-कदम पर हों, वहां आम आदमी को तो खतरों से ही जीवन पर्यंत खेलना है । उसे शुभकामनाओं की सख्त जरूरत होती है । मुझे दुःख तब होता है, जब मंगलकामनाएं उसे न दी जाकर बड़े-बड़े लोगों को दी जाती हैं, जिन्हें इनकी तनिक भी आवश्यकता नहीं रहती । और यदि और समृद्ध तथा प्रभावी लोगों को ही मंगलकामनाएं दी जाया करेंगी, तो वे निश्चय ही और समृद्ध होंगे । अमीर और अमीर होंगे, गरीबों को मंगलकामना नहीं दी जाती अतः वे और गरीब हो रहे हैं ।

अब जो व्यक्ति पहली जनवरी को भी 'हैपी न्यू ईयर' न कहे, उसे आप गंवार नहीं तो और क्या कहेंगे ? गांवों में तो आपने किसानों को आपस में 'हैपी न्यू ईयर' कहते सुना भी नहीं होगा ? उनके वर्षभर दुःखी बने रहने का यही तो कारण है ? वे लोग हैं जो गधों की तरह वर्षभर लदे रहते हैं, और एक हम शहराती लोग हैं, जो बस चले तो सालभर 'हैपी न्यू ईयर' कहते-कहते ही गुजार दें ? हैपी न्यू ईयर तो छोड़ो दे शुभकामना या मंगलकामना—जैसे

वचन भी नहीं उच्चार सकते । वे वर्षभर काम करते हैं, और हम सालभर कहते रहते हैं । भैया काम न करो, बात करो । जो लोग समृद्धि के शीर्ष छूना चाहते हैं, वे मंगलकामनाएं भी चुने हुए बड़े लोगों को देते हैं । मंगलकामनाएं उन्हें देने से 'रिटर्न' अच्छा मिलता है । भले ही वे लोग देश को चूना लगा रहे हों, किंतु हमें ऐसे ही चुने हुए लोगों को मंगलकामनाएं देना चाहिए ।

कई लोग जो दीवारों में चुन दिये जाने योग्य हैं, वे उनको तो मंगलकामनाएं देते ही हैं, जो समाज को और देश को चूना लगा रहे हैं, मंगलकामनाओं का सहारा लेकर स्वयं भी यहां-वहां भरपूर चूना लगाने में पीछे नहीं हैं । शुभकामना देते जाइए, चूना भी लगाते जाइए, आपका जीवन तो मंगलमय बना रहेगा । कोई भी आपकी ओर अंगुली उठाने का साहस नहीं करेगा ।

'बोये पेड़ बबूल के तो आम कहां से खाय' यदि तूने मंगलकामनाएं प्रेषित नहीं कीं, तो तेरा अपना जीवन मंगलमय कैसे रहेगा ? जितने अधिक शुभकामना पत्र भेजेगा, उतना ही तेरा भी शुभ होगा ।

मेरी तो अंतिम मंगलकामना यही है कि समूचे देश में मंगलकामनाएं देने का वृहद आंदोलन छिड़ जाए और देश के कण-कण में शुभकामनाएं बिखरा दी जाएं । शायद कण-कण में व्याप्त मंगलकामनाओं से देश का कुछ भला हो जाए ? और तो मुझे दूसरी कोई उम्मीद नहीं दिखती ।

—३७७ न्यू सुभाष नगर,
रायसेन मार्ग,
भोपाल-४६२ ०२३

घर बैठे दफ़्तर

ब्रिटिश दूरसंचार संगठन ने अपने एक अभिनव प्रयोग के अंतर्गत घर बैठे दफ़्तर का कामकाज निपटाने के लिए टेलीवर्किंग की व्यवस्था को विकसित कर एक नयी प्रणाली इंटीग्रेटेड सर्विस डिजीटल नेटवर्क (आई. एम. डी. एन.) की शुरुआत कर दी है ।

एक महिला टेलीफोन ऑपरेटर श्रीमती सोना मैकूगन की दफ़्तर आने और वापस जाने में होनेवाली कठिनाइयों के कारण दूरसंचार विभाग को इस दिशा में प्रयास करना पड़ा । श्रीमती मैकूगन के घर पर कंप्यूटर एवं वीडियोफोन लगवाकर उनके घर से दूरसंचार के दफ़्तर तक टेलीकॉम प्रणाली विकसित की गयी । कंप्यूटर 'की बोर्ड' द्वारा उनका संपर्क सीधे दफ़्तर से हो गया और दफतर से आनेवाले संदेश कंप्यूटर स्क्रीन पर दिखायी देने लगे । श्रीमती मैकूगन वांछित सूचनाएं वापस भेजने लगीं ।

— विनोद कुमार लाल

खुलेंगे पट केदारनाथ के !

● धर्मेंद्र रावत

विस्तृत हिमश्रृंखला हिमालय के कश्मीर से अरुणाचल तक के विस्तार की हृदयस्थली है— 'गढ़वाल मंडल' । देवात्मा हिमालय की यह हृदयस्थली स्वयं कैलाशपति शिव की प्रधान क्रीडास्थली एवं निवासस्थली भी है । गढ़वाल का यह क्षेत्र अनादिकाल से ही संपूर्ण भारतवर्ष में पवित्रतम माना गया है । यही कारण है कि यहां पर स्थान-स्थान पर प्राचीन धार्मिक तीर्थस्थल हैं, यहां की हर नदी गंगा-सी पवित्र है और हर शिला के पीछे है एक लंबी धार्मिक कथा । हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी गढ़वाल क्षेत्र 'केदारखंड' या 'केदारभूमि' ना से प्रसिद्ध था । स्कंदपुराण के एक भाग 'केदा खंड' (ग्रंथ) में भी इस भाग को संपूर्ण हिमालय के पांच खंडों में एक माना गया है—

खंडाः पंच हिमालयस्य कथिता नैपाल कूर्मांच
केदारोऽथ जलंधरोथरुचिरः काश्मीर संज्ञोन्तिम

गढ़वाल का केदारखंड नाम संभवतः इ क्षेत्र में स्थित सर्वाधिक प्राचीन व भव्य केदारनाथ मंदिर पर ही आधारित है । इसी

पुराणों के अनुसार केदारनाथ में शिव की स्थापना स्वयं पांडवों द्वारा द्वापर युग में की गयी थी । उन्होंने ही यहां पर सर्वप्रथम मंदिर का निर्माण अपने हाथों से किया था । दंतकथाओं के अनुसार मंदिर का वर्तमान स्वरूप पांडवों के पौत्र राजा जनमेजय द्वारा बनवाया गया और उन्होंने ही माता कुन्ती, पांडवों और श्रीकृष्ण-बलरामजी की मूर्तियां मंदिर में रखवायीं ।

मंदिर में इस संपूर्ण क्षेत्र के स्वामी आशुतोष शिव केदारनाथ नाम से स्थापित हैं ।

पुराणों के अनुसार सतयुग में एक बार हिमालय में घूमते-घूमते शिव केदारनाथ पहुंचे । इस स्थान की नैसर्गिक छटा उन्हें इतनी भायी कि वह सदा के लिए यहां पर बस गये । शिवपुराण के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति हेतु शिव को ढूंढ़ते गोत्रहंता पांडवों से बचने के लिए शिव काशी से केदारनाथ पहुंचे । यहां पर भी पांडवों ने उन्हें ढूंढ़ लिया । विवश होकर शिव महिष-रूप धरकर भूमि में समाने लगे । महाबली भीम ने यह देखकर महिषरूपी शिव की पूंछ पकड़ ली और पांडवों ने उनसे मोक्ष प्रदान करने की याचना की । शिव प्रसन्न हुए और उन्होंने पांडवों को उनके पापों से मुक्त कर दिया । उसी समय से शिव का पिछला भाग केदारनाथ में केदारलिंग के रूप में गर्भगृह में पूजित है । महिषरूपी शिव के अन्य भाग कालांतर में गढ़वाल में ही रुद्रनाथ, तुंगनाथ, मध्यमहेश्वर व कल्पेश्वर में प्रकट हुए और यह पांचों स्थान पंचकेदार नाम से प्रसिद्ध हुए । केदारखंड ग्रंथ' में भी कहा गया है—

मम क्षेत्राणि पंचैव, भक्त प्रीति कराणि वै, केदारं मध्यमं तुंगं, तथा रुद्रालयं प्रियम् । कल्पकं च महादेवि, सर्वपाप प्रणाशनम्, कथितं ते महाभागे केदारेश्वरमंडलम् ॥

केदारनाथ की प्राचीनता

केदारनाथ भारतवर्ष के विभिन्न भागों में स्थित द्वादश ज्योतिर्लिंगों में एक है, जैसा कि शिवपुराण, ज्ञानसंहिता में भी वर्णित है—

सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्री शैले मल्लिकार्जुनम् ।

× × × ×

हिमालये तु केदारं, धुश्मेशं च शिवालये ।

केदारखंड ग्रंथ में भगवान शिव ने इस स्थान को इतना प्राचीन बताया है, जितने शिव स्वयं हैं । केदारनाथ से उत्पन्न केदारखंड नाम गढ़वाल का एक प्राचीन नाम है । किंतु इससे भी प्राचीन नाम 'केदारभूमि है' जो पुनः केदारनाथ से ही उत्पन्न प्रतीत होता है । गढ़वाल के गोपेश्वर नामक कस्बे में गोपीनाथ (स्वयं शिव) के एक मंदिर में स्थित विशाल व प्राचीन त्रिशूल पर अशोक चल्ल के सन ११९१ में लिखे अभिलेख में गढ़वाल को केदारभूमि नाम से ही संबोधित किया गया है । इससे स्पष्ट है कि इस काल से पूर्व ही केदारनाथ अत्यंत प्रसिद्ध धार्मिक गंतव्य था । सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध में बाणभट्ट द्वारा रचित साहित्य में भी केदारनाथ में स्थित 'भृगु पंथ' से गिरकर स्वर्ग

प्राप्ति होना वर्णित है । मौर्य युग के पश्चात ईसा पूर्व १८५ वर्ष से प्रारंभ पुष्यमित शुंग के काल में रचित अधिकतर पुराणों में भी केदारनाथ की यात्रा का उल्लेख किया गया है, जो इसकी प्राचीनता को प्रदर्शित करता है । यही नहीं सातवीं एवं आठवीं सदी तक केदारनाथ संपूर्ण भारतवर्ष में इतना प्रसिद्ध हो चुका था कि दक्षिण भारत के दो शैव आचार्यों तिरुज्ञान संबंधघर (सन ६५० ई.) व सुंदरमूर्ती (सन ८५० ई.) ने भी केदारनाथ की महिमा का वर्णन अपनी कविताओं में किया ।

गढ़वाल के प्रमुख तीर्थों का विस्तृत वर्णन करनेवाला ग्रंथ 'केदारखंड', जो प्राचीन स्कंद पुराण का एक अध्याय होने का दावा भी करता है (यद्यपि है नहीं), स्वयं केदारनाथ मंदिर से इतना प्रभावित है कि उसमें तमसा (टौंस) नदी से बौद्धाचल (बधाण) और हरिद्वार से श्वेत पर्वत (कैलाश पर्वत), तक के विस्तार, अर्थात वर्तमान गढ़वाल को 'केदारखंड' नाम ही दे दिया गया है । बारहवीं शताब्दी के लगभग रचित यह ग्रंथ 'केदारखंड' यद्यपि अत्यंत प्राचीन नहीं है, पर यह सिद्ध अवश्य करता है कि इसके निर्माण से काफी पूर्व ही केदारनाथ का भव्य स्वरूप प्रकाश में आ चुका था । इतिहासकार भी इस बात को मानने से इनकार नहीं करते कि केदारनाथ का मंदिर कुमाऊं व गढ़वाल में सबसे प्राचीन, भव्य व विशाल है ।

केदारनाथ मंदिर का निर्माण

पुराणों के अनुसार केदारनाथ में शिव की स्थापना स्वयं पांडवों द्वारा द्वापर युग में की गयी थी । उन्होंने ही यहां पर सर्वप्रथम मंदिर का निर्माण अपने हाथों से किया था । दंतकथाओं के अनुसार मंदिर का वर्तमान स्वरूप
पौत्र राजा जनमेजय द्वारा बनवाया गया
उन्होंने ही माता कुन्ती, पांडवों और श्रीकृष्ण-बलरामजी की मूर्तियां मंदिर
रखवायीं ।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार उ
(ग्वालियर राज्य) में एक शिलालेख
हुए इस मंदिर का निर्माण मालवा नरेश
त्रिभुवन नारायण द्वारा हुआ भी माना
है, (इपिग्राफिका इंडिका, खंड १५०,२३५-३६) । मंदिर की छत व
का पुनर्निर्माण मराठा रानी अहिल्या बा
किया गया है । हिंदू धर्म के महान प्रव
शंकराचार्य ने भी यहां आकर कई ग्रंथों
रचना की और मंदिर को वर्तमान स्वरू
में उनका भी महत्त्वपूर्ण योगदान है ।

केदारनाथ मंदिर के निर्माण हेतु ७-८
कि.मी. दूर से पत्थर की विशाल शिला
गयी हैं । साथ ही मंदिर के शीर्ष में वि
पत्थर की गोलिका है जिसे देखकर यह
होता है कि मंदिर निर्माण जिस किसी ने
किया हो, वह लोग अत्यंत बलिष्ठ व
यंत्रों की जानकारी रखनेवाले अवश्य थे
आश्चर्य का विषय है कि केवल प्रस्तरों
यह विशाल मंदिर सैकड़ों वर्षों से धूप-
तूफान, भूकंप, रुहेलों के आक्रमण आ
सहकर भी मंदाकिनी उपत्यका के अंति
पर सिर उठाये गर्व से खड़ा है— एक
अभेद्य दुर्ग या फिर स्वयं अटल हिमाल
भांति ।

केदारनाथ मई से नवम्बर

उच्च हिमालय की घाटियों में कठि

बाद बसंत ऋतु में सूर्य की तपिश बढ़ते ही यहां की बर्फ पिघलने लगती है । हिमावरण पिघलकर स्थान-स्थान पर छोटी-छोटी ल-धाराओं को जन्म देता है । ठीक इसी मय हिमालय के वनों की उच्चतम सीमाओं र विद्यमान बुरांस के वृक्ष सुर्ख रंग के फूलों से लदकर इन ऊंचाइयों पर बसंत का स्वागत करते हैं । केदारनाथ की बुग्याली घाटी भी बसंत के स स्पर्श से अछूती नहीं रहती । हिमावरण के पिघलते ही नन्हें-नन्हें बुग्याली पौधों में जीवन की सुगबुगाहट होने लगती है । इसी समय एक [illegible] ऊखीमठ से केदारनाथ की पंचमुखी प्रतिमा व छत्र लिए एक डोली स्थानीय वाद्य यंत्रों के साथ केदारनाथ की ओर चल पड़ती है । दो रात्रि विश्रामों के पश्चात यह डोली केदारनाथ पहुंचती है, जहां इसका स्वागत स्थान-स्थान पर खिले बुग्याली फूलों से होता है । केदारपुरी से क्षेत्रपाल देवता भैरवनाथ की अनुमति लेकर केदारनाथ मंदिर के द्वार दर्शनार्थ खोल दिये जाते हैं । भारतवर्ष के कोने-कोने से पहुंचे भक्तजनों की भीड़ गर्भगृह में स्थित शिव के आपलिंग (स्वयंभू) के दर्शनों के लिए उमड़ पड़ती है । पिछले छह मास से समाधिस्थ शिव जागृत हो उठते हैं । केदारपुरी की शांत, स्तब्ध घाटी में 'जय केदार' व मंदिर में घंटों के शब्द दूर-दूर तक गूंज उठते हैं ।

वर्षाकाल में तो संपूर्ण केदारघाटी का सौंदर्य अपनी पराकाष्ठा पर होता है । सारा परिदृश्य मानसूनी फुहारों में घुलकर ताजादम और रा-भरा होता है । घाटी में दौड़ते कोहरे का स्पर्श पाकर बुग्याली फूलों की कलियां अंगड़ाई लेकर खिल उठती हैं । पंखुड़ियों पर टिकी ओस और बारिश की बूंदें सूर्य रश्मियों के प्रकाश में मोतियों की तरह चमकती हैं । हरी-भरी घाटी में विचरता घना कोहरा हर पल नयी-नयी आकृतियां बनाता है, भूमि पर बिखरे होते हैं अनेक रंगों के अलग-अलग प्रकार के बुग्याली फूल और बुग्याली ढलानों पर दिखायी देते हैं काली-सफेद भेड़-बकरियों के झुंड-के-झुंड । इसी समय केदारनाथ से भी अधिक ऊंचाई पर पथरीले ढलानों में उगनेवाले प्रसिद्ध हिमालयी पुष्प 'ब्रह्मकमल' को स्थानीय लोग टोकरियों में एकत्रित कर केदारनाथ को अर्पित करते हैं । ब्रह्मकमल वही सहस्रदल कमल है, जिसे नदी में बहता देखकर द्रौपदी उस पर मोहित हो गयी थी । पूबरह्मकम के पुष्प केदारनाथजी का प्रमुख प्रसाद माने जाते हैं और पंडे लोग एक-एक पुष्प यजमानों को प्रसाद के साथ अवश्य देते हैं ।

वर्षाकाल में घटी भक्तजनों की संख्या वर्षाकाल के बाद पुनः बढ़ने लगती है । पर अब धार्मिक श्रद्धालुओं के अतिरिक्त पथारोही (ट्रैकर्स) भी इस क्षेत्र में जोखिमभरी पदयात्राएं करने के लिए खिंचे चले आते हैं । मानसूनी वर्षाओं का दौर-दौरा थमने के बाद अब सारा परिदृश्य होता है साफ-सुथरा धुला-धुला-सा । वर्षाकाल में संपूर्ण घाटी में फैले कोहरे का दूर-दूर तक कहीं पता नहीं चलता और यही समय हिमालय में हिमशिखरों के अवाक कर देनेवाले दृश्यों को देखने और ऊंची-नीची धारों पर पथारोहण (ट्रैकिंग) करने का होता है ।

सितम्बर के बीतते-बीतते तापमान में गिरावट प्रारंभ हो जाती है । उफनती मंदाकिनी व अन्य जल धाराओं का गर्जन-तर्जन अब

कल-कल करते मधुर शरद के संगीत में परिवर्तित हो जाता है। अक्तूबर में केदारनाथ के बुग्याली ढलानों का रंग सूखती घासों के कारण सुनहरा पीला होने लगता है और इसी सुनहरे कैनवस पर सूखती वनस्पतियों की पत्तियों के हलके व गहरे लाल, पीले व नारंगी रंग से प्रकृति शरद का पूरा चित्र ही उकेर देती है। उत्तुंग हिमशिखरों पर ताजा बर्फ पुनः जमने लगती है। शनैः-शनैः तापमान और भी घटता जाता है और यहां-वहां पत्तियों पर बिखरी ओद की बूंदें जमकर बर्फ बन जाती हैं। यही समय है जब केदारनाथ के द्वार शीतकाल के लिए बंद करने की तैयारियां प्रारंभ हो जाती हैं।

केदारनाथ की शीत-समाधि

द्वार बंद होने से पूर्व अंतिम मंगलवार को केदारपुरी के रक्षक क्षेत्रपाल भैरवनाथ की अंतिम पूजा की जाती है। तीन दिन पूर्व एक दीपक अखंड ज्योति से प्रज्वलित कर मंदिर के बाहरी कक्ष में लाया जाता है। दीपावली की अमावस्या को केदारपुरी के सभी लोग केदारनाथ के मंदिर में एक-एक दीपक अवश्य जलाते हैं। मंदिर प्रांगण में एक विशाल अग्नि प्रज्वलित की जाती है, जिसके चारों ओर स्थानीय वाद्य यंत्रों की धुन पर देर रात्रि तक लोग एक विशेष ''पंडोंनाच' (पांडव नृत्य) करते हैं। अगले दिन मंदिर के बाहरी कक्ष में केदारनाथ की डोली महादेव की पंचमुखी प्रतिमा एवं छत्र के साथ सजाकर रखी जाती है और यहां रखा दीया भंडार गृह में रख दिया जाता है।

मंदिर बंद होने के दिन प्रातःकाल लगभग चार बजे द्वार खोलकर आरती एवं भोग आदि लगाया जाता है। जिसके बाद मंदिर के द्वार कुछ देर के लिए बंद होते हैं। द्वार पुनः खुलने पर एक विशेष 'समाधि पूजा' की जाती है जिसमें सर्वप्रथम केदारलिंग को मंदाकिनी के पवित्र जल से स्नान कराया जाता है। तत्पश्चात केदारलिंग को पिघले घी से स्नान कराकर ऊपर से आधे कुटे धान को बिखेर दिया जाता है। सबसे ऊपर एक गेरुए रंग का 'समाधि वस्त्र' चढ़ाया जाता है। वैदिक रीतियों व मंत्रोच्चार के साथ इस पूजा से भक्तजनों के नेत्र प्रायः अश्रुपूरित हो उठते हैं। इस पूजा के बाद यह माना जाता है कि शिव समाधिस्थ हो गये हैं। सूर्योदय से पहले ही दीपावली के दो दिन बाद प्रातःकाल में मंदिर के द्वार शीतकाल के लिए बंद कर दिये जाते हैं।

सुबह की धूप के मंदिर कलश पर स्पर्श के साथ ही आशुतोष शिव की पंचमुखी प्रतिमा लिये डोली मंदिर की परिक्रमा करती है और उसके पश्चात केदारपुरी से विदा लेती है। डोली के प्रस्थान के पश्चात किसी को भी केदारपुरी में रहने की आज्ञा नहीं है, पर आसमान से झरते बर्फ के फाहों पर न केदारनाथ का वश है, न ही क्षेत्रपाल भैरवनाथ का। बार-बार होते हिमपात से हिमावरण ऊंचा-दर-ऊंचा होता चला जाता है और नदी, शिलाओं, मकानों, बुग्याली ढलानें सब को ढक लेता है, पर मंदिर अभी भी बर्फ से कहीं ऊंचा होता है।

पहले दिन की लगभग २५ कि.मी. की यात्रा के बाद डोली रामपुर में विश्राम करती है। अगले दिन फिर एक लंबी यात्रा के बाद डोली का विश्राम गुप्तकाशी में होता है। रास्ते में [illegible] स्थान पर लोग स्थानीय वाद्य यंत्रों के

केदारनाथ प्राचीनकाल से ही भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है । प्राचीन मान्यताओं के अनुसार यह स्थल मुक्ति प्रदान करनेवाला है । मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर है और मंदिर में प्रवेश करते समय मनुष्य उत्तराभिमुख होते हैं, जो कि मुक्ति के लिए आवश्यक है । मंदिर में प्रवेश मात्र से ही मुक्ति प्राप्त होना माना गया है । देवी पुराण में कहा गया है कि केदारनाथ आनेवाले को बार-बार जन्म नहीं लेना पड़ता, अर्थात मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

साथ डोली का स्वागत कर केदारनाथ के दर्शन करते हैं । तीसरे दिन यह डोली ऊखीमठ पहुंचती है जहां मंदिर की परिक्रमा करने के पश्चात शिव की 'चल-प्रतिमा' को मंदिर में स्थापित किया जाता है । यहीं पर जाड़ोंभर केदारनाथ की प्रतीकात्मक पूजा की जाती है । कहते हैं कि शीतकाल के शांत वातावरण में केदारपुरी में शिव को प्रसन्न करने के लिए देवी-देवता, किन्नर व यक्ष आदि भी केदारनाथ की पूजा-अर्चना करते हैं ।

केदारपुरी में मुख्य मंदिर के अतिरिक्त और भी धार्मिक प्राचीन स्थल है । मंदिर से दक्षिणपूर्व में लगभग १ कि.मी. की दूरी पर एक विशाल शिला है, जिसके ऊपर शिव के गण व क्षेत्रपाल भैरवनाथ स्थापित हैं । भैरवनाथ इस घाटी के रक्षक भी हैं । केदारनाथ में कुछ अन्य मंदिर भी हैं, जिनमें 'पंचमुखी महादेव मंदिर', 'गंगा माई का मंदिर', 'श्री सत्यनारायण का मंदिर' एवं 'नवदुर्गा का मंदिर' आदि हैं । इतिहासकारों के मतानुसार ये भी अत्यंत प्राचीन मंदिर हैं । इन्हीं मंदिरों के पास 'उदक कुंड' भी है,जिसका जल अत्यंत पवित्र व रोगनाशक माना गया है । 'केदारकल्प' नामक तंत्र-ग्रंथ में तो इस जल का ही गुणगान किया गया है । प्रमुख मंदिर के पास ही शंकराचार्य की समाधि व हंसकुंड आदि भी स्थित हैं । हंसकुंड का जल पीने के लिए तो स्वयं ब्रह्मा हंस का रूप लेकर पधारे थे । इस कुंड में भक्तजन अपने परिवार के मृतकों की जन्मकुंडलियां डालकर उनका श्राद्ध करते हैं ।

केदारनाथ के आसपास पर्यटन की दृष्टि से कई अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल भी हैं । उत्तर की ओर चोराबारी ग्लेशियर के पार्श्व में चोराबारी ताल लगभग ३ कि.मी. की दूरी पर है । केदारपुरी से आठ कि.मी. की दूरी पर तीक्ष्ण चढ़ाई के बाद वासुकी ताल है, जहां वासुकीनाग का स्थान माना जाता है । इसके आसपास का क्षेत्र अत्यंत रमणीक है । यहां से आगे कुछ और उच्चशिखरीय झीलें यथा पंया ताल, लंगदर ताल व कुछ बेनाम झीलें भी स्थित हैं । वर्षाकाल में इन झीलों के चारों ओर विभिन्न रंग के बुग्याली फूल खिले होते हैं, जिससे इनकी नैसर्गिक छटा और भी निखर जाती है ।

देवभूमि गढ़वाल के प्रवेश द्वार हरिद्वार से २३२ कि. मी. की रेंगती-घूमती सड़क से देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, गुप्तकाशी आदि स्थानों को पार कर पहुंचा जाता है 'गौरीकुंड' जो मंदाकिनी उपत्यका (घाटी) में स्थित अंतिम बस स्टेशन है । यहीं पर माता पार्वती ने शिव को स्वामी रूप में प्राप्त करने के लिए तपस्या की थीं । यहां पर शिव गौरीश्वर रूप में स्थापित हैं । बस यहीं से केदारनाथ के लिए १४ कि.मी. की पैदल यात्रा प्रारंभ होती है । पैदल न चल पानेवाले भक्तों के लिए घोड़े, पालकी, डंडी आदि की भी व्यवस्था है । रास्ते में हर ३-४ कि.मी. के बाद चट्टियां हैं जहां चाय-पानी पीकर तरोताजा हुआ जा सकता है ।

केदारनाथ प्राचीनकाल से ही भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है । प्राचीन मान्यताओं के अनुसार यह स्थल मुक्ति प्रदान करनेवाला है । मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर है और मंदिर में प्रवेश करते समय मनुष्य उत्तराभिमुख होते हैं, जो कि मुक्ति के लिए आवश्यक है । मंदिर में प्रवेश मात्र से ही मुक्ति प्राप्त होना माना गया है । देवी पुराण में कहा गया है कि केदारनाथ आनेवाले को बार-बार जन्म नहीं लेना पड़ता, अर्थात मोक्ष की प्राप्ति होती है । 'केदारकल्प' ग्रंथ के अनुसार केदारनाथ में स्थित उदक कुंड का जल पीने मात्र से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और परम पद की प्राप्ति होती है । स्कंद पुराण में भी कहा ग
है —

ये वदंत्यपि केदारं, गमिष्यामि इति क्वचित
पितरस्तस्य देवशि, त्रिशतं कुलसंयुता:
गच्छन्ति शिवलोके तु, सत्यं सत्यं न संशय: ।

(स्वयं शिव पार्वती से कहते हैं कि जो लोग जहां कहीं भी यह कहते हैं कि हम केदार क्षेत्र जाएंगे, हे देवि ! उनके तीन सौ कुल तक के लिए शिवलोक को जाते हैं इसमें कोई संशय नहीं है) । इस सब के अतिरिक्त केदारनाथ आने पर एक आध्यात्मिक शांति मिलती है औ देवतात्मा हिमालय को निकट से देखने की उत्कंठा भी शांत होती है ।

— पो. बॉ.–
वनस्पति वि. विभा
हे.नं.ब. गढ़वाल विश्वविद्याल
श्रीनगर (गढ़वाल)-२४६१

वार-वार
की प्राप्ति
सार
जल पीने
र परम पद
भी कहा गया
कचित्
शयः ।
जो लोग
केदार क्षेत्र
ल तक के
कोई संशय
केदारनाथ
मलती है और
खने की

ो. डॉ.–
वि. विभाग
विश्वविद्यालय
ल)-२४६१

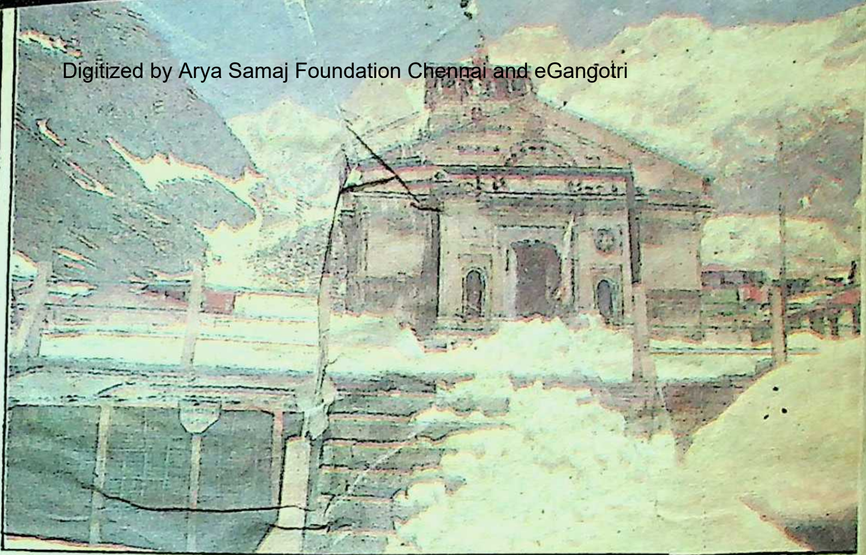

▼ द्वार खुलने से पूर्व केदारनाथ का मंदिर

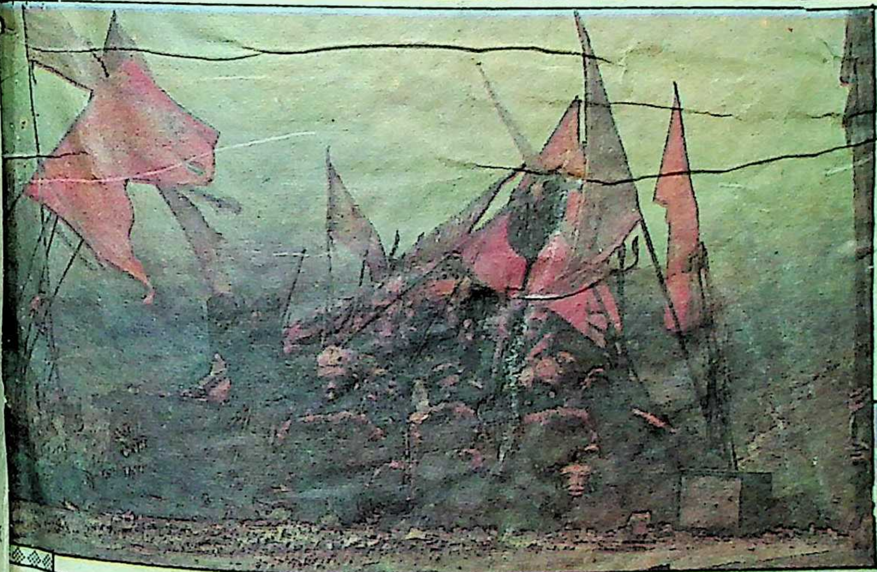

केदारपुरी के रक्षक—भैरवनाथ ▲

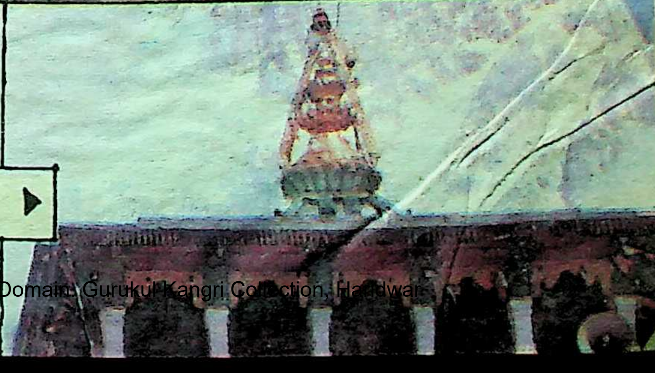

मंदिर शिखर और हिम शिखर ▶

पारदर्शी : धर्मेंद्र रावत

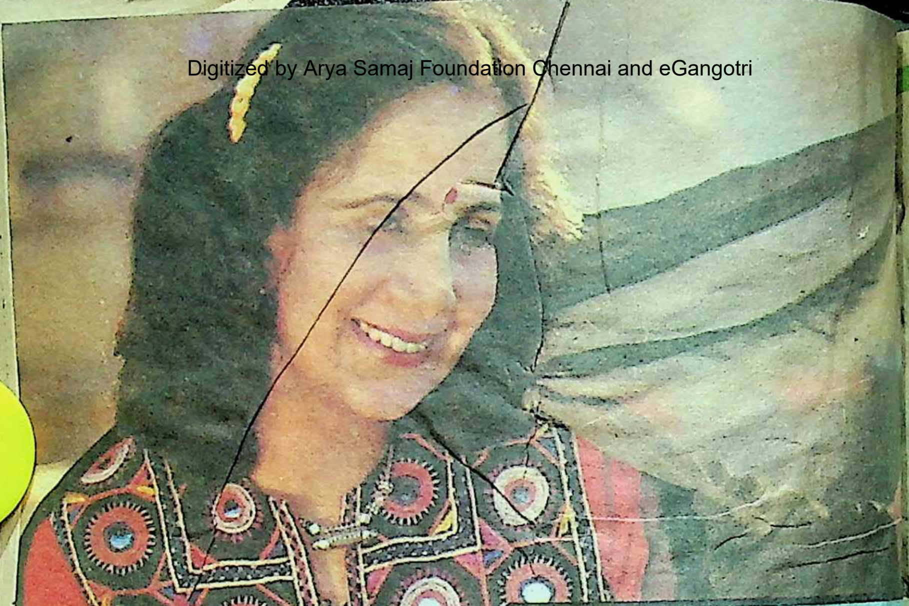

सिंदूर लगाने से ही पति नहीं होता

—अर्चना सौशिल्य

पारदर्शी : अरुण बेसेकर

सिंदूर लगा देने से ही कोई पति नहीं होता

● अर्चना सौशिल्य

काल-चिंतन की कुछ पंक्तियां हैं, 'कुछ घर ऐसे भी हैं, जिनमें न आग लगी है, न बर्फ पड़ रही है, सिर्फ धुआं है और उसी घुटते हुए घर में लोग जी रहे हैं ।' उन्हीं घरों की गृह-स्वामिनियों ने 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' के रूप को कलंकित किया है । ऐसे भी पुरुषों की बातें हमने काफी पढ़ीं और सुनी हैं, जिन्हें व्यंग्य से तरह-तरह की उपाधियों से विभूषित किया जाता है, जिन्होंने अपने घर बरबाद किये हैं । किंतु, क्या कभी हमारा ध्यान उन औरतों की तरफ भी जाता है, जिन्होंने ईर्ष्या, द्वेष और स्वार्थ के कारण घरेलू वातावरण को नारकीय बना रखा है ।

विमाता की कहानी सुनानेवाली एक छात्रा का कहना है, 'मेरी विमाता ने मुझे घरेलू लड़की से बाजारू बना दिया । मेरा दोष सिर्फ यही था कि मैं दूसरी मां की बेटी हूं ।' माताओं के रूप में एक नाम वह भी आता है, जो दूसरों के बच्चों को दीन-हीन दिखाना चाहती है, दूसरों की बेटियों पर चारित्रिक लांछना लगाकर समाज में उन्हें कलंकित करती है ।

पत्नी क्या चाहती है ?

पति-पत्नी के संदर्भ में हर नारी समाज व नैतिकता से यही सीखती है कि मात्र सिंदूर लगा देने से कोई पति नहीं हो जाता । पति से एक पत्नी क्या चाहती है ? पत्नी पति से चाहती

महिलाओं का विवाहोपरांत प्रेम-प्रसंग, जिस पर कोई भी चीज बंदिश नहीं लगा सकती, चाहे घर की इज्जत ही क्यों न हो । ऐसी औरतें पर-पुरुष का सहारा लेकर कभी-कभी अमानवीय कृत्य कर बैठती हैं

है—संपूर्ण त्याग, सुरक्षा व भावनात्मक संबंध । अगर ऐसा पति मिल जाए तो हर पत्नी अगले सात जन्मों में भी ऐसे ही पति की कामना करेगी । किंतु, जब कभी यही पति कुछेक साली, भाभी या बहन के बहकावे में आकर घर से विमुख हो जाता है, तो पत्नी-सुंदरता की देवी, त्याग व ममता की प्रतिमा, गृह की स्वामिनी—उसके लिए असह्य हो जाती है । आमतौर पर लोग दोष पुरुषों को देते हैं—किंतु उनकी तरफ ध्यान नहीं जाता, जो पराये 'धन' से अपना घर भरने की कोशिश करती हैं । बहनोई या देवर के प्रति झुकाव या आकर्षण भावनात्मक-सुरक्षा, आर्थिक सहायता अथवा पति द्वारा उपेक्षा के कारण हो सकता है । किंतु, क्या यह उचित है ? औरतों को यह सुरक्षा अपने आप में ढूंढ़नी चाहिए ।

नैतिकता, धर्म और संस्कारों की वेदी पर यह बात शत-प्रतिशत सही है कि हरेक कर्म का लेखा-जोखा इसी जिंदगी में हो जाना है । अगर पुरुष पर-स्त्रीगामी हो, तो इसका दुष्परिणाम बच्चों में दिखता है और अगर स्त्री पर-पुरुषगामी है, तो उसका दुष्प्रभाव भी नजर आता है ।

कुछ घर ऐसे भी हैं, जो संतप्त जिंदगी दास्तान सुनाते हैं । औरतों की महत्त्वाकांक्षा का हमेशा ही दमन किया जाता है, लेकिन अगर इसका सहज रूप से विकास होता जिंदगी की गाड़ी चलती रहती है । किंतु कुछ घर ऐसे भी हैं, जिनमें नारियों की महत्त्वाकांक्षाओं की ऊंची उड़ान के कारण की आहूतियां चढ़ गयी हैं । यह सही है कि जिंदगी में अगर आशा, उम्मीद व महत्त्वाकांक्षाएं न हों, तो जीवन निरर्थक है किंतु, अपनी महत्त्वाकांक्षा दूसरों के लिए इच्छा बन जाए, नाते-रिश्तेदारी व भावना सीमा लांघ जाए, तो शायद, इससे बेहतर व सहज जिंदगी है । अपने 'मैं' को नाम दे हेतु, 'अहम' की संतुष्टि हेतु, कभी-कभी व स्वाभाविक व्यक्तित्व के पुरुष को व्यथित करना, किसी भी अर्थ में उचित नहीं ।

बरबादी निश्चित है

सच है कि पुरुष की शंकालु प्रवृत्ति व बेवजह, बेबुनियाद तथा बिन बुलाये 'अह आड़े आ जाने से कितनी ही आशाएं ध्वस्त जाती हैं, इच्छाएं मर जाती हैं और यहीं सुषु आधार-विहीन नाम जागृत होता है, कहीं ज्वालामुखी बनकर, जिनसे फूट बहे लावे जाने कितने स्त्री-पुरुष घायल हो जाते हैं । जब अपने गंतव्य की तरफ अग्रसर होती है, तो अपने घर व समाज द्वारा लगाये कायदे-कानूनों की लक्ष्मण-रेखा पार कर अपना वजूद है, जहां उसे हर एक का प्रतिरोध करना पड़ है । कुछ थककर रुक जाती हैं, कुछ इन्हीं पर सुस्त कदमों से चलती हैं, कुछ आंधी की तरह निकल जाती हैं और कुछ गुमराह हो

हैं। फिर भी इन्हीं रास्तों को प्रामाणिकता देना इनका सब कुछ हो जाता है। यह सच है—पुरुषों द्वारा लगाये हर कायदे व कानून सही नहीं होते, किंतु हर वक्त गलत भी नहीं होते, क्योंकि अपनी बिरादरी के लोगों को अच्छी तरह से समझने व परखने की कला इन्हें आती है। किंतु, बिना समझदारी के जब यह 'डू एंड डोंट्स' स्त्री व पुरुष के अहम का टकराव बनकर उलझने लगें, तो घर में अशांति व बच्चों की बरबादी निश्चित है।

एक विवाहित बेटी का कहना है कि मां के स्वाभिमानी स्वभाव व आगे बढ़ने की चाह के कारण आज तक न तो वह पति-पत्नी का संबंध समझ पायी है, न ही मां एवं बच्चों के रिश्तों की परिभाषा। आखिर, वह लक्ष्य कहां रह जाता है जबकि, नारी अपने ही स्वभाव को भूल जाए? यह समाज व पुरुष लाख चीख-चीखकर अपने को शहंशाह घोषित करता रहे, इस शरीर में एक आत्मा है, मन है, भावना है, जिसे समझने के लिए जरूरत पड़ती है नारी की, नारी हृदय की, उसके ममत्व व प्यार की। फिर इस संपूर्ण मानव जीवन के आधार को आधारहीन बनाने का अनर्थक प्रयास क्यों करती है नारी? अपनी सहज व निर्दोष आकांक्षाओं को समाज के साहचर्य में पुष्पित कर औरत जीवन को नया आयाम दे सकती है। परंतु कुछ धुआं उड़ते घरों के भय से आम शिक्षित व प्रतिभाशाली महिलाएं भी अपनी आशाओं को ध्वस्त करती रहती हैं, जबकि उनके भाषित होने पर लेशमात्र भी प्रश्नचिह्न नहीं बन सकता।

कुछ घरों की कहानियां सही-गलत सामंजस्य के त्रिकोण के बीच घूमती रहती हैं। पत्नी व मां के हावी-व्यक्तित्व के भोगी पति व बच्चे आनेवाली पीढ़ियों में पत्नी व बेटी पर ज्यादतियां करते पाये जाते हैं—इसका लेखा-जोखा वर्षों तक गृहस्थ-जीवन में चलता रहता है—और अंततः औरतों पर ढाये जुल्म व ज्यादती की कहानियां औरतों द्वारा ही बनायी हुई पायी जाती हैं। जितनी सूक्ष्मता व समझदारी से स्त्रियां समाज व दांपत्य की परेशानियां समझकर सुलझा सकती हैं, पुरुष कतई नहीं सुलझा सकता। किंतु, किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित हो

अगर उनके आयाम गलत हो जाएं, तो संतति को इसका कर्ज वर्षों तक उठाना पड़ता है । बेटे को खोने के डर से बहू को बेटे से अलग रखकर अपना आधिपत्य जमाना, अपनी सास का बदला बहू से लेना आदि ऐसी अनेक घटनाएं हैं, जिन्होंने जीवन को कलहमय बना दिया है ।

एक कहानी उस नारी की भी है, जो सास द्वारा प्रताड़ित व कुंठित होकर पति को पति रूप में न पा सकी । बच्चों की तरफ आशान्वित होकर उसे एक अच्छी मां का दरजा तो मिला, किंतु एक अच्छी पत्नी का नहीं । निश्चित लक्ष्य—पति से दूरी रखनेवाली घर की ही नारियों ने, उन्हें अनिश्चित की तरफ झुका दिया । आज तक वह रेत की हिरनी अपने लक्ष्य तक जाना चाहती हैं, बच्चों के साथ दूसरों ने भी अपने आशियाने बसा लिये । रह गया है वही पुराना घोंसला, उसके दो प्राणी—जिनके आपस में चालीस वर्षों से पल रहे गिले-शिकवे के अलावा कुछ भी शेष नहीं । दोनों ही सही हैं, दोनों ही व्यथित । उनकी जिंदगी तो जल रही है, किंतु जमाना मुसकरा रहा है । किंतु, इस नारी को नारी से विरक्ति नहीं, अभी तक वह उनके लिए पूजनीय है—लेकिन उनकी खामोशी में एक दर्द है—एक अहसास है, नारी तेरे रूप अनेक ।

एक कहानी उस नारी की भी है, जो सास द्वारा प्रताड़ित व कुंठित होकर पति को पति रूप में न पा सकी । बच्चों की तरफ आशान्वित होकर उसे एक अच्छी मां का दरजा तो मिला, किंतु एक अच्छी पत्नी का नहीं । बच्चों ने बड़े होकर अपने आशियाने बसा लिये । रह गया है वही पुराना घोंसला, उसके दो प्राणी—पति और पत्नी, जिनके बीच दशकों से पल रहे गले-शिकवे के अलावा कुछ भी शेष नहीं...

झूठी कहानियां : गुमराह संस्थाएं

नारियों के इन रूपों ने आज नारी-मुक्ति आंदोलनों को भी कलंकित कर दिया है । नारी-मुक्ति आंदोलन, स्वयंसेवी संस्थाएं अगर मुक्ति की बातें करती हैं, तो उद्देश्य उनका उन्हें सही वजूद दिलाना, पुरुषों के समकक्ष लाना होता है । इन संस्थाओं के संचालिकाओं के आयाम संयमित तथा सुदृढ़ होते हैं । किंतु, कुछ के झूठे आंसुओं के कारण उनका भी ध्येय पूरा नहीं हो पाता । झूठी कहानियां कहकर स्वयंसेवी संस्थाओं की शरण में जाना आज प्रचलन-सा बनता जा रहा है, जिसके कारण ये संस्थाएं गुमराह हो रही हैं । समाज इन महिला कार्यकर्ताओं से भी भय खाने लगा है, उन्हें बेटी व बहू बनाने से इनकार कर रहा है । चंद औरतों के गलत आयामों से संपूर्ण नारी-जगत

दुष्प्रभावित हो रहा है । अखिल भारतीय महिला परिषद (पटना क्षेत्र) की एक कार्यकर्ता का कहना है, 'हमें तो और भी संयमित होना पड़ता है क्योंकि, एक तरफ हमारा घर-परिवार है, दूसरी तरफ सामाजिक जिंदगी । हमारा अथक प्रयास यही होता है कि औरतों की बुनियादी समस्याओं को सुलझाया जाए, ताकि हम उनका घर बसा सकें, उजाड़ें नहीं । किंतु कुछ समस्याएं उनकी खुद की बनायी होती हैं, और वे हमारी आड़ से लड़ाई जीतना चाहती हैं । इसी कारण हम कभी-कभी पीड़ित नारियों की समस्याएं हल नहीं कर पातीं ।

एक रूप जो ज्यादातर मध्यवर्गीय समाज में देखने को मिलता है, वह है—यौन नैतिकता में खुलापन । मध्यमवर्गीय महिलाओं का विवाहोपरांत प्रेम-प्रसंग, जिस पर कोई भी चीज बंदिश नहीं लगा सकती, चाहे वह घर की इज्जत ही क्यों न हो । पति का अहम जब चोट खाने लगता है, घर की इज्जत-आबरू पर आंच आने लगती है, तो मुकदमेबाजी होती है, जिसकी सुनवाई में 'दहेज' के लिए जान से मारने का आरोप लगा दिया जाता है । ये औरतें नहीं सोचतीं कि इससे उनकी उन बहन-बेटियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जिन्हें सचमुच ही 'दहेज' के लिए प्रताड़ित किया जाता है । ये पत्नियां पर-पुरुषों के संसर्ग की सुरक्षा में अपने पतियों को अदालत में तो खींच ही लाती हैं, कभी-कभी अमानवीय कृत्य कर बैठती हैं ।

वस्तुतः समाज यही है । इसके दोहरे आयाम हैं, दोहरे कानून हैं । एक तरफ मान-मर्यादा, संस्कार, नैतिकता व समझदारी तो दूसरी तरफ अहंकार, अनैतिकता, क्रोध व व्यभिचार है । हर नारी का रूप कलंकित नहीं, वह श्रेद्धय है । वह माता, भगिनी व पत्नी है । विवश घर तो वह है, जहां या तो क्रोध है या फिर आंसू ।

—द्वारा डॉ. शालिनी
के-१०, मॉडल टाउन
दिल्ली-११०००९

अब कचरे से बनेगी बिजली

मद्रास शहर के कूड़े-कचरे का उपयोग करके विद्युत बनाने की योजना है । मद्रास के दक्षिणी भाग में पेरुगुड़ी में एक ५ मेगावाट क्षमता का विद्युत केंद्र लगाया जा रहा है जिसमें कचरे से विद्युत उत्पादन किया जाएगा । — लक्ष्मी सोनी

मटका

● मसऊद मुफ़्ती

''टप...टप ।'' उत्तरी सिंध की झुलसती हुई सुबह में, पसीने की दो बूंदें माथे से चल कर नाक से गिरीं और ठीकरी के ऊपर जमी हुई मिट्टी की तह में आत्मसात हो गयीं ।

फतह मोहम्मद, मोहनजोदड़ो में दूसरे मजदूरों के साथ काम कर रहा था । खुदाई का काम । कभी कुदाल से, कभी खुरपों से, कभी हाथों से और कभी अंगुलियों से । यह बड़ा धैर्य रखने और उकता देनेवाला काम था, लेकिन उसे अपनी मजदूरी से गरज थी । जब थोड़ा काम करके मजदूरी ज्यादा मिले, तो और क्या चाहिए ?

फतह मोहम्मद के साथ पंद्रह मजदूर चंद रोज से एक टीले की खुदाई कर रहे थे, जिसमें से चंद ईंटों का टूटा फर्श, एक-दो मोती और कुछ जेवरात मिले थे । और कुछ की तलाश में वे बड़ी सावधानी से पिछले चार दिन से काम कर रहे थे । और कल संध्या तक एक टूटे हुए मटके की सभी ठीकरियां ढूंढ़ चुके थे, जो उसके सामने पड़ी थीं और वह सर झुकाये, उन पर से धीरे-धीरे मिट्टी साफ कर रहा था । उस के हाथ में लोहे की पतरी थी, जिससे मिट्टी उतार रहा था । जिस टुकड़े पर बेल-बूटे नजर आते, वह खुरचे बिना दूसरे आदमी को दे देता था जो उसे ब्रश से हल्के-हल्के साफ करता । साथ ही वह पुराने सिंधी लोक गीत का एक टुकड़ा गुनगुना रहा था, जिस का अर्थ था कि 'जेब में पैसा हो तो लाड़काना घूमो ।'

वह कई सप्ताह से यहां काम कर रहा था और जानता था कि खुदाई के साथ पांच हजार वर्ष पुराने शहर का एक और भाग प्रकट हो रहा है । चुनांचे आज मिट्टी खुरचते हुए उसने सोचा कि इन पांच हजार वर्षों में यहां कुछ भी तो नहीं बदला । इन ठीकरियों पर जमी हुई मिट्टी बिल्कुल ऐसी ही है, जैसी आजकल की । वे ठीकरियां भी ऐसी ही हैं, जैसी हमारे बरतन टूटने से बनती हैं । उस युग के खिलौनों में जो बैलगाड़ियां और कशतियां बरामद हुई हैं वे भी बिल्कुल आजकल जैसी ही हैं । यदि ये सब कुछ वैसा ही है तो खुदा जाने क्यों ये लोग इतने परिश्रम से चीजें खोदते हैं जबकि बिल्कुल वैसी ही चीजें आज भी डोकरी और लाड़काना के गली-कूचों में नजर आती हैं ।

पतरी जमीन पर रखकर फतह मोहम्मद ने माथे पर अंगुली फेरी और पसीने की बूंदें इकट्ठी होकर धार के रूप में अंगुली के सिरे से उसकी कमीज से दामन में गिरने लगीं । उसने नजर उठाकर देखा तो एक मील दूर सिंध नदी की चौड़ी सतह चांदी की तरह चमक रही थी और उस चमक से गरमी का एहसास और भी गहरा हो रहा था । उसने दूसरे मजदूरों पर दृष्टि दौड़ायी । दो-चार काम में व्यस्त थे और बाकी घास के छप्पर के नीचे सुस्ता रहे थे । दरअसल, वे सब प्रतीक्षा कर रहे थे । कराची से चंद अफसर विशेष तौर पर वे चीजें देखने आ रहे थे, जो खुदाई में निकली थीं । उनके लिए विशेष विमान का प्रबंध किया गया था और म्यूजियम के सभी अफसर उन्हें लेने के लिए

मोहनजोदड़ो के हवाई अड्डे पर गये हुए थे । जाने से पहले कस्टोडियन ने मजदूरों को सख्ती से निर्देश दिया था कि वे लोग खास तौर पर उस मटके के टुकड़े देखेंगे, इसलिए यह काम उनके आने से पहले खत्म हो जाना चाहिए । वह गया तो बाबा आचर, जो सबसे बूढ़ा मजदूर था, हंसने लगा ।

''ये साहब लोग भी खूब हैं । एक पुराने मटके के लिए हवाई जहाज से आएंगे, इतना रुपया बर्बाद करेंगे ।''

''दिल् को न लगाओ बेटा, बड़े लोग दूसरों के मटके तोड़ते ही रहते हैं । मैंने अपने दादा का जमाना देखा है, वे हमें अपने दादा के जमाने की बातें सुनाते थे । ये हमेशा से ऐसा ही है ।''

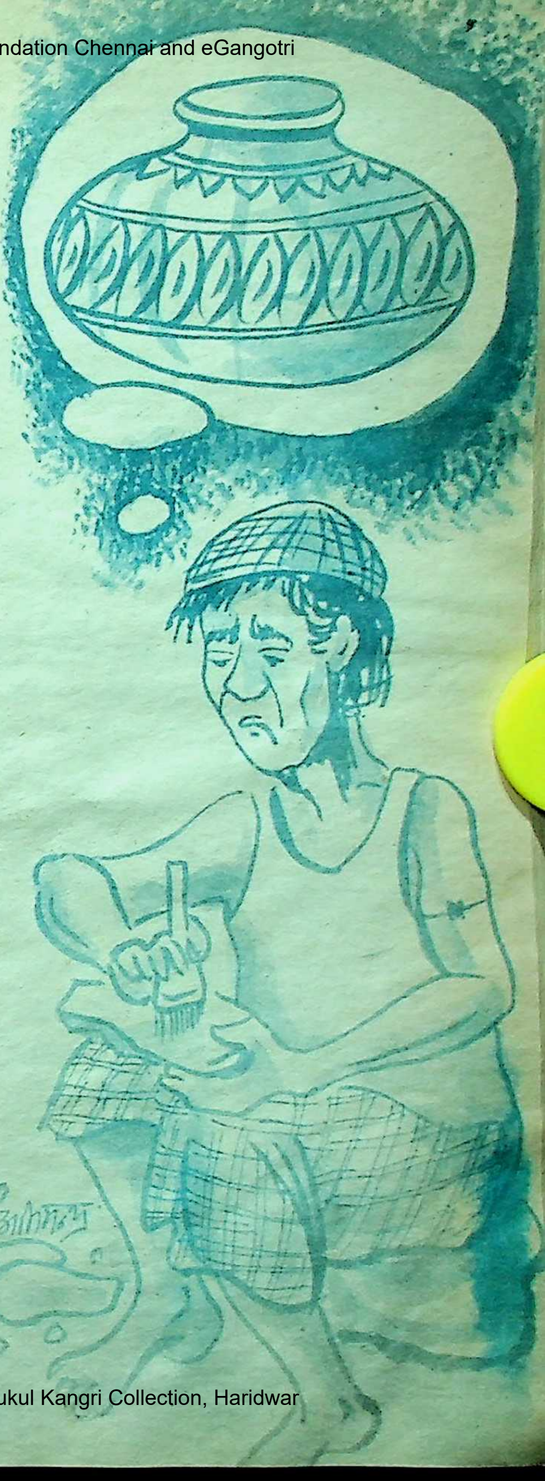

झुके-झुके फतह मोहम्मद की गरदन झुक गयी थी । उसने सर उठाकर अंगड़ाई ली । इधर-उधर नजर दौड़ायी। मोहनजोदड़ो के ऊंचे-नीचे टीले से दूर-दूर तक खेतों में फैला पानी नजर आ रहा था, जिसके नीचे धान की फसल ऐसे पल रही थी और बच्चा मां के पेट में हो। वातावरण में सड़े हुए पानी की वसांध रची हुई थी और दम सीने पर पत्थर के बोझ की भांति अनदेखा दबाव डाल रहा था ।

थोड़ी देर बाद अफसर आ गये । वे चार थे । सर पर मोटे-मोटे टोप पहने हुए और काले चश्मे आंखों पर चिपकाये हुए । उन लोगों ने एक-एक वस्तु कई-कई बार देखी और मटके के तो आशिक हो गये । कभी उनमें से कोई

एक ठीकरा उठा कर देखता । फिर दूसरे को ऐसे देता जैसे नाजुक कांच हो । वह भी आंखें गाड़कर उसे देखता, अर्थपूर्ण अंदाज में जोर-जोर से अंगरेजी में बोलता । बाकी सब भी सर हिलाते और फिर वह अगले को दे देता । उन्होंने मटके के कई टुकड़े उन्नतोदर शीशे की सहायता से बार-बार देखे । फिर वे वहीं जमीन पर बैठ गये और मटके के ठीकरों के किनारे मसाला लगा-लगाकर आपस में जोड़ने लगे । फतह मोहम्मद ने आगे बढ़कर अपनी सेवाएं पेश करना चाहीं तो उन्होंने ऐसे हटा दिया, जैसे वह कोई पवित्र स्थान अपवित्र करने जा रहा था । मजबूरन वह एक ओर होकर तमाशा देखने लगा ।

एक घंटे के प्रयास के बाद मटके का मुंह और थोड़ा-सा ऊपरी भाग जुड़ गया । उन अफसरों में जो सब से बूढ़ा था, वह खुशी से तालियां बजाने लगा और दूसरे के कंधे पर हाथ मार कर बोला, ''हमने यह मटका नहीं जोड़ा, बल्कि पांच हजार वर्ष पुरानी सभ्यता जोड़ी है । यह मटका उन दिनों किसी भरे-पूरे घर की शोभा रहा होगा ।''

फतह मोहम्मद पहले तो उन सबको बेवकूफ समझ रहा था, मगर उस अफसर की बात उसके दिल को बहुत लगी, क्योंकि ठीकरे जुड़ने से मटके की जो आकृति बनी थी वह हूबहू उसी मटके-जैसी थी, जो उसके अपने घर में था । और वह जानता था कि उस के घर की सारी चहल-पहल, सारी शोभा उसी मटके के दम से है ।

फतह मोहम्मद का बाप मोहनजोदड़ो से थोड़ी दूर रहता था और एक बड़े जमींदार का हारी था । उसकी कुल संपत्ति दो बैल और ह हल थी । बिलकुल वैसे ही हल और बैल के मोहनजोदड़ों के म्यूजियम में खिलौने बनके पड़े थे । उन का मकान एक कमरे का अंधेरा सा कोठा था, जिसमें उसके मां-बाप और दो छोटे भाई रहते थे । फतह मोहम्मद की आयु कोई पंद्रह वर्ष के लगभग थी और वह केवल घर की आमदनी बढ़ाने के लिए खुदाई के का पर मजदूरी करता था । यह मटका उनके अं घर के अंधेरे कोने में पड़ा था और दोनों छोटे भाइयों के कद से ऊंचा था । उसका मुंह हमे एक पुरानी चंगीर (टोकरी) से ढका होता था । मटके में कभी चावल होते थे और कभी गेहूं । नयी फसल के दिनों में मटका मुंह तक भरा होता और जैसे-जैसे दिन गुजरते जाते, उसमें अनाज की चोटी नीचे सरकती जाती ।

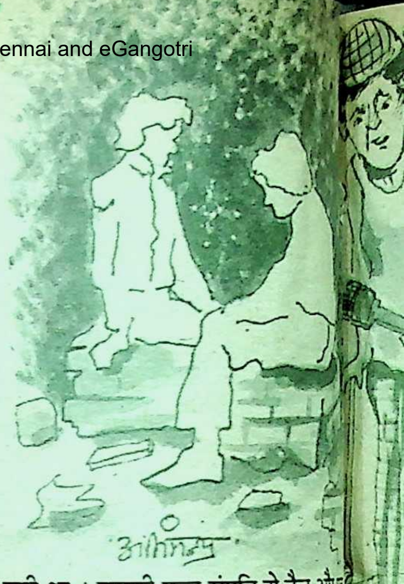

उसके घर की सारी चहल-पहल मटके के दम से थी । रात के समय मां-बाप की चारपाइयां बिलकुल मटके के साथ होती थीं, ताकि चोर वहां न पहुंच सकें । छोटा भाई फैं

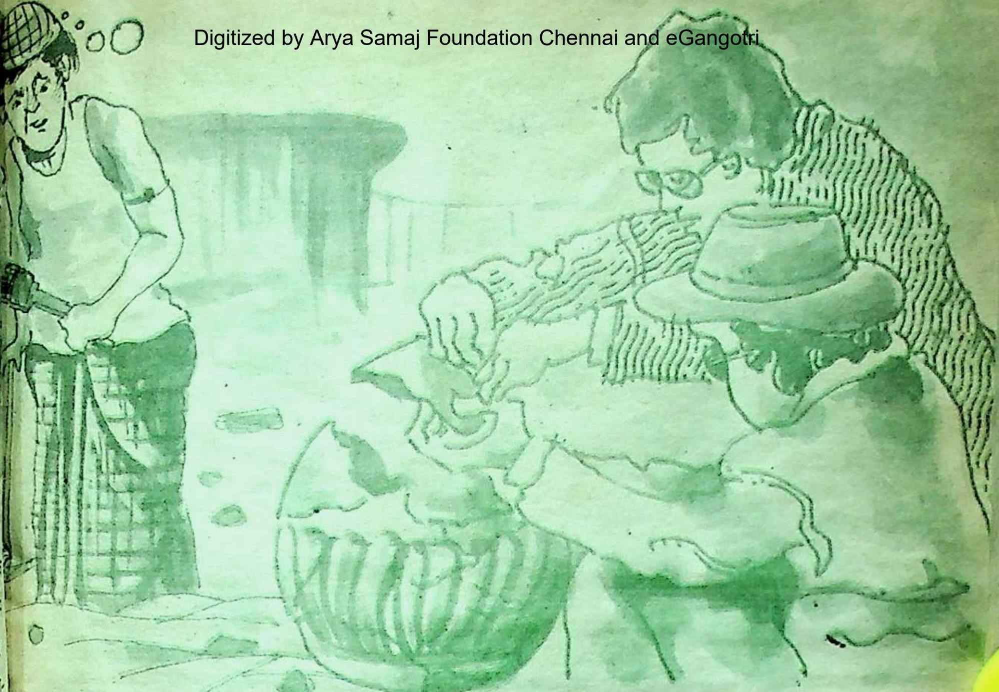

हुआ था,तो एक पीढ़ी पर पड़ा रहा था,जो मटके के पास धरी होती थी और सारा दिन गूं-गूं करता रहता था और दूसरे बच्चे मटके के चारों ओर घूम-घूम कर और ऊपर चढ़ कर भाई को हंसाने की कोशिश करते । घर के बच्चे जिद करते या लड़ते तो मां मटके में से मुट्ठी भर अनाज निकाल कर उन्हें दे देती कि जाकर भट्ठी से भुनवा लें । कभी पड़ोसियों में से कोई उधार मांगने आता तो मां मटके में से एक-आध कटोरा अनाज का निकालकर देती या उसी में से पैसों की पोटली निकालती और खोल कर पैसे दे देती ।

बाप कभी शहर को जाने लगता तो मां उसी मटके में से पैसे निकाल कर उसे देती । और फतह मोहम्मद को यह भी याद था कि जिन दिनों उसे और भाई को भूखों सोना पड़ता था तो मां आहें भर-भर के खाली मटके में कई बार झांकती थी कि शायद कोई अनाज का दाना नजर आ जाए । उनके घर के जितने उतार-चढ़ाव थे, उन का द्योतक यह मटका था । घर की कई घटनाएं भी उस मटके से जुड़ी हुई थीं ।

अभी पिछले ही दिनों वह अपने बाप के साथ घर लौटा,तो उस की मां मटके पर लगभग औंधी पड़ी थी । उसकी सांस जोर-जोर से चल रही थी । वह पसीने में लथपथ थी और सिसकियां ले-ले कर रो रही थी । उन दोनों ने उसे उठाया, चारपाई पर लिटाया, कारण पूछा, लेकिन वह रोती ही रही । एक-आध अनर्गल-सा वाक्य बोली थी, लेकिन फतह के पल्ले न पड़ा । मगर उसका बाप समझ गया और उसने फतह को बाहर भेज दिया । बाहर तो वह चला

आया, मगर दरवाजे से कान लगाकर सुनने की कोशिश करता रहा । सारी बात तो पल्ले न पड़ी, केवल इतना अंदाजा हुआ कि उसकी मां को जमींदार ने घर बुलाया था, बंद कमरे में कुछ मनवाने की कोशिश की थी, मगर वह मना करती रही और अंत में खिड़की से छलांग लगाकर भाग आयी ।

थोड़ी देर बाद जब वह अपने बाप के बुलाने पर मां को गुड़ का शरबत पिलाने लगा तो उसके बाजुओं और चेहरे पर कई खरोंचें नजर आयीं । फिर उसका बाप सारी शाम किसी गहरी सोच में डूबा हुआ दरवाजे के बाहर बैठा था । उसने पूछा भी, मगर वह जमींदार को दो-चार गालियां देने के सिवा कुछ न बताता था ।

जमींदार जो बड़ा जागीरदार भी था और बड़ा राजनीतिज्ञ भी, थानेदार भी उस से डरता था । फतह मोहम्मद सोचता रहा कि यह क्या किस्सा है और वह क्या करे ? मगर उसके मस्तिष्क में सारी चीज गड़मड़ थी और जब दिमाग बहुत परेशान हुआ तो वह अंदर गया, मटके में से मुट्ठी भर अनाज लिया और भुनाने के लिए भट्ठी पर चला गया ।

मटका जुड़ गया था । अफसर दूसरी वस्तुएं देखने रेस्ट हाउस चले गये थे और फतह मोहम्मद दिन का काम समाप्त करके घर रवाना हुआ । सारे रास्ते वह उन लोगों के संबंध में सोचता रहा, जो वहां इतनी तल्लीनता और शौक से मटका जोड़ते रहे थे ।

तीन-चार मील का रास्ता तय करके वह घर पहुंचा तो सूरज डूबने को था । वह तेज-तेज कदम उठाता आखिरी मोड़ मुड़ा, जहां से दो सौ गज दूरी पर उसका मकान था, तो वह एकदम ठिठक कर रुक गया । वहां तो नक्शा ही बदला हुआ था ।

घर का सारा सामान बाहर बिखरा पड़ा था। बिस्तर और बरतन चारपाई पर ढेर थे । घर पर ताला पड़ा था । कुछ पड़ोसी थोड़े फासले पर खड़े तमाशा देख रहे थे । इस प्रकार जैसे ये लोग अछूत हों । वह भाग कर आगे गया तो उसे ठोकर लगी । संभल कर देखा तो घर के अंदर वाला मटका टूटा पड़ा था । उसके ठीकरे बिखरे हुए थे । और उन में से एक से उसे ठोकर लगी थी ।

उसके बाप ने बड़े ही बुझे हुए अंदाज में सारी कहानी सुनायी जिसका सारांश यह था कि जमींदार ने उसे बेदखल कर दिया था । उसकी अज्ञानता में कोई झूठा मुकदमा चलता रहा, जिसमें एकपक्षीय डिग्री हुई और तहसीलदार के आदमी आज आकर बेदखल कर गये हैं ।

उसका गला सूख गया । बड़ा-सा गोला आमाशय से लपककर कंठ में आ फंसा । उसे समझ में न आया कि क्या करे, क्या कहे । बेबसी में बस इतना मुंह से निकला, "मगर...मगर वे यह मटका क्यों तोड़ गये ?"

"मटका कहां बेटा," उसका बाप बोला, "हमारा तो घर ही टूट गया ?"

बेबसी की अवस्था में फतह जमीन पर बैठ गया और लाचारी से ठीकरे देखने लगा । फिर बड़ी नरमी से उसने ठीकरे इकट्ठे किये और निराश मन से उन के किनारे आपस में मिलाने लगा । बिल्कुल उसी अंदाज में जिस प्रकार साहब लोग सुबह मोहनजोदड़ो में मटका जोड़ रहे थे ।

और फिर उसके मस्तिष्क में एक प्रश्न उठा कि क्या पांच हजार वर्ष पहले वह मटका भी ऐसे ही टूटा था ? ...संभव है ।

और वह टूटे हुए ठीकरे जोड़ने का प्रयास करता रहा, मगर वह सफल न हो सका । उसने नजर उठायी तो मां को अपनी ओर देखते पाया । छोटा बच्चा उसके कंधे से चिपका था और आंखों में आंसू उबल रहे थे ।

"मां, मैं अभी साहब के पास ये ठीकरे ले जाता हूं...उनके पास मसाला है...उन्होंने सुबह ही पांच साल पुराना मटका जोड़ा है ।"

'चल हट बेवकूफ' उसका बाप निकट आकर चिल्लाया, "वे यह मटका नहीं जोड़ेंगे" फिर उसने प्यार से बेटे का सर थपका और नरमी से बोला : "दिल को न लगाओ बेटा, बडे लोग दूसरों के मटके तोड़ते ही रहते हैं । मैंने अपने दादा का जमाना देखा है, वे हमें अपने दादा के जमाने की बातें सुनाते थे । ये हमेशा से ऐसा ही है ।"

फतह मोहम्मद हैरान होकर बाप को देखता रहा, फिर बोला, "कमाल हैं ये साहब लोग भी । पुराने मटके जोड़ने पर तो इतना खर्च करते हैं और नये मटके टूटने पर कोई बंदोबस्त नहीं करते ?"

'हां बेटा, हमारा जमाना ऐसा ही है...शायद पांच हजार साल बाद कोई हमारे मटके जोड़ने वाला भी पैदा हो जाए ।' उसके बाप ने आकाश की ओर देखते हुए ठंडी सांस भरी और बुदबुदाया 'पांच...हजार...साल' ।

अनुवादक : तनवीर अख्तर 'रूमानी'

इनके भी बयां जुदा-जुदा

हमने सीने से लगाया दिल न अपना बन सका
मुसकराकर तुमने देखा दिल तुम्हारा हो गया
— जिगर मुरादाबादी

मुफलिस जो ब्याह बेटी का करता है बोल-बोल
पैसा कहां जो जाके लाये जहेज मोल
— नजीर अकबराबादी

हम बावफा थे इसलिए नजरों से गिर गये
शायद उन्हें तलाश किसी बेवफा की थी
— कमाल अहमद सिद्दकी

तेरे इख्तयार में क्या नहीं
मुझे इस तरह से नवाज दे
यूं दुआएं मेरी कबूल हों
मेरे लब पे कोई दुआ न हो
— बशीर बदर

ये हवा कैसे उड़ा ले गयी आंचल मेरा
यूं सताने की तो आदत मेरे घनश्याम की थी
— परवीन शकिर

यूं चलते-चलते मुझे ठोकर न लगाओ
यारों मैं कोई राह का पत्थर तो नहीं हूं ।
— इशरत किरतपुरी

वो आज खुद ही मौत के हाथों बिखर गया
निकला था जो हयात की जुल्फें संवारने
— असद रजा

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

विधि-विधान

भविष्य-निधि से ऋण

तुलाराम शर्मा, अलीगढ़ : मैं एक सिनेमाघर में सन ७६ से कार्यरत हूं । फंड एवं भविष्य-निधि में मेरी राशि जमा होते हुए बीस वर्ष हो गये । मैंने अपनी लड़की की शादी के खर्च के लिए भविष्य-निधि कमिश्नर को ऋण प्रदान करने का आवेदन किया था, लेकिन वहां से कोई उत्तर नहीं मिला । मुझे क्या करना चाहिए ?

विशेष अवसरों पर भविष्य-निधि से ऋण लेने का प्रावधान है । आपकी जमा राशि से आपको अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिए ऋण मिल सकता है । लड़की का विवाह भी एक ऐसा ही अवसर है, जिस अवसर पर भविष्य-निधि से ऋण लिया जा सकता है । आप आवश्यक फार्म भरकर अपने कार्यालय से, जहां आप कार्यरत हैं, उसका सत्यापन करा लें तथा वह आवेदन भविष्य-निधि आयुक्त के यहां जमा करा दें । भविष्य-निधि आयुक्त आपकी जमा राशि के आधार पर आपको रकम देने का आदेश दे सकते हैं ।

रकम की वापसी

राजेश कुमार दीक्षित, कानपुर : बंगलौर की एक कार कंपनी के कानपुर स्थित एजेंट को मैंने कार बुकिंग के लिए जून १९८९ में दस हजार रुपये दिये थे । बुकिंग की राशि की वापसी के लिए मैंने जिला उपभोक्ता संरक्षण फोरम, कानपुर में वाद प्रस्तुत किया । प्रतिवादी के उपस्थित न होने पर फोरम ने एक पक्षीय फैसला मेरे पक्ष में दे दिया । फैसले पर भी कंपनी की कोई प्रतिक्रिया न होने पर इजरा एक्ज़ीक्यूशन द्वारा जिला जज, बंगलौर किया गया पर कोई हल नहीं निकला । संप्रति कुर्की हेतु आवेदन किया गया, जिसका निर्णय अक्तूबर ९३ में हो जाने पर भी धनराशि प्राप्त नहीं हुई । अब मुझे क्या करना चाहिए ?

आपने अपनी रकम वसूली की आगे की कार्यवाही बंगलौर स्थानांतरित करवा ली है । बंगलौर न्यायालय को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की धारा २५ के अंतर्गत फोरम के आदेश को क्रियान्वित करने के अधिकार उसी प्रकार प्राप्त हैं, जैसे कि यह उनका अपना आदेश है । और उसे उपभोक्ता संरक्षण फोरम को अधिनियम की धारा २७ के अंतर्गत आदेश का पालन न करनेवाले को दंडित करने का भी अधिकार है । उक्त धारा के अंतर्गत आदेश का पालन नहीं करनेवाले को एक माह से तीन वर्ष तक का कारावास तथा दो हजार से दस हजार रुपये तक जुर्माने तक के दंड देने का अधिकार उपभोक्ता संरक्षण फोरम को प्राप्त है । आप कानूनी कार्यवाही जारी रखें ।

पत्नी नहीं मानती

पवन कुमार संगल, झिझिंना (मुजफ्फरनगर) : मेरी शादी २० अप्रैल, १९९२ को हुई । मेरी पत्नी कैराना की निवासी है और कैराना न्यायालय में चपरासी है । मेरे ससुर भी कैराना न्यायालय में सेवारत थे अब सेवा-निवृत्त हैं । शादी से पहले यह तय हुआ था कि शादी के बाद पत्नी नौकरी छोड़ देगी, लेकिन नहीं छोड़ी, कहा कि बच्चा होने के

बाद छोड़ दूंगी । बच्चा पैदा हुए भी चार महीने हो गये । अब तो उसने नौकरी छोड़ने से साफ मना कर दिया है । दो महीने से अपने मायके में है । मैं लेने गया तो ससुर ने कहा कि पत्नी नौकरी नहीं छोड़ेगी । ज्यादा कहा-सुनी करोगे तो गुंडों से मरवा दूंगा । यहां सारी अदालतें मेरी हैं, मैं जो चाहूंगा, आदेश करा लूंगा ।

मैं पत्नी के बिना लौट आया हूं । पत्नी मेरे साथ हंसी-खुशी रह सके इसके लिए अब मैं क्या करूं ?

आपकी पत्नी सरकारी कर्मचारी है । वह अपनी नौकरी नहीं छोड़ना चाहती । आपके अनुसार उसने आपके ससुरालवालों ने वायदा किया था कि विवाह के बाद वह नौकरी छोड़ देगी । परंतु अब वह वायदा नहीं निभा रही, तो इसमें कानून आपकी कोई सहायता नहीं कर सकता । आप पत्नी को नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य नहीं कर सकते ।

जहां तक आपको मरवा देने की धमकी का प्रश्न है आपको अपने समीपवर्ती थाने में इसकी सूचना दे देनी चाहिए । अपने भविष्य का निर्णय आपको ही करना है कि पत्नी की बात मानकर उन्हें नौकरी करते रहने दें या उन्हें समझाकर अपने अनुसार व्यवहार करने के लिए तैयार कर लें । आपके ससुर का यह कहना कि वह न्यायालय से जो चाहें आदेश करा लेंगे, गलत तथा बेबुनियाद है । न्यायालय में किसी के कहने से निर्णय नहीं होते और वैसे भी आपका कोई ऐसा मतभेद नहीं है, जो न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके ।

नाट्य संस्था की स्थापना

जोधाराम हुड्डा, फतुही : मैं एक नाट्य संस्था स्थापित करना चाहता हूं, इसके लिए क्या कोई कानूनी कार्यवाही जरूरी है । यदि हां, तो पूरी प्रक्रिया बताने का कष्ट करें ?

किसी भी व्यक्ति को जनतंत्र में कुछ व्यक्तियों के साथ मिलकर संस्था बनाने तथा समाज व साहित्य की सेवा करने का अधिकार है । संस्था बनाने के लिए किसी पंजीकरण की कानूनी बाध्यता नहीं है । यदि आप कराना चाहें तो अपनी संस्था को संस्था पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत करवा सकते हैं । इसके लिए आपको संस्था का विधान, जिसमें नियम व संस्था का ज्ञापन बनाकर पंजीकरण के लिए प्रस्तुत करना होता है । ज्ञापन में उन व्यक्तियों के नाम, पता व अन्य विवरण देने होते हैं, जो संस्था को प्रारंभ करने के इच्छुक हों । इनकी संख्या कम से कम सात होनी चाहिए । वर्तमान पदाधिकारियों के नाम व पदों का विवरण भी देना होगा । आपके द्वारा संस्था का प्रस्तावित नाम उपलब्ध होने पर आपको उक्त नाम से संस्था पंजीकृत करवाने की अनुमति पंजीकार महोदय दे सकते हैं ।

उसकी पत्नी मुकर गयी

पी.बी. थापा, देहरादून : मैंने देहरादून में एक बीघा जमीन बीस हजार रुपये में खरीदने के लिए सन १९८९ में तेरह हजार रुपये बयाना दिया । जब रजिस्ट्री कराने गया तो पता चला कि जिस व्यक्ति ने बयाना लिया था, जमीन उसके नहीं बल्कि, उसकी पत्नी के नाम पर है, जो नेपाल में रहती है । रजिस्ट्री तो न हो सकी पर स्टांप पेपर पर यह शर्त लिखी गयी कि साल भर के अंदर यह व्यक्ति अपनी पत्नी को हाजिर करेगा या उसका मुख्तयारनामा मंगवाकर रजिस्ट्री कराएगा, नहीं तो मुझे यह अधिकार होगा कि न्यायालय द्वारा जमीन का कब्जा ले लूं या बयाना की दुगनी राशि ले लूं । न

तो उसकी पत्नी आयी, न मुख्तयारनामा आया और न मैंने ही कोर्ट कार्यवाही की । बाद में उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी । अब उसकी पत्नी आ गयी है, उसने बयाना वापस देने या जमीन देने से साफ इनकार कर दिया है । बयाने के गवाहों में उसका बेटा भी शामिल है । मुझे अब क्या करना चाहिए ?

जिस व्यक्ति से आपने भूमि खरीदने का अनुबंध किया था, वह भूमि का स्वामी नहीं था । उसके पास भूमि के स्वामी की तरफ से कोई मुख्तयारनामा (अधिकार-पत्र) भी नहीं था, जिससे वह उक्त स्वामी की तरफ से बेचने का वैध अनुबंध कर सकता । आपने भूमि के असली स्वामी के बारे में जानकारी प्राप्त किये बगैर अनुबंध कर लिया । इस व्यक्ति द्वारा दोबारा की गयी शर्त भी भूमि के स्वामी पर लागू नहीं होती । भूमि का स्वामित्व पत्नी का होने के आधार पर भी कोई व्यक्ति भूमि बेचने का वैध अनुबंध नहीं कर सकता । आपने पहला अनुबंध अप्रैल ८९ में तथा दूसरा अप्रैल, ९० में किया । आपका अधिकार उक्त व्यक्ति द्वारा छोड़ी गयी संपत्ति में से अपनी रकम की वसूली करने तक सीमित था, परंतु वह अधिकार भी अब समय-सीमा से बाहर है । न्यायालय में जाकर भूमि या बयाना प्राप्त नहीं कर सकते ।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—

रामप्रकाश गुप्त

सी. आर. ही सब कुछ ?

पी. एन. शर्मा, दमोह : मैं म. प्र. शासन के एक सहकारी संघ में कार्यरत हूं, जहां म. प्र. शासन के समस्त नियम लागू होते हैं । वर्ष ९३-९४ में विभागीय पदोन्नति की बैठक में मात्र गोपनीय चरित्रावली के आधार पर कुछ को पदोन्नति दी गयीं । जिनकी सी. आर. अति उत्तम थी, इसमें वरिष्ठता सूची पर ध्यान नहीं दिया गया अतः कई जूनियर भी प्रमोशन पा गये ।

क्या सी. आर. ही सर्वश्रेष्ठ होना मात्र योग्यता की पहचान है ? इस संबंध में क्या कोई कानूनी कार्यवाही हो सकती है ?

विभागीय पदोन्नति की प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए । विभागीय पदोन्नति समिति पदोन्नति के अवसर पर साधारणतयः वरिष्ठता तथा गोपनीय चरित्रावली आदि को भी देखती है । केवल वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नति करने में तो शायद विभागीय पदोन्नति समिति को कुछ विशेष करने को नहीं रह जाता । परंतु विभागीय पदोन्नति में वरिष्ठता के साथ-साथ साधारणतया गोपनीय चरित्रावली को देखा जाता है । इससे कुछ क्रम भंग हो जाना स्वाभाविक है । यदि इसमें नियमों का पालन नहीं किया गया हो या समान गोपनीय चरित्रावली के व्यक्तियों के पदोन्नति में भेदभाव बरता गया हो, तब ही उक्त कार्यवाही को चुनौती दी जा सकती है ।

फ्रांस के लुई क्रोक्यूट ने टेलीविजन के लिए एक प्रकाशसंवेदी उपकरण बनाया है जो रोशनीयुक्त कमरे में टेलीविजन के सामने बैठे दर्शकों को प्रत्येक दो सैकंड के बाद देखकर गिनती कर सकता है । मोटिवक नामक यह यंत्र प्रकाश की उपस्थिति में मनुष्य के शरीर को गिन सकता है और साथ ही किसी नये आनेवाले व्यक्ति की भी जानकारी रख लेता है । —संजय शर्मा

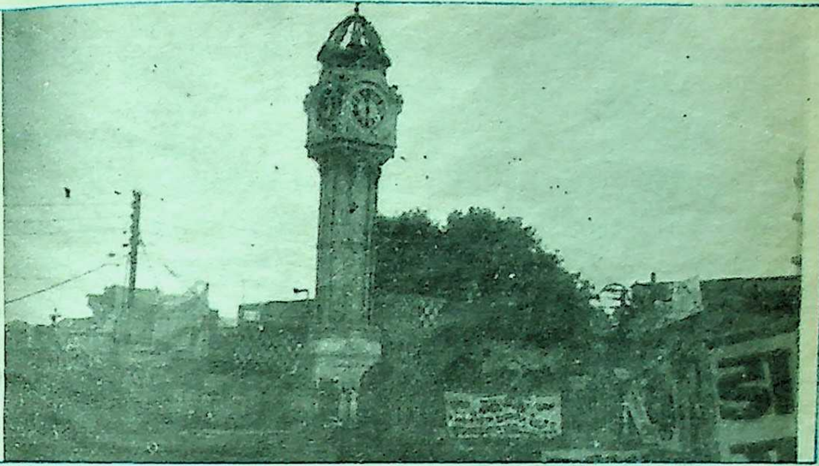

चौक बाजार स्थित नवाबी जमाने का घंटाघर

फैजाबाद

अवध की नवाबी की शुरूआत का शहर

● डॉ. चंद्रिका प्रसाद शर्मा

फैजाबाद : अवध के प्रथम नवाब बुरहान-उल-मुल्क का बसाया हुआ नया शहर । जब बुरहान-उल-मुल्क लखनऊ होते हुए अयोध्या पहुंचे, तो उन्हें यह स्थान अत्यंत मोहक लगा । यहीं अयोध्या से पांच किलोमीटर पूर्व सरयू नदी के तट पर एक ऊंचे टीले पर उसने अपना शिविर लगा दिया । शिविर के आसपास बेगमों के रहने के लिए कच्चे मकान बना दिये । इस क्षेत्र का नाम 'बंगला' पड़ गया ।

बुरहान-उल-मुल्क की मृत्यु के बाद सफदरजंग गद्दी पर बैठे । वह कुछ खुशनुमा तबीयत के इनसान थे । अस्तु, खुदा के फैज से आबाद 'बंगला' अब फैजाबाद हो गया । रौनक बढ़ने लगी, कोठियां बनने लगीं । फौज के रहने के लिए इमारतें खड़ी होने लगीं ।

नवाब सफदरजंग की मृत्यु के बाद उनके बेटे शुजाउद्दौला ने राजकाज संभाला । पर फैजाबाद में उनका दिल न लगा, वे लखनऊ चले आये । और यहीं से फैजाबाद का राजकाज संभालने लगे । किंतु, बक्सर के युद्ध में जब वे अंगरेजों से परास्त हुए, तो भागकर

गुलाब बाड़ी का मकबरा

अपने बाप-दादा के वतन—फैजाबाद में ही आये । युद्ध के नौ महीने पश्चात अंगरेजों से उनकी संधि हुई । इस संधि के बाद शुजाउद्दौला ने लखनऊ को त्यागकर फैजाबाद को अपनी राजधानी बनाया । तभी से फैजाबाद का सितारा बुलंदी की ओर बढ़ने लगा ।

फनकारों का नगर फैजाबाद

नवाब शुजाउद्दौला एक महत्त्वाकांक्षी युवक था । उसने अपनी फौज बढ़ाना शुरू कर दी । फैजाबाद के चारों ओर चारदीवारी बन गयी । फौज के अफसरों की कोठियां बनने लगीं । सरकारी आफीसर शानदार हवेलियां बनवाने लगे । अब फैजाबाद की रौनक काफी बढ़ गयी और लखनऊ उसके सामने फीका पड़ गया । दिल्ली तथा अन्य शहरों के शौक-मिजाज रईस फैजाबाद की ओर चलने लगे । कुछ ही सालों में यहां जाने-माने चित्रकार, मूर्तिकार, संगीतज्ञ, नर्तक और साहित्यकार आ बसे । व्यापारियों के काफिले तो ऐसे रंगीले मिजाज के शहरों की खुशबू की तलाश में ही रहते हैं । लिहाजा, दूर-दूर स्थानों से नाना प्रकार की बेशकीमती वस्तुओं के व्यापारी भी यहां आ गये ।

नवाब शुजाउद्दौला ने अपनी पसंद से शहर में तीन बाग—अंगूरी बाग, मोती बाग और लाल बाग बनवाये । इन तीनों बागों में किस्म-किस्म के फूल-पौधे सलीके से लगाये गये । इन तीनों में लाल बाग सबसे अधिक सुंदर और विस्तृत था । इस बाग में देश-विदेश के रंग-बिरंगे फूल खिलते थे । जिनको देखने के लिए लोग दूसरे शहरों से आ-आकर फैजाबाद में टिकते थे । नगर के संभ्रांत नागरिक नित्य लाल बाग में हवा खाने व दिल बहलाने जाते थे । लाल बाग की शौहरत ऐसी हुई कि धनाढ्य लोग बड़ी तमन्ना के साथ इसकी शोभा को देखने के लिए आते थे । एक बार दिल्ली के शहंशाह शाह आलम भी फैजाबाद के इस लाल बाग की बहारो-रौनक देखने आये थे ।

देश-विदेश के व्यापारियों का जमघट

फैजाबाद का चौक उन दिनों पर्यटकों का आकर्षक केंद्र था । चौक में बेशुमार भीड़ रहती थी, माल बेचनेवालों की, माल खरीदनेवालों की और तमाशबीनों की । यहां प्रतिदिन दूर-दूर से सौदागरों के काफिले अपना-अपना माल लादकर लाते थे । उनका माल इस चौक बाजार में हाथोंहाथ बिक जाता था । पूरे देश में यह बाजार मशहूर हो गया था ।

यहां देश के कोने-कोने के व्यापारी तो आते

नवाब शुजाउद्दौला के जमाने में फैजाबाद नगर क्या था, कुबेर की बस्ती थी । धन-धान्य से संपन्न शहर आमोद-प्रमोद में आकंठ डूबा रहता था । गरीबी तो इस शहर की चारदीवारी के भीतर फटकने का साहस ही नहीं करती थी, लेकिन आज....

ही थे, विदेशों के व्यापारी भी आते थे । चीन के व्यापारी यहां आते थे, ईरान के व्यापारी यहां आते थे, काबुली तिजारती यहां आते थे । यहां उनका माल ऊंचे दामों पर बिकता था । फ्रांस के व्यापारियों को तो चौक बाजार ने ऐसा मोह लिया था कि लगभग दो सौ फ्रांसीसी व्यापारी फैजाबाद में ही बस गये थे । अनेक फ्रांसीसियों ने तो यहां नौकरियां भी कर ली थीं । मुंशी फैज बख्श ने यहां की रौनक का हाल 'गुजिश्ता लखनऊ' में लिखा है कि, 'मैं जब पहले-पहल घर छोड़कर फैजाबाद में गया, मुमताजगर तक ही पहुंचा था, जो शहर के पश्चिमी फाटक से चार मील की दूरी पर है, मैंने देखा कि एक पेड़ के नीचे भांति-भांति की मिठाइयां, गरमागरम खाने, कबाब सालन, रोटियां और परांठे वगैरह पक रहे थे । सबीलें रखी हुई थीं, नानखताइयां, तरह तरह के शरबत और फालूदे बिक रहे हैं । मुझे खयाल गुजरा कि शहर के अंदर दाखिल हो गया हूं और खास चौक में हूं । मगर हैरान था कि अभी तक शहर का फाटक तो आया ही नहीं, मैं अंदर कैसे पहुंच गया ? लोगों से पूछा तो एक राहगीर ने कहा, "जनाब ! शहर का फाटक यहां से चार मील आगे है, आप किस खयाल में हैं ।"

रंगीनियों का शहर

उन दिनों फैजाबाद शान-शौकत और तरह-तरह की रंगीनियों का शहर था । यहां यूनानी हकीम आ बसे थे, दूर-दूर के ऐशो-इशरत पसंद अमीर-उमराव यहां रहने लगे थे । देश-विदेश की नर्तकियां, वेश्याएं और भांड अपनी जीविका कमाने यहीं आ गये थे । नगर क्या था कुबेर की बस्ती थी ।

गुलाबबाड़ी में अशोक स्तंभ

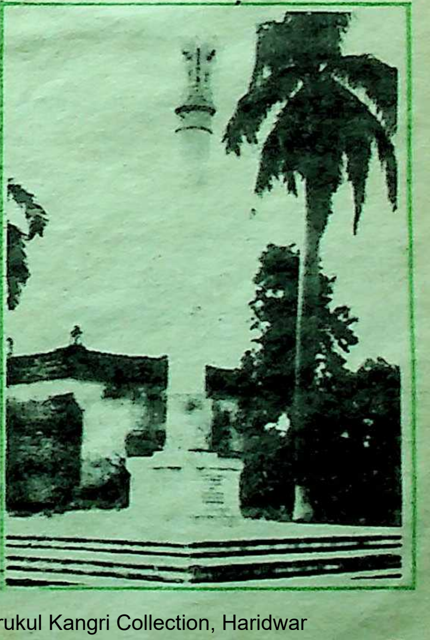

धन-धान्य से संपन्न शहर आमोद-प्रमोद में आकंठ डूबा रहता था । कहीं तवायफों की महफिलें सजी हैं, कहीं संगीतज्ञों के समारोह हो रहे हैं, कहीं गायकों की मंडलियां एकत्रित हैं । गरीबी तो इस शहर की चारदीवारी के भीतर फटकने का साहस ही न कर सकती थी । वास्तव में नगर की रौनक काबिले-तारीफ थी । स्वयं नवाब शुजाउद्दौला घोड़े पर सवार होकर नगर की निगरानी करते थे ।

उन दिनों फैजाबाद शिक्षा का भी उत्तम केंद्र बन गया था । वहां गुजरात, मालवा, कश्मीर, मुल्तान, बंगाल, काबुल के जिज्ञासु विद्यार्थी ज्ञानार्जन के लिए आया करते थे । नवाब केवल वर्षा ऋतु में ही फैजाबाद में रहते थे । अन्य ऋतुओं में तो वह अपने पूरे राज्य का दौरा करते रहते थे । अपने दौरे के समय वह लश्कर के साथ-साथ वेश्याओं के डेरे भी ले जाते थे । सुंदर लड़कियों के प्रति उसमें विशेष लगाव था । मात्र नौ वर्षों के शासनकाल में उसने फैजाबाद की रौनक में जो इजाफा किया, उसकी मिसाल ढूंढ़ने से नहीं मिलती । नवाब शुजाउद्दौला की मृत्यु के साथ ही फैजाबाद रौनक भी दफन हो गयी ।

फैजाबाद उजड़ा, लखनऊ पन

शुजाउद्दौला की मृत्यु के बाद उनकी 'बहू बेगम' ने अपने पुत्र आशफुद्दौला को पर बैठाया । किंतु, मां-बेटे में पटती नहीं इसलिए आशफुद्दौला लखनऊ चला आ वह यहां से भी बहू बेगम को सताया क था । बहू बेगम के पास बहुत अधिक ध सोना, जवाहरात आदि थे, जिन्हें आशफु हड़पना चाहता था । बहू बेगम की मृत्यु के फैजाबाद बिलकुल ही उजड़ने लगा और लखनऊ पनपने लगा । फैजाबाद पहला शहर है, लखनऊ तो उसके बाद चमका ।

वर्तमान फैजाबाद

फैजाबाद के वर्तमान की ओर जब हम दृष्टिपात करते हैं, तो हमारे सामने एक चीज उभरकर आती है कि यह नगर समाजवादी विचारकों का जन्म-स्थल रहा है । डॉ. राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेंद्रदेव यहीं के निवासी थे । आचार्य कृपलानी भी वर्षों य

कंपनी गार्डन

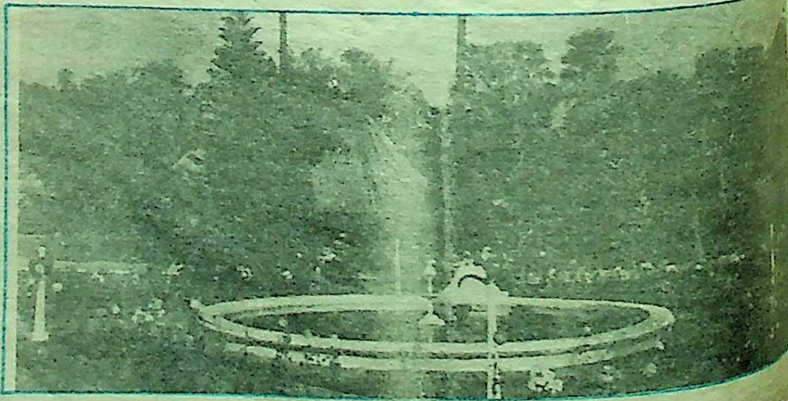

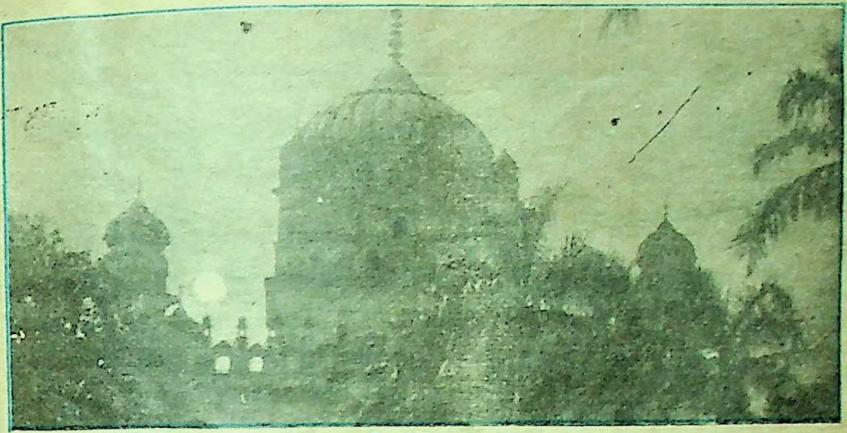

बहू बेगम का मकबरा

'रनीवां आश्रम' में रहे । स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों यह नगर क्रांतिकारी का गढ़ बन गया था । यहीं की जिला जेल में शहीदे-आजम आशफाक उल्ला खां ने फांसी के फंदे को चूमा था ।

फैजाबाद में आज भी साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों का उमंग और उत्साहभरा माहौल है । सारांश यह कि अयोध्या-फैजाबाद के लोगों में परस्पर सहयोग की उदात्त भावना है । पर राजनीति के खिलाड़ी आग सुलगाकर आंच में तापकर अपनी सरदी दूर करना चाहते हैं और अपनी पनेथियां सेंकना चाहते हैं ।

दर्शनीय स्थल

फैजाबाद में कुछ ऐसे दर्शनीय स्थल हैं । जो पर्यटकों को अपनी ओर विशेष रूप से आकर्षित करते हैं । नगर के पूर्व में 'देवकाली' का मंदिर है । इस मंदिर की स्थापना भगवान राम की माता कौशल्या ने की थी, ऐसी किंवदंती है । गुलाब बाड़ी का मकबरा, बहू बेगम का मकबरा और मिलिट्री मंदिर—ये सब कुछ तो यहां पर है ही । साथ ही नगर की संकरी तंग गलियों का गंदगी भरा वातावरण भी है । चौक अब चाट के ठेलों, विरियानी के ठेलों और अंडे वालों के ठेलों से पटा रहता है । चौड़ी सड़क तंग हो गयी है । ड्यूटी पर पुलिस नियमित रूप से रहती है, पर किसलिए ? उनको हटाने के लिए या अपना हक लेने के लिए ? प्रशासन भी यह जानता ही होगा । पर सब रामभरोसे चल रहा है ।

—सी. १० के. रोड़,
महानगर लखनऊ-२२६००६

क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम् । (कुमारसंभव ६/१३)

अच्छी पत्नियां धार्मिक क्रियाओं का मूल कारण होती हैं ।

वेद विश्व-संस्कृति का आधार स्तंभ माने जाते हैं । चारों वेदों में आयुर्वेद के विभिन्न अंगों और उपांगों का विशद वर्णन प्राप्त होता है । वेदों में नीरोग रहने और दीर्घायु प्राप्त करने के उपाय भी बताये गये हैं ।

वेदों में आयुर्वेद

● डॉ. कपिल देव द्विवेदी

वेद विश्व-संस्कृति के आधार-स्तंभ हैं । वेदों में ज्ञान और विज्ञान का अनंत भंडार विद्यमान है । अतएव मनु ने वेदों को सर्वज्ञानमय कहा है, अर्थात वेदों में सभी प्रकार का ज्ञान और विज्ञान निहित है । आयुर्वेद शास्त्र की दृष्टि से वेदों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि चारों वेदों में आयुर्वेद के विभिन्न अंगों और उपांगों का यथास्थान विशद वर्णन हुआ है ।

ऋग्वेद और आयुर्वेद : ऋग्वेद में आयुर्वेद के महत्त्वपूर्ण तथ्यों का यथास्थान विवेचन प्राप्त होता है । इसमें आयुर्वेद का उद्देश्य, वैद्य के गुण-कर्म, विविध औषधियों के लाभ आदि, शरीर के विभिन्न अंग, विविध चिकित्साएं, अग्नि-चिकित्सा, जलचिकित्सा, वायुचिकित्सा, सूर्यचिकित्सा, शल्यचिकित्सा, हस्तस्पर्श-चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, विष-चिकित्सा, कृमिनाशन, दीर्घायुष्य, तेज, ओज, नीरोगता, वशीकरण, कुस्वप्न-नाशन आदि का विशिष्ट वर्णन प्राप्त होता है ।

यजुर्वेद और आयुर्वेद : यजुर्वेद में आयुर्वेद से संबद्ध निम्नलिखित विषयों की सामग्री प्राप्त होती है — वैद्य के गुण-कर्म, विभिन्न औषधियों के नाम आदि, शरीर के विभिन्न अंग, चिकित्सा, दीर्घायुष्य, नीरोगता, तेज, वर्चस्, बल, अग्नि और जल के गुण-कर्म आदि ।

सामवेद और आयुर्वेद : सामवेद में आयुर्वेद-विषयक सामग्री अत्यंत न्यून है । इसमें आयुर्वेद से संबद्ध कुछ मंत्र निम्नलिखित विषयों के प्रतिपादक हैं—वैद्य, चिकित्सा, दीर्घायुष्य, तेज, ज्योति, बल, शक्ति आदि ।

अथर्ववेद और आयुर्वेद : आयुर्वेद की दृष्टि से अथर्ववेद अत्यंत महनीय ग्रंथ है । इसमें आयुर्वेद के प्रायः सभी अंगों और उपांगों का विस्तृत वर्णन मिलता है । अथर्ववेद आयुर्वेद का मूल-आधार है । इसमें आयुर्वेद से संबद्ध निम्नलिखित विषयों का वर्णन प्राप्त होता है—भिषज् या वैद्य के गुण-कर्म, भैषज्य, शरीरांग, दीर्घायुष्य, नीरोगता, तेज, वर्चस्, वशीकरण, वाजीकरण, रोगनाशक, विभिन्न मणियां, विविध औषधियों के नाम और

गुण-कर्म, रोगनाम एवं चिकित्सा, कृमिनाशन, सूर्यचिकित्सा, जलचिकित्सा, विषचिकित्सा, पशुचिकित्सा, प्राण-चिकित्सा, शल्य-चिकित्सा आदि ।

आयुर्वेद और उसके उद्देश्य

चरक और सुश्रुत में आयुर्वेद का लक्षण और उसके उद्देश्यों का विशेष विस्तार से वर्णन किया गया है ।

चरक ने आयुर्वेद का लक्षण दिया है—**'आयुर्वेदयति इति आयुर्वेद :'** । जो आयु का ज्ञान कराता है, वह आयुर्वेद है । इसका स्पष्टीकरण करते हुए कहा गया है कि आयुर्वेद ही मनुष्य की आयु के लिए हितकर (पथ्य) और अहितकर (अपथ्य) वस्तुओं का वर्णन करता है, सुखकर और दुःखदायी कारणों का वर्णन करता है, पदार्थों की ग्राह्य मात्रा और अनुचित मात्रा का उपदेश देता है तथा आयुवर्धक और आयुनाशक द्रव्यों, गुणों और कर्मों का वर्णन करता है । इसमें आयु की इयत्ता और आयु के स्वरूप का भी वर्णन होता है ।

सुश्रुत का कथन है कि जिसमें आयु के हितकर और अहितकर तत्वों का विचार हो और जो दीर्घ आयु प्राप्त कराता है, वह आयुर्वेद है ।

चरक ने आयुर्वेद का उद्देश्य बताया है—स्वस्थ पुरुष के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी व्यक्ति के रोग को दूर करना । सुश्रुत ने भी यही भाव दिया है कि रोगी को रोग से मुक्त करना और स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा करना, ये ही दो आयुर्वेद के मुख्य प्रयोजन हैं ।

चरक का कथन है कि धातुओं की विषमता को रोग कहते हैं और धातुओं की समता को नीरोगता या स्वस्थता । आरोग्य का ही नाम सुख है और रोगावस्था का नाम दुःख है ।

वेदों में आयुर्वेद के उद्देश्य : वेदों में आयुर्वेद के उद्देश्यों का यत्र-तत्र उल्लेख और संकेत है ।

मृत्यु या रोग के कारणों का निवारण : ऋग्वेद और अथर्ववेद में कहा गया है कि—मृत्यु के कारणों को दूर करें । **दीर्घायु की प्राप्ति**—हम दीर्घायु प्राप्त करें । **आचार-विचार की शुद्धि**—दीर्घायु का साधन बताया गया है—आचार और विचार की शुद्धता । पवित्र आचार और विचार से रोगों को नष्ट करके दीर्घायु हों । **रोग के कारणों का उन्मूलन**—तैत्तिरीय संहिता का कथन है कि जिन कारणों से रोग होता है, उन्हें दूर किया जाए । **जीवन का काल शतायु**—जीवन की सीमा सौ वर्ष या इससे अधिक होने का उल्लेख है । वेदों में अनेक स्थानों पर दीर्घायु, शतायु और पूर्णायु या सर्वायु का उल्लेख है । **आत्मा और शरीर की पुष्टता**—अथर्ववेद में शरीर के अंगों की नीरोगता और आत्मा की अजेयता की प्रार्थना की गयी है । **रोग के कीटाणुओं का**

नाशन—अथर्ववेद में सभी रोगों का कारण विष बताया गया है और उस विष या रोगकृमि को नष्ट करने का उल्लेख है ।

इस प्रकार आयुर्वेद के मूलभूत तत्वों में रोगनाशन, पूर्ण स्वस्थता, शतायु होना, रोगकृमिनाशन और आचार-विचार की शुद्धि का उल्लेख मिलता है ।

आयुर्वेद के आठ अंग

यद्यपि वैदिक वाङ्मय में आयुर्वेद के ८ अंगों का यत्र-तत्र वर्णन प्राप्त होता है, परंतु आठ अंगों का कहीं पर स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है । इससे ज्ञात होता है कि आयुर्वेद का आठ अंगों में विभाजन परकालीन चिंतन है ।

चरक, सुश्रुत और अष्टांगहृदय में इन आठ अंगों का कुछ नामभेद से उल्लेख प्राप्त होता है । सुश्रुत ने इनके नाम दिये हैं :

१. शल्यचिकित्सा, २. शालाक्य चिकित्सा, ३. कायचिकित्सा, ४. भूतविद्या, ५. कौमारभृत्य, ६. अगद तंत्र, ७. रसायन तंत्र, ८. वाजीकरण तंत्र ।

चरक ने इनके नाम दिये हैं—

१. कायचिकित्सा, २. शालाक्य,
३. शल्यापहर्तृक (शल्य तंत्र),
४. विषगर-वैरोधिक-प्रशमन (अगदतंत्र),
५. भूतविद्या, ६. कौमारभृत्य, ७. रसायन,
८. वाजीकरण ।

अष्टांगहृदय में इनके नाम हैं —

१. कायचिकित्सा, २. बालचिकित्सा,
३. ग्रहचिकित्सा, ४. ऊर्ध्वांगचिकित्सा,
५. शल्यचिकित्सा, ६. दंष्ट्राचिकित्सा (विषचिकित्सा), ७. जराचिकित्सा (रसायन),
८. वृषचिकित्सा (वाजीकरण) ।

चिकित्सा चार प्रकार की

अथर्ववेद में चार प्रकार की औषधियों की चिकित्सा-विधियों का उल्लेख मिलता है । वे हैं—

अथर्वणी चिकित्सा : इस चिकित्सा-विधि का संबंध अथर्वन् या अथर्वा ऋषि से है । इस चिकित्सा-विधि के विषय में मतैक्य नहीं है, परंतु अधिकांश विद्वानों का मत है कि यह शांतियुक्त विधि से की जानेवाली चिकित्सा है । अथर्वा का अर्थ योगी है । इसमें ध्यान, मनन, चिंतन और मनोयोग से होनेवाली चिकित्सा का समावेश है । अतएव इसे मनः चिकित्सा-विधि कह सकते हैं ।

आंगिरसी चिकित्सा : इसका संबंध अंगिरस् या अंगिरा ऋषि से है । इसकी दो व्याख्याएं हो सकती हैं— (क) अंगों के रस से होनेवाली चिकित्सा आंगिरसी है । इसमें अंगों का रस अर्थात रक्त आदि दूसरों को चढ़ाना, शरीर में बाह्य रसों को पहुंचाना, शरीर में अन्य कार्यशील तत्वों को पहुंचाना, वृक्ष-वनस्पति आदि के पोषक तत्वों को शरीर में पहुंचाना, रोगी के शरीर में अन्य शक्ति-प्रेरक तत्वों को पहुंचाना आदि का समावेश होगा । अतः यह पद्धति कुछ अंशों तक एलोपैथिक पद्धति से साम्य रखती है ।

आंगिरस की दूसरी व्याख्या घोर कृत्यों से संबद्ध है । अंगिरा ऋषि द्वारा दृष्ट मंत्रों में व्रण-चिकित्सा, शत्रुनाशन, शत्रुसेनानाशन, मणि द्वारा समस्त रोगों शत्रुओं और राक्षसों के नाश आदि का वर्णन है । यह भी वर्णन किया गया है कि ऋषि घोर होते हैं । इनकी दृष्टि और इनका चिंतन सत्य है अर्थात ये सूक्ष्मदृष्टि हैं । आंगिरस विधि से शल्यक्रिया या चीर-फाड़ की

विधि-ली जा सकती है । इसमें सूक्ष्म दृष्टि, क्रूर-कृत्य, अंग-छेदन आदि की क्षमता और रोगों के ठीक कारणों आदि का ज्ञान अनिवार्य है ।

दैवी चिकित्सा : पृथिवी आदि पंचतत्वों को देव कहते हैं । सूर्य, चंद्र आदि भी देव हैं । अतः मृत्-चिकित्सा, जलचिकित्सा, अग्नि-चिकित्सा, वायु-चिकित्सा, सूर्य-चिकित्सा, प्राणायाम-चिकित्सा आदि चिकित्साएं दैवी चिकित्सा के अंतर्गत आती हैं । आधुनिक विज्ञान के अनुसार इसे प्राकृतिक चिकित्सा कह सकते हैं ।

मनुष्यजा या मानवी चिकित्सा : यह मानवों द्वारा बनायी गयी चिकित्सा है । इसमें मानवों द्वारा निर्मित चूर्ण, अवलेह, भस्म, कल्प, आसव, वटी आदि सम्मिलित हैं । यह चिकित्सा औषधि-चिकित्सा है ।

नीरोगता

वेदों में नीरोगता के कुछ साधन बताये गये हैं । दीर्घायु के जो साधन बताये गये हैं, वे नीरोगता के आधार हैं । कुछ अन्य साधन ये हैं —

पांच आरोग्यकारक तत्व—अथर्ववेद के एक सूक्त में पांच आरोग्यकारक तत्वों का उल्लेख है । ये हैं :—पर्जन्य (वर्षा का जल), मित्र (प्राणशक्ति), वरुण (जल), चंद्र और सूर्य । वर्षा का जल शुद्ध और रोगनाशक है । प्राणवायु शरीर को शक्ति प्रदान करती है । जल शरीर के दूषित तत्वों को बाहर निकालता है । चंद्रमा इंद्रियों और मन को शांति एवं शक्ति देता है । सूर्य शरीर का पोषक और रक्षक है ।

शुद्ध और निर्विष अन्न का सेवन—अथर्ववेद

का कथन है कि शुद्ध अन्न शक्तिवर्धक और रोगनाशक होता है । जौ और चावल पोषक और रोगनाशक हैं । अन्न के विषय में आवश्यक बताया गया है कि नीरोगता के लिए निर्विष अन्न ही खाया जाए ।

भोजन के नियम—अथर्ववेद में नीरोगता के लिए भोजन के कुछ नियम बताये गये हैं । ये हैं—(क) ठीक चबाकर खाना, (ख) ठीक ढंग से पानी पीना, (ग) ठीक ढंग से निगलना । शीघ्रता से खाया हुआ भोजन अपाच्य होता है और अजीर्ण (कब्ज) करता है । इसलिए आयुर्वेद में भोजन के लिए तीन नियम बताये गये हैं : (क) हितभुक्—हितकारी भोजन करना, (ख) मितभुक्—अल्प या संतुलित मात्रा में भोजन करना, (ग) ऋतभुक्—सात्विक एवं ईमानदारी से कमाया गया अन्न ही खाना ।

मल-मूत्र के वेग को न रोकना : मल और मूत्र के वेग को रोकने से नाना प्रकार की व्याधियां होती हैं, अतः उन्हें न रोकें । अथर्ववेद में मूत्र के वेग को रोकने से मूत्रकृच्छ्र का वर्णन किया गया है और मूत्र को तुरंत निकालना

आवश्यक बताया गया है ।

त्रिदोषज विकारों को रोकना : वात, पित्त और कफ के विकार से सारे रोग होते हैं और इनको सम रखने से नीरोगता होती है । अथर्ववेद में अभ्रज (कफ), वातज (वात) और शुष्म (पित्त) के विकार से होनेवाले सिरदर्द और कास (खांसी) आदि रोगों का उल्लेख किया गया है और इनकी चिकित्सा औषधि-सेवन एवं पर्वतों का आश्रय लेना बताया गया है ।

सात्त्विक विचारों को ही अपनाना : अष्टांगहृदय का कथन है कि रोगों के दो आश्रयस्थान हैं—शरीर और मन । मानसिक रोग रजोगुण और तमोगुण से उत्पन्न होते हैं । यजुर्वेद में नीरोगता के लिए शुभ विचारों को उपादेय बताया गया है । अथर्ववेद में उत्तम भावनाओं और विचारों से दीर्घायु की प्रा बतायी गयी है ।

प्रसन्नचित्त रहना : प्रसन्नचित्त रहने से मनु नीरोग, दीर्घायु और तेजस्वी होता है ।

पापों और दुर्गुणों से बचना : पापों, दुष्कर्मों दुर्व्यसनों के परित्याग से मनुष्य नीरोग औ दीर्घायु होता है ।

शरीर को हृष्ट-पुष्ट रखना : अथर्ववेद का कथन है कि शरीर में नेत्र आदि ज्ञानेन्द्रियां के रक्षक हैं । इनको पुष्ट रखने से मनुष्य नी और दीर्घायु होता है ।

सूर्योदय से पूर्व उठना : अथर्ववेद का कथन कि उदय होता हुआ सूर्य सोनेवाले का तेज लेता है । इसलिए नीरोगता और तेजस्विता के लिए सूर्योदय से पूर्व उठना आवश्यक है ।

विलक्षण क्षमताओं वाले मानव

इंगलैंड का प्रसिद्ध जादूगर राबर्ट हुडनी अपने समय का अद्‌भुत व चमत्कारी व्यक्ति माना जाता था । दैनिक समाचार पत्र 'डेली मिरर' ने एक बार उसके चमत्कारों को झूठा और भ्रामक बताकर उन पर आशंका प्रकट की थी । राबर्ट ने इसे चुनौती के रूप में लिया और उसने सार्वजनिक रूप से एक विलक्षण करतब प्रस्तुत किया । पूरी सावधानी और मजबूती के साथ उसे हथकड़ी व बेड़ियों में जकड़ दिया गया, परंतु दो मिनट के अंदर उसने बेड़ियों को तोड़कर फेंक दिया । लोगों की भीड़ के सामने राबर्ट को एक कमरे में बंदकर बाहर से ताला लगा दिया गया, लेकिन वह कुछ ही देर में लोगों के सामने था । उसे सुरंग के भीतर भी बंद किया गया, परंतु यहां भी उसने बाहर आकर लोगों को चकित कर दिया । राबर्ट यह सब कैसे कर सका ? इसका रहस्योद्‌घाटन आज तक नहीं हो सका है ।

'आलमआरा' के निर्माता अर्देशर ईरानी

वे फिल्मी उद्योग के बादशाह थे

● बद्रीप्रसाद जोशी

आलमआरा : भारत की पहली सवाक फिल्म, जिसके निर्माता थे—अर्देशर ईरानी, जिन्हें फिल्मों का 'वाणी गुरु' भी कहा जाता है ।

अर्देशर ईरानी का जन्म सन १८८६ में पुणे के एक मेरबान ईरानी परिवार में हुआ था ।

नौ वर्ष की छोटी उम्र में वे अपने पिता के साथ बंबई आये और जीजाबाई हाई स्कूल में अध्ययन के लिए उनका नाम लिखा दिया गया ।

नये-नये काम

मैट्रिक पास करते ही उनका स्वप्नाकांक्षी दिमाग कंप्यूटर की तरह दौड़ने लगा । वे पहले स्कूल में मास्टर बने । फिर किरोसिन इंस्पेक्टर बने और देखते-देखते पुलिस इंस्पेक्टर बन गये । वे अपने पिता के साथ पहले चाय की दूकान पर बैठे फिर उनके वाद्ययंत्रों की नयी दूकान भी संभालने लगे । दिमाग में एक और नयी लहर उठी तो कैमरा उठाकर फोटोग्राफी करने लगे । फोटोग्राफी का शौक ही उन्हें फिल्मों तक ले आया । फिर उन्होंने सन १९१५ में विदेशी फिल्मों का वितरण शुरू कर दिया । बाद में उन्होंने अब्दुल अली यूसूफ अली नामक व्यक्ति की पार्टनरशिप में बंबई में सभी साधनों से सुसज्जित एक खूबसूरत अलेक्जेंड्रा सिनेमाघर की स्थापना की । कुछ ही दिनों में दोनों मित्रों ने मिलकर गिरगांव में एक और थियेटर मैजेस्टिक खोला । अर्देशर ईरानी और अब्दुल अली यूसूफ अली की यह दोस्ती जीवनपर्यंत रही और फिल्मी दुनिया के सामने एक उदाहरण बन गयी ।

फिल्मों का निर्माण

मैजेस्टिक सिनेमा में प्रदर्शित पहली फिल्म अमरीका की यूनिवर्सल पिक्चर्स की 'मदन ओ माइन' थी । उन दिनों उस अमरीकी कंपनी के बंबई एक्जीक्यूटिव थे कोकरेन । वे अर्देशर ईरानी के उत्साह, उनकी लगन और फिल्मों के प्रति उनकी अभिरुचि और श्रम-साधना देखकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें कंपनी का बंबई में मैनेजर बना दिया । पर जब उन्होंने अपने ही थियेटर्स-अलेक्ज़ेंड्रा और मैजेस्टिक में दादा साहब फालके की 'कालिया मर्दन' और

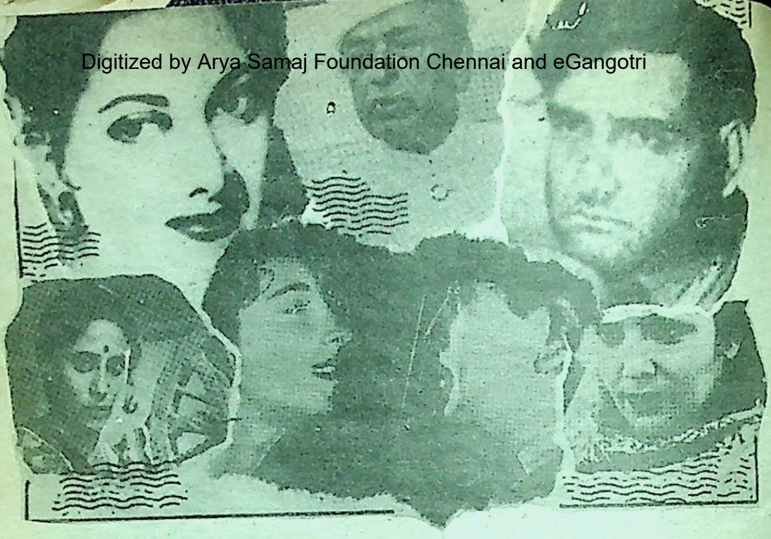

'कृष्ण जन्म' तथा अन्य फिल्में देखीं तो उनके मस्तिष्क में फिल्में बनाने की तरंग उठी और वे यूनिवर्सल पिक्चर्स को छोड़कर फिल्म-निर्माण में संलग्न हो गये।

अर्देशर ईरानी की एक खूबी थी कि जो सोच लेते थे, उसे कर डालते थे। उन्होंने कल्पना की, दिमाग दौड़ाया, विदेश से आये फिल्म विशेषज्ञ वी. के. एम. दवे के साथ स्टार फिल्मस लि. की स्थापना कर शीघ्र ही एक मूक फिल्म 'वीर अभिमन्यु' बना डाली। दवे पहले शारदा फिल्म कंपनी से जुड़े थे और उन्हें फिल्म-निर्माण व्यवस्था का गहरा अनुभव था।

स्टार फिल्म के बैनर तले चंद फिल्में बनाने के बाद उनके मस्तिष्क में चेतना की एक और नयी लहर उठी और उन्होंने मैजेस्टिक फिल्म कंपनी की स्थापना की और उसके बैनर तले करीब नौ फिल्मों का निर्माण किया। लेकिन वह कंपनी बहुत जल्द बंद हो गयी। फिर भी वे निराश नहीं हुए और उन्होंने बंबई के कैनेडी ब्रिज के नीचे सन १९२६ में एक विशाल कंपनी का निर्माण किया, जिसका नाम था इंपीरियल फिल्म कंपनी। इस कंपनी ने अनेक सफल फिल्मों का निर्माण किया।

पहली सवाक् फिल्म

तब तक सवाक् फिल्मों का समय आ चुका था। उन्होंने सारी दुनिया में तहलका मचा दिया था। अर्देशर ईरानी उनके बारे में कुछ सोच ही रहे थे कि सन १९२९ में उन्होंने बंबई के एक्सेलसियर सिने थियेटर में 'शो बोट' नामक अमरीकी सवाक् फिल्म देखी। बस, फिर क्या था, उनका दिमागी कंप्यूटर गतिशील हो उठा। जिस तरह उन्होंने दादा साहब फालके की मूक फिल्मों से प्रेरित होकर मूक फिल्मों के निर्माण का सिलसिला शुरू किया था, उसी तरह उक्त सवाक् फिल्म को देखते ही तत्काल दूसरे दिन ही उन्होंने सवाक् फिल्म बनाने का निर्णय कर दिया। केवल पांच महीनों में और केवल छह हजार रुपये की लागत में भारत की प्रथम सवाक् फिल्म 'आलमआरा' का निर्माण किया, जिसके कलाकार थे जुबैदा, मास्टर विट्ठल, पृथ्वीराज कपूर, जगदीश सेठी आदि। फोटोग्राफर थे अर्देशर ईरानी और रूस्तम सी

भरूचा थे साउंड रेकॉर्डिस्ट । इस तरह भारत की प्रथम सवाक् फिल्म बनाने का श्रेय अर्देशर ईरानी को है, जो फिल्मों के 'वाणीगुरु' कहलाते हैं ।

भारत की प्रथम सवाक् फिल्म 'आलमआरा' बंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में १४ मार्च,१९३१ को प्रदर्शित हुई । उसकी भारी सफलता से अब वे उसी तरह फिल्म निर्माण क्षेत्र में कोई न कोई पहला क्रांतिकारी कदम उठाने को प्रेरित हुए । उन्हें तब श्रेय मिला भारत में पहली अंगरेजी फिल्म बनाने का । भारत की यह प्रथम अंगरेजी फिल्म 'नूरजहां' सन १९३२ में बनी थी । अगले साल उन्होंने भारत की पहली पर्शियन फिल्म 'दुख्तरे नूर' का निर्माण किया । इस फिल्म के संगीत की रेकॉर्डिंग के लिए उन्होंने खास ईरान से संगीतकार बुलाये थे । ईरान में इस फिल्म की इतनी प्रशंसा हुई कि उसकी सफलता से प्रेरित होकर उन्होंने सन १९३४ और ३५ में दो और पर्शियन फिल्में—'फिरदौसी' और 'शीरी फरहाद' का निर्माण किया । इसी तरह उन्होंने फिल्मी दुनिया की पहली आटोमैटिक लेबोरेटरी का भी निर्माण किया ।

अर्देशर ईरानी को इस बात का भी श्रेय है कि उन्होंने पहली कलर लेबोरेटरी सिने कलर प्रोसेस का निर्माण किया और उन्होंने भारत की पहली कलर फिल्म 'किसान कन्या' सन १९३७ में बनायी । जिसका उद्घाटन बंबई के तत्कालीन गवर्नर लार्ड ब्रेबोर्न ने किया था और जिसमें मास्टर निसार और पद्मादेवी की जोड़ी थी । गुलाम मोहम्मद खलनायक थे । इसी वर्ष वे 'इम्पा' के प्रेसीडेंट चुने गये ।

उनके साथ काम करनेवाले प्रमुख निर्देशक थे—आर. एस. चौधरी, मोतीजी गिडवानी, होमी मास्टर, दादा गुंजाल, हफीजी, एथोर्टी मदनानी वकील, अस्पी ईरानी, पेसी कर्नी, नाना साहब सरपोतदार, नंदलाल और मिश्रा उनकी फिल्मों के प्रमुख कलाकार थे—सुलोचना, जुबैदा, जिल्लो, मोती, रत्नाबाई, पृथ्वीराज कपूर, प्रमिला, पद्मा देवी, जगदीश सेठी, मुबारक, नापमपल्ली, डब्लू्यू. एम. खान निसार, डी. बिलिमोरिया, विनायक राव पटवर्धन, गोविंद राव तांबे और मास्टर विट्ठल ।

अनुशासनप्रिय, सहृदय भी

उनकी फिल्मों के तकनीशियनों में प्रमुख थे—अदी ईरानी, रूस्तम सी भरूचा, ए. पी. करनदीकर, आर. एम. रेले आदि । अर्देशर ईरानी काम के मामले में अनुशासनप्रिय और सख्त थे पर व्यवहार में मानवीय संवेदनाओं से उद्वेलित रहते थे । वे अपने कर्मचारियों से काम भी लेना जानते थे और उन्हें प्यार भी करते थे । वे हमेशा अपने छोटे कर्मचारियों की मदद किया करते थे । वे स्टार फिल्म-सिस्टम के सख्त खिलाफ थे । इस विषय में उन्होंने अपने एक इंटरव्यू में कहा, "मेरे जमाने में आर्टिस्ट एक जगह टिककर रहा करते थे और अपनी ड्यूटी को सबसे अधिक महत्व देते थे । यहां तक कि सुलोचना (रूबी मायर्स) को भी जो सबसे महंगी कलाकार थी और जो ५,००० रुपये प्रति माह वेतन लेती थी, मेरे यहां ठीक समय पर आना पड़ता था और कभी-कभी तो जरूरत पड़ने पर रात के दो-तीन बजे भी । कभी-कभी बेचैन हो जाता हूं, जब यह सुनता हूं कि अमुक कलाकार ने अमुक निर्माता को तंग किया ।

अर्देशर ईरानी की फिल्मों की सूची

● स्टार फिल्म लि. के अंतर्गत अर्देशर ईरानी निर्मित फिल्में : वीर अभिमन्यु, चंद्रगुप्त, बाली-सुग्रीव, मत्स्य वराह ।

● मैजेस्टिक फिल्म कं. के अंतर्गत बनी फिल्में : आत्मबल, काल आफ सैटन, चालू जमाना, काला नाग, नंद बत्रीसी, रजिया बेगम, सदावंत, सैवलिंगो, संन्यासी, वीर दुर्गादास ।

● इंपीरियल की मूक फिल्में : अली बाबा एंड फोर्टी थीव्स, अल्ला का प्यारा, बिड फार दि थ्रोन, ब्रैंड आफ फेट, सेलेशियल लोटस, सिनेमा गर्ल, दीवान भामाशा, द्वारका, फेटल गारलैंड, फ्लाइंग प्रिंस, पागल प्रेमी, ब्यूटीफुल प्रिंस, हीर रांझा या हूर ए पंजाब, जंगल की रानी, हिल्स आव पैराडाइज, इंदिरा, ज्वेल ऑव राजपूताना, ज्वेल्ड ऐरो, कमला कुमारी, कमर-उल-जमान, खुदा की शान, किक्स आव किस्स, कृष्ण नारदी, ला बैले, लेडी आव दि लेक, वेनजियेंस, वेडिंग नाइट, वर्ल्ड टीचर, मिडनाइट राइडर, नर्स (दयानी देवी), पिता का परमेश्वर, पंजाब मेल, पुराना भारत राजतिलक, राम-रहीम, रिवेंज (इंतकाम), सेक्रेट आव दि नाइट, सिंदबाद दि सेलर, स्लेव या गुलाम, सोहिनी महिवाल, स्वोर्ड टु स्वोर्ड, विजया कुमारी, वाइज फूल, रौंग्ड वाइफ, दि यूथ ।

● इंपीरियल फिल्म कं. की बोलती फिल्में—हिंदी में : सन १९३१ में : आलमआरा, अनंग सेना, दौलत का नशा, द्रौपदी, नूरजहां । सन १९३२ में भारतमाता, दगाबाज अश्क, जालिम जवानी, माधुरी, नेक अबला, नीति विजय, सती मदालसा, सती सोने । सन १९३३ में : डाकू की लड़की, दोरंगी दुनिया, सती अनुसूया, सौभाग्य सुंदरी, टेम्पल बेल्स, १९३४ में—देवकी, गुल सनोवर, इंदिरा एम. ए., मैजिक फ्लूट, पिया प्यारे, रुक्मिणी हरण, समाज की भूल । १९३५ में : अनारकली, चलता पुतला, दो घड़ी की मौज, पुजारिनी, सुंदरी (सौंग आव लव), सन १९३६ में : बंबई की बिल्ली, गुलाम डाकू, हमारी बेटियां, जाटे शरीफ, जंगल क्वीन, लाल ओ निहार, महामाय, सरला, शान ए हिंद सन १९३७ में : जगत केसरी, किसान कन्या, मेरे लाल, न्यू सर्चलाइट, पंजाब लैंसर्स, टू वोमेन, उसने क्या सोचा, वाह री दुनिया सन १९३८ में : दुल्हन, एजुकेटेड एक्ट्रेस, किसलिए, बसंत बंगाली ।

● इंपीरियल फिल्म कं. द्वारा हिंदी के अलावा अन्य भाषाओं में निर्मित फिल्में : अंगरेजी : नूरजहां-१९३२ में, पर्शियन-दुख्तरे लूर-१९३३ में फिरदौसी-१९३४, शीरी फरहाद-१९३५ में, मराठी-रुक्मिणी हरण-१९३३ में, देवकी—१९३४ में, तमिल-परिजात पुष्पम-१९३२ में, कोवालन-१९३३ में, तेलुगु-रामदास-१९३३ में ।

व्यक्तिगत रूप से मैंने इसे तो कभी बर्दाश्त नहीं किया । ऐसे कलाकार को मैं अपने स्टूडियो में पांव नहीं रखने देता... ।"

अर्देशर ईरानी हमेशा आशावान और सजग रहे । आर्थिक संकट के समय भी वे हमेशा मुसकराते रहे ।

इंपीरियल फिल्म कंपनी के इंजीनियर और हीरो डी. बिलिमोरिया ने उनके प्रति उद्गार प्रकट करते हुए कहा था, "अर्देशर ईरानी फिल्म उद्योग के बादशाह थे । वे फिल्म उद्योग के हीरो थे । जब भी कोई भी नया एक्सपेरिमेंट करना होता तो उनके मुंह से कभी न नहीं निकलती । उनके मुंह से मैंने हमेशा यही सुना—'गो एहेड'—आगे बढ़ो ।"

—५/एफ, नाज सिनेमा, बंबई

कहानी

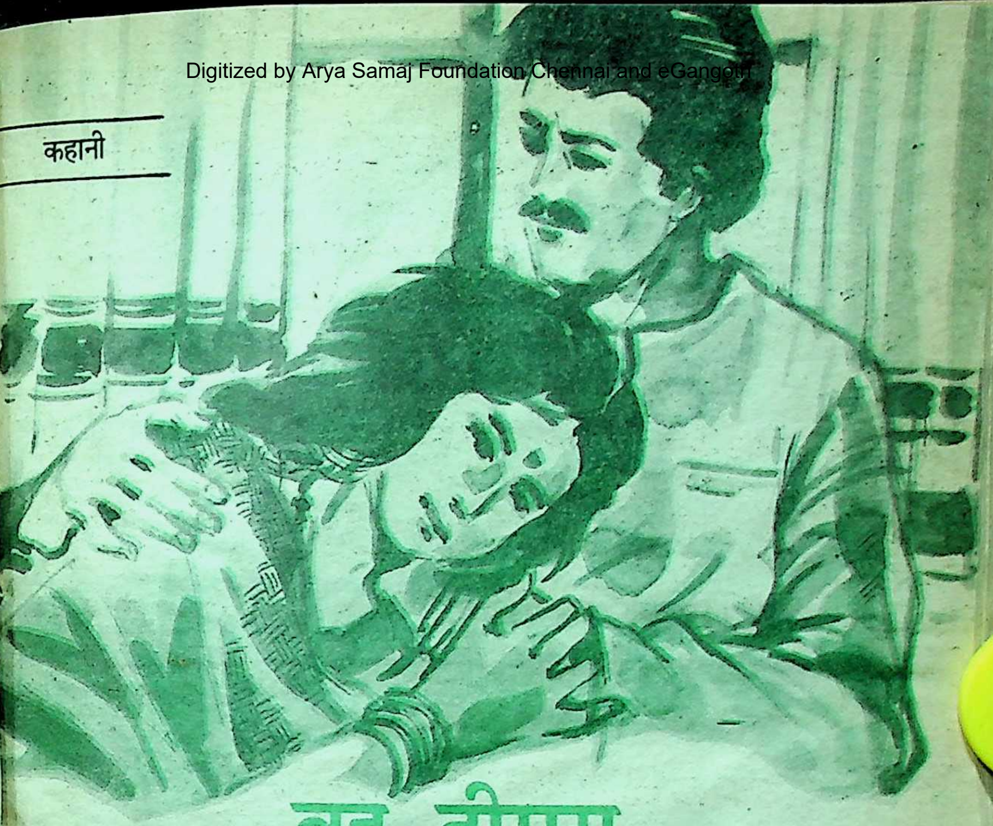

वह तीसरा

● अनिता अनिलाभ

अब वो मेरे लिए पहले जैसी नहीं रही थी । वह मुझसे स्वतंत्र और शायद, छिटककर बहुत दूर हो गयी थी । जब उसे मेरी जरूरत नहीं रह गयी थी, तो फिर बीच में क्या था ? मात्र औपचारिकता या कुछ और अस्पष्ट-सा । अब बाहर जो कुछ बचा-खुचा था भी, तो ठीक विपरीत भीतर था । उसके और अपने बीच बढ़ आये फासलों को शायद, महसूस भी किया था हमने । पर सब क्रिया-प्रतिक्रिया भीतरी सतह पर थी । और बाहर...कुछ पहले से ढीला, सुस्त और ठंडा था, पर था कुछ अवशेष-सा या फिर एक दरार जो धीरे-धीरे खड्ड का रूप ले रही थी । खिसकती जमीन या ऐसा दलदल, जहां कम से कम मैं खड़ी नहीं हो पा रही थी । फिर ऐसा क्या हो गया था हमारे बीच ? उस तीसरे का प्रवेश ही था, जिसे वर्षों से हम नकारते रहे थे ।

हम दोनों ने ही कभी किसी तीसरे को अपने बीच महत्व नहीं दिया था । शायद, हमें जरूरत ही नहीं थी । बल्कि, कभी कोई अचानक हमारे बीच आ भी जाता, तो हम बड़ी सफाई से उससे छिटक जाया करते । कभी किसी पार्टी या

हम दोनों ने ही कभी तीसरे को अपने बीच महत्व नहीं दिया था । शायद, हमें जरूरत ही नहीं थी । बल्कि, कभी कोई अचानक हमारे बीच आ भी जाता, तो हम बड़ी सफाई से उससे छिटक जाया करते । लेकिन फिर एक दिन हमारे बीच वह तीसरा आ ही गया...

गेदरिंग में मिलते तो बाद में बस स्टॉप, सड़क के किनारे, टूटी पुलिया या किसी बंद दुकान के आगे की दो-तीन सीढ़ियों पर एक-दूसरे से सटकर बैठकर बतियाना आवश्यक हो जाता था । मुलाकात शुरू होते ही अगली बार मिलने का कार्यक्रम बनाना आदत बन चुकी थी मेरी, जिस पर वह बहुत खिलखिलाकर हंसती, पर मैं अपनी असुरक्षा का भय मिटाकर निश्चिंत हो जाना चाहती थी । कभी-कभार अति आवेग से बहती करुणा और उससे मिली पीड़ा को, वे अपनी डाट में घुले सशक्त शब्द देकर मुझे बचा लेतीं ।

मेरे जीवन के इंपॉर्टेंट संबंध कभी भी उसके आगे इंपॉर्टेंट नहीं हो पाते थे । मेरे जीवन और हृदय में उसके लिए एक सुरक्षित स्थान था । हुआ था ऐसे भी, जैसा कि होता है जीवन में । मेरा कोई अपना, जो हम दोनों के बीच तीसरा था, वो तीसरा नहीं होना चाहता था । उसने बहुत चाहा कि वो और मैं 'हम दोनों' हो जाएं, पर मुझे स्वीकार न था । बहुत तड़फाया उसने मुझे, बड़ी पीड़ा दी, पर वह तीसरा ही रहा । फिर छूट गया वह और मैं कसकती टूटती रह गयी । और मेरा वह जो सुरक्षित संबंध था, उसी के आंचल में जा छिपी थी । हम दोनों वैसे ही रहे, लिपटते, रोते, हंसते, मिलते । कसक, पीड़ा, प्रेम, मिलन सब मिला-जुला था । जीवन चल रहा था, जैसे सबका चलता है, मिलन और बिछुड़ने के साथ-साथ ।

फिर कोई तीसरा था हमारे बीच या यूं कहें कि अब उसके साथ । सुखद थीं सब मिलन की घटनाएं, पहलू, आदान-प्रदान । हम दो अब तीन में बंट गये थे । शनैः-शनैः 'मैं' लुप्त हो रही थी । उसकी और मेरी पहचान में अब वो तीसरा पहचाने जाने लगा था । ये 'मैं' का अस्तित्व भी नये-पुराने खेल खेलता है । यदि मैं उस तीसरे को उसी के स्थान पर रखती, तो वह आगे बढ़कर उसे खींचकर हम दोनों के बीच ला खड़ा करती । उसका उसके लिए महत्व मेरे और उसके बीच फासला बनाने लगा था । मेरी करुणा कभी-कभी अपमान बन जाती । उनका व्यवहार मेरे भीतर कसक पैदाकर उस पुराने तीसरे को याद कर लेता, जिसे मैं, 'हम दोनों' नहीं बना पायी । क्योंकि, वो तीसरा अब मेरा न था, उसका था मैं एक अनजानी आग में जल रही थी, जिसकी तपिश उस तीसरे के लिए नहीं बल्कि, उस खिसकती जमीन के लिए थी, जो 'हम दोनों' के लिए पाट बन रही थी ।

चलती थी मैं उनके साथ, उन तमाम रास्तों पर, जो मेरे लिए अंगार बन चुके थे । पर उन दोनों की मुसकराहट मेरे तलवों के छालों पर

मरहम रखती थी । उनके साथ उन्हीं पेड़ों की छांह से गुजरते हुए, सुलगते हृदय के ताप को मैं भीतर समेट लेती । मेरे भीतर की चीख कहीं आर्त बनकर मुखर न हो, इस कारण कई बार मौन रहती । भीतर पनपते घावों पर मरहम रखते-सहलाते, मैं इतना डूब जाती कि बाहर आना मुश्किल हो जाता । क्यों मेरा इतिहास बनता जा रहा था कि सभी संबंध टूटकर खून से लथपथ हो गये ?

कभी पेड़ों के नीचे, कभी रेस्तरां में या कभी किसी बाग में टहलते-बतियाते मैं अचानक कहीं दूर रह जाती थी । मन को फिर वहीं लाने के लिए झटपट मैं कुछ शब्द देकर उसे फिर सक्रित कर देती । दोनों के वार्तालाप के असंख्य शब्द मुझे गहरे भावों तक जाने से बचा लेते । विचारों की नदी का प्रवाह लगता और मैं पर्त दर पर्त छिपी-दबी रह जाती ।

विडंबना, अकेलापन जब भी धाक जमाने लगता, तब भी मैं उससे पहले की तरह मिलना नहीं चाहती थी । और कभी मिलती भी, अकेलापन बांटने लगती, तो अपने ही शब्द मुझे खोखले लगने लगते । और लगता कि अब शायद, इन शब्दों को वह नहीं समझ पायेगी । मैं ही अकेली रह गयी थी, सब अपनों के बीच । मैं जानती थी प्रेमियों की दो की वृत्ति को । दो ही में वह पूरा और पर्याप्त है । वही दुनिया होती है उसकी । और 'तीसरा' तो भीड़ होती है, जिसकी तरफ दो प्रेमियों की पीठ होती है, उपेक्षा होती है । लेकिन अब मैं वही 'तीसरा' थी, भीड़ थी । गहरा धक्का था मेरे प्रेम को, स्वाभिमान को । अब इनमें मेरी कोई दुनिया नहीं नही थी । फिर टूट से टूटी थी मैं । जिन-जिन संबंधों को पहले बड़ी उन्मुक्नता से पीछे छोड़ आयी थी, वहीं-वहीं लौटकर जोड़ रही थी । पर समय बहुत जल्दी महत्व को बेमतलब कर देता है । गहरी खायी, जिसे पाटने की क्षमता अब मुझमें नहीं थी ।

घटनाओं पर घटनाएं तो वही होती हैं, जो होती आयी है सदियों से । कुछ नया तो होता नहीं । संबंध बनते हैं, बिखरते हैं । एक दफे टूटने की पीड़ा भोगकर भी पुनरुक्ति करते हैं । कहीं प्रेम हो जाता है, तो कभी प्रेम साधना

पड़ता है । कहीं सरलता होती है, तो कहीं पाखंड । मेरा हताहत स्वाभिमान विचारों से भरा पड़ा था, वरना जीवन तो सादा, सरल ही है । जीवन और विचार के बीच पड़ी दीवार के पार तो कोई पीड़ा नहीं है । आखिर, विचारों के बोझ लेकर मैं कब तक चलूं ।

मेरी चेतना के आकाश पर यह कोई पहला संबंध नहीं था, जो बिखरा न हो । फिर भी हर बार की तरह मैं इस संबंध को बचाना चाह रही थी । पहले के संबंध, उनसे जुड़ापन, जब एक-दूसरे के लिए मरने को तैयार होते हैं, फिर अलगाव की मूढ़ता । जब वही चुकता हो गये, तब इन्हें क्यूं पकड़कर बैठूं । संबंध तो एक बादल की तरह हैं, जो एक धुंआ है । आकाश वहीं रहेगा, लेकिन मेरी पकड़ वहीं की वहीं है । अपने को मजबूत करने के लिए तब शब्दों का ही सहारा लेना पड़ता है, जब सब संबंध फीके और बेमाने हो जाते हैं ।

कभी-कभी लगता है, मैं उन दोनों के बीच 'बेचारी' बन गयी हूं । यूं ही चल रही हूं उनके साथ । यही भाव चलते-चलते मुझे उनसे दूर कर देता और मैं फिर मौन हो जाती । क्योंकि, अब मैं पूरी तरह से 'वो तीसरा' बन गयी थी । अपनी इस उपेक्षा व आरोपित महत्तावाली स्थिति को भीतर जड़ें देकर जमीन नहीं बनने देना चाहती थी मैं । यह जमीन जड़ पकड़कर मेरा संसार मिटाने को काफी थी ।

बहुत पीछे लौट-लौटकर घूम आयी थी । होश संभालने से लेकर अब तक के, अपने-परायों के चेहरे, मिलने-बिछुड़ने की घटनाएं, अवसर से अवसाद तक की यात्राएं— सभी छूट गयी थीं । सभी नये प्रेम पुराने हो जाते हैं । स्थिरता जड़ता लाती है । इसलिए नया पुराना होता है, जीवन के लिए, नूतनता के लिए । इस तथ्य को स्वीकारना होगा कि प्रथम सदैव प्रथम नहीं रहता । इसे खिसकना होता है धीरे-धीरे दूसरे पर, फिर तीसरे पर, और इसी तरह लुप्त हो जाता है अपना पूरा अस्तित्व ।

गहन पीड़ा भोगकर कभी-कभी हम निखर जाते हैं, बिलकुल नये जन्म लेते हैं, बच्चे की तरह ।

अब भी हम तीनों बतियाते टहलते हैं । पेड़ों की छांह, रेस्तरां या बाग में । एक साथ चलना नहीं छोड़ा था हमने । चलते-चलते, भीतर ही भीतर, बहुत दूर तक यात्रा कर मैं लौट भी आयी थी, पूरा अतीत,वर्तमान घूमकर । फिर भविष्य की असुरक्षा का अब भय नहीं रहा था । मेरे जाने व लौटने का उन्हें पता भी न चला था । फिर भी हम साथ-साथ चलते रहे, कुछ निकटता, कुछ दूरी लिये या यूं कह लूं कि वो दो निकट थे और मैं कुछ दूरी पर अकेली खड़ी थी । निसहाय, बेचारी या 'वो तीसरा' बनकर नहीं, सशक्त परिपूर्ण-सी, एक अकेला प्रथम बनकर ।

—१६८, डबल स्टोरी, न्यू राजेंद्र नगर,
नयी दिल्ली-११००६०

गुजर रहा है तो आंखें बचा के यूं न गुजर
गलत बयां भी बहुत राह-गुजर में होते हैं
— अजीज हामिद मदनी

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।

— संपादक

१. **वह**— कौन-सा सूर्यवंशी राजा था जिसके साठ हजार पुत्र हुए थे, जो कपिल मुनि पर चोरी का लांछन लगाने के कारण उनके क्रोधानल से भस्म हो गये थे, फिर भगीरथ ने गंगा का प्रवाह कर उनका उद्धार किया था ?

२. क. **पानीपत**— का प्रथम युद्ध कब और किस-किसके बीच हुआ था ?

ख.— उसका क्या परिणाम हुआ था ?

३. क. **पृथ्वी**—पर सबसे पुराना वृक्ष कहां और कब पाया गया है ?

ख.— इससे पहले दुनिया की सबसे पुरानी जीवित वनस्पति कहां मिली थी ?

४. क. **अगली**— शताब्दी में चिकित्सा-क्षेत्र में कौन-सा क्रांतिकारी परिवर्तन होने की संभावना है ?

ख.— शरीर की कोशिकाओं की मूल इकाई क्या है, जो जीव-जंतुओं के आनुवांशिकी गुणों का निर्धारण करती है ?

५. क. **दक्षिण**— ध्रुव अकेले पहुंचने में किस एकमात्र महिला ने कीर्तिमान स्थापित किया है ?

ख.— भारत का कौन-सा अभियान-दल अंटार्कटिका पहुंचा है ? इस दल का नेतृत्व कौन कर रहे हैं ?

६. क. **सुरक्षा**— परिषद के नये अस्थायी सदस्य कौन चुने गये हैं ?

ख.— उन्होंने कितना स्थान ग्रहण किया है ?

७. **भारत**— का विदेशी ऋण अब तक सर्वाधिक कितना और कब हुआ है ?

८. **निम्नलिखित**— पुरस्कार किसे मिले हैं ?

क.— म. गांधी शांति पुर. (१९९४)— नेशनल फेडेरेशन ऑव अमरीकन एसोसिएशन द्वारा स्थापित ।

ख.— इंदिरा गांधी शांति, निशस्त्रीकरण तथा विकास पुर. (१९९४),

ग.— सामाजिक सेवाओं के लिए इंदिरा गांधी पुर. (१९९३-९४)

९. क. **आस्ट्रेलियाई** ओपन टेनिस चैंपियनशिप का महिला एकल ग्रांड स्लैब खिताब किसने जीता है, किसको हराकर ?

ख.— उपर्युक्त टूर्नामेंट में पुरुष एकल ग्रांड स्लैब खिताब किसने जीता है ?

१०. **हाल**— में सबसे कम उम्र की किस भारतीय बालिका ने लंबी समुद्री तैराकी में नाम कमाया है ?

११. **नीचे**— दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

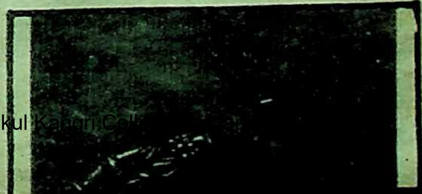

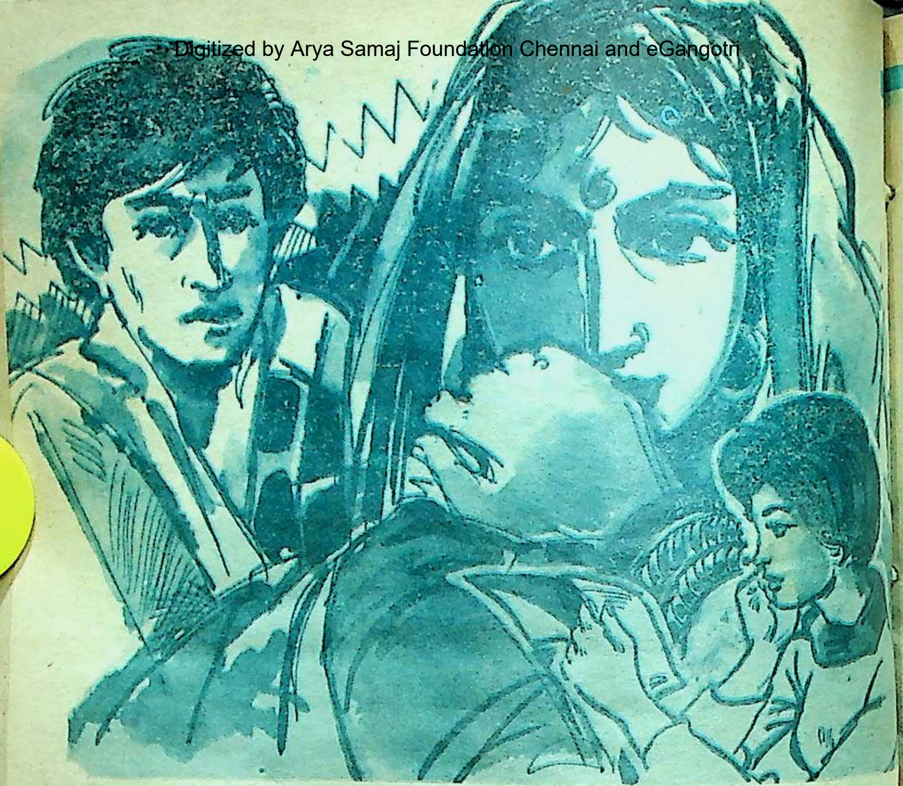

अधिकार

● बाला शर्मा

अस्पताल की कई मंजिली ऊंची बिल्डिंग अपनी जगह स्थिर खड़ी थी । दरवाजे पर संतरी भारी-भारी बूटों को उठाता कभी चहलकदमी करता और कभी इधर-उधर बैठकर बीड़ी फूंकता रहता । अभी दो-चार घंटे में ही कई 'इमरजैंसी केस' आये हैं । ''पता नहीं आजकल के छोकरों को क्या हो गया है । मोटर चलाएंगे ओवर स्पीड ! फिर हाथ-पैर तोड़कर यहां चले आते हैं ।'' जमादार तेजी से बोले जा रहा था ।

''जमादारजी हमें दस मिनट के लिए आने दो न....अंदर ।''

''नईं साब...बड़ा डॉक्टरसाब भोत गुस्सा करेगा... ।'' संतरी को किसी को भी अंदर आने देने का अधिकार नहीं है ।

वे दोनों स्त्री-पुरुष जो शायद पति-पत्नी ही थे, गेट के बाहर ही घूमते रहे । स्त्री कभी-कभी बहुत अधीर होकर गेट तक चली आती कि शायद आंख बचाकर अंदर पहुंच जाए किंतु उसकी कोई भी तरकीब काम नहीं आ रही थी ।

कपड़े पहनावे से वो अभिजात्य वर्ग के ही लग रहे हैं । स्त्री ने कढ़ा हुआ कश्मीरी शाल

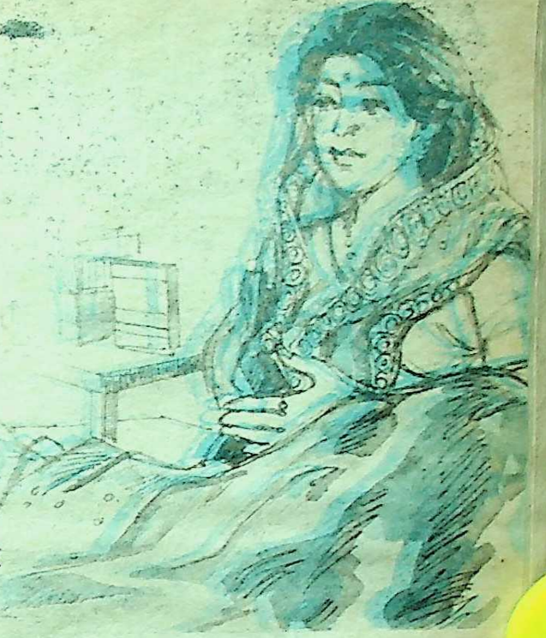

और सादी सिल्क की साड़ी और सादी चप्पलें पहनी हैं । पुरुष ने बंद गले का चैकदार कोट और वर्स्टेड की पतूलन पहनी हुई है । जिसका रंग कहीं-कहीं से उड़ गया है पर इस सबसे बेखबर वह लगातार फर्श पर चलता जा रहा है कि किसी प्रकार अपने बेटे तक पहुंच सके... ।

"मैंने तुमसे पहले ही कहा था न आने को पर जब जिद चढ़ती है तो तुम मानती ही नहीं हो ।" पुरुष के अधिकारपूर्ण स्वर से पता चलता है कि वे उस स्त्री के पति हैं । बदले में भीगी आंखें उठाकर स्त्री ने बहुत दयनीय दृष्टि से उन्हें देखा तो आगे बोलना पुरुष के लिए कठिन हो गया था ।

किसी प्रकार संतरी की अनुमति हो तो अंदर जाना संभव हो । केवल आधा घंटा अंदर गुजारने के लिए वे दो घंटे तक उसकी अनुनय-विनय करते रहे थे ।

साफ लंबे गलियारे के फर्श पर केवल नर्सों के चलने की आवाज सुनायी पड़ रही थी टक, टक, टक । कमरों के दरवाजों पर लटके परदे तनिक ऊंचे हैं सो अंदर पलंग, स्टूल, रोगी के इस्तेमाल करने की सब वस्तुएं नजर आ रही हैं । बड़े हॉल में कतार लगाकर पलंग बिछा दिये गये हैं । हर बिस्तर पर—जैसे मौत की उदासी फैली हो, हर प्राणी—जैसे जूझ रहा है । जिंदगी के लिए तड़प रहा है । बुत बना सिमटकर लेटा हुआ है । यहां चोट खाये एक्सीडैंटवाले रोगी डाले हुए हैं । अधिकतर नींद की दवा लेकर रोगी बेहोशी में गर्क, आज की स्थिति से बेखबर नींद में डूबे हुए हैं । न घर

"मां...मां... कहां थी अब तक ? क्यों नहीं...क्यों नहीं, तुमने यह सब पहले दिया जिसका कि मैं हकदार था । क्यों भुला बैठी ममता का अधिकार ? क्यों दबा दिया उसे शिष्टता की परतों में ? क्यों भला ?..." स्वर हिचकियों में डूबता गया ।

वह मां की गोद में पहली बार सुख की सांस ले रहा था । अब किसी साये की तलाश नहीं थी, उसे । उसे अपना अधिकार मिल गया था ।

की चिंता न कमाने जाने की झंझट ।

उसका बेटा भी पलंग पर अस्त-व्यस्त पड़ा है । हाथ-पांव पट्टियों की सफेदी से ढके हुए । नंगी छाती पर पहियों ने ताना-बाना बुनकर रख दिया है । वह स्त्री देखकर ही फफक उठती है ।

"शी...ई...ई..., नर्स ने होंठों पर अंगुली रख इशारा किया तो मां ने कंठ में ही रुलाई घुटक ली । बेटे का चेहरा देखकर ही उसका दिल बैठने लगा है... ।

कमरे के दरवाजे के बाहर ही केले के गाछ-सी कोमल कमसिन एक और नारी देह बैठी है... । शायद नर्स ने इसे भी अंदर जाने की इजाजत नहीं दी है और वापस वह लौटकर भी नहीं जाना चाहती होगी । तभी न एकटक, दूर से ही सही रोगी का चेहरा निहारती जा रही है । कलेजे में उठी हूक उसने हाथ से पकड़कर दबा ली है ।

दो नारी...दो समय... । एक बीत चुका । दूसरा अभी प्रारंभ हो रहा है...आंसुओं का सैलाब, प्रेम का दरिया, प्यार का लबरेज प्याला सब कुछ वैसा ही, केवल समय बदला है । "मैं...मैं...इनके साथ..." लड़की ने मिमियाकर कहा ।

"हां...हां...मुझे पता है तुम इसके साथ पढ़ती हो..."

"जी...ई...ई..." लड़की को आश्चर्य हो रहा है । उसने अपनी बहूटी-सी लाल आंखें मां के चेहरे पर टिका दीं... कि— जैसे पूछ रही हों "कि आपने मेरा अपराध क्षमा कर दिया क्या ?"

स्त्री स्वयं चलकर उसके पास तक आयी और दोनों कंधों से पकड़कर कलेजे से ल लिया । लड़की अभी तक कांप रही थी । से अथवा भय से यह पता नहीं चल रहा के मन में तो ममत्व ठांठे मार रही थी । ल प्यार के हिंडोले में पेंगे ले रही थी । दोनों किनारा ढूंढ़ रही थीं । जो हाथ से छूट छूट रहा था ।

सहसा रोगी ने आंखें उघाड़ीं और फि अनपहचानी पुतलियां बारी-बारी से सबके चेहरों पर घूमती रहीं । फिर घूमकर छत की ओर स्थिर हो गयीं और नयन मूंद लिए तो द स्त्रियों के हृदय की धड़कन जैसे थम गयी

"मेरा नरेन अच्छा हो जाए तो सवा मन हनुमानजी पर चढ़ाऊंगी ।" मां ने आकाश दृष्टि टिकाते मनौती मांगी ।

"हां नरेन ठीक हो जाए तो बड़े पीरजी की चादर चढ़ाऊंगी" लड़की ने दुआ की ।

मां ने चौंककर लड़की की तरफ देखा । लड़की ने पलटकर निगाहें झुका लीं । वहां हिंदुत्व कान खड़े किये खड़ा था । उधर मुसलमानी खून रगों में डोल रहा था । दोनों नजर उठाकर देखा । निगाहें टकरायीं । अजनबी-सी अनपहचान उभरी । फिर धी सोच की परत टूटती गयी । एक नारी की वे दूसरी ने पढ़ी...कि "हां वह मेरा बेटा है... ।"

"कि हां वह मेरा होनेवाला शौहर है" हिंदुत्व लड़खड़ा गया, मुसलमान पलट गया...वहां तो केवल मां और पत्नी अपने ने इरादों के साथ खड़ी थीं ।

"क्या तुम मुझे स्वीकार करोगी ?" एक पत्नी बननेवाली थी भविष्य के प्रति आश्च

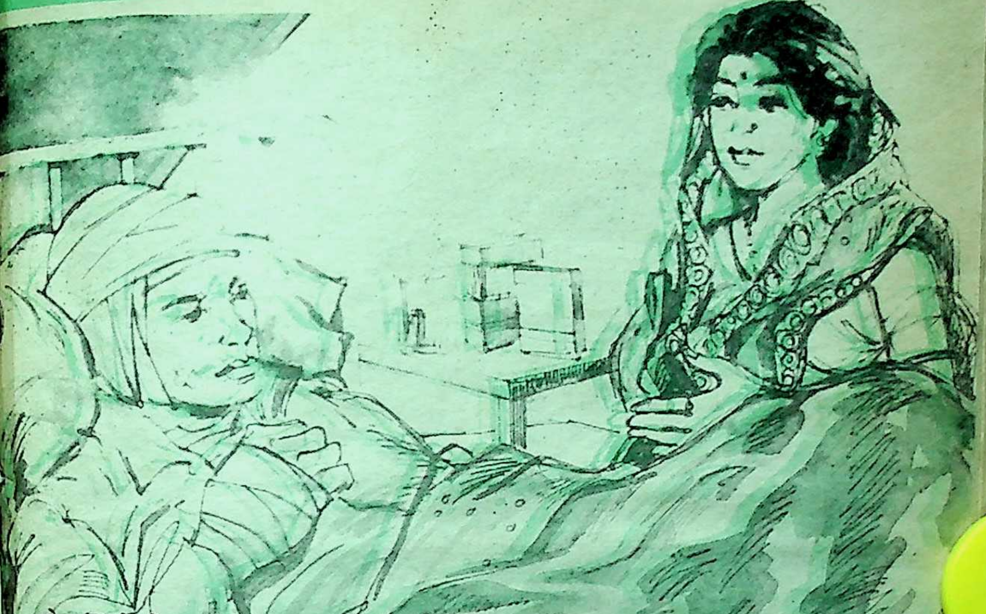

होना चाहती थी ।

"क्या तुम भरपूर प्यार, पूरा सुख, उतना अपनापन हमें दे सकोगी ?" मां आशंकित थी । प्यार सर उठाकर बोल रहा था । ममता सब कुछ स्वयं में समो लेने को उत्सुक थी । एक ने दूसरे से समझौता कर लिया था । "मुझे तो नरेन ने बताया कि उसके कोई मां-बाप हैं ही नहीं ।" लड़की ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों में प्रश्न भरकर पूछा । जब वे रात में एक ही छत के नीचे आराम कर रही थीं ।

"सच ही कहा उसने । मैं मां कहां हूं ? मां बनने का फर्ज मैंने कब अदा किया ? मां ने तड़पकर कहा तो उसके होंठ थरथरा उठे ।

"यूं पहेलियां न बुझाइए..." लड़की कुछ तुर्श आवाज में पूछ बैठी । "हां सही कह रही हूं । नरेन को जन्म दिया, बस इतनी ही गुनहगार हूं । मैं तो उस दुधमुंहे को ही छोड़ गयी थी । फिर किसने दूध की बूंद उसके होंठों में [illegible] कुछ नहीं मालूम ।"

लड़की भय से पीली पड़ गयी । कहीं वही कहानी फिर से न दोहरायी जाए । नहीं ! नहीं ! उसका नरेन ऐसा नहीं । नरेन की औलाद के साथ ऐसा सब नहीं होगा । औरत उस लड़की की चिंता भांप गयी । घृणा की एक तीव्र लहर न चाहते हुए भी उसके शरीर में दौड़ गयी, सब कुछ समझकर पति से बाद में गुपचुप कोई समझौता हुआ । दो दिन बाद ही पति-पत्नी गांव वापस चले गये । नरेन की मां को उसके पति ने क्षमा कर दिया था । उसकी सारी भूल के साथ ही उसने उसे स्वीकारा था । समाज की बंधी-बंधायी लकीर को तोड़ा था उसने । कंवारी मां बनने का जो अपराध उससे हुआ था सो समाज से बहिष्कृत थी वो । उससे विवाह करने के [illegible] उसके पति को भी दंड भोगना पड़ा था ।

"उसके पिता के धन की थैली ने ही इसकी आंख पर पट्टी बांध रक्खी है ।"

"न जाने कब तक बंधी है ? चिड़िया उड़ते दोबारा क्या देर लगती है ।"

मगर चिड़िया नहीं उड़ी । न ही उसके पिता की दी गयी धन की थैली ही वहां स्वीकार की गयी । मनुष्यता अपने पूर्ण सौजन्य से साकार हुई थी । किसी ने भी उसे नहीं स्वीकारा था । नरेन उनका गोद लिया बेटा था । स्वयं की नजरों में । मां को नहीं चीन्हता । पिता स्वयं का बेटा न होने पर भी सारे फर्ज अदा करते हैं । नरेन को वैसे मां-बाप दोनों का भरपूर प्यार, मिला था । इज्जत थी । आराम था किंतु लज्जा की जो एक विवशता थी उसे क्या कहें ? कभी कोई प्रश्न अंगारे-सा उछलता...कि "कौन है मेरा जनक ? क्यों छोड़ गया ? ...क्यों हुआ वह सब ? क्यों मां की मूरत घृणा में बदल जाती ?

न चाहते हुए भी दो-चार वाक्य निकल जाते ।

"नरेन क्लास में 'फर्स्ट' आया ।

"नरेन ने 'डिबेट' में 'शील्ड' जीती ।

"नरेन ने तैराकी की प्रतियोगिता जीत ली ।"

इन सब के समाचार उसकी मां और उसके तथाकथित पिता को उसके मित्रों द्वारा ही मिल पाते । न ही वह कभी झूमता हुआ अकड़कर मां को दिखाने आया । न ही वह कभी हुलसकर उसे छाती से लगा पायी थी ।

नरेन से कुछ बता पाने का साहस नहीं था... । नदी बांध तोड़कर जब बहती है तो न जाने कितनों को बहा ले जाती है ? कितने घर उजाड़कर रख देती है ? तब भी यही हुआ था । नदी में तूफान आया था । धर्म का तूफान । कौम को फतह करने का तूफान । के पिता उन सब में चट्टान बन जाने को आतु

फिर एक दिन तूफान थम गया । बाकी गयी सूखी रेत । सीपियां । टूटे घरोंदों के अवशेष । नरेन के पिता भी थे उन्हीं में । वे किन्हीं शख्स को बचाने गये थे, कि गली के नुक्कड़ पर कौम आड़े आ गयी । धर्म बेनका हो गया । वे हिंदू थे और ये शख्स दूसरी कौ के । पर जब सब कुछ स्वाहा हो गया । तब एक जज्बा बाकी था । वह "इनसानियत का जज्बा था । ...वह बाकी था । अभी इन्होंने द तोड़ती आत्मा को कौल दिया था कि जो उस बीज कहीं पनप रहा है उसे जिंदगी बख्शेंगे । इस पौधे को सींचकर बड़ा करेंगे । पिता का प्यार देंगे...धर्म का छत्र छवाएंगे । भले ही...भले ही उन्हें अपना धर्म गंवाना पड़े । फि बशीर से बृजलाल बनने की कहानी बहुत टेढ़ी है । वहां मुल्ला आड़े आये थे । पंडितों ने हुंकारे भरे थे । घंटे-अजान गड़गड़ाये थे । प जो कौल दिया था उसका निभाना तो उन सब ऊपर था ।

नरेन के घाव भरते गये । रूना ने बहुत सेवा की उसकी । वहां मां-बाप गांव में उसके इंतजार में तड़पते रहे कि अब बेटा उन्हें वह सुख नसीब कराएगा जो कि उन्हें स्वयं को नसीब नहीं हुआ ।

रूना कॉलेज से सीधे नरेन के कमरे पर चली आती । स्टोव की सूं...सूं में भविष्य के गीत गुनगुनाते हुए सारा काम कर डालती । नरेन को वह सारा सुख, सारा आराम जो बाह

के बाद मिलनेवाला था पहले ही मिलने लगा। रूना के होंठों पर गुलाब खिलते, उसकी मांग मोतियों से पुरी रहती। लेकिन वहां भी किंतु-परंतु लगने लगी थी।

उसने अपनी मम्मी से कहना चाहा पर साहस नहीं हुआ...उसके पापा को क्लब से, ब्रिज पार्टी से ही फुरसत नहीं थी। नौकरों, ड्राइवर और माली की भीड़ में उसके घर में कोई बात चुपके से नहीं हो पाती थी। वहां गहरा भूचाल आ जाने का भय था। रूना गले-गले तक भय से घिरी रहती।

बस एक ही किनारा था। आस की डोर कहीं और बंधी थी। मां के दर्शन उसे कहीं और हुए थे। सुकून की परछाइयां कहीं और दिखी थीं। थरथराते हाथों और धड़कते दिल से उसने वह शुभ-सूचना उन्हें लिख भेजी जो कि नरेन से ब्याह हो जाने के बाद उन्हें मिलनेवाली थी।

पिता तटस्थ रहे। एक शब्द भी नहीं बोल पाये। शायद जो कष्ट जिंदगीभर भोगा था उसकी पुनरावृत्ति से डर गये थे। पर मां का कलेजा डोल गया। एक हौल उसके दिल में समा गयी सो तुरंत ही शहर जाने की तैयारी कर ली।

नरेन को आशंका थी उनके आने की। रूना ने जब से चिट्ठी लिखने की बात उसे बतायी थी वह बहुत चौकन्ना हो उठा था। उसने रूना को इसके लिए क्षमा नहीं किया था। कायरता नहीं स्वार्थ ही उस पर हावी हो उठा था।

प्यार के ज्वार में जो गुलाब भविष्य की उम्मीद लिए नरेन ने उसके जीवन में महका दिये थे, अब वह उन्हें कांटा मानने को भी तैयार नहीं था। वह तो सारा दोष, सारा कलंक रूना पर थोप पल्ला झाड़ अलग हो जाना चाहता था। मां को अब ये सब सहन करने की सामर्थ्य नहीं रही थी। जो कुछ वे स्वयं जीवनभर सहन करती रहीं वह फिर से दोहराया जाए। नहीं, बिल्कुल नहीं। जो उन्हें बहुत पहले करना चाहिए था। वही हुआ।

एक झन्नाटेदार थप्पड़ नरेन के गाल पर लगा तो सारा कमरा डोल गया हो—जैसे। नरेन के पिता चमककर खड़े हो गये। रूना अपना रोना भूल आंखें फाड़-फाड़कर देख रही थी। अपने से दो हाथ ऊंचे बेटे के गाल पर मां ने पांचों अंगुलियों के निशान बना दिये थे। नरेन बिलखकर रो उठा।

"मां...मां... कहां थी अब तक ? क्यों नहीं...क्यों नहीं, तुमने यह सब पहले दिया जिसका कि मैं हकदार था। क्यों भुला बैठी ममता का अधिकार ? क्यों दबा दिया उसे शिष्टता की परतों में ? क्यों भला ?..." स्वर हिचकियों में डूबता गया।

वह मां की गोद में पहली बार सुख की सांस ले रहा था। अब किसी साये की तलाश नहीं थी, उसे। उसे अपना अधिकार मिल गया था।

—७३, बनारसी दास स्टेट, लखनऊ रोड
दिल्ली-११००५४

सर्वे पदस्थस्य भवन्ति मित्रा : ।

गरुड़ पुराण ९/१०९/७)

पद पर बैठे हुए व्यक्ति के सभी मित्र होते हैं।

सफरनामा दियासलाई का

● कैलाश जैन

आग की खोज मानव-सभ्यता के इतिहास की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण खोज थी। आदिमानव द्वारा दो पत्थरों की रगड़ से पैदा की गयी चिंगारी आज लाइटर के सिरे पर लौ बनकर भले ही आ गयी हो, लेकिन उस 'चिंगारी' और इस 'लौ' के दरम्यान के लंबे सफर में और भी मुकाम हैं, जो आज भी आम आदमी के लिए 'आग' हासिल करने के सबसे सस्ते और सुलभ साधन हैं। जी हां, बात उस दियासलाई की नन्हीं-सी डिबिया की है, जो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी की पहली जरूरत है।

तीलियों से भरी यह छोटी-सी जादुई डिबिया आज भले ही हमें अत्यंत साधारण और सर्व सुलभ वस्तु की तरह लगती हो, लेकिन इसकी उपयोगिता की दृष्टि से हमें इसका महत्त्व तब पता चलता है, जब जरूरत के समय माचिस की डिबिया नहीं मिलती। बहरहाल, जब हम दियासलाई के आविष्कार की अंतर्कथा जानना चाहते हैं, तो हमें पौने दो सौ साल पीछे चलना होगा।

आकस्मिक आविष्कार

ज्ञात जानकारी के अनुसार, सबसे पहले दियासलाई के आविष्कार का श्रेय इंगलैंड के एक व्यापारी जॉन वाल्कर को दिया जाता है, जिसने सन १८२७ में अनजाने में ही यह महत्त्वपूर्ण आविष्कार कर दिया। दरअसल वाल्कर रासायनिक द्रव्यों का विक्रेता था। एक दिन वह किसी रसायन का घोल तैयार करने के लिए एक छोटी-सी लकड़ी से उसे घोल रहा था। घोल तैयार होने के पश्चात वाल्कर ने उस लकड़ी को रख दिया और अपने दूसरे काम में लग गया। उधर रसायन का घोल उस लकड़ी के एक सिरे पर लगा रह गया तथा सूख गया। बाद में, जरूरत नहीं होने से उसने जब लकड़ी को फेंका तो वह एक पत्थर से कुछ गति से जा टकरायी और फक-फक की आवाज के साथ उस लकड़ी के सिरे से धुआं निकलने लगा। वाल्कर यह देखकर चौंक उठा। वास्तव में लकड़ी पर लगे रसायन के पत्थर पर रगड़ खाने से ही यह आग उत्पन्न हुई थी। फिर तो वाल्कर निरंतर प्रयोगों में जुट गया और जल्दी ही उसने लकड़ी की नन्ही तीलियों पर रासायनिक घोल लगाकर उसे रेगमाल के कागज पर रगड़कर

आग उत्पन्न करने का तरीका ढूंढ़ निकाला । यह सन १८२७ की घटना है । इसके बाद वाल्कर ने अपनी इस खोज को व्यावसायिक स्वरूप प्रदान करते हुए छोटी-छोटी डिब्बियों में तीलियां भरकर बेचना शुरू कर दिया । वह इन तीलियों को जलाने के लिए हर डिब्बी के साथ रेगमाल का छोटा-सा टुकड़ा भी रखता था । वाल्कर लकड़ी की तीलियों के सिरे पर गोंद, स्टार्च, एंटीमनी सल्फाइड तथा पोटेशियम क्लोरेट से बना घोल लगाकर सुखाता था ।

हालांकि यह तरीका बहुत अधिक साफ-सुथरा और सुविधाजनक नहीं था । फिर भी लोगों ने वाल्कर की इस खोज का उत्साहजनक स्वागत किया । सन १८३१ में लंदन के एक व्यावसायी ने दियासलाई की तीलियों में पीला फास्फोरस मिलाकर दियासलाई बनायी । इस दियासलाई में अलग-से रेगमाल का टुकड़ा रखने की परेशानी से बचने के लिए एक नयी तकनीक इस्तेमाल की गयी, अब दियासलाई की डिबिया के एक भाग पर ही थोड़ा-सा घोल लगा दिया जाता था, जिस पर रगड़कर तीली को आसानी से जलाया जा सकता था । इस दियासलाई की सबसे बड़ी खामी यह थी कि यह तनिक-सी रगड़ पर ही आग पकड़ लेती । ऐसी स्थिति में इसे जेब में रखना बहुत ही घातक और खतरनाक था ।

परिष्कृत और सुरक्षित स्वरूप

दियासलाई को सुरक्षित स्वरूप प्रदान करने की दिशा में स्वीडन के वैज्ञानिक ई. पाश्च ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया । सन १८४४ में उन्होंने जिस दियासलाई की खोज की, वह न केवल अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित थी, बल्कि ज्यादा सुविधाजनक भी थी । ई. पाश्च ने पीले फास्फोरस के स्थान पर लाल फास्फोरस के घोल को डिबिया के बगल में लगा दिया । इससे तीलियों के अचानक जल उठने का खतरा समाप्त हो गया । दियासलाई को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने का श्रेय ई. पाश्च को ही जाता है ।

कालांतर में दियासलाई की तीलियों तथा डिबिया में कई महत्त्वपूर्ण व जरूरी परिवर्तन और संशोधन होते रहे । इन परिवर्तनों ने दियासलाई को अधिक परिष्कृत करने के साथ-साथ सुविधाजनक और निरापद भी बनाया ।

भारत में प्रवेश

भारत में दियासलाई का प्रवेश यूरोपीय देशों के माध्यम से हुआ । प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व भारत, जापान और स्वीडन से प्रतिवर्ष डेढ़ करोड़ ग्रुस माचिस के बक्सों का आयात करता था । इस समय भारत में कुटीर उद्योग के रूप में दियासलाई के निर्माण के छुटपुट प्रयास जरूर हुए किंतु औद्योगिक उत्पादकों के मुकाबले छोटे निर्माता नहीं टिक सके । सन १९१६ में जब सरकार ने दियासलाई पर आयात-कर बढ़ाकर साढ़े सात प्रतिशत कर दिया, तो आयात में कमी आयी और स्वदेशी उद्योग-धंधा जड़ें जमाने लगा । सन १९३० तक भारतीय दियासलाई उद्योग इतना सक्षम हो गया कि वह संपूर्ण भारत तथा बर्मा की खपत पूरी करने लगा । इस उद्योग की आशातीत सफलता और मुनाफे को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने सन १९३४ में दियासलाई पर निर्माण-कर लगा

दियासलाई सचमुच एक बहुत ही उपयोगी और मौलिक आविष्कार है, जिसने मानव-सभ्यता के समक्ष कई नये क्षितिज, नये आयाम रोशन किये हैं ।

दिया । इसके पश्चात सात बरसों बाद इस टेक्स को दुगना कर दिया गया ।

प्रारंभ में दियासलाई-निर्माण हेतु कच्चा माल, मसलन लकड़ी, रसायन आदि बाहर से आयात किये जाते थे, किंतु बाद में डिब्बियों के निर्माण हेतु बंगाल, असम, उत्तर प्रदेश, मालाबार आदि के जंगलों से प्राप्त सेमल या सेवार की लकड़ियां प्रयुक्त की जाने लगीं । तीलियों के लिए चीड़ या सरई की लकड़ियां इस्तेमाल की जातीं ।

आज भारत दियासलाई के उत्पादन के क्षेत्र में पूर्णतः आत्म-निर्भर है और विदेशों को दियासलाई का निर्यात भी भारत कर रहा है । हमारे यहां दियासलाई का उत्पादन बीस करोड़ ग्रुस बक्स वार्षिक से भी अधिक है ।

बहुआयामी प्रक्रिया

दियासलाई के निर्माण की प्रक्रिया जटिल और बहु-आयामी है । सबसे पहले लकड़ी के गट्ठों को बिजली की मशीनों में उपयुक्त आकार में काटकर इनकी छाल उतारी जाती है । मशीनों द्वारा इसे अंदर की डिबिया और बाहर के खोल तैयार करने के लिए एक सरीखी बारीक परतों में काटा जाता है । इन पतली परतों को मशीनों द्वारा तैयार कर इन पर नीले रंग का पतला किंतु मजबूत कागज चिपकाया जाता है । इस प्रकार तैयार डिब्बियों पर रगड़नेवाले स्थान पर लाल सल्फर तथा के चूर्ण का मिश्रण सरेस से लगाया जात

छिलका उतारनेवाली मशीनों से तीलि एक समान कटाई की जाती है । कटाई के पश्चात एक विशेष मशीन में, जिसमें एक छिद्र-युक्त लंबा-सा पटरा लगा होता है, को भर दिया जाता है, जहां पोटाश, सल्फर, सरेस आदि रसायनों से बने तपे हुए पैराफि तीलियां डुबोयी जाती हैं । इसके बाद तीलि को भली प्रकार सुखाया जाता है और अन्य मशीन से उनके रसायन लगे सिरों को सख् किया जाता है ।

यह प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद स्वचालित मशीनों से तीलियों को तैयार कर डिब्बियों भरा जाता है । बाद में इन डिब्बियों पर लें आदि लगाने का कार्य किया जाता है ।

गुणवत्ता की दृष्टि से भारतीय दियासला ईरान, इराक, मध्यपूर्व तथा पश्चिमी अफ्रीका काफी लोकप्रिय हैं किंतु अब कई यूरोपीय देश भी इस दिशा में भारत से प्रतिस्पर्द्धा करने लगे हैं ।

दियासलाई सचमुच एक बहुत ही उपयो और मौलिक आविष्कार है, जिसने मानव-सभ्यता के समक्ष कई नये क्षितिज, न आयाम रोशन किये हैं ।

—३४, बंदारोड़, भवानीमंडी (रा

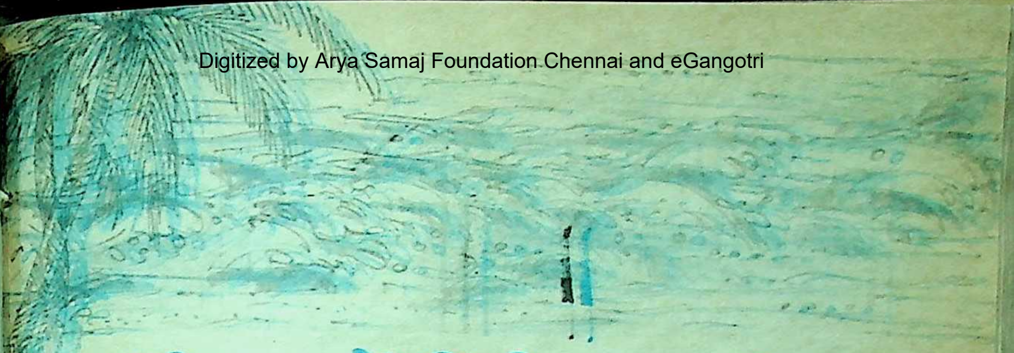

मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता

● प्रह्लाद रामशरण

तेरह अक्तूबर, १९०७ को जब मणिलाल डॉक्टर यहां आये तब मॉरीशस में फ्रेंच पत्रकारिता के एक सौ बयालीस वर्ष हो चुके थे और उस समय तक लगभग ३३६ पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हो चुकी थीं । इस द्वीप का प्रथम फ्रेंच समाचार पत्र सन १७७३ में प्रकाशित हुआ था और १८१० तक अर्थात फ्रेंच काल तक यहां फ्रेंच-पत्रों का प्रकाशन होता था, किंतु अंगरेजी प्रशासन की स्थापना के बाद, यहां पर अंगरेजी-पत्रों का प्रादुर्भाव एक स्वाभाविक प्रक्रिया थी । इसके ठीक सौ साल बाद, अर्थात सन १९१० में अंगरेजी-फ्रेंच प्रौढ़ पत्रकारिता के बीच हिंदी पत्रकारिता का उद्भव एक ऐतिहासिक घटना थी ।

मणिलाल डॉक्टर के आगमन के समय यहां अंगरेजी-फ्रेंच की २८ पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती थीं जिनमें आधे दर्जन दैनिक समाचार-पत्र थे । उस समय लगभग २३ पत्रकार इन पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े थे । मणिलाल डॉक्टर ने ऐसे प्रतिकूल परिवेश में हिंदी-पत्रकारिता शुरू करके एक विलक्षण कीर्तिमान स्थापित किया था ।

भारतीय स्वत्व की रक्षा

उनके आगमन के चंद महीनों बाद देश की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से एक शाही आयोग की मांग की जा रही थी । प्रवासी भारतीय इसके पक्ष में थे किंतु गोरे जमींदार और उद्योगपति नहीं । अतः शक्कर उद्योगपतियों के प्रबल समर्थक लेकलेजियो महोदय ने एक लेख में कहा था— 'विलायत की सरकार मॉरीशस को (अदन की तरह) भारत के साथ बांधना चाहती है, और तब मणिलाल डॉक्टर के समान भारतीय जज बंबई से आकर हमारे सुप्रीम कोर्ट में जज नियुक्त होंगे ।' यह लेख स्थानीय भारतीयों के लिए और मणिलाल डॉक्टर के प्रति व्यंग्यात्मक लेख था । मणिलाल डॉक्टर ने इसका उत्तर दिया था, किंतु गोरों का समाचार-पत्र 'द प्लांटर एंड कमर्शल गजट' ने उसे प्रकाशित नहीं किया था । मणिलाल डॉक्टर ने बड़ी कठिनाई से अपना उत्तर यहां के अर्द्ध गोरों द्वारा प्रकाशित 'ले पेची जुरनाल' में प्रकाशित करवाया था । अतः ऐसी विषम परिस्थिति में मणिलाल डॉक्टर के दिमाग में 'हिंदुस्तानी' समाचार पत्र निकालने की बात

आयी थी, जिसके जरिए यहां के प्रवासी भारतीय भाइयों के स्वत्वों की रक्षा हो सके । इसके बाद उत्तर प्रांत की शक्कर कोठी 'लाबूदोनि' पर हुई घटना ने 'हिंदुस्तानी' समाचार पत्र को जन्म लेने पर विवश कर दिया था । मणिलाल डॉक्टर ने किन-किन कठिनाइयों का सामना करके 'हिंदुस्तानी' प्रेस की व्यवस्था की थी, किन-किन लोगों से आर्थिक सहयोग उनको मिला था, इन बातों की जानकारी कहीं उपलब्ध नहीं । किंतु १५ मार्च १९०९ से उन्होंने 'हिंदुस्थानी' (वास्तविक नाम) नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया था । उस पत्र के मुख पृष्ठ का आदर्श वाक्य था— 'व्यक्ति की स्वतंत्रता, मनुष्य की समानता ! जातियों का भाईचारा !!!' इस आदर्श वाक्य को 'हिंदुस्तानी' पर प्रमुखता देने का मतलब यह हो सकता है कि मणिलाल डॉक्टर पर 'फ्रेंच जन क्रांति' का प्रभाव पड़ा हो, अथवा वे सन १७८९ में हुई फ्रांसीसी जनक्रांति के नारों (स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा) से मॉरीशस के भारतीयों का नवजागरण करना चाहते थे अथवा स्थानीय फ्रांसीसी पूंजीपतियों को उनकी लाठी उनकी भैंस की उक्ति से हांकना चाहते थे ।

प्रारंभ में 'हिंदुस्तानी' गुजराती और अंगरेजी में निकलता था । वह चार पन्नों का समाचार-पत्र था । सन १९१० से उसे अंगरेजी-हिंदी में कर दिया गया था । शुरू-शुरू में वह साप्ताहिक-पत्र था और सन १९१० से उसे दैनिक कर दिया गया था । किंतु उस समय प्रवासी भारतीयों के बीच पाठकों और सहयोगियों का अभाव था । अतः मणिलाल डॉक्टर को उसे चलाने में कित कठिनाई होती थी इसका प्रमाण हमें महात्म गांधी के एक पत्र से प्राप्त होता है जो उन्होंने २४ सितंबर १९११ को डॉ. प्राणजीवन मेह को डरबन, दक्षिण अफरीका से लिखा था, 'संपूर्ण गांधी वांङ्मय' के ग्यारहवें खंड में मिलता है । वे कहते हैं :— 'अपने पत्र (हिंदुस्तानी) को दैनिक बनाकर तो उन्होंने (मणिलाल डॉक्टर ने) बड़ी भूल की है । व पत्र खुद में कुछ नहीं । उसका टायप खराब है कागज रद्दी है और सामग्री भी वैसी ही । मॉरीशस में उसके अच्छे सहायक भी तो नहीं तो वह पत्र कैसे ठीक से प्रकाशित हो सकेगा, और पाठक भी इतने कहां हैं ? इन सबके संबंध में उनके यहां आने पर सलाह-मशविरा करूंगा ।'

इस उद्धरण से पता चलता है कि 'हिंदुस्तानी' समाचार-पत्र, महात्मा गांधी के भेजा जाता था । वे इसका पठन करते थे और इसी के जरिए तत्कालीन मॉरीशस में चल र मणिलाल डॉक्टर के कार्यों का लेखा-जोखा लिया करते थे । यहां यह बता दें कि सन १९०१ में दक्षिण अफरीका से बंबई जाते सम महात्मा गांधी १८ दिनों तक मॉरीशस में ठहरे थे, और उन्हीं की प्रेरणा से मणिलाल डॉक्टर यहां के भारतीयों की सेवा करने आये थे ।

उस 'हिंदुस्तानी' के दो अंक, केवल दो अं (एक सन १९०९ का और एक १९१३ का) हमारे अभिलेखागार में सुरक्षित हैं और सन १९१३ के उपलब्ध अंक में हिंदी का प्रयोग हुआ है, और यही हमारा ऐतिहासिक दस्तावेज है जिस पर आधारित है 'मॉरीशस का हिंदी

मॉरीशस में साहित्यिक पत्रों का विकास सन साठ में परिलक्षित होता है, 'नवजीवन', 'अनुराग', 'आभा', 'दर्पण' और सन सत्तर-अस्सी में 'वसंत', 'प्रकाश', 'इंद्रधनुष', 'आक्रोश' आदि पूर्ण रूप से साहित्यिक पत्र माने जाते हैं । इनमें क्रमशः लेख, कविता, कहानी, बाल जगत, महिला जगत तथा एकांकी आदि विधाओं पर अच्छे स्तर के लेख छपते रहते हैं । इन्हीं साहित्यिक पत्रों पर वर्तमान समय के अधिकांश साहित्यकार उभरे हैं और इन्हीं साहित्यिक कृतियों पर मॉरीशस का हिंदी साहित्य गौरवान्वित हुआ है ।

आंदोलन' ।

आर्यसमाज का प्रभाव

यूज टींकर महोदय के मतानुसार मणिलाल डॉक्टर पर आर्य समाज का प्रभाव था । वास्तव में आर्य समाज आंदोलन का प्रारंभ सन १९०३ में क्यूरपीप के स्वर्गीय खेमलाल लाला द्वारा हो चुका था । इतिहासकार पं. आत्माराम के मतानुसार मणिलाल डॉक्टर ने सन १९११ में पोर्ट लुई में आर्य समाज को संयोजित किया था और इसी आर्य समाज को उन्होंने अपना 'प्रेस' और 'पत्र' सुपुर्द करके फिजी के लिए प्रस्थान किया था ।

सन १९०९ से वर्तमान समय तक मॉरीशस के हिंदी-गगन में बयालीस हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को अवतरित होते देखा गया है । यहां उसकी परिगणना दशक के हिसाब से की जा रही है । यह चार्ट स्थानीय हिंदी-पत्रकारिता के ह्रास-विकास का द्योतक भी है ।

१९०१— १९१० हिंदुस्तानी
१९१०— १९२० हिंदुस्तानी, मॉरीशस आर्य पत्रिका, ओरियंटल गजट
१९२०— १९३० मॉरीशस इंडियन टाइम्स, मॉरीशस मित्र, मॉरीशस आर्य पत्रिका, आर्यवीर
१९३०— १९४० मॉरीशस आर्य पत्रिका, आर्यवीर, सनातन धर्मार्क, जागृति
१९४०— १९५० आर्यवीर, जागृति, आर्यवीर जागृति (संयुक्त) मासिक चिट्ठी, जनता, जमाना
१९५०— १९६० आर्योदय, जनता, जमाना, वर्तमान, मजदूर, दीपावली संदेश
१९६०— १९७० आर्योदय, जनता, जमाना, नवजीवन, समाजवाद, कांग्रेस, अनुराग
१९७०— १९८० आर्योदय, जनता, जमाना, आभा, दर्पण, प्रभात, वसंत, प्रकाश, शिवरात्रि
१९८०— १९९० आर्योदय, जनता, वसंत, स्वदेश, दर्पण, इंद्रधनुष, आक्रोश, मुक्त
१९९१— २००० आर्योदय, वसंत, इंद्रधनुष, आक्रोश पंकज, सृजन आदि ।

इस सूची में ३० दीर्घजीवी पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख हुआ है । १२ अल्पजीवी पत्रिकाएं ऐसी है जिनके अंक उपलब्ध नहीं है अथवा जिनका प्रकाशन एक-दो अंकों के बाद बंद करना पड़ा हो । फिर भी इस देश की हिंदी

पत्रकारिता के इतिहास में उनका अस्तित्व उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना अन्य पत्र-पत्रिकाओं का ।

हिंदी की समृद्ध परंपरा

उपर्युक्त चार्ट में दिये गये तथ्यों के विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि मॉरीशस के समान एक भी भारतेतर देश ऐसा नहीं जहां हिंदी भाषा में इतनी संख्या में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ हो । इसके अतिरिक्त मॉरीशस के हिंदी-जगत ने मणिलाल डॉक्टर, पं. आत्माराम विश्वनाथ, पं. रामअवध शर्मा, पं. काशीनाथ किस्तो, जयनारायण राय, डॉ. शिवसागर रामगुलाम, पं. वासुदेव विष्णुदयाल, एस. एम. भगत, सोमदत्त बखोरी, पं. मोहनलाल मोहित, अभिमन्यु अनत और प्रह्लाद रामशरण-जैसे पत्रकार और पत्र संरक्षक पैदा किये हैं । यह भारतेतर देशों में अदम्य साहस का प्रमाण है ।

सन १९२० से १९३२ तक मॉरीशस में एक दैनिक हिंदी पत्र का प्रकाशन होता रहा । यह अद्भुत मिसाल थी जिसे आज तक दुहराया नहीं जा सका है, जिस दशक में ये दैनिक निकाले गये, उस दशक में हिंदी पठन-पाठन का दायरा काफी सीमित था, और उन दिनों हिंदी जगत में जयनारायण राय, पं. वासुदेव विष्णुदयाल और सोमदत्त बखोरी-जैसे हिंदी के विद्वान नहीं पाये जाते थे ।

हिंदी का मिश्रित रूप

उपर्युक्त दोनों दैनिकों में हिंदी भाषा का जो रूप मिलता है वह पुरानी हिंदी से मिलता-जुलता है । व्याकरण और वर्तनी की मोटी-मोटी गलतियां उन दैनिकों में छपती रहती थी । इसके विपरीत आर्य समाज द्वारा चल रही पत्र-पत्रिकाओं में भाषा का शुद्ध परिष्कृत रूप मिलता है । एक ही दशक में 'प्रकाशित, मॉरीशस इंडियन टाइम्स, मॉ मित्र' की भाषा-शैली एवं कथावस्तु, आर्य समाजी पत्र 'मॉरीशस आर्य पत्रिका, और आर्यवीर से भिन्न होती थी । आर्य समाज संचालित पत्रिकाएं, धार्मिक, सामाजिक सांस्कृतिक होती थीं ।

मॉरीशस की हिंदी पत्रकारिता में अनेक प्रयोग हुए हैं । सन १९६५ में 'हिंदी लेखक संघ' के द्वारा 'बाल सखा' नामक पत्रिका प्रकाशन शुरू में हुआ था किंतु एक-दो अंक के बाद वह बंद हो गया था । इसी प्रकार मान. राजनारायण गति द्वारा सन १९९० में 'मुक्ता' नामक बाल पत्रिका का प्रारंभ किया गया था जो दो साल तक चला था ।

मॉरीशस में 'विशेषांकों' का प्रकाशन सन बीस से शुरू हुआ था । वह भी आर्य समाज पत्रों द्वारा । सन १९२५ में महर्षि दयानंद जन्मशती के अवसर पर 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' का विशेषांक 'शताब्दी अंक' के से छपा था । तभी से प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर पर विशेषांकों के प्रकाशन की प्रथा चल पड़ी थी । सन पचास से आर्योदय के सैकड़ों विशेषांक प्रकाशित हुए हैं । सन अस्सी में सनातन-धर्म मंदिर फेडेरेशन की ओर से मान. दयानंदलाल वसंतराय की देख-रेख में प्रतिवर्ष 'शिवरात्रि' नामक विशेषांक प्रकाशित करने का सिलसिला प्रारंभ हुआ । वर्तमान समय में 'इंद्रधनुष' का सिलसिला विशेषांकों प्रकाशन का एकदम विकसित रूप है । इस पत्रिका का मणिलाल डॉक्टर, पं. जवाहरलाल

नेहरू, डॉ. शिवसागर रामगुलाम, एस. एम. भगत और पं. आत्माराम विशेषांक आकर्षक और पठनीय हैं ।

श्रृंखला : ऐतिहासिक प्रकाशनों की

सन १९४२ से पूर्व मॉरीशस की समस्त पत्र-पत्रिकाएं द्विभाषी व त्रिभाषी होती थीं । ये अंगरेजी, फ्रेंच और हिंदी में प्रकाशित होती थीं, किंतु 'बीसवीं' शताब्दी के चौथे दशक से पूर्णरूपेण हिंदी समाचार पत्रों का प्रकाशन हो पाया था । इस दिशा में ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रकाशित 'मासिक चिट्ठी', इसी दशक में 'जनता' का प्रकाशन ऐतिहासिक माना जाता है । यह पत्र डॉ. रामगुलाम और जयनारायण राय द्वारा स्थापित और संचालित था । इसी प्रकार से सन पचास में 'आर्योदय', 'दिवाली संदेश', 'वर्तमान', 'नवजीवन', 'समाजवाद', 'कांग्रेस' और सन अस्सी में 'स्वदेश, 'दर्पण', 'आकद समाचार पत्र' हिंदी के समाचार पत्र माने जाते हैं ।

'जमाना' का प्रकाशन चौथे दशक में प्रारंभ किया गया था । यह द्विभाषी व त्रिभाषी पत्र जो विष्णुदयाल बंधुओं के द्वारा संपादित होता था । यह राजनीतिक अधिक और सामाजिक, धार्मिक न्यूज से पूर्ण होता था । शायद इसीलिए उसमें विष्णुदयाल बंधुओं के लेखों के अतिरिक्त अन्य हिंदी लेखकों के लेख नहीं पाये जाते हैं ।

वास्तव में मॉरीशस के समस्त लेखक आर्य समाज के पत्रों पर विकसित हुए हैं । सोमदत्त बखोरी, जयनारायण राय, एस. एम. भगत आदि लेखकों की कृतियां पहले-पहल 'आर्य वीर,' 'जागृति' और 'आर्योदय' पर छपती रही । ऐसे एक भी लेखक की साहित्यिक कृति 'जमाना' पर नहीं मिलती है । सन पचास के बाद 'जनता' द्वारा भी बहुत-से लेखक उभरे हैं ।

मॉरीशस में साहित्यिक पत्रों का विकास सन साठ में परिलक्षित होता है, 'नवजीवन', 'अनुराग', 'आभा', 'दर्पण' और सन सत्तर-अस्सी में 'वसंत', 'प्रकाश', 'इंद्रधनुष', 'आक्रोश' आदि पूर्ण रूप से साहित्यिक पत्र माने जाते हैं । इनमें क्रमशः लेख, कविता, कहानी, बाल जगत, महिला जगत तथा एकांकी आदि विधाओं पर अच्छे स्तर के लेख छपते रहते हैं । इन्हीं साहित्यिक पत्रों पर वर्तमान समय के अधिकांश साहित्यकार उभरे हैं और इन्हीं साहित्यिक कृतियों पर मॉरीशस का हिंदी साहित्य गौरवान्वित हुआ है ।

— ३०, स्वामी दयानंद स्ट्रीट
बो बासें, मॉरीशस

१० सेकंड में एक व्यक्ति की मौत

विश्व स्वास्थ्य संगठन और अमरीकी कैंसर सोसायटी के सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में धूम्रपान से प्रति १० सेकंड में एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है । प्रतिवर्ष धूम्रपान से मरनेवालों की संख्या ३० लाख है । सर्वेक्षण के अनुसार धूम्रपान से होनेवाली मौतों की गति अगर यही बनी रही तो भविष्य में यह संख्या प्रतिवर्ष एक करोड़ तक पहुंच सकती है ।

— लक्ष्मी सोनी

अस्वच्छता और गंदगी के कारण कभी-कभी पीलिया रोग महामारी का रूप धारण कर लेता है और ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में फैल जाता है । लेकिन जब से समाज में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है, यह रोग महामारी के रूप में नहीं देखा जाता, फिर भी इसका भय समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि आये दिन स्त्री-पुरुष इस रोग के चंगुल में फंसते रहते हैं ।

पीलिया का जड़ी-बूटियों द्वारा इलाज

● डॉ. जगन्नाथ शर्मा, एम. डी.

पीलिया को संस्कृत में कामला रोग और अंगरेजी में जौंडिस या हैपेटायटिस कहा जाता है । इस बीमारी में आंखों पर पीलापन छा जाता है और मूत्र भी पीला हो जाता है । इसी कारण इसे पीलिया नाम दिया गया है । इस रोग के कारणों में मुख्य रूप से दो प्रकार के वायरस होते हैं—जैसे हैपेटायटिस-ए वायरस और हैपेटायटिस-बी वायरस । यद्यपि अब हैपेटायटिस-सी. और डी. नामक वायरस भी खोजे जा चुके हैं ।

सर्व साधारण रूप में होनेवाले पीलिया का कारण है—'हैपेटायटिस-ए वायरस' जो मुंह मार्ग से खान-पान के साथ शरीर में प्रविष्ट होता है । अर्थात—ये वायरस दूषित जल, दूध,

साग-सब्जी या खाद्यान्न के साथ आंतों में पहुंच जाते हैं और आंतों से यकृत में चले जाते हैं। इस प्रकार विषाणुओं द्वारा यकृत पीड़ित हो जाता है और स्थानीय शोथ उत्पन्न हो जाता है, जिसके फलस्वरूप बायलीरुबिन नामक रंजक पदार्थ का चयापचय बिगड़ जाता है। अतः रक्त में उसकी मात्रा बढ़ने लगती है जो यकृतीय शोथ के अनुपात में बढ़ती है, अर्थात जितना यकृत प्रभावित होगा, रक्त में उतनी ही अधिक बायलीरुबिन की मात्रा पायी जाएगी।

अस्वच्छता और गंदगी के कारण कभी-कभी पीलिया रोग महामारी का रूप धारण कर लेता है और ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में फैल जाता है। लेकिन जब से समाज में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है, यह रोग महामारी के रूप में नहीं देखा जाता, फिर भी इसका भय समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि आये दिन स्त्री-पुरुष इस रोग के चंगुल में फंसते रहते हैं।

पीलिया के लक्षण

पीलिया होने से पूर्व रोगी को मंद ज्वर हो जाता है, गला खराब हो जाता है। जी मिचलाने लगता है, भोजन के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है, उल्टियां आ सकती हैं और सिर दर्द और शारीरिक वेदना हो सकती है। इन शिकायतों के तीन-चार दिन बाद आंखों में पीलापन दिखायी पड़ने लगता है और मूत्र भी पीला हो जाता है। इसके अतिरिक्त पेट के ऊपरी भाग में दाहिनी ओर पीड़ा अनुभव हो सकती है और शरीर में बेचैनी बढ़ने लगती है। ज्यो-ज्यों रोग बढ़ता जाता है आंखों एवं मूत्र का पीलापन गहरा होता जाता है। आंखों के अलावा मुंह के भीतर तालुओं पर पीलापन दिखायी देने लगता है। सामान्य अवस्था में ये लक्षण प्रारंभ के तीन सप्ताह तक बढ़ते हैं, लेकिन इसके पश्चात उनमें कमी अनुभव होने लगती है और अगले दस-पंद्रह दिन में रोगी स्वस्थ हो जाता है। अतः अन्य वायरसजन्य रोगों की भांति यह बीमारी भी स्वयं समाप्त हो जाती है और रोगी ठीक हो जाता है। लेकिन कुछ रोगियों में अन्यान्य विकारों के परिणामस्वरूप यह बीमारी कई महीनों तक चल सकती है और यकृतीय विकार बढ़ सकते हैं। कभी-कभी इस रोग के कारण यकृत सिकुड़ जाता है और रोगी का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

पड़ताल और निदान

पीलिया संबंधी लक्षणों के अलावा आजकल कई प्रकार की जांचें उपलब्ध हैं जिनमें रोग की गंभीरता के बारे में सही जानकारी मिल जाती है। ये जांचें हैं :—

रक्त एवं मूत्र में बायलीरुबिन की मात्रा नापना, यकृतीय विकारों संबंधी रक्त परीक्षण, जैसे—

—एस. जी. ओ. टी.

—एस. जी. पी. टी.

—एल्कैलाइन फोस्फेट, आदि जांचें ।

अतः पीलिया के निदान के लिए ये जांचें अवश्य करानी चाहिए, ताकि रोग की सही स्थिति का ज्ञान मिल सके । यह सच है कि वायरसजन्य होने के कारण पीलिया स्वयं सीमित बीमारी है जो एक-दो महीने में अपने आप ठीक हो जाती है लेकिन कभी-कभी यह रोग अधिक समय तक तंग कर सकता है और यकृत संबंधी नाना प्रकार के विकार उत्पन्न हो सकते हैं । अतः इसके इलाज को दुर्लक्ष्य नहीं करना चाहिए और खान-पान संबंधी बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

वर्तमान चिकित्सा पद्धति और पीलिया

वर्तमान चिकित्सा पद्धति में पीलिया का कोई पक्का इलाज नहीं है । अतः केवल लक्षणों के आधार पर चिकित्सा की जाती है । यकृतीय शोथ के कारण रोगी को चिकनाई और प्रोटीन नहीं खानी चाहिए । इसी प्रकार रोटी-चपाती और दालों का कम से कम प्रयोग करना चाहिए । केवल कारबोहाइड्रेट्सयुक्त भोजन उत्तम होता है । गन्ने का रस और ग्लूकोज विशेष लाभकारी बताया जाता है । दूध ले सकते हैं, परंतु उसमें मलाई-चिकनाई नहीं होनी चाहिए ।इसके अतिरिक्त मैथी, पालक, गाजर आदि हरी सब्जियों को हितकर माना जाता है ।

पीलिया के इलाज में कुछ चिकित्सक स्टीरोइड्स प्रयोग करते हैं जो अनुचित है । इससे तात्कालिक लाभ तो मिल सकता है, लेकिन अंततोगत्वा हानि होती है । इसके अतिरिक्त अन्य दवाओं का कम से कम प्रयोग करना चाहिए ।

आयुर्वेद में पीलिया का इलाज

आयुर्वेद में पीलिया का सही इलाज उपलब्ध है । रोग की गंभीरता और रोगी की प्रकृति के अनुसार कई वनौषधियों का प्रयोग किया जाता है जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं :—

भूमि आंवला, मुलहठी, कुटकी, गुर्च, नीम, चिरायता आदि ।

अनुभूत योग की खोज

हाल में हमने वनौषधियों का एक ऐसा योग तैयार किया है जिसके प्रयोग से आठ-दस दिन में रोगी को आराम मिल जाता है और वह शनै :-शनै : ठीक होता जाता है । इस योग से मिले कुछ परिणाम इस प्रकार हैं ।

प्रथम रोगी : रोगी की उम्र चालीस वर्ष । नवंबर, ९४ के अंतिम सप्ताह में जुकाम और गले की खराबी हुई और ज्वर, जी मिचलाना, भोजन के प्रति अरुचि, कमजोरी आदि लक्षण बने । प्रथम दिसंबर को रक्त परीक्षण हुआ और पीलिया का निदान हुआ । जांचों के परिणाम थे :—

—सीरम बाइलिरुबिन =६.०० मिलीग्राम,

—एस. जी. ओ. टी. =८४६.०० यूनिट,

—एस. जी. पी. टी. =१३००.०० यूनिट, एवं

—एलकेलाइन फोस्फेट =५४४.०० यूनिट

तीन दिसंबर, ९४ को हमें 'कादम्बिनी का स्वास्थ्य विशेषांक' मिला, जिसमें डॉ. जगन्नाथ शर्मा का 'पीलिया' पर लिखा लेख पढ़ा और उसी दिन डॉक्टर साहब से मिलकर जड़ी-बूटियोंयुक्त औषधि प्राप्त की और इलाज प्रारंभ किया ।

इस दवा के लेने के चार-पांच दिन में ही

ज्वर समाप्त हो गया, भूख खुल गयी और शारीरिक गिरावट में कमी अनुभव हुई ।

नौ दिसंबर को फिर से रक्त परीक्षण हुआ । परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बाइलिरुबिन=८.०० मिलीग्राम (कोई कमी नहीं),

—एस. जी. ओ. टी.=२८६.०० (६५.१२ प्रतिशत कमी),

—एस. जी. पी. टी.=६५०.०० यूनिट एवं (५०.०० प्रतिशत कमी),

—एलकेलाइन फोस्फेट=३९६.०० यूनिट (२७.८० प्रतिशत कमी)

सोलह दिसंबर को फिर से रक्त परीक्षण करवाया । परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बायलिरुबिन=२.४० मिलीग्राम (५७.०० प्रतिशत कमी),

—एस. जी. ओ. टी.=१२०.०० यूनिट, (८६.०० प्रतिशत कमी)

—एस. जी. पी. टी.=९०.०० यूनिट (९३.०० प्रतिशत कमी)

—एलकेलाइन फोस्फेट=८०.०० यूनिट (८५.०० प्रतिशत कमी)

द्वितीय रोगी : रोगी की उम्र ३० वर्ष । सरकारी कर्मचारी । पीलिया का निदान १७ नवंबर, ९४ को हुआ । परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बाइलीरुबिन=४.०० प्रतिशत ।

—मूत्र में बाइल पिगमैंट्स थे ।।

इस जांच के तीन दिन पश्चात जड़ी-बूटियों द्वारा इलाज प्रारंभ हुआ जिससे पांच-सात दिन में ज्वर समाप्त हो गया और भूख लगने लगी ।

दो दिसंबर को फिर से रक्त-परीक्षण करवाया । परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बाइलीरुबिन=१.५ मिलीग्राम प्रतिशत, अर्थात इसकी मात्रा में ६२.५० प्रतिशत कमी आयी

—मूत्र में बाइल पिगमैंट्स नहीं थे ।।

इसके पश्चात उत्तरोत्तर लाभ मिलता गया और रोगी पूर्णरूप से ठीक हो गया ।

तृतीय रोगी : बालिका रोगी की उम्र दस वर्ष । चार दिसंबर, ९४ को पीलिया का निदान हुआ । रक्त परीक्षण के परिणाम इस प्रकार थे :—

—सीरम बायलिरुबिन=२.६० मिलीग्राम

—एस. जी. ओ. टी.=१३६०.०० यूनिट

—एस. जी. पी. टी.=२८००.०० यूनिट

एल्कैलाइन फोस्फेट=४३६.०० यूनिट

दिनांक ४-१२-९४ को इलाज प्रारंभ हुआ, जिससे पांच दिन में ही बहुत लाभ दिखायी पड़ने लगा । अतः १५ दिसंबर को पुनः रक्त परीक्षण हुआ । परिणाम निम्न प्रकार थें :—

सीरम बाइलिरुबिन=१.०० मिलीग्राम (लगभग सामान्य मात्रा)

एस. जी. ओ. टी.=१२०.०० यूनिट (९१.८० प्रतिशत कमी)

एस. जी. पी. टी.=९०.०० यूनिट (९३.२१ प्रतिशत कमी)

एल्कैलाइन फोस्फेट=८०.०० यूनिट (६५.५९ प्रतिशत कमी)

इन परिणामों से लगता है कि यह दवा उस समय पर कारगर होती है, जब सामान्यरूप से पीलिया का शरीर पर प्रकोप बढ़ता है, अर्थात यह वनौषधि सच्चे रूप में वायरस जन्य विकारों का अवरोध करती है । अतः इन परिणामों को देखकर कोई भी कह सकता है कि जड़ी-बूटियों का यह योग पीलिया के लिए राम-वाण औषधि है ।

ए—१४ विकल्प एपार्टमेंट : प्लाट—९२,
आई. पी. एक्सटेंशन
पटपड़गंज दिल्ली—९१

क्या पुराण कथाओं के पात्र पशु-पक्षी थे

● डॉ. राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी

पुराणों की कथा पढ़ते या सुनते समय किसी के भी मन में यह सवाल उठना अस्वाभाविक नही है कि क्या पुराण कथाओं के वे पात्र पशु-पक्षी थे ?

मत्स्य पुराण की कथा है कि युगांत प्रलय के समय सूर्य की भयंकर किरणें अंगार बरसाने लगीं । सारी धरती जलकर राख का ढेर बन गयी और गगनमंडल उष्मा से संतप्त हो गया तो संवर्त, भीमनाद, चंड और बलाहक आदि प्रलयमेघों ने पृथ्वी को आप्लावित कर दिया, समुद्र क्षुब्ध हो उठा । उस समय एक सींगवाले मत्स्य (विष्णु के प्रथम अवतार) का प्रादुर्भाव हुआ और उसने नौका पर बैठे मनु की रक्षा की ।

इसी प्रकार कूर्म पुराण की कथा है कि अमृत प्राप्त करने के लिए देवता और दैत्य जब समुद्र मंथन करने लगे, उस समय भगवान ने कछुआ का अवतार लिया और समुद्र में प्रवेश करके मंदराचल को पीठ पर धारण किया । वाराह पुराण की कथा के अनुसार जब हिरण्याक्ष दैत्य धरती की चटाई पाताल ले गया, तो वाराह भगवान ने हिरण्याक्ष का वध किया और अपने एक ही दंष्ट्र पर धारण करके पृथ्वी का उद्धार किया और उसे शेषनाग के फण पर प्रतिष्ठित किया । इस प्रकार विष्णु के दस अवतारों में से प्रथम तीन अवतार मानवेतर हैं।

विष्णु के चौथे अवतार नृसिंह का स्वरूप अर्द्ध-मानुषी है अर्थात आधा शरीर मनुष्य का और आधा सिंह का । पुराण कथाओं के ऐसे अन्य देवताओं में गणेश (हाथी-जैसा मुंह बाकी शरीर मनुष्य-जैसा), हयग्रीव (सिर घोड़े का तथा धड़ मनुष्य का), और हनुमान (मुख और पूंछ बंदर की तथा शेष शरीर मानवीय) प्रमुख हैं । भारत ही नहीं चीन, जापान और तिब्बत में भी नागकन्या का आधा रूप सर्प का तथा आधा मनुष्य-जैसा है । गरुड़ के संबंध में पुराणों में बताया गया है कि उसके मस्तक पर चोंच तथा नख तो गरुड़ पक्षी के समान थे तथा शरीर और इंद्रियां मनुष्य-जैसी थीं ।

देवताओं के वाहन

पुराण कथाओं के पशु-पक्षी पात्रों का एक तीसरा रूप देवता के वाहन रूप में हैं—जैसे ऐरावत हाथी (इंद्र का वाहन), गरुड़ (विष्णु), सिंह (दुर्गा), हंस (ब्रह्मा तथा सरस्वती), बैल (शिव), कुत्ता (भैरव), मूषक (गणेश), मयूर (कार्तिकेय स्वामी), महिष (यमराज तथा शनि), उल्लू (लक्ष्मी का वाहन) । इस प्रसंग में शेषनाग की शैया (विष्णु) और कालियानाग के फणों पर नृत्य करते हुए कृष्ण की भी चर्चा

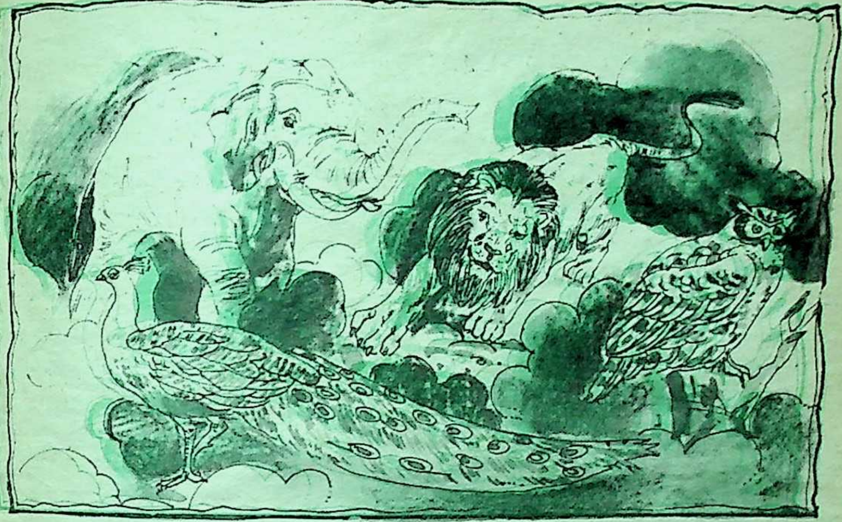

की जा सकती है तथा शिव के गले में लिपटे नाग की भी ।

इतना ही नहीं, पुराण कथाओं के स्रोत के रूप में हमें पक्षी भी मिलते हैं । एक ओर रामायण कथाओं के स्रोत के रूप में भुशुंडि काक दीखते हैं तो भागवत कथाओं का स्रोत शुक हैं । पौराणिक प्रसंग है कि एक बार भगवान शंकर पार्वती को मुंडमाला की रहस्य कथा सुना रहे थे, उस समय पार्वती सो गयीं और वृक्ष पर बैठा तोता 'हुंकारी' भरने लगा । जब शिव ने तोते को यह रहस्य सुनते देखा तो उन्होंने त्रिशूल उठाया तभी शुक उड़कर व्यास पत्नी के गर्भ में पहुंचा । यही शुक शुकदेव हुए और इसीलिए भागवत को 'शुकशास्त्र' कहा जाता है ।

विश्वास का उद्भव

जिस गजेंद्र की रक्षा के लिए स्वयं भगवान को भागना पड़ा था क्या वह सामान्य हाथी था अथवा पुराण प्रसिद्ध गज-ग्राह के युद्ध की गाथा में इतिहास के कुछ दूसरे महत्त्वपूर्ण सूत्र छिपे हैं ? ये प्रश्न पुरानी पीढ़ी के उन लोगों के लिए बेकार हैं, जो परंपरागत विश्वास के कारण पुराणों की इन कथाओं को परम सत्य मानते हुए आज भी कहते और सुनते हैं क्योंकि विश्वास

पुराण कथाओं के पशु-पक्षी सामान्य पशु-पक्षी नहीं हैं, वहां उनका अर्थ कुछ गहरा है, जिसे हम गणगोत्र के सूत्र से समझ सकते हैं । टोटम का इतिहास मानवीय धारणाओं, देवताओं और जनजातियों की युगयात्रा और सामाजिक विकास की आत्मकथा है, जिसको हम भारतीय संस्कृति कहते हैं, वह वास्तव में समुद्र की भांति है, जिसमें संस्कृतियों की अनेक धाराएं समायी हुई हैं ।

अपने आपमें मनोविज्ञान का एक सत्य है और विश्वास को न तो इतिहास के तर्कों से कुछ लेना है और न विज्ञान की युक्तियों का कुछ देना है। विश्वास का तो उद्‌भव ही असंभव के संभव बन जाने की मनःस्थिति से होता है।

परंतु प्रश्न यह है कि क्या इन पुराणकथाओं (मिथक कथाओं) की भूमिका मात्र विश्वास के लिए ही है या इनकी सार्थकता आगे भी कुछ है? और उस समय यह प्रश्न और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जब अगली पीढ़ी ने इस प्रकार की पुराकथाओं को अवैज्ञानिक और गप कहकर खारिज कर दिया हो।

इतिहास में ऐसा कितनी ही बार हुआ है कि आक्रमण हुए, अकाल पड़ा, तूफान आये, बाढ़ और भूकंप आये तथा मानवजातियां एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर चली गयीं, सभी कुछ छूट गया था। परंतु लोकवार्ता विज्ञान (फोकलोरिस्टिक्स) जानता है कि वे पुराकथाएं वहां भी उनके साथ थीं, जो दादी से मां ने और मां से बेटी ने इसलिए सुनी थीं कि व्यक्ति का मन सामाजिक मन बन सके। एक मानवजाति दूसरी मानवजाति से मिली और एक पुराकथा दूसरी पुराकथा से मिली। भौगोलिक और सामाजिक परिवेश के परिवर्तन के साथ पुराकथाओं का भी कायाकल्प हुआ। इस निरंतर प्रक्रिया में पुराकथाओं के सूत्र इतने उलझ गये कि वे आज हमें असंगत से लगते हैं।

घर में बाबा के जमाने का एक पीतल का बड़ा घंटा यों ही पड़ा था। एक दिन मां ने उसे उठाया और गेहूं भरने के पात्र पर ढक दिया। उसके नये उपयोग के साथ उसे नया नाम मिला—'ढकना।' थोड़े दिनों बाद उसके पुराने प्रयोग, नाम और रूप को घर में सभी भूल गये। ऐसा ही पुराणकथाओं के उन पात्रों के संबंध में भी हुआ। यों पशु-पक्षियों की सामान्य लोक कहानियां पुराणों में भी बहुत हैं परंतु पशु-पक्षी तथा अन्य मानवेतर प्राणी-संज्ञक पात्रों की गाथाएं वास्तव में गणगोत्र (जिसे मानवशास्त्री अंगरेजी में टोटम कहते हैं) से संबंधित हैं।

गण या देवताओं के सूचक

आज व्यक्ति और जन समूह की पहचान भौगोलिक—संदर्भों, नस्लों, वंशों, पेशों और धर्मसंप्रदायों के आधार पर की जाती है, व्यापक संदर्भों में राष्ट्रीयता से तथा संकीर्ण संदर्भों में जाति, संप्रदाय और प्रांत या जनपदों से। परंतु कबीलों के जमाने में यह पहचान गणगोत्र के आधार पर की जाती थी। मानवेतर प्राणी को गण का देवता माना जाता था और गण के सभी सदस्य उसकी पूजा करते थे। उसे अपने गण की उत्पत्ति का स्रोत (जैसे सूर्यवंश, चंद्रवंश आदि, आज भी भारतमाता का सपूत कहा जाता है, हरिद्वार में 'गंगापुत्र' और मथुरा में 'यमुनापुत्र' की संज्ञा भी प्रचलित है) मानते थे। जो गण का देवता होता था, वही संज्ञा उस गण की भी थी। इस प्रकार पुराण कथाओं में पशु-पक्षी तथा मानवेतर प्राणियों का उल्लेख दो अर्थों में हुआ है या तो वह गण (या जनजाति) की संज्ञा है अथवा देवता सूचक है।

मानवजाति के इतिहास में देवता के रूप में पशुपक्षी तथा मानवेतर-प्राणियों की उपासना की परंपरा बहुत पुरानी है, जिसके अवशेष लोक-परंपरा में आज भी पहचाने जा सकते हैं।

भागवत के पंचम स्कंध में कंक, गिद्ध, बगुला और बटेर जैसे देवताओं का उल्लेख है, हालांकि वहां उनकी भर्त्सना की गयी है—

'यज्ञ-पुरुष मनाहत्य पाखंड देवता कंक-गृद्ध बक वटप्राया आर्य समय परिहृता सांकेत्येनाभिधंते ।'

वृषभ पूजा का संकेत सिंधुघाटी सभ्यता में मिला है । अनेक गांवों में दीपावली के पहले नरक चतुर्दशी को यमराज का तर्पण करके दीप जलाकर कुत्ते की पूजा की जाती है । श्राद्धों में कौए को बलि देने की प्रथा है और गाय की पूजा तथा नाग की पूजा तो बहुत ही व्यापक है ।

जीवन का आधार

मानवेतर—उपासना को मानव जाति के इतिहास से अलग करके नहीं समझा जा सकता । जिस समाज के जीवन का जो आधार है, वह उसे देवता मानता है, जैसे—गोप संस्कृति (जिसका जीवनाधार गाय है) में गोदान और गोरक्षा पुण्य है तथा गोहत्या पाप है तथा उसकी पवित्रता की अवधारणा में गोबर, गोमूत्र आदि पंचगव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है । गाय के अंग-प्रत्यंग में कोटि-कोटि देवताओं का निवास है तथा उसके पवित्र धाम हैं—गोकुल, गोवर्धन तथा गोलोक । गोपसंस्कृति के अलौकिक विश्वास कामधेनु से जुड़ते हैं, उसके विश्वास में धरती गाय के सींग पर टिकी है । जबकि नाग-संस्कृति में धरती को शेषनाग के फण पर प्रतिष्ठित होने का विश्वास है । हस्तिगण के विश्वास के अनुसार धरती को दिशाओं के अधिपति दिग्गज धारण किये हैं ।

चिंतन और परिवेश

पुरा कथाओं के असंगत लगने का कारण यह है कि युग-परिवर्तन के साथ मनुष्य का अपने परिवेश के साथ संबंध बदल जाता है । यह प्रश्न बिलकुल बेकार है कि कल का मनुष्य अधिक ठीक सोचता था या आज का मनुष्य अधिक समझदार है ? कल पिता सोच रहा था तो वह भी मनुष्य था और आज पुत्र सोच रहा है तो वह भी मनुष्य है, और मनुष्य आखिर मनुष्य है । आज का वैज्ञानिक मनुष्य अपने को प्रकृति का प्रभु मानता है परंतु पुराणकथाओंवाला मनुष्य प्रकृति में अपनी ही चेतना को देखता था, अपने ही राग को सुनता था और दिव्यता का आभास पाता था । इसलिए सूर्य की वैज्ञानिक अवधारणा सूर्य की पौराणिक अवधारणा से बिलकुल भिन्न है । पुराणकथाओं के असंगत लगने का कारण लोकमानस की वह प्रवृत्ति है,

जो लौकिक से अलौकिक की ओर है तथा जिसके संस्पर्श से सब कुछ दिव्य हो जाता है—धरती, पहाड़, आकाश, मेघ, समुद्र, वृक्ष, पशु, पक्षी, नाग आदि सब देवस्वरूप बन जाते हैं ।

इन तथ्यों के प्रकाश में जब हम पुराकथाओं का अध्ययन करते हैं तो इस सवाल का उत्तर हमारे सामने बहुत स्पष्ट हो जाता है कि क्या पुराणकथाओं के वे मात्र पशु-पक्षी थे ।

जब रावण सीता का अपहरण करके ले जा रहा था तो जटायु ने रावण को वेदतत्व का प्रमाण देते हुए परस्त्री हरण का निषेध किया था और जब रावण नहीं माना तो इसने रावण को घायल कर दिया । राम को सीता-हरण की प्रथम सूचना जटायु से ही मिली थी, इतना ही नहीं, जटायु ने राम को बताया कि सीता का हरण 'बिंद' मुहूर्त में हुआ है, इसलिए वह तुम्हें अवश्य प्राप्त होगी । स्पष्ट है कि वेद का प्रमाण और ज्योतिष का संदर्भ देना किसी भी पक्षी के वश की बात नहीं हो सकती ।

वानर गोत्रीय : हनुमान

बाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाएं जानते थे । हनुमान से पहले वार्तालाप में ही राम जान लेते हैं कि हनुमान चारों वेदों का ज्ञाता है । 'अशोक वाटिका' में सीता से भेंट करते समय हनुमान सोचते हैं कि मैं कौन-सी भाषा में बात करूं —

'यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्
।रावणं मन्यमानां तों सीता भीता भविष्यति ।

क्या भाषाओं पर ऐसा अधिकार किसी कपि, मर्कट या बंदर का हो सकता है ? इसीलिए डॉ. कामिल बुल्के ने स्पष्ट बताया था कि हनुमान वास्तव में वानरगोत्रीय आदिवासी थे ।

पुराण कथाओं के अनुसार जरत्कारू नाम की नागकन्या का विवाह 'जरत्कारू' नामक ब्राह्मण से हुआ था । नागकन्या उलूपी अर्जुन को ब्याही थी । महिषासुर के जन्म की कथा में उल्लेख है कि रंभासुर ने महिषी को गर्भ प्रदान किया था । मंडूकों (मेंढकों) का राजा आयु था और उसकी कन्या सुशोभना से परीक्षित का विवाह हुआ था । जब सुशोभना परीक्षित को छोड़कर चली गयी तो परीक्षित ने मंडूक वध-सत्र किया, जिससे घबराकर मंडूकराज सुशोभना को लेकर शरण में आ गया । स्पष्ट है कि न 'जरत्कारू' और 'उलूपी' सांपिन थी और न सुशोभना मेंढ़की थी । नाग और मंडूक शब्द यहां गणगोत्र वाचक हैं । इसी प्रकार जिस ऋक्षराज जांबवान से कृष्ण का अट्ठाईस दिनों तक युद्ध चला था और जिसकी कन्या जांबवती कृष्ण की आठ पटरानियों में से एक थी, वह रीछ तो नहीं हो सकता ।

नागजाति का इतिहास

इतिहास में मूषक, मत्स्य, कूर्म, ऋक्ष, कुक्कुर और वानर संज्ञक टोटम जातियों का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है । टोटम जातियों में सर्प-उपासक नागजाति का इतिहास तो बहुत समृद्ध है । इतिहास में नागराज़ाओं को उत्तम स्थापत्यकार, नैयायिक तथा उत्तम रासायनिक बताया गया है । प्राग्ज्योतिष, तक्षशिला और मथुरा नगर उन्होंने बसाये थे । रासायनिक नागार्जुन नागराज-पुत्रों में से था ।

पुराणों में नाग और गरुड़ दोनों ही कश्यप की संतान हैं । नागों की माता कद्रू हैं तथा गरुड़

की माता विनता । माता विनता को कद्रू के दासीतत्व से मुक्त कराने के लिए गरुड़ स्वर्ग से अमृत चुराकर लाया था । इंद्र तक्षक नाग का सखा था और जब खांडववन जलाकर अर्जुन वहां बसनेवाले दुर्दांत तक्षकवंशी नागों का विध्वंस कर रहे थे उस समय इंद्र ने तक्षक की सहायता की थी । कृष्ण कालियानाग का दमन करते हैं और नागजाति से संघर्ष करके वे उसे व्रज छोड़ देने को विवश करते हैं । परीक्षित की मृत्यु तक्षक द्वारा हुई और उसकी प्रतिक्रिया जनमेजय के नागयज्ञ में हुई और जनमेजय ने तब तक नागों का सामूहिक विनाश किया, जब तक मां ने पुत्र को मातृकुल की रक्षा का आदेश नहीं दिया । नाग वरुण के सभासद थे । समुद्र मंथन बहुत महत्त्वपूर्ण मिथक शास्त्रीय घटना है और समुद्र मंथन प्रसंग में देवता और असुर नागराज वासुकि को अमृत में से हिस्सा देने का वचन देते हैं । इसी प्रकार की दूसरी घटना पृथ्वी दोहन के प्रसंग में नागराज धृतराष्ट्र की भूमिका उल्लेखनीय है ।

नाग जाति का जब अन्य जातियों से अंतर्मिलन होता है तो उसके उपास्य तत्व (सांप) की अन्य जातियों के उपास्य तत्व में किस प्रकार 'अंतर्भुक्ति होती है, इसे हम पुराण कथाओं से जान सकते हैं । पुराणों में विष्णु शेष नाग पर शयन करते हैं, कृष्ण जन्म के समय शेषनाग फण फैलाकर उनकी रक्षा करता है । बलराम शेष के अवतार हैं । शिव के सार्थ नाग हैं और जाहरपीर के साथ नागतत्व हैं ।

संस्कृतियों की अनेक धाराएं

जिस प्रकार नाग—जाति का देवता सर्प है उसी प्रकार हस्तिगण का देवता गजेंद्र है, गणेश है । दीपावली पर गणेश के साथ विष्णुपत्नी लक्ष्मी की उपस्थिति का कारण लक्ष्मी के साथ जुड़े गज तत्व में देखा जा सकता है इसी के साथ हस्तिगण और मूषक जनजाति की अंतर्भुक्ति गणेश के वाहन के रूप में प्रत्यक्ष होती है ।

इस प्रकार पुराण कथाओं के पशु-पक्षी सामान्य पशुपक्षी नहीं हैं, वहां उनका अर्थ कुछ गहरा है, जिसे हम गणगोत्र के सूत्र से समझ सकते हैं । टोटम का इतिहास मानवीय धारणाओं, देवताओं और जन जातियों की युगयात्रा और सामाजिक विकास की आत्मकथा है, जिसको हम भारतीय संस्कृति कहते हैं, वह वास्तव में समुद्र की भांति है, जिसमें संस्कृतियों की अनेक धाराएं समायी हुई हैं ।

—लोकवार्ता-विज्ञान
एस. डी. कॉलेज,
पानीपत—१३२१०३

प्रसिद्धि

एक पार्टी में एक महिला ने लॉर्ड नॉथक्लिफ से कहा, "एक सुबह उठकर थैकरे ने देखा कि वह प्रसिद्ध है !"

लॉर्ड नॉर्थक्लिफ ने जवाब दिया, "जब वह सुबह हुई थी, तब थैकरे को नियमित रूप से रोजाना आठ घंटे के हिसाब से लिखते-लिखते पंद्रह वर्ष बीत चुके थे । जो शख्स एक सबेरे उठकर अपने आप प्रसिद्ध हो गया, उसने अपना वक्त सोकर नहीं गुजारा था ।"

—राजकुमार जैन

किंडर गार्टन : के. जी. की शुरुआत कैसे हुई ?

● हबीब खान

जरमनों को अपनी भाषा को फैलाने और लोकप्रिय बनाने का जुनून की हद तक शौक है और यह शौक कई बार धौंस में तब्दील हो जाता है क्योंकि जहां-जहां संभव हो पाया जरमनों ने विदेशियों के लिए जरमन सीखना अनिवार्य कर दिया । जरमनों की यह राष्ट्रीय आदत है कि वह अपनी भाषा से प्रेम करते हैं तथा उसे अंगरेजी और फ्रांसीसी भाषाओं के साथ-साथ मान-सम्मान और प्रतिष्ठा का स्थान दिलाना चाहते हैं । यह अलग बात है कि संसार में कोई ही ऐसा व्यक्ति होगा जो कि सहर्ष जरमन भाषा सीखे अन्यथा सारे जरमन भाषा का गले पड़ा ढोल बजाते हैं । विशेष रूप से जहां जरमनी में आकर जब कुछ बन नहीं पड़ता तो जरमन सीख लेते हैं मगर वह भी बस इतनी कि गुजारा ही हो सके । अपनी लगन और चाव से जरमन भाषा में मास्टर बनते कम से कम हमने किसी को कम ही देखा है ।

विश्वव्यापी शब्द

जरमन लोगों को अपने एक शब्द पर बहुत ही गर्व है जो कि विश्वभर में बोला जाता है । एक बार बुद्धिमत्ता की परीक्षा पर आधारित एक टी. वी. कार्यक्रम में कंपेयर ने पूछा कि "वह कौन-सा जरमन शब्द है जो सारे संसार में बोल और समझा जाता है ?" तो न केवल उत्तर देनेवाले ने बल्कि सारे उपस्थित मेहमानों ने एक स्वर में चीखकर बताया—'किंडर गार्टन' । जी हां । यही वह एकमात्र जरमन शब्द है जिसे संसार के सभी क्षेत्रों में समझा जाता है । किंडर गार्टन नन्हे बच्चों के प्राथमिक स्कूल को कहते हैं । इस संस्था में तीन से छह वर्ष तक की आयु के बच्चे प्राइमरी स्कूल जाने से पहले दाखिल कराये जाते हैं । यहां बच्चे शिक्षा नहीं बल्कि प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं । यहां बच्चों को जीवन का बेहतरीन ढंग सिखाया जाता है । उन्हें अच्छी और बुरी बात की तमीज सिखायी जाती है, गरज यह है कि बच्चे को एक अच्छा बच्चा बनने का प्रशिक्षण दिया जाता है । जरमन मुहावरा है कि बच्चे को 'किंडर गार्टन' से ही पहचान लिया जाता है कि उसके तौर-तरीके और आदतें कैसी होंगी । हमारे यहां लोग ज्यादा अक्लमंद होते हैं क्योंकि वह नन्हे-मुन्ने को पालने से ही पहचान लेते हैं ।

शब्द की उपज

आइए ! आज हम आपको बतायें कि जरमनों का गौरवशाली विश्वव्यापी शब्द 'किंडर

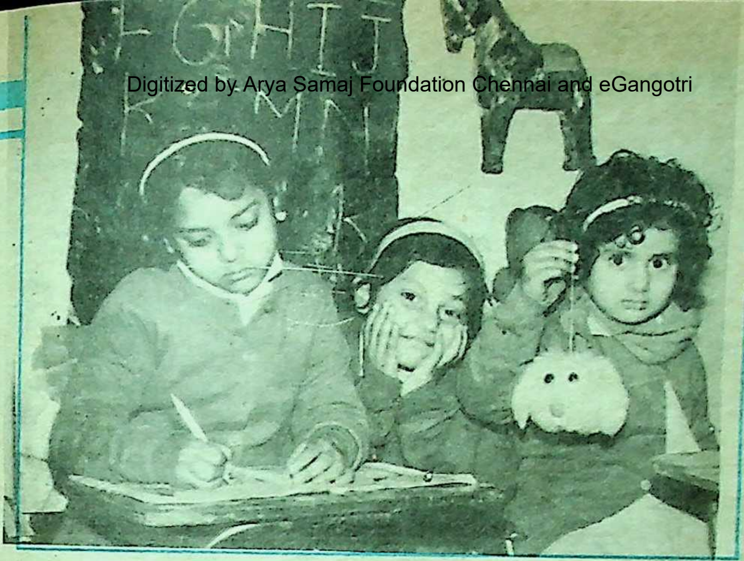

रेत के अहाते किंडर गार्टन की आज भी बहुत लोकप्रिय वस्तुएं हैं। बच्चे रेत के साथ खेलकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं और रेत से विभिन्न वस्तुएं बनाकर अपनी रचनात्मक प्रतिभाओं को बढ़ाते हैं। चुनांचे फ्रेड्रिश फ्रोबल ने दो सौ वर्ष पहले नन्हे बच्चों को इकट्ठा करके उन्हें खुशियां उपलब्ध कराने का जो सपना देखा था वह आज उसके आविष्कार 'किंडर गार्टन' के रूप में पूरा हो रहा है।

गार्टन' किसके जहन की उपज है। आज से दो सौ वर्ष पहले जरमनी के एक फटेहाल और दरिद्र पादरी के घर छठा बच्चा पैदा हुआ जिसका नाम फ्रेड्रिश फ्रोबल रखा गया। फ्रेड्रिश पहले दिन से ही बदनसीब साबित हुआ क्योंकि उसके जन्म के अगले दिन ही उसकी मां चल बसी। सौतेली मां को दूसरे पांच सौतेले बच्चों के मुकाबले में फ्रेड्रिश ज्यादा बुरा लगता था क्योंकि वह छोटा-सा मरियल चूहा दिखायी पड़ता था और सारा दिन 'रें-रें' करता रहता था। जब वह छह वर्ष का हुआ तो साधारण बच्चों की तरह स्कूल न जा सका क्योंकि उसे इतने ज्यादा बच्चों और कठोर स्वभाव के अध्यापकों से डर लगता था। उसके अन्य भाई-बहन शिक्षा प्राप्त कर रहे थे लेकिन उसके मन में हमेशा यही अभिलाषा समायी रहती थी कि आखिर दूसरे बच्चों के समान उसकी अच्छी-सी मां क्यों नहीं है ? वह क्यों नहीं अपनी मां की गोद में मुंह छिपाकर सो सकता और सोने से पहले उसकी मीठी लोरियां क्यों नहीं सुन सकता। फ्रेड्रिश के पिता ने अनुमान लगा लिया कि वह नालायक और पढ़ाई से भागनेवाला लड़का है। चुनांचे उसने फ्रेड्रिश को हुक्म दिया कि वह भूमि पर खेतीबाड़ी का काम संभाल ले। फ्रेड्रिश ने निस्संकोच अपने पिता की यह बात मान ली और अपने भाग्य पर

अफसोस करके रह गया ।

परिस्थितियों से मात नहीं

फ्रेड्रिश जब बाल्यावस्था में था तब उसके मन में यह विचार और संकल्प बिजली के समान कौंधा कि परिस्थितियों के आगे मात खाते रहना कोई आदमियत नहीं है । इनसान को चाहिए कि वह अपनी महान आकांक्षाएं पूरी करने का स्वयं प्रबंध करे । चुनांचे उसने पुस्तकें खरीदकर पढ़ना शुरू कर दीं । उसके उपरांत वह गोटंगन और बर्लिन की पाठशालाओं में भी पढ़ता रहा । अपनी कॉलेज की पढ़ाई के दौरान उसे ज्यादा पैसों की आवश्यकता पड़ी तो उसने छोटे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का विज्ञापन दे डाला । फ्रेंकफर्क की एक मालदार फेमिली ने उसका विज्ञापन पढ़कर उसको बुलवाया और उसे अपने दो छोटे-छोटे बच्चों का ट्यूटर नियुक्त कर दिया । वहां फ्रेड्रिश को पहली बार सुंदर सुहाने तजुर्बों का अनुभव हुआ । वह एक प्यार-भरा घराना था जिसने फ्रेडिश को भी अपने बच्चों—जैसा प्यार दे डाला । वह बच्चों का ट्यूटर और उनके माता-पिता का मित्र था । फ्रेड्रिश कई बार सोचता ''काश उसने भी ऐसे ही किसी घराने में जन्म लिया होता ।'' उसे उस घराने में जाकर जो मानसिक शांति प्राप्त होती उसका अंदाजा उसे कभी नहीं हुआ था । फ्रेड्रिश ने दो वर्ष तक वहां बच्चों को पढ़ाया और जब वहां अपनी जिम्मेदारी पूरी कर ली तो उसके मस्तिष्क में एक छोटी-सी योजना संपूर्ण रूप धारण कर चुकी थी ।

प्रारंभ ऐसे हुआ

फ्रेड्रिश ने सोचा, वह अपने-जैसे बिखरे हुए और बिन मां-बाप के बच्चों को अपनी आगोशे मोहब्बत (स्नेह की गोद) उपलब्ध कराएगा ।

उसके पास साधन न के बराबर थे । उसने अपने इकलौते किराये के कमरे में नन्हें बच्चों के लिए एक 'शिशु केंद्र' खोल दिया । वह महल्ले के बच्चों को छोटे-मोटे और टूटे हुए खिलौने खेलने के लिए देता और चार-पांच घंटे उनसे बातें करता रहता और उन्हें पाठप्रद कहानियां सुनाता । एक दिन उसके मालिक मकान ने अपने घर की मरम्मत करायी तो तरखान का काम खतम होने के बाद जमीन पर कई तिकौने, चौकोर और आयताकार लकड़ी के टुकड़े इकट्ठे हो गये, फ्रेड्रिश ने उन सबको सावधानी के साथ जमा किया और उन्हें बच्चों के लिए ले आया । बच्चे उन टुकड़ों के साथ अत्यंत हर्षोल्लास और जिज्ञासा के साथ खेले । पास ही रेत के ढेर थे जो निर्माण कार्य के उद्देश्य से मंगवाये गये थे । फ्रेड्रिश ने मालिक मकान से अनुमति ले ली कि बच्चे वहां खेल सकते हैं, चुनांचे नन्हें बच्चे रेत के ऊपर लकड़ी के टुकड़ों से घर, बंगले और हवाई अड्डे बनाते रहे ।

वह खेल में इतने लीन हुए कि अपने घर वापस जाना भूल गये, फ्रेड्रिश को अंदाजा हुआ कि बच्चे लकड़ी के टुकड़ों और रेत के साथ अत्यंत रुचि से खेलते हैं । उसने बच्चों को अधिक प्रसन्न करने के लिए लकड़ी के टुकड़ों को विभिन्न रंगों से रंग दिया, अब तो बच्चों की खुशी का ठिकाना ही न रहा, उन्होंने बहुत से टुकड़े स्वयं ही रंगे और रंगसाजी के इस खेल को बहुत खुशी से खेला ।

फ्रेड्रिश बच्चों को खेलते हुए गौर से देखता, उसने अनुभव किया कि लकड़ी के रंगीन टुकड़ों का खेल बच्चों में असीम रचनात्मक प्रतिभाएं

उभारता है, चुनांचे उसने इस ओर अधिक से अधिक ध्यान दिया और एक दिन अपने मित्रों की सहायता से दो कमरों की एक 'शिशु वाटिका' खोल ली । यह नाम फ्रेड्रिश के अपने दिमाग की उपज था, वह बच्चों को भी फूल ही समझता था । उस 'किंडर गार्टन' में फ्रेड्रिश ने बच्चों के लिए सुंदर-सुंदर प्लास्टिक के टुकड़े रखे, बच्चे उन पर स्वयं रंग कर सकते थे । बाहर छोटे-से बगीचे में रेत का एक चौकोर मैदान बनवाया जिसमें बच्चे रेत में आजादी से खेल सकते थे । कुछ ही वर्षों में उसको किंडर गार्टन नगर के विभिन्न भागों में बनवाने पड़े । माताएं यहां अपने नन्हे बच्चों को निस्संकोच होकर छोड़ सकती थीं । बच्चे यहां सारी दुनिया से बेखबर होकर खेलते और प्रसन्न होते और फ्रेड्रिश के अनुसार फ्रोबल के किंडर गार्टन पहले जरमनीभर में मशहूर हुए फिर उन्हें यूरोपभर में लोकप्रियता प्राप्त हुई ।

एक लोकप्रिय संस्था

आज ब्रिटेन, अमरीका, फ्रांस और समस्त पूर्वी व पश्चिमी देशों में जो किंडर गार्टन हैं वह फ्रेडिश फ्रोबल के मूलभूत विचार पर ही बनाये गये हैं । यहां बच्चों को वैसा ही वातावरण उपलब्ध कराया गया—जैसा फ्रेड्रिश फ्रोबल ने अपने पहले किंडर गार्टन में बच्चों को उपलब्ध कराया था ।

आज विश्वभर में नन्हें बालकों के इस प्रशिक्षण केंद्र का नाम भी किंडर गार्टन है और पैटर्न भी हुबहू वही है । केवल कुछ देशों में कहीं-कहीं किंडर गार्टन को 'नर्सरी' का नाम भी दे दिया जाता है । किंडर गार्टन में आज भी बच्चों को लकड़ी और प्लास्टिक के चौकोर, तिकोन, गोल और आयताकार टुकड़े खेलने के लिए दिये जाते हैं जिनके साथ वह भिन्न-भिन्न वस्तुएं बनाते हैं । रेत के अहाते किंडर गार्टन की आज भी बहुत लोकप्रिय वस्तुएं हैं । बच्चे रेत के साथ खेलकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं और रेत से विभिन्न वस्तुएं बनाकर अपनी रचनात्मक प्रतिभाओं को बढ़ाते हैं । चुनांचे फ्रेड्रिश फ्रोबल ने दो सौ वर्ष पहले नन्हे बच्चों को इकट्ठा करके उन्हें खुशियां उपलब्ध कराने का जो सपना देखा था वह आज उसके आविष्कार 'किंडर गार्टन' के रूप में पूरा हो रहा है ।

—३८७, हौजकाजी दिल्ली-११०००६

शिष्टाचार

एक बार अमरीका के राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन अपने मित्रों व अन्य अधिकारियों के साथ कहीं जा रहे थे । रास्ते में उन्हें एक हब्शी मजदूर मिला । उसने वाशिंगटन को देखकर अपने सिर से टोपी उतारी और उनका अभिवादन किया । वाशिंगटन ने भी ऐसा ही कर उसके अभिवादन का समुचित उत्तर दिया ।

आगे बढ़ने पर वाशिंगटन के एक मित्र ने कहा, ''आप भी कमाल के आदमी हैं । एक हब्शी मजदूर के प्रति इतना सम्मान प्रकट करते हैं ।''

वाशिंगटन बोले, ''मेरे भाई, उस अनपढ़ मजदूर ने इतनी सभ्यता और शिष्टाचार दिखाया । क्या मैं शिष्टाचार के पालन में उस हब्शी से पीछे रह जाता ? शिष्टाचार व सभ्यता का निर्वाह जीवन में पहली चीज है मेरे मित्र !

—राजकुमार जैन

नयन-कटोरे

क्या भर लाये, क्या खो आये
नयन कटोरे, नयन कटोरे !

नव प्रभात की किरण चुराये
कली कुसुम बन जो खिल जाए
क्या उसकी मुसकानें लेकर
शबनम के मोती दे आये ?

या दिन से उजियारा ऊबा
जो सागर में सूरज डूबा !
सांध्य-किरण खोकर सच बोलो
कितने तारे रात बटोरे !

चितवन पायी, दिल दे आये
बांट खुशी कुछ गम ले आये !
छलकाते वसंत निकले थे
लौटे तो पतझर भर लाये !

अब तुम नील झील के बदले
एक झलक चपला की पगले
पलकों में भर चले स्वयं तो
फिर क्यों बूंदों से निपटो रे !

गिरि-वन : 'चीड़-गंध' निश्वासें
जिनके निर्झर, उनकी प्यासें !
गीतों की गंगा जन जन को
कवि को शेष रह गयी सांसें !

काल-कंठ में उन्हें बचाये
कहीं पंथ में जो मिल जाए
लौट भले खाली आना पर
यह मत कहना—'हटो हटो रे !'

क्या भर लाये, क्या खो आये,
नयन कटोरे, नयन कटोरे !

—लक्ष्मी नारायण पांडेय

११७/एच-१/३१६, मॉडल टाऊन,
पांडुनगर, कानपुर-२०८००५

गजल

जब कभी ख्वाब में आ के वो जगाता है मुझे
याद बीते हुए लम्हों की दिलाता है मुझे

देखना चाहूं बुलंदी के फलक पर जिसको
मेरे मयार से वो शख्स गिराता है मुझे

तुझको भी मुझसे मुहब्बत है यकीं है मुझको
तेरे मिलने का ये अंदाज बताता है मुझे

कौन देता है ये दस्तक मेरे दरवाजे पर
ये मेरा वहम है या कोई बुलाता है मुझे

वो तेरे साथ में गुजरा हुआ एक-एक लम्हा
आग में गम कि शब-ओ-रोज जलाता है मुझे

—बृज अभिलाषी

१२२, रोगन ग्रान, देहली गेट,
गाजियाबाद-२०१००१

सुंदर और मेहनती : गद्दिनें

● गुरमीत बेदी

हिमाचल में आये सैलानी अगर यहां की प्राकृतिक छटा से मुग्ध हो उठते हैं तो यहां के निवासियों का स्नेहमयी व्यवहार, भोलापन और नैसर्गिक सौंदर्य भी उनके दिलों में कई मधुर स्मृतियां अंकित कर देता है । प्रकृति के रु-ब-रु होने और यहां के लोगों का अधिकाधिक सान्निध्य पाने के लिए सैलानी बार-बार यहां आने को लालायित रहता है । इस खूबसूरत प्रदेश में वैसे तो तमाम जातियों और जनजातियों के लोग निवास करते हैं, जिनकी अनूठी परंपराएं, अनूठे रीति-रिवाज और बोलियां हैं, लेकिन जिस जनजाति विशेष ने घुम्मकड़ों, कवियों और लेखकों को सर्वाधिक प्रभावित किया है. वह है— गद्दी जनजाति ।

चंबा : गृह क्षेत्र

यूं तो गद्दी लोग सारे हिमाचल में फैले हैं, लेकिन हिमाचल का चंबा जिला इन जनजातीय लोगों का 'गृह क्षेत्र' है । इस जिले की भरमौर तहसील में एक क्षेत्र है— 'गद्देरन' । जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह स्थल इन लोगों का स्थायी निवास है । यायावर प्रकृति के होने के कारण ये लोग कभी भी किसी भी ठिकाने पर स्थायी रूप से नहीं रहते, बल्कि अपनी भेड़-बकरियों के साथ मौसम के हिसाब से विभिन्न क्षेत्रों में पड़ाव डालते रहते हैं । सरदियों में ये लोग बरफीली घाटियों से निकलकर मैदानी इलाकों में आ जाते हैं, जबकि गरमियां शुरू होते ही फिर दुर्गम पहाड़ों का सफर तय करने लगते हैं । ये लोग शारीरिक रूप से गठीले और प्राकृतिक आपदाओं व कठिनाइयों से जूझनेवाले होते हैं ।

नृत्य-संगीत और कला की प्रेरणा—गद्दिनें

गद्दी पुरुषों की तरह गद्दिन महिलाएं भी गठीले बदन व स्वस्थ शरीरवाली होती हैं । गोरा-चिट्टा रंग, मोतियों से दांत, गुलाबी होंठ और चेहरे पर झलकती मासूमियत ही इन महिलाओं की विशेषता है । इनकी खूबसूरती व भोलेपन पर अनेक कविताएं लिखी गयी हैं । अनेक चित्रकारों ने अपने चित्रों में इनके सौंदर्य को आत्मसात किया है । विश्व विख्यात चित्रकार पद्मश्री शोभा सिंह ने तो अपने बहुचर्चित 'गद्दिन युवती' के चित्र में मानो रूह फूंककर रख दी है । नृत्य और संगीत तो मानो गद्दिनों की रग-रग में बसा है ।

गद्दिनों का लिबास भी बहुत खूबसूरत है और अपने लिबास के कारण ही ये पहचानी जाती हैं । गद्दिनें प्रायः सूती कमीज पहनती हैं । कमर के नीचे ये विशेष प्रकार का बना घाघरा

गोरा-चिट्टा रंग, मोतियों से दांत, गुलाबी होंठ और चेहरे पर झलकती मासूमियत ही इन महिलाओं की विशेषता है । इनकी खूबसूरती व भोलेपन पर अनेक कविताएं लिखी गयी हैं । अनेक चित्रकारों ने अपने चित्रों में इनके सौंदर्य को आत्मसात किया है । विश्व विख्यात चित्रकार पद्मश्री शोभा सिंह ने तो अपने बहुचर्चित 'गद्दिन युवती' के चित्र में मानो रूह फूंककर रख दी है । नृत्य और संगीत तो मानो गद्दिनों की रग-रग में बसा है ।

पहनती हैं, जिसके साथ पूरे बाजू का चोलीनुमा कुरता सिला होता है । घाघरे और कुरते के ऊपर वे काले रंग का डोरा बांधती हैं । काली भेड़ों की ऊन से बना यह डोरा चालीस से पचास गज लंबा होता है और चोली पर इस ढंग से बांधा जाता है कि इस पर असंख्य सिलवटें बन जाती हैं । इस डोरे का वजन भी तीन-चार किलो से कम नहीं होता । गद्दिन युवतियों में सिर को नंगा रखना अपशकुन माना जाता है । अतः सिर ढकने के लिए ये मोटा सूती दुपट्टा प्रयोग में लाती हैं, जिन्हें इनकी भाषा में 'चादरु' कहा जाता है । गद्दिनों को चांदी के आभूषणों से भी बहुत लगाव होता है । शरीर के विभिन्न अंगों पर पहने गये ये आभूषण गद्दिन युवतियों के सौंदर्य में चार चांद लगा देते हैं ।

सुंदर ही नहीं मेहनती भी

गद्दिनें जितनी सुंदर हैं, उतनी मेहनती भी होती हैं । जीवन के हर क्षेत्र में वे पति के कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं । यही नहीं, जब गद्दी पुरुष सरदी के महीनों में भेड़-बकरियों के साथ मैदानी इलाकों में निकल जाते हैं, तब भी गद्दिन महिलाएं घर में बेकार नहीं बैठतीं ! ये रात-दिन खड्डी पर शालें बनाने, ऊन कातने का काम करती हैं । गद्दिन महिलाओं द्वारा बनायी इन शालों और ऊन के पट्टुओं की मार्केट में बहुत मांग रहती है । हिमाचल में आये सैलानी तो मुंहमांगी कीमत देकर इन्हें खरीद लेते हैं । गद्दिन महिलाओं द्वारा तैयार की गयी 'पशम' की शालें बाजार में तीन से चार हजार तक बिक जाती हैं । इस तरह गद्दिन महिलाएं घर बैठे अपने परिवार की आय में वृद्धि करती हैं । एक तरह से गद्दी परिवारों की समृद्धि गद्दिन महिलाओं के परिश्रम पर ही निर्भर करती है । गद्दिन महिलाएं खेतीबाड़ी और ओखली में धान कूटने का काम भी स्वयं करती हैं । शायद इतने कड़े परिश्रम का ही यह कारण है कि गद्दिन महिलाएं बहुत कम बीमार पड़ती हैं । मोटापा

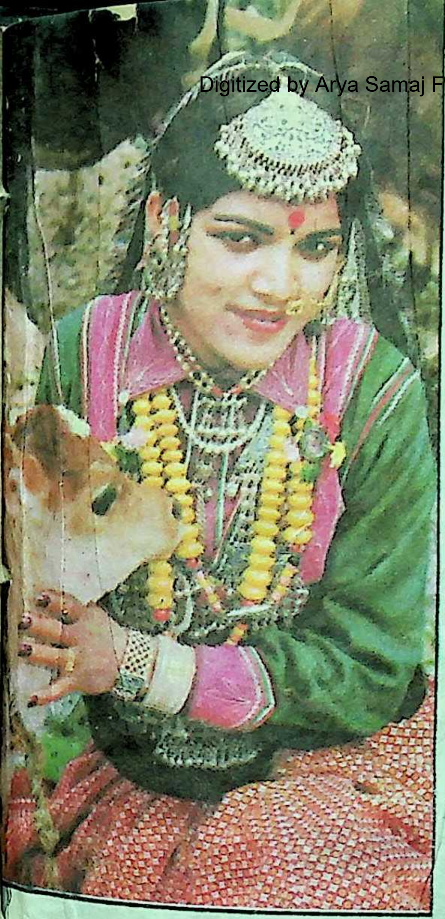

भी इनमें नाममात्र ही देखने को मिलता है । अपने हृष्ट-पुष्ट शरीर के कारण ये महिलाएं आम्तौर पर संतानोत्पत्ति के समय भी एक तरह से सामान्य होती हैं । बच्चे को जन्म देने के कुछ ही दिनें बाद ये फिर कड़े परिश्रम में जुट जाती हैं औरमीलों पैदल सफर भी सहजता से तय कर लेती हैं ।

गद्दिन महिलाएं अपने वैवाहिक जीवन में पति के प्रति बहुत वफादार होती हैं और इनमें तलाक का प्रतिशत भी नगण्य है । गद्दिन

लड़कियों के विवाह छोटी उम्र में ही हो जाते हैं ।

— राणा निवास,
बैजनाथ-१७६१२५
(हि.प्र.)

ममत्व की प्रतीक

छाया : गुरमीत बेदी

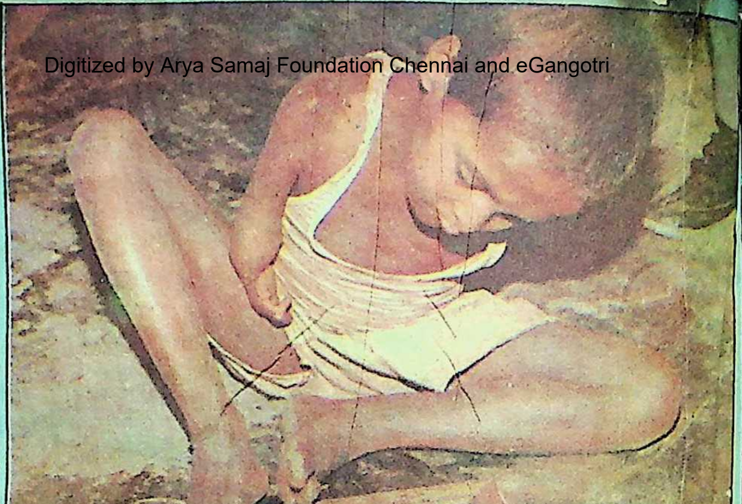

जहां चाह-तहां राह ▶

अपंग बच्चों का सहारा बना एक सपना

• पद्मसंभव

मेरा जुल हक : इनसानियत ही सबसे बड़ा मजहब ▶

अब ये बेसहारा नहीं ▶

मो ति
दु
में बसा
दिनों बिह
नि:संतान
कुल ११
को अपने
स्वावलंबी
करीब
दिखाते हु
में डूबे ब
पाया था
की जगह
से गांव वे
रहे थे ।
खिझा हउ
दिनों में य

करस
रहा है ।
कोई स्वास
करने के
चूंकि सेरा
गांववाले
दिनों उन्हें
देख गांव
खिल्ली उ
सेराजु
के बारे में
थी जूठी
उनकी क
पहले मैंने

अप्रैल,

मोतिहारी जिले से लगभग ३५ किलोमीटर दूर ढाका प्रखंड से ६ किलोमीटर उत्तर में बसा छोटा-सा गुमनाम गांव करसहिया इन दिनों बिहार में चर्चित है, जहां एक वृद्ध निःसंतान मुसलिम दंपति ने पिछले चार वर्ष से कुल ११० तिरस्कृत-उपेक्षित विकलांग बच्चों को अपने खर्च से लालन-पालन कर उन्हें स्वावलंबी बनाने का बीड़ा उठाया है ।

करीब २५ कट्ठे में फैली हुई अपनी नर्सरी दिखाते हुए सर्वोदयी सेराजुल हक पुरानी यादों में डूबे बताते हैं, "सामाजिक मोह से उबर नहीं पाया था । करसहिया में पुरानी ध्वस्त मसजिद की जगह नयी मसजिद नहीं बना पाने की वजह से गांव के लोग मेरा सामाजिक बहिष्कार कर रहे थे । इस कारण मैं खिन्न रहता था । खुद से खिझा हुआ इनसान मुरदे की तरह है— उन दिनों मैं यह सब सोचा करता था ।"

आम की जूठी गुठलियां

करसहिया वर्षों से विकास के स्पर्श से दूर रहा है । पहले यहां न कोई डिस्पेंसरी थी, न कोई स्वास्थ्य केंद्र और न कोई तालीम हासिल करने के लिए स्कूल ही । कभी कम्युनिस्ट रह चुके सेराजुल हक की बहकी बातें सुन-सुनकर गांववाले उन्हें सनकी समझा करते थे । उन दिनों उन्हें आम की जूठी गुठलियां इकट्ठा करते देख गांववालों ने इसे भी सनक समझकर खुब खिल्ली उड़ायी ।

सेराजुल हक पुरानी यादों के बीते चंद लम्हों के बारे में बताते हुए कहते हैं, "जब मैं आम की जूठी गुठलियां बटोरता था, तब वे मुझे सनकी कहते थे । बाद में, करीब ३२ साल पहले मैंने खाट भर जगह में बागवानी के लिए नर्सरी खोली । इससे मेरी आमदनी बढ़ती गयी । यह देख खिल्ली उड़ानेवाले गांव के भाई शरमा गये । अभी यह नर्सरी कुल २४ कट्ठे में फैली है । आम की उम्दा नस्लों की बानगियों, आयुर्वेदिक पौधे और दुर्लभ मसालों की लताएं इस नर्सरी में हैं । इसकी चर्चा दूर-दराज तक है । अब इस नर्सरी की आमदनी से ११० विकलांग बच्चों को सहेज रहा हूं, जिन्हें इनसानी मुहब्बत और दुआ की बेहद जरूरत है । अब मैं इनसान का बीज उगाता हूं, क्योंकि इनसानियत की किश्ती राजनीति और मजहबी झगड़ों में डूब रही है ।"

उन्हें पैसे की किल्लत कभी नहीं हुई, किंतु गांववालों के ताने सुनकर वे कभी अकेले में फफक-फफककर रोते । गांववाले उन्हें 'निःसंतान' कहकर खूब ताने देते । बड़े भाई शमसुल हक के आठ-आठ बच्चों को उन्होंने पाल-पोसकर खुद को बहलाना चाहा, किंतु उनके मन में टीस बनी रही । इस टीस को छुपाये सेराजुल हक वर्षों से तनाव झेल रहे थे । तभी एक घटना घट गयी । सन ८६ में गांव की मसजिद में नमाज अदा करने के वक्त छत दरक गयी और कुछ टूटी हुई ईंटें उनके मुंहबोले पोते पर गिर गयीं । वह घायल हो गया । खीझकर सेराजुल ने उस क्षतिग्रस्त मसजिद को ढहा दिया और नयी बुलंद मसजिद बनाने का एलान किया । इस हरकत से क्षुब्ध कुछ बुजुर्गों ने उन्हें सबक सिखाने का निश्चय किया । उन सबने तीन शहतीरें चुराकर बेच डालीं । सेराजुल इन बुजुर्गों के पास जाकर खूब गिड़गिड़ाये, ताकि बेचे गये शहतीर अधिक पैसे लेकर लौटा दें । उनके हम मजहब त्यौरियां चढ़ाये रहे और

> ***ईश्वर-अल्लाह सब बखेड़ा है— सच है मनुष्य का साहस और सहनशक्ति । इनसान-इनसान के बीच फर्क ऊपरवाला नहीं करता, हम उन्हें बांटते हैं ।''***

सामाजिक बहिष्कार करने का फतवा दे दिया। मजहब को मजबूत खंजर में बदलते देखकर सेराजुल को काफी पीड़ा हुई और उन्होंने सब्र करते हुए सबसे मुंह फेर लिया ।

स्वप्न में मां का निर्देश

मां की अमिट स्मृतियों से जुड़े सेराजुल अपना दर्द-हाल सुनाते हुए कहते हैं, ''सन १९८८ के अगस्त में भूकंप ने यहां तबाही मचायी थी । लोग घर-द्वार, खेत-खलिहान और रुपये-पैसे छोड़कर जान बचाने के लिए मुझे बीवी के संग छोड़कर रफूचक्कर हो गये थे । जिंदगी से उन्हें मुहब्बत थी और हम दोनों घुटनभरी जिंदगी काटते उनकी तरफ हसरत से देखा करते थे । जमीन-जायदाद से मोह अचानक टूट गया और इस बारे में मैंने अपनी पत्नी को बताया । इसके कुछ दिनों बाद मैंने अपने में अपनी मरहूम मां को देखा, जिनका इंतकाल हुए बीस वर्ष हो गये हैं । उन्होंने सपने में मुझे मजबूरों की खिदमत करने को कहा । सुबह में नींद खुलते इसका जिक्र मैंने पत्नी से किया । उसी वक्त उसने अपने पास रखे तीन हजार रुपये दे दिये । बगल की जमीन मैंने २२ हजार रुपये में बेच दी । इसी पूंजी के बल मैंने विकलांग सेवाश्रम का भवन निर्माण शुरू करा दिया । अपाहिज बच्चों के लिए 'लियाकत हुसैन सर्वोदय विकलांग विद्यालय' सेवाश्रम शुरू किया है, तब से आज तक मैंने पीछे मुड़कर देखा नहीं । ईश्वर-अल्लाह सब बखेड़ है— सच है मनुष्य का साहस और सहनशक्ति । इनसान-इनसान के बीच फर्क ऊपरवाला नहीं करता, हम उन्हें बांटते हैं ।''

यह पूछने पर कि स्थानीय लोग कुछ टीका-टिप्पणी करते होंगे, उन्होंने कहा, ''१ जनवरी, १९९१ ई. को जब सेवाश्रम खुला, तब गांववालों ने ताव में कहा कि यह अपशकुन है । लूलों-लंगड़ों को देखने से गर्भवतियों के अजन्मे बच्चे भी विकलांग पैदा होंगे, इसलिए सेवाश्रम बंद करो । मैं झुका नहीं और असहाय विकलांग बच्चों को ढूंढ़कर यहां पनाह देता गया । देश-विदेश से अखबारवाले और ऊंचे अफसरों को यहां आते देखकर अब वे इज्जत देते हैं और 'चाचा' कहकर बुलाते हैं ।''

'सेराजुल का स्वर्ग'

४ कट्ठा १४ धूर के भूखंड पर बने खपरैल इमारत में स्थापित सेराजुल का यह स्वर्ग राज्य से बाहर तक चर्चित हो रहा है । इस सेवाश्रम में अभी कुल ११ कर्मचारी हैं, जिनमें ७ शिक्षक हैं । बिना किसी धार्मिक भेदभाव के हिंदू-मुसलिम विकलांग सगे-सहोदर बनकर रहते हैं । पूर्वी और पश्चिमी चंपारण, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, वैशाली, समस्तीपुर और सीमावर्ती

देश नेपाल से आये ११० बच्चों में अधिसंख्य हिंदू परिवार के हैं । इस विकलांग सेवाश्रम में कुछ ऐसे बच्चे मिले, जो जीवन में रोशनी का इंतजार कर रहे हैं, भले ही अभी उनका जीवन अंधेरे से भरा हो । आश्रम में 'मुख्यमंत्री' का दरजा पाये और पहला आवासी १० वर्षीय उपेंद्र राय है । चकिया खंड के शीतलपुर गांव का यह विकलांग बालक चार वर्ष से यहां रह रहा है । उसे उसके दादा यहां छोड़ गये थे अपनी गरीबी से ऊबकर । निराश्रित, उपेक्षित उपेंद्र को बांहें नहीं है, फिर भी उसने प्रेम और ढाढ़स पाकर अपने पैर से लिखना सीख लिया है । हंसमुख उपेंद्र अपने धर्मपिता सेराजुल की गोद में लदा इतराता रहता है और घर को भूल इस स्वर्ग का दुलारा बना हुआ है ।

सेराजुल हक बताते हैं, "जब बिहार के मुख्यमंत्री लालूजी ने पद का शपथ लिया था, उसी दिन उपेंद्र इस आश्रम का वासी बना था । इसीलिए हमलोग इसे दुलार से 'सी. एम.' कहते हैं ।"

बच्चों के घेरे में खड़े सेराजुल किसी सूफी की तरह लगते हैं, जिसने अपाहिज बच्चों की सूरत में ईश्वर को देखा हो । इन्हीं बच्चों के संग कृष्ण कुमार गुप्त (८ वर्ष), राजीव कुमार (१२ वर्ष), दीनानाथ (११ वर्ष), रियाज, गणेश महतो, प्रमोद अपनी किस्मत को कोसने के बजाय जिंदगी को संवारने के लिए भरपूर कोशिश कर रहे हैं ।

जनता का सहयोग

सेवाश्रम में दैनिक जीवन की शुरुआत प्रातः प्रार्थना से होती है, पठन-पाठन से छुट्टी मिलते ही वे खेलों में डूबकर मनोरंजन करते हैं । जब शाम में सूरज ढलने लगता है, तब सामूहिक प्रार्थना होती है । रात पसरते ही बच्चे भोजन के बाद सोने की तैयारी में लग जाते हैं । इधर सेराजुल इस परेशानी में डूबे होते हैं कि रोज घट रहे अन्न भंडार और अन्य आवश्यक सामग्री का अभाव न हो । इसके लिए वे मोतिहारी और आसपास के जिलों में खैरात जुटाने के लिए जेठ की दुपहरी और हड्डी भेदनेवाली सर्द हवा की परवाह किये बिना भटकते रहते हैं ।

सेराजुल निराश्रित विकलांग बच्चों की तलाश में आसपास लगातार सर्वेक्षण कराते रहते हैं । इसके लिए वे अपने सहयोगियों को सुदूर इलाकों में भेजते हैं । जहां वे ग्रामीण परिवारों में विकलांग बच्चों की जानकारी करते हैं । इन

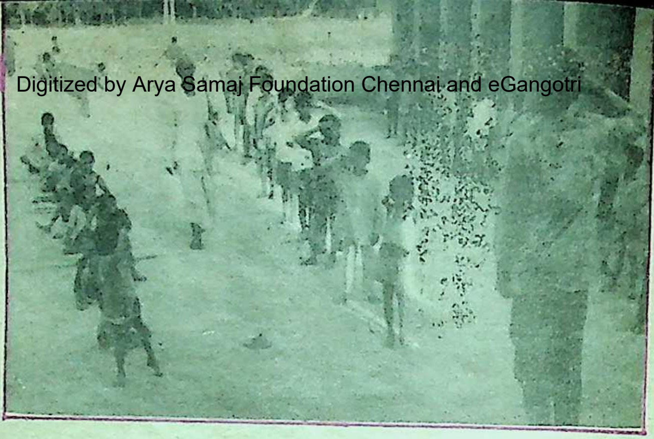

इलाकों में राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम अधूरा होने से नवजातों को उचित टीका नहीं लग पाने के कारण पोलियो खूब फैला हुआ है । सेराजुल पोलियो के खिलाफ जनमत भी तैयार कर रहे हैं । इस पुण्य कार्य में राजधानी और क्षेत्र के अनेक व्यावसायियों का सहयोग भी उन्हें मिलता है । पिछले वर्ष १७ अप्रैल, ९४ को सेंट्रल बैंक ऑव इंडिया के आंचलिक प्रबंधक की ओर से एक विशेष आयोजित समारोह में इस सेवाश्रम को यथेष्ट वित्तीय सहायता दी गयी है । सेवामूर्ति सेराजुल हक को राज्य के कोने-कोने से आर्थिक सहायता भी मिलने लगी है ।

भविष्य की योजनाएं

भविष्य के बारे में कुछ बताते हुए सेराजुल हक कहते हैं, ''अभी सेवाश्रम में ११० बच्चे-बच्चियां हैं । इनमें ३६ विकलांग बच्चियां मात्र पढ़ने के लिए यहां आती हैं । उनके लिए अभी आवासीय सुविधा नहीं है । इनके रहन-सहन, पढ़ाई-लिखाई, चिकित्सा और वस्त्र के मद में प्रति माह लगभग ३०-३५ हजार रुपये खर्च होते हैं । इसमें सहायकों-शिक्षकों का पारितोषिक भी शामिल है । इतनी मोटी रकम अपनी नर्सरी के पौधे बेचकर और खैरात इकट्ठा कर जुटा रहा हूं ।''

सरकारी मदद मिलने की बात कहने पर सेरापुत्र तनिक तमतमा जाते हैं, फिर संभलने पर कहते हैं, ''मैं छठी जमात तक पढ़ा हूं । लिखने-पढ़ने में कमजोर हूं और सरकारी दफतरों में दौड़-धूप नहीं कर सकता । राजधानी में सचिवालय से पैसा मंजूर होता है, किंतु स्थानीय दफतर से यह जवाब मिलता है कि कुछ खर्च करो । क्या यह सेवाश्रम अपने पेट के लिए चला रहा हूं ? समाज से ठुकराये बच्चों को मैं पाल रहा हूं, क्या यह मेरा ही फर्ज है ? समाज का कोई फर्ज नहीं ? तत्कालीन जिला अधिकारी रमेश अभिषेक का मैं तहेदिल से आभारी हूं । उन्होंने मुझे भरपूर सरकारी मदद दी थी । अपनी पत्नी शबीला खातून का भी आभारी हूं, जिसके सोने के उन्नीस जेवर इस सेवाश्रम को चलाने में बिक गये ।''

पास ही खड़ी उनकी पत्नी शबीला खातून लिहाज करती बताती है, ''सन १९५९ में इनसे निकाह हुआ था । इन्होंने जो कहा है, वही मैंने किया । जब भी पैसे की कमी हुई, मैं अपने जेवर उतारकर इन्हें देती गयी ।''

'करसहिया का सनकी' नाम से ख्यात

सेराजुल आगे की योजनाओं के बारे में बताते हैं, "पापी पेट का निर्वाह करना मनुष्य का महज स्वार्थ है। भूखा न तो वेद पढ़ सकता है, न नमाज अदा कर सकता है। सेवाश्रम में जल्द ही व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था करनेवाला हूं, जो ग्रामोद्योग पर आधारित होगा। उन्हें चरखा चलाना, कटाई-सिलाई, टोकरी बुनना आदि उत्पादक कार्य का प्रशिक्षण दिलाना चाह रहा हूं। खाका तैयार होते ही यह काम शुरू हो जाएगा।"

बातचीत के बीच यह टोकने पर कि यदि उन दोनों को भारत सरकार कोई बड़ा पुरस्कार दे, तो क्या स्वीकार करेंगे ? दोनों एक-दूसरे को देख मुसकराते और कहते हैं, "ईनाम नहीं, ईमान के लिए हम कुछ करना चाह रहे हैं। इनसानी मुहब्बत और खुदा की खिदमत हमारी झोली में रहे— यह आरजू है। बेसहारे बच्चे हमारे लिए भी दुआ मांगें, वे याद भर कर लें कि हम सनकी नहीं थे, बस इनसान थे उनकी तरह !"

जीवन यापन योग्य सारी संपत्ति सार्वजनिक दान देकर निराश्रित अपंग बच्चों में मस्त सेवामूर्ति सेराजुल का स्वर्ग अब एक सनकी का सपना न रहकर सरकारी कल्याण केंद्रों और कार्यक्रमों के लिए उदाहरण बन उस असीम ईश्वरीय सत्ता का अहसास देता है जिसकी छाया में सारे मनुष्य संग-संग जी रहे हैं।

— बेलवरगंज,
पो.—गुलजारबाग
पटना-८०००० ७

विश्व में महिलाएं ज्यादा दीर्घायु

विश्व स्वास्थ्य संगठन से प्रकाशित सांख्यिकी के अनुसार औरतें सारे विश्व में पुरुषों की तुलना में अधिक दिनों तक जिंदा रहती है—

जापान के लोग सबसे अधिक दीर्घायु होते हैं। वहां औसत जीवन दर पुरुष की ७६.३ वर्ष तथा महिला की ८३ वर्ष है।

फ्रांस में महिला का औसत जीवन ८२ वर्ष, स्विट्जरलैंड में महिलाओं की औसत आयु ८१.७ वर्ष है।

विश्व में पुरुषों की औसत आयु ६३ वर्ष तथा महिलाओं की ६७ वर्ष है। भारत में पुरुषों की औसत आयु ५८ वर्ष तथा स्त्रियों की ५९ वर्ष है। श्रीलंका में पुरुषों की औसत आयु ६८ वर्ष तथा स्त्रियों की ६३ वर्ष है। पाकिस्तान में पुरुषों की औसत आयु ५६ वर्ष तथा स्त्रियों की ५७ वर्ष है। भूटान में पुरुषों की औसत आयु ४६ वर्ष तथा स्त्रियों की ४९ वर्ष है। अफगानिस्तान में पुरुषों की औसत आयु ४१ वर्ष तथा स्त्रियों की ४२ वर्ष है।

— लक्ष्मी सोनी

कहानी

वापसी

● डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

...'दरअसल, जिंदगी में पहली ही बार, जो तन-मन में छा जाए, सांसों में समा जाए, आंखों में रम-रमा जाए, लाख कोशिश करने पर भी, फिर उसे कभी भूल ही नहीं सकते । बस, आप भी, कुछ ऐसे ही, दिल की धड़कनों में, रस-बस गये कि जब-तब, आपकी महकती यादें, प्राणों में हलचल-सी मचा देती हैं । अंग-अंग में, अगन-सी लगा देती हैं । रंध्र-रंध्र में तूफान-सा खड़ा कर देती हैं...'

पत्र की कुछ ही पंक्तियां पढ़कर, मैं सहसा सकपका-सा गया । आंखें अनायास डबडबा गयीं । स्मृतियां छलछला गयीं । सालों के

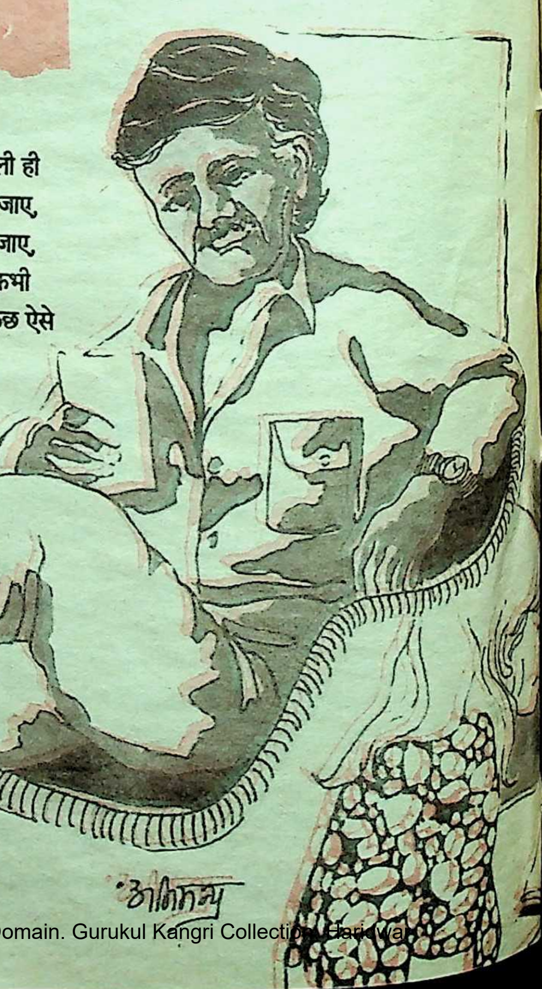

पत्र की कुछ पंक्तियां पढ़कर मैं सहसा सकपका-सा गया । आंखें अनायास डबडबा गयीं, स्मृतियां छलछला गयीं । सालों के अंतराल के बाद आज अचानक, उसका प्रेम-पत्र पाकर मेरा रोम-रोम रोमांचित हो गया । अंतर्मन छटपटा-सा गया । न जाने क्यों, कैसे वह यों ही मेरे जीवन में आयी और सब कुछ हमेशा-हमेशा के लिए गड़बड़ा गयी । एक प्रकार से सब उलट-पलट गयी ।

अंतराल के बाद, आज अचानक, उसका प्रेम-पत्र पाकर, मेरा रोम-रोम रोमांचित हो गया। अंतर्मन छटपटा-सा गया । न-जाने क्यों, कैसे, वह यों ही, मेरे जीवन में आयी और सब-कुछ हमेशा-हमेशा के लिए गड़बड़ा गयी। एक प्रकार से, सब उलट-पलट गयी ।

शेफाली, हां, शेफाली, तुमने ही तो, मेरी जिंदगी के सारे ताने-बाने, बातों-ही-बातों में, तितर-बितर कर दिये । मेरे हंसते-मुसकराते रंगीन इंद्रधनुषी सपनों पर प्रश्न-चिह्न लगा दिये ! मेरे उमड़ते-घुमड़ते-लरजते अरमानों, पर तड़ातड़ बिजलियां गिरा दीं !

भला, वह दिन तुम कभी, जिंदगी में भूल सकोगी, जब तुम बिलकुल सुध-बुध खो बैठी और एकदम मुझसे लिपट गयी । तुम पर न जाने, एकाएक, कैसा भूत सवार हुआ कि तुम जोर-जोर से मुझे चूमने लगी और मैं हक्का-बक्का, जैसे आसमान से जमीन पर गिर पड़ा । फिर आव-देखा-न ताव, तड़ाक-तड़ाक तमाचे जड़ता रहा तुम्हारे कोमल-कोमल गालों पर । और तुम्हारे प्यारे पिता, दूर से ही, अपनी आंखों से, यह तमाशा देखकर कैसे एकदम जल-भुनकर आग-बबूला हो गये । फनफनाते हुए आपे से बाहर हो गये और उसी वक्त मुझे निकल जाने को कहा । दुबारा घर में कदम रखने पर, जान से मारने तक की धमकी दे डाली और मैं खिसियाया-सा सहमा-सहमा, चुपचाप खिसक गया । वापस अपने कमरे में आने पर, जानती हो, घंटों मैं, अपने को कोसता रहा । धिक्कारता रहा । अपने गालों पर तड़ातड़

चांटे कसता रहा, लेकिन जो बात होनी थी, वह तो होकर ही रह गयी। मुझे अपने से इतनी ग्लानि हुई, ऐसी नफरत हुई कि जैसे मुझे चुल्लूभर पानी में डूब जाना चाहिए था। वैसे तो, तुम खूब जानती हो मैंने तो कभी कुछ भी नहीं किया था। महज तुम्हें बचाने के लिए ही चुप रहा। और उस वक्त मैं कर ही क्या सकता था? तुम्हीं बताओ।

× × × ×

वैसे, कभी-कभी आदमी के दिल के अंदर क्या होता है और बाहर दिखाने के लिए, वह कैसे-कैसे स्वांग रचता है। कितने-कितने मुखौटे लगाता है, लेकिन लगता है तुम्हें शायद किसी प्रकार, मेरे अंतर्मन की भनक मिल गयी थी। इसीलिए तो, तुम जान-बूझकर, बेधड़क ऐसी हरकत कर बैठी और मुझ पर तो मालूम हैं है, उन दिनों पढ़ाने की झक सवार थी। सच कहता हूं शेफाली, मन तो मेरा भी, जब तब, तुमसे लिपटने के लिए ललकता रहता। तुम्हें पाने के लिए मचलता रहता। तुम्हें अपनी बांहों में भरने के लिए तरसता रहा, तुम्हें चूमने के लिए छटपटाता रहता, लेकिन मन जो चाहता है क्या वह, सब कर पाता है। दरअसल, हम अपनी-अपनी सीमाओं में, अपनी-अपनी परिस्थितियों में, यों कहिए, अपने-अपने बुने-बुनाये मकड़-जालों में, इस कदर बंधे-बंधे, जकड़े-जकड़े-से हैं कि अपनी इच्छानुसार तो, कभी कुछ कर ही नहीं पाते। और वैसे भी, उन दिनों, तुम्हारा और मेरा रिश्ता भी तो कुछ और ही तरह का था। कैसे मैं यों ही फिसल पड़ता। ऊपर से मर्यादा का प्रश्न भी तो, जब-तब, मुंह-बाये सामने खड़ा रहता।

वैसे, तुम्हारी चहकती-महकती चुलबुली मीठी-मीठी फुलझड़ियां, शरारतभरी छोटी-मोटी छेड़खानियां, नित नयी-नयी मन-मोहिनी रूप-छवियां, रंग-रंगीली रसीली अंग-झलकियां, मुल-मुल मुसकराती मदभरी भाव-भंगिमाएं, और न जाने कितनी-कितनी कैसी-कैसी कारिस्तानियां तो, बारहवीं कक्षा में चार विषयों में डिस्टिंकशन आने पर ही शुरू हो गयी थीं। कभी तुम, मेज से बिलकुल सटकर अपने उभरते उरोजों का उफनता उभार खुलकर प्रदर्शित करती तो कभी मेज के नीचे से अपनी टांगें मेरी टांगों से अड़ाकर, सारे शरीर में सनसनाहट-भरी सरसराहट-सी फैला देती। कभी काफी देर तक, एकटक, मेरे चेहरे को ही निहारती रहती तो कभी अंदर-ही-अंदर, अपने बवंडर-भरी छटपटाहट से मचलती-तिलमिलाती-सी रहती।

और यह सब मैं अंदर-ही-अंदर, चुपचाप महसूस करता रहता। मन मसोसकर कसमसाता रह जाता। भीतर-ही-भीतर एक भयंकर ज्वालामुखी भभकता रहता, जिसकी लपलपाती लपटों में झुलसता रहता। बिना कुछ जताए, 'ननु-नच' किये सब सहता रहता। दिल में हमेशा एक झिझक या हिचक-सी रहती। इसीलिए तुम्हारी उत्तेजक हरकतों को, मैंने, कभी किसी प्रकार की, कोई तूल नहीं दी। कोई बढ़ावा नहीं दिया। अपनी तरफ से, कभी भी, थोड़ी-सी भी ढील नहीं दिखायी। बड़े मनोयोग से तुम्हें रोज पढ़ाता और फिर यों ही, जैसे कुछ हुआ ही न हो, मुसकराता खिसक जाता।

× × × ×

आई. सी. एस. ई. में, मतलब, दसवीं में तुम्हारे बहुत अच्छे अंक नहीं आये थे। कम-से-कम, आई.एस.सी.— बारहवीं में तो, अस्सी से ऊपर ही नंबर आने चाहिए। इसीलिए तुम्हारे पिता ने अपने पड़ोसी से अच्छे ट्यूटर ढूंढ़ने की तजबीज की थी, जो तुम्हें विज्ञान और गणित पढ़ा सके, क्योंकि आजकल कम नंबरवालों को कॉलेज में एडमिशन मिलने में बहुत बड़ी दिक्कत होती है। मैं उन दिनों तुम्हारे पड़ोसी द्वारा, अपने ही घर पर ही, चलाये गये कोचिंग इंस्टिट्यूट में पढ़ाता था। एम.एस.सी. कर रहा था। वैसे, शुरू से ही, मैं अपने ही बलबूते पर, जैसे-तैसे, अपनी गाड़ी खींचता चला आया। बचपन में ही, सौतली मां के दुर्व्यवहार और उत्पीड़न से तंग आकर, मैं पहाड़ छोड़कर शहर पहुंच गया था। तब कितने-कितने धक्के-मुक्के खाये। कैसे-कैसे पापड़ बेले। कैसी-कैसी मुसीबतें झेलीं। कितनी-कितनी कठिनाइयों का सामना किया। कैसे दर-दर की ठोकरें खायीं। किधर-किधर भटका। कैसे-कैसे दिन काटे। ऊपरवाला ही जानता है।

परदेस में, भला, कौन किसको घास डालता है। सभी को अपनी-अपनी लगी रहती है। अपनी-अपनी जान के लाले पड़े रहते हैं। कोई किसी की परवाह ही नहीं करता। यों कहिए कोई किसी को पहचानता ही नहीं। बस, सुबह से लेकर, देर रात तक, भगदड़ मची रहती है। सब भागे जा रहे हैं। किसी को किसी से बतियाने की फुरसत ही नहीं। किसी को किसी दूसरे का कोई खयाल ही नहीं। सब अपने-अपने दायरों में सिमटे हुए। अपनी-अपनी उलझनों में उलझे हुए। अपने-अपने ऊहापोहों में फंसे हुए। हां, ऐसे माहौल में बस, जब-तब, रह-रहकर, पहाड़ों की याद आती। तब भीतर-ही-भीतर एक उमड़-घुमड़-सी मच जाती। दिल के टुकड़े-टुकड़े-से हो जाते। आंखें छलछला जातीं। वहां तो जब कभी, घर में ठीक से खाना

नहीं मिलता तो जंगल में जी भरकर लाल-लाल पक्के-पक्के काफल खाते । ऊंचाइयों पर रीछों का डर होते हुए भी, खूब छक-छककर भमोरे खाते । जंगलों में गाय-बकरियां चराते हुए ढेर-सारे हींसर-किनगौड़-घिंगारु डट-डटकर डकार जाते और फिर बांज की जड़ों का मीठा-मीठा ठंडा-ठंडा पानी पीकर मदमस्त हो जाते । बस, बार-बार, पहाड़ों की याद सताती रहती और तब मन एकदम उदास-उदास, दुखी-दुखी-सा हो जाता । किसी भी काम पर दिल नहीं लगता । फुर्र से वहीं उड़ने का जी करता, लेकिन फिर, एकाएक पढ़ाई का ध्यान आता तो जैसे-तैसे अपने को संभालता । इस प्रकार पढ़ाई के साथ-साथ, छोटे-मोटे काम भी करता गया और जैसे-तैसे, रात-दिन एक कर, अपनी पढ़ाई भी करता गया । कॉलेज के बाद हरदम पढ़ाने के ही चक्कर में उलझा रहता ।

× × × ×

दो साल तक तो, मतलब, ग्यारहवीं और बारहवीं में, तुमने मन लगाकर पढ़ाई की । जमकर कड़ी मेहनत की । डटकर काम किया । और मैंने भी तुम्हें पढ़ाने में कभी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी । घंटों खुद तैयारी कर, तब तुम्हें बड़े मनोयोग से पढ़ाता । उसी का नतीजा था कि आई.एस.सी. में तुमने, एक प्रकार से, सबके छक्के छुड़ा दिये । चार विषयों में डिस्टिंकशन— नब्बे से भी ऊपर नंबर । सचमुच तुमने कमाल कर दिखाया ।

तुम्हारे प्यारे पिताजी तब कितने गद्‌गद् हुए थे ? कितने प्रसन्न । कितनी-कितनी मिठाइयां बांटी थी उन्होंने ? कितने-कितने कीमती उपहार दिये थे तुम्हें ? और मुझे भी तो एक बहुत ही बढ़िया महंगा सूट दिया था । साथ में ड्राईफ्रूट का एक बहुत बड़ा पैकेट भी । कैसे-कैसे मीठे शब्दों में, कितनी-कितनी बार मेरे प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया था और तुम्हें फिर से बी.एस -सी. में भी पढ़ाने के लिए जोरदार निवेदन किया था । ट्यूशन फीस भी तिगुनी कर दी थी । यहां तक कि अपने ही बंगले में रहने के लिए जगह भी देने लगे थे । मैंने ही तब उसे स्वीकार नहीं किया था, क्योंकि मैं जिन लोगों के यहां रहता था, वे बहुत ही भले थे । मुझे अपने बेटे के समान मानते थे । वैसे भी, मुझसे नाममात्र के लिए किराया लेते थे ।

× × × ×

और बी.एस.सी. में कदम रखते ही तुम एकाएक डगमगा-सी गयी । तुम पर, न-जाने कैसे, एकदम पर-से लग गये । जब-तब तुम जान-बूझकर पढ़ाई के वक्त, इधर-उधर के मजेदार किस्से छेड़ देती । कहां-कहां की हांकने लग जातीं । पढ़ाई पर तो अब बिलकुल ध्यान नहीं देती । बस, किसी-न-किसी बहाने, कोई-न-कोई ऊल-जलूल शरारत । और मैं सब समझकर भी अनजान-सा बना रहता ।

वैसे भी, बचपन के बने संस्कार और कूट-कूटकर भरी कर्त्तव्य-भावना, आड़े खड़ी हो जाती और मैं अपने को एकदम रोक देता । दूसरे, पहाड़ी परिवेश में पला । भला, कैसे डगमगाने का साहस करता, मगर तुम पर तो, एक ओर, चढ़ती-उफनती-फरफराती जवानी का जानलेवा नशा, दूसरी तरफ मदमाती मुहब्बत का फितूर सवार । जब-तब तुम अपने मनोभाव

जताने के लिए कुछ-न-कुछ छेड़खानियां करती ही रहती और मैं हर बार तुम्हारे खुले इशारों को, यों ही, हवा में उड़ा देता । मन-ही-मन सोचता । कहां तुम और कहां मैं ? कहां तुम्हारे ठाठ-बाट । और कहां अपने फटेहाल । कहीं कोई तालमेल ही नहीं ? अपना न कोई आगे और न कोई पीछे । न कोई ठौर-ठिकाना । जैसे-तैसे ट्यूशन और छोटे-मोटे काम कर बड़ी मुश्किल से एम.एस.सी कर पाया था । बीच में कई जगह अर्जियां भी भेजीं पर कहीं बात ही नहीं बनी । कहीं हजारों देने की बात तो कहीं उठता सिफारिश और पहुंच का सवाल । झक मारकर कुछ दिनों के लिए एक स्कूल में चिपक गया था, जहां लगातार कोल्हू के बैल की तरह, खटने पर भी, गुजारेभर के लिए थोड़ा-बहुत मिल जाता था । लेकिन उस दिन, तुमने बिना कुछ सोचे-समझे, बिना आगे-पीछे देखे, एकाएक, जो उदंड-भरा कांड खड़ा किया, उससे सब गुड़-गोबर हो गया । सारे किये-कराये पर पानी फिर गया । यों समझो, सब एकदम चौपट हो गया । तुम्हारे हंगामे से ट्यूशन तो बंद होनी ही थी, मुझे भी, झक मारकर, तुम्हारा शहर छोड़ना पड़ा । मेरे लिए कोई और चारा ही न था, क्योंकि ऐसी हालत में, मैं किसी भी कीमत पर, वहां ठहर ही नहीं सकता था । मेरे लिए फिर नये सिरे से, वही भटकन, वही दर-दर की ठोकरों का सिलसिला शुरू ।

तुम्हारा क्या ? ऊंचे खानदान की इकलौती बेटी । बड़े नाज-नखरोंवाली । बड़े लाड़-प्यार से पली । सबकी दुलारी, और बाप को तो अपनी जान से भी प्यारी । वैसे, तुम्हारे पिता ने भी तो बिलकुल सही कदम उठाया, क्योंकि वह तुम्हारा ब्याह किसी बड़े संपन्न परिवार में ही करना चाहते थे । मेरी हैसियत ही क्या थी । वैसे भी, कुमाऊंनी ब्राह्मण, भला किसी दूसरी जाति के लड़के से कैसे तुम्हारा रिश्ता करने की हिम्मत करते । वैसे, भले ही पूरी जिंदगी कुमाऊं से बाहर ही बीती हो, लेकिन शादी-ब्याह के मामले में भला, बिरादरी से बाहर कैसे जाते ?

× × × ×

और मुद्दत के बाद जब एकाएक प्रेम से लबालब भरा तुम्हारा पत्र मिला, तो मैं बिलकुल हक्का-बक्का-सा रह गया । विश्वास ही नहीं हुआ कि तुम अब तलक भी मेरे इंतजार की घड़ियां गिन रही हो । दरअसल, तुम्हारा शहर छोड़ने के बाद कहां-कहां भटका । कहां-कहां की खाक छानी । कितने-कितने दफ़्तरों के दरवाजे खटखटाये— कहीं कोई हिसाब ही नहीं । लंबी भटकन के बाद आखिर में, जैसे-तैसे, एक विज्ञान-पत्रिका का संपादक बन गया । कविताएं और कहानियां तो पहले से ही लिखता था । अब विज्ञान पर भी लिखने लगा । पाठकों के ढेर-सारे प्यारे-प्यारे पत्र प्राप्त होने लगे और अब तुम्हारा पत्र पाकर तो मैं एकदम सातवें आसमान में उड़ने लगा । तुमने अपने लंबे पत्र में कितनी-कितनी बातें लिखी हैं, लेकिन तुम्हारे पत्र की अंतिम पंक्तियों ने तो मुझे एकदम झकझोर दिया । हिला दिया । ... 'आपके चले जाने के बाद आपको ढूंढ़ने की लाख कोशिशें कीं, किंतु आप कहां मिलते । आपका कहीं कोई अता-पता तो था ही नहीं । उस हादसे के बाद पिताजी ने मुझे मनाने की हर तरह से

कोशिश की । रोज कुछ-न-कुछ करते ही रहते, लेकिन मैं हमेशा ही उदास-उदास, रूठी-रूठी-सी चुपचाप रहने लगी । बस, चुपचाप अपने में ही सिमटी-सिमटी, खोयी-खोयी-सी सिसकती रहती । पिताजी बेहद परेशान-से रहने लगे । मेरे ब्याह के बारे में जब कभी बातें करते, मैं रोने लग जाती । कइयों को घर पर भी बुलाया, लेकिन मैं कुछ बोलती ही न थी । बस, इसी से उन्हें भयंकर सदमा पहुंचा और फिर अचानक जानलेवा दिल का दौरा । पिताजी की अचानक मौत से मैं कहीं की न रही । मां तो, आपको पता ही है, बचपन में ही किसी दुर्घटना का शिकार हो गयी थी । ... आपकी तलाश में भी फिर यों ही भटकती रही । हर तरफ से निराशा-ही-निराशा । और उस दिन विज्ञान-पत्रिका में आपकी कहानी के साथ-साथ आपका फोटो देखा तो मैं खुशी से नाच उठी... वैसे, मुझे उन्हीं दिनों, एक प्रकार से, पूरा विश्वास हो गया था कि आप भी मुझे चाहते हैं । प्यार करते हैं । भले ही, अपनी मजबूरी की वजह से आप कुछ कह नहीं पाते और फिर तो उस दिन की मेरी बचकानी हरकत से सारी बात ही बिगड़ गयी... मैं आपकी हूं... हमेशा-हमेशा आपकी रहूंगी । अगर आप मुझे अब भी चाहते हैं तो पत्र पाते ही अपने शहर, अपने घर चले आइए । मैं पल-पल आपकी प्रतीक्षा में आपकी बाट जोह रही हूं । आपके बिना, हर पल, बिना पानी की मछली की तरह तड़फती रहती हूं । मेरे पास शब्द ही नहीं हैं, जो मैं अपना हृदय खोल सकूं । आपकी ही ये पंक्तियां...

— **'कितने सावन बरसे तबसे, पतझर झरे जाने कितने,**
पलकों के पंख मगर, अब तलक थके नहीं ।'

... रह-रहकर जब-तब अंतर्मन में हलचल-सी मचा देती हैं...

× × × ×

पूरा पत्र पढ़कर, काफी देर तक, मैं यों ही उड़ा-उड़ा, चुपचाप, पड़ा रहा किंतु फिर उसी रात, उसी पुराने शहर को जानेवाली रेल पर, एकाएक, यंत्रवत् सवार हो गया ।

— शैल शिखर, मसूरी

डेनमार्क में प्रचलित एक मान्यता के अनुसार घोड़े की नाल को घर की दीवार पर ठोकने से भाग्य साथ नहीं छोड़ता है ।

बहरहाल, भौतिकी का नोबेल पुरस्कार प्राप्त करनेवाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक नील्स बोर को मिलने आये एक मित्र को यह देखकर अचंभा हुआ कि उनके घर की दीवार पर भी घोड़े की नाल ठुकी थी । घर के अंदर पहुंचकर उन्होंने बोर से कहा, ''मुझे नहीं लगता कि तुम घोड़े की नाल से जुड़े अंधविश्वास में यकीन करते हो ।''

''कतई नहीं'' बोर चहकते हुए बोले, ''किंतु सुना यही है कि इससे फायदा होता है ।''

— सुभाष लखेड़ा

अपराध की दुनिया के 'शहंशाह'

अपराध-प्रवृत्ति के कारण कंजर जाति का कहीं एक ठाम-ठिकाना नहीं रहा है ।

• सुमन आदित्य

देश में अलग-अलग ठौर-ठिकानों पर बसे 'कंजर' अभी भी अपराधी दुनिया के 'शहंशाह' माने जाते हैं । बदलते वक्त के परिवेश में इन्होंने नये तौर-तरीके जरूर ढूंढ़ निकाले हैं, पर अपराध के अपने मूल पेशे को यह आज तक नहीं छोड़ पाये हैं । सरकार ने कई कंजर सुधार योजनाएं चलायीं और उसके मुताबिक इन्हें इज्जतभरी जिंदगी जीने की सीख दी गयी, मगर यह आज भी जहां के तहां हैं । इनकी अपनी अलग परंपराएं हैं, अलग रीति-रिवाज हैं और यहां तक कि अलग ही अपराध करने की प्रवृत्ति हैं ।

चोरी और नकबजनी के अपराध में अगुवा कंजर-जाति के लोग अपनी अलग-थलग जिंदगी जीने में यकीन करते हैं । इतिहास में यद्यपि इनका कहीं विशेष विवरण नहीं आया है, फिर भी इनके रंग-रूप को देखकर लगता है कि यह मध्य एशिया के आर्यों की संतान हैं । राजस्थान में यह जाति सवाई माधोपुर, कोटा, बूंदी व झालावाड़ जिलों में पायी जाती है । वैसे यह देश के विभिन्न राज्यों में फैले हुए हैं ।

सदियां गुजर जाने के बाद भी इनकी आदत वही है । देश के कई पुलिस थानों में इन्हें आज भी रोज जाकर अपनी हाजरी देनी पड़ती है । पुलिस इन पर खास निगाह रखती है, क्योंकि इनका भरोसा नहीं है कि यह कब क्या करामात दिखा जाएं । पुलिस के लिए सिरदर्द बनी यह कौम परंपरागत तरीके से करती चली आ रही प्रवृत्तियों को बदलने के लिए किसी भी हद तक तैयार नहीं है । कहीं यह वैश्यावृत्ति से जुड़कर देह-व्यापार करती हैं, तो कहीं चोरी व लूटपाट से पेट पालती हैं । इस जाति में बहुत कम लोग हैं जो खेती और नाच-गाकर अपना गुजारा करते हैं ।

कंजर जाति ने कहीं पिंडारियों की मदद कर उनकी फौज को मिली सूचनाओं के जरिये

चोरी और नकबजनी के अपराध में अगुवा कंजर-जाति के लोग अपनी अलग-थलग जिंदगी जीने में यकीन करते हैं । इतिहास में यद्यपि इनका कहीं विशेष विवरण नहीं आया है, फिर भी इनके रंग-रूप को देखकर लगता है कि यह मध्य-एशिया के आर्यों की संतान हैं । राजस्थान में यह जाति सवाई माधोपुरा, कोटा, बूंदी व झालावाड़ जिलों में पायी जाती है ।

रजवाड़ों में भारी लूटपाट व आगजनी की, तो कहीं हलाकू को साथ देकर लूटपाट का सिलसिला चलाया । इसी वजह से समाज ने इनको हमेशा तिरस्कार की दृष्टि से देखा और इन्हें समाज की नजरों में नीचा और आपराधिक माना गया ।

कंजरों के सामाजिक रीति-रिवाज अत्यंत पेचीदे और कठोर हैं । समाज में सबसे प्रमुख आदमी 'पटेल' होता है और उसे इनकी हर प्रवृत्ति का पता रहता है । यह पटेल से कोई बात नहीं छुपाते और चोरी के माल से उसे भी पटेलाई का हिस्सा देते हैं । पटेल को चोरी करने जाने से लेकर वापसी तक की पूरी खबर होती है । वक्त-जरूरत पकड़े जाने पर पटेल ही उनकी मदद करता है । राजनेताओं व पुलिसवालों से संबंध बनाना पटेल की जिम्मेदारी होती है ।

इनके समाज द्वारा दी गयी सजा अदालत की सजा से भी कठोर होती है । सजा का निर्धारण अपराध के हिसाब से किया जाता है । सगाई-संबंध अपने-आप तय नहीं होते हैं । यह जिम्मा बुजुर्गों पर होता है । बहुधा कम उम्र में सगाई का इनमें रिवाज है और एक शराब की बोतल व मुरगे में सगाई पक्की हो जाती है । इनके मकानों में किवाड़ नहीं होते । यह कभी फूस और कभी खपरैल से अपने मकान के दरवाजों को ढकते हैं । मकानों में इस बात की पूरी व्यवस्था रहती है कि मौका पड़ने पर यह फूस हटाकर भाग छूटें । दबिश पड़ने पर मकानों पर बूढ़ी डोकरियां व वृद्धजन मिलते हैं । जवान कंजर व लड़कियां भाग छुटती हैं । यह हमेशा सतर्क रहते हैं ।

शादी के वक्त पाणिग्रहण संस्कार के लिए यह पंडित को नहीं बुलाते । भुआ फेरे डलवाते हैं । इनमें बला की एकता है । एक कंजर पर आफत आने पर सब उसकी मदद करते हैं । पंचायत के नियम और कानून-कायदे सबको मानने पड़ते हैं । उसकी कोई अपील नहीं होती है । चोरी के वक्त यदि इनका कोई आदमी मारा भी जाए या घायल हो जाए तो यह उसे उठाकर लाने में अपनी जान भी दांव पर लगा देते हैं । यहां तक कि मुठभेड़ में मरनेवाले का सर तक काटकर ले आते हैं, ताकि उसकी शिनाख्त नहीं हो सके । पकड़े जाने या मर जाने पर पटेल और पंचायत पूरी जिंदगी उसके परिजनों को संरक्षण देती हैं ।

परंपरागत एकता ने इस जाति के धंधों को सुरक्षित रखा हुआ है । पकड़े जाने पर भी आखिरी दम तक यह अपने दूसरे साथियों का भेद नहीं देते हैं मुखबिर द्वारा मुखबिरी होने

पर कंजर को सजा मिले, तो जेल बैठे कंजर के परिवार को उसके सजा मुक्त होने तक दो रुपया रोजाना मिलता है । कभी यह रकम पंचायत और पटेल की पहल पर बढ़ा दी जाती है । कंजर को पकड़े जाने पर पुलिस की मार के अनुपात में अपनी जाति में भी जुरमाना भरना पड़ता है । यह उसकी कमजोर नाकामयाब वारदात मानी जाती है ।

आपसी झगड़े और विवाद में सच जानने के लिए पटेल अपने पास रखे 'हाकिम राजा का प्याला' पर हाथ रखवाता है, ठीक वैसे ही जैसे अदालत में मुसलिम से कुरान व हिंदू से गीता पर हाथ रखवाया जाता है ।कांसे के इस प्याले में क्या-क्या रखा जाता है, यह कोई नहीं जानता । कंजर जाति के लोग मूठ, भूत, चुड़ैल, टोटकियों में भारी विश्वास करते हैं और पूजा-अर्चना में इनका काफी विश्वास है । यह खड़ी चौथ का व्रत रखते हैं और काली, बीजासन, चौथमाता, हनुमानजी को अपना हिमायती देव मानते हैं ।

कंजर बस्ती में माताजी का छोटा-सा चबूतरा बना होता है । शादी-विवाह, उत्सवों पर दिन में तोरण मारने से पहले माताजी के चबूतरे पर ढोक दी जाती हैं । जब कंजर बालाएं नाचने के लिए बाहर जाती हैं तो वह हनुमानजी पर नारियल व माताजी के प्रसाद चढ़ाने की मनौती करके जाती हैं । बीमारी में भी इन्हें दवा से ज्यादा इन देवताओं पर विश्वास है । माताजी से पाती मांगने की परंपरा इनमें प्रचलित है । कृष्ण-पक्ष की चौथ के दिन कठोर तपस्या करके माताजी को प्रसन्न किया जाता है और माताजी पर पीले फूल कनीर के चढ़ाते हैं । कभी फूल हवा से उछलकर गिर पड़े तो इसे माताजी का आशीर्वाद समझकर वह झोली में रख लेते हैं ।

भूत-चुड़ैलों पर भारी विश्वास मानते हुए भी कंजर जाति के लोग कृष्ण-पक्ष की भयावनी काली रात में चोरी करने जाते हैं। अंधियारी रातें इन्हें ज्यादा पसंद हैं। सरदी इनके चोरी करने का मुख्य मौसम है, वैसे पूरे बारह महीने ही इनके अपने हैं। चोरी करने जाने से पहले यह शगुन देखते हैं। खांसी के रोगी, कमजोर व बीमार कंजर को यह चोरी करने नहीं ले जाते हैं। ये कच्छा, बनियान, उघाड़े बदन, काले और रंगीन छापेदार कपड़े पहनकर चोरी करने जाते हैं। मुरगा, तीतर, गाय रंभाने, बकरी व मोर की आवाज बोलकर यह अंधेरी रात में बिछुड़े अपने साथियों को इकट्ठा होने का संकेत देते हैं।

जिस घर में चोरी करते हैं, वहां यह किसी भी वस्तु को छोड़ना अपनी शान के खिलाफ अथवा चोरी करने के नियम के खिलाफ समझते हैं। इन्हीं कारणों से पुलिस कंजरों की चोरी को देखते ही भांप लेती है। लूट का माल कहां रखते हैं किसी को पता नहीं। घर में तो कुछ दिखलायी देता नहीं है। माल-कपड़े, जेवर, नकदी चोरी करने के चार-छह माह बाद यह निकालते हैं। अधिकतर माल जमीन में गाड़ देते हैं, जिसे वक्त पड़ने पर निकालते हैं।

कई बार यह गड़े माल को भूल जाते हैं। यह माल जब खेतों में कराड़ी में किसी को मिलता है तो दफीना मिलने की बात उड़ जाती है। चोरी करने के लिए जाते समय यदि कोई रास्ते में टोक दे तो यह उसको सबसे बड़ा अपशकुन मानते हैं। यदि पीछे और दाहिनी ओर चोरी करते समय मुरगा बांग दे दे, तो यह अच्छा शकुन होता है। शेर का दहाड़ना व गाय के रंभाने को भी यह शुभ संकेत मानते हैं।

राहजनी करना भी इनकी आदत में शुमार है। राहगीर को लूटते समय यह तनिक भी हंसते नहीं हैं। राहजनी में यह आदमी को बीड़ी पिलाने के नाम से बुलाकर बैठाते हैं और फिर उससे बीड़ी मांगते हैं। बस, इसी वक्त यह पता लगा लेते हैं कि इस आदमी के पास क्या-क्या है? फिर तो जाने के लिए उत्सुक व्यक्ति से कहते हैं— 'जो भी है निकाल दो।' पूरा माल प्राप्त करके भी लूटवाले को दो-चार डंडे लगाते हैं यह। कहते हैं मेहनत करके कमाते हैं।

मांस खाना, दारू पीना इनमें खूब जमकर चलता है। मछली को मां मानकर यह उसकी पूजा करते हैं। मौत पर यह रोते नहीं, बल्कि मदिरा के जाम छलकाते हैं।

अब जबकि कंजर बालाओं को अपने परंपरागत नृत्यों को अधिक रुचिपूर्ण बताकर देश-विदेश में जाने का मौका मिला है तो इनके रहन-सहन व सोच में भी बदलाव आया है। अब तक की उपेक्षित यह जनजाति अब अपराध जगत से हटकर खेती-बाड़ी करने में अग्रसर हुई है, लेकिन राजनीतिक वोट बैंक के रूप में इस जाति को अभी भी परंपरागत बने रहने पर जोर देने की कार्रवाई की जा रही है। बदलते युग में कंजर क्या गुल खिलाएंगे यह तो वक्त ही बताएगा, लेकिन अभी तो इन्हें समाज घृणा की दृष्टि से देख रहा है और पुलिस के रोजनामचे इनकी पीढ़ियों-दर-पीढ़ियों से वारदातों के पुलंदे बने हुए हैं।

— द्वारा— श्री राम स्वरूप शर्मा,
सेठजी का चौक, मदार स्ट्रीट,
बूंदी (राजस्थान)-३२३००१

पौराणिक आख्यानों का वैज्ञानिक स्वरूप

● डॉ. सच्चिदानंद झा

सत्य का अन्वेषण करना ही विज्ञान का मूल उद्देश्य है । जो वैज्ञानिक अन्वेषण कर परं सत्य को प्रमाणित कर सके, वही सत्य पर आधारित है । शेष सभी मात्र आधिभौतिक अन्वेषण है । आधिभौतिक विज्ञान सूक्ष्म परमाणु एवं उसके स्वरूप तक का ही अन्वेषण कर पाया है, जबकि परं तत्व विज्ञान ने उससे परे सूक्ष्म स्वरूप आत्मा का बोध कर उसके स्वरूप का वर्णन शास्त्रों में अंकित कर दिया है ।

पौराणिक ग्रंथों में सृष्टि विषयक अन्वेषण है कि नारायण के नाभि से कमल निकला और उस कमल पर ब्रह्मा प्रकट हुए । ब्रह्मा द्वारा संपूर्ण सृष्टि की रचना हुई । शास्त्रों में यह भी अंकित है कि यह पृथ्वी शेषनाग पर स्थित है । आधुनिक विद्वानों को यह सब आख्यान हास्यास्पद लगता है, लेकिन वास्तविकता तो यह है कि यह सब कथन हास्यास्पद नहीं, बल्कि अक्षरशः सत्य है । हालांकि आख्यानों में सुलभ और सटीक शब्दों का ही प्रयोग करने का प्रयास किया गया है, फिर भी संपूर्ण आख्यान सभी के लिए सुस्पष्ट नहीं है, क्योंकि पौराणिक ग्रंथ बहुअर्थक स्वभाव का है ।

जरमनी के ऋतु वैज्ञानिक बेगनर ने १९१२ में पृथ्वी के वर्तमान धरातलीय स्वरूप के वितरण के संबंध में महादेशीय प्रवाह सिद्धांत प्रतिपादित कर संपूर्ण विश्व को एक सुखद आश्चर्य में डाल दिया है । भू-वैज्ञानिकों का मत है कि संपूर्ण पृथ्वी मुख्यतः तीन परतों का एक गोला है । ऊपरी परत जिसे वैज्ञानिकों ने 'सियाल' कहा है, निचली परत 'सीमा' पर स्थित है । 'सीमा' के नीचे 'निफै' नामक गरम और तरल पदार्थ है । स्वयं सीमा भी अर्द्ध तरल या संभाव्य पदार्थ है । बेगनर के मतानुसार कुल महाद्वीपीय खंड कार्वोनिफेरस युग तक जुड़े हुए थे । उस भू-खंड के चारों ओर 'पैंथालासा' नामक सागर था । सियाल द्वारा निर्मित उस भूखंड को बेगनर ने 'पेंजिया' कहा था । वह पेंजिया अधिक घनत्व की सीमा पर तैर रहा था । कार्वोनिफेरस युग में खंडित होने के बाद यह पेंजिया प्रवाहित हुआ । अंगारा और लौरेशियन शिल्ड तथा गोंडवाना शील्ड के बीच

'टिथीज' सागर का निर्माण हुआ। टिथीज सागर के उत्तर में उत्तरी अमरीका, यूरोप और उत्तरी एशिया महाद्वीपों का निर्माण हुआ तथा दक्षिण में दक्षिणी अमरीका, अंटार्कटिका, ऑस्ट्रेलिया प्रायद्वीप भारत और अफरीका महाद्वीपों का निर्माण हुआ। पेंजिया के किनारे मोड़दार पर्वतों— रॉकी, एंडीज, ग्रेट डिवाइडिंग रेंज आदि की उपस्थिति महाद्वीपीय वहन सिद्धांत की पुष्टि करती है। आज भी यह मत अनेक समस्याओं का समाधान कर रहा है।

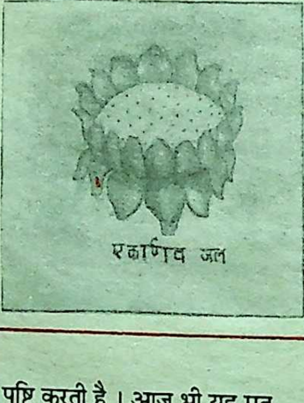

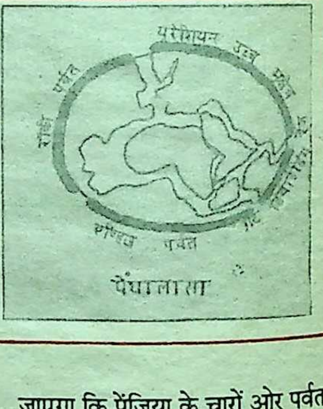

कमल ही भूमंडल

बेगनर के महाद्वीपीय प्रवाह सिद्धांत के मुख्य अंश की चर्चा पुराण में भी अंकित है। यह एक श्लोक बेगनर के सिद्धांत की पुष्टि करने के साथ-साथ पुराण में वर्णित नाभिकमल के विषय में गोपनीय तथ्य को भी उद्घाटित कर देता है कि यह कमल ही भूमंडल है।

यान्येतानि तु पद्मस्य केसराणि समन्ततः
असंख्याताः पृथिव्यां तु विश्वे ते धातुपर्वताः

—हरिवंश पुण

अर्थात पद्म के चारों ओर जो केसर बिखरा है, वही भूमंडल के सारे धातु पर्वत हैं, जिनकी गणना असंभव है। (चित्र-१)

बेगनर के पेंजिया को जब गोलाकार रूप में चित्रित किया जाए (चित्र-२) तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि पेंजिया के चारों ओर पर्वत है। उत्तरी अमरीका का रॉकी, दक्षिणी अमरीका का एंडिज, ऑस्ट्रेलिया का ग्रेड डिवाइडिंग रेंज, अंटार्कटिका का पर्वतीय क्षेत्र, यूरेशिया के उत्तरी-पूर्वी पर्वतीय भाग आदि कमल के केसर के समान ही हैं। पूर्व काल में यूरेशिया का किनारा ऊंचा भू-भाग रहा होगा। जैसे-जैसे पेंजिया टूटकर सीमा पर प्रवाहित होता गया, वैसे-वैसे ये सभी पर्वत एवं उप पर्वत विकसित होते गये।

पेंजिया अर्थात थलभाग ही पृथ्वी है, जो जल पर कमल के समान पूर्व में स्थित था। इसकी पुष्टि में पुराण में स्पष्टतः वर्णन है—

या तु पद्मासना देवी पृथिवीं तां प्रचक्षते ।
ये गर्भसाराङ्कुरतस्तान् दिव्यान् पर्वतान् विदुः ।

—हरिवंश पुराण

अर्थात कमल, जो देवी का आसन है, उसे पृथ्वी कहा जाता है। उस कमल के भीतरी भाग में पाषाणमय सुदृढ़ और अंकुर की भांति ऊंचे उठे भाग हैं, उन्हें दिव्य पर्वत कहा जाता है।

बेगनर के सिद्धांत से संबंधित बहुअर्थक पौराणिक आख्यानों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि विद्वानों द्वारा जो 'सीमा' शब्द का प्रयोग किया गया है वह 'शेष' और 'निफे' ही नाग है। 'स' से सीमा और स से शेष। इसी तरह 'न' से 'निफे' और 'न' से नाग। 'सियाल' ही सुमेरु है। सियाल से ही पेंजिया बना अर्थात पृथ्वी (थलभाग) बना है। 'प' से पेंजिया और 'प' से पृथ्वी। यह पेंजिया (थलभाग) के केंब्रियन युग तक बिलकुल ही सिमटा-सिमटा गोलाकार सियाल पिंड था। सुमेरु भी आदि काल में एक गोल पिंड रहा होगा। गर्भावस्था में देहस्थ पिंड में जैसे मेरु घुमावदार आकृति में रहता है, ठीक उसी तरह यह सुमेरु भी आदिकाल में गोलाकार रूप में धरातल पर तैर रहा होगा।

सात महाद्वीपों में अंकित

यह पेंजिया मुख्यतः सात महाद्वीपों में विभक्त हुआ। पौराणिक ग्रंथों में भी अंकित है कि —मेरु सप्तद्वीपसमन्वितः (शिव संहिता)। सात द्वीप को धारण करनेवाला सुमेरु जब विभक्त हुआ, तो उससे पूर्वकाल में जम्बू, प्लाक्ष, शाल्मलि, कुश, कौंच, शाक और पुष्कर ये सात महाद्वीपों का निर्माण हुआ। इसकी पुष्टि में देवी भागवत में वर्णन है— 'सप्तद्वीपवतीं पृथ्वीं'। यह सात द्वीपवाली पृथ्वी (थलभाग) आदिकाल में सुमेरु था, जिसका अग्रभाग अनेक युगों तक जम्बू द्वीप में सुमेरु पर्वत के रूप में चर्चित रहा।

बेगनर के पेंथालासा के विषय में पुराण में व्याख्या है—

पद्मस्यान्ते कुशं यत्तदेकार्णवजलं महत् ।
प्रोक्तास्तेदिक्षु संघाताश्चत्वारोजल सागराः ।।

इसका भावार्थ है कि उस कमल के अंत में चारों ओर जो कुश अर्थात जल है, वही अनंत जलराशि है।

इसी अनंत जलराशि को बेगनर ने पेंथलासा कहा है। वर्तमान युग में यह पेंथलासा अनेक महासागरों में विभक्त हो गया है।

नवीन पर्वतों के पूर्व भी अनेक पर्वत बने थे। इन पुराने पर्वतों के विषय में पुराण में वर्णन है—

शैलैः समस्तैर्गहना विषमा मेदिनो भवत् ।

अर्थात उन समस्त पर्वतों से अवरुद्ध हुई पृथ्वी गहन एवं विषम हो गयी।

भू-गर्भ वैज्ञानिकों का मत है कि पेंजिया (थलभाग) केंब्रियन युग के पूर्व ऊपर उठ आया था। अर्थात हॉर्स्ट रूप में था। पुराण में भी वर्णन है कि वाराह भगवान ने पृथ्वी को अपने थूथुन पर उठा लिया था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि जब थल भाग जल से ऊपर उठता है तो उस नवीन क्षेत्र से दुर्गंध आती है। पुराण में भी वर्णन है कि जब वाराह भगवान ने पृथ्वी को ऊपर उठाया तो उससे दुर्गंध फैलने लगी।

पौराणिक ग्रंथों में सृष्टि विषयक अन्वेषण है कि नारायण के नाभि से कमल निकला और उस कमल पर ब्रह्मा प्रकट हुए । ब्रह्मा द्वारा संपूर्ण सृष्टि की रचना हुई । शास्त्रों में यह भी अंकित है कि यह पृथ्वी शेषनाग पर स्थित है । आधुनिक विद्वानों को यह सब कथन हास्यास्पद लगता है, लेकिन वास्तविकता तो यह है कि यह सब कथन हास्यास्पद नहीं बल्कि अक्षरशः सत्य है ।

कार्वोनिफेरस युग में पेंजिया में दरार हुई थी । पुराण में भी वर्णन है कि पृथ्वी में पूर्व काल में दरार हुई थी—

यदण्डमकरोत पूर्वं देवलोकसिसृक्षया ।
समन्तादष्टधा यानिच्छिद्राणि कृतवांस्तु सः ।

क्षीर सागर का समुद्र मंथन

गोंडवाना और यूरेशियन प्लेट के बीच जो टिथीज सागर का उल्लेख है, वही क्षीर-सागर है । इसी क्षीर-सागर में समुद्र मंथन हुआ था । नदी, पर्वत आदि का निर्माण हुआ था । बेगनर का भी कहना है कि टिथीज सागर से हिमालय का निर्माण दबाव के कारण संपीड़ित होने से हुआ है ।

बेगनर ने महाद्वीप प्रवाह सिद्धांत को वैज्ञानिक आधार देने के लिए यह व्याख्या की थी कि पृथ्वी पर जलवायु परिवर्तन हुए हैं । विषुवत रेखीय क्षेत्र या आर्कटिक क्षेत्र में पाये गये प्रमाणों से यह विदित होता है कि वह जलवायु अब यहां नहीं है, जो पूर्व काल में थी । पुराण में इस जलवायु परिवर्तन का जिक्र है । मन्दार पुष्प जो पारिजात पुष्प से मिलता-जुलता पुष्प था, पूर्वकाल में मन्दार वृक्षों के बागीचों में मिलता था । वही की जलवायु मनोनुकूल थी । अब वह जलवायु वहां नहीं है । फलतः अब मन्दार पुष्प वहां नहीं मिलता है । यह प्रसंग दर्शाता है कि जलवायु का परिवर्तन एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में ही नहीं , बल्कि संपूर्ण पृथ्वी पर भी हुआ है । जो जलवायु पूर्व में पृथ्वी पर थी, अब उसमें ह्रास हुआ है ।

१८५५ में जी. एयरी ने भूसंतुलन सिद्धांत के संदर्भ में अपना मत प्रतिपादित किया था । 'रूट हेपोथेसीस' के संबंध में उनका कहना था कि जो भाग जितना ही ऊंचा है, वह उससे कहीं अधिक गहराई तक पृथ्वी में स्थित है । हजारों वर्ष पूर्व रचित पुराण में भी इस तथ्य का संकेत है ।

युगान्त सदृशै रूपैः शैलोच्चलित बंधना ।
जलोत्पीडाकुला स्वेदं धारयंती मुहुर्मुहुः ॥

अर्थात पीड़ित पृथ्वी के पर्वतरूपी बंधन ढीले पड़ने लगे, अतः यह रसातल को जल-राशि में डूबने की आशंका से व्याकुल हो उठी ।

'रूट हेपोथेसीस' का स्पष्ट वर्णन देवी भागवत में भी है—

लोहकीलं यथा काष्ठे तथा ते गिरयः कृताः ।

काष्ठ को स्थिर करने के लिए जैसे लोहे का कील दिया जाता है वैसे ही पृथ्वी को स्थिर

रखने के लिए पर्वत स्थित किये गये ।

भू-संतुलन सिद्धांत के एक प्रमुख कड़ी को स्पष्ट करते हुए पुराण में वर्णन है—

तस्योपरिजलौधस्य महती नौरिव स्थिता ।
विततत्वात् देहस्य न ययौ सम्प्लवं मही ॥

वाराह भगवान द्वारा पूर्वकाल में इस पृथ्वी को अर्थात थलभाग को जल पर इस प्रकार स्थापित किया गया, ताकि वह जल में डूब न जाए ।

धरातल पर स्वाभाविक कंपन

स्पष्ट है कि सीमा— निफे (शेषनाग) पर पेंजिया (पृथ्वी) को इस प्रकार स्थापित किया गया कि संपूर्ण भू-मंडल में भूसंतुलन स्थापित हो गया । जब किसी बाह्य या आंतरिक कारणों से भू-संतुलित धरातल पर आघात होता है, तो धरातल पर स्वभावतः कंपन होने लगता है ।

पौराणिक ग्रंथों में भूकंपन, ज्वालामुखी आदि का भी वर्णन है । शास्त्रों में वर्णन है कि भूकंपन रुक-रुककर भी हो सकता है । पुराण में भूकंप का वर्णन है—

यदा तथा भूश्चलति सशैलवन कानना ।

ज्वालामुखी का वर्णन है—

सविस्फुलिंग सांगारं सधूममतिदारूणम् ।

इतना ही नहीं ज्वालामुखी सक्रियन से उत्पन्न भूकंप से निदान पाने का भी संकेत है । पुराण में वर्णन है कि जिस स्थान विशेष से धुंआ, गड़गड़ाहट, कंपन आदि यदा-कदा होता रहे, वहां मिट्टी खोदकर अर्थात छिद्र कर सक्रियन समस्या से निदान पाया जा सकता है । छिद्र द्वारा सक्रिय गैस को निकाल देने का संकेत है । यह रहस्य एक राक्षस के कथा प्रसंग से उद्घाटित होता है । भूगोल में जो वर्णन है कि नदियां अपनी दिशा बदलती हैं उसका भी उल्लेख पौराणिक आख्यानों में है—

ऊहुश्च सरितः सर्वाः प्रतिस्रोतो विशाम्पते ।

पौराणिक ग्रंथों में सृष्टि विषयक वर्णन है कि नारायण के संकल्प तरंग से ब्रह्मा प्रकट हुए । उसके बाद ऋत्विज, सूर्य, ग्रह, नक्षत्रादि का प्रादुर्भाव हुआ । इन सब आख्यानों का भी पूर्ण वैज्ञानिक आधार है ।

इस संबंध में लेप्लास, चैम्बरलीन, लिटिल्टन, बनर्जी, वीजूसैकर, कवीपर, फेसनकोव, औटो शिमिट आदि ने गैस के घनीभूत होने से ग्रहों, उपग्रहों आदि का निर्माण संबंधी अपना-अपना मत प्रतिपादित किया है । इन सभी मतों में रूस के वैज्ञानिक औटो शिमिट का मत अधिक मान्यता प्राप्त है ।

ब्रह्म का घनीभूत प्रकाश

गीता के चौदहवें अध्याय के सताइसवें श्लोक की व्याख्या में श्रीधर ने गोपनीय तथ्य को उद्घाटित किया है—

यथा घनीभूतः प्रकाश एव सूर्यमंडलं तद्वदित्यर्थः ।

अर्थात जैसे सूर्य घनीभूत प्रकाश है, उसी प्रकार मैं भी ब्रह्म का घनीभूत प्रकाश हूं । स्पष्ट है कि सूर्य मंडल घनीभूत ब्रह्माणु है । ब्रह्माणु के घनीभूत होने से क्रमशः आकाश तत्व, वायु तत्व, अग्नि तत्व, जल तत्व एवं पृथ्वी तत्व का निर्माण होता है ।

आधुनिक विज्ञान भी इस तथ्य तक पहुंच गया है कि दो अनुपात हाइड्रोजन और एक अनुपात ऑक्सीजन को मिलाने से जल बनता है । अर्थात वायु तत्व से जल तत्व बनता है । लेकिन आध्यात्मिक विज्ञान का कहना है कि वायु तत्व से अग्नि तत्व बनता है और तब जल तत्व बनता है । आधुनिक विज्ञान का भी एक

स्पष्ट मत है कि हाइड्रोजन (वायु तत्व) हीलियम में परिवर्तित होकर प्रज्वलित हो जाता है । इतना ही नहीं अधिक ऊंचे तापमान पर हाइड्रोजन के जलने से भारी तत्वों का भी निर्माण होता है ।

मुख्यतः आकाश तत्व ब्रह्माणु से आकाश और वायु तत्व ब्रह्माणु से वायु का निर्माण हुआ है । अग्नि तत्व ब्रह्माणु से ही सूर्य एवं तारों का निर्माण हुआ है । इन आकाशीय पिंडों के हाइड्रोजन हीलियम बनकर प्रज्वलित होते रहते हैं । जल तत्व एवं पृथ्वी तत्व ब्रह्माणुओं से ग्रहों और उपग्रहों का निर्माण हुआ है ।

देहस्थ पिंड भी मुख्यतः जल तत्व एवं पृथ्वी तत्व ब्रह्माणु से ही बना है । देहस्थ पिंड में आकाश तत्व, वायु तत्व, अग्नि तत्व के साथ-साथ अन्य अष्टधा प्रकृति भी सूक्ष्म रूप में संश्लिष्ट रहती है । इसके बाद पूर्ण प्रकृति प्राप्त पिंड धीरे-धीरे विकसित होता रहता है ।

रूसी वैज्ञानिक औटो शिमिट का कहना है कि ब्रह्मांड में कुछ पदाथर निःसृत होते रहते हैं । इन्हीं पदार्थ का सूर्य के निकट संगठित होने से ग्रहों का निर्माण हुआ है । गीता के विश्वरूप दर्शन आख्यान से यह संकेत मिलता है कि ब्रह्म से ब्रह्माणु उत्सर्जित होता रहता है । लंबे अंतराल के बाद यह ब्रह्माणु निरुद्ध होकर इसी ब्रह्म में विसर्जित हो जाता है । इसी ब्रह्माणु के कुछ अंश घनीभूत होकर सूर्य की परिक्रमा करने लगे और संगठित होकर ग्रहों और उपग्रहों के रूप में सृजित हुए ।

१९४२ में ए. सी. बनर्जी ने डेल्टा सेफी नामक तारा के विषय में जानकारी प्राप्त कर यह मत प्रकट किया था कि कुछ तारे स्पंदन करते हैं । प्राणियों में भी स्पंदन क्रिया होती रहती है । इसी तरह पृथ्वी में भी आरोराबोरिएलिस क्षेत्र अर्थात चुंबकीय आंधी क्षेत्र है, जहां सूक्ष्म स्पंदन होता रहता है । वेद, पुराण, उपनिषद आदि के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ब्रह्म में अपगम क्रिया होती रहती है । यह स्पंदन ब्रह्म में कई कल्पों तक जारी रहेगा । महत्त्वपूर्ण अंतराल के बाद जब अपगम क्रिया निरुद्ध हो जाती है तब भी आंतरिक स्पंदन सूक्ष्म रूप में होता रहता है ।

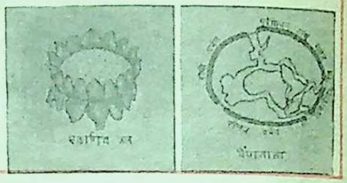

इस समय उत्सर्जन या विसर्जन क्रिया नहीं होती है । इसी निरुद्ध अवस्था के विषय में पौराणिक ग्रंथों में वर्णन है कि नारायण एकार्णव जल में आश्रय लेकर सहसरों अयुत वर्ष तक शयन करते हैं ।

अनंत जल-राशि

यह सब आख्यान बहुअर्थक स्वभाव का होते हुए भी अंततः सत्य स्वरूप को ही सुस्पष्ट करता है । एकार्णव जल का अर्थ है अनंत जल-राशि । शेषनाग का दूसरा नाम अनंत है । नारायण भी अनंत कहलाते हैं । इस प्रकार सूक्ष्म से सूक्ष्मतर स्वरूप एकार्णव जल में है का आध्यात्मिक अर्थ हुआ येन-केन-प्रकारेण जल ही जल के अतीतावस्था में है । अष्टधा प्रकृति की अतीतावस्था महाशून्य है । जैसे मेघ में जल है और जल मेघ बनकर जल रूपी हविष्य

बनता है, उसी तरह जल का पुरातन स्वरूप ही सूक्ष्म जल में है । यही महाशून्य अवस्था है । जल की सृष्टि का यहां आध्यात्मिक अर्थ है कारणवारि का वर्णन । आध्यात्म राज्य का पथिक ही यह सब समझ सकता है । ब्रह्मयोनि से ही सृष्टि कार्य प्रारंभ होता है, अतः जल से ही जगत सृष्टि का श्रीगणेश माना गया है ।

जल का दूसरा नाम है 'नार' । पुराण में इसे स्पष्ट किया गया है— 'आपो नारा इति प्रोक्ता' । नारायण से कमल निकला का अर्थ हुआ जल से जल की घनीभूत पृथ्वी निकली । एकार्णव जल से येन-केन-प्रकारेण स्वच्छ जल निकला । फिर उससे थल निकला ।

अनुग्रह करना परमेश्वर का स्वभाव है

इन आख्यानों में नारायण, ब्रह्मा, नाभिकमल, ब्रह्म, सुमेरु, शेषनाग आदि सुलभ और सटीक शब्दों का प्रयोग श्रद्धेय के प्रति श्रद्धा, प्रदर्शित करते हुए विलक्षण रूप में हुआ है । जिनसे अनुग्रह हो जाता है, उनके प्रति कृतज्ञ हो जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । अनुग्रह करना पर ब्रह्म परमेश्वर का स्वभाव है । अतः कपट रहित होकर संधान करना ही श्रेष्ठतम अन्वेषण है । इतना ही नहीं श्रद्धेय के साथ मैत्री भाव स्थापित कर संधान करने से ही सृष्टि रहस्य का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ।

यह ब्रह्मांड एवं देहस्थ पिंड एक ही नियम के अधीन हैं । ब्रह्मांड में जो है, वह देह में भी है और जो देह में है वह ब्रह्मांड में भी है । यही सृष्टि रहस्य का परम आश्चर्य है । प्राणियों को जो देह, इंद्रियादि प्राप्त हुई है, वह पार्थिव भूतादि से संबंधित है, जबकि ब्रह्मांड में जो ऐश्वर्य है, वह देवतादि से संबंधित है । देहस्थ पिंड स्थित नागलोक के ऊपर जैसे पृथ्वी तत्व है, उसी तरह ब्रह्मांड स्थित पृथ्वी का आधार शेषनाग है । यह सब गोपनीय तथ्य है । संधान करने पर ही यह सब ठीक-ठीक ज्ञात हो सकता है । एक बीज में जैसे विशाल वृक्ष का रहस्य छिपा रहता है, लगभग उसी तरह का यह सब गोपनीय तथ्य है ।

मन के संकल्प से ही शरीर का सृष्टि विषयक कार्य संपादित होता है । इंद्रियों का संचालक है मन, और मन का संचालक है प्राण । इसी तरह ब्रह्मा का विराट मन सोम है, जिसका संचालक ब्रह्मा है । नारायण द्वारा ही ब्रह्मा निर्दिष्ट होते हैं । जिस प्रकार सभी भूतादि मन के दिशा-निर्देश पर मनः क्षेत्र के अधिकार में अपने-अपने कार्य को संपादित करते हैं उसी प्रकार सभी ग्रह, नक्षत्रादि सोम मंडल के अधिकार क्षेत्र में ब्रह्मा द्वारा निर्देशित हैं । जिस तरह शरीरस्थ मन इंद्रियों को विषयों की ओर जाने से बचाता है, उसी तरह सोम ब्रह्मांड के. ग्रहों और नक्षत्रों को विकृत होने से बचाता है ।

यह वह सोम नहीं है, जिसे शशि या चंद्रमा कहा जाता है बल्कि इस दृश्यमान चंद्रमा से बहुत दूर सूर्य से भी आगे यह सोम अवस्थित है । कहा जाता है कि आदित्य पथ सुमेरु से भी उर्ध्वदेश में ज्योर्तिमंडल के ऊपर यह सोम स्थित है । इसी सोम मंडल से संपूर्ण ब्रह्मांड आच्छादित है ।

सुमेरु का रहस्य

सोम मंडल के अतिरिक्त ब्रह्म सूत्र से संवेष्टित सुमेरु का भी रहस्यमय प्रभाव इन आकाशीय पिंडों को नियंत्रित करता है । जिस तरह देहस्थ पिंड में मेरुदंड सभी पंचभूतादि को

संवेष्टित करता है, उसी तरह ब्रह्मांड के सुमेरु, ग्रह, नक्षत्रादि को संवेष्टित करता है ।

पौराणिक आख्यानों में चार प्रकार के सुमेरु का संकेत मिलता है— (१) देहस्थ मेरु (२) पृथ्वी का सुमेरु (३) सौर मंडल का सुमेरु और (४) ब्रह्मांड का महद् सुमेरु ।

देहस्थ मेरु और ब्रह्मांड के महद् सुमेरु की आकृति लंबाकार है, जबकि पृथ्वी का सुमेरु और सौर मंडल के सुमेरु पूर्व में गोलाकार था, जो अब खंडित हो गया है । देहस्थ मेरु और ब्रह्मांड का मदह् सुमेरु भी गर्भावस्था में गोलाकार ही था । सभी सुमेरु मुख्यतः सात खंडों में विभक्त हैं । देहस्थ मेरु मुख्यतः सात खंडों में है । पृथ्वी का सुमेरु भी मुख्यतः सात द्वीपों में विभक्त हो गया है । इसी का अग्रभाग अनेक युगों तक जम्बू द्वीप में सुमेरु पर्वत के नाम से चर्चित रहा । सौरमंडल का सुमेरु सौर भद्र कहलाता है । इसी घनीभूत सौर भद्र क्षेत्र को आधुनिक विद्वान गैस तश्तरी कहते हैं । इसी तश्तरी में ग्रहों और उपग्रहों का निर्माण ब्रह्मांणुओं के घनीभूत होने से हुआ है । ब्रह्मांड का महद् सुमेरु लंबाकार पथ में स्थित है, इसकी परिक्रमा सभी सूर्य करते हैं । इसी के विषय में पौराणिक आख्यानों में कहा गया है—

मेरु प्रदिक्षणां कुर्वन्नित्येव दिवाकरः ।

घनीभूत सुमेरु में अनुप्रविष्ट ब्रह्मसूत्र द्वारा संरक्षित सभी आकाशीय पिंड आपसी गुरूत्वाकर्षण, भ्रमणशक्ति एवं अपकेंद्रीय बल के कारण अपने-अपने पथ पर परिभ्रमण एवं परिक्रमण करते रहते हैं ।

—कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग,
पुराना सचिवालय, पटना-८००००१

मुंह से बच्चों का जन्म

ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में मेढ़कों की एक विशेष जाति की मादाएं अपने बच्चों को मुंह से जन्म देती हैं । ये मेंढ़कियां अपने संसेचित अंडों को निगल जाती हैं और फिर उनको आमाशय में सेती हैं । पूर्ण रूप से विकसित होने के बाद मादा इन मेढ़क शिशुओं को अपने मुंह से बाहर निकालती हैं । ये 'मेढ़क शिशु' मुंह से बाहर आते ही फुदकना शुरू कर देते हैं । इस वर्ग की एक मेंढ़की एक साथ छब्बीस बच्चों को पैदा करने की क्षमता रखती है । यूं यह जरूरी नहीं कि आमाशय में विकसित होनेवाले ये सभी बच्चे एक ही दिन मुंह से बाहर आयें । 'मुख प्रसव' की यह प्रक्रिया एक सप्ताह तक भी चल सकती है ।

—सुभाष लखेड़ा

प्रेम करना वास्तविकता है !

● रश्मि रमानी

वह उच्चतर संयोग, जिसमें अपनी स्वाभाविक सहज वृत्तियों को आत्मा में लीन किया जा सकता है । मानवीय पूर्णता की प्राप्ति और व्यक्तित्व का विकास हो सकता है, आज टूटन, संत्रास और अजनबीपन का पर्याय बनता जा रहा है ।

क्या विवाह कभी-कभी बहुत बड़ी भूल साबित होता है ? इतनी बड़ी कि छोटी-छोटी भूलों का अंतहीन सिलसिला आरंभ हो जाता है । यह आज के युग का सत्य है । विवाह की महत्ता को गिराने में हमारी आत्मघाती प्रवृत्तियों और आधुनिक परिवेश की महती भूमिका रही है ।

पागल न होने का मतलब

हममें से अधिकांश लोगों के लिए विवाह केवल दांपत्य, यौन-संतुष्टि, एक अन्य व्यक्ति के साथ रहने की प्रतिज्ञा एवं रुचियों के आदान-प्रदान का साधन मात्र होता है । पर वास्तविकता यह नहीं है, एरिश फ्रॉम के शब्दों में "आदमी की सबसे बड़ी जरूरत होती है कि वह अपने खालीपन को कैसे भरे ? अपने अकेलेपन की कोठरी से कैसे निकले ? इस उद्देश्य की पूर्ति में निपट असफलता का मतलब है पागल हो जाना... पागल न होने का दूसरा मतलब है किसी से लगाव अनुभव करना, इस एक और इकलौते सवाल के समाधान से साक्षात्कार हर युग और संस्कृति से जुड़े आदमी को करना पड़ा है कि कैसे वह अपने अलगाव से उबरे, कैसे युग्मता पावे, कैसे अपनी वैयक्तिक जिंदगी से परे होकर किसी अन्य से एकात्मकता जोड़ सके । यह सवाल आदिम गुहा मानव से लेकर फैक्टरी में जूझते मजदूर तक के लिए एक रहा है और एक ही तरह की अहमियत रखता है, क्योंकि जिस जमीन से यह सवाल उगता है वह जमीन सबकी एक है ।

प्रेम करना वास्तविकता है

कहा जाता है कि भगवान ने अपने आपको पति और पत्नी के दो रूपों में विभक्त कर दिया । पुरुष अपनी स्त्री के बिना पूर्ण नहीं है । पति और पत्नी मिलकर एक इकाई बनते हैं । पत्नी अर्द्धांगिनी, आधा अंग है, महादेव और पार्वती को लेकर अर्द्धनारीश्वर की कल्पना इसी तथ्य पर आधारित है । पुरुष और स्त्री केवल एक शरीर ही नहीं एक आत्मा है । विवाह एक संस्कार है, एक ऐसा संस्कार जिसके लिए जरूरी नहीं कि पुरुष और स्त्री की रुचियां और दृष्टिकोण एक हों । जरूरी है उनकी एक-दूसरे के प्रति अनुकूलता और समरसता, विवाह का लक्ष्य दो व्यक्तियों का सम्मिलन तो है ही । यह एक ऐसा गंभीर और सुकुमार संयोग है, जो व्यक्ति को पथ-भ्रष्टता से भी बचाता है । प्रेम और मित्रता की अमृत बेल विवाह-संबंध से पुष्पित

पल्लवित होती है, किसी की पत्नी होना एक संयोग मात्र हो सकता है, किंतु प्रेम करना वास्तविकता है और विवाह की सफलता इसी वास्तविकता पर आधारित है ।

हृदय में बैठा शत्रु

आत्म-प्रवंचना में भटकते हुए मानव को निषिद्ध वस्तुएं आकर्षित करती हैं। वासना एक आवेश भरा ज्वर बन जाती है, और उत्तेजना रुढ़ियों और नियमों, कानूनों को तोड़ने के लिए बाध्य करती है, वासनात्मक शक्ति के अधीन होकर मनुष्य स्वयं से संघर्ष करता है क्योंकि, यह उसके हृदय में बैठा हुआ शत्रु है । यह दूषित अतिरेक मनुष्य को नष्ट करके ही समाप्त होता है । किंतु गंभीर आत्म समर्पण और प्रियतम के साथ एकात्मीकरण असीम आनंद की सृष्टि करता है, और अपनी सर्वोच्च स्थिति में दिव्यता की अनुभूति में बदल जाता है ।

विकसित संस्कृतियों में एक विवाह के आदर्श को मान्यता दी गयी और इसे एक स्थायी गठबंधन माना गया, एक ऐसा गठबंधन जिसमें शरीर और आत्मा का मिलन होता है, कभी-कभी यह इतना दृढ़ होता है कि लगता है कि आजीवन यह घनिष्ठ और स्थापित रहेगा, इसकी गहराई और सुकुमारता हृदय को जकड़ लेगी और प्रेम के आवेश की तीव्रता जीवन का रूपांतर कर देगी । यह संबंध इतना शुद्ध, इतना उच्च और महत्त्वपूर्ण माना गया कि किसी दूसरे की कल्पना तक करना अपवित्र लगने लगा ।

यौन-उन्माद क्या है ?

डॉ. राधाकृष्णन के मतानुसार विवाह के संदर्भ में यदि हम स्त्री की भूमिका पर विचार करें तो पाते हैं कि ''आदर्श नारी प्रेम की उच्चतम स्थिति में ले जाने में समर्थ होती है । पुरुष की भांति प्रत्येक स्त्री को अपने आपको अभिव्यक्त करने का, अपने भीतर के आवेश की ज्वाला को शांत करने का अवसर मिलना चाहिए, यह विचार मात्र सच्चे प्रेम के विकास का विरोधी है कि विवाह से एक व्यक्ति को दूसरे पर स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो जाता है । विवाह में वांछित वस्तु शरीर नहीं है, यह एक भ्रामक और क्षणिक पहलू है, विवाहित दंपत्ति की पारस्परिक निष्ठा है अपने साथी-प्राणी को अंगीकार करना, दूसरे को उसकी सब विशेषताओं (गुण-दोषों) के साथ अपनाने की इच्छा रखना, विवाहित जीवन का आनंद प्राप्त करने के लिए उदारतापूर्ण आत्मत्याग, अंतहीन सहिष्णुता, भद्रता तथा हृदय की विनम्रता की आवश्यकता होती है,'' कुछ के दृष्टिकोण से यौन-आनंद विवाह की सफलता का आधार है यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि यौन-आनंद वैवाहिक सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण है पर वह इसका आधार नहीं है । ऐसा मानने से विवाह एक पाशविक व्यवहार या यौन संबंध का दुरुपयोग बन जाएगा । अमृता प्रीतम जब यह लिखती हैं कि ''विवाह दो दिलों के सहज सहवास के अर्थों में होना चाहिए था, मिलन की लय पर चलते हुए पैरों की समताल के समान, पर विवाह की संस्था ने इसे केवल

दो जनों को बांधनेवाली जंजीर बना दिया है, जिससे छूटने के लिए हाथ-पैर मारते हुए मनुष्य को कभी नीति और धर्म के कोड़ों की मार से चुप कराया गया, कभी कानून का भय दिखाकर और यह केवल शरीरों का व्यापार बनकर रह गया ।" तो हम पाते हैं कि शरीरों के इस व्यापार ने विवाह को एक उबाऊ व्यवहार, मूर्खतापूर्ण सौदा ही नहीं बनाया बल्कि स्त्रियों को एक पहेली और पत्नी को मात्र संतानोत्पादन का साधन और घर की विश्वस्त चौकीदारनियां बना दिया । क्या डॉ. रांगेय राघव के इस कथन पर आप विश्वास करेंगे कि "स्त्री अपने पति से प्रायः संसार में इतना अधिक प्यार करती है कि पुरुष उसकी गहराइयों और ऊंचाइयों को कभी प्राप्त नहीं कर पाता है ।"

पुरुष की श्रेष्ठतम पूरक

ऋग्वेद में नारी को पुरुष की श्रेष्ठतम पूरक बताया गया और प्राचीन साहित्य में अच्छे-अच्छे पुरुषों को प्रेम और कष्ट सहन करने के मामले में बड़ी-बड़ी भूलें करनेवाले नौसिखिये और स्त्री को इस मामले में श्रेष्ठ कलाकार बताया । पर आज के सामाजिक परिवेश में बढ़ते हुए औद्योगीकरण और संस्कृति के नये परिवर्तनों ने पारिवारिक जीवन की गरिमा और महत्त्व कम कर दिया है । आज की स्त्रियां आर्थिक, वैचारिक और सामाजिक दृष्टि से स्वाधीन हैं और जीवन की उपलब्धियों को प्राप्त करने की दौड़ में निरंतर आगे हैं, किंतु दया, ममता, स्नेह, करुणा और आत्म-समर्पण के नारी सुलभ गुणों से रिक्त होती जा रही हैं । आधुनिक स्त्रियां आदर्श पत्नी के उस स्वरूप से मेल नहीं खातीं, जो अपनी सलज्ज, सुकुमारता, मनोजयी मुसकान और अच्छे साहचर्य द्वारा पति को अनंत तृप्ति दे सके ।

दिशाहीनता, स्त्री-सुलभ शालीनता को नष्ट कर चुके हैं । आज की नारी नींद में भी तनावमुक्त और भोली-भाली नहीं लगती । कमोबेश यही स्थिति पुरुषों की भी है । बाहर के तनाव और भीतर के द्वंद्व ने उनकी मानसिकता पर प्रभाव डाला है । जीवन की विषमताओं ने विवाह के प्रति उनकी निष्ठा को कम किया है । क्या यह तथ्य चौकानेवाला नहीं है कि आज शिक्षा का प्रतिशत बढ़ा है, भौतिक सुख-सुविधाएं और संपन्नता बढ़ी हैं, पर तलाक दूसरी पत्नी का चलन और दहेज हत्याओं के आंकड़े भी बढ़ रहे हैं जो यही साबित करते हैं कि शिक्षा मानव के ज्ञान में तो वृद्धि कर रही है पर संस्कारों में नहीं, भौतिकता ने उसकी लिप्साओं को मर्यादाहीनता तक बढ़ाया है । आत्मसंयम, चरित्र, स्त्री-सम्मान, सफल दांपत्य-जैसे शब्द दकियानूसी माने जाने लगे हैं, जीवन के प्रति सौंदर्य-बोध कम होता जा रहा है । इन सब चीजों ने विवाह को एक औपचारिकता बना दिया है, जबकि उसका महत्त्व अनादिकाल से निर्विवाद है । गृहस्थ-जीवन सेवा और तपस्या का जीवन है और सभी आश्रमों में यह सर्वोत्कृष्ट है । केवल पत्नी और बच्चे होने से ही कोई घर, घर नहीं बन जाता है अपितु सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन करने से बनता है । रागात्मक संबंधों के निर्वाह से बनता है, क्या यह सोचना आवश्यक नहीं है कि हम अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का कितनी निष्ठा और तत्परता से पालन करते हैं ?

— ८३, सर्वोदय नगर, इंदौर म. प्र.-४५२००१

[illegible] की मोदी हवेली

शेखावाटी की नयनाभिराम हवेलियां

● रमेश सर्राफ

राजस्थान के परकोटों से घिरे पुराने शहर हमेशा से ही पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहे हैं । शेखावाटी क्षेत्र का राजस्थान में अलग ही स्थान है । यहां एक तरफ राजाओं द्वारा बनाये गये भव्य एवं बड़े-बड़े गढ़, किले, महल हैं, वहीं यहां के धनकुबेर सेठों द्वारा अपने रहने के लिए बनायी गयी बड़ी-बड़ी गगनचुंबी हवेलियां हैं । इस क्षेत्र-जैसी भव्य एवं कलात्मक हवेलियां संसारभर में अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलती हैं ।

पारसी में 'हवेली' शब्द का अर्थ एक चौरस बंद रिहायशी इमारत से है । यह हिंदु-मुसलिम स्थापत्य-कला का मिला-जुला रूप है । शेखावाटी की ये नयनाभिराम हवेलियां दो से पांच मंजिल ऊंची होती हैं, जिनमें प्रायः दो चौक होते हैं । हवेली में जाने के लिए बाहरी दरवाजे को पार करना पड़ता है । इस बाहरी दरवाजे के दोनों ओर गोखे (चबूतरे) बने होते हैं । इनका

सीकर एवं झुंझुनूं जिलों को मिलाकर बने शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनूं, नवलगढ़, महजसर, फतेहपुर, बिसाऊ, रामगढ़ मंडावा, पिलानी, चिड़ावा, लक्ष्मणगढ़, मुकुंदगढ़, अलसीसर, बगड़-जैसे अनेक स्थान हैं, जो सदियों से पुरातन-कला एवं संस्कृति की अनुपम धरोहर संजोये हैं।

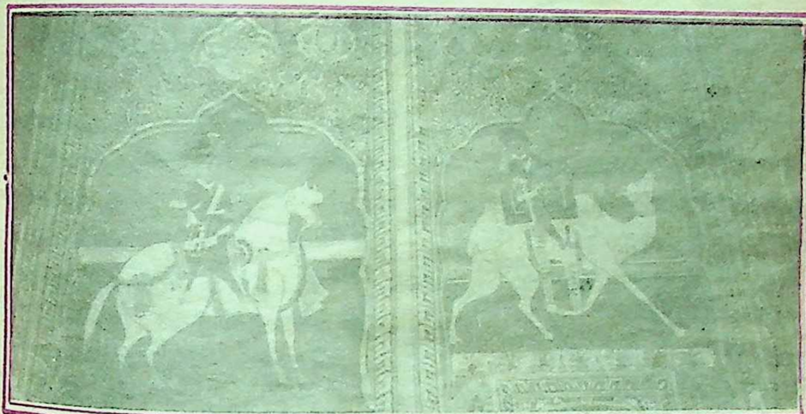

हवेली का कलात्मक द्वार

दरवाजा, चौखट ,आकर्षक, कलात्मक खुदाई से सुसज्जित होता है । शेखावाटी में हवेली निर्माण-कला पंद्रहवीं शताब्दी में मुगल-शासनकाल में प्रारंभ हुई जो अंगरेजों, राजा-महाराजाओं के समय में अपने पूरे यौवन पर थी ।

सीकर एवं झुंझुनूं जिलों को मिलाकर बने शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनूं, नवलगढ़, महनसर, फतेहपुर, बिसाऊ, रामगढ़, मंडावा, पिलानी, चिड़ावा, लक्ष्मणगढ़, मुकुंदगढ़, अलसीसर, बगड़-जैसे अनेक स्थान हैं, जो सदियों से पुरातन-कला एवं संस्कृति की अनुपम धरोहर संजोये हैं । यहां की हवेलियों का कोना-कोना रंग-बिरंगे आकर्षक भित्ति-चित्रों एवं वास्तुकला

हवेली में अंकित भित्ति चित्र

की छटा बिखेरे हैं, परंतु उचित देख-रेख के अभाव में अपना मूल रूप खोते जा रहे हैं, जो आगामी पचास वर्ष में पूर्णतया नष्ट हो जाएंगे ।

शेखावाटी की हवेलियों के भड़कीले, चटकीले, रंग-बिरंगे, आकर्षक भित्ति-चित्रों में विषय की विभिन्नता है । इन भित्ति-चित्रों में राधाकृष्ण की रासलीला, महाभारत, रामायण की कथाएं, ढोला-मारू हीर-रांझा प्रसंग, दर्पण निहारती नायिका, होली, दीपावली पर्वों, उत्सवों एवं जीवन के विभिन्न रंगों के चित्र अंकित हैं । शयनकक्ष एवं स्नान के दृश्यों को देखकर यही लगता है कि उस वक्त चित्रकारों की जनानेखाने तक पहुंच थी । उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक शेखावाटी के सेठों का अंगरेजों से संबंध होने का प्रभाव इन भित्ति-चित्रों में दिखायी देने लगा । यूरोप के कई तैल चित्र लिथोग्राफ, ओलियोग्राफ तथा कैमरा चित्र भारत में प्रचलित होने के बाद भारतीय विषय योरोपियन कपड़ों तथा रहन-सहन से प्रभावित नजर आने लगे । इंगलैंड की महारानी विक्टोरिया, जार्जपंचम, महारानी मेरी, ग्रामोफोन सुनती मेमसाब, हवाई जहाज उड़ाते राईट बंधु, रेलगाड़ियां, बग्घी दिखायी देने लगी ।

इस क्षेत्र की प्रमुख हवेलियों में चूड़ी की कमानियों, बिसाऊ के मोतीलाल, सिंगतियों, मंडावा की लड़ियों, फतेहपुर की गोयनका, खेतानों, पिलानी की बिड़ला, चिड़ावा की सूरजमल, रामगढ़ की प्रसिद्ध पोद्दारों की हवेलियां, झुंझुनूं की प्रसिद्ध सेठ ईश्वरदास मो की ३६० खिड़कियोंवाली हवेली, नवलगढ़ में भगतों, पोद्दारों, मुरारका, सेक्सरियों की हवेलियां, महनसर की सेठ तोलाराम की हवेल जिसमें स्वर्णाक्षरों से रामायण अंकित है ।

शेखावाटी की पुरातन-भवन निर्माण-कला एवं आकर्षक भित्ति-चित्रों को देखने के लिए प्रतिवर्ष हजारों देशी-विदेशी पर्यटकों, सैलानियों एवं कला-प्रेमियों का आवागमन बना रहता है । दर्शक यहां की पुरातन-कला की अनोखी धरोहर भित्ति-चित्रों को घंटों देखते रहते हैं मगर फिर भी उनका मन नहीं भरता । यहां की हवेलियों को देखकर तो प्रसिद्ध फिल्मकार जे. पी. दत्ता तो इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी फिल्म गुलामी, बटवारा की शूटिंग यहीं की ।

— पोस्ट धमोर

जिला—झुंझुनूं (राजस्थान)

जल-चिकित्सा

कठिन रोगों से छुटकारा

● **कृष्णनारायण पांडेय**

अत्यधिक कठिन और घातक बीमारियों का उपचार करने की दृष्टि से, 'जल-उपचार' नाम से एक बहुत ही साधारण और आसान उपचार का पता लगाया गया है ।

जापानी रोग संघ द्वारा प्रकाशित जल-उपचार पर एक लेख है जिसमें बताया गया है कि यदि जल-उपचार को विधिपूर्वक अपनाया जाए तो आप बहुत से कठिन रोगों से छुटकारा पा सकते हैं, जो इस प्रकार हैं—

१. सिर दर्द, रक्त चाप, रक्ताल्पता, गठिया, लकवा, स्थूलता, हृदय धड़कन और स्वास्थ्य सुधार ।

२. खांसी, दमा, क्षय रोग ।

३. मैनेजाइटिस, जिगर और गुरदे से संबंधित रोग ।

४. रक्तचाप, पेचिस, कब्ज, बवासीर ।

५. आंखों से संबंधित सभी कठिनाइयां/रोग ।

६. मासिक चक्र की अनियमितता, श्वेत द्रव, गर्भाशय का कैंसर ।

७. कान, नाक और गले से संबंधित रोग ।

पानी पीने की विधि :

प्रातःकाल सोकर उठते ही बिना दंत मंजन किये व मुंह को धोये बिना ही एक साथ चार बड़े गिलास अर्थात लगभग १.२६० कि. ग्रा. पानी पियें । उसके पश्चात अगले ४५ मिनटों तक कोई द्रव या ठोस आहार न लें । पानी पीने के पश्चात दांतों पर ब्रश कर सकते हैं ।

यदि आप इस उपचार को अपना रहे हैं, तो आपको भोजन करने के पश्चात नाश्ता, दोपहर के भोजन और रात्रि के भोजन के बाद कम से कम २ घंटे तक पानी न पियें । आपको बिस्तर पर लेटने से पहले कुछ भी खाना नहीं चाहिए ।

जो लोग शारीरिक दृष्टि से बहुत ताकतवर नहीं हैं और चार गिलास पानी नहीं ले सकते, उन्हें धीरे-धीरे एक या दो गिलास से शुरू करना चाहिए जिसे धीरे-धीरे चार गिलास तक बढ़ाया

सदैव प्रसन्न रहिए और पुराने आनंद के क्षणों की याद करते हुए सोइए । ईश्वर पर अटूट विश्वास कीजिए । रात्रि भोजन के पश्चात चार घंटे तक कोई कार्य न कीजिए ।

जा सकता है । तथापि इस प्रक्रिया को बीच में खतम नहीं करना चाहिए ।

स्वस्थ और रोगी दोनों ही व्यक्ति इस विधि को अपना सकते हैं । स्वस्थ व्यक्ति अपने आपको स्वस्थ रखने और रोगी व्यक्ति को अपने आपको ठीक रखने के लिए इस उपचार को अपनाएं ।

रोगों का उपचार संभव

१. उच्च रक्तचाप	१ माह
२. मधुमेह	१ माह
३. कैंसर	१ माह
४. आमाशयी रोग	१० दिन
५. कब्ज	१० दिन
६. क्षय रोग	३ माह

जोड़ों और गठिया के रोगियों को एक सप्ताह तक एक दिन में दो बार और बाद में एक बार उक्त उपचार को अपनाना चाहिए ।

यह एक साधारण उपचार है और इस पर कोई लागत भी नहीं लगती और यदि लोग इस जल-उपचार को अपने जीवन में अपनाते हैं तो बिना कुछ खर्च किये ही हजारों लोग लाभान्वित होंगे ।

४ गिलास पानी पीने का कोई भी विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता । केवल शुरू में हो सकता है कि पानी पीने के पश्चात आप २-३ बार मूत्र-त्याग को जाएं । लेकिन बाद में यह आदत बन जाएगी ।

—एफ-८०३, कर्जन रोड होस्टल, नयी दिल्ली-११०००१

पतला होने का सरल उपाय

वजन कम करने के लिए अब न तो कैप्सूल खाने पड़ेंगे, न भूखे मरना पड़ेगा तथा न कसरत करनी पड़ेगी ।

जापानी अनुसंधानकर्ताओं ने अब मोटापा कम करने का एक बहुत ही सरल तरीका खोज निकाला है । उन्होंने गेहूं के आटे में सुधार करके 'विकसित आटा' तैयार किया है जो साधारण आटे के मुकाबले बहुत ही कठिनाई से पचता है ।

शरीर में पचने की क्रिया में यह विकसित आटा शारीरिक रक्त से चीनी की मात्रा को कम कर देता है । पहले के अनुसंधानों से यह ज्ञात हो ही चुका है कि शरीर से कार्बोहाइड्रेट का शोषण मोटापा घटाने में सहायक रहता है । इस हिसाब से यह विकसित आटा पतले होनेवालों के लिए वरदान से कम नहीं है ।

विकसित आटा बनाने के लिए १०० भाग गेहूं के आटे में २-५० भाग खानेवाले अमीनो अम्ल मिलाकर उसे पानी या इथेनाल में घोल दिया जाता है । फिर इस मिश्रण को एक घंटा या ज्यादा समय तक पड़े रहने दिया जाता है ताकि पूरी प्रतिक्रिया हो जाए । फिर इसका केक बना लिया जाता है ।

यह केक मधुमेह के रोगियों के लिए भी बहुत फायदेमंद रहेगा ।

—लक्ष्मी सोनी

तुम्हारी याद

स्मृति के पन्नों में अंकित
विगत के सुमधुर क्षण
जब मेरी मानसिकता में
सुखद: पर ध्वस्त
अनुभूति बनकर उतरती है
प्रभात के आशावादी
पलों में
और सूर्यास्त के
विरही क्षण में
व्याकुल हृदय के भीतर
किसी अनजानी आवाज की
लय जैसे
केवल
मुझे तुम्हारी याद आती है

—वैद्यनाथ उपाध्याय

पता : ग्राम-पाकृबारी, डाक.-खोवरां, उदालगुड़ी दरंग, असम-७८४५०९

शिक्षा : बी. ए., उम्र : २५ वर्ष

आत्मकथ्य : जीवन के सुख-दुःख, आशा और निराशा, जिजीविषाएं और अन्य अभिलाषाओं का शाब्दिक अभिव्यक्ति के रूप में कविता का जन्म होता है।

बचपन

मस्ती के नशे में डूबे
पार्क में खेलते बच्चों को
अपलक देखता है, वह बच्चा
कंधे पर मैली-सी बोरी का बोझ लिये
खड़ा पार्क के ठीक सामने
बाहर आती गेंद को देख लपकता
कि
उन विशिष्ट बच्चों की दुत्कार
लौटा देती है आगे बढ़ रहे कदमों को
और
सूखे आंसुओं से लबालब
उसकी मासूम आंखें
फिर ढूंढ़ने लगती हैं
कचरे के ढेर में
कचरा नहीं
खोया हुआ बचपन

—अमर नाथ 'अमर'

जन्म : १ मार्च १९७७

शिक्षा : स्नातक में अध्ययनरत

पता : बेलीसराय मुहल्ला, मोतिहारी-८४५४०१ (बिहार)

आत्मकथ्य : जीवन की विसंगतियों को समझने का लघु प्रयास हैं मेरी कविताएं।

सफर

यूं ही
चलते-चलते किसी राह पर
जब हमारे अधरों पर
मौन और सिर्फ मौन
छाया होगा
जब दूर-दूर तक एकांत
निस्तब्धता और सन्नाट्य होगा
और इस सन्नाटे में
गूंजती होगी सिर्फ
तुम्हारे और मेरे कदमों
की आहट
और तब कहीं
शीतल छांव के तले बैठकर
चुप्पियों के साये में
बोलेंगी एक-दूसरे से
सिर्फ तुम्हारी-मेरी आंखें
देखेंगी और देखती ही रहेंगी
एक-दूसरे को
और इसी तरह ढल जाएगा सूरज
और पूरा हो जाएगा
उम्र का यह सफर !

● कु. वत्सला शर्मा

शिक्षा : बी. एस. सी. तृतीय वर्ष,

आत्मकथ्य : कविता मेरी एकमात्र सहेली है जो कि शब्दों का रूप धारण करने के बाद मेरे सुख-दुःख को बांटती है ।

पता : एफ-३७७ एम. आई. जी., प्रताप विहार,
गाजियाबाद-२०१००९

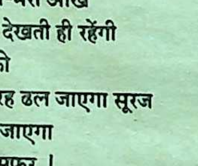

उनके फैसले

हम आपस में लड़ते रहे
और वे बिना बुलाये ही
करते रहे हमारे फैसले
अपने स्वयं के पक्ष में ।
हम सत्य की दुहाई देकर
चीखते रहे
और वे झूठे गवाहों से
विजय श्री का वरण करके
सम्मानित होकर
समाज में ऐंठकर चलते रहे
धर्मात्मा की तरह ।
पर जब भी उनसे मेरा सामना होता है
तो उनकी नजरें झुक जाती हैं
मेरे सामने ।
क्योंकि वे जानते हैं कि हम वही हैं
जो कभी आपस में लड़े नहीं हैं ।
यह तो उनकी चाल थी
जिसका शिकार हम होते रहे हैं ।
और अपना अमन चैन खोते रहे हैं ।

—उर्मिला सिंह

शिक्षा : इंटर, विशारद ।

आत्मकथ्य : कविताएं मेरी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हैं ।

पता : जटाशंकर कॉलोनी, क्रा. ११४, दमोह
(म.प्र.) ४७०६६१

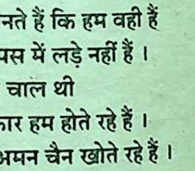

गूंगे

गूंगे से हैं हम
हमें आवाज की जरूरत है
अनजाना चेहरा है हमारा
हमें पहचान की जरूरत है
एक लाश हैं हम
हमें जान की जरूरत है
सारा शहर है जानवरों से भरा
बस एक इनसान की जरूरत है

तृप्त मन

हवाओं ने सोचा
भर लूं सुगंध
तृप्त करूं मानव मन
जल ने सोचा
हो जाऊं निर्मल
तृप्त करूं मानव मन
वृक्ष ने सोचा
फलों से लद जाऊं
तृप्त करूं मानव मन
पर मानव मन कभी तृप्त न हुआ ।

—कु. अंशु राय

शिक्षा : एम.ए. (राजनीति शास्त्र)
आत्मकथ्य : अपनी भावनाओं को जब व्यक्त करती हूं तो वह एक कविता बन जाती है । साहित्यिक किताबें पढ़ना और कविता करना ।
पता : अविनाश चन्द्र राय, रा.इं.कॉ.
बलिया-२६६००१

आत्मदाह

सुलगा दिया है अलाव
दुनिया को राख होने के लिए
मेरे सामने बेकारी का
खौफनाक मंजर है—
नहीं पा सकूंगा कुछ रोजी-रोजगार
तभी सुलगा दिया जाऊंगा
मैं भी उसी अलाव में
तभी हां तभी ही
आत्मदाहों की फेहरिश्त में
एक शख्स और जुड़ेगा
और ठोंक दिया जाऊंगा मैं भी सलीब पर
स्वार्थ और दुहाइयों के नाम

—अखिलेश शुक्ल

शिक्षा : बी.ए. (इलाहाबाद वि.वि.; अध्ययनरत)
आत्मकथ्य : मेरे सामने विथाओं का सैलाब है । खुदगर्जी के तवे पर सिंकती हुई राजनीति की रोटियां हैं । विद्रूपताएं हैं...और एक तल्ख समाज है, जिसे हांकने के लिए मैंने चाबुकीय कलम का सहारा लिया है ।
पता : २/ए, वेली रोड (अमिटको लॉज), नया कटरा इलाहाबाद (उ.प्र.)

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : मास में नवीन कार्यों की अधिकता रहेगी । निकटजनों अथवा संबंधियों द्वारा विरोधाभासी परिस्थितियों का उदय होगा । संपत्ति क्रय-विक्रय से लाभ होगा । सामाजिक, रचनात्मक कार्यों से मान-प्रतिष्ठा मिलेगी । शत्रु-पक्ष से संयमित संभाषण करें । परोपकारी कार्यों में जोखिम वहन न करें । विलासितादायी वस्तु तथा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । मासांत में प्रवास का योग होगा । आजीविका की दिशा में उल्लेखनीय परिवर्तन होगा ।

वृषभ : आत्मविश्वास तथा साहसिक भावना में वृद्धि होगी । उच्चाधिकारी की अनुकंपा से वांछित पद परिवर्तन होगा । जोखिमपूर्ण कार्यों से धन-लाभ होगा, शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से अपकीर्ति का भय विद्यमान रहेगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । प्रवास से मानसिक संतुष्टि होगी ।

मिथुन : आकस्मिक धन लाभ से लंबित समस्याओं का समाधान होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से राजकीय कार्यों की पूर्ति होगी । आजीविका संबंधी परिवर्तन से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी ।

कर्क : आजीविका संबंधी परिवर्तन होंगे । निकटजनों के कारण मानसिक तनाव में वृद्धि होगी । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करना हितकर होगा । संपत्ति अथवा न्यायालयीन कार्यों में धीमी प्रगति होगी । व्यक्तित्व विकास में स्वजनों का सहयोग मिलेगा । आध्यात्मिक सत्संग से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी, जिससे भविष्य में लाभ मिलेगा ।

सिंह : नवीन दायित्वों में वृद्धि होगी । व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा, प्रियजनों के कारण मानसिक खिन्नता तथा तनाव का सामना करना होगा । रचनात्मक अथवा सृजनात्मक कार्यों से यश वृद्धि होगी । जीवनसाथी अथवा उनके संबंधियों के कारण आर्थिक लाभ मिलेगा । स्वास्थ्य संबंधी स्थिरता होगी ।

कन्या : मास उत्साहवर्धक होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से वांछित कार्यों में सफलता मिलेगी । शत्रु-पक्ष का पराभव होगा । मास मध्य में स्वास्थ्य संबंधी चिंता का सामना करना होगा । आवेग अथवा भावुकता से पीड़ा होगी । दिनचर्या अव्यवस्थित रहेगी । रचनात्मक एवं धार्मिक कार्यों में सामाजिक स्थिति श्रेष्ठ होगी, इच्छित स्थान की यात्रा होगी ।

तुला : आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी, पैतृक संपत्ति से लाभ होगा । आजीविका संबंधी परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । नवीन

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ अप्रैल से मेष में, मंगल कर्क में, बुध १४ से मेष में १९ से वृषभ में, गुरु वृश्चिक में, वक्रीय शुक्र १७ से मीन में, शनि कुंभ में, राहू तुला में, केतु मेष में, हर्षल मकर में, नेपच्यून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी । नवीन संपत्ति अथवा वाहन का योग उपस्थित होगा ।

वृश्चिक : शत्रु-पक्ष से सर्तकता हितकर होगी । संपत्ति अथवा नवीन योजना में व्यर्थ विलंब होगा । साहस, पराक्रम पुरुषार्थ से शत्रुओं पर विजय मिलेगी, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । साझे के कार्यों को टालना हितकर होगा । जोखिमपूर्ण कार्यों से धन हानि संभावित होगी । मासांत में भूमि अथवा संपत्ति के कार्य से लाभ मिलेगा । आध्यात्मिक सत्संग से जीवन में परिवर्तित परिस्थितियों का उदय होगा । पुराने मित्रों का समागम आनंददायी होगा ।

धनु : मास में सावधानी तथा संयम से कार्य करें । न्यायालयीन कार्यों में प्रतिकूल निर्णय संभावित है । उच्चाधिकारियों से संतुलित संभाषण करें । पारिवारिक वातावरण अनुकूल होगा, जिससे मनोबल में वृद्धि होगी । नवीन संपत्ति से लाभ होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । सत्संग अथवा आध्यात्मिक अनुभूति का योग उपस्थित होगा । रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । भ्रमण में सावधानी रखें ।

मकर : पारिवारिक वातावरण में मनोनुकूल सुधार होगा । नवीन योजनाओं में प्रगति होगी । आजीविका संबंधी परिवर्तन के उन्नत अवसरों का उदय होगा । व्यावसायिक कार्यों में नवीन अवसरों की प्राप्ति होगी । मास मध्य में स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी, आकस्मिक प्रवास का अवसर मिलेगा । मासांत में उच्चाधिकारियों की अनुकूलता से प्रतिकूल परिस्थितियों का शमन होगा ।

कुंभ : विवादास्पद मामलों में विजय मिलेगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से वांछित कार्यों की पूर्ति होगी । संपत्ति के क्रय-विक्रय से लाभ मिलेगा । नौकरी में वांछित परिवर्तन होगा । प्रवास की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । न्यायालयीन कार्यों में सुलह होगी ।

मीन : मास मिश्रित फलदायी होगा । पद, स्थितियों की अनुकूलता के बावजूद कार्यों में विलंब होगा । रक्त संबंधियों से विवाद का सामना करना होगा ।

—ज्योतिष धाम पत्रिका
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर
गोविंदपुरा, भोपाल (म.प्र.)

पर्व और त्यौहार

१ अप्रैल बसंत नवरात्र आरंभ, नवसंवत् २०५२ प्रारंभ आर्य समाज स्थापना दिवस, गुड़ी पड़वा, २. मत्स्य जयंती, श्री झूलेलाल जयंती, ३. गणगौरी व्रत सौभाग्य तृतीया, ४. श्रीविनायकी गणेश चतुर्थी, ५. श्रीपंचमी, ६. स्कंदषष्ठी, सूर्यषष्ठी, ९. श्री रामनवमी, श्री दुर्गानवमी, ११. कामदा एकादशी व्रत, १२. वामनद्वादशी, १३. महावीर जयंती, प्रदोषव्रत, १५. चैत्रीपूर्णिमा श्री हनुमान जयंती, खंडग्रास चंद्रग्रहण, १८. श्रीगणेश चतुर्थी, २२. श्री शीतला अष्टमी, २५. बरूथिनी एकादशी, २७. प्रदोष व्रत, २९. दर्श अमावस्या, कंकणाकृतिसूर्य ग्रहण भारत में दिखायी नहीं देगा ।

ज्योतिष : समस्या और समाधान

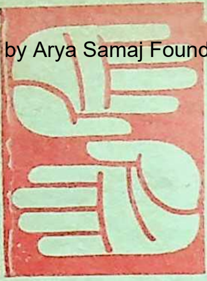

अजय भाम्बी

बाला कुमारी, नयी दिल्ली

प्रश्न : कृपया रोग-मुक्ति व पति कल्याण के लिए उपाय बतायें ?

उत्तर : स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा है । ठीक से इलाज करायें, लाभ होगा और जून के बाद आपके पति को भी अच्छी नौकरी प्राप्त होगी ।

यशवंत यादव, जबलपुर

प्रश्न : आर्थिक आत्म-निर्भरता कब होगी ? रत्न बतायें ?

उत्तर : अगले वर्ष । पुखराज धारण करें ।

श्यामसुंदर सोनी, अमृतसर

प्रश्न : स्वयं का मकान कब बनेगा ?

उत्तर : अगले दो वर्ष में संभावना ।

संध्या शर्मा, मेरठ

प्रश्न : विवाह कब ? कोई उपाय ?

उत्तर : इस वर्ष विवाह हो जाएगा । मोती और पुखराज मिलाकर पहनें, लाभ होगा ।

मधुरिमा सिन्हा, कलकत्ता

प्रश्न : जीवन संघर्षमय है । आर्थिक स्थिति कब सुधरेगी ?

उत्तर : अक्तूबर से समय अच्छा आ रहा है । घबरायें नहीं ।

हर्ष कोहली, दिल्ली

प्रश्न : कर्ज से मुक्ति कब तक ?

उत्तर : अभी समय लगेगा ।

प्रदीप मोहन अग्रवाल, जयपुर

प्रश्न : क्या मैं आई. ए. एस. अधिकारी बन पाऊंगा ?

उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों की आवश्यकता है ।

एन. बी. नैनवाल, नैनीताल

प्रश्न : प्रमोशन कब तक ?

उत्तर : जून से सितंबर के मध्य ।

प्रेमराज सिंह, गाजीपुर (बिजनौर)

प्रश्न : क्या राजयोग है ? यदि हां तो जीवन में कब ?

उत्तर : दो वर्ष के बाद ।

आरती कुमारी, डालमिया नगर

प्रश्न : प्रेमी से शादी कब तक होगी । रत्न बतायें ?

उत्तर : अगले वर्ष संभावना है लेकिन झंझट आयेंगे ।

पिंकी, खगड़िया

प्रश्न : इस वर्ष मेडिकल में प्रवेश मिलेगा या नहीं ?

उत्तर : संभावना है, प्रयत्न करें ।

जनार्दन प्रसाद पटेल, इलाहाबाद

प्रश्न : नौकरी कब तक लगेगी ?

उत्तर : अत्यधिक प्रयत्न करने से जल्द लग सकती है ।

आशा, करनाल

प्रश्न : पुनः विवाह कब तक संभव ? कृपया रत्न सुझायें ?

उत्तर : १९९६ में । पन्ना धारण करें ।

एम. आर. सुखाड़िया

प्रश्न : विदेश में नियुक्ति कब होगी । सरकारी सेवा में हूं ।

उत्तर : योग चल रहा है जल्द ही कार्य बनेगा ।

आलोक अग्रवाल, लखनऊ

प्रश्न : स्वयं का व्यवसाय कब तक ?

उत्तर : जुलाई के बाद ।

अनिल माहेश्वरी, विनोदपुर (कटिहार)

प्रश्न : आर्थिक उन्नति का योग कब से है ?

उत्तर : अगले वर्ष से ।

नेहा, कानपुर

प्रश्न सुख-शांति में वृद्धि कब से ? उपाय बतायें

उत्तर :जून से अच्छा समय आ रहा है, चिंता न करें ।

मंजली सिन्हा, लखनऊ

प्रश्न : दूसरी संतान क्या होगी, कब तक होगी ?

उत्तर : आपकी कुंडली में एक बेटे व दो बेटियों का योग है ।

अनिल सोमानी, इंदौर

प्रश्न : सफल उद्योगपति कब तक ?

उत्तर : अपेक्षित सफलता वृहस्पति की दशा में प्राप्त होगी ।

देवेन्द्र प्रताप सिंह, वाराणसी

प्रश्न : कब मुकदमा खत्म और ईश्वर दर्शन ?

उत्तर : मुकदमा तो जल्द खत्म हो जाएगा । ईश्वर दर्शन के लिए अभी गहरे में जाने की आवश्यकता है ।

वेदपाल पुरी, अंबाला छावनी

प्रश्न : बीमारी से राहत कब तक, कोई उपाय और रत्न सुझायें ?

उत्तर : अभी थोड़ा समय और लगेगा ।

शचीन्द्र, सीतापुर

प्रश्न : क्या अचल संपत्ति का निकट भविष्य में योग है ? पदोन्नति कब तक ?

उत्तर : संभावना तो बन रही है ।

भूपेन्द्र मुदगल, जैसलमेर

प्रश्न : वर्तमान पद से प्रमोशन कब होगा ?

उत्तर : जुलाई के बाद ।

— 'नक्षत्र-निकेतन'
४०६, ढाका चैंबर-१
२०६८/३८, नाईवाला
करोलबाग
नयी दिल्ली-५

१५७

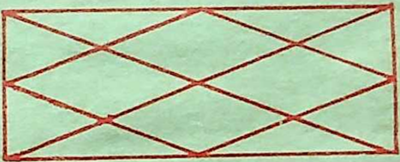

नाम..

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .... महीना.................सन..................

जन्म-स्थान..

जन्म-समय ....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण..

पता..

आपका एक प्रश्न ....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें..

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि १५७, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० अप्रैल, १९९५

वैद्य की सलाह

गायत्रा सी कबाला— बबई

प्रश्न : मोटापे की बहुत शिकायत है । दायें पैर में चलने और बैठने-उठने में बहुत तकलीफ होती है । कमजोरी, सुस्ती बहुत है ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक वटी, आरोग्यवर्धनी वटी दो वटी, योगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । कांकायन वटी दो-दो वटी भोजन के बाद पानी से लें । दही, चावल, शीतलपेय, तली वस्तुएं सेवन न करें । छह माह औषधियों का सेवन करें ।

रूपेश— सम्भल

प्रश्न : उम्र २४ वर्ष, लिंग पर बारीक दाने, पाचनक्रिया मंद, छाती पर जलन, स्वास्थ्य क्षीण ।

उत्तर : सूतशेखर रस दो-दो वटी सुबह-शाम पानी से । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच दोपहर-रात पानी से लें ।

एस. के. शर्मा— सिरोही

प्रश्न : उम्र २८ वर्ष । विवाह हुए छह वर्ष हो गये । पत्नी से सहवास से पूर्व दो-तीन बूंद चिपचिपा पदार्थ निकलता है । जिसके कारण सारी उत्तेजना समाप्त हो जाती है । दोनों को परेशानी है ।

उत्तर : वृहद वंगेश्वर रस दस ग्राम, गिलोयसत्व दस ग्राम, साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी रात दूध से लें । खटाई का परहेज कर तीन माह औषधियों का सेवन करें ।

संतोष कुमार— गोलाखीरी

प्रश्न : उम्र २४ वर्ष । दो वर्ष से हल्का बुखार, हाथ-पैरों में जलन, सिर व कमर में दर्द, अधिक मूत्र, घबराहट, कब्ज, जुकाम । कमजोरी दिन-प्रति-दिन बढ़ रही है ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मालती वसंत रस दस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम, साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें । च्यवनप्राश अवलेह एक-एक चम्मच रात दूध से लें । चावल, दही, खट्टी वस्तुएं, शीतलपेय सेवन न कर तीन माह औषधियों का सेवन करें ।

श्रीमती एल. मिश्र— गिद्दी-ए

प्रश्न : लगभग १५-२० साल से एग्जिमा से पीड़ित हूं । खुजली बहुत है, पानी निकलता है । जलन होती है । इस बीमारी से निराश हो चुकी हूं ।

उत्तर : रसमाणिक्य दस ग्राम, गंधक रसायन पंद्रह ग्राम, प्रवाल पिष्ठी दस ग्राम, साठ मात्रा बनायें । एक-एक मासा सुबह-शाम शहद से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । केशोर गूगल एक-एक वटी रात दूध से लें । खटाई, दही, प्याज, लहसुन का परहेज कर छह माह नियमित औषधियों का सेवन करें ।

एक भाई— जगदलपुर

प्रश्न : कुछ समय पूर्व लिंग के अंदर सुपारी के ठीक नीचे चमड़ी पर छाले हो रहे थे । सहवास के समय जलन भी होती थी । कुछ समय बाद एक चकत्ता महसूस हुआ और वह जगह कुछ लाल रहने लगी, एलोपैथी का इलाज कराया, ठीक हो गया । किंतु अब लिंग के चारों तरफ लाल दाने होते रहते हैं तथा अग्रभाग पर हल्की सूजन मालूम पड़ती है । नसें उभरी रहती हैं । सहवास की इच्छा होती नहीं । हीनभावना से ग्रसित हूं ।

उत्तर : केशोर गूगल एक वटी, गोक्षुरादि गूगल एक वटी, आरोग्यवर्धनी वटी एक वटी । सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाद्यासव दो-दो

चम्मच भोजन बाद पीयें । चंद्रप्रभावटी एक वटी रात दूध से लें ।

अविनाश— फाजिल्का

प्रश्न : उम्र ३५ साल । खाने की इच्छा नहीं होती । पेट में पसली के नीचे दायीं ओर हल्का दर्द व भारीपन रहता है । पेशाब का रंग ठीक है । तीन-चार दिन में जाना होता है । दुर्बलता है ।

उत्तर : पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, नवायस लोह दस ग्राम, शोथारिलौह दस ग्राम, शंखभस्म दस ग्राम । सभी औषधियों की साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । लोहासव दो चम्मच, द्राक्षासव दो चम्मच भोजन के बाद पीयें । तली वस्तुएं, देर से पचनेवाली वस्तुओं का परहेज करें । तीन माह नियमित औषधियों का सेवन करें ।

ललित मोहन— हैदराबाद

प्रश्न : पत्नी की उम्र ४० वर्ष । दुर्बलता, कमर दर्द, घबराहट, चक्कर । जांच में ठीक है, केवल खून की कमी बताते हैं । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : ताप्यादि लोह दस ग्राम, प्रवाल पंचामृत रस दस ग्राम साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । सितोपलादि चूर्ण तीस ग्राम, मालतीवसंत रस पांच ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म पांच ग्राम तीस मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा दोपहर शहद से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, द्राक्षारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें । ६ माह नियमित औषधियों का सेवन करें ।

राम सहाय— रीवा

प्रश्न : उम्र ७० वर्ष । सुस्ती-घबराहट तनाव--सा बना रहता है । कभी-कभी बिलकुल ठीक रहता हूं । कोई चिंता नहीं है । कारण नजर नहीं आता । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । अग्रशवगंधारिष्ट दो चम्मचबलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पीयें । छह माह नियमित औषधियों का सेवन करते रहें ।

पवन, आगरा

प्रश्न : उम्र ३५ वर्ष । संतान नहीं । विवाह को नौ साल । शादी के बाद पांच माह का गर्भपात । तत्पश्चात स्वयं के चोट आदि के कारण स्टिकल के पास छोटी-छोटी गांठ एवं नस में दायीं ओर गांठ हो गयी । जिसके कारण वीर्य नहीं निकलता । ऑल इंडिया में दिखाया, १४ माह टी.बी. की दवा का सेवन किया, जिससे सहवास के समय खिंचाव व दर्द रहता था । अब नहीं । नसें कुछ मोटी हैं, गांठ छोटी है । लिंग पहले से छोटा लगता है । कुछ देर ही कड़ापन रह पाता है । वीर्य निकलता है, हीन-भावना आ गयी है ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक वटी, कांचनार गूगल एक वटी, वृहद बंगेश्वर रस एक वटी, सुबह-रात दूध से लें । मालती वसंत रस दस ग्राम, रसमाणिक्य दस ग्राम, वृहद बंगेश्वर रस दस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम, साठ मात्रा बनायें, दिन में दो बार एक-एक मात्रा शहद से लें । आहार-विहार का परहेज कर तीन माह नियमित औषधियों का सेवन करें ।

नवीण— धनबाद

प्रश्न : अचानक कुछ दिनों से मेरे पेट में दर्द हुआ । दर्द नाभि के दोनों ओर था । दो दिन तक पखाना नहीं हुआ, किंतु दर्द बना रहता है ।

उत्तर : सौंठ, हरड़, सेंधा नमक, अजवायन सौ-सौ ग्राम लेकर बारीक चूर्ण बना लें । एक-एक चम्मच चूर्ण सुबह-दोपहर-रात गरम पानी से लें ।

— कविराज वेदव्रत शर्मा

बी-५/७, कृष्ण नगर,
दिल्ली-११००५१

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

पेट-खराब !

दी. कु. सि., मुजफ्फरपुर : २० वर्ष का बी.ए. प्रथम वर्ष का कुंवारा छात्र हूं, पिछले वर्ष मई में पेट खराब हुआ। दो माह खराब रहा तो शरीर कमजोर हो गया, इलाज के बावजूद ठीक नहीं हुआ तो सभी लोग मुझे बोलते रहते हैं कि क्यों ठीक नहीं हुआ ? मैं घबरा गया तथा माथे में कुछ महसूस हुआ, जिसे मैं समझ नहीं पाया । तत्पश्चात बोलने पर न बोलता, न हंसता । दुनिया से जैसे रिश्ता ही समाप्त हो गया । एम.बी.बी.एस. डॉक्टर ने माथे का एक्स-रे कराया, वह सही निकला । ओझा से झाड़-फूंक भी करा लिया । परंतु न तो अब पहले-जैसा आंख से देखता हूं, न सोच-समझ पाता हूं, झनझनाहट भी रहती है । क्या करूं ?

पेट की बीमारी यूं तो हमारे देश में बहुत सामान्य है । इसका कारण खाने-पीने में सफाई न बरतने, मक्खी आदि का भी कारण है । परंतु आपको पेट का रोग इस कारण से नहीं, तनाव, उदासीनता के कारण उत्पन्न हुआ है । यह सभी लक्षण मानसिक उदासीनता व तनाव के हैं । माथे का एक्स-रे ऐसे मामलों में सामान्य ही पाया जाता है । आपके रोग का सही निदान ही नहीं हुआ, तो भला उपचार कैसे संभव होता । आजकल मनोचिकित्सक उदासीनता दूर करने की दवा और नये तरीकों से इस रोग का इलाज सहज रूप से कर लेते हैं । हिम्मत न खोयें । अच्छे मनोचिकित्सक से मिल सही इलाज करायें ।

कब्ज की शिकायत !

रा. कु., भरतपुर : बचपन से ही कब्ज की शिकायत रहती आयी है । चाहे कितना ही जोर लगाऊं शौच नहीं आता । आंतों का निचला हिस्सा 'जाम' रहता है ।

आपको पानी की मात्रा अधिक लेनी चाहिए तथा साथ ही फल, सलाद व सब्जी खूब खानी चाहिए । रोज इसबगोल की भूसी का प्रयोग भी लाभदायक है । यदि इन सभी उपायों से सही न हों, तब एक बार अपनी जांच शल्य चिकित्सक द्वारा अवश्य करानी चाहिए ।

दत्तक पुत्र की समस्या !

स, दिल्ली : १९६३ में शादी हुई, १९८० में बच्चा न होने के कारण एक लड़का गोद लिया । बेटा अभी नौ महीने का ही था कि दुर्भाग्यवश मेरे पति को उच्च रक्तचाप के कारण लकवा मार गया । दो साल पश्चात लाठी लेकर चल लेते थे । मेरे बेटे को पढ़ाने की जिम्मेदारी उन्होंने निभायी । १९९० में उनका देहांत हो गया । तत्पश्चात वह केवल खेलता व टी. वी. देखता है । क्लास में अब फेल होने लगा है । किसी भी जरूरतमंद का दुःख नहीं देख सकता । खेल का मैदान उसके बिना सूना लगता है । सभी बाहर के लोगों के साथ व्यवहार बहुत अच्छा है— उनका कहा भी मानता है । वह अब १४ वर्ष का है तथा उसे पता है कि वह गोद लिया हुआ है । उसकी हर इच्छा पूरी की जाती है । पढ़ाई बिलकुल नहीं करता । कहता है व्यापार करूंगा । कैसे समझाऊं कि वह पढ़ सके ।

गोद लिए हुए बच्चे के साथ कई मनोवैज्ञानिक समस्याएं जुड़ जाती हैं । आपके

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

पति के पहले अपंग होने से तथा बाद में देहांत से केवल पढ़ाई करानेवाला व्यक्ति ही नहीं रहा । बच्चे को इस आयु में घर में एक पुरुष की आवश्यकता होती है । यह एक मनोवैज्ञानिक जरूरत है । साथ ही आपके पालन-पोषण में थोड़ा लाड़-प्यार अधिक हो गया जिससे वह बिगड़कर, आप जो चाहती हैं उससे उलटा करना चाहता है । कई बार माता का गोद लिये बच्चे के लिए प्यार अधिक होता है, या फिर अपराध-बोध से प्रेरित हो वह उसको डांटने में अपना हाथ खींचकर रखती हैं । किशोरावस्था की वजह से भी कई समस्याएं एक साथ जुड़ गयी हैं । वह अपनी पहचान तो स्वयं बनाना ही चाहता है । इस प्रयत्न में कई बार किशोर जो मां-बाप चाहते हैं, उसका उलटा करते हैं । आशा है आप समझ गयी होंगी कि समस्या आपके बच्चे के साथ जटिल है । धैर्यपूर्वक उनका हल आप निकाल सकती हैं । आपको यदि कोई समस्या इस बीच आती हैं तो आप भी व्यक्तिगत रूप में मनोवैज्ञानिक मदद ले सकती हैं ।

नशा करता है !

अ. इलाहाबाद : पिता ४५ वर्ष से रेल डाक-विभाग में कार्यरत तथा पांच वर्ष से मदिरा सेवन करते हैं । दिन हो या रात शराब पीते रहते हैं । घर में पैसा देना बंद कर दिया है । मैं स्नातक हूं, दो बड़ी बहनें हैं, उनकी शादी भी होनी है । क्या किसी दवा से वह ठीक हो सकते हैं ?

मदिरा पीना भी रोग ही है । जब मनुष्य अपना उत्तरदायित्व न निभा पाये और केवल अपने लिए जीने लगे । आजकल इसके छुड़ाने की दवा तथा कई तरीके मौजूद हैं । इनका लाभ नशा मुक्ति केंद्र से संपर्क कर उठाया जा सकता है । ऐसे केंद्र सरकार द्वारा समाज कल्याण मंत्रालय तथा स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा खोले गये हैं । इन स्थानों से इलाज संभव है । कई अस्पतालों में भी इसकी व्यवस्था उपलब्ध है ।

हीन भावना से ग्रस्त !

सु. अ. धुनवा; महेंद्रनगर, (नेपाल) : २९ वर्ष का बी. कॉम. में अध्ययनरत युवक हूं । तीन वर्ष से परेशान हूं । किसी काम में दिलचस्पी नहीं । किसी पद के लिए स्वयं को काबिल नहीं समझता । नौकरी के लिए, मुझे विश्वास है कि अयोग्य ही ठहराया जाऊंगा । दिल जोर-जोर से धड़कता है । रात में नींद देर से ही आती है । दोपहर में नींद अवश्य ही लेनी पड़ती है । हीन भावना प्रबल रहती है । कुछ मिनट के लिए बहुत आत्म-ग्लानि, घबराहट व उदासी दो-तीन दिन के लिए छा जाती है । यूं तो हर समय सामान्य स्थिति में भी उदास ही रहता हूं । अजनबी व चुस्त लोगों से कतराता रहता हूं । परीक्षा में हाथ-पैर कांपते हैं, धड़कन बढ़ जाती है । ताला लगाकर बाहर निकलूं, फिर लौटकर देखता हूं कि खुला तो नहीं रह गया । काठमांडू में इलाज कराया, शौच बिगड़ने लगा तो दवा छोड़ दी । मानसिक अस्पताल जाने से कतराता हूं, ताकि पागल न कहलाऊं । कृपया कोई उपचार लिखें ।

आपकी मुख्य समस्या 'एनूजाइटी', चिंता व

अत्यधिक तनाव है । दिल धड़कना भी इसी का लक्षण है न कि हृदय रोग का । हाथ-पैर कांपना, नींद देर से आना, हीन भावना, 'वहम' तथा उदासीनता जब बहुत तनाव बढ़कर हर समय रहने लगे, तब ऐसे लक्षण पैदा हो जाते हैं । कई बार दवाई से कब्ज हो जाती है । इसबगोल, हरी सब्जी, फल सेवन से सही हो जाती है । चूंकि बीमारी बढ़ी हुई है, इसलिए मनोचिकित्सक द्वारा इलाज करायें, बीच में न छोड़ें । वास्तव में मनोचिकित्सक के पास केवल पागल नहीं जाते, ऐसे सभी रोगी जो चिंताग्रस्त हों, चाहे उनमें लक्षण शारीरिक क्यों न हों, भी जाते हैं । अब मानसिक रोग का भय धीरे-धीरे हटता जा रहा है । झिझक छोड़ इलाज करायें ।

आत्मविश्वास में कमी !

सं., वाराणसी : २२ वर्ष का बी.ए. का छात्र हूं, मध्यवर्गीय परिवार का सबसे छोटा पुत्र हूं । प्रारंभ से गांव में रहा । सन १९९२ में शहर में आया तथा तब से छात्रावास में ही रहा । पढ़ाई में अत्यधिक रुचि है । कहानी व कविता भी लिखता हूं । देखने में सामान्य हूं, परंतु अंदर विचार प्रबल होते हैं । अत्यधिक भावुक प्रवृत्ति का व्यक्ति हूं । १३-१४ अगस्त १९९४ को सीने में मीठा-मीठा दर्द उत्पन्न हुआ, तत्पश्चात मानसिक अशांति उत्पन्न हुई । ऐसा दिन में ३-४ बार उत्पन्न हो जाता है । उलूल-जलूल बातें भी सोचने लगता हूं । चाहकर भी कुछ पढ़ नहीं पाता । महत्त्वाकांक्षा अति उच्च है । अशांति के दौर से गुजरता हूं । उपाय सुझायें ।

आपने अपना जिस प्रकार स्वयं का ब्यौरा दिया, इससे साफ जाहिर है कि आप अंतर्मुखी हैं तथा स्वयं के भीतर झांक लेने की क्षमता भी रखते हैं । वास्तव में गांव से शहर में आगमन तथा घर से छात्रावास में, अपने-आप में ही तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर देता है । उच्चाकांक्षा, अत्यधिक भावुक होना इन सबसे मिलकर तनाव उत्पन्न हुआ, जिसका लक्षण छाती के दर्द को लेकर हुआ तथा जिन विचारों व इच्छाओं को आपने बांध लगाकर अंदर समेट रखा था, वह भी उमड़कर बांध तोड़, उलूल-जलूल विचारों के रूप में आयी । ऊंची महत्त्वाकांक्षा तो बुरी बात नहीं, परंतु कम समय में ऊंचे लक्ष्य पाने की चेष्टा करना एक भावुक व्यक्ति के लिए कठिन व तनावपूर्ण सिद्ध हो सकता है । आपको चाहिए कि अपने मन के भीतर अंतरद्वंद्वों को पहचानें तथा अपने तनाव का कारण समझें, ताकि आप अपनी जिंदगी को फिर से सही ढंग से जी सकें ।

●

टाई हो तो ऐसी

बंबई की सुप्रसिद्ध वस्त्र निर्माता कंपनी 'जोडियाक' ने २०८ फुट लंबी टाई बनायी है जो विश्व की सबसे लंबी टाई होने का कीर्तिमान हासिल करने जा रही है तथा गिनिज बुक में आने को है ।

इस टाई को बनाने में करीब ७० मीटर कपड़ा लगा है । इसे २५ कारीगरों ने लगातार ५ दिन की मेहनत करके बनाया है । इस टाई को 'शायर डिपार्टमेंट स्टोर' में टांगकर रखा गया है जिसे देखने हजारों लोग भीड़ लगाये हुए हैं ।

— लक्ष्मी सोनी

नयी कृतियां

कथा-साहित्य

वन-कथा : पिछले कुछ वर्षों से हिंदी में विदेशी भाषाओं से अनूदित होकर पर्याप्त मात्रा में साहित्य प्रस्तुत किया गया है । डॉ. गंगा प्रसाद विमल इस सांस्कृतिक यात्रा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं । 'वन-कथा' इसी सिलसिले में बलगारियायी कहानियों का हिंदी में प्रस्तुतीकरण है । इस संग्रह में पिछले सौ वर्षों में लिखी गयी कहानियां संग्रहीत हैं । यह वह काल-खंड है, जिसमें बल्गारिया ने अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों का सामना किया है । इसलिए इन कहानियों में इस दौर के संघर्ष की पहचान पायी जा सकती है । इस संघर्ष के बीच से चलती है बलगारियायी मानस की शांति और संस्कृति-प्रियता की कहानी । वस्तुतः यही वहां के मनुष्य की सही पहचान है, उसकी अस्मिता की पहचान है । वह 'इंद्रधनुष' की छोटी-सी लड़की देनित्सा हो या 'शहर में इकट्ठे' लोग हों; वह 'सफेद अबाबील' का किसान हो या 'स्वप्नद्रष्टा' का पोस्टमास्टर बोयानोव सभी भीतर से एक महीन तंतु से जुड़े हैं । यही तंतु इन कहानियों में एक शताब्दी के काल-खंड की चेतना के रूप में उभरता है । अनुवाद की भाषा की दृष्टि से ये कहानियां रचना का सशक्त धरातल प्रस्तुत करती हैं ।

वन कथा : संपादक-अनुवादक— डॉ. गंगा प्रसाद विमल; प्रकाशक-शाश्वत प्रकाशन; ५४५२ शिव मार्केट, न्यू चंद्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७, मूल्य-साठ रुपये ।

हर्डलरेस : हर्डलरेस की कहानियां एक दिलचस्प प्रश्न सामने रखती हैं कि कहानी को कहानी लगना चाहिए या सच । इस प्रश्न को यदि उलट दिया जाए तो पूछना होगा कि क्या सच भी कहानी लग सकती है ? इन कहानियों से यद्यपि इस प्रश्न का उत्तर पाना संभव नहीं, फिर भी इनका सच हमारे आस-पास बिखरी कहानियों का सच लगता है । कहानियों में व्यक्त संबंधों और उनसे जुड़े पात्रों को पहचानने में भी निवेदिता ने जिस गहन दृष्टि और अनुभूति का परिचय दिया है, वह लेखिका के लघु किंतु विस्तृत फलकवाले परिदृश्य की ओर इशारा करती है । ये कहानियां भाषा और शिल्प की दृष्टि से भी अच्छी बन पड़ी हैं । लेखिका का यह पहला कहानी-संग्रह होने पर भी परिपक्वता का अहसास दिलाता है ।

हर्डलरेस : लेखिका-निवेदिता बुदलाकोटी, प्रकाशक कादम्बरी प्रकाशन, ५४५१ शिव मार्केट, न्यू चंद्रावल, जवाहर नगर, दिल्ली-११००७२, मूल्य : अस्सी रुपये ।

मैं खरगोश होना चाहती हूं : सन १९६४ से रचनारत इंदु बाली का समीक्ष्य कहानी-संग्रह महानगर की त्रासदी और संघर्ष को नारी जीवन के माध्यम से प्रस्तुत करता है । इन सोलह कहानियों के नारी पात्रों की दुनिया मानो सिमटी हुई दुनिया है, जिसमें ये पात्र बार-बार मरते हैं, लेकिन इनकी जिजीविषा इतनी तीव्र है कि ये पात्र लगातार जीते भी हैं और संघर्ष भी करते हैं । पात्रों का यह द्वित्व इन कहानियों को मध्य

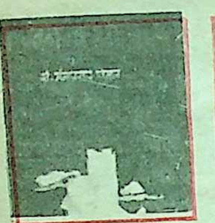

क्षितिज के पार
निर्मला सिंह

मैं खरगोश होना चाहती हूं
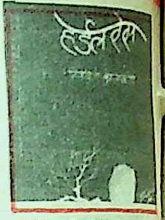

और उच्च मध्यवर्ग के बहुस्तरीय संघर्ष का जीवंत दस्तावेज बनाता है । संग्रह की 'प्रश्न अस्मिता का', 'बौनूजाई की पीड़ा', 'बस तीन कपड़े' जैसी कहानियां इंदु बाली के अगले रचना-पड़ाव का आभास कराने वाली कहानियां हैं । 'मैं खरगोश होना चाहती हूं' जैसी कहानियां ऊपरी स्तर पर भले ही समाज में व्याप्त दहेज समस्या की हानियां लगती हों, किंतु भीतरी स्तर पर नमिता के माध्यम से उस विद्रोह को अंजाम देनेवाली कहानियां हैं, जो नारी की सामाजिक मुक्ति का कारक बनेगा । इसीलिए नमिता—जैसे पात्र 'खरगोश की अनुभूति और मानव का दिमाग' पाकर 'भरपूर जीना' चाहते हैं । 'बस तीन कपड़े' की तरुणा भी दहेज के लालची दावेदार को झटककर अपना फैसला खुद करती है । संग्रह की कहानियां पठनीय हैं ।

मैं खरगोश होना चाहती हूं : लेखिका-इंदु बाली, प्रकाशक-सुयोग्य प्रकाशन; डब्लयू-११६, ग्रेटर कैलाश-१, नयी दिल्ली-११००४८, मूल्य-पचपन रुपये ।

तीसरे रावण की मौत : योगेंद्र शर्मा का प्रस्तुत कहानी संग्रह सन १९८० से अब तक लिखी उनकी ग्यारह कहानियों का संग्रह है । इन कहानियों में स्व के अनुभवों और जिंदगी के आस-पास बिखरे पात्रों की पीड़ाओं को आत्मसात करके कहानीकार ने उन्हें ऐसा रचनात्मक धरातल प्रदान किया है, जिससे सहज ही जुड़ाव हो जाता है । वस्तुतः संग्रह की कहानियां मनुष्य जीवन की जिजीविषा को प्रस्तुत करती हैं, जो यथार्थ और व्यंग्य के धरातलों पर एक साथ चलती हैं । इन कहानियों में दशरथ के वियोग की पीड़ा भी है और नारी का सौंदर्य बनाम अस्मिता का प्रश्न भी;इनमें घायल के प्रति संवेदना भी है और प्रेमी के सीने में धंसी कील का दर्द भी; इनमें समाज की परंपराओं का रोदन भी है और टूटते स्वप्न भी, 'द प्रोटीएस्ट' और 'तीसरे रावण की मौत' संग्रह की विशिष्ट कहानियां हैं । यह रावण कहीं कहानीकार का मानस पुत्र है, तो दूसरे स्तर पर समाज पर करारा व्यंग्य भी । इस रावण की मौत के लिए किसी राम की आवश्यकता नहीं है, उसे मारने के लिए आज की सीता ही सक्षम है । 'धब्बे' कहानी में यही रावण समाज के ठेकेदारों के रूप में उभरता है और व्यंग्य के माध्यम से दर्शाता है कि आधुनिक समाज को धर्म की अफीम की आवश्यकता नहीं है, वरन् उसे चाहिए आर्थिक विकास ।

तीसरे रावण की मौत : लेखक-योगेंद्र शर्मा, प्रकाशक-दिनमान प्रकाशन; ३०१४, चर्खेवालान, दिल्ली-११०००६, मूल्य-पैंतीस रुपये ।

छक्केलाल : व्यंग्य लेखिका डॉ. सरोजनी प्रीतम

के इस व्यंग्य-संग्रह के लेख हमारे समय की राजनीति, सामाजिक आचार, बुद्धिजीवी-आचरण आदि के व्यंग्यात्मक दस्तावेज हैं । इन लेखों में वर्णित पात्र वे साधारण लोग नहीं हैं, जो इस दुनिया में आते हैं, गरदन झुकाये अपने काम को अंजाम देते हैं और फिर कूच कर जाते हैं । ऐसे लोगों का जीवन स्वयं में व्यंग्य हो सकता है, व्यंग्य का आधार नहीं बन पाता । व्यंग्य का आधार वे लोग बनते हैं, जो अपने अनोखे कारनामों से अनोखेलाल बनकर यह सिद्ध करने पर तुल जाते हैं कि इस दुनिया में लाल भले ही इक्के-दुक्के हों, लेकिन छक्के लालों की संख्या भरपूर है । डॉ. सरोजनी प्रीतम की पैनी व्यंग्य दृष्टि ऐसे छक्केलालों और अनोखेलालों को पहचानने में चूकती नहीं । सच तो यह है कि हम सबमें ऐसे पात्र मौजूद हैं, आवश्यकता मात्र स्वयं में छिपे इन पात्रों को ढूंढ़ने की है ।

डॉ. सरोजनी प्रीतम के इन व्यंग्य लेखों के माध्यम से एक ऐसा सामाजिक चिंतन हमारे सामने प्रकट होता है, जो समाज के उस पात्र को प्रस्तुत करता है, जो अकसर हमारी दृष्टि की ओट में रहता है ।

संग्रह पठनीय भी है और चिंतनीय भी ।

छक्केलाल : लेखिका-डॉ. सरोजनी प्रीतम; प्रकाशक-हास्य अकादमी; १११, न्यू राजेंद्र नगर; नयी दिल्ली-११००६०; मूल्य-एक सौ रुपये ।

कलकत्ता-१९९४ : डॉ. प्रतिभा अग्रवाल द्वारा संकलित-संपादित यह संकलन कलकत्ता महानगर के हिंदी साहित्यकारों की सम्मिलित प्रतिभा का परिणाम है । संकलन में कविताओं और कहानियों के साथ-साथ निबंध, ललित निबंध और समीक्षात्मक लेख भी सम्मिलित किये गये हैं । संकलन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें रचना का स्तर अपेक्षित रहा है, नाम या प्रसिद्धि नहीं । इसलिए इसमें लब्ध-प्रतिष्ठ और नये सभी तरह के नाम हैं ।

संकलित कविताओं में से अनेक कवियों की कविताएं एक सतत् प्रक्रिया का आभास कराती हैं, जो रचनात्मक मनीषा की जीव्य है और रचना में निहित आत्मविश्वास का प्रतीक है । सकलदीप सिंह की 'ताला' श्रीहर्ष की 'सावधान', विद्या भंडारी की 'शब्दहीन चेहरा' मृत्युंजय उपाध्याय की 'भाई विनय की मृत्यु पर' ऐसी ही कविताएं हैं । कहानियों में हर्षनाथ की 'अलका', 'आम्रपाली', 'गंगाजली' और प्रभाखेतान की लंबी कहानी 'एड्स' विशिष्ट टिप्पणियों की अपेक्षा रखती हैं । निबंधों में कविता और निरंकुश सभ्यता' कविता के नये संदर्भों की तलाश करता है । संकलित ललित निबंध भी पीछे छूट रही विधया को तरोताजा करते हैं ।

कलकत्ता-१९९४ : संपादक-डॉ. प्रतिभा अग्रवाल, प्रकाशक-प्रतिध्वनि: ३१ सर हरिराम

गोयनका स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७; मूल्य-अस्सी रुपये ।

एक पड़ाव और

हिंदी के सोलह चर्चित-अचर्चित कहानीकारों की कहानियों का यह संकलन हिंदी-कहानी के विकास-क्रम का नया पड़ाव प्रस्तुत करने का दावा करता है । कथ्य के स्तर पर अवश्य कुछ कहानियां ऐसी हैं, जो इस दावे की निकटता का आभास कराती हैं । ओमजी मिश्र की कहानी 'संघर्ष जारी रहेगा', कृष्ण शंकर भटनागर की 'तमाशा', 'निशांतर' की 'नब्ज', रमेशचंद्र श्रीवास्तव की 'अक्स' जैसी कहानियां नयी सोच के साथ सामाजिक-पारिवारिक संबंधों का जायजा लेती हैं । यों कुछ कहानियां ऐसी भी हैं, जो परंपरागत सोच और मूल्य-सत्ता के दायरे में आती हैं । वेद हिमांशु की कहानी 'सर्पयोनि' और संतोष दीक्षित की कहानी 'नीड़ से नीड़ तक' इसी श्रेणी की कहानियां कही जा सकती हैं । लेकिन संकलन की लगभग सभी कहानियां पठनीय अवश्य हैं ।

एक पड़ाव और; संपादक-सतीशराज पुष्करणा; प्रकाशक-विवेकानंद प्रकाशन; महेंद्रू, पटना-८००००६ (बिहार); मूल्य-चालीस रुपये, पुस्तकालय संस्करण-साठ रुपये ।

क्षितिज के पार : निर्मला सिंह की दस कहानियों का यह संग्रह नारी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का जायजा है । लेखकीय दृष्टिकोण के अनुरूप ये कहानियां मात्र यथार्थ पर टिकी हुई नहीं हैं, वरन् इनमें कल्पना का भी यथापरक आश्रय लिया गया है । लेखिका ने इन कहानियों के और अपने आस-पास बिखरे पात्रों में प्रवेश करके उन्हें मनोवैज्ञानिक धरातल पर परखने का प्रयास किया है । इसी प्रयास का प्रतिफलन है । यह नारी जीवन की कहानियां, जिनमें भावनात्मक स्तर पर संवेदना-ग्रहण और फिर उसकी अभिव्यक्ति है । 'अंधेरी सुरंग', 'अछरा', 'कोरा सपना' संग्रह की अच्छी कहानियां हैं । भाषिक स्तर पर कहानियां पात्रों के अनुरूप चलती हैं, यद्यपि कहीं-कहीं ऐसे प्रयोग भी मिल जाएंगे, जो प्रवाह में अवरोध उत्पन्न करते प्रतीत होते हैं । 'कोमल किलकारी' एक ऐसी ही कहानी है, जो नारी की संतान वांछा को साकार करती है । कहानी-संग्रह स्वागत योग्य है ।

क्षितिज के पार : लेखिका-निर्मला सिंह; प्रकाशक-अयन प्रकाशन; १/२०, महरौली, नयी दिल्ली-११००३०; मूल्य-पचास रुपये ।

एक थाल मोतियोंभरा : हम अकसर लोक कथाओं और एक विशेष प्रकार की कहानियों को बच्चों की कहानियां कहकर एक ओर कर देते हैं— यह सोचकर कि इस ओर उस साहित्य में अंतर है या बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य बड़ों के स्तर का नहीं है, लेकिन विश्व-साहित्य में अनेक ऐसे उदाहरण मिलेंगे जब बच्चों को दृष्टि में रखकर लिखी गयी रचनाएं विश्व की महान कृतियों में गिनी गयीं और सामान्य पाठकों के लिए लिखी गयी रचनाएं बच्चों में बेहद लोकप्रिय हुई । जय प्रकाश भारती की ये कहानियां भी सभी आयु वर्गों के पढ़ने योग्य हैं, क्योंकि ये जीवन के उन मूल्यों की कहानियां हैं, जो मनुष्य का मार्ग प्रशस्त करती हैं । संकलन की सभी कहानियां सरल-सुबोध शैली में लिखी गयी हैं और इनमें

अध्यात्म बोध और चमत्कार का प्रयोग भी किया गया है ।

एक थाल मोतियोंभरा : लेखक-जय प्रकाश भारती; प्रकाशक-नया साहित्य, मदरसा रोड़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६; मूल्य- पंद्रह रुपये ।

काके लागूं पांव : कथा-साहित्य के स्थापित हस्ताक्षर डॉ. भगवती शरण मिश्र की कलम से 'पवन पुत्र', 'पहला सूरज', 'बंधक आत्माएं' जैसे कृतियों के बाद 'काके लागूं पांव' उपन्यास एक सुखद अनुभूति देता है । डॉ. मिश्र ऐतिहासिक-पौराणिक विषयों पर लिखने में सिद्धहस्त कथाकार हैं । इसी कड़ी में 'काके लागूं पांव' सिक्ख धर्म के नवें गुरु तेगबहादुरजी और दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन-वृत्त पर आधारित है । वृहद् कलेवर का यह उपन्यास सिक्ख धर्म के उस दौर की कथा कहता है, जो संघर्षों, शौर्य-गाथाओं और शहादतों से भरा हुआ है । इसमें गुरु तेगबहादुर का प्रायः संपूर्ण जीवन-वृत्त और गुरु गोबिंद सिंह का बालकाल आधार स्वरुप ग्रहण किया

उपन्यास में कथा अनेक स्तरों पर चलती है और इतिहास-क्रम के एक अभाव की पूर्ति का प्रयास करती है । यह अभाव सिक्खों के नवें गुरु के जीवन, विचारों और कार्यों के समग्र आकलन से संबद्ध हैं । उपन्यासकार को इसमें अत्यंत सफलता प्राप्त हुई है । संभवतः यह लेखकीय उद्देश्य भी है । लेखकीय उद्देश्य के ही अंतर्गत दार्शनिक उपपत्तियां इस कृति का आधार बनी हैं और पाठक की चिंतन-शक्ति को प्रेरित करती है । उपन्यास जीवनी-परक उपन्यासों में विशिष्ट स्थान बनाने में सफल होगा ।

काके लागूं पांव : लेखक-भगवतीशरण मिश्र; प्रकाशक-राजपाल एंड सन्ज़; मदरसा रोड कश्मीरी गेट, दिल्ली; मूल्य-दो सौ रुपये ।

—डॉ. सुरेश धींगड़ा

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. सगर, २. क. १५२६ ई. में बाबर और इब्राहीम लोदी के बीच, ख. लोदी की हार, मुगल साम्राज्य की नींव पड़ी, ३. क. आस्ट्रेलिया के तस्मानिया द्वीप पर दस हजार वर्ष से भी पुराना चीड़ का वृक्ष (१९८५ में पता चला), ख. अमरीका में मिली एक फंफूदी २ से ५ हजार वर्ष पुरानी मानी जाती है, ४. क. जीन-चिकित्सा से अनेक बीमारियों का इलाज, ख. जीन, ५. क. नारवे की लीव अरनीसेन ५० दिन में १५०० किलोमीटर का सफर करके पहुंची, (दिसं. १९९४), ख. १४वां अभियान-दल १३ जन. को पहुंचा, नेता— वैज्ञानिक डॉ. एस. डी. शर्मा, ६. क. जरमनी, इटली, होंडूरास, इंडोनेशिया तथा बोत्स्वाना, ख. ब्राजील, जिबूती, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान तथा स्पेन, ७. ९१.७८ अरब डॉलर (१९९३ ई.— नवीनतम आंकड़े), ८. क. मोरारजी देसाई, ख. द. अफरीका के आर्चबिशप रेवांड ट्रेवुद हडलुसटन, ग. मामा बालेश्वर दयाल, ९. क. फ्रांस की मेरी पियर्स ने स्पेन की अरांचा सांचेज को हराकर, ख. अमरीका के आंद्रे अगासी ने हमवतन पीट संप्रास को हराकर, १०. ग्यारह-वर्षीया छवि मदान ने नील द्वीप से पोर्ट-ब्लेयर के कार्बिन कोव तक ३३ किलोमीटर, ११ घंटे ५५ मिनट ५८ सेकंड में तैरकर पार किया, ११. अपने को छिपाने में माहिर तिलचट्टा ।

पेट में पलते जानवर

• शेरविन बी. नूलैण्ड

चौबीस वर्षीया ग्रेस लोपाट (असली नाम नहीं) अमरीका में कनेक्टोकट के निकट न्यू हैवन में नर्सरी स्कूल में अध्यापिका बनने के लिए प्रशिक्षण ले रही थी । देखने में वह स्वस्थ और सुंदर थी—इतनी कि सौंदर्य-प्रतियोगिता में ईनाम भी जीत चुकी थी, लेकिन वह आठ वर्ष की आयु से ही मधुमेह से पीड़ित थी और दिन में दो बार उसे इंसुलिन लेना पड़ता था ।

उसके साथ वह हादसा अचानक ही हुआ था । उसका सारा शरीर फूल गया था और त्वचा पर बड़े-बड़े चकत्ते पड़ गये थे । एनेस्थीसिया विशेषज्ञों ने उसे श्रेणी ५ का रोगी घोषित किया था, जिसका सीधा अर्थ था कि ऐसे रोगी को शल्य-चिकित्सा के बिना बचाना असंभव है । यह कह पाना आज भी कठिन है कि उसे अत्याधुनिक चिकित्सा-प्रणाली ने बचाया या किसी दैवी-शक्ति ने,जो उसकी बेहोशी के दौरान मृत पिता के रूप में प्रकट हुई थी । शल्य-चिकित्सा से पहले डॉक्टरों ने उसका जीवन केवल कुछ ही घंटों का आंका था । उसका शल्य-चिकित्सक होने के नाते पिछले चार वर्ष से सोचते रहने के बाद भी मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि ग्रेस लोपाट से अधिक विकट रोगी मेरे जीवन में नहीं आया ।

'क्यों' का उत्तर नहीं

ग्रेस के रोग की भांति उसकी जीवन-रक्षा के कारण को भी निश्चित कर पाना कठिन काम है । चिकित्सक-दल ने उसके रोग की प्रक्रिया को तो पहचान लिया था, लेकिन उनमें से कोई भी उस 'क्यों' का उत्तर देने की स्थिति में नहीं था, जिससे ग्रेस बीमार पड़ी थी । वे उस स्रोत के तीव्र विकास के कारण को भी नहीं समझ पाये । अनुमान के आधार पर ही उन्होंने ग्रेस को भविष्य में सुअर का गौश्त न खाने की सलाह दी थी ।

वस्तुतः बीमार पड़ने से पहले ग्रेस ने इतनी मात्रा में गोश्त नहीं खाया था कि वह सीधे-सीधे रोग का कारण बन सके । उसने बीमार पड़ने से डेढ़ दिन पहले चीनी भोजन लिया था, जिसमें सुअर का गोश्त और 'फ्राइड राइस' शामिल थे ।

ग्रेस की वार्षिक परीक्षा होने वाली थी । वह खुश थी कि आंतरिक परीक्षाओं में उसे बहुत अच्छे अंक मिले । एक सप्ताह के बाद वह अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रशिक्षित अध्यापिका बन जाती । अचानक उसे लगा, "मैं जमीन पर गिर गयी हूं—मैं समझ नहीं पा रही थी कि यह सब कैसे हुआ । मैं हड़बड़ा कर खड़ी हुई । परिसर में हजारों लोग मौजूद थे । मैं मना रही थी कि 'काश ! मुझे किसी ने इस तरह गिरते न देखा हो ।' पटरी ऊबड़-खाबड़ थी नहीं । गिरने का कोई कारण समझ में नहीं आ रहा था । ऐसे लगा जैसे टांगें ही साथ न हों । मैंने सोचा कि एक घंटा लगातार नाचने से थकान हो गयी है । हॉस्टल में मेरे साथ रहने वाली लड़कियों का विचार था कि मेरे पैर आपस में टकरा गये होंगे ।"

दूसरे दिन जब ग्रेस की नींद खुली तो वह बीमार लग रही थी । उसे उल्टियां और दस्त होने लगे । बदन पसीने से भीग रहा था । 'शायद फ्लू हो गया है,' ग्रेस ने सोचा । "मैं बिस्तर पर लेट गयी, लेकिन बार-बार उठना पड़ रहा था । मेरी सहपाठिन चिंतित होने लगीं, क्योंकि मैं पहले भी कई बार बीमार पड़ चुकी

मैंने ऑपरेशन शुरू किया और ग्रेस के पेट पर चीरा लगाया । जब मैं मांसपेशियों की अंतिम परत पर पहुंचा तो उसके पेट में से बदबूदार पीली पीव बलवला कर बाहर निकली । उससे कई बोतलें भर गयीं । उसकी आंतें पेट में भरी हवा में तैर रही थीं । यही कारण था कि पेट हलके-से दबाने पर भी उसमें से ढोल की-सी आवाज निकली थी ।

थी । ऐसे में मैं निर्जलन का शिकार हो जाती थी और मधुमेह बिगड़ जाने से मुझे अस्पताल ले जाना पड़ता था । लेकिन इस बार शर्करा का स्तर असामान्य नहीं था ।

''लड़कियों ने घबराकर मेरी मां को बुलवा भेजा । वे मुझे घर ले गयीं । निर्जलन से बचने के लिए मैं जिंजरएल पीती रही और उल्टियां रोकने के लिए दवा लेती रही । लेकिन उल्टियां थीं कि रुकने का नाम नहीं ले रही थीं । अगली सुबह मेरे पेट में दर्द होने लगा । मेरे हाथ-पांव सुन्न हो गये, जैसे शरीर के साथ ही न हों । ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था । मुझे जैसे वातोन्मात्त हो गया । सब कुछ भयानक था ।

मधुमेह की भूमिका

ग्रेस के पिता की हृदय रोग से जब मृत्यु हुई, तब वह केवल दस वर्ष की थी । पति की मृत्यु के बाद एन्नी को ही परिवार चलाना था । सन १९७८ में यह पता चलने पर कि ग्रेस मधुमेह से पीड़ित है, उसने इस रोग के विषय में हर संभव जानकारी प्राप्त की और ग्रेस की देखभाल करने लगी । इसमें अनेक कठिनाइयां थीं । ग्रेस आम मरीजों की भांति अकसर खान-पान के नियमों का उल्लंघन कर देती और फिर एन्नी को उसका उपचार करना पड़ता । कभी-कभी उसकी हालत इतनी खराब हो जाती कि उसे अस्पताल में दाखिल कराना पड़ता । इस प्रकार उसे कुल सात बार अस्पताल ले जाना पड़ा । हर बार उसकी बढ़ी हुई अम्लरक्तता (एसिगोसिस) और निर्जलन का उपचार होता । अम्लरक्तता ऐसी अवस्था है कि यदि उसका समय पर इलाज न हो पाये तो रोगी को वायु-विकार और बेहोशी के साथ-साथ रोगी की मृत्यु तक हो सकती थी ।

लेकिन इस बार एन्नी का सारा कौशल व्यर्थ गया । उसे नयी स्थिति का सामना करना पड़ रहा था । ''उसने मुझे सुबह साढ़े पांच बजे उठा कर बताया कि वह अपने हाथ-पैरों को महसूस नहीं कर पा रही है । मैं समझ गयी कि उसे अस्पताल ले जाना जरूरी है । जब मैं ग्रेस को कार में लिटा रही थी, तब उसने मुझे बताया कि वह यह भी महसूस नहीं कर पा रही कि उसने पांव जमीन पर रखा है ।'' एन्नी ने बताया ।

ग्रेस के रक्त के नमूने तुरंत ले लिये गये और उसे ऑक्सीजन चढ़ा दी गयी । परीक्षणों में ऊपरी तौर पर कुछ भी असाधारण नहीं लग रहा था ।

मेरा शरीर ही मेरे साथ नहीं था

ग्रेस की हालत बिगड़ती जा रही थी । वह चिल्ला रही थी । उस समय की अवस्था का वर्णन करते हुए ग्रेस ने कहा था, "मेरा पेट दुख रहा था । वह एकदम सख्त था, जैसे किसी ने मेरे स्नायुओं को निचोड़ दिया हो । मैं भयभीत थी । सोच रही थी कि शायद २४-घंटे से उल्टियां करते रहने से ऐसी हालत हो गयी है । लेकिन, जिस बात ने मुझे डरा दिया था वह यह थी कि मैं कुछ भी स्पष्ट महसूस नहीं कर पा रही थी । मुझे लग रहा था, जैसे मैं वहां मौजूद ही नहीं थी, जैसे मेरा शरीर ही मेरे साथ नहीं था ।

"मां मुझे सांत्वना देने की कोशिश में लगी हुई थी । मैं लगातार चीख रही थी, तड़प रही थी । तभी मां ने पूछा, "तुम्हें पता चला कि तुम पेशाब कर रही हो ?" मुझे कुछ पता नहीं था । तभी मैंने मां की चीख सुनी, 'हे भगवान ! यह तो खून है !' उसने नर्स को पुकारा । उसके बाद मुझे इतना ही पता चला कि मेरे चारों ओर नर्सें और डॉक्टर मौजूद थे ।"

रक्तदोष

वस्तुतः ग्रेस के रक्त-परीक्षणों का परिणाम भी सामान्य नहीं था । श्वेतकणों की मात्रा २८,५०० प्रति घन मिलीमीटर थी, जबकि सामान्य संख्या होनी चाहिए ५,००० से ११,००० के बीच । यह इस बात का संकेत था कि ग्रेस के शरीर में कहीं भयानक संक्रमण है और उसका तुरंत निदान और उपचार होना चाहिए । रक्त-मधु का परिमाण भी ६५४ मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर था, जो सामान्य से सात गुना था । उसमें अम्लरक्तता भी सामान्य से अधिक थी । यह स्थिति तभी होती है जब मधुमेह का रोगी किसी संक्रामक रोग का शिकार होता है । चिकित्सकों ने उसे सुई (इंजेक्शनों) के माध्यम से प्रतिजीवाणु (एंटीबॉयटिक्स) देने शुरू कर दिये ।

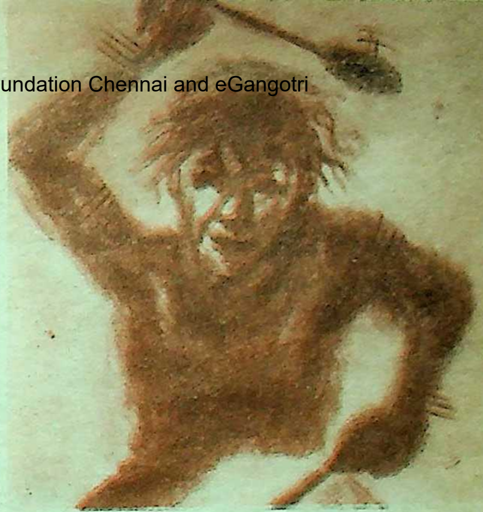

इनमें से सबसे महत्वपूर्ण तथ्य था श्वेताणुओं की असामान्य संख्या । लेकिन इससे भी ज्यादा चिंतित करने वाली बात तो ग्रेस की अवस्था थी, जिसे कुछ पता नहीं चल रहा था कि उसे क्या हो रहा है । उसके पूरे शरीर पर जामुनी-भूरे चकत्ते थे और जहां चकत्ते नहीं थे, वहां त्वचा एकदम श्वेत पड़ गयी थी । उसके शरीर का तापमान सामान्य से एक डिग्री कम था और रक्तचाप भी गिरना शुरू हो चुका था ।

ग्रेस की यह हालत रक्तदोष (सेप्सिम) की ओर संकेत कर रही थी । भयानक संक्रमण की इस अवस्था में रोगी के महत्त्वपूर्ण अवयव बेकार हो जाते हैं और उसकी मृत्यु भी हो सकती है ।

डॉक्टरों का अनुमान कि ग्रेस के पेट में कोई संक्रामक रोग हो सकता है । उन्होंने आंत्रशोथ विशेषज्ञ सूजन लागार्डे और ग्रेस के मूल चिकित्सक मर्रे ब्रोडोफ से संपर्क किया । तभी

ब्रोडोफ ने मुझसे संपर्क किया । मैं उस समय एक ऑपरेशन करने की तैयारी कर रहा था, इसलिए मैंने अपने सहायक को ग्रेस का परीक्षण करने भेज दिया ।

लागार्डे यह देखकर हैरान थी कि इतनी दवाइयों के बावजूद भी मरीज की अम्लरक्तता कम नहीं हुई और वह हिस्टीरिया के मरीज की भांति व्यवहार कर रही है । उसने कैट स्कैन और स्नायु-विशेषज्ञ की सलाह लेने का मशविरा दिया । मेरे सहायक ने भी लौट कर बताया कि ग्रेस का केस शल्य चिकित्सक का नहीं है ।

उसकी बात सुनकर मैंने निर्णय किया कि मैं खुद उसका परीक्षण करूंगा ।

पेट से ढोल की आवाज

जब मैंने ग्रेस को देखा तो मेरा मजबूत कलेजा भी एक बार दहल गया । वह किसी वायवीय शक्ति के कारण उछल-कूद मचाती हुई लाश लग रही थी । उसके शरीर पर जितने बड़े-बड़े जालनुमा चकत्ते मैंने देखे, पूर्वज्ञान होने पर भी मैंने उनकी कल्पना नहीं की थी । उसका पेट भी पिछले दो घंटों में इतना फूल गया था कि पसलियां पूरी तरह से छिप गयीं थीं । मैंने पेट का परीक्षण करने के लिए अंगुली से बजाकर देखा तो उसमें से ढोल बजने की-सी ध्वनि हुई । इससे एक बात तो साफ हो गयी कि ग्रेस की आंतों में हवा भरी हुई थी । आले से परीक्षण करने पर लगा कि आंतों में हरकत से उत्पन्न मांसपेशियों की फैलने और सिकुड़ने की प्रक्रिया एकदम नदारद है । मैंने बहुत हल्के-से ग्रेस का पेट दबाया । उसके चेहरे पर तुरंत पीड़ा के चिह्न उभर आये । वह मुझे भयभीत दृष्टि से देख रही थी, लेकिन एक भी शब्द बोलने की स्थिति में नहीं थी ।

मृत आंतें

पेट के इस तरह अचानक फूलने को पुराने चिकित्सकों ने मिटियोरिज़्म का नाम दिया है । मुझे लगा कि यह ग्रेस के रोग का निदान हो सकता है यानि उसकी आंतें मृत हो चुकी हैं । श्वेत रक्ताणुओं की अतिशय वृद्धि का भी यह उत्तर हो सकता था । इसका अर्थ था तुरंत ऑपरेशन ।

उसी समय वहां आंत्रशोथ विशेषज्ञ माइक बेनिक पहुंचे । उन्होंने भी ग्रेस का परीक्षण कर अपनी टिप्पणी में लिखा, ''इस मरीज के लिए तुरंत ऑपरेशन ही एकमात्र विकल्प है, अन्यथा मृत्यु का काफी खतरा है ।''

हमने निर्णय ले लिया और बेनिक ने ग्रेस की मां को स्पष्ट शब्दों में बता दिया, ''एन्नी,

> ***बहुत खोजने पर भी कोई ठोस कारण हाथ नहीं लगा । तब मैंने अपने पूर्व-निर्णय के अनुसार आंत का वह हिस्सा निकाल दिया । बाद में मैंने अपनी टिप्पणी में लिखवाया, ''इस रक्ताल्पता का कारण पता लगाना कठिन है । ऑपरेशन करने वाले चिकित्सक दल का पहले कभी ऐसी स्थिति से सामना नहीं हुआ ।''***

ग्रेस मर रही है और कारण हमें पता नहीं । हमें इसके शरीर में झांकना पड़ेगा—उसके लिए यही एक विकल्प है ।''

यह अंतिम संस्कार था

जिस समय ऑपरेशन की तैयारी चल रही थी, उस बीच ग्रेस की चेतना कुछ क्षणों के लिए लौट आयी थी । उसे अच्छी तरह याद है कि वह ऑपरेशन कक्ष में जाते समय तड़प रही थी ।

''मैं करवट लेना चाहती थी क्योंकि मुझे लग रहा था कि इससे मुझे राहत मिलेगी । मैं सोच रही थी, 'मैं मर रही हूं—मैं सिर्फ २० साल की हूं और मैं मर रही हूं ।' पादरी आ गये थे और प्रार्थना करते हुए छाती पर क्रॉस बना रहे थे । मैं सोच रही थी, 'हे भगवान, यह अंतिम संस्कार है । यह तुम्हारी आखिरी यात्रा है ।'

''मुझे ईश्वर की शक्ति में पूरा विश्वास है और पिता की मृत्यु के बाद भी मेरा उनसे संपर्क रहा है—मैं उनकी उपस्थिति हमेशा महसूस करती रही हूं । मेरे चाचा रोन की जब मृत्यु हुई थी, तब मैं केवल पांच वर्ष की बच्ची थी । मेरा हमेशा विश्वास रहा है कि मेरे पिता और चाचा स्वर्ग में हैं और मैं भी किसी दिन मरने के बाद उनसे जा मिलूंगी । यह विश्वास वैसा ही था जैसा मेरा यह विश्वास कि मरते समय मेरे पिता के चेहरे पर जो मुसकान थी, वह मेरी मां के लिए थी या मेरे पिता का स्वर्ग में मेरे दादा-दादी ने स्वागत किया था । मैं लेटी हुई महसूस कर रही थी कि मेरा शरीर खींचा जा रहा है । यह खिंचाव वैक्यूम क्लीनर के खिंचाव-जैसा था—मुझे लग रहा था कि मेरा सारा शरीर आगे की ओर खींचा जा रहा है । मैं सोच रही थी, 'मैं आ रही हूं, बस कुछ क्षण—मैं मर रही हूं ।'

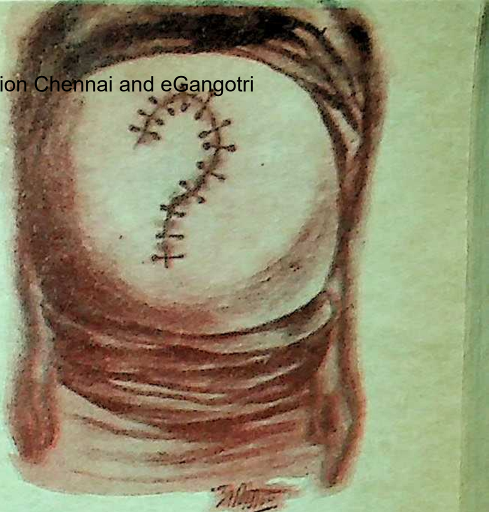

''और तभी मुझे अपने पिता और चाचा दिखायी पड़े । वे वहां खड़े थे और मैं सोच रही थी, 'अच्छी बात है, भगवान ! मैं मर चुकी हूं ।' वहां रोशनी नहीं थी—शायद रोशनी लाने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है । मेरा विचार है कि या तो वे मेरे पास आये थे या मैं ही उनके पास पहुंची थी । मां बताती है कि मैं कह रही थी, 'बिल, रोन !' मैं अपने पिता और चाचा को नाम से कभी नहीं पुकारती थी । लेकिन शायद मृत्यु के बाद संबोधन बदल जाते हैं । तब मैंने अवश्य पुकारा था, 'बिल, रोन ।' और मेरे पिता ने हाथ बढ़ाते हुए कहा था, 'नहीं, अभी नहीं ।' और मैं रुक गयी। मैंने मां की ओर देखा और कहा, 'मैं जिंदा रहूंगी ।' ये मेरे अंतिम शब्द थे ।

पिग्बैल

मैंने ओपरेशन शुरू किया और ग्रेस के पेट पर चीरा लगाया । जब मैं मांसपेशियों की अंतिम परत पर पहुंचा तो उसके पेट में से बदबूदार पीली पीव बलबला कर बाहर

निकली । उससे कई बोतलें भर गयीं । उसकी आंतें पेट में भरी हवा में तैर रही थीं । यही कारण था कि पेट हलके-से दबाने पर भी उसमें से ढोल की-सी आवाज निकली थी ।

छोटी आंत का आधार से लगभग १५ इंच का हिस्सा मृत था । उसका रंग मटमैला नीला पड़ चुका था और गतिहीन हो गया था । आश्चर्यजनक बात यह थी कि उसमें से गुजरने वाली रक्त-कोशिकाएं सामान्य रूप से काम कर रही थीं ।

बहुत खोजने पर भी कोई ठोस कारण हाथ नहीं लगा । तब मैंने अपने पूर्व-निर्णय के अनुसार आंत का वह हिस्सा निकाल दिया । बाद में मैंने अपनी टिप्पणी में लिखवाया, "इस रक्ताल्पता का कारण पता लगाना कठिन है । ऑपरेशन करने वाले चिकित्सक दल का पहले कभी ऐसी स्थिति से सामना नहीं हुआ ।"

मैंने ग्रेस के पाचन अंग की अनवरतता को पुनर्स्थापित करने के अलावा कुछ नहीं किया था । इस काम के बाद एंटी बॉयटिक्स दवाओं के घोल से उसके जख्म को धोकर मैंने सी दिया ।

ऑपरेशन तकनीकी दृष्टि से एकदम सफल था, लेकिन रोग का कारण शायद पैथॉलोजिस्ट की रपट के बाद ही मालूम हो सकता था । आंत का निकाला हुआ हिस्सा मैं उसे सौंप चुका था ।

ग्रेस की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ । उसकी त्वचा पर चकत्ते वैसे ही थे । पैथॉलोजिस्ट ब्रियस वेस्ट ने मुझे अपनी प्रयोगशाला में बताया, "ग्रेस की रक्तकोशिकाएं एकदम स्वस्थ हैं । आंत्र ऊतकों के मृत होने का कारण मेरे विचार से पिग्बैल है ।"

पिग्बैल के विषय में मुझे कोई जानकारी नहीं थी । मैंने ब्रियस से उसके विषय में पूछा और जब उसने बताना शुरू किया, तब मैं समझ गया कि यह क्या बला है । माइक्रोस्कोप से देखने पर मैंने पाया कि क्षतिग्रस्त आंत की अंदरूनी श्लैष्मिक परत मृत थी और उस पर लाखों की संख्या में छड़ी के आकार के क्लोस्ट्रीडिया जीवाणु (बैक्ट्रिया) थे जिसे वह समझ रही थी कि पेट में जानवर पल रहे हैं। इसी परिवार के जीवाणु वात गैंग्रीन और टेटनस का कारण बनते हैं ।

सूअर का गोश्त : खलनायक ?

इसी बीच मुझे सूचना मिली कि ग्रेस की स्वप्रवृत्त पेशियों के ऊतकों का क्षय होने लगा है । इसका कारण भी क्लोस्ट्रीडिया बैक्ट्रिया द्वारा उत्पन्न विष ही था ।

ग्रेस के पेट में पल रहे जीवाणुओं और न्यू गिनी के आदिवासियों की आंतों में मिलने वाले जीवाणुओं में समानता थी । न्यू गिनी के हजारों आदिवासी इसी प्रक्रिया का शिकार होकर मरते रहे हैं । वस्तुतः उनके पारंपरिक पर्वों में सूअर की आंतों और गोश्त को शकरकंद या केलों के साथ केले के पत्तों में परत दर परत लपेट कर जमीन में दबा दिया जाता है और फिर गड्ढे में पानी डालकर उस पर आग जला कर उसे पकाया जाता है । इस प्रक्रिया में एक तो गोश्त अधपका रह जाता है, दूसरे जीवाणुओं को पनपने का अवसर भी मिल जाता है ।

सामान्यतः कलोस्ट्रीडिया द्वारा उत्पन्न विष के शरीर में उत्पन्न ट्रिपसिन नामक एंजाइम नष्ट कर डालता है, किंतु शकरकंद में उपलब्ध रसायन

श्वेत रक्ताणु भी अब बढ़कर २१,००० तक पहुंच गये थे। अनुमान लगाया जा सकता था कि उसकी आंत का एक और हिस्सा मृत हो चुका है। उसका शरीर फिर फूलने लगा था और वजन १२५ पाउंड से बढ़ कर १८५ पाउंड हो गया था।

इस एंजाइम की क्रिया को मंद कर देते हैं। शकरकंद इन आदिवासियों का मुख्य भोजन है। क्लोस्ट्रीडिया और ट्रिपसिन के प्रभाव को मंद करने वाले शकरकंद का योग पिग्बैल के लिए आदर्श स्थिति बन जाता है। लंबे समय तक कुपोषण का शिकार रहने वाले व्यक्ति भी यदि यकायक पौष्टिक आहार लेने लगें, तो इसका शिकार हो सकते हैं। इसका उदाहरण हमें द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जरमनी में डार्मब्रांइट, चीन, बंगलादेश, सोलोमन द्वीप समूह, थाईलैंड में खमेर शरणार्थियों आदि में मिलते हैं।

दूसरा ऑपरेशन

ग्रेस इसमें से किसी भी स्थिति का शिकार नहीं हुई थी, फिर भी उसकी हालत बद से बदतर होती जा रही थी। क्या मधुमेह के कारण उसका ट्रिपसिन एकदम प्रभावहीन हो गया था?

अब तो उसके गुरदे भी काम नहीं कर रहे थे। उसे डायलाइसिस पर रखा जा रहा था। उसे दी जा रही पांच में से तीन दवाएं एंटी-बायटिक थीं। उसके चार्ट पर १४ संभावित बीमारियों के नाम थे—रक्तदोष, गुरदे की खराबी, मधुमेह, चकत्ते, आदि-आदि। श्वेत रक्ताणु भी अब बढ़कर २१,००० तक पहुंच गये थे। अनुमान लगाया जा सकता था कि उसकी आंत का एक और हिस्सा मृत हो चुका है। उसका शरीर फिर फूलने लगा था और वजन १२५ पाउंड से बढ़कर १८५ पाउंड हो गया था।

ग्रेस के लिए दूसरा ऑपरेशन अनिवार्य हो गया था। पहले लगाये गये टांकों को काटते ही अंदर से द्रव पदार्थ और पीव निकला। उसकी आंत का डेढ़ फुट का हिस्सा मृत हो चुका था, यानी रक्ताल्पता और कलोस्ट्रीडिया जीवाणुओं का प्रभाव क्षेत्र बढ़ चुका था।

विजय-पथ पर

मैंने उस मृत अंश को भी निकाल दिया। पेट को पूरी तरह से साफ करने के बाद इस बार मैंने उसे परंपरागत ढंग से सिला। इस तरीके में आधुनिकतम यंत्रों और साधनों का इस्तेमाल भले ही न होता हो, शल्य चिकित्सक का पूरा कौशल और अनुभव अवश्य लगता है।

अगले २४ घंटों में ग्रेस की स्थिति में माइक बेनिक के शब्दों में 'चहुंमुखी सुधार' हुआ। पहली बार हमें लगा कि हमारा संघर्ष विजय-पथ पर है। यद्यपि इसके बाद एक बार फिर ग्रेस की हालत बिगड़ने लगी; उसके श्वेताणुओं की संख्या ३२,००० हो गयी। मुझे लगा कि उसकी रक्तवाहिनियों में कहीं संक्रमण है, किंतु इसका कोई प्रमाण मेरे हाथ नहीं लगा। फिर मैंने सोचा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि उसकी आंतों के स्राव ऑपरेशन के जख्म

को संक्रामित कर रहे हों, लेकिन इस अनुमान का भी कोई आधार नहीं मिला । सबसे खतरनाक संभावना इस बात की थी कि कहीं उसकी बची-खुची आंत भी प्रभावहीन न हो गयी हो । रेडियो आइसोटोप स्कैन ने इस संभावना को भी निराधार साबित कर दिया । लेकिन जब मैंने स्कैन विशेषज्ञ के साथ बैठकर उसकी रिपोर्ट का गहन अध्ययन किया, तब जमीन पांवों के नीचे से खिसकती लगी । पूरी आंत की अंदरूनी परत पर क्लोस्ट्रीडिया छिटके हुए थे ।

इस बीच जब-जब मैंने ग्रेस का परीक्षण किया, तब-तब मुझे लगा कि वैज्ञानिक तौर पर सिद्ध क्लोस्ट्रीडिया और रक्ताल्पता की उपस्थिति के बावजूद उसका पेट सामान्य तौर पर पिचका हुआ है और दबाने पर भी पीड़ा के वैसे चिह्न नहीं उभरते, जैसा कि ऑपरेशन से पहले हुआ था । ठोकने की आवाज भी सामान्य-सी थी । ग्रेस की सामान्य स्थिति में अब सुधार लग रहा था ।

उन्नत तकनीक बनाम निदान

इस बीच अन्य चिकित्सकों ने काफी दबाव डाला कि ग्रेस का तीसरा ऑपरेशन किया जाना चाहिए । वस्तुतः युवा चिकित्सकों में उन्नत तकनीक का इतना मोह उत्पन्न हो चुका है कि उनमें रोगी के इतिहास और निदान के आधार पर निष्कर्ष तक पहुंचने का धैर्य ही नहीं रहा । इस स्थिति में मैंने अपने लंबे अनुभव और आयु के आधार पर अंतिम निर्णय किया कि ''ग्रेस की आंतें अतिक्षय की शिकार नहीं हैं । मेरे विचार में उसका ऑपरेशन नहीं होना चाहिए ।''

सौभाग्य से मेरा विचार सही निकला ।

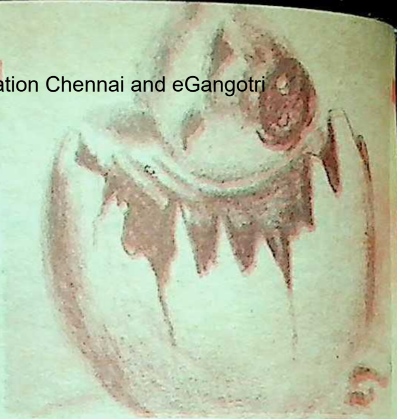

अगले दिन तक ग्रेस की स्थिति में इतना सुधार हो गया कि उसके लिए सांस की नली की आवश्यकता नहीं रही । अगले २४ घंटों के बाद वह पूर्णरूप से चेतनावस्था में आ गयी । उसने आंखें खोलीं और मां को देखा । फिर उसने कहा, ''मां, शुक्रवार को मेरी इतिहास की परीक्षा है ।'' ऑपरेशन के बाद के ११ दिनों उसे कोई प्रतीति नहीं थी ।

बिना वर्षा के इंद्रधनुष

१८ सप्ताह के बाद ग्रेस को अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी । चार महीने के बाद वह फिर से कॉलेज जाने लगी ।

ग्रेस की मां को लगता है कि इस बीमारी के दो वर्ष बाद जब ग्रेस ने स्नातक की उपाधि प्राप्त की तो वह केवल धैर्य और सौभाग्य का ही परिणाम नहीं था, उसमें बिल की आत्मा द्वारा प्रदत्त संरक्षण भी काम कर रहा था । जब ग्रेस को अस्पताल में होश आया था, तब उस समय आकाश में इंद्रधनुष निकला था—बिना वर्षा के इंद्रधनुष ! एन्नी को याद है वह इंद्रधनुष ! उसे विश्वास है, वह अच्छा सगुन था ।

प्रस्तुति : डॉ. सुरेश धींगड़ा

लेखन एक अकेली और निरीह यातना

श्रीनगर (गढ़वाल) : हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के सभागार में सुप्रसिद्ध कथाकार एवं कादम्बिनी-संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी का एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया । अपने व्याख्यान में श्री अवस्थी ने कहा कि लेखन अपने आप में एक अकेली और निरीह यातना है । अकेलेपन में लिखी चीज जब छपकर सामने आती है, तो वह सबकी हो जाती है । पाठक ही उसके सत्यं-शिवं-सुंदरम पक्ष का सच्चा पहचानकर्ता होता है । भीड़ में भी लेखक अकेला होता है । कारण भीड़ से बचने के लिए उसे अपनी सारी शक्ति लगानी पड़ती है । हर आदमी से अपने आप को बचाना पड़ता है । उन्होंने आगे कहा कि राजनीतिक दृष्टि से हम दुनिया में अत्यंत दयनीय बन गये हैं । हर आदमी की नजर हम पर है । आज हमारे देश में राजनीतिक स्तर पर बहुत ही घटिया शीतयुद्ध चल रहा है । साथ ही उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत ही एकमात्र देश है, जो शक्ति संपन्न है । यह शक्ति यहां की सांस्कृतिक विरासत में निहित है । उन्होंने लेखकों का आह्वान किया कि वे अपने आंचलिक परिवेश को केंद्र बनाकर लेखन कार्य करें ।

इस आयोजन की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. एस. राजपूत ने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के कुछ पक्षों का मार्मिक उद्घाटन किया और विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में हमारा देश एक शक्ति के रूप में उभरकर आएगा ।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. हरिमोहन ने किया ।

व्याख्यान के बाद श्री अवस्थी ने कादम्बिनी-क्लब के सदस्यों से भेंट की तथा उनसे साहित्यिक चर्चा की । इस अवसर पर 'कादम्बिनी' की लेखिका डॉ. सुधा पांडेय भी उपस्थित थीं । उन्होंने कादम्बिनी-क्लब के सदस्य रचनाकारों से अपने लेखन में भारतीय

संस्कृति के तत्वों का अधिक से अधिक समावेश करने का सुझाव दिया ।

—संयोजक, कादम्बिनी क्लब ।

साहित्य गोष्ठी

'कादम्बिनी' क्लब, रांची के तत्वावधान में स्थानीय शिल्पी युवा संगठन कार्यालय परिसर में साहित्यकारों एवं साहित्यप्रेमियों की बैठक संपन्न हुई । उक्त अवसर पर आयोजित साहित्य चर्चा में अनेक लोगों ने हिस्सा लिया । इसके अतिरिक्त डॉ. ध्रुव तनवानी, श्री कृष्ण कुमार मधुकर, श्रीमती शीला सिंह रॉय, श्री नरेश कुमार बंका, श्रीमती महुआ माझी, श्री आलोक प्रियदर्शी, श्री राजीव कुमार थेपड़ा, सुश्री रश्मि कुमारी एवं आलोक आदित्य आदि ने अपनी-अपनी कविताएं सुनायीं । बैठक का संचालन क्लब के संयोजक आलोक आदित्य ने किया ।

काव्य गोष्ठी

'कादम्बिनी' क्लब, खंडवा द्वारा स्थानीय गांधी भवन हॉल में 'काव्य सुमन' कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पं. वीरेन्द्र मिश्र ने की । अतिथि श्री सुरजीत सिंह चावला एवं श्री अवधेश सिसोदिया थे । कार्यक्रम का पं. राजेन्द्र मिश्र ने संचालन किया ।

गोष्ठी में सुपरिचित कविगण सर्वश्री चंद्रसेन विराट, दिनेश शुक्ल, डॉ. श्रीराम परिहार, प्रभु शंकर शुक्ल, हिफाजत खंडवी, रामेश्वर हरिद, जावेद खंडवी, श्रीमती शकुंतला बडोकिया, संतोष ओझा, हरिओम मानसार, रमाकांत पांडे ने रामशरण ओझा के संचालन में काव्य सुमन अर्पित किये ।

क्लब की ओर से श्री नत्थूभाई पटेल ने अध्यक्ष पं. वीरेन्द्र मिश्र का शॉल-श्री फल से स्वागत किया । संयोजक रमेश राव आव्हाड़ ने सभी का पुष्प-हारों से स्वागत किया । दैनिक 'भास्कर' ब्यूरो प्रमुख श्री राजेन्द्र परिहार ने आभार व्यक्त किया ।

प्रस्तुति—रमेश राव, आव्हाड़, संयोजक।

शोक सभा

'कादम्बिनी'-क्लब, सीतामढ़ी के सदस्यों तथा आगत रचनाकारों की एक बैठक श्री राम नाथ 'सुमन' की अध्यक्षता में हुई, जिसमें स्थानीय साहित्यकार श्री मुन्नी लाल आर्य के निधन पर शोक प्रकट किया गया । उपस्थित रचनाकारों ने दिवंगत पत्रकार तथा वरिष्ठ साहित्यकार श्री योगेन्द्र रीजवाल तथा श्री आर्य के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया ।

क्लब की संयोजिका श्रीमती आशा प्रभात ने श्री आर्य के सामाजिक कार्यों पर प्रकाश डाला । बैठक में नवनिर्मित जिला शिवहर के जिलाधिकारी के पद पर वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. भगवती शरण मिश्र के पदस्थापन पर हर्ष व्यक्त करते हुए श्रीमती आशा प्रभात ने कहा कि क्षेत्र की आम जनता को ऐसे कर्मठ एवं ईमानदार समाहर्ता से लाभ पहुंचेगा तथा क्षेत्र का विकास होगा । बैठक में गोयनका महाविद्यालय के हिंदी के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. मदन मोहन 'पूर्णेन्दु', प्रो. विनोद कुमार, श्री अवध बिहारीशरण हितेन्द्र, खालिद अहमद 'सागर',

श्याम नंदन प्रसाद, रामस्वरूप स्वर्णकार, श्री जय प्रकाश मिश्र, रीता झा तथा सुश्री वंदना आदि ने अपने विचार व्यक्त किये ।

साक्षरता प्रसार में बुद्धिजीवियों की भूमिका

होशंगाबाद । 'कादम्बिनी क्लब' की तृतीय मासिक आवृत्ति के अंतर्गत एक गोष्ठी का आयोजन कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में किया गया । गोष्ठी के प्रथम चरण में 'साक्षरता प्रसार में बुद्धिजीवियों की भूमिका' विषय पर चर्चा की गयी ।

गोष्ठी के द्वितीय चरण में क्लब के सदस्य गीतकार मगनलाल 'नगीना', बीना दुबे रोशनी, सुभाष यादव भारती, कृष्णकांता अग्रवाल, एम. पी. मिश्र ने कविता पाठ किया । प्रस्तुत रचनाओं की काव्यवस्तु एवं शिल्पगत विशिष्टताओं पर चर्चा की गयी । अन्य कवियों में संतोष व्यास भी उपस्थित थे । गोष्ठी का संचालन संयोजक बाबूलाल कदम ने किया एवं शिवानंद सोनी ने आभार माना ।

कादम्बिनी क्लब : सदस्यों की रचनाएं

मुझे पता नहीं

मेरी आत्मा
व्याकुल है ।
मेरा मन
चंचल है ।
कारण ?
पता नहीं ! पर
सहेलियां कहती
'तुम नादान हो !
आशा क्या है ?
निराशा क्या है ?
इसकी पहचान,
तुम्हें नहीं है !
मुझे
पता नहीं
यह नादानी क्या है ?

—वि. शीजा,
मद्रास

विवशता

जीर्ण-शीर्ण हुए कपड़े
देह पर पड़ी झुर्रियां
पैरों में फटी बिवाइयां
वह गरीब बूढ़ा
कदम दर कदम
शनैः शनैः बढ़ता जा रहा है
अपनी धूमिल-सी
मंजिल की ओर
अट्टहास करते हुए
बादल गरजने-बरसने
को तत्पर
किंतु,
फिर वह बढ़ता ही
जा रहा है
अपनी मंद गति से ।

—रविन्द्र जैन
द्वारा साहनी फाइनेंसर्स
अंबाला रोड सहारनपुर

सांस्कृतिक समाचार

दिल्ली की सामाजिक व साहित्यिक संस्था साहित्य कला भारती के तत्वावधान में लेखिका कनकलता की पुस्तक 'बोन्साई' (कहानी संग्रह) का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। पुस्तक का लोकार्पण कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने किया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार श्री कन्हैयालाल नंदन ने की व विशिष्ट अतिथि हिंदी अकादमी, दिल्ली के सचिव श्री रामशरण गौड़ थे।

साहित्य कला भारती
लेखिका कनकल के कहानी-संग्रह बोन्साई
का लोका समा

इस अवसर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार व कला संवर्धन के लिए श्री संजीव कुमार को साहित्य कला भारती सम्मान दिया गया तथा उसके पश्चात एक सरस गीत-गजल संध्या (काव्य गोष्ठी) में सर्वश्री धनंजय सिंह, वीरेन्द्र 'मधुर', सत्यपाल 'सत्यम', विज्ञान व्रत, अशोक वर्मा एवं दिनेश रघुवंशी ने काव्य पाठ किया। समारोह का संचालन कवि श्री महेन्द्र शर्मा ने किया।

संस्था के अध्यक्ष श्री सतीश सागर ने समारोह में उपस्थित सभी गण्यमान्य व्यक्तियों का धन्यवा किया।

'अरुणाभा' का लोकार्पण

नयी दिल्ली के कांस्टीट्यूशन हॉल में प्रसिद्ध पत्रकार एवं स्वतंत्रता-सैनानी स्व. पंडित रामचं शर्मा 'महारथी' की स्मृति में आयोजित समारोह मे श्रीमती अरुणा कपूर द्वारा संपादित कहानी-संग्र 'अरुणाभा' (दो भाग) व अन्य कृतियों का लोकार्पण किया गया। अध्यक्षता करते हुए डॉ. रामदरश मिश्र ने अरुणाभा प्रकाशन को इस प्रकाशन-परियोजना के लिए बधाई दी। अरुणा कपूर के उपन्यास 'धूप आती है' पर चर्चा करते हुए समीक्षकों ने उसे एक संवेदनशील और साहसिक कथाकृति निरूपित किया।

अरुणाभा प्रकाशन की

राजभाषा कवि सम्मेलन

नयी दिल्ली : विगत दिनों 'स्टेट ट्रेडिंग कॉरपोरेशन ऑव इंडिया' ने राजभाषा सप्ताह के अंतर्गत ए सरस कवि सम्मेलन का आयोजन किया। जिसका उद्घाटन एस.टी.सी. के अध्यक्ष श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी ने दीप प्रज्वलित कर किया। आमंत्रित कवियों का परिचय 'स्टेट ट्रेडिंग कॉरपोरेशन ऑव इंडिया लिमिटेड' के वित्त निदेशक एवं सुपरिचित व्यंग्यकार श्री गोपाल चतुर्वेदी ने किया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता श्री रमानाथ अवस्थी ने की तथा संचालन श्री सुरे 'नीरव' ने किया। इस गोष्ठी में सर्वश्री कन्हैयालाल नंदन, डॉ. शेरजंग गर्ग, विजय किशो

मानव, रमानाथ अवस्थी, गोपाल चतुर्वेदी, सुरेश नीरव एवं लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने काव्य पाठ किया ।

देवाशीष चक्रवर्ती की गजलें

दिल्ली : श्रीमती बासंती देवी कल्चरल सोसायटी ने सभीक्षेत्रों में कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए समाज के हर वर्ग के बीच भारतीय संस्कृति के विकास की एक महत्त्वाकांक्षी योजना बनायी है ।

सहायक पुलिस आयुक्त पी. आर. एस. बरार के समर्थन तथा प्रयास से त्रिवेणी थियेटर में रविवार की शाम 'गजल एवं गीत का' एक कार्यक्रम आयोजित किया गया । संगीत के इस कार्यक्रम में जाने-माने गजल गायक देवाशीष चक्रवर्ती ने अपनी गजलों से श्रोताओं का मन मोहा ।

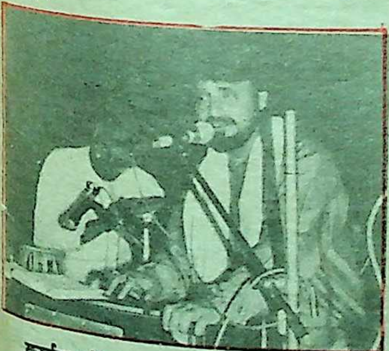

कार्यक्रम में चुनिंदा गीत भी प्रस्तुत किये गये । कार्यक्रम की शुरूआत 'माना कि हम इस दौर के हासिल तो नहीं थे' गजल से हुई । इसके बाद 'शाम-ए-गम निगाहें नाजकी बात करो', तथा 'न पैमाने खनकते हैं, न दौरे जाम चलता है', को भी श्रोताओं ने अत्यधिक सराहा । गीतों में 'तुम से बिछड़ कर मन का पंछी शोर मचाए है'और 'हम प्यार करेंगे ऐसा तुम्हें', ने भी श्रोताओं को भावावेग में सरोबार किया ।

देवाशीष चक्रवर्ती के इस कार्यक्रम की खास बात उनका आत्म विश्वास और श्रोताओं को अपनी गजलों के साथ बांधे रखने की क्षमता थी । गजलें प्रस्तुत करने का उनका अंदाज अत्यधिक प्रभावशाली रहा जिसमें श्रोता अंत तक डूबे रहे । गीत, संगीत के साथ उनके स्वर का तालमेल उनकी इस क्षेत्र की अथक साधना को ही दर्शाता है ।

गीत एवं गजलों के उनके प्रस्तुतीकरण में संगीतज्ञों का भी उल्लेखनीय योगदान रहा । तबले पर मनवेंदर भट्टाचार्य ने संगत की तो वायलिन पर सुरजीत सिंह एवं गिटार पर कीर्ति कुमार और हरभजन ने उनका साथ दिया ।

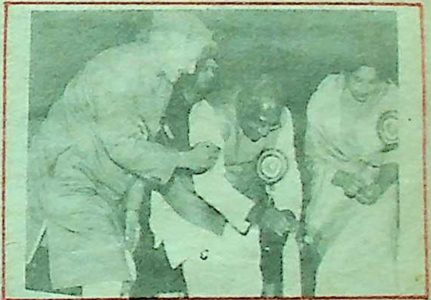

अखिल भारतीय मुशायरा

ककराला : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की १२५वीं जयंती के अवसर पर अखिल भारतीय मुशायरा एवं कवि सम्मेलन संपन्न हुआ ।

कार्यक्रम का शुभारंभ उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा ने किया । मुशायरे में श्री मजरूह सुल्तानपुरी की अध्यक्षता में अनेक शायरों ने अपनी रचनाएं पढ़ीं ।

समस्यापूर्ति—१८७

सांस

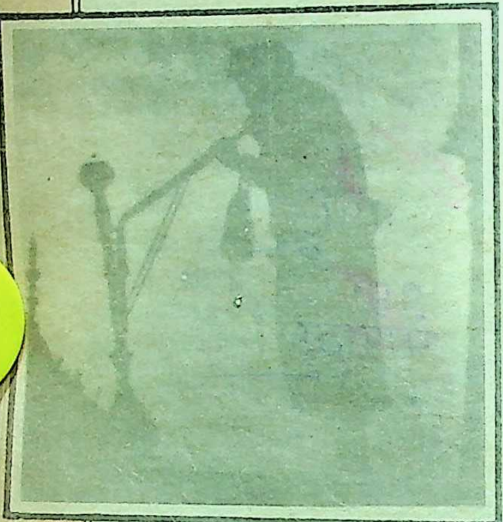

द्वितीय पुरस्कार

सदियों की एकता में
पड़ी जो राजनीति की फांस
बंट गये मंदिर, मसजिद, पीर और पैगंबर
हुक्के, चौपाल, तीज त्योहार
हर कोई दुखी हरेक उदास
दूभर हुई सांस

—अनिल शर्मा

विद्युत सेवा के
कृषि कुंज, पूसा, नयी दिल्ली-१

प्रथम पुरस्कार

मैं अंधियारे की घाटी का बूढ़ा राजा
उम्र की इस दहलीज पर खड़ा
दहशत से भरा, देख रहा हूं, बुझे हुक्के की नली थामे
मंदिर के कंगूरों, मसजिद की मीनारों को
कोई भी तो नहीं है पास
और उखड़ रही है मेरी सांस

—चारुमित्रा

द्वारा—डॉ. अशोक प्रियदर्शी
नीचे करमटोली, रांची-८३४००८

तृतीय पुरस्कार

क्षितिज के उस पार डूबता हुआ सूरज
दिवस भर के अनुभव के बाद
धुंधली पड़ती रश्मियों को समेटे हुए
जीवन के अंतिम पड़ाव की तरह
अंधेरों का जाल बाहर भी, भीतर भी
सुलझाने के लिए मत उलझा सांस

—कु. प्रीति तिवारी

द्वारा—श्रीमती कमला तिवा
राजकीय बालिका इंटर कालेज
टनकपुर, पोस्ट-टनकपुर, नैनीताल-२६२३०

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२०
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित

विश्व प्रसिद्ध श्रृंखला

इस श्रृंखला में प्रकाशित पुस्तकों का मूल उद्देश्य ज्ञान एवं चिन्तन के धरातल पर एक औसत पाठक को अन्तर्राष्ट्रीय जगत् से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करना है।

इस श्रृंखला की सभी पुस्तकें क्रमशः मानव संबंधी सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे खोज, रहस्य, रोमांच, दर्शन, धर्म, खेल, संस्कृति, सभ्यता आदि पर विहंगम दृष्टिपात करते हुए सारगर्भित विषय-सामग्री प्रस्तुत करती हैं।

श्रृंखला की अन्य पुस्तकें

मूल्य 30/-
प्रत्येक
डाकखर्च :
6/-

विश्व प्रसिद्ध........

- * प्रेरक-प्रसंग
- * क्रूर हत्यारे
- * ड्रग-माफिया
- * खोज-यात्राएं
- * रोमांस-कथाएं
- * अनमोल खजाने
- * विनाश लीलाएं
- * रिकार्ड्स I, II
- * 101 व्यक्तित्व I, II, III
- * साहसिक कथाएं
- * बैंक डकैतियां व जालसाजियां
- * धर्म, मत एवं संप्रदाय
- * हस्तियों के प्रेम-प्रसंग
- * तख्तापलट की घटनाएं
- * भ्रष्ट राजनीतिज्ञ
- * अलौकिक रहस्य
- * गुप्तचर-संस्थाएं
- * राजनैतिक हत्याएं
- * आतंकवादी संगठन
- * चिकित्सा-पद्धतियां
- * सनकी तानाशाह
- * रोमांचक कारनामे
- * खेल और खिलाड़ी
- * मांसाहारी व विचित्र पेड़-पौधे
- * भयानक रोगों पर विजय
- * आध्यात्मिक गुरु एवं शैतान
- * विलासी सुंदरियां
- * अनसुलझे रहस्य
- * दुर्घटनाएं
- * जलसेनाएं
- * वैज्ञानिक
- * जनक्रांतियां
- * युद्ध
- * जासूस
- * मुकदमे
- * खोजें
- * सभ्यताएं
- * भविष्यवाणियां और उनके भविष्यवेत्ता
- * कुख्यात महिलाएं
- * अनूठे रहस्य
- * मिलिट्री ऑपरेशन
- * मिथक एवं पुराण-कथाएं
- * धातुओं की कहानियां
- * विवाह प्रथाएं एवं परंपराएं

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

एक साथ चार पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ

• सामाजिक पाठ्य-सामग्री • प्रत्येक पुस्तक सैकड़ों दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित • सरल भाषा शैली • फोटो टाइपसैट • बढ़िया कागज़ पर ऑफसैट छपाई • बहुरंगी

अपने निकट के या रेलवे तथा बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टॉलों से प्राप्त करें। न मिलने पर वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता:

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006
शोरूम : 10 बी नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002
शाखाएं : • 22/2, मिशन रोड, बंगलौर-560027 फोन : 234025

केस गळाणे? अकाली पिकणे? कोंडा होणे

केसांची समस्या?

हे केसांचे रोग नाहीतच, ही केवळ लक्षणे आहेत.
ह्या समस्येच्या संपूर्ण उपचारासाठी डोक्याला
लावण्याचे लोशन तसेच पोटात योग्य औषध घेणे
अत्यंत आवश्यक आहे.

डॉ. सरकार

कोंडा विरहीत सुंदर काळे दाट केस, अर्निकाप्लस ट्रायोफरचा संदेश.
अकाली पिकणे, गळणे आणि पोटांचे विविध विकार,
निरामय होऊन सुंदर नवीन केसांची वाढ़,
अप्रतिम नितळ, मोहक आणि आकर्षक कांती उपहार,
हाच एकमेव दुष्परीणाम विरहीत होमिओपॅथीचा उपचार.

Allen's
ArnikaPlus
E TRIOFER
TRIPLE ACTION HAIR VITALIZER
60 ml
ALLEN
Allen's
ArnikaPlus
HAIR VITALIZER
ALLEN

जगात प्रथमच

केसांच्या संपूर्ण उपचारासाठी
डॉ. सरकार यांची "संशोधनावर आधारि
तेलविरहीत हेअर लोशन **अर्निकाप्लस**
आणि पोटात घेण्यासाठी योग्य होमोओ हेअर टॉनिक
-ट्रायोफर टॅबलेट्स एक नवीन वेष्टनात."
पॅकींग : ६० मि.ली. आणि १०० मि.ली.

अर्निकाप्लस-ट्रायोफर
ट्रिपल ॲक्शन हेअर व्हायटलायझार
केसांच्या समस्यानिवारण साठी अनुभवलेले आणि प्रमाणित केलेले होमिओ औषध

औषध घेण्याची नियमावली :
वेष्टणात उपलब्ध

लिव्होसिन निर्मिती करणाऱ्या कंपनीच्या
सहयोगी संस्था Allen
यांचे होमिओ उत्पादन
ॲलन लॅबोरेटरीज प्रा. ली.
ॲलन हाऊस, २२४/एच, माणीकतल्ला मेन रोड,
कलकत्ता-५४, फोन : ३६-३०९६

Dr. Sarkar Group
ॲलोपाथी
होमोओपाथी
आणि आयुर्वेदीक
औषधींचे निर्माते :
त्यांची प्रयत्न वरुण मिळतात आपला आरोग्य आणि विश्वास.

Marketed by :
Allen's Indi
Marketing Pvt. Lt
ArnikaPlus Apartment, Sea
35, A. P. C. Road, Calcutta-
Phone : 350-9026
Allen's Ad. India

C & F AGENTS : H. V. ENTERPRISES MAYO HOSPITAL ROAD, NAGPUR-440018 PH : 720688
SHAMA TRADING CORPORATION JAYA TALKIES BLDG., S. V. ROAD, BORIVLI (WEST) BOMBAY-400 092 TEL : 3064

अध्ययन, मनन एवं श्रवण का
एक सहज एवं सर्वग्राही संस्करण

श्रीरामचरितमानस

सचित्र शब्दकोष
अवधी-हिन्दी
एवं
मूल पाठ
अनुक्रमणिका सहित

चरित मानस शब्दकोष
518 पृष्ठ
ज 22.50 x 27.50 से.मी.
350 रेखाचित्र

ी रामचरित मानस
1153 पृष्ठ
ज 13.50 x 24.00 से.मी.
8 रंगीन चित्र

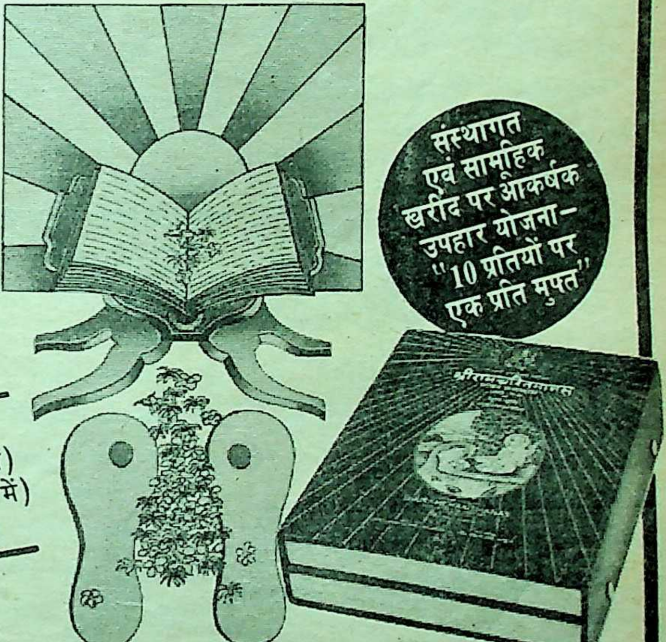

संस्थागत
एवं सामूहिक
खरीद पर आकर्षक
उपहार योजना–
"10 प्रतियों पर
एक प्रति मुफ्त"

आमंत्रण मूल्य
त्र रु. 1100/- (भारत में)
.S. $ 74.99 (अन्य देशों में)
पोस्टेज एवं पैकिंग मुफ्त

- प्रथम मानस शब्दकोष मूल सहित
- एक अनूठा संदर्भ ग्रंथ
- प्रवचन सम्बंधी विशेषज्ञों के लिए वरदान
- एक सार्थक एवं आदर्श उपहार ग्रंथ

सम्पूर्ण राशि मनी-आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें

dk

डी.के. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि.

1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3261465, 3278368. फैक्स: 326-4368

TRENDS 2466.95

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

● ज्ञानेन्दु

१. महार्थ— क. लाभदायक, ख. गहरे अर्थवाला, ग. महत्त्वपूर्ण, घ. महंगा ।

२. ईषत— क. हलका, ख. सूक्ष्म, ग. थोड़ा, घ. महत्त्वहीन ।

३. निस्सीम— क. अथाह, ख. अडिग, ग. भारी, घ. जिसकी सीमा न हो ।

४. अचिंत्य— क. बेफिक्र, ख. जिसका चिंतन न हो सके, ग. जिसमें चिंता करने की आवश्यकता न हो, घ. लापरवाह ।

५. प्रज्ञात— क. अच्छी तरह जाना हुआ, ख. प्रसिद्ध, ग. जानकार, घ. ज्ञानी ।

६. पूर्वाभास— क. अंदाजा, ख. भविष्यवाणी, ग. पहले से ही प्रतीति, घ. पूर्व का दृश्य ।

७. विप्रयोग— क. गलत प्रयोग, ख. वियोग, ग. कुप्रयास, घ. बंधन से मुक्त ।

८. ऊर्मि— क. गरमी, ख. लहर, घ. वेग, घ. व्याधि ।

९. भावोन्मत्त— क. पागल, ख. गुस्सैल, ग. भावविह्वल, घ. उत्तेजित ।

१०. समुत्थान— क. एक साथ उत्थान, ख. प्रगति, ग. ऊपर उठना, घ. सहयोग ।

११. अप्रभ— क. बुद्धिहीन, ख. साधारण बुद्धि का, ग. निम्न बुद्धि का, घ. प्रभाहीन ।

१२. बहिर्मनस्क— क. ऊपरी मन से, ख. जिसका मन किसी और जगह हो, ग. जिसमें दरवाजा हो, घ. दूसरों के मन का काम करनेवाला ।

१३. मनोयोग— क. मन को जोड़ना, ख. समझौता, ग. मन की एकाग्रता, घ. कल्पना ।

१४. बड़भागी— क. बड़ा भागीदार, ख. भाग्यशाली, ग. जिसका अचानक भाग्य चमका हो, घ. प्रतिष्ठित ।

उत्तर

१. ख. गहरे अर्थवाला, ग. महत्त्वपूर्ण/भगवद्गीता **महार्थ** ग्रंथ है । (महा+अथ;)

२. ग. थोड़ा, आंशिक रूप में । बड़ों के स्नेह का **ईषत** स्पर्श भी लाभदायक होता है । (व्युत्.—ईष्,अति)

३. घ. जिसकी सीमा न हो । विज्ञान से मानवता को **निस्सीम** लाभ हैं । (निः+सीम)

४. ख. जिसका चिंतन न हो सके, समझ से परे । लोक-परलोक का प्रश्न एक **अचिंत्य** पहेली है ।

(व्युत्.—अ,चिंत्,यत्)

५. क. अच्छी तरह जाना हुआ, स्पष्ट । वेद मानवता के **प्रज्ञात** धार्मिक ग्रंथ हैं । ख. प्रसिद्ध, प्रख्यात । **प्रज्ञात** व्यक्तियों का सदैव समादर होता है । (प्र+ज्ञात)

६. ग. पहले से ही प्रतीति (बोध, झलक) । इस घटना का **पूर्वाभास** हो गया था । (पूर्व+आ+भास)

७. ख. वियोग, बिछोह । प्रियजनों का **विप्रयोग** असह्य होता है ।

(व्युत्.—वि,प्र,युज्)

८. ख. लहर, प्रवाह । ग. वेग । स्वातंत्र्य-संग्राम में आत्मोत्सर्ग की **ऊर्मि** होना स्वाभाविक है ।

९. ग. भावविह्वल । वीररस की कविता से श्रोतागण **भावोन्मत्त** हो गये । (भाव+उन्मत्त)

१०. ग. ऊपर उठना, उद्भव, वृद्धि । समग्र देशवासियों के **समुत्थान** का प्रयास होना चाहिए । (सम+उत्थान)

११. घ. प्रभाहीन । प्रतिभाशाली के सम्मुख साधारण बुद्धिवाला व्यक्ति **अप्रभ** हो जाता है । (अ+प्रभ)

१२. ख. जिसका मन किसी और जगह हो । कक्षा में **बहिर्मनस्क** छात्रों को कुछ लाभ नहीं होता । (बहिः+मनस्क)

१३. ग. मन की एकाग्रता । वह बड़े **मनोयोग** से कार्य करता है । (मनः+योग)

१४. ख. भाग्यशाली । संतान और धनधान्य से संपन्न व्यक्ति **बड़भागी** ही होते हैं । (बोलचाल)

* * *

पारिभाषिक शब्द

Supervisor = पर्यवेक्षक
Incognito = अज्ञात/गुप्त रूप से
Hospitality = आतिथ्य/सत्कार
Graduate = स्नातक
Degree = उपाधि/डिग्री
Convene = संयोजन करना
Standardization = मानकीकरण
Arbitration = मध्यस्थता
Compromise = समझौता
Available = प्राप्य/उपलब्ध

ज्ञान गंगा

यस्तु सञ्चरते देशान् यस्तु सेवेत पण्डितान् ।
तस्य विस्तारिता बुद्धिः
तैलबिंदुरिवाम्भसि ॥

(सूक्ति—कुसुमाञ्जलिः)

— जिस प्रकार जल में तेल की बूंद फैल जाती है, उसी प्रकार उस व्यक्ति की बुद्धि एवं अनुभव भी विकसित होता है, जो विविध देशों में भ्रमण करता है, तथा पंडितों की संगति में रहता है ।

स्वानुकूलां क्रियां काले,
ज्ञानपूर्णोऽप्यपेक्षते ।
प्रदीपः स्वप्रकाशोऽपि तैलपूर्त्यादिकं
यथा ॥

(ज्ञानसार ८९/३)

— स्वयं-प्रकाशी दीपक भी तेल-पूर्ति और वर्तिका आदि क्रिया की अपेक्षा रखते हैं, वैसे ही पूर्ण ज्ञानी को भी स्व अनुकूल क्रिया के योग्य अवसर में क्रिया करनी चाहिए ।

बुद्धिश्रेष्ठानि कर्माणि ।

(महाभारत, उद्योगपर्व ३५/७५)

—बुद्धि से विचार कर किये हुए कर्म ही श्रेष्ठ होते हैं ।

प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

महिलाएं आत्मनिर्भर

'मई' के अंक में 'आखिर कब तक' स्तंभ के अंतर्गत आपकी टिप्पणी 'इसलाम में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ' विचारोत्तेजक लगी । मुसलिम स्त्रियों को तो पारिवारिक संपदा में समान अधिकार प्राप्त होना अत्यंत आवश्यक है । इसके दो कारण हैं । पहला तो यह कि आज भी अधिकतर मुसलिम महिलाएं अशिक्षित होने के कारण आत्म निर्भर नहीं हैं । तलाक हो जाने पर उनके लिए स्वयं का और बच्चों का भरण-पोषण करना अत्यंत कठिन हो जाता है ।

दूसरा कारण यह है कि आज भी मुसलमान परिवार नियोजन को पाप समझते हैं और उनके घरों में बच्चों की संख्या बहुत अधिक होती है । ऐसी स्थिति में तलाकशुदा मुसलिम औरत के लिए बच्चों को पालना दुरूह हो जाता है । मेरा तो यह मानना है कि मुसलिम महिलाओं को पारिवारिक संपदा पर पुरुषों की अपेक्षा अधिक हिस्सा देने का प्रावधान होना चाहिए क्योंकि उनके पारिवारिक दायित्व अधिक होते हैं । कोई धर्म यह नहीं कहता कि औरतों पर अत्याचार किया जाए और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित किया जाए । आवश्यकता इस बात की है कि फरीदा रहमान के विचारों का मुसलिम महिलाओं के बीच प्रसार किया जाए । मुसलिम औरतों को पारिवारिक संपदा में समान अधिकार दिलाने के लिए मुसलिम कानून में आवश्यक संशोधन किये जाने चाहिए । कट्टरपंथियों के कारण मुसलिम औरतों की इतनी दुर्गति हुई है कि वे मुसलिम जाति में जन्म लेना अपना दुर्भाग्य समझने लगी हैं ।

'कादम्बिनी' में आपने गंभीर समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है । 'कादम्बिनी' के माध्यम से मैं कट्टरपंथियों से अपील करना चाहता हूं कि वे अपनी मानसिकता में परिवर्तन लायें । औरतों को भी इनसान समझें और उन्हें उनके अधिकार दिलायें ।

— ललित कुमार शर्मा

८८/१२, सेकंड बस स्टॉप के पास,
पोस्ट ऑफिस के ऊपर,
भोपाल, (म.प्र.)

प्रोत्साहन पुरस्कार

इतिहास ग्रंथों का संशोधन आवश्यक

'पाठ्य पुस्तकों के साथ खिलवाड़ हो रहा है !' कादम्बिनी मई '९५ अंक में विचारोत्तेजक लेख पढ़ा ।

पाकिस्तान में उर्दू में प्रकाशित किताबों के तथ्य-जैसे, 'पं. नेहरू डाकू थे और गांधी दुष्ट हिंदू...', 'भारत एक समय पाकिस्तान का ही एक अंग था...', 'हिंदू-धर्म और हिंदू-संस्कृति भ्रष्ट और गंदी है...', 'हम सबको

सैन्य-प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए तथा दुश्मन (भारत) से लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए...'— अत्यंत आपत्तिजनक, निरा मिथ्या, भ्रामक तथा ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित हैं । इस प्रकार के गलत तथ्यों का प्रकाशन पाकिस्तानी राजनीति और सियासत का एक अहम अंग ही नहीं, अपितु उसका एकमात्र उद्देश्य और लक्ष्य बन गया है । इससे वहां भारत-विरोधी भावनाओं को व्यापक प्रचार-प्रसार और बढ़ावा मिल रहा है । खैर, यह तो रही पाकिस्तान की बात ! लेकिन हमारे अपने ही देश में विशेषकर राज्यों में प्रचलित इतिहास-पुस्तकों में तथ्यों को गलत ढंग से तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया जा रहा है । जैसे— 'पेशवा माधवराव के नेतृत्व में भारत को आजादी मिली... ?', 'असम एक देश है... ?', 'हिंदू-धर्म की रक्षा के लिए जातिप्रथा शुरू की गयी... ?' 'अल्लाह ने द्रविड़ों के हाथों से भारत छीना और उसे आर्यों को सौंपा... ?' आदि । राजनीतिक कारणों से, इस प्रकार के त्रुटिपूर्ण इतिहास-ग्रंथों को प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में रखकर बच्चों को पढ़ाया जाना— नयी पीढ़ी को भ्रष्ट, दिशाहीन और संस्कारहीन बनाना है ! क्या इससे बच्चों में अपने देश व संस्कृति के प्रति आदर व सम्मान का भाव उद्भूत होगा ? क्या उन्हें देश के अतीत की सही जानकारी हो पाएगी ? यह नयी पीढ़ी के साथ अन्याय नहीं है ? क्या ऐसा करना पाप या अपराध नहीं है ?

असत्य का प्रचार और प्रोत्साहन तथा सत्य की उपेक्षा— देशवासियों के लिए 'आत्मघाती कदम' उठाने-जैसा है ।

निष्कर्षतः आज के संदर्भ में, हिंदी-उर्दू और सभी प्रकार की पाठ्य-पुस्तकों का पुनरावलोकन आवश्यक हो गया है; खासतौर पर प्रारंभिक-माध्यमिक व उच्च शिक्षा के प्रचलित पाठ्यक्रमों में इतिहास-ग्रंथों की विद्वान इतिहासविदों द्वारा जांच करायी जानी आवश्यक है ।

— मुकुंदलाल साहू
जांजगीर (म.प्र.)

संघर्षमयी जीवन सप्तरंगी

कादम्बिनी जून अंक में, 'विवाह : कुछ महान लेखकों की दृष्टि में' पढ़ा । इन लेखकों के अतिरिक्त विदेशों के कुछ अन्य लेखकों ने व भारतीय रचनाकारों ने भी चाहे व्यंग्य में ही शादी को सजा व वैवाहिक जीवन को कष्टमय व पीड़ादायक माना है ।

वस्तुतः वैवाहिक जीवन में सुखों की इच्छा की आकांक्षा सदैव कल्पना लोक में पल्लवित होती है जबकि व्यावहारिक उपलब्धियां सदैव यथार्थ के धरातल पर ही अंकुरित होती हैं । आकांक्षाओं और उपलब्धियों के बीच की यह दूरी पारिवारिक तनाव, कलह व क्लेश को ही जन्म देती हैं । वैवाहिक-जीवन की सार्थकता का मूल्यांकन एक भौतिकवादी सुखमय जीवन की प्राप्ति से नहीं, अपितु संघर्षमयी जिंदगी को सप्तरंगी आयाम देने से है ।

वर्तमान में नारीमुक्ति आंदोलन की परिभाषा से पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्ति का अर्थ भी लेने से पति-पत्नी में तलाक दर सतत बढ़ती जा रही है । शादी-जैसे पवित्र बंधन को सफल बनाने के लिए पति-पत्नी दोनों का परस्पर

सहयोग आवश्यक है, जबकि इसे तबाही के कगार तक पहुंचाने के लिए एक की नासमझी ही पर्याप्त है ॥

— डॉ. अनूप कु. गक्खड़
जालंधर शहर

प्रभु दर्शन

यात्रा विशेषांक अंक माह मई '९५ में प्रभु दर्शन से कम नहीं है "श्री कैलाश पर्वत पढ़ा" । मानसरोवर व श्री कैलाश, पवित्र तीर्थस्थान हैं जो चीन के कब्जे में है मगर अब वहां पहुंचना चांद पर पहुंचने के समान ही है । 'कादम्बिनी' के माध्यम से विस्तृत आंखों देखा हाल मय दुर्लभ छायाचित्रों के दर्शन लाने के लिए पत्रिका मंडल को बधाई । ये भी सच ही है यात्रा द्वारा ही भारत के सौंदर्य को और अच्छी तरह से पहचाना जा सकता है । यात्रा विशेषांक में दी गयी जानकारी के लिए आभार ।

— संजय वर्मा, डी. एम.,
मनावर (म.प्र.)

क्रांतिदर्शी प्रवृत्तियां

मई '९५ अंक में गौतम बुद्ध : क्रांतिदर्शी प्रवृत्तियां रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगा । आज पश्चिम के विद्वानों में इस बात को सिद्ध करने के लिए होड़ मची हुई है कि बौद्ध धर्म हिंदू धर्म के सिद्धांतों के विपरीत प्रवृत्तिवाला धर्म है और ये दोनों धर्म विलोम सिरों पर स्थित हैं ।

किंतु ये मानना अधिक युक्तियुक्त होगा कि बौद्धधर्म कोई नया धर्म नहीं, बल्कि हिंदू धर्म का ही संशोधित रूप है । क्योंकि गौतम बुद्ध वैदिक धर्म से दूर नहीं गये, उन्होंने वैदिक धर्म के मूल सिद्धांतों पर कोई प्रहार नहीं किया, बल्कि उनकी आलोचना का शिकार तो वैदिक धर्म की कुरीतियां थीं ।

— हरिनारायणाचारी मिश्र,
वाराणसी-५

मूल्य चुभनेवाला नहीं

मैं कादम्बिनी पत्रिका पाकर प्रसन्न हुआ, पहले से ही 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' पढ़ता रहा हूं, लेकिन जब यह पत्रिका उपलब्ध न हो सकी तो रीडर डाइजेस्ट पढ़ने लगा, लेकिन रीडर डाइजेस्ट का दाम इस समय २८ रुपये हो गये हैं । गरीब आदमी हूं कहां से पाऊं, आपने भी तो ९ रुपये से ११ रुपये कर दिये हैं । ११ रुपये कोई ज्यादा नहीं हैं । मैं कादम्बिनी को एक अच्छी पत्रिका मानता हूं ।

— श्याम द्विवेदी,
वाजिदपुर

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक ११५ रुपये; द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक : १८५ रुपये (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रुपये (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०) अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०) ।

शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक,
'कादम्बिनी'
हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।

तंत्र अंक के बाद एक और विशेषांक

क्रांति विशेषांक

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर इतिहास के उन पृष्ठों की रोमांचक कहानियां जिनमें हत्या, लूट-पाट, साम्राज्यों पर कब्जे और दिल दहलानेवाली कहानियां। हर कहानी अपने-आप में नयी और रोमांचक

कुछ विशेष आकर्षण :

- *पुरुषों की तबाही : नारी की स्वतंत्रता*
- *किस्से बादशाहों, शहंशाहों और सांसदों के*
- *भारतीय संसद और विधानसभाओं में प्रजातंत्र का नंगा नाटक*

ये मात्र कुछ शीर्षक हैं। पूरा अंक पठनीय। अपनी प्रतियां सुरक्षित कराएं!

दुनियाभर के तानाशाहों और राजनीतिकों की बर्बर और क्रूर कहानियों का दस्तावेज!

डॉ. गणेश नारायण चौहान

(होमियोपैथ राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर) द्वारा लिखित पुस्तकें

क्या खायें और क्यों
(भोजन के द्वारा चिकित्सा का व्यावहारिक रूप)
स्वस्थ रहने का रहस्य
मौसम के फलों, सब्जियों, मसालों आदि के सेवन से ही रोगों को दूर कर देने वाली और हर प्रकार की चिकित्सा में सहायक। 225 पृष्ठ की उक्त पुस्तक का नवां संस्करण, 35 रु. में मंगाएं।

भोजन के द्वारा चिकित्सा
मौसम के फल, सब्ज़ियों, मसाले आदि के उपयोग से अनेक रोगों की चिकित्सा स्वयं करें। पृष्ठ - 300, मूल्य: 50 रु.
(सोलहवां संशोधित परवर्द्धित संस्करण)

शक्तिवर्धक भोजन
ताकतवर व स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक एवं विशेष शक्तिप्रद भोजन की सम्पूर्ण जानकारी हेतु अत्यन्त उपयोगी पुस्तक। पृष्ठ - 96, मूल्य : 16 रु. (पांचवा संस्करण)

श्रीमती राजकुमारी गुप्ता
द्वारा लिखित

इनको भी आजमाइये
घरेलू प्रयोगों द्वारा गृहस्थी की अनेक वस्तुओं का सही उपयोग करके अपने घर को सजाने-संवारने की कला सीखने के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक।
पृष्ठ - 96, मूल्य : 20 रु.

श्रीमती मिथिलेश गुप्ता
द्वारा लिखित

शाकाहारी व्यंजन विधियां
आधुनिक स्वादिष्ट शाकाहारी व्यंजनों का बेजोड़ संकलन। पृष्ठ - 248, मूल्य 50 रु.

उपर्युक्त पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा मंगाने के लिए 20 रु. एडवांस निम्नांकित पते पर भेजें।

नारायण प्रकाशन
213, राधा दामोदर की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
कादम्बिनी
विशेषांक की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय

वर्ष ३५, अंक ९, जुलाई १९९५

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

हिमांशु शेखर
आइंस्टाइन ईश्वर में विश्वास करते थे....... २४
डॉ. सुधा पांडे
देवशुनी सरमा.............................. २९
शैलेंद्र गार्गव
कीरो और मृत हाथ की रेखाएं............ ३५
मजीद अहमद
तुलसीदास की प्रथम रचना ४२
रमेश चंद्र छबीला
काष्टकला के लिए मशहूर : सहारनपुर ... ४५
सत्यनारायण भटनागर
नाम में क्या रखा है ४९
संदीप
पत्थरों ने खोला हजारों वर्ष पूर्व का रहस्य ५२
महजबी
अगरबत्तियों का गोरखधंधा............... ५४
रूपेश दिग्विजय
बाघ बहादुर बना राम प्यारे............... ५८
रामनिवास लखोटिया
शाकाहार : उत्तम आहार.................. ६०
महेश कु. झा.
ससुराल हो तो मिथिला में हो............. ६३
डॉ. डी. एन. तिवारी
चिर सखा है बांस.......................... ६८
आचार्य महाप्रज्ञ
व्यक्तिवादी मनोवृत्ति और सामाजिकता.... ७३
रतनलाल जोशी
खैरियत गुजरी कि अंगूर के बेटा ७७
उमेश चंद्र चतुर्वेदी
गवना कराके संइयां घरे छोड़ ८२
सत्येन्द्र श्रीवास्तव
ब्रिटेन के भारतीय.......................... ८८
डॉ. आयुशी कुलकर्णी
युवतियों की समझ के द्वार खोलिए....... ९५
अशोक सुमन
बिहार के बिरहोर : ढूंढ़ने होंगे निशान......१३०
ज्योति खरे
दक्षिण का काशी.............................१३४
घनश्याम दत्त माथुर
तनाव घटाएं दिल बचाएं १३९
विनय
दीया सूनी आंखों का १४६
सुधीर वाजपेयी
मंडला : करोड़ों वर्ष पूर्व समुद्र..............१५०
डॉ. गोविंदस्वरूप मिनावत
कंस ने देवकी के किन छह पुत्रों को मारा १५५
सुरेन्द्र श्रीवास्तव
पुरुष नै जीती सौंदर्य प्रतियोगिता..........१५८
रंजन जैदी
मेरा आंगन खाली है..........................१६४

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

वीरेन्द्र मिश्र
सुगम संगीत, गीत और संप्रेषणीयता में ···· १७०

रस्किन बांड तूफानभरी रात............ १८६

आठवें साहित्य महोत्सव की कहानियां

कालिका चमोला
दस मरे सैकड़ों घायल........................१०२
संजय वर्मा 'उदय'
स्वप्न योद्धा....................................१०८
विभा जगन्नाथ
पुनरावृति ११३
सुरेन्द्र जोशी
प्रमाणित किया जाता है कि..................११६
अनीता कथूरिया
अधखिले गुलाब १२०
सौरभ गुप्ता
नागफनी १२४
कु. मीरा ठाकुर
पश्चाताप १२८

कविताएं

किशन स्वरूप
अधरों के सिवा क्या होगा ४४
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'/श्रीकांत जोशी
खेल यह कैसा/क्यों कर १७८

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज**
उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह**
प्रूफ-रीडर : **प्रदीप कुमार**
कला विभाग प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी**

……

संपादकीय पता : **'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

बशीर अहमद मयूख
ऋग्वेद में पर्जन्य-स्रोत १७९
चमनलाल प्रद्योत/यश मालवीय
जीवन एक बाती/गरी-सी मुसकान १८०
अनूप अशेष/ओंकार गुलशन
पगडंडियों में/उजालों की तरह १८१

साथ में सभी स्थायी स्तंभ

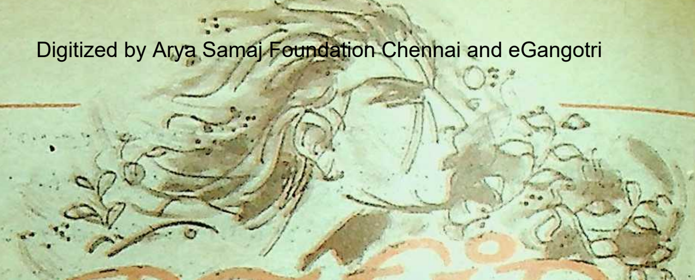

काल-चिंतन

— अस्मिता !

— कौन, किसकी अस्मिता को बिगाड़ने का प्रयत्न नहीं करता !

— अस्मिता का सहज अर्थ है अस्तित्व ।

□

— विरल होते हैं वे महान जो अस्तित्व की पहचान के पारखी होते हैं ।

— वही नहीं है सब-कुछ जो कुछ उनके प्रारब्ध का देय और श्रेय है ।

— प्रारब्ध विभाजित इकाई है, वह हर व्यक्ति, हर संदर्भ और हर क्षण के साथ जुड़ी है ।

— इस तरह प्रारब्ध विषय बन गया, अपने-आप आलोचना-प्रत्यालोचना का; तब ?

— तब अस्तित्व केंद्र-बिंदु में आ जाता है । अस्तित्व की इकाई स्थाई है और अस्थाई भी । इसलिए कि अस्तित्व का संबंध और समन्वय मस्तिष्क की उन महीनतम चिंतन-रेखाओं से समन्वित होता है जो हमारी सामरिक चिंतन-रेखा से परे है ।

— समर में युद्धरत होना और विजयी होना, एक बात है । उसके साथ महानद के पानी की तरह तरंगों में विभाजित और ऐसे विभक्त होना कि 'यथार्थ बोध' का अर्थ ही बदल जाए, दूसरी बात है ।

□

— जीवन को जटिल रेखा मानकर मत छोड़ दीजिए ।

— जीवन को वह रस्सी समझिए जिसे तेल पिला-पिलाकर प्रतिद्वंद्वी ऐसी गांठें बांधता है कि वे काल को भी चुनौती देती हैं । ऐसी रस्सियां ही किसी जीवित व्यक्ति को फांसी पर इतनी आसानी से लटका देती हैं कि क्षणभर में जीवन की

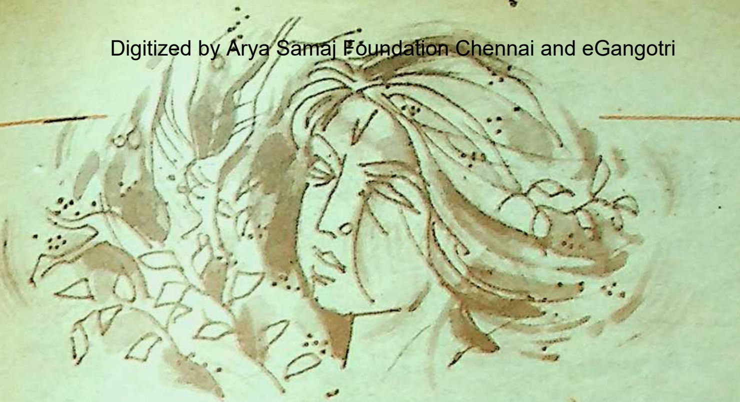

उन समस्त उपत्यकाओं का अंत हो जाता है, जो इसके निर्माणक ने भी कभी सोचा नहीं होगा ।

— सोचा हुआ शायद ही कभी सत्य होता हो ।

— अनसोचा और अनचीन्हा समय के शिलालेख का दर्पण है, उससे सामना करनेवाले 'मुजाहिदों' पर मात्र तरस खाया जा सकता है ।

□

— जीवन की परिभाषा अत्यंत दुरूह है— वह न नचिकेता का स्वर-कमंडल है, न यम की क्रीड़ा भूमि है, न भविष्य-वक्ताओं की चेतना है और न दिन-प्रति दिन बनते-बिगड़ते इतिहासों के अध्याय हैं ।

□ जीवन न पहेली है
□ जीवन न भोक्ता-वस्तु है
□ जीवन न चर्चा का केंद्र है
□ जीवन न महाप्रलय का प्रतिपक्षी या प्रतिगामी है
□ जीवन न आकाश है
□ जीवन न धरा है, न वायु है, न आसमान है और न चिकित्सा के अभ्यास का प्रतिपक्षी या प्रतिगामी
□ जीवन न शेष है और न अशेष है
□ जीवन न नश्वर है और न अनश्वर है
□ जीवन न गरल है, न मधुमय पेय है
□ जीवन न जाग्रत है और न अंधकार में तिरोहित होनेवाला अवयव

— जीवन को जो मानदंड का पारा समझ लेते हैं, वे मिथ्या-भ्रम में जीने के आदी हैं ।

— तब जीवन क्या है ?

— जीवन को भ्रम में डालनेवाले पहरूओं की कमी नहीं है— नेति, नेति से, समरसता के बोधक, विषपायी की छलनामय दृष्टि, वेदों के 'अनपढ़' बौद्धिक क्षमतावाले साधक और फिर महासमर के महानायक कृष्ण ।

— महापुरुष होते ही ऐसे हैं

— महापुरुषों की जिंदगी का अधिकांश श्रेय श्वानों का प्रतिगामी है । महापुरुषों का शेष श्रेय चाटुकारों, वंदनवार सजाने और उनके नाम पर अपने पिष्ट-पोषण के असाधक अनाड़ियों के वे खिलौने हैं, जो अक्सर बाल-परिधि की सीमा में आबद्ध हैं ।

— दूसरों का नाम लेकर अपना महल खड़ा करनेवालों की कमी नहीं है ।

— साधक बनकर साधना के श्रेय को प्रतिपादित किये बिना अपना अस्तित्व कोई बना नहीं सका । ऐसे अस्तित्व बनानेवालों का क्षणजीवी संसार उनकी रचनात्मकता में विशाल हुआ है, समय की मुट्ठी में पिसकर वह पसीने की बूंद भी नहीं छोड़ सका ।

□

— हम सब घिरे हैं अवांछित तत्वों से ।

— पहचानिए जो अपने को परम हितैषी कहता हो ।

— पहचानिए जो अपने को अपने साथ आत्मसात कर लेना चाहता हो ।

— महत्त्वपूर्ण यहां मुद्रा नहीं है, न समझौते, न अभिषेक, न तत्काल प्राप्य की लालसा और न अधिष्ठाता मानकर प्रस्तर प्रतिमा का पुजारी ।

—प्रस्तर प्रतिमा का पुजारी तो मान्यता, साधना, स्वीकार्य, सापेक्ष और अस्तित्त्ववादी होने के अहम् में धन-कुबेर का कार्य करता है ।

— मिथ्या जगत को ये अस्वीकार करते हैं और स्वयं मिथिकों में जीते हैं ।

— लक्ष्य इनका प्राप्य है; प्राप्य जैसे हो, जब हो और न भी हो ।

— पर्वत की पगडंडी में दौड़ते जाइए, समय के बढ़ते चरण उससे अधिक

गतिवान होंगे ।

— कौन समझता है, लेकिन, इन्हें !

— श्मशान वैराग्य की तरह ये सब क्षणजीवी कीट-पतंगे हैं ।

— शेष रहेंगे जो, वे अपना दुष्चक्र चलाते ही रहेंगे ।

□

— हां, दुष्चक्र :

— एक गांव था । मृत्यु हो गयी एक उस गांव की एक इकाई की यानी एक आदमी की । वह परमदुष्ट और त्रासदी से भरा कच्ची मिट्टी का कुम्भ था । अचानक एक दिन वह चल बसा । गांववालों ने सुरक्षा और शांति की सांस ली । सोचा, जो भी जैसा भी रहा हो, हमारा तो था । सबने मिलकर उसके अंतिम संस्कार का निश्चय किया । तभी एक कागज कहीं अटका हुआ मिला ।

— यह भी विधि का खेल नहीं है क्या कि जब कोई आता है, तो मुट्ठी बंद होती है, जाता है तो मुट्ठी खुली होती है । बंद मुट्ठी में उसके जीवन का इतिहास लिखा होता है । खुली मुट्ठी उसके समूचे अनाहूत कार्यों पर काली स्याही लगा देती है कि गया सो गया !

— तो उसकी मुट्ठी खुली थी । कागज का एक टुकड़ा कहीं अटका रह गया था । ग्रामवासियों ने उसे खोला । पढ़ा :

'मैंने जिंदगीभर सबको परेशान किया है । मैं दंड भोगना चाहता हूं । मैं चाहता हूं कि मेरे गले में रस्सी बांधकर ग्रामवासी, मेरे प्रेमी, मेरे प्रति-प्रेमी मुझे घसीटकर श्मशान तक ले जाएं और अंतिम संस्कार करें ।'

— पंचायत और भीड़ ! सबने एक स्वर से उस निवेदन को स्वीकार कर लिया । वे उसके गले में रस्सा बांधकर उसे घसीटते हुए श्मशान तक ले जाने लगे ।

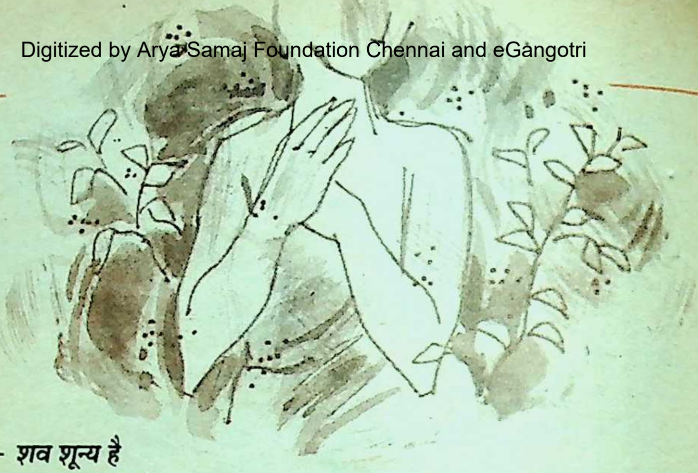

— शव शून्य है

— शव अर्थहीन है

— इस शव ने तब भी अर्थ दिया । किसी ने पुलिस को सूचना दे दी । परिणाम : सभी को पुलिस ने अत्याचार और दुर्व्यवहार के अंतर्गत अपनी गिरफ़ में ले लिया ।

— सभी ग्रामवासी स्तब्ध ! यह क्या हुआ ? हमारा अपराध ! किसी की अंतिम इच्छा अस्वीकार करना किस अपराध-सीमा में आता है !

— तभी एक बुद्धि-संपन्न व्यक्ति ने कहा—

'नहीं हम सब अपराधी हैं । जो दुष्ट होता है, वह मृत्यु-उपरांत भी अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता । हमने एक दुष्ट को जीते-जी शरण दी थी, मृत्यु के बाद हमें उसका दंड भोगना ही पड़ेगा !

□

— दुष्ट, दुष्ट रहेगा ।

— अपराधी कम होते हैं जो सुधरते हैं ।

— अपराध के बाद वे एक नयी दुनिया से सुपरिचित हो जाते हैं । वही उनका सुखद स्वप्न होता है ।

— अपराधी हो या दुष्ट, उसके प्रति हमारी दृष्टि स्पष्ट होनी चाहिए ।

— जीवन में भी मिलनेवाले मित्रों और अमित्रों की परख करना जरूरी है ।

— इस परख के लिए स्वर्ण-कसौटी नहीं हो सकती । मस्तिष्क की चेतनाएं सभी कसौटियों से समग्र, संपन्न और विश्व-व्यापी हैं ।

— चेतना-शून्य मनुष्य अपने आभामंडल में भटक जाता है ।

— आभा-मंडल विक्रय का आगार नहीं है ।

□

— दुष्टता का प्रतिफल भोगना हमारी नियति है ।
— हमारे समस्त सदाचार, सद्-व्यवहार, मैत्री के आयाम, आत्मा की श्वेत-धवल समता और जीवन को सम्यक् तराशने की क्षमता यदि मकड़ियों के जाले में फंस जाएं तो प्रातः का सूरज अंधकार-सा दिखेगा ।
— शेष रहेगा पछतावा, मात्र पछतावा !

□

— शेष के इसी निशेष बिंदु पर अस्मिता का महल ढहता है, अस्तित्व की दीवारें टूटती हैं । शेष रहता है, मात्र पछतावा, चिंतन का वह अंतिम कण जो हीरे से कांच बन जाता है !
— हम हीरे से कांच बनने के लिए अवतरित नहीं हुए ।
— अवतरित हुए हैं कांच को हीरा बनाने के लिए ।
— हमारी क्षमता जिस दिन चुक जाए, आंखें बंद कर लेना ही हमारा परम श्रेय होगा ।
— यही श्रेय तो अमरत्व प्रदान करता है ।
— हम अशरीरी होकर भी मंदिरों, मसजिदों, गुरुद्वारों, गिरजाघरों में और चौराहों, सड़कों तथा महामहिम के राजभवनों में जीवित रहते हैं ।
— स-शरीर जीवित रहना ही जीवित रहने की इकाई नहीं है । जीवित रहने की इकाई है, हमारे कार्य और लक्ष्य जो दूसरों के लिए पथ-प्रदर्शक बन सकें ।
—पथ-प्रदर्शक बनने के लिए प्रकाश नहीं चाहिए, प्रदर्शक स्वयं प्रकाशवान है— वह नक्षत्रों में हो या धरणीधारित्री में ।
— हमारी अस्मिता का उससे बृहत्तर रक्षा-कवच और कहीं नहीं है ।

राजेन्द्र अवस्थी

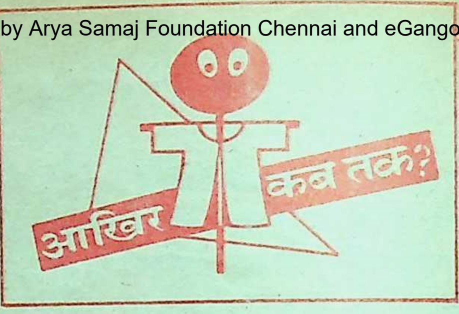

गरमियां और हिमालय पर हमला

गरमी की छुट्टियां समाप्त हो रहीं हैं और हर पर्यटक अपने-अपने नीड़ों में या तो वापस आ गया है या आने की तैयारी में है । रेलों में इतनी ज्यादा भीड़ है कि टिकट मिलना मुश्किल है । लेकिन इस बार बहुत से रास्ते हिमालय की ओर ही गये हैं । हिमाचल प्रदेश में भी पर्यटकों की कमी नहीं रही । लेकिन वह इतना ज्यादा देखा जा चुका है कि बहुत अधिक आकर्षण का केंद्र नहीं रहा ।

शिमला पहुंचकर तो लगता है कि दिल्ली से बाहर नहीं । दिल्ली के वही चेहरे, वही भीड़ और इस साल तो गरमी ने भी थोड़ी ही मोहलत दी । गरमियों की छुट्टियों में घूमने के मजे तभी होते हैं जब ऐसा निर्जन स्थान हो जहां दूर-दूर तक कोई नजर न आये और अपनी ही आवाज लौटकर सुनायी दे । लगता है इस बार हिमालय के सिवाय कोई जगह पर्यटकों को नहीं मिली । इसलिए गढ़वाल और कुमाऊं से लेकर मसूरी और नैनीताल तक ही अधिकांश यात्री घूमते हुए नजर आये । आश्चर्य तो यह है कि गरमी के दिनों में कुछ पर्यटक दक्षिण भारत की ओर भी गये ताकि और कुछ न हो कम से कम नये स्थान तो देखने को मिलें । इस बार गरमी जिस उग्र रूप में पूरे उत्तर-भारत में जलाती रही है । वर्षों बाद ऐसा हुआ है ।

कश्मीर:शिकारे और डलझील

घूमने का असल मजा तो पूरी कश्मीर घाटी में हमेशा रहा है । कश्मीर में कितने भी सैलानी पहुंच जाएं उन सबको वहां जगह मिल जाती है—होटल हों, शिकारे हों या फिर तंबुओं के घर । कश्मीर का सौंदर्य अपने आप में अलग है । इस बार जब डलझील या झेलम के किनारे हम पहुंचे तो सभी शिकारे फटी हालत में खड़े थे । शिकारों के मालिकों का कहना है पिछले पांच सालों से हमारी रोजी-रोटी ही मारी गयी । जहां कम से कम दस लाख सैलानी हर साल पहुंचते हों वहां अब दो-चार हजार भी

नहीं पहुंचते । हमारी भेंट बशीर करनी से हुई । जिसके पास तीन शिकारे और दो 'हाउस बोट' हैं । वह चार भाई हैं और उनकी रोजी-रोटी का जरिया केवल यही लकड़ी के घर हैं । जो 'डल' में तैरते हुए नजर आते हैं । 'हाउस बोट' इतने खूबसूरत होते हैं । वह किसी आलीशान होटल से कम नहीं । एक 'हाउस बोट' में दो कमरे, नीचे शाही गलीचे बिछे हैं । गरम और ठंडे पानी की व्यवस्था है । खिड़कियों में परदे हैं और दीवारें कश्मीरी कला वस्तुओं से सुसज्जित हैं । वहां टेलिफोन भी है और सस्ते से सस्ता किराया छह सौ रुपये प्रतिदिन । बशीर ने बताया कि इस साल चरारे शरीफ की घटना के बाद तो हमारी दुनिया ही उजड़ गयी । कोई इक्का-दुक्का आदमी कभी आया वरना हुक्का गुड़गुड़ाते हुए हमें समय पार करना पड़ा । हमारे यहां काम करनेवाले नौकरों को छुट्टी देनी पड़ी । उन्हें कम से कम पचास रुपये दिन तो मिल ही जाते थे । अब उनके पास कुछ नहीं है । यही हालत टैक्सिओं की भी है । हमें एक टैक्सीवाला मिला, नाम था गुलाम बक्शी । देखते ही उसकी नजरों में चमक आ गयी और बिना कुछ पूछे उसने कार का दरवाजा खोल दिया । उससे पूछा कि आजकल कितना पैसा लेते हो । उसने कहा हुजूर अब तो हमारी जिंदगी देनेवालों पर निर्भर हो गयी है । जितना भी जो दे दे काफी है ।

कश्मीर की यह दयनीय हालत देखकर अफसोस इस बात का हुआ कि यह हमारे देश का ही एक हिस्सा है लेकिन क्या सचमुच ?

स्टेशन : जगह और रिश्वत

इस साल रेलवे स्टेशन में कुछ मजेदार अनुभव हुए । कम से कम दो बार तो ऐसा हुआ ही । दो मेहमानों को अलग-अलग दिन छोड़ने के लिए हमें स्टेशन जाना पड़ा । वैसे रेल भवन में मंत्री का जो विशेष कोटा होता है, उसके लिए मंत्रालय ने नाम तो नोट करा दिया था । लेकिन जब अपने मेहमान के साथ स्टेशन पहुंचे तो पता चला कि यहां कोई नाम नहीं पहुंचा । थोड़ी देर बाद टी. टी. सी. के साथ खड़े एक आदमी ने आकर पूछा साधारण सेकेंड क्लास में जाना है ।

जाना मजबूरी थी । कहना पड़ा, भाई कैसे भी हो बंबई तक तो पहुंचा ही दीजिए । हमारे मेहमान को वह थोड़ा अलग ले गये और वहां जाकर उसे सीट नंबर बता दिया । ठाठदार सीट मिली । इस सुकार्य के लिए उसने एक सौ अस्सी रुपये वसूल लिये । इस पैसे में टिकट की कीमत शामिल नहीं थी क्योंकि टिकट तो पहले ही कंप्यूटर दे चुका था । पता चला कि इसमें सौ रुपये टी. टी. सी. साहब के हैं । पचास रुपये उस बीच के आदमी के हैं, जिसे दलाल कहा जा सकता है । तीस रुपये सरकारी हैं क्योंकि वेटिंग

लिस्ट की टिकट थी तो स्लीपर पर चार्ज तो देना ही था ।

बंबई पहुंचकर हमारे मेहमान ने फोन किया, "भाई साहब ! हम बहुत शान से सुरक्षित बंबई पहुंच गये ।"

दूसरी दास्तान कलकत्ता जानेवाले मेहमान की थी । उनके साथ भी ठीक यही हुआ । निष्कर्ष यह निकला कि इस भीड़ में छुट्टी बिताने के लिए बाहर जाना हो तो रुपयों के नोटों की एक जूती अपने साथ ले जाइए । स्टेशन के अधिकारियों को वह जूती हवाले कर दीजिए । आपकी यात्रा सफल होगी । इस देश में रिश्वतखोरी का बाजार जिस तरह गरम है । स्टेशनों पर वह तली जाने वाली फूली हुई पूड़ियों-सा बराबरी से पनप रहा है ।

'अफसरों को फटकार'

किसी मंत्री का विभाग बदला जाता है या किसी राज्य में नया मुख्यमंत्री बनता है तो अफसरों के तबादले थोक भाव से होते हैं । उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह ने जाते-जाते यही किया था । इतना ही नहीं अफसरों को विमान से भेजा गया कि वे अभी जाकर नयी जगह चार्ज ले लें । पता चला कि ऐसे जितने भी तबादले होते हैं । उनमें करोड़ों का वारा-न्यारा होता है । इससे हमदर्दी होनी चाहिए । लेकिन बेपेंदी के लोटे की तरह काम करनेवाले अफसर यदि कसाई घर में भेजे जाते हैं तो आंख बंद कर लेने से अच्छी बात और कुछ नहीं ।

नया कापी राइट लॉ और कलाकार

हमारे देश में एक आदर्श कापी राइट कानून की बहुत जरूरत थी । अभी तक यहां के कलाकार जिनमें गायक, फिल्मी संगीत, फिल्में, कैसेट, टेप रेकॉर्डर और लेखक सभी परेशान थे क्योंकि उन्हें अभी तक कोई विशेष संरक्षण नहीं मिला था । नये कापी राइट के कानून बनने तक की पूरी प्रक्रिया में मैं पूरी तरह शामिल रहा हूं । मुझे पता है कि मानव संसाधन मंत्रालय प्रकाशकों, फिल्मी जिंदगी से संबद्ध व्यक्तियों और लेखकों के प्रतिनिधि के रूप में मैंने कितना श्रम किया है । 'वाइपो' संगठन से भी हमने मदद ली और किसी तरह एक्ट तैयार हुआ और अब राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद वह अंतिम कानून बन गया । कानून तो बन गया है । इसका ठीक उपयोग यदि किया जाए तो 'पायेरेसी' से बचा जा सकता है और लेखक-प्रकाशक के बीच के झगड़े समाप्त हो सकते हैं । फिल्म वालों को कठिनाई जरूर होगी । यह सब निर्भर करता है कि

'एनफोर्समेंट एजेंसी' कितनी सक्षम है । यदि मंत्रालय ने सही ढंग से 'कार्यान्वयन समिति' बनायी तो बहुत-सी समस्याओं का समाधान हो ज़ाएगा और लेखकों तथा कलाकारों को राहत मिलेगी ।

नकल के लिए रंगीन कागज

कैंब्रिज विश्वविद्यालय ने परीक्षाओं में नकल रोकने के लिए एक नयी विधि निकाली है । सफेद कागज के स्थान पर हरा, गुलाबी, आसमानी और हल्का पीला कागज छात्रों को लिखने के लिए दिया जाएगा । कैंब्रिज विश्वविद्यालय के अधिकारियों का विश्वास है कि इससे नकल नहीं हो पाएगी । ऐसा हो जाए तो बहुत अच्छा है । लेकिन सच तो यह है कि नकल करनेवालों की अकल शिक्षकों से बहुत बड़ी होती है ।

अंत में एक पत्र

आदरनीय अवस्थी जी, सप्रेम नमस्ते !

मैं कादम्बिनी का सन १९८० से पाठक हूं तथा अब तक ८० रचनाएं 'प्रवेश स्तंभ' के लिए भेज चुका हूं । परंतु सभी रचनाएं वापस आ गयी हैं । आप समय-समय पर अपनी पत्रिका में नेताओं के किये गये कार्यों को भाई-भतीजावाद पर थोपते हैं । परंतु यह नहीं देखते कि पत्रिका में आप उन्हीं रचनाकारों की रचनाएं छायते हैं जो या तो आपके घनिष्ठ मित्र होते हैं या वे आपकी जेब गरम करते होंगे । महोदय पक्षपात आखिर कब तक चलेगा । अवस्थीजी-लोक-परलोक को देखते हुए कदम उठाइए । महोदय हमारी रचनाओं एवं प्रतिक्रियाओं को देखकर कभी तो तरस खाइए । और तरस खाइए या मत खाइए, हम रचनाएं तो भेजते रहेंगे जब तक आप इस पद पर सुशोभित रहेंगे या नष्ट नहीं होंगे । कादम्बिनी के प्रत्येक अंक के नष्ट होने की प्रतीक्षा के साथ आपका दुश्मन-पाठक—

— रामफल सिंह पटेल 'रवि'
गहिलरा, जिला— सीधी (म.प्र.)

—राजेन्द्र अवस्थी

आइंस्टाइन ईश्वर में विश्वास करते थे

• हिमांशु शेखर

बीसवीं शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टाइन का ईश्वर में अटूट विश्वास था । ब्रह्मांड के रहस्यों का अध्ययन करने के बाद वे इस नतीजे पर पहुंचे थे कि विराट भौतिक जगत को परिचालित करनेवाली ऊर्जा के पीछे कोई चेतन शक्ति अवश्य है । वह शक्ति ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकती ।

आइंस्टाइन ने इस बात को स्वीकार किया है कि जब वे मात्र १२ वर्ष के थे, तब उनमें गहरी धार्मिक अनुभूति उत्पन्न हो गयी थी जो आमरण उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बनी रही । पारंपरिक व धार्मिक शिक्षा ने भी उनकी कल्पना को आस्तिकता की ओर मोड़ दिया था । जब भी वे ब्रह्मांड के सूक्ष्म तत्वों का अनुशीलन करते थे, तब उनका ध्यान परमात्मा की ओर अनायास आकृष्ट हो जाया करता था ।

संयुक्त राज्य अमरीका में कार्यरत इजरायली राजदूत अब्बा एबान ने आइंस्टाइन के शव परीक्षण के उपरांत कहा था कि शताब्दियों से हिब्रू मस्तिष्क ब्रह्मांड में पाये जानेवाले संतुलन से अत्यंत प्रभावित रहा है । ब्रह्मांड तथा उससे भी बाहर जो कुछ विद्धमान है उनमें एक आश्चर्यजनक सुव्यवस्था पायी गयी है । यदि हिब्रू दर्शन को द्रव्य तथा ऊर्जा के पारस्परिक संबंध की अवधारणा का आधार माना जाए तो अनेक विद्वान उसे एक प्रतिगामी विचार मानकर उसका मजाक उड़ाएंगे, परंतु उन्नीसवीं शताब्दी से लेकर आज तक जितने भी शीर्षस्थ यहूदी वैज्ञानिक हुए हैं, सबने दर्शन और विज्ञान के इस अंतःसंबंध को स्वीकार किया है । आइंस्टाइन उसी कड़ी के वैज्ञानिक हैं ।

जगत का निर्माण

क्या सूर्य, चंद्र, पृथ्वी तथा नक्षत्रों से भरा हुआ यह अनंत जगत अपने आप उत्पन्न हो गया है अथवा इसकी संरचना किसी दिव्य शक्ति ने सोद्देश्य की है ? हक्सले जैसे नास्तिकों का मत है कि यह सब अपने आप हो गया है और इसके पीछे कोई उद्देश्य नहीं है । आइंस्टाइन हक्सले या उनके जैसे निरीश्वरवादी विचारकों से सहमत नहीं हैं । उनकी मान्यता है कि ब्रह्मांड पूर्णतया सुव्यवस्थित है और इस सुव्यवस्था तथा संतुलन का कारण है ईश्वर ।

आइंस्टाइन कहा करते थे कि ईश्वर ब्रह्मांड के साथ पासा नहीं खेलते । पासों के खेल के परिणाम के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहा जा सकता, लेकिन ब्रह्मांड में सब कुछ सुव्यवस्थित तथा निश्चित है । पृथ्वी के चारों

ओर फैले अथाह शून्य में कोटि-कोटि ब्रह्मांड समाये हुए हैं और वे सभी नियमाधीन होकर अपना-अपना कार्य कर रहे हैं । हक्सले और रसेल जैसे दिग्भ्रमित विचारकों के पास इस प्रश्न का कोई संतोषपूर्ण उत्तर नहीं है कि जगत अपने आप अस्तित्व में आ जाने के बाद भी इतना संतुलित तथा सुव्यवस्थित क्यों बना हुआ है ।

क्या कोई ऐसी घड़ी हो सकती है जिसकी छोटी और बड़ी सुइयां अपने निर्दिष्ट अंकों की परिधि में नियमित रूप से घूम रही हों, परंतु उसको बनानेवाला कोई न हो ? जैसे घड़ी-निर्माता के बिना घड़ी की कल्पना निरर्थक है, वैसे ही स्रष्टा के बिना सृष्टि का अवबोध निराधार है ।

आसुरी दृष्टिकोण

आसुरी प्रकृति के लोग यह मानकर चलते हैं कि जगत अपरस्पर संभूत तथा असत्य है और इसका कोई ईश्वर नहीं है । वे जगत को अपने आप उत्पन्न हुआ मानते हैं और इस मिथ्या तथा घातक विचार का प्रचार करते हैं कि जीवन केवल भोगों को भोगने के लिए है :

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ।।

(गीता १६/८)

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जिस प्रकार मणिमाला की समस्त मणियां एक सूत्र में पिरोयी होती हैं, ठीक उसी प्रकार संपूर्ण जगत परमात्मा में अनुस्यूत है । ईश्वर से रहित जगत न तो पलभर नियमानुसार चल सकता है और न परस्परसंभूत रह सकता है । आइंस्टाइन का भी यही विश्वास था ।

अकाट्य प्रमाण

आप पृथ्वी की गति पर विचार करें । वैज्ञानिकों के अनुसार धरती अपनी धुरी पर एक हजार मील प्रति घंटा की चाल से सतत घूम रही है । अगर इस संतुलित गति में व्यतिक्रम हो जाए तो रात और दिन इतने लंबे या छोटे हो जाएंगे कि पृथ्वी पर लगातार सरदी पड़ने या हमेशा धूप के बने रहने के कारण सारी फसलें बरबाद हो जाएंगी और किसी प्राणी का जीवित रहना संभव नहीं होगा । इतना ही नहीं, सूर्य असामान्य शक्ति से पृथ्वी को लगातार अपनी ओर खींच रहा है तथा पृथ्वी केंद्रापग बल के द्वारा अपने आपको सूर्य की ओर खिंचने से रोक रही है । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अगर किसी काल-खंड में पृथ्वी की यह प्रतिरोध-शक्ति समाप्त हो जाए तो वह लगभग ६,००० मील प्रति घंटा की चाल से सूर्य की ओर खिंचती चली जाएगी और थोड़े ही दिनों के अंदर सूर्य में विलीन होकर भस्म हो जाएगी । प्रश्न है कि वह कौन है जिसकी अपार करुणा पृथ्वी और उसके समस्त चराचर जीवों को इस दहकते अग्नि-पिंड में जलकर राख बन जाने से रोक रही है ?

सूर्य, चंद्र तथा जितने भी छोटे-बड़े पदार्थ प्रकृति में विद्यमान हैं, सबकी गति मर्यादित है । पृथ्वी वायुमंडल में २३० डिग्री का कोण बनाकर अवस्थित है । क्या हमने कभी इस पर विचार किया है कि पृथ्वी अंतरिक्ष में उपर्युक्त कोण बनाकर एक विशेष दिशा की ओर क्यों झुकी हुई है ? वैज्ञानिक कहते हैं कि अगर पृथ्वी इस प्रकार एक ओर झुकी हुई नहीं होती तो ऋतुओं का आवागमन बंद हो जाता और

> *वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अगर किसी काल-खंड में पृथ्वी की यह प्रतिरोध-शक्ति समाप्त हो जाए तो वह लगभग ६,००० मील प्रति घंटा की चाल से सूर्य की ओर खिंचती चली जाएगी और थोड़े ही दिनों के अंदर सूर्य में विलीन होकर भस्म हो जाएगी । प्रश्न है कि वह कौन है जिसकी अपार करुणा पृथ्वी और उसके समस्त चराचर जीवों को इस दहकते अग्नि-पिंड में जलकर राख बन जाने से रोक रही है ?*

हमारे महाद्वीप सर्वदा बर्फ से आच्छादित रहते ।

सूर्य को ही लें । सूर्य अपने केंद्र पर ९२,००० डिग्री फारेनहाइट के तापमान से दहक रहा है । यदि सूर्य के प्रज्वलन का परिमाण ६००० डिग्री फारेनहाइट हो जाए तो पृथ्वी पर इतनी भीषण सरदी पड़ेगी कि सब कुछ जम कर बर्फ हो जाएगा । इसी प्रकार यदि सूर्य ९२,००० डिग्री फारेनहाइट से अधिक तापमान पर प्रज्वलित होने लगे तो इतनी गरमी पैदा होगी कि कोई जीवित नहीं बचेगा ।

ईश्वर ने चंद्रमा को पृथ्वी से ठीक उतनी ही दूरी पर अवस्थित रखा है, जिससे पृथ्वी तथा समुद्र का पारस्परिक संतुलन बना रहे । यदि चंद्रमा पृथ्वी से २५०,००० मील की दूरी पर अवस्थित न होकर उससे बहुत कम दूरी पर स्थित होता तो ज्वार-भाटा की लहरें इतनी ऊंची उठतीं कि पृथ्वी के पूरे पिंड को समुद्र में कई बार गोते लगाने पड़ते और वैसी स्थिति में पृथ्वी पर रहने वाले जीव-जंतुओं का क्या हाल होता इसका सहज अनुमान किया जा सकता है ।

प्रकृति को परिचालित करनेवाले नियमों में ईश्वर की प्रज्ञा विद्यमान है । आइंस्टाइन को इस सत्य की स्पष्ट अनुभूति हुई थी ।

गुरुत्वाकर्षण के नियमों से जुड़े प्रश्नों को प्रयोगात्मक ढंग से हल करने में न्यूटन को जब असमर्थता का बोध हुआ, तब उन्होंने कहा था कि इन प्रश्नों का हल निकालने के लिए ईश्वर के मस्तिष्क की आवश्यकता होगी । न्यूटन से भी आगे बढ़कर आइंस्टाइन ने ब्रह्मांड का सही रूप सबके सामने रखा और इस तथ्य को बार-बार दुहराया कि द्रव्य और ऊर्जा के पीछे ईश्वर की शक्ति काम कर रही है । आइंस्टाइन यह जानने के लिए सदैव उत्सुक रहते थे कि परमात्मा ने ब्रह्मांड को कैसे बनाया तथा ब्रह्मांड का वास्तविक विस्तार कितना है ।

मर्करी का सूर्य के चारों ओर फैला मार्ग स्थिर और अंडाकार नहीं है, बल्कि लगभग बंद और वृत्ताकार है तथा यह ३,०००,००० वर्षों के बाद अपने मूल स्थान पर लौट आता है । मर्करी की गति की इस नियमितता को किस शक्ति ने कायम रखा है ? आइंस्टाइन के अनुसार प्रकृति में पायी जानेवाली यह नियमितता अकारण नहीं है । कोई शक्ति अवश्य है, जिसके कारण प्रकृति के समस्त पदार्थ नियमानुसार परिचालित हो रहे हैं ।

ज्ञान का मूल

संसार में छोटे-बड़े जितने भी प्राणी हैं सबको ईश्वर ने जीवन-निर्वाह के लिए

आवश्यक ज्ञान प्रदान किया है । इसी ज्ञान के सहारे छोटी-छोटी चींटियां भी भविष्य के लिए अन्नादि का संग्रह कर लेती हैं । पौराणिक कथा के अनुसार राजाओं में श्रेष्ठ सुरथ के जिज्ञासा करने पर महामुनि मेधा ने कहा था—

ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ।
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा ॥

(दुर्गासप्तशती, प्र. अ.)

ज्ञान होने पर भी इन पक्षियों को तो देखो । ये स्वयं भूख से पीड़ित होने पर भी मोहवश बच्चों की चोंचों में कितने भावप्रवण होकर अन्न के दाने डाल रहे हैं ।

आइंस्टाइन की सूक्ष्म दृष्टि पशु-पक्षियों में अंतर्निहित ज्ञान तक पहुंच गयी थी । एक बार आकाश-मार्ग से गमन करते हुए प्रवासी पक्षियों के झुंड को देखकर, उन्होंने कहा था कि यह बिलकुल संभव है कि ये पक्षीगण प्रकाश की किरणों का अनुगमन करते हुए आगे बढ़ रहे हैं । प्रकाश की इन विशिष्ट किरणों का हम मनुष्यों को अब तक परिज्ञान नहीं हुआ है, परंतु ये पक्षीगण इन्हें पहचानते हैं । इससे यह स्पष्ट होता है कि जिस प्राणी को जिस ज्ञान की परमावश्यकता होती है उसमें उसका अधिष्ठान अवश्य होता है । इस समस्त ज्ञान-विज्ञान के अधिष्ठाता ईश्वर ही हैं ।

१९११ ई. में यहूदी दार्शनिक मार्टिन ब्यूबर ने जब आइंस्टाइन से ईश्वर में उनके विश्वास के संबंध में प्रश्न किया, तब उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था, "हम लोग उनके द्वारा खींची गयी रेखाओं को ही, उनके द्वारा दिये गये ज्ञान के अनुसार खींचा करते हैं ।" आइंस्टाइन की इस उक्ति से स्पष्ट हो जाता है कि वह परमात्मा को ही संपूर्ण ज्ञान-विज्ञान का उत्स मानते थे ।

कांटम सिद्धांत

कुछ लोग यह सोचते हैं कि संपूर्ण जगत एक मशीन है जो अपने आप बन गयी है और वह अपनी वर्तमान क्रियाशीलता के लिए किसी बाहरी शक्ति का मुहताज नहीं है । पहले अनेक वैज्ञानिकों की यही धारणा थी, परंतु आधुनिक क्वांटम सिद्धांत ने इसे मिथ्या प्रमाणित कर दिया है ।

कांटम सिद्धांत के अनुसार जगत अस्तित्व में आने के लिए अपने प्रथम कारण पर आश्रित थी और अस्तित्व में आने के बाद भी निरंतर गतिशील बने रहने के लिए वह उस प्रथम कारण का मुहताज है । उस प्रथम कारण को ही ईश्वर समझना चाहिए ।

१९१७ ई. में आइंस्टाइन ने मार्क्स प्लांक के द्वारा प्रतिपादित प्रकृति के छलांगों के द्वारा कार्य करने के सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए बतलाया था कि प्रकृति स्वचालित नहीं है, बल्कि वह किसी बाहरी शक्ति के द्वारा परिचालित होती है । व्यक्त जगत के पीछे एक अव्यक्त चेतना कार्य कर रही है जो अजन्मा, अनंत, सर्वज्ञ और सर्वसमर्थ है ।

भगवान कैसे हैं ?

[illegible] की कोशिश

करता रहा है कि परमात्मा का स्वरूप कैसा है ? इस आध्यात्मिक प्रश्न ने आइंस्टाइन को भी सम्यक उत्तर ढूंढ़ने के लिए अनुप्रेरित किया था । आइंस्टाइन की ईश्वर-विषयक अवधारणा पारंपरिक अवधारणाओं से कई अर्थों में बिलकुल भिन्न थी । वे यह नहीं मानते थे कि ईश्वर एक व्यक्ति है जो स्वर्ग में सिंहासन पर बैठा सबके भाग्य का निर्माण करता रहता है । आइंस्टाइन यह मानते थे कि ईश्वर संपूर्ण सृष्टि के सृष्टा तथा पालक हैं । वह यह भी मानते थे कि ईश्वर क्रूर नहीं, दयालु हैं ।

१९२१ ई. में जब वे एक युवा महिला वैज्ञानिक के साथ बरलिन विश्वविद्यालय के परिसर में स्थित अपने कार्यालय की ओर जा रहे थे, तब उन्होंने एक दशक पूर्व दार्शनिक ब्यूबर को कही हुई बात को दोहराते हुए कहा था, "मैं यह जानना चाहता हूं कि ईश्वर ने इस संसार की रचना कैसे की ? मैं परमात्मा के विचारों को जानना चाहता हूं ।" पुनः १९२९ ई. में जब न्यूयार्क निवासी रैबीगोल्डस्टीन ने उनको ईश्वर विषयक विचारों को जानने के लिए उन्हें पूछा तो जवाब देते हुए उन्होंने कहा था कि वे दार्शनिक स्पीनोजा के भगवान में विश्वास करते हैं ।

बेनेडिक्ट स्पीनोजा (१६३२-७७) एक विख्यात यहूदी दार्शनिक थे । आइंस्टाइन की तरह स्पीनोजा की ईश्वर विषयक अवधारणा भी वेदांत दर्शन में प्रतिपादित ईश्वर की परिकल्पना से मिलती-जुलती हैं । वेदांत के अनुसार ईश्वर एक है । वह सभी कारणों का एकमात्र परम कारण है, परंतु उसका कोई कारण नहीं है । वह सब में है और सब कुछ उसमें है । यह संपूर्ण सृष्टि उसी एक परमात्मा की रचना है । स्पीनोजा भी ईश्वर को जगत का आदि कारण तथा स्वयंभू मानते थे । गीता में ईश्वर को त्रिगुणातीत कहा गया है । स्पीनोजा भी ईश्वर को समस्त गुणों से अतीत मानते थे । स्पीनोजा की ईश्वरविषयक इस अवधारणा को आइंस्टाइन ने स्वीकार किया था ।

धर्म और विज्ञान

आधुनिक जीवन की यह एक विडंबना ही है कि जहां एक ओर आज का सभ्य मानव धर्म और ईश्वर में विश्वास करना अपनी शान के खिलाफ समझता है, वहीं दूसरी ओर वह अंधविश्वासों का गुलाम बनता जा रहा है । बात-बात में धर्म की निंदा करना तथा परंपरागत उदात्त मूल्यों की हंसी उड़ाना आज एक फैशन बन चुका है । अलबर्ट आइंस्टाइन इन दोनों से मुक्त थे । वे खुलकर धर्म की प्रशंसा करते थे । वे कहा करते थे कि सच्चा वैज्ञानिक धार्मिक होता है । उनके अनुसार विज्ञान हमें केवल इतना ही बता सकता है कि 'क्या है ?' परंतु "क्या करना चाहिए" ? इसका परिज्ञान हमें धर्म से ही हो सकता है । इस दृष्टि से विज्ञान और धर्म दोनों ही मानव के लिए आवश्यक हैं ।

आइंस्टाइन ईश्वर में विश्वास करते थे, परंतु वे अंधविश्वासों के विरुद्ध थे । इसीलिए उन्होंने धार्मिक आस्था के साथ-साथ वैज्ञानिक परिदृष्टि के विकास पर भी बल दिया । उन्होंने कहा था, "धर्म के बिना विज्ञान लंगड़ा है और विज्ञान के बिना धर्म अंधा ।" अंधविश्वास हमारा शत्रु है, लेकिन ईश्वर में विश्वास हमारा सबसे बड़ा संबल ।

—२०४, होप अपार्टमेंट, पूर्वी आनंदपुरी,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-८००००१

वैदिक संस्कृति की जीवन यात्रा—४

देवशुनी सरमा

● डॉ. सुधा पांडे

'सरमा-पणि' की कथा ऋग्वेद के संवाद सूक्त में संकलित है। भारतीय नीति कथा एवं प्रतीक कथा का पूर्वरूप कहा जा सकता है इसे ! इंद्र की कुतिया का नाम सरमा था, उसने मेधावी दूती का कार्य किया, वह राष्ट्र की गुप्तचर शक्ति की प्रतीक है, जो निरंतर गतिशील रहती है। पणि बल नामक असुर के अनुचर एवं वीर योद्धा थे। यह प्रमुखतः इंद्र के तथा इंद्र के मित्रों के भी शत्रु थे। पणि भी अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली हैं, किंतु इंद्र के पराक्रम के सामने ठहर नहीं सकते। सरमा ने ही उन्हें उनकी कमजोरियों से अवगत कराया था। पणि उस युग के व्यापारी भी हैं। सरमा सूक्त में ऋग्वैदिक काल की राजनीतिक पटुता का रूप स्पष्ट मिलता है।

देवकुल-गुरु अंगिरा के नये सूक्तों के विधान में देवगण नये-नये आयोजन में तत्पर होने लगे। उनकी युद्ध विधा का चातुर्य दूर-दूर तक ख्यात होने लगा। उनके सूक्तों को उनके शिष्यगण अपने कार्यों के साथ-साथ कंठस्थ कर बड़े राग से गाया करते थे। उनके अश्वस्थ और गोष्ठ समृद्ध थे। कृषि कार्य में भी वे अभिरुचि लेने लगे थे। कृषि कार्य में 'अंगिरा' गोचारण में 'अथर्वा' और काष्ठकर्म में 'ऋभु' अतिनिपुणता प्राप्त कर चुके थे। समस्त ज्ञान-विज्ञान और सारी ईति-भीतियों से रक्षा के दायित्व का निर्वाह 'बृहस्पति' कर रहे थे। प्रातः से लेकर रात्रि तक सभी देवगण नित नये कार्यों में व्यस्त रहने लगे। उस रात्रि भी सब-कुछ प्रतिदिन की भांति था। सभी अपने-अपने कक्ष में सोने जा रहे थे। अथर्वा अपने नियमों के अनुसार अश्वस्थ और गोष्ठ का चक्कर लगाकर पशुओं को देखने गया और तत्क्षण वहां से दौड़ता हुआ बृहस्पति को पुकारने लगा—

"बृहस्पति ! बृहस्पति ! इंद्र के पास चलो, कोई हमारी गायें खोलकर ले गया है।"

सभी इंद्र के पास दौड़े और इंद्र को यह समाचार दिया।

इंद्र ने अथर्वा से कहा, "चलो, पशुओं के बाड़े की ओर चलकर देखें।"

सारा देवसमूह पशुओं के बाड़े के पास

सारा देवसमूह विषादमग्न हो गया । बृहस्पति की गायें ही उनके यज्ञ का आधारभूत साधन थीं । गायों के बिना यज्ञ कैसे होगा ? कैसे जीवन-यापन होगा ? वे अग्निदेव को कैसे संतोष दे सकेंगे । देवताओं को क्षोभ भी हुआ कि देवगुरु की गायें ही चोरी हो गयीं ? कौन ले गया ? क्यों ले गया ? इंद्र भी खीझ से भर गये थे ।

पहुंच गया था, एक भी गाय और बछड़ा नहीं रह गये थे । इंद्र चिंतित थे, किसी ने प्रयासपूर्वक बाड़ा खोला था और चोरी के उद्देश्य से ही पशु खोलकर ले गया था ।

सारा देवसमूह विषादमग्न हो गया । बृहस्पति की गायें ही उनके यज्ञ का आधारभूत साधन थीं । गायों के बिना यज्ञ कैसे होगा ? कैसे जीवन-यापन होगा ? वे अग्निदेव को कैसे संतोष दे सकेंगे । देवताओं को क्षोभ भी हुआ कि देवगुरु की गायें ही चोरी हो गयीं ? कौन ले गया ? क्यों ले गया ? इंद्र भी खीझ से भर गये थे ।

अंगिरा ने अनुमान लगाया— 'अवश्य यह किसी असुर का कार्य होगा ?'

सभी देव लज्जा और चिंता से व्याकुल थे । बृहस्पति ने काफी देर चिंतन करते हुए कहा, "अंगिरा का कहना ठीक है । गायों को रसा नदी के तीर पर रहनेवाले पणि चुरा ले गये हैं । ये पणि बल नामक असुर के अनुगामी हैं ।" अब रहस्य खुल चुका था । देवों ने मिलकर निश्चय किया कि किसी दूत को पणियों के पास भेजा जाए और गौवों को मुक्ति दिलायी जाए ।

देवराज इंद्र गंभीर चिंता में लीन थे, तभी उन्होंने स्मरण किया और कहा, "बृहस्पति ! देवशुनी सरमा को यह कार्य सौंपा जाए । वाक्पटु सरमा अपनी कार्यकुशलता और चतुरता से इस कार्य को कर सकेगी । पहले वह जाकर अपनी शक्ति प्रकाशित कर पणियों की मनःस्थिति का पता लगा ले और फिर स्वयं ही पणियों को गायें लौटाने का संदेश भी दे ।" सरमा की कार्यकुशलता से इंद्र आश्वस्त थे, मृगया आदि कार्यों में अनेक बार साधन के रूप में उसका प्रयोग कर चुके थे । जिस प्रकार शिकारी के साथ लक्ष्य प्राप्ति के लिए कुत्ता आगे दौड़ता है, उसी प्रकार गायों को खोजने के लिए इंद्र ने सरमा नामक अपनी कुतिया को गायों को खोजने के लिए भेजा । वह देवशुनी थी, अतः वह भी दैवी प्राणी थी, उसे इस दुष्कर कार्य को करने में जरा भी संकोच न हुआ— प्रसन्नतापूर्वक इंद्र की आज्ञा को शिरोधार्य कर अनेक दुर्गम मार्गों को पार करती रसा नामक नदी के तट पर पहुंच गयी । रसा का विस्तार सौ योजन का था, किंतु उसे किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव न हुआ । सरमा को वहां पहुंचा देख, पणि उसे तत्काल पहचान गये । उन्हें आश्चर्य भी हुआ कि यह यहां तक कैसे आ गयी । उसे पास आया देख, पणि उससे मित्रता की बातें करने लगे कि किसी प्रकार वह अपने आने का रहस्य बता दे । उनका अग्रणी नेता उससे अनेक बातें पूछने लगा—

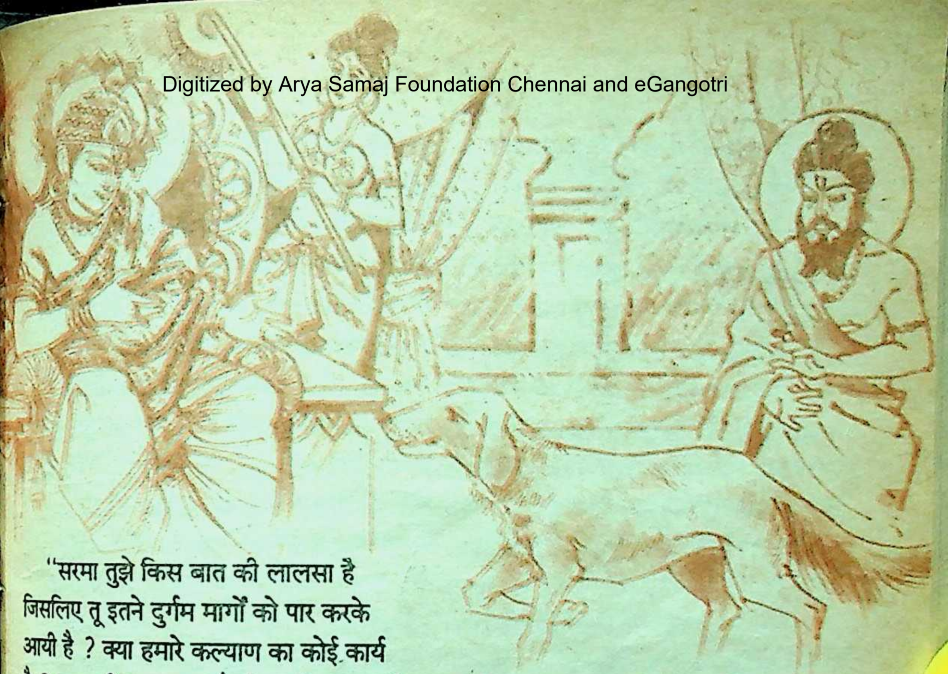

"सरमा तुझे किस बात की लालसा है जिसलिए तू इतने दुर्गम मार्गों को पार करके आयी है ? क्या हमारे कल्याण का कोई कार्य है ? हरहराती शब्दमान सौ योजन विस्तारवाली नदी को तूने कैसे पार किया ? तुम्हारे परिभ्रमण की गति कौन-सी थी ?"

सरमा ने सगर्व उत्तर दिया, "हे पणियो ! मैं इंद्र की भेजी दूत हूं और बृहस्पति की जिन गायों को तुम चुराकर लाये हो, उन्हें खोजती हुई यहां आ पहुंची हूं । नदी ने ही अतिक्रमण के भय से मेरी रक्षा की ।"

पणि को इंद्र के बारे में जिज्ञासा हो रही थी, असुरों के बीच इंद्र की वीरता की चर्चा प्रायः उसने सुनी थी, पणि ने उत्कंठापूर्वक सरमा से पूछा, "हे सरमा इंद्र कैसा है ? उसकी सेना कितनी है ? अच्छा हो वही यहां आ जाए और उसे मित्र बना लिया जाए ।"

"मैं उस इंद्र को किसी के द्वारा दबाया जाने योग्य नहीं समझती । वह इंद्र ही दूसरों को अपने प्रभाव से अभिभूत करता है । उसे गहरी से गहरी नदियां भी नहीं हिला सकतीं । हे पणियो, इंद्र द्वारा, मारे जाने पर तुम ही नष्ट हो जाओगे ।" सरमा और अधिक निर्भीक हो चुकी थी ।

इंद्र के पराक्रम की यह बात पणियों के लिए असह्य हो उठी, वे क्रुद्ध होने लगे और सरमा से बोले, "तुम द्युलोक के किनारे इन गौओं को चाहती हुई यहां तक आ पहुंची हो । इंद्र तेरा कौन है ? क्या वह तेरा संबंधी है ? हम युद्ध किये बिना इन गायों को नहीं छोड़ेंगे और यह भी जान ले हमारे अस्त्र-शस्त्र भी बहुत तेज हैं ।"

सरमा को भी क्रोध आने लगा था, क्रोध में बोली, "तुम्हारे पास सेना की शक्ति नहीं है । तुम्हारे पापी शरीर बाण के प्रहार को न सह सकेंगे, इंद्र की प्रेरणा से भरे बृहस्पति भी तुम्हें क्षमा नहीं करेंगे । वह तुम्हें सुख भी नहीं देंगे, क्योंकि तुम सत्य और असत्य से युक्त हो ।"

पणियों ने सरमा को लोभ दिलाते हुए कहा,

"हे सरमा पहाड़ों की गुफाओं में हमारा कोष छिपा हुआ है जिसमें गौ, अश्व और धन भी विद्यमान है । अनेक कुशल और सजग पणि उसकी रक्षा करते हैं तुम्हारा यह प्रयास व्यर्थ ही जाएगा ।"

सरमा ने पुनः दैवी प्रभाव से भरकर कहा, "यहां सोमपान से तीक्ष्ण मेधावाले अथर्व और अंगिरा आएंगे और अनुष्ठान से अपहृत गायों के निकलने का मार्ग प्रशस्त करेंगे । तुम यह बात भूल जाओ कि मैं यहां व्यर्थ आयी हूं ।"

पणि अब किसी प्रकार सरमा को अपने पक्ष में लाने के प्रयास करने लगे । वे जान गये थे कि सरमा आसानी से हमारी बात नहीं मानेगी । वे भयभीत भी हो गये थे, किंतु भय का भाव न दिखाकर अत्यंत विनम्र भाव से कहने लगे, "सरमे ! तू इस प्रकार दिव्य शक्तियों के प्रभाव के कारण ही अनेक कष्टों को सहकर भी यहां तक आ पहुंची है । निश्चय ही तुझे देवताओं ने बलपूर्वक यहां भेजा है । तुम यहां से न लौटो, तुम्हें हम अपनी बहन बनाते हैं, तुम्हें हम अलग से गायें देकर उनका भागीदार बना देंगे ।"

वह प्रलोभनों से बिलकुल विचलित न हुई, उसने फिर उत्तर दिया, "हे पणियो, मैं न भ्रातृत्व जानती हूं और न बहन भाव को जानती हूं । इंद्र और अंगिरा ही इस संबंध को जानते हैं । गायों की कामना करनेवालों की इच्छा से ही मैं यहां आयी हूं । अतः मेरे वहां पहुंचते ही वे सब यहां आकर तुम्हें घेर लेंगे । तुम लोग इस स्थान को छोड़कर चले जाओ, इसी में तुम्हारा कल्याण है ।" उसने पणियों को पुनः उनके हित की बात समझायी ।

पणियों की गायों और धन के प्रति सरमा जरा भी आसक्त न थी...किंतु गायों की श्रेष्ठता और दूध के लालच से वह अपना लोभ संवरण न कर सकी । स्वभावगत लोभ के कारण गायों का दूध अवश्य पीना चाहती थी, अतः पणियों से कहने लगी—

"हे पणियो, लंबा मार्ग पार करके मैं थक-सी गयी हूं । मुझे केवल उन गायों का अमृत रस दूध पिला दीजिए । मुझे आपका धन अथवा गायें आदि कुछ नहीं चाहिए ।" पणि तो मौके की तलाश में थे ही । उन्होंने तत्काल सरमा को दूध पीने को दिया । पणियों का दूध पीने के बाद सरमा आसुरी प्रभाव से मोहाविष्ट हो गयी, उस दूध से उसे अपूर्व आनंद मिला । दूध पीने के बाद रसा नदी को पार कर देवलोक में हर्षित होकर पहुंची । पहुंचते ही इंद्र ने उससे पूछा, "गायों के बारे में कुछ पता चला..." आसुरी प्रभाव के वशीभूत हो सरमा का मन पणियों की ओर झुक गया था । उसने इंद्र को उत्तर दिया, "नहीं...मुझे कुछ पता नहीं चल सका ।"

इंद्र उसकी चालाकी ताड़ गये थे और उन्होंने क्रोध में भरकर उसे एक लात कसकर मारी, दूध उगलने के साथ भय से संत्रस्त होकर वह पुनः पणियों के नगर की ओर दौड़ी । उसके पीछे-पीछे इंद्र और अंगिरा तथा सारा देव समाज अपने अस्त्र-शस्त्र संभालकर पणियों की खोज में चल दिया ।

सरमा ने उन्हें बताया, "पणियों ने गायों को एक गुफा में छिपा दिया है और वहीं वे अपना भोजन आदि कर रहे हैं ।"

"अब शीघ्र चलकर पणियों पर आक्रमण करो ।" अंगिरा ने उत्साह में भरकर कहा ।

> ***अंगिरा ने स्तवन किया, "इंद्र तुम महान पराक्रमी हो, तुमने लोभी और अदानशील पणियों को नष्ट किया । तुमने गुफा में छिपी हुई गायों को खोजकर उनका उद्धार किया ।"***

भयानक रात्रि और देवों का काफिला निःशब्द आगे बढ़ा जा रहा था, मार्ग संकरा हो चुका था ।

"अरे यह सरमा हीं शत्रु से मिलकर हमें धोखा तो नहीं दे रही..." विवस्वंत ने दस्र से पूछा ।

सरमा को ये शब्द सुनायी दिये और पश्चात्तापभरे स्वर में बोली, "इंद्र क्या मुझ पर विश्वास नहीं रहा तुम्हारा ?"

"सरमा बगैर कुछ कहे आगे बढ़ती चल, ये देव स्वयंभ्रमित हो चले हैं ।" इंद्र ने गरजकर कहा ।

कुछ दूर आगे चलकर सरमा रुकी । देवों ने भी उसका अनुसरण किया । एक विशाल गुफा आयी, जिसमें पणि आनंद मना रहे थे । गुफा के अंदर ही गायें भी थीं । द्वारों पर कुछ पणि पहरा दे रहे थे, कुछ अग्नि पर मांस भून रहे थे ।

इंद्र ने फुसफुसाकर आदेश दिया कि 'अंधेरे का लाभ उठाकर गुफा को घेर लो, दांव देखकर आक्रमण किया जाए ।' देवों ने धीरे-धीरे गुफा घेर ली । अपने हाथ में नुकीले पत्थर का अस्त्र लेकर इंद्र कूद पड़े और सामने जो पणि दिख रहा था, उसके सिर पर पूरे वेग से प्रहार किया । पणि क्षणभर में ही भूमि पर गिर गया...दूसरे पणि स्तब्ध थे कि अचानक यह कौन आपदा आ पड़ी । इंद्र क्रुद्ध होकर टूट पड़े थे, 'चोर-लुटेरे' । और ललकारते हुए वे गुफा में सभी देवों के साथ घुस गये, भीषण कोलाहल होने लगा... । कुछ पणि युद्ध को तत्पर होने लगे, कुछ मुंह छिपाकर भागे, किंतु सब उपाय व्यर्थ थे । कुछ ही देर में सारे पणि मृत्यु के मुख में समा गये । इंद्र की जय-जयकार होने लगी । अथर्वा दौड़कर गुफा में गायों के पास पहुंच गया, गायें भी देवों को आया देख रंभाने लगीं, पणियों का नाश और उनका सब-कुछ ध्वंस हो चुका था । इंद्र ने सरमा को साधुवाद दिया और कहा, "सरमा ले यह गाय मैं तुझे देता हूं । तेरा परिवार सुख-शांति से रहे । तूने हमारी बड़ी सहायता की है ।"

देव इंद्र के शौर्य से अभिभूत हो उठे थे... ।

अंगिरा ने स्तवन किया, "इंद्र तुम महान पराक्रमी हो, तुमने लोभी और अदानशील पणियों को नष्ट किया । तुमने गुफा में छिपी हुई गायों को खोजकर उनका उद्धार किया ।"

दूसरे ने भी सूक्त रचा, "देवों का नेता इंद्र महान है । उसने सरमा की सहायता से पणियों का नाश किया । देवों को सुख पहुंचाया । उसने गुफा में छिपी हुई गायों का भी उद्धार किया ।"

सभी देव आनंद-मगन, अपने विश को प्रस्थान करने लगे । रात्रि पणियों के युद्ध में ही बीत गयी थी । सूर्य की प्रथम किरण के साथ सारा विश, इंद्र के जय-जयकार से गूंज उठा ।

—प्राचार्या,
एम.के.पी. (पी.जी.) कॉलेज,
देहरादून-२४८००१

आस्था के आयाम

एक वैदिक तकनीक के खोने का मलाल

जिस तरह वन में तपस्वी तपस्या करता है । उसी तरह वर्षों से एक साधना में लीन हैं नागपुर के मधुकर अष्टीकर । भौतिक विज्ञान की इस बदलती दुनिया से बहुत पीछे वैदिक युग में लौट गये हैं श्री अष्टीकर ।

वैदिक साहित्य से अष्टीकर ने खोज निकाली है एक गैर पारंपरिक ऊर्जा उत्पादन की तकनीक । सफल परीक्षण, फिर भी मलाल इस बात का है कि इस देश की सरकार ऐसी मेहनतों में कोई दिलचस्पी नहीं रखती है । अपनी सफलता से उत्साहित होकर सन १९९२ में प्रधानमंत्री को पत्र लिखा । जवाब प्रधानमंत्री कार्यालय ने तो दिया, पर उनकी खोज पता नहीं किस नौकरशाह के दराज की धूल खा रही है ।

फिलहाल यह वैदिक तकनीक मधुकर अष्टीकर से छिन चुकी है । वह दिन दूर नहीं जब हमें ऊर्जा उत्पादन की यह तकनीक बाहर से आयात करनी पड़े । अष्टीकर जब राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों से मुलाकात का सिलसिला खत्म कर निराश बैठे थे, तब ब्रिटेन की एक संस्था ने उनकी सुध ली । अष्टीकर को उनके परीक्षण पर आगे काम करने के लिए ब्रिटेन के धर्म हिंदुजा फाउंडेशन ने फेलोशिप दी । फेलोशिप समाप्त होने के पश्चात अपनी मेहनत और शोध को अष्टीकर अप्रैल १९९४ में फाउंडेशन को सौंप चुके हैं ।

अब ब्रिटेन की यह संस्था इस तकनीक पर काम कर रही है । गैट के आ जाने से इस वैदिक तकनीक का देश में रह पाना दुष्कर हो गया ।इस तकनीक के पेटेंट होने से भी इनकार नहीं किया जा सकता ।

इधर मधुकर अष्टीकर अकेले खड़े हैं इतना बड़ा काम करके । नागपुर के निकट वर्धा नदी के भंवर में सफल परीक्षण करके । वे बताते हैं कि बिजली के तार में एक तरफ चुंबक और दूसरी ओर बिजली का बल्ब लगाया । एक, दो, तीन, चार दिन तक नदी के किनारे बैठे भंवर का केंद्र खोजते रहे । अंत में सफलता मिली । चुंबकीय ऊर्जा और पानी की तरंगों के सहारे बल्ब जला । बात साफ हो गयी कि पानी की तरंगों में विद्यमान ऊर्जा का उपयोग विद्युत के रूप में किया जा सकता है ।

भंवर से उत्पन्न ऊर्जा के बारे में अष्टीकर का कहना है कि उनके सामने ही वर्धा नदी में एक सांड बह गया । भंवर में फंसे इस जानवर की लाश मिली । सांड की पूरी चमड़ी जली हुई मालूम होती थी मानो उसे किसी ने भून दिया हो । भंवर के केंद्र की यही ऊर्जा बिजली उत्पादन में सहायक होती है ।

अष्टीकर के अनुसार इस तर्ज पर बरमूडा रहस्य भी सुलझाया जा सकता है ।

प्रश्न यह है कि अब हमें वैदिक अनुसंधान आयात करना पड़ सकता है क्या ?

— रोहिणी पंडित

कीरो और 'मृत हाथ की रेखाएं'

● शैलेन्द्र भार्गव

एक रात लंदन में मैं अपने दफ्तर में बैठा हुआ था कि सूचना मिली कि एक साहब, जो नीचे गाड़ी में बैठे हैं, फौरन मुझसे मिलना चाहते हैं। इससे मुझे बड़ी हैरानी हुई और खीझ भी। हैरानी इसलिए कि तब रात के ११ बज चुके थे और दिनभर के काम के बाद मुझे आराम और नींद की सख्त जरूरत थी, क्योंकि कल बिलानागा, जो व्यस्त दिन आनेवाला था, उसके लिए तैयार हो सकूं। "फिर भी मैं सीढ़ियां उतरकर नीचे गया और वहां मैंने जरा बड़ी उम्र के एक आदमी को घोड़ागाड़ी में बैठे इंतजार करते पाया। 'गुड ईवनिंग' के सिवा अन्य किसी भूमिका के वह आदमी कहने लगा, "श्रीमान, क्या आप इसी क्षण मेरे साथ चलेंगे और एक व्यक्ति की हस्तरेखाएं पढ़ेंगे, जिससे मैं आपकी मुलाकात कराऊं ? मैं बेझिझक तैयार हो गया, उसके साथ चलने को। हालांकि अब मैं नहीं बता सकता कि रोमांच के शौक ने मुझे प्रेरित किया था या हस्तरेखाएं पढ़ने के शौक ने।"

यह शुरुआत है कि विश्वविख्यात हस्तरेखाविद् कीरो के जीवन की उस घटना की, जिसके बारे में उन्होंने लिखा था कि मैंने जीवन में हजारों हाथ देखे, पर ऐसा हाथ कभी नहीं देखा और ऐसी परिस्थिति में भी नहीं, जिसकी परिणति कल्पनातीत है। रोमांचकारी, मार्मिक और किसी हद तक त्रासद भी।

आखिर कौन-सी वे परिस्थितियां थीं और कैसा था वह हाथ, जिसको देखना कीरो के जीवन की एक नितांत रोमांचकारी और अविस्मरणीय घटना बन गयी ?

कीरो चुपचाप उस अजनबी के साथ रात कोई ११ बजे उसकी घोड़ागाड़ी में सवार हो गये। उसके कोचवान ने चाबुक फटकारे और गाड़ी हवा से बातें करने लगी। घोड़ागाड़ी कीरो और उस अजनबी को हैमर स्मिथ की ओर भगाये ले जा रही थी। कीरो ने अपने अनजान साथी से बात करने की कई नाकाम कोशिशें कीं और अंत में दिल थामकर बैठ गये।

कीरो ने गौर किया तो उन्हें साफ लगा कि अजनबी के चेहरे पर बैचेनी बढ़ती जा रही थी। हैमर स्मिथ पार करके जब गाड़ी रिचमांड रोड की ओर बढ़ने लगी तो कीरो के भय और आश्चर्य की सीमा न रही, क्योंकि तब तक अजनबी ने अपनी जेब से एक बड़ा-सा काला रूमाल निकाल लिया था और कीरो की आंखों पर बांधने की जिद करने लगा था।

वह अपनी बातों पर इतनी दृढ़ता से अड़ा हुआ था कि प्रतिरोध करना बेकार था। कीरो ने अपनी आंखों पर पट्टी बंधवा ली। थोड़ी देर में

यह शुरुआत है विश्वविख्यात हस्तरेखाविद् कीरो के जीवन की उस घटना की, जिसके बारे में उन्होंने लिखा था कि मैंने जीवन में हजारों हाथ देखे, पर ऐसा हाथ कभी नहीं देखा और ऐसी परिस्थिति में भी नहीं, जिसकी परिणति कल्पनातीत है। रोमांचकारी, मार्मिक और किसी हद तक त्रासद भी।

कीरो ने महसूस किया कि गाड़ी पक्की सड़क से उतरकर किसी गली में मुड़ गयी थी, क्योंकि गाड़ी के पहियों के नीचे बजरी के भरनि की आवाजें सुनायी पड़ने लगी थीं। थोड़ी देर में गाड़ी रुक गयी और अजनबी ने पैसा देकर गाड़ीवान को विदा किया। फिर कीरो को उसने गाड़ी से उतारकर आहिस्ता-आहिस्ता कई सीढ़ियां चढ़ाकर एक मकान में ले गया। दूसरी मंजिल पर वह रुका और एक कमरे में ले जाकर उन्हें एक कुरसी पर बैठा दिया। फिर उसने उनकी आंखों पर से पट्टी खोल दी और 'दो मिनट में आ रहा हूं' कहकर तेजी से कमरे से निकल गया।

दो-चार मिनट कीरो को सामान्य होने में लगा। फिर उन्होंने अपनी आंखों के सामने जो कुछ देखा, भय और आतंक से उनके रोंगटे खड़े हो गये। कहां तो उन्हें अपनी प्रतीक्षा में बैठे हुए अतिथियों के भीड़ की कल्पना की थी और कहां उनके सामने जमीन पर पड़ी हुई एक स्त्री की लाश थी।

मारे भय के कीरो संज्ञाशून्य हो चले थे। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या करें, तभी उनका साथी हाजिर हुआ और उसने कहा, "मैं चाहता हूं कि आप इन हाथों की रेखाएं पढ़ें।"

कीरो ने आगे लिखा है कि अब तक मैंने तरह-तरह की विचित्र परिस्थितियों में हस्तरेखाएं पढ़ी थीं, मगर इतनी भुतही, इतनी भयानक स्थिति में कभी नहीं। इसके अलावा, मुझे इसका क्या अधिकार था कि मैं उस औरत की हस्तरेखाओं को बोलने को विवश करूं, जिसके होंठ सदा के लिए चुप हो चुके हैं? अतीत की बातों को गड़े रहने देना ही ठीक होता है, मैं भी चुप रहूंगा।

इस निश्चय पर मैं पहुंचा ही था कि जैसे किसी ठंडे निःश्वास ने मुझे स्पर्श किया। यह कोरी कल्पना थी या वास्तविकता, अब मैं नहीं कह सकता। मगर मैंने सोचा और साथ ही महसूस भी किया कि कोई चीज मेरे कानों में फुसफुसा रही है, "संकोच न करो। हस्तरेखाएं पढ़ो और जो सच है, वह बता दो।"

उसी क्षण मानो मैं अपनी सारी संकल्पशक्ति गंवा बैठा। मानो मैं किसी अदृश्य शक्ति या प्रभाव के नियंत्रण में था। मैंने अपने को पलंग की ओर खिंचता हुआ महसूस किया और सिहरकर देखा कि झुककर मैंने उन मृत हाथों को बड़ी मृदुता से अपने हाथों में ले लिया है।

मुझे ज्यादा प्रकाश मिल सके, इसलिए मेरे साथी ने एक और लैंप जलाया, मगर चूंकि कमरे में दूसरी कोई मेज नहीं थी, जिस पर लैंप रखा जा सके, इसलिए उसने पलंग के पायदाने रखे ताबूत को नजदीक खींच लिया और जब उसने लैंप को उस पर रखा तो मैंने ताबूत पर

अंकित यह इबारत पढ़ी : एग्नेश मार्टन, उम्र २४ वर्ष ।

२४ साल, फिर भी उसकी हस्तरेखाएं भारी परेशानी और चिंता की सूचना दे रही थीं । मगर विवाह-रेखाएं मानो इसका प्रतिहार करते हुए कह रही थीं कि उसे अपने पति से बेहद प्यार था ।

जैसे-जैसे मैं एक-एक ब्यौरा पढ़ता गया, मेरे साथी के मुखड़े पर अंकित वेदना अधिकाधिक तीव्र और भयंकर होती गयी । मैंने उसे बताया कि शुरू से ही उस औरत के जीवन में कोई गुप्त स्नेह था, जिसे उसने चुपचाप संजो रखा था । यह स्नेह किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति था, जिसे वह अपने पैसों से सहायता और सहारा देती आयी थी । मुझे पक्का विश्वास है कि वह उसका कोई रिश्तेदार था ।

मेरा साथी इस तरह कराहा, जैसे उसके कलेजे में चाकू भोंक दिया गया हो और वह कुरसी में बेहोश होकर ढह गया । मृत हथेलियों को छोड़कर मैं अपने साथी की ओर लपका । चंद मिनटों में वह वापस होश में आया और जब उसकी नजरें मुझ पर पड़ीं, तो उसने अपनी कनपटी पर हाथ फिराया, मानो याद करने की कोशिश कर रहा हो कि आदमी कौन है और यहां क्यों मौजूद है । जब उसे याद आया तो मुझे हैरत में डालते हुए उसने व्यग्रता से मेरी बांह पकड़कर तेजी से कमरे के बाहर ले जाकर बड़ी उत्तेजना में कहा, "मैंने काफी सुन लिया, जो कुछ सुनने की इच्छा थी, सब सुन लिया श्रीमान, अब आप तशरीफ ले जाइए और भगवान के वास्ते मुझे अकेला छोड़ दीजिए । किसी रोज शायद मैं आपको फिर बुलवा भेजूं और सारी बात आपको तरतीब से बता सकूं ?"

कीरो के लिए यह अजीब इत्तफाक था । फिर भी वे अपने साथी की मानसिक चिंता और अवसाद को मद्देनजर रखते हुए चुपचाप चले आये ।

अरसा गुजर गया । कीरो इस हादसे को लगभग भूल चुके थे कि अचानक, कोई आठ महीने के बाद, एक आदमी ने आकर उनसे विनती की—कृपया मेरे साथ गाड़ी में बैठकर चारिंग क्रास के नजदीक एक होटल में चलिए ।

होटल पहुंचने पर जब कीरो को एक प्राइवेट बैठक में ले जाया गया तो उन्होंने पलंग पर लेटे हुए एक आदमी को प्रतीक्षारत पाया, जो हड्डियों का ढांचा-मात्र था, जर्जर मन और शरीर, दोनों से । उसने उठकर कीरो से हाथ मिलाने की कोशिश की, पर उठ न सका । कीरो उसे पहचान न सके, लेकिन जब उसने उठ न सकने के लिए माफी मांगी तो उन्हें उसकी आवाज कुछ पहचानी-सी लगी । फिर उन्हें वह सब कुछ याद आ गया कि वही आदमी अरसा

पहले, एक रोज रात के ११ बजे उन्हें एक मृत स्त्री के हाथ की रेखाएं देखने के लिए ले गया था, जो उनके जीवन का बेहद रोमांचकारी क्षण था ।

"आह, आपको मेरी याद है ?" उसने कहा, "मुझे खुशी है कि आप पधारें । मैं अब सब कुछ बता देना चाहता हूं आपको । मुझे लगता है कि मेरे दिल का धड़कना बंद हो इसके पहले अपना दिल मुझे आपके सामने उड़ेल देना चाहिए । मेरे पास बैठ जाइए, बैठेंगे न ? मेरी आवाज में बहुत दम नहीं है ?"

फिर खांसी का झकझोर देनेवाला एक दौर थमते ही उसने कहा, "क्या पिछले अगस्त की वह रात आपको याद है । जब मैं आपको लंदन के बाहर एक मकान में ले गया था और आपने मेरी खातिर हस्तरेखाएं पढ़ी थीं ?"

कीरो के हामी भरते ही उसने अपनी बात फिर से कहनी शुरू की, सुनिए । वह औरत मेरी पत्नी थी । उससे चंद साल पहले ही, भारत में सेना में सर्विस करके लौटते वक्त, जहाज पर मेरी मुलाकात हुई थी । उस अत्यंत रूपवती स्त्री के साथ एक नौकरानी के अलावा कोई दूसरा न था । यात्रा में उससे मेरी मित्रता हो गयी । हम इंगलैंड पहुंचे, इसके पहले ही मैंने अनुभव किया कि जीवन में पहली बार मैं बुरी तरह प्रेम में पड़ गया हूं । तब मैं चालीस साल का था । भारत में सक्रिय सैनिक सेवा कर चुका था । वह मुश्किल से बीस वर्ष की सुंदर तरुणी थी । फिर भी पहले ही दिन मुझे पक्का यकीन हो गया था कि उसके जीवन में कोई रहस्य है जिसे वह गुप्त रखना चाहती है ।

एक शाम, जब भूमध्यसागर में हम दोनों जहाज की डेक पर साथ-साथ चहलकदमी कर रहे थे, मैंने अचानक इस बात का जिक्र छेड़ दिया तो वह चौंकी । मगर तत्काल संभलकर बोली, "कर्नल साहब, औरतें रहस्य की पुड़िया हैं । अगर आप चाहते हों कि हमारी मित्रता बनी रहे, तो याद रखिए कि मुझे अपने रहस्य गुप्त रखने की पूरी छूट रहेगी ।"

बाद में, उस रात, मैंने उस वाक्य पर बहुत तरह से विचार किया, मुझे भरोसा हो गया कि उसके शब्द, जितना मैं समझ रहा था, उससे अधिक गंभीरता से कहे गये थे । इससे मेरे प्यार और अहंकार में लड़ाई ठन गयी । मैंने अपने मन को दलील दी कि किसी पुरुष को किसी स्त्री से यह मांग करने का कोई अधिकार नहीं कि वह हमारी मुलाकात होने से पहले की अपनी सारी बात बताये । मैंने तय किया कि इसी रात मैं उसके पास जाऊंगा और उसे बताऊंगा कि मैं किस कदर उससे प्यार करने लगा हूं और उससे जीवन-सहचरी बनने की प्रार्थना करूंगा ।

शीघ्र ही अनुकूल अवसर मुझे मिल गया । मैंने उसे डेक के पिछले भाग में समुद्र की ओर मुंह किये हुए खड़ा पाया । मैं चुपके से जाकर उसकी बगल में खड़ा हो गया और उसकी बांह में बांह डालकर उसे अपनी ओर खींचा । वह मेरी तरफ मुड़ी तो मैंने पाया कि उसकी आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं । वह रो रही थी ।

"एग्नेश ! मैं बोला, मैं तुमसे प्यार करता हूं । मुझ पर भरोसा करो । बताओ तुम क्यों रो रही हो ? बताओ, यह रहस्य क्या है ?"

उसने मेरे हाथ को अपने हाथों में लेकर उन्हें चूमा और गरम आंसुओं की बरसात-सी करते

हुए कहा, "मैं बता नहीं सकती प्रिय, मैं बताने की हिम्मत नहीं कर सकती । अगर तुम्हें मुझसे प्यार है, तो कभी मुझसे यह रहस्य बताने को मत कहना । यह मेरे प्रति तुम्हारे मान का निशान है ।"

मैंने कहा, "एग्नेश, बस एक सवाल है, जो मुझे पूछना है और मैं पूछूंगा भी । उसका उत्तर तुम मुझे दे दो, तो फिर चाहे जो रहस्य रखना चाहो, रखना । क्या तुम किसी और पुरुष से प्यार करती हो और अगर नहीं तो क्या तुम मुझसे प्यार कर सकोगी ?"

सिर झुकाकर उसने मृदुता से कहा, "जिस अर्थ में तुम पूछ रहे हो, उस अर्थ में मैं किसी और पुरुष से प्यार नहीं करती । मैंने कभी प्यार नहीं किया । मगर अब करती हूं । मैं तुमसे प्यार करती हूं—संपूर्ण हृदय और आत्मा से ।"

इंगलैंड पहुंचकर हमने शादी कर ली । कोई तीन साल हमने आदर्श जीवन जिया । न मैंने कभी उसके बीते जीवन के बारे में कोई सवाल पूछा और न उसने कभी मेरे जीवन के बारे में ।

एक रोज भारत से उसके नाम एक पत्र आया । मैं वह पत्र उसके पास ले गया और पूछा, "क्यों प्रिये, भारत में तुम किसे जानती हो ?" मुझे पता नहीं था कि भारत में तुम्हारे दोस्त हैं ।

वह चौंकी । उसकी आंखों में आंसू छलछला आये । उसने दो-चार असंबद्ध वाक्य कहे, फिर फफककर रोने लगी और कमरे में चली गयी ।

अगर मैं उसके पीछे-पीछे गया होता, अगर मैंने मृदुता से उसका विश्वास जीतने की कोशिश की होती, तो सब कुछ ठीक हो गया होता । मगर ऐसा लगता है कि उस एक क्षण में मेरा स्वभाव ही भयानक रूप से बदल गया था । ईर्ष्या मेरे दिल पर हावी हो गयी ।

कई दिनों तक मैं अपनी पत्नी से दूर रहा और अपनी ईर्ष्या को सहलाता रहा, अपने दुर्भाग्य पर कुढ़ता रहा । अंत में मैंने एक योजना बना डाली और फिर प्रतिशोध की बात सोची । मैंने निश्चय किया कि सबूत पेश कर दूंगा और फिर उसके मुंह से सफाई कबूलवाकर संतोष प्राप्त करूंगा ।

मैं बैठक में ऐसी जगह बैठता था, जहां से उस पर नजर रखूं । मैं बगीचे की झाड़ियों में दुबककर बैठ जाता और उसका आना-जाना देखता । मैंने डाकिये को घूस देकर ऐसी व्यवस्था कर ली थी कि उसकी तमाम डाक मेरे हाथों से गुजरे । रात को उठकर मैं चुपचाप उसके शनयकक्ष में चला जाता और उसकी निगरानी करता ।

एक रात मुझे अपनी मेहनत का इनाम मिल गया । मैं दबे पांव उसके कमरे में पहुंचा, तो मैंने पाया कि वह चिट्ठी लिख रही थी । हालांकि यह पुरुषोचित नहीं था, फिर भी मैं अपने को रोक नहीं पाया । आहिस्ता से मैंने कमरा पार किया और उसके पीछे खड़े होकर उसके कंधे पर से झांककर मैंने चिट्ठी पढ़ने की कोशिश की । "मेरे दुलारे छोकरे, तुम जानते हो कि मैं उन किस्सों पर कभी विश्वास नहीं कर सकी, जिनके कारण तुम्हें इंगलैंड छोड़ना पड़ा । तुम जानते हो कि मुझे तुम्हारी कितनी चिंता है, तुम्हारे भविष्य की, और कितनी प्रतीक्षा है उस दिन की, जब बावजूद तमाम बातों के हम फिर मिलेंगे । मैं बैरिग्स, कलकत्ता के मार्फत तुम्हें

एक ड्राफ्ट भेज रही हूं । मेरे दुलारे, इसका उपयोग तुम्हें करना ही होगा । तुम विपदाओं से जूझ रहे हो । मुझे आश्वासन दो कि तुम इस पैसे का उपयोग करोगे, ताकि मैं.... ।"

मैं और ज्यादा न पढ़ सका । ईर्ष्या से पागल हुआ जा रहा था । मैं बुरी तरह से अपनी आशंकाओं का प्रमाण पाकर अपने कमरे में लौट आया और मैंने फैसला किया कि मैं अपनी जिंदगी का अंत कर दूंगा और उसे स्वतंत्र कर दूंगा कि वह भारत जाकर उस आदमी से शादी कर ले, जिससे उसे बेहद प्यार है ।

मैंने अपनी वसीयत निकाली और उसे ध्यान से पढ़ा, ताकि उसमें कोई खामी न रह जाए और वह मेरी तमाम जायदाद बगैर किसी कठिनाई के प्राप्त कर सके । मैंने सोचा कि वह दूसरा पुरुष निर्धन है, जब मैं त्याग कर रहा हूं तो अपना सर्वस्व ही क्यों न त्याग कर दूं । हां, सभी कुछ उसे मिलना चाहिए । मेरी सारी दौलत और उसकी चहेती एग्रेश भी । सुख पाने के लिए उसे तीन साल प्रतीक्षा जो करनी पड़ी, उसकी भी मैं क्षतिपूर्ति कर दूंगा ।

जब मैं वसीयत लिख रहा था, तो मुझे अपने कमरे में चलने-फिरने की आवाज सुनायी पड़ी । मुझे एग्रेश के कमरे का दरवाजा खुलने की आवाज सुनायी पड़ी । वह मेरे कमरे की ओर आ रही थी । मैंने झट से अपने लिखने की डेस्क बंद की, तभी उसने दस्तक दी । मैं दरवाजे पर गया और मैंने देखा कि वह एक चादर लपेटे दरवाजे पर खड़ी थी । "ओह, आर्थर, तुम्हें डिस्टर्ब किया, इसके लिए माफ करना । मुझे बहुत दर्द हो रहा है । दवा की अलमारी में से जरा लाडेनम की गोलियां दोगे ताकि मैं राहत पा सकूं ।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया । मगर दरवाजा खुला रखा । सो वह भीतर चली आयी और वहां पहुंची, जहां मैं दवाइयां रखता था । दवा की आलमारी खुली देखकर वह तत्क्षण अपना दर्द भूल गयी और बोली, "आर्थर, क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है । मुझे माफ कर दो आर्थर, इधर कुछ दिनों से मैं बहुत स्वार्थी हो गयी हूं । मेरे प्रति तुम्हारे व्यवहार ने मुझे आघात पहुंचाया था । मगर अब मैं समझ पा रही हूं, तुम बीमार हो, शायद काफी बीमार हो । बात क्या है ? मुझे माफ कर दो प्यारे ।"

मेरी इच्छा हुई कि उसे बांहों में भर लूं, पर मैं ऐसा न कर सका । ऐसा करने का मेरा साहस न हुआ । मैंने सोचा, सबेरे मेरा पत्र मेरी ओर से सब कुछ बोलेगा ही । तब वह भी जान जाएगी जो चीज मैं जानता हूं ।

मैंने सख्ती से शायद क्रूरता से उसे परे हटाया, क्योंकि मैं इस दर्दनाक मुलाकात को जल्दी खत्म करना चाहता था और दवा की अलमारी से एक छोटी शीशी उठाकर उसे थमाकर मैंने उसकी ओर पीठ फेर ली और जाकर डेस्क के सामने कुरसी पर बैठ गया ।

आहिस्ता से, पर बड़ी अनिच्छा से वह दरवाजे की ओर बढ़ी और दहलीज पर क्षणभर को ठिठकी । हमारी आंखें चार हुईं । वह बोली, 'गुडनाइट ।' 'गुड बाई' मैंने कहा ।

परेशान और विचलित होकर मैंने अपनी चिट्ठी फिर से शुरू की । जो कुछ अब तक लिखा था, वह मुझे जंचा नहीं और बहुत सख्त जान पड़ा । मैंने उसे फाड़ डाला । कई बार और काफी देर तक यह सिलसिला चला और मैंने देखा कि पौ फटने को आयी थी, पर मेरा पत्र अभी तक पूरा नहीं हुआ था । फिर मैंने सोचा, ज्यादा लिखना ही क्या, चंद लाइनें काफी है ? सो जल्दी से मैंने घसीटा । "अलविदा, मुझे सब पता चल गया है । अब तुम स्वतंत्र हो । सुखी रहो—आर्थर ।"

मैंने पत्र को एक लिफाफे में रखकर लिफाफे पर उसका नाम लिखा, फिर कुछ और तैयारियां कीं । मैंने सोचा, इस वक्त वह सोयी होगी । मैं चुपके से उसके कमरे में जाऊंगा, उस मुखड़े को देखूंगा, जिससे मैंने इस कदर प्यार किया है और फिर अपने कमरे में लौट आऊंगा । बाकी सब बहुत आसान होगा ।

मैं चुपचाप उसके कमरे में पहुंचा और उसके दरवाजे पर खड़े होकर मैंने देखा कि रोशनी की रेखाएं उसके तकिये पर पसर रही थीं । उसके बिस्तर के पास पहुंचकर और अपने आंसू पोंछकर, क्योंकि मुझे डर था कि वे उसे जगा न दें, मैं आखिरी चुंबन के लिए झुका । उसके होंठ बर्फ की तरह ठंडे थे ।

"हे भगवान, माजरा क्या है ?" मैं चीख पड़ा । मैंने जल्दी-जल्दी उसके कपड़े हटाये । मैंने उसे अपने सीने से चिपका लिया । मैं उसके हाथों को, कपोलों को चूमने लगा । अंत में एक ठंडी अंगुली ने मेरे दिमाग में यह खयाल पैदा किया कि वह मर चुकी थी । इतना कहकर आर्थर एकदम से निढाल पड़ गया । वह बुरी तरह थक चुका था । थोड़ी देर आराम कर लेने के बाद वह पुनः बोला, "आप आसानी से समझ सकते है कीरो साहब, कि क्या हुआ होगा ? उस रात उत्तेजित अवस्था में मुझे यह कतई ध्यान नहीं आया कि मैंने उसे लाडेनम की जगह विष की शीशी थमा दी थी, जो मैंने अपने खात्मे के लिए रख छोड़ी थी ।

"आपने उस रात बताया था कि कोई शखस था जिसे वह प्यार करती थी । वह उसका रिश्तेदार था, उस पर बोझ था, और उसी ने उसका जीवन बरबाद किया था ।

"आपकी बात सच निकली । वह पुरुष, जिसे उसने पैसे भेजे थे, उसका सगा भाई था, और अपमानजनक अवस्था में इंगलैंड से भाग गया था । मैं केवल अब तक इसलिए जीवित रहा कि उस आदमी के बारे में अपनी पत्नी की इच्छापूर्ति कर सकूं । मैं भारत गया था । मैं वहां उससे मिला था और अब मरने के लिए स्वदेश लौटा हूं ।" इतना कहकर आर्थर बिस्तर पर गिर पड़ा । कीरो ने उसके माथे पर सांत्वनाभरे हाथ फेरे और अपने घर की राह ली ।

जीवन की इस सर्वथा रोमांचकारी लोमहर्षक घटना की इति कथा में कीरो ने लिखा—"होटल में आर्थर से मिलने के तीन हफ्ते बाद मार्टन आर्थर इस दुनिया में नहीं रहा । जब उसका शव कब्रिस्तान रवाना हुआ, उसकी शवयात्रा में सम्मिलित होनेवाला एकमात्र व्यक्ति मैं ही था । एक छोटी-सी गलतफहमी के शिकार आर्थर दंपति को मैंने अपनी आंखों के सामने मौत के आगोश में सोते पाया ।"

—**शांति निकेतन, पुनासा (खंडवा)**

'रामलला नहछू' का महत्त्व तुलसीदास की भक्ति भावना, दार्शनिक विवेचन अथवा काव्य-सौष्ठव की दृष्टि से भले अधिक न हो, लेकिन लोकगीतों की सहज विशेषताओं और कवि के अज्ञात जीवन चरित पर प्रकाश डालनेवाले अंत:साक्ष्य के रूप में इसका योगदान असाधारण है ।

तुलसीदास की प्रथम रचना रामलला नहछू

● मजीद अहमद

'रामलला नहछू' गुसाईं तुलसीदास की प्रथम रचना है । इस लघु कृति के बीस सोहर छंदों में नहछू लोकाचार का वर्णन हुआ है । 'सोहर' अवध प्रांत का एक अति ख्यात छंद है, जो मुख्यतया पुत्र-जन्म पर गाया जाता है । इसके अतिरिक्त कर्णवेध, मुंडन और उपनयन संस्कारों तथा नहछू लोकाचारों पर स्त्रियां इसे गाती हैं । कवि ने जीवन में शास्त्रसम्मत विधानों के साथ लोकाचार के परिपालन का भी महत्त्व निरूपित किया है— 'लोक वेद मंजुल दुइ कूला' । वेदाचार लिखित संविधान की भांति ग्रंथबद्ध और व्यापक है, लेकिन लोकाचार परंपराओं पर आधारित होता है । नहछू लोकाचार का शास्त्रीय विधान न होते हुए भी अवध में कम से कम पांच सौ वर्षों से व्यापक रूप से प्रचलित है ।

दूल्हा सजाने का निमंत्रण

'नहछू' दो शब्दों से बना है— नख और क्षुर । नहछू की रस्म में नाइन ससुराल जाने के लिए सजते समय दूल्हे के पैर से नख, नहनी से काटती है, उपरांत उसके पांवों को महावर से चीतती है । दूल्हा सजाने का आमंत्रण पाते ही अड़ोस-पड़ोस की स्त्रियां गाली देती हैं । मां के लिए अश्लील गालियां गाये जाने पर दूल्हे को लज्जा और संकोच की विचित्र प्रथमानुभूति होती है, जो थोड़ी ही देर में विनोद के ठहाकों में घुल जाती है । लोकगीतों में रामकथा सहस्रमुखी धाराओं में प्रवाहित हुई है । समाज के हर वर्ग ने उसे अपनी मान्यताओं के अनुकूल गढ़ा है, अपनी भावनाओं के रंग में रंगा है । गुसाईं तुलसीदास की काव्य-प्रतिभा ने नहछू लोकाचार का अत्यंत सजीव वर्णन किया है— राजा

दशरथ के आंगन में आले बांस का मंडप छाया गया है । मणियों, मोतियों की झालर लगी है । चारों ओर कनक-स्तंभ हैं, जिनके मध्य राजसिंहासन है । गजमुक्ता, हीरे और मणियों से चौक पूरी गयी है ।

भागीरथी-जल से राम को स्नान कराया गया । युवतियों ने मांगलिक गीत गाये । राम सिंहासन पर विराजमान हैं । हाथ में नवनीत लिए अहीरिन खड़ी है, तांबूल लेकर तंबोलिन, जामा जोड़ा लिए दरजिन, पनही लिए मोचिन और कनक रत्न मणिजटित मयूर लिए मालिन आ पहुंची है । बारिन हाथ में छत्र लिए खड़ी है । बड़री आंखोंवाली नायिता भौंह नचाती हुई भाग-दौड़ कर रही है । सारी तैयारी हो जाने पर कौशल्या की जेठि, कुल की पुरखिन ने उन्हें आज्ञा दी— जाओ, सिंहासन पर बैठे रामलला का नहछू करा दो ।

मां कौशल्या रामलला को गोद में लिए बैठी हैं । दूल्हा राम के सिर पर उनका आंचल छत्र की भांति सुशोभित है । नहछू के लिए नायिता को बुलाया गया । बनी-ठनी, हंसती-मुसकराती गौरवर्ण नायिता कनकलसित नहनी हाथ में लिए खड़ी दूल्हा राम की शोभा निहार रही है । अब बड़भागी नायिता राम के पांवों के नख काटने लगी । बीच-बीच में वह मुसकराती हुई तिरछे नयनों से उन्हें निहारती भी जाती है । नहछू शुरू होते ही उपस्थित युवतियां सोहर गाने लगीं । सबसे पहले कौशल्या की खबर ली, फिर सुमित्रा की—

काहे राम जिउ सांवर लछिमन गोर हो,
की दहु रानि कौउसिलहिं परिगा भोर हो ।
राम अहहिं दसरथ के लछिमन आनि क हो,

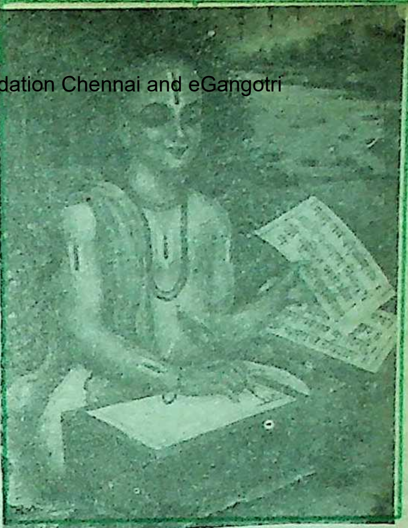

भरत सत्रुहन भइ सिरी रघुनाथ क हो ।।

(एक ही पिता के पुत्र होकर राम सांवले क्यों हैं, और लक्ष्मण गोरे क्यों हैं ? कहीं दशरथ के धोखे में कौशल्या से चूक तो नहीं पड़ गयी ? अरे, नहीं-नहीं ! राम तो दशरथ के ही पुत्र हैं । लक्ष्मण, संभव है— दूसरे के हों ! भरत और शत्रुघ्न भी राम के भ्राता हैं ।)

मां से सकुचाने का चित्रण

अगले छंद में उपस्थित मां के प्रति सोहर सुनकर रामलला के सकुचाने का मनोवैज्ञानिक चित्र है—

गावहिं सब रनिवास देहिं प्रभु गारी हो,
रामलला सकुचाहिं देखि महतारी हो ।

नख काटने के बाद नायिता ने राम के पैरों की अंगुलियों को जावक से चर्चित कर सूख जाने पर उन्हें धो-पोंछ दिया । नहछू संपन्न हो जाने पर नेग की बारी आयी । कवि ने इस अवसर पर नेग की प्रचुरता और विपुलता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है । अंत के दो छंदों में मां कौशल्या की प्रसन्नता और कृति की फलश्रुति का वर्णन हुआ है—

दूलह के महतारि देखि मन हरखइ हो ।

अंधेरों के सिवा क्या होगा !

बंद मुट्ठी में अंधेरों के सिवा क्या होगा
खोलकर देखें इसे आसमां टिका होगा

फेर ली नजरें औ गाली तो नहीं दी लेकिन
इससे बेहतर सबूत बेरुखी का क्या होगा

मैं तेरे दर से कई बार लौट आया हूं
सोचकर ये कि कोई और दरमियां होगा

हाथ खूंरेज हुए इतनी दस्तकें दी हैं
उस गली का वो मकां तेरा ही मकां होगा

बेइरादा मेरे जख्मों को छुआ है जिसने
मैं समझता हूं कोई मेरा राजदां होगा

हर मुहब्बत के रिसाले में मुझे पाओगे
हाशिये पर ही सही नाम तो लिखा होगा

किशन स्वरूप
३५ हाइडिल कॉलोनी
कविनगर, गाजियाबाद (उ. प्र.)

कोटिन्ह दीन्हेऊ दान मेघ जनु बरसइ हो ।।
यो यह नहछू गावे गाइ सुनावइ हो ।
रिद्धि सिद्धि कल्यान मुक्ति नर पावइ हो ।।

'रामलला नहछू' में रचना-काल का उल्लेख नहीं है । 'गोसाईं चरित' में लिखा है कि 'पार्वती मंगल', 'जानकी मंगल' और 'रामलला नहछू' की रचना एक साथ मिथिला में हुई । 'पार्वती मंगल' में रचना-काल का उल्लेख इस प्रकार है—

जय संवत् फागुन सुदि पाँचै गुरु दिन ।
अस्विनि विरचेऊँ मंगल सुनि सुख छिन-छिन ।।

वाराणसी के पृथुपृथ ज्योतिषी गणेशदत्त पाठक ने गणना करके 'पार्वती मंगल' की रचना संवत् १५८२ वि. मानी है और गुसाईं तुलसीदास का जन्म संवत् १५५४ माना जाता है । स्पष्ट है कि 'रामलला नहछू' कवि के तारुण्य का उद्गीत है, जिसमें एक ओर अवस्थानुरूप सुलभ श्रृंगारप्रियता है और दूसरी ओर उनकी प्रकृति के अनुरूप मर्यादावादिता — [illegible] का गंगा-जमुनी संगम है । नव-युवतियों के मांसल सौंदर्य में जो अभिरुचि कवि ने इस कृति में दिखलायी है, वह अन्य कृतियों में दुर्लभ है ।

राम का ब्रह्म स्वरूप

'रामलला नहछू' के लघुकाय होने के कारण रचनाकार को यद्यपि यह सुविधा नहीं थी कि 'रामचरित मानस' की भांति बीच-बीच में पाठकों को स्मरण कराते कि राम सच्चिदानंद ब्रह्म हैं, तथापि इस लोकगीत में वे अपने उपास्य की लोकोत्तर महिमा का बोध कराना नहीं भूले—

जो पग नाउनि धोव राम धोवावइं हो ।
सो पगधूरि सिद्ध मुनि दरसन पावइं हो ।।
रामलला कर नहछू इहि सुख गाइय हो ।
जेहि गाए सिधि होइ परम पद पाइय हो ।।

'रामलला नहछू' की भाषा अवधी है, 'रामचरित मानस' की भांति साहित्यिक अवधी अथवा 'विनय पत्रिका' की भांति संस्कृतनिष्ठ अवधी नहीं, बल्कि 'पद्मावत' की भांति ठेठ ग्रामीण पूर्वी अवधी, जो गोंडा और अयोध्या के आसपास बोली जाती है । भाषा में बोलचाल के ही शब्द अधिक हैं, जैसे— अहिरिन, महतारि, आवइ, हरखइ ।

—एफ-१०१, राजौरी गार्डन
नयी दिल्ली-२७

काष्ठकला के लिए मशहूर : सहारनपुर

• रमेश चंद्र छबीला

उत्तर प्रदेश का नगर सहारनपुर काष्ठ कला के लिए भारत में ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्ध है। यहां पांच वर्ष के बच्चे से साठ-सत्तर साल के बूढ़ों को भी लकड़ी की ऐसी सुंदर व आकर्षक कलाकृतियां बनाते देखा जाता है जो देखनेवालों का मन मोह लेती हैं।

> सहारनपुर की यह सुंदर काष्ठ कला, इंगलैंड, अमरीका, जापान, इटली, कनाडा, स्पेन, बैंकाक, सिंगापुर, फ्रांस, सऊदी अरब, कुवैत आदि देशों में अपना विशेष स्थान बना चुकी है। विदेशों में जानेवाली इस काष्ठ कला से प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा मिलती है।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक लोगों की काष्ठकला में रुचि है। इसी रुचि के कारण विभिन्न नगरों व प्रदेशों के लोग यहां खरीदारी करते हैं। प्रायः विदेशियों को भी लकड़ी का सुंदर सामान खरीदते हुए देखा जाता है।

सहारनपुर में महल्ला पुरानी मंडी, शिवपुरी मंडी व बाजदारान स्ट्रीट पर काष्ठकला की अनेक छोटी-बड़ी दुकानें हैं। कुछ शो रूम बहुत ही सुंदर हैं जहां लकड़ी से बने ताजमहल, मंदिर, खिलौने, सुराही, सिगरेट केस, रहल, चूड़ी बॉक्स, सोफे, परदे, कुरसी, मेज, डायनिंग टेबल आदि आपको एकदम आकर्षित कर लेंगे।

सहारनपुर की यह सुंदर काष्ठ कला, इंगलैंड, अमरीका, जापान, इटली, कनाडा, स्पेन, बैंकाक, सिंगापुर, फ्रांस, सऊदी अरब, कुवैत आदि देशों में अपना विशेष स्थान बना चुकी है। विदेशों में जानेवाली इस काष्ठ कला से प्रति वर्ष करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा मिलती है।

काष्ठकला का प्रारंभ

बादशाह शाहबुद्दीन के युग से यह कला प्रारंभ हुई थी। शाहबुद्दीन काष्ठ कला का बहुत प्रेमी था। उसके महल में दरवाजों, पलंग, खिड़की, परदे, मेज, कुरसी, तख्त, हुक्के आदि पर बहुत ही सुंदर नक्काशी थी। उसके दरबार में यदि कोई व्यक्ति आकर्षक व सुंदर काष्ठ कला प्रस्तुत करता तो उसे पुरस्कार मिलता था।

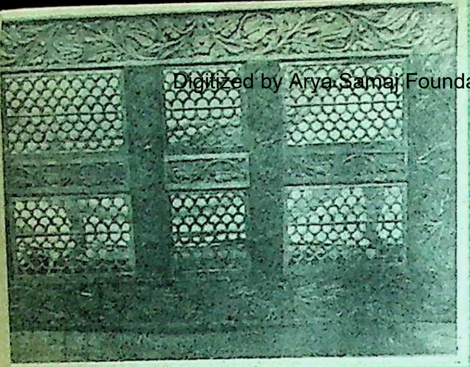

काष्ठ कला में शीशम की लकड़ी ९० प्रतिशत, आम की लकड़ी ५ प्रतिशत व तुन की लकड़ी ५ प्रतिशत प्रयोग की जाती है । मढाई में पीतल, तांबा, निकिल, प्लास्टिक, हाथी दांत, चांदी, सोना, हीरा-पन्ना का उपयोग आवश्यकता अनुसार होता है ।

एक काष्ठ कला उत्पादन संस्थान के व्यक्ति से इस संबंध में बात की गयी क्योंकि वह पिछले लगभग पचास वर्षों से यह कार्य कर रहे हैं । वह अधिकतर माल विदेशों में निर्यात करते हैं ।

स्पर्धा के घेरे में

अब यही लकड़ी का सामान चीन, कोरिया, फिलीपीन, ताइवान और पाकिस्तान में भी बनने लगा है । ये देश काष्ठ कला के मामले में हमारे स्पर्धक के रूप में सामने खड़े हैं । वैसे तो इन देशों द्वारा बनायी जा रही काष्ठ कला अधिक बढ़िया और आकर्षक कहलायी जा रही है, फिर भी हमारा माल विदेशों में काफी पसंद किया जा रहा है । हमें विदेशों से डिजाइन मिल जाते हैं जिन्हें लकड़ी पर नक्काशी के रूप में बनाना होता है । इन देशों की तुलना में हमारा देश पीछे रह गया है क्योंकि इनके पास आधुनिक मशीनें व उपकरण हैं जो हमारे पास नहीं हैं ।

यहां काष्ठ कला का काम कुछ वर्ष पूर्व मंदी के दौर से गुजरा कि कारीगरों की संख्या साठ हजार से घटकर तीस-पैंतीस हजार रह गयी थी । उनके कारीगरों ने यह काम छोड़कर दूसरे छोटे-मोटे काम कर लिये थे । कुछ काम की तलाश में अन्य नगरों में पहुंच गये थे । अनेक शोरूम भी बंद हो गये ।

पिछले तीन-चार वर्षों में सहारनपुर की इस काष्ठ कला में फिर तेजी आयी है । यहां अनेक नये शोरूम खुले हैं । कारीगरों की संख्या फिर बढ़ी है । विदेशों में निर्यात भी बढ़ रहा है ।

दो वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार ने काष्ठ कला फर्नीचर आदि पर १२ प्रतिशत बिक्री कर लगाकर इस लघु एवं कुटीर उद्योग पर कुठाराघात किया था । संबंधित कारीगरों, दुकानदारों एवं निर्यातकों ने इसका जबरदस्त विरोध करते हुए प्रदर्शन व धरने आदि दिये । कुछ लोगों का एक प्रतिनिधि मंडल भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल कृष्ण

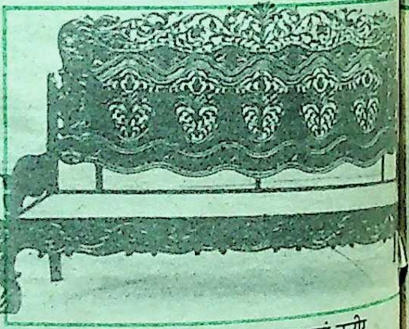

आडवाणी से दिल्ली में मिला था और इस पर लगे बिक्रीकर को समाप्त करने का आग्रह किया था । कुछ ही दिनों में यह कर समाप्त कर दिया गया ।

प्रदर्शनियों के आयोजन

क्राफ्ट एंपोरियम शो रूम के अंजुम परवेज से भी इस संबंध में बातचीत की गयी । उन्होंने बताया कि सहारनपुर काष्ठ कला की बढ़ती उन्नति का एक कारण यह भी है कि केंद्र एवं प्रदेश सरकारें समय-समय पर काष्ठ कला या अन्य लघु कुटीर उद्योगों की प्रदर्शनी आयोजित कराती रहती हैं ।

यह प्रदर्शनी किसी भी प्रदेश के किसी छोटे या महानगर में लगायी जाती है । इसमें हाथ के बनाये गये सामान की अनेक दुकानें या स्टाल होते हैं । यहां कारीगर अपना सामान तैयार करते हैं । इस प्रदर्शनी में आनेवाले लोग कलात्मक सामान के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं और खरीदारी करते हैं । कुछ लोग मिलकर एक संस्था बना लेते हैं क्योंकि सरकार इन संस्थाओं के द्वारा ही प्रदर्शनी आयोजित कराती है । इस आयोजन के लिए सरकार की ओर से एक लाख रुपये संस्था को खर्च के रूप में दिये जाते हैं ।

ये प्रदर्शनी तमिल, केरल, कर्नाटक, गुजरात, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र आदि के विभिन्न नगरों में अधिक लगती है । केरल व कर्नाटक में लगनेवाली काष्ठ कला प्रदर्शनी बहुत सफल रही हैं । इन स्थानों पर माल की ज्यादा बिक्री हुई है ।

केंद्र सरकार का वस्त्र मंत्रालय भी इसी प्रकार की प्रदर्शनी का आयोजन कराता रहता है ।

सूरज कुंड (हरियाणा) में भी प्रति वर्ष १५ जनवरी से १५ फरवरी तक ऐसी ही प्रदर्शनी राज्य सरकार की ओर से आयोजित की जाती है ।

पिछले दिनों दिल्ली हाट में प्रदर्शनी लगी थी जो हम लोगों के लिए बहुत लाभदायक रही ।

अंजुम परवेज ने बताया कि विभिन्न सरकारों ने ये प्रदर्शनियां आयोजित कर यह साबित करदिया है कि वे कलात्मक वस्तुओं के कुटीर व लघु उद्योग की उन्नति एवं प्रगति चाहती हैं । इससे कलात्मक सामान देश के कोने-कोने में ग्राहक निर्माता से सीधे खरीद लेते हैं ।

पसंद डिजाइनों की

आजकल वे ही डिजाइन पसंद किये जा रहे

हैं जो राजा-महाराजाओं के समय के थे । उन डिजाइनों की काष्ठ कला देश में ही नहीं विदेशों में भी पसंद की जा रही है । हम कलात्मक फोल्डिंग फर्नीचर भी बना रहे हैं जिसकी मांग बढ़ने लगी है ।

पहले मेनूशन पालिश प्रयोग की जाती थी । पर उससे लकड़ी के काम में चमक व सुंदरता नहीं आती थी । आजकल बफ पालिश प्रयोग की जा रही है जिससे काष्ठ कला की सुंदरता बढ़ जाती है, यही कारण है कि अब चार गुना निर्यात भी बढ़ चुका है ।

प्रदेश सरकार की ओर से यहां सीजनिंग प्लांट से लकड़ी सीजन कराने में २५ प्रतिशत की जो छूट मिलती थी वह समाप्त कर दी गयी है । करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा दिलानेवाले इस उद्योग से निर्यात निगम की ओर से जो १० प्रतिशत सब्सिडी मिलती थी वह भी समाप्त कर दी गयी है । सरकार की इस नीति से इस काम में लगे लोग अप्रसन्न हैं ।

यहां दुकानदारों की एक यूनियन भी है जो वुड कारवर्स एसोसिएशन, सहारनपुर कहलाती है ।

पैंतीस वर्षीय युवा कारीगर अनीस से मुलाकात हुई तो उसने बताया कि वह बहुत छोटा था जबसे लकड़ी का काम कर रहा है । अब्बा ने उसे पढ़ाने-लिखाने की अपेक्षा इसी काम में लगा दिया था । उसका मन पढ़ने को करता था पर मजबूरी थी । धीरे-धीरे वह एक काष्ठ कला कारीगर बन गया । अब उसकी शादी हो चुकी है । उसके तीन बेटे हैं । वह अपने एक ही बेटे को इस काम में लगाएगा । तीनों बच्चे पढ़ रहे हैं । दो बेटों को पढ़ा-लिखा कर अच्छी नौकरी या अन्य काम में लगाएगा । वह इतनी मजदूरी कर लेता है कि बहुत आराम से गुजारा हो रहा है । कारीगरों की भी यूनियन है । यूनियन की ओर से हर कलात्मक वस्तु को बनाने की मजदूरी निश्चित है । कारीगर ठेके पर ही काम करना पसंद करते हैं ।

मनमोहक कलाकृतियां

सहारनपुर की यह सुंदर काष्ठ कला दिल्ली, आगरा, बंबई, मद्रास, भोपाल, पटना, लखनऊ, जयपुर आदि महानगरों, अन्य छोटे नगरों तथा अनेक पर्यटन स्थलों पर भी मिल जाती है ।

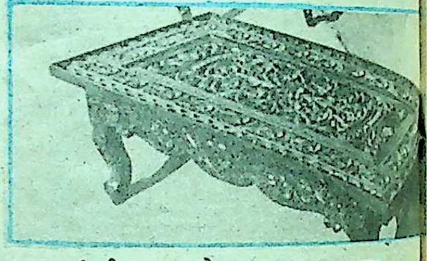

यदि आप कभी सहारनपुर में काष्ठ कला की आकर्षक आकृतियां या अन्य सामान खरीदने के इच्छुक हैं तो सीधे शिवपुरी मंडी पहुंच जाइए यहां सैकड़ों शोरूम हैं । शोरूम में रखी कलाकृतियां आपका मन मोह लेंगी । जहां तक मूल्य का प्रश्न है तो सभी दुकानों पर सामान के मूल्य लगभग एक-जैसे ही होते हैं । स्पर्धा के कारण ग्राहकों को अधिक मूल्य नहीं बताये जाते,फिर भी दो-चार दुकानों पर देख-भाल कर ही सामान खरीदिए । खरीदने से पहले वस्तु व उसकी चमक,सफाई आदि अच्छी तरह देख लीजिए ।

— अम्बाला रोड,
सहारनपुर २४७००१

नाम में क्या रखा है ?

● सत्यनारायण भटनागर

भारतीय पुरा साहित्य में अनेक चरित्रों का वर्णन किया गया है । इन चरित्रों के माध्यम से जहां भारतीय संस्कृति की मूल भावना व जीवन मूल्य उजागर हुए हैं, वहीं उनका आधुनिक चिंतन से मेल भी व्यक्त होता है । ऐसा एक अद्भुत चरित्र है— राजा अलर्क का । राजा अलर्क का विवरण मार्कंडेय पुराण में मिलता है ।

महाराज ऋतुध्वज के पुत्र हुए हैं— अलर्क । वस्तुतः राजा ऋतुध्वज के प्रथम पुत्र विक्रांत, दूसरा पुत्र सुबाहु तथा तीसरा पुत्र शत्रुमर्दन हुए । ये नाम राजा ऋतुध्वज ने रखे थे । राजा ऋतुध्वज की पत्नी का नाम था मदालसा । जब राजा को चौथा पुत्र हुआ तो राजा ने उसका नामकरण करना चाहा । महारानी मदालसा हंस पड़ी । वस्तुतः महारानी मदालसा तीन पुत्रों के नामकरण पर भी हंसी थी, क्योंकि नाम के अर्थों के अनुरूप कुछ भी तो नहीं था अतः व्यर्थ अर्थोंवाले नाम देने की क्या उपयोगिता ?

रानी मदालसा की हंसी राजा को अखरी । राजा ने कहा ''जब मैं पुत्रों के नामकरण करता हूं तब तुम हंसती हो, उसका क्या कारण है ?

नाम में क्या रखा है ?

राजा का यह विश्वास था कि क्षत्रियों के नाम वीरतासूचक होने चाहिए । इसीलिए प्रथम पुत्र का नाम विक्रांत, द्वितीय पुत्र का नाम सुबाहु और तृतीय पुत्र का नाम शत्रु मर्दन रखा गया था । रानी इन तीनों नामकरण संस्कार पर हंसी थी । अतः राजा ने पुनः कहा, ''तुम्हारे विचार में ये नाम उपयुक्त नहीं हैं तो चौथे पुत्र का नाम तुम ही रखो ।''

रानी मदालसा ने चौथे पुत्र का नाम रखा अलर्क । इस नाम का कोई अर्थ नहीं है । राजा के पूछने पर रानी ने कहा, ''प्रियतम नाम का प्रयोजन तो व्यावहारिक जीवन में पहचान के लिए होता है । आत्मा तो सर्वव्याप्त है, अतः इस शरीर का कोई नाम हो नहीं सकता । जो नाम दिया जाएगा, वह अर्थ की दृष्टि से निरर्थक होगा, अतः अलर्क नाम का कोई अर्थ नहीं है ।

शैक्सपीयर-जैसे महान लेखक ने जब यह कहा कि नाम में क्या रखा है, तब लगता है कि वह रानी मदालसा की भावना का भावानुवाद कर रहे थे ।

मातृशक्ति की व्याख्या

मदालसा एक उत्तम मां थी, वह जानती थी कि जीवन में धन के अतिरिक्त भी बहुत कुछ सार्थक है । अतः प्रथम तीन पुत्रों का नामकरण संस्कार भले ही राजा ने किया हो, प्रथम गुरु की तरह शिक्षा माता ने ही दी । राजा के पुत्रों को राज्य धर्म की शिक्षा माता ने नहीं दी । माता मदालसा ने तीनों पुत्रों को आत्मज्ञानोपदेश देकर गृहस्थ धर्म से विरक्त कर दिया ।

राजा के पूछने पर रानी ने कहा, "प्रियतम नाम का प्रयोजन तो व्यावहारिक जीवन में पहचान के लिए होता है । आत्मा तो सर्वव्याप्त है, अतः इस शरीर का कोई नाम हो नहीं सकता । जो नाम दिया जाएगा, वह अर्थ की दृष्टि से निरर्थक होगा, अतः अलर्क नाम का कोई अर्थ नहीं है ।

तब राजा ऋतुध्वज ने रानी से कहा, "यदि तुम मेरे व मेरे वंश का हित चाहती हो तो इस पुत्र अलर्क को राजधर्म की शिक्षा दो ताकि यह क्षत्रियोचित धर्म का पालन कर सके ।"

रानी मदालसा ने अपने पति की आज्ञा का पालन किया और संसार के कल्याण के लिए प्रवृत्ति मार्ग की शिक्षा दी । राजा का पुत्र राजधर्म में जाए, इसके लिए आदेश दिया ।

माता मदालसा की शिक्षा के अनुसार प्रथम तीन पुत्र वैराग्य मार्ग पर गये और अलर्क राजमार्ग पर । माता की शिक्षा का प्रभाव अत्यंत पुरातन काल से इस कथा में व्यक्त किया गया है ।

विश्व का प्रथम दल-बदल

राजा अलर्क यथासमय अपने पिता के आदेशानुसार गद्दी पर बैठे और राजा बने, राजा का पद पाकर वे न्यायोचित ढंग से राज्य का संचालन करने लगे, लेकिन उनके बड़े भाई धर्मात्मा सुबाहु वनवासी का जीवन जी रहे थे । उन्हें लगा कि उनका अनुज विषयभोगी हो गया है । राजा अलर्क को आत्मज्ञान कराने के लिए अलर्क के शत्रु काशी नरेश की शरण में गये और राज्य प्राप्ति के लिए सहायता की मांग की ।

काशी नरेश तो मानो इस दिन का इंतजार कर रहे थे । उन्होंने राजा अलर्क को संदेश दिया कि राज्य बड़े भाई सुबाहु को सौंप दे । राजा अलर्क ने जवाब में कहा, "यदि मेरे बड़े भाई सुबाहु मुझसे स्वयं राज्य मांगेंगे तो मैं सहर्ष उनके हक में राज्य त्याग दूंगा, किंतु युद्ध के भय से मैं राज्य नहीं त्यागूंगा ।"

इस उत्तर के बाद युद्ध हुआ । राजा अलर्क की पराजय हुई । उसका सैन्यबल और कोष समाप्त हो गया और उसे वैराग्य हो गया । काशी नरेश ने बड़े भाई सुबाहु को राज्य ग्रहण करने को कहा किंतु सुबाहु ने राज्य ग्रहण करने से इनकार कर दिया क्योंकि उनका उद्देश्य तो अपने छोटे भाई अलर्क को आत्मज्ञान कराना था ।

राजा अलर्क को इस घटना से सचमुच आत्मज्ञान प्राप्त हो गया । उन्होंने कहा, "हे नरेश ! तुम्हें राज्य की अभिलाषा है तो तुम ले लो, अथवा सुबाहु को दे दो या जैसा चाहो वैसा करो, पर अब राज्य मुझे नहीं चाहिए ।"

राजा अलर्क ने कहा, "परमब्रह्म को जीतना ही मेरा लक्ष्य है, अब न कोई मेरा मित्र है और न शत्रु । भाई सुबाहु ने मेरा बड़ा उपकार किया । अतः हे काशी नरेश ! अब आप किसी अन्य शत्रु की खोज करें ।"

सुबाहु ने कहा, "हे काशी नरेश ! मैं भी अब जा रहा हूं। मेरा लक्ष्य पूर्ण हुआ। मैं अलर्क को आत्मज्ञान कराना चाहता था, वह हो गया। आपका कल्याण हो।"

इस प्रकार जब कोई राज्य ग्रहण को सहमत न हुआ तो राजा अलर्क के बड़े पुत्र को राज्य सौंप दिया गया।

इस प्रकार विश्व का प्रथम दल-बदल हुआ। सत्ता के लिए शत्रु की शरण में जाकर युद्ध लड़ा गया किंतु सत्ता की प्राप्ति के लिए कोई भी उत्सुक नहीं मिला। इस युद्ध व सत्ता संघर्ष का एकमात्र उद्देश्य आत्मज्ञान की प्राप्ति रहा। इसलिए इस दल-बदल की तुलना आधुनिक दल-बदल से किसी भी अर्थ में नहीं की जा सकती।

विश्व का प्रथम नेत्रदानी

राजा अलर्क महान त्यागी, तपस्वी, न्यायी हुए। उन पर उनकी प्रथम गुरुमाता मदालसा का प्रभाव अंत तक रहा। वे जब तक सत्ता में रहे प्रवृत्ति मार्ग पर चलकर राज्य के कल्याण में रत रहे और जब वैरांग्य धारण किया तो राज्य की ओर देखा तक नहीं।

राजा अलर्क अपने समस्त गुणों के साथ विश्व के प्रथम नेत्रदानी भी कहे जा सकते हैं। उनके संबंध में वाल्मीकीय रामायण के अयोध्या कांड द्वादश सर्ग के ४३ श्लोक में कहा गया है।

"राजा अलर्क ने (एक अंधे ब्राह्मण को) अपने दोनों नेत्रों का दान करके परम गति प्राप्त की थी।"

—२, एम. आई. जी. देवरा
देवनारायण नगर, रतलाम -४५७००१

इनके भी बयां जुदा-जुदा

तुम्हें गैरों से कब फुरसत हम अपने गम से कब खाली
चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली

—जाफर अली हसरत

हयात जिसकी अमानत थी उसको लौटा दी
मैं आज चैन से सोता हूं पैर फैलाकर

—हफीज मेरठी

टहनियों को मत काटो यह चमन का जेवर हैं
इनकी ओट से इक दिन आफताब उभरेगा

—अख्तर होशियारपुरी

मुझको अच्छा नहीं लगता कोई हमनाम तेरा
कोई तुझ-सा हो तो फिर नाम भी तुझ-सा रखे

—अहमद फराज

कोई मौसम हो हवा ले के चली आती है
दूर परदेस में भी खाके वतन की खुशबू

—मलिक जादा मंजूर अहमद

वह बेवकूफ जमीं बांटकर बहुत खुश है
उसे कहो कि अभी आसमान बाकी है

—राहत इंदौरी

सबको उस रजिस्टर पर हाजिरी लगानी है
मौत वाले दफ्तर में छुट्टियां नहीं होतीं

—हुल्लड़ मुरादाबादी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

पत्थरों ने खोला हजारों वर्ष पूर्व का रहस्य

वे बाढ़ में बहकर एक किसान के खेत में पहुंच गये थे । उनका आकार विशिष्ट प्रकार का था । अतः पुरातत्वविदों की नजर उन पर पड़ी । उन्होंने जांचकर उन्हें भुवनेश्वर के संग्रहालय में रखवा दिया ।

बरसों बीत गये । उनका रहस्य,रहस्य ही बना रहा । फिर एक दिन एक जरमन पुरातत्वविद अपनी भारत यात्रा के दौरान उड़ीसा पहुंचा और उसकी नजर उन पर पड़ी । और फिर जैसे हजारों वर्षों पूर्व का इतिहास साकार हो उठा ।

यह कहानी है उड़ीसा के शंकरगंज में मिले असिताश्म (बेसाल्ट) पत्थरों की । ये पत्थर वास्तव में प्रागैतिहासिक तालवाद्य प्रस्तर अम्लान (लिथोफोन) के टुकड़े थे ।

सन् १९७१ की ग्रीष्म में शंकरगंज के एक किसान को कुछ विचित्र आकार के, किंतु पालिश किये पत्थर मिले थे । ये पत्थर भारी बाढ़ में बहकर उसके खेत में पहुंचे थे । आरंभिक जांच के बाद इन्हें 'आनुष्ठानिक छड़ें' नाम दिया गया । भारतीय पुरातत्वविदों ने उन्हें कुछ अन्य प्राप्त वस्तुओं के साथ इकट्ठा किया और फिर उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर के संग्रहालय में जमा कर दिया ।

सन् १९८५ और १९८६ में एक जरमन पुरातत्वविद पाऊल यूले ने उन पत्थरों की और उनके प्राप्ति स्थान की जांच की । उस स्थान पर ५० से अधिक कब्रों के टीलों को बाढ़ ने उखाड़ दिया था, आगे खुदाई करने पर पत्थर की कुल्हाड़ियां, बसूलों और कुदालियों के भारी भंडार के साथ ही एक मंगोल औरत का कंकाल, तांबे की चूड़ियां और मोती भी मिले ।

ये वस्तुएं मृतकों के साथ दफनायी गयी थीं । इनसे प्राचीन रिवाज पर रोशनी पड़ी । फिर भी, सबसे अधिक सुंदर उपलब्धि थीं आनुष्ठानिक छड़ें । जरमन रिसर्च न्यूज में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार १६ से ३९ से. मी. लंबे, ७ से ९ से. मी. चौड़े और २ से. मी. ऊंचे एक से आकार के इन पत्थरों की भूमिका एक रहस्य थी । चूंकि वे दोनों सिरों पर ढलवां

पत्थर के वे कुछ टुकड़े अपने में हजारों वर्ष पूर्व की संस्कृति का इतिहास छिपाये हुए थे । पुरातत्त्वविदों ने तो केवल विशिष्ट आकार के कारण उन्हें संग्रहालय में रख छोड़ा था लेकिन एक दिन.....

थे इसलिए उनके कृषि उपकरण होने की कोई संभावना नहीं है ।

सही स्थान पर कुछ प्रयोगात्मक टेप लगाने पर पहले स्पष्ट और तेज ध्वनियां निकलीं और पत्थरों ने अपनी बिसरी भूमिका बतला दी । वास्तव में ये पत्थर ध्वनि प्लेटें थीं, जो एक प्रागैतिहासिक संगीत वाद्य लिथोफोन की अंग थीं । बाद में बॉन के एक अन्य पुरातत्वविद मार्टिन वेम्मान भी जांच दल में शामिल हो गये और वे सभी इस नतीजे पर पहुंचे कि लिथोफोन भारत में अब तक मिला सबसे पुराना वाद्ययंत्र है । इसकी तुलना काष्ठ तरंग (जाइलोफोन) से की जा सकती है, जिसका उल्लेख प्राचीन वाद्यों में किया गया है । ऐसे लिथोफोन अमरीका (नाम गैम्बांग), दक्षिण पूर्वेशिया (नाम-मारिबा) में पाये जाते हैं । भारतीय ध्वनि पत्थर लकड़ी या बांस के फ्रेम में संभवतः साथ-साथ रखे जाते थे या एक खड़े फ्रेम में टांगे जाते थे ।

अब तक मिले सभी २० पत्थर पडी या खड़ी स्थिति में पाये गये और उनकी ध्वनि की आवृत्तियां मापी और रेकार्ड की गयीं । लटकी स्थिति में उनकी आवाज अच्छी होती है जब कि पड़ी स्थिति में वह दब जाती है ।

उपलब्ध सभी पत्थरों की ध्वनि गुणवत्ता श्रेष्ठ है । ये स्थानीय असिताश्म (बेसाल्ट) से बनाये गये थे और एक विशेष आधार देने के लिए उनके किनारों को पतला किया गया । प्रोसेसिंग तकनीक से पता चलता है कि वे ४,००० वर्ष पुराने हैं, जब कि रेडियो कार्बन डेटिंग से उनके ३,००० वर्ष पुराना होने का संकेत मिलता है ।

एशियाई संगीत के इतिहास में लिथोफोनों ने काफी समय तक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है, जैसा कि वीएतनाम में हाल की खोजों से पता चलता है । भारत में लिथोफोन समय-समय पर उस तरह गुमनामी में खो गए जिस तरह कि वह युग और संस्कृति खो गयी ।

संगीतमय ध्वनि देनेवाले पत्थरों के स्तंभ भारत के अनेक मंदिरों में पाये जाते हैं ।

प्रस्तुति : संदीप

चौराहों की लालबत्तियों पर अगरबत्तियों का पैकेट बेचते हुए अकसर कुछ बच्चे मिल जाते हैं । पैकेट इतने मनमोहक होते हैं, जिन्हें देखकर लगता है कि पैकेट की अगरबत्तियां भी खुशबूदार होंगी ? घर ले जाने पर उन पैकेटों में क्या सच में वही खुशबू मिलती है ? प्रस्तुत है अगरबत्तियों के फर्जी धंधे की यह रिपोर्ट........

इस तरह हो रहा है अगरबत्तियों का गोरखधंधा

● महजबी

''मैडम ले लीजिए, १० रुपये की चार हैं ।''

''नहीं चाहिए ।''

''चलिए पांच पैकेट देता हूं, जलाकर देखना अच्छी अगरबत्ती है ।''

''कहा ना ?''

''मैडम दो दिन से खाना नहीं खाया, भगवान आपको खुश रखे ।'' अकसर भीड़ भाड़वाले इलाकों में चौराहों के सिगनल्स पर ऐसे ही बच्चे गाड़ी के आसपास दिखजाते हैं ।

एक दिन एक मासूम-सी सूरतवाला बच्चा यूं ही ट्रैफिक की परवाह किये बगैर गाड़ी की खिड़की पकड़े गाड़ी के साथ-साथ भाग रहा था । उसे देखकर गाड़ीवालों को शायद तरस आ गया । उन्होंने सिगनल क्रास करके गाड़ी रोकी और उस लड़के को बुलाया । लड़का इस खुशी में गाड़ी की तरफ भागा कि उसकी अगरबत्ती जरूर बिक जाएगी ! गाड़ीवाले लड़के से बात कर रहे थे—

''तुम्हारा नाम क्या है ?''

''मोहन ।''

''कहां रहते हो ?''

''जी...कितनी अगरबत्ती दूं ?''

''इससे कितना कमा लेते हो ?''

''मेमसाब, आप अगरबत्ती ले लीजिए आज पेटभर खा लूंगा ।''

''हमारे घर में काम करोगे ?''

यह सुनते ही लड़का ऐसा भागा कि पूछिए मत । यह घटना मेरे दिमाग में एक सवाल खड़ा कर गयी कि वह काम करने की बात सुनकर क्यों भागा ?

जब हम ये सवाल लेकर जवाब की तलाश

में निकले तो हमें कुछ और ही दिखा । हम सोचते हैं, बेचारे क्या कमाते होंगे, लेकिन इनका कमाने का रास्ता मेहनती नहीं है । ये खुलेआम जनता को लूट रहे हैं ।

एक चौराहे पर एक मूर्ति बेच रहा था—जैसे एक कार आकर लालबत्ती पर रुकी, उसने जानबूझकर अपने हाथ की मूर्ति से गाड़ी के टक्कर मार दी और चिल्लाना शुरू कर दिया— मेरी मूर्ति तोड़ दी, साहब, हम गरीब, इतनी मेहनत से एक वक्त की रोटी कमाते हैं, आपने मेरा सौ रुपये का नुकसान कर दिया ! उतनी देर में पांच-छह लोग और उसके साथ आये और कारवाले को घेरकर सौ रुपये वसूल कर लिये । तो यह है इनके मेहनत की कमाई ?

जिन्हें हम बेचारे ग़रीब समझते हैं, ये हर रास्ते पर बिखरे हुए वे कांटे हैं, जो जनता को हर तरह से जख्मी कर रहे हैं । ये अपना परिचय और घर का पता बताने से डरते हैं । उसकी वजह यह है कि वे जानते हैं कि हम जो कुछ कर रहे हैं, वह गलत है ।

पैकेटों में फर्जी पता

दिल्ली के सरोजनी नगर के पास बसे राजनगर की पूरी आबादी राजस्थान के गांव ढ़ोसा के लोगों की है, जो वहां अपनी जमीनें छोड़कर यहां इस तरह पैसा कमा रहे हैं । बंगलोर का झूठा पता देकर अगरबत्ती के पैकेट दिल्ली में छपवाते हैं और थोक के भाव बेचते हैं । इन पैंकेटों में जो अगरबत्तियां डाली जाती हैं वो एक ऐसे तेल में डुबोयी जाती हैं, जिसमें घटिया किस्म की खुशबू होती है । अगरबत्ती जलाते ही तेल जल जाता है और रह जाती है सुलगती हुई काली डंडियां, जो धुएं के अलावा कुछ नहीं देती ।

पालम गांव एक बड़ा अड्डा

पालम गांव में भी इसी तबके के लोग बसे हुए हैं, जो खुद पैक नहीं करते । वे दूसरी जगहों से पैक किया हुआ तैयार माल लाते हैं । एक ऐसे ही व्यक्ति को हमने काफी माल खरीदने का लालच दिया । तो उसने बताया, राजस्थान

के ढ़ोसा गांव में मेरी १२ बीघा जमीन है । एक व्यक्ति ने उससे यह कहकर जमीन ले ली कि जितना तुम यहां कमाते हो, उतना हम तुम्हें देंगे । इतना ही नहीं दिल्ली में तुम्हें हम काम पर भी लगा देंगे । तुम चार-पांच हजार रु. महीना आराम से कमा लोगे ।

उसने बताया कि अनपढ़ लोग शहर की चमक-दमक और पैसे के लालच में अपना सब-कुछ छोड़कर शहर आ गये और यहां सड़कों पर यह गलत काम कर रहे हैं ।

अनेक कंपनियों के पैकेज

दरअसल इस सबके लिए ये अकेले जिम्मेदार नहीं हैं । इसमें वो लोग भी शामिल हैं, जो फर्जी नाम और पतों के पैकेट बाजार में खुलेआम बेच रहे हैं । एक दुकान पर अगरबत्ती के खाली पैकेट खरीदने की कोशिश की, तो दुकानदार ने कई कंपनियों के पैकेट दिखा कर पूछा, कौन-सी कंपनी का पैकेट दूं ।

जब उससे पूछा कि अगर हम इन पैकेटों में अगरबत्ती बेचेंगे तो कंपनी वाले कार्रवाई नहीं करेंगे, दुकानदार मुसकराकर बोला, कार्रवाई कौन करेगा । नाम और पते तो सब फर्जी हैं ।

उसने कहा कि पते में मैसूर छपा हो तो लोग अच्छी कीमत देकर अगरबत्ती खरीद लेंगे ।

पालम गांव में बड़े पैमाने पर अगरबत्ती का इसी तरह का कारखाना चल रहा है । वहां दे कि ४०-५० नामों से अगरबत्ती के पैकेट का तादाद में मौजूद हैं । मैंने वहां एक से पूछा, आपकी कंपनी का नाम क्या है ? वह बोला- नाम में क्या रखा है । ग्राहक को एक कंपनी कं चीज कभी अच्छी नहीं लगती तो वह दूसरी कंपनी की अगरबत्ती मांगता है । माल तो एक ही है लेकिन पैकेट अलग-अलग करने से मा निकल जाता है । उसने बताया कि हमारा माल तो साइकिलवाले ही बेचते हैं । उन्हें यह समझ दिया जाता है कि एक इलाके में अपना माल बेचो तो फिर चार-पांच महीने उस इलाके में म जाओ । उसने कहा कि हमारे पास एक ऐसी अगरबत्ती है, जिसके जलाने से भूत-प्रेत नहीं आते ।

दोषी कौन

दरअसल इस तरह के कारोबार के लिए हम आप-जैसे लोग ही उन्हें उकसाते हैं । यह काम हम उनकी अगरबत्तियां खरीदकर अथवा उन दीनता पर तरस खाकर या उन्हें पैसे देकर कर रहे हैं । इससे उनका हौसला बढ़ रहा है और उनका यह फर्जी धंधा दिनदूना रात चौगुना फलफूल रहा है ।

—एल.-२२५ सरोजनी नग
नयी दिल्ली-२

उल्टा टंगा तैलचित्र

'ली वैटियू' नामक प्रसिद्ध तैलचित्र, जिसके कलाकार मैटासी थे, एक महान मॉडर्न (आधुनिक) आर्ट माना जाता है । परंतु यही चित्र विश्व प्रसिद्ध न्यू यार्क के 'म्यूजीयम ऑव मॉडर्न आर्ट' में ४७ दिनों तक उल्टा टंगा रहा । सबसे मजेदार बात है कि वहां इस चित्र को परखने आये कलाकार भी इस भूल को नहीं समझ पाये ।

— मनोज राय

बाघ बहादुर बना रामप्यारे

• रूपेश दिग्विजय

पटना जैविक उद्यान ! सोमवार का दिन । उद्यान में मैंने घुसते द्वारपाल से बाघ के बारे में पूछा । उसने इशारे से बताया आगे होगा । मैं हिरणों को पार करता हुआ चिड़ियों के पास पहुंचा । तभी वहां देखा, बाघ मेरे सामने खड़ा था । मेरी तो घिग्घी बंध गयी । वहां मेरे और उसके सिवा कोई भी नहीं था । मैं हिम्मत करके वहां खड़ा रहा । पीछे से एक आवाज आयी, घबरायें नहीं, वह कुछ नहीं करेगा । एक नाटे कद का आदमी मेरे सामने खड़ा हो गया । उसने धीरे-से उस बाघ को कहा— सरफराज, बाबू को तंग मत करो । इतना सुनते ही वह बाघ उसके कदमों तले बैठ गया ।

यह आदमी और कोई नहीं बल्कि बाघ पालक ३८ वर्षीय राम प्यारे था । यहीं के आठ खुंखार बाघों का हमनवाज । यह अगर एक दिन न आये तो सारे बाघ खाना-पीना तक छोड़ देते हैं और हो भी क्यों न । इन जानवरों के दुःख-दर्द में राम प्यारे ने हमेशा एक बाप और मां की तरह साथ दिया । साथ सोया और साथ जागा । कितने लम्हे खुली आंखों में बिताये । तभी तो लोग उसे देखते ही कहते हैं, 'वह देखो, बाघ बहादुर और बाघ बहादुर अपनी ही धुन में मस्त बाघों को देखभाल करने में लगा है ।

दो बेटों और तीन बेटियों का पिता राम प्यारे,

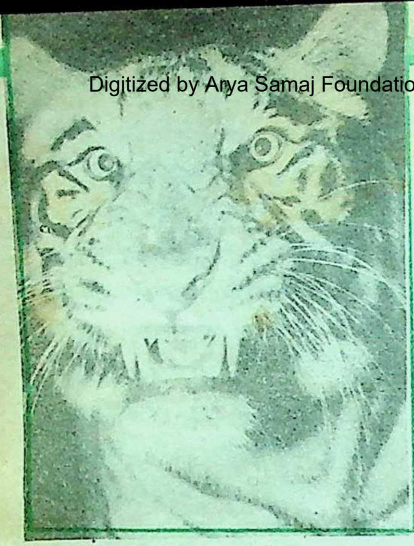

रिंकी : क्रोध की मुद्रा में

पटना के फुलवारी प्रखंड, ग्राम-रानीपुर का वाशिंदा है । बाघों से जितना प्रेम है इतना खुदा से भी नहीं है । अपने बच्चों के नाम पर ही उसने बाघों और बाघिन का नामकरण किया है— रिंकी, सोनू, सोनी, मोना । एक का नाम मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद ने 'सरफराज' रखा है जो खुलेआम जैविक उद्यान में राम प्यारे की निगरानी में घूमता है । राम प्यारे हर रोज सुबह बाघ-बाघिन के साथ रहकर उनसे खेलता है, दुलराता है, और उनसे बातें करता है । बाघों के प्रति राम प्यारे का लगाव १९८४ से शुरू हुआ, उस समय 'टाइगर केज' की देखरेख करनेवाला 'कीपर' किसी भी बाघ को पालतू न बना सका, तो तत्कालीन निदेशक श्री पी. के. सेन की पहल पर राम प्यारे की ड्यूटी चिड़िया केज से हटाकर टाइगर केज पर लगा दी गयी ।

राम प्यारे के लिए यह बिलकुल नया काम था । फिर भी, उसने इस नवीन चुनौती को स्वीकार किया । इसके बाद राम प्यारे पूरी लगन और निष्ठा से बाघों की सेवा करने लगा ।

अंततः, मेहनत रंग लायी । वे बाघ जो कभी जंगली खुंखार थे, कुछ ही महीनों में राम प्यारे के इशारे पर नाचने लगे । प्रेम की जीत हुई । उसके बाद राम प्यारे और बाघों के बीच जो प्रेम शुरू हुआ वह आज तक जारी है । दोनों एक-दूसरे के पर्यायवाची हो गये हैं । आज बाघ, राम प्यारे के बिना अधूरे हैं और राम प्यारे इन बाघों के बिना । तभी तो लोग इसे प्यार से राम प्यारे नहीं, बाघ बहादुर कहकर पुकारते हैं ।

बाघों के और ज्यादा करीब राम प्यारे तब आया जब सफेद बाघिन रिंकी के हार्निया का ऑपरेशन था । पूरे छह महीने रिंकी के साथ सोया था राम प्यारे । रिंकी के दर्द से राम प्यारे अंदर तक कचोट जाता । अब रिंकी स्वस्थ है तो राम प्यारे की बदौलत ।

पीला धारीदार बाघ 'सरफराज' विकलांग आज से १८ महीने पहले पैदा हुआ था, जैविक उद्यान के सारे कर्मचारी हैरान परेशान करें तो क्या करें ? कैसे काटेगा यह अपना जीवन ? 'सरफराज बाघ' को ठीक करने की जिम्मेवारी

सरफराज के साथ रामप्यारे

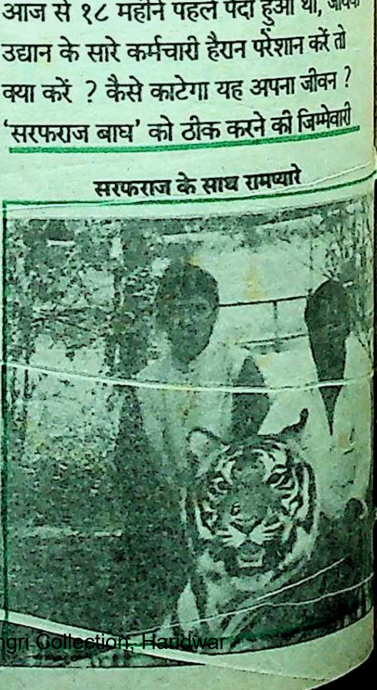

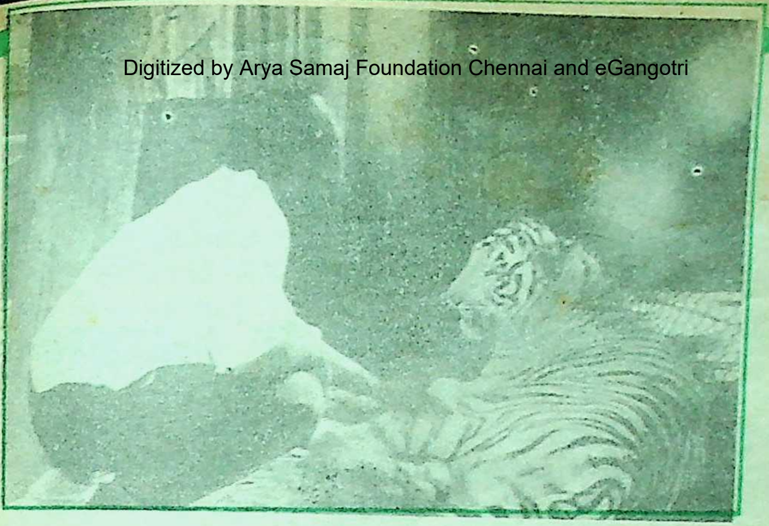

सफेद बाघिन रिंकी के साथ रामप्यारे

राम प्यारे ने अपने ऊपर ली । बिना दवा-दारू के सिर्फ सेवा के बल पर राम प्यारे ने १० महीने में उसे चलने लायक बना दिया । सरफराज को आज आप दौड़ते हुए छलांग लगाते हुए देख सकते हैं ।

राम प्यारे ने २८.६.९० में निहरा के निकट 'फिसिंग कैट' को पकड़ा । ३० नवम्बर १९९१ में पटना के बख्तियारपुर में एक खुंखार नरभक्षी तेंदुए को पकड़कर राज्य सरकार द्वारा प्रशंसापत्र और १००० रुपये का ईनाम भी उसे मिला । मौत को गले से लगाने के लिए १००० रुपये बहुत कम होते हैं । राज्य सरकार ने उसकी तनख्वाह बढ़ायी भी, तो मात्र पचास रुपये । अमरीकी पत्रिका 'जूट प्रिंट' की पत्रकार शेली वाकर ने जब राम प्यारे को चार बाघों के साथ हंसते-खेलते देखा तो दांतों तले अंगुली दबा ली । शेली ने राम प्यारे का नाम 'जू कीपर स्पांशरशिप प्रोग्राम' के लिए अमरीका भेजा । राम प्यारे को 'अमरीकी एसोसिएशन ऑव जू कीपर' का सदस्य बना लिया गया है ।

सरफराज की एक गंभीर मुद्रा

सरकार को राम प्यारे-जैसे निष्ठावान और जानवरों से प्यार करनेवाले कर्मचारी को ऊंची ट्रेनिंग के लिए विदेश भेजना चाहिए, ताकि वहां से सीखकर जब वह आये तो जानवरों की परवरिश में कोई कसर न रह जाए । फिलहाल, राम प्यारे अपने परिवार की परवरिश को लेकर चिंतित हैं । फिर भी, वह अपने प्यारे बाघों के साथ खुश है ।

— चानपुरी निवास
गांधीनगर, बोरिंग रोड
पटना-८००००१

शाकाहार : उत्तम आहार

● रामनिवास लखोटिया

दस वर्ष पूर्व नीदरलैंड की १.५% आबादी शाकाहारी थी जबकि वर्तमान में वहां ५% व्यक्ति शाकाहारी हैं । सुप्रसिद्ध गैलप मतगणना के अनुसार इंगलैंड में प्रति सप्ताह ३,००० व्यक्ति शाकाहारी बन रहे हैं । वहां अब २५ लाख से अधिक व्यक्ति शाकाहारी हैं । एक प्रेस समाचार के अनुसार अमरीका में डेढ़ करोड़ व्यक्ति शाकाहारी हैं । सुप्रसिद्ध गायक माइकल जैकसन एवं मैडोना पहले से ही शाकाहारी हो चुके हैं । अब विश्व की सुप्रसिद्ध टेनिस खिलाड़ी मार्टिना नवरातिलोवा ने भी 'शाकाहार' व्रत धारण कर लिया है । बुद्धिजीवी व्यक्ति शाकाहारी जीवन प्रणाली को अधिक आधुनिक, प्रगतिशील और वैज्ञानिक कहते हैं एवं अपने आपको शाकाहारी कहने में विश्व के प्रगतिशील व्यक्ति गर्व महसूस करते हैं । संसार के महान बुद्धिजीवी, उदाहरणार्थ अरस्तु, प्लेटो, लियोनार्दो दविंचि, शेक्सपीयर, डारविन, पी. एच. हक्सले, इमर्सन, आइन्सटीन, जार्ज बर्नार्ड शा, एच. जी. वेल्स, सर जूलियन हक्सले, लियो टॉलस्टॉय, शैली, रूसो आदि सभी शाकाहारी ही थे । प्रस्तुत लेख में इस बात का प्रयत्न किया गया है कि स्वास्थ्य और अच्छे पोषण की दृष्टि से ही नहीं बल्कि अन्य कारणों से भी शाकाहार ही उत्तम है, न कि मांसाहार ।

विश्वभर के डॉक्टरों ने यह साबित कर दिया है कि शाकाहारी भोजन उत्तम स्वास्थ्य के लिए सर्वश्रेष्ठ है । जैसे फल-फूल, सब्जी, विभिन्न प्रकार की दालें, बीज एवं दूध से बने पदार्थों आदि से मिलकर बना हुआ संतुलित आहार भोजन में कोई भी जहरीले तत्व नहीं पैदा करता । इसका प्रमुख कारण यह है कि जब कोई जानवर मारा जाता है तो वह मृत-पदार्थ

बनता है । यह बात सब्जी के साथ लागू नहीं होती । यदि किसी सब्जी को आधा काट दिया जाए और आधा काटकर जमीन में गाड़ दिया जाए तो वह पुनः सब्जी के पेड़ के रूप में हो जाएगी । क्योंकि वह एक जीवित पदार्थ है । लेकिन यह बात एक भेड़, मेमने या मुरगे के लिए नहीं कही जा सकती । अन्य विशिष्ट खोजों के द्वारा यह भी पता चला है कि जब किसी जानवर को मारा जाता है तब वह इतना भयभीत हो जाता है कि भय से उत्पन्न जहरीले तत्व उसके सारे शरीर में फैल जाते हैं और वे जहरीले तत्व मांस के रूप में उन व्यक्तियों के शरीर में पहुंचते हैं, जो उन्हें खाते हैं । हमारा शरीर उन जहरीले तत्वों को पूर्णतया निकालने में सामर्थ्यवान नहीं है । नतीजा यह होता है कि उच्च रक्तचाप, दिल व गुरदे आदि की बीमारी मांसाहारियों को जल्दी आक्रांत करती है । इसलिए यह नितांत आवश्यक है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से हम पूर्णतया शाकाहारी रहें ।

पोषण :

अब आइए, कुछ उन तथाकथित आंकड़ों को भी जांचें जो मांसाहार के पक्ष में दिये जाते हैं । जैसे, प्रोटीन की ही बात लीजिए । अक्सर यह दलील दी जाती है कि अंडे एवं मांस में प्रोटीन, जो शरीर के लिए एक आवश्यक तत्व है, अधिक मात्रा में पाया जाता है । किंतु यह बात कितनी गलत है यह इससे साबित होगा कि सरकारी स्वास्थ्य बुलेटिन संख्या २३ के अनुसार ही १०० ग्रा. अंडों में जहां १३ ग्रा. प्रोटीन होगा, वहीं पनीर में २४ ग्रा., मूंगफली में ३१ ग्रा, दूध से बने कई पदार्थों में तो इससे भी अधिक एवं सोयाबीन में ४३ ग्रा. प्रोटीन होता है । अब आइए कैलोरी की बात करें । जहां १०० ग्रा. अंडों में १७३ कैलोरी, मछली में ९१ कैलोरी व मुरगे के गोश्त में १९४ कैलोरी प्राप्त होती है, वहीं गेहूं व दालों की उसी मात्रा में लगभग ३३० कैलोरी, सोयाबीन में ४३२ कैलोरी व मूंगफली में ५५० कैलोरी और मक्खन निकले दूध एवं पनीर से लगभग ३५० कैलोरी प्राप्त होती है । फिर अंडों के बजाय दाल आदि शाकाहार सस्ता भी है । तो हम निर्णय कर ही सकते हैं कि स्वास्थ्य के लिए क्या

चीज जरूरी है । फिर कोलस्ट्रोल को ही लीजिए जो कि शरीर के लिए लाभदायक नहीं है । १०० ग्राम अंडों में कोलस्ट्रोल की मात्रा ५०० मि.ग्रा. है और मुरगी के गोश्त में ६० है तो वहीं कोलस्ट्रोल सभी प्रकार के अन्न, फलों, सब्जियों, मूंगफली आदि में 'शून्य' है । अमरीका के विश्व विख्यात पोषण विशेषज्ञ डॉ. माइकेल क्लेपर का कहना है कि अंडे का पीला भाग विश्व में कोलस्ट्रोल एवं जमी चिकनाई का सबसे बड़ा स्रोत है जो स्वास्थ्य के लिए घातक है । इसके अलावा जानवरों के भी कुछ उदाहरण लेकर हम इस बात को साबित कर सकते हैं कि शाकाहारी भोजन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है । जैसे गैंडा, हाथी, घोड़ा, ऊंट । क्या ये ताकतवर जानवर नहीं हैं ? यदि हैं, तो इसका मुख्य कारण है कि वे शुद्ध शाकाहारी हैं । इस प्रकार शाकाहारी भोजन स्वास्थ्यप्रद एवं पोषण प्रदान करनेवाला है ।

स्वाभाविक भोजन :

मनुष्य की संरचना की दृष्टि से भी हम देखेंगे कि शाकाहारी भोजन हमारा स्वाभाविक भोजन है । गाय, बंदर, घोड़े और मनुष्य इन सबके दांत सपाट बने हुए हैं, जिनसे शाकाहारी भोजन चबाने में सुगमता रहती है, जबकि मांसाहारी जानवरों के लंबी जीभ होती है एवं नुकीले दांत होते हैं, जिनसे वे मांस को खा सकते हैं । उनकी आंतें भी उनके शरीर की लंबाई से दुगुनी या तिगुनी होती हैं जबकि शाकाहारी जानवरों की एवं मनुष्य की आंत उनके शरीर की लंबाई से सात गुनी होती है । अर्थात, मनुष्य शरीर की रचना शाकाहारी भोजन के लिए ही बनायी गयी है, न कि मांसाहार के लिए ।

अहिंसा और जीव दया :

आज विश्व में सबसे बड़ी समस्या है, विश्व शांति की और बढ़ती हुई हिंसा को रोकने की । चारों ओर हिंसा एवं आतंकवाद के बादल उमड़ रहे हैं । उन्हें यदि रोका जा सकता है तो केवल मनुष्य के स्वभाव को अहिंसा और शाकाहार की ओर प्रवृत्त करने से ही । महाभारत से लेकर गौतम बुद्ध, ईसा मसीह, भगवान महावीर, गुरुनानक एवं महात्मा गांधी तक सभी संतों एवं मनीषियों ने अहिंसा पर विशेष जोर दिया है । हमारे संविधान की धारा ५१ ए (जी) के अंतर्गत भी हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम सभी जीवों पर दया करें और इस बात को याद रखें कि हम किसी को जीवन प्रदान नहीं कर सकते तो उसका जीवन लेने का भी हमें कोई हक नहीं है । 'भारतीय शाकाहार परिषद' ने इन्हीं कारणों से जनहित में वर्ष १९९५ को 'शाकाहार' वर्ष घोषित किया है ।

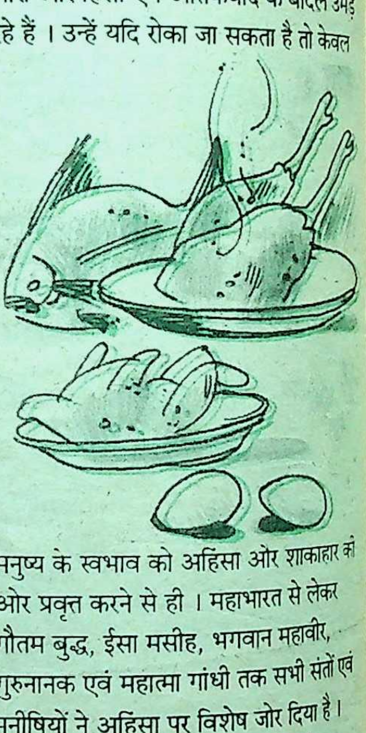

—एस-२२८, ग्रेटर कैलाश
नयी दिल्ली-११००४८

ससुराल हो तो मिथिला में हो !

● महेश कुमार झा

जो मिथिलावासी नहीं हैं और जिन्होंने मिथिला की बेटी की विदाई का दृश्य नजदीक से नहीं देखा है, यह बात अटपटी जरूर लगेगी कि मिथिला की बेटी के रोने के दृश्य को ही सबसे अधिक दर्दनाक दृश्य क्यों कहा जा रहा है । किसी प्रिय की मृत्यु से उत्पन्न दर्द से भी अधिक मिथिला की बेटी की विदाई से उत्पन्न दर्द को अधिक क्यों बताया जा रहा है ।

यूं तो हिन्दुस्तान की हर बेटी जब पहली बार अपने मायके को अलविदा करते हुए ससुराल में अपनी नयी दुनिया बसाने को मायके की देहरी लांघती है तो टूटते हृदय के भाव आंसू बनकर आंखों से टपकने ही लगते हैं और माहौल बहुत गमगीन हो जाता है, लेकिन मिथिला की बेटी की विदाई के वक्त यह गम अपनी चरमावस्था में होता है । यह बात अलग है कि शहरों की अधिकांश बेटियों ने विदाई के वक्त ब्यूटीशियन की मदद से तैयार किये गये मंहगे मेकअप के बिगड़ जाने के डर से आंसू बहाना बंद कर दिया है और खुशी-खुशी कार में बैठकर समझदारी और आधुनिकता का परिचय देना प्रारंभ कर दिया है, किंतु मिथिला की बेटियां अभी भी इस प्रभाव से पूरी तरह अछूती हैं ।

ससुराल ऐसी है कि

दरअसल मिथिला की बेटी जब विदाई के वक्त रोना प्रारंभ करती है तो वह अकेले नहीं रोती बल्कि उस मौके पर उपस्थित तमाम लोग रोने लगते हैं । उपस्थित सारी महिलाएं तो जोर-जोर से इस कदर रोने लगती हैं मानो उसके हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो रहे हों और उनका सब-कुछ लुटा जा रहा हो । पिता, भाई, चाचा व अन्य उपस्थित मर्द तो जोर-जोर से नहीं रोते, किंतु वे सिसकते, हिचकियां लेते और बार-बार आंखें पोंछते अवश्य नजर आते हैं । सबों को रोते देखकर छोटे-छोटे बच्चे भी जोर-जोर से रोने लगते हैं, चाहे उन्हें दर्द का अहसास हो न हो ।

यहां तक कि दहेज के नाम पर बेटी के बाप से खून तक चूस लेनेवाले निष्ठुर दूल्हे भी इस अवसर पर आंखें पोंछते नजर आते हैं और कभी-कभी तो दूल्हे के मन में यह भाव भी उत्पन्न हो जाता है कि वह अपनी दुल्हन को अपने साथ ले जाकर उसके मायकेवालों को इस तरह का असहनीय कष्ट क्यों दे रहा है । ऐसे में दूल्हा कभी-कभी सबों की मार्मिक व्यथा का जिम्मेदार खुद को मानने लगता है । बेटी को

विदा करने आस-पड़ोस के व टोले से सारे लोग पहुच जाते हैं और आशीर्वाद के साथ-साथ आंसू की सौगात भी देते हैं । ऐसा लगता है मानो घर-द्वार, पेड़-पौधे, जानवर आदि भी रो रहे हैं बेटी को विदा करते वक्त ।

ससुराल में क्लाइमेक्स का दृश्य

विदाई के क्षण के पास आते ही बेटी जब रोना शुरू कर देती है तो फिर उस करुण क्रंदन का कोई ओर-छोर नहीं होता है । माता-पिता, भाई-बहन, भाभी-चाची व अन्य सबों से गले मिलकर रोती है और सबों को जोर-जोर से पुकार-पुकार कर बिलखते हुए स्वर में पूछती है कि उसने कौन-सा अपराध किया है कि उसे सबों से दूर भेजा जा रहा है, कैसे सब आत्मीय जनों के बिना जीएगी वह, किसको वह मां-मां या बाबूजी कह पुकारेगी ।

रोना मनुष्य को प्रकृति की ओर से मिला एक जन्मजात तोहफा है, क्योंकि इस दुनिया में प्रवेश करते ही मनुष्य का पहला काम होता है रोना । शिशु का क्रंदन सुनकर ही जच्चाखाने के बाहर बैठे प्रतीक्षारत् सगे-संबंधी समझते हैं कि बच्चे का जन्म हो गया । उसके बाद आदमी न जाने कितनी बार रोता है पूरी जिंदगी में, और अंततः जाते हुए खुद तो नहीं रोता किंतु अपने शुभचिंतकों को रूलाकर चल देता है । मिथिला की बेटी जब विवाह के बाद पहली बार ससुराल जाने के लिए माता-पिता, सगे-संबंधियों, समाज व गांववालों से विदा लेते हुए रोती है, तो वह दृश्य दुनिया का सबसे मार्मिक और दर्दनाक दृश्य होता है ।

भाव विह्वल होकर वह पूछती है कि उसे कहां भेजा जा रहा है, जिसका जवाब हर कोई सिर्फ रोकर आंसुओं से देता है । साथ रोती महिलाएं सामूहिक रूदन के साथ धीरे-धीरे बेटी को संभालते हुए उस सवारी (कार, जीप या कुछ अन्य) के पास लाती है, जिस सवारी पर बैठकर उसे ससुराल जाना होता है, तो यह दृश्य अपने 'क्लाइमेक्स' पर जा पहुंचता है । बेटी गाड़ी पर चढ़ना नहीं चाहती है और रिश्तेदार महिलाएं उसे समझा-बुझाकर गाड़ी पर चढ़ाने का प्रयास करती रहती हैं । बेटी इस कदर कतराती है मानो वह गाड़ी नहीं फांसी का फंदा हो । काफी समय लग जाता है बेटी को गाड़ी में बैठाने में । तीन बार गाड़ी को आगे-पीछे किया जाता है, फिर बेदर्दी ड्राइवर 'एक्सीलेटर' पर पांव का दबाव बढ़ा देता है ।

सारे परिजन रोते-बिलखते रह जाते हैं और गाड़ी रोते-रोते बेसुध-से होती बेटी को लेकर आगे बढ़ जाती है । लेकिन तब भी बेटी का रोना नहीं थमता है । गाड़ी बढ़ती रहती है और

बेटी का विलाप जारी रहता है । धीरे-धीरे गाड़ी गांव की सीमा से बहुत दूर निकल जाती है तब भी बेटी का रोना जारी रहता है, तब साथ चलते लोग उसे चुप कराने लगते हैं कि अधिक रोने से कहीं उसकी तबियत न बिगड़ जाए । यहां भी उसे चुप करना आसान नहीं होता । सबों के समझाने-बुझाने से वह चिल्लाकर रोना तो बंद कर देती है किंतु लंबी हिचकियों का सैलाब थमता नहीं है । तेज सवारी हो तो २०-२५ मील गुजर जाते हैं हिचकियों के थमने में ।

मिथिला की यह परंपरा

मिथिला में बेटियों के इस कदर भाव विह्वल होकर रोने की परंपरा बहुत ही पुरानी है । संभवतः उतनी ही पुरानी जितनी पुरानी मिथिला है । मिथिला नरेश राजा जनक की पुत्री सीता की राम के साथ विदाई के दृश्यों का वर्णन करता एक गीत 'बड़ा रे जतन से सियाजी के पोसलों, सेहो सिया राम लेने जाय' न जाने कबसे पारंपरिक गीत बना हुआ है । यह गीत मिथिला का चर्चित गीत है और इसमें कोई संदेह नहीं इस गीत की धुन दुनियाभर के बेहतरीन मार्मिक धुनों में से एक है । बिछोह से उपजे इस तरह के गीतों की धुन को मिथिलावासियों ने एक अलग ही नाम दे डाला है—'समदाउन' । समदाउन के तहत कई तरह के गीत इस बात को प्रतिबिंबित करते हैं कि मिथिला के गीतकारों-संगीतकारों ने भी बड़ी गहराई से बेटी की विदाई की मार्मिकता को महसूस किया है ।

वस्तुतः यह मिथिलावासियों की भावुकता व अत्यधिक संवेदनशीलता का बहुत बड़ा प्रमाण है जिसकी चरम प्रस्तुति बेटी की विदाई के वक्त होती है । इससे यह कल्पना की जा सकती है कि विदाई के औपचारिक दृश्यों में भी जब मिथिलावासी रोने लगते हैं तो दिल के टुकड़े से विदाई के वक्त वे कितना आंसू बहाते होंगे । कभी-कभी तो इस तरह के दृश्यों की तसवीरें उतारनेवाला 'फोटोग्राफर' भी तसवीरें उतारते-उतारते खुद भी तसवीर का एक हिस्सा बन जाता है और हिचकियां लेने लगता है । ऐसी ही स्थिति रोने की आवाज को रेकॉर्ड करनेवाले के साथ भी होती है । वस्तुतः ये आंसू दर्द के पिघलने से उत्पन्न होते हैं, इसलिए एक मुख्य सवाल यह भी उठता है कि मिथिला की बेटियों का ही दर्द इतना गहरा क्यों है ?

बच्चों के विवाह में दूरी

दरअसल मिथिला में प्रारंभ से ही बच्चों के विवाह में दूरी को नजरअंदाज किया जाता रहा है । लोग अपनी बेटियों की शादी दूर-दूर के गांवों में करते रहे हैं, अच्छे घर एवं वर की तलाश में । और अब न तेज सवारियां व सड़क उपलब्ध हैं, पहले तो डोली और कहार ही थे । डोली-कहार के बाद बैलगाड़ी पर चढ़कर दुल्हन ससुराल जाने लगी, फिर ट्रैक्टर का युग आया, और अब कार-जीप का युग आया है ।

यह भी कटु सत्य है कि अब भी मिथिला की करीब १५ प्रतिशत दुल्हनें बैलगाड़ी पर चढ़कर ही नवजीवन की राह पर बढ़ती हैं । इनमें अधिकांश छोटी जातियों व निर्धन परिवारों की दुल्हनें ही होती हैं । इस वजह से मायके से ससुराल की थोड़ी दूरी भी अधिक प्रतीत होती होगी और क्योंकि अब भी मिथिला के गांवों में आवागमन की कोई सुविधा नहीं है । अगर अपनी सवारी नहीं है तो अधिकांश गांवों में

पहुंचना एक कठिन समस्या बन जाती है । मर्द तो पांच-सात कोस पैदल भी चल लेते हैं और दस-बारह कोस साइकिल पर चढ़कर भी चले जाते हैं, किंतु महिला बेचारी क्या करें ? ऐसे में मिथिला की बेटियों को मायके से पूरी तरह कटकर जीवन गुजारने की कल्पना भयभीत करेगी ही, खासकर तब जब ससुराल वालों की निर्दयता एवं निर्ममता के किस्से अक्सर सुनने को मिलते हों ।

ससुराल चले जाने के बाद

दिलचस्प तथ्य तो यह भी है कि मिथिला में विदाई के वक्त बेटी का रूदन एक कला भी है । बेटी के ससुराल चले जाने के बाद आस-पड़ोस के लोग (खासकर महिलाएं) उसके रूदन की समीक्षा करते हैं । जो नवविवाहिता बहुत ही मार्मिक ढंग से रोती है व अधिक से अधिक लोगों को रूलाकर चली जाती है उसे लोग बरसों याद रखते हैं और बातचीत के दौरान उसके रूदन को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं । इसके विपरीत जो ढंग से रो भी नहीं पाती उसका उपहास भी बाद में किया जाता है ।

इतना ही नहीं मार्मिक ढंग से न रो पाना मिथिला की महिलाओं के व्यक्तित्व का एक 'निगेटिव प्वाइंट' भी माना जाता है क्योंकि बेटियों के रोने का कार्य विदाई में ही समाप्त नहीं हो जाता । विदाई के बाद पहली बार अपने गांव लौटती हुई महिला भी अपने गांव की सीमा रेखा के अंदर प्रवेश करते ही जोर-जोर से रोना प्रारंभ कर देती हैं । दूर से किसी महिला के रोने की आवाज सुनकर ही गांव के लोग उत्सुक निगाहों से देखने लगते हैं कि किसकी बेटी आ रही है ।

पुनः ससुराल जाते वक्त भी बेटी रोती है। फिर माता-पिता की मौत पर भी बेटियां रोती हैं । इसलिए विदाई से पहले बेटी रोने का पूर्वाभ्यास भी कर लेती हैं । पुराने समय में तो बेटियों को विदाई से एक महीना पूर्व से ही रूलाया जाता था, लेकिन अब यह अवधि काफी सिमट गयी है ।

जब दूल्हा पहुंचता है

विदाई के एक दिन पहले जब दूल्हा अपने सगे-संबंधियों को लेकर दुल्हन की विदाई कराने पहुंच जाता है तब बेटी (दुल्हन) को रूलाया जाता है । दरअसल मिथिला में कई ऐसे मामले भी देखने-सुनने को मिले कि बेटी महीनाभर से रोने का पूर्वाभ्यास करती रही और विदाई करवाने दूल्हा ही नहीं पहुंच पाया। इसलिए एक महीना पहले से ही बेटी को रूलाने की परंपरा समाप्त कर दी गयी ।

हां, जिन जातियों में शादी के तुरंत बाद बेटी की विदाई हो जाती है, उनमें बेटियों को रोने के पूर्वाभ्यास का अवसर नहीं मिलता, लेकिन अधिकांश जातियों में बेटी विवाह के साल-दो साल-पांच साल बाद द्विरागमन (गौना) में ही पहली बार ससुराल जाती है । लेकिन खूबी यह है कि मिथिला में सभी जातियों की बेटियों का रूदन करीब-करीब एक समान होता है ।

—द्वारा श्री सहजानंद
स्टेट बैंक ऑव पटियाला
हथवा मार्केट के सामने छपरा-४

> चलो मिजाज नहीं रास्ते तो मिलते हैं
> यहां किसी को तो अपना बना के रखना है
>
> —अनवर हुसैन

टी रोती है।
बेटियां रोती
रोने का
समय में तो
पूर्व से ही
ह अवधि

है
दूल्हा अपने
की विदाई
ल्हन) को
ला में कई
ले कि बेटी
रती रही और
पाया।
टी को रुलाने

ुरंत बाद बेटी
ों को रोने के
, लेकिन
के साल-दो
ौना) में ही
कन खूबी यह
बेटियों का
ता है।
्री सहजानंद
वि पटियाला
पने

हैं
रखना है
वर हुसैन अ

कादम्बि

बोझ और मुसकान एक साथ

चित्र : सौजन्य : रामचंद्र मौर्य

काला बांस

सुराहीनुमा बांस

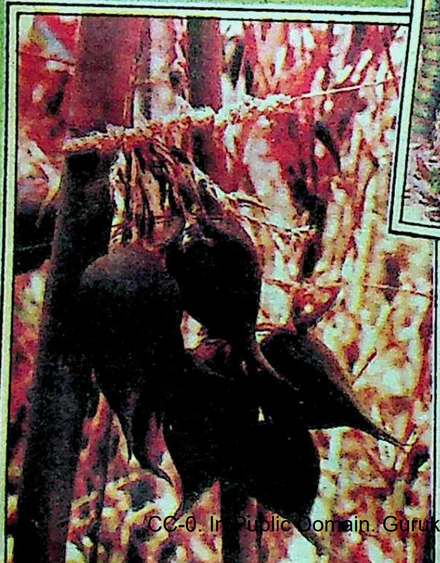

बांस के फल

छाया : लेखक

ब

इस
पन
सी
कि
एवं
जा
का
प्रा
लि
सं
सं
स्लै
क

चिरसखा है बांस

• डॉ. डी. एन. तिवारी

बांस मानव जाति को प्रकृति की एक अमूल्य देन है। यह अत्यधिक तेजी से बढ़नेवाली पादप प्रजातियों में सबसे अग्रणी है। बांस की नालों की सामर्थ्यता, उनका कोमल, सीधा, हल्का और साथ ही कठोर होना, चीरने एवं काटने में आसानी, आकार में विविधता, लचीलापन, खोखलापन, लंबा रेशा एवं उनको लाने ले जाने तथा उपयोग में सरलता एवं नाना प्रकार की उपादेयता ने इसकी लोकप्रियता में चारचांद लगा दिया है। इन्हीं कारणों से बांस को 'हरा सोना', 'गरीब आदमी की लकड़ी' आदि खिताबों से विभूषित किया गया है।

बांस ! का ग्रामीण तथा औद्योगिक अर्थ-व्यवस्था में समान महत्त्व है। इसका उपयोग झोंपड़ी बनाने, बाड़ी एवं पनवाड़ी में लगाने, छड़ी, चटाई, टोकरी, चिक, सीढ़ी, फर्नीचर एवं दैनिक वस्तुओं के निर्माण में किया जाता है तो बांस से प्लाईवुड, अखबारी एवं लिखने का कागज, रेयान आदि भी बनाया जाता है। नगरों में बननेवाली अट्टालिकाएं बांस का सहारा पाकर ही ऊंचाई तथा भव्यता को प्राप्त करती हैं। शहरों में मलिन बस्ती वालों के लिए भी बांस घर बनाने का एक अति महत्त्वपूर्ण संसाधन है। बांस का उपयोग सीमेंट कंक्रीट संरचनाओं— जैसे छोटी स्पान बीन्स, लिंटल्स, स्लैब, बाड़ लगानेवाले खंभों आदि को मजबूत करनेवाली महंगी स्टील की छड़ों के विकल्प के रूप में भी किया जाता है।

बांस के बरतनों की लोगों के दैनिक उपयोग में प्रधानता है। बांस कटाई, दस्तकारी एवं कुटीर उद्योगों में लगभग २५ लाख व्यक्तियों को वार्षिक रोजगार मिलता है। अगरबत्ती, फर्नीचर, कागज, रेयान उद्योगों में बांस की अत्यधिक मांग है, जिसे अधिक उत्पादन द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। बांस की पत्तियों में औषधीय गुण भी होते हैं। बांस की पत्तियां मासिक धर्म लानेवाली, कीड़ेमार, स्रावरोधी तथा बुखार को कम करनेवाली दवा के रूप में प्रयुक्त होती हैं। इनका उपयोग खून को साफ करने तथा धवल रोग में भी किया जाता है।

'वंशलोचन' बांस के भीतरी भाग में एक सिलिकामय संचय है, जिसका उपयोग

शीतलक और कामोत्तेजक के रूप में किया जाता है । यह दमा, खांसी, लकवे की शिकायत तथा अन्य कमजोरी लानेवाली बीमारियों के लिए भी उपयोगी है ।

बांस द्रव्यपदार्थ, जिसे नये बांस की नाल से निकालते हैं, का खांसी, दमा को कम करने तथा ज्वररोध में प्रभावी है । यह कंठ, शीत, दमा और अनिंद्रा के रोगों के लिए भी बहुत अच्छी दवा है ।

कैंसररोधी आरोग्य खाद्य बनाने के लिए बांस के रस का उपयोग संभव है । बांस के रस में अनेक रासायनिक तत्त्व पाये जाते हैं, जो मानव कोशिकाओं को क्रियाशील बनाते हैं । बांस में खून को साफ करने, बवासीर एवं उच्च रक्तचाप को घटाने, थकान मिटाने, स्फूर्ति लाने तथा धमनी की जठरता में लाभकारी प्रभाव पहुंचाने के गुण हैं । बांस के विभिन्न नामों एवं औषधीय गुणों का वर्णन भाव, प्रकाश, निघंटु, में निम्नानुसार किया गया है—

वंशस्त्वक सार कर्मारत्व चिसार तृणाध्वजाः ।
शतपर्वा यवफलों वेणुमस्कर तेजनाः ॥
वंशः सरो हिमः स्वादुः कषायोवस्ति शोधनः ।
छेदनः कफापित्तघ्नः कुष्ठास्रवण शोथजित् ॥

अर्थात बांस, त्वकसर, करपार, त्वाचीसार, तृणध्वज, शतपर्व, यवफल, वेणु, मस्कर एवं तेजन के नामों से इसे जाना जाता है । बांस सारक, ठंडा, शुक्रवीज की बीमारी को ठीक करनेवाला, स्वाद को ठीक करनेवाला, मूत्राशय को शुद्ध करनेवाला, संकोचक द्रव्यों से भरपूर, कफ एवं पित्त को ठीक करनेवाला तथा घाव एवं सूजन में प्रभावी दवा है ।

इसीलिए चीन में जहां बांस को 'सहोदर' कोरिया में 'विश्वसनीय साथी' तथा वियतनाम में 'सबसे उपयोगी' माना गया है, वहीं विश्व के विभिन्न लोगों को खाद्य-पदार्थ उपलब्ध कराने में बांस की अहम भूमिका है ।

बांस से खाद्य-पदार्थ

बांस में एकल रूप से फूल तथा बीज छोटी मात्रा में सदैव उपलब्ध होते हैं, परंतु सामूहिक पुष्पण जो निर्धारित चक्र में होता है, (२५ से ५० वर्ष के अंतराल पर) बड़ी मात्रा में बांस का बीज उपलब्ध कराता है । बांस का बीज चावल अथवा गेहूं के समान होता है । जिसे खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग किया जाता है तथा वनवासी एवं ग्रामीण इसे बड़ी मात्रा में एकत्रित कर खाते हैं ।

बांस के प्ररोह (कोमल अंकुर) समृद्ध आहार तथा स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी प्रिय खाद्य है । इनका सब्जियों, अचारों व पेय बनाने में उपयोग किया जाता है । चावल के साथ उबालकर भी खाया जाता है । इनके प्रमुख तत्त्वों में प्रोटीन, एमीनों अम्ल, बसा, शर्करा, अकार्बनिक लवण आदि मुख्य हैं । इसमें प्रति १०० ग्राम में (औसत २.६५ ग्राम) प्रोटीन पाया जाता है, जो वनस्पतियों में अधिकतम मात्रा में से एक है । इनमें सत्रह किस्म के एमीनों अम्ल तथा १० किस्म के खनिज तत्त्व पाये जाते हैं । वसा का प्रतिशत केवल २.४६ प्रतिशत तथा उच्च खाद्य रेशा छह से आठ प्रतिशत होता है । यह आंत्र गति के विरुद्ध सुरक्षा देता है तथा वजन घटाने में अत्यंत कारगर होता है ।

बांस के प्ररोह न केवल स्थानीय लोगों में लोकप्रिय हैं, अपितु पूर्ण विश्व में इसकी खपत

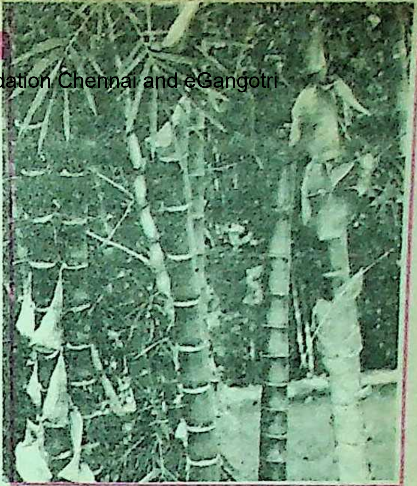

लगातार बढ़ रही है । हमारे यहां अभी देशज बांस के प्ररोहों का उपयोग किया जाता है, परंतु चीन, थाईलैंड, जापान आदि देश उत्तम किस्म के खाद्य बांसों का उत्पादन करते हैं । भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने पहली बार डेंडोकैलामस एस्पर व फाइलोस्टाइकम प्यूबीसेंस बांसों की खेती प्रारंभ की है और इसे सर्वप्रथम मध्य प्रदेश के जबलपुर व छिंदवाड़ा में उगाया गया । बांसों की खेती के साथ ही प्ररोहों को निकालने इनके प्रक्रमण, डिब्बाबंदी तथा विक्रय पर भी ध्यान दिया जा रहा है, ताकि कृषक अधिक से अधिक लाभ कमा सके ।

बांस से चारा

बांस की पत्तियां पालतू जानवरों, घोड़ों और हाथियों के लिए काफी उपयोगी होती है, क्योंकि इनमें भी पाचनशील कच्चा प्रोटीन तथा अन्य पोषक तत्त्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं । विटामिन 'ए' की कमी दूर करने हेतु पत्तियां मुरगियों को भी खिलायी जाती हैं । बांस की पत्तियां व नयी कोपलें खुरदरा चारा के रूप में उपयोगी है, परंतु इन्हें फूल आने के पूर्व ही काट लेना आवश्यक है ।

बांस से ईंधन

बांस में उत्पादन की क्षमता अत्यधिक होती है । एक अवधि के भीतर प्रति इकाई क्षेत्रफल में बांस द्वारा उत्पादित जैव-मात्रा दूसरे पादपों की अपेक्षा सबसे अधिक है । बांस का उष्मामान ४६००-५४०० कैलोरी/किलोग्राम है जो कि, दूसरे पादपों की अपेक्षा उच्चतम है । बांस की तेजगति से जलने के कारण ईंधन के रूप में इसकी उष्मा का पूरा उपयोग कर पाना कठिन है । बांस का कोयला बिजली की बैटरियों में प्रयुक्त होनेवाले चारकोल से बेहतर माना जाता है । आभूषण निर्माता बांस के कोयले को उच्च प्राथमिकता देते हैं ।

बांस से लुग्दी एवं कागज

बांस को कागज उद्योगों के लिए लंबे रेशे वाले कच्चा माल के रूप में प्रमुख माना जाता है । वनों में बहुतायत से पाये जानेवाला डेंड्रोकैलामश बांस के रेशे की अधिकतम लंबाई ५.५ मिलीमीटर तथा औसत लंबाई ३.०६ मिलीमीटर होती है । अन्य बांस जिन्हें बाड़ी अथवा खेतों की मेड़ पर लगाया जाता है, उनके रेशों की अधिकतम लंबाई ६.७५ मिलीमीटर तथा औसत लंबाई ३.५ मिलीमीटर होती है । इस समय देश में लुग्दी एवं कागज का वार्षिक उत्पादन २० लाख टन से अधिक है, इसमें कागज के कारखानों द्वारा प्रयुक्त कच्चामाल में बांस का योगदान लगभग ५० प्रतिशत है । कागज की खपत लगातार बढ़ रही है, अतः बांस का उत्पादन बढ़ाना अनिवार्य है ।

अनेक गुणों के कारण बांस का हरेक क्षेत्र में उपयोग किया जाता है— कृषि उपकरण, एंकर्स, तीर, तरह-तरह के टोकरे-टोकरियां,

बिछौने, नावें, बोतलें, झाड़ू, ब्रुश, मकान, टोपी, हर तरह का फर्नीचर, चिक, ताबूत, कंघे, कंटेनर्स, मछली फंसाने के डंडे, बांसुरी, हस्त शिल्प की विविध वस्तुएं, फ्लावर पाट्स, लैंप शेड, सैट, हुक्के की नली, अगरबत्ती की तीलियां आदि अनेक वस्तुओं में बांस का परंपरागत रूप से उपयोग होता ही है, जो सौंदर्य बोध को संतुष्ट करने के साथ रोजगार उपलब्ध कराता है। इसलिए इसके गुणों से प्रभावित होकर किसी कवि ने लिखा है—

तन हरा, मन श्वेत, जिसकी सुनहरी हर सांस है
कृषक, लेखक, श्रमिक— सबका चिरसखा यह बांस है
शूर का यह शस्त्र, सूरों का सतत है मार्गदर्शक
युवा का अभिमान, वृद्धों का सहारा अंगरक्षक
विश्व का मनुजत्व आदिमकाल से तेरा ऋणी है
सभी में सीमित है गुण, पर सब गुणों का तू धनी है

बांस भूमि-संरक्षण तथा भूमि पर सजावट के लिए अपना विशेष ही महत्त्व रखता है।

बांस की प्रजातियां एवं वितरण

विश्व में ५० जीनस् से संबंधित करीब १२५० बांस प्रजातियां पायी जाती हैं। २० जीनस् से संबंधित करीब १३६ बांस प्रजातियां (जिनमें से ११० देशी हैं) भारत में पायी जाती हैं। यह उष्ण कटिबंधीय प्रदेश में समुद्रतल से लेकर शीतोष्ण कटिबंधीय प्रदेशों में ४००० मीटर की ऊंचाई तक उगते हैं। यूरोप को छोड़कर विश्व के हर भाग में बांस प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। भारत में कश्मीर की घाटी तथा राजस्थान के रेगिस्तान में बांस प्राकृतिक रूप से नहीं पाया जाता है।

बांसों का भौगोलिक वितरण बहुत कुछ वर्षा, तापमान, ऊंचाई और मृदा की दशाओं से प्रभावित होता है। अच्छी उपज के लिए अधिकांश बांसों को ८ डिग्री सेल्सियस से ३६ डिग्री सेल्सियस तक तापमान, १००० मिलीमीटर की न्यूनतम वार्षिक वर्षा और उच्च वायुमंडलीय आर्द्रता की आवश्यकता पड़ती है।

बांस के पुष्पन के आधार पर इन्हें तीन वर्गों में बांटा गया है। पहला, ऐसे बांस जो प्रति वर्ष या लगभग इसी अवधि में पुष्पित होते हैं। तीसरा, ऐसे बांस जिनमें एक तथा अनियमित पुष्पन होता है। सामूहिक पुष्पन सामान्यतः विभिन्न प्रजातियों में ७-१२० वर्षों के अंतराल पर होता है। सामूहिक पुष्पन के बाद बांस पूरी तरह सूख जाते हैं। उत्तर प्रदेश में प्रचलित एक कहावत 'केला वीछी, बांस, अपने फल से नाश' को सामूहिक पुष्पनके बांस चरितार्थ करते हैं। पुष्पन प्रायः नवम्बर से मार्च तक होता है और बीज अप्रैल से मई तक पककर तैयार हो जाते हैं। बीज झड़कर जमीन पर गिर जाते हैं, जो वर्षाकाल में अंकुरित होते हैं। यदि बीज नमी वाले स्थानों पर गिरते हैं, तो वर्षा के पूर्व भी उग आते हैं। नम स्थलों पर तथा सुरक्षित स्थानों पर बांस का प्रचुर अंकुरण होता है तथा वर्षा के पश्चात संपूर्ण सतह बांस के पौधों से पूरी तरह ढक जाती है। पौधे लाखों की संख्या में उगते हैं और जिंदा रहने के लिए उनमें भारी प्रतिस्पर्धा शुरू हो जाती है। धीरे-धीरे प्रकृति की विरलन प्रक्रिया पौधों में अंतराल पैदा कर देती है जिससे अंततः एक-दूसरे से उचित दूरी पर उगने लगते हैं। यदि बीज झड़ने के तुरंत बाद जंगल में आग लग जाए, तो वे जल जाते हैं।

— महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद,
देहरादून-२४८००६

व्यक्तिवादी मनोवृत्ति और सामाजिकता

● आचार्य महाप्रज्ञ

समाज, व्यवस्था और दर्शन तीनों जटिल और कुटिल शब्द हैं । आदि में समाज है, अंत में दर्शन और बीच में व्यवस्था बैठी है । व्यक्ति आज भी जितना व्यक्ति है, उतना सामाजिक नहीं है । व्यवस्था में सहज नहीं है । दर्शन परीक्षा की साक्षात् अनुभूति के लिए व्यवहृत होता है ।

जैन आगमों की भाषा में समाज कल्पना है । व्यक्ति अकेला आता है और अकेला ही जाता है । अनुभूति भी अपनी-अपनी होती है । एक की अनुभूति दूसरे की नहीं होती । विज्ञान भी अकेले का होता है । सत्य व्यक्ति है, समाज नहीं ।

उपनिषद में कहा है— **'द्वितीयाद वै भयम् ।'** अकेला अभय था, दूसरा आया कि भय हो गया । **'सत्यों: स मृत्युमाप्नोति, य इह नानेव पश्यति'** — नानात्व को देखनेवाला मृत्यु को प्राप्त होता है ।

वास्तविक सत्य है : व्यक्ति

सचाई भी यही है । समाज कल्पना-प्रसूत सत्य है, वास्तविक सत्य है व्यक्ति । आदि से आज तक समाजशास्त्रियों ने सामाजिकता की गाथाएं गायी हैं पर उनके संस्कार आज भी अपरिपक्व हैं । जितने वैयक्तिक हैं उतने सामाजिक नहीं हैं । जहां समाज हो वहां भी थोड़ा-सा नियंत्रण शिथिल होते ही वैयक्तिक भाव पनप उठते हैं । व्यवस्था की दशा लगभग ऐसी है । प्रत्येक पदार्थ में अवस्था होती है । जैन दर्शन की भाषा में उसे पर्याय कहते हैं । वह अचेतन में भी होती है, चेतन में भी होती है । वह बद्धजीव में भी होती है और मुक्त में भी होती है । व्यवस्था वैभाविक पर्याय है, सहज नहीं । वह करनी होती है । सापेक्षता की ओर झुकाव होता है, तब व्यवस्था आती है । समाज माना हुआ सत्य है, पर सम्मत सत्य को एकांत असत्य नहीं कहा जा सकता ।

एकोहम बहु स्याम्

चिंतन का प्रवाह कालचक्र की तरह उत्सर्पण और अवसर्पण करता है । एक दिन व्यक्ति व्यक्ति था, अवस्था अवस्था थी और दर्शन दर्शन था । उपनिषद की भाषा में— **'स एको नैव रेमे'** —वह अकेले में संतुष्ट नहीं हुआ । उसने सोचा—'बहुस्याम्', वह बहुत हो गया । मनुष्य कभी जंगल में रहता था । उस स्थिति से ऊबकर वह गांव में आया । अब वह गांव में भी जंगल ला रहा है । नयी दिल्ली में

मैंने देखा—एक कोठी जंगल से घिरी है, मनुष्य की जो चिरपरिचित आदत है, अभी नहीं छूटी है । इसलिए वह गांव और महानगर में भी जंगल ला रहा है ।

एक समय लोग दाढ़ी और मूंछ रखते थे । बीच में सफाई का युग आया और अब पुनः दाढ़ी मूंछ का युग आ रहा है । यह आवर्तन और प्रत्यावर्तन होता ही रहता है ।

समाज बनता है सापेक्षता से

सापेक्षता से ही समाज बनता है । समज और समाज में यही तो भेद है । पशुओं का समूह समज कहलाता है और समाज उन मनुष्यों का समूह होता है, जिनमें सापेक्षता होती है । समाज हो और सापेक्षता न हो, वह समाज नहीं, अस्थि-संघात मात्र है । समाज का आधार है परस्परावलंबन, परस्पर सहयोग । समाज में व्यवस्था का जन्म होता है । व्यवस्था भली-भांति चले इसीलिए शासन आता है । सापेक्षता, व्यवस्था और शासन—ये तीन व्यवस्थाएं जहां हों, वहां दस आदमी मिलने पर भी समाज बन जाता है, अन्यथा लाख आदमी होने पर भी समाज नहीं बनता ।

जैन आगमों की भाषा में समाज कल्पना है । व्यक्ति अकेला आता है और अकेला ही जाता है । अनुभूति भी अपनी-अपनी होती है । एक की अनुभूति दूसरे की नहीं होती । विज्ञान भी अकेले का होता है । सत्य व्यक्ति है, समाज नहीं ।

दर्शन शब्द का अर्थ-विस्तार हुआ है । एक समय आत्मोपलब्धि और सत्य के साक्षात्कार को दर्शन कहा जाता था । दृष्टा की प्रत्यक्ष अनुभूति के लिए दर्शन शब्द व्यवहृत होता था पर आज परोक्षानुभूति में भी वह व्यवहृत होने लगा है ।

निरपेक्षता के परिणाम

व्यक्ति सामाजिक होने पर भी व्यक्ति ही है, इसलिए वह समाज में रहते हुए भी निरपेक्षता चाहता है और शासनहीन राज्य की कल्पना करता है, यह अस्वाभाविक भी नहीं है । निरपेक्षता से मुक्त सापेक्षता और सापेक्षता से मुक्त निरपेक्षता हो ही नहीं सकती । जो कोई भी सत् है, वह सत्-प्रतिपक्ष है । प्रकाश और अंधकार, न्याय और अन्याय, आरोग्य और रोग, ये सब सत्-प्रतिपक्ष हैं । अकेला शब्द शून्य होता है । सामाजिक प्राणी सर्वथा निरपेक्ष हो, ऐसा हो ही नहीं सकता । यह भी असंभव है कि व्यक्ति का स्वतंत्र अस्तित्व हो और वह सर्वथा सापेक्ष ही हो । निरपेक्षता को न जाननेवाला शांति का मर्म जान ही नहीं पाता । अहिंसा, अपरिग्रह और सचाई—ये सब निरपेक्षता के ही परिणाम हैं ।

एक दल या संप्रदाय के लोग साथ रहते हैं । वे सापेक्ष ही हों और निरपेक्ष न हों तो कलह हो जाता है । एक बड़े परिवारवाले व्यक्ति से मैंने पूछा—आपका परिवार इतना बड़ा है, कैसे एक साथ रह रहे हैं ? उसने उत्तर दिया—बहुत कुछ सहा है, अन्यथा कभी से अलग-अलग चूल्हे जल जाते । संतुलन के

लिए सापेक्ष के साथ निरपेक्ष भाव हो—यही दर्शन है, दर्शन की देन है ।

व्यवस्था-अव्यवस्था

जैसे व्यवस्था समाज के लिए आवश्यक है वैसे अव्यवस्था भी । गति और प्रगति के लिए अव्यवस्था आवश्यक है । स्कंद भी संघात और भेद से बनता है, केवल संघात ही हो तो सारा विश्व पिंड बन जाए । हाथ की पांचों अंगुलियों का पिंड एक हो जाए तो उनकी कोई उपयोगिता नहीं रह सकती । भिन्नता में ही उनकी उपयोगिता है । कोरे भेद से भी काम नहीं चलता । अणु-अणु बिखर जाए तो जीवन दूभर बन जाए । संघात और भेद से स्कंद बनता है, वही हमारे लिए उपयोगी होता है । अव्यवस्था का अर्थ है अवस्था । कोरी व्यवस्था से समाज जड़ बन जाता है, क्योंकि व्यवस्था कृत है, नैसर्गिक नहीं । नैसर्गिकता स्वयं अवस्था बन जाए तब व्यवस्था की आवश्यकता ही न रहे ।

शासन मुक्त समाज की अपेक्षाएं

शासन प्रणाली भी आयी है । समाज ने उसे आवश्यक माना और वह आ गयी । एक समय मनुष्य ने शासन की कल्पना की, राज्य बन गया, शासक बन गया । मार्क्स की अंतिम कल्पना है—शासन मुक्त राज्य हो । यह कल्पना मार्क्स की नयी नहीं है । जैन आगमों में 'अहं इंद्र' का उल्लेख है । वहां सब इंद्र हैं, कोई सेवक या पदाति नहीं । प्रेष्य और प्रेषक में भेद ही नहीं है, वह शासनमुक्त समाज का चित्र है । किंतु वे 'अहं इंद्र' इसलिए हैं कि उनके प्रयोग, मान, माया [illegible] और लोभ क्षीण हैं, स्वभाव से वे संतुष्ट हैं । शासन मुक्त राज्य के लिए ये अनिवार्य अपेक्षाएं हैं ।

चाह स्वतंत्रता की

स्वाधीनता दर्शन की बहुत बड़ी देन है । सब लोग विचारों की स्वतंत्रता चाहते हैं, लेखन और वाणी की स्वतंत्रता चाहते हैं । स्वतंत्रता का घोष प्रबल है । कोई पराधीनता नहीं चाहता । राजा शब्द इतिहास और शब्दकोश का विषय बन गया है, वैसे ही नौकर शब्द भी अतीत की वस्तु बनता जा रहा है । इसका अर्थ है कि निरपेक्षता आ रही है । सापेक्षता की कड़ी टूटने पर कोई हानि नहीं, व्यवस्था न रहे तो कोई दोष नहीं; शासन न रहे तो कोई आपत्ति नहीं; यदि स्व-शासन आ जाए । स्व-शासक न शासन से शासित होता है और न शासन से मुक्त ।

'कुसले पुण नो बद्धे नो मुक्के' कुशल वह है जो न बद्ध होता है और न मुक्त । एक ही व्यक्ति जो न बंधा हुआ हो और न मुक्त हो, यह कैसे हो सकता है ? शासन छोड़ा नहीं जा सकता । शासन नहीं, वहां त्राण नहीं । कोई भी अत्राण रहना नहीं चाहता । इसलिए आत्मानुशासन आता है । कुशल इसलिए है कि वह परशासन से बद्ध नहीं है और आत्मानुशासन से मुक्त नहीं है ।

व्यक्तिवादी मनोवृत्ति

आत्मानुशासन के मनोभाव को विकसित करना आवश्यक है । कहीं भी देखा जाए, ईर्ष्या है, स्पर्धा है, एक-दूसरे को नीचे गिराने का भाव है और असहनशीलता है । समाज में जहां सापेक्षता है, वहां [illegible] क्या होता है, आज भी एक प्रश्नचिह्न बना हुआ है ।

साम्यवादी शासनमुक्त समाज की कल्पना लेकर चलते हैं । वहां क्या होता है ? अपनी सुरक्षा और अपने प्रतिस्पर्धी का पतन । एक

ओर शासन मुक्ति की कल्पना, दूसरी ओर इतना स्वार्थ-संघर्ष, यह दर्शन की दूरी नहीं तो और क्या है ?

व्यक्ति ने मान लिया, उत्कर्ष हो तो मेरा हो । मुख्य या शक्तिशाली मैं ही बनूं । यह व्यक्तिवादी मनोवृत्ति ही सामाजिकता को वास्तविकता नहीं बनने देती; किंतु आत्मानुशासन का विकास होने पर व्यक्ति व्यक्ति रहकर भी असामाजिक नहीं रहता ।

समुद्र है व्यक्ति

व्यक्ति में जो 'स्व' की सीमा है, उसे न समझकर वह अपने में पर का आरोप कर लेता है । संक्रांतिवेला में प्रत्येक वस्तु छोटी दीखती है । विशाल वस्तु भी दर्पण में समा जाती है । व्यक्ति भी सोचता है, सारी सृष्टि में समाहित हो जाए, पर ऐसा सोचनेवाला सत्य के निकट नहीं पहुंच पाता है ।

व्यक्ति समुद्र है । राग-द्वेष की उर्मियां उसमें कल्लोलें कर रही हैं । वहां सत्य-दर्शन नहीं होता । उन उर्मियों से ऊपर आनेवाले की ही दृष्टि स्पष्ट हो सकती है, भीतर रहनेवाले की नहीं ।

समाजवादी प्रणाली में भी सत्ता कुछेक व्यक्तियों में केंद्रित हो गयी है । जनता अपने को असहाय-सी अनुभव करती है । अपना व्रत लेकर चलनेवाले कभी अत्राण नहीं होते ।

शस्त्र शब्द में त्राण शक्ति की कल्पना है पर वह वास्तविक नहीं है । भीषण आयुध रखनेवाले भी संत्रस्त हैं ।

स्व-शासन आये

दशार्णभद्र अपना ठाठ-बाट लेकर भगवान महावीर के दर्शन के लिए चला । इंद्र ने सेना की रचना की । राजा पराजित हो गया, त्राण अत्राण की अनुभूति करने लगा क्योंकि वह पर की सीमा में चला गया था । अंत में भगवान की शरण में आया और विजयी बन गया । अब इंद्र पैरों में आकर लोट गया ।

जो पर-शासन में पराजित हो गया, वह स्व-शासन में आ विजयी बन गया । समाज में रहनेवाले 'स्व' की सीमा में चलें । इस स्व-शासन का विकास होने पर समाज में व्यवस्था नहीं होगी किंतु एक विशेष अवस्था होगी । नियम कृत्रिम नहीं होगा, किंतु सहज होगा । प्रेरणा का मूल भय नहीं होगा किंतु कर्त्तव्यनिष्ठा होगी ।

—अखिल भारतीय अणुव्रत समिति,
२१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००२

प्लास्टिक से तेल

हाल ही में अमरीका के कैंटकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक मेंहदी वधई ने प्लास्टिक से तेल निकालने के उद्देश्य के लिए जो प्रौद्योगिकी विकसित की है, उससे भविष्य में बेकार प्लास्टिक के ढेर से तेल प्राप्त किया जा सकता है । इस प्रौद्योगिकी से न केवल ऊर्जा का संकट दूर होगा बल्कि प्लास्टिक [illegible] के ढेरों का भी निपटारा संभव हो पाएगा । उल्लेखनीय है कि तेल निकालने के लिए इस प्रौद्योगिकी में बेकार प्लास्टिक को धोने या अलग-अलग वर्गों में छांटने की आवश्यकता नहीं होती है ।

—प्रकाशचंद्र गंगराडे

खैरियत गुजरी कि अंगूर के बेटा न हुआ

● रतनलाल जोशी

पुराने नगर अंताकिया की कहानी है । आसी नाम की नदी अंताकिया नगर को दो भागों में विभाजित करती थी । राजा सरबाओ ने आसी नदी पर एक पुल बनाकर नगर के दोनों भागों को जोड़ दिया । जब पुल बनकर तैयार हो गया तो उस पर इस इबारत का एक शिलालेख भी लगा दिया गया—"यह पुल अपनी प्रजा की सुख-सुविधा के लिए राजराजेश्वर सरजाओ अंताकिया नरेश ने बनवाया है ।"

कई बरसों तक इस पुल पर मुसाफिर आते और जाते रहे । इस पुल के जरिये अंताकिया नगर के दिल ही एक नहीं हो गये, नगर का कारोबार भी काफी बढ़ गया । लोग मुक्तकंठ से अपने राजा के दयालु हृदय की तारीफ करने लगे ।

एक दिन एक अस्त-व्यस्त-सा नवयुवक इस पुल पर से गुजरा । शिलालेख को देखकर वह रुक गया । इबारत पढ़कर उसने छैनी से उस शिलालेख को खोदकर फेंक दिया और उसके स्थान पर ये वाक्य लिख दिये—"इस पुल को बनाने के लिए जो पत्थर इस्तेमाल में आये हैं, उन्हें पहाड़ों से खच्चर ढोकर लाये हैं । अतः इस पुल पर यात्रा करते समय आप अंताकिया शहर के उन खच्चरों की पीठ पर चलते हैं जो

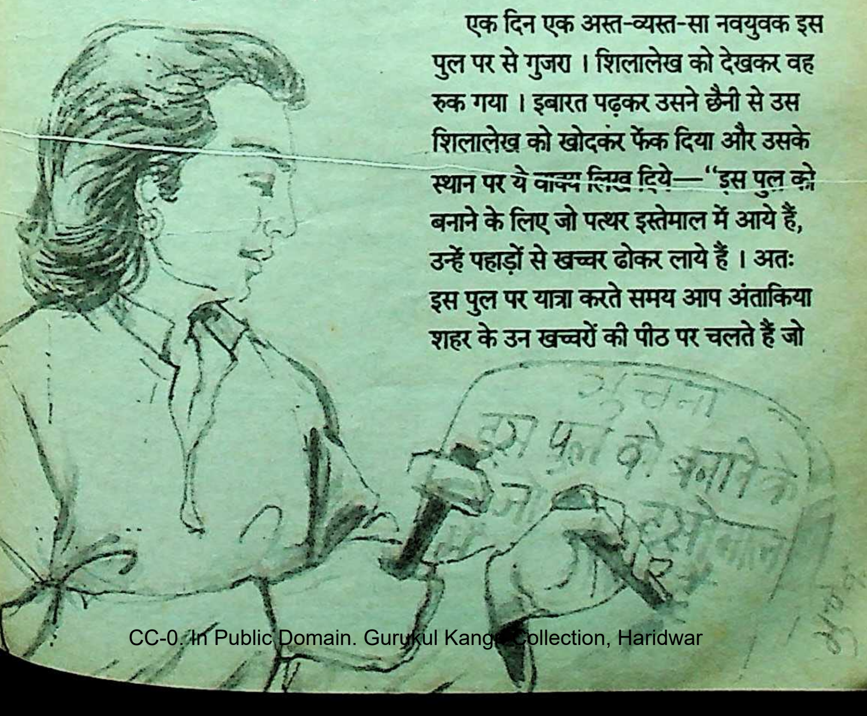

अंताकिया नरेश राजराजेश्वर के बजाय असल में इस पुल के निर्माता हैं ।"

पुल पर सफर करनेवालों ने जब शिलालेख के ये शब्द पढ़े तो कुछ को तो हंसी आ गयी, कुछ को इस दूर की सूझ पर आश्चर्य हुआ, कुछ जो और भी गहराई में गये, उन्हें इसमें दार्शनिकता का तत्व-दर्शन मिला । इनके अलावा कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्होंने नाक-भौं सिकोड़कर कहा—"यह किसी खफ़्ती के दिमाग का फितूर है । उसके दिमाग के कुछ पेंच ढीले हो गये हैं, नहीं तो इस प्रकार की बेवकूफी के क्या मतलब होते हैं ?"

पुल पर चलनेवाले मुसाफिरों की इन बातों को एक दिन वहां छाया में विश्राम कर रहे खच्चरों ने भी सुना तो एक-दूसरे की तरफ कनखियों से गर्व और तृप्ति का आदान-प्रदान करते हुए वे आपस में कहने लगे—"हां, इस शिलालेख में ठीक ही तो लिखा है । इस पुल के पत्थर हम ही ढो-ढो कर तो लाये हैं । राजा ने तो हुक्म भर दिया था, पुल का निर्माण तो हमारे ही जीवट से हुआ है । मगर इस दुनिया की तो तराजू ही निराली है, यहां मेहनत की महिमा कोई नहीं गाता, सत्ता की महिमा ही सब गाते हैं । मगर इससे आखिर होता क्या है ? एक-न-एक दिन खच्चरों की पैरवी करनेवाला भी कोई पैदा होता है—हमारे लिए यही बहुत है ।"

खलील जिब्रान की इस बोध-कथा के साथ शेख सादी की इस कथा को भी तौलना तत्वरस के आस्वाद की दृष्टि से शायद महंगा सौदा नहीं होगा ।

एक बादशाह था । धर्म के बारे में उसकी कट्टरता मशहूर थी । एक दिन ऐसा हुआ कि इस बादशाह का एक सिपाही सबेरे काफी देर तक सोता रहा—बिस्तर से उठा ही नहीं । उसकी बीवी ने आखिर तंग आकर उसे कोसना शुरू कर दिया—'ए, बेखबर सोनेवाले, बिस्तर से उठो और रोजी कमाने जाओ । तुम्हारे बच्चे भूखे हैं और रोटी मांग रहे हैं ।"

बिस्तर पर शव की तरह लापरवाह पड़े सिपाही ने आंखें मींचे-मींचे ही जवाब दिया—"चुप भी रह, आज चूल्हा नहीं जलेगा । बादशाह सलामत का हुक्म हुआ है कि आज सारा शहर रोजा रखेगा ।"

सिपाही की बीवी ने सिर पीटकर कहा—"हाय, बादशाह का दिमाग खराब हो गया है । जिनकी जिंदगी फाके में कट रही है, उन्हें रोजे रखने की नहीं, रोजे खोलने की ही जरूरत है । रोजे रखने के बजाय बादशाह सलामत अगर रोजे खोलने का हुक्म देते तो एक बात भी थी—बच्चे ईद तो मनाते ।"

सच है मुंह तो पानी में भी दीखता है और

"हाय, बादशाह का दिमाग खराब हो गया है । जिनकी जिंदगी फाके में कट रही है, उन्हें रोजे रखने की नहीं, रोजे खोलने की ही जरूरत है । रोजे रखने के बजाय बादशाह सलामत अगर रोजे खोलने का हुक्म देते तो एक बात भी थी—बच्चे ईद तो मनाते ।"

आईने में भी । असल में, जरूरत है मुंह देखने की तमीज की । भला कहां पानी और कहां आईना !

अपना मुंह देखने की बात कहानियों में अलग-अलग कोणों से कही गयी है । प्लूटार्क ने बड़े पते की बात कही है कि हम हर चीज को अनासक्त भाव से देख सकते हैं, मगर अपने चेहरे के प्रतिबिंब के सामने हम अपनी सारी निःसंगता ऐसे खो बैठते हैं जैसे पानी सब को निर्मल करनेवाला होकर भी अपनी स्वयं की निर्मलता के बारे में निश्चेष्ट होकर रह जाता है । महाकवि दांते की यह तत्वानुभूति दर्शनीय है—

पराये चेहरों पर क्या
लिखा है, इसे पढ़ना
इतना ही आसान है
जितना मुश्किल है
अपने मन की दीवार
पर लिखी प्रज्वलित
इबारतों को पढ़ जाना ।
एक तालाब अपने
दिल पर प्रतिबिंबित
कर सकता है, सारे सितारों
को, आसमान को ;
मगर खेद है कि वह
स्वयं अपनी गहराई को
जान पाने में समर्थ नहीं
है—जरा भी नहीं ।

उस दिन भारत के एक राज्य के मुख्यमंत्री ने जब शब्दों की तलवार भांजते हुए कहा था कि हम दिल्ली को घुटने टेकने पर मजबूर कर देंगे तो कई श्रोताओं के स्मृतिपट पर ये कहानियां अपने बोध व्यक्त करती हुई कौंध गयी थीं । कवि फिरदौसी ने बड़े व्यंग्य से ऐसे लोगों के लिए लिखा है कि तलवारें म्यान से बाहर निकालना तो अनाड़ियों के लिए भी आसान है, किंतु उन्हें शत्रु की गरदन तक पहुंचाना मौत और जिंदगी के सारे फासले को तय करने की कुव्वत दिखलाना है ।

कन्फ्यूशस इस नतीजे पर पहुंचा है कि जो शब्दों की तलवार चलाने की आदत से लाचार हैं उन्हें उसके घावों को सहने की क्षमता भी प्राप्त कर लेनी चाहिए, क्योंकि अक्सर उस तलवार से उनका ही अंगच्छेद होता है । बात यह है कि अपनी ही शेखी से चोट खाये ये इनसान मूर्खतावश इन चोटों के लिए दूसरों को दोषी ठहराते हैं—इस मूर्खता को आखिर किस श्रेणी में शुमार किया जाए ?

श्रीमद्भागवत में इस प्रकार की मूर्खता पर प्रश्न है—

जिह्वां क्वचित्
सन्दशति स्वदद्भिः
तद्वेदनाया कत—

सोफोक्लीज का निष्कर्ष है कि लोग फिजूल ही सत्ता को फौलाद की लाठी समझते हैं, जो उसकी असलियत जानते हैं, उनका कहना है कि सत्ता पोली लकड़ी है, जो बोलती बेहद है मगर कमजोर इतनी होती है कि एक चींटी को भी उसकी चुनौती के लिए सजा नहीं दे सकती ।

माय कुप्यते ।

—अपने ही दांतों से अक्सर अपनी जीभ के काट लेने पर जो पीड़ा होती है, उसके लिए काटनेवाला आखिर किस पर क्रोध करेगा ?

सोफोक्लीज का निष्कर्ष है कि लोग फिजूल ही सत्ता को फौलाद की लाठी समझते हैं, जो उसकी असलियत जानते हैं, उनका कहना है कि सत्ता पोली लकड़ी है, जो बोलती बेहद है मगर कमजोर इतनी होती है कि एक चींटी को भी उसकी चुनौती के लिए सजा नहीं दे सकती ।

मगर यही खोखली कही जाने वाली सत्ता सारे जमाने को सिर पर उठाये हुए सदियों से चल रही है । दरवेश अत्तार ने कबीर के-से फक्कड़पन में कहा है कि कुत्ते और सत्ता का एक ही इलाज है कि जब वह काटने दौड़े तो एक टुकड़ा फेंक दो, बस, फिर सुख की नींद सो जाओ । नीचे की ईरानी कहावत शायद उसी वक्त से चली आ रही है—

लुक्मा ब-दहन
सिंग दो खता-ब !

— भौंकनेवाले कुत्ते के मुंह में टुकड़ा डाल देना अकलमंदी है ।

चार्ली चेपलिन ने सत्ता का जितना मजाक उड़ाया है, उतना वाल्तेयर के सिवाय शायद ही किसी ने उड़ाया होगा । चैपलिन कहता है कि उत्ता शराब का नशा है, जो सब को शक्ति नजर आता है । बोतल बोलती है, मगर समुद्र का आभास होता है । इसमें भूल और भ्रांति किसकी ? सुननेवाले की ही तो कही जाएगी ।

महाकवि 'अकबर' इलाहाबादी ने भी प्रकारांतर से इसी किस्म के व्यंग्य को व्यक्त करते हुए लिखा है—

उसकी बेटी ने उठा रक्खी है
दुनिया सर पर,
खैरियत गुजरी कि
अंगूर के बेटा न हुआ !

—१२, फिरोज गांधी मार्ग,
लाजपतनगर-३, नयी दिल्ली-११००२४

अद्भुत साम्य

२० अप्रैल १९७८ के 'द वाशिंगटन पोस्ट' में एक ही नाम की दो महिलाओं की कहानी प्रकाशित हुई थी । दोनों का नाम वाण्डामेरी जांस था । इनमें से एक महिला एडेल्फी, मेरी लैंड, प्रिंस जार्ज काउंटी की रहनेवाली थी और उस समय वाशिंगटन के यूनियन स्टेशन में वैगेज क्लर्क थी । दूसरी महिला, सश्टलैण्ड, मेरीलैंड प्रिंस जार्ज काउंटी की रहनेवाली थी और वाशिंगटन के डी.सी. जनरल हास्पिटल में नर्स का काम कर रही थी ।

दोनों वानूडा मेरी का जन्म १५ जून १९५६ को वाशिंगटन शहर में हुआ था और दोनों ही इस शहर को छोड़कर प्रिंस जार्ज काउंटी चली गयीं । दोनों के दो-दो बच्चे थे, जिनका जन्म एक ही अस्पताल में हुआ । दोनों महिलाओं के पास अपनी-अपनी फोर्ड कारें हैं । जिनका नंबर भी ११ की संख्या में अंतिम तीन अंकों को छोड़कर समान है ।

— शैलेंद्र भार्गव

बुद्धि विलास

१. क. आदिमानव का विकास कैसे और किस काल में हुआ ? ख. ज्ञानी मानव (होमोसेपियंस) कब प्रकट हुए ?

२. किस यूरोपवासी ने सबसे पहले यह कहा था— मानव एक महान चमत्कार है ?

३. किस मुगल बादशाह के जमाने में साम्राज्य का चरमोत्कर्ष रहा, साथ ही विघटन भी शुरू हुआ था ?

४. क. 'सतसई' की रचना किस कवि ने की थी ? ख. उसमें कितने दोहे हैं ?

ग. इस कवि को संरक्षण किसने प्रदान किया था ?

५. क. दुनिया का सबसे बड़ा टी.वी. स्क्रीन (परदा) कहां बना है ? इसका आकार क्या है ?

ख. इसका प्रयोग किसमें किया गया है ?

> **अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प ।**
>
> **संपादक**

६. क. हाल में डायनासोर के जीवाश्म बड़ी संख्या में कहां मिले हैं ?

ख. इनके कितने पुराने होने का अनुमान है ?

७. क. दुनिया में नाभिकीय अस्त्र-संपन्न देश कितने और कौन-से हैं ?

ख. भारत ने 'परमाणु अप्रसार संधि' पर हस्ताक्षर क्यों नहीं किये हैं ?

८. निम्नलिखित पुरस्कार किन्हें मिले हैं ?

क. अहिंसा तथा शांति के आदर्शों की स्थापना में योगदान के लिए **महात्मा गांधी पुरस्कार**

ख. अवध रत्न सम्मान

ग. सुलभ इंटरनेशनल द्वारा स्थापित '१९९५ का ईमानदार' पुर. ।

९. क. छठे विश्व मैराथन कप में नये रेकॉर्ड के साथ किस महिला ने खिताब जीता है ?

ख. पांचवीं एशिया कप क्रिकेट चैंपियनशिप किसने जीती और किसको हराकर ?

ग. जापान ओपन टेनिस का खिताब किसने जीता, किसको हराकर ?

घ. एशियाई क्षेत्रीय पुरुष तथा महिला शतरंज चैंपियनशिप के खिताब किसने जीते हैं ?

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

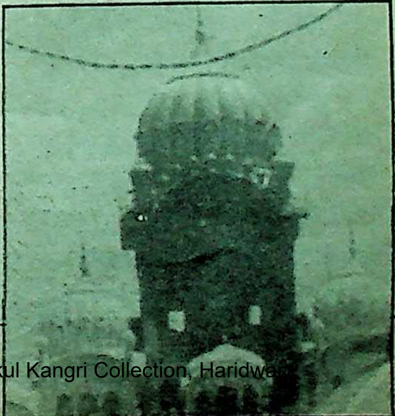

गवना कराके सइयां घरे छोड़ दिहलन

● उमेश चंद्र चतुर्वेदी

पूर्वी उत्तर प्रदेश और उत्तरी-पश्चिमी बिहार में लगभग चौदह करोड़ भोजपुरी भाषी रहते हैं । इनकी शाश्वत पीड़ा है, रोजी-रोजगार की तलाश में अपनी माटी को छोड़ना । क्योंकि अपनी माटी की सोंधी गंध की परिधि में उन्हें दो जून की रोटी ठीक से मयस्सर हो जाए, यही बहुत है ।

स्वतंत्रता के पहले तक तो भोजपुरी क्षेत्र का शायद ही कोई गांव था, जहां से प्रतिवर्ष बीस-पच्चीस लोग कलकत्ता न जाते हों । तब कलकत्ता व्यापार का केंद्र हुआ करता था ।

पूरब में स्थित कलकत्ते में नौकरी थी, रोजी-रोटी का जुगाड़ था । ढेर सारे कल-कारखाने थे । ऐसी जगह पर छपरा, सीवान, आरा, बलिया, गाजीपुर के लोगों को जाना ही था ।

पूरब की ही यह संस्कृति थी, या यूं कहें भोजपुरी लोगों की मजबूरी थी कि लोगों को पेट पालने की खातिर मारीशस, फीजी, सूरीनाम, ट्रिनीडाड, गुयाना तक 'गिरमिटिया' मजदूर बनकर जाना पड़ा । वहां जाकर अपनी माटी से कहीं अधिक मेहनत की, यातनाएं-त्रासदी सहीं । इसलिए कि कुछ ढेबुआ (पैसे) कमाकर घर ले जा सकें । जहां खपरैल का घर चू रहा है, खेत रेहन रखा गया है, आखिर पैसे न हों तो क्या खेत सूदखोरों के चंगुल से मुक्त हो सकेगा या फिर खपरैल की मरम्मत हो सकेगी ?

इस पैसे कमाने की होड़ में या मजबूरी में सबसे ज्यादा बलिदान दिया है, नयी-नवेली दुल्हनों ने । किस नयी-नवेली की इच्छा नहीं होती कि अपने प्रिय से फुरसत के क्षणों में हंस-बोलकर अपने प्यार-मनुहार का इजहार करे ! किंतु हाय रे माटी की दुर्दशा...पेट की आग जिसे बुझाने की खातिर उसका नवेला चला जाता है, परदेश । नयी-नवेली के मन पर तब क्या बीतती होगी, इसका सही-सही बयान वह भी नहीं कर सकती, जिसने इस सुनहरे पल को गंवाया हो । अलबत्ता मध्यकाल से ही भोजपुरी में तरह-तरह के गीतों की रचना होती रही है । लोकमानस की इस अभिव्यक्ति में कितना दर्द है, इसका आभास इन गीतों को सुनने से ही होता है—

पिया-पिया रटत, पियर भइली देहिया,
तबो नाहीं लौट ले पियवा मोर ..

अर्थात प्रिय की याद में प्रिय को रटते-रटते मैं बीमार पड़ गयी । पीलिया हो गया, लेकिन पिया नहीं लौटे ।

भोजपुरी समाज के इस दर्द को बीसवीं सदी के प्रारंभ में अगर किसी ने समझा, तो वह थे लोक कलाकांर भिखारी ठाकुर । छपरा जिले के निवासी नाई जाति के भिखारी ठाकुर ने एक तुच्छ साधन से सामाजिक बुराई की न केवल

लड़ाई लड़ी, बल्कि घरों में लंबे घूंघट एवं परदे के पीछे त्रस्त नवेलियों के दर्द को पहचान दी । जमीन छोड़ने के दर्द को उन्होंने भी महसूस किया था, इसीलिए उनकी रचनाओं में इस दर्द की अभिव्यक्ति बार-बार होती है । इसीलिए बार-बार पूरब न जाने की सीख उनके गीतों में मिलती है । इसमें भौगोलिक कारणों से उत्पन्न परेशानियों का भी जिक्र है । उनके एक गीत में सुंदरी अपने परदेशी पति को समझाती है—

पिया मोर मति जा हो पुरूबवा
पुरूब देश में टोना बेसी बा,
पानी बहुत कमजोर...

कलकत्ते के बारे में आज भी माना जाता है कि यहां का पानी कमजोर है । यह भी माना जाता है कि भोजपुरिहा लोगों को कलकत्ते का पानी 'सूट' नहीं करता । दूसरी बात यह है कि बंगालिन औरतों की सुंदरता प्रसिद्ध है । घर में अपनी नवेली को छोड़ कमाने के लिए गये भोजपुरी पुरुष इनकी ओर आकर्षित हो जाते हैं । इसीलिए वे वर्षों तक घर नहीं लौटते थे । उसे ही यह प्यारी-भोली सुंदरी मानती है कि किसी ने जादू-टोना करके उन्हें अपने वश में कर लिया है ।

भोजपुरी समाज में ऐसी पत्नी को रखेलिन कहा है । इन रखेलिनों की आशंका यूं करती है—

सुनत बानी
आंख पानी देत बा, सारी भइल सराबोर
एक नाथ बिनु मन अनाथ रही
घुसी महल में चोर

यानि कि सुनते हैं । मेरा मन आशंकित है । इसलिए रोते-रोते मेरा बुरा हाल है । आपके बिना मैं यहां अनाथ हो गयी हूं । लगता है कि वहां आपके घर में कोई चोर घुस आया है ।'

यहां चोर से तात्पर्य उस बंगालिन कन्या से है, जिसके प्रेमजाल में पति अपनी पत्नी को पूरी तरह से भूल गया है ।

विरही सशंकित प्यारी की हर बात का जवाब परदेशी के पास है—

प्यारी देस तनी देखे द हमके
जात-आवत में देरी ना लागी
जइसे घोड़ा के रेस
कहना मानड करब ना देरी
जलदी से भेजब सनेस
बल-बुद्धि से नगद कमाइब
नगद माल हरमेस

इस गीत में अर्थचक्र की ध्वनि अनुगुंजित होती है । पति प्रिया को जवाब देता है कि मुझे अभी इस देश को देखने-समझने दो । यहां से घर आने में कोई देर नहीं लगती । जल्दी ही संदेश भेजूंगा और रोज नगद माल अपने बल-बुद्धि के सहारे ही कमाऊंगा ।

पहले भी बताया जा चुका है कि भोजपुरी लोक साहित्य में प्यारी की मार्मिक विरह वेदना का चित्रण हमेशा दिखता है । यथा—

गवना कराके संइयां घरे छोड़ि दिहलन
गइलन पुरूबवा के ओर
खत खबर एको ना भेजलन
हो गइलन निपटे कठोर

इसमें गांव की आर्थिक मजबूरियों की मार्मिक अनुगूंज है । गौने के बाद किस प्रिय का मन नहीं करता कि अपनी नयी-नवेली के साथ प्यार व मनुहार के कीमती क्षण बिताये । लेकिन भोजपुरीवासी यदि इसमें ही भिड़ गया, तो उसके घर-परिवार के सामने भूखे मरने की नौबत आ सकती है । अतः उसे पूरब जाना ही पड़ेगा । उपर्युक्त गीत का भाव है कि गौना

गौना कराकर मुझे घर में ला बिठाने के बाद निर्मोही पिया स्वयं पुरुब चला गया । प्यार-मनुहार क्या होता है ? प्रियतम सुख क्या होता है ? यह अब तक मैं नहीं जान पायी । उसकी बाट देखते-देखते दिन बीत रहे हैं और आंखों से निरंतर आंसू गिरते रहते हैं ।

कराने के बाद पिया तुरंत पुरुब चले गये और वहां जाकर इतना कठोर हो गये कि एक भी पत्र-संदेश देना भूल गये ।

इस गीत में प्रिय के बहुत दिन पहले चले जाने का चित्रण इस प्रकार है—

अमवां मोंजरि गइले, पियराई गइले टिकोढ़वा,
पियवा ना अइले हो राम

अर्थात आम में मंजरी लगी, तभी का गया प्रियतम अब तक नहीं लौटा, जबकि पेड़ों पर लगे आम के फल पकने लगे हैं ।

भिखारी ठाकुर की रचनाओं में गौने के बाद का बहुत ही मार्मिक चित्रण बार-बार देखने को मिलता है, जैसे—

करिके गवनवां भवनवां में छोड़िके
अपने परइले पुरुबवा हो राम
अंखिया से दिन भर गिरेला लोर ढर-ढर
बटिया जोहत दिन बीतेला हो राम

अर्थात गौना कराकर मुझे घर में ला बिठाने के बाद निर्मोही पिया स्वयं पुरुब चला गया । प्यार-मनुहार क्या होता है ? प्रियतम सुख क्या होता है ? यह अब तक मैं नहीं जान पायी । उसकी बाट देखते-देखते दिन बीत रहे हैं और आंखों से निरंतर आंसू गिरते रहते हैं ।

गांवों की सामाजिक स्थिति आज भी काफी विचित्र है । बिहार के भोजपुरी गांवों में यह स्थिति आज भी पूर्ववत बनी हुई है । विशेषकर क्षत्रिय एवं जमींदार बहुल गांवों में आज भी कई महिलाओं को जमींदारों की अंकशायिनी बनना पड़ता है । यह प्रथा वर्षों से चली आ रही है । जमींदारों की लोलुप निगाहें उस नारी पर ज्यादा ही रहती हैं, जो अभी ताजा-ताजा ही गौना कराकर लायी गयी होती है और उसका पति परदेश चला गया होता है । भिखारी ठाकुर ने ऐसी महिलाओं की मनःस्थिति का वर्णन अपनी रचनाओं में भी खूब किया है । यथा—

अब पत राखड श्रीभगवान
करि गवन मोंहि छोड़ि भवन
पिया कइलन पुरुब पेयान
राम ना बिसरत एक छन
मोर भइला बा बयस जवान

अर्थात हे ईश्वर, मेरी जवानी में गौना कराकर लाने के बाद मेरा प्रिय मुझे घर में छोड़कर स्वयं पुरुब चला गया । अब मेरे ऊपर तरह-तरह की आंखें लगी रहती हैं । हे भगवान मेरी लाज रखना ।

घर आने के बाद प्रियतम का उचित संसर्ग न मिलने के कारण विरहिणी की जवानी जोर मारने लगती है—

चढ़ल जवानी जोर
पियऊ हो गइलन कठोर
हमें छोड़ के लो भइलन परदेश

विरहिणी की तभी एक बटोही से मुलाकात हो जाती है । वह भी पुरुब या कलकत्ता जा रहा

है । पिया की खबर न आने से चिंतित विरहिणी अपने पिया की खोज-खबर लेने के लिए उस बटोही से विनती करती है । विनती करते समय अपने पिया का हुलिया बताती है । इस रचना में भिखारी ठाकुर का रूप वर्णन देखते ही बनता है, यथा—

करिया ना गोर बाटे
लामा नाहउवन नाटे
मझिला जवान साम-सुंदर बटोहिया
घुटी पर ले धोती कोर
नकिया सुगा के ठोर
सिर पर टोपी, छाती चाकर बटोहिया

यानी मेरा प्रियतम न काला है न गोरा, न लंबा, न नाटा है । वह मंझली राशि का जवान श्याम-सुंदर है । घुटने तक की धोती पहनता है । नाक उसकी तोते के समान है । उसकी चौड़ी छाती है और सिर पर टोपी पहनता है ।

बटोही जब कलकत्ता जाता है और प्रियतम से उसकी मुलाकात होती है, तो उसे पता चलता है कि वह यहां रखेलिन के साथ रहता है, तो वह उसे डांटता है—

रंडी में ना कुछ बाटे, कुत्ता जइसे हाड़ चाटे
एको नाहीं घाट तुहूं लगबड विदेसिया
धरम के नांव पर चढ़ि के मउज करड
हरड विरहिनिया के दुःख हो विदेसिया

यानि की इस वेश्या में कुछ नहीं रखा । इससे तुम किसी घाट के नहीं होवोगे । धर्म के साथ अपनी पत्नी के साथ रहो इसी में तुम्हारी भलाई है ।

भिखारी ठाकुर की रचनाधर्मिता का सरोकार उनकी माटी रही है । अपनी माटी के दर्द को विदेसिया के माध्यम से जितनी ऊंची आवाज दी, भोजपुरी क्षेत्र का शायद ही कोई ऐसा साहित्यकार कर पाया होगा । बावजूद इसके इस मिट्टी के दर्द का अभी अंत नहीं हुआ है । यह बात दीगर है कि आज का भोजपुरिया व्यक्ति रोजी की तलाश में पूरब या कलकत्ता नहीं जाता । अब वह दिल्ली, हरियाणा और पंजाब में जाता है । निश्चित रूप से अब कोई भिखारी ठाकुर भोजपुरी माटी में जन्म लेगा, तो उसके गीतों में पूरब गये प्रिय का दर्द नहीं, पश्चिम गये प्रिय का दर्द होगा ।

—द्वारा राजेन्द्र कु. राय
डी-७०७, सरस्वती विहार
दिल्ली-११००३४

याद रख सकते हैं

परीक्षणों से यह सिद्ध हुआ है कि ब्राह्मी के सेवन से मस्तिष्क में आर.एन.ए. और डी.एन.ए. स्राव का अनुपात बढ़ जाता है, जो याददाश्त बढ़ाने में सहायक होते हैं । इसी तथ्य को ध्यान में रखकर लखनऊ के 'सेंट्रल ड्रग्स रिसर्च' ने एक ऐसी टॉफी का निर्माण किया है जो याददाश्त को बढ़ाती है । बेकासाइड ए और बी नामक ये टॉफियां आयुर्वेदिक फार्मूले से बनायी गयी हैं । इस टॉफी में ब्राह्मी नामक पौधे का उपयोग किया गया है । इसे किसी भी उम्र का व्यक्ति इस्तेमाल कर सकता है ।

— आशीष दलाल

गोष्ठी

विमल कुमार साहनी, लखनऊ

★ **सूर्य कितनी पत्नियों के स्वामी हैं, और उनकी कौन-कौन संतानें हैं ?**

● सूर्य की चार पत्नियां हैं : संज्ञा (विश्वकर्मा की पुत्री), राज्ञी, प्रभा और छाया । संज्ञा से मुनि की उत्पत्ति हुई, राज्ञी से यम, यमुना और रेवंत उत्पन्न हुए । प्रभा से प्रभात, छाया से सावर्णि, शनि और तपती का जन्म हुआ । सूर्य-परिवार के अन्य देवताओं और नवग्रहों की उत्पत्ति सूर्य से कैसे हुई, इसका विस्तृत वर्णन पुराणों में मिलता है ।

रवींद्र उपाध्याय, समस्तीपुर

★ **मौसम और जलवायु में क्या अंतर है ?**

● वातावरण की स्थिति को मौसम कहते हैं, अर्थात किसी एक क्षेत्र में एक समय यदि वर्षा हो रही है, तो वहां का मौसम ठंडा होगा । यदि तेज हवा चल रही है, तो मौसम की स्थिति भिन्न होगी । लू चलने पर भयंकर गरमी होगी, आदि । मौसम एक दिन या कुछ घंटों में बदल सकता है, अर्थात मौसम परिवर्तनीय होता है । दूसरे किसी एक स्थान पर वर्षभर के मौसम का जो प्रभाव होता है, उसे जलवायु कहते हैं ।

सुकेश कुमार मिश्र, देवघर

★ **हुमायूं का मकबरा कहां है ?**

● दिल्ली में । इसका निर्माण उसकी मलिका हाजी बेगम ने सन १५६५ में कराया था ।

डिगेश्वर महतो, हजारीबाग

★ **दूध का रंग सफेद क्यों होता है ?**

● सूर्य का प्रकाश सात रंगों से मिलकर बना है— बैंगनी (वायलेट), नील (इंडिगो), नीला (ब्लू), हरा, पीला, नारंगी और लाल । सूर्य-प्रकाश के रंगों को प्रिज़्म की सहायता से पृथक किया जा सकता है । किसी भी वस्तु का रंग संबंधित वस्तु द्वारा प्रतिबिंबित होकर हमारी आंख तक पहुंचने की क्रिया पर निर्भर रहता है । उस वस्तु द्वारा जो भी रंग प्रतिबिंबित किया जाता है, वही उस वस्तु का रंग होता है । दूध और दही का आणविक (मोलक्युलर) ढांचा इस प्रकार का बना है कि वह सूर्य प्रकाश के किसी भी रंग को आत्मसात नहीं कर पाता, बल्कि उसके सभी रंगों को प्रतिबिंबित करता है । इसलिए वह सफेद दिखायी पड़ता है ।

अरूण बोस, दरभंगा

★ **उच्चैश्रवा अश्व तथा ऐरावत हाथी क्यों उच्च माने जाते हैं ?**

● पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र-मंथन से प्राप्त चौदह रत्नों में ये दोनों भी थे, इसीलिए इनको श्रेष्ठता प्राप्त है ।

अश्विनी कुमार यादव, मथुरा

★ **मनुष्य ने नमक का सेवन कब से प्रारंभ किया ?**

● मनुष्य ने खानाबदोशी जीवन त्यागते हुए जंगलों में शिकार करके अपना भोजन प्राप्त करना छोड़ा, तब से उसे नमक की आवश्यकता हुई । मांस या कृषिजन्य पदार्थों को उबालने से उनके प्राकृतिक लवण का ह्रास हो जाता है, जिसकी पूर्ति के लिए उसने अपने आहार में नमक लेना प्रारंभ किया ।

सुमंत माथुर, जयपुर

★ क्या मनुष्य के दांत तथा पशुओं के दांत समान होते हैं ?

● मनुष्य तथा पशुओं के दांत भिन्न होते हैं । शिकारी पशुओं के दांत फाड़नेवाले दांत होते हैं, कृतक जीवों (चूहों आदि) के दांत कुतरनेवाले होते हैं और मवेशियों के दांत चबानेवाले होते हैं । प्रत्येक पशु— घोड़ा, गाय, चूहा, बिल्ली या कुत्ता के दांत उसके जीवनयापन के प्रकार, उसके खाद्य और उसके स्वभाव के अनुसार होते हैं । ऊदबिलाव के दांत कटीले होते हैं । कुत्ते और बिल्ली के दांत पैने और लंबे होते हैं, ताकि अपने शिकार को वह पकड़कर दबाये रख सकें । उनके पिछले दांत मांस तथा हड्डियों को काटने और चबाने में सहायक होते हैं । गिलहरी के दांत कुतरने में सहायक होते हैं । सांप के दांत भीतर की ओर इस कोण में होते हैं कि उसका शिकार उनमें फंसकर निकल न पाये । किंतु मनुष्य के दांत इन सबके दांतों का मिश्रण है ।

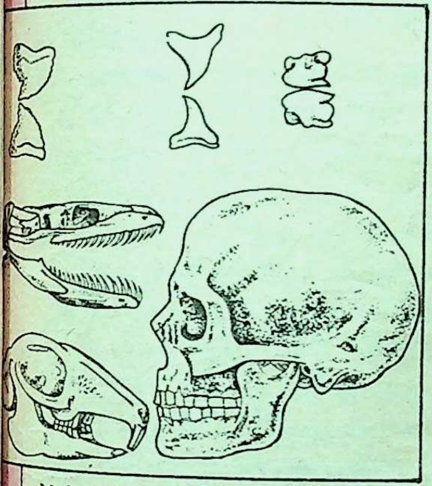

स्वाति शर्मा, कुरुक्षेत्र

★ मनुष्य के लिए कितनी नींद आवश्यक है ?

● इस संबंध में कोई नियम नहीं है, क्योंकि नींद का आनंद हम अपनी दिनचर्या और समय की उपलब्धता के अनुसार उठाते हैं । शिशु सोलह घंटे तक सोते रहते हैं । दो वर्ष के बच्चे बारह घंटे की नींद लेते हैं, तथा सोलह वर्ष के किशोर-किशोरियां यदि आठ-दस घंटे भी सोयें, तो वह अधिक नहीं है । किंतु, औसत प्रौढ़ व्यक्ति के लिए सात से नौ घंटे की नींद आवश्यक बतायी जाती है । यद्यपि, अवस्था बढ़ने पर नींद की अवधि कम हो जाती है ।

राधाकृष्ण मिश्र, बोकारो

★ प्रदक्षिणा और परिक्रमा का क्या अभिप्राय है ?

● सम्मान्य स्थान या व्यक्ति के चारों ओर, उसकी दाहिनी ओर से घूमना, परिक्रमा है । इसे प्रदक्षिणा करना भी कहते हैं, जो षोडशोपचार पूजा का एक अंग है । (हिंदू धर्मकोश)

जगवीर चौहान, रोहतक

★ चीन की जनसंख्या कितनी है ?

● चीन की आबादी, १५ फरवरी, १९९५ को घोषित संख्या के अनुसार १.२ अरब है । यह विश्व की कुल जनसंख्या का २१.४ प्रतिशत है ।

कर्मवीर सिंह, टिहरी गढ़वाल

★ अंतरराष्ट्रीय न्यायालय कहां हैं ?

● हेग, नेदरलैंड्स में ।

चलते-चलते

रोहित जैन

★ पत्नी सात जन्म तक एक ही पति को प्राप्त करने की इच्छा क्यों रखती है ?

● ताकि, वह निरंतर बदला लेती रहे ।

—सूत्रधार

ब्रिटेन के भारतीय और उनकी भाषा

हम सब हिंदी हैं

● सत्येन्द्र श्रीवास्तव

गाड़ी चल चुकी थी । बात चलाने के लिए सामने बैठे यात्री से एक यात्री ने पूछा, 'आप कहां जा रहे हैं ?' उत्तर मिला—'मैं बंबई जा रहा हूं ।' 'और आप ?' 'मैं कलकत्ता जा रहा हूं'—दूसरे यात्री ने जवाब दिया । कुछ देर की खामोशी के बाद पहले यात्री ने कहा : भाई साहब देखिए विज्ञान का कमाल : एक बर्थ बंबई जा रही है, और उसी गाड़ी में दूसरी बर्थ कलकत्ता . . . कक्षा में बैठे आठों विद्यार्थी हंस पड़े । फिर महिला अध्यापिका ने मुड़कर मुझसे कहा, क्लास शुरू करने के पहले हम प्रायः हिंदी में इस तरह के पुराने-नये चुटकुले सुनाते हैं ताकि इन लड़के-लड़कियों की दिलचस्पी हिंदी में बनी रहे । ब्रिटेन में पैदा हुए भारतीय नस्ल के बच्चे भारतीय भाषाओं में कम ही दिलचस्पी रखते हैं । घर पर थोड़ा-बहुत बोलने के अलावा इनके लिए हिंदी या अन्य किसी भाषा को सीखने का आकर्षण परीक्षा में एक और विषय में 'पास' होना भर ही होता है । जिससे वे दिखा सकें कि इन पांच-सात विषयों में उन्होंने सनद प्राप्त कर लिया है ।

यह कलास मैनेचेस्टर के एक सेकेंड्री स्कूल में शनिवार के दिन चलती है । जो महिला हिंदी पढ़ाती हैं, उन्होंने इंगलैंड आने के पहले भारत में हिंदी विषय को लेकर बी. ए. पास किया था । पति विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं, और ये वहीं एक फर्म में काम करती हैं—सुबह नौ बजे से पांच बजे तक । इस स्कूल में शनिवार और रविवार को हिंदी पढ़ाती हैं—यह एक भारतीय सामाजिक केंद्र है, जो मंदिर से जुड़ा हुआ है । उनका ध्येय है कि परीक्षा के बहाने ही सही, पर नयी पीढ़ी के बच्चों में भारतीय भाषाओं और भारत के प्रति प्रेम बनाना उनकी पीढ़ी के लोगों के लिए एक जिम्मेदारी का काम है, जिसको निबाहना जरूरी है । इस तरह के काम में लगी ये अकेली महिला नहीं हैं, बल्कि कितनी ही ऐसी गृहिणियां हैं जो धैर्य और परिश्रम से भारतीय भाषाओं को पढ़ाने का यह 'कठिन' काम कर रही हैं । किसी 'प्रोफेशनल' कारण या पैसे कमाने की दृष्टि से नहीं, केवल अपनी संस्कृति के विस्तार के लिए ।

मैं इन महिलाओं के प्रति नत-मस्तक हूं । महिलाओं के प्रति ही नहीं बल्कि उन सबों के प्रति जो इस तरह का काम, अपना समय देकर, बिना किसी लाभ-हानि की दृष्टि से करते हैं । हिंदी के संदर्भ में यह काम बहुत ही 'मांग करने वाला' और दुरूह है क्योंकि ब्रिटेन में हिंदी का कोई संसदीय क्षेत्र नहीं है । कोई भी ऐसा इलाका नहीं है जिसके बारे में कहा जा सके कि

ब्रिटेन में पैदा हुए भारतीय नस्ल के बच्चे भारतीय भाषाओं में कम ही दिलचस्पी रखते हैं । घर पर थोड़ा-बहुत बोलने के अलावा इनके लिए हिंदी या अन्य किसी भाषा को सीखने का आकर्षण परीक्षा में एक और विषय में 'पास' होना भर ही होता है । जिससे वे दिखा सकें कि इन पांच-सात विषयों में उन्होंने सनद प्राप्त कर लिया है ।

यह वह क्षेत्र है, जहां काफी संख्या में भारतीय बसे हैं—वह हिंदी का क्षेत्र है । जैसा कि कुछ जगहों के बारे में कहा जा सकता है कि यह साउथहॉल है—पंजाबी क्षेत्र या यह लेस्टर है—गुजराती क्षेत्र, या लंदन का टॉवल हैम्लेट बंगाली भाषा का क्षेत्र । हिंदी और उर्दू दो ऐसी भाषाएं हैं, जिसे कुछ न कुछ सभी एशियाई समझ और बोल लेते हैं, पर इन भाषाओं का अपना अलग विशेष क्षेत्र नहीं है ।

हिंदी फिल्में प्रचार का मुख्य माध्यम

यहां के भारतीयों के लिए हिंदी फिल्में मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन हैं, अतः हिंदी भाषा के फैलाव-प्रसार का एक मुख्य माध्यम बन गयीं । भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाएं बोलनेवालों के लिए हिंदी संपर्क की भाषा तो यहां भी होती गयी, विशेषकर उन लोगों के लिए जो अंगरेजी में बात न करके किसी भारतीय भाषा की ही जरूरत पड़ने पर प्रयोग करते हैं । इधर भारत में जो धार्मिक-प्रवृत्तियां बढ़ी हैं उनसे प्रेरित होकर कुछ हिंदुओं ने मंदिरों में हिंदी का पठन-पाठन जरूरी मान लिया है । सबसे समर्थ गुजराती, हिंदी को हमेशा बढ़ावा देते हैं—क्योंकि गुजराती के बाद—हिंदी का जानना राष्ट्रभाषा के प्रति अपना उत्तरदायित्व महसूस करते हैं । काफी संख्या में यहां बसे हिंदू, पंजाबी हिंदी की महत्ता स्वीकार करते हैं । किंतु भारत की राजनीतिक स्थिति और उसके कारणों से 'सिख-पंजाबी' हिंदी को प्रोत्साहित नहीं करते । जहां तक कट्टरपंथी पाकिस्तानी भाइयों का सवाल है, वो हिंदी शब्द का उच्चारण करना भी गलत मानते हैं और भारत की हिंदी फिल्मों को भी 'उर्दू' भाषा की फिल्में कहते हैं ।

हिंदी में रुचि बढ़ रही है

पाकिस्तानी या अन्य मुसलमान लोगों का 'उर्दू' प्रेम सराहनीय है । शायद ही कभी ऐसा हो कि ऐसे किसी व्यक्ति से अगर आप 'उर्दू' में बोलें तो वह उसी भाषा में आपको उत्तर नहीं दे । 'हिंदी' भाषा के साथ ऐसा लगाव कम दिखता है, यद्यपि हिंदी जानने-बोलनेवालों की संख्या बढ़ रही है । यहां तक कि ऐसी दुकानों में भी जिनके कर्मचारी या जिनके मालिक हिंदी भाषी नहीं हैं, वहां भी प्रायः अंगरेजी के बाद हिंदी अर्थात फिल्मों वाली भाषा सुनने को मिलती है । सबसे अच्छी हिंदी, गुजराती, मराठी, कुछ पंजाबी और उन बांग्लादेशी, जिनकी बंगाली में रुचि है, लोगों में सुनने को मिलती है ।

संपर्क की भाषा होने के अलावा भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के बहुत कारण हैं । एक हिंदू हिंदी को अपने सांस्कृतिक जीवन का आवश्यक अंग मानता है । यहां तक कि बहुत से बच्चे पूछने पर अपना धर्म 'हिंदी' बताते पाये गये हैं । उसका कारण यह है कि मंदिरों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जो 'टेक्सट' या उपदेश आदि दिये जाते हैं, वे प्रायः हिंदी में ही होते हैं । यह पूछने पर कि आप ईसाई हैं या मुसलमान ? कुछ बच्चों ने उत्तर दिया कि हम 'हिंदू' हैं । हिंदू पंजाबी जिनकी मातृभाषा पंजाबी है प्रायः यह कहे जाते हुए सुनायी पड़ते हैं कि उनकी असली मातृभाषा हिंदी ही है । इसका मुख्य कारण यही है कि वे उन इलाकों से आकर बसे हुए हैं जहां सांप्रदायिक दंगे-फसाद में प्रायः हिंदी को हिंदुओं की भाषा, उर्दू को मुसलमानों की और पंजाबी को सिख की भाषा मान लिया जाता है ।

धार्मिक अनुष्ठान हिंदी में

चूंकि पंजाबी और गुजराती समुदाय के लोग प्रायः मंदिरों में हिंदी में ही पूजा-पाठ करते हैं, अतः बच्चों का हिंदी सीखना जरूरी हो जाता है । प्रायः संस्कृत के श्लोकों आदि की व्याख्या हिंदी में ही की जाती है । जैसे सत्य साईंबाबा के धार्मिक स्थलों पर, पूजा-पाठ के बाद भी अधिकतर बातचीत हिंदी में ही सुनी जाती है । प्रायः अहिंदी भाषियों द्वारा जो भजन सबसे अधिक गाये जाते हैं वे तुलसी, सूर, मीरा और कबीर के होते हैं । यहां तक भी होता है कि कुछ लोग 'वैष्णव जन तो तेणें कहिए पीर पराई जाणों रे' को भी हिंदी का ही भजन मानते हैं ।

बच्चे सांस्कृतिक और धार्मिक कथा-कहानियां, प्रायः हिंदी उद्धरण के साथ ही सुनते हैं । इससे हिंदी का प्रयोग आवश्यक हो जाता है । कितने ही देवी-देवता, 'हीरो-हीरोइन' तथा राष्ट्रीय नेता हिंदी से जुड़े माने जाते हैं । हिंदी संबंधी अपने सर्वेक्षण के दौरान मैंने कुछ लोगों को यह कहते हुए पाया है कि महात्मा गांधी की मातृभाषा हिंदी थी ।

धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थान समारोहों और विशेष उत्सवों के कार्यक्रम प्रस्तुत करते ही हैं और वहां जो भाषा सबसे अधिक सुनने में आती है, वह हिंदी ही है, गुजराती, गरबा, रास, भांगड़ा जैसे नृत्यों के समय भी हिंदी का माहौल बिलकुल नहीं हो, ऐसा नहीं होता । महाभारत, रामायण, टीपू सुलतान, चाणक्य और मराठा-जैसे सीरियलों को यहां बी. बी. सी. और चैनल फोर पर दिखाया गया है, उससे हिंदी के प्रति लोगों का सम्मान भी बढ़ा है । यद्यपि, यह भी सुना जाता है कि बहुत क्लिष्ट हिंदी न समझनेवाले कहते हैं 'हिंदी बोलो, मैं महाभारत की हिंदी' नहीं समझता ।

विश्वविद्यालयों में हिंदी

ब्रिटेन में तीन विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ायी होती है । कैंब्रिज और लंदन विश्वविद्यालयों में बी. ए., एम. ए., एम. फिल और पी. एच. डी. की डिग्रियों के लिए हिंदी की पढ़ायी होती है । यार्क विश्वविद्यालय में भाषा-विज्ञान के संबंध में हिंदी पढ़ायी जाती है ।

हिंदी छात्रों के सम्मुख नौकरी का संकट

हिंदी की उच्च शिक्षा में जो बात प्रमुख बाधा उत्पन्न करती है वह है डिग्री लेने के बाद उसकी उपयोगिता । हिंदी में डिग्री लिये विद्यार्थियों को काम मिलने में अन्य स्नातकों से ज्यादा कठिनाई होती है, यह कहना सच नहीं माना जा सकता ।

हिंदी के साथ डिग्री प्राप्त लोगों को आम शिक्षण या हिंदी पढ़ाने के अलावा निजी सरकारी संस्थाओं, प्रकाशन-गृहों, बी. बी. सी., ब्रिटेन के विदेशी कार्यालयों जैसी जगहों पर नौकरियां मिल ही जाती हैं ।

भारतीय माता-पिता की तरह एशियाई माता-पिता भी अपने बच्चों को ऐसे उन विषयों की पढ़ायी के लिए ज्यादा बढ़ावा देते हैं जिनमें नौकरी जल्दी से या काम ज्यादा पैसेवाला मिल सके । अभी भी ज्यादा एशियाई माता-पिता यही चाहते हैं कि उनके बच्चे प्रोफेशन, एकाउंटेंट, सिविल सर्वेंट, कंप्यूटरिस्ट आदि बनें । और यही बात है, जो स्कूलों के स्तर पर भी उन्हें हिंदी शिक्षण से वंचित कर देती है । हो यह रहा है कि 'ओ लेवल' की भी परीक्षाएं समाप्त हो रही हैं क्योंकि छात्र परीक्षा में ही नहीं आते । हिंदी के लिए यह दुर्भाग्य की बात है । हिंदी के प्रति उदासीनता का माहौल बढ़ रहा है जबकि उसका बोलचाल की भाषा के स्तर पर प्रसार कम नहीं हो रहा है । बावजूद इसके कि यहां ऐसे भी क्षेत्र हैं जहां एक ही जगह पर बहुत सारे इतालवी या ग्रीक लोग बसे हैं, किंतु इतालियन, ग्रीक, फ्रेंच या जरमन का इंगलैंड में कोई भाषा क्षेत्र हो, ऐसा नहीं लगता, जबकि भारतीय भाषाओं का है और इन लोगों द्वारा जो भाषा सबसे अधिक बोली जाती है, वह हिंदी ही है ।

—फैकल्टी ऑव ओरियंटल स्टडीज
सिडविवक एवेन्यू, कैंब्रिज,
सी. बी. ३, ९ डी. ए. (यू. के.)

हंसिकाएं

दरजी

दरजी प्रेमी हो-तो कृपया ध्यान दें
फटी-फटी...आंखों से उसे न देखें

परदेसी

खिड़की-दरवाजों के परदे जब फट जाएं
परदेसी-परदे-सी... तब हांक लगाएं

कल्पना

कल्पना के क्षेत्र में भी-दरजी अभागा
पौ फटती देखी सीने को भागा

गला

दरजी हो या डॉक्टर— दोनों की एक-सी प्रक्रिया
गला काटा—फिर सी दिया ।

गुण

यों भी आप पाएंगे
दरजी की पीढ़ियों में भी
जेबें काटने के गुण आएंगे

सीना

सीना फटता है...
गीत सुन बिगड़ते हैं...
कहते हैं...ऐसे कच्चे धागे..आखिर-लोग
—प्रयोग क्यों करते हैं...

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

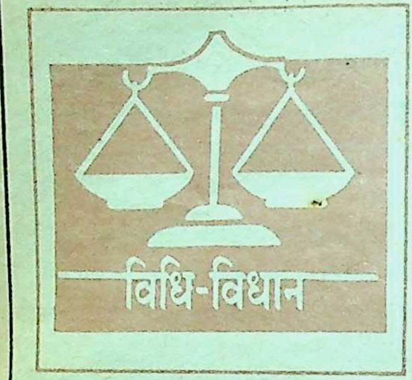

विधि-विधान

मकान के लिए ऋण

अशोक कुमार शर्मा, प्रतापगढ़ : मैं बैंक कर्मचारी हूं। मकान बनाने के लिए ऋण लेना चाहता हूं। पहले पुराना घर था। उसके आधे भाग में पड़ी जमीन पर मुझे मकान बनवाना है। वह जगह पिता के नाम पर है तथा मेरे अन्य दो भाई भी हैं। यदि पिता वह जमीन उपहारस्वरूप मुझे भेंट कर दें, तो क्या बैंक से ऋण उस जमीन को आधार बनाकर मिल सकता है। भाइयों को कोई आपत्ति नहीं है। प्रक्रिया भी अवगत करायें।

आपके पिता जमीन और मकान के स्वामी हैं। प्रश्न यह है कि आप ऋण किसके नाम से लेना चाहते हैं। ऋण आपके पिताजी के नाम से भी लिया जा सकता है। परंतु यदि ऋण आप अपने नाम से लेना चाहते हैं, तब यह आवश्यक है कि बनाया जानेवाला मकान, जिसके निर्माण हेतु ऋण लिया जा रहा है, आपके नाम हो। पिता को भवन तथा जमीन उपहारस्वरूप आपको देने का अधिकार है। इसके लिए उपहार प्रपत्र लिखकर उसका पंजीकरण करवाना आवश्यक है। नियमानुसार उपहार प्रपत्र लिखे जाने के बाद आप उस संपत्ति के स्वामी हो जाएंगे और उसके बाद ऋण की प्रक्रिया बैंक के निर्णयानुसार की जा सकेगी।

घरवाले राजी नहीं

हरिप्रसाद, दरभंगा : मैं प्रबंधन का विद्यार्थी हूं। मैंने दिसंबर '९३ में घरवालों से छिपकर एक विजातीय लड़की से 'कोर्ट मैरिज' की है। पत्नी अपने घर पर ही है। हमारी शादी की बात सिर्फ गवाह ही जानते हैं। अब मैं अपनी पत्नी को अपने पास रखना चाहता हूं। शादी का रहस्य खुला तो निश्चित दोनों घरों से अनबन होगी। पत्नी के घरवाले मुझे परेशान करने की कोशिश करेंगे। बताइए, हम किस तरह अब एक होकर रह सकते हैं?

विशेष विवाह अधिनियम के अंतर्गत विवाह करने के उपरांत आपकी पत्नी का अपने माता-पिता के साथ रहने के कारण, आप दोनों का पति-पत्नी का संबंध समाप्त नहीं होता। आपके पास विवाह का प्रमाणपत्र होगा। इस प्रमाणपत्र के रहते पुलिस आपको परेशान नहीं कर सकती।

आपकी पत्नी आपके पास आने का प्रयास करे तथा उसके मार्ग में यदि कोई अवरोध पैदा करे तो आप न्यायालय की शरण में जाकर वह रोक हटवाने का आवेदन कर सकते हैं। केवल संशय के आधार पर न्यायालय जाना उचित नहीं।

पिता के मकान में हक

पवन कुमार, भटिंडा : मैं अपने पिता के मकान में रहता हूं। हम चार भाई हैं। मेरे पिता मुझे मकान खाली करने को कहते हैं। मुझे वे जायदाद या मकान में से कोई हिस्सा नहीं देना चाहते। क्या मैं पिता के न चाहने पर भी मकान व जायदाद में से

हिस्सा लेने का कानूनी हक रखता हूं । क्या मैं बिना हिस्सा लिये मकान खाली कर दूं । हिस्सा लेने के लिए क्या करना चाहिए ।

मकान आपके पिताजी का है । उसमें आप उनकी अनुमति के आधार पर रह रहे हैं । पिताजी के न चाहने पर आपको मकान में रहने का अधिकार नहीं है । अपने पिताजी की इच्छा से ही आप मकान में हिस्सा ले सकते हैं । उनके न चाहने पर मकान या संपत्ति में आपको हिस्सा नहीं मिल सकता । मकान में हिस्सा लेने के लिए आप कानूनी कार्यवाही नहीं कर सकते । आपके पिता मकान के स्वामी हैं और आपको उसका कोई भाग देना या नहीं देना उनकी इच्छा पर निर्भर करता है ।

अंक कितने होंगे

क-ख-ग गाजियाबाद : मैं हरिजन युवक हूं । वर्तमान में मध्यप्रदेश शासन में तृतीय श्रेणी कर्मचारी हूं । मैंने उत्तर प्रदेश में राज्य लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक परीक्षा आरक्षण का लाभ उठाते हुए पास की लेकिन वर्तमान जातीय समस्या को देखते हुए मैंने आरक्षण का लाभ उठाने का विचार निकाल दिया । मैंने जो प्रारंभिक परीक्षा पास की है, उसमें मेरे नंबर सामान्य परीक्षार्थी के बराबर आये होंगे या नहीं । इस जानकारी के लिए मैं क्या करूं । इसके अतिरिक्त मैंने मुख्य परीक्षा का आवेदनपत्र जातीय प्रमाणपत्र लगाकर भर दिया है ।

प्रारंभिक परीक्षा आरक्षण का लाभ उठाते हुए पास की । इस परिस्थिति में आप आरक्षित श्रेणी के परीक्षार्थी ही माने जाएंगे । आपको कितने अंक प्राप्त हुए तथा सामान्य परीक्षार्थी को कितने अंक प्राप्त हुए, यह जानकारी आप उत्तर प्रदेश राज्य लोक सेवा आयोग से प्राप्त कर सकते हैं । मुख्य परीक्षा का आवेदन आप जातीय प्रमाणपत्र देकर भर चुके हैं । प्रारंभिक परीक्षा जातीय प्रमाणपत्र के आधार पर उत्तीर्ण करने के बाद आप उसका लाभ जातीय आरक्षण के आधार पर ही ले सकते हैं ।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —

रामप्रकाश गुप्त

विक्रय-पत्र नहीं देते

बीरी सिंह, अलीगढ़ : आज से सत्रह वर्ष पूर्व मैंने घर बनाने के लिए जमीन क्रय की । क्रय मूल्य कुछ साक्षियों के समक्ष अदा कर दिया गया लेकिन जमीन का विक्रय-पत्र न तो लिखा गया और न रजिस्टर्ड हुआ था । विक्रेता विक्रय-पत्र के निष्पादन को लगातार टालता रहा । मैंने उक्त भूखंड पर अपना मकान बना कर पिछले सत्रह वर्षों से उसमें रह रहा हूं । मैं जब कभी विक्रय-पत्र के लिए विक्रेता से कहता हूं तो वह टाल देता है । बताइए कि क्या उसे विक्रय-पत्र के निष्पादन के लिए कानूनन बाध्य किया जा सकता है ?

अब आप भूमि विक्रय-पत्र बनवाने के लिए न्यायालय के द्वारा विक्रेता को बाध्य नहीं कर सकते । आप लगातार सत्रह वर्ष से मकान बनाकर उसमें स्वामी के रूप में रह रहे हैं तथा आपके इस अधिकार का किसी ने विरोध नहीं किया । इस स्थिति में आप बारह वर्ष से अधिक समय तक निरंतर कब्जे के आधार पर संपत्ति के स्वतः ही स्वामी हो गये हैं ।

कर्ज की वापसी कैसे

अ. ब. स. (बिहार) एक पड़ोसी ने मेरे पिताजी से काफी कर्ज लिया, जो मौखिक था । मेरे पिताजी ने मरने से पूर्व इस बात का खुलासा करते हुए बताया कि अमुक पड़ोसी ने कर्ज के रूप में तीन लाख आठ हजार रुपये लिये हैं । वाक्‌चातुर्य पड़ोसी ने मेरे पिताजी के सीधेपन का नाजायज फायदा उठाया । कर्ज मांगने पर वह साफ मुकर गया । ठोस प्रमाण के अभाव में मैं भी खामोश रहा । पर एक दिन पासा एकदम पलट गया । पड़ोसी ने अपने बालिग एवं बदचलन बेटों से तबाह होकर मेरे सामने कर्ज की असलियत खोल दी, और फिर एक सादे कागज पर अंगूठे का निशान लगाकर मुझे दे दिया । बाद में उसने आत्महत्या कर ली । अब उसकी संपत्ति पर मेरा अधिकार कैसे हो सकता है ? मेरी समझ में उसके कुछ पैसे बैंक में होंगे, जिसमें उसने दूसरे उत्तराधिकारी के रूप में अपनी पत्नी का नाम दर्ज कराया होगा । मुझे क्या करना चाहिए, ताकि मेरे रुपये निकल सकें ?

सादे कागज पर अंगूठे का निशान, लगवाकर आप क्या प्रमाणित करना चाहते हैं । उसे यह तो नहीं माना जा सकता कि उक्त व्यक्ति ने आपके पिताजी से ऋण लिया था तथा उसको उसने स्वीकार किया है । ऋण वसूली के लिए प्रमाण की आवश्यकता है और प्रमाण का लिखित होना आवश्यक नहीं । यदि आप ऋण देने की बात प्रमाणित कर सकें और वह ऋण वसूली की समय सीमा में हो तो आप निश्चित रूप से ऋण वापिसी की कार्रवाई कर सकते हैं ।

उत्तराधिकारी को उक्त व्यक्ति के देय ऋण को अदा करने का दायित्व भी निभाना पड़ेगा । यह ठीक है कि यह दायित्व उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति की मूल्य सीमा तक सीमित हो ।

बेटों का विरोध सामान्य है । अधिकार प्रमाणित होने पर उनका विरोध न्यायालय में कारगर नहीं होगा ।

स्टे कहां से मिलेगा

प्रकाशचंद ; पिथौरागढ़ : मैं उत्तर प्रदेश सरकार के एक प्रतिष्ठान में वरिष्ठ अवर अभियंता के पद पर कार्यरत हूं । निकट भविष्य में सहायक अभियंता का पद रिक्त होने वाला है । मैं इस संबंध में विभागाध्यक्ष को लगातार लिख रहा हूं, परंतु अब तक संतोषजनक उत्तर नहीं मिला । पूछने पर कार्यालय द्वारा बताया गया कि मेरी 'ए. सी. आर.' खराब है । मुझे आशंका है कि कहीं इस पद पर कनिष्ठ अवर अभियंता की प्रोन्नति न हो जाए । क्या मुझे न्यायालय जाना चाहिए ? किस न्यायालय से स्टे मिल सकता है ?

आप वरिष्ठ अवर अभियंता है तथा आपको चयनित वेतनमान भी मिल चुका है और इसी आधार पर आप को अब तक की प्रक्रिया पर कोई आपत्ति नहीं है । सहायक अभियंता का पद अभी रिक्त नहीं है—इसलिए उस पद पर प्रोन्नति का प्रश्न ही नहीं उठता । उक्त पद के लिए चयन की प्रक्रिया प्रारंभ होने के बाद यदि आपको उस चयन प्रक्रिया में सम्मिलित नहीं किया जाता, तभी वरिष्ठता भंग होने का आरोप आप मांग सकते हैं ।

यदि विभाग आपकी वरिष्ठता को उपेक्षित करते हुए चयन प्रक्रिया में आपका नाम सम्मिलित न करे या चयन में किसी अन्य नियुक्ति नियम का उल्लंघन हो तो आप अपने अधिकार की रक्षा के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय में समादेश याचिका प्रस्तुत कर सकते हैं तथा विभाग को नियुक्ति नियमों का पालन करने का आदेश देने की प्रार्थना कर सकते हैं ।

युवतियों की समझ के द्वार खोलिए

● डॉ. आयुशी कुलकर्णी

पुरुष और स्त्री प्रकृति के महत्त्वपूर्ण अवयव हैं । दोनों का अपना क्षेत्र है । दुर्भाग्य से हमारे देश में लड़कियों को हीन दृष्टि से देखा जाता है और लड़के तथा लड़कियों को किसी तरह का शारीरिक ज्ञान नहीं दिया जाता । स्वीडन-जैसे देश में तो पाठ पढ़ाया जाता है, 'डैड हाऊ वाज आई बोर्न ।' इसके बाद संपूर्ण शरीर रचना से उन्हें परिचित करा दिया जाता है । हमारे देश में लड़कियों को बचपन से ही ऐसे सामाजिक और मानसिक ढांचे में फिट कर दिया जाता है कि वह रूढ़िवादिता और अज्ञान के अंधकार से बाहर नहीं निकल पातीं । बचपन से उसे लड़कों से अलग, यह एहसास कराया जाता है कि वह लड़की है । उसके उछलने-कूदने और स्वतंत्रता पर पहरा लगा दिया जाता है । बचपन से जवानी की दहलीज चढ़ती युवतियों को उनके भीतर और बाहर होनेवाले परिवर्तन के बारे में समझाना तो दूर, डांटकर चुप करा दिया जाता है । तर्क होता है धीरे-धीरे सब समझ जाएगी । हमें भी किसने समझाया था । वह (मां) यह भूल जाती हैं कि तब और अब में बहुत अंतर आ चुका है । पहले लड़की केवल घर तक सीमित थी, जबकि आज जीवन के हर क्षेत्र में वह बराबरी से काम कर रही है ।

मां को समझदार होना चाहिए

परिवार में कमाऊ पिता का होना जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक है एक

समझदार मां का होना। मां के इस समझदार रूप को विकसित करने में युवावस्था के दौरान हुए परिवर्तन बहुत महत्त्व रखते हैं। इस समय किसी भी युवती को अगर उचित मार्गदर्शन न मिले, तो उसका स्वस्थ शारीरिक तथा मानसिक विकास नहीं हो पाता।

किशोरावस्था वह अवस्था होती है जब कद और वजन तेजी से बढ़ने लगता है। यौन ग्रंथियों का बनना प्रारंभ हो जाता है। प्रथम ऋतु स्राव से दो साल पहले यह परिवर्तन तीव्रता से होने लगते हैं। ऋतु-स्राव संबंधी परिवर्तन से कुछ माह पूर्व वजन बहुत शीघ्रता से बढ़ने लगता है।

प्रायः सोलह से इक्कीस वर्ष की आयु के मध्य लड़कियां अपने कद और शारीरिक विकास की पूर्णता प्राप्त कर लेती हैं।

उत्सुकता और आकर्षण

इस अवस्था में यौन संबंधी उत्सुकता जागने लगती है। लड़कियों में लड़कों के प्रति गहरा आकर्षण पनपने लगता है। लड़कों की संगत में रहना अच्छा लगने लगता है। इस अवस्था में इच्छाएं प्रबल होती हैं। डॉक्टरों ने लड़कियों के लिए कुछ व्यायाम भी बताये हैं, जिनके करने से लड़कियां अपनी यौन संबंधी इच्छाओं पर काबू पा सकती हैं।

अल्पवयस्कता की इस उम्र में मानसिक और भावनात्मक अपरिपक्वता के फलस्वरूप यौन संबंधी जटिलताएं भी सामने आती हैं। अक्सर यह भी देखने में आता है कि लड़कियों द्वारा अपनी 'इच्छा' का बलपूर्वक दमन करना उनके मानसिक और शारीरिक विकास पर विपरीत असर डालता है। युवतियों को चाहिए कि वे खुली और सही तौर पर आपस में चर्चा करें। उनको निर्णय लेने की योग्यता और क्षमता का विकास करना होगा। ताकि जब वह किसी युवक के साथ हों, तब वे यह अनुभव कर सकें कि इस समय वे किसी बलशाली व्यक्ति के साथ हैं और सुरक्षित हैं।

दोनों में क्या अंतर है!

स्त्री और पुरुष का मनोविज्ञान कई रूपों में अलग है।

- कोई भी स्त्री आसानी से अपने को व्यक्त नहीं करती जबकि पुरुष व्यक्त कर देता है और उत्तेजित भी हो जाता है।
- स्त्री पहले प्यार करती है। उसके बाद संबंध स्थापित करती है जबकि पुरुष आरंभ से ही गहरे संबंध करना चाहता है। उसके लिए प्यार कोई महत्त्वपूर्ण पक्ष नहीं है।
- इस प्रकार के संबंधों में स्त्री पुरुष के प्रति अधिक समर्पित होती है, पुरुष पूरी तरह समर्पण नहीं करता।
- महिलाएं संयत होती हैं, जबकि पुरुष संयम का इतना ध्यान नहीं करता।
- प्रेम के क्षणों में व्यवधान आसानी से स्त्री में अनिच्छा पैदा कर देता है जबकि पुरुष कतई विचलित नहीं होता।

परिवर्तन और आकर्षण-प्राकृतिक है

कई बार युवतियां इस बात को लेकर बहुत चिंतित हो जाती हैं कि उनकी दूसरी सहेलियां उसकी अपेक्षा अधिक शीघ्रता से विकसित हो रही हैं। विकास की प्रक्रिया हर युवती में अलग-अलग होती है। किसी-किसी युवती में ऋतु-स्राव चक्र ग्यारह-बारह वर्ष की आयु में ही प्रारंभ हो जाता है। किसी-किसी में यह

पंद्रह-सोलह वर्ष की आयु में शुरू हो जाता है जबकि सामान्यतः यह तेरह वर्ष की आयु में आरंभ होता है । युवतियों के विकास में ऋतु-स्राव चक्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है । यह सब परिवर्तन प्रत्येक युवती में समान रूप से होते हैं । इसके बावजूद इस समय युवतियां अपने आपको बहुत असुरक्षित महसूस करती हैं । उन्हें इस परिवर्तन के संबंध में सही-सही जानकारी देना जरूरी है । उन्हें बताना चाहिए कि यह परिवर्तन उनकी चिंता का कारण नहीं है । आमतौर पर आयु के इस पड़ाव में हर युवक-युवती के मन में एक प्रबल उत्कंठा होती है । उन्हें अपने प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर चाहिए होते हैं । वे जानना चाहते हैं कि बच्चे के जन्म में माता-पिता की क्या भूमिका है । जब इन सब प्रश्नों के उत्तर उन्हें अपने 'बड़ों' से नहीं मिल पाते, तो वे अपने ढंग से, इधर-उधर से इनके उत्तर ढूंढ़ते हैं । होता यह है कि इनका यह अधकचरा ज्ञान इनकी सोच, कार्यात्मक क्षमता और व्यक्तित्व पर विपरीत असर डालता है । युवा होते युवक-युवतियों के सही विकास और सोच के लिए उन्हें यौन-शिक्षा देना जरूरी है ।

पुरुष गंध

स्त्रियों का पुरुषों के प्रति आकर्षित होने का कारण पुरुषों की 'विशिष्ट गंध' होती है । हाल ही में किये गये एक शोध में यह बात सामने आयी । शोध के दौरान कुछ पुरुषों को एक खास तरह की टी-शर्ट पहनकर सोने को कहा गया । ताकि उनकी मूल गंध टी-शर्ट में समा सके । अगले दिन उन टी-शर्टों को छेद वाले संदूक में रख दिया गया और औरतों से उसे सूंघने को कहा गया । महिलाओं के प्रश्नों के आधार पर शोधकर्ता ने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रायः महिलाएं विपरीत अनुवांशिक पुरुष गंध पसंद करती हैं । विवाह के बाद अक्सर औरतें अपने रखरखाव में अपनी उपेक्षा करने लगती हैं । चाहे कपड़ा पहनना हो या शारीरिक सौंदर्य हो । उसका परिणाम यह होता है कि जब पुरुष को कोई सुंदर लड़की दिखती है तो वह उसके प्रति आकर्षित होने लगता है । अतः विवाह के बाद भी युवतियां अपनी सौंदर्य रक्षा के प्रति सतर्क रहें ।

अनचाहे बाल

महिलाओं में अनचाहे बालों की समस्या अक्सर देखने में आती है । चेहरे, टांगों और शरीर के दूसरे अंगों में अधिक मात्रा में बालों का निकलना 'हारमोंस' की अनियमितता के कारण होता है । डॉक्टर इस समस्या को गंभीर नहीं मानते, लेकिन युवतियों के लिए यह गंभीर समस्या है । कुछ युवतियां अज्ञानवश इस समस्या से बचने के लिए 'अनचाहे बालों' को 'रेजर' से हटाती हैं । जो गलत है । रेजर से बालों को हटाने पर उस स्थान पर और भी सख्त बाल निकल आते हैं । स्थायी रूप से बालों को

हटाने के लिए आजकल 'इलैक्ट्रोलाइसिस-पद्धति' बहुत प्रचलित है । यह पद्धति काफी खर्चीली है । 'वैक्सिंग' द्वारा भी अनचाहे बालों से छुटकारा पाया जा सकता है । इन सब उपायों को आजमाने पर कुछ युवतियों ने त्वचा संबंधी बीमारियों के उत्पन्न होने की भी शिकायत की है ।

चेहरे की सुंदरता

चेहरा शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग है । देखनेवाले की प्रथम दृष्टि चेहरे पर ही जाती है । कुछ युवतियां 'मेक-अप' का अर्थ चेहरे पर क्रीम-पावडर, लिपस्टिक लगा लेना भर मानती हैं । इससे वह समाज में प्रशंसा तो नहीं, हंसी की पात्र अवश्य बनती हैं ।

तैलीय त्वचा पर धूल वगैरह जल्दी जमती है । आप जब घर से बाहर निकलते हैं, तो रास्ते में उड़ता धुआं, धूल आपके चेहरे पर बैठ जाती है । जिससे चेहरे पर 'मुंहासे' और दूसरे त्वचा संबंधी रोग हो जाते हैं । इन सबसे बचने का सबसे आसान और हानिरहित उपाय है—आप अपने चेहरे को दिन में चार-पांच बार साबुन से धोयें ।

सरदियों के मौसम में त्वचा सूखी और कटी-फटी-सी हो जाती है । इससे बचने के लिए आप चेहरे पर क्रीम लगा सकती हैं । रात को सोने से पहले चेहरे पर ग्लीसरीन और नींबू के मिश्रण को लगायें और सुबह उठकर चेहरे को धो लें । इससे त्वचा में निखार आता है ।

सुंदर और मजबूत दांत

चेहरे की सुंदरता को बनाये रखने में दांतों की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है । दांतों को स्वस्थ और सुंदर बनाने के लिए दिन में दो बार (सुबह-शाम) मंजन करें । दिन में जब भी कुछ खायें, तत्पश्चात दांत अवश्य साफ करें । अधिक गरम और अधिक ठंडी चीजें दांतों को नुकसान पहुंचाती हैं । इस बात को ध्यान में रखें । साल में एक बार किसी दंत-चिकित्सक से अपने दांतों का निरीक्षण अवश्य करवायें ।

मोटापा घटायें

स्वस्थ और बलिष्ठ शरीर के लिए आवश्यक है कि हम संतुलित आहार लें । लड़कियां कुछ ज्यादा ही खाने की शौकीन होती हैं । जिसका परिणाम होता है—मोटापा । विवाह के पश्चात प्रायः स्त्रियां मोटी हो जाती हैं । वो सोचती हैं, अब किसके लिए सजे-संवरे । विवाह तो हो ही चुका है । औरतों की यह मानसिकता स्वयं उनके लिए बहुत घातक होती है । सौंदर्य के प्रति इस उदासीनता से उनके पति दूसरी औरतों के प्रति आकर्षित होते हैं । परिणाम—परिवार में कलह और टूटन ।

पुरुष प्रायः सामाजिक व्यवहार के बहाने अधिक 'खाते' और 'पीते' हैं । जिससे वे मोटापे के शिकार हो जाते हैं ।

इस स्थिति से बचने के लिए संतुलित आहार लेना चाहिए । अधिक चिकनाई युक्त भोजन, मिठाई, मांस आदि का प्रयोग नहीं

प्राथमिक उपचार की वस्तुएं

जीवाणुनाशक
- चोट को साबुन से साफ करें ।
- टिंचर
- डेटॉल
- माइथेलेटिड स्प्रिट

सामान्य जलन के लिए
- सोडियम बाइकार्बोनेट
- गेज (सीलबंद पैकेट, १/३, १ और २ इंच)
- बरनॉल

सामान्य दवाएं
- पैरासेटामल २०० मि.ग्रा.
- ऐंटीपिसटेमाइन (एंटी एलर्जी)
- दर्दनिवारक

सामान्य जुकाम की दवाएं
- टिंचर बेनजाइन
- विक्स वेपोरब
- विक्स वेपोराइजर

सरदी-जुकाम
- ऐसप्रिन
- ऐविल २५ मि. ग्रा.

मलहम
- लेनोलिन (कोल्ड क्रीम युक्त)
- जिंक ऑक्साइड क्रीम
- वेसलीन
- कैलेमाइन लोशन

साधारण मोच
- क्रेप बैंडिज (१, १/२ इंच)
- गेज बैंडिज (३ नंबर)
- छोटी कैंची

करना चाहिए । शारीरिक व्यायाम भी शरीर को स्वस्थ रखते हैं । प्रतिदिन अपनी क्षमता के अनुसार पैदल अवश्य चलें ।

कानूनी अधिकार और संरक्षण : महत्त्वपूर्व अधिनियम

दहेज निषेध संशोधन अधिनियम १९८६

दहेज की परिभाषा शादी अथवा विवाह के समय मांगी जानेवाली रकम अथवा संपत्ति के रूप में की गयी है । कानून ने शादी के साथ संबंधित लेन-देन को भी दहेज माना है । शादी के समय जो उपहार दिये जाते हैं, कानून ने उसकी समूची सूची बनाने की भी बात कही है और कहा है कि उपहार भी एक परंपरागत प्रवृत्ति के होने चाहिए तथा उनकी क़ीमत अत्यधिक नहीं होनी चाहिए ।

अधिक दहेज की मांग करने पर पीड़ित महिला अथवा महिला संगठन अदालत में शिकायत दर्ज करा सकते हैं । विवाह के सात वर्षों के भीतर सामान्य घटनाक्रम में हुई मृत्यु के अतिरिक्त अन्य संदेहास्पद मृत्यु को 'दहेज के कारण मृत्यु' के रूप में माना जाएगा और इसमें गैरजमानती तथा अक्षम्य अपराध के रूप में दंडित करने का प्रावधान है ।

भारतीय साक्ष्य अधिनियम १९८३

पति अथवा पति के रिश्तेदारों अथवा संबंधियों द्वारा मानसिक एवं शारीरिक यातना के कारण की गयी आत्महत्या को जेल तथा अर्थदंड के साथ अत्यंत दंडनीय अपराध माना गया है । विवाह के सात वर्ष के भीतर महिला

की मृत्यु पर पुलिस अधिकारी जांच कर सकता है तथा शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज सकता है ।

परिवार अदालत अधिनियम १९८४

इस कानून के तहत परिवार अदालतें वैवाहिक विवादों का निपटारा कर सकती हैं । अदालत सामाजिक कार्यकर्ताओं, विशेषज्ञों, मनोचिकित्सकों तथा पंजीकृत संस्थाओं की मदद विवाद को निपटाने के लिए ले सकती है । अदालत की बहुत ही कम औपचारिक प्रक्रियाएं हैं तथा यह अपने ही नियमों को लागू करने के लिए स्वतंत्र है । माता-पिता, बच्चों तथा पत्नियों को गुजारे-भत्ते के लिए आदेश देना इन अदालतों के अधिकार क्षेत्र में है ।

विशेष विवाह अधिनियम एवं हिंदू विवाह अधिनियम

विशेष विवाह अधिनियम के तहत आठ ऐसे आधार बताये गये हैं जिनके आधार पर पति या पत्नी तलाक ले सकते हैं । व्यभिचार, पलायन, अत्याचार तथा मानसिक रोग उनमें से कुछ प्रमुख आधार हैं । हिंदू विवाह अधिनियम में हालांकि तलाक के लिए सात आधार हैं जिनमें व्यभिचार, गैर हिंदू धर्म में परिवर्तन, उन्माद तथा संन्यास । दोनों कानूनों में परस्पर सहमति के आधार पर तलाक की भी व्यवस्था है ।

विवाहविच्छेद : गुजारे का भुगतान

हिंदू विवाह अधिनियम के अनुच्छेद २५ के तहत विवाह विच्छेद पति अथवा पत्नी दोनों पर बच्चों के पालन-पोषण तथा स्थायी गुजारा भत्ता की व्यवस्था है । फिर भी, अन्य भारतीय विवाह कानूनों के अंतर्गत इसका दावा केवल पत्नियां ही कर सकती हैं । अदालत इस कानून के तहत दूसरे पक्ष को एकमुश्त रकम अथवा मासिक रकम भुगतान व्यवस्था कर सकती है । ऐसे आदेश पुनर्विवाह की स्थिति में अप्रभावी हो जाते हैं । यदि तलाक की याचिका खारिज हो जाती है तो गुजारे के लिए कोई भी आदेश पुनर्विवाह की स्थिति में अप्रभावी हो जाते हैं । यदि तलाक की याचिका खारिज हो जाती है तो गुजारे के लिए कोई भी आदेश नहीं दिया जा सकता । यदि पत्नी नौकरी करती है और पति नहीं कमाता तो विवाह-विच्छेद के बाद पत्नी पति को गुजारा भत्ता देती है ।

समान पारिश्रमिक अधिनियम १९७६

इस कानून के अंतर्गत नियोक्ता को एक ही काम के लिए अथवा समान काम के लिए पुरुष एवं महिला कर्मचारियों को एक समान पारिश्रमिक देने की बाध्यता है । कानून ने पुरुष एवं महिला कर्मचारियों की भरती के समय लिंग के आधार पर भेदभाव की अनुमति नहीं दी है ।

बलात्कार विरोधी अधिनियम १९८३

बलात्कार कानून में संशोधन के बाद यह व्यवस्था कर दी गयी है कि ऐसी महिला का नाम गोपनीय रखना चाहिए । जेल, रिमांड गृहों अथवा अस्पतालों आदि जैसे संरक्षण क्षेत्र में बलात्कार के मामले में प्रमाण की जिम्मेदारी पुरुष पर डाली गयी है और यदि एक महिला यह बयान देती है कि उसमें उसकी सहमति नहीं थी तो अदालत उसके बयान पर भरोसा करती है । ●

पुरस्कृत कहानियां

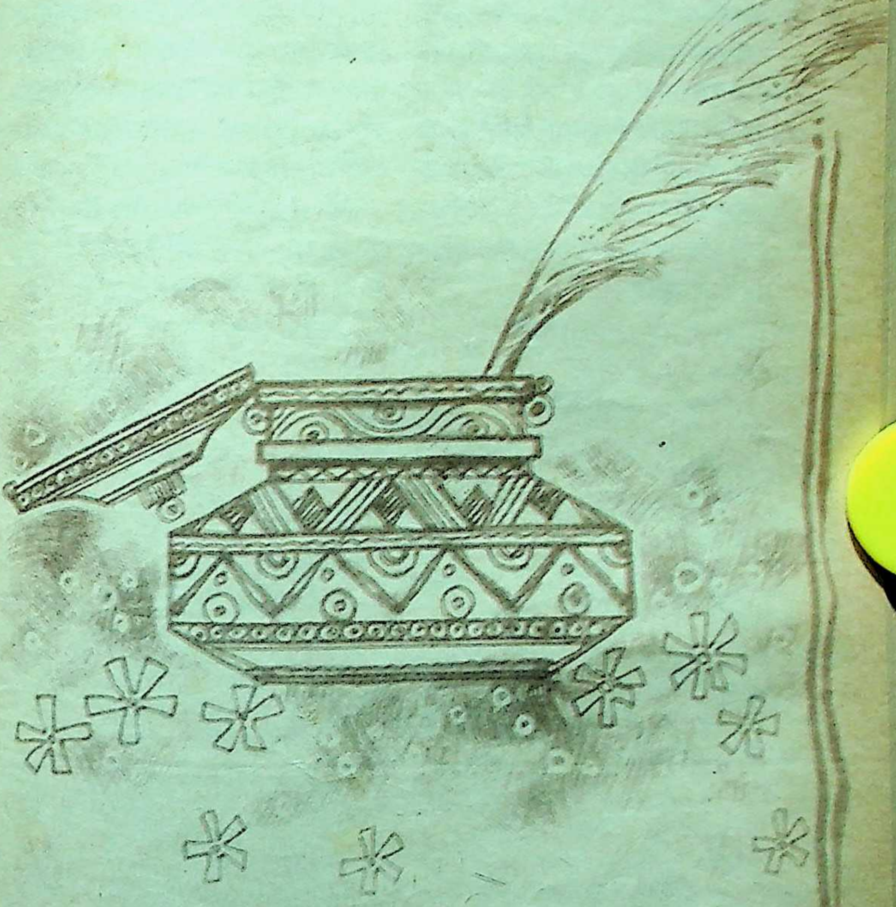

देहरादून में आयोजित आठवें कादम्बिनी महोत्सव के अंतर्गत संपन्न कहानी लेखन प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित कहानियां

थक तो बहुत गया, पर चूल्हा तो जलाना ही है, गुमान सिंह अनमयस्क भाव से कंडी पीठ पर लादे गुण मुण-गुण मुण अपने से ही बातें करता घर की ओर आ रहा था । परेशान तो मैं जीवनभर रहा, पर अब लड़का, बहू ही कौन-सा मुझे अधिक सहारा दे रहे हैं, पढ़-लिखकर समाज सेवा करने निकले हैं, पर यह नहीं पता उन्हें कि अपना ही पेट खाली हो तो दूसरों की चिंता कैसी ?

कंडी देहरी पर बिछाकर गुमान सिंह चूल्हे में लकड़ियों को झोंकते हुए तरतीब से उनके बीच घुल्ले रख रहा था , धुंएं की धार उसकी छितरी दाढ़ी पर बिखरकर गुम होती जा रही थी । आंसुओं की पिरपराहट उसे पल भर सुस्ताने के लिए जोर दे रही थी । गुमान सिंह वहां से उठकर अपने नारियल हुक्के में गुड़-गुड़ कर पानी भर रहा था तथा ज्यादा भरे पानी को फू-फू कर बाहर उड़ेल रहा था, और सुस्ता रहा था लकड़ी के अंगारे बनने तक ।

इतने ही में उसे पड़ोस में रेडियो पर बज रहा गीत— 'मेरे देश की धरती, सोना उगले' सुनायी दिया । वो अपने से ही बातें कर रहा

कहानी

प्रथम पुरस्कार

"दस मरे, सैकड़ों घायल"

• कालिका चमोला

था— नहीं ऐसा नहीं है । मेरा देश देखा ही कितने लोगों ने । अरे ये देशवाले तो फुर्र गाड़ियों में आये और यात्रा कर वापस, मेरे मुल्क की धरती तो नहीं सोना उगल रही । यदि ऐसा होता तो ये पहाड़ी जवान क्यों सोने का खजाना ढूंढ़ने जाते शहरों में ? तभी उसे सुनायी दिया आज का मुख्य समाचार— ''हजारों की संख्या में प्रदर्शनकारियों को काबू करने के लिए पुलिस ने गोलियां चलायीं जिसमें कम-से-कम दस मरे, सैकड़ों घायल हो गये ।''

तंबाकू तो गुमान सिंह खींच ही रहा था, यह सुनकर उसके मुंह से क्षीण-सी आवाज 'आह' बाहर निकल पड़ी तथा गले में अटका तंबाकू एकदम फ्रीज हो गया । ''मैंने कह दिया था, संभलकर जाना । उन कमबखतों का कोई भरोसा नहीं, मैं भी पिछली बार जब गया था जुलूस में, मुझे भी लग रहा था कि वे एक खूंखार भेड़िये की तरह सिर्फ दाढ़ खुलने की इंतजारी में हैं । शायद आज उनकी दाढ़ खुल गयी ।

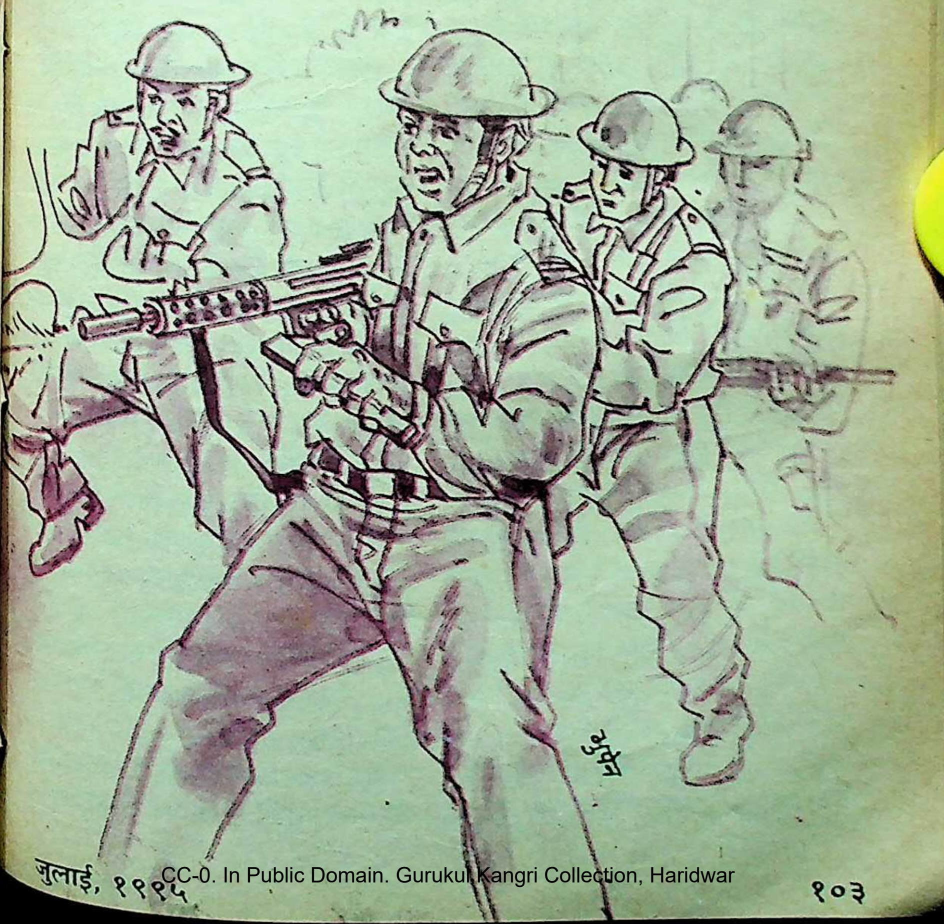

मेरे मुल्क की धरती तो नहीं सोना उगल रही । यदि ऐसा होता तो पहाड़ी जवान क्यों सोने का खजाना ढूंढ़ने जाते शहरों में ? तभी उसे सुनायी दिया आज का मुख्य समाचार— "हजारों की संख्या में प्रदर्शनकारियों को काबू करने के लिए पुलिस ने गोलियां चलायीं जिसमें कम-से-कम दस मरे, सैकड़ों घायल हो गये ।"

गांव से दूर दो परिवारों का अकेला मकान ।

रेडियो बचनसिंह का बज रहा था । आजकल फौज से छुट्टियों में घर आया हुआ है । खबर सुनकर वह भी अत्यंत चिंतित हो गया, लेकिन उसे राहत मिल रही थी तो सिर्फ इस बात से कि अभी काका को पता नहीं है । पता उसे भी था कि रतन भाई व बहू (बुआरी) भी वहां गये हैं और घर में अकेले काका ही हैं । उसे फिक्र थी तो सिर्फ इस बात की कि काका को बताऊं या नहीं, यदि मैं नहीं भी बताता हूं, फिर भी इस खबर को पूरी उग्रता के साथ संपूर्ण वातावरण में अंधड़ बनकर फैलना है । और फिर काका कह सकते हैं कि उसने मुझे नहीं बताया । वह इसी उधेड़बुन में पड़ा हुआ था कि उसका बच्चा दौड़कर अपनी मुट्ठियां हवा में हिलाते हुए कहने लगा, 'पापा, आज दो, अभी दो ।'

बचनसिंह धीरे-से उसके बाल सहलाते हुए अपने से ही कह रहा था कि दे दिया बाबू, आज ही, अभी, और उसका गुस्सा भी माहौल के तापक्रम से वाष्पीकृत होकर ऊपर उठ रहा था । वह अपने होंठों के बीच सिर्फ यही बुदबुदा रहा था— "हैं तो साले, आदमखोर ही ।"

गुमान सिंह अब तक चौक की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ रहा था । बचनसिंह को लगा क्यों न देख लूं ? क्या पता रतन आ ही न गया हो ? दरवाजे की कुंडी खोलते हुए उसे सामने काका गुमान सिंह आते दिखायी पड़े, वह अपने मुंह से हलकी आवाज में 'आवा काका' ही कह पाया ।

बचनसिंह जिस जाल को बुनने की तैयारी कर रहा था, उसमें खुद ही फंस चुका था । उसे यह भी नहीं सूझ रहा था कि कैसे काका को इस खबर से अवगत करायें । इतने में गुमान सिंह ने बैठते हुए कहा— "बचनसिंह वो क्या कह रहा था ? 'दस मरे, सैकड़ों घायल', मुझे तो बहुत डर लग रहा है । इतना तो मैं उस समय भी नहीं डरा था जब सीमाओं पर गोलियों के बीच अपने समय को चीरता रहता था । पता नहीं कैसे दिन देखने के लिए मैं जिंदा हूं ? बचपन में ही अनाथ हो गया था, फिर हुआ भरती फौज में, वो भी उस जमाने में जब भावर तक पैदल ही जाना पड़ता था । बड़ी लगन से काम किया, फौज में, कई तमगे मिले, बहादुर था, बाबू मैं तो, पर आज डर गया हूं बुरी तरह ।"

"घबड़ाओ मत काका, इतना बड़ा कांड हो गया, सरकार तो कुछ करवाएगी ही, जांच होगी..." बचनसिंह ने कहा ।

बेटा ये सब कहने की बातें हैं । मैं कहता हूं क्या गलत कह रहे थे, वो, यही तो कह रहे थे

सही विकास करो, अरे, हमारी हालत तो गुलामों से भी बदतर है, सरेआम लूट मची है और हमें कह रहे हैं चुप रहो नहीं तो..., बेटा तू कह रहा है जांच होगी, तू भी तो नौकरी कर रहा है, तुझे नहीं पता है कैसी होती हैं इनकी जांचें ? बेटा, इन जांच करनेवालों की रोटियों के मालिक भी वही, जो गोली चलानेवालों की रोटियों के मालिक हैं । कुछ नहीं होगा, देख लेना ।''

यह सुनकर बचनसिंह को भी डेढ़ माह पूर्व की वो घटना याद आ गयी, जब उन्हें सिविल ड्यूटी पर तैनात किया गया था, तब वे भी ऐसे ही घरों से खींच-खींच कर लोगों को भून रहे थे और खबर आ रही थी सिर्फ यह कि 'शांति बनी है, स्थिति नियंत्रण में है ।' बचनसिंह आज अपने वृत्त की परिधि पर स्थिर होकर उसकी त्रिज्या माप रहा था वो कभी परिधि के उस बिंदु पर खड़ा होता जहां वो राइफल थामे सरकारी आदेशों का पालन कर रहा हो, या उस बिंदु पर जब वह अपने परिवार के साथ हो, पर ऐसा बिंदु उस परिधि पर नहीं स्पष्ट हो पाया था जब वो निहत्थां राइफलों के सामने खड़ा हो...

पूरा पहाड़ रो रहा था, हिमराज भी मौन व्याकुल खड़ा था । सन्नाटे को तोड़ रही थी तो सिर्फ नदी की कलकलाहट, जो भी पल भर के लिए रुक गयी, यह सुनकर सिर्फ इस आशंका के साथ कि कहीं उस तरुणाई के लहू का संगम न हो जाए मेरे साथ, फिर कैसे प्रायश्चित करूंगी ? घुप्प अंधेरे में चिड़ियां भी छोड़ चुकी थीं घोंसले, और उड़ रही थीं उस दिशा में जहां से आयी थी खबर ''दस मरे, सैकड़ों घायल'', बैठे थे तो सिर्फ आप और हम अगली खबर की इंतजार में ।

गुमानसिंह अपने सिर को अपनी हथेलियों पर टिकाये हुए सिर्फ यही सोच रहा था कि क्या ईमानदारी से नौकरी करने का प्रतिफल यही मिला हमें ? विकास के नाम पर पहाड़ शून्य, बेरोजगारों की लाइन लगी हुई, खेती भी हमारी कमजोर...एकमात्र सहारा नौकरी ही तो है, और यदि जनता कह रही है तो जवाब सिर्फ 'गोली' । क्या जीवन है हमारा, फौज में भी जुवान पर प्रतिबंध था । छूट थी तो 'यस सर' कहने की, और यहां घर में भी यही हाल, अरे हम तो वहां सोचते थे कि जो शब्द इडियट, ब्लडी रॉस्कल हम सुन रहे हैं नौकरी के दौरान इनका अर्थ जरूर हमारे बच्चे सीखेंगे । हम तो 'यस सर' कहना ही सीख पाये थे । अपना सिर उठाते हुए गुमानसिंह ने कहा, ''बचनसिंह तू भी तो कह रहा था कि मैं अब क्या करूं... !''

काका, अधीरज मत होओ, देखें कल सुबह तक क्या होता है ?

बाहर तेज हवा बह रही थी । भारी वर्षा के बीच बरस रहे ओले गोलियों की मार का अहसास करा रहे थे । हवा में झूलते पेड़ों के टुक्खे उग्र तेवर में जमीन से मिल रहे थे । पेड़ों की छाल उधड़ रही थी । टहनियां टूट रही थीं, पेड़ अर्धनग्न अवस्था में ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो किसी औरत की आबरू लुट रही हो ।

और हवा के झोंकों के बीच उड़ रहे पत्ते उस उघड़ी छाल पर इस तरह चिपक रहे थे मानो किसी औरत की आबरू को ढक रहे हों । पुनः तेज हवा...स्यां...ऽ की आवाज कर इन पत्तों को ऐसे उड़ा ले जा रही थी जैसे कोई खाकी वरदीवाला किसी प्रतिरोध करनेवाले पर बरसा रहा हो अनगिनत लाठियां तथा वह अपनी आखिरी सांस पर भी सिर्फ आंसू बहा रहा अपने मुल्क की इज्जत के लिए ।

'अच्छा, बचनसिंह मैं चल रहा हूं ।'

'काका, अभी तो काफी रात है ।'

'नहीं-नहीं, मैं घर जा रहा हूं ।'

गुमानसिंह घर के अंदर पहुंचकर अपनी चारपाई पर बैठ गया तथा उसने लालटेन जला दी । फिर उसे ध्यान आया कि आज तो मैंने देवताओं के पास दीया भी नहीं जलाया । पुनः अपने से ही कहता, "नहीं जलाता मैं दीया, क्या पाया इन देवी-देवताओं के सामने नाक रगड़कर जिंदगी भर ? अपनी हालत वैसी की वैसी..." सामने दीवार पर उसके तमगे टंगे थे और वरदी भी, जो रिटायर होने पर उसे मिली थी । उसने वहां से उठकर तरतीब से वरदी को समेटकर व तमगा को निकालकर झोले में रख दिया तथा अपना हेट भी झोले में डाल दिया तथा वहां से चल दिया ।

हवा का बहना बंद हो गया था । बारिश थम गयी थी । माहौल में पुनः एक शून्य उभर आया था । गुमानसिंह धीरे-धीरे सर्वप्रथम अपने कुल देवता की थाती पर गया, तथा उसने जमीन से थोड़ी मिट्टी लेकर प्रणाम किया । आज वह 'जय बड़ी विशाल' की प्रायोजित भूमिका से प्रेरित न होकर अंतरात्मा की आवाज पर आगे बढ़ रहा था । गांव से कुछ दूर अपनी सरहद पर पहुंचकर उसने पुनः लौटकर अपने गांव को प्रणाम किया । उसे तुरंत वो दिन याद आ गये, जब वह ऐसे ही प्रातःकाल उठकर नौकरी के लिए जाया करता था । और तब भी वह यहां से पीछे मुड़कर आशीर्वाद मांगता था, अगली छुट्टियों तक राजी-खुशी रहने के लिए, पर आज वह सिर्फ प्रणाम कर रहा था, मांग कुछ नहीं रहा था ।

ऊषा की बेला का उदय हो रहा था, पर मद्धिम आभा के साथ । पक्षियों की चहचहाहट भी फीके स्वरों में क्रंदन हो प्रतीत हो रही थी । लंबे-लंबे चीड़ के पेड़ों के बीच बह रही हवा सांय-सांय की आवाज में यही आभास करा रही थी कि बेकार है हमारा भी जीना । वे अपनी परिणति पर ही विचलित होते जा रहे थे । उन्हें दुःख था तो सिर्फ इस बात का जिनकी चिताएं उन्हें बनानी थीं, वो आज पड़े हैं कहीं दूर लावारिस । वो सांय-सांय कर यही शब्द उछाल रहे थे उस दिशा में कि हम हैं इनके वारिस, ये पूरा वन है इनका वारिस, उस दिशा में जहां से उन्होंने भी सुना था 'दस मरे, सैकड़ों घायल ।'

गुमानसिंह अब तक शहर के कोने पर पहुंच चुका था । एक अजीब-सा सन्नाटा चारों तरफ फैला था । सड़क पर घूम रहे थे, सिर्फ कुछ आवारा कुत्ते, इतने में ही उसे दूर से आवाज सुनायी दी ।

"अबे, कहां जा रहा है, तुझे पता नहीं कर्फ्यू लगा है ।"

गुमानसिंह आज एक नये रास्ते पर चलने के लिए दृढ़-संकल्प होकर घर से निकला था, वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था ।

"ये हरामजादा, मानता नहीं है साला, गोली मार देंगे।"

अब तक उनके बीच का फासला काफी कम हो गया था राइफल की संगीनें सीधे उसकी छाती पर टिकायी जा सकती थीं।

"क्यों मारोगे तुम मुझे गोली ? क्या कुसूर है..." गुमानसिंह ने कहा।

"ये बुड्ढा बहुत बक-बक करता है, रुक जा नहीं तो..."

ऐसा कहते उन्होंने राइफलें हाथों में थाम लीं। गुमानसिंह स्थिति को भांप गया तथा उसने फटाफट कपड़े उतारने शुरू कर दिये। अब वह उनके सम्मुख सिर्फ एक कच्छा व बनियान पहने खड़ा था।

यह देखकर वो सब भी स्तब्ध रह गये, "अरे मत मारो इसे, लगता तो ये पागल है।"

गुमानसिंह अब एक-एक कर अपने झोले में रखी चीजों को बाहर निकाल रहा था। उसने अपनी वरदी पहनकर अपना पूरा सीना तमगों से भर दिया तथा हैट पहनकर कहने लगा—

"अब क्यों हो चुप ? मारो मुझे गोली, जो काम तुम कर रहे हो, वो मैंने भी किया। ले लो इन बहादुरी के तमगों को, अपने पास।"

गुमानसिंह ने एक-एक कर सभी तमगे अपने सीने से निकाल दिये तथा अपनी हथेली में उन्हें रखकर कहने लगा, "दे देना इन्हें वापस और कह देना गुमानसिंह नहीं रख सकता इन्हें सुरक्षित अब, जब उसकी धरती जल रही हो, पूरा देश जल रहा हो।"

इतने में ही दूर से उनके कमांडर ने समीप आते हुए कहा, "कौन है वो, शूट हिम आऊट।"

यह सुनकर उन्होंने पुनः पोजीशन ली, और धांय-धांय की आवाज के बीच गुमानसिंह का शरीर छलनी बनकर रह गया। उसके बहते लहू में वो तमगे भी सन गये जो कभी देश सेवा के लिए उसे मिले थे। और आज देश के रक्षकों के हाथों ही खून में डुबोये गये।

आस-पड़ोस में फैली दहशत में यह एक और बढ़त थी। गुमानसिंह की शिनाख्त कर रहे थे तो सड़क पर बिखरे वो छोटे-छोटे कंकड़-पत्थर जो एक भयंकर विस्फोट की इंतजारी में सुलग रहे थे। घरों की रोशनदानों से झांकती बारीक नजरें बन रही थीं गवाह, और मिट्टी बन रही थी थाह गरम लहू की।

रेडियो अब भी वही खबर दुहरा रहा था, "दस मरे, सैकड़ों घायल।"

बचनसिंह उदास घर पर बैठा, बाहर-भीतर जा रहा था। उससे न तो बैठा ही जा रहा था और न चल ही पा रहा था। उसे यही चिंता हर वक्त सता रही थी कि रतन पता नहीं कैसे होगा, और उसकी बुआरी ? काका भी चले गये, मैं जाऊं तो कहां ? मेरी छुट्टियां भी खत्म होनेवाली हैं, पर यहां बैठे रहने से तो चले जाना ही अच्छा !

बचनसिंह इसी ऊहापोह में उन्हें ढूंढ़ने के लिए चौक की सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा।

—ग्राम- कर्णधार, पोस्ट- मयकोटी
वाया— रुद्रप्रयाग, जिला-चमोली गढ़वाल (उ.प्र.)

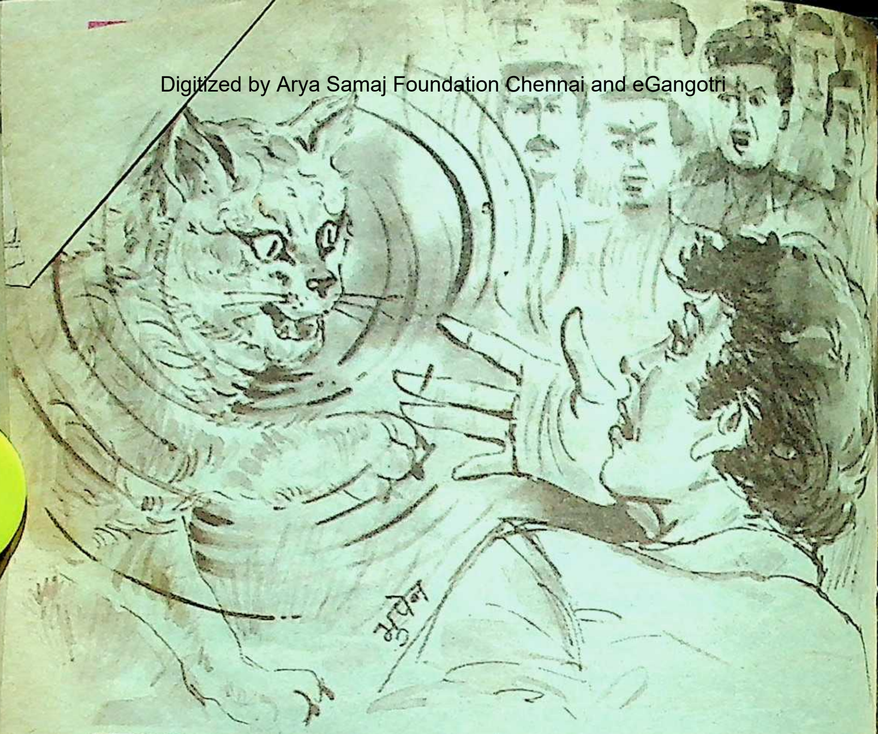

प्रथम पुरस्कार

कहानी

स्वप्न योद्धा

• संजय वर्मा 'उदय'

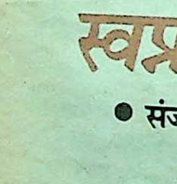

हर आदमी के भीतर एक जानवर होता है—खूंखार, आदिम सभ्यता का परिचायक । यह जानवर गाहे-बगाहे आदमी के चेहरे पर प्रतिबिंबित होकर अपनी विद्रूपताओं का प्रदर्शन करता रहता है ।

सतीश की बात से मैं पूरी तरह सहमत नहीं हो पा रहा था, बल्कि यूं कहिए कि मेरे विचार में इस धारणा के प्रति दो भाव आ रहे थे । मैंने कहा, "अगर आदमी के चेहरे में जानवर छिपा है, तो जानवर के चेहरे में भी आदमी का प्रतिबिंब निहित है ।"

शायद सतीश मेरी बात को सुनकर सोच में पड़ गया । वह असहमत होता इससे पहले ही मैंने एक और तर्क दिया, "अगर जानवर में आदमियत की भावना न होती, तो उसमें स्नेह—जैसे भाव भला कैसे आ पाते ?"

घर लौटने तक मैं आदमी और पशु के इसी संबंध को लेकर विचारमग्न रहा । हो सकता था कि मेरा यह चिंतन अगली सुबह तक चलता, लेकिन दिनभर की थकान के बाद जल्दी ही मस्तिष्क विचार-शून्य होने लगा और आंखें नींद

शायद सतीश मेरी बात को सुनकर सोच में पड़ गया । वह असहमत होता इससे पहले ही मैंने एक और तर्क दिया, ''अगर जानवर में आदमियत की भावना न होती, तो उसमें स्नेह—जैसे भाव भला कैसे आ पाते ?''

से बोझिल होकर मुंदने लगीं ।

मुझे लगा कि मैं किसी स्वप्नलोक में विचरण कर रहा हूं । मेरे अतीत की घटनाएं क्रमशः एक-एक करके किसी चलचित्र की भांति मेरी आंखों के सामने घूम रही थीं । पहला दृश्य शायद उस वक्त का था, जब देहरादून में मेरी पहली-पहली पोस्टिंग हुई थी । सिविल सेवा में चुने जाने के बाद और मसूरी के लाल बहादुर प्रशिक्षण संस्थान में पूरा एक वर्ष बिताने के उपरांत पुनः उसी स्थान पर लौटकर आना कुछ सुखद लग रहा था ।

इसी तरह अपने दायित्व निभाते-निभाते कब एक साल और निकल गया, इसका पता ही नहीं चला । मुझे रामशरण याद आ रहा है, मेरा सहायक था वह । मेरे हर छोटे-बड़े काम में उसका दखल अनिवार्य था । असल में पूरा घाघ आदमी था वह । कहता था, ''अरे साहब, आप लोग तो नये-नये अधिकारी बने हैं । आपको क्या मालूम कि कैसे कोई मंत्री खुश रहता है, कैसे अपने बुढ़ापे के लिए अभी से पैसा उगाहना पड़ता है...मुझे तो पूरे बीस साल हो गये हैं, यही सब करते हुए... ।''

''लेकिन मैं रिश्वत नहीं लूंगा ।''

''आपको रिश्वत लेने को कौन कह रहा है साहब । आप तो बस एक बार 'हां' कह दीजिए...इधर दीनदयाल को ठेका मिला नहीं कि झारीपानी के पास आपके लिए एक लीची का बाग तैयार हो जाएगा, किसी को कानों-कान खबर नहीं होगी ।''

मैं रामशरण के कौशल पर हैरान था । उस रात पहली बार ऐसा सपना आया था । मैंने देखा कि मेरा चेहरा किसी भेड़िए की शक्ल में तब्दील होता जा रहा है । भेड़िया पूरे जंगल में दौड़ रहा है, उसे जहां भी कोई सड़ी हुई लाश दिखती वह उस पर टूट पड़ता ।

अगले दिन सब कुछ सामान्य हो गया । धीरे-धीरे रामशरण मेरे लिए अनावश्यक होता चला गया । कारण, उसके माध्यम से होनेवाले कार्य अब मैं सीधे डील करता था । मैं मानता हूं कि उसका घाघपन मेरे भीतर पैठ चुका था । सच तो यह है कि मैं दूसरा रामशरण बन गया था । लेकिन उन गोपनीय (?) कार्यों के लिए मुझे किसी से अनुमति की आवश्यकता नहीं थी, पैसा सीधे मेरी जेब में जाता था ।

एक बार जब मेरी पोस्टिंग मुरादाबाद हुई, तो मुझे कुछ अटपटा लगा । मुरादाबाद की स्थिति हालांकि उन दिनों कुछ ठीक ही थी । पहले आये दिन जो वहां हिंदू-मुसलिम दंगे होते थे अब उनमें काफी कमी थी । उन्हीं दिनों मुरादाबाद क्षेत्र से एक नेता सरकार के केंद्रीय मंत्रिमंडल में चुने गये थे । लेकिन उनके साथ समस्या यह थी कि सरकार का कार्यकाल कुछ ही महीनों में पूरा होनेवाला था । एक दिन वह बड़ी व्यथित-सी दशा में मेरे पास आये । कहने

लगे, "अब अगली बार मेरा यहां से चुना जाना, कुछ मुश्किल लग रहा है ।"

"क्यों, ऐसी क्या परेशानी है ?" मैंने पूछा ।

उन्होंने अपनी परेशानी बतायी, उसका हल भी सुझा दिया और हां, साथ में मेरे लिए एक ऐसा प्रलोभन था, जिसे ठुकराना मेरे लिए तो क्या, शायद मेरे जैसे किसी भी धर्मात्मा (?) के लिए संभव नहीं होता ।

बस, अगले ही महीने कुछ ऐसा घटित हुआ कि मुझे अवसर मिल गया । एक महल्ले में जरा-सा छेड़छाड़ का मामला था, लेकिन उसे दंगे का रूप देने में मुझे कुछ ज्यादा समय नहीं लगा । अलबत्ता स्थिति सामान्य होते-होते कोई दो सौ लोग मारे जा चुके थे । लेकिन उससे क्या ? नेताजी अगले चुनाव में उसी की बदौलत जीते, मंत्रिमंडल में भी पुनः चुने गये । और मुझे तो अपना पुरस्कार मिलना ही था ।

हां, एक बात और ; उन्हीं दिनों हमने एक बिल्ली का बच्चा पाला था । शुभ्र, श्वेत, एकदम फरनुमा किसी खिलौने—जैसा । जब वह थोड़ा बड़ा हुआ तो उसके नाखून मुझे गड़ने लगे । संयोग की बात यह कि वह अपने पंजों से मुझे उस दिन जरूर घायल करता जिस दिन...आप समझ रहे हैं न ।

वह मुझे घायल करता और अगले दिन मेरे चेहरे पर, मेरे हाथों पर खरोंचों के अनगिनत निशान होते । जो शायद इस बात की गवाही देते थे कि मैंने पिछले दिनों फिर से कोई काली करतूत की है ।

मैं उस बिल्ली के बच्चे से डरने लगा, इतना कि अब वह मेरे सपनों में आने लगा । एक पुल के निर्माण की इजाजत देता, तो वह मेरे कंधे छील जाता । चुनावों में कोई हित साधता तो वह मेरी पीठ पर अनगिनत घाव बना जाता । कुछ और, जो घातक होता, करता तो उसके तीखे पंजे मेरी आंखों में गड़ते हुए मेरे दिल पहुंच जाते ।

वह बिल्ली का बच्चा आज भी मेरे पास है उसकी आंखों में जैसे ही मैं झांकता हूं, तो वह मुझे जानवरों के अनगिनत चेहरे नजर आते हैं कभी चतुर, चालाक लोमड़ी, कभी खूंखार बाघ, कभी तेंदुआ, कभी-कभी तो कुत्ता भी नजर आता उसकी आंखों में ।

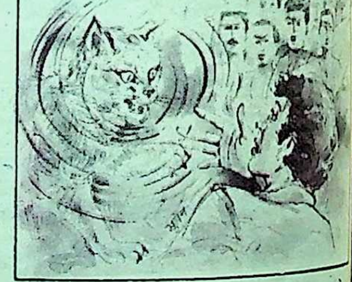

मुझे लगा मैं एक बार फिर विचारशून्य हो रहा हूं, मस्तिष्क में गहन अंधकार का आभास कौंधता है...मैं हूं और मेरे सामने बिल्ली का वही नन्हा बच्चा । मेरे हाथों में हंटर है और वह अपनी निरीह आंखों से मुझे ताक रहा है । अचानक दृश्य परिवर्तित हो जाता है । बिल्ली का बच्चा मेरे सामने एक जज के रूप में बदल जाता है...मैं कटघरे में अपने आपको पाता हूं वह सवाल पूछ रहा है...अनगिनत, अटपटे सवाल...और मेरे पास उन सवालों के जवाब नहीं हैं । वह पूछता है कि तुमने उस जगह जो दुकानें तुड़वायी हैं, जो घर ध्वस्त कराये हैं उन्हें लिए कोई प्रबंध किया ? कितना पैसा लिया

अचानक वह सड़क काली, लंबी जीभ में बदल जाती है । इस जीभ पर भयंकर फिसलन है, फिर भी मैं उतार-चढ़ाव से भरी जीभ रूपी सडक पर दौड़ने का असफल प्रयास करता हूं ।

वहां शॉपिंग कांपलेक्स बनने की अनुमति देने के लिए । और अंधे बच्चों के लिए जो स्कूल बन रहा था, किसके इशारे पर उसका निर्माण रुकवाया ? ...या फिर अस्पताल में नकली दवाइयों का मामला पकड़ा गया था, उसकी जांच भला क्यों रुकवा दी ?...

वह सवाल पूछता और मैं उसके सामने मौन खड़ा रहता हूं । मेरे हाथों में हंटर होता, तो मैं उसे बता देता कि उसके इस सवाल का क्या मतलब होता है ? और कुछ नहीं तो एक तेजधार वाला चाकू ही होता, क्षणभर में उसकी लहूलुहान गरदन फर्श पर तड़पती हुई नजर आती । सच है कि आज उसके और मेरे बीच में युद्ध है । वह प्रति सवाल अपने तीखे नाखून मेरे जिस्म पर दागता जा रहा है । उससे मैं जितना बचने का प्रयास करता हूं वह मेरे उतने ही करीब आता जा रहा है ।

अब मैंने दौड़ना शुरू कर दिया है । मैं भाग रहा हूं, अपने आप से दूर हो रहा हूं । लेकिन बिल्ली का बच्चा मेरे ठीक पीछे है । मेरे पीछे और भी कई लोग हैं, वे भी हैं जिनका कोई परिवारी किसी दंगे की भेंट चढ़ गया है और वे भी हैं जो मेरे कारण दाने-दाने को मोहताज हो गये । आज उनके हाथों में तरह-तरह के हथियार हैं । वे लोग मुझे मारने को आमादा हैं । ...मैं दौड़ता हूं...तेज और तेज । धीरे-धीरे मैं खरगोश बन जाता हूं फिर हिरन, जो कुलांचें भर-भर इन सबकी नजरों से दूर हो जाना चाहता है । लेकिन वे चमत्कारिक रूप से मेरे ठीक पीछे दौड़ रहे हैं ।

मैं भागते-भागते जंगल से निकलकर एक साफ, चिकनी, काली सड़क पर आ जाता हूं । अब मेरी शक्ल कोई नहीं पहचान पाता है । मेरी शक्ल न तो किसी भेड़िए से मिलती, न लोमड़ी से, न खरगोश या बाघ-चीते से । मैं खुद की शक्ल देखकर हैरान हूं...चौपाये से मिलती-जुलती कोई आकृति । धड़ है, पूंछ है, आंखें हैं । लेकिन आंखों में मक्कारी भरी है । उनसे निरंतर लालच का खून टपक रहा है । मुंह में किसी सड़ी हुई लाश के टुकड़े भरे हुए हैं । इतने वीभत्स रूप की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता ।

मैं दौड़ता रहता, लेकिन दौड़ते-दौड़ते मुझे झाड़ी के पीछे एक खोह मिल गयी । मुझे वहां दुबकना चाहिए था, लेकिन मैं अपने आपको उस काली सड़क से अलग नहीं कर पाता हूं । जैसे कोई चुंबकीय आकर्षण है, जो मुझे अनवरत उस सड़क से बांधे हुए है ।

अचानक वह सड़क काली, लंबी जीभ में बदल जाती है । इस जीभ पर भयंकर फिसलन है, फिर भी मैं उतार-चढ़ाव से भरी जीभ रूपी सड़क पर दौड़ने का असफल प्रयास करता हूं ।

एक बार फिर दृश्य परिवर्तित होता है । मेरे हाथों में एक रस्सी आ गयी है । मैं देखता हूं कि बिल्ली का बच्चा उसी निरीह भावना से मुझे ताक रहा है । उसकी फर से भरी गरदन मेरे

ठीक सामने है । अब और ज्यादा देर करना बेवकूफी ही होगा । रस्सी एक मजबूत फंदे में बदल जाती है । इसकी फांस से कोई जानवर तो क्या, दैत्य भी न बचे । मैं उस फंदे को बिल्ली के बच्चे की तरफ उछाल देता हूं । वह फंदा हवा में उड़ते हुए धीरे-धीरे उसी की ओर बढ़ रहा है...अचानक फिर वही अंधकार, फिर वही विचारशून्यता...मैं उस युद्ध का परिणाम चाहता था, लेकिन यह क्या ? मेरे हाथ-पैरों में कंपन हो रहा है, ऐसा लगा जैसे कोई मुझे झकझोर रहा हो । मैं हड़बड़ाकर उठता हूं । सामने रामू ट्रे में चाय सजाये खड़ा है । वह कहता है, ''साहब, नौ बजे गये...आपके नहाने के लिए पानी भी तैयार कर दिया है ।''

तो...तो क्या मैं स्वप्न देख रहा था । इतना भयानक स्वप्न...लेकिन इस स्वप्न युद्ध में आखिर जीत किसकी हुई । मैं कुछ और सोच पाता, इससे पहले रामू ही बोल पड़ा, ''साहब, एक बुरी खबर है... ।''

''क्यों, क्या हुआ ?''

''वो बिल्ली का बच्चा, जिसे आप पिछले महीने लाये थे, मर गया ।'' वह बोला

''अच्छा, कब...कैसे... ?'' मैं अपनी जीत की खुशी को अपने भीतर ही रखते हुए बोला ।

''आज रात को साहब । ऐसा लगता है जैसे उसकी किसी जंगली जानवर से लड़ाई हुई थी ?'' —उसने बताया ।

मैं वह जगह देखने गया, जहां वह पड़ा था । बाहर बरामदे के कोने में, गमलों के बीच उसका निस्पंद किंतु लहूलुहान शव पड़ा था । मैं हौले-से मुसकराया ''देखा, मुझसे लड़ाई मोल लेने का क्या मतलब होता है... ।''

मैंने देखा कि मेरी इस मुसकराहट को कोई नहीं देख रहा था । उस बिल्ली के बच्चे की आंखें भी बाहर गेट की तरफ देख रही थीं, जहां से कुछ ही देर में कोई-न-कोई आसामी तो जरूर आएगी ।

द्वारा—श्री सी. एम. वर्मा
क्वार्टर नं. ई-१ बी, रेलवे कॉलोनी
हरिद्वार-२४९४०१ (उ. प्र.)

दाढ़ी बढ़ाना हानिकारक

अब शौक के लिए दाढ़ी-मूछें रखना हानिकारक हो सकता है क्योंकि इससे न केवल स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है बल्कि गंजापन तक हो सकता है । फ्रांसीसी शोधकर्ताओं के अनुसार चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ होने से वायुमंडल में मौजूद बैंजीन व अमोनिया जैसे रासायनिक पदार्थ आकर्षित होकर श्वास प्रक्रिया को प्रदूषित कर देते हैं । एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में दाढ़ी-मूंछ वाले व्यक्ति छह गुना ज्यादा मात्रा में प्रदूषित गैस सांस के साथ ग्रहण करते हैं । और यदि दाढ़ी वाले व्यक्ति धूम्रपान भी करते हैं, तो स्थिति इससे भी ज्यादा बुरी हो जाती है । इन शोधकर्ताओं का कहना है कि दाढ़ी रखने से व्यक्ति के शरीर में अनावश्यक ऊष्मा बाहर निकालने की क्षमता में कमी आती है जिसके कारण सिर गरम हो जाता है, मस्तिष्क के क्रियाकलापों पर असर पड़ता है और सिर के बाल झड़ने लगते हैं ।

—संजय कुमार शर्मा

द्वितीय पुरस्कार

पुनरावृत्ति

● विभा जगन्नाथ उकील

ट्रिंग-ट्रिंग, ट्रिंग-ट्रिन— कालबेल की आवाज सुनकर सुधा सोते से अचानक जाग गयी । खिड़की से बाहर झांका तो देखा कि दूधवाला बाहर खड़ा है । वह अलसाते हुए बाहर आयी और दूध लिया । दूधवाला बोला, ''क्या बात है माताजी ? आज अभी तक सो रहीं थीं ?''

वह बोली, ''कुछ नहीं, थोड़ा तबियत ठीक नहीं थी, सो रात को बड़ी देर में नींद आयी ।''

दरअसल, सुधा कल से ही बेहद परेशान थी और वजह थी उसके पुत्र अतुल का वह टेलीफोन । उसने कल सुधा को टेलीफोन पर सूचित किया था कि वह अपने परिवार सहित हमेशा के लिए भारत लौट रहा है । एक ओर तो सुधा उसके आने के समाचार से बेहद खुश थी कि उसका एकाकीपन दूर हो जाएगा, परंतु दूसरी ओर वह अमरीका में पैदा और पले हुए बच्चों और पुत्रवधू शिखा के लिए चिंतित भी थी, जो भारत में हमेशा नहीं रहना चाहते थे । सुधा ने टेलीफोन पर अतुल को भरपूर समझाने की कोशिश भी की थी कि तुम्हारे बच्चे तथा पत्नी शिखा यहां आकर एडजस्ट कैसे कर पाएंगे ? परंतु अतुल ने उसकी एक न सुनी ।

इसी चिंता में डूबती-उतराती सुधा को वर्षों पूर्व अपने पति द्वारा अचानक लिये गये निर्णय की याद हो आयी, जिसने उनके जीवन की धारा ही बदल दी थी । उसके पति अशोक पुलिस विभाग के एक वरिष्ठ और ईमानदार अफसर थे । उनके फूल से दो मेधावी बच्चे थे— अतुल और रेणु । अतुल सातवीं कक्षा में और रेणु चौथी कक्षा मे पढ़ती थी । हंसते-मुसकराते उसके परिवार में किसी बात की कमी नहीं थी, लेकिन पता नहीं, उसके भाग्य को अचानक किसकी नजर लग गयी ।

अशोक कुछ दिनों से काफी अनमने-से रहने लगे थे । मई मास की सातवीं तारीख थी । बच्चों की परीक्षाएं समाप्त हो चुकी थीं । उस दिन शाम को आफिस से लौटने पर चाय पीते-पीते अचानक अशोक ने कहा, 'सुधा ! हम बच्चों का रिजल्ट मिल जाने के बाद गांव चलेंगे ।' सुधा बोली, 'हां-हां, क्यों नहीं ! बच्चे भी बहुत दिन से कहीं घूमने जाने की जिद कर रहे हैं ।'

इस पर अशोक ने कहा, 'सुधा ! मैं घूमने या थोड़े दिन के लिए वहां नहीं जा रहा हूं । मैं हमेशा के लिए अपने गांव जा रहा हूं । अपनी नौकरी से मैंने इस्तीफा दे दिया है ।'

सुधा अचानक सन्नाटे में आ गयी । वह बोली, 'क्या कह रहे हो ? तुमने इस्तीफा दे दिया, कब-क्यों ?'

इस पर अशोक ने गंभीर स्वर में कहा, 'मैंने

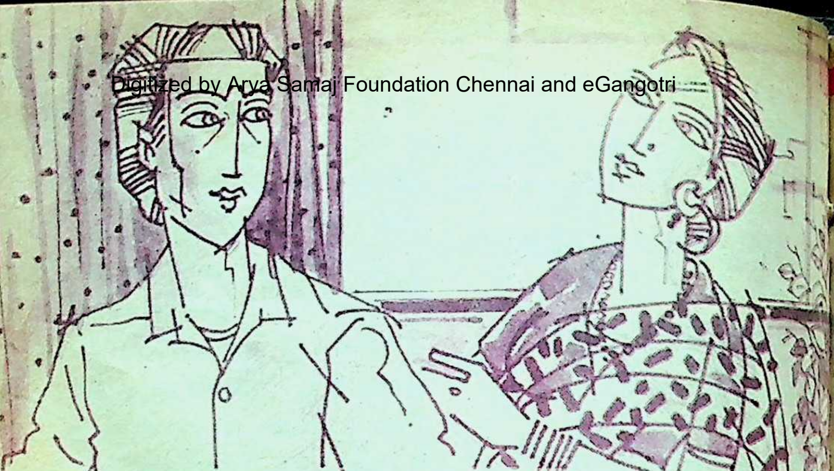

आज शाम अपना इस्तीफा आई.जी. साहब को भेज दिया है और मैं उसे किसी कीमत पर वापस नहीं ले सकता । कुछ दिनों बाद मैं तुम सबको लेकर अपने गांव चला जाऊंगा और वहीं पर रहकर खेती-बाड़ी करूंगा ।'

सुधा ने अशोक को बहुत समझाने की कोशिश की पर सब बेकार गया । उसने बच्चों की पढ़ाई का हवाला देकर अशोक से लखनऊ में ही रुकने को कहा तो अशोक ने तपाक से कहा, 'मेरे बच्चे उसी स्कूल में पढ़ेंगे जहां मैंने शिक्षा पायी थी । उसी स्कूल में पढ़कर जब मैं इस ओहदे तक पहुंच गया था, तो ये उस स्कूल में क्यों नहीं पढ़ सकते ।' अशोक अपने निर्णय पर चट्टान की तरह अटल थे । इस पर सुधा ने भी जिद पकड़ ली कि वो किसी हालत में गांव नहीं जाएगी । वह लखनऊ में ही रहकर बच्चों को पढ़ाएगी ।

अशोक और सुधा दोनों अपनी जिद पर कायम थे । बच्चों का रिजल्ट निकलने के बाद अशोक अपने निर्णय के मुताबिक अकेले ही अपने गांव चले गये थे । जाने से पहले उन्होंने सुधा से कहा कि 'अब वे दोनों नदी के दो किनारों की तरह हो गये हैं, जो कभी मिल नहीं सकते । अतः वह कभी उनसे मिलने की कोशिश न करे ।'

अशोक के गांव जाने के बाद सुधा को अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा । सरकारी बंगला खाली करके सुधा डेढ़ कमरे के एक छोटे-से मकान में आ गयी थी । बहुत भाग-दौड़ करने के बाद उसे एक प्राइवेट स्कूल में एल.टी. ग्रेड में नौकरी मिल गयी थी । अशोक के अफसर रहने पर जो लोग उसके बंगले पर पचासों चक्कर लगाते थे, उसके इस्तीफे के बाद एक बार झांकने भी नहीं आये। सुधा अपने मन को समझाकर संतोष करती कि यही दुनिया की रीति है । अब तो उसका उद्देश्य अपने दोनों बच्चों को अच्छी तरह पढ़ाना-लिखाना था । इस कारण से सुधा सारे दिन कठोर परिश्रम करती थी । सुबह मुंह-अंधेरे उठकर घर की सफाई और बरतन आदि धोकर वह दोनों बच्चों को पढ़ने के लिए उठाती थी । इस बीच वह नाश्ता-खाना तैयार करती । शाम को स्कूल से आने के बाद कुछ बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाती थी, ताकि उसके अपने बच्चों को किसी तरह का कष्ट न हो।

जिंदगी की उठा-पटक में इसी तरह कई वर्ष

इस पर अशोक ने कहा, 'सुधा ! मैं घूमने या थोड़े दिन के लिए वहां नहीं जा रहा हूं । मैं हमेशा के लिए अपने गांव जा रहा हूं । अपनी नौकरी से मैंने इस्तीफा दे दिया है ।'

बीत गये । अतुल शुरू से ही मेधावी था । उसने हाईस्कूल परीक्षा मेरिट के साथ उत्तीर्ण की थी अतः ग्यारहवीं क्लास से उसे 'नेशनल स्कॉलरशिप' मिल गयी थी । वह आई.आई.टी. से इलेक्ट्रॉनिक में बी.टेक. करके दिल्ली की एक विदेशी फर्म में इंजीनियर हो गया था । रेणु भी एम.ए. करके बैंक में अफसर बन गयी थी । रेणु का विवाह भी उसके सहयोगी दिनेश से हो चुका था ।

अब जिंदगी की गाड़ी व्यवस्थित ढंग से चल रही थी । इस बीच अशोक ने एक बार भी अपने परिवार के किसी भी सदस्य से संपर्क करने की कोशिश नहीं की थी ।

हां, अतुल ने जब बी. टेक. पास कर लिया था, तो सुधा ने अवश्य उसे पिता का आशीर्वाद लेने भेजा था, परंतु अशोक ने उसे उलटे पांव वापस कर दिया था । इसी बीच अतुल का विवाह एक बड़े घराने में हो गया और वह अमरीका चला गया । सुधा भी अपने प्रयासों से डिग्री कॉलेज की प्रवक्ता बन चुकी थी ।

बाद में सुधा को अपने किसी रिश्तेदार से पता चला कि अशोक को कैंसर हो गया है और वह गांव में बिलकुल अकेले रह रहे हैं । तब सुधा गांव गयी और जबरदस्ती अशोक को अपने साथ लखनऊ ले आयी थी । सुधा ने अशोक को मेडिकल कॉलेज में भरती करवाया था, परंतु डॉक्टरों के अथक प्रयास और सुधा की सेवा-सुश्रुषा के बावजूद अशोक बच नहीं सके । मेडिकल कॉलेज में बिस्तर पर लेटे-लेटे उनकी कोरें बार-बार भीग जाती थीं, शायद अपने किये के पश्चात्ताप स्वरूप । मृत्यु से पहले उन्होंने सुधा से कहा भी था, 'सुधा ! मैं अपना धर्म पूरी तरह निभा नहीं पाया । क्या तुम मुझे माफ कर सकोगी ।'

इन सब बातों को सोचते-सोचते सुधा को समय का ध्यान ही नहीं रहा । अचानक गेट खटकने से उसकी तंद्रा भंग हुई, तो उसने पाया कि सामने मिसेज शास्त्री चली आ रही हैं । उन्होंने कहा, "अरे मिसेज शर्मा ! आप अभी तक तैयार नहीं हुईं ! क्या आज कॉलेज नहीं जाना है ?"

वह बोली, "नहीं, मिसेज शास्त्री ! आज मेरा सिर काफी भारी है अतः कॉलेज न जा सकूंगी । वैसे भी मुझे आज बहुत जरूरी काम है ।" यह कहते-कहते जैसे उसने मन ही मन एक कठोर निर्णय ले लिया । वह आज ही अतुल को एक लंबा पत्र लिखेगी और बताएगी कि जिस तरह उसके पिता के एक निर्णय से उनकी जिंदगी में तूफान आ गया था, उस तूफान को वह दोबारा अतुल के परिवार की ज़िंदगी में नहीं आने देगी, क्योंकि हो सकता है अतुल का यह निर्णय शिखा और उसके बच्चों को हमेशा के लिए उससे दूर कर दे । वह इसकी पुनरावृत्ति कभी नहीं होने देगी ।

—हिंदी अधिकारी, (वायुसेना) रक्षा लेखा
१०७ राजपुर रोड, देहरादून

कहानी

द्वितीय पुरस्कार

"प्रमाणित किया जाता है कि..."

● सुरेन्द्र जोशी

वह बस से उतरकर सीधे घर पहुंचा, दरवाजे पर टंगी घंटी बजायी. उसका छोटा तीन साल का बच्चा आया और किवाड़ खोलते ही पापा को देखकर नाचने लगा, 'मम्मी पापा आ गये...मम्मी पापा आऽगये ।' मम्मी ने एक गिलास पानी देकर धीरे-धीरे पूछने की हिम्मत-सी की क्योंकि उमेश के चेहरे पर रास्ते की थकान के साथ ही एक उदासी भी छायी हुई थी ।

"कैसा रहा इंटरव्यू ?" पत्नी ने पूछा ।

"कैसा रहना था इंटरव्यू, कोई किसी का ज्ञान, व्यवहार और व्यक्तित्व देखा जाता है इंटरव्यू में आज ? दो-तीन चीजें रह गयी हैं आज किसी इंटरव्यू में जाने के लिए, सिफारिश, पैसा और छोटी जाति । क्या है इन तीनों में से

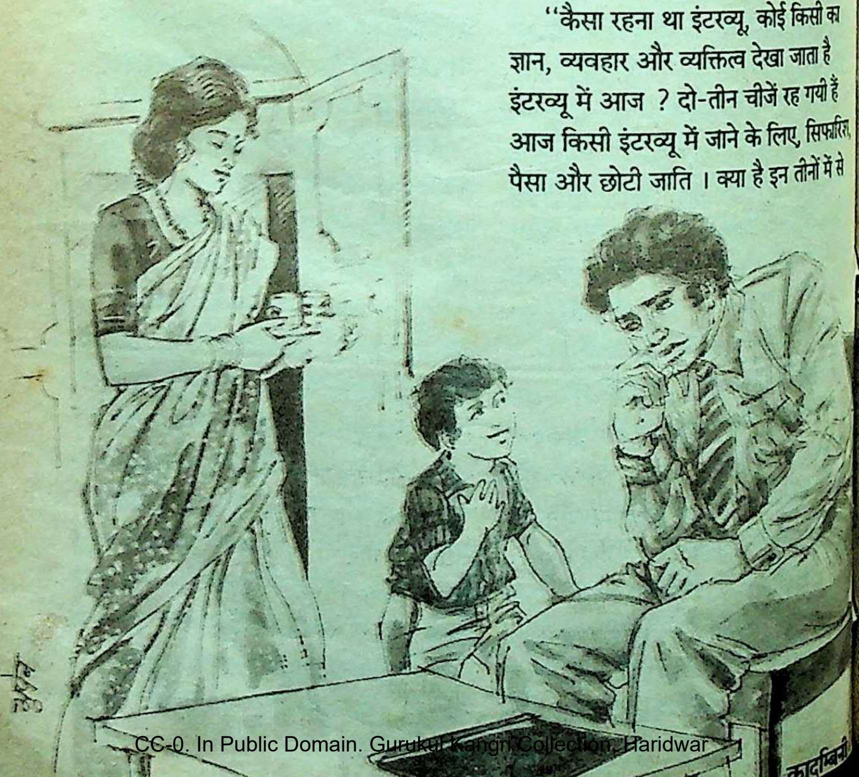

मेरे पास ? पिताजी जिंदगीभर कविताएं लिखते रहे । पैसे के हालात तुम जानती ही हो और फिर एक सीधे-शरीफ आदमी की सिफारिश करेगा भी कौन ?''

उमेश यह पीड़ा पत्नी के ऊपर उंड़ेल ही रहा था कि बीच में गोलू बोल पड़ा, ''पापा साइकिल...पापा साइकिल. . . .''

''लाऊंगा बेटा साइकिल ।''

''कब लाएंगे पाऽऽपा ! रोज तो ऐसे ही बोलते हैं आप...''

''अबकी जरूर साइकिल लाऊंगा बेटा तेरे लिए ।'' पूर्णिमा ने एक चाय की प्याली लेकर उमेश को दी, दो घूंट अपने आप भी पी । चाय पीते हुए दोनों अपने भीतर-ही-भीतर बहुत गहरे डूबे हुए थे । गोलू कभी अखबार में बनी तसवीरों-विज्ञापनों को देखकर अचानक कहता, 'पापा देखो, ऐसी साइकिल लाना मेरे लिए'...क्षणभर के लिए दोनों गहरे तल से ऊपर उठ आते । काफी देर इन्हीं स्थितियों से गुजरते हुए पूर्णिमा ने पूछा, ''थोड़ी-सी चाय बची है, ले आऊं ?''

''दे दो ।'' दो घूंट में ही पेट के हवाले कर दी उमेश ने पूरी प्याली चाय की ।

उसने हाथ-पैर धोये, एक सिगरेट जलायी, दोनों तकियों को सिर के नीचे रखा और पीड़ा से घिरा हुआ कोसने लगा स्वयं को, अपने ब्राह्मण घर में जन्म लेने की बात पर, अपने पिताजी की कविताप्रियता और सिद्धांतप्रियता पर । 'वसुधैव कुटुम्बकम्' बोलते रहे हमेशा, भारतीय संस्कृति और पारिवारिक संस्कारों की बात करते-करते...उपदेश देते छोड़ गये मुझे एक दिन अकेला, बस मात्र चौसठ रुपया था उस दिन पिताजी की पासबुक में...कितने संघर्ष कर लिये हैं मैंने, लेकिन नौकरी नहीं मिल पा रही है कहीं, जहां भी जाता हूं

आरक्षण...सिफारिश...घूस...और मैं सब तरफ से खाली...ऐसे खयालों में डूबे-डूबे उसने अपना ब्रीफकेस खोला, देखने लगा अपनी डिग्रियां दसवीं से लेकर एम.ए. तक प्रथम श्रेणी, कहानी-कविता प्रतियोगिता में प्रथम, खेल-कूद में प्रथम । अचानक दार्शनिकों-जैसा हो जाता उसका मन और अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो को गहराई से देखता और फिर हंसता, सोचता, सुंदरता में भी...प्रथम... ! अचानक सोचने लगता वह पूरे मन के भीतर रुदन-सा भरकर कि, 'यह कुछ नहीं होता मेरे पास, डिग्री-डिप्लोमा...खेल-कूद, कहानी, कविता...बस एक प्रमाण-पत्र मिल जाता कहीं से कि 'प्रमाणित किया जाता है कि उमेश चन्द्र तिवाड़ी सुपुत्र स्व. पंडित शंभू प्रसाद तिवाड़ी, ग्राम ढ़ौड जनपद पौड़ी (उ.प्र.) पिछड़ी जाति/आरक्षित वर्ग के शिक्षित बेरोजगार हैं ।' यह सोचते हुए फिर कल्पना करने लगता वह काश ! लग जाती कहीं नौकरी, तो पत्नी के सुंदर यौवन पर छायी हुए झुर्रियां हट जातीं । एक बार घूमकर आ जाती बूढ़ी मां भी बदरी-केदार, तीन साल का हो गया है गोलू,

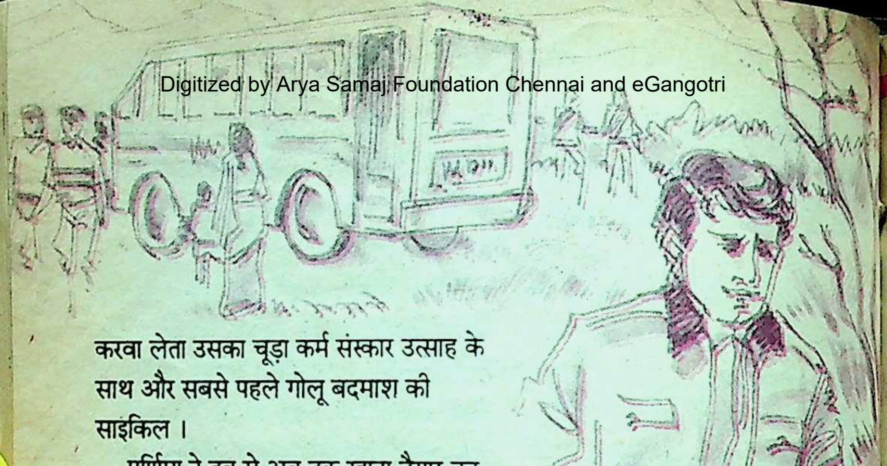

करवा लेता उसका चूड़ा कर्म संस्कार उत्साह के साथ और सबसे पहले गोलू बदमाश की साइकिल ।

पूर्णिमा ने तब से अब तक खाना तैयार कर लिया था । गोलू पापा के बगल में आकर सो गया । पूर्णिमा ने कई बार खाली डिब्बे के भीतर चम्मच घुमायी लेकिन आज तो घी बिलकुल ही खतम । एक नजर से फिर देखा उसने पूरे रसोईघर के डिब्बों को, पर लगभग नब्बे प्रतिशत डिब्बे खाली-खाली... ।

पढ़ी-लिखी है पूर्णिमा भी इसीलिए तो नहीं बोल पाती वह भी कुछ । समझती है वह भी अच्छी तरह कि योग्य और अच्छे घर-खानदान के लोग ऐसे ही परेशानी में हैं सब । उमेश की योग्यताओं पर कोई भी प्रश्न-चिह्न नहीं लगा पाती है वह । जानती है वह कि आज वोट की राजनीति है सब । अपने आप राज करने के लिए बिगाड़ रहे हैं, राजनीतिज्ञ भारत का भविष्य...

पूर्णिमा ने बरसों पुरानी मेज पर भोजन लगाया, भोजन करते हुए धीरे से उमेश ने पूर्णिमा से पूछा, ''शर्माजी के मकान में कौन आया है किरायेदार ?''

''अरे एक हीरालाल आर्य है कोई आरक्षणवाला, सामान मकान में बाद में लाया डिस्क पहले लगवा दी । आरक्षण सुनते ही उमेश की त्यौरी-जैसे ऊपर चढ़ने लगी । उमेश के चेहरे को देखते ही बात बदल दी पूर्णिमा ने और बोली, ''कहानी प्रतियोगिता में जाएंगे आप देहरादून में, अरे ! एक हजार पुरस्कार है, जाना चाहिए आपको । आप तो कवि-पुत्र हैं और स्वयं कहानी लेखक । अखबार में आया था, किस शीर्षक पर लिखनी है कहानी ? कटिंग रखी है मैंने देख लीजिए आप । शीर्षक की बात तो नहीं थी उसमें ? अरे ! लिख दीजिए अपनी ही कहानी, अपनी कहानी लिखेंगे तो पा जाएंगे पूरे हजार रुपये ।'' पूर्णिमा ने हंसते हुए कहा ।

भोजन के बाद उमेश ने कटिंग देखी, तो बनाने लगा वह कहानी का वातावरण । चौथे दिन सुबह आठ बजे की बस से देहरादून आते हुए जुल्फें उड़ रही हैं उसकी । अपनी रफ़्तार पर है वह । मात्र सौ रुपये हैं उसकी जेब में बस । ठंडी-ठंडी हवा बड़ा ही सुख दे रही है । उमेश कहानी का प्लाट बनाता; लेकिन उसके आगे घूमने लगती घर की कहानी, किचन में लगभग सब डिब्बे खाली, मकान का किराया, तीर-सी चुभती दूधवाले की साइकिल की घंटी की आवाज, अखबार का बिल...फिर सोचता,

सोच रहा है उमेश काश एक प्रमाण-पत्र मिल जाता, 'प्रमाणित किया जाता है कि...' तो नौकरी लग जाती मेरी, किचन के डिब्बे...बच्चे की साइकिल और रोटी की चिंता दूर हो जाती और तब अपनी कहानी के सिवाय और भी कहानी लिखता मैं ।

'चलो जो भी होगा कहानी प्रतियोगिता में, पर यहां आरक्षण तो नहीं है, कहानी तो मन खोलकर लिख सकता हूं । फिर चलती हुई बस में याद आयी उसे गोलू की । कितनी बार कहा हुआ है उसने 'पापा मेरे लिए साइकिल ले आना...अच्छी वाली ।'

एक बार फिर कल्पना करने लगता है उमेश, 'अगर एक हजार पुरस्कार मिल जाता है मुझे, तो कुछ किचन का सामान आ जाएगा । आना-जाना भी निकल जाएगा और दूध-अखबारवाले को भी दे ही दूंगा । काश ! आज योग्यताओं और ज्ञान का सही मूल्यांकन हो गया होता, तो रोटी की चिंता दूर हो गयी होती मेरी । तब एक कहानी को कहानी-जैसा देखता मैं..., उसकी इस सोच क्रिया से दूसरी धारा निकल पड़ती है और सोचने लगता है फिर से अपने संगी-साथियों के बारे में, बड़ी मौज से खा-पी रहे हैं जो घूस, आरक्षण और सिफारिश के सहारे और उसकी अपनी हालत...'

कहानी प्रतियोगिता की घोषणा हुई तो उमेश की कहानी को प्रथम पुरस्कार मिल गया । शाम आठ बजे पुरस्कार वितरित होने जा रहे हैं, घोषणा हुई उमेश चन्द्र तिवारी ने इस कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया...गूंज गया तालियों से पूरा सभागार । उमेश भीतर से बहुत ही प्रसन्न था । वह पुरस्कार लेने मंच पर गया । वीडियो कैमरे के भीतर की रोशनी बड़े प्यार और आराम से उसे बधाई दे रही थी । फोटोग्राफर धड़ाधड़ फोटो खींच रहे हैं । पुरस्कार देने से पहले उद्घोषक ने एक घोषणा की, कि, "हमने सोचा पैसे बहुत दिनों तक नहीं रह पाते, इसलिए हमने नगद पुरस्कार के स्थान पर प्रथम पुरस्कार के रूप में दो चांदी की लेखनियां और एक कश्मीरी शॉल रख दिया है— तालियों की गड़गड़ाहट होने लगी, पुरस्कार लेते हुए उमेश के कानों में एक तोतली आवाज गूंजने लगी, 'पापा मेरे लिए साइकिल ले आना अच्छी वाली और साथ ही किचन के कई खाली डिब्बे बजने लगे एक साथ ।

पुरस्कार लेकर उमेश ने अपनी जेब में हाथ डाला, केवल बावन रुपये...श्रीनगर के लिए बस का टिकट... ।

सोच रहा है उमेश काश एक प्रमाण-पत्र मिल जाता, 'प्रमाणित किया जाता है कि...' तो नौकरी लग जाती मेरी, किचन के डिब्बे...बच्चे की साइकिल और रोटी की चिंता दूर हो जाती और तब अपनी कहानी के सिवाय और भी कहानी लिखता मैं ।

—पो.बॉ.— २०,
श्रीनगर (गढ़वाल)-२४६१७४

तृतीय पुरस्कार

अधखिले गुलाब

● अनीता कथूरिया

दर्पण कदापि झूठ नहीं बोलता । कदाचित, हृदय की मनोभावनाओं को भलीभांति प्रतिबिंबित करना उसकी स्वाभाविकता है । पंद्रह वर्ष पुराना यह दर्पण अपनी सुंदरता खो चुका है, परंतु शीतला में आये शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों की सूचना ईमानदारी से देता रहा है आज तक ।

ग्यारह वर्ष की शीतला नन्हीं-सी सुकोमल बच्ची, हंसती-खिलखिलाती मासूम-सी कली, जो अभी खिलना नहीं चाहती है । किसी उपवन की शोभा नहीं बनना चाहती । वह तितली के समान स्वछंद भाव से पुष्पों पर मंडराना चाहती है । फूलों से उसे बेहद प्यार है । विशेषकर गुलाब के अधखिले फूलों से । अधखिले फूलों की मादकता व सौंदर्य किसी उर्वशी अन्यथा अप्सरा से किसी तरह कम नहीं आंकी जा सकती । खिलकर तो फूल को झड़ना ही है । यही उसकी नियति है । कोई उसे निहारेगा तो केवल तोड़कर सूंघने की मंशा से । और उसके आकर्षण में कमी आते ही उसे मसलकर एक ओर फेंक देगा । उसके अंजाम से बेखबर ।

शीतला को भी अधखिले फूलों से प्यार है । उन्हें तोड़ना उसे अच्छा नहीं लगा । फूलों को सहलाती, देर-देर तक निहारती और मन ही मन प्रसन्नता से विभोर होती । मां सुबह-सवेरे ही काम पर चली जाती । जाते-जाते शीतला को अवश्य जता जाती कि घर का काम निपटाना है ।अलसायी-सी बच्ची उठते ही काम में जुट जाती । छोटे बहन-भाइयों को नहलाना-धुलाना, नाश्ता कराना और स्कूल

भेजना यही दिन्चर्या थी । यही जीवन की नियति थी । परंतु इसमें प्रताड़ना अथवा अत्याचार-जैसी कोई संभावना नहीं थी । मां काम से वापस आकर शीतला को गोद में भर लेती । माथे पर अंकित ममत्व का चिह्न दिनभर की थकान व पीड़ा अपने में समाहित कर लेता ।

मां शीतला का चेहरा निहारती । अधखिले गुलाब-सा सुंदर । अपनी कोख पर संदेह होने लगता । इसे तो किसी भले घर की मेमसाहब के पेट से पैदा होना चाहिए था । फटे-पुराने गंदे-से फ्राक व बेतरतीव फैले बालों में भी उसका रूप चंदा-सा दमकता । इसे मैला होने से कैसे बचा पाएगी । यह प्रश्न उसे दिन-रात बेचैन करता । शराबी पति के निकम्मेपन से तो हार ही चुकी थी । घुलने लगी थी वह । शरीर भी जवाब देने लगा था । भला हो मेमसाहब का, जो एक दिन उसे डॉक्टर को दिखाने ले गयीं । पता नहीं डॉक्टर ने क्या कहा कि मेमसाहब का चेहरा पलभर को उतर गया । अच्छी खुराक व आराम की सलाह के साथ अच्छी-खासी महंगी दवाई लिख दी थी डॉक्टर ने । मेमसाहब ने दवाई भी दिलवा दी । दवाई तो खा ली, परंतु आराम व अच्छी खुराक के बारे में वह कैसे सोच सकती थी ? घर तो उसकी कमाई से किसी तरह घिसट रहा था ।

परंतु जब लकड़ी को दीमक लग जाती है, तो वह अंदर ही अंदर खोखला कर देती है । ऊपर से सलामत दिखनेवाली चौखट भी एक दिन अनायास धराशायी हो जाती है । इसी तरह शीतला की मां भी एक दिन चल बसी । साथ ही उसके बुरे दिनों के इतिहास की रचना भी प्रारंभ हो गयी । शराबी बाप के लिए शराब के लिए पैसे मिलने का रास्ता बंद हो गया । घर में बच्चे भूख से मरने लगे, तो उसका नशा उतरा और जब दिमाग ने सोचा और औरतों ने देखा तो उसके सामने अधखिली कली शीतला थी । उसकी आंखों में वहशी चमक उभर आयी । अरे ! यह मेरी बेटी है ! नहीं-नहीं— यह नहीं हो सकता । छोटे बच्चों पर निगाह डाली, तो उसका संदेह विश्वास में परिणित होने लगा । औरत तो साली सारा दिन घर से बाहर रहती थी न जाने कहां-कहां मुंह मारती होगी ? चलो उसने जो किया अच्छा ही किया । मेरे लिए एक सहारा तो छोड़ गयी । और उसी क्षण से ही अधखिले गुलाब को समय से पूर्व ही खिलाने की योजनाएं माली के दिमाग में उपजने लगी ताकि, खरीदारों से अच्छा मोल लिया जा सके ।

शीतला पांच हजार में बिक गयी । नहीं...बिकी नहीं । बाप ने समाज को दिखाने के लिए उसे एक मित्र के हाथों में सौंप दिया । बाकायदा विवाह की रस्में संपन्न हुईं । जब फेरे हो रहे थे, शीतला गहरी नींद में थी । बाप ने गोदी में उठाकर फेरे दिलवाये । अगली सुबह

शीतला की विदाई हो गयी । बेचारी लाल, सुंदर दमकते जोड़े को पहनकर खुश हो रही थी । वह, नये कपड़े जो पहने हुए थी ।

तथाकथित पति के घर में रुपये-पैसे की कोई तंगी नहीं थी । अच्छी-खासी कमाई थी । पहली पत्नी की मौत हो चुकी थी । दो जवान लड़के थे । अपनी नयी मां को देखकर घृणा व वितृष्णा से मुंह बिचका लिया था उन्होंने । असहनीय पीड़ा को झेलते हुए वह अधखिला फूल खिल गया था । समय से पूर्व हुए अपने भीतर आये इस परिवर्तन को शीतला समझ नहीं पा रही थी । यह शारीरिक पीड़ा क्यों झेलनी पड़ी— इसकी क्या परिभाषा है इसका खुलासा कौन करता ? कौन समझाता, उसे पुरुष के स्वार्थ से परिपूर्ण इस अर्थहीन, अनचाहे संबंधों का अर्थ ?

प्रतिदिन रात्रि को एक अनचाही पीड़ा अब असहाय होने लगी थी उसे । पास में रहनेवाली एक हमदर्द पड़ौसिन को डरते-झिझकते उसने अपनी समस्या बतायी, तो वह एक दिन चुपके से उसे अपने साथ डॉक्टर को दिखाने ले गयी । शीतला की कहानी सुनकर डॉक्टर भी सकते में आ गयी । जांच से पता चला कि शीतला को किसी अवांछनीय रोग की संभावना है ।

उस रात शीतला को शराब पीकर पति ने बहुत पीटा । पीठ व छाती पर उभर आये लाल-लाल निशान पति की बर्बरता की कहानी कह रहे थे । उसके बाद फिर शीतला घर से बाहर नहीं निकली । पति के छोटे बेटे को उससे हमदर्दी थी, परंतु उसके पीछे छिपे आशय को भी अब शीतला कुछ-कुछ समझने लगी थी । अपने को स्वयं में समेट लिया था उसने ।

दो-तीन साल में ही शीतला एक परिपक्व महिला का रूप ले चुकी थी । पुरुष समाज के प्रति उपजी घृणा को वह अब दर्शाने लगी थी । पति के साथ आये मित्रों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वह उपेक्षित करती फिर रात में इसके कारण चाहे उसे कितनी ही शारीरिक ताड़ना सहनी पड़े ।

अधखिला गुलाब अब खिलकर अपनी महत्ता को जताने को आतुर हो उठा । पति से बदला लेने की भावना उसके हृदय में सिर उठाने लगी । सभी पुरुष उसे भयंकर राक्षस से नजर आते । परिणामस्वरूप एक परिचित ने, जो कि नया-नया पड़ौस में आया था, जब दोस्ती का हाथ बढ़ाया तो उसने भी अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया । एक रात गहना, कपड़ा व नकदी लेकर उसके साथ निकल गयी ।

उसे लगा कि वह उसे वास्तव में प्यार करता है और उसने अपने आपको उसके समक्ष पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया । उसे प्रथम बार एहसास हुआ कि वास्तविक संतुष्टि अपने मनपसंद जीवनसाथी के साथ ही मिलती है ।

एक माह तक वे दोनों कहां-कहां नहीं घूमे । लगा जीवन सार्थक हो गया । धीरे-धीरे पैसे खत्म होने लगे । शीतला ने यह बात उसे बतायी तो वह सकते में आ गया । अगले दिन वे लोग लखनऊ में थे । बोला, यहां मेरी मौसी रहती है । बचपन से उसने ही मुझे पाला है, वहीं चलते हैं ।

आज शीतला अपने भरे-पूरे यौवन के साथ जिस कमरे में बैठी है, पूर्ण सुसज्जित तथा समस्त सुख-सुविधाओं से संपन्न है । उसके बदन पर कीमती कपड़े हैं । अभी-अभी एक

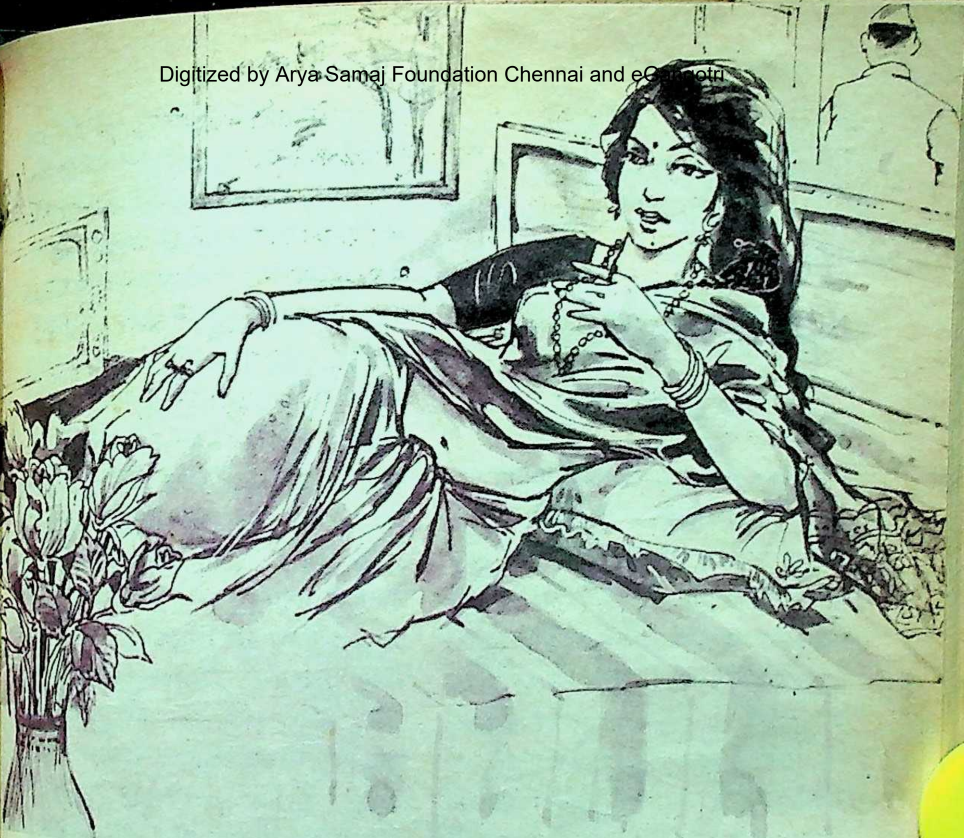

नोटों की गड्डी थमाते हुए वह जल्दी ही दोबारा आने का वायदा करता गया है । पलंग पर लेटी हुई शीतला के चेहरे पर थकान व आंखों में आंसू हैं । साईड टेबल पर एक गुलदान में अधखिले गुलाबों का गुलदस्ता सजा हुआ है । आज भी शीतला को अधखिले गुलाब बहुत पसंद हैं ।

सेठ उसके कमरे में आया है । शीतला ने उठकर उसका अभिवादन किया है । और उसके साथ अंदरवाले कमरे में चला गया है । जब सेठ उस कमरे से बाहर निकला तो उसे नोटों की गड्डी थमाते हुए वह जल्दी ही दोबारा आने का वायदा करता गया है । पलंग पर लेटी हुई शीतला के चेहरे पर थकान व आंखों में आंसू हैं । साईड टेबल पर एक गुलदान में अधखिले गुलाबों का गुलदस्ता सजा हुआ है । आज भी शीतला को अधखिले गुलाब बहुत पसंद हैं ।

—२२, नेहरू नगर
खलासी लाईन, सहारनपुर-२४७००१

कहानी

तृतीय पुरस्कार

नागफनी

● सौरभ गुप्ता

"डेढ़ थैली । स्साला आधी तो खुद पी गया जोईसिंह ।" "कल से अकेले आऊंगा ।" पत्थर की चोट से किकियाता हुआ कुत्ता लंगड़ाता हुआ भागा । जींदे की हंसी छूट गयी । वह एक पत्थर और उठाने को हुआ तो उसे ऐसा लगा किसी ने मुंह के रस्ते पेट में हाथ डालकर उसकी आंतें बाहर खींच ली हों । मट्टी और ढेलों की कच्ची सड़क पर वह लुढ़क गया । कै हुई तो सारा बदन खिंचने लगा, जान में जान आयी तो उसे अपनी घरवाली की याद सताने लगी । नक्सो पेट से थी, अब तो सातवां महीना चल रहा था । उसके फूले हुए पेट में जींदे को एक नयी दुनिया दिखायी देती । हर पेट की हलचल में उसे एक विचित्र आनंद का अनुभव होता । हालांकि नक्सो के पेट में खिलनेवाली कोंपल भी उसके जीवन के कटु सत्यों को भूलने नहीं देती थी ।

पीपाड़ जिले में कहारों और भिश्तियों के यहां जनम हुआ था जींदे का । मां ने उसकी शकल देखकर उसे अपनी छाती देने से इनकार कर दिया था, "यो परेत म्हारी कोख से कोनि हो सके ।" उसका बापू हमेशा की तरह अपनी ठोड़ी खुजलाता हुआ दरवाजे पर खड़ा रहा । जोरू के जापे के लिए अपनी जमा पूंजी खतम करने के बाद अब दारू की थैली के लिए खोटी पाई भी न बची थी । दारू के बिना कैसे गुजारा होगा, यह सोचकर उसका बाप कुनमुना रहा था । लुगाई के रोने-धोने ने उसने और परेशान कर दिया । वो उठकर चला तो कभी न लौटा । कोई कहता है, नशे में पटरी के साथ-साथ चल रहा था । गाड़ी से कट मरा । फिर तो जींदे की मां उसको कचरे में फैंकने को तैयार हो गयी । "परेत है परेत, मुआ जनमा बाद, पहले ईी बाप ने खाई गयो ।" बुआ ने पालन-पोषण की जिम्मेदारी संभाली । अपने गांव लाकर बुआ ने उसे कुम्हारों का काम सिखलाया । बुआ की अपनी कोख से तो कोई जीवन संपन्न हुआ नहीं । कोशिश करते, ओझा को दिखाते, दवाई खाते वो कभी एक जीवित बच्चे को जनम न दे पायी । मगर जींदे ने अपनी शक्ल-सूरत के बाद भी खूब सेवा की बुआ की । फूफा चल बसा तो बुआ ने अन्न-जल त्याग दिया । छोटी जातवालों में ऐसे त्याग की बात सुनकर ब्राह्मण लोग बड़े आश्चर्यचकित हुए । बुआ की मृत देह को मंदिर के पुजारी ने वेद-मंत्र पढ़ दिये, ताकि जीवनभर तड़पनेवाली आत्मा को मृत्यु के बाद शांति मिले । बड़ी भाग्यशाली थी । वेद-मंत्र भी किसी भिश्ती कहार की देह को [illegible] निश्चित ही थी ।

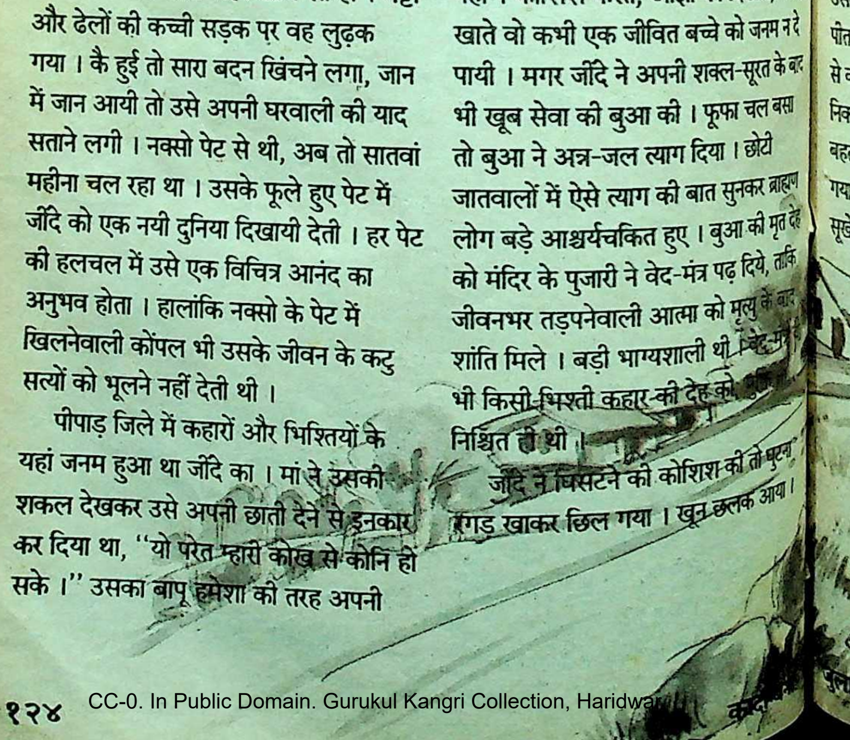

जींदे ने घिसटने की कोशिश की तो घुटना रगड़ खाकर छिल गया । खून छलक आया ।

लाल गरम लहू घुटने से बहकर टखनों तक जा पहुंचा तब जींदे ने उसे देखा । जिस कुत्ते को उसने पत्थर मारा था वो अब उससे थोड़ी दूर पर खड़ा था । मानो उससे कह रहा हो, “और मार, ले साले अब मजा चख ।” जींदे ने शायद उसकी बात समझ ली, क्योंकि अपने घाव को छोड़कर उसने एक भाटा उठाया और खींचकर कुत्ते की दिशा में घुमा दिया । चोट खाया कुत्ता सप्तम सुर में रिरियाता हुआ एक गली में चला गया । जींदा घर पहुंचा तो नक्सो कुंडी चढ़ाकर सो रही थी । “नक्सो, अरे दरवाजा खोल मरी” कुछ समय पहले का प्यार अब भद्दी गालियों के रूप में उजागर हो रहा था । नक्सो ने दरवाजा खोला तो जींदे के कै से सने कपड़ों और रातभर की दारू की मकरांद उसके नथुनों से टकरायी । उसका मन वितृष्णा से भर उठा । “क्यों इत्ती पीता है रे, क्या मरना है, अरे बाप की तरह रेल से कट मर, मेरा पीछा छोड़ ।” मन का जहर निकालने के बाद जब उसने जींदे के टखनों तक बहता खून देखा तो उसका जी कैसा-कैसा हो गया, “कहां मर आया, थारे काईं है, म्हारी जान सूखे, मैं मरूं ।”

काले-कलूटे, बेढंगे से जींदे से विवाह करके वह इसलिए आयी थी क्योंकि उसका चाचा उसे एक कोठे को बेचना चाहता था । उस नरक को भोगने से अच्छा उसे यह कलूटा कुरूप मगर साफदिल जींदा लगा ।

अपने पेट को संभालती नक्सो जींदे के घाव

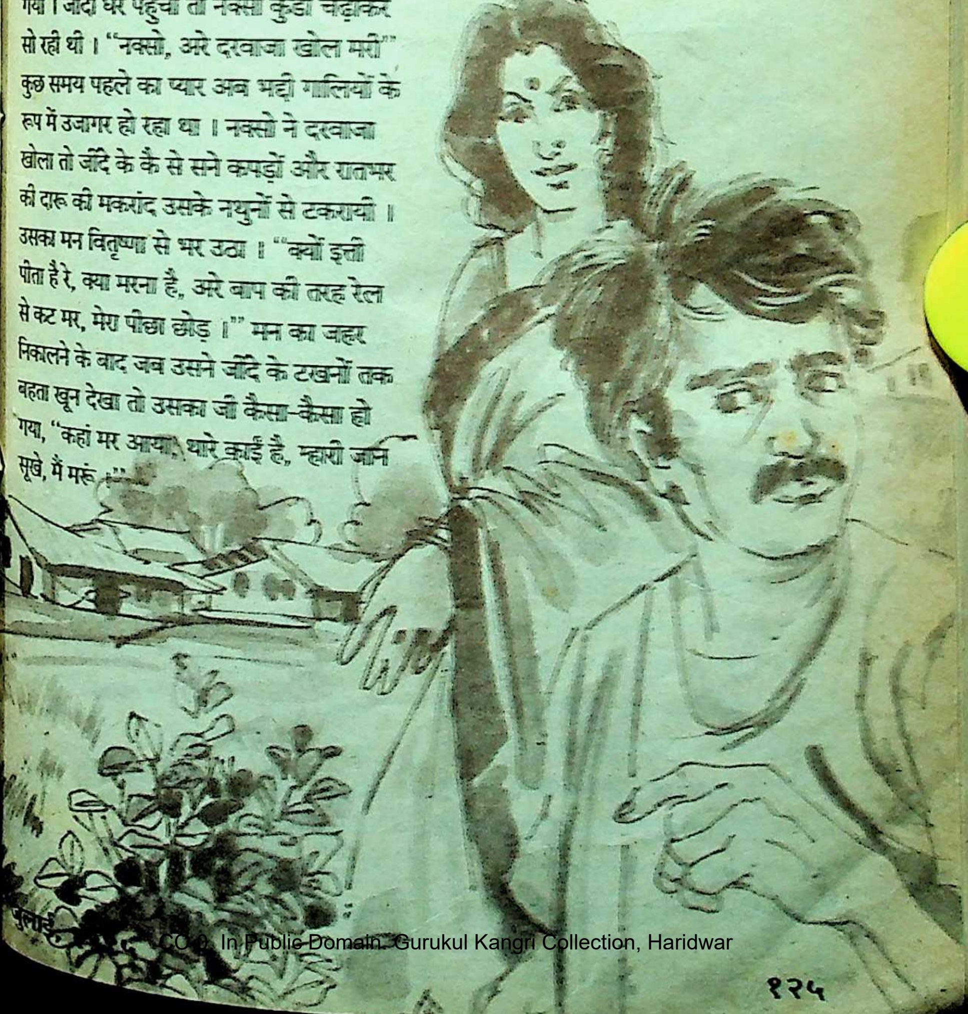

धोकर हल्दी भरने लगी । कै से सने कपड़ों को उतारा तो उनकी भभकांद से उसका जी मितला गया । छोटा-सा घर । नहीं उसे घर नहीं कहा जा सकता । उस फूस, गोबर और पुआल से बनी ठेकरी में बहुत-सी रोजमर्रा की जरूरतें पूरी नहीं होती थीं । कपड़े धुलते न थे, अगर धुले तो नीचे चमारों के पोखरे तक जाना पड़ता था । उस हालत में नक्सो उतनी दूर तो न जा पाती मगर फिर भी उसे जींदे पर अब गुस्सा नहीं आ रहा था । खाट पर पसरा जींदा खर्राटे भर रहा था ।

पीपाड़ के आसपास की मरुभूमि में नागफनी के पौधों की भरमार है । यह पौधा पहले पत्तियों, फूलों समेत होता है मगर रेगिस्तान के थपेड़े खाकर पानी के अभाव में, पत्तियां झड़ जाती हैं, फूल मुरझा जाते हैं और कोमल पंखुड़ियों की जगह कांटे निकल आते हैं ।

कुछ इसी तरह जींदा भी पहले मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण एक संपूर्ण मनुष्य था । पर परिस्थितियों ने उसे नागफनी-सा बना दिया था । चाहकर भी किसी को प्यार नहीं जता पाता था । नागफनी के समान उसके कांटे सबको चुभते थे । मगर अंदर से वह उतना ही कोमल था । बड़े कमाल की बात है कि एक मनुष्य और उसके वातावरण में कितनी समानता हो सकती है । मगर यदि हम जरा ठहरकर देखें तो हमें लगेगा कि हम सभी नागफनियों के कभी फूल थे । हर एकाकी पसंद, कठोर, निष्ठुर व्यक्ति एक नागफनी है जो कि अपने वातावरण के अनुसार ढलकर अपने आप को, अपने वजूद को कायम रखना चाहता है ।

सुबह के सूरज की चौंध ने जींदे को

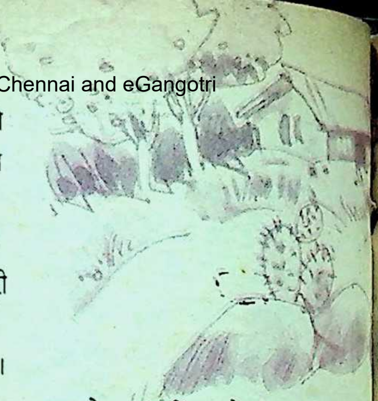

झकझोरा । ''जींदा, ओ जींदा, अबे तू यहां
रहा है, वहां तेरी जोरू चमारों के पोखरे पर
गयी, सारी बस्ती इकट्ठा हो गयी है, वो पेट से
भी तो है, भगवान भली कराये चल जल्दी।''
जींदे का सिर भन्ना गया । जोईसिंह ने सांस
लेकर उसकी ओर देखा । जींदा पोखरे को
को हुआ तो जोईसिंह उसका हाथ पकड़कर
बोला, ''वहां जाकर क्या करेगा, सारी जनाना
उठे ही हैं । चल डॉक्टर को बुलायें ।''

गांव की कच्ची-पक्की सड़कों पर अधनंगे
बच्चे खेल रहे थे, कहीं कोई नयी-नवेली
दुलहन अपनी छोटी-सी ननद से बाल बनवा
रही थी, तो कुछ घरों में सुबह-सुबह ही
कलह-क्लेश शुरू हो गया था । इन सब को
पार करके जब वह डॉक्टर की गली में पहुंचा
उसके घुटने से फिर से खून निकलना शुरू हो
गया था । डॉक्टर ने दरवाजा खोला तो उसे
लगा कि उसके सामने खड़े जींदे को
मरहम-पट्टी की जरूरत है, मगर पूरी बात सु
पर वह फौरन अपना झोला उठाकर साईकिल
पर बैठकर उनके साथ निकल पड़ा । गांव के
एकमात्र डॉक्टर और एकमात्र साईकिल ।
गलियों में खेलते छोरे यूं ही साथ हो लिये,
कोई मेला जा रहा हो । शोर-शराबे से
बेसुध-सा जींदा दौड़ा चला जा रहा था, उसके

परिस्थितियों ने उसे नागफनी-सा बना दिया था । चाहकर भी किसी को प्यार नहीं जता पाता था । नागफनी के समान उसके कांटे सबको चुभते थे । मगर अंदर से वह उतना ही कोमल था । बड़े कमाल की बात है कि एक मनुष्य और उसके वातावरण में कितनी समानता हो सकती है । मगर यदि हम जरा ठहरकर देखें तो हमें लगेगा कि हम सभी नागफनियों के कभी फूल थे । हर एकाकी पसंद, कठोर, निष्ठुर व्यक्ति एक नागफनी है जो कि अपने वातावरण के अनुसार ढलकर अपने आप को, अपने वजूद को कायम रखना चाहता है ।

घुटने पर रस्ते की मिट्टी लग गयी थी, सो खून निकलना तो बंद हो गया ।

पूरी जांच-पड़ताल के बाद डॉक्टर ने बताया कि चोट नहीं लगी थी, बच्चे को खतरा नहीं था मगर शहर जाकर इलाज कराना लाजमी था । चूंकि गांव में उपकरण-साधनों की तो कमी थी ही । वहां का खर्चा-पानी कहां से आएगा, यह सोचकर जींदे की रातों की नींद और दिन का चैन उड़ गया । उसने दिन-रात काम करना शुरू किया, शराब भी बंद कर दी, फिर भी पैसा इकट्ठा न हो पाया । जींदे की पस्त हालत देखकर गांव के बड़ों को दया आयी, पंचायत बुलायी गयी । सब बिचारने लगे कि किस प्रकार जींदे की मदद की जाए । तय हुआ कि हर घर से कुछ रुपये-पैसे दिये जाएं । जींदा निहाल हो गया, पाई-पाई लौटाने की कसमें खाता वो जब शहर की बस में चढ़ा तो उसकी आंखों में आंसू थे, जीवन में शायद पहली बार किसी ने उसकी आंखें नम देखी हों । बुआ को तो वो यूं ही जला आया था । तब से तो वह भावनाहीन नागफनी-सा हो गया था पर गांवभर के प्यार की इस बरसात ने शायद फिर से उस नागफनी में कहीं कोंपलें खिला दी थीं ।

नक्सो ने चांद-सी लड़की को जनम दिया, गांवभर आया उसे देखने, जींदा ठूंठ-सा वहीं बैठा रहा । सालों अकाल के बाद सूखी मिट्टी पर जैसे बरसात की बूंदें मोतियों की तरह इकट्ठी हो जाती हैं, कुछ वैसे ही उसकी हालत थी । इस प्यार की बरसात ने उस नागफनी में फूल खिलने को मजबूर कर दिया था ।

धीरे-धीरे जींदा गांव का एक अभिन्न अंग बन गया । इस बीच गांव के आसपास नागफनी की जगह बड़े अजीब-से रंग-बिरंगे फूल खिल आये थे, सब आश्चर्यचकित थे, रेगिस्तान में फूल ? मगर सिर्फ जींदा जानता था कि उनका वहां उगना महज एक संयोग नहीं था, वह तो प्यार-मुहब्बत की बरसात के आगे तमाम अकाल, तमाम नागफनियों का समर्पण था ।

—राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज
देहरादून (उ.प्र.)

बिहार के बिरहोर : ढूंढ़ने होंगे उनके कदमों के निशान

• अशोक सुमन

अरबों रुपये की योजनाएं बनाकर हमारी सरकार जनजातियों की उन्नति के संदर्भ में चाहे कितने बड़े-बड़े दावे क्यों न करे लेकिन सचाई यह है कि देश में आज भी बहुत-सी ऐसी जनजातियां हैं, जिन तक विकास की रोशनी नहीं पहुंच पायी है । उन्हीं जनजातियों में से एक जनजाति है—बिरहोर । जो वर्तमान में अपने अस्तित्व के नाजुक दौर से गुजर रही है । सभी प्रकार के सरकारी संरक्षणों, कार्यक्रमों, घोषणाओं, आश्वासनों और कानूनों की भरमार के बावजूद इस जनजाति की जनसंख्या दशमलव आठ प्रतिशत की दर से घट रही है और निकट भविष्य में पूरी जाति के नष्ट होने का खतरा मंडरा रहा है ।

वर्ष १९५१ में इस जनजाति की कुल जनसंख्या पचपन हजार थी जो घटकर अब पांच हजार के आसपास रह गयी है । जनसंख्या विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इस जनजाति को नष्ट होने से बचाने के लिए शीघ्र कारगर उपाय नहीं किये गये तो वह समय दूर नहीं, जब जंगलपुत्र बिरहोर हमेशा के लिए समाप्त हो जाएंगे ।

घुमंतू : बिरहोर

बिरहोर बिहार के छोटानागपुर अंचल के घने जंगलों में बसे हुए हैं । ये घुमंतू प्रकृति के होते हैं जो कभी किसी एक ठांव पर बंधकर नहीं रह सकते । इन लोगों का न तो कोई स्थायी निवास स्थान होता है, न कोई स्थायी आय का साधन ही । शिकार और जंगली फल-फूल की तलाश में ये छोटानागपुर के जंगलों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते फिरते हैं और इस प्रकार इनके निवास स्थान में भी परिवर्तन होता रहता है । किसी एक स्थान पर वे तब तक पड़ाव डालते हैं जब तक कि इन्हें शिकार या फल-फूल उपलब्ध होता है । फिर वे दूसरी अनुकूल जगह की तलाश में निकल पड़ते हैं । कुछ वर्षों के बाद वे वहीं लौट आते हैं, जहां से प्रारंभ हुए थे । घूमने का यह चक्र चलता रहता है ।

चाहे कड़कती धूप हो या कंपकंपाती हवाएं, प्रकृति के हर मिजाज को बिरहोर बड़े धैर्य से सहते हैं । यद्यपि जीवनयापन के लिए इन्हें कड़ा संघर्ष करना पड़ता है लेकिन वे प्रकृति के सर्वाधिक करीब होते हैं । खुले आसमां तले, जहां जी चाहे, डेरा डाल देनेवाले । समाज से कटे लेकिन धरती से जुड़े ये लोग समाज के लिए हमेशा से ही कौतूहल का विषय रहे हैं । बिरहोर आदिम वर्ग के अंतर्गत आनेवाली जनजाति

आदिम जनजातियों में से एक है। इसकी दो उपजातियां हैं । पहला—ओघलो या भुलया, जो वर्षा के दिनों को छोड़कर हर दस-बारह दिन में अपना घर-द्वार बदलते हैं । दूसरा—जाघी या थनिए, जो ओथलों की अपेक्षा कुछ अधिक दिनों तक एक स्थान पर रहते हैं । साधारणतया एक स्थान पर वे लोग चार-पांच महीने तक या तब तक पड़ाव रखते हैं जब तक इन्हें भोजन के लिए फल-फूल शिकार तथा रस्सी बनाने के लिए कच्चा माल उपलब्ध होता रहे ।

पक्षियों की छद्म आवाजें

बिरहोर जनजाति जंगली जानवरों का शिकार करके अपना जीवन यापन करती है । इस जनजाति के लोग जंगलों में छोटे-छोटे समूह में तीतर, खरगोश, बंदर, चूहे, हिरण, रूखी एवं विभिन्न प्रकार के पक्षियों की तलाश में घूमते रहते हैं । इसके लिए ये जानवरों और पक्षियों की आवाजें निकालते हैं । इनकी आवाज को सुनकर पशु-पक्षी अपने ही सदस्यों की आवाज समझकर चले आते हैं और बिरहोरों द्वारा बिछाये जाल में फंस जाते हैं जबकि बिरहोर स्त्रियां एवं बच्चे जंगल से महुआ के फल-फूल, जंगली फल एवं रस्सी बनाने के रेशों को एकत्रित करने का कार्य करते हैं । इन कार्यों के अतिरिक्त वे शहद व मोम का संकलन भी करते हैं ।

बिरहोर जंगलों में छोटे-छोटे समूह में शिकार की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं । प्रत्येक समूह में चार से लेकर बारह परिवार रहते हैं । प्रत्येक समूह एक पड़ाव में ठहरता है जिसे स्थानीय भाषा में टांडा कहते हैं । लगभग एक दर्जन झोपड़ियों के समूह को एक टांडा का रूप दिया जाता है । घने जंगलों में इनके घर बनाने की प्रक्रिया बहुत ही दिलचस्प है । टांडा में ये लोग जंगल से लकड़ी, वनस्पतियों की सूखी डालें एवं शाखाओं आदि का इस्तेमाल करते हुए उनमें बबूल, आंक इत्यादि की मदद से एक सुंदर झोपड़ी तैयार करते हैं । जंगल की तेज हवाओं के प्रहार को झेलने हेतु ये अपनी झोपड़ियों को एक विशेष शक्ल देते हैं । झोपड़ी के ऊपर ढालान बनायी जाती है ताकि अंदर वर्षा का पानी प्रवेश न कर पाये ।

झोपड़ी : संस्कृति की पाठशाला

इनकी झोपड़ियां इतनी छोटी होती हैं कि उसमें आदमी लेट सकता है, बैठ सकता है, पर खड़ा नहीं हो सकता । इनकी छोटी झोपड़ी को देखकर आज से लगभग सत्तर वर्ष पूर्व एक अंगरेज अधिकारी ने टिप्पणी की थी कि "यह एक विलायती सुअर के लिए भी छोटी है ।" यद्यपि यह टिप्पणी कटु तथा अपमानजनक लगती है फिर भी बिरहोरों के संबंध में यह तब भी सत्य था और आज भी कमोवेश सत्य है ।

हर टांडा में दो विशेष झोपड़ियां हुआ करती हैं, जिन्हें युवागृह कहा जा सकता है । एक में कुंवारी लड़कियां सोती हैं और दूसरे में कुंवारे लड़के । एक निश्चित आयु (लगभग दस वर्ष) प्राप्त कर लेने के बाद टांडा के हर युवक या युवती के लिए यहां की उपस्थिति आवश्यक रहती है । ये युवक या युवतियां इन युवागृहों में रातभर रहते हैं और सूर्य निकलते ही वहां से चल देते हैं । लड़कों के युवागृह में कोई व्यक्ति उनकी रखवाली के लिए नहीं रहता है लेकिन लड़कियों के युवागृह में एक बूढ़ी महिला

रातभर मौजूद रहती है । टांडा के युवक एवं युवतियां इन युवागृहों में अपनी संस्कृति की बहुत-सी आवश्यक बातें सीखते हैं । विवाह के बाद लड़का एक अलग झोपड़ी बना लेता है और उस नयी झोपड़ी में अपनी पत्नी के साथ रहता है ।

विवाह की अनेक पद्धतियां

शादियों के रिवाज भी बिरहोरों में निराले हैं । सबसे प्रचलित प्रथा के अनुसार अगर कोई युवक और युवती एक-दूसरे को दिल दे बैठते हैं तो घर से भागकर किसी अज्ञात स्थान पर चले जाते हैं और वहां पति-पत्नी के रूप में रहते हैं । जब उनकी जाति के लोग उन्हें खोज लेते हैं तो उनका विवाह कर देते हैं । इस प्रकार उनके प्रेम को सामाजिक मान्यता मिल जाती है । इसके अतिरिक्त बिरहोरों में सिपंद्र वापला, वोलो-वापला, सदर वापला नामक विवाह की अन्य पद्धतियां भी प्रचलित हैं ।

एक बिरहोर परिवार द्वारा कई धार्मिक संस्कार भी किये जाते हैं । इनके विचार में दुःख, बीमारी, अकाल आदि देवी-देवताओं के नियंत्रण में हैं । यदि इन पर कोई विपत्ति आती है तो वे समझते हैं कि यह किसी देवता या महान आत्मा के नाराज होने का सूचक है । तब वे अपनी प्रार्थनाओं एवं कार्यों के द्वारा उन्हें प्रसन्न रखने की चेष्टा करते हैं । किसी के बीमार पड़ने पर वे झाड़-फूंक में ज्यादा विश्वास रखते हैं । ये लोग भूत-प्रेत एवं हनुमान आदि की पूजा करते हैं । हर टांडा में कुछ ऐसे व्यक्ति रहते हैं जिनका काम जमात को यह बताना रहता है कि कौन भूत किस सदस्य को सता रहा है और उसको मनाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए ।

उदास जंगलपुत्र

लेकिन कभी जंगलों को आबाद रखनेवाले बिरहोर आज उदास हैं । बिरहोरों को एकमात्र भरोसा जंगलों का था, लेकिन अब वे भी सा होते जा रहे हैं । नतीजन जंगली जानवर तेजी खत्म हो रहे हैं और बिरहोरों के समक्ष भुख की समस्या उत्पन्न हो गयी है । एक सर्वेक्षण रिपोर्ट है कि ९० प्रतिशत बिरहोरों को रात में भूखे सोना पड़ता है । पिछले एक दशक के अंदर भूख, कुपोषण और विभिन्न बीमारियों के कारण इस जनजाति के हजारों लोगों की मृत्यु हो चुकी है ।

बिरहोरों की संख्या में दिनोंदिन कमी आने का एक और बड़ा कारण यह है कि वे आम आदमी की तरह समाज में घुल-मिल नहीं सके । बिरहोर घने और बीहड़ जंगलों में बसे हुए हैं, जहां तक सड़कें नहीं जातीं । इसलिए उन तक आसानी से राहत भी नहीं पहुंचायी सकती ।

बिरहोरों के कल्याण के लिए योजनाएं लागू तो की जाती हैं, लेकिन सख्ती के साथ उन्हें अमल में नहीं लाया जाता । यही कारण है कि सभी प्रकार के संरक्षणों, कार्यक्रमों और कानूनों की भरमार के बावजूद उनकी बदहाली बढ़ती ही जा रही है । बिरहोर जनजाति को समूल नष्ट होने से बचा पाना अब असंभव प्रतीत होने लगा है । लगता है कि अगले कुछ वर्षों में हो ढूंढ़ने पर भी बिरहोरों के कदमों के निशान छोटानागपुर के जंगलों में नहीं मिलेंगे ।

— ६, नव विकास कॉलोनी, फेज-२ आदित्यपुर
नगर, [illegible]

त्र
वाद रखनेवाले
रों को एकमात्र
अब वे भी सम
जानवर लेवी है
समस्त मुखर्मा
एक सर्वेक्षण के
रों को रात
एक दशक के
न बीमारियों के
लोगों की मृत्यु है

दिन कभी आने
कि वे आम
-मिल नहीं
जंगलों में बसे
तीं । इसलिए
हीं पहुंचायी व

जनाएं लागू हे
ाय उन्हें अमल
है कि सभी
र कानूनों की
ली बढ़ती हैं
समूल नष्ट
प्रतीत होने
कुछ वर्षों में हो
के निशान
लेंगे ।

-२ आविष्कार
नगर, पटना।

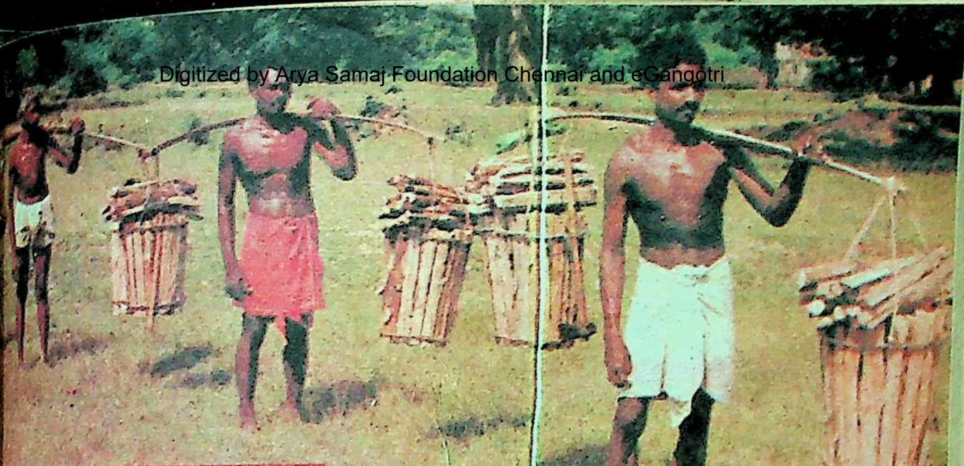

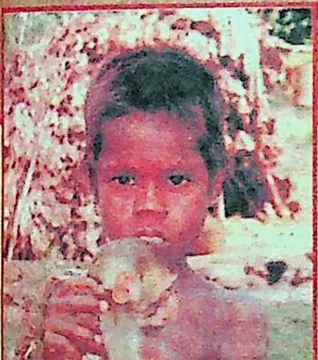

▲ बिहार की लुप्त होती बिरहोर जाति : औद्योगिकीकरण ने लकड़ियां भी छीन लीं

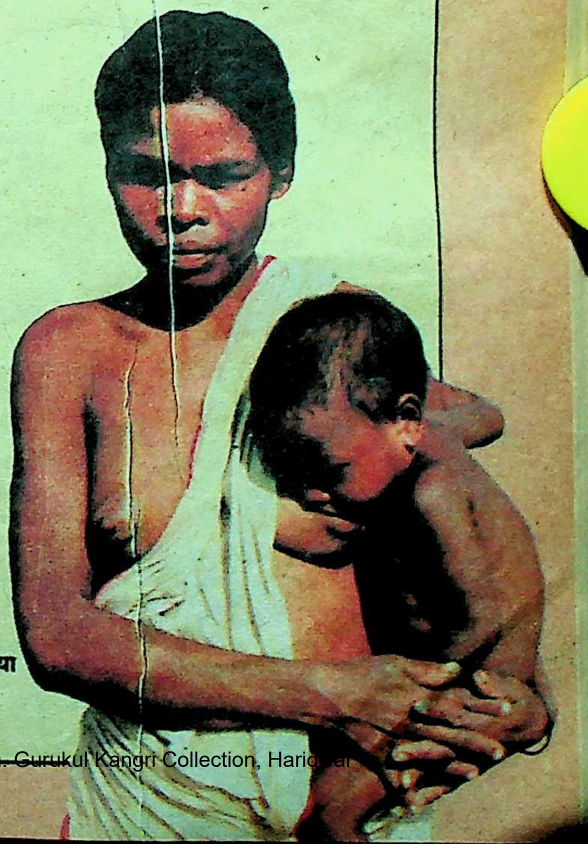

▲ बिरहोर बालक : शोषण ने बचपन भी छीन लिया

एक बिरहोर महिला अपने बच्चे के साथ : अंधकारमय भविष्य ▶

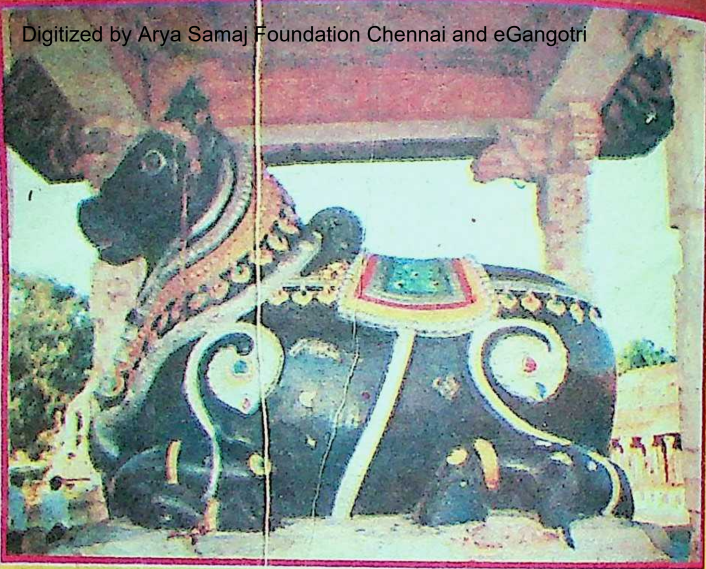

विशाल नंदी प्रतिमा : एकाम्रेश्वर मंदिर (कांचीपुरम)

छाया : ज्योति खरे

श्री वरदराज स्वामी मंदिर (कांचीपुरम)

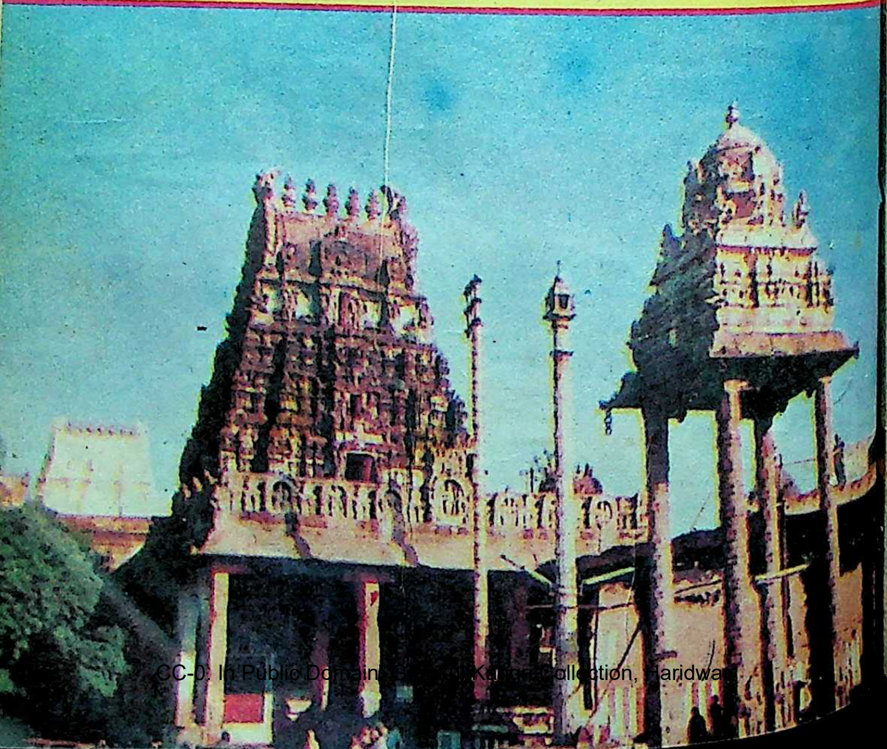

तमिलनाडु में स्थित कांचीपुरम मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में से एक है। इन सात पुरियों में साढ़े तीन पुरियां विष्णु की और इतनी ही शिवजी की है। कांची आधी विष्णु की और आधी शिव की है। अत: कांची के दो भाग हैं— शिव कांची तथा विष्णु कांची। कांचीपुरम को दक्षिण भारत का काशी कहा जाता है। कांचीपुरम ५१ शक्ति पीठों में से एक है। कहा जाता है कि यहां सती का कंकाल गिरा था। संभवत: कामाक्षी मंदिर ही यहां का शक्तिपीठ है।

कांचीपुरम दक्षिण भारत का काशी

● ज्योति खरे

दक्षिण रेलवे के मद्रास एगमोर–रामेश्वरम रेल मार्ग पर मद्रास से लगभग ५६ कि. मी. की दूरी पर चेंगलपट्ट स्टेशन है। यहां से एक लाइन अरक्कोणम् तक जाती है। इस रेल लाइन पर चेंगलपट्ट से लगभग ३५ कि.मी. की दूरी पर कांचीपुरम स्टेशन है। इस नगर के एक ओर शिव कांची तथा दूसरी ओर विष्णु कांची है। नगर का अधिकांश भाग, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन एवं प्रमुख बाजार शिवकांची में है, विष्णुकांची नगर का छोटा भाग है। शिव कांची के बस स्टैंड से लगभग साढ़े तीन कि.मी. की दूरी पर विष्णु कांची का विष्णु मंदिर है।

शिव कांची में बस स्टैंड के समीप ही सर्वतीर्थ सरोवर है। इसमें स्नान करने का विशेष महत्त्व है। सरोवर के मध्य में एक छोटा-सा मंदिर है, सरोवर के चारों ओर कई

श्री एकाम्रेश्वर मंदिर

मंदिर हैं, उनमें प्रमुख मंदिर काशी विश्वनाथ का है ।

शिवकांची में स्थित एकाम्रेश्वर प्रमुख मंदिर है । इस मंदिर के दो बड़े घेरे हैं । पूर्व के घेरे में दो कक्षाएं हैं । पहली कक्षा का गोपुर दस मंजिल का तथा १८८ फीट ऊंचा है । इस द्वार के दोनों ओर स्वामी कार्तिकेय तथा गणेश के मंदिर हैं । दूसरे कक्ष में 'शिव गंगा सरोवर' है, जहां ज्येष्ठ मास में विशाल उत्सव होता है । इसी घेरे से मिला हुआ मुख्य मंदिर का प्रवेश द्वार है । तीन द्वारों के अंदर 'श्री एकाम्रेश्वर शिवलिंग है, जो श्याम वर्ण बालुका निर्मित हैं ।

दक्षिण के पंचतत्त्व लिंगों में एकाम्रेश्वर भूतत्त्व लिंग है । इस संबंध में कुछ मतभेद है । कुछ लोग एकाम्रेश्वर लिंग को भूतत्त्वलिंग मानते हैं तो कुछ लोग तिरुवारुर के त्यागराज लिंग को भूतत्त्व लिंग मानते हैं । एकाम्रेश्वर पर जल नहीं चढ़ता । यहां चमेली का सुगंधित तेल चढ़ता है । लिंग के पीछे श्री गौरीशंकर की युगल मूर्ति है । मंदिर के पीछे एक अति प्राचीन आम का वृक्ष है । वृक्ष के नीचे छोटे मंदिर में तपस्या में लीन पार्वती की मूर्ति है ।

गौपुर एकाम्रेश्वर मंदिर

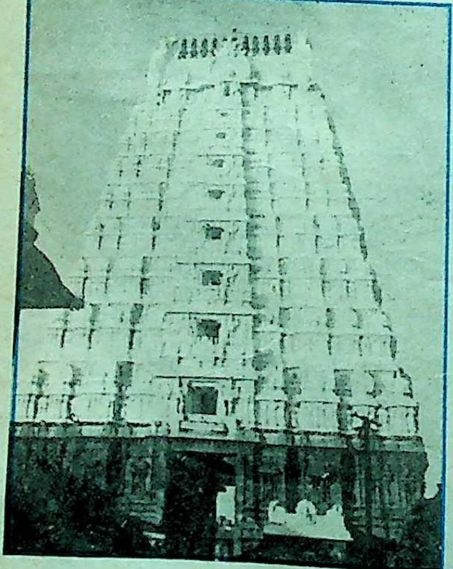

कहा जाता है कि एक बार पार्वती ने महान अंधकार उत्पन्न करके त्रिलोकों को त्रस्त कर दिया था । इस पर शिव ने रुष्ट होकर उन्हें श्राप दिया । इसी आम के वृक्ष के नीचे भगवती ने तप करके श्राप से मुक्ति पायी । तब भगवान शंकर ने प्रकट होकर उन्हें अपनाया । एकाम्रेश्वर लिंग पार्वती द्वारा बनाया हुआ बालू का लिंग है जिसकी वे पूजा करती थीं । शिव जी ने प्रकट होकर कहा था कि वे यहां अपने ज्योतिर्मय रूप को त्यागकर स्थावर लिंग में परिणित होकर यहीं रहेंगे ।

एकाम्रेश्वर मंदिर की दूसरी परिक्रमा के पूर्व वाले गोपुर के पास श्री नटराज तथा नंदी की सुनहरी मूर्तियां हैं । इसी घेरे में नवग्रह आदि अनेक देवविग्रह स्थापित हैं ।

शिवकांची में स्थित कामाक्षी देवी मंदिर इक्यावन शक्तिपीठों में एक है । मंदिर में कामाक्षी देवी की आकर्षक प्रतिमा है । यहीं अन्नपूर्णा तथा शारदा देवी के मंदिर भी हैं । कामाक्षी देवी मंदिर आदि शंकराचार्य द्वारा बनवाया गया था । कहा जाता है कि कांची में कामाक्षी, मदुरा में मीनाक्षी और काशी में विशालाक्षी विराजमान हैं । मीनाक्षी और विशालाक्षी विवाहिता हैं ।

कामाक्षी देवी के समीप ही वामन भगवान का मंदिर है । इस मंदिर में भगवान त्रिविक्रम

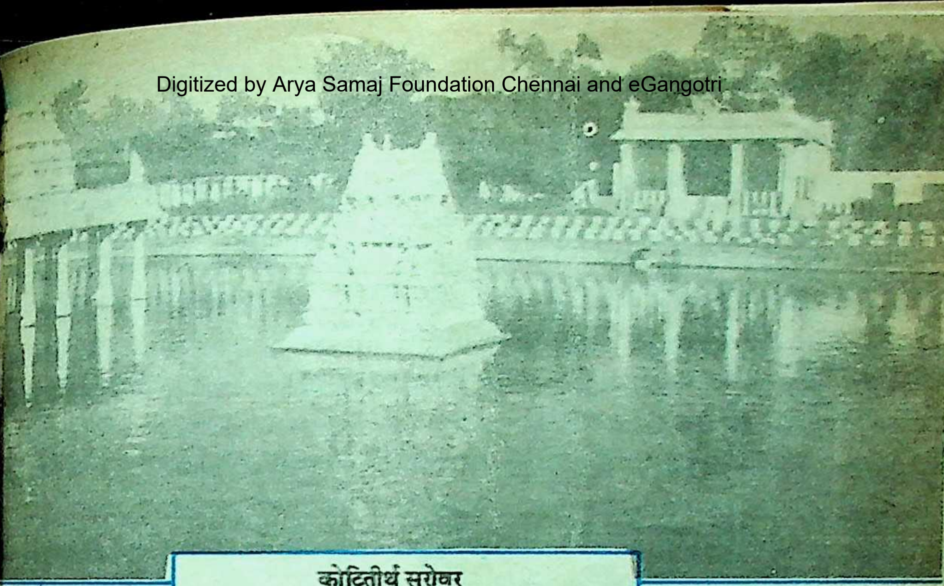

कोटितीर्थ सरोवर

की पांच मीटर ऊंची विशाल मूर्ति है । भगवान का एक चरण ऊपर के लोकों को नापते हुए ऊपर उठा है तथा दूसरा चरण राजा बलि के मस्तक पर है । मंदिर के पुजारी एक बांस में बहुत मोटी बत्ती अर्थात मशाल जलाकर भगवान के श्रीमुख का दर्शन कराते हैं । इसी मंदिर के समीप ही सुब्रह्मण्यम मंदिर है जिसमें स्वामी कार्तिकेय की भव्य मूर्ति प्रतिष्ठित है ।

शिवकांची में कैलाश नाथ शिव मंदिर दर्शनीय है । इस मंदिर का शिवलिंग अति सुंदर एवं प्रभावोत्पादक है । मंदिर के चारों ओर की दीवारों पर विभिन्न प्रकार की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं, जो शिल्पकला की दृष्टि से बेमिसाल हैं ।

शिवकांची में श्री बैकुंठ पेरुमल मंदिर बस्ती के मध्य में स्थित है । इस मंदिर में भगवान विष्णु का श्रीविग्रह है । मंदिर की परिक्रमा मार्ग में भित्तियों पर विविध प्रकार की कलात्मक मूर्तियां जिनमें श्रृंगार, युद्ध और नृत्यगान की मूर्तियां शिल्प कला की दृष्टि से अति आकर्षक है ।

विष्णुकांची में स्थित श्रीवरदराज स्वामी का मंदिर प्रमुख है । इस मंदिर का गौपुर ग्यारह मंजिल का है । भगवान का मंदिर तीन घेरों के अंदर है । पश्चिम के गोपुर से प्रवेश करने पर 'शत स्तंभ' मंडप मिलता है, जिसकी शिल्पकारी दर्शनीय है । सभी स्तंभ शिकार का पीछा करते हुए घुड़सवारों की आकृति के बने हैं । मंडप के मध्य में सिंहासन है, जिस पर उत्सव के समय भगवान आकर विराजते हैं । मंडप के पीछे 'कोटितीर्थ' सरोवर है, जिसके बीच में मंडप है । यहां भगवान वराह आदि के मंदिर हैं । कहा जाता है कि इस सरोवर में भगवान की शेषशायी मूर्ति जल में डूबी रहती है, जिसे बीस वर्षों में केवल एक बार जल से बाहर निकालकर विशाल उत्सव मनाया जाता है । कोटितीर्थ सरोवर के आगे 'गरुणस्तंभ' है । इसके दक्षिण में श्री रामानुजाचार्य की प्रतिमा है । रामानुजाचार्य की प्रधान पीठों में एक पीठ यहां है । इसके पीछे लक्ष्मीनारायण की भव्य प्रतिमाएं हैं । ऊपर वाली मंजिल में भगवान

विष्णु की आकर्षक प्रतिमा है । इसी घेरे में भगवान के विविध चांदी-सोने के वाहन तथा मूर्तियां हैं, जो उत्सवों पर निकाली जाती हैं ।

मंदिर के तीसरे घेरे में श्री वरदराज का मंदिर ऊंचे चबूतरे पर बना है, जिसे 'एरावत हाथी' का प्रतीक माना जाता है । चबूतरे के सामने नरसिंह का मंदिर है । यहां से परिक्रमा करते हुए पीछे मंदिर की ओर से चबूतरे पर चढ़ने के लिए चौबीस सीढ़ियां बनी हैं, जिन्हें 'गायत्री' के अक्षरों का प्रतीक माना जाता है । ऊपर जाने पर जगमोहन में तीन द्वारों के अंदर मानवाकार भगवान विष्णु की श्यामवर्ण चतुर्भुज मूर्ति विराजमान है । उनके गले में शालिग्रामों की माला शोभायमान है । मंदिर की परिक्रमा मार्ग में अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां स्थापि यहीं पर श्री आदिशंकराचार्य की 'कामको पीठ' है, जहां वे स्वयं विराजे थे । श्री रामानुजाचार्य के समय में इस मंदिर के प्र महात्मा कांचीपूर्ण शुद्र थे । रामानुजाचार्य ने अपना गुरु बनाया था । कहा जाता है कि भगवान वरदराज महात्मा कांचीपूर्ण से वा करते थे । श्री रामानुजाचार्य ने श्रीरंगम् जा पूर्व साठ वर्षों तक यहां रहकर वैष्णव संप्र के सिद्धांतों का प्रचार किया था ।

—संपादक अभिम

आर.बी. २/९९६/सी रानी लक्ष्मी

झांसी (उ.

'देह-द्रव' की पहचान से पकड़े जाएंगे अपराधी

अपराधियों की पहचान अब सूई की नोक के बराबर 'देह-द्रव' से भी की जा सकेगी । इस नयी युक्ति का विकास स्काटलैंड की डनडी प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने किया है । इस युक्ति से रक्त के सूक्ष्म अंश, खून के धब्बे यहां तक कि डाक टिकट पर लगी लार से भी लोगों की पहचान की जा सकेगी । यही नहीं इस युक्ति का उपयोग बुरी तरह क्षत-विक्षत शरीर की पहचान तथा कई वर्ष बाद कब्र खोदकर निकाले गये शवों की भी पहचान करने में किया जा सकेगा ।

ब्रिटिश साइंसिज न्यूज के अनुसार यह युक्ति 'पोलिमरेज चैन रिएक्शन' पर आधारित है जिसके अंतर्गत लेश मात्र डी. आक्सी राइबोन्युक्लिक एसिड को निष्कार्षित करके एक विशेष प्रकार की मशीन का प्रयोग करते हुए प्रवर्धित किया जा सकता है । डी. एन. ए. वह रासायनिक पदार्थ है जो आनुवांशिक कोड बनाता है जिसमें मनुष्य की शारीरिक विशिष्टताएं निहित होती हैं । इस समय अपराधियों की पहचान के लिए जो तकनीक इस्तेमाल में लायी जा रही है, वह तभी कारगर होती है जब अधिक मात्रा में नमूना या देह द्रव उपलब्ध हो । वैज्ञानिकों का दावा है कि 'पोलीमरेज चैन रिएक्शन' की नयी युक्ति अपराध विज्ञान के क्षेत्र में हलचल मचा देगी ।

—रेखा कौशुम

मानव शरीर में ईश्वर ने बहुत से अंग दो बनायें हैं । दो आंख, काम करने के लिए दो हाथ, दो पांव, सुनने के लिए दो कान व शरीर से दूषित पदार्थों के निष्क्रमण के लिए दो गुरदे, लेकिन दिल केवल एक ही है । इसे संभालकर रखिये, अगर आप वास्तव में स्वस्थ रहना चाहते हैं तो जीभर कर हंसें, मुसकरायें जो मिल जाए वही खायें, तनाव कम रखें और हृदय बचायें ।

तनाव घटाएं, दिल बचाएं

● घनश्याम दत्त माथुर

आधुनिक औद्योगिक समाज में हृदय-रोग तेजी से फैलता जा रहा है । आज यह आम रोग हो गया है, परंतु इस दशक में इस कारण होनेवाली मौतों में अप्रत्याशित वृद्धि गहन चिंता का विषय है । हालांकि हृदय रोगों के कई अन्य कारण भी हैं, परंतु प्रतिस्पर्धा के युग की तेज रफ़्तार जिंदगी में आज बढ़ते तनाव को चिकित्सा वैज्ञानिक अधिक उत्तरदायी ठहराते हैं । आधुनिक शोधों ने स्पष्ट रूप से प्रमाणित कर दिया है कि तनाव का प्रत्यक्ष रूप से दिल पर प्रभाव पड़ता है ।

२५ करोड़ की आबादीवाले अमरीका में ४० लाख नागरिक हृदय रोगों से पीड़ित हैं और लगभग साढ़े तीन करोड़ लोग उच्च रक्त चाप के शिकार हैं, यानि वयस्क आबादी का २५ प्रतिशत लोग इससे पीड़ित हैं । यही नहीं कोई दस लाख अमरीकी हर वर्ष हृदय संबंधी रोगों से काल-कवलित होते हैं । १५ लाख लोगों को हर वर्ष हार्ट अटैक होता है, जिनमें से आधे लोगों की मृत्यु हो जाती है ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हमारे देश में भी लगभग चार करोड़ लोग हृदय रोग से पीड़ित हैं । हार्ट केयर फाउंडेशन ऑव इंडिया के अध्यक्ष डॉ. के.एल. चोपड़ा तथा उपाध्यक्ष डॉ. के.के. अग्रवाल ने आशंका जतायी है कि भारत की लगभग ग्यारह प्रतिशत आबादी उच्च रक्तचाप से पीड़ित है । उन्होंने आगाह किया है कि देश में उच्च रक्तचाप रोगियों की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि हो रही है । देश में बढ़ते हृदयघात और इसके कारण होनेवाली मौतों में अप्रत्याशित वृद्धि का यह एक प्रमुख कारक है ।

पहले हार्ट अटैक से मृत्यु का कारण 'कोरोनरी थोंबोसिस' माना जाता था । जिसमें हृदय की मांस-पेशी की ओर जानेवाली धमनी में खून के थक्के जम जाने से मृत्यु हो जाती है । लेकिन अब पता चला है कि ऐसा केवल १२ प्रतिशत हृदयघात के मामलों में होता है । हृदय की मांस-पेशी के मृत हो जाने से मरनेवालों की संख्या को भी १३ प्रतिशत ही आंका गया है । इस प्रकार बाकी के ७५ प्रतिशत रोगियों के बारे में बिना कोई स्पष्ट निरूपण किये केवल इतना ही कहा जा सकता है कि वे 'हार्ट अटैक' के कारण मौत के मुंह में चले गये ।

केप कैनेडी स्पेस लांच सेंटर के स्पेस टेक्नीशियन और इंजीनियर्स में किये गये आठ वर्षों के अध्ययन से यह बात उजागर हुई कि लोगों में अचानक मृत्यु की दर बहुत ऊंची है, जबकि हृदय-पेशी रोग की दर बहुत कम । पोस्टमार्टम से पता चला कि अधिकांश लोगों की हृदय-पेशियों की कोशिकाएं मर चुकी थीं । तनाव को हृदय रोगों से जोड़ने वाले प्राथमिक सिद्धांत का प्रतिपादन यहीं से किया गया । शोधकर्ताओं ने इन लोगों से बेचैनी, निराशा, झगड़ों और तलाक वगैरा की दर को बहुत ऊंचा पाया । इन स्पेस टेक्नीशियंस में नौकरी की असुरक्षा की भावना बहुत रहती हैं । प्रोजेक्ट पूरा हुआ कि नौकरी खत्म । पता नहीं अगले प्रोजेक्ट में नौकरी मिलेगी कि नहीं ? इसलिए असुरक्षा की भावना बेचैनी पैदा करती है और इस बेचैनी से उपजा तनाव इन लोगों में हृदय रोगों को जन्म देता है ।

तनाव के समय शरीर में ऐसे हारमोंस स्रावित होते हैं जो हृदय-पेशियों में कोशिका-मृत्यु के कारण बनते हैं । ऐसा जानवरों पर किये गये अध्ययन से ज्ञात हुआ है । हृदय रोग में तनाव की भूमिका को समझ के लिए शोधकर्ताओं ने खोज की है कि २० प्रतिशत लोग 'हार्ट रिएक्टर' होते हैं, जिनके हृदय तनाव से बहुत ज्यादा प्रभावित हो जाते हैं । इस कारण इन लोगों का रक्तचाप काफी बढ़ जाता है । ऐसे लोगों के भावनात्मक जीव का अध्ययन करें तो पता चलता है कि उनक जीवन संघर्ष, पराजय, भय, अनिश्चय और संदेह से भरा होता है । जो महिलाएं बाहर क काम करने जाती हैं और घर जाकर जिन्हें परिवार की देखभाल करनी पड़ती हैं, उनमें उ रक्तचाप की दर काफी ऊंची होती है । जो लोग ज्यादा दुखी, क्रोधित और जल्दबाजी करते हैं, उनमें भी उच्च रक्तचाप ज्यादा संभाव्य होता है

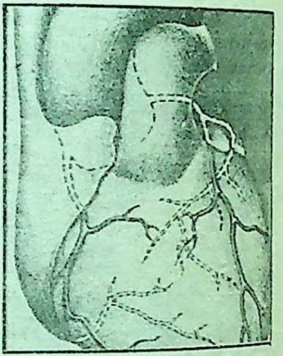

'जनरल ऑव नरवस एवं मेंटल डिसिज़' की जुलाई १९८९ में प्रकाशित रिपोर्ट में उच्च रक्तचाप से पीड़ित रोगियों के तीन बुनियादी मानसिक गुणधर्म बताये गये हैं । क्रोध और वैमनस्य, लोगों से संबंधित होने या जुड़ पाने में कठिनाई और इनकार व स्व-दमन का बहुत में उपयोग । जो विशेषज्ञ क्रोध, तनाव और

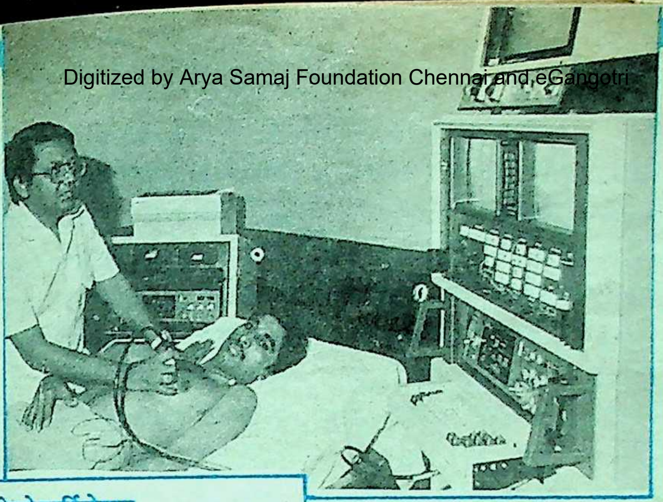

इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम

हृदय रोग में सीधा संबंध खोज पाने में सफल हुए हैं, उनका कहना है कि इस समीकरण को जन्म देनेवाली मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिस्थितियों को सुलझाये बगैर मात्र दवाईयों में इसका निवारण संभव नहीं है ।

मनोवैज्ञानिक रूप से इस बात को स्वीकार करने से अक्सर हम कतराते हैं कि प्रतियोगी जीवन शैली की तेज रफ़्तार जिंदगी में हम पिछड़ रहे हैं तथा परिणामस्वरूप बेचैनी से उपजे तनाव के शिकार हैं । इस हकीकत से भी आंख मूंद लेते हैं कि हम शारीरिक और मानसिक व्यग्रस्ता से ग्रसित हैं । वास्तव में हाइपरटेंशन (उच्च रक्तचाप) हमारी रोजमर्रा की छोटी-मोटी टेंशन का ही विकसित रूप है । बढ़ते तनाव के परिणामस्वरूप आत्महत्याओं के मामले में नेशनल क्राइम रेकॉर्ड ब्यूरो के ताजा आंकड़ों के अनुसार १९८१ से ११९१ के बीच दस वर्षों में आत्महत्याओं के मामलों में दो गुना वृद्धि हुई है । आधुनिक जीवन के तनावों से पीड़ित भारत में प्रति घंटे लगभग १० व्यक्ति आत्महत्या करते हैं ।

अनिश्चितता का वातावरण

वैसे तनाव एक वैयक्तिक प्रतिक्रिया हैं । तनाव का तात्पर्य उस प्रतिक्रिया से हैं जो व्यक्ति को अपने परिवेश के साथ समायोजित होने की संघर्षमय स्थिति में होती हैं । ये परिस्थितियां समाज व वातावरण में उपस्थित होती हैं । किसी परिस्थिति से हम कितनी कुशलता से निपट सकते हैं, इसी क्षमता पर हमारी तनावजनित समस्याएं निर्भर रहती हैं । किसी कार्य के प्रति अनिश्चितता या जो कुछ हो रहा है उसे नियंत्रित कर पाने में अपने आप को असमर्थ पाने पर ही मुख्य रूप से तनाव पैदा होता है । इसके अलावा किसी प्रियजन की मृत्यु, व्यापार, प्यार, नौकरी आदि में असफलताओं से भी तनाव उत्पन्न होता है । इन बाहरी कारणों के अलावा हमारे अंतःकरण में चलते हुए नकारात्मक विचार, भविष्य की निराशाजनक कल्पना, अतीत की असफलताओं पर अफसोस व अनेक प्रकार की निरर्थक कल्पनाएं भी तनाव उत्पन्न करती हैं ।

जब मनुष्य अपने परिवेश की समस्याओं का

सामना करता है तो दो प्रकार की प्रतिक्रियाएं होती हैं, संघर्ष अथवा पलायन । शरीर की स्वसंचालित क्रियाएं ऐसी किसी भी घटना से निपटने के लिए शरीर को संघर्ष अथवा पलायन के लिए विशेष रूप से तैयार करती हैं । ऐसी शारीरिक स्थिति में हृदयगति बढ़ जाती हैं, रक्तचाप (ब्लडप्रैशर) भी अधिक हो जाता है और मांसपेशियों में एक विशेष प्रकार का तनाव आ जाता है । इस प्रकार की संवेदनात्मक उत्तेजनाओं से पूरा शरीर तंत्र झनझना उठता है । तनाव की स्थिति में जब शरीर के अंदर बाहरी संकट से निपटने के लिए एक विशेष प्रतिक्रिया चल रही होती है तो एड्रीनल ग्रंथि से एक विशेष प्रकार का स्राव होने लगता है जिसे फार्टिसाल की संज्ञा दी जाती है । इस स्राव के रक्त में संचालित हो जाने के कारण उसके जैवरासायनिक गुणों में परिवर्तन आ जाता है और इससे व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता में ह्रास होता है और वह सहज ही किसी भी रोग की ओर उन्मुक्त हो जाता है ।

निरंतर तनाव घातक

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि हल्का-सा तनाव होना बहुत आवश्यक है, क्योंकि यह तनाव हमें लक्ष्य तक पहुंचने की प्रेरणा देता है । इसलिए तनावजन्य परिस्थितियों का कभी-कभी जीवन में आना अच्छा है और स्वाभाविक भी हैं, परंतु जब इस प्रकार की मानसिक तथा शारीरिक स्थिति निरंतर बनी रहती है तो शरीर को उन सभी उत्तेजनक स्रावों (हारमोंस) की आवश्यकता जारी रहने से वह हमारे अनेक महत्वपूर्ण अंगों को कमजोर बना देती है । इस तरह बहुत अधिक समय तक जरूरत से अधिक तीव्रगति से कार्य करते हु शरीर के वे अंग निष्क्रिय हो जाते हैं और व्य अनेक बीमारियों के चंगुल में फंस जाता है।

संघर्षशील जीवन

व्यक्ति के व्यवहार तथा कार्य करने की शै एक विशेष प्रकार की होने से भी हृदय रोग हो की संभावनाएं बढ़ जाती हैं । जीवन के एक लंबे समय तक अनेको संघर्षों से जूझनेवाले व्यक्तियों में मायोकार्डियल इंफार्क्शन (एम.आई.) होने की संभावनाएं अपेक्षाकृत अधिक होती हैं, ऐसा कई शोधों से ज्ञात हुआ है । ऐसे व्यक्ति कम से कम समय में अधिक अधिक कार्य करना चाहते हैं । वे महत्त्वाकांक्षी होते हैं और उनका लक्ष्य निरंतर बढ़ता जाता है । ऐसे लोग सदैव कुछ न कुछ नया प्राप्त करना चाहते हैं और इस प्रकार उनका संघर्ष सतत चलता रहता है ।

काम की हड़बड़ाहट

अधिक क्रोध या क्रोध का जबरन दमन, असहनशीलता, आक्रामकता व छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित होनेवाले व्यक्तियों में निरंतर द्वंद्व चलते रहने से उनके हृदय पर विपरीत असर पड़ता हैं । काम की हड़बड़ी व जल्दबाजी से न मन लायक परिणाम मिलता है और न काम का संतोष । इसमें श्रम व समय भी ज्यादा लगता है । परिणामस्वरूप काम के दौरान काम के हौवे का तनाव व काम पूरा होने पर मनचाहा सुखद परिणाम नहीं मिलने का तनाव भोगना पड़ता है । इससे एक ओर शारीरिक शक्ति का ह्रास तेंजी से होता है, वहीं दूसरी ओर मन थकान के कारण क्षुब्धता व चिड़चिड़ाहट से भर जाता है ।

व्यावहारिक पक्ष अपनायें

तनाव, आखिर किसलिए ? यह मानसिक व्यग्रता आप को घुन की तरह न खाये । इससे बचने के उपाय हैं । चुनाव आप को करना है । तनाव के विरुद्ध सजग रह कर आप अपने दिल को सुरक्षित रख लंबा और आनंदमय जीवन जी सकते हैं ?

आज के गतिशील जीवन में परेशानियां, चिंताएं, उलझनें, दबाव व तनाव स्वाभाविक है। परंतु हमें जीवन के व्यावहारिक पक्ष को ध्यान में रख इनका मुकाबला करना चाहिए । अव्यवस्थित जीवन हमें और तनावग्रस्त बनाता है। हड़बड़ी व जल्दबाजी की आदत छोड़ तसल्ली व आराम से काम करें और एक काम के बाद दूसरे काम के बीच थोड़ा अंतराल रखें। इससे तनाव, थकान व घबराहट से बचा जा सकता है । जीवन में तनाव सहन करने और उसके बल पर जीवन को सुखमय बनाये रखने की एक मात्र कुंजी है— अपने पर नियंत्रण रखना । धैर्य और नियंत्रण के माध्यम से आप जीवन में व्याप्त चुनौतियों का शालीनता से मुकाबला कर शांतिमय जीवन जी सकते हैं । योग व व्यायाम भी तनाव घटाने में सहायक हैं, विशेषकर श्वासन की क्रिया से काफी लाभ होता है।

आत्मविश्लेषण करें

अपना आत्मविश्लेषण करें यदि आप हृदय रोगी नहीं हैं तब भी और अगर आप रोगी हैं तब भी। यदि आप तनावों से बच पायें तो संभव है आप को हृदय रोग न हो और अगर होगा तो दूसरा दौरा न पड़े । सबसे पहले यह जानने का प्रयत्न कीजिए कि किन कारणों से तनाव उत्पन्न हो रहा है । इनकी सूची बनायें और देखें कि आप कितने कारणों को दूर कर सकते हैं । आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि बहुत से कारण ऐसे भी हैं, जो वास्तव में हैं ही नहीं, अपितु स्वयं आपके मन और कल्पना की उपज हैं ।

अपेक्षाएं नहीं रखें

दूसरों से जरूरत से ज्यादा आशा मत रखिए । यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनायें और ऐसी झूठी आशा मत रखिए कि हर जगह आपको ही महत्त्व मिले । अपनी क्षमता को पहचानकर उसके अनुरूप लक्ष्य निर्धारित करें । जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखें तथा अतीत की असफलताओं को बिसरा दें । उत्तेजना एवं घबराहट को त्यागकर हर कार्य को सहजतापूर्वक करें । आप क्या कर सकते हैं ? कैसे सफलता प्राप्त कर सकते हैं ? इसके बारे में चिंतन व मनन करें । असफलता की आशंका और 'लोग क्या कहेंगे' की भावना से बचें । सामर्थ्य से अधिक जोखिम नहीं उठायें । सीमित समय में असीमित काम करना खतरनाक है । जीवन में विरक्तता, निराशा और उदासीनता से बचें । क्रियाशील रचनात्मक जीवन और सकारात्मक सोच अपनायें ।

—१२७९, दत्त सदन, खेजड़ों का रास्ता,
जयपुर-३०२००१

व्यंग्य

भिखारी समस्या

भिखारी समस्या को
हटाया जा रहा है
प्रोजेक्ट हेतु
धन, विदेशों से
कर्ज पर
लाया जा रहा है

नेता

जो
औरों की
टांग खींचने में
जितना माहिर है
वह उतना ही
खालिस नेता है
यह जाहिर है

— प्रो. शरद नारायण खरे

गरीबी

अमीरों की ड्योढ़ी पर
पली हुई तरुणाई
महलों की छत्र छाया में
सदा निखरती आयी

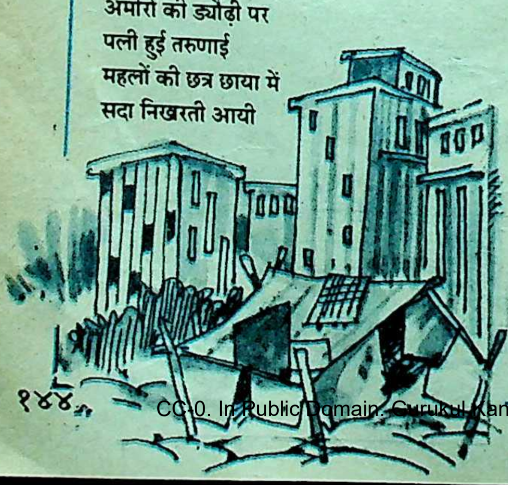

सांत्वना

हम
जीवन के फूलदान में
प्लास्टिक के फूलों की तरह
सजे हैं
जब लोग पूछते
''कहो भाई क्या हाल है ?''
तो कह देते ''मजे हैं''

— राजेंद्र श्रीवास्तव

भ्रष्टाचार

ऐसा मुरगा
जिसके बांग देने से ही
सफलता का सूरज
उगता है
जिसकी आवाज सुनते ही
समाधान सूझता है

चुनाव

सिंह ने मेमने से कहा—
''आओ, मिलकर काम करें
हम सबका एक ही रक्त है''
मेमने की प्रतिक्रिया—
लगता है चुनाव का वक्त है

शिक्षा

नैतिक शिक्षा के अध्यापक
भ्रष्टाचार से आये थे
तदोपरांत ही
नैतिकता का पाठ पढ़ाये थे

— देवेंद्र नाथ

जेंद्र श्रीवास्तव

देवेंद्र नाग

तरंग

एक राजा ने अपने दरबारी को मरियल घोड़ा ईनाम में दिया । उसी रात को घोड़ा मर गया । सुबह जब दरबारी, राजा के दरबार में आया तो राजा ने पूछा, ''कहो, तुम्हारा घोड़ा कैसा है ?''

दरबारी ने विनम्रता से उत्तर दिया, ''महाराज आपके घोड़े की चाल के तो क्या कहने ? एक ही रात में इस लोक से दूसरे लोक में पहुंच गया ।''

×

मालिक (एजेंट से), ''कोई ऑर्डर मिला आज ?''

एजेंट, ''जी हां, एक नहीं, दो ऑर्डर मिले हैं ।''

मालिक (खुश होते हुए), ''कौन-से ?''

एजेंट, ''जी पहला यह कि बंगले से फौरन दफा हो जाओ और दूसरा, यह कि दुबारा अपनी शक्ल मत दिखाना ।

×

एक मित्र (दूसरे से), ''यदि भैंस को अक्ल आ जाए तो ?''

''वह स्वयं ही दूध में पानी मिलाने लगेगी ।'' दूसरे मित्र का जवाब था ।

×

मरीज (नर्स से), ''सिस्टर तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो... मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूं ।''

नर्स, ''क्या आपके परिवार में 'सिस्टर' से शादी करने का रिवाज है ?''

×

प्रेमी (फोन पर) माफ करना, ''कल मैंने तुमसे मिलने का वादा किया था । लेकिन यह भूल गया था कि कहां मिलना है ?''...

प्रेमिका (बात काटते हुए), ''कोई बात नहीं । मैं भी भूल गयी थी । मुझे इतना याद था कि किसी से मैंने वायदा किया था, लेकिन यह भूल गयी कि किससे किया था ।''

×

रमा अपने पति रमेशजी से, ''क्यों जी, अगर भगवान आपको स्वर्ग और मुझे नरक में भेज दे तो आप भगवान से क्या कहेंगे ?''

''बहुत-बहुत धन्यवाद प्रभु !'', रमेशजी ने उत्तर दिया ।

''और यदि स्थिति इससे उल्टी हो जाए तो ?'' रमा ने पूछा ।

''बहुत-बहुत धन्यवाद प्रभु !'', रमेशजी ने जवाब दिया ।

''रमा हैरान होकर'', आखिर ऐसा क्यों ?''

''क्योंकि कम-से-कम अगले जन्म में तो मुझे तुम्हारे साथ नहीं रहना पड़ेगा,'' रमेशजी ने स्पष्ट करते हुए कहा ।

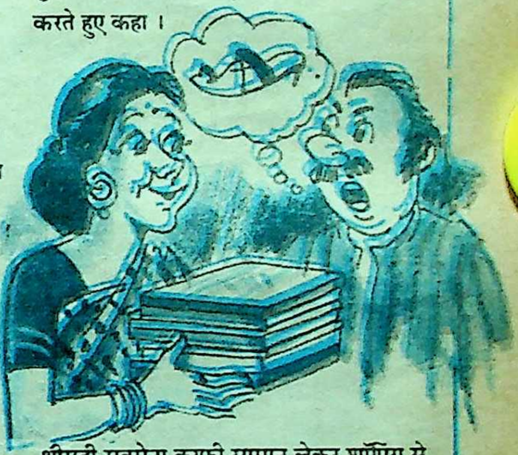

श्रीमती सक्सेना काफी सामान लेकर शॉपिंग से लौटी । पति से बोली, ''आज मैं शॉपिंग करके थक गयी हूं । जरा सामान तो नीचे उतरवा दो ।''

सक्सेनाजी आगे बढ़े और एक डिब्बे की ओर इशारा करते हुए बोले, ''लगता है इसमें कोई खाने की चीज है ।''

पत्नी ने मुसकराते हुए चुटकी ली, ''हां ! इसमें मेरी सैंडल है ।''

— नरेंद्र सिंघवी

'वीरायतन' एक ऐसे स्थान और आश्रम का नाम है, जहां एक तरफ तो प्रकृति सौंदर्य छटा बिखेरती है, तो दूसरी ओर सेवा और सद्भाव के फूल खिलते हैं। सेवा, धर्म और अध्यात्म के इस अनूठे संगम ने पर्यटकों का मन भी बरबस अपनी ओर मोह लिया है। प्रस्तुत है बिहार के नालंदा जिले के राजगीर में बसे एक जैन आश्रम की यह गाथा :

गाथा एक जैन आश्रम की

दीया सूनी आंखों का

● विनय

'कुछ भी नहीं असंभव जग में,
सब संभव हो सकता है
कार्य हेतु यदि कमर बांध लो,
तो सब कुछ हो सकता है '

अंधकार के घेरे को तोड़कर जब सूरज धरती को प्रेम से निहारने आता है तो यही स्वर लहरियां गुंजित होकर उसकी हौसलाफजाई करती हैं ताकि वह अपनी हर किरणों से अंधेरे को रोशनी में बदलता रहे और धरती के चेहरे को बदरंग होने से बचाने के लिए मानव जाति को अपनी ऊर्जा प्रदान करता रहे।

हर सुबह यह गीत सूरज को पुरानी यादों के महल में सैर के लिये ले जाता है— "कभी यह वर्द्धमान की देशना भूमि हुआ करती थी। कभी यह गुणशील चैत्य कहलाता था। इस चैत्य में समवसरण लगा करते थे, जिसमें गणधर गुरु गौतम, अज्ज चंदना, मगध सम्राट श्रेणिक (बिंबिसार), महारानी चेलना, मंत्रिवर अभय, श्रेष्ठि पौरजन, आम जन-गण और जंगलों के दस्युराज तक मुग्ध होकर महावीर को सुनते थे।

वर्द्धमान के जीवनकाल वर्षाकालीन चातुर्मास भी तो यहीं गुजरे थे। यहीं वैभारगिरि के वर्द्धमान के जीवनकाल के शिखरों पर उन ११ गणधरों ने निर्वाण प्राप्त किया था जो महावीर के प्रथम ११ शिष्य थे। इसी गिरिराज पर धन्ना शालिभद्र ने दीक्षा ली थी...।

काल के चक्र घूमते ही गुणशील चैत्य इतिहास बन गया और उसकी जगह ले ली थी बियाबान जंगल ने। उपेक्षित ही रह जाती यह भूमि, यदि इतिहास के विस्मृत पन्नों में कैद

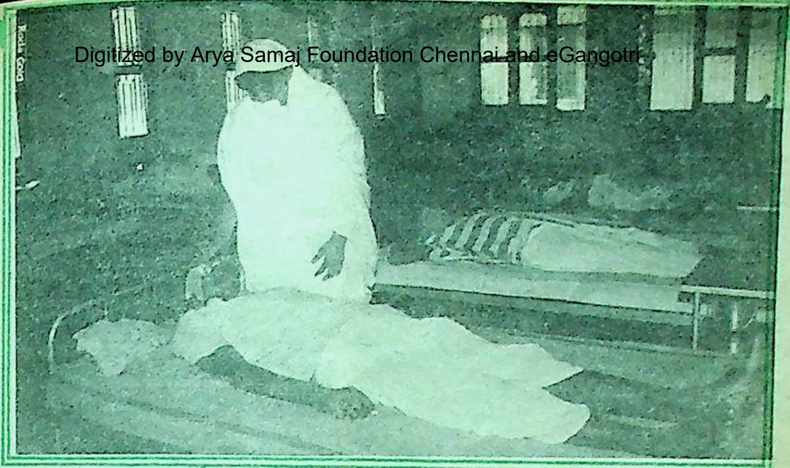

वीरायतन का निःशुल्क अस्पताल : नेत्र ज्योति

संदेश के यथार्थ को समझने की सार्थक कोशिश न हुई होती ।— गरमी बढ़ते ही सूरज अतीत से लौटता है और दोपहर की ओर बढ़ जाता है । ६० के दशक के दूसरे वर्ष की शरद पूर्णिमा से शुरू हुई इस कोशिश ने वर्द्धमान महावीर के २५ सौवें निर्वाण-महोत्सव वर्ष १९७३ में जाकर यथार्थ का स्वरूप धारण किया, जिसका नाम पड़ा— 'वीरायतन' ।

वीरायतन

१० श्वेतवस्त्रधारिणी साध्वियों के 'संचालन मंडल' द्वारा संचालित 'वीरायतन' उनके अथक परिश्रम का ही परिणाम है । अनासक्त जीवन व्यतीत करनेवाली ये साध्वियां इस आश्रम की प्राण हैं, जिनमें जैन धर्म की नयी और पुरानी परंपरा का स्पष्ट समन्वय दिखता है ।

बिहार के नालंदा जिले के राजगीर के वैभारगिरि की गोद में बसा है वीरायतन । यूं तो राजगीर के पास कई पौराणिक और ऐतिहासिक स्मृतियां हैं, परंतु वीरायतन राजगीर का अतीत से उठ खड़ा वर्तमान है । यह वर्द्धमान की स्मृति में स्थापित एक ऐसा संस्थान है जो परंपरागत संस्थाओं से अलग चलने का प्रयास कर रहा है ।

आश्रम की संचालिका चंदना का कहना है, 'वीरायतन का शरीर 'सेवा' है । शिक्षा उसका 'मन' है और साधना उसके प्राण हैं ।' आश्रम की ही साध्वी शिलापी के अनुसार 'यह आधुनिक युग में गुरु के प्रति असीम श्रद्धा और निष्ठा का जीवंत प्रतीक है । जैन विचारक अमर मुनि की कल्पना को मूर्तिमान करने का

संग्रहालय

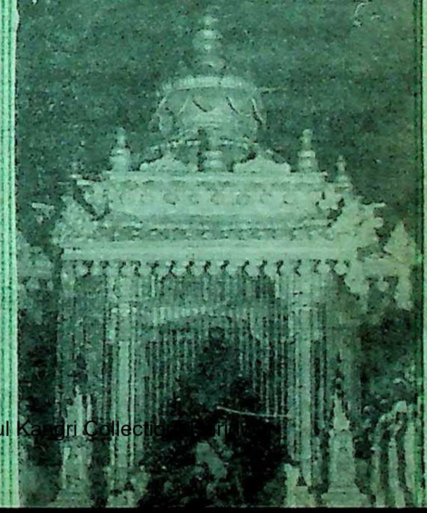

काम चंदना ने किया है ।'

'ब्राह्मी कला मंदिरम'

४० एकड़ भू-भाग में फैले इस आश्रम की कई विशिष्टताओं में से एक है 'ब्राह्मी कला मंदिरम', जो जैन इतिहास के शीर्षस्थ नायकों से संबंधित प्रेरक घटनाओं का प्राणवान भावांकन करता है । ९८ पैनल्स में सुसज्जित एवं दर्शित नयनाभिराम दृश्य बरबस ही दर्शकों का मन मोह लेते हैं । यह संग्रहालय अब राजगृह का सबसे लोकप्रिय और आकर्षक दर्शनीय स्थल बन गया है । इसका नामकरण प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की सुपुत्री ब्राह्मी के नाम से किया गया है ।

प्रत्यारोपण कैम्प दि. 17.18.13.3

स्वरोजगार हेतु मिट्टी के गमले बनाने का प्रशिक्षण

नेत्र ज्योति

वीरायतन की विशिष्टता का दूसरा केंद्र इसका अस्पताल है । इसे 'नेत्र ज्योति सेवा मंदिरम' के नाम से पुकारते हैं । इसको 'सूनी आंखों का दीया' भी कह सकते हैं । अब तक ५० हजार से अधिक आंखों के ऑपरेशन मुफ्त में हो चुके हैं । यह शृंखला अब तक टूटी नहीं है । एक सौ बिस्तरोंवाले इस अस्पताल में ५० बिस्तर पुरुषों के लिए हैं । अस्पताल में भरती होनेवाले रोगियों को चिकित्सा, दवा, आवास और भोजन की मुफ्त सुविधाएं दी जाती हैं । इसकी सफाई के आगे सरकारी अस्पताल शरमाएंगे । इसके सेवा आयाम में, विस्तार के लिए कृत्रिम अंग बनाने का संस्थान, एक्सरे, पैथोलॉजी इकाई, पोलियो अस्पताल, चक्षु शोध केंद्र आदि बनाने की योजना है । इनमें से कुछ तो अभी निर्माणाधीन हैं ।

ज्ञानांजलि

ज्ञानांजलि वीरायतन का पुस्तकालय है, जहां प्राकृत, पाली, संस्कृत, हिंदी, गुजराती एवं अंगरेजी सहित अनेक भाषाओं के जैन, बौद्ध

इसलाम, ईसाई एवं वैदिक परंपरा के ग्रंथों का अनूठा संग्रह है । कुछ ग्रंथ तो हस्तलिखित हैं । ३० हजार पुस्तकों का यह विशाल संग्रह सिर्फ धार्मिक पुस्तकों का खजाना नहीं है । यहां जयशंकर प्रसाद हैं, तो रामधारी सिंह दिनकर भी हैं ।

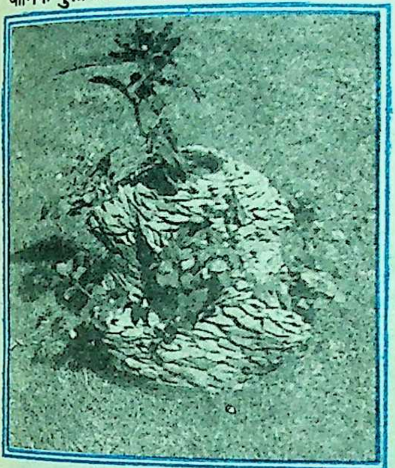

आध्यात्मिक डिज़्नीलैंड की योजना

आश्रम की बगिया, उसके फूल-पौधे, अशोक की वृक्षावली तथा बगीचे को सजाने की शैली वीरायतन के सौंदर्य में चार चांद लगा देती है । कुछ गमले हाथी की शक्ल के हैं तो कुछ नंदी की शकल के । यूं कहें कि गमलों का इतना सुंदर संग्रह शायद ही कहीं देखने को मिले । कछुआ, बतख, मछली तथा तरह-तरह के छोटे घरों के रूप में गमले आपके मन को मोह लेंगे । पर्यटन की नजर से भी यह पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है । अतिथि परिसर में आवास की व्यवस्था है तो सात्विक भोजन के लिये 'गौतम लब्धि' के रूप में भोजनालय भी ।

आश्रम के स्वप्नदृष्टा अमर मुनि की स्मृति में 'श्री अमर सर्वतो भद्रम' नाम का एक ऐसा स्मारक निर्माणाधीन है, जो कला, इतिहास, वास्तुशिल्प और आधुनिक तकनीक का संगम होगा । ध्वनि, प्रकाश और गति के माध्यम से महावीर के संदेश के सुंदर प्रस्तुतीकरण की भी योजना है । आध्यात्मिक डिज़्नीलैंड बनाने की योजना है जिसमें बच्चों को, खेल के साथ-साथ, अध्यात्म और संस्कार की नवीन दृष्टि भी मिल सकेगी ।

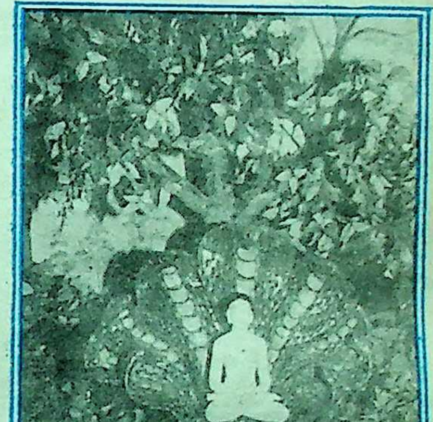

बहरहाल धर्म के नाम पर आज जितने भी प्रतिष्ठान चल रहे हैं, यकीनन वीरायतन उन सबमें एक अलग विशिष्ट स्थान रखता है । वीरायतन धर्म के सकारात्मक पहलू को आत्मसात कर लोगों के अंतर्मन में सहृदयता और भाईचारे की प्रवृत्ति जगाने के लिये रास्ता बनाने में लगा है ।

— सी ६/८५, सेक्टर-१५
रोहिणी, दिल्ली-८५

मंडला जहां करोड़ों वर्ष पू
समुद्र लहराता था

सुधीर वाजपेयी

प्रकृति का आदि-अंत, अनंत है । आज से पहले करोड़ों वर्ष पूर्व और आज से करोड़ों साल बाद भी ब्रह्मांड के रूप-स्वरूप की वैज्ञानिकता कल्पनातीत है । प्रकृति के प्रागैतिहास के एक बिंदु के आधारित स्वरूप को ही हम अपना आधार मानकर उसे वैज्ञानिकता की कसौटी पर परख सकते हैं किंतु प्रकृति के महाशून्य में अनंत बिंदुओं का सागर है ।

मानव का प्रागैतिहासिक स्वरूप प्रकृति के बदलते जैविकीय उद्भव के साथ उसके हर परिवर्तनों के साथ परिवर्तित होता है । युग-युगांतर में मानव विकास की परिकल्पना तथा प्रकृति के नैसर्गिक दस्तावेज जो उसकी पुष्टि का आधार होते हैं यह मत स्थापित करते हैं कि पृथ्वी शुरू में अग्नि का गोला थी । लाखों-करोड़ों वर्षों के परिवर्तनों के बाद इसमें जैविक-उत्पत्ति हुई । भौगोलिक परिवर्तन नित-निरंतर हैं जो दृश्य भी हैं तथा अदृश्य भी ।

आदि पुराण वर्णित नर्मदा क्षेत्र के तटीय समानांतर विस्तारित आदिवासी बहुल मंडला जिले का भौगोलिक पर्यावरण तथा जैविक इतिहास का एक बड़ा हिस्सा आज भी अनुसंधान के लिए रहस्य की परतों में है । बदलती हुई प्रकृति ने अनेक परिवर्तनों से इसके पुरातात्विक, मानवीय, भौगोलिक जैसे जीव-जीवन को प्रभावित किया है ।

पुरातत्व इतिहास

मेखलाकार नर्मदीय धारा के किनारे विकसित मंडला जिले का पुरातात्विक इतिहास प्राचीनतम है । मेकल पर्वत श्रृंखला में रचे-बसे इसके आदि मानव का प्रागैतिहासिक विकास आस्ट्रिया के प्रसिद्ध विद्वान एडअर्ड सुएस के अनुसार लगभग पैंतीस करोड़ वर्ष पूर्व का है। जिले के मेकल पर्वत तथा नर्मदा तट पर विकसित गोंडवाना संस्कृति आदिकालीन है। पुरातात्विक दृष्टि से जिले के पुरातत्व इतिहास के उद्भव विकास अध्ययन के परिपेक्ष्य में यहां कलचुरिकालीन अवशेष, गोंडकाल के स्मारक तथा अन्य अवशेष, हस्तलिखित ग्रंथ तथा जीवाश्म उपलब्ध हैं ।

आदिवासी बाहुल्य मंडला जिले में पादप जीवाश्म प्रचुर मात्रा में मिले हैं । पूर्वी भाग में शंख और सीप के जीवाश्मों के अवशेष की उपलब्धता इस बात का ठोस प्रमाण है कि करोड़ों वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में समुद्र लहराता था । जिले में हैफिनी (शाखा युक्त ताड़ और खजूर) तथा यूकेलिप्ट्स के प्राप्त जीवाश्म इस बात की प्रामाणिकता का आधार है कि भारतीय उपमहाद्वीप में भी अफ्रीकीय भू-भाग सम्मिलित था ।

प्राकृतिक सौंदर्य से भरा-पूरा मंडला जिला जहां सांस्कृतिक सुरुचि संपन्न पर्यटकों के लिए वैबाचक क्षेत्र, ऐतिहासिक विचार संपन्न लोगों के लिए रामनगर किला व झूलपुर के प्राचीनतम मंदिर हैं वहीं प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात कान्हा राष्ट्रीय उद्यान है तो बहु करोड़ प्राचीन 'फॉसिल्स उद्यान' भी यहीं है । प्रकृति के पुरोऐतिहासिक खोजकर्त्ताओं के लिए अनुपम धरोहर और भरे-पूरे पर्यटन स्थल का पुरातन और अधुनातम का संगम-मंडला ।

प्राकृतिक संरचना के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज पौधों तथा शंखीय प्राणियों के सुरक्षित भाग जीवाश्म (फॉसिल्स) हैं । विलुप्त पौधों तथा प्राणियों के ये जीवाश्म अत्यंत दुर्लभ तथा करोड़ों वर्ष पुराने हैं । ये जिले के उत्तर पूर्वी भाग घुघवा शहपुरा क्षेत्र में पूर्वी-भाग परापानी तथा चाबी तथा दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र पाला सुंदर चिरईडोंगरी के क्षेत्र में पौधा तथा शंख के फासिल्स व्यापक मात्रा में प्रकृति रूप में उपलब्ध हुए हैं । जिले में पाये गये जीवाश्म की उपलब्धता काष्ट जीवाश्म तथा शंख जीवाश्म तथा अस्थि जीवाश्म के रूप में हैं । काष्ट जीवाश्म परापानी, घुघवा, सिलढार में हैं तथा शंख जीवाश्म लालपुर, बरबसपुर, पालासुंदर में हैं, जबकि अस्थि जीवाश्म गौर नदी की घाटी क्षेत्र में मिलते हैं ।

सिलिकामय जीवाश्म

मंडला जिले में मिलनेवाले जीवाश्म अस्थीभूत सिलिकामय काष्ट जीवाश्म दक्कन इंटर सीरीज के जीवाश्म हैं । इनका निर्माणकाल छह करोड़ वर्ष पूर्व का है जो भू-विज्ञान के अनुसार 'सीनोजोईक' महाकल्प काल का है । मंडला के जीवाश्म क्षेत्र में तनों के अलावा फल, बीज तथा आरोहियों के सिलिकामय जीवाश्म भी उपलब्ध हुए हैं । जीवाश्मों की व्यापकता तथा काष्ट जीवाश्म की प्राकृतिक अवस्था की दृष्टि से जो कि दुर्लभ है, विशेष महत्त्वपूर्ण है । यहां स्थित देवरीखुर्द के जीवाश्मों की प्राकृतिक तथा संपूर्णता में उपलब्धता से इसकी तुलना अमरीका के 'येलोस्टोन-पार्क' के विकसित जीवाश्म उद्यान से भी की जा सकती है ।

अतीत का सागर

जिले में पाये गये जीवाश्मों का क्षेत्र बहुत व्यापक है । जीवाश्म संग्रह का प्रदेश का पहला संग्रहालय मंडला में है तथा शहपुरा विकास खंड में घुघवा जीवाश्म उद्यान एशिया का सबसे बड़ा जीवाश्म संग्रहण क्षेत्र है । मंडला में पाये गये जीवाश्मों के संबंध में सर्वाधिक उल्लेखनीय तथ्य है यहां के देवरी खुर्द तथा बरबसपुर में पाये गये वृक्षों के जीवाश्म ही ऐसे हैं जिनके जड़ व तने यथावत खड़ी अवस्था में हैं करोड़ों वर्षों की अश्मीकरण क्रिया के बाद पाषाणों में परिवर्तित हुए ये जीवाश्म पाय कुल वर्ग के पौध-जीवाश्म हैं । घुघवा तथा उमरिया में मिलनेवाले जीवाश्म द्विदलीय बीजवाले पौध

जीवाश्म है । ये पौध जीवाश्म समुद्र के खारे जल के तटीय पौधों के जीवाश्म हैं । यहां शंखीय जीवाश्म भी बहुतायत में मिले हैं । इस प्राकृतिक संरचना के आधार पर जीवाश्म विदों का मत है कि जीवाश्म के रूप में प्राप्त पादप प्रजातियां वर्तमान में इस क्षेत्र में नहीं हैं । यह प्रकृति वर्तमान में भारत की पश्चिमी घाट पर्वतश्रेणियों तथा उत्तर पूर्वीय असम क्षेत्र में हैं । ताड़ एवं नारियल के प्राप्त जीवाश्म यह स्पष्ट करते हैं कि प्रागैतिहास काल में यह क्षेत्र भूमध्य रेखा के निकट रहा होगा तथा उस समय यहां की जलवायु उष्णकटिबंधीय रही होगी । वैज्ञानिकों का यह मत है कि 'पेलियोसीन-इयोसीन' काल में लगभग छह करोड़ वर्ष पहले मंडला जिले के ये क्षेत्र समुद्र तटीय थे । बीरबल साहनी रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा प्राचीन भारतीय प्रायद्वीप के मानचित्र में यह दर्शित है कि करोड़ों वर्ष पूर्व अरब सागर का एक सकरा भाग इस भू-भाग में लहराता था जिसे आज हम नर्मदा घाटी कहते हैं । समुद्र तटीय वनस्पतियां, गट्टीफेरी लारेसी, हैफिनी आदि के जीवाश्म इस तथ्य की प्राकृतिक पुष्टि भी करते हैं ।

इतिहास के शिलालेख

प्रकृति की संरचना के परिवर्तित प्रागैतिहास की अनुपम, दुर्लभ तथा करोड़ों-करोड़ वर्षों के काल क्रम को अपनी परतों में लपेटे ये जीवाश्म प्रकृति निर्मित प्राकृतिक इतिहास के शिलालेख हैं । बहुत-कुछ जानकर और कुछ जानने की मानवीय जिज्ञासु प्रवृत्ति इस प्रकृति प्रदत्त प्रकृति-विज्ञान के अध्ययन से प्रकृति के भौगोलिक विकास क्रम को समझने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाह सकते हैं । प्रकृति की यह विज्ञानशाला दुर्लभ है । जो आज भी करोड़ों वर्ष पुराने प्रकृति के स्वरूप को मूक भाषा में 'जीवाश्म' के रूप में हमारे सामने ला रही है ।

जीवाश्म प्रकृति की उस असामान्य प्रक्रिया की देन है जो सामान्य क्षयन क्रिया में आंशिक रोक से शुरू होती है । जब कोई पौधा या उसका कोई भाग जल या मिट्टी में दब जाता है तब ऑक्सीजन की कमी से विघटन प्रक्रिया मंद हो जाती है और क्रमशः क्षयन से रिक्त स्थान में खनिज पदार्थों का घोल रिसने लगता है और इस प्रकार इन कोशिकाओं के जैव पदार्थों का स्थान बाहर से प्रविष्ट खनिज पदार्थ लेकर प्रतिस्थापन पद्धति द्वारा फॉसिल्स का निर्माण करते हैं ।

मंडला जिले के प्रमुख संरक्षित फॉसिल्स उद्यान राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान के रूप में सन ८३ में घुघवा में स्थापित किया गया । यह उद्यान करीब अड़सठ एकड़ क्षेत्र में विस्तारित है । इस उद्यान में घुघवा के अतिरिक्त अन्य जीवाश्म क्षेत्र उमरिया, सिलगेद, देवरीखुर्द तथा बरबसपुर के जीवाश्म क्षेत्र भी संरक्षित स्थल के रूप में विकसित किये गये हैं । इसके अलावा भी वे क्षेत्र जहां जीवाश्म क्षेत्र हैं जिनमें पालासुंदर, सिलठार, नैनपुर, किकराझिर, सगोनिया प्रमुख हैं, शासन द्वारा संरक्षित घोषित किये गये हैं ।

राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान घुघवा मंडला शहपुरा मार्ग पर मंडला जिला मुख्यालय से सत्तर कि.मी. दूर है । इसी प्रकार शंख जीवाश्म क्षेत्र, पालासुंदर (चिरईडोगरी) मंडला-नैनपुर मार्ग पर मंडला से तीस कि.मी. दूर है ।

सिलटार शाहपुरा से तीस कि.मी. दूर है, यहां 'जीवाश्म' अपनी प्रकृति अवस्था में बहुतायत मात्रा में हैं। यहां के पत्र चित्रांकित जीवाश्म उल्लेखनीय हैं। घुघवा संरक्षिता जीवाश्म प्रक्षेत्र में पाये गये जीवाश्म तना जीवाश्म, पत्ती जीवाश्म तथा बीज जीवाश्म विविधता तथा उपलब्धता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ 'जीवाश्म पार्क' है। यहां तनों का विशाल-जीवाश्म प्रकृतिगत अवस्था में दर्शनीय है।

मंडला जिले में पाये गये जीवाश्म सत्तरवें दशक में प्रकाश में आये। यहां मिले पादप श्रेणी के जीवाश्म का परीक्षक केंद्रीय पुरावनस्पतिक वैज्ञानिक संस्थान में किया गया। वे पादप श्रेणी के जीवाश्म एनानेसी, मिरटेसी, रूटेसी, पामेसी, कुल के पादप फॉसिल्स थे। वर्तमान समय में ये आशेक (एनोनेसी) जामुन (मिरटेसी) समुद्रफल (मिटरेसी) नारियल (पंपेसी) जातियों के हैं।

समुद्र होने की संभावना

इन पाये गये फॉसिल्सों में सर्वाधिक उल्लेखनीय फॉसिल्स यूकेल्पिट्स का था। यह सर्वप्रथम मंडला में ही प्राप्त हुआ। इस फॉसिल्स की खोज प्रसिद्ध पुरावैज्ञानिक डॉ. धर्मेंद्र ने की। पुराविदों ने नयी प्रजाति के रूप में इसका नामकरण उनके ही नाम पर 'यूकेल्पिट्स धर्मेंद्री' रखा। इस पौध जीवाश्म के संबंध में हुए गहन अंध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि यह भारतीय मूल के पौधों में नहीं हैं। इसे मंडला में पाया जाना इस धारणा की पुष्टि करता है कि भारत एवं आस्ट्रेलिया करोड़ों वर्ष पूर्व विशाल गोंडवाना महाद्वीप के भाग थे। इसी मत के अनुसार भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप के पास समुद्र का होना जैसी धारणा को भी वे स्थापित करते हैं।

मंडला जिले में पुरातत्व संग्रहालय में जीवाश्म संग्रह में अत्यंत दुर्लभ तने के काष्ठ तिलिकामद जीवाश्मों का उल्लेखनीय संग्रहण है। इसके अलावा यहां प्रदर्शित जीवाश्मों डायनासोर प्रजाति का जीवाश्म, नारियल फल का जीवाश्म तथा जबड़ों का अस्थि जीवाश्म अत्यंत ही दुर्लभ संग्रहण हैं।

मंडला जिले की पुरातात्विक समृद्धि अत्यंत वैभवशाली है। यहां मिलने वाले पुरातत्व महत्त्व के पुरावशेष इस क्षेत्र और काल की प्राचीनतम सांस्कृतिक धरोहर हैं। जिससे इसके गौरवशाली इतिहास का जहां साक्षात्कार होता है वहीं यहां प्राकृतिक बदलाव के प्रमाणित दस्तावेज के रूप में मिले करोड़ों वर्ष पुराने 'फॉसिल्स' अपना वैज्ञानिक महत्त्व रखते हैं। ये फॉसिल्स हमारे पुरावनस्पति विज्ञान के काल-परिस्थिति विश्लेषण में सिद्ध प्रमाण माने जाते हैं। मंडला के बहुविस्तारित क्षेत्र में फॉसिल्स की प्रमुख उपलब्धता ने इस क्षेत्र को न केवल प्रदेश या देश बल्कि विश्व स्तर पर पुरावनस्पति के अध्येता क्षेत्र के रूप में विशिष्ट महत्त्व का केंद्र बना दिया है।

अंतरराष्ट्रीय महत्त्व

मंडला क्षेत्र में उपलब्ध पुरातन प्राकृतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक दस्तावेजों की विशिष्टता आज अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की तो है ही साथ ही इसका वैज्ञानिक सत्यापन होने के साथ ही वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए भी इसका अपना विशेष स्थान बन गया है। इस दृष्टि से आज इस बात की जरूरत है कि इसके रखरखाव के

प्रति विशेष जागरूकता ही इसके लिए शासन के साथ ही साथ क्षेत्र की जनता को भी अपनी अहं भूमिका अपनानी होगी ।

आज अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के घुघवा 'फॉसिल्स पार्क' जिसके शासन ने पुरातात्विक महत्त्व का विशिष्ट स्थल घोषित करते हुए, संरक्षित पार्क घोषित किया गया है । किंतु यह उल्लेखनीय तथ्य है कि यह 'फॉसिल्स पार्क' रख-रखाव के नाम पर औपचारिकता पूर्ति के कारण पर्यटकों का ध्यानाकर्षण करने में समर्थ नहीं है, इस पार्क में जो कि एशिया महाद्वीप का एकमात्र 'फॉसिल्स पार्क' है, बदहाल दशा है । जबकि शासन इसे इस जिले के का राष्ट्रीय बाघ उद्यान के सहपर्यटन केंद्र के अंतरराष्ट्रीय पर्यटक नक्शे में उभार सकता है इसके साथ ही फॉसिल्स के अन्य स्थलों पालासुंदर शंख जीवाश्म क्षेत्र, किकरा क्षेत्र जीवाश्म क्षेत्र, को जो आज पूर्णतया उपेक्षित को भी पर्यटक क्षेत्र में विकसित किया जा सकता है ।

— २०६, धर्मशाला वार्ड, मंडला
(म.प्र.)-४८१६

अवसाद का अंत प्रकृति के संग

हताशा जब हावी हो जाए, निराशा से नींद न आये और अवसाद का अंत न हो-ऐसे में शरीर के तने हुए तंतुओं को तनाव रहित करने के लिए तथा मन-मस्तिष्क को शांत एवं संयत रखने के लिए, मनोचिकित्सक, अब खेती-बाड़ी और बागवानी करने की सलाह देते हैं ।

पेड़-पौधों द्वारा मनोरोगों का उपचार करने के लिए अमरीका में एक समिति का गठन किया गया है जिसका नाम है, 'अमरीकन हार्टीकल्चर थेरेपी एसोसिएशन' इसका मुख्यालय गैटिस्बर्ग मारीलैंड में है ।

अनेक शोधों एवं प्रयोगों के आधार पर, इस समिति के अध्यक्ष श्री स्टीवन एच. डेविस का दावा है कि मिट्टी की मनभावन महक ही मन-मस्तिष्क एवं स्नायुतंत्र पर सकारात्मक प्रभाव डालती है । जंगली खर-पतवार की कटाई-छटाई से अवसाद घटता है तथा दिनों दिन बढ़ते पेड़-पौधे और सघन होती हरीतिमा निराशा को दूर भगाकर, जीवन के प्रति आशा और उत्साह का संचार करती है ।

अमरीका के अनेक मनोरोग-अस्पतालों में अब रोगियों के उपचार हेतु उन्हें खेती-बाड़ी एवं बागवानी हेतु भूमि उपलब्ध करवायी जाती है ।

भूमि अथवा बाग-बगीचे की सुविधा न होने पर गमलों में लगे पत्र-पुष्पों की सेवा-सुश्रुषा करना भी समान रूप से सुखकारी होता है और अगर वो भी नहीं तो सरकारी उद्यानों-उपवनों में सुबह-शाम हरियाली के संपर्क में टहलने एवं फूल पत्तों को नेह से निहारने से भी अनेक दुविधाओं एवं दु श्ः-चिंताओं का शमन होता है ।

कंस ने देवकी के किन छह पुत्रों को मारा ?

● डॉ. गोविंद स्वरूप मिनावत

कृष्ण के जन्म से पहले देवकी के जिन छह पुत्रों को कंस ने मारा, वे कौन थे ? प्रस्तुत है इस संबंध में एक खोजपूर्ण लेख :

कर्म का मर्म बहुत गूढ़ है । यही संसार रूपी वृक्ष का बीज है । यह मर्म समझाने के लिए हमारे पुराणों में बहुत सामग्री मिलती है । भगवान कृष्ण के जन्म के साथ कई इसी प्रकार की कथाएं जुड़ी हैं ।

भगवान कृष्ण के कंस-वध की कथा में जीवन व दर्शन के कई पहलू स्पष्ट होते हैं । प्रारंभ में ही कर्म की महत्ता पता लगती है । कर्म की जो झांकी उसमें प्रस्तुत होती है वह केवल किसी जन्म विशेष की नहीं, बल्कि पूर्व जन्मों से जुड़ी हुई पूर्ण रूप से सामने आती है । भगवान कृष्ण के माता-पिता को कष्ट क्यों उठाने पड़े ? कृष्ण के जन्म से पहले देवकी के जिन छह पुत्रों को कंस ने मारा, वे कौन थे ?—जैसे बहुत-से प्रश्नों का उत्तर मिलता है ।

भले-बुरे प्रत्येक जीवधारी की उत्पत्ति कर्म के कारण होती है । कर्म समाप्त होने पर जीव का देह से संबंध नहीं रहता । कर्म तीन प्रकार के होते हैं— प्रारब्ध, संचित और क्रियमाण । सुख, दुःख, बुढ़ापा, मृत्यु, हर्ष, शोक, काम, क्रोध तथा लोभ ये सभी देह से संबंध रखनेवाले गुण हैं । प्रारब्ध प्रेरणा से यह अपना प्रभाव डालते हैं ।

राग, द्वेष आदि भावों से पृथ्वी लोक तो क्या स्वर्ग भी अछूता नहीं है । पूर्व-जन्म के कर्मों के अनुसार ही जीव शरीर धारण करता है । देवताओं ने पुण्य क्षीण होने या किसी त्रुटि के कारण मिले श्राप का विमोचन करने के लिए पृथ्वी पर जन्म लिया है । इस श्रृंखला की ऐसी ही कुछ कड़ियों में कश्यपजी वसुदेव बने, अदिति देवकी बनकर आयीं व उनके छह पुत्र मरीची व उर्णा के षडगर्भ नामक देवता बने ।

एक बार ऋषि कश्यप अपना यज्ञ संपन्न करने के लिए वरुण की दिव्य गाय ले आये । वरुण ने प्रार्थना की, "ऋषिवर गाय के बछड़े बहुत डकराते हैं, आप उसको वापस लौटा दें ।" परंतु कश्यपजी ने लोभवश गाय को नहीं लौटाया । इस पर वरुण ने कश्यप व उनकी पत्नी अदिति को श्राप दे डाला— "आपने मेरी गाय और बछड़ों के दुःख को नहीं समझा इसलिए आप पृथ्वी पर गौ पालन के लिए जन्म लें व अदिति मृतवत्सा हो, अपने पुत्रों की मृत्यु देखें । जिस प्रकार आपने गाय को बंदी बनाकर उसे कष्ट दिया है, उसी प्रकार आपको भी

कारागार के कष्ट सहने पड़ेंगे ।

कश्यपजी व अदिति ने पूर्व काल में वर्षों तपस्या करके भगवान विष्णु को प्रसन्न कर वरदान मांगा था कि उनके "प्रभु-जैसा पुत्र हो ।" क्योंकि भगवान-जैसा तो कोई अन्य संसार में है नहीं, अतः भगवान विष्णु को अपनी माया के द्वारा स्वयं उनका पुत्र बनकर आना पड़ा । कश्यप शूरसेन के पुत्र वसुदेव बने, अदिति मथुरा में देवक की पुत्री देवकी बनीं । देवक के बड़े भाई राजा उग्रसेन के यहां कालनेमी दैत्य ने कंस के रूप में आकर जन्म लिया ।

राग, द्वेष आदि भावों से पृथ्वी लोक तो क्या स्वर्ग भी अछूता नहीं है । पूर्व-जन्म के कर्मों के अनुसार ही जीव शरीर धारण करता है । देवताओं ने पुण्य क्षीण होने या किसी त्रुटि के कारण मिले श्राप का विमोचन करने के लिए पृथ्वी पर जन्म लिया है । इस श्रृंखला की ऐसी ही कुछ कड़ियों में कश्यपजी वसुदेव बने, अदिति देवकी बनकर आयीं व उनके छह पुत्र मरीची व उर्णा के षडगर्भ नामक देवता बने ।

कंस अपनी बहन देवकी को बहुत प्यार करता था । देवकी के विवाह के बाद जब कंस देवकी व वसुदेव को विदा कराकर उनके घर छोड़ने जा रहा था तब आकाशवाणी हुई, "हे कंस ! इसी देवकी का आठवां पुत्र तुझे मारेगा ।"

आकाशवाणी सुनकर कंस जब देवकी को मारने लगा तो वसुदेव ने यह वचन देकर कि वह अपने सभी पुत्रों को पैदा होते ही कंस के पास ले आएंगे, देवकी को मृत्यु से बचाया ।

अपने वचनों के अनुसार वसुदेव अपने प्रथम पुत्र को कंस के पास लेकर पहुंचे । कं को वसुदेव की सत्यवादिता पर विश्वास हो ग और उसने उस पुत्र को जीवित लौटा दिया । यह देखकर देवऋषि नारद, जो अत्याचारी कं के अत्याचारों का प्याला पूर्ण करके शीघ्र ही उसका विनाश चाहते थे, उसके पास पहुंचे । उनके सम्मुख तात्कालिक नहीं, एक व्यक्ति का नहीं, पूरे जगत के कल्याण का प्रश्न था ।

नारदजी ने कंस को उत्तेजित करनेवाली वाणी में कहा, "हे कंस ! यादव कुल में वसुदेव, नंद आदि सभी देवता व ऋषियों के अंश हैं । तुमने वसुदेव के पुत्र को जीवित लौटाकर अपनी मृत्यु को बुलावा दिया है ।" इस पर वह छटपटाया और उसने देवकी व वसुदेव को कारावास में डाल दिया और एक-एक कर उनके छह पुत्रों को मार डाला ।

देवकी के ये छह पुत्रों की भी पूरी कथा मिलती है । पूर्वकाल में वह षडगर्भ नाम के देवता थे, और धर्म शास्त्र के प्रकांड विद्वान थे । एक बार ब्रह्मलोक में इन देवताओं ने ब्रह्मलोक की मर्यादा भंग करते हुए ब्रह्माजी का उपहास किया । तब ब्रह्मा ने उन्हें श्राप दिया— "तुम लोग ब्रह्मलोक में रहने योग्य नहीं हो । तुम्हारा

जन्म भूलोक में दैत्य की संतान के रूप में हो ।"

पहले यह छओं हिरण्यकश्यप के पुत्र बने । उस समय इनको पूर्व ज्ञान बना रहा, अतः इस जन्म में उन्होंने कोई गलत कार्य नहीं किया केवल तपस्या करके ब्रह्माजी को प्रसन्न किया । ब्रह्माजी ने उनसे वर मांगने को कहा । ज्ञानी होकर भी उन्होंने उस समय दैत्य-योनि के अनुरूप ही वर मांगा— "हम लोग देवता, मानव, गंधर्व, सिद्धेश्वर व महोरग से अबध्य हो जाएं ।"

ब्रह्माजी ने 'तथास्तु' कह दिया ।

इधर हिरण्यकश्यप अपने पुत्रों पर कुपित होकर बोला— "पुत्रों, मेरे इतने बलशाली होते हुए भी तुमने मेरा स्नेह ठुकरा कर ब्रह्मा की तपस्या की है, इसलिए मैं तुम्हें श्राप देता हूं कि तुम्हारी मृत्यु दैत्य के हाथों होगी ।" इसी श्राप को धारण करने के लिए अगले जन्म में उन्होंने देवकी के गर्भ से जन्म लिया और दैत्य कंस के हाथों उनकी मृत्यु हुई । मृत्यु के पश्चात ये सब सुतल लोक में राजा बलि के लोक में गये ।

कंस के वध के बाद कारावास से मुक्त होकर माता देवकी ने भगवान कृष्ण से प्रार्थना की कि गुरु पुत्र की भांति वे भी अपने छह पुत्रों को देखना चाहती हैं । तब भगवान कृष्ण राजा बलि के पास से इन षडगर्भी —स्मर, उद्रीथ, परिष्वङ्ग, पतङ्ग, क्षुद्रभृत व घृणि को माता देवकी के पास ले आये । माता वात्सल्य-स्नेह से आत्मविभोर हो उठीं । उनके स्तनों से दूध बहने लगा । उन्होंने उन पुत्रों को छाती से लगाकर स्तनपान कराया । उस अमृतमय दूध को पीने से जिसे भगवान ने भी पिया था, एवं प्रभु के स्पर्श होने से उन्हें आत्म साक्षात्कार हुआ और वह पुनः देवलोक गये । ●

आंत्र रोग और रोबोट

अमरीका की कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑव टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों ने एक ऐसे सर्पीले रोबोट का निर्माण किया है जो मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर आमाशय एवं आंत्र संबंधी रोगों का पता लगाएगा ।

आमतौर पर प्रचलित एंडोस्कोपी विधि द्वारा अभी भी आंत्र संबंधी ७० से ८० प्रतिशत व्याधियों का पता नहीं लग पाता । यह सर्पीला रोबोट ऐसी व्याधियों के अलावा आंत्र कैंसर का भी पता लगा सकेगा । यह रोबोट रेंगते हुए रोगी के मुख द्वारा उसके शरीर में प्रवेश करेगा और रोगग्रस्त हिस्से का परीक्षण करने के अलावा चित्र भी ला सकेगा । यह एक परिष्कृत कंप्यूटर प्रणाली द्वारा अपना मार्ग स्वयं निश्चित करेगा । अभी इसकी लंबाई लगभग ६ फीट है मगर शीघ्र ही अत्यंत छोटे आकार के सर्पीले रोबोट तैयार हो जाएंगे । चिकित्सा क्षेत्र के अलावा भूचाल, भूकंप की गति, केंद्र तीव्रता आदि का पता लगाने में ये रोबोट प्रयुक्त होंगे ।

● विनोद कुमार लाल

पुरुष ने जीती स्त्री-सौंदर्य प्रतियोगिता

● सुरेन्द्र श्रीवास्तव

मनीला में गत दिनों हुई 'मिस यूनिवर्स' प्रतियोगिता का खिताब भारतीय सुंदरी 'सुष्मिता सेन' ने जीता । इस प्रकार इस स्त्री-सौंदर्य प्रतियोगिता में पहला स्थान प्राप्त करके उसने तहलका मचा दिया ।

महिलाओं के लिए विश्व में व्यापक स्तर पर सौंदर्य प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं । इन प्रतिस्पर्धाओं की यह विशेषता है कि यह सिर्फ कमनीय लड़कियों के लिए ही होती हैं, पुरुष इसमें कतई भाग नहीं ले सकते । लेकिन, पिछले साल आस्ट्रेलिया के ट्वीड हेड्स नामक समुद्र तट पर बसे नगर में सौंदर्य प्रतियोगिता में पहला स्थान एक पुरुष ने प्राप्त किया । होटल में दरबान का काम करनेवाले २४ वर्षीय डेमियन टेलर ने ब्रिसबेन नगर से ५० किलोमीटर दूर ट्वीड हेड्स में हुए 'विंटरसन सौंदर्य' प्रतियोगिता जीतकर हलचल मचा दी ।

यौन-समानता के समर्थक इस पुरुष ने सात महिलाओं को पछाड़ते हुए 'सौंदर्य की रानी' का खिताब जीतकर युगों से इस क्षेत्र में चल रहे महिलाओं के एकाधिकार को हिलाकर रख दिया ।

आयोजकों के अनुसार, प्रतियोगिता में व्यक्तित्व-व्यवहार ज्ञान को भी आधार बनाया गया था । प्रतियोगिता में डेमियन टेलर की नामजद्गी से आयोजकों को प्रतियोगिता का नाम बदलना पड़ा । पहले इस प्रतियोगिता का नाम 'मिस विंटरसन' था, लेकिन इसे बदलकर 'विंटरसन क्वेस्ट' कर दिया गया ।

पुरुष होने का राज

प्रतियोगिता के कर्ताधर्ता जेड हर्ली ने डेमियन टेलर के प्रवेश पर टिप्पणी की—'इन दिनों जबकि सभी को बराबर अवसर देने का रिवाज है, हम उसके नामांकन को कैसे रद्द कर सकते थे ।'

वैसे यह पहला अवसर नहीं था कि किसी पुरुष ने महिलाओं की सौंदर्य-प्रतियोगिता जीती । इससे पहले भी एक बार सन १९३२ में एक पुरुष ने महिलाओं की एक सौंदर्य-प्रतियोगिता में पहला स्थान हासिल किया था । इन दोनों घटनाओं में अंतर यह है कि डेमियन टेलर खुले तौर पर पुरुष प्रतियोगी के रूप में प्रतियोगिता में शामिल हुआ था, वहीं १९३२ में सौंदर्य-प्रतियोगिता जीतनेवाले पुरुष ने अपना पुरुष होने का राज अंत तक छिपाये रखा और परिणाम आने के बाद सबको हैरत में डालते हुए, अपने पुरुष होने का राज खोला था । यह तो उस पुरुष की भलमनसाहत रही

यह पहला अवसर नहीं था कि किसी पुरुष ने महिलाओं की सौंदर्य-प्रतियोगिता जीती । इससे पहले भी एक बार सन १९३२ में एक पुरुष ने महिलाओं की एक सौंदर्य-प्रतियोगिता में पहला स्थान हासिल किया था । इन दोनों घटनाओं में अंतर यह है कि डेनियल टेलर खुले तौर पर पुरुष प्रतियोगी के रूप में प्रतियोगिता में शामिल हुआ था, वहीं १९३२ में सौंदर्य-प्रतियोगिता जीतनेवाले पुरुष ने अपना पुरुष होने का राज अंत तक छिपाये रखा ।

कि उसने ऐन मौके पर सच्चाई बयान कर दी, वरना यह राज हमेशा राज ही रह जाता । लीजिए, संक्षिप्त में पूरा किस्सा प्रस्तुत है—

बात १९३२ की है । जरमनी के कार्ल स्वार्ड शहर में एक सौंदर्य-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । जाहिर है, परंपरा के अनुसार इसमें केवल महिलाओं को ही भाग लेने की अनुमति थी । प्रतियोगिता के नियमों के हिसाब से किशोरावस्था पार करके यौवन की दहलीज पर कदम रख रही लड़कियों को ही शामिल होने की इजाजत थी ।

ऐसी प्रतियोगिताओं में तब प्रतियोगी सीधे शामिल हुआ करते थे । पूर्व-स्क्रिनिंग या पूर्व चयन की प्रणाली नहीं थी । अतः प्रतियोगी को सीधे भाग लेने के लिए स्टेज पर ही पहुंच जाना होता था । लगभग चालीस प्रतियोगियों के नाम आये थे । सबकी उम्र १६ से १७ साल के बीच थी ।

सुसज्जित प्रतियोगिता-स्थल

प्रतियोगिता स्थल को शानदार ढंग से सजाया गया था । हॉल में दर्शक भरने शुरू हो गये । थोड़ी ही देर में पूरा हॉल खचाखच भर गया । निर्णायकगण भी आ गये । विभिन्न रंगों की रोशनियों से स्टेज नहाया हुआ था । खैर, प्रतियोगिता शुरू होने का क्षण आ पहुंचा । दर्शक दम साधकर बैठ गये और निर्णायकों ने अपने कागज व कलम संभाल लिए । 'सर्वश्रेष्ठ सुंदरी' के चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो गयी ।

एक-एक करके लड़कियां मंच पर आतीं । एक कोने से प्रवेश करके दूसरे कोने की ओर बढ़ जाना होता था । स्टेज पर ठहरने का समय भी निश्चित था । इसी समय में लड़की स्टेज पर प्रवेश करती, चहलकदमी करती हुई आगे बढ़ती, विभिन्न मुद्राओं में अपना शारीरिक गठन व सौंदर्य निर्णायक मंडल के सदस्यों को दिखाती, दर्शकों की ओर लुभानेवाली मुसकराहट फेकती और इठलाती हुई स्टेज के दूसरी ओर चली जाती । दर्शकगण इन क्षणों में सौंदर्यपान करते और निर्णायक गण अपने आंकलन का हिसाब लगाते और प्रतियोगी को अपने निर्णय के अनुसार नंबर देते ।

उधर जैसे ही कोई लड़की स्टेज पर आती, उद्घोषक बड़े ही रोचक ढंग से उस लड़की का नाम प्रसारित करता । इससे निर्णायकों व दर्शकों को प्रतियोगी के नाम की जानकारी होती जाती । उस दिन प्रतियोगिता में एक से एक सुंदर लड़कियां शामिल हुई थीं । पहली जाती, तो झट दूसरी सामने आ जाती, जो उससे भी

सुंदर लगती । इस प्रकार बड़े रंगारंग ढंग से यह प्रतियोगिता चल रही थी ।

तभी उद्घोषक ने एलान किया—'आप लोगों के सामने अब स्टेज पर आ रही हैं, सोलह वर्ष की षोडशी, जिनका रूप, लावण्य आप सबको मदहोश कर देगा । देखिए, स्टेज पर हैं स्पोटेश कार्ल मारिशका ।'

उद्घोषक के इतना कहते ही स्टेज पर एक अनिंद्य सुंदरी प्रस्तुत हुई । वह बेहद खूबसूरत थी—कंधों तक बिखरे भूरे रंग के लहराते घुंघराले बाल, बड़ी-बड़ी आकर्षक आंखें, भोला-सा खूबसूरत चेहरा । साथ ही, सारे बदन की बनावट भी बेहद कमनीय व आकर्षक । दर्शकों ने स्पोटेश को देखा, तो खुशी से झूम उठे । सही मायनों में वह बेहद आकर्षक लग रही थी । लगभग चालीस प्रतियोगियों में उसके बराबर की रूपवान कोई दूसरी लड़की नहीं थी । दर्शकों ने अपनी प्रसन्नता जाहिर की और स्पोटेश को अभिवादन भी दिया ।

और, जब सभी लड़कियां अपने सौंदर्य का प्रदर्शन कर चुकीं, तो निर्णय का समय आया । सभी निर्णायकों द्वारा दिये गये नंबरों को मिलाया गया, तो पाया गया कि स्पोटेश कार्ल मारिशका को सर्वोच्च अंक मिले हैं । इस प्रकार वह 'सर्वश्रेष्ठ सुंदरी' के खिताब के लिए चुनी गयी । निर्णय उद्घोषक के पास पहुंचा और उसने बड़े ही नाटकीय ढंग से रस लेकर इसे प्रसारित किया । दर्शकों ने निर्णय सुना, तो खुशी से तालियां बजाने लगे । उस दिन सबकी राय में स्पोटेश ही सर्वश्रेष्ठ सुंदरी थी ।

सर्वश्रेष्ठ सुंदरी का ताज

अब स्पोटेश को 'सर्वश्रेष्ठ सुंदरी' का ताज पहनाने के लिए स्टेज पर आमंत्रित किया गया । स्पोटेश इठलाती हुई स्टेज पर आयी । उसने दर्शकों का अभिवादन किया, फिर निर्णायक मंडल की ओर अभिवादन के लिए झुकी । उद्घोषक ने स्पोटेश से अनुरोध किया कि अपने सम्मान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में वह माइक पर कुछ बोले ।

स्पोटेश को तो जैसे इसी क्षण का इंतजार था । वह झट माइक पर पहुंची और बोलना शुरू किया—'इस प्रतियोगिता के आयोजकों निर्णायकों की मैं शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने मुझे 'सर्वश्रेष्ठ सुंदरी' के खिताब के लिए चुना । दर्शकों द्वारा प्रदर्शित किये गये उत्साह के लिए भी मैं उन सबकी आभारी हूं । आज यह खिताब पाकर मेरा सम्मान बढ़ा है । इसमें कोई शक नहीं है कि 'सुंदरी' का यह खिताब जिसे भी मिलेगा, उसके लिए गर्व की बात होगी, लेकिन...'—यह कहकर स्पोटेश एक क्षण रुकी और फिर बोली—'लेकिन, एक सच्चाई से आप लोगों को परिचित करा देना मेरा फर्ज है और वह यह कि...वह यह कि...वह सच्चाई यह है कि मैं लड़की नहीं, बल्कि लड़का हूं ।'

इतना कहकर स्पोटेश ने अपने नकली बाल उतार फेंके और स्त्रियोचित पोशाक के अंश भी उतार दिये । लोग देखकर भौंचक्के रह गये कि उनके सामने एक सुंदरी लड़की नहीं, बल्कि लड़का खड़ा है । लोग कुछ और समझ पाते, इससे पहले ही वह स्टेज से कूदकर भाग खड़ा हुआ ।

—असम कॉटन मिल्स,
पोस्ट—चारद्वार जिला—शोणितपुर (असम)

तनाव से मुक्ति

डॉ. सतीश मलिक

स. श. च. समस्तीपुर (बिहार) :
बी. एससी. में अध्ययनरत १७ वर्ष का युवक हूं । कई समस्याओं से पीड़ित हूं । इन पर नियंत्रण पाने के प्रयत्न पर सफल नहीं हो पाया । आशा है समाधान करेंगे ।

पहली समस्या यह है कि सांसारिक प्रवृत्तियों की तरफ आकर्षित होता हूं । सोचता हूं, प्रकृति का अनोखा नियम है—लोग आते हैं जिंदगी काटते हैं, मर जाते हैं, क्यों ? मेरे स्वयं के साथ भी ऐसा होगा । स्वार्थी, धोखेबाज लोगों से संसार भरा पड़ा है तथा दुनिया में आकर एक चक्रव्यूह में फंस गया हूं । भगवान चुपचाप सारा खेल देख रहा है । दूसरे, मुझे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं लगता, जिस पर विश्वास कर सकूं । हर व्यक्ति अपने तक केंद्रित रहता है । मेरा प्रेम किसी से हुआ, परंतु वह प्रेम नहीं करना चाहती, साथ ही डरती भी है । उस पर विश्वास किया था, साथ देने पर उसने इनकार कर दिया । सच्चे प्यार की तलाश में भटक रहा हूं । उसकी याद भुला नहीं सकता, सोचकर हंसता भी हूं ।

तीसरी समस्या है वहम की । मन में यह विश्वास हो गया है कि यदि एक मिनट सांस रोका तो फलां काम मेरा हो जाएगा । अखबार, पुस्तक आदि में छपी लाइन पढ़ते समय सोचता हूं कि यदि इस पहरे की अंतिम लाइन अक्षर 'है' होगा तो मेरा फलां काम हो जाएगा ; अन्यथा नहीं । एक पैरा पढ़ने के बाद पुनः उसे पढ़ने को मन करता है ।

काम भावनाओं पर नियंत्रण नहीं, सेक्स संबंधी बातें पढ़ने व सुनने से उत्तेजित हो उठता हूं । अनिश्चितता की स्थिति में घिरा हूं । कभी देश के बारे में सोचता हूं, और चिंता करता हूं कि राजनीतिज्ञ व पूंजीपति देश को खाने पर तुले हैं । स्वयं को असहाय- सा महसूस करता हूं । कृपया मार्गदर्शन करें ।

आपकी सभी समस्याएं वास्तव में आपस में जुड़ी हुई हैं । मूल समस्याओं का संबंध आपके बचपन से है । जब मां-बाप के पालन-पोषण द्वारा बच्चे में सुरक्षा तथा विश्वास की भावना उत्पन्न होती है । इन भावनाओं की जैसे-जैसे व्यक्ति बड़ा होता है तो और संबंधों से पुष्टि होती है । आपके साथ ऐसी घटनाएं हुई हैं, जिनसे आप किसी पर भी विश्वास करने पर समर्थ नहीं । कोई भी व्यक्ति आप को इस योग्य नहीं दिखता, विशेषकर महिला । वास्तव में प्रकृति बहुत विचित्र है तथा हो सकता है कि आपके जीवन में भी ऐसा मोड़ आये तथा वह स्त्री आपमें फिर से प्रेम व विश्वास की भावना जागृत करे । आप अपना मन 'बंद' करने के बजाये खुला रखें क्योंकि सभी लोग बुरे नहीं होते । अच्छे विश्वास करने योग्य भी लोग होते हैं । बाल अवस्था में ही आपने सोच को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया स्वयं उसके बंधन में जकड़ गये । सोच कभी जीवन-दर्शन को लेकर या फिर उसको इतना महत्त्व देकर कि आपके सोचने से बाहर की घटनाओं पर प्रभाव पड़ेगा, जिनका आपने उल्लेख अपने 'वहम' की मनोस्थिति को लेकर किया है । आप इसमें और न फसें और यदि मन करे भी तब भी उस लाइन को बार-बार न पढ़ें । वास्तव में इस मनोस्थिति, जिसमें कभी तो काम-भावना प्रधान होती है तो कभी देशप्रेम की भावना, आपको अनिश्चितता तथा असहाय होने पर मजबूर करती हैं । इसे

हम मनोवैज्ञानिक पद्धति में ऑब्सेशनल डिसऑर्डर भी कहते हैं । आजकल कुछ दवाएं भी इस पर नियंत्रण पाने के लिए हैं । आपको चाहिए कि सोचने को प्रधान महत्त्व न देकर 'कार्य' को महत्त्व दें ।

स्थिर नहीं

रा. त्रि. गोंडा : आयु ४५ वर्ष है । दिन में करीब १५-२० बार चाय के तथा २०-२५ सिगरेट पी जाता हूं । पेशाब बार-बार आता है । लिखने-पढ़ने का कार्य है परंतु चाहकर भी घंटे दो घंटे स्थिर बैठ नहीं पाता । परेशान हूं उपाय बतायें ।

आपकी चाय की मात्रा बहुत अधिक है इसी कारण बार-बार पेशाब आती है । वास्तव में अधिक चाय व सिगरेट का सेवन, स्थिर न बैठ पाना सब मानसिक तनाव के लक्षण हैं । यह एक भ्रम है कि सिगरेट पीने से या चाय पीने से तनाव कम होता है । असली उत्तर तनाव के कारण ढूंढ़ने में तथा परिस्थितियों से जूझने में मिलता है ।

दिमाग जम गया

अ. चावला, आगरा : १७ वर्ष का ११वीं कक्षा का छात्र हूं । मुझे लगता है कि मेरा दिमाग 'जाम' है । एकाग्रचित्त होकर नहीं पढ़ पाता । थोड़ी देर पढ़ने पर मन इधर-उधर घूमता है । किसी पुरानी घटना को सोचता रहता हूं । जैसे ही पढ़ने बैठता हूं दिमाग एकदम भारी होने लगता है, वास्तव में कुछ समय पूर्व भूल से एक पागल आदमी का जूठा पानी मैंने पी लिया था । तत्पश्चात मुझे अत्यधिक तनाव, नींद न आने की समस्या हो गयी । अब पढ़ाई की समस्या के साथ-साथ सुस्ती छायी रहती है व चिंता बनी रहती है । निराशावादी हो गया हूं। कृपया सलाह दें ।

पागलपन के कोई कीटाणु नहीं होते जो जूठे पानी में पहुंच कर आपको हानि पहुंचायें । हालांकि आपकी सभी तकलीफ इसके बाद ही शुरू हुई । यह इस बात की पुष्टि करता है कि आपकी काफी समस्या इसी भ्रम व डर से उत्पन्न है । हम आशा करते हैं कि भ्रम दूर हो जाने पर आप एकाग्रचित्त हो कर पढ़ेंगे तथा तनावग्रस्त व निराशावादी नहीं बनेंगे । सुस्ती छायी रहना भी इसी तनाव व अवसाद के लक्षण हैं, न कि पागलपन के ।

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

आत्महत्या का विचार बार-बार

चं. शं. ना., नागपुर : २२ वर्ष का अविवाहित युवक हूं । ४-५ वर्ष से कब्ज की भारी शिकायत है । हस्तमैथुन की भी आदत है । पहले अधिक, परंतु अब महीने में एक-दो बार । काफी इलाज कराया लाभ ही नहीं हुआ । अब डेढ़ वर्ष से आंव भी आता है और तीन-चार बार मल त्यागने जाना पड़ता है । आजकल अवसाद भी काफी है । आत्महत्या करने का विचार भी बार-बार आता है ।

आपकी समस्या 'इरिटेबल बाउल सिंड्रोम' है । न तो आपकी समस्या का सही तौर पर निदान हुआ, न ही इसका उपचार । इसका हस्तमैथुन से कोई संबंध नहीं । आपकी समस्या का संबंध मानसिक तनाव व अवसाद से अवश्य है । अवसाद का मनोचिकित्सक से इलाज करायें, रोज दो-तीन बड़े चम्मच ईसबगोल खायें, पेट के लिए 'एंटिबायोटिक' या 'एंटि अमिबोइक' दवा आदि न खायें । इनसे पेट और खराब हो जाएगा ।ईसबगोल के नियमित सेवन तथा डिप्रेशन के इलाज करा लेने से आपका पेट ठीक रहने लगेगा ।

शारीरिक परिवर्तन

अ. कु. झ. झवर, आयु ४२ वर्ष । बारह वर्ष पूर्व राष्ट्रीयकृत बैंक से निकाल दिया गया । मुख्य कारण स्टाफ द्वारा सताया जाना तथा मैनेजर द्वारा अपमानित किया जाना । पत्नी ५०० रु. महीना पाती है । इलाज कराने पर 'स्कीजोफ्रेनिया' नामक रोग बताया गया । सन १९८१ में आत्महत्या का प्रयास किया । अब इलाज के लिए पैसा नहीं । साथ ही कुपोषण का भी शिकार हूं । सन' ८१ में लड़की से प्रेम हुआ, पर उससे विवाह न हो सका । अब मानसिक आघात के कारण बाल सफेद होने लगे इससे हारमोन का असंतुलन होने से नपुंसक हो गया । अब किसी भी बात का जवाब हां, हूं से ही करता हूं । डर व भय में रहता हूं, ईर्ष्या का शिकार न हो जाऊं इस कारण अपने आर्थिक या अन्य लाभ लेने तक से डरता हूं । घर में चिड़चिड़ापन है । ईर्ष्यालू लोगों का कहीं शिकार न हो जाऊं, इसलिए बुद्धि का प्रदर्शन नहीं करता । बैंक का धन अदालत में है । शत्रुओं के कारण नौकरी कैसे करूंगा ? यह चिंता बनी रहती है ।

आपने यह नहीं लिखा कि मैनेजर व स्टाफ के लोगों ने आपको क्यों अपमानित किया ? तत्पश्चात आपके साथ बहुत से हादसे हुए, जैसे नौकरी से निकाला जाना, स्त्री का प्रेम न पा सकना, कुपोषण व मानसिक आघात, नपुंसकता आदि । इन सब कारणों से आप में आत्मविश्वास की कमी के साथ, 'डर' की भावना प्रबल हो उठी है । यह स्थिति अवसाद में भी होती है । सही इलाज से आप स्वस्थ हो सकती हैं । आपके पास ऐसा क्या है जो लोग ईर्ष्या करेंगे ? दबनेवाले व्यक्ति को और दबाया जाता है । आप अपना इलाज करवाते रहें सिर्फ दवा लिखनेभर से काम नहीं चलेगा । आजकल सरकारी अस्पतालों में मुफ्त इलाज की व्यवस्था है आपको नजदीकी मैडिकल कालेज में मनोचिकित्सा विभाग द्वारा इलाज कराना चाहिए । यदि किसी व्यक्ति या सगे संबंधी को साथ लेकर दिल्ली आने का कष्ट करें तो यहां पर भी इलाज संभव है ।

शराब की लत

एक बहन राठौर से : १७ वर्ष की १२वीं की छात्रा हूं । मेरे पिता ४९ साल के हैं तथा वायुसेना से सेवानिवृत्त काफी पढ़े-लिखे विद्वान व्यक्ति हैं । वे रोज शराब पीते हैं तथा बाद में झगड़ते हैं । साथ ही उल्टी-सीधी हरकत करते हैं । इस कारण दोनों बाजू की हड्डी तक टूट चुकी हैं । कहने-सुनने पर तूफान मचा देते हैं । झूठ बोल व पैसे ऐंठकर शराब की लत पर करीब १००० रु. प्रति मास फूंक देते हैं । मां व बाप दोनों की ही मुझे सुननी पड़ती है । पढ़ाई करने बैठती हूं तो परिवार को लेकर उलझ जाती हूं । डॉक्टर साहब मैं घुट-घुट कर जी रही हूं। कृपया कोई उपाय बतायें ।

आपके पिता इस समय शराब की लत में बुरी तरह से जकड़े जा चुके हैं । आजकल शराब छुड़ाने के नशामुक्ति केंद्र हैं यह काम केवल इसके विशेषज्ञ द्वारा विशेषकर दवा तथा भरती करके संभव है । आपके पिता पढ़े-लिखे विद्वान व्यक्ति हैं इसलिए हमें पूरा विश्वास है कि एक बार यदि वह सही रास्ते पर आ गये तथा छोड़ने में समर्थ हो गये तो वह स्वयं ही जान जाएंगे कि शराब ने कैसे उनके सुखमय परिवार में विष घोल रखा था । इस समय भाषण देने, कहा-सुनी करने से कोई लाभ नहीं । यदि आपके शहर में नशा मुक्ति-जैसी संस्था हो जो स्वयं शराबी थे, परंतु अब छोड़ चुके हैं तो वह भी सहायक सिद्ध हो सकती है । यदि इस बारे में कुछ और जानकारी प्राप्त करना चाहें तो विस्तृत तौर पर अपने पूरे पते के साथ लिखें ।

श्रद्धांजलि

मेरा आंगन खाली है...

● रंजन ज़ैदी

पाकिस्तान उर्दू की युवा कवयित्री सारा शगुफ़्ता की मृत्यु का ग़म झेल ही रहा था कि वहां की एक और जानी-मानी कवयित्री परवीन शाकिर की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। दोनों की मृत्यु बड़े ही रहस्यमय ढंग से हुई है। सारा शगुफ़्ता ने अपने घर में आत्महत्या कर ली थी, और परवीन शाकिर की मृत्यु एक ट्रक दुर्घटना में हुई। यह सवाल अभी उलझा ही हुआ था कि वह आत्महत्या करने पर क्यों मजबूर हुई कि एक दूसरे हादसे से एक और सवाल सामने खड़ा हो गया कि परवीन शाकिर की कार सचमुच ट्रक से टकरायी थी या यह एक बहुत बड़े षड्यंत्र का परीक्षण था? एक सवाल यह भी उठता है कि इन दोनों से पाकिस्तानी समाज या उर्दू काव्य को क्या खतरा पैदा हो गया था? क्या इसलिए कि इन दोनों ही कवयित्रियों ने पहली बार उर्दू काव्य की परंपरागत सोच और उसके ढांचे को न केवल बदलने या तोड़ने का साहस किया बल्कि उसके समूचे तंत्र के खिलाफ बगावतें भी कीं।

हालांकि इनसे पहले की दो बड़ी कवयित्रियों में 'किश्वर नाहीद' और 'फ़हमीदा रियाज़' ऐसी पहली महिलाएं थीं जो अपने विद्रोही तेवरों के साथ उर्दू शायरी के खामोश सन्नाटे में अपनी विशिष्ट सोच वाली शायरी का पत्थर फेंक कर उसमें हलचल पैदा कर चुकी थीं, लेकिन इसके बावजूद कोई बहुत बड़ा विस्फोट नहीं हुआ था।

यह लगा था कि ये महिलाएं अपने रास्ते के लिए उर्दू-साहित्य के धरातल का कुछ हिस्सा चाह रही हैं। अतः उर्दू साहित्य के मठाधीशों ने उन्हें अपनी मानसिक संकीर्णता के रहते जमीन का एक ऐसा टुकड़ा दान में दे दिया, जो कांटों से भरा हुआ था। किश्वर नाहीद और फ़हमीदा रियाज़ आतंकित नहीं हुईं। उन्होंने इसी को कांटों से साफ कर इसमें नयी पीढ़ी को एक ऐसा साफ-सुथरा रास्ता दिया, जिस पर चल कर नयी पीढ़ी की कवायित्रियों एक नये क्षितिज तक पहुंच सकती थीं। सारा शगुफ़्ता और परवीन शाकिर ऐसी ही नयी पीढ़ी की दो कवयित्रिया थीं। दोनों ने ही अपने-अपने ढंग से बगावतों की कमानें संभालीं और नये क्षितिज की ओर कूच किया।

उर्दू के सुपरिचित कवि जुबैर रिज़्वी का मानना है कि सारा शगुफ़्ता परवीन शाकिर से

बड़ीकवयित्री थी । उनके विचार से परवीन शाकिर एक ऐसे विशिष्ट वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी, जो रूमानियत को पसंद करता है । यानि उसका काव्य एक विशिष्ट प्रकार की 'कच्ची उम्र' का काव्य है । फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ का भी आरंभिक काव्य 'कच्ची उम्र' का माना जा सकता है । पाकिस्तान के उर्दू कवि अहमद फराज़ या भारत में 'साहिर लुधियानवी' या 'मजाज़ लखनवी' की प्रारंभिक शायरी 'कच्ची उम्र' की शायरी थी । किंतु उर्दू के एक अन्य चर्चित शायर 'मखमूर' का मानना है कि परवीन शाकिर को मात्र रूमानी कवयित्री के रूप में प्रस्तुत करना उसके काव्य के साथ इंसाफ करना नहीं है । उनका प्रश्न था कि प्रेम की भावना में रूमानियत कहां होती है ? प्रेम वतन से भी होता है और मां से भी । प्रेमी से भी होता है और भाई से भी । तब... ?

''मैं सच कहूंगी, फिर भी हार जाऊंगी/वह झूठ बोलेगा, मगर लाजवाब कर देगा ।''

वास्तविकता यह है कि परवीन शाकिर की दृष्टि में मानवतावाद की जो परिकल्पना थी और जिंदगी के जो स्वप्न वह देखा करती थी, उसमें परस्पर मानसिक टकराव का उसको सामना करना पड़ा । वह दुःखी थी अपने परंपरागत परिवेश और समाज से । पुरुष वर्ग की उस उपेक्षा और तिरस्कार से, जिसके गैस-चेंबर में नारी शताब्दियों से ताजी हवा में सांस लेने के लिए छटपटा रही है । उसे शिकायत थी उस पतनोन्मुखी समाज और पलायनवादी चिंतन-धारा से, जिसने समूचे मुसलिम समाज और नारी-वर्ग को अपने शिकंजे में जकड़ रखा है । इसके बावजूद उसके आत्मविश्वास और उसकी मानसिक परिपक्वता उसे शक्ति प्रदान करती रही...**''वह कहीं भी गया, लौटा तो मेरे पास आया/बस यही बात है अच्छी मेरे हरजाई की ।''**

परवीन शाकिर का काव्य नारी के सौंदर्य, उसकी भावनाओं, अनुभवों और अवस्थाओं की प्रभावपूर्ण काव्यात्मक अभिव्यक्ति है । उसने अपने वैयक्तिक अनुभवों में विभिन्न अवस्थाओं के रंग भर दिये हैं । उसके काव्य का स्वर न केवल एकाकी है, बल्कि एक खास किस्म की विशिष्टता लिये हुए है **''मैं बच भी जाऊं तो तनहाई मार डालेगी/मेरे क़बीले का हर फर्द कत्लगाह में है ।''**या**''पहले खत रोज़ लिखा करते थे/दूसरे, तीसरे, तुम फोन भी कर लेते थे/और अब ये कि तुम्हारी खबरें/सिर्फ अखबार से मिल पाती हैं ।''**

इसके बावजूद परवीन शाकिर के काव्य में उर्दू की पूरी काव्य-परंपरा और उसका संकल्प दोहराया गया है, जिससे प्रमाणित होता है कि परवीन शाकिर का अपनी साहित्यिक परंपराओं, मूल्यों और उसके इतिहास से कितना गहरा परिचय रहा है । उसकी उपमाओं और प्रतीकों की धार से न केवल उर्दू के परंपरागत काव्य में कंपन पैदा हुआ बल्कि रूढ़िवादी परंपराओं को भी नये खतरे की गंध का अहसास होने लगा...**''कमाल-ज़ब्त को खुद भी तो आज़माऊंगी/मैं अपने हाथ से उसको दुल्हन बनाऊंगी ।''**या **''याद तो होंगी वो बातें तुझे अब भी लेकिन/शेल्फ़ में रखी हुई बंद किताबों की तरह ।''** यही कारण है कि परवीन शाकिर का काव्य उर्दू शायरी के प्रशंसकों में बेले के फूलों की तरह महकता रहता है...**''वह रोज़ आके मुझे अपना प्यार पिन्हाये/मेरा गुरूर है बेले के हार का मौसम ।''**

परवीन शाकिर के पिता पटना (बिहार) के निवासी थे। हिजरत का गम उनके नसीब में भी था। वह भारत-पाक विभाजन के दौरान पाकिस्तान चले गये। वहीं कराची में २४ दिसंबर, १९५२ में परवीन शाकिर का जन्म हुआ। शाकिर उनके पिता का नाम था। सिविल सर्विस में आने से पहले परवीन ने अंगरेजी साहित्य व भाषा-विज्ञान में एम.ए. किया था। पाकिस्तान के कस्टम विभाग में वह कस्टम अधिकारी थी। उन्हीं दिनों उनकी शायरी आम लोगों की निगाह में आयी और धीरे-धीरे वह लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाने लगी। १९७६ में उसका पहला काव्य संकलन प्रकाशित हुआ —'खुशबू'। यही वह काव्य-संकलन था जिसने उर्दू शायरी की दुनिया में तहलका मचा दिया। युवा प्रशंसकों का बहुत बड़ा वर्ग उसकी शायरी के खेमे में सिमट आया। उत्साह के पंख उग आये। शायरी की उड़ान तेज हो गयी। 'सद-बर्ग', "खुद कलामी' और 'इनकार' शीर्षक से एक के बाद एक करके उसके तीन और संकलन प्रकाशित हुए। लेकिन वह आलोचकों का निशाना तब बनी जब उसकी एक नज़्म 'टोमैटो कैचप' प्रकाशित हुई।

एक दिन सुना गया कि सारा शगुफ़्ता ने आत्महत्या कर ली। परवीन ने तड़प कर कहा, "सुपुर्द कर के उसे चांदनी के हाथों में/मैं अपने घ के अंधेरों में लौट आयी हूं।" क्या पता था कि खुद परवीन भी बहुत जल्द एक हादसे का शिकार बन जाएगी। "मैं तो शबनम थी, हथेली पर तेरे गुम हो गयी/वह सितारा थी, सो तेरे पैरहन पर सज गयी।"

—सह संपादक
समाज कल्याण
नयी दिल्ली

परवीन शाकिर की एक नज़्म

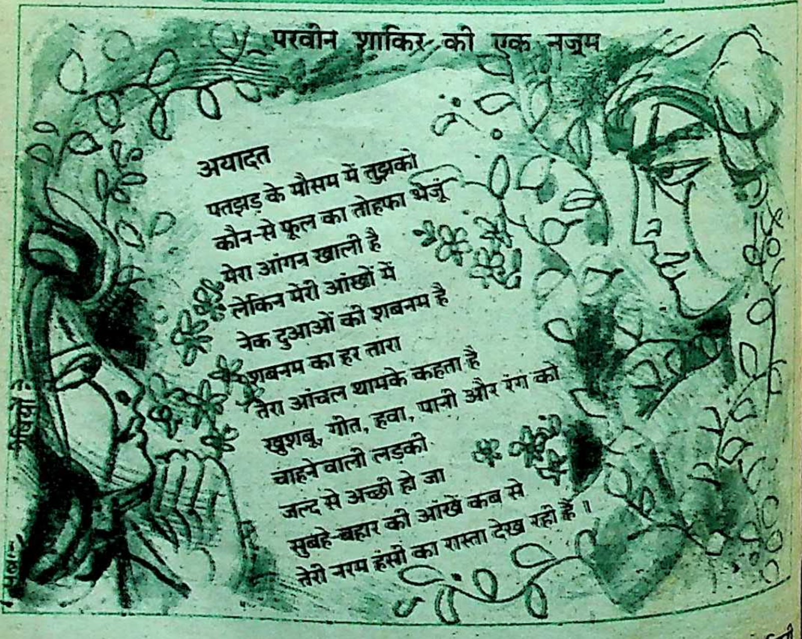

अयादत

पतझड़ के मौसम में तुझको
कौन-से फूल का तोहफा भेजूं
मेरा आंगन खाली है
लेकिन मेरी आंखों में
नेक दुआओं की शबनम है
शबनम का हर तारा
तेरा आंचल थामके कहता है
खुशबू, गीत, हवा, पानी और रंग को
चाहने वाली लड़की
जल्द से अच्छी हो जा
सुबहे-बहार की आंखें कब से
तेरी नरम हंसी का रास्ता देख रही हैं।

प्रवेश

जिंदगी

जिंदगी मासूम है
इसके साथ खेलो मत
ज़िंदगी बेवफा है
इसका यकीन करो मत
जिंदगी एक जंग है
इसको जीतना है हमें
जिंदगी दर्दभरी
कहानी है, जिसका
आगाज प्यार है, 'औ'
अंजाम मौत है
जिंदगी जवां है
इसका जोश है हम
जिंदगी दिलकश
महबूब है
टूटकर इसे प्यार करो
जिंदगी एक फरेब है
हो सके तो पहचान लो ।

—कु. वीणा चुलेट

आत्मकथ्य : जब भी रिश्तों में टूटती हुई संवेदना और अपने परिवेश में व्याप्त विसंगतियां देखती हूं तो दिल तड़फ उठता है और कविता खुद-ब-खुद बन जाती है।

शिक्षा : एम. ए. हिंदी साहित्य

पता : द्वारा श्री विश्वनाथ चुलेट
वार्ड नं. ६, रामगढ़ शेखावटी
सीकर, राजस्थान-३३१०२४

सृजन

मां !
सोचता था
कुछ लिखूं तुम्हारे लिए भी
पर
लिख नहीं पाता था
शायद/मुश्किल भी तो है
जिसने सृजित किया हो मुझे
उसके लिए
करना
कुछ 'सृजन'

दूब पर ओस

रातभर
स्वप्न में तुम
कुछ इस तरह
मानो
सुबह का वक्त
और
दूब पर ओस ।

—अमिताभ मानव

पता : पुत्र स्व. श्री संपत कुमार जैन
पो. निवास, जिला—मंडला (म. प्र.)

संप्रति : अध्ययनरत (बी. ए.)

आत्मकथ्य : समर्पित साथी के अभाव में कविताएं मेरे दुःख-सुख को बांटने का माध्यम हैं, और अनुभूति की अभिव्यक्ति भी ।

बस यह कि...

तुम्हें देखना, बस देखते जाना
तुम्हें हल्के होंठ चूमना

हाथ में हाथ कर
बैठना यूं ही चुप
साथ-साथ घूमना

धड़कनों से धड़कनें जोड़
बोलना
तुम्हारे साथ-साथ बहना,
तुम्हारे साथ-साथ थमना
और क्या चाहता था तुमसे

और शायद तुम्हें भी एतराज न था
कहीं तुम्हारा भी था मन

पर भरोसा नहीं था
कि मैं इतने पर रहूंगा

जहां तक तुम सहोगी
मैं भी सहूंगा

हर बारिश बाद
खुलते आसमान में
एक इंद्रधनुष तना होगा तुम पर
मैं तुम्हें कहां याद रहूंगा !

—अनुमर्म

शिक्षा : स्नातक

आत्मकथ्य : जिंदगी जहां से उठती है, वहां एक कविता छोड़ जाती है मेरे लिए। अगर इस जीवन में, इस दुनिया में कहीं प्यार है, आत्मीयता की कोई धड़कन, तो उसकी तलाश हैं मेरी कविताएं।

पता : द्वारा—प्रो. रमाकांत प्रसाद सिंह
विवेक विहार, हनुमाननगर, पटना-८०००२०

क्षणभंगुरता

जीवन का अस्तित्व क्या है
क्षणभंगुरता
पता नहीं कब वह क्षण आये
और सब कुछ समाप्त !
फिर किसलिए बार-बार
कामनाओं के अनंत सागर में
इच्छा रूपी लहरों का आना
अतृप्त हो, पुनः तृप्ति के लिए आना, मात्र भटकना !
इस तुच्छ परिवर्तनशील संसार से इतना मोह
सब तो त्यागना है, दूर जाना है सबसे
फिर एक-दूसरे से इतना छल, इतना प्रपंच क्यों ?
महाआश्चर्य ! नित प्रतिदिन लोगों का काल में समाहित होना
और स्वयं को अमर जानना।
क्यों नहीं होती जीवन की सार्थकता को जानने की चेष्टा
स्वयं को माया से हटा अध्यात्म में लाना
जीवन में समर्पण की भावना का होना,
त्याग, निष्ठा, बलिदान, दया का होना।
ईश्वर के जीवन को ईश्वर के अनुसार
सत्कर्मों में व्यतीत करना।

—शालीना

आत्मकथ्य : अनुभव द्वारा हृदय में आये विचारों को शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करना।

शिक्षा : बी. ए. (संस्कृत)

पता : द्वारा : डॉ. ऋता शुक्ल
टैगोर शिखर पथ, मोराबादी
रांची-बिहार ८३४००८

सुरक्षा

हम पेड़ तो नहीं
कि देते रहें ।
पत्ते फल-फूल और छाया
जब कुछ न दे पायें,
तो जाए हमें जलाया
क्या हमें सिर्फ देने का,
हक है, लेने का नहीं ?
हमें भी चाहिए,
आत्मविश्वास की मिट्टी,
सुरक्षा की कड़ी धूप,
संवेदना का जल,
और अपनत्व की हवा ।

—सोनी धवन

शिक्षा : एम. ए. (हिंदी)

आत्मकथ्य : मन की बेचैनी जब बहुत बढ़ जाती है, तो अनायास ही कलम चलने लगती है, और मन को बहुत शांति मिलती है, अपने दर्द को कागज पर उतारकर ।

पता : ६, गुजराती मोहल्ला, इलाहाबाद

अंतर्वेदना

धूप तो
उसे भी सताती है बहुत
लेकिन—
मौन जलते रहने की
अंतर्वेदना
वृक्ष की छाया
कहे तो किससे कहे ?

आईना

जिसे टूट जाने का भय हो
वो तुम हरगिज
हो ही नहीं सकते,
क्योंकि—
टूटकर भी तो तुम वही हो
अपनी टूटी हुई किर्च-किर्च
में भी तुम वही हो !

—नवीन

आत्मकथ्य : "पीड़ा की अभिव्यक्ति जब आंसुओं में ढलकर पलकों तक नहीं आ पाती, तो शब्द बनकर कागजों में उतर आती है ।"

शिक्षा : वाणिज्य स्नातक, परास्नातक (अर्थशास्त्र)

उम्र : २७ वर्ष

लेखन : विगत सात वर्षों से निरंतर लेखन । प्रकाशन/प्रसारण से सर्वथा दूर । पहली बार 'प्रवेश' के माध्यम से प्रकाशन-प्रवेश का प्रयास ।

संप्रति : राजभाषा कक्ष, क्षेत्रीय कार्यालय, इलाहाबाद बैंक, सीतापुर (उ. प्र.) २६१००१

वीरेन्द्र मिश्र का अंतिम लेख

सुगम संगीत, गीत और संप्रेषणीयता

अच्छे गीतकारों को तो बाधाएं आएंगी ही!

● वीरेन्द्र मिश्र

इस पीढ़ी के गीतकारों में वीरेन्द्र मिश्र का स्थान शीर्षस्थ रहा है। अचानक १ जून, १९९५ को हृदयाघात से उनका निधन हो गया। हिंदी-काव्य की गीत-विधा के लिए यह अपूरणीय क्षति है। उनके आकस्मिक निधन पर 'कादम्बिनी परिवार' अपनी विनम्र श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता है। देहावसान से कुछ ही दिनों पूर्व उन्होंने यह लेख लिखकर हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजा था। गीतों में संगीत तत्त्व के संदर्भ में उनकी दृष्टि और प्रतिक्रिया को व्यक्त करनेवाला अंतिम लेख यहां प्रस्तुत है।

हम हिंदी वाले अपने भाषणों, चर्चा आलेखों में प्रायः उर्दू के शेरों तथा का उपयोग खुलकर करते हैं। जो लोग जानते हैं, वे इसी प्रकार संस्कृत की उक्ति उपयोग करते हैं। लेकिन हिंदी भाषी भाषा के ऐसे ही उद्धरणों का उपयोग नहीं करते। अपवादों की बात छोड़ दें, तो अपनी भाषा में ऐसे उद्धरणों से या तो हैं या हमें लगता है कि हमारी भाषा इस आधी-अधूरी या अपूर्ण है।

उर्दू और संस्कृत के संदर्भ में देखें, तो बात जो स्पष्ट होती है, वह यह है कि अधिकांश उद्धरण छंदबद्ध होते हुए भी अतुकांत ही होते हैं। हिंदी में क्या ऐसा सकता ? कुछ कारण स्पष्ट हैं। संप्रेषणीयता की दृष्टि से छंद जरूरी है। आज की स्थापित हिंदी कविता में तो, क्या अतुकांत छंद— दोनों ही गायब हैं। संप्रेषणीयता से संबद्ध छंदबद्ध कविता कविता से तो (पूर्वाग्रहों के कारण) का प्रश्न ही नहीं। और स्वयं छंदमुक्त

उर्दू और संस्कृत के संदर्भ में देखें, तो एक बात जो स्पष्ट होती है, वह यह है कि उनके अधिकांश उद्धरण छंदबद्ध होते हुए भी अतुकांत ही होते हैं । हिंदी में क्या ऐसा नहीं हो सकता ? कुछ कारण स्पष्ट हैं उद्धरणों में संप्रेषणीयता की दृष्टि से छंद जरूरी है । लेकिन आज की स्थापित हिंदी कविता में तो, क्या छंद, क्या अतुकांत छंद— दोनों ही गायब हैं ।

विधाओं की संप्रेषणीयता यदि कुछ है भी, तो से लोकप्रियता प्राप्त नहीं है । ऐसी स्थिति में दमुक्त विधाओं के समर्थक भी इस प्रसंग में दू के शेरों पर निर्भर रहते हैं ।

अपेक्षित सक्रियता का अभाव

संप्रेषणीय उद्धरणों की प्रस्तुति की ही बात हीं है । विचारणीय यह है कि संप्रेषणीयता के तर पर सांगीतिक संदर्भ की हिंदी कविता में पेक्षित सक्रियता का अभाव क्यों है ? संगीत र साहित्य के बीच संवाद क्यों नहीं है ? ऐसा यों है कि हिंदी भाषा का लगाव साहित्य से छ ऐसा और इतना है कि संगीत क्षेत्र न केवल से पराया और अजनबी लगता है बल्कि ाहित्य-विरोधी भी । जिस भारतीय संस्कृति में क्ति साहित्य की एक अनुकरणीय संगीतप्रियता की परंपरा रही है, उसे नये संदर्भों में ग्रहण करते ए और नया रूप देते हुए हम डरने लगे हैं । गला में रवीन्द्रनाथ ठाकुर और काजी नजरुल स्लाम से आज तक वह परंपरा विकसित होती ही है । अन्य भाषाओं में भी ऐसा हुआ है । फर इस दिशा में हिंदी ही क्यों पीछे है ?

आकाशवाणी और दूरदर्शन कार्यक्रमों में कसर ही हिंदी के महान और प्रतिष्ठित कवियों गीत प्रस्तुत होते हैं । लेकिन प्रायः जिस रूप में उन्हें प्रस्तुत किया जाता है, उससे तो उनका प्रस्तुत न होना ही अधिक उपयुक्त होता । हमारे अपने निराला, पंत, प्रसाद के गीतों को सुनकर रचना की गरिमा की क्षति और छंद, लय, गति की छीछालेदर क्या हमारे लिए बहुत सुखद है ? श्रेष्ठ गीतों को संगीत या संगीतकारों में प्रभावहीन होते देखकर भी हम लोग इस स्थिति का न तो विरोध करते हैं और न इसे बदलने के लिए ही कुछ करते हैं ।

साहित्यिक दृष्टि से देखें, तो हम जानते हैं कि वर्तमान हिंदी कवियों की रुचि सुगम संगीत में बहुत अधिक नहीं है । जिनकी रुचि है, वे अत्यंत साधारण कोटि के रचनाकार हैं, जिनका साहित्यिक क्षेत्र से कोई संबंध नहीं है । इस स्थिति के कई कारण हैं । एक तो यही कि कविता के विषय बदलते गये । वे अधिक यथार्थवादी होते गये, जबकि कंठ-संगीत के गायन के विषय नहीं बदले । पुरानी शब्दावली, पुरानी अभिव्यक्ति, पुराने विषय पूर्ववत हैं । संगीत के विषय यदि बदलेंगे भी, तो उनकी गति धीमी रहेगी । हो सकता है विषय के स्तर पर न आकर बदलाव अभिव्यक्ति में आया हो ।

उर्दू की रचनाएं कुछ अग्रणी

इस संदर्भ में उर्दू की रचनाएं कुछ अग्रणी

नजर आती हैं । उर्दूवालों ने सीमित विषयों में भी धीरे-धीरे ताजगी देने की कोशिश की और विषयों में भी समयानुकूल परिवर्तन किया । उन्होंने हिंदी के छंदमुक्त कवियों की तरह संपूर्ण संगीत विधा को अछूत नहीं माना । वे लोग काव्य और संगीत के क्षेत्रों में अपनी परंपरा और जड़ों से जुड़े रहे । रूप और शिल्प में प्रयोग उन्होंने भी किये, लेकिन उनमें आमूल परिवर्तन करके संगीत-जैसी कला विधा से स्वयं को अलग नहीं कर लिया । ऐसा और इस तरह से, सिर्फ हिंदी में ही हुआ ।

छंदमुक्त कविता के सर्जकों की रुचि छंद-रचना में नहीं है । कुछ अपवादों को छोड़ दें, तो श्रेष्ठ स्तर की गीत-रचना में वे अक्षम और विफल रहे हैं । जब छंद-रचना में न उनकी रुचि है, न आस्था, बल्कि किसी सीमा तक विरोध, उपेक्षा और शत्रुता-जैसा भाव है, तो छंद से संबद्ध संगीत से वे कैसे जुड़ पाते ? इसीलिए उन्होंने संगीत से संबंधित गीत, संगीतिका (ऑपेरा) और संगीत रूपक, तीनों की ही उपेक्षा की । गद्य-प्रधान काव्यशैली के रचनाकारों को संगीत में अपनी रचना का भविष्य नजर नहीं आया, तो वे नाटकों या डांस-बेले (नृत्य नाटकों) की दिशा में मुड़ गये । लेकिन साहित्य और संगीत के पुराने आपसी रिश्तों में इस प्रकार आये विघटन की उन्हें कोई चिंता नहीं थी । उर्दू या अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं हुआ ।

छंद के प्रति उदासीनता अहितकर

हिंदी काव्य की सांगीतिक चेतना के संदर्भ में मेरी चिंताएं आज की नहीं हैं । इस संदर्भ में पहले भी मैं लिख चुका हूं । सन १९८० में प्रकाशित 'नवगीत' (प्रवेशांक) के अंतर्गत ऑपेरा और डांस बेले पर अपनी एक टिप्प भी मैंने इस बारे में संकेत किया था—

...ऑपेरा और बेले की ही तरह सुगम संगीत के क्षेत्र में भी हिंदी के श्रेष्ठ गीतों का अभाव सुविदित है । छंद के प्रति उदासीनता, उपेक्षा और विरोध का भाव या गलत प्रचार न हिंदी के हित में है, न संगीतोपयोगी हिंदी गीत-लेखन के हित में । इससे साहित्य के ए महत्त्वपूर्ण पक्ष की क्षति हो रही है और हिंदी के नाम पर अलेखक या टटपुंजियाई कवि येन-केन-प्रकारेण इस ओर सक्रिय होकर हिंदी की सर्वथा अस्वाभाविक और गलत तसवीर प्रस्तुत कर रहे हैं । नवगीत के प्रतिभावंतों से इस दिशा में योगदान विशेष रूप से अपेक्षित है, जिससे छंद का सांगीतिक आनंद पाठकों तक ही सीमित न रहे, आम श्रोता तक भी पहुंचे ।''

इसी प्रसंग में यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि अपवादों को छोड़ दें, तो छंदमुक्त कवि के शीर्षस्थों तथा साधारण कवियों ने विगत दशकों में जब भी छंदबद्ध और तुकांत रचना, विशेष रूप से गीत लेखन, की कोशिश की, वे असफल रहे । उनमें गीत-लेखन की उतनी क्षमता और सामर्थ्य भी नहीं रही, जो उनकी प्रारंभिक रचनाओं में थी । लेकिन उनके ही दौ के ऐसे कवि, जो पूर्व में गीतकार रह चुके थे, और छंद के अनुशासन से गुजरे थे, वे गीत लिख पाने में सफल रहे । उनमें से कुछ कवि संगीतोपयोगी गीत भी लिखने में सफल रहे । इनमें स्वर्गीय गिरिजा कुमार माथुर का नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

एक और बात जो हिंदी कविता और संगीत के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण है, वह यह कि जिस तरह से उर्दूभाषी जन अपने भाषा प्रेम के साथ संगीत क्षेत्र में पहुंचे, हिंदीभाषी जन नहीं । यदि पहुंचे भी, तो उनमें व्यापारिक मानसिकता हिंदी-प्रेम से ऊपर रही ।

हिंदी मात्राक्रम से अनभिज्ञता

उर्दू जाननेवाले प्रायः सभी गजल के कंपोजर और गायक, गजल के मात्राक्रम, लय वृत्त, और वजन को जानते हैं, जबकि हिंदीभाषी कंपोजर भी गजल के संदर्भ में तो उक्त संगीतकारों की तरह ही गंभीर हैं । (याने मात्रा और वजन पर ध्यान देते हैं) लेकिन स्वयं अपनी भाषा (हिंदी) के गीतों के वजन या मात्राक्रम पर ध्यान नहीं देते । उर्दूभाषी संगीतकार, यदि हिंदी के मात्राक्रम से अपरिचित हैं, और उर्दू के वजन के आधार पर ही हिंदी के गीतों की भी धुन बनाते हैं (या बिगाड़ते हैं) तो यह अस्वाभाविक नहीं है, क्योंकि वह हिंदी के मात्राक्रम से विशेष परिचित नहीं हैं, लेकिन हिंदीभाषी संगीतकार भी जब ऐसा ही करते हैं, तो दुःख होता है । इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि जब तक हिंदी भाषा और उसकी सांगीतिक चेतना को समझनेवाले, हिंदी क्षेत्र के संगीतकार, सामने नहीं आते, फिलहाल यह स्थिति ऐसी ही बनी रहेगी । फिर भी इस दिशा में कुछ प्रयत्न अवश्य किये जाने चाहिएं । हिंदीभाषी संगीतकारों को, हिंदी साहित्य के सामान्य ज्ञान की दिशा में प्रेरित, प्रोत्साहित करने के लिए कुछ आकर्षण उत्पन्न करने से, जरूर कुछ अच्छे परिणाम आ सकेंगे । यहां मुख्य प्रश्न हिंदी की सामान्य या उच्च शिक्षा या ज्ञान का न होकर, भाषा से आत्मीय संबंध और लगाव का है ।

हिंदी कविता की छंदधर्मी संगीतात्मकता के विरुद्ध जो वातावरण आधुनिक हिंदी काव्य-जगत में महत्त्व प्राप्त करता गया है, उससे एक ओर तो सामान्य श्रोता-पाठक से उसके संबंध प्रभावित हुए, दूसरी ओर हिंदीभाषी संगीतकारों की रुचि भी, हिंदी कविता के छंद-विहीन हो जाने के कारण गजलों की ओर होती गयी । यद्यपि वे जानते थे कि गीत विधा पूर्ववत गतिशील है, लेकिन प्रचार-प्रसार माध्यमों (विशेष रूप से मुद्रित माध्यमों) में उसे अपेक्षित प्रतिष्ठा और गति नहीं मिलने से उनके मन में एक हीन भावना या ग्रंथि-सी आ गयी, जो अस्वाभाविक नहीं कही जा सकती । गजलों की तरफ उनके जाने का यह भी एक कारण था । वैसे भी गजल का प्रभाव संगीत और साहित्य के क्षेत्रों में बढ़ ही रहा था । मंचीय कविता में भी स्तर और अनुपात की दृष्टि से निरंतर होते विघटन और हास्य-व्यंग्य के बढ़ते वर्चस्व से भी प्रभाव में बदलाव आया ।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि उर्दू गजल का प्रभाव जहां एक तरफ आज के हिंदी काव्य पर पड़ा और अनेक गीतकार गीत के बजाय गजल की ओर उन्मुख हो गये (कई नवोदित कवियों ने तो गजल लेखन से ही अपना सृजन आरंभ किया) वहीं संगीत क्षेत्र में भी आज के हिंदी गीत की स्थिति कमजोर हुई और गजल हावी होती गयी ।

हिंदीभाषियों में भाषा-प्रेम कम

हिंदी कविता में गजल लेखन का सैलाब तो आया, लेकिन उर्दू गजल की तरह वह संगीत से

नहीं जुड़ पाया । उर्दू गजल वस्तु और शिल्प के स्तर पर जितनी बहुआयामी हुई, हिंदी गजल नहीं । हिंदी गजल की धूम पत्र-पत्रिकाओं में तो खूब रही, लेकिन समीक्षा में उसे विशेष स्थान नहीं मिल पाया । हिंदी गजल की विषय वस्तु में वैविध्य का भी अभाव रहा । सामाजिक और राजनीतिक चेतना उसमें भरपूर रही, लेकिन मानवीय भावनाओं से संबद्ध अन्य विषयों पर कम लिखा गया । हिंदी गजल संगीतकारों को अपने विशेष अनुकूल नहीं लगी । दुष्यंत कुमार की कुछ गजलों के अतिरिक्त, हिंदी गजलों का कोई स्वरूप सुगम संगीत में नहीं उभर पाया ।

हिंदी भाषा-भाषियों की संख्या की विराटता को देखते हुए उनमें भाषा-प्रेम का माद्दा उर्दू की अपेक्षा काफी कम है । आज जब दृश्य-प्रधान सांगीतिक माध्यमों पर निरुद्देश्य फिल्मी और विदेशी संगीत से उत्पन्न अपसंस्कृति हमारी अपनी सांस्कृतिक चेतना का स्थान ले रही है, हिंदी साहित्य के समकालीन गीत लेखकों पर यह गुरुतर दायित्व है कि संगीत से अलग होती जा रही कविता को एक नया मोड़ दें ।

यह नया मोड़ तभी दिया जा सकता है, जब एक ओर हिंदी कविता से परिचित और उसमें आस्था रखनेवाले हिंदी क्षेत्र के सुशिक्षित हिंदीभाषी संगीतकार संगीत-क्षेत्र में आकर हिंदी को गरिमा प्रदान करें, दूसरी ओर अच्छी उर्दू शायरी के पुराने-नये शायरों की तरह हिंदी के भी पुराने और आज के कवि, सुगम संगीत में स्थान पाएं ।

अभी उसमें पुराने हिंदी कवियों की भक्ति काव्यधारा के रचनाकार ही मुख्य रूप से समाविष्ट हैं ।

श्रेष्ठ गीतकार/नवगीतकारों से अपेक्षा

इस प्रसंग में यह भी देखना होगा कि संप्रति सुगम संगीत (आकाशवाणी/दूरदर्शन आदि) में छाये अधिकांशतः तथा कथित गीत-लेखकों के स्थान पर (जिनमें हिंदी भाषा के अधकचरे ज्ञानवाले प्रतिभाहीन हिंदी/उर्दू के कवि भरे पड़े हैं) श्रेष्ठस्तर के ऐसे गीतकारों/नवगीतकारों का प्रवेश हो, जिनकी रचनाओं में विषय और शिल्प की नवीनता तथा ताजगी आदि के अतिरिक्त सांगीतिक लेखन की प्रतिभा भी हो और रूचि भी । इस संदर्भ में वरिष्ठ और अनुभवी गीतकारों/नवगीतकारों को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया जा सकता है ।

वैसे इस प्रकार के और भी सुझाव दिये जा सकते हैं, लेकिन व्यावहारिक रूप में इस सब में काफी कठिनाइयां भी हैं । अपने में यह कार्य काफी बीहड़ है । जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, सामान्य हिंदी भाषा-भाषी व्यक्ति में हिंदी-प्रेम का अभाव है । प्रसारण तंत्र (आकाशवाणी/दूरदर्शन) भी इसके अपवाद नहीं हैं ।

प्रसारण के तत्संबंधी व्यावसायिक कर्मचारियों और अधिकारियों में भी यही स्थिति है । प्रायः हिंदी में उनकी रूचि नहीं है । ऐसे में गलत तरीकों से बहुत-से लोग प्रवेश पा जाते हैं । वहां जो उर्दू प्रेमी हैं, वह पूरी तरह और वास्तव में उर्दू प्रेमी हैं । ऐसे में अच्छे हिंदी गीतकारों के प्रवेश में बाधाएं तो आएंगी ही । फिर भी प्रयत्न किया जाना चाहिए ।

समस्या का समाधान संभव है

अंत में हम यही कहेंगे कि सुगम संगीत में वर्तमान हिंदी गीत की स्थिति काशी शोचनीय

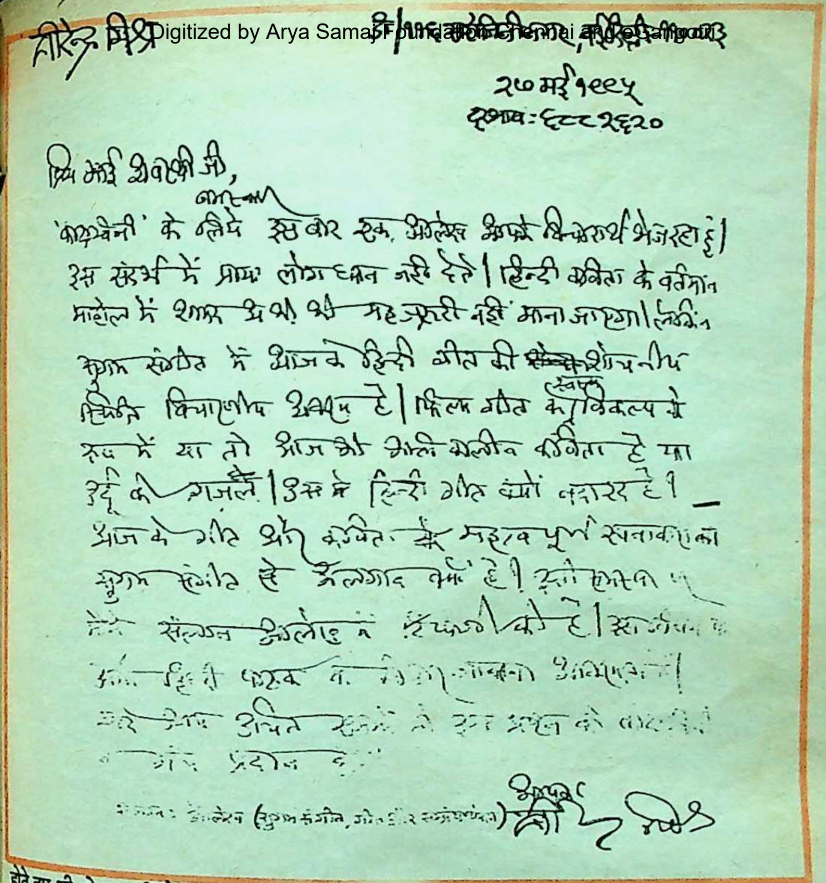

वीरेन्द्र मिश्र [illegible]

२७ मई १९९५
दूरभाष: ६८८२६२०

प्रिय भाई अवस्थी जी,

'कादम्बिनी' के लिये [illegible] इस बार एक आलेख आपके विचारार्थ भेज रहा हूं। इस संदर्भ में प्राय: लोग ध्यान नहीं देते। हिन्दी कविता के वर्तमान माहौल में शायद अब यह जरूरी नहीं माना जाएगा। लेकिन सुगम संगीत में आज के हिन्दी गीत की [illegible] शोचनीय स्थिति विचारणीय अवश्य है। फिल्म गीत के स्वस्थ विकल्प के रूप में या तो आज की अति बौद्धिक कविता है या उर्दू की ग़ज़लें। उसमें हिन्दी गीत क्यों नदारद है? आज के गीत और कविता के महत्वपूर्ण रचनाकारों का सुगम संगीत से अलगाव क्यों है? इसी दृष्टि पर मैंने संलग्न आलेख में चर्चा की है। [illegible] हिन्दी काव्य [illegible] अपेक्षित है। [illegible] उचित [illegible] इस प्रश्न को [illegible] और प्रयोग [illegible]

आपका
वीरेन्द्र मिश्र

संलग्न: आलेख (सुगम संगीत, गीत और रचनाकार)

होते हुए भी, ऐसा नहीं है कि उसका कोई समाधान न हो। यदि गंभीर प्रयत्न किये जाएं, तो निश्चित रूप से उसका एक भविष्य है। फिल्म और ऑडियो रिकार्डिंग के सुगम संगीत क्षेत्र में कई रचनाकारों ने हिंदी गीत को प्रतिष्ठित किया है। अन्य क्षेत्रों में भी ऐसी स्थति संभव है।

आकाशवाणी/दूरदर्शन के सुगम संगीत में बहुत कुछ सुधार की गुंजाइश है। कुछ सुझाव इस प्रकार हैं।

—हिंदी प्रदेश से चुनकर आये हिंदीभाषी सांसदों के सहयोग से प्रसारण मंत्रालय को प्रतिवेदन।

—प्रसारण मंत्रालय द्वारा हिंदी गीतों के चयन और स्तर-सुधार के लिए विशेषज्ञों की समिति का गठन।

—केवल धुन के आधार पर लिखित और निर्मित निम्नस्तरीय गीतों की छंटनी और रोक।

—सुगम संगीत विभागों में हिंदी गीतों की गिरती हुई स्थिति के सुधार के लिए शीघ्र ही अनुभवी और प्रतिष्ठित नवगीतकारों की चयन-समिति का गठन।

—डी/११६, सरोजिनी नगर
नयी दिल्ली-११००२३

वैद्य की सलाह

ए. ए. मोहम्मद, बंगलौर

प्रश्न : उम्र ३५ वर्ष । एक साल से कमर में बहुत ज्यादा दर्द रहता है । चलना-फिरना कष्टकारक होता जा रहा है । एलोपैथी की दवा से राहत तो मिलती है लेकिन बाद में फिर वही परेशानी हो जाती है ।

उत्तर : रास्ना गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद लें । समीर पन्नगरस दस ग्राम, प्रवालपिष्ठी दस ग्राम, रसराज रस पांच ग्राम, अस्सी मात्रा बनाएं । एक-एक मात्रा रात शहद से छह माह लें ।

तारा पांडेय, कानपुर

प्रश्न : आयु ५८ वर्ष । चार-पांच माह से कोलाइटीस की समस्या है । कुछ भी हजम नहीं होता । पेट में गुड़गुड़ाहट होती है । कभी-कभी पतली दस्त भी ।

उत्तर : स्वर्ण सूतशेखर रस दस ग्राम तथा प्रवाल पंचामृत दस ग्राम की अस्सी मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । चितकादि वटी एक-एक वटी भोजन के बाद पानी से लें ।

प्रतिभा पाटिल, जामनगर

प्रश्न : छोटे-छोटे दाने निकल आये हैं । अजीब तरह की बेचैनी हो जाती है । दवा लेती हूं तो रोग शांत हो जाता है लेकिन फिर परेशानी बढ़ जाती है । दवा कितने समय लेनी है, लिखें ।

उत्तर : हरिद्राखंड आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । चंदनासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें । तीन माह नि
औषधियां लें ।

श्रीमती सतपंत, बटाला

**प्रश्न : उम्र ३५ साल । पेट बढ़ गया है और व
भी अधिक है । मुंह में छाले हो जाते हैं । कब्ज
रहती है । हाथ-पैरों में दर्द भी बना रहता है ।**

उत्तर : सूतशेखर रस एक वटी, सिंहनादगू
एक वटी, नवक गूगल एक वटी सुबह-शा
गरम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी एक वटी,
कांकांयन वटी एक वटी भोजन बाद पानी से
लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक चम्मच रात पा
लें । छह माह औषधी का नियमित सेवन क

निधी, हैदराबाद

**प्रश्न : बिटिया की उम्र लगभग एक वर्ष । दस्
बराबर दो माह से है । कभी ठीक हो जाती है ।
कमजोर बहुत हो गयी है । रोती है । दवा लिखें**

उत्तर : दंतोभेद गदांतक रस दस ग्राम, सिद्धप्राणेश्वर रस पांच ग्राम, तूणकांत मणी
ग्राम सभी दवाओं की नब्बे मात्रा बनायें ।
एक-एक मात्रा सुबह-दोपहर-रात शहद से दे

विष्णुप्रिया, भरनो

**प्रश्न : उम्र १८ वर्ष । शुरू में अचानक सिर में
चक्कर आया । ऐसा प्रभाव हुआ कि कहीं पाग
हो जाऊं । पढ़ने में मन नहीं लगता न याद रह
भविष्य अंधकार में है । दुर्बल हो गयी हूं ।**

उत्तर : ब्राह्मीवटी एक-एक वटी सुबह-शाम
पानी से लें । सारस्वतारिष्ट एक चम्मच, ब
एक चम्मच भोजन बाद लें ।

पंकज राय, कलकत्ता

**प्रश्न : उम्र ३८ वर्ष । दो विवाह और विवाह के
वर्ष बाद दो संतानें । गृहस्थ जीवन का सुख न
पत्नी भयभीत रहती है । एलोपैथी दवा से अ
लाभ होता है ।**

उत्तर : चंद्र प्रभावटी एक वटी, आरोग्यवर्धनी
वटी एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें ।

अशोकारिष्ट दो चम्मच, दशमूलारिष्ट दो चम्मच, पानी के साथ भोजन बाद लें ।

श्रीमती अर्पणा, पूना

प्रश्न : उम्र ५० वर्ष । मुख-मंडल पर झाईं पहले लाल फिर कत्थई और अब काले रंग की है । पेट ठीक नहीं रहता । कभी-कभी निचले हिस्से में दर्द हो जाता है ।

उत्तर : केशोर गूगल एक वटी, आरोग्यवर्धनी एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाधासव दो-दो चम्मच भोजन बाद लें ।

शिवानी, जगदलपुर

प्रश्न : उम्र ४० वर्ष । दाहिने पैर की एड़ी में सूजन व दर्द रहता है । चलने में भी कठिनाई होती है । एलोपैथी दवा से लाभ नहीं ।

उत्तर : पुनर्नवा गूगल एक वटी, योगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । गरम पानी के एक जग में दो चम्मच नमक डालकर पैर की एड़ी १५-२० मिनट प्रतिदिन रखें ।

क. ख. ग., कोल्हापुर

प्रश्न : उम्र ४० वर्ष । पेशाब हर घंटे बाद जाना पड़ता है । पैरों में जांघ से एड़ी तक बहुत दर्द रहता है ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक वटी , वृहदवंगेश्वर रस एक वटी सुबह-शाम दूध से लें । चंदनासव दो-दो चम्मच भोजन बाद लें ।

रहीमन, भोपाल

प्रश्न : उम्र २४ साल । अविवाहित हूं । गरमी सहन नहीं होती । धूप में चलने से चेहरा लाल, बदरंग-सा हो जाता है ।

उत्तर : हरिद्राखंड एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक वटी भोजन बाद पानी से लें । छह माह नियमित दवा लें ।

सोरण लाल, जोधपुर

प्रश्न : उम्र ४५ वर्ष । छह माह पहले एक दुर्घटना में पैरों में चोट लगी । सब कुछ ठीक हो गया किंतु दर्द नहीं जा रहा है । पैदल चलने या सीढ़ियां चढ़ने-उतरने में परेशानी होती है ।

उत्तर : लाक्षादि गूगल दो वटी, चंद्रप्रभावटी एक वटी सुबह-शाम गरम पानी अथवा दूध से नियमित लें ।

रमेश प्रसाद द्विवेदी, सीधी

प्रश्न : उम्र २६ वर्ष । कुछ दिनों स्फूर्ति में अचानक कमी हो गयी है । पेट भी ठीक नहीं रहता । जी मिचलाता है ।

उत्तर : अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । कृमिमुदगर रस एक-एक वटी रात गरम पानी से लें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा,

बी ५/७ कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. पेड़ों पर रहनेवाले वानरों से, लगभग ३० लाख वर्ष पूर्व (पुरा-पाषाण युग), ख. ३०-४० हजार वर्ष पूर्व, २. इटली के पिको डेल्ला मिरां दीला ने (१५वीं सदी), ३. औरंगजेब के जमाने में, ४. क. बिहारीलाल (१८वीं शती), ख. सात सौ, ग. जयपुर के सवाई जयसिंह ने, ५. क. जापान में (८३ फुट चौड़ा, २० फुट ऊंचा), ख. तोकियो के ट्रैफिक पुलिस नियंत्रण केंद्र में,; ६. क. मंगोलिया के रेगिस्तान में, ख. ६ करोड़ से २५ करोड़ वर्ष पुराने, ७. क. पांच— अमरीका, इंगलैंड, फ्रांस, रूस तथा चीन, ख. भेदभावपूर्ण होने के कारण, परमाणु-अस्त्रों के संपूर्ण विनाश की मांग, ८. क. तुलसीदास जाधव, ख. लता मंगेशकर, ग. चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन, ९. क. रोमानिया की अनुप कदना ने २ घं. १२ पि. १ सै. [illegible], ख. भारत ने, श्रीलंका को हराकर, ग. अमरीका के जिम कूरियर ने आंद्रे अगासी को हराकर, घ. दिव्येंदु बरुआ तथा भाग्यश्री ठिप्से ने, १०. घंटाघर (स्वर्ण मंदिर)

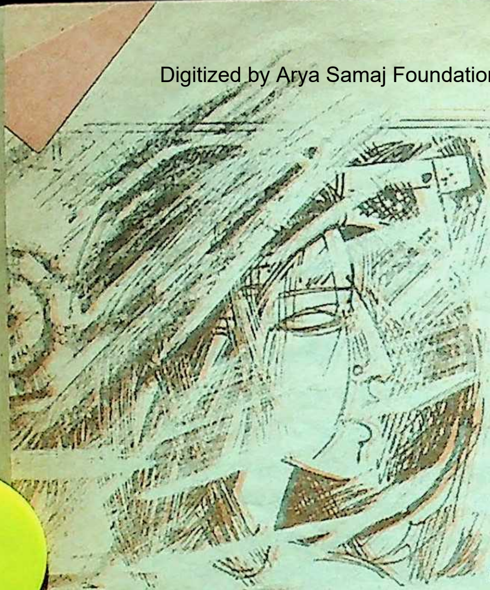

खेल यह कैसा तुम्हारा !

खेल यह कैसा तुम्हारा ।
जन्म-जन्मों के अमोही ! खेल यह कैसा तुम्हारा ।

दे दिया तुमको बनाकर, प्राण का मैंने खिलौना
चांद को छूने चला था, मैं मरुस्थल और बौना
पर पपीहे की रटन से है, कभी मृगजल न बदला
सत्य आखिर सत्य ही है, हो भले सपना सुनहला
एक झपकी ही लगी थी, किंतु दुर्दिन ने पुकारा
खेल यह कैसा तुम्हारा !

हाथ-सा ऊपर उठाये कौम ने जब-जब बुलाया
देख नीचे गर्त जब विश्वास मेरा डगमगाया
कह दिया ऊपर न उठना और नीचे भी न गिरना
ले अकंपित मन तृष्णा के बादलों में तुम न फिरना
प्राण की बाजी लगाकर भी न मैं जीता, न हारा
खेल यह कैसा तुम्हारा !

● रामेश्वर शुक्ल 'अंचल

पचमेढ़ी,
दक्षिणी सिविल लाइन्
जबलपुर (म. प्र

क्यों कर

जब
नहीं होते जटिल और विकट जीवन-संघर्ष
बातें निहायत साधारण और छोटी
बन जाती हैं बड़ी,
और यह जिंदगी ?
क्षुद्र खोटी ।
बढ़ जाता है अलगाव
और इकल्लापन
दो कदम का साथ ? अहसान !
अच्छे-भले जन
हो जाते हैं खुदगर्ज
लोग बीमार बगैर मर्ज ।
बमुश्किल हाथ आती है सचाई
एक तरह की कमाई
सपाट जिंदगी से बढ़
दूसरी सजा नहीं
अपनी सांस रहे अपनी ही
मजा नहीं ।

● श्रीकांत जोशी

जवाहरगंज खंडवा-४५०००१

संघर्ष

जोशी

-४५०००१

इन पगडंडियों में

दूर तक कितनी चली राहें
थके पांवों से
लिपट कर ।

आंख-भर अमराइयों को
आंख-भर सरसों
हमें इन
पगडंडियों में

हो गये बरसों,
ी फसलों में अभी भी गंध
कहां इनसे
गये कटकर ।

थरथराती पत्तियों में हवा
अपनी सांस
महकती-सीं
रही बांहें

खिली मेड़ें कांस,
देर तक [illegible]
आ गयीं
जैसे सिमट कर ।

● अनूप अशेष

—अतुल मेडिकल स्टोर
हास्पिटल रोड,
सतना (म. प्र.)

उजालों की तरह रख

बीती हुई यादों को उजालों की तरह रख,
महबूब का गम पांव के छालों की तरह रख ।

हमको भी कभी देख मोहब्बत की नजर से,
हमको भी सभी चाहने वालों की तरह रख ।

मत फेंक हमें सुबह के अखबार की मानिंद,
तू हमको दराजों में रिसालों की तरह रख ।

काम आऊंगा वीराने में रास्ते की तरह मैं,
दिल में मुझे पाकिजा खयालों की तरह रख ।

हो जाएंगे हल खुदबखुद तू देखना इक दिन,
तू सामने मसलों को सवालों की तरह रख ।

गजलें हैं ये तफरीह का सामान नहीं हैं,
तू इनको गरीबों के निवालों की तरह रख ।

● ओंकार गुलशन

हरिनगर मेरठ शहर

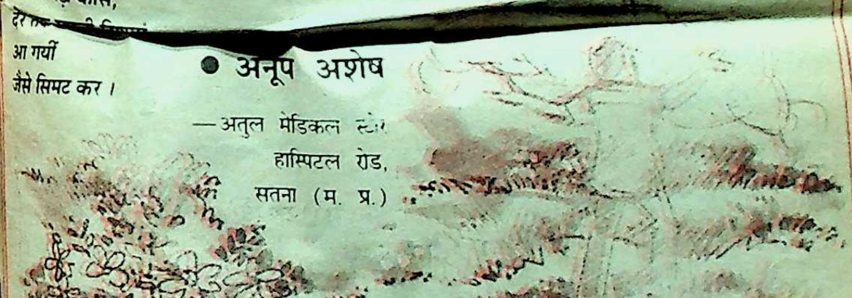

ज्योतिष : समस्या और समाधान

● अजय भाम्बी

चन्द्र प्रकाश मिश्र, दिल्ली

प्रश्न : क्या मेरी कुंडली में 'नीच भंग राजयोग' है ?

उत्तर : शुक्र का तो नीच भंग हो जाता है परंतु सूर्य का नहीं ।

पवनकुमार गुप्ता, सुलतानपुर (राजस्थान)

प्रश्न : स्वव्यवसाय कब तक स्थापित होगा ?

उत्तर : अगले वर्ष से व्यवसाय की दृष्टि से समय अच्छा प्रारंभ हो रहा है ।

डॉ. आकाश शुक्ल, इलाहाबाद

प्रश्न : किसी महाविद्यालय में प्राचार्य कब तक ?

उत्तर : अक्तूबर के बाद समय आपके पक्ष में बनेगा ।

राशि स्वामी, भोपाल

प्रश्न : विवाह कब, वैवाहिक जीवन व परिवार कैसा ? उपाय व रत्न सुझायें ?

उत्तर : विवाह १९९६ में, पन्ना धारण करें ।

अजीत व्यास, कलकत्ता

प्रश्न : कार्य में सफल होने के लिए रत्न एवं पूजा बतायें ?

उत्तर : पुखराज और मोती धारण करें, लाभ होगा ।

रामकमल सिंह, इलाहाबाद

प्रश्न : आई.ए.एस. में सफलता कब तक ?

उत्तर : यदि शुक्र की महादशा प्रारंभ हो गयी है तो सफलता प्राप्त होगी ।

कन्हैयालाल, अलवर

प्रश्न : कार कब प्राप्त होगी ? भाग्यशाली र

उत्तर : थोड़ी प्रतीक्षा और करें तथा नीलम धारण करें ।

मानिक भल्ला, नरवाना

प्रश्न : विद्या प्राप्ति के लिए रत्न सुझायें ?

उत्तर : आठ रत्ती का मूंगा धारण करें, लाभ होगा ।

रामचंद, विजयपुर (गुना)

प्रश्न : विदेश यात्रा कब संभव होगी ?

उत्तर : अगले वर्ष अधिक संभावना है ।

मंजु मिश्रा, दिल्ली

प्रश्न : राज्यसभा-सांसद बनने का योग है, तो क तक ?

उत्तर : मंगल की महादशा में तो नहीं, लेकि राहू की महादशा में राजनीतिक सफलता मिलेगी ।

हरिदत्त पंत 'हरिदास', नैनीताल

प्रश्न : क्या अब स्थान परिवर्तन संभव है ?

उत्तर : जी हां ।

अनुपम दुबे, जबलपुर

प्रश्न : नौकरी कब लगेगी ?

उत्तर : साधारण नौकरी शीघ्र ही मिलेगी ।

आशुतोष, [illegible] (हि.प्र.)

प्रश्न : शादी का योग कब बनेगा ?

उत्तर : १९९६ में ।

अर्जुन कुमार, रामपुर

प्रश्न : पदोन्नति एवं स्थानांतरण कब तक ?

उत्तर : ये दोनों कार्य इसी वर्ष संपन्न हो जाएं

उत्तम सिंह, ऋषिकेश

प्रश्न : शुभ विवाह कब तक ?

उत्तर : मार्च' ९६ तक ।

सुरेश कुमार शर्मा, अमृतसर

प्रश्न : क्या पत्नी वापस आएगी या तलाक कब तक ?

उत्तर : पत्नी वापस आ जाएगी ।

बीना, इलाहाबाद

प्रश्न : मेरा बिछड़ा प्रेमी मिलेगा ? कब ?

उत्तर : नहीं मिलेगा ।

हरजीवन सिंह, नौएडा

प्रश्न : अपना मकान कब तक होगा ?

उत्तर : जल्द ही हो जाएगा ।

डॉ. शिवप्रसाद सिंह, अल्मोड़ा

प्रश्न : दो पुत्रियां, पुत्र किस सन में ?

उत्तर : अगले दो वर्ष के भीतर ।

अपूर्व मोहन, जालंधर

प्रश्न : ऋण मुक्ति व अपना व्यवसाय कब तक ?

उत्तर : अक्तूबर से अच्छा समय प्रारंभ हो रहा है । मनमाफिक कार्य बनेंगे ।

अनिता सिंह, बंबई

प्रश्न : विवाह कब होगा ?

उत्तर : विवाह का योग चल रहा है । जल्द ही सफलता मिलेगी ।

प्रदीप कुमार, गाजीपुर (बिजनौर)

प्रश्न : लेखन में सफलता कब तक ?

उत्तर : अभी इंतजार करें ।

अरुण कुमार श्रीवास्तव, नयी दिल्ली

प्रश्न : अपना मकान एवं कार कब तक खरीद पाऊंगा ?

उत्तर : १९९९ तक दोनों कार्य सफल होंगे ।

योगेश, मेरठ

प्रश्न : फिल्म अभिनय में सफलता कब तक ?

उत्तर : अगले तीन वर्ष के भीतर अपने आपको स्थापित कर सकेंगे ।

—'नक्षत्र-निकेत'
४०६, ढाका चेंबर-।
२०६८/३८, नाईवाला, करोलबाग,
नयी दिल्ली-११०००५

प्रविष्टि—१६०

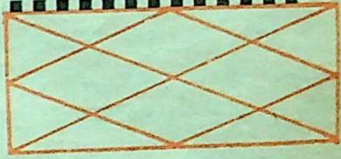

नाम..

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .... महीना .... सन ....

जन्म-स्थान..

जन्म-समय ....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण ....

पता..

आपका एक प्रश्न ....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें ....

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि १६० 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० जुलाई, १९९५

यह महीना और आपका भविष्य

• पंडित शिव प्रसाद पाठक

मेष : मास उपलब्धिपूर्ण होगा । संपत्ति कार्यों में मनोकूल सफलता मिलेगी । नवीन मित्रों का समागम धनदायी होगा । आजीविका की दिशा में वांछित पदोन्नति का योग होगा । स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों का सामना करना होगा ।

वृषभ : नवीन योजनाओं में व्यस्तता होगी । पारिवारिक दायित्वों में व्ययों की अधिकता होगी । आर्थिक दायित्वों से चिंता होगी । आजीविका संबंधी वांछित परिवर्तन होंगे । व्यर्थ विरोधाभास तथा शत्रुपक्ष से सावधानी हितकर होगी । परोपकारी अथवा जोखिमपूर्ण कार्यों से हानि की संभावना होगी । न्यायालयीन कार्यों में अवरोध होंगे ।

मिथुन : आत्मविश्वास तथा साहसिक प्रयासों से कठिनतम कार्यों में सफलता मिलेगी । निकटजनों अथवा मित्रों के सहयोग से लंबित समस्याओं का समाधान होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से लाभ मिलेगा । आध्यात्मिक सत्संग होगा । शत्रुपक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि को बिगाड़ने का प्रयास करेगा । नवीन वाहन अथवा संपत्ति पर व्यय होगा ।

कर्क : मास में पारिवारिक कार्यों में धन व्यय अधिक होगा । आजीविका की दिशा में पदोन्नति तथा इच्छित पद प्राप्त होगा । भौतिक उपलब्धियों के उन्नत अवसरों का उदय होगा । शत्रुपक्ष का पराभव होगा । न्यायालयीन कार्यों में विजय मिलेगी । संभाषण की अधिकता पीड़ादायी होगी । भावुकता की अपेक्षा विवेकपूर्ण निर्णय हितकर होंगे । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों की अधिकता होगी ।

सिंह : मास में अस्थिरता की अधिकता होगी । धैर्य तथा संयम से सफलता मिलेगी । नवीन तथा जोखिमपूर्ण कार्यों को टालना हितकर होगा । न्यायालयीन कार्यों में व्यर्थ अवरोध होंगे । पारिवारिक वातावरण उत्साहवर्धक होगा । संपत्ति, शेयरों अथवा जोखिमपूर्ण कार्यों में अनावश्यक जल्दबाजी टालें । आध्यात्मिक कार्यों में व्यस्तता होगी ।

कन्या : मास उपलब्धिपूर्ण होगा । उच्चाधिकारियों अथवा राजनेता के कारण विशिष्ट लाभ संभावित होगा । पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । स्वजनों के सहयोग से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । अतिउत्साह से पीड़ा होगी । परोपकारी कार्यों में विवेकपूर्ण निर्णय लें । संपत्ति विवादों में सुलह-समाधान होगा ।

तुला : आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी ।

ग्रह स्थिति : सूर्य १६ जुलाई से कर्क राशि में, मंगल १० जुलाई से कन्या में, बुध ६ जुलाई से मिथुन में, २३ जुलाई से कर्क में, गुरु वृश्चिक में, शुक्र २४ जुलाई से कर्क में, शनि मीन में, राहू तुला में, केतु मेष में, हर्षल, नेप्चयून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेगा ।

नवीन मित्रों का समागम होगा । आकस्मिक धन लाभ अथवा अनुपार्जित का योग होगा । संपत्ति अथवा पारिवारिक कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी । शत्रुपक्ष को प्रयासों में विफलता मिलेगी । सामाजिक एवं राजनीतिक प्रभाव में वृद्धि होगी । मास उत्तरार्ध में प्रवास होगा जिसमें विशिष्ट लाभ संभावित होगा ।

वृश्चिक : मासारंभ में व्यर्थ विरोधाभास तथा पारिवारिक पीड़ा होगी । संपत्ति विवादों की अधिकता होगी । स्वजनों का सहयोग उत्साहदायी होगा । प्रवास में व्यर्थ पीड़ा एवं अस्वस्थता का सामना करना होगा । शत्रुपक्ष के गुप्त षड्यंत्रों से सावधानी हितकर होगी । मासांत में राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी ।

धनु : पारिवारिक कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी । नवीन योजनाओं के क्रियान्वयन से प्रसन्नता होगी । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । अकारण प्रवास होगा । न्यायालयीन कार्यों में आकस्मिक सफलता मिलेगी । धार्मिक तथा परोपकारी कार्यों से यश वृद्धि होगी ।

मकर : मास उत्साहदायी तथा सफल[illegible] होगा । भौतिक सुखों की पूर्ति होगी । अपेक्षित तथा परिवर्तन का योग होगा । लंबित योजना की पूर्ति से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । संपत्ति अथवा वाहन पर व्यय की अधिकता होगी ।

कुंभ : मासारंभ में भावनात्मक पीड़ा तथा प्रगति में अवरोध होंगे । पारिवारिक वातावरण में संतुलन स्थापित होगा । प्रवास से सुख मिलेगा । प्रियजन की अस्वस्थता पर व्यय होगा । उत्तरार्ध में उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से राजकीय कार्यों की पूर्ति होगी । संपत्ति अथवा वाहन सुख मिलेगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में नेतृत्व का अवसर मिलेगा । लंबित धन की प्राप्ति से प्रसन्नता होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य-पूर्ति से प्रसन्नता होगी ।

मीन : आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों से विरोधाभास दूर होंगे । मित्रों का सहयोग लाभदायी होगा । राजकीय कार्यों में व्यर्थ शत्रुता से पीड़ा होगी । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में विशिष्ट उपलब्धि अथवा सम्मान संभावित है । उदर विकार तथा रक्त विकार का सामना करना होगा । धार्मिक प्रवास अथवा सत्संग से [illegible]गत होगी । शत्रुपक्ष [illegible] सुलह के अवसरों का उदय होगा ।

—ज्योतिष धाम पत्रिका
१२/४ ओल्ड सुभाष नगर,
गोविंदपुरा भोपाल (म.प्र.)

पर्व और त्योहार

१ जुलाई वैनायकी, श्री गणेश चतुर्थी व्रत ३. स्कंद पंचमी, ४. कुमार षष्ठी, ५. विवस्वत् सूर्य पूजा, ७ भडुली नवमी, कंदर्व नवमी, ८. हरिशयनी एकादशी स्मार्त, ९. हरिशयनी एकादशी वैष्णवी, १०. सोम प्रदोष, १२. आषाढ़ी पूर्णिमा, १५. संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, १७. श्रावण सोमवार प्रदोष व्रत, २३. कामदा एकादशी व्रत सबका, २४. सोम प्रदोष श्रावण सोमवार व्रत, २७. स्नानदान श्राद्धादि की दर्श अमावस्या हरियाली अमावस्या, २९. [illegible]र. वैनायकी, श्री गणेश चतुर्थी व्रत

वह तूफानभरी रात

● रस्किन बांड

आज जब मैं उस दिन की याद करता हूं तो ऐसा लगता है कि मानो जेम्स थर्बर की कहानियों की कोई घटना पढ़ रहा हूं, जिसमें कोई बांध फट जाता है या भूत आ जाता है परंतु उस समय थर्बर मेरे मन से कोसों दूर था हालांकि अपनी जिन पुस्तकों को मैं बचाने की कोशिश कर रहा था उसमें थर्बर की पुस्तकें भी थीं । पुस्तकों को बचा भी किससे रहा था वह ऐसी बर्फीली वर्षा थी जो मेरे अध्ययन एवं शयन कक्ष में पूरे वेग के साथ आ रही थी ।

यहां हिमालय की पहाड़ियों पर, समुद्रतल से सात हजार फुट की ऊंचाई पर जहां मैं रहता हूं, हमें अचानक तूफान की आदत पड़ी हुई है । यह घर पिछले सौ वर्षों से पूरब की ओर से आती आंधियों और वर्षा की बौछारों के धक्कों के आवेग को सहने का अभ्यस्त हो चुका है । मैं पिछले दस सालों से, बिना किसी अनहोनी घटना के यहां रह चुका हूं । पिछले दिनों जब भूचाल आया तब भी कोई ऐसा नुकसान नहीं हुआ जो स्पष्ट दिखता । तब कुछ नयी दरारें पड़ी हों तो उनमें और पुरानी दरारों में भेद क संभव नहीं । यह एक तीन मंजिला घर है जिसमें सबसे ऊपर की मंजिल पर मैं अपने गोद लिए परिवार के साथ रहता हूं । इस परिवार में तीन बच्चे और उनके माता-पिता इस मकान की छत के नीचे लकड़ी के तख़्ते और ऊपर टीन की छतें । पर्वतीय नगरों में ऐसी ही छतें होती हैं । हमारी छत ने कई तू झेले हैं परंतु उस रात वायु का वेग इतना अधिक था जितना हमने पहले कभी नहीं देखा । इस वायु की ताकत चक्रवाती थी और बड़ी ऊंची आवाज करती हुई यह आंधी आयी । पुरानी छत ने काफी झेलने का प्रय किया और कई घंटे तूफान के हिचकोले को सहती रही । साथ ही धुआंधार वर्षा खिड़कि पर अपने थपेड़े मार रही थी और बिजली क आ रही थी, कभी जा रही थी ।

अंगीठी की आग कब की बुझ चुकी थी क्योंकि उसके ऊपर छत पर लगी चिमनी धराशायी हो गयी थी और उसमें से चिमनी कालिखे से भरा पानी अंगीठी में भर रहा था सोने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता था लेकि हम लोग गरमी और आराम पाने के लिए अपनी-अपनी ारपाईयों पर थे । चार घंटे थपेड़े सहने श्चात छत अधिक नहीं सह सकी । मेरा श नकक्ष का द्वार पूर्व की ओर तो यह छत सब पहले गयी । कमरे में आ भरकर छत को ध -धीरे उखाड़ने लगी और ऊपर से छत के टी उखड़कर उड़ते हुए नी सड़क पर इधर-उधर गिरने लगे । मैंने सो आज तो जो होना था हो गया इससे अधिक

अंगीठी की आग कब की बुझ चुकी थी, क्योंकि उसके ऊपर छत पर लगी चिमनी धराशायी हो गयी थी और उसमें से चिमनी की कालिख से भरा पानी अंगीठी में भर रहा था ।

और क्या हो सकता है । जब तक सिर के ऊपर लकड़ी की छत रहेगी मैं चारपाई से नहीं निकलूंगा और प्रातः उठकर ही टीनों को बटोरा जाएगा ।

परंतु मुझे यह निर्णय तुरंत बदलना पड़ा क्योंकि बर्फीला पानी मेरे चेहरे पर आना आरंभ हो गया था । मैं लपककर अपनी चारपाई से उठा और पाया कि छत के तख्ते भी कई जगह से गायब थे ।

पानी मेरे खुले हुए टाईपराइटर पर पड़ रहा था । वह टाईपराइटर जो पिछले तीस वर्ष से मेरा विश्वस्त साथी रहा है । यही नहीं मेरी चारपाई के पास पड़ा रेडियो, चादर और कपड़ों की अलमारी सब भीग रहे थे । केवल एक वस्तु पर पानी नहीं पड़ रहा था, वो था गमले में लगा फिलोडैनडोरन नाम का एक पौधा जिसे पानी की आवश्यकता थी ।

मैंने अपना अमूल्य टाईपराइटर उठाया और बाकी सब कुछ छोड़ते हुए मैं पहले कमरे की ओर भागा जो मेरी बैठक भी है और लायब्रेरी भी और पाया कि उस कमरे की हालत भी उतनी ही बुरी थी । वर्षा का पानी लकड़ी के तख्तों से लगातार नीचे मेरी किताबों की अलमारियों पर आ रहा था । तब तक बच्चे भी मुझे बचाने आ गये थे । उनके कमरे की छत अभी तक सही सलामत थी और उनके माता-पिता एक खिड़की बंद करने की कोशिश कर रहे थे, जिससे आंधी और वर्षा अंदर आ रहे थे ।

सबसे छोटी बच्ची डौली बड़े जोर से चिल्लायी, "किताबों को बचाओ ।" अगले दो घंटों तक हमारा यही नारा रहा । मेरी किताबों की अलमारियां सब खुली हुई हैं । जिन पर मांगनेवालों और बाढ़ का प्रकोप किसी भी समय पड़ सकता है । डौली और उसके भाई अपनी बांहों में किताबें भर-भर कर अपने कमरे में ले जाने लगे । परंतु पूरे घर में पानी तो भर गया था इसलिए सब किताबों को नीचे रखना तो अर्थहीन होता सो उन्हें रखने लगे । डौली मेरी कुछ पांडुलिपियां बचाने में मेरी मदद कर रही थी कि इतने में खेत का एक बड़ा चूहा उसके सामने मेज पर आ गया । डौली चीखकर दरवाजे की ओर भागी । उसके भाई मुकेश को सब प्रकार के जानवरों से प्यार है, यहां तक की चूहों से भी, बोला, "डौली, डर क्यों रही हो वह बेचारा भी तो आंधी-तूफान से बचने की कोशिश कर रहा है ।"

दोनों कमरे अब तक तो लगभग बिना छत के हो गये थे और आकाश से कभी-कभी हमें बिजली की चमक द्वारा प्रकाश मिल रहा था । कमरे के अंदर भी कभी-कभी कहीं फुलझड़ियां छूट रही थीं क्योंकि वर्षा का पानी कहीं-कहीं

टूटी बिजली के तार पर पड़ रहा था । इतने में एक अच्छी बात हुई कि बिजली पूरी तरह से बंद हो गयी और घर आग लगने के खतरे से बच गया । बच्चों का पिता प्रेम ऐसी आपत्तियों के समय तुरंत सहायता करने में हमेशा तत्पर रहता है । वह कहीं से दो लालटेन ढूंढ़ लाया और हम किताबें, कागज, कपड़े बच्चों के कमरे में लाने लगे । हमने देखा कि पानी कुछ कम हो रहा है तो डौली ने पूछा, "पानी जा कहां रहा है ?" मुकेश ने उत्तर दिया, "हमारे फर्श में से नीचे के कमरों में जा रहा है ।"

दूसरे क्षणों में पता लगा कि वह ठीक कह रहा था क्योंकि नीचे के पड़ोसी अब चिल्लाने लगे थे कि उनके कमरों में भी बाढ़ आ रही है । हमारे जूते-चप्पल आदि तो न जाने कहां तैर रहे थे इसीलिए हमारे पांव ठंड के मारे जम रहे थे । मेज-कुरसियां सब किताबों से लद गये थे । उस रात तक मुझे अंदाजा नहीं था कि मेरी लायब्रेरी में इतनी पुस्तकें हैं । जो चारपाईयां बची थीं उनको हमने बच्चों के कमरे में अब तक सबसे सूखे कोने की ओर धकेला और उस पर कंबल और रजाइयां लेकर बैठ गये । शेष रात हमने किसी प्रकार गुजारी और आंधी सारी रात हमें डराती रही ।

आंधी जब थमी तब बर्फ गिरनी आरंभ हुई । चारपाई पर बैठे-बैठे मैंने देखा कि बैठक में बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े छत से गिर रहे थे और बैठक में पड़ी सब वस्तुओं पर जमते जा रहे थे । फोटो के फ्रेम, छोटी-छोटी मूर्तियों और अन्य सजावट के सामान पर सफेदी छाती जा रही थी । मामूली-मामूली चीजें जैसे गोंद की बोतल और प्लास्टिक की गुड़िया तो बर्फ से ढंककर सुंदर कलाकृतियां लग रहे थे । दीवार की घड़ी बंद हो गयी थी और उस पर पड़ी बर्फ ने सालवादौर डाली के एक चित्र की याद दिलायी । मेरा शेविंग का ब्रुश तो ऐसे लग रहा था, मानो इस्तेमाल के लिए तैयार रखा हो ।

हम सब बैठे-बैठे ऊंघने लग गये तब मुझे अचानक लगा कि अब हवा पश्चिम की ओर से चलने लगी है और उसकी आवाज हमारी बची-खूची छत में से न आकर वृक्षों से आ रह है । बादल एक ओर भागे जा रहे थे ।

जब पौ फटी तो हमने देखा कि खिड़कियों के शीशों पर बर्फ जमी हुई थी और छत के छे में से जब चढ़ते सूर्य की किरणों ने प्रवेश कि तो ऐसे लगा मानो सब चीजें सोने की हो गयी हैं । बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े मेरी खाली पड़ी किताबों की अलमारी पर हीरों की तरह चमक रहे थे । मैं अपने शयनकक्ष में गया तो मैंने देखा कि गमले में लगा एकमात्र पौधा 'क्रिसमस ट्री' की भांति सजा हुआ लग रहा था ।

प्रेम कारपेंटर और टीन की छत बनानेवाले को ढूंढ़ने गया और हम लोग सारी वस्तुएं धू में सुखाने के लिए बाहर रखने लगे । शाम त अधिकांश छत बन गयी । खाली घर मसूरी मे मिलने असंभव हैं इसलिए कहीं और जाने क प्रश्न नहीं उठता था । हमारी छत पहले से अ अधिक सुधरी हुई एवं मजबूत हो गयी है इसलिए आगामी सरदियों का मुकाबला हम निडर होकर कर पाएंगे, ऐसा विश्वास है । परंतु वह तूफानी रात भूल पाएंगे, इसमें संदेह है ।

(प्रस्तुति : राबर्ट बें

—मसूरी (उ. प्र

बंदर-बांट

• राजेन्द्र वर्मा

आपस में झगड़ती हुई बिल्लियों के विवाद का निपटारा किसी बंदर द्वारा किया जाना तो सर्वविदित है । लेकिन धीरे-धीरे जब आबादी में विस्तार हुआ और काफी समय बीता तब सभी को अपने बच्चों और उनके भविष्य की चिंता हुई । बंदर तो होशियार था ही । उसने अपने बच्चों को शिक्षा देना प्रारंभ किया । बिल्लियां मेहनती तो थीं लेकिन पढ़ने-लिखने में कोई विशेष रुचि नहीं रखती थीं । सामाजिक व्यवस्था चरमरा रही थी ।

समय बीत रहा था । आबादी बढ़ रही थी । परिवार-नियोजन का चलन तो था ही नहीं । बंदर के तीन बच्चे थे लेकिन बिल्लियों को तो अपने बच्चों की संख्या भी याद न थी । बंदर को आभास हो गया कि अब व्यवस्था आपसी सहमति से चलना संभव न थी और राज्य नामक संस्था की आवश्यकता पड़ेगी । देर-सबेर प्रजातंत्र भी आएगा । कानून बनाने पड़ेंगे, उन्हें लागू करने की और न पालन करने वालों को दंडित करने की व्यवस्था भी करनी पड़ेगी । बिल्लियां कभी इतनी समझदार तो होंगी नहीं कि उन्हें हमारी जरूरत न पड़े । बंदर ने अपने तीनों बच्चों को क्रमशः विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की ट्रेनिंग दी । बिल्लियों का लड़ना बंद नहीं हुआ । हालांकि कुछ बिल्लियों ने समझदारी से काम लिया, अपने बच्चों को उद्यमी बनाया जिनमें से कुछ बंदरों की औलादों से मदद लेकर उद्योगपति बने । कुछ मिली-जुली औलादें बुद्धिजीवी, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बन गयीं । बाकी बिल्लियां अभी तक लड़ रही हैं । दिन-रात काम करने के बावजूद लड़ रही हैं—कुछ खुद लड़ रही हैं और कुछ लड़वायी जा रही हैं और बंदरों से फैसला करा रही हैं ।

प्रजातंत्र करीब-करीब सभी देशों मेंआ गया है । भारत में प्रजातंत्र काफी पहले आ चुका है लेकिन अभी तक यह पता नहीं चल पाया कि देश बड़ा है या प्रजातंत्र या बंदर । खैर, जब तक बिल्लियों का लड़ना जारी है, बंदर अपनी औलादों से आश्वस्त हैं । हल्ला बोल देश की एकता जिंदाबाद !

—३/२९, विकास नगर, लखनऊ २२६०२०

कोहपैमा

मैं कोहपैमा
हिमालय के पास पहुंचा जब,
तब एक ऊंट भी
तलहटी में सहमा था ।
अपनी ही खिद्र में सिमटा
सिंह-शावक-सा
मैं भी उस ऊंट के मुआफिक ही
विस्मित था ।

ऊपर महाव्योम,
नीचे विपुला पृथ्वी थी
और
सुदूर दक्षिण में
तुंग तरंगमय
वारिधि अथाह था ।

मेरा मन ऊंट-सा ग्लपित ;
किंतु,
वृंहित ब्रह्मांड था !

• डॉ. कुमार विमल

[illegible]. एम. आई. जी. [illegible],
लोहियानगर,

नयी कृतियां

सुदर्शनोदय महाकाव्य : मुनि ज्ञानसागर जिनका मूल नाम भूरामल है— इन्होंने नौ सर्गों में चंपापुरी के सुदर्शन सेठ का चरित वर्णन किया है। विविध अलंकारों एवं रागों से समाविष्ट, काव्य-शास्त्र के अनुकूल ऐसी रचना अब बहुत कम मिलती है। अतः इनका प्रयास प्रशंसनीय है। यह रचना दर्शन शास्त्र, काव्य शास्त्र और जिन राज के धर्मशास्त्र की त्रिवेणी-जैसी लगती है। मूल काव्य संस्कृत में है। इसका हिंदी अनुवाद भी पांडित्यपूर्ण है तथा कवि के भावों का व्यंजक भी।

प्रकाशक : श्री दिगम्बर जैन समिति एवं सकल दिगम्बर जैन समाज, अजमेर, द्वितीय संस्करण १९९४, निःशुल्क मात्र डाक खर्च।

श्रीमद्भगवद्गीता : बी.एस. गोयल ने श्रीमद्भगवद्गीता की आध्यात्मिक जिज्ञासुओं एवं मानसिक रोगियों के लिए एक मनोवैज्ञानिक टीका प्रस्तुत की है। इसमें कुंडलिनी जागरण के द्वारा चिकित्सा, परम-तत्त्व की खोज के तरीके और कई लाभकारी सिद्धांतों की चर्चा है। जीव से शिव बनने की रोमांचक प्रक्रिया में मन के गहनतम जंगल (महाभारत के युद्ध) का वर्णन भी सजीव ढंग से हुआ है। पाश्चात्य मनोविश्लेषकों एवं भारतीय महर्षियों के विचारों के गहन अध्ययन के पश्चात लिखी हुई यह टीका आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग बताने का एक तरीका-जैसा लगता है। सरल हिंदी में प्रकाशित यह अनुवाद उनके व्यक्तिगत अनुभवों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत हुआ है। भाषा सरल और ग्राह्य है। लेखक श्री सिद्धेश्वर बाबा के नाम से भी जाने जाते हैं।

प्रकाशक : भारतीय ज्ञाननेत्र प्रतिष्ठान, प्रकाशन वर्ष : १९९५; मूल्य : १०० रुपये।

वार्षिकी : भारतीय साहित्य सर्वेक्षण १९९० : केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने इसे तीन खंडों में प्रकाशित किया है। प्रथम खंड में हिंदीतर भारतीय साहित्य के सर्वेक्षण पर, द्वितीय खंड हिंदीतर भारतीय कहानियों और कविताओं पर और तीसरे खंड में अन्य विधाओं के सर्वेक्षण पर लेख संग्रहीत हैं— यह प्रयास वस्तुतः प्रशंसनीय है। यह श्रम-साध्य और गहन खोज का भी विषय है कि १९९० की सारी कृतियों का सही मूल्यांकन होना चाहिए लेकिन ऐसा लगता है कि संपादक मंडल ने जिन कृतियों और लेखकों की सूची समेटी है, उनमें कुछ विशिष्ट छूट गये हैं और अविशिष्ट गिना दिये हैं। अतः मूल्यांकन की सही संभावना का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। पुनः यह भी ध्यान जाता है कि १९९० में प्रकाशित रचनाओं के संकलन का मूल्यांकन १९९४ के अंत में प्रस्तुत किया जा रहा है। अन्य भाषाओं से अनूदित रचनाओं से हिंदी के पाठकों को परिचित कराने का प्रयास स्तुत्य है। लेकिन क्या सभी प्रसिद्ध कृतियां और व्यक्तित्व इसमें सिमट सके हैं जिनसे शोधार्थियों या अध्येताओं को फायदा हो सके। ६६४ पृष्ठों में इतने बड़े कलेवर को सूच्य और ज्ञानवर्धक बनाने का श्रेय संपादक मंडल को अवश्य जाना चाहिए।

प्रकाशक : केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत

सरकार, मूल्य : ७९८ रुपये ।

वैदिक साहित्य और संस्कृति का स्वरूप : ओम प्रकाश पांडेय ने इस विषय पर सर्वांगीण, वैज्ञानिक और संतुलित ढंग से विचार प्रस्तुत किये हैं । इन्होंने नवीन शोध-निष्कर्षों के आधार पर यह परिचयात्मक इतिहास ग्रंथ लिखा है । यह शोधकर्ताओं के लिए ही नहीं अपितु ज्ञान पिपासुओं के लिए भी सहायक सिद्ध होगा । वैदिक साहित्य की विषम और काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से नवीन और विस्तृत सामग्री प्रस्तुत की गयी है । प्राचीन विषय को आधुनिक परिवेश के लिए सरल ढंग से सुलभ बनाने का प्रयास सराहनीय है । वैदिक साहित्य का सिलसिलेवार अध्ययन और विश्लेषण के साथ इतिहास लिखने का कठिन कार्य करने का दुस्साहस इनकी समर्थ लेखनी से स्पष्ट दिखायी देता है । भाषा प्रौढ़ और प्रांजल है ।

प्रकाशक : विश्व प्रकाशन (वाइली ईस्टर्न लिमिटेड का प्रभाग); प्रकाशन वर्ष : १९९४; मूल्य : ८५ रुपये ।

दृश्यालेख : सुपरिचित आलोचक प्रो. नंद किशोर नवल के लेखों का यह नवीनतम संग्रह है । हिंदी आलोचना के अनेक आयाम तेरह लेखों में प्रस्तुत किये गये हैं । नये और पुराने आलोचकों की तथा रचनाकार आलोचकों की आलोचना करने के उद्देश्य से— आचार्य शुक्ल, प्रसाद, राहुल सांस्कृत्यायन, दिनकर, रामविलास शर्मा, नेमिचंद्र जैन और अशोक बाजपेयी पर लेख हैं । जो दिलचस्प हैं और अनछुए पहलू पर प्रकाश डालते हैं । बहुत दिनों के पश्चात आलोचना जगत में ऐसी सामग्री आयी है, जो निश्चय ही उपयोगी है ।

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली; वर्ष : १९९५; मूल्य : ९० रुपये ।

एक अपवित्र पेड़ : प्रियवंद की बारह कहानियों का यह संग्रह जीवन के अवसाद, प्रेम, प्रकृति, मिथक, मानवीय मूल्यों और विद्रूपताओं का चित्रण करता है । इनके पात्र मन की गांठ खोलते और प्रकाश तलाशते नजर आते हैं । गद्य में पद्य की भाषा की सजीवता और चमक है ।

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली; वर्ष : १९९५; मूल्य : ९८ रुपये ।

माधव कहीं नहीं है : हरींद्र दवे गुजराती के अग्रणी कथाकार हैं । उनके गुजराती उपन्यास का हिंदी अनुवाद डॉ. भानुशंकर मेहता ने प्रस्तुत किया है । नारद के माध्यम से श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन करनेवाला यह अद्‌भुत और अनूठा उपन्यास है । नारद-भ्रमण के बहाने अनुभव— उनके स्वरूप और परिवर्तन का प्रभावपूर्ण वर्णन बेहद रोचक है । अनुवाद में मूल उपन्यास का ही प्रवाह है ।

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली; वर्ष : १९९५; मूल्य : १०५ रुपये ।

तापस महावीर : मीरा जैन ने स्वामी महावीर के जीवनांशों तथा उनके उपदेशों को काव्यबद्ध करने का सुंदर प्रयास किया है । जैन धर्म और दर्शन को आत्मसात कर भावमयी भाषा में अभिव्यक्ति सराहनीय है ।

प्रकाशक : मयंक प्रकाशन, अलीगढ़; प्रकाशन वर्ष : १९९५; मूल्य : २० रुपये ।

गलत पावर का चश्मा : डॉ. आर.पी. शर्मा की व्यंग्य-कविताओं का यह प्रथम संकलन

है । पेशे से डॉक्टर होने के कारण उन्होंने जीवन की जिस विद्रूपता के दर्शन किये हैं, वे कविताओं में बेबाक ढंग से व्यक्त हुए हैं । विविध विषय तथा संवाद शैली में प्रस्तुत ये व्यंग्य कविताएं पठनीय हैं । बहलाने की बजाए सीधे प्रहार करने में कविताएं सफल हैं ।

प्रकाशक : शब्द-शक्ति प्रकाशन; दरभंगा, वर्ष : १९९४; मूल्य : २० रुपये ।

बापू और उनकी दिनचर्या : डॉ. गौरीशंकर गुप्त ने गांधीवादी विचारधारा के अग्रदूत घनश्यामदास जी बिरला के जन्मशती वर्ष के अवसर पर गांधीजी की दिनचर्या का विशद विवरण प्रस्तुत किया है । गांधीजी के जीवन के अनेक प्रसंग लेखक के विचारों से समन्वित होकर ग्रंथ की उपयोगिता और रोचकता बढ़ाते हैं । गांधीजी के व्यक्तित्व को समझने के लिए पुस्तक अत्यंत सहायक है ।

प्रकाशक : राष्ट्रपिता प्रकाशन, वाराणसी; प्रकाशन वर्ष : १२५वीं गांधी जयंती १९९४-१९९५; मूल्य : ८० रुपये ।

गीतों की बस्ती कहां पर बसायें : बसंत देशमुख का यह दूसरा काव्य-संग्रह है । इसमें ६६ कविताएं हैं । भिलाई इस्पात संयंत्र के वरिष्ठ धातुविद ने अव्यवस्था के माहौल को कविताओं में चित्रित करके व्यवस्था का संकेत दिया है ।

प्रकाशक : श्री प्रकाशन, दुर्ग (म.प्र.); प्रथम संस्करण : १९९४, मूल्य : ५० रुपये ।

शब्द वे लौटेंगे निश्चय : कवि श्रीकांत जोशी का यह काव्य-संग्रह शब्द की विविध भंगिमाओं के चित्र प्रस्तुत करता है । अनेक उपविभागों में कवि ने जो कविताएं लिखी है, उनमें उनकी व्यापक जीवन दृष्टि और सूक्ष्म सौंदर्य-बोध का पता चलता है । भाषा और विषय दोनों में प्रौढ़ता और प्रांजलता है ।

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन; प्रथम संस्करण : १९९५; मूल्य : ७० रुपये ।

मंजू ज्यो

किस वसंत का फूल चुनू : भानु भारवि इकसठ कविताओं का यह दूसरा काव्य-सं है । पहली काव्य रचना 'एक और एक दो बनाम एक-एक ग्यारह' है । इस काव्य-सं की कविताएं समाज और व्यक्ति के अंतर्द्व पेश करती हैं । कई कविताएं भारतीय दर्श और चिंतन शैली से प्रभावित हैं । १२ वर्षों दौरान लिखी कविताओं में अंतर्विरोध स्पष्ट झलकता है । भाषा प्रौढ़ और ग्राह्य है । इ अच्छे संकलन की उम्मीद बंधती है ।

प्रकाशक : अनुष्टुप प्रकाशन, जयपुर; प्रकाश वर्ष : १९९४; मूल्य : ५० रुपये ।

पर्यावरण की उधेड़बुन में : पर्यावरण विस्तृत जानकारी देती हुई यह पुस्तक हिंदी पाठकों के सामने पर्यावरण की समस्या एवं पर्यावरण के प्रदूषण की विस्तृत चर्चा पेश है । शाकाहार को दीर्घायु और प्राकृतिक संतुलन के लिए प्रामाणिक सिद्ध करने का प्रयास प्रशंसनीय है । इक्कीसवीं सदी में प्रबंध के विषय में उनका परामर्श, कल्पवृ कल्पना के रूप में नीम का महत्त्व समझाने कोशिश में वे सफल रहे हैं । पुस्तक के दू अंश में जैव वैज्ञानिक के रूप में उनका विश्लेषण, कानून की दृष्टि से उसका स्थान देश की प्रगति के लिए इसकी आवश्यक

जो कुछ सामग्री पेश की गयी है, वह सामान्य जानकारी देने के लिए पर्याप्त है । विज्ञान से संबंधित व्यक्ति ने सरल भाषा में विषय को सरल ढंग से रख दिया है ।

लेखक : डॉ. अश्विनी गोयल, विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय लैंसडाउन, जयरीखाल (गढ़वाल); प्रकाशन वर्ष : १९९४, मूल्य : ५६ रुपये ।

मन नहीं दस-बीस : सुरेश कुमार शर्मा का उपन्यास महानगर की संस्कृति की सच्चाई और उसकी सही परिस्थितियों का सफल चित्रण है । इसमें चित्रित पात्रों की मानसिकता उपन्यासकार की कलम से जिस तरह व्यक्त हुई है, वह सुरेशजी की कुशलता का परिचायक है । भाषा प्रौढ़ और बोधगम्य है । दर्शन और जीवन-दर्शन भी भाषा में सरल हो गये हैं । पाठकों के लिए एक रोचक उपन्यास है ।

प्रकाशक : मध्यमा, कलकत्ता; वर्ष : १९९५; मूल्य : १५० रुपये ।

—मंजू ज्योत्स्ना

मृत्युंजय भगतसिंह : विगत कुछ वर्षों से भगतसिंह पर नयी सामग्री आती रही है और ऐसा प्रतीत होता है कि भगतसिंह को संपूर्ण रूप से खोजने और जानने की यह प्रक्रिया अभी चलती रहेगी । इधर राजशेखर व्यास की भगतसिंह पर पुस्तक आयी है । उसका शीर्षक है— 'मृत्युंजय भगतसिंह' । इस पुस्तक में १६ अध्याय हैं । इन अध्यायों में भगतसिंह के क्रांतिकारी के साथ उनके भाषाविद्, लेखक, अनुवादक, स्वतंत्रता सेनानी, देशभक्त, भूमिका-लेखक, पत्रकार, विचारक, आलोचक आदि रूपों का परिचय भी प्रमाणिकता के साथ दिया गया है । भगतसिंह का जीवन तथा उससे संबंधित इतिहास इस पुस्तक में जीवंत हो उठा है ।

मृत्युंजय भगतसिंह : लेखक : राजशेखर व्यास; प्रकाशक : ग्रंथ अकादमी, १६८६ पुराना दरियागंज, नयी दिल्ली; प्रथम संस्करण : १९९४, मूल्य : ७५ रुपये ।

—डॉ. कमलकिशोर गोयनका

धुआं चीरते हुए

पिछले दो दशकों से हिंदी में गजलों के अनेक संग्रह आये हैं । जिनमें फैशन के बतौर अनेक । 'धुआं चीरते हुए' डॉ. उर्मिलेश की उन हिंदी गजलों का संग्रह है, जहां भाषा, भाषागत दोहरेपन से मुक्त होकर, बहुत कुछ नयेपन को आत्मसात करने को उत्सुक दिखायी पड़ती है । इस हद तक कि कविता की भाषा और जीवन की भाषा के बीच की दूरी भी समाप्त हो जाती है । आज जबकि गजल उस 'स्वीमिंग पुल' की तरह बनती जा रही है जिसमें शिल्पगत पांचसितारा सौंदर्य प्रदान करने के लिए रचनाकार न जाने कितने जलस्रोतों का उधारा जल उसमें भरने से भी नहीं हिचक रहा, मिलावट के प्रदूषण का 'धुआं चीरते हुए' रचना संग्रह की गजलें अपनी मौलिक शक्ल में पाठक से बतियाती हैं । गजल के रचना—विधान से जो अपरिचित हैं, उनको और जो कुछ ज्यादा ही परिचित हैं उनको, संग्रह हतप्रभकारी लगेगा ।

धुआं चीरते हुए (गजल संग्रह) रचनाकार : डॉ. उर्मिलेश; प्रकाशक : अजय प्रकाशन, महरौली, नयी दिल्ली; पृष्ठ : ८२; मूल्य : ६०.०० रुपये ।

● सुरेश नीरव

कादम्बिनी क्लब समाचार

वार्षिक समारोह

मद्रास में कादम्बिनी क्लब का वार्षिक समारोह डॉ. मधुधवन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ ।

श्रीमती के. चेल्लम के प्रार्थना-गीत के साथ समारोहप्रारंभ हुआ । संयोजक डॉ. ए. के. बालकृष्णन ने आगंतुकों का स्वागत किया और क्लब के सदस्यों की संख्या की वृद्धि करने की प्रार्थना की ।

डॉ. मधुधवन ने गत वर्ष के कादम्बिनी के कार्य-कलापों की सराहना करते हुए स्पष्ट किया कि आज राष्ट्र की भावनात्मक एकता के लिए साहित्यिक आदान-प्रदान के द्वारा प्रयत्न करना परम आवश्यक है । सदस्यों से प्रार्थना की गयी कि अपनी-अपनी भाषा के उत्तम साहित्य का अनुवाद करें और कादम्बिनी के द्वारा हिंदी जगत को दें । सर्वश्री राजदेवन, ईश्वर करुण, चेल्लम और अन्य लोगों के कविता-पाठ के बाद संयोजकों ने धन्यवाद किया ।

आंचलिक क्षेत्र में कादम्बिनी पाठक

शिवहर । बिहार के इस नव-सृजित जिले में कादम्बिनी-क्लब की स्थापना पर काव्य-गोष्ठी आयोजित की गयी । उद्घाटन सीतामढ़ी कादम्बिनी-क्लब की संयोजिका आशा प्रभात ने किया । बैठक की अध्यक्षता नवगठित क्लब के संयोजक अधिवक्ता श्री ओम प्रकाश मिश्र ने की ।

संयोजक श्री ओम प्रकाश मिश्र ने कादम्बिनी-क्लब द्वारा साहित्य की समृद्धि के लिए किए जा रहे प्रयासों की चर्चा करते हुए कहा कि क्लबों की स्थापना से आंचलिक क्षेत्रों में भी पाठकों की व्यापक श्रृंखला कायम हुई है ।

हिंदी साप्ताहिक 'सिटी-संदेश' के संपादक श्री अजय 'विद्रोही' तथा चिकित्सक श्री विमल कुमार मिश्र ने भी विचार प्रकट किये ।

काव्य गोष्ठी में भाग लेने वाले सदस्य थे सर्वश्री डॉ. राम अनंत शर्मा, डॉ. शालिग्राम सिंह, श्रीराम परदेशी, श्री अमर कुमार मिश्र, श्री पवन कुमार, श्री अशोक कुमार, श्री हरि नारायण ठाकुर, श्री जय प्रकाश मिश्र, सुश्री ज्योत्सना, सुश्री भावना, श्री चंद्रशेखर 'करुणेश', सुश्री चांदनी तथा सुश्री रश्मि कुमारी ।

धन्यवाद-ज्ञापन श्री राजकुमार सिंह ने किया ।

कादम्बिनी क्लब की गोष्ठी संपन्न

हैदराबाद । साहित्य समाज का दर्पण होता है और उत्कृष्ट साहित्य द्वारा समाज की विकृतियों को दूर किया जा सकता है । कादम्बिनी क्लब अपने प्रयासों से यह उद्देश्य पूरा कर रहा है । हैदराबाद के साहित्यकारों के लिए यह एक उपलब्धि है ।

अपने उक्त विचार श्री सुंदरमल लूणिया ने कादम्बिनी क्लब हैदराबाद की गत दिनों हिंदी प्रचार सभा परिसर में संपन्न सातवीं मासिक गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कही । उन्होंने इस संस्था को भविष्य में अपना पूर्ण सहयोग दिये जाने की बात कही । संयोजिका डॉ. अहिल्या मिश्र ने श्री लूणिया का परिचय दिया ।

गोष्ठी में पवित्रा अग्रवाल ने अपनी कहानी पढ़ी, जिस पर हुई चर्चा में श्री सदानंद नरसोजी, डॉ. मदन देवी पोकरणा, डॉ. विजय प्रकाश मिश्र, डॉ. अहिल्या मिश्र, वृज भूषण बजाज एवं गायत्री

कादम्बिनी क्लब समाचार

शरण शर्मा ने भाग लिया । इस अवसर पर श्री एस. नारायण राव ने भी कहानी पढ़ी ।

बाद में संपन्न हुई काव्य गोष्ठी में डॉ. अ. मिश्र, सुनीता मूथा, पुष्पा वर्मा, मुनीन्द्र मिश्र, नवीन सेठिया आदि ने कविता पाठ किया । कार्यक्रम का समापन संयोजिका के धन्यवाद ज्ञापन पर हुआ ।

साहित्य-लेखन में निरंतरता

कादम्बिनी-क्लब, पटना के तत्वावधान में बुद्धमार्ग शांति आश्रम में रचना-संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में कवि-कथाकारों ने भाग लिया । संगोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध लघुकथा लेखक डॉ. सतीश राज पुष्करण ने की एवं संचालन क्लब के संयोजक डॉ. शिवनारायण ने किया ।

आरंभ में रुबी भूषण ने कश्मीर की आतंकवादी पृष्ठभूमि पर आधारित अपनी कहानी 'कब आएगा खत' का पाठ किया । इसके बाद उपस्थित कवियों ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया, जिनमें सर्वश्री कृष्णानंद कृष्ण, डॉ. तुलानाथ चौधरी, विजय गुंजन, आनंद रस्तोगी, राजकुमार प्रेमी, रामलखन सिंह मयंक', डॉ. शिवनारायण, डॉ. सतीशराज पुष्करण, जनार्दन मिश्र जलज आदि प्रमुख थे ।

डॉ. शिवनारायण ने कहा कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों का सही प्रयोग दोष नहीं, गुण है और इस मामले में लेखकों को संकीर्णता नहीं दिखानी चाहिए ।

अध्यक्षीय भाषण में डा. सतीशराज पुष्करण ने कहा कि वह लेखक श्रेष्ठ होता है, जो निरंतर लिखता रहता है ।

युवा कवि आनंद रस्तोगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही गोष्ठी समाप्त हुई

डालटनगंज में कादम्बिनी क्लब की स्थापना

बिहार के पलामू जिले के डालटनगंज शहर में शहर के प्रतिष्ठित एवं गणमान्य लोगों की उपस्थिति में 'कादम्बिनी क्लब' की स्थापना की गयी ।

कार्यक्रम के आरंभ में पलामू जिले के वयोवृद्ध साहित्यकार श्री जनार्दन द्विवेदी 'दीन' जी ने दीप प्रज्वलित कर 'वीणापाणी' की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया । तत्पश्चात पं. राजाराम मिश्र ने सरस्वती वंदना गाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । तबले पर सुश्री रीमा सहाय ने संगत किया ।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सर्व सम्मति से उपस्थित लोगों ने 'कादम्बिनी क्लब' की संयोजिका पद के लिए डॉ. लक्ष्मी विमल का नाम मनोनीत किया ।

कादम्बिनी
क्लब
साहित्य-जगत का सिंह द्वार
डालटनगंज, पलामू, बिहार

इस शुभअवसर पर कवि गोष्ठी भी आयोजित की गयी । जिसमें श्री ओ. पी. नारायण, प्रो. नादिम बलवी, डॉ. लक्ष्मी विमल, श्री वृजमोहन, श्री मुकीम शाद, श्री नवीन कुमार 'नवीन', सुश्री रीमा सहाय एवं सुश्री सपना सहाय के साथ स्थानीय कवियों एवं कवयित्रियों भी अपनी-अपनी रचनाएं सुनाकर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया । संचालन श्री मुकीम शाद ने किया ।

अंत में वयोवृद्ध साहित्याकार श्री 'दीन' जी ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज का दिन पलामू के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान बनाएगा ।

सांस्कृतिक समाचार

भारत में 'लायन किंग'

'मोदी फिल्म इंटरनेशनल' वाल्ट डिजनी पिक्चर्स की 'द लायन किंग' कार्टून फिल्म को २६ मई से भारत के चार महानगरों में प्रदर्शित कर रहा है। इसका तमिल रूपांतरण ४ जुलाई १९९५ से प्रदर्शित होगा।

रोजर एलर्स और रॉब मिनकॉफ द्वारा निर्देशित यह फिल्म बच्चे के प्रारंभिक डर व मां-बाप के मरने की कहानी पर आधारित है। यह कहानी उस समय की है, जिस समय मां-बाप का उत्तरदायित्व बच्चे पर आता है। यह पिता और बेटे के प्रेम को मार्मिक ढंग से प्रदर्शित करती है। पूरे दृश्य में नन्हें बेटे सिम्बा की ऐतिहासिक यात्रा है, जिसमें वह पिता मुफासा की मृत्यु के बाद जंगल का राजा बनता है।

'दि लायन किंग' ने काफी रेकॉर्ड तोड़े। वर्ष का ऑस्कर पुरस्कार व वर्ष का सर्वश्रेष्ठ मौलिक गाना घोषित किया गया। लायन किंग ने २५वें ग्रेमी के चार पुरस्कार प्राप्त किये।

'मोदी फिल्म्स इंटरनेशनल' भारत में 'वाल्ट डिजनी पिक्चर्स' का वितरक है।

☐ कवि सम्मेलन

दमोह (म. प्र.) नवयुवक क्रांति संगठन के तत्वावधान में विगत दिनों राष्ट्रीय एकता और सद्‌भावना विषय पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। संगठन के अध्यक्ष सुधीर जैन विद्यार्थी के अनुसार इस कवि सम्मेलन में सर्वश्री मिश्रीलाल जायसवाल, शिवकुमार अर्चन, प्रकाश प्रलय, डॉ. पूर्णिमा पूनम, मनजीत सिंह, नीलू मेघ के अतिरिक्त अन्य अनेक कवियों ने रचनापाठ किया। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर कवि सुरेश नीरव को शॉल, मानपत्र एवं प्रशस्तिपत्र द्वारा सम्मानित भी किया गया।

कृपाशंकर चौबे को भागीरथ कानोड़िया स्मृति पत्रकारिता पुरस्कार

हिंदी पत्रकारिता दिवस पर कलकत्ता के भारतीय भाषा परिषद सभागार में 'जनसत्ता', कलकत्ता के उप संपादक और नयी पीढ़ी के लेखक श्री कृपाशंकर चौबे को प्रथम भागीरथ कानोड़िया स्मृति पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्व. भागीरथ कानोड़िया की जन्मशतवार्षिकी पर इसी वर्ष इस पुरस्कार की स्थापना पश्चिम बंग श्रमजीवी पत्रकार संघ ने की है। संघ द्वारा यह पुरस्कार श्री चौबे को उत्कृष्ट रिपोर्टिंग/फीचर लेखन के लिए दिया गया। इसके तहत श्री चौबे को सुभाष मुखोपाध्याय ने स्मृति-चिह्न देकर, पत्रकार लक्ष्मी शंकर व्यास (वाराणसी) ने शाल ओढ़ाकर, प्रभात खबर, रांची के प्रधान संपादक हरिवंश ने इक्कीस हजार रुपये का चेक देकर और पुरस्कार चयन समिति के अध्यक्ष रमाकांत उपाध्याय सहायक संपादक, 'सन्मार्ग', कलकत्ता ने प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर विचार गोष्ठी

अलवर। महिला चेतना संस्थान ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर 'बाल मन में जीवन मूल्यों की

विश्व-प्रसिद्ध श्रृंखला

इस श्रृंखला में प्रकाशित पुस्तकों का मूल उद्देश्य ज्ञान एवं चिन्तन के धरातल पर एक औसत पाठक को अन्तरराष्ट्रीय जगत् से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करना है।

इस श्रृंखला की सभी पुस्तकें क्रमशः मानव संबंधी सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे खोज, रहस्य, रोमांच, दर्शन, धर्म, खेल, संस्कृति, सभ्यता आदि पर विहंगम दृष्टिपात करते हुए सारगर्भित विषय-सामग्री प्रस्तुत करती हैं।

श्रृंखला की अन्य पुस्तकें

जासूसी कांड
पारलौकिक

मूल्य 30/-
प्रत्येक
डाकखर्च :
6/-

विश्व प्रसिद्ध..........

* प्रेरक-प्रसंग
* क्रूर हत्यारे
* ड्रग-माफिया
* खोज-यात्राएं
* रोमांस-कथाएं
* अनमोल खजाने
* विनाश लीलाएं
* रिकार्ड्स I, II
* 101 व्यक्तित्व I, II, III
* साहसिक कथाएं
* बैंक डकैतियां व जालसाजियां
* धर्म, मत एवं संप्रदाय
* हस्तियों के प्रेम-प्रसंग
* तख्तापलट की घटनाएं
* भ्रष्ट राजनीतिज्ञ
* अलौकिक रहस्य
* गुप्तचर-संस्थाएं
* राजनैतिक हत्याएं
* आतंकवादी संगठन
* चिकित्सा-पद्धतियां
* सनकी तानाशाह
* रोमांचक कारनामे
* खेल और खिलाड़ी
* मांसाहारी व विचित्र पेड़-पौधे
* भयानक रोगों पर विजय
* आध्यात्मिक गुरु एवं शैतान
* विलासी सुंदरियां
* अनसुलझे रहस्य
* दुर्घटनाएं
* जनसंहार
* वैज्ञानिक
* जनक्रांतियां
* युद्ध
* जासूस
* मुकदमे
* खोजें
* सभ्यताएं
* भविष्यवाणियां और उनके भविष्यवेत्ता
* कुख्यात महिलाएं
* अनूठे रहस्य
* मिलिट्री ऑपरेशन
* मिथक एवं पुराण-कथाएं
* धातुओं की कहानियां
* विवाह प्रथाएं एवं परंपराएं

Also available in English

एक साथ चार पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ

• प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री • प्रत्येक पुस्तक सैकड़ों दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित • सरस कथा शैली • फोटो टाइपसैट • बढ़िया कागज पर ऑफसैट छपाई • बहुरंगी

अपने निकट के या रेलवे तथा बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टॉलों से प्राप्त करें। न मिलने पर वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पताः

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006
शोरूम: 10 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002
शाखाएं: • 22/2, मिशन रोड, बंगलौर-560027 फोन: 234025
• अशोक राजपथ, पटना- 800001

हम अपने वृद्ध नागरिकों औ वेतनभोगी महिलाओं का ध्यान रखते हैं।

भारत में निवासी जिन व्यष्टि आयकर दाताओं की आयु वर्ष के दौरान किसी भी समय 65 वर्ष या अधिक हो, उन्हें देय कर निम्नानुसार छूट मिलेगी–

पात्रता के लिए सकल कुल आय की अधिकतम सीमा	रु. 1,00,000
छूट की दर	40 प्रतिशत

(देखें : आयकर अधिनियम की धारा 88 ख)

उन वेतन भोगी महिलाओं की अधिकतम 18,000/- रुपए (अन्य के मामलों में 15,000/- रु.) तक की उच्च मानक कटौती दी जाएगी जिनकी कुल आय इस कटौती से पहले 75,000/- रुपए से अधिक नहीं होगी।

(देखें : आयकर अधिनियम की धारा 16)

आयकर विभाग
आयकर निदेशालय (ग.सा.प्र.व.ज.सं.)
कनाट सर्कस, मयूर भवन,
नई दिल्ली

davp 95/188

दिल्ली की समस्याओं के स्थाई हल के लिए

दिल्ली सरकार के बढ़ते कदम

केवल पिछले दो माह में उठाए गए कदम :

श्री मदन लाल खुराना
मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार

- सभी ढाई लाख कालेज विद्यार्थियों के लिए निः शुल्क डी.टी.सी. बस पास.
- सभी के लिए 12वीं कक्षा तक निः शुल्क शिक्षा.
- प्राथमिक विद्यालयों के सभी साढ़े सात लाख छात्र–छात्राओं को दोपहर के भोजन की मुफ्त व्यवस्था.
- गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी तीन नए कॉलेज खोलने की व्यवस्था.
- केवल 15/- रूपए प्रति माह के भुगतान पर प्रत्येक झुग्गी–झोंपड़ी में बिजली उपलब्ध कराने की व्यवस्था.
- झुग्गी–झोंपड़ी निवासियों को पानी के मामले में आत्मनिर्भर बनाने हेतु टयूबवैल का निर्माण तथा अनाधिकृत बस्तियों में टैंकरों द्वारा पानी की आपूर्ति.
- रिहायशी क्षेत्रों की दुकानों में व्यवसायिक बिजली के मीटर.
- हरिद्वार की "हर की पौड़ी" के समान दिल्ली में "सूर घाट" का निर्माण.

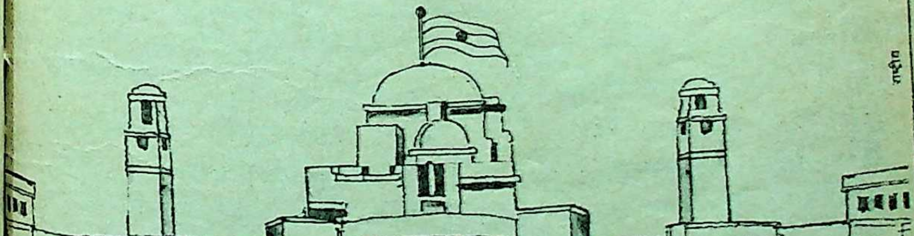
सूचना एवं प्रचार निदेशालय दिल्ली सरकार

कुछ कर दिखाने की इच्छा, दूरदृष्टि और पक्का इरादा

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उ उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो स उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर य दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. अद्वेष— क. द्वंद्वहीन, ख. द्वेषहीनता, ग. द्वेषरहित, घ. प्रतिस्पर्धा-विहीन।

२. तेजस्वी— क. प्रतिष्ठित, ख. पुण्यवान, ग. प्रतापी, घ. बलशाली।

३. अधन्य— क. अभागा, ख. दुःखी, ग. निंद्य, घ. अकृतज्ञ।

४. मनोगृहीत— क. अभिलषित, ख. मनपसंद, ग. मन द्वारा ग्रहण किया हुआ, घ. मन में रमनेवाला।

५. मनोव्याधि— क. पागलपन, ख. मानस रोग, ग. मनस्ताप, घ. मन का हेरफेर।

६. मरणोन्मुख— क. जो मर रहा हो, ख. मृतक समान, ग. मृत, घ. जो मरने की इच्छा रखता हो।

७. बहिःस्पर्शी— क. ऊपरी मन से, ख. ऊपरी, ग. दिखाऊ, घ बाहर से छूता हुआ।

८. मर्त्य— क. मरा हुआ, ख. विनाश के योग्य, ग. मरणशील, घ. नश्वर।

९. भावार्थ— क. तात्पर्य, ख. अनुवाद, ग. भावबोध, घ. सीधा अर्थ।

१०. बहुआयामी— क. प्रतिभाशाली, ख. विस्तृत, ग. विविध, घ. नाना प्रकार का।

११. बहुउद्देशीय— क. जो अनेक कार्य-पूर्ति के लिए बनाया गया हो, ख. बहुधंधी, ग. हरेक में लाभप्रद, घ. बहुविधि।

१२. बहुक्षम— क. भारी योग्यता का, ख. बहुत सहनेवाला, ग. बहुत समतावाला, घ. क्षमा करनेवाला।

१३. संश्रय— क. संदेह, ख. भय, ग. शर, घ. मदद।

उत्तर

१. ख. द्वेषहीनता, बैर का न होना (संज्ञा)। जीवन में किसी से **अद्वेष** का होना ही सार्थक है। ग. द्वेषरहित (विशेषण)। **अद्वेष** समाज का निर्माण सबके लिए हितकर है। (अ+द्वेष)

२. ग. प्रतापी, तेजवाला, प्रभावशाली। **तेजस्वी** व्यक्ति सभी को प्रभावित करता है। (व्युत. –तेजस्)

३. क. अभागा। ख. दुःखी। **अधन्य** व्यक्ति के प्रति प्रायः सभी सहानुभूति रखते हैं। अ+धन्य (व्युत्. –धन्, यत्)

४. ग. मन द्वारा ग्रहण किया हुआ। **मनोगृहीत** कार्य में मनुष्य को सफलता की आशा होती है। मनः+गृहीत (व्युत्. –ग्रह,क्त)

५. ख. मानस रोग। वह **मनोव्याधि** से ग्रस्त है। (मनः+व्याधि)

६. क. जो मर रहा हो, मरणासन्न। दीर्घकाल से रोगग्रस्त होने के कारण वह **मरणोन्मुख** हो

गया है । (मरण+उन्मुख)

७. ख. ऊपरी । ग. दिखाऊ (अंग.–सुपरफीशल) । उसकी सहानुभूति **बहिःस्पर्शी** ही है । (बहिः+स्पर्शी)

८. ग. मरणशील । घ. नश्वर । जगत में सभी कुछ **मर्त्य** है । (व्युत्.–मर्त, यत्)

९. क. तात्पर्य, वह अर्थ जिसमें हरेक शब्द का अर्थ न देकर सम्यक वाक्य या वाक्य-समूह का अर्थ दे दिया गया हो । श्लोकों का **भावार्थ** ग्रहण करना चाहिए । (भाव+अर्थ)

१०. घ. नाना प्रकार का (व्यक्तित्व, लेखन, कला आदि) । श्रेष्ठ साहित्यकार का लेखन **बहुआयामी** होता है । बहु+आयामी (व्युत्.–आ, यम्)

११. क. जो अनेक कार्य-पूर्ति के लिए बनाया गया हो (अंग.–मल्टीपर्पज) । फोटो-परिचय-पत्र **बहुउद्देश्यीय** है । बहु+उद्देश्यीय (व्युत्.–उद्, दिश्)

१२. ख. बहुत सहनेवाला । कष्टों ने उसे **बहुक्षम** बना दिया है । (बहु+क्षम)

१३. ग. शरण । उसे राजकीय **संश्रय** प्राप्त है । (व्युत्.–सम्, श्रि)

पारिभाषिक शब्द

Rehearsal = पूर्वाभ्यास
Auditor = लेखा-परीक्षक
Accountant = लेखाकार
Superior = वरिष्ठ/उत्कृष्ट
Inferior = निम्न/अवर
Incidental = प्रासंगिक/आनुषंगिक
Ratification = सत्यांकन/अनुसमर्थन
Refutation = खंडन

ज्ञान-गंगा

जन भेकः
कोकनंदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविदः ।

(कथासरित्सागर ६/४/७८)

—मेढ़क कमलिनी के केशर का स्वाद नहीं जान सकता ।

शश्वदुपभोगे गिरिरपि नश्यति ।

(गद्यचिन्तामणि १/१३)

—निरंतर उपभोग करने से पर्वत भी समाप्त हो जाता है ।

विद्या समुन्नतिपथं विशदीकरोति ।

(अमृत-मंथन २७/१)

—विद्या उन्नति के मार्ग को स्पष्टतया दिखाती है ।

मा प्र गाम पथो वयम् ।

(ऋग्वेद १०/५७/१)

—हम जीवन में पथ-भ्रष्ट न हों ।

इंद्र इच्चरतः सखा ।

(ऐतरेय ब्राह्मण ७/१५/१)

—ईश्वर उद्यमी पुरुष का ही मित्र बनता है ।

न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते ।

(कुमारसंभव ५/१६)

—जो धर्म की दृष्टि से बड़े होते हैं उनकी अवस्था नहीं देखी जाती है ।

प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

पाठ्य पुस्तकों के साथ खिलवाड़

कादम्बिनी के मई' ९५ अंक में 'द एशियन एज' में प्रकाशित कमलिनी सेन गुप्ता के लेख 'पाठ्य पुस्तकों के साथ खिलवाड़ हो रहा है !' के कुछ अंश प्रकाशित किये गये ।यह लेख कुछ प्रश्न छोड़ गया है ।

पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध या भारतीयों के विरुद्ध जो भी पढ़ाया जा रहा है वह कोई नयी बात नहीं है पर जहां तक भारत द्वारा उसके विरोध का प्रश्न है तो पाकिस्तान द्वारा स्पष्ट दखलंदाजी के बाद भी हम उसका विरोध करने में अपने को अपंग महसूस करते हैं तो ये बातें तो उसके यहां उसके देश में पढ़ायी जा रही हैं । भला हमारे बुद्धिजीवियों व इतिहासकारों को इससे क्या ? वे तो कालिदास को 'भारत का शेक्सपियर' और समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' बनाने में जुटे हुए हैं ।

जहां तक भारत के विभिन्न राज्यों में विभि संस्थाओं द्वारा अपनी पाठ्य पुस्तकों में भिन्न-भिन्न तथ्य पढ़ाने का प्रश्न है तो इसके जो कारण समझ में आते हैं, वे हैं— केंद्र सरकार का गैर-जिम्मेदाराना अंदाज, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अभाव, राजनीतिक कारण आदि । इस लेख में यह भी बताया गया है कि 'विद्याभारती' यह पढ़ाती है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे, राम और कृष्ण इतिहास के महान अवतार थे । सन १८५७ का विद्रोह, विद्रोह नहीं स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम था अ तथ्य पूर्णतः या अंशतः गलत हैं तो यह कौन बताएगा कि सत्यता क्या है ? हमारा वास्तविक इतिहास क्या है ? एन.सी.ई.आर.टी., जिसकी पुस्तकें भारतवर्ष में पढ़ायी जाती हैं, वह तो औरंगजेब को महान मुगल सम्राट बताती हैं, 'तिलक' द्वारा प्रारंभ किये गये गणेशोत्सव के कारण ही सांप्रदायिक सद्भाव बिगड़ा, महारा प्रताप राष्ट्र के लिए नहीं अपनी गद्दी के लिए लड़े आदि बताती हैं ।

आवश्यकता इस बात की है कि इतिहास फिर से लिखा जाए और उन्हीं इतिहासकारों को इसमें शामिल किया जाए जो न तो पूर्वाग्रह से ग्रस्त हों और न ही ब्रिटिश या विदेशी इतिहासकारों से प्रभावित । यदि ऐसा नहीं हुआ तो 'ग' से 'गणेश' की जगह 'गदहा', मुख्यमं की जीवनी और अन्य तथ्य पढ़ाने से हमारी भावी पीढ़ी का निर्माण किस तरह का होगा, य किसी से छुपा नहीं है ।

—नीरज कुमार गोयनका
गणेश सिनेमा के सामने गली में,
सीतामढ़ी-८४३३०२ (बिहार)

(एक पाठ्य पुस्तक में 'ग' से 'गधा' पढ़ाया जाता है क्योंकि गणेश सांप्रदायिकता का सूचक है ।
—सं.)

प्रोत्साहन पुरस्कार

सांसदों की पेंशन

जून की 'कादम्बिनी' के 'आखिर कब तक' स्तभ के अंतर्गत आपने सांसदों को दी जानेवाली बढ़ती हुई सुविधाओं पर विचारोत्तेजक टिप्पणी प्रकाशित की है । राजसी सुविधाएं प्राप्त करने के इच्छुक हमारे सांसद यदि अपने क्षेत्र की जनता की गरीबी के घिनौने स्वरूप को देख लें तो शायद शरमिंदा हो जाएं पर सांसद चुनाव के पहले वोट मांगने ही अपने क्षेत्र में जाते हैं, चुने जाने के बाद नहीं ।

एक सरकारी कर्मचारी २५ वर्ष नौकरी करने के बाद पेंशन का हकदार बनता है । वह भी तब यदि उसका— पेंशन 'प्रकरण' बाबुओं और अधिकारियों की कृपा से सुलझ जाए ।

दूसरी ओर यदि सांसदों का बस चले तो वे यह कानून भी पारित करवा सकते हैं कि सांसद शपथ लेते ही पेंशन प्राप्त करने के हकदार बन जाएंगे ।

सांसदों की अनावश्यक हवाई यात्राओं को प्रतिबंधित करते हुए उन्हें केवल वर्ष में एक बार अवकाश यात्रा की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए, वह भी रेल द्वारा ।

यह कानून भी पास किया जाना चाहिए कि पेंशन के हकदार वे ही सांसद होंगे जिन्होंने पांच वर्ष का अपना कार्यकाल पूर्ण किया हो और अपने क्षेत्र की जन-समस्याओं के समाधान हेतु जिन्होंने सार्थक प्रयास किये हों ।

—ललित कुमार शर्मा
८८/१२ सैकंड बस स्टॉप के पास
भोपाल (म.प्र.)

सार्थक प्रयास

कादम्बिनी के केवल आठ माह में दो बार 'तंत्र विशेषांक' निकालकर आपने तंत्र-मंत्र-यंत्र और ज्योतिष की सारी वास्तविकताएं ही खोलकर रख दीं । आपकी इस पुनीत कार्यवाही से पाठकों के ज्ञान-भंडार में जहां प्रचुर वृद्धि होगी, वहीं तंत्र-मंत्र-यंत्र के साधकों को नयी दिशा, नयी दृष्टि भी मिल सकेगी ।

सांस्कृतिक जानकारियों से भरपूर इस प्रकार के अंकों की उपादेयता अवर्णनीय है । वस्तुतः समाज में अभी भी तंत्र-मंत्र और ज्योतिष को लेकर बड़ी भ्रांतियां व जिज्ञासा फैली हुई हैं, जिसके निराकरण व समाधान में यहअंक निस्संदेह कारगर साबित होंगे ।

खेद इस बात का है कि आज भी देश में ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है, जो भारतीय जनता की अपने छद्म ज्योतिष व तंत्र-ज्ञान के द्वारा भारी लूट-खसोट कर रहे हैं । आपने कादम्बिनी के जून' ९५ अंक में ऐसे लोगों का परदाफाश भी किया है, जो सराहनीय है । पाठकों को सचेत करने के लिए यह जरूरी भी हो गया था ।

'आखिर कब तक ?' कॉलम में भी आपने पुनः इस प्रसंग को संस्पृष्ठ किया, और बताया कि हस्तरेखा विज्ञान के क्षेत्र में ढोंग बढ़ता जा रहा है, ज्योतिष शास्त्र, अपराध विज्ञान के क्षेत्रों

आशापूर्णा देवी

बंगला की प्रख्यात लेखिका और भारतीय ज्ञानपीठ से सम्मानित आशापूर्णा देवी का १३ जुलाई, १९९५ को कलकत्ता में निधन हो गया । तेरह वर्ष की आयु से अपना लेखन प्रारंभ करनेवाली आशापूर्णा देवी ने डेढ़ सौ से अधिक उपन्यास लिखे । पति-पत्नी, प्रथम प्रतिश्रुति, शशि बाबू का संसार, नेपथ्य-नायिका, स्वर्णलता आदि उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं । आशापूर्णा देवी के निधन को देश के प्रबुद्ध व्यक्तियों ने साहित्यिक और सांस्कृतिक जगत में अपूरणीय क्षति बताया ।

कैप्टन भगवान सिंह

हिंदी के वरिष्ठ लेखक तथा फीजी में भारत के उच्चायुक्त रहे कैप्टन भगवान सिंह आई.ए.एस. का हृदयगति रुक जाने से ८० वर्ष की उम्र में १६ जुलाई को निधन हो गया । कादम्बिनी के वे सुपरिचित लेखकों में रहे हैं ।

शोक-श्रद्धांजलि

वीर रस के जाने-माने अखिल भारतीय कवि श्री वेदप्रकाश 'सुमन' की सड़क दुर्घटना में असामयिक मृत्यु हो गयी । वे संभावनाओं के युवा कवि थे और कादम्बिनी परिवार के साथ जुड़े हुए थे ।

निधन

कादम्बिनी की प्रशंसिका तथा लेखिका श्रीमती बिन्दु सिन्हा का २५ मई '९५ को पोखरा, हाजीपुर (बिहार) में निधन हो गया । श्री हरिमोहन प्रसाद सिन्हा की पत्नी श्रीमती सिन्हा कादम्बिनी में नियमित लिखती रही हैं ।

कादम्बिनी परिवार की ओर से इन सभी को शोक श्रद्धांजलि ।

में भी अल्पज्ञ और गैरजानकार लोग इन महत्त्वपूर्ण विषयों की छवि एवं विश्वसनीयता को व्यापक आघात पहुंचाने में लगे हुए हैं ।

जून' ९५ अंक में ही मैंने तंत्र-मंत्र एवं वनौषधियों द्वारा कैंसर, सुराइसिस, शियाटिका के इलाज पर उपयोगी लेख पढ़ा । साथ ही, 'कुंडलिनी-जागरण द्वारा रोग-मुक्ति', 'भूत-बाधा और उसका निवारण', 'सफलता के लिए मंत्र विधान', 'कामनाओं की पूर्ति में सहायक-मंत्र' तथा 'रत्नों की उपयोगिता', आदि पर विभिन्न विशेषज्ञ-लेखकों के लेख बहुत महत्त्वपूर्ण और उपयोगी हैं ।

इस अंक की कहानियां भी बहुत प्रभावी व रोचक रहीं । व्यंग्य व कविताओं का अभाव एकबारगी खटका जरूर; लेकिन कष्टकर बिलकुल नहीं रहा ।

—मुकुंदलाल साहू
जांजगीर, जिला बिलासपुर (म.प्र.)

साधुवाद

जून' ९५ के तंत्र विशेषांक के लिए साधुवाद । तंत्र विशेषांक पढ़कर ऐसा आभास एवं संतुष्टि हुई—जैसे तीर्थ यात्रा करने के बाद एक तीर्थ यात्री अनुभव करता है ।

एक नियमित पाठक होने के नाते मैं दो सुझाव देना चाहता हूं । पहला देश में अनेक ऐसे विद्वान एवं पंडित हैं जो किसी कारणवश समाज के सामने नहीं आ सके हैं । कादम्बिनी ही एक ऐसी पत्रिका है जो इन मनीषियों के लिए एक सार्थक मंच साबित हो सकती है ।

—मनीष मित्र मेहता
बांसवाड़ा (राज.)

आस्था के आयाम

भारत की विशेषताओं को जानने के लिए कई जन्म चाहिए

बीकानेर रियासत के महाराजा स्व. श्री गंगा सिंह के यहां इलाही बक्श उस्ता नामक एक चित्रकार थे । इलाही बक्श महाराजा के निजी चित्रकार थे एवं राजमहलों में ही चित्र बनाते थे । महाराजा की रुचि के अनुसार उस्ता ने राजमहल में शिकार से संबंधित कई चित्र बनाये । इलाही बक्श के द्वारा बनाया गया एक चित्र संयुक्त राष्ट्र संघ में भी लगा । उनके कई चित्र पेरिस में आयोजित एक प्रदर्शनी में भी शामिल किये गये । ऐसे चित्रकार की कला देखने के लिए बीकानेर के कलाप्रेमी लालायित रहते थे ।

एक बार इलाही बक्श अपने घर पर कोई चित्र बना रहे थे, तब उनके घर पर कई कलाकार उस चित्र के बनने की प्रक्रिया को देख रहे थे और उनकी कलम को देखकर वाह-वाह कर रहे थे । इलाही बक्श पर उनकी प्रशंसा का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, वे कहते मेरे गुरु ही इस प्रशंसा के पात्र हैं । थोड़ी देर बाद ही उनके गुरु ए. एच. मूलर वहां आ गये । जरमन मूल के चित्रकार श्री मूलर उस जमाने में ऐतिहासिक चित्रों के सम्राट माने जाते थे । मूलर ने बीकानेर रियासत में अनेक चित्र बनाये थे । मूलर ने इलाही बक्श के चित्र को देखा और उस पर कोयले से संशोधन कर रंगों के बारे में सलाह दी ।

मूलर के इस संशोधन से वह चित्र और अधिक सजीव हो गया । तब मूलर ने उनसे विनम्रता से कहा, ''किसी भी चीज का अंत नहीं है । यह चित्र अब भी अधूरा हो सकता है, कला एक अथाह सागर है इसका कोई छोर नहीं है ।''

मूलर कहा करते थे कि ''मेरी एक ही अभिलाषा है ज्यादा से ज्यादा कला की गहराई को छू लूं । भारत एक बहुत ही महान देश है । इसकी विशेषताओं और सौंदर्य को चित्रित करने के लिए कई जन्म चाहिए । कला के मर्म को जानने के लिए एक संपूर्ण कलाकार की नहीं, अपितु जिज्ञासु विद्यार्थी की आवश्यकता है । अगर मेरे पास पर्याप्त पैसा और अधिक उम्र होती तो मैं फिर से सीखने में ही अपना जीवन लगा देता ।'' गुरु की यह बात सुनकर कलाकार भावविभोर हो गये ।

—अशफाक कादरी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्ष

वर्ष ३५, अंक १०, अगस्त १९९

निबंध एवं लेख

नवीन पंत
खून-खराबा और जूते चप्पलों २३
हबीब खान
खजाने का सबसे बड़ा हाकिम...............२८
डॉ. सुधा पांडे
वैदिक संस्कृति की जीवन यात्रा...............४२
राजशेखर व्यास
क्रांतिकारियों के दस्तावेज.....................४७
उषा वधवा
फिरदौसी का शाहनामा भी एक..............५३
कमलरंजन हिमशैल
नामों का रोमांस.................................६२
हेमंत चौहान
नागफनी में नाग नहीं है.......................६५
श्याम वराडपांडे
बड़ा हुआ तो किसी के हाथ नहीं ६८

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य—६, ज्ञानगंगा—७, प्रतिक्रियाएं—८, आस्था के आयाम—११, कालचिंतन—१५, आखिर कब तक—२०, कुछ रोचक प्रसंग—३२, गोष्ठी—५९, इनके बयां जुदा-जुदा—७१, विधि विधान—८३, बुद्धि विलास—१०१, हंसिकाएं—१४७, तनाव से मुक्ति—१४८, वैद्य की सलाह—१५८, प्रवेश—१६७, व्यंग्य-तरंग—१९६, यह महीना और आपका भविष्य—१७८, ज्योतिष समस्या और समाधान—१८४, नयी कृतियां—१९६, सांस्कृतिक समाचार—१७३, सलाह समाचार—१७४, समस्या पूर्ति—१९८

अर्चना सौशिल्य
पुरुषों की तबाही : नारी स्वतंत्रता ७२
डेनिस वारनर
बमों की आंखें नहीं होतीं.....................७५
डॉ. सुमित्रा शर्मा
जब भाई की कलाई पर ८६
डॉ. श्यामसनेही लाल शर्मा
वे आकाशचारी मनुष्यों के नेता ९७
अनंतराम गौड़
तपकर जो स्वर्ण बने १०१
शैलेन्द्र सिंह
उसने अपने भाई की गरदन..................११६
डॉ. समर बहादुर
इतिहास ने सभी के हाथ काटे १२४
प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'
कौए यहां मरने के लिए आते १२९
अशफाक कादरी
संगीत के अनूठे खेल १३४
पच्चीस सैनिक—पांच सवार...............१४३
डॉ. हीरालाल बाछोतिया
गुनतरी..१५१
अभय कुमार दुबे
उसने नाजी नेता को जाल में १५४
राबर्ट डब्लूयू स्टर्न
जयपुर दरबार और उनके.....................१६०
बी. आर. नंदा
गोली से मनुष्यता नहीं मरती ! १६९

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

रीता पल्लवी
दुश्मन की अदालत में........................१७५
बनारसीदास चतुर्वेदी
उनके हाथों में बेड़ियां पड़ीं....................१८०
अखिलेश मित्तल
अकबर के सेनापति की डेढ़ १८६
योगेश
जौहर प्रथा कैसे और क्यों....................१९३

कहानियां एवं व्यंग्य

प्रतिमा वर्मा
रोशनी का सच......................................३५
डॉ. के. सी. जोशी
अदृश्य संग्रह...९०
यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र'
टूटते बंधन १०२
सुरेशचंद्र शुक्ल
सरहदों के पीछे....................................११२
परिपूर्णानंद वर्म्मा
मेरी देहाती बीवी न प्रेम जाने...............१३९

कविताएं

बालकवि बैरागी/कृष्णा अनुराधा १२०
डॉ. चंद्र प्रकाश वर्मा/
रामकृष्ण दीक्षित १२१
पोद्दार रामावतार 'अरुण' १२२
बलदेव मिर्जा/डॉ. सुधेश १२३

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज सुरेश नीरव
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी ।

संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०) अन्य सभी देशों के लिए : **अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०) ।**

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी
मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।

आवरण छाया : सर्वेश

काल-चिंतन

समाचार : हत्या हुई ।

समाचार : हत्या नृशंस थी ।

समाचार : हत्या के पारदर्शी परदे मनुष्य के परम श्रेष्ठ अवयव प्रेम थे !

□

—प्रश्न उठता है : प्रेम और हत्या ?

—प्रेम के प्रथम चरण से प्राप्ति की चरम सीमा तक हत्या के आयाम पूरे हो जाते हैं ।

—प्रेम अपने आप में हत्या है । होना हत्याओं के दो बिंदुओं का ध्रुवीकरण है ।

—हत्या हो चुकी तब बिखराव होगा ही । बिखराव के बाद शोर कैसा ? विधि-विधान और समाचार-पत्रों की कथाओं के कथा-नायक कैसे, कहां से उपजे ये सब प्रश्न एक ही प्रकरण से जुड़े हैं ।

—कार्य और कारण में अंतर नहीं है ।

—कार्य संपन्न हुआ तो कारण कहां रहेगा !

—कारण तभी तक संभावी है जहां तक कार्य संपन्न नहीं होता ।

—कार्य का संपन्न होना समर्पण है ।

—समर्पण के बाद किसी संज्ञा का अस्तित्व नहीं रह सकता ।

□

—ऋग्वेद इस मूलतत्व में स्पष्ट है ।

—ऋग्वेद में कहा गया है कि प्रजापति ने सृष्टि की रचना की । प्रजापति ने आत्मा को जन्म दिया । आत्मा के तीन स्वरूप निर्धारित किये—मन यानी शरीर, प्राण यानी जीवन-शक्ति और वाक्, यानी प्रकटन की क्षमता ।

—ऋग्वेद ने फिर एक विशाल ब्रह्मांड की कल्पना की । उस ब्रह्मांड में अग्नि है और सोम भी है । अग्नि शक्ति, ऊर्जा और कृत-विकृत से लेकर रचना और विरचना सभी की अध्येता है ।

—कहा जा सकता है कि अग्नि भस्म की क्षमतामय क्रिया है ।

—तब सोम ? सोम प्राणतत्त्व है, सोम प्राण-वायु है, सोम अन्न है । सोम हमारी धमनियों का रक्त संचार है । प्रकृति की धमनियों का वह जल-प्रपात है ।

☐

—अग्नि और सोम ने दो सम्यक् धाराएं प्रस्तुत कीं : उन्होंने जीवनी-शक्ति को पुरातन राजप्रासादों का वरदान बनाया तो दुर्धांध शक्तियों के लिए शिक्षा दी कि शक्ति का दुरूपयोग अंततः विनाश है ।

—इसीलिए जीवन में अग्नि और सोम को अनन्योआश्रित माना गया है ।

—वेदों में वर्णित मंत्र, ऋचाएं और सूत्र अंततः सिद्धि और समझ के बाद संजीवनी-सूत्र का काम करते हैं ।

—यहीं ब्रह्मा का आचरण उपस्थित होता है । ब्रह्मा निर्माता है, तो उसने दो स्वरूप निर्मित किये : शब्द-ब्रह्म और परमब्रह्म ।

—ऋग्वेद ने तब प्रश्न खड़ा किया :

- द्वि—क्या है ?
- जंगल में वृक्ष कटा था तो क्यों ?
- उस कटे वृक्ष ने पृथ्वी और आकाश को जोड़ा तो क्यों ?
- जोड़ा भी तो कैसे ?

—ऋग्वेद में उत्तर मौन है । तैतरेय ब्राह्मण में इसका उत्तर मिलता है । कहा गया है :

- वन ब्रह्मांड है ।
- वृक्ष विश्व-नियंता है ।
- कटा था जो वह ब्रह्मलीन हुआ, सम्यक् दृष्टि ने उसे कटा देखा और फिर अपने ही स्वर बदल दिये : कब, कौन कटा था ? कैसे ? कट भी सकता है कोई ?

—ब्रह्म का अर्थ ही है ऊर्जा-शक्ति । ऊर्जा शक्ति ही प्रजनन का कार्य करती है ।

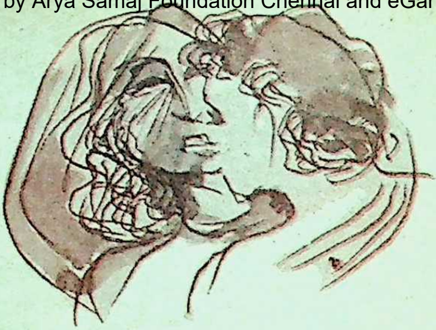

□

—इन सभी व्याख्याओं से एक ही अर्थ निकलता है : बुद्धि और बुद्धि-जनित चातुर्य की कोई सीमा नहीं है ।

—सभी मिथ्या भ्रम है : आकाश सबसे बड़ा भ्रम है । पृथ्वी दूसरा बड़ा भ्रम है । वायु, जल और अग्नि शक्ति-सामर्थ्य के अपार पुंज होते हुए भी यदि बैल के नथुने में फंसी रस्सी की तरह बांधे जा सकते हैं और उसी तरह उनका प्रयोग किया जा सकता है तो, तो... ?

—यही तो, समस्त प्रश्नों का मूल स्रोत है । शोधार्थी कहीं भी हों, कैसे भी हों, इसी 'तो' के लिए प्रयोग-धर्मा धर्मशालाओं का आश्रय लेते हैं ।

□

—एक कथा अनिवार्य है :

मुनि नहीं थे वे, मौन थे अतः उन्हें मुनि कहा गया । नितांत एकांत, सलित-तट, पर्वत की उपत्यकाएं और उन्हीं के बीच कंदराओं में विराजमान । स्पष्ट कर देना आवश्यक है : कंदराओं का अर्थ । कंदरा सामान्यतः दृष्टियों को धोखा देकर बननेवाले क्षेत्र हैं—नैसर्गिक और अनैसर्गिक । दर्शनार्थियों की भीड़ । भीड़ मात्र दर्शन के लिए कि किसी ने प्रचारतंत्र की पाखंड-भाषा में यह उद्घोषित कर दिया था कि उनके मात्र दर्शन से सभी संभाव्य है । इससे बड़ा भव्यागार क्या हो सकता है । मात्र दर्शन पर्याप्त हों और सभी सदेच्छाएं और कुदेच्छाएं संपूर्ण हो जाएं तो विज्ञान के साधकों पर तरस खाना चाहिए ।

—विज्ञान है कहां ?

—कंप्यूटर है कहां ?

—किसकी उपज हैं विज्ञान, ज्ञान, कंप्यूटर और रहस्य के अलभ्य द्वार ।

—मनुष्य का मस्तिष्क तेजस्विता के सभी आयामों और आगारों को चुनौती दे सकता है; देता नहीं ।

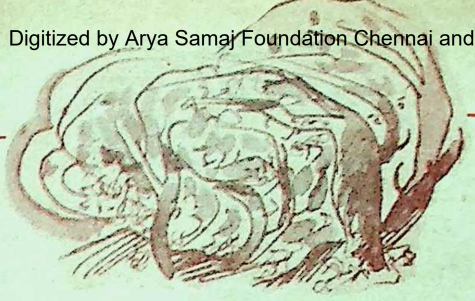

—चुनौती देता है वह जो कमजोर है ।

—चुनौती देता है वह जिसका कुल आभिजात्य नहीं है ।

—चुनौती देता है वह जो सर्व-स्वामी बनने का दंभ भरता है ।

—सबसे बड़ी चुनौती तो है हमारा प्रतिहारी श्वान ।

—श्वान रख लीजिए शांति की नींद सोइए ।

—श्वान नाना वेशों और परिवेशों में हमारा अंगरक्षक है । संभवतः यही होगा कि महाबली, महाश्रेष्ठि, किंतु वृद्ध युधिष्ठिर का साथ मात्र एक श्वान ने दिया था ।

—श्वान समय की शिला पर इतना खरा उतरा है कि वह आलीशान बिस्तरों का स्वामी हुआ है ।

● श्वान : शासकों और प्रतिशासकों के बीच विषकथा से लेकर मैत्री के अटूट आयामों का साथ देता रहा है ।

● श्वान प्रतिहारी है, श्वान प्रतिरोही है और श्वान प्रेम का अप्रतिम प्रतीक है ।

● श्वान सखा है, विश्वास की अमिट दीवार है श्वान । उससे बड़ा रक्षक नहीं मिलेगा ।

● वही श्वान जब आवेग और अशेष की सीमा पर पहुंचता है तो उन्मत्त होकर किसी की भी जीवन-लीला को समाप्त कर सकता है । लेकिन नहीं, यहां भी वह स्वामीभक्त है : वह जीवन लेगा तो अपना जीवन देगा भी !

—अतः श्वान बनना निकृष्ट होना नहीं हैं और न श्वान बनाना निकृष्ट है । चर-अचर सभी की पहचान गुणवत्ता के आधार पर होती है । इस आधार पर वह समय की शिलाओं का अग्रलेख सिद्ध होगा ।

□

—बात कहां से चली थी, कहां पहुंच गयी ।

—हमारे गंतव्य क्या होते हैं, हम कहां पहुंचते हैं ।

—हमारा 'प्रिय चिर सखा' मिथ्या धारणाओं का शिकार बनकर कहां चला जाता है ।

—उत्तर हुआ कि भटकना हमारी नियति है । जानते, समझते और पहचानते हुए भी हम भटकते रहेंगे ।

—भटकन का इतिहास संभवतः मनुष्यता के साथ जुड़ा हुआ है :

● कौन नहीं भटका यहां :

—राम

—कृष्ण

—बुद्ध

—महावीर

—ईसा

—मुहम्मद पैगम्बर

—जरदस्तु

—अथवा वे सब जिनके नाम पर आज एक नहीं सैकड़ों ताजमहल खड़े हो गये हैं : भटके हैं सब ? भटकना उनकी नियति थी । अब भी यह अटूट परंपरा चली आ रही है :

—भटकना हमारी भी नियति है । यही नियति हमारी पीढ़ी की होगी । पीढ़ी नहीं पीढ़ी-दर-पीढ़ी तक चलेगी यह ।

□

—भटकने के इतिहास का सम्यक्-ज्ञान हो जाए तो प्रश्न शेष नहीं रहते ।

—वेद-पुराणों के उद्धरण हमारी बौद्धिक-क्षमता से आगे चले जाते हैं ।

—प्रेम अमर तत्व है, संशय नहीं है ।

—प्रेम में प्रीति भी है और प्रतिकार भी है ।

—प्रेम श्रेय भी है, प्रेय भी है ।

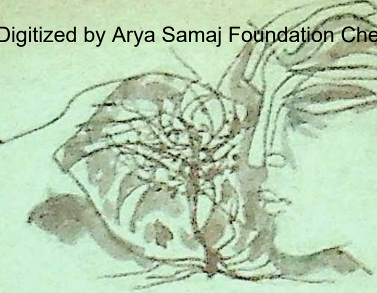

—प्रेम द्विधर्मी शिराओं का एकाकी रक्त-संचार है तो वही प्रेम विषकन्या भी है।

—प्रेम प्रीत है, प्रतीति है तो निर्मम और हत्यारों के तथाकथित मंदिरों के अभय द्वार भी हैं।

—प्रेम के नाम पर बलि कौन नहीं देता ? प्रेम के नाम पर स्वार्थ की सिद्धियां प्राप्त करने के प्रयत्न कौन नहीं करता ? प्रेम का राम-नाम जाप हो या राधा-कृष्ण की प्रणय लीला का स्वप्न हो, कौन, कहां, कितनी तरह से धोखा नहीं देता।

☐

—मेरे दोस्त ! हत्या हुई, यह एक भयानक समाचार हो सकता है। हत्या प्रेममय हुई, यह कोई समाचार नहीं है। अनजाने छले गये समाचार नहीं बनाते। वास्तविक समाचार बनाते हैं, दो जाने-पहचाने, अटूट-अचल और पारदर्शी रिश्तों के स्वामी।

—छलना मायाजाल है : वह भटका कर संतुष्ट हो सकती है; वह उतनी ही संतुष्ट होगी रक्त पीकर।

—प्रेमियों के संसार का इतिहास भयंकर रहा है : किसी प्रेमी ने अटूट और अचल अनंत संसार छोड़ दिया तो ऐसे भी प्रेमी हैं जो प्रेम का 'राधा-कृष्ण' नाम तो जपते हैं किंतु उनके भीतर कंस बैठा होता है।

—कंस ने किस व्याकरण का पालन किया था। कंस ने किस संज्ञा को स्वीकारा था। वह मदांध सत्ता-धारक था।

—समय इतिहास को दोहराता है : अपराध आज भी होते हैं, सभी करते हैं : किंतु कंस सत्ता के गलियारे में ही पैदा हो सकते हैं।

(राजेन्द्र अवस्थी

मंदिर से हृदयगंगा

हमारे संस्थान के एक अत्यंत प्रतिष्ठित सदस्य श्री सूरजमल अग्रवाल हाल ही में लंदन गये थे । लंदन से लौटकर उन्होंने मुझे एक पुस्तक दी— हृदयगंगा । हृदयगंगा के लेखक हैं— श्री रमेश पटेल, जो मूलतः हैं तो गुजरात के लेकिन लंदन में उन्होंने एक होटल खोला और होटल का नाम है— मंदिर । यह विशुद्ध शाकाहारी होटल हैनवे प्लेस, लंदन डब्ल्यू-१ में स्थित है । यह होटल पैंतीस वर्षों से चल रहा है और केवल भारतीयों के लिए ही नहीं बल्कि वहां के अंगरेजों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है । अग्रवाल साहब ने बताया कि होटल में काफी भीड़ होती है और विशुद्ध शाकाहार को प्रोत्साहन देने के लिए श्री रमेश पटेल का प्रयत्न होता है कि भोजन अत्यंत स्वादिष्ट बने ।

श्री अग्रवाल ने मुझे श्री रमेश पटेल की 'हृदयगंगा' भेंट की तो मैं लेखक की इस तरह की कल्पना शक्ति और कलापूर्ण बहुरंगी चित्रों की छपाई देखकर दंग रह गया । इस पुस्तक में मंदिर का मालिक एक कवि के रूप में उभरा है । इसमें ५१ गुजराती प्रेम कविताएं हैं । इन कविताओं के अनुवाद, अंगरेजी, फ्रेंच, जरमन, स्पेनिश, रशियन, इस्पैरंटो, हिंदी और मराठी भाषाओं में साथ-साथ प्रकाशित किये गये हैं । संकलन एक है लेकिन भाषाएं अनेक हैं ।

श्री रमेश पटेल का जीवन भी बहुरंगी प्रतीत होता है । वे सन १९३६ में रंगून में पैदा हुए । छह वर्षों के बाद उन्हें भारत लाया गया । वे नासिक में बड़े हुए और योग की शिक्षा ली तथा रंगोली कला में स्वयं को दीक्षित किया । आगे चलकर अपने पिता के साथ सोने और हीरे के व्यापार को श्री पटेल ने संभालना शुरू किया और फिर १९५७ में इंगलैंड पहुंच गये ।

श्री रमेश पटेल की जीवनी लिखना मेरा उद्देश्य नहीं है, बात उनकी प्रेम कविताओं के संग्रह हृदयगंगा से जुड़ी है । मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि इस संकलन का प्रकाशन

श्री रमेश पटेल की बौद्धिकता, सुरुचिसंपन्नता और साहित्य संवेदनशील कवि मन का सर्वोत्तम उदाहरण है ।

राजनेताओं के लिए स्कूल

हमारे राजनेताओं को शिक्षित करने का साहस कोई नहीं कर सकता लेकिन फुटबॉल के देश ब्राजील ने इस दिशा में लंबी किक लगायी है । ब्राजील ने अपने राजनेताओं को प्रशिक्षित करने के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की है । इसमें वहां के राजनेता इस बात के लिए प्रशिक्षित किये जाएंगे कि राजनीति में रहकर बेहतर काम कैसे करें । ब्राजील ने सही वक्त पर सही कदम उठाने की सबसे पहले कोशिश की है । उसकी यह पहल शायद गिनीज बुक में दर्ज हो जाए लेकिन ऐसे देशों की संख्या कम नहीं है जहां राजनेताओं को शिक्षित करनेवाले विद्यालयों की और भी अधिक जरूरत है । हमारे देश में तो ऐसा विद्यालय बहुत पहले खुल जाना चाहिए था । ब्राजील के दिखाये रास्ते पर चलकर नेताओं को हम बहुत कुछ सिखा सकेंगे । इस सदी के अंत तक राष्ट्रीय स्तर पर शत-प्रतिशत लोगों को शिक्षित बनाने का लक्ष्य रखा गया है । अगर ब्राजील ने रास्ता न दिखाया होता तो हम सिर्फ जनता को ही शिक्षित कर अपना लक्ष्य पूरा मान लेते लेकिन अशिक्षित राजनेताओं के कारण हमारी योजना अधूरी रहती । ब्राजील की तरह राजनेता प्रशिक्षण केंद्र खोलकर हम जनता के साथ नेताओं को भी शिक्षित कर लेते हैं तो यह निश्चय ही इस सदी की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी । ब्राजील के १८० राजनीतिज्ञों में मेयर तथा काऊंसिलर ने इस स्कूल में नाम लिखाया है । स्कूल में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र तथा सरकारी नीतियों संबंधी जानकारी दी जाएगी ।

धर्म के अंधकार में कब तक जिएंगे

हमारे देश को तोड़ने की कोशिश बराबर हो रही है और उसका माध्यम है जाति और धर्म । हम यह भूल जाते हैं कि हमारी पहचान जन्मभूमि के बाद ही होती है । हम जिस परिवेश में पलेंगे बस वही हमारा संप्रदाय बन जाएगा । आश्चर्य तो यह है कि जाति और धर्म की वीभत्स दौड़ में इसलाम सबसे आगे है । मुझे कुआलालंपुर (मलेशिया) का एक समाचार 'एशियन एज' में पढ़ने को मिला । वहां कठपुतलियों का खेल दिखाया जा रहा था । मलेशिया के [illegible] ने कठपुतलियों का खेल

इसलिए नहीं होने दिया कि वह रामायण पर आधारित था जो हिंदू धर्म का प्रतीक है । सत्य तो यह है कि मलेशिया, इंडोनेशिया और थाइलैंड में मैंने स्वयं देखा है कि वहां हिंदू देवी-देवताओं की बहुतायत है । सत्तारूढ़ दल ने इसके बावजूद कठपुतलियों का तमाशा नहीं होने दिया । कहा गया कि यदि यह तमाशा दिखाया जाएगा तो इसलाम विरोधी होगा और पत्थरों से मार-मारकर उनकी हत्या कर दी जाएगी तथा उनके हाथ-पैर काट दिये जाएंगे । आखिर कठपुतलियों का तमाशा दिखाने की आज्ञा तब मिली जब उन कठपुतलियों को मुसलिम जामा पहनाया गया और हिंदू चरित्रों को इसलाम के चरित्र में बदला गया । मलेशिया की सरकार ने कभी सोचा है कि यही व्यवहार यदि भविष्य में भारत के हिंदू धर्मांध सत्ताधारी करने लगेंगे तो उनके पास क्या उत्तर होगा ?

चैता ही क्यों सुनते हैं लालू यादव

बिहार विधानसभा के सदस्य श्री गौरीशंकर नागदंश ने लिखकर बताया है कि लालू यादव चैता सुनने के बहुत प्रेमी हैं । लालू १९९० में सत्ता में आये और उनके चैता प्रेम ने बिहार से लेकर दिल्ली तक एक यक्ष प्रश्न खड़ा कर दिया । यह चैता प्रेम कई नजरिये से देखा जाने लगा । वैसे बिहार ही नहीं, उत्तर प्रदेश में भी चैता लोकप्रिय है लेकिन बिहार में मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के निवास स्थान पर बने चबूतरे पर जब चैता गाया जाता है तो उस दिन उन्हें लगता है कि उनकी मिट्टी से सनी धोती और खुरदरे हाथ-पैरों में परियोंवाले पंख उग आये हैं । लालू को गर्व है कि कई सदी बाद गांव और गरीबों के गीतों को राजाश्रय मिला है । वे सोचते हैं कि पहली बार बिहार की राजनीति ग्रामोन्मुखी, गलीमुखी, मोहल्लामुखी और हरिजनबस्तीमुखी हुई है । सबसे छोटे और सबसे पिछड़े को उठाने में कहीं-न-कहीं लालू को आंतरिक खुशी मिलती है वैसे इस कार्यक्रम के दौरान खैनी, गांजा और देशी शराब भी वहां पर्याप्त मात्रा में मौजूद होती है । तब भीमसेन जोशी, पं. रविशंकर, जुबिन मेहता, माइकल जैक्सन— जैसे लोग बिहार से दूर बैठ अपने घर के दरवाजे बंद कर लेते हैं— लालू के यहां चैता जो मनाया जा रहा है । जो हो, मैं तो लालू यादव का कायल हूं क्योंकि ताल ठोंककर धड़ल्ले से वे प्रजातंत्र के मैदान में उतरे हैं जो खरे बनकर फिर से मुख्यमंत्री की कुरसी पर आन विराजे हैं । जय हो लालू की... जय हो चैता की... ।

—राजेन्द्र अवस्थी

आजाद देश की संसद और विधानसभाएं

खून-खराबा और जूते-चप्पलों का खुला नाटक

● नवीन पंत

सदन की कार्यवाही में बाधा डालना, सदन की कार्यसूची को फाड़ देना, असंसदीय भाषा और अमर्यादित टिप्पणियां करना और अध्यक्ष के आसन के नीचे बैठकर नारे लगाना सदस्य अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं।

देश का सबसे बड़ा राज्य उत्तर प्रदेश... राजधानी लखनऊ... प्रशासन का केंद्र... एक छोटी-सी घटना...

दो गुटों के संघर्ष में ३६ लोग और छह सुरक्षाकर्मी घायल। दंगाइयों ने एक-दूसरे के खिलाफ जूते, चप्पल, माइक्रोफोन, कुरसियां और कांच के गिलास फेंके। यह संघर्ष आधे घंटे तक चला। आधे घंटे बाद जब पुलिस 'मौका ए वारदात' पर पहुंची तो उसने शांति स्थापित की। पुलिस के पहुंचने के समय सारा स्थान समर क्षेत्र की तरह दिखायी दे रहा था। चारों ओर कांच के गिलास, टूटी कुरसियां, उखाड़े गये माइक्रोफोन और खून के धब्बे नजर आ रहे थे। रोंगटे खड़े कर देनेवाला दृश्य था।

सभी घायलों को अस्पताल ले जाया गया। दस लोगों को छोड़ शेष को प्राथमिक उपचार के बाद घर जाने दिया गया। तीन सुरक्षाकर्मियों सहित दस लोगों को अस्पताल में भरती होकर इलाज कराना पड़ा। कुछ लोगों को गहरी चोटें आयी थीं। एक का सिर फोड़ दिया गया था। कुछ की टांगों और कमर में गहरी चोटें आयीं।

सड़क पर नहीं, विधानसभा में

यह दंगा-फसाद सड़क पर नहीं हुआ। यह हुआ था १६ दिसंबर १९९३ को उत्तर प्रदेश विधानसभा के कक्ष में, बारहवीं उत्तर प्रदेश विधानसभा के प्रथम दिन के अधिवेशन के दौरान। इस अवसर पर सत्तारूढ़ पार्टी के अनेक मंत्री और विपक्ष के नेता उपस्थित थे।

राज्यपाल के अभिभाषण के बाद जैसे ही १२.३० बजे सदन की बैठक पुनः शुरू हुई विपक्ष के उपनेता ने कोई विषय उठाना चाहा। अध्यक्ष श्री धनीराम वर्मा ने इसकी अनुमति

नहीं दी । इस पर भारतीय जनता पार्टी के क्षुब्ध सदस्य अध्यक्ष के आसन के नीचे जाकर बैठ गये और नारे लगाने लगे । भारतीय जनता पार्टी के कुछ सदस्य सदन के सचिव की मेज पर भी बैठ गये । कुछ अन्य कागज के गोले बनाकर अध्यक्ष की ओर फैंकने लगे ।

अध्यक्ष का आरोप है कि कुछ सदस्यों ने उनकी ओर चप्पलें और जूते भी फेंके । इसकी पुष्टि नहीं हो सकी ।

अध्यक्ष को कोई जूता-चप्पल नहीं लगा । हंगामे के कारण अध्यक्ष ने एक घंटे के लिए सदन की बैठक स्थगित कर दी । अध्यक्ष के जाने के बाद उनके आसन पर एक सदस्य जाकर बैठ गये । शीघ्र ही अन्य सदस्यों ने उन्हें वहां से उठा दिया ।

मुलायम सिंह

विधानसभा की बैठक स्थगित होने के बाद भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों ने अध्यक्ष के आसन के नीचे का स्थान छोड़ दिया । इस बीच सत्तारूढ़ पार्टी के सदस्यों और भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों के बीच कुछ कहा-सुनी हुई । इसके बाद सदन के कक्ष में सत्तारूढ़ पक्ष और भारतीय जनता पार्टी के बीच 'घमासान युद्ध' शुरू हो गया । यह पता नहीं लग सका कि शुरुआत किसने की । दोनों पक्षों ने दूसरे पक्ष पर शुरुआत करने का आरोप लगाया ।

विधानसभा में सड़क-छाप लड़ाई का दृ

लगभग २०-२५ मिनट तक दोनों पक्ष एक-दूसरे से जूझते रहे । ईंट पत्थर की कमी भी संघर्ष में शिथिलता नहीं आयी । उन्होंने एक-दूसरे पर माइक्रोफोन, कुरसियां, गिलास, पेपरवेट और किताबें फेंकी । कांग्रेस और जनता दल के सदस्यों ने दोनों पक्षों को शांत करने का प्रयत्न किया किंतु उन पर इसका कोई असर नहीं पड़ा ।

भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों की जमकर पिटाई हुई, क्योंकि उनके अधिकांश सदस्य सदन छोड़कर चले गये थे । दो पूर्व अध्यक्षों श्री केसरीनाथ त्रिपाठी और श्री एच. के. श्रीवास्तव का सिर फोड़ दिया गया । दो महिला सदस्यों श्रीमती उर्मिला यादव और श्रीमती उर्मिला राजपूत को भी नहीं छोड़ा गया ।

लोकतंत्र का खूबसूरत मजाक

यह हमारे लोकतंत्र की एक खूबसूरत छोटी-सी घटना है, जो इस बात को प्रकट क है कि 'गांधीजी के इस देश में हमने लोकतंत्र की राह में कितनी जबरदस्त प्रगति की है । फिर, ऐसा नहीं है कि यह 'प्रगति' केवल उत प्रदेश में हुई हो । देश के सभी राज्यों में हमने इस दिशा में अभूतपूर्व प्रगति की है ।'

लगभग पांच वर्ष पहले तमिलनाडु विधानसभा में लगभग ऐसी ही स्थिति हुई थी । अनेक सदस्यों के कुरते धक्का-मुक्की में फाड़ दिये गये थे । एक महिला सदस्य को, जो अब राज्य की मुख्यमंत्री हैं, अपमानित करने का प्रयत्न किया गया था ।

विधानसभाओं में बैठे हमारे प्रतिनिधि ही तो हैं

सदन की कार्यवाही में बाधा डालना, सदन की कार्य सूची को फाड़ देना, असंसदीय भाषा और अमर्यादित टिप्पणियां करना और अध्यक्ष के आसन के नीचे बैठकर नारे लगाना सदस्य अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं । अपना क्रोध प्रकट करने के लिए जूते, चप्पल फेंकना भी वह उचित समझते हैं ।

स्व. राजनारायण का नाटक

सदस्य अध्यक्ष के आदेशों का उल्लंघन करना शान की बात समझते हैं । इस पर उन्हें 'नामित' किया जाता है और फिर सदन छोड़ने का आदेश दिया जाता है । स्वर्गीय राजनारायण को तो नामित किये जाने के बाद १५-२० सुरक्षाकर्मी सदन से उठा कर ले जाते थे । वे स्वेच्छा से सदन से बाहर जाने को तैयार नहीं होते थे ।

अनुमान है कि लोकसभा और राज्यसभा की एक मिनट की कार्यवाही पर ४०० रुपये का खर्च आता है । राज्य विधानसभाओं पर खर्च कम आता होगा, किंतु उत्तर प्रदेश में वह ७५ रुपये प्रति मिनट से कम नहीं हो सकता । वास्तविक खर्च इससे कुछ अधिक भी हो सकता है । लेकिन हमारे विधायक और सांसद, जो देश की गरीब जनता के प्रतिनिधि होने का दम भरते हैं, निर्विकार भाव से कई दिनों तक संसद और विधानसभाओं की कार्यवाही नहीं चलने देते ।

बोफोर्स का मुद्दा हो या गैट समझौता, शेषन का आचरण हो या प्रतिभूति घोटाला, संसद की कार्यवाही नहीं चलने दी गयी । यह देखा गया है कि सरकार और विपक्ष दोनों अड़ियल, निरर्थक और अनुचित रवैया अपना लेते हैं और सामान्य करदाताओं को इसकी कीमत चुकानी पड़ती है ।

कौन मरा, कौन जिया किसे फिकर है !

कभी-कभी किसी संसद सदस्य की असामयिक मृत्यु पर बिना कोई कार्य किये संसद की बैठक स्थगित कर दी जाती है । क्या दो मिनट का मौन रखकर और दिवंगत आत्मा की शांति का प्रस्ताव पारित करके सदन की कार्यवाही आगे नहीं चलायी जा सकती ?

घनीराम वर्मा

कभी सदन की कार्यवाही 'कोरम' की कमी के कारण स्थगित कर दी जाती है तो कभी-कभी तो भोजनावकाश के बाद सामान्यतः सदन में गिनती के सदस्य रह जाते हैं । सरकार और विपक्ष के बीच एक अलिखित समझौता है कि कोई भी सदस्य 'कोरम' का प्रश्न नहीं उठाएगा । सामान्यतः इस समझौते का विपक्ष के सदस्य पालन करते हैं । लेकिन अगर किसी दिन किसी सदस्य ने 'कोरम' का सवाल उठा दिया तो अध्यक्ष अथवा पीठासीन अधिकारी के लिए सदन की बैठक स्थगित करने के अलावा कोई चारा नहीं रहता । क्या हमारे संसद सदस्यों को

जो कहते हैं कि उनके मन में गरीबों के लिए अत्यधिक दर्द है, उस दर्द को प्रकट करने के लिए भोजन करने के बाद संसद की कार्यवाही में भी भाग नहीं लेना चाहिए ? क्या वे सार्वजनिक महत्त्व के विषयों को संसद में शक्तिशाली ढंग से नहीं उठा सकते ?

सदन में छलांग

इसका नतीजा यह हो रहा है कि संसद आम लोगों से कट रही है । वह आम जनता की भावनाओं को मुखरित करने में सफल नहीं हो रही है । परिणामस्वरूप दर्शक दीर्घा से लोग सदन में छलांग लगाते हैं । इन लोगों का एकमात्र उद्देश्य कुछ ज्वलंत प्रश्नों की ओर संसद का ध्यान आकृष्ट करना होता है । इस तरह का आचरण करनेवालों को सदन की अवमानना करने के अपराध में एक या दो दिन के लिए जेल भेज दिया जाता है । संसद, सरकार और राजनीतिक नेतृत्व इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं देता कि ऐसी घटनाएं क्यों होती हैं ? इन्हें रोकने के लिए क्या किया जा रहा है ?

हमारे देश का चेहरा है—संसद

हम जिन्हें चुनकर संसद या विधानसभा में भेजते हैं, वे वहां अपने निर्वाचन क्षेत्र की पीड़ा, इच्छाओं तथा आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं । उन्हें अपने क्षेत्र का चेहरा अथवा दर्पण माना जाता है । उन्हें अपने क्षेत्र की सभ्यता, संस्कृति और तहजीब का प्रतिनिधि माना जाता है ।

पिछले कुछ वर्षों में संसद और राज्य विधानसभाओं में चुनकर आनेवाले कुछ व्यक्तियों के चरित्र पर प्रश्नचिह्न लगाये गये हैं । यह आरोप लगाया गया है कि सभी राजनीतिक दल चुनाव जीतने के लिए आपराधिक तत्वों की सहायता ले रहे हैं, उन्हें चुनाव में टिकट दे रहे हैं । कुछ समय पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा था कि उत्तर प्रदेश विधानसभा में एक सौ से अधिक विधायक ऐसे हैं जिनकी आपराधिक पृष्ठभूमि है । यह बात उत्तर प्रदेश पर ही नहीं कुछ अन्य राज्यों पर भी लागू होती है । कभी-कभी हमारे द्वारा हमारी गलती से चुने गये इन मूढ़ विधायकों की कार्रवाई से हमारा सिर लज्जा से झुक जाता है ।

अपनी सुविधा चाहिए : गरीबों की क्या पूछ

हमारे इन प्रतिनिधियों को सभी सुविधाएं मिलती हैं । अच्छा वेतन, दैनिक भत्ता, मुफ्त आवास, टेलीफोन और पेंशन और अन्य कई सुविधाएं । लेकिन लगता है कि इनकी सुविधाओं और अधिकारों की भूख शांत नहीं हुई है । ये देश के प्राणदाता हैं । सुविधाएं लेने और देने के अधिकारी हैं । सुविधाएं प्राप्त करते समय लगभग सभी सांसद अथवा विधायक एक हो जाते हैं । उस समय ये देश की गरीबी और गरीबों को भूल जाते हैं । एक ही दिन में

लगभग सर्वसम्मति से सुविधाएं देने संबंधी विधेयक पारित हो जाता है ।

हमारे सांसदों को इन सब सुविधाओं के अतिरिक्त विशेष कोटे के अंतर्गत टेलीफोन, गैस कनेक्शन देने का अधिकार है । वे आपको रेल यात्रा का आरक्षण दिलवा सकते हैं, स्कूल, कॉलेज और अस्पताल में दाखिला दिला सकते हैं। संक्षेप में वे आपकी जिंदगी को खुशनुमा बना सकते हैं ।

एक करोड़ खर्च कर सकते हैं वे !

वर्तमान सरकार की मेहरबानी से संसद सदस्यों को एक विशेषाधिकार अथवा सुविधा और प्रदान की गयी है । प्रत्येक संसद सदस्य को अपने निर्वाचन क्षेत्र में विकास कार्यों के लिए एक करोड़ रुपये दिये गये हैं । विकास कार्य क्या हों, कहां हों इस बारे में संसद सदस्य का निर्णय अंतिम माना जाता है । लेकिन इस सुविधा का दुरुपयोग न हो इसकी पक्की व्यवस्था नहीं की गयी है ।

हमारे सांसदों अथवा विधायकों के दो रूप होते हैं । एक वोट मांगते समय और दूसरा निर्वाचित होने के बाद । वोट मांगते समय उम्मीदवार नम्रता की प्रतिमूर्ति होता है । वह आपके लिए आकाश के तारे तोड़कर लाने का वचन देता है । लेकिन चुने जाते ही उसके तेवर बदल जाते हैं ।

वह अत्यधिक व्यस्त हो जाता है, सत्ता और उत्तरदायित्व उसका रूपांतरण कर देते हैं । सरकारी अफसर, ठेकेदार और सत्ता के दलाल उसे घेर लेते हैं । उसके पुराने मित्र उससे आसानी से मिल नहीं पाते । उसका जीवन बदलने लगता है । इसका अनुमान आप उसके कपड़ों, घर और घर की सजावट से लगा सकते हैं ।

सुरक्षा के लिए कमांडो

निर्वाचित होते ही उसके जीवन को संकट उत्पन्न हो जाता है । उसकी सुरक्षा के लिए कमांडो दस्ते नियुक्त कर दिये जाते हैं । घर की चाहरदीवारी पर कांटेदार तार और सर्चलाइट लगा दी जाती है । उससे मिलने के लिए जाने वाले उसके ही क्षेत्र के लोगों को मेटल डिटेक्टर से गुजरना पड़ता है ।

किसी समय हमारे सांसद और विधायक जनता की सेवा की भावना से राजनीति में आते थे । वे अपना तन, मन, धन, जनता जनार्दन की सेवा में अर्पित कर देते थे । मोती लाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, देशबंधु चित्तरंजन दास, डॉ. कैलाश नाथ काटजू, गोविंद बल्लभ पंत और डॉ. विधान चंद्र राय जैसे नेता अपनी शानदार वकालत की प्रैक्टिस और व्यवसाय छोड़कर राजनीति में आये थे । उन्होंने अपनी संपत्ति तथा जीवन का बड़ा हिस्सा देश सेवा में समर्पित कर दिया । आज भी संसद और राज्य विधानसभाओं में थोड़े से लोग ऐसे हैं, जिन पर हम गर्व कर सकते हैं । लेकिन अधिकांश लोगों ने राजनीति को 'कैरियर' व्यवसाय और धन कमाने का साधन बना लिया है । अगर जनता ने अपने वोट के अधिकार द्वारा इस प्रवृत्ति को दृढ़ता से नहीं रोका तो हमारा लोकतंत्र मखौल बनकर ही रह जाएगा । उसके लिए उत्तरदायी कौन होगा ? वे नेता, हम या आप ?

—२२ मैत्री अपार्टमेंट्स
ए-३ पश्चिम विहार नयी दिल्ली

बिगाड़े गये इतिहास की सच्चाई

खजाने का सबसे बड़ा हाकिम हिंदू होता था !

● हबीब खा

इस दौर में राजनीति करने का मूल उद्देश्य मजहब को सियासत में घोलकर 'धर्मनिरपेक्षता' का झूठा नगाड़ा बजाना है । इस प्रवृत्ति के लोग यदि अपने अतीत तथा देश के बाबत सोचें कि इसे आजाद कराने में देशवासियों को क्या सही कीमत चुकानी पड़ी, तो वे अपने कर्मों को कोसेंगे । आज ये लोग उन नेताओं और इतिहासकारों को भी भूल गये हैं, जिन्होंने वतन के आगे मजहब को कभी रोड़ा नहीं बनने दिया व धर्म का इस्तेमाल देश के कल्याण, भाईचारा एवं एकता के लिए करते हुए खुशी से फांसी का फंदा अपने गले में डाला था । गौरतलब है कि मुंशी प्रेमचंद ने कहा था— ''देशभक्ति का दंभ भरनेवालों के लिए जनता का खून चूसना बहुत बड़ा अपराध है ।''

भारत की आजादी से पूर्व कुछ विदेशी इतिहासकारों ने हमारे इतिहास की पुस्तकों में सांप्रदायिकता का जो गलत नमूना दर्शाया था, वो आज तक हमारा समाज पढ़कर गुमराही के पथ पर चलने को आमादा हो चुका है । शायद इसी वजह से आज हिंदू वर्ग औरंगजेब को कट्टर दुश्मन की संज्ञा दे डालता है, तो मुसलमान छत्रपति शिवाजी को अपना शत्रु होने के अहसास से भी नहीं बचा पाता । जबकि इतिहास का सही अवलोकन इस बात को सरासर नकारता है ।

खुदा की इबादत कौन नहीं करता

बाबर ने हिंदुस्तान में मुगल बादशाहत की नींव रखी । अकबर ने हिंदुस्तानी चाल-ढाल रीति-रिवाज को बड़ी बुद्धिमत्ता और अपनी दूरदर्शिता से बढ़ाया । उसने अपने शासन को इन्हीं मूल सिद्धांतों पर कायम रखा, ताकि कौ और मजहबों के आपसी फसाद मिट जाएं औ हिंदुस्तान में हिंदुस्तानियत का बोलबाला का हो सके । अकबर के खयालात और उसूलों उसके समझदार एवं बुद्धिमान मंत्री अबुलफजल ने इन शब्दों में प्रकट किया है, अंकित है : 'ऐ इलाही ! जिस घर को देख हूं, उसमें तेरे खोजनेवाले हैं और जिस वा सुनता हूं, उसमें तेरी ही चर्चा है । कुफ्र और इसलाम तेरे ही रास्ते पर दौड़ते हैं और कह हैं— तू एक ही है । तेरा कोई साझीदार नहीं । मसजिद है तो उसमें तेरी याद में नारा-ए-कुद्‌दूस बुलंद होते हैं और गिरजा है तेरे ही प्रेम में घंटे बजाते हैं । कभी मैं बुतखा

में बैठकर तेरी इबादत करता हूं, कभी मसजिद में यानी कि तुझे ही घर-घर में ढूंढ़ता हूं । जो तेरे खुसूसी लोग हैं, उन्हें न तो कुफ्र से मतलब है न इसलाम से । क्योंकि इन दोनों के लिए तेरी कुबूलियत के परदे में जगह नहीं है ।'

मक्का हिंदुओं का भी तीर्थ है !

हिंदू भी मुसलमानों के काबे को अपना ही इबादतगाह समझते थे । एक जमाने में काबा, अरब और अरब के आसपास रहनेवाले सभी मजहबवालों का एक पाक मरकज था । एक अंगरेज इतिहासकार बर्टन ने लिखा है : "हिंदू पंडित इस बात को दावे के साथ कहते हैं, कि मक्का में शिव और पार्वती कपोतेश्वर और कपोतेश्वरी की शक्ल में मौजूद हैं । कुछ अरब अदीबों ने भी लिखा है कि पैगंबर हजरत मुहम्मद के समय मक्का (सऊदी अरब) के बुतों में लकड़ी में खुदी हुई कबूतर और कबूतरी की मूर्तियां थीं जिन्हें हजरत अली ने पैगंबर के कंधे पर चढ़कर नीचे गिरा दिया था ।" एक दूसरे अंगरेज अदीब विल्फोर्ड ने लिखा है : "हिंदू कहते हैं कि मक्का या मोक्षेश में जो 'संग-ए-अस्वद' है, वह 'मोक्षेश्वर' शिव के अवतार का निशान है । शिव और पार्वती ने अल-हेजाज के अपने भक्तों की तपस्या से खुश होकर मोक्षेश्वर की शक्ल में मक्का में अवतार लिया था ।"

इब्ने बतूता की बात गलत नहीं है

एक बुजुर्ग लेखक इब्ने बतूता ने लिखा है कि एक हिंदू सरदार ने काजी की अदालत में सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के खिलाफ मुकदमा दायर किया । काजी ने मुहम्मद बिन तुगलक को अदालत में तलब किया और मुकदमे की बाकायदा सुनवाई के बाद हिंदू के पक्ष में फैसला दिया और मुहम्मद बिन तुगलक ने निर्णय के मुताबिक मुद्दई को मुतमइन किया । इससे यह साबित होता है कि मुसलमानी हुकूमत में हिंदू अपनी शिकायतों को दूर करा सकते थे । मुगल शहंशाहों की हुकूमत में हिंदू बहुत बड़ी तादाद में ऊंचे और जिम्मेदार ओहदों पर थे । शाहजहां के समय में नूरपुर के जगत सिंह ने १४ हजार राजपूतों की फौज लेकर शाहजहां के हुक्म से बलख और बदख्शां के उजबेकों के खिलाफ बड़ी बहादुरी से फौजकशी की ।

मुगलकाल में हिंदू ऊंचे अफसर थे

गोलकुंडा, अहमदनगर और बीजापुर के सुलतानों ने दरियादिली के साथ सभी फौजी और दीवानी महकमों को हिंदुओं के लिए खोल दिया । शिवाजी के वालिद शाहूजी अहमदनगर और बीजापुर दोनों रियासतों में बहुत अच्छे फौजी अफसर के ओहदे पर थे । सिकंदर लोदी ने हुकूमत के ऊंचे ओहदों पर पहुंचने के लिए हिंदुओं को खास तौर पर मदद की ।

खजाना हिंदुओं के हाथ

सर जान मैलकम ने अपनी राबर्ट क्लाइव की सबानेह उमरी में लिखा है—"दीवानी और माल के महकमों का पूरा इंतजाम और मुल्क की अंदरूनी हुकूमत की बारीकियां और छोटे-मोटे इंतजाम, जिन पर हुकूमत की मशीन का चलना निर्भर करता है । करीब-करीब सब उन्हीं लोगों के हाथों में रहे, जिनके हाथों में मुसलमानों के आने से पहले रह चुके थे । खजाने का सबसे बड़ा हाकिम कोई न कोई हिंदू होता था, जो कभी वजीर होता था और कभी नायब ।'

एक बहुत होशियार और हाजिर-जवाब मुसलमान बादशाह से पूछा गया कि—"आप अपने हम मजहब, मुसलमानों के मुकाबले में हिंदू अफसरों और मैनेजरों को क्यों इतना ज्यादा पसंद करते हैं ?" उसने जवाब दिया—"मुसलमान छलनी की तरह होता है । उसमें जो चीज डाली जाए फौरन बाहर निकल जाती है । हिंदू स्पंज की तरह होता है उसमें जो डाला जाए सब जज्ब हो जाता है और जरूरत के समय दबाने से फिर निकल आता है ।"

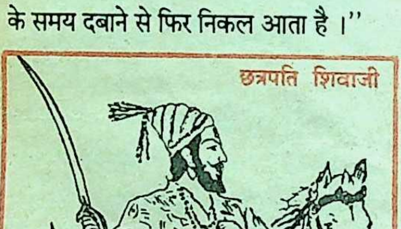

शिवाजी शाहजी के बेटे थे

जो हालत बंगाल की थी वही हालत महाराष्ट्र की थी । दुर्भाग्य से अंगरेजी इतिहासकार ने छत्रपति शिवाजी के मुताल्लिक अपनी गलत बयानियों के जरिये बहुत-सी गलतफहमियां पैदा कर दी हैं । शिवाजी को इसलाम और मुसलमानों का दुश्मन बताया गया जबकि सच्चाई इसके बिलकुल विपरीत है । शिवाजी के दादा मालोजी अहमदनगर के दरबार में एक नामवर फौजी कमांडर थे । शादी के एक वर्ष गुजर जाने के बाद जब उनके यहां कोई औलाद न हुई तब उन्हें बेहद चिंता हुई । उस जमाने में यह बहुत अच्छा नहीं समझा जाता था कि किसी हिंदू के यहां बेटा पैदा न हो । जबकि उनके छोटे भाई के आठ-आठ बेटे थे और मालोजी के कोई औलाद न थी । उन्होंने बहुत तीर्थ, व्रत किये मगर कोई नतीजा न निकला तो किसी ने उन्हें सलाह दी कि अहमदनगर किले के बाहर शाह शरफ के मजार पर जाकर अगर आप दुआ मांगें तो आपकी मुराद पूरी होगी । मालोजी ने यही किया । खुदा के फजल से सालभर के भीतर उनके यहां बेटे का जन्म हुआ और दूसरे साल फिर एक बेटे का जन्म हुआ । मालोजी को, चूंकि यह औलाद शाह शरफ की दुआ से मिली थी इसलिए उन्होंने अपने बड़े बेटे का नाम शाहजी रखा और छोटे बेटे का नाम शरफजी । शिवाजी शाहजी के बेटे थे ।

शिवाजी के निजी सचिव मुल्ला हैदर थे

एक दूसरे मुसलिम संत मौनी बुबा थे । उनके ऊपर भी शिवाजी को बहुत विश्वास था । वे पाड़गांव में रहते थे । कर्नाटक के मोरचे पर जाने से पहले शिवाजी उनका आशीर्वाद लेकर गये । शिवाजी के निजी सचिव मुल्ला हैदर थे । शिवाजी के सारे गोपनीय दस्तावेज उसी के कब्जे में रहते थे । शिवाजी के सारे खत-ओ-किताबत उसी के सुपुर्द थे । शिवाजी की मृत्यु तक उसने वफादारी के साथ शिवाजी की नौकरी की ।

औरंगजेब की असली कीमत

शिवाजी के संबंध में अंगरेज इतिहासकारों ने जिस तरह भ्रांतियां फैलायीं उसी तरह औरंगजेब के मुताल्लिक भी एक उर्दू शायर ने बड़े दर्द के साथ लिखा है :

"हजारों साल में बस याद इतनी दास्तां उनको ।
कि आलमगीर पिदरकुश था जालिम था सितमगर था ।"

श्री पांडे के अनुसार—बचपन में मैंने भी स्कूल-कॉलेजों में इसी तरह की तारीख पढ़ी थी और मेरे दिल में भी इस तरह की बदगुमानी थी । लेकिन एक वाकया ऐसा पेश आया जिसने मेरी राय कतई बदल दी । मैं तब इलाहाबाद म्यूनिसिपल्टी का चेयरमैन था । त्रिवेणी संगम के करीब सोमेश्वर नाथ महादेव का मंदिर है । उसके पुजारी की मौत के बाद मंदिर और मंदिर की जायदाद के दो दावेदार खड़े हो गये । दोनों ने म्यूनिसिपल्टी में अपने नाम दाखिल खारिज की अरजी दी । उनमें से एक पार्टी ने कुछ दस्तावेज भी दाखिल किये थे । दूसरी पार्टी के पास कोई दस्तावेज न था । जब मैंने दस्तावेज पर नजर डाली तो मालूम हुआ वह हजरत औरंगजेब का फरमान था । उसमें मंदिर के पुजारी को ठाकुरजी के भोग और पूजा के लिए जागीर में दो गांव अता किये गये थे ।

मुझे शक हुआ कि यह दस्तावेज नकली है । औरंगजेब तो बुतशिकन था । वह बुतपरस्ती के साथ कैसे अपने को वाबस्ता कर सकता था ? मैं अपना शक रफा करने के लिए सीधा अपने चैंबर से उठकर सर तेज बहादुर सप्रू के यहां गया । सप्रू साहब फारसी के आलिम थे । उन्होंने फरमान को पढ़कर कहा कि यह फरमान असली है ।

मैंने कहा—''डॉक्टर साहब । आलमगीर तो मंदिर तोड़ता था । बुतशिकन था, वह ठाकुरजी के भोग और पूजा के लिए कैसे जायदाद दे सकता था ?'' सप्रू साहब ने अपने मुंशी को आवाज देकर कहा—''मुंशीजी, जरा बनारस के जंगमबाड़ी शिव मंदिर की अपील की मिसल तो लाओ ।'' मुंशीजी मिसल लेकर आये तो डॉक्टर सप्रू ने दिखाया कि उसमें औरंगजेब के चार फरमान और थे जिसमें जंगमों को मुआफी की जमीन अता की गयी थी । अकबर के बारे में सभी जानते हैं । उससे ज्यादा उदार मुगल बादशाह और कोई नहीं हुआ । अकबर ने हिंदुओं का दिल जीत लिया था । ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं जहां हिंदू और मुसलमानों के बीच भेद नहीं रहे । नकली भेद बनाये अंगरेज इतिहासकारों ने जिन्हें माफ नहीं किया जा सकता ।

—३८७ हौजकाजी
दिल्ली-११०००६

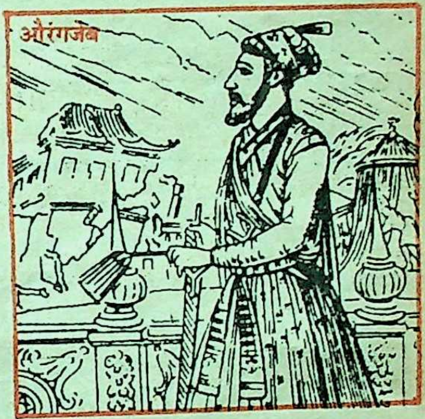

करीब-करीब सब उन्हीं लोगों के हाथों में रहे जिनके हाथों में मुसलमानों के आने से पहले रह चुके थे । खजाने का सबसे बड़ा हाकिम कोई न कोई हिंदू होता था, जो कभी वजीर होता था और कभी नायब ।''

कुछ रोचक प्रसंग

महामना की व्यवहार कुशलता

महामना ने इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना करते समय उसके प्रथम प्राचार्य पद पर प्रोफेसर चार्ल्स ए किंग को शिवपुर बंगाल, से लाकर नियुक्त किया था । प्रोफेसर किंग की योग्यता एवं उनके दायित्वों के अनुरूप उचित वेतन दिया जा रहा था । उसी समय उस विभाग में प्रो. एस. एस. गैरोला भी प्राध्यापक थे, जिन्हें प्रो. किंग की अपेक्षा कम वेतन मिलता था । ध्यान देने की बात है कि प्रो. किंग के परिवार में पत्नी के सिवा कोई अन्य नहीं था, जबकि प्रो. गैरोला का परिवार भरा-पूरा था । एक बार प्रो. किंग इस सोच में पड़े कि गैरोला अपना काम कैसे चलाता है । इस जिज्ञासा के साथ वे एक दिन मालवीयजी से मिले और पूछा, "पंडत (वे अपनी टूटी-फूटी हिंदी में पंडत ही कहते थे) तुम गैरोला को मुझसे बहुत कम वेतन देता है, जबकि हम दोनों एक ही काम करता है । वह अपना खर्च कैसे चलाता होगा ?" इस पर मालवीयजी ने कहा, "प्रो. किंग ! तुम गैरोला से ही पूछ लेना और मुझे भी बताना ।" प्रो. किंग के पूछने पर गैरोला साहब ने बताया कि उन्हें जो वेतन मिलता है, उसमें से कुछ तो व्यक्तिगत खर्च के लिए रख लेते हैं, कुछ पारिवारिक खर्च के लिए घर भेज देते हैं और शेष राशि इंश्योरेंस के प्रीमियम के रूप में जमा करते हैं, उनका खर्च अच्छी तरह चल जाता है । प्रो. किंग को बहुत आश्चर्य हुआ, मालवीयजी से मिलकर कहा, 'गैरोला पूर्ण संतुष्ट है ।' तब मालवीयजी ने प्रो. किंग से पूछा, "तुम अपने वेतन से कितना बचा लेते हो ?" इस पर किंग साहब ने कहा, "नहीं बचता, सब खर्च हो जाता है ।" इस पर मालवीयजी ने हंसकर कहा, "अब आप समझे कि मैं क्यों गैरोला से अधिक आपको वेतन देता हूं ।"

(संस्मरण—प्रो. रामशंकर सिंह)

मेरा हजाम

—राममनोहर लोहिया

मेरे हजाम ने आज मुझे बताया कि उसकी प्रतिदिन की औसत आमदनी चार रुपये है और उसको बाल काटने की दूकान का पचास रुपये प्रतिमाह किराया देना पड़ता है । सरकार भी उस पर लगभग इतनी ही रकम पेशा-कर के रूप में लगाना चाहती है । बाल काटने की दूकानों के मालिकों की यूनियन, जिसके पदाधिकारी अब स्वतंत्र हो गये

हैं, चार रुपये प्रतिमाह से भी अधिक के पेशा-कर से छुटकारा पाने की कोशिश कर रही हैं, क्योंकि यह कर ऐसे लोगों पर लगाया जा रहा है, जिनकी औसत आमदनी दो या तीन रुपये प्रतिदिन है । यदि हम यह मान भी लें कि हजाम अपनी दैनिक आमदनी को ठीक-ठीक नहीं आंक पाया है और उसकी वास्तविक आमदनी ५ रुपये प्रतिदिन की है, तो उसकी मासिक आमदनी १५० रुपये होती है । फिर भी १४×१२ फीट की दूकान का किराया ५० रुपये प्रतिमाह तथा ऊपर से उतना ही टैक्स लादना भयंकर क्रूरता है । जब मैंने उससे पूछा कि वह किराया नियंत्रण कानून का सहारा क्यों नहीं लेता, तो उसने कहा कि अफसर और जज आमतौर से अपने वर्ग के लोगों के ही पक्ष में फैसला देते हैं और उसके जैसे गरीबों को जीतने का मौका बहुत कम है और इस मुकदमेबाजी का परिणाम यह भी हो सकता है कि उसे अपनी दूकान से ही हाथ धोना पड़ जाए । इस हजाम की मां, बीवी और तीन बच्चे हैं और इन ६ आदमियों का जीवन-निर्वाह २-३ रुपये प्रतिदिन पर ही होता है । आज दिनभर मैंने कोशिश की कि इस सूचना को भूल जाऊं । अपने भाषणों का अंजाम जानते हुए कि या तो वे छपते ही नहीं, या तोड़-मरोड़ कर छपते हैं, मैंने यह तरीका अपनाया है, ताकि कमरतोड़ टैक्सों और भारी मकान किरायों की तरफ लोगों का ध्यान आकृष्ट कर सकूं ।

देश की अधिकांश जनता इसी प्रकार पीड़ित है । पुरानी सांस्कृतिक परंपरा या लगातार शोषण या दोनों ने मिलकर उन्हें इस स्थिति से समझौता करने को बाध्य किया है । यदि ऐसा नहीं होता, तो अब तक वे बगावत कर चुके होते । आज उनके समर्थक या सहायक कम हैं । समाचार की दृष्टि से भी उनकी कहानी को प्रधानता नहीं दी जाती । घर-घर और दूकान-दूकान जाने के लगातार कठिन परिश्रम के बाद संगठन बनाकर ही उनके संघर्ष की पृष्ठभूमि तैयार की जा सकती है । उनकी समस्याएं आबादी के एक हिस्से के दूसरे हिस्से के साथ रिश्ते का पेचीदा सवाल पैदा करती हैं, जब न तो कोई बड़ा उद्योगपति होगा और न कोई बड़ा नौकरशाह, और राष्ट्रीय आमदनी में सभी बराबर के हिस्सेदार होंगे । सभी राजनीतिक पार्टियां इन समस्याओं से भागती रही हैं, या तो इसलिए कि उनका कोई अंतिम हल नहीं निकाल सकतीं, अथवा इस डर से कि स्थानीय समूह के इस विभाजन में उन्हें किसी न किसी का पक्ष लेना होगा । बड़े झगड़ों में पक्ष लेना आसान है । लेकिन स्थानीय झगड़े ही प्रमुख क्षेत्र हैं, जहां जीवन के प्रति बड़े अत्याचार रोज होते रहते हैं ।

जहां राष्ट्रीय भंडार इतना छोटा है, प्रत्येक की सभी के खिलाफ लड़ाई बड़ी निर्दय हो जाती है । हर कोई इसमें से सबसे ज्यादा निकालने की कोशिश करता है । जो मुल्क जितना ही गरीब होता है, उसमें शोषणजनित गैरबराबरी भी उतनी ही ज्यादा है । बड़े पूंजीपतियों के शोषण के खिलाफ काम भले ही न हो, मगर शिकायत तो है । लेकिन

स्थान विशेष पर शक्तिशाली और कमजोर के बीच होनेवाले जबरदस्त शोषण के खिलाफ न तो कोई शोर-गुल ही है और न कोई शिकायत । भारी किराया लेनेवाले और दूकानदार, महाजन और कर्ज लेनेवाले कारीगर, जमींदार और खेतिहर मजदूर, उपभोक्ता और सरकार तथा व्यापारी एवं पुलिस और जनता के आपसी संबंधों को खोलकर आम लोगों के सामने रखा जाना चाहिए । इन रिश्तों में सुधार लाने के लिए संगठन बनाकर आंदोलन चलाये जाने चाहिए । अकसर, ऐसे मामलों में शोषक और शोषित मानवता के दबे हुए लोग ही होते हैं, अंतरराष्ट्रीय अथवा यूरोपीय-अमरीकी जीवन-स्तर की पृष्ठभूमि में ये दोनों गरीब हैं । कुछ लोगों ने गलत धारणा बना ली है कि इन सवालों को उठाने से जनता विभाजित हो जाएगी । परंतु, इन दबे हुए लोगों को, अच्छे जीवन-स्तर पर लाने के लिए स्थानीय रिश्तों का परदाफाश करके शोषकों के खिलाफ संगठित और तेज आंदोलन चलाना ही होगा ।

(१९५६ में लिखित लेख से)

वाइसराय से मां का स्थान बड़ा है

यह घटना उन दिनों की है जब सर आशुतोष मुकर्जी कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश होने के साथ-साथ कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति भी थे । ऐसे उच्च आदर्शोंवाले विद्वान भारतीय मनीषी को तत्कालीन अंगरेज सरकार ने इंगलैंड भेजने का निश्चय किया । जब सारी तैयारी हो चुकी थी तब सर आशुतोष की धार्मिक विचारों वाली मां ने उन्हें विदेश जाने से मना कर दिया । मां की आज्ञा को सर्वोपरि समझकर सर आशुतोष ने सरकार को पत्र लिख दिया, "मेरे विदेश जाने के बारे में मेरी मां सहमत नहीं हैं, अतः मैं असमर्थ हूं ।"

पत्र पढ़कर वाइसराय लार्ड कर्जन क्रोधित हो उठे । उन्होंने सर आशुतोष मुकर्जी को बुलाकर कहा, "जाओ, अपनी मां से कहो कि भारत का वाइसराय तुम्हारे पुत्र को विलायत जाने का आदेश देता है ।"

जिस वाइसराय के सम्मुख बोलते हुए बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी डरते थे, उनके सामने आशुतोष बाबू बिना विचलित हुए बोले, "मैं अपनी मां की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता । हमारी मर्यादा, संस्कृति कहती है, 'मातृ देवो भव'—माता को देवता स्वरूप समझो ।"

सर आशुतोष मुकर्जी की दृढ़ मातृ-भक्ति को देखकर लार्ड कर्जन अवाक् रह गया ।

('वैज्ञानिकों के रोचक और प्रेरक प्रसंग—शुकदेव प्रसाद)

प्रस्तुति— डॉ. स्वर्ण शेखर सिंह

कहानी

रोशनी का सच

● प्रतिमा वर्मा

मुझे आपसे जो कुछ कहना है इसी वक्त कह देना है क्योंकि, भ्रम के पूरे घिरे आकाश में सचाई की बिजली कभी-कभार ही चमकती है। देर होने पर कहां, कब, कैसे लुप्त हो जाती है यह भी समझ में नहीं आता। सच यह भी है कि इस बिजली ने मुझे भौंचक्का कर दिया है, बताने, समझाने की मेरी शक्ति कुंद-सी हो गयी है। मैं जो बातों के लच्छे बनाने में माहिर समझा जाता हूं, इस समय चकराया हुआ खड़ा हूं। फिर भी बताना तो मुझे है, वो भी अभी ही।

पहले अपने बारे में— नाम— रामनाथ गुप्ता। उम्र बयालीस वर्ष। कद ऊंचा और बदन भरा। साधारण पैंट-शर्ट और चप्पल का पहनावा। कुल मिलाकर एक आम आदमी जिसमें हरचंद कोशिश के बावजूद कोई खासियत नहीं आ पायी। बी.ए. में दो बार फेल होने के बाद पढ़ाई छोड़ दी और पैतृक दूकान पर पिता और भाई के साथ बैठने लगा। शादी हो गयी। बच्चे भी। बाद में घर में अपना अलग चूल्हा हुआ तो थोड़ी स्वतंत्रता का अहसास हुआ। आम लोगों से कुछ अलग होने की कोशिश में गाइड बन गया, लाइसेंसशुदा भी नहीं, यों ही। खास लगने की कोशिश में कभी अंगरेजी बोलने का अभ्यास किया था, उसका लाभ उठाया। दो चार जुमले गुजराती, बंगाली और कन्नड़ के भी याद कर लिये। ज्यादातर मैं विदेशी पर्यटकों को, जो बड़े होटलों की कारों में नहीं पैदल टुकड़ियों में और रिक्शों पर चलते हैं और साधारण टूरिस्ट लांज में ठहरते हैं, पकड़ता हूं— 'वांट टु सी द रिवर गेंजेज सर... ? देयर आर सो मेनी घाट्स...' सड़क पर गरदन उठाये भ्रमित की तरह इधर-उधर ताकते उन जोड़ों या टुकड़ियों से मुखातिब होकर अपना परिचय देता हूं और उनकी आंखों में उभरी शंका का तत्क्षण समाधान कर देता हूं... "गिव मी वाटएवर यू लाइक सर... नो बार्गेन। आइ सिम्पली वांट टू

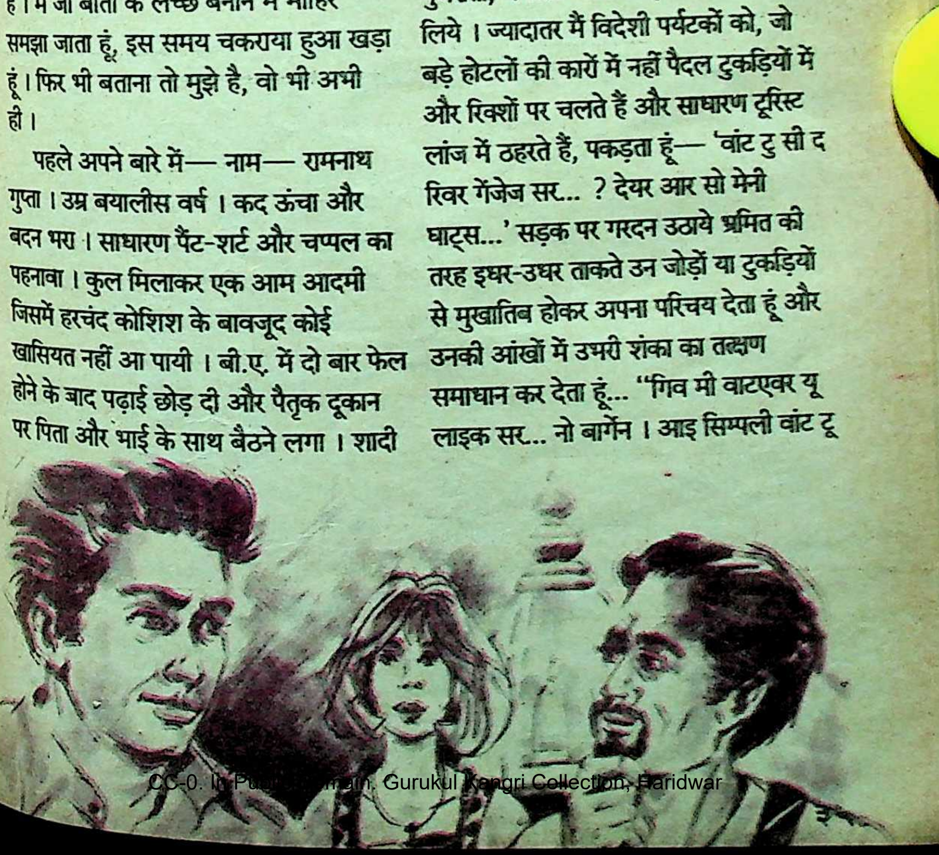

मैं काल्पनिक ऊंचाइयों में प्रकाशवृत्त पर थिरकता रहा । गाइड बना पर्यटकों को अपने शहर का इतिहास, भूगोल और परंपरा समझाता रहा और मेरे घर का भूगोल बदरंग होता गया । इतिहास में सीलन लग गयी । संस्कृति को दीमक ने चाट लिया । आप इसे क्या कहेंगे ?

हेल्प यू... दिस वे सर...'' और, उनके फैसला करने से पहले ही हंसता हुआ शुरू हो जाता हूं कि यह शहर बेनारस नाउ 'वाराणसी', कितना पुराना है कि इसका जिक्र 'द वेदाज' और 'द महाभारता' में भी आया है । किस घाट पर रामायण लिखा गया और किस मंदिर में किस राजा या रानी ने किस सन में कितना गोल्ड चढ़ाया— एंड देयर वाज ए किंग हरिश्चंद्रा हू सोल्ड हिमसेल्फ टु पे फॉर... वो घाट आप जरूर देखें... 'हरिश्चंद्रा घैट' !

दस में आठ नहीं तो दो-एक जरूर मेरे वाग्जाल में फंस जाते हैं । मैं उनसे पैसे लेता हूं । वे जो कुछ खरीदते हैं उस पर दुकानदार से बाद में कमीशन वसूल करता हूं । विदेशियों के साथ घूमते हुए ही नहीं, उनसे अलग होकर घर आने पर भी अपने को विशिष्ट समझने के खुमार में डूबा रहता हूं । पर्यटकों का मौसम न होने पर मैं उदास रहता हूं पर, कोई मुझे आम समझने की गलती न कर बैठे इसके लिए पूरी तरह सजग रहता हूं । घर में पत्नी को आंखें तरेरकर कभी-कभार घुड़क देता हूं— ''कोई भी तरीका नहीं है... !'' ''पड़ गये राम कुकुर के पाले !'' अपने को 'गॉड' और दूसरे को 'डॉग' बना देनेवाली यह लोकोक्ति मुझे बहुत भाती है । मैं समझता हूं इतने से मेरी सही तसवीर आपके आगे खिंच आयी होगी । अब मैं मुख्य घटनाक्रम पर आता हूं । वह पर्यटक जोड़ा स्टेशन के करीब एक साधारण-से होटल में ठहरा हुआ था । भूरी आंखों और तपे हुए तांबे की रंगत का अधेड़ पुरुष और पीछे उलटकर सामान्य ढंग से बाल झाड़े हुए ; खुशमिजाज दरम्याने कद की उसकी पत्नी । मैं बताये फोन नंबर पर मुझे खबर देते हुए होटल के मालिक ने, जिससे मेरा दोस्ताना था, कहा था— ये पढ़े-लिखे लोग हैं, देखने से ज्यादा जानने और समझने में दिलचस्पी रखनेवाले... खुद उन्हीं लोगों ने कहा है । वे एक ऐसा गाइड चाहते हैं, जो उनके साथ तो रहे मगर खर्च ज्यादा न आये । साथ ही, रटी-रटायी बातों से अलग भी कुछ बतला सके... मुझे फौरन तुम्हारी याद आ गयी...

... 'थैंक्यू यार ! बस पहुंच ही रहा हूं...' मैं उत्तेजना से भर आया था । इस तरह के अवसर मुझे कभी-कभार ही मिलते थे । बुलानाला की अपनी गली से निकलकर मैं मैदागिन चौराहे पर पहुंचा और स्टेशन की तरफ़ जाते ऑटो रिक्शा में बैठ गया । होटल स्टेशन से थोड़ा पहले मुख्य सड़क पर था पर बी श्रेणी से भी कुछ कम ही था । सामने का हिस्सा किसी तरह दर्शनीय बना लिया गया था, बाकी, हर तरफ

सस्तेपन की छाप थी । कमरों के पीछे खुलनेवाला बरामदा पीछे के साधारण मकानों से सटा हुआ था । उन मकानों की छतें संकरी थीं और टिन के काले बदरंग सायवान थे । कई दीवारों पर चूना सीमेंट लगा ही नहीं था, ऊपर से कहीं-कहीं उपले भी पाथे हुए थे । मुझे कोफ़्त-सी हुई... भला उन पर्यटकों को ऐसी जगह रहने की क्या सूझी ? होट्ल का मालिक जो, हर मौसम में सफारी सूट पहनता था और लगभग मेरी ही उम्र का था, मुझे देखकर मुसकराता हुआ बोला... "रूम नंबर आठ... मिस्टर एंड मिसेज रोजर्स, लेकिन, पांच मिनट ठहरकर जाना, वे नाश्ता कर रहे हैं... और सुनाओ..."

"सुनाऊंगा... फुरसत मिलने दो... कहते हुए मैं कुरसी पर बैठ गया और अपने लिए एक सिगरेट निकालकर पैकेट उसकी तरफ बढ़ाया । वह सिगरेट निकालकर बोला, "पैसा कुछ कम मिलेगा मगर एक बात है... कुटिलता से एक आंख दबाकर वह मुसकराया— वो जो औरत है न, बड़ी जालिम चीज है... तुम भी याद करोगे !"

यह अपनी नीरस दिनचर्या में रंगीनी भरने का उसका पुराना तरीका था । मैं उपेक्षा से मुसकराया, "हां, हां, खुली टांगों और गोरी चमड़ी की हर औरत तुम्हें जालिम लगती है, मुझे पता है !"

"तुम्हें नहीं लगती ?"

"मुझे तो भई उनके हाथ का वह बटुआ ज्यादा अच्छा लगता है,जिसमें से मेरे लिए रुपये निकलते हैं !"

हम दोनों जोर से हंस दिये थे । अपने सिगरेट को बदरंग ऐश-ट्रे में ठूंसकर मैं कमरा नंबर आठ की ओर चल दिया था ।

"प्लीज कम इन... !" खटखटाहट के जवाब में मुझे एक प्रभावी स्वर सुनायी दिया और फिर हम आमने-सामने थे ।

"आइ एम द गाइड सर रामनाथ गुप्ता, मैंने अपना परिचय दिया ।

"ग्लैड टू मीट यू मिस्टर घोप्टा... मैं विलियम रोजर्स हूं ।
सैनफ्रांसिस्को से आया हूं और ये मेरी पत्नी स्टेला हैं..."

पत्नी ने जब तक 'हाउ डू यू डू' कहकर मुसकराहट न बिखेर दी,तब तक वह चुप रहे फिर कहने लगे कि वे चीन और पाकिस्तान होते हुए आ रहे हैं, पूर्वी देशों का यह उन लोगों का पहला दौरा है । थोड़े विस्तार से उन्होंने बतलाया, "असल में बात क्या है मिस्टर घोप्टा कि हम लोगों की रुचि जगहों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तलाश करने की ज्यादा है । ऐसी एक पुस्तक छप रही है जिसकी कि स्टैला को-राइटर है । पुस्तक का अगला खंड पूर्वी देशों का है । यों तो अपने देश में हम लोग इस संबंध में काफी किताबें पढ़कर आये हैं मगर, खुद अनुभव करना भी जरूरी है..."

मैं भी गंभीर हो गया । "ये तो बहुत अच्छी बात है सर ! इस काम में आपकी मदद कर सका तो मुझे सचमुच खुशी होगी !"

... "सो नाइस ऑव यू !" कहकर मिसेज रोजर्स एक बार फिर मुसकरा दीं । वह सुंदर और शालीन महिला थीं— अंडाकार चेहरा, पतली खड़ी नाक और सुंदर भरे-भरे होंठ । घुटनों के काफी नीचे तक जानेवाली हरी स्कर्ट

और ऊंचे कॉलर वाले क्रीम रंग के ब्लाउज में वह पूरी तरह ढंकी हुई थीं । उन्होंने कुछ सोचकर कहा, "मिस्टर घोष्टा । हम लोग मशहूर होटलों में इसलिए नहीं ठहरते कि सचाई के ऊपर वहां एक बनावटी झिलमिल परदा पड़ा रहता है । यह परदा कभी-कभी तो इतनी सचाई से बुना होता है कि झूठ ही सच नजर आने लगता है ! यह हमारा अपना अनुभव है । मैं कोई दोष नहीं दे रही, ज्यादातर लोग आखिर 'एंजॉय' करने ही आते हैं । उनकी दिलचस्पी सचाई जानने में नहीं, अपने समय को अपनी रुचि के अनुसार अच्छे से अच्छे ढंग से गुजारने में होती है ! और होटल का धंधा व्यवसाय है । बिजनेस तो बिजनेस ही है आखिर..."

मिस्टर रोजर्स भी बोले, "सही ढंग से चीजों को जानने-समझने के लिए हमें यही रास्ता ठीक लगता है कि साधारण लोगों के बीच साधारण ढंग से रहकर उन्हें देखें, है कि नहीं ? फिर इंडिया ? यह पिक्चर पोस्टकार्ड्स और टूरिस्ट डिपार्टमेंट के छपे पैंफलेट्स में नहीं, यहां रहनेवालों के भीतर है, जैसा कि हमने सुना है..."

"आप सही कहते हैं सर, खासकर के आप लोगों के पर्पज के लिए तो यही जरूरी है..."

उन्होंने अपने पास से 'वाराणसी' वाले पैंफलेट्स निकाले और हम अगले दो दिनों का प्रोग्राम तय करने लगे । इस समय विश्वनाथ मंदिर और दशाश्वमेध व कुछ अन्य घाटों पर जाया जा सकता था, कल सारनाथ और स्थानीय बाजार, परसों रामनगर का किला और काशी हिंदू विश्वविद्यालय...

मंदिर और घाट के लिए हम उसी वक्त

निकल पड़े । बीच-बीच में किसी रिक्शेवाले से, पंडे से या चूड़ियां बेचनेवाले से वे मेरे द्वारा कुछ प्रश्न पूछते और अपनी डायरी में उत्तर नोट करते । डेढ़ बजे लंच के लिए उन्हें एक होटल में छोड़कर मैं घर लौटा । तय हुआ था कि सारनाथ आज शाम को ही चला जाएगा । मैं पहुंचा तो वे निकलने के लिए तैयार बैठे थे— कैमरा, पीठ पर बैग में दूरबीन, मिनरल वाटर की बोतल और डायरी । कमर पर चौड़ा मनी बेल्ट । नवम्बर के दिन की गरमी ने उन पर कुछ असर डाला दिखता था पर उत्साह से वे भरे हुए थे । सारनाथ पहुंचकर हम पहले म्यूजियम देखने गये । उन्होंने वहां काफी तसवीरें खींचीं । वहां से निकलते-निकलते शाम पूरी तरह घिर आयी थी । मंदिर हमेशा की तरह शांत थे और रास्तों पर चहल-पहल थी । मिसेज रोजर्स जगह-जगह फोटो खींचती रहीं और तथागत तथा बौद्ध धर्म के बारे में अपनी जानकारियां मुझे सुनाकर पूछती रहीं, "ऐम आइ राइट ? मेरी ये जानकारी गलत तो नहीं है ?" मुझे स्वीकार करना पड़ा कि हम गाइड लोगों का अध्ययन बस सतही होता है, वह बल्कि ज्यादा ही जानती हैं । मिस्टर रोजर्स बड़ी गहरी दृष्टि से सभी चीजों को देख रहे थे । वह उस विषय में कुछ बोलते तो मुझे आश्चर्य हो जाता । वह बातों को तुरंत सही परिपेक्ष्य में ग्रहण कर लेते

मैं आपसे सिर्फ इतना कहना चाहता हूं, मेहरबानी करके देख लीजिए, कहीं आपके आस पास भी कोई ऐसा छिपा हुआ सच कुंडली मारे तो नहीं बैठा है ? रोशनी का हो, या सपने का हो, या अतीत का, पहला सच यही होता है कि उसके नीचे अंधेरे बिछे होते हैं !

थे । मालाएं बेचती एक दुबली सांवली लड़की को देखकर मिस्टर रोजर्स ने मुझसे अचानक पूछ लिया, ''अच्छा, ये लड़की लोकल है या बाहर की ?''

''कह नहीं सकता, शायद साउथ इंडियन है... बनारस में ऐसी बहुत-सी फैमिलीज आकर बस गयी हैं'' मैं बोला ।

''तुम यहां की भाषा में बात करके पूछो'' उन्होंने राय दी तो मैंने लड़की के करीब जाकर पूछा, ''कहां के रहेवाली हउ हो ? कौन जिला... ?''

कांच और पीतल, जस्ते की माला हाथ में झुलाती आशा से भरी लड़की बोली, ''इहें बगलिये में गाँव हौ बाबूजी... मेम साहेब माला लिहें ?''

मैंने बतलाया तो मिस्टर रोजर्स हंस पड़े— ''स्थानीय लोगों पर प्रभाव डालने के लिए बिचारी अपनी जबान को तोड़-मरोड़ रही थी ! देखा नहीं, उस पर कितना जोर पड़ रहा था !''

''कमाल है, मैं सालों से देख रहा हूं, हमेशा इसे साउथ इंडियन ही समझता था !''

वह मुसकराये, ''मिस्टर घोष्टा, कुछ चीजों को समझने के लिए गाइड नहीं टूरिस्ट होना पड़ता है !''

इसके बाद तो— जैसे मैं पर्यटक और वे मेरे गाइड बन गये थे । मैं उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाता, मोटे तथ्य जो कुछ मुझे मालूम थे उन्हें बतला देता । वे उसकी जड़ें दूर तक खोदकर निकालते और ऐसी व्याख्या करते कि मैं चकित रह जाता । अद्‌भुत लग रहा था उनकी दृष्टि से अपनी चिर-परिचित चीजों को देखना । वे जिद करके काशी की तंग गलियों से भी गुजरे । वहां बच्चों को निर्द्वंद्व रूप से मल त्याग और बड़ों को पेशाब करते देख मैं ही बार-बार झिझका । वे दोनों मुझे समझाते रहे, ''आप क्यों लज्जित होते हैं मिस्टर घोष्टा... आप तो पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं । ये सब वहां होता है जहां जहालत और गंदगी है ! हम तो अच्छा-बुरा सब देखने आये हैं...''

मैं संकोच से गड़ा कहता था, ''लेकिन सर, ऑफ्टर ऑल ये हमारा ही देश है, हमें शर्म तो आएगी न... प्लीज अब हम मेन रोड पर आ जाएं...''

मिस्टर रोजर्स ने मेरी प्रशंसा की, ''तुम अच्छे शहरी हो मिस्टर घोष्टा, तभी तुम्हें शर्म भी आती है... तुम्हारे सोशल और पोलिटिकल लीडर्स को तो बिलकुल ही नहीं आती ! तुम क्या कर सकते हो ? अधिक-से-अधिक अपने घर को ठीक रख सकते हो, आस-पास के दो-चार लोगों को सफाई के बारे में बतला सकते हो, यही न... खैर छोड़ो, तुम्हें बुरा लगता है तो अब हम मेन रोड से ही चलेंगे !''

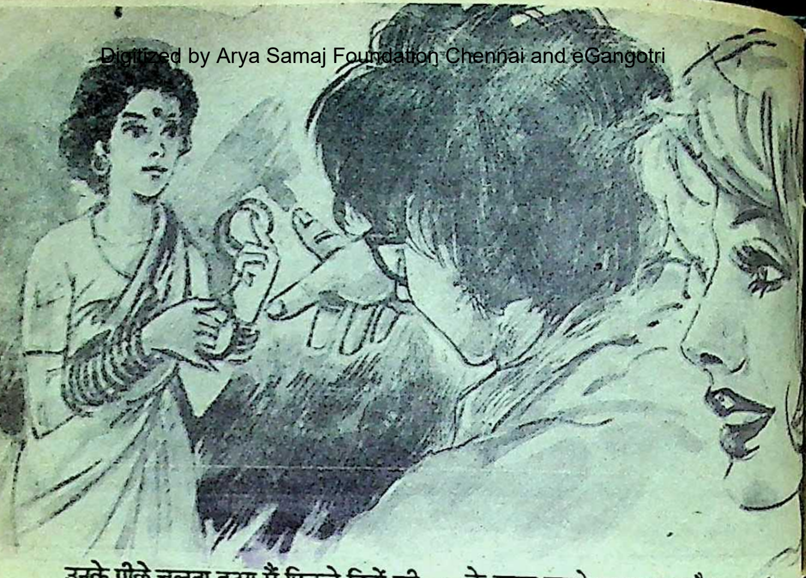

उनके पीछे चलता हुआ मैं पिछले दिनों की समीक्षापूर्ण खबरों के बारे में सोच रहा था, 'विश्वमंच पर भारत की छवि निखरी !' शीर्षक में देश और विदेशों में हमारे नेताओं के भाषण, सांस्कृतिक मेले, खेल स्पर्धा और जाने कितना कुछ... वो भारत है तो फिर यह सब किस देश, किस संस्कृति का हिस्सा है ? एक तरफ यह ऊपरी चकाचौंध, दूसरी तरफ अतीत का प्रकाश पुंज, बीच में फैला हुआ अंधेरा... यह कैसी तसवीर है ?'

उसी शाम यह छोटी-सी दुर्घटना हो गयी । मैं कार्यक्रम के अनुसार मिस्टर और मिसेज रोजर्स को लेने होटल पहुंचा था । वे दोनों पीछे के खुले बरामदे में कुरसियों पर बैठे चाय पी रहे थे ।

मैं रैलिंग से टिककर खड़ा हो गया और आस-पास यों ही निगाहें दौड़ाने लगा । पास के सटे मकान के बरामदे में एक अधेड़ महिला पालक के डंठल तोड़ रही थी । महिला ने अधमैली धोती पहन रखी थी, जिसमें से उसकी बिना पेटीकोट की टांगें झलक रही थीं । कमर के ऊपर उसने ब्लाउज या और कुछ नहीं पहना था । हाथ के हिलने पर हर बार उसके उर्ध्वांग का अनावृत्त भाग दिखलायी दे जाता था । इसी समय एक बारह-तेरह वर्ष की लड़की आकर उसके साथ बैठ गयी और डंठल तोड़ते हुए इधर देखनें लगीं । रोजर्स दंपत्ति को देखती हुई वह यों ही मुसकरा रही थी, महिला का ध्यान इधर गया तो उसकी भंवें चढ़ गयीं, लड़की के बाल पकड़कर खींचते हुए उसने कई थप्पड़ लगाये, दांत पीसकर कर्कश स्वर में कहने लगी, "बेहया कहीं की... होटलवालों की यही सब लीला आंख गड़ाकर देखती रहती है : यही सब बेशर्मी काम देगी ? ससुराल जाकर घर की नाक कटवाना !!"

मैंने देखा, मिसेज रोजर्स भी इधर देख रही थीं । मुझसे उन्होंने इस कांड का अर्थ जानना चाहा । वह औरत लड़की की किस बात पर नाराज हो रही थी ? मैंने टालने की कोशिश की पर वह जानने की जिद ही पकड़ गयीं । मैंने अपने यहां प्रचलित रीति-रिवाजों का जिक्र करते हुए उन्हें महिला के रोष का कारण बतलाया

दिया । वह सुनकर हैरान रह गयीं— "क्या ? वह अधनंगी औरत अपने को शर्मदार समझती है और हमें इतनी बुरी कि हमें देखनेभर से लड़की बिगड़ जाएगी ? न, यह सच नहीं हो सकता ! आपसे समझने में जरूर कोई भूल हुई है मिस्टर घोष्टा !"

"हो सकता है... मेरा पूरा ध्यान उधर नहीं था", मैं अभी भी टाल रहा था । वह सोचती-सी बोली, "आप मुझे उस औरत के घर ले चलेंगे ? मैं उससे बात करूंगी..."

"देखिए, मैं तो राय नहीं दूंगा... आपने देखा ही, उसे कोई 'मैनर' नहीं है ।"

मिस्टर रोजर्स ने भी समझाया और कार्यक्रम में देर होने की बात कही तब जाकर वह मानीं । फिर भी कहती रहीं, "मैं ऐसे किसी घर को अंदर से देखना चाहती हूं मिस्टर घोष्टा... अगर आप प्रबंध कर सकें तो मैं शुक्रगुजार होऊंगी ! आप कोशिश करेंगे न ?"

"जरूर करूंगी, मैडम... ।" मैंने यों ही कह दिया ।

वैसे, मुझे कोशिश करने की जरूरत भी नहीं पड़ती । अगली शाम घर के अपने कमरे में बैठा मैं भौंचक्की दृष्टि से देख रहा था । पत्नी आंगन में बैठकर जूठे बरतन मल रही थी और गंदे पानी का कुछ हिस्सा जाने कब बन आये गड्ढे में इकट्ठा हो रहा था, जिस पर मक्खियां बेतरह भिनभिना रही थीं । पास ही मेरा सबसे छोटा बेटा पेशाब कर रहा था । बरामदे में जहां खाना बना था, अभी तक बुझे हुए कोयले पड़े थे और राख छितरायी हुई थी । मक्खियों का एक झुंड वहां भी तैनात था । [illegible] । मेरी मां टूटे बटनवाले लगभग खुले ब्लाउज और गंदी धोती में बैठी सब्जियां काट रही थी । चित्र का शेष अंश भी जल्दी ही पूरा हो गया जब मेरी पंद्रह और बारह वर्ष की दोनों बेटियां बाहर से आयीं । पत्नी चीखकर उनसे कह रही थी, "बस, खेलती फिरो तुम लोग ! कुछ करना-धरना तो है नहीं, ससुराल में जाकर घर का नाम धरवाना कि मां-बाप ने यही सिखाया है... !!"

यह मेरा घर था ? मैं जैसे पहली बार देख रहा था, उनकी दृष्टि से । क्या कहा था मिस्टर रोजर्स ने ? "आप क्यों लज्जित होते हैं मिस्टर घोष्टा ! आप तो पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं... ज्यादा से ज्यादा अपना घर देख सकते हैं !!"

तो यह था पढ़े-लिखे व्यक्ति का घर !

क्या और चीजों की तरह वह इस हकीकत को भी भांप गये थे और व्यंग्य कर रहे थे ?

और यह तब था जब मेरी पूरी जिंदगी खास बनने की कोशिश में बीती थी !.., मैं काल्पनिक ऊंचाइयों में प्रकाशवृत्त पर थिरकता रहा । गाइड बना पर्यटकों को अपने शहर का इतिहास, भूगोल और परंपरा समझाता रहा और मेरे घर का भूगोल बदरंग होता गया । इतिहास में सीलन लग गयी । संस्कृति को दीमक ने चाट लिया । आप इसे क्या कहेंगे ?

मैं आपसे सिर्फ इतना कहना चाहता हूं, मेहरबानी करके देख लीजिए, कहीं आपके आस पास भी कोई ऐसा छिपा हुआ सच कुंडली मारे तो नहीं बैठा है ? रोशनी का हो, या सपने का हो, या अतीत का, पहला सच यही होता है कि उसके नीचे अंधेरे बिछे होते हैं !

— के.-६४/५, गोला दीनानाथ
वाराणसी

वैदिक संस्कृति की जीवन-यात्रा—५

''अपरिमित दैदीप्यमान स्वरूप, शक्ति, उपकारशीलता और वैदग्ध्य-जैसे गुणों के कारण देवों का स्वरूप विलक्षण चमत्कारों से भरा है, और अनिवार्य चारित्रिक गुणों के कारण वे वैदिक कवियों द्वारा पहेलियों में व्याप्ति पाते हैं । कुछ ऐसा ही रूप है विवस्वान् और सरण्यू का ! देवों के सोपान से जोड़नेवाला चरित्र है सरण्यू का । सरण्यू और विवस्वान् यम-यमी के भी जनक हैं और प्रथम यज्ञकर्ता 'मनु' के भी ।''

छायामयी सरण्यू

डॉ. सुधा पांडे

अत्यंत भास्वर आभावाले त्वष्टा कई दिनों से चिंतामग्न थे, अशेष प्राणियों को रूप-संपन्न करनेवाले कुशल त्वष्टा का अंतर्मन पर्याप्त विचलित था । उनके विचलित होने का कारण साधारण नहीं...देवगण संगठित हो चुके थे, पणियों पर इंद्र की विजय से देवशक्ति और अधिक प्रखर होती जा रही थी...देवगण आहार...विहार उत्सव मनोविनोद में लीन होने लगे । सृजन क्रिया के नियंता होने के अधिकार से दिव्य वनिताओं से त्वष्टा के निकट संबंध थे, देव-पत्नियां जो अनेक बार उनके समक्ष आयीं, उनसे उनका संबंध कई-कई बार स्थापित हुआ और मनुष्य जाति के पूर्वज के रूप में उनकी ख्याति फैलने लगी ।

उनकी दो जुड़वां संतानें हुईं, त्रिशिरा और सरण्यू ! सरण्यू कन्या थी और धीरे-धीरे बालिका से वय प्राप्त करती, वह सुंदर युवती के रूप में खिल उठी । अंग-प्रत्यंगों में यौवन का संचार हुआ और उसके अनंत काम भावनाएं उभरने लगी थीं । त्वष्टा की चिंता बढ़ना स्वाभाविक था कि किस प्रकार सरण्यू के लिए सुयोग्य वर ढूंढ़ा जाए । ऐसी तेजस्विनी अपने

अनुरूप पति को प्राप्त कर सुखी होगी या नहीं...इस चिंता से त्वष्टा अहर्निश व्याकुल-से रहते थे ।

यज्ञ वेदी के पास विशाल मैदान में अनेक देवजन एकत्रित होने लगे । समनोत्सव समीप आने को था । तरुण-तरुणियों के दल भी पूरे मैदान में भरने लगे थे । स्त्रियों की देह पर सुंदर वस्त्राभूषण शोभायमान थे । लंबे केश सुंदर ढंग से संवारे हुए थे । आज के उत्सव में स्वच्छंद प्रणय का सबको अधिकार था । वसंत समाप्ति पर था, उपत्यका में अनेक पुष्प अपने कमनीय रूप में खिले हुए थे । सरण्यू का यौवन वसंत के वैभव के साथ आज अनोखी छटा बिखेर रहा था । बृहस्पति, इंद्र, अंगिरा सभी पहुंच चुके थे । बृहस्पति ने उठकर वरुण की स्तुति प्रारंभ की—

'हे वरुण ! पृथिवी और द्यावा के स्वामी हो तुम । तुम स्वर्ण के समान वस्त्र धारण करते हो तुम आओ और हमारे समन में उत्साह बढ़ाओ ।'

आज के उत्सव में रथधावन का प्रमुख आकर्षण था । ढोल बजा और रथ की दौड़ शुरू हुई । युवतियां उत्कंठा से रथ दौड़ में सम्मिलित होनेवाले युवकों को देख रही थीं । रथों की गर्जना बढ़ चली । अन्य दर्शक भी कोलाहलपूर्वक अपने साथियों को प्रोत्साहन दे रहे थे । सरण्यू एक रथ पर आरूढ़ युवक को निर्निमेष देखती जा रही थी । गोलाकार मैदान में घूमते हुए वह रथ जब उसके समीप से गुजरता, उसके वक्ष का स्पंदन बढ़ जाता था ।

यह चमकते चक्षुओंवाले ज्योतिष्मान् 'विवस्वान्' कवि का रथ था । वह विवस्वान् जो दिन-रात को प्रकाशित करते हैं ।

प्रकाशमय आकाश के देव ऐसे तेजस्वी तरुण के प्रति सरण्यू की आसक्ति बढ़ती गयी । समनोत्सव समाप्त हुआ, पर सरण्यू के स्मृति

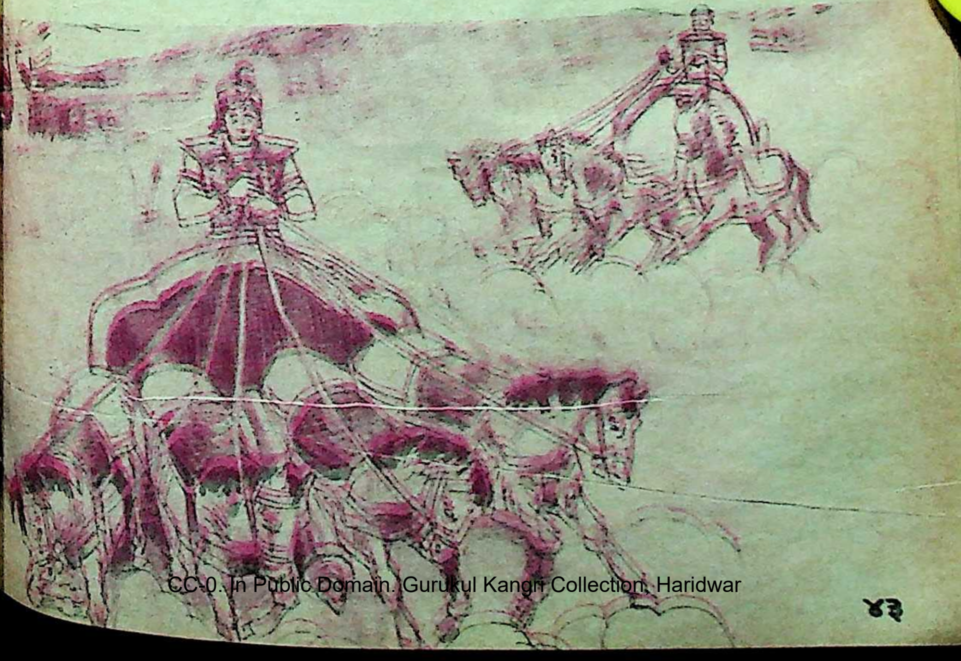

पथ में अभी भी विवस्वान् का ज्योतिर्मय रथ चल रहा था । उत्सव से लौटकर पितृगृह में जाकर एकांत में उदास भाव से बैठ गयी थी, सरण्यू ।

"आज सरण्यू उदास क्यों है, पिताश्री" । त्रिशिरा ने पूछा ।

"वह तो समनोत्सव में गयी थी, क्या कारण हो सकता है...कहीं किसी असुर ने तो अपमान नहीं किया ?", त्वष्टा चिंतित थे । अति स्नेहपूर्वक सरण्यू को समीप बुलाकर पूछा—"पुत्री ! तुम उत्सव से लौटकर उदास क्यों हो ?" सरण्यू का मुख रक्ताभ हो उठा । अत्यंत संकोचपूर्वक विवस्वान् के प्रति अपने हृदय की भावना को सरण्यू ने स्पष्ट किया ।

त्वष्टा के हर्ष का पारावार न था, जिस चिंता से वह निरंतर व्याकुल थे, वह समाप्त हो गयी । त्वष्टा ने इंद्र की सहायता से विवस्वान् के समक्ष जाकर निवेदन किया—"हे विवस्वान् ! मेरी रूपवती नवयौवना पुत्री सरण्यू ने तुम्हारे प्रति कामना की है । तीनों लोकों में आपसे अधिक तेजस्वी कोई वर उसके अनुरूप नहीं है । वह सद्गुणों और दैवी तेज की साकार मूर्ति है, उसे स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें ।"

विवस्वान् गद्‌गद् हो उठे । उन्होंने त्वष्टा का निवेदन स्वीकार किया । मंगल मुहूर्त था । सभी देवताओं ने मिलकर सरण्यू की वैवाहिक विधि पूर्ण करवायी । अग्निदेव साक्षी बने । सरण्यू ने गृहिणी बनकर विवस्वान् के गृह की शोभा को द्विगुणित कर दिया ।

सरण्यू और विवस्वान् अलौकिक प्रेम-बंधन में बंध चुके थे । दैवी प्राणी अर्धांग-अर्धांगिनी के रूप में आनंदित जीवन व्यतीत करने लगे । कालक्रम से समय व्यतीत करते हुए उन्हें जुड़वां संतानों की प्राप्ति हुई । यम और यमी उनका नाम रखा गया । यम पुत्र था और यमी पुत्री । यम की अलौकिक मेधा और न्यायप्रियता के कारण बड़े होकर वे शुभाशुभ कर्मों के नियामक के रूप में ख्यात हुए ।

विवस्वान् अपने अलौकिक तेज से सारी पृथिवी और द्युलोक को भास्वर करने में निरंतर समर्थ थे । उनका तेज भयावह अग्नि से भी प्रखर था । ग्रीष्मकाल में उनकी तीक्ष्णता, प्रखरता और अधिक बढ़ चली । धर्मतः विवस्वान् उनके स्वामी हैं, उनके पति हैं, पर उनका प्रखर तेज अब सरण्यू को असह्य होने लगा था, फिर भी अंतर की शालीनता और गृहिणी धर्म की विशालता के कारण वह उनका ताप सहती रही और विवस्वान् की सेवा करती रही । 'विवस्वान्' और कोई नहीं, सारे जगत को प्रखरताप से भस्म करने में समर्थ सूर्यदेव थे । पति-पत्नी का संबंध हो जाने के कारण सरण्यू और विवस्वान् का संबंध जन्म-जन्मांतर का संबंध बन गया । सरण्यू का हृदय कातर हो उठा और भय से कांप उठा । धीरे-धीरे उनकी सहनशक्ति भी कम होने लगी । सरण्यू की चिंता भी बढ़ती गयी, किस प्रकार से इस संकट से मुक्ति मिले । सरण्यू स्वयं भी साधारण प्राणी तो थी नहीं, वह यमराज की माता भी थी । किसी समय विवस्वान् से विवाद हो जाने पर सरण्यू के मन में खिन्नता व्याप्त गयी और लगातार विचार करते-करते उन्होंने उपाय सोच ही लिया ।

विवस्वान् अपने भास्कर्य रथ पर आरूढ़ दिशाओं की परिक्रमा करने गृह के बाहर थे, तभी सरण्यू ने दैवी उपायों से अपनी

निश्चित समय बाहर व्यतीत करके विवस्वान् घर लौटे, सब-कुछ यथावत था। सरण्यू की योजना का उन्हें कुछ भी न पता चला। छाया विवस्वान् के साथ बिलकुल वैसा ही व्यवहार करती रही, जैसा सरण्यू करती थी। अपरिमित साहस एकत्रित कर छायामूर्ति विवस्वान् के प्रखर तेज को सहन करती रही, बिलकुल उनकी पत्नी की तरह व्यवहार किया, उसने। कुछ समय बाद छाया प्रतिमा को भी पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई, उसका नाम मनु रखा गया।

छाया-प्रतिमा गढ़ दी। वह छाया सरण्यू की ही प्रतिरूपा थी।

रूप, रंग, व्यवहार सब-कुछ वैसा ही। प्रतिमा गढ़ने के बाद सरण्यू ने उससे कहा—"मेरे इन बच्चों का भरण-पोषण करना, मेरी अनुपस्थिति में मेरे पति के साथ मेरे ही समान व्यवहार करना।"

"मैं वैसा ही करूंगी।" छाया मूर्ति से वचन लेकर सरण्यू घोड़ी का रूप धारण करके वहां से चली गयी

निश्चित समय बाहर व्यतीत करके विवस्वान् घर लौटे, सब-कुछ यथावत था। सरण्यू की योजना का उन्हें कुछ भी न पता चला। छाया विवस्वान् के साथ बिलकुल वैसा ही व्यवहार करती रही, जैसा सरण्यू करती थी। अपरिमित साहस एकत्रित कर छायामूर्ति विवस्वान् के प्रखर तेज को सहन करती रही, बिलकुल उनकी पत्नी की तरह व्यवहार किया, उसने। कुछ समय बाद छाया प्रतिमा को भी पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई, उसका नाम मनु रखा गया।

मनु के जन्म के बाद छाया का स्नेह यम-यमी के प्रति कम होने लगा। यमराज भी प्रयास करके मां को प्रसन्न नहीं रख पा रहे थे। छाया के मन में विमाता का भाव उभरने लगा और वह अपने आचरण से सरण्यू की संतानों को दुःख पहुंचाने लगी। उसकी ताड़ना से यम-यमी और अधिक खिन्न होने लगे। वे हरदम दुःखी बने रहते थे। शनैः-शनैः छाया का इस प्रकार का व्यवहार विवस्वान् के कानों तक पहुंचा। उन्हें अब संदेह होने लगा। वे निरंतर चौकन्ने रहकर वास्तविक कारण खोजने लगे। एक दिन प्रातःकाल यम ने छाया को मां समझते हुए भोजन के लिए निवेदन किया। सरण्यू यम के प्रति दुर्भावना से भरकर कर्कश स्वर में ताड़ना देने लगी कि 'तू सबसे पहले मर जा'।

अब यम को भी क्रोध आ गया। सवर्णा छाया के व्यवहार से खिन्न होकर उसे मारने के लिए पैर उठाया...

छाया आग बबूला हो उठी। क्रोध में अंधी होकर उसने यम को शाप दे दिया—"तेरा पैर कुष्ठ रोग से पीड़ित रहे।"

यम खिन्न हो उठे और कहीं दूर तपस्या करने के लिए घर छोड़कर चले गये। भयंकर शाप और पुत्र के गृह-त्याग के कारण विवस्वान् शांत न रह सके। उनका हृदय पुत्र की वेदना से विदीर्ण हो गया।

अत्यंत क्रोध में भरकर कड़क सवर्णा छाया

से पूछा—"अरे तू इतनी कठोर हृदयवाली कैसे हो गयी ? तू तो ऐसा व्यवहार कर रही है, जैसे इसकी माता न हो । सच-सच बता तू कौन है ?" विवस्वान् के जलते नेत्रों की तरफ देखने का साहस छाया में न था । वह छलपूर्वक झूठ न बोल सकी । चरणों में गिरकर बोली—"प्रभो मैं सरण्यू द्वारा निर्मित उसकी प्रतिमूर्ति हूं । वह स्वयं घोड़ी का रूप धारण कर यहां से भाग गयी है और मेरा यह रूप निर्माण कर आपकी सेवा में नियुक्त करके चली गयी ।

सवर्णा छाया की बात सुनकर विवस्वान् का क्रोध शांत हुआ । किसी प्रकार गृह-कलह समाप्त कर उन्होंने उसे वहीं रहने का निर्देश दिया और स्वयं घोड़े का रूप धारण कर सरण्यू को खोजने चल पड़े । अश्वरूप में अनेक वन, पर्वत, नदी, नालें सभी जगह खोजते-खोजते एक स्थान पर घोड़ी के रूप में चरते हुए उन्होंने सरण्यू को पहचान लिया...सरण्यू भी उन्हें पहचान गयी । आनंदाश्रु दोनों के नेत्रों से बहने लगे । विवस्वान् कामातुर हो उठे थे । अश्वरूप धारी उनका कुछ तेज धरती पर स्खलित हो गया । सरण्यू ने उस तेज को सूंघा, उसे सूंघते ही दो दिव्य पुरुष उत्पन्न हुए । रूप-बल वय और विद्या में अद्वितीय वे युवक अपरिमित शोभावान थे । अश्विनी अर्थात घोड़ी से उत्पन्न होने के कारण वे अश्विनी कुमार के नाम से प्रसिद्ध हुए । वे देवताओं के चिकित्सक के रूप में ख्यात हुए । दध्यङ् ऋषि ने आगे चलकर इन्हें मधुविद्या का उपदेश दिया ।

सरण्यू आनंद से भर उठी थी । छाया सरण्यू ने मरण धर्मियों के प्रथम राजा मनु को जन्म दिया था और स्वयं सरण्यू ने मृत्यु-देव यम और वैद्यराज अश्विनी कुमारों को ! लोक-परलोक दोनों ही सरण्यू से संबद्ध हो चुके थे, विवस्वान् पूर्ववत अपने अपरिमित तेज से मुसकराते हुए संपूर्ण विश्व को द्युतिमान करने लगे ।

—प्राचार्या
एम.के.पी. पो.ग्रे. कॉलेज,
देहरादून (उ.प्र.)

तालियां

बेंजामिन फ्रेंकलिन एक बार पेरिस में एक साहित्यिक सभा में उपस्थित हुए । सभा की कार्रवाई फ्रेंच भाषा में हो रही थी और बेंजामिन फ्रेंच भाषा समझ नहीं पाते थे । फिर भी शिष्टाचार निभाने के लिए उन्होंने तय किया कि गोष्ठी में मौजूद उनकी महिला मित्र जब-जब तालियां बजाएंगी, तब-तब वे भी उनके साथ तालियां बजाएंगे ।

एक वक्ता का भाषण समाप्त होने के बाद उनका छोटा पोता उनसे बोला, "दादा जी, आप तो बराबर तालियां बजाते ही गये और जब-जब वे आपकी प्रशंसा करते थे, तब-तब आप अन्य लोगों से भी जोर से तालियां बजाते थे !"

अब बेंजामिन की समझ में आया कि वे हर बार अपनी ही तारीफ में तालियां बजाते रहे ।

—राजकुमार जैन

भगतसिंह और सुखदेव :

क्रांतिकारियों के दस्तावेज

● राजशेखर व्यास

भगतसिंह और सुखदेव दोनों ही लाहौर षड्यंत्र केस के सिलसिले में जेल में बंद थे । दोनों को न्यायालय से फांसी की सजा सुनायी जा चुकी थी । दोनों ही मौत का, बलिदान का इंतजार कर रहे थे । सुखदेव बेहद भावुक इनसान थे । उन्हें लगा कि संभवतया हमारी फांसी रुक जाए और हमें आजन्म कारावास की सजा मिले । तब 'हमें १५-२० वर्ष कालेपानी में रहना होगा । हम निर्जीव हो जाएंगे । ऐसे जीवन से तो अच्छा है, मैं आत्महत्या ही कर लूं और अपने जीवन को खुद ही समाप्त कर लूं ।'

अपना यह विचार उन्होंने पड़ोस की कोठरी में बंद भगतसिंह को लिख भेजा । भगतसिंह ने उसके उत्तर में उन्हें जो पत्र लिखा वह अविकल रूप से यहां प्रस्तुत है— ''कष्टों से भागना कायरता है ।'' भगतसिंह के आत्महत्या संबंधी विचार मार्मिक और पथ-प्रदर्शक हैं । उनका वह पत्र इस प्रकार है—

''प्रिय भाई,

मैंने आपके पत्र को कई बार ध्यान से पढ़ा । मैं स्वयं अनुभव करता हूं कि बदली हुई परिस्थितियों ने हम पर अलग-अलग प्रभाव डाला है, जिन बातों से जेल के बाहर घृणा करते थे, वो आपके लिए अब अनिवार्य हो गयी हैं । इसी प्रकार मैं जेल से बाहर जिन बातों का विशेष रूप से समर्थन करता था, वे अब मेरे लिए विशेष महत्त्व नहीं रखतीं ।

''उदाहरणार्थ, मैं व्यक्तिगत प्रेम को विशेष रूप से माननेवाला था, परंतु अब इस भावना का मेरे हृदय एवं मस्तिष्क में कोई विशेष स्थान नहीं रहा । बाहर आप इसके कड़े-विरोधी थे, परंतु इस संबंध में अब आपके विचारों में भारी परिवर्तन एवं क्रांति आ चुकी है । आप इसे मानव-जीवन का एक अत्यंत आवश्यक एवं अनिवार्य अंग अनुभव करते हैं, और इस अनुभूति से आपको एक प्रकार का आनंद भी प्राप्त हुआ है ।

तब आप और अब मैं

''आपको याद होगा कि एक दिन मैंने आत्महत्या के विषय पर आपसे चर्चा की थी,

तब मैंने आपको बताया था कि कई परिस्थितियों में आत्महत्या उचित हो सकती है, परंतु आपने मेरे इस दृष्टिकोण का विरोध किया था । मुझे उस चर्चा का समय एवं स्थान दोनों भली प्रकार स्मरण हैं । हमारी यह बात 'शहंशाही कुटिया' में सायंकाल के समय हुई थी । आपने मजाक के रूप में हंसते हुए कहा था कि इस प्रकार की कायरता का कार्य कभी उचित नहीं माना जा सकता ।

"आपने कहा था कि इस प्रकार का कार्य भयानक और घृणित है, परंतु इस विषय पर भी मैं देखता हूं कि आपकी राय सर्वथा बदल चुकी है, अब आप उसे कुछ अवस्थाओं में न केवल उचित वरन अनिवार्य एवं आवश्यक अनुभव करते हैं, मेरी इस विषय में अब भी राय है, जो पहले आपकी थी अर्थात आत्महत्या एक घृणित अपराध है । यह पूर्णतः कायरता का कार्य है । क्रांतिकारी का तो कहना ही क्या, कोई भी मनुष्य ऐसे कार्य को उचित नहीं ठहरा सकता ।

> **"मानव किसी भी कार्य को उचित मानकर ही करता है, जैसे कि हमने लेजिस्लेटिव असेंबली में बम फेंकने का कार्य किया था । कार्य करने के पश्चात उसका परिणाम भोगने और फल भोगने की बारी आती है ।"**

"आप कहते हैं कि आप यह नहीं समझ सके कि केवल कष्ट सहन करने से आप देश की सेवा किस प्रकार कर सकते हैं । आप-जैसे व्यक्ति की ओर से ऐसा प्रश्न करना बड़े आश्चर्य की बात है, क्योंकि 'नौजवान भारत सभा' का ध्येय 'सेवा द्वारा कष्टों को सहन करना', सर्वोपरि हैं । मैं यह समझता हूं, आपने अधिक-से-अधिक संभव सेवा की । अब यह समय है कि जो कुछ आपने किया है, उसके लिए कष्ट उठायें । दूसरी बात यह है कि यही यह अवसर है, जब आपको संपूर्ण जनता का नेतृत्व करना है ।

"मानव किसी भी कार्य को उचित मानकर ही करता है, जैसे कि हमने लेजिस्लेटिव असेंबली में बम फेंकने का कार्य किया था । कार्य करने के पश्चात उसका परिणाम भोगने और फल भोगने की बारी आती है ।

"क्या आपका यह विचार है कि यदि हमने दया के लिए गिड़गिड़ाते हुए दंड से बचने का प्रयत्न किया होता, तो हमारा यह कार्य उचित होता । नहीं, इसका प्रभाव लोगों पर उलटा पड़ता, अब हम अपने लक्ष्यों में पूर्णतया सफल हुए हैं ।

हम तैयार थे

"बंदी होने के समय हमारी संस्था के राजनीतिक कैदियों की दशा अत्यंत दयनीय थी । हमने उसे सुधारने का प्रयास आरंभ कर दिया । मैं आपको पूरी गंभीरता से बताता हूं कि हमें यह विश्वास था कि हम बहुत कम समय के भीतर ही मर जाएंगे । हमें उपवास की स्थिति में कृत्रिम रीति से भोजन दिये जाने का न तो ज्ञान ही था, न हमें विचार सूझता ही था । हम तो मृत्यु के लिए तैयार थे । क्या आपका यह

अभिप्राय है कि हम आत्महत्या करना चाहते हैं ?

"नहीं । प्रयत्नशील होना एवं श्रेष्ठ और उत्कृष्ट आदर्श के लिए जीवन दे देना, कदापि आत्महत्या नहीं कही जा सकती । हमारे मित्र (यतींद्रनाथ दास) की मृत्यु स्पृहणीय है, क्या आप इसे आत्महत्या कहेंगे ?

"हमारा कष्टों को सहना फल लाया । समस्त देश में एक विराट और सर्वव्यापी आंदोलन प्रारंभ हो गया, हम अपने लक्ष्य में सफल हुए । इस प्रकार के संबंधों में मरना भी आदर्श मृत्यु है ।

"इसके अतिरिक्त हममें से जिन लोगों का यह विश्वास है कि उनको मृत्यु दंड दे दिया जाएगा, उनको धैर्यपूर्वक उस दिन की प्रतीक्षा करनी चाहिए, जब यह सजा सुनायी जाएगी और तत्पश्चात उन्हें फांसी दे दी जाएगी ।

"यह मृत्यु भी सुंदर होगी, परंतु आत्महत्या करना केवल कुछ दुःखों से बचने के लिए, अपने जीवन को समाप्त कर देना तो कायरता है । मैं आपको बताना चाहता हूं कि आपत्तियां व्यक्ति को पूर्ण बनानेवाली होती है । मैं और आप, वरन मैं कहूंगा कि हममें किसी ने भी किंचित कष्ट सहन नहीं किया है । हमारे जीवन का यह भाग तो अभी आरंभ होता है ।

सरदार भगतसिंह

"आपको स्मरण होगा कि अनेक बार इस विषय पर हमने बातचीत की है कि रूसी साहित्य में जो वास्तविकता प्रत्येक स्थान पर मिलती है, वह हमारे साहित्य में कदाचित नहीं दिखायी देती । हम उनकी कहानियों में कष्टों और दुःखदायी स्थितियों को बहुत पसंद करते हैं, परंतु कष्ट सहने की उस भावना को अपने भीतर अनुकूल नहीं करते, हम उनके उन्माद और उनके चरित्र की असाधारण ऊंचाइयों के प्रशंसक हैं, परंतु इसके कारणों पर सोच-विचार करने की कभी चिंता नहीं करते ।

यह संघर्ष हमारा है

"मैं कहूंगा कि केवल आपत्तियां सहन करने के उल्लेख ने ही उन कहानियों में सहायता, दर्द की गहरी टीस और उनके चरित्र तथा साहित्य में ऊंचाई उत्पन्न की है । हमारी दशा उस समय दयनीय और हास्यास्पद हो जाती है, जब हम अपने जीवन में रहस्यवाद अकारण ही प्रविष्ट कर लेते हैं, यद्यपि इसके लिए कोई प्राकृतिक या ठोस आधार नहीं होता ।

"हमारे-जैसे व्यक्तियों को जो प्रत्येक दृष्टि से क्रांतिकारी होने का गर्व करते हैं, सदैव हर प्रकार से उन आपत्तियों, चिंताओं, दुःखों और कष्टों को सहन करने के लिए तत्पर रहना चाहिए, जिनको हम स्वयं आरंभ किये संघर्ष के द्वारा आमंत्रित करते हैं एवं जिनके कारण हम अपने आपको क्रांतिकारी कहते हैं ।

"मैं आपको बताता हूं, बताना चाहता हूं कि जेलों में और केवल जेलों में ही कोई व्यक्ति

अपराध एवं पाप-जैसे महान सामाजिक विषय का प्रत्यक्ष अध्ययन करने का अवसर प्राप्त कर सकता है । मैंने इस विषय का कुछ साहित्य पढ़ा है और जेल ही ऐसे विषयों का स्वाध्याय करने का सबसे अधिक उपयुक्त स्थान है । स्वाध्याय का सर्वश्रेष्ठ भाग है— स्वयं कष्टों को सहना ।

"वास्तव में यदि आप यह अनुभव करते हैं कि बंदीगृह का जीवन वास्तव में अपमानपूर्ण है, तो आप उसके विरुद्ध आंदोलन करके उसे सुधारने का प्रयास क्यों नहीं करते ? संभवतया आप यह कहेंगे कि यह संघर्ष सफल नहीं हो सकता, परंतु वही तर्क है, जिसकी आड़ लेकर साधारणतया निर्बल लोग प्रत्येक आंदोलन से बचना चाहते हैं । यह वह उत्तर है, जिसे हम उन लोगों से सुनते रहे हैं, जो जेलों से बाहर क्रांतिकारी प्रयत्नों में सम्मिलित होने से जान बचाना चाहते थे ।

"हमारे-जैसे व्यक्तियों को जो प्रत्येक दृष्टि से क्रांतिकारी होने का गर्व करते हैं, सदैव हर प्रकार से उन आपत्तियों, चिंताओं, दुःखों और कष्टों को सहन करने के लिए तत्पर रहना चाहिए, जिनको हम स्वयं आरंभ किये संघर्ष के द्वारा आमंत्रित करते हैं एवं जिनके कारण हम अपने आपको क्रांतिकारी कहते हैं ।"

"क्या आज यही उत्तर मैं आपके मुख से सुनूंगा । कुछ मुट्ठीभर कार्यकर्ताओं के आधार पर संगठित हमारी पार्टी अपने लक्ष्यों एवं आदर्शों की तुलना में क्या कर सकती थी ? क्या हम इससे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि हमने इन कामों के प्रारंभ करने में नितांत भूल की है ? नहीं, इस प्रकार का परिणाम निकालना उचित नहीं होगा । इससे तो उस व्यक्ति की भीतरी निर्बलता प्रकट होती है, जो इस प्रकार सोचता है ।

आप भूलिए मत

"आगे चलकर आप लिखते हैं कि चौदह वर्ष तक बंदीगृह के कष्टों से भरपूर जीवन बिताने के पश्चात किसी व्यक्ति से यह आशा नहीं की जा सकती कि उस समय भी उसके विचार वही होंगे, जो जेल जाने से पूर्व थे, क्योंकि जेल का वातावरण उसके समस्त विचारों को रौंदकर कुचल देगा ।

"क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि क्या जेल के बाहर का वातावरण हमारे विचारों के अनुकूल था ? फिर भी असफलताओं के कारण क्या हम उसे छोड़ सकते थे ? क्या आपका आशय यह है कि यदि हम इस क्षेत्र में न उतरे होते, तो कोई भी क्रांतिकारी कार्य कदापि नहीं होता ? यदि ऐसा है तो आप भूल कर रहे हैं । यद्यपि यह ठीक है कि हम भी वातावरण को बदलने में बड़ी सीमा तक सहायक सिद्ध हुए हैं, तथापि हम तो केवल अपने समय की आवश्यकता की उपज हैं ।

"मैं तो यह भी कहूंगा कि साम्यवाद का जन्मदाता मार्क्स, वास्तव में इस विचार को जन्म देनेवाला नहीं था । असल में यूरोप की

औद्योगिक क्रांति ने ही एक विशेष प्रकार के विचारों वाले व्यक्ति उत्पन्न किये थे, उनमें मार्क्स भी एक था । हां, अपने स्थान पर मार्क्स भी निःसंदेह कुछ सीमा तक समय के चक्र को एक विशेष प्रकार की गति देने में आवश्यक सहायक सिद्ध हुआ ।

"मैंने (और आपने भी) इस देश में समाजवाद और साम्यवाद के विचारों को जन्म नहीं दिया, वरन यह तो हमारे ऊपर समय एवं परिस्थिति के प्रभाव का परिणाम है । निःसंदेह हमने इन विचारों का प्रचार करने के लिए कुछ साधारण एवं तुच्छ कार्य अवश्य किया है, इसलिए मैं कहता हूं, जब हमने इस प्रकार एक कठिन कार्य को हाथ में लिया, तो हमें उसे जारी रखना चाहिए और आगे बढ़ाना चाहिए ।

विचारों की शक्ति

"आपत्तियों से बचने के लिए आत्महत्या कर लेने से जनता का मार्ग-दर्शन नहीं होगा, वरन यह तो एक प्रतिक्रियावादी कार्य होगा । जेल के नियमों के अनुसार जीवन की निराशाओं, दबाव और हिंसा के असीम परीक्षायुक्त वातावरण का विरोध करते हुए हम कार्य करते थे । उस समय नाना प्रकार से हमें कठिनाइयों का निशाना बनाया जाता था । यहां तक कि जो लोग अपने आपको महान क्रांतिकारी कहने का गौरव अनुभव करते थे, वे भी हमको छोड़ गये । क्या ये परिस्थितियां असीम परीक्षायुक्त न थीं ? फिर अपने आंदोलन एवं प्रयासों को जारी रखने के लिए हमारे पास क्या कारण और तर्क था ।

"क्या स्वयं यही तर्क हमारे विचारों को शक्ति नहीं देता है ? और क्या ऐसे क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं के उदाहरण हमारे सामने नहीं हैं, जो जेलों में दंड भोगकर लौटे और अब भी कार्य कर रहे हैं । यदि बाकुनिन ने आपके समान सोच-विचार किया होता, तो वह प्रारंभ में ही आत्महत्या कर लेता । आज आपको असंख्य ऐसे क्रांतिकारी दिखायी देते हैं, जो रूसी राज्य में उत्तरदायी पदों पर विराजमान हैं, और जिन्होंने अपने जीवन का अधिकतर भाग दंड भोगते हुए जेलों में बिताया है । मनुष्य को अपने विश्वासों पर दृढ़तापूर्वक अडिग रहने का प्रयत्न करना चाहिए । कोई नहीं कह सकता कि भविष्य में क्या घटना होनेवाली है ।

"क्या आपको याद है कि जब हम इस विषय पर चर्चा कर रहे थे कि हमारी बम फैक्ट्री में अत्यंत तीव्र एवं प्रभावकारी विष भी रखा जाना चाहिए, तो आपने बड़ी दृढ़ता से इसका विरोध किया था । आप इस विचार से ही घृणा करते थे, आपको इस पर विश्वास नहीं था, फिर अब क्या हुआ ? यहां तो ऐसी विकट और जटिल परिस्थितियां भी नहीं हैं । मुझे तो इस प्रश्न पर विचार करने से भी घृणा होती है । आपको इस मनोवृत्ति से भी घृणा थी, जो आत्महत्या करने की अनुमति देती है ।

"आप मुझे यह कहने के लिए क्षमा करें कि यदि आपने अपने बंदी बनाये जाने के समय ही इन विचारों के अनुकूल कार्य किया होता (अर्थात आपने विष खाकर आत्महत्या उस समय कर ली होती) तो आपने क्रांतिकारी कार्य की बहुत बड़ी सेवा की होती, परंतु इस समय तो इस कार्य पर विचार करना भी हमारे लिए हानिकारक है ।

"हमें जीवन और मृत्यु के विषय में भी

सुखदेव

नितांत भौतिकवादी रीति से सोचना चाहिए । एक दिन मुझे जब पहचाने जाने के लिए दिल्ली से यहां लाया गया था, तो गुप्तचर विभाग के कुछ अधिकारियों ने मेरे पिताजी की उपस्थिति में मुझसे इस विषय पर बातचीत की थी ।

देश के भाग्य का निर्णय

"उनका तर्क था कि मेरी मृत्यु, यह मृत्यु, तो आत्महत्या के समान होगी । उन्होंने कहा था कि मैं कोई भेद खोलने और इस प्रकार अपना जीवन बचाने के लिए तैयार नहीं हूं, — इससे यह सिद्ध होता है कि मैं जीवन में बहुत दुःखी हूं । उनका तर्क था कि मेरी मृत्यु— यह मृत्यु तो आत्महत्या के समान होगी, किंतु मैंने उनको उत्तर दिया था कि मेरे-जैसे विश्वास और विचारोंवाला व्यक्ति व्यर्थ में ही मरना कदापि सहन नहीं कर सकता, हम तो अपने जीवन का अधिक-से-अधिक जीवन-मूल्य प्राप्त करना चाहते हैं, हम मानवता की अधिक-से-अधिक संभव सेवा करना चाहते हैं । विशेषकर मेरे-जैसा भला मनुष्य, जिसका जीवन किसी भी रूप में दुःखी या चिंतित नहीं है, किसी समय भी आत्महत्या करना तो दूर, उसका विचार भी हृदय में लाना ठीक नहीं समझता— वही बात इस समय मैं आपसे कहना चाहता हूं ।

"आशा है, आप मुझे अनुमति देंगे कि मैं आपको बताऊं कि मैं अपने बारे में क्या सोचता हूं, मुझे अपने लिए मृत्युदंड सुनाये जाने का अटल विश्वास है ।

"मुझे किसी प्रकार की पूर्ण क्षमा या नम्र व्यवहार की तनिक भी आशा नहीं है । यदि कोई क्षमा हुई भी, तो पूर्णतया सबके लिए न होगी, वरन वह भी हमारे लिए, नितांत सीमित एवं कई बंधनों से जकड़ी हुई होगी । हमारे लिए न तो क्षमा हो सकती है और न वह होगी ही । इस पर भी मेरी इच्छा है कि हमारी मुक्ति का प्रस्ताव सम्मिलित रूप में और विश्वव्यापी हो जाए और उसके साथ ही मेरी यह अभिलाषा है कि जब यह आंदोलन अपनी चरम सीमा पर पहुंचे तो हमें फांसी दे दी जाए ।

"मेरी यह भी इच्छा है कि यदि कोई सम्मानपूर्ण और उचित समझौता होना कभी संभव हो जाए, तो हमारे-जैसे व्यक्तियों का मामला उसके मार्ग में कोई रुकावट या कठिनाई उत्पन्न करने का कारण न बने, जब देश के भाग्य का निर्णय हो रहा हो, तो व्यक्तियों के भाग्य को पूर्णतया भुला देना चाहिए ।

"आत्मोत्सर्ग और आत्मबलिदान को भी क्या हम आत्महत्या ही कहेंगे ? मेरे विचार से ऐसे लोग जो आत्महत्या करना ही चाहते हैं, उन्हें कोई ऐसा कार्य करना चाहिए, जो मौत के भय से भयभीत आदमी नहीं कर सकता । चंद्रशेखर आजाद के आत्मोत्सर्ग को क्या मानते हैं आप ? हत्या या आत्महत्या ?"

— ई-६०७, कर्जन रोड अपार्टमेंट्स, कर्जन रोड, नयी दिल्ली-११०००१

फिरदौसी का शाहनामा भी एक महाभारत था!

● उषा वधवा

'न मीरम एज इन के मन जिंदहअम
के तुख्म-ए-सुखन रा पराकंदहअम

"मैं मरूंगा नहीं, क्योंकि मैंने अपने शब्द रूपी बीज सब ओर बिखेर दिये हैं और इस तरह मैं सदैव जीवित रहूंगा ।" ये शब्द हैं शाहनामा के अमर रचयिता फिरदौसी के । पर इन शब्दों में शायर का अहम कहीं नहीं झलकता, महज एक सत्य उजागर होता है, जो सब शायरों, कवियों, लेखकों पर इसी तरह लागू होता है, चाहे वह व्यास, वाल्मीकि हों, चाहे होमर, मिल्टन । सत्य कहा फिरदौसी ने— 'वे कभी नहीं मरेंगे ।'

फिरदौसी का नाम इस रूप में भी महत्त्व रखता है कि शाहनामा एक ही व्यक्ति द्वारा रचित विश्व की सबसे लंबी काव्य रचना है । यूं सबसे लंबी काव्य रचना महाभारत मानी गयी है, पर यह भी सर्वविदित है कि वह पूरी ज्यों-की-त्यों वेदव्यास द्वारा रचित नहीं है और उसमें बाद में बहुत-कुछ जोड़ा गया है, जबकि शाहनामे की पूरी लगभग साठ हजार बीयत (दो पंक्तियों की) सब फिरदौसी द्वारा रचित हैं, जिन्हें लिखने में उसे पचीस से तीस वर्ष लगे थे ।

यहां 'लगभग' का प्रयोग इसलिए किया गया है, क्योंकि उस समय एक पुस्तक की अनेक प्रतियां बनाने का काम 'कातिब' किया करते थे एवं कई बार काम जल्दी निबटाने के लिए वह कुछ पंक्तियां— यहां तक कि पूरे के पूरे प्रसंग छोड़ दिया करते थे । शाहनामे की भी मूल रूप में आठ प्रतियां तैयार की गयी थीं और इन आठों में बीयत की संख्या भिन्न-भिन्न है ।

बुस्तान नामा और शाहनामा

सासानी वंश के अंतिम बादशाह यजदार्जिद को फारस के प्राचीन इतिहास एवं परंपराएं इकट्ठी करने का बहुत शौक था और उसकी आज्ञा से वह सब 'बुस्तान नामा' नामक पुस्तक में इकट्ठी की भी गयीं । ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में सुबुक्तगीन के बेटे महमूद गजनवी (या गजनी) ने उसे हराकर टिगरिस से लेकर गंगा तक और तातार से लेकर हिंदमहासागर तक एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की । वह अदब और कला में विशेष रुचि रखता था । उसने 'बुस्तान नामा' से सात कथाएं छांटकर उस समय के सात मशहूर शायरों को एक-एक कथा काव्यबद्ध करने को दी, ताकि जिसकी रचना सर्वश्रेष्ठ हो उसे संपूर्ण गाथा बनजम करने

का काम सौंपा जाए । उस मुकाबले में अब्बुमंसूरी अंसारी द्वारा रुस्तम-सोहराब की कथा बनजम की हुई सर्वश्रेष्ठ घोषित की गयी और शाहनामा लिखने का कार्य भी उसे ही सौंप दिया गया ।

फिरदौसी उस समय अभी अपने जन्मस्थान तूस में था और युवावस्था प्राप्त कर चुका था ।

सन ८२९ हिजरी में प्राप्त शाहनामे की एक हस्तलिखित प्रति की भूमिकानुसार फिरदौसी का जन्म सन ९५० ई. के आसपास हुआ था । उसका जन्म का नाम अब्बु-अल-कासिम था । पिता इसाक शरीफ खान तूस के गवर्नर के यहां माली का कार्य करते थे, पर युवा अब्बु-अल-कासिम अपने उस जीवन से बहुत नाखुश था । उसकी रुचि पढ़ने-लिखने में अधिक थी ।

पुनरुत्थान काल

यह वह काल था जब इसलाम पूरे फारस क्षेत्र पर छा चुका था और अरब संस्कृति का पूरे देश में अत्यधिक दखल हो गया था । धर्म, राजनीति सब उससे प्रभावित हो चुके थे, यहां तक कि भाषा और शायरी भी उसके प्रभाव में आने लगी । अनेक अरबी शब्द फारसी जबान में मिले । लोग अपने अदब, लोक कथाओं एंवं भाषा को भूलने लगे । भूलने लगे कि उनकी एक स्वतंत्र, उन्नत संस्कृति है । पर अरबों के आने के लगभग दो सौ वर्ष के पश्चात एक बार फिर अपनी संस्कृति में नवचेतना जागी, प्राचीन संस्कृति जो कि जारदुश्त धर्म पर आधारित थी, उसमें रुचि बढ़ने लगी । रुस्तम सोहराब, गशतास्त, इसफंदयार आदि की शौर्यगाथाएं फिर से कही-सुनी जाने लगीं और कुछ इतिहासकारों के मतानुसार महमूद गजनी की योजना के पूर्व ही अपने मित्रों के प्रोत्साहन पर अब्बु-अल-कासिम ने उन सब वीर गाथाओं को क्रमवार काव्यबद्ध करने की सोच ली थी । ध्यान रहे उस समय कागज बहुत मंहगा होने के कारण केवल संपन्न लोग ही पुस्तकें लिख (अथवा लिखवा) सकते थे, अतः मित्रों ने कासिम को धन और कागज मुहय्या कराने का वचन भी दिया । इसी समय सौभाग्य से 'बुस्ताननामा' की एक प्रति उसके हाथ लग गयी और उसने इसफंदयार की कथा को बनजम भी किया, जो सबके द्वारा प्रशंसित की गयी । उसने तूस छोड़ गजनी में जाकर अपनी किस्मत आजमाने की सोची, क्योंकि बादशाह की अदब प्रियता एवं शायरों को प्रोत्साहन देने के उसने अनेक चर्चे सुन रखे थे ।

कासिम से फिरदौसी

गजनी पहुंचने की भी एक रोचक कथा है । अब तक प्रसिद्धि पा चुके शायर अब्बु मंसूरी अंसारी अपने शायर मित्रों के संग अपने बगीचे में बैठे काव्य चर्चा कर रहे थे, जब राह भटके, फटेहाल अब्बु-अल-कासिम उनके द्वार पर आ खड़े हुए । पहले तो मित्र मंडली ने डांटकर उन्हें भगा देने की ठानी, पर फिर तय हुआ कि उन्हें बुलाकर अपनी विद्वत्ता की ऐसी धाक बिठायी जाए कि वह स्वयं ही प्रस्थान कर जाएं और जैसा कि उस समय सामान्य रिवाज था, रात वहीं बिताने की न सोचें । पर वह तो धाक जमाने की बजाय अब्बु-अल-कासिम की ही विद्वत्ता के कायल हो गये । फिरदौसी ने उन्हें आशुकाव्य में हराकर अपनी विलक्षण बुद्धि का भी परिचय दिया और साहित्य-वार्ता में अपने

ज्ञान का भी । वे लोग कासिम को ससम्मान गजनी ले गये, जहां बादशाह उससे बहुत प्रभावित हुआ । इसफंदयार के किस्से पर बनजम रचना सुनकर तो उसने शाहनामा लिखने का संपूर्ण कार्य भी उसी के सुपुर्द कर दिया और उन्हें फिरदौसी (फिरदौस अर्थात स्वर्ग) के खिताब से भी नवाजा ।

यह अब्बु मंसूरी अंसारी की दरियादिली ही कही जाएगी कि उसने सहर्ष इस निर्णय को स्वीकार कर लिया ।

बहुत कम लोग जानते हैं कि शाहनामे का प्रारंभ पृथ्वी की उत्पत्ति, स्त्री-पुरुष के आगमन से होता है । इसके अतिरिक्त अनेक आविष्कारों का वर्णन है यथा— अग्नि, लोहा, सोना, अस्त्र-शस्त्र, बुनाई-सिलाई, रसोई, दवाइयां, नाव बनाना इत्यादि । भाषा एवं जंगली जानवरों को पालतू बनाने का वर्णन भी है । शाहनामे में सब मिलाकर तीन हजार छह सौ वर्ष का इतिहास है और इसकी चार मुख्य कथाएं हैं । ईरज, रुस्तम सोहराब, सियावूश और इसफंदयार की कथाएं, जो इश्क और शौर्य, दर्द और रोमांच, दया और विरह से भरपूर हैं । इन सब के बाद सिकंदर के जन्म और युद्धों का वर्णन है ।

शक्तिशाली शासक जमशेद

शाहनामे की कथाओं का प्रारंभ जमशेद के जीवन और राज्यकाल से होता है । उदार और आदर्श राजा होने के कारण वह बहुत शक्तिशाली राजा बन गया पर फिर वह स्वयं को ईश्वर ही मानने लगा । जहाक उसे हटाकर स्वयं गद्दी पर बैठ गया, तो वह भी जुल्मी और आततायी हो उठा और सब ओर त्राहि-त्राहि मच गयी । शैतान ने जब उसे चूमा तो उसके दोनों कंधों पर दो सर्प उग आये, जिन्हें हर रोज दो मनुष्यों का मगज देना अनिवार्य था । कावे नामक एक लोहार जिसके १८ में से १७ बेटे उन सांपों की खुराक हो चुके थे, उसने लोगों में विद्रोह की भावना को भड़काया, जिसने जन-आंदोलन का रूप ले लिया और जहाक को गद्दी से उतारकर एक पर्वतीय गुफा में कैद कर लिया गया ।

रुस्तम अपनी वीरता के लिए जग विख्यात है । उसके समकालीन राजाओं पर जब-जब भी विपत्ति आयी, वह अपनी जान पर खेलकर प्रायः अकेला ही उन्हें दुश्मन के किलों से सही-सलामत लौटा लाने में सफल हुआ । इन सब यात्राओं में उसका वफादार घोड़ा राकुश सदैव उसके संग रहा । ऐसी ही एक यात्रा में उसकी मुलाकात तूरान की एक राजकुमारी के साथ हुई और उन्होंने विवाह भी कर लिया । राजकुमारी को वहीं छोड़ रुस्तम अपने युद्धों पर निकल पड़ा, तो पीछे से सोहराब का जन्म हुआ । राजकुमारी ने इस भय से कि पुत्र को भी रुस्तम अपने-जैसा योद्धा बनाने के लिए उससे जुदा न कर दे, संदेश यह भिजवाया कि पुत्री हुई है । अतः पिता तो अपने पुत्र के वजूद से ही एकदम अनजान था और तूरान के बादशाह ने जब वीर योद्धा सोहराब को फारस से युद्ध के लिए भेजा, तो वह पिता का नाम तो जानता था, पर पहचानता नहीं था । दोनों राज्यों के बीच राह जब दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई तो वीर सोहराब अपने ही पिता के हाथों मारा गया ।

सियावूश की अग्नि परीक्षा

कीकावस का पुत्र और उत्तराधिकारी

फिरदौसी का नाम इस रूप में भी महत्त्व रखता है कि शाहनामा एक ही व्यक्ति द्वारा रचित विश्व की सबसे लंबी काव्य रचना है । यूं सबसे लंबी काव्य रचना महाभारत मानी गयी है, पर यह भी सर्वविदित है कि वह पूरी ज्यों-की-त्यों वेदव्यास द्वारा रचित नहीं है और उसमें बाद में बहुत-कुछ जोड़ा गया है, जबकि शाहनामे की पूरी लगभग साठ हजार बीयत (दो पंक्तियों की) सब फिरदौसी द्वारा रचित हैं, जिन्हें लिखने में उसे पचीस से तीस वर्ष लगे थे ।

सियावूश अत्यंत सुंदर था । अपनी सौतेली मां के प्रणय निवेदन को जब उसने सविनय ठुकरा दिया, तो माता ने सियावूश पर ही तोहमत लगा दी और अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए उसे अग्नि-परीक्षा देनी पड़ी । घोर अपमानित और निराश उसने तूरान के विरुद्ध युद्ध में भाग लेने की ठानी और असमय मारा गया ।

तो यह है एक झलक शाहनामा की कथाओं की । अब देखें महमूद गजनी पर लगाये गये इलजाम में कितनी सत्यता है । जब महमूद गजनी ने फिरदौसी को शाहनामा लिखने की दावत दी, तो उसने अपने वजीर फजल बन अहमद (बन=बेटा अर्थात अहमद का बेटा फजल) को स्पष्ट आदेश दिया कि फिरदौसी को काम के साथ-साथ ही मुआवजा मिलता रहे । हर एक हजार बीयत के पूरे होने पर एक हजार सोने के सिक्के, पर फिरदौसी ने इसके लिए मना कर दिया । उसका ध्येय यह था कि शाहनामा संपूर्ण करने के पश्चात वह सारी धन-राशि एक साथ लेगा, ताकि वह उसे अपने जन्म स्थान तूस की उन्नति में लगा सके ।

अहमद बन हुसैन का षड्यंत्र

फजल बन अहमद न केवल बहुत न्यायप्रिय था, वह फिरदौसी का भी बड़ा प्रशंसक था और उसकी सुख-सुविधा का पू खयाल रखता था । पर हुआ यूं कि बादशाह की अनुपस्थिति में अहमद बन हुसैन ने वजीर फजल को कैद करवाकर धोखे से मरवा डाला और बादशाह का चापलूस होने के कारण स्वयं वजीर बनने में भी सफल हो गया । अब चूंकि वह फजल का शत्रु था, उसके हर मित्र को अपना शत्रु मानने लगा और यूं फिरदौसी भी उसका शत्रु हो गया । इसके अतिरिक्त वह फारसी भाषा का भी विरोधी था और चाहता था कि सब काम अरबी में ही हो । वह फिरदौसी के विरुद्ध बादशाह के कान भरने लगा और शाहनामे की पूर्ण समाप्ति पर बादशाह का 'सोने से लदा हाथी' भिजवाने का हुक्म होने के बावजूद उसने चांदी के केवल साठ हजार दीनार भिजवा दिये । फिरदौसी ने क्रोधवश वह सब उपस्थित तीन जनों में बांट दिये (जिनमें से एक लानेवाला भी था) । इस पर वजीर ने बादशाह को यह कहकर भड़काया कि फिरदौसी ने बादशाह के तोहफे की तौहीन की है ।

बादशाह ने फौरन फिरदौसी को हाथी द्वारा कुचलवाने का आदेश जारी किया, फिरदौसी को

क्षमायाचना पर उसे छोड़ दिया गया, पर जाने से पूर्व उसने राज्य पुस्तकालय में रखी प्रति (कुल आठ प्रतियां तैयार की गयी थीं) निकलवाकर बादशाह के विरुद्ध कलाम लिखा और फरार हो गया और लुकता-छिपता बगदाद जा पहुंचा। अंत में रुस्तमदर के गवर्नर ने बीच-बचाव कर, बादशाह के विरुद्ध लिखी पंक्तियां हटवाकर उसे माफी दिलवायी। इसके पश्चात के दस वर्ष उसने अपने जन्मस्थान तूस में गरीबी और गुमनामी का एकाकी जीवन जिया। मृत्यु के समय वह लगभग ७१ वर्ष का था।

महमूद गजनी आखिरकार अपने चहेते वजीर की धोखाधड़ी से अवगत हुआ। उसे निष्कासित कर उसने फिरदौसी को साठ हजार सोने के सिक्के और राजकीय सम्मान का प्रतीक 'चोगा' भिजवाया। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

सोने से लदा हाथी

दौलतशाह की जीवनी के अनुसार भारत पर किये गये हमलों के दौरान एक बार महमूद गजनी ने अपने एक वजीर को शाहनामा का एक अंश गाते सुना, तो उसे फिरदौसी की एवं अपने किये अन्याय की याद हो आयी। उसने तुरंत ढेर-सा धन उपहारस्वरूप फिरदौसी को भिजवाने का हुक्म दिया, पर तूस के मुख्य द्वार से जब सोने से लदा हाथी भीतर घुस रहा था, तो फ़िरदौसी की अर्थी बाहर निकल रही थी। हालांकि एक किंवदंती के अनुसार यह हादसा फ़िरदौसी के घर की गली में ही हुआ था। बहरहाल उसी की जीवनी के अनुसार उसकी एकमात्र बहन ने वह धन लेने से बिलकुल ही इनकार कर दिया था।

शाहनामा यद्यपि शाहों की गाथा है पर उसमें इतिहास ढूंढ़ना बेकार है। जैसा कि उस समय प्रचलन था इसमें भी राजाओं और योद्धाओं के कारनामों का अति बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया गया है। शायद उस समय हर देश के अपने अविजित योद्धा थे, जो तिलिस्मी दैत्यों और मायावी राक्षसनियों से अकेले जूझकर उन्हें समाप्त करने में सक्षम होते थे। राजा जमशेद आज भी ईरानी जीवन का एक अंग हैं और २१ मार्च का नववर्ष— नोरुज— का जश्न इन्हीं जमशेद के काल में प्रारंभ हुआ माना जाता है और आज भी बहुत जोश से मनाया जाता है (हमारी दीवाली की तरह), पर शाहनामे पर विश्वास करें, तो जमशेद ने सात सौ वर्षों तक राज्य किया और उसके बाद आनेवाले जहाक ने एक हजार वर्ष तक। महायोद्धा रुस्तम चार सौ वर्ष से ऊपर जिया और उसकी मृत्यु के समय अभी उसका पिता जीवित था। जिस तरह महाभारत के भीष्म पितामह पीढ़ियों तक जीवित रहे।

महाभारत और शाहनामा

महाभारत की ही तरह शाहनामे में अनेक पीढ़ियों की कथा है, पर महाभारत का हर पात्र कुछ इस तरह कहानी में गुंथा है कि एक को भी उठा लेने से कथानक गड़बड़ा जाएगा, जबकि शाहनामे के रुस्तम के सात मुख्य युद्धों में से पूरा एक भी निकाल देने से विशेष अंतर नहीं पड़ेगा। कुछ विद्वान शाहनामे की तुलना रामायण से भी करते हैं, पर राम का चरित्र जहां एक संपूर्ण आदर्श प्रस्तुत करता है, रुस्तम मुख्यतया अपनी शूरवीरता के लिए ही प्रसिद्ध है, हां यह सही है कि उसने अपने समकालीन

राजाओं की हर मुश्किल की घड़ी में सहायता की, उनके लिए अपनी जान जोखिम में डाली ।

फिरदौसी को पूर्व का होमर भी कहा गया है । यह इस सीमा तक सही है कि दोनों ही अपने देश के श्रेष्ठतम शायर थे । होमर ने जिस भांति ग्रीक भाषा की नींव रखी और उसके प्रथम साहित्यकर्मी बने उसी तरह फिरदौसी भी फारसी शायरी के जनक थे । उनके समय फारसी भाषा का जो रूप तैयार हुआ और उनके द्वारा परवान चढ़ा, वही आज भी कायम है । दूसरे शब्दों में शाहनामा फारसी की प्रथम साहित्यिक पुस्तक है । यह वह दौर था जब शारीरिक बल, साहस का अतीव महत्त्व था । हर समस्या का निबटारा युद्ध से होता था और ऐसा ही होमर और फिरदौसी दोनों ने ही अपनी कृतियों में किया है । बहरहाल, शाहनामे में चाहे कल्पना की बहुत ऊंची उड़ानें हैं, इसकी भाषा सीधी-सादी शफ़्फ़ाक है । कथानक में शौर्य तो है ही, उसके साथ ही आशिकी, रहस्य रोमांच और मिथक का भी मजा है और यदि मूल फ़ारसी में पढ़ा जाए, तो भाषा की लय का असली आनंद लिया जा सकता है ।

विवादास्पद व्यक्तित्व

विवाद ने फिरदौसी की मृत्यु के उपरांत भी उसका पीछा नहीं छोड़ा । इसलाम नया-नया फारस में आया था और कहते हैं न कि नया मुल्ला अजान भी जोर से देता है सो कट्टर मुसलमानों को इसलाम पूर्व के इतिहास को गौरवान्वित करना बहुत नागवार गुजरा । एक ऐसा धर्म (जारदुश्त) जिसे कि समूल नष्ट करने के प्रयत्न किये जा रहे थे, उसके अनुयायी राजाओं की वीर-गाथाएं कहना कट्टरवादियों को तनिक न सुहाया और इन सबके अगुआ थे अब्बु-अल-कासिम गूरकानी, जिन्होंने फिरदौसी को — मुसलमान होने के बावजूद— मुसलमानों की कब्रगाह में दफनाने से बिलकुल इनकार कर दिया । किंवदंती है कि बाद में ख्वाब में खुदा का फरमान मिलने पर वह फिरदौसी को मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफनाने को राजी हो गये ।

यद्यपि फिरदौसी की यह अभिलाषा अपूर्ण रह गयी कि वह शाहनामे से प्राप्त धन से तूस को संवारे-निखारें । वास्तव में तो तूस में जन्म लेकर ही उन्होंने उस गांव को धन्य कर दिया, जिसकी प्रगति उनका ध्येय था, फिरदौसी तो एक ही बार तूस पर धन व्यय कर पाते, पर आज ईरान के पूर्वी प्रांत खुरासान की राजधानी मशहद से २७ कि. मी. दूरी पर स्थित तूस पर्यटकों के लिए विशेष दर्शनीय स्थल है और अदीबों, कला-प्रेमियों के लिए जियारतगाह (पूजा-स्थली) लंबे-चौड़े अहाते में बनी फिरदौसी की विशाल दो-मंजिली आरामगाह (मकबरा), साथ में पुस्तकालय जिसमें शाहनामे की हस्तलिखित प्रति एवं फिरदौसी का चोगा भी है । इन दोनों को घेरकर बड़ा-सा बगीचा, कुछ-कुछ हमारे ताजमहल के बगीचे-जैसा, नीचे की मंजिल के भीतरी दीवारों पर शाहनामे की घटनाएं चित्रित हैं । सत्य-सी प्रतीत होती अनेक घटनाओं के अनेक विशाल चित्र फिरदौसी और उसकी कृति को अमरत्व प्रदान करते हैं । फिरदौसी ने जो शब्द रूपी बीज बिखेरे थे निश्चय ही वह कभी उन्हें मरने नहीं देंगे ।

— जी १०, मसजिद मोठ दिल्ली-११००४८

गोष्ठी

अश्रु मालकर, दरभंगा
● गंगा का एक अन्य नाम जाह्नवी कैसे पड़ा ?
☐ राजा भगीरथ जब अपने तप से गंगा को पृथ्वी पर ले आये और भगवान शंकर ने उन्हें अपनी जटा में धारण करने के बाद प्रवाहित कर दिया और भगीरथ का अनुसरण करती हुई वह बंगाल की ओर प्रस्थान कर रही थीं, तो मार्ग में उन्होंने जाह्नु मुनि के आश्रम को डुबो दिया । इस पर कुपित होकर मुनि ने गंगा का आचमन कर लिया । भगीरथ के अनुनय-विनय करने पर उन्होंने अपने जानू (जंघा) से उसे निकाल दिया । इस कारण गंगा को जाह्नवी भी कहते हैं ।

रजनी श्रीवास्तव, गुना
● चींटी के काटने से जलन क्यों होती है ?
☐ कुछ चींटियों के डंक होते हैं, तो कुछ अन्य प्रजातियों की चींटियां काटते समय तेजाब (फार्मिक एसिड) का स्राव करती हैं । जलन का यही कारण है ।

विमला भार्गव, जयपुर
● 'हर्षचरित' के लेखक कौन थे ?
☐ महाराजा हर्षवर्द्धन के राज कवि बाण भट्ट ने 'हर्षचरित' की रचना सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में की थी ।

रविकान्त वर्मा, ग्वालियर
● पंडित जसराज की गायकी किस घराने की है ?
☐ पंडित जसराज मेवाती घराने के शिष्य हैं । इन्होंने अपने अग्रज पं. मणिराम से शिक्षा ली थी, जिन्हें इन दोनों के पिता पं. मोतीराम ने सिखाया था ।

फारूक अहमद, गया
● हिजरी सन की शुरुआत कब से मानी जाती है ?
☐ ईसवी सन ६२२ से, अर्थात जिस वर्ष कुरआन का प्रकटन हुआ । भारत में इसे सबसे पहले तुर्कों ने प्रचलित किया, जिसे बाद में मुगलों ने अपनाया, किंतु सन १५८७ से सन १६५९ तक अकबर के इलाही सन के प्रचलन मे आने से यह लगभग भुला दिया गया । कट्टरपंथी औरंगजेब ने इसी वर्ष (सन १६५९) हिजरी सन पुनः जारी किया ।

नितीन कापड़िया, बुरहानपुर
● बिजली के हाई पावर तारों पर बैठे पक्षियों को करेंट क्यों नहीं लगता ?
☐ क्योंकि इस स्थिति में उनका संपर्क धरती से नहीं रहता । यदि बिजली के खंभों से गुजरते दो तारों के बीच वे आ जाएं और दोनों से छू जाएं, तो वे जलकर राख हो जाएंगे ।

बजरंग लाल गुप्त, रायगढ़
● सोडियम बल्ब से क्या लाभ और हानि हैं ?
☐ सोडियम बल्ब का प्रकाश साधारण बल्ब से लगभग ढाई गुना अधिक होता है, किंतु वाटेज कम होने से बिजली कम खर्च होती है । इससे हानि कुछ नहीं होती । हां, मंहगे होने के कारण प्रारंभिक खर्च अधिक बैठता है ।

दीनानाथ त्यागी, मेरठ
● भारतवर्ष में डाक-व्यवस्था की शुरुआत कब से हुई ?
☐ सन १८३७ से ।

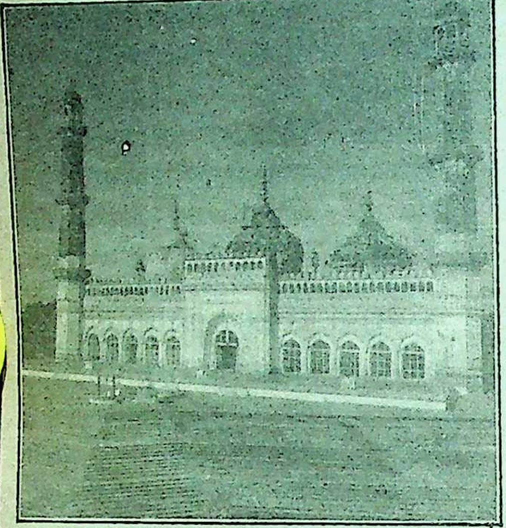

रामकिशोर अग्रवाल, फैजाबाद

● लखनऊ के बड़े इमामबाड़े की निर्माण वि क्या है ?

☐ यंह संसार के मेहरावी छत वाले (वॉल्टे विशालतम सभागारों में से एक है । ईरानी वास्तुकार किफायत उल्लाह द्वारा बनाये गये डिजाइन के आधार पर नवाब आसफुद्दौला (सन १७७५-९७) ने इसे दुर्भिक्ष पीड़ित ज की सहायतार्थ सन १७८४ में निर्मित कराय था । लखौरी ईंटों से बना यह हॉल ४९.७ मी लंबा, १६.१६ मीटर चौड़ा और १४.८५ मी ऊंचा है । इसकी ऊपरी मंजिल पर बनी भूलभुलइया अधिकतर दर्शकों को आकर्षित करती है ।

जगजीत सिंह, भिवानी

● प्रथम भारतीय 'विक्टोरिया क्रॉस'—विजेता कौन था ?

☐ सिपाही खुदादाद खां ने अक्तूबर, १९१४ में 'विक्टोरिया क्रॉस' प्राप्त किया था और इस प्रकार वह इस पदक का पहला भारतीय विजेता था । इसकी स्थापना महारानी विक्टोरिया ने सन १८५६ में की थी । इस शौर्य पदक का अंतिम भारतीय विजेता लछ्मन गुरुंग था, जिसे मई, १९४५ में यह दिया गया था । द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले भारतीय 'विक्टोरिया क्रॉस' — विजेता सेकेंड लेफ्टिनेंट प्रेमेन्द्र सिंह भगत थे जो स्वाधीन भारत में जनरल पद से सेवानिवृत्त हुए थे । सन १९७५ में इनका देहांत हुआ ।

मधु मोदक, धनबाद

● कोलम्बस ने वेस्ट इंडीज की खोज कब की थी ?

☐ कोलम्बस ने सन [illegible] में अपनी दूसरी यात्रा के दौरान अन्य स्थानों के अतिरिक्त जमैका की भी खोज की थी । अपनी तीसरी यात्रा (सन १४९८-१५००) में उसने दक्षिण अमरीका की मुख्य भूमि के साथ ट्रिनिडाड भी खोज निकाला था । ज्ञातव्य है कि कोलम्बस की पहली यात्रा ३ अगस्त,१४९२ में शुरू हुई थी ।इसके लिए खर्च और व्यवस्था स्पेन के राजा ने की थी, जहां वह इटली से जाकर बस गया था ।

ब्रज किशोर कोमल, दरभंगा

● पैलेस ऑन व्हील' ट्रेन का यात्रा मार्ग और किराया क्या है ?

☐ 'पैलेसे ऑन व्हील' ट्रेन सितम्बर से अप्रैल तक सात रातों की यात्रा पर प्रत्येक बुधवार को दिल्ली छावनी स्टेशन से निकलती है और जयपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, सवाई माधोपुर, जैसलमेर, जोधपुर, भरतपुर, आगरा होती हुई

सुशील पंथी, देहरादून

● किंगफिशर पक्षी मूलतया किस महाद्वीप का है ?

□ यह एशिया सहित लगभग सभी महाद्वीपों के देशों में पाया जाता है । आस्ट्रेलिया का किंगफिशर सुंदरतम माना गया है ।

दिल्ली छावनी वापस आती है ।इसका प्रति व्यक्ति किराया २१०० डॉलर या इसके बराबर की भारतीय मुद्रा है । इस किराये में भोजन, रहने की जगह, दर्शनीय स्थलों की सैर, आदि शामिल है । मदिरापान का खर्च अलग देना होता है ।

अब्दुल अजीज अंसारी

● मनुष्य रूप-जैसी जड़ वाले पौधे का क्या नाम है ?

□ मैनड्रेक की जड़ मुनष्य के रूप-जैसी होती है । पहले यह आम विश्वास था कि इसकी जड़ की तासीर कामोत्तेजक है । बताया जाता है कि जड़ से उखाड़े जाने पर यह पौधा चीखता-चिल्लाता था और इसे सुननेवाले पागल हो जाते थे । अतः इसे उखाड़ने के लिए प्रशिक्षित कुत्तों का उपयोग किया जाता था । वनस्पतिक नाम 'मैड्रागोरा' वर्ग की यह मैनड्रेक जड़ी मूलतया यूरोपीय है । इसकी पत्तियां लंबी तथा फूल सफेद होते हैं । इसकी जड़ मनुष्य के स्वरूप-जैसी होती है ।

विष्णु कुमार सखलेचा, रतलाम

● खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है', इसका अर्थ क्या है ?

□ पकते फलों से इथिलीन नामक गैस उत्पन्न होती है, जो हवा में फैलकर दूसरे फलों को भी पकाती है । फल पकने से पहले की अवस्था को क्लायमेक्टेरिक कहते हैं; जिसकी गति को इथिलीन तेज करती है । पकने की अवस्था में पहुंचे हुए फलों से उत्पन्न इथिलीन गैस हवा के सहारे एक-से-दूसरे खेत तक बहती चली जाती है तथा हरे खरबूजों को पकाती हुई उन्हें पीले कर देती है । इसी को कहते हैं 'खरबूजे को देखकर खरबूजे का रंग बदलना '।

महावीर प्रसाद, कैलाना

● 'तुगलक' का लेखक कौन है ?

□ अंगरेजी नाटक 'तुगलक' के लेखक गिरीश करनाड हैं ।

चलते-चलते

● लगभग अर्द्धनग्न वस्त्रों को धारण किये हुए एक आधुनिका को एक बुजुर्ग ने समझाया कि नारी का सौंदर्य उसके वस्त्र हैं ।

□ उत्तर मिला : अंकल, आप पुराने जमाने के हैं, भूल जाते हैं कि सौंदर्य प्रतियोगिता में हजारों डॉलर मिलते हैं । इतना पैसा कपड़े पहनने के नहीं, कपड़े उतारने के होते हैं । **—सूत्रधार**

नामों का रोमांस

● कमल रंजन 'हिमशैल'

नगर, ग्राम, युद्ध क्षेत्र, नदी, पर्वत, प्रांत—इनके नाम कहां से आते हैं ? हिंदुस्तान इतना विराट और प्राचीन है कि हजारों वर्षों से कल तक के नाम यहां हैं । जोजीला से वास्को-डि-गामा और अरब की सराय से तिरुचिरापल्ली - जैसे हजारों नाम भारत में हैं । न जाने कितने रामपुर हैं ! गांधीधाम से गांधीनगर तक कई नाम प्रचलित हो चुके हैं । नये नाम, नये इतिहास के प्रतिबिंब स्वरूप आते रहते हैं—चित्तरंजन और बोकारो, ट्रोंबे और पोकरण राउरकेला, भिलाई और चंडीगढ़—इन नामों के पीछे यंत्र-युग का एक रोमांस है । हल्दीघाटी राणा प्रताप के साथ-साथ अमर हो गया है । यहां की मिट्टी पीली थी, इसलिए यह नाम पड़ा । क्लाइव और सिराजुद्दौला का जहां मुकाबला हुआ था, वह प्लासी का मैदान बंगला में 'पलाशी' कहा जाता है, क्योंकि वहां पलाश के लाल फूलों की चादर बिछ जाती थी । पानीपत के बारे में कहा जाता है कि यहां राजा और सैनिक अपना पानी (शक्ति) और पत (प्रतिष्ठा) नाप लेते थे । कई दफा दंतकथाएं भी नामों का कारण होती हैं ।

नामों पर सांस्कृतिक प्रभाव

भारत में नदियों के नामों के पीछे आर्य-संस्कृति है, पर शहरों के नामों पर इसलामी असर दिखायी पड़ता है । रोहिल्ला सराय या मुगल सराय प्रजा के पड़ाव या सराय थे । मोकामाघाट गंगा पर स्थित है । फौजें वहां 'मुकाम' करती थीं, इसलिए नाम पड़ा मोकामा । व्यक्तियों को अमर करने के लिए नाम पड़े—उदयपुर, जयपुर, हैदराबाद, अहमदाबाद, मुर्शिदाबाद आदि । अकबर ने अल्लाह से इलाहाबाद नामकरण किया । लक्ष्मणपुर कालक्रम में लखनऊ बन गया । हैदराबाद का मूल नाम था भागनगर—भाग्य का नगर । लेकिन हैदर अली के नाम पर हैदराबाद जनता की जीभ पर बैठ गया । हैदरअली के पुत्र टीपू ने महेसुर का नाम नजराबाद रखा, मगर लोग महेसुर भूल नहीं पाये । शासक या नगरपालिका की पसंद से नाम नहीं जीते, जब जनता पसंद करती है, तभी नाम स्थायी बनते हैं । श्रीनगर का मूल नाम था सूर्यनगर । मुसलिमों की विजय के बाद इसका नाम इसलामी कर दिया गया, लेकिन बाद में सिखों द्वारा प्रायः जीत लेने के कारण वह श्रीनगर बन गया ।

नाम नदियों के

हमारी नदियों में थोड़े ही नाम पुल्लिंग हैं, जैसे ब्रह्मपुत्र, तुंगभद्र आदि । अधिकतर नाम स्त्रीलिंग हैं । गंगा भीष्म की माता है, यमुना

की बहन है । भाषाविद मानते हैं कि गंगा नाम तिब्बती-बर्मी भाषावर्ग से निकला है । ब्रह्मपुत्र को लौहित्य भी कहते हैं । चंबल का नाम चर्मण्वती था । चिनाब चंद्रभागा, झेलम वितस्ता और रावी इरावती थी ।

वशिष्ठ ऋषि अपने आपको बांधकर पानी में कूद पड़े थे, मगर पानी ने उनके बंधन काट दिये । इसी कारण यह विपाशा अथवा व्यास के नाम से पहचानी जाने लगी । सतलुज शतद्रु थी, यानी सौ स्रोतों में बंट जानेवाली ।

वशिष्ठ ऋषि अपने आपको बांधकर पानी में कूद पड़े थे, मगर पानी ने उनके बंधन काट दिये । इसी कारण यह विपाशा अथवा व्यास के नाम से पहचानी जाने लगी । सतलुज शतद्रु थी, यानी सौ स्रोतों में बंट जानेवाली ।

मिस्र अर्थात लाल बादामी कीचड़

भारत के कुछ क्षेत्रों के नाम भी रोचक हैं । प्राचीन तमिल भाषा में चेरलम का अर्थ था पर्वतमाला और उसी से चेर और केरल शब्द आये हैं । भारत का पूर्वी किनारा अंगरेजी में कॉरोमंडल-कोस्ट कहा जाता है, जिसका मूल है चोलमंडलम । चोल नरेशों ने वर्षों तक पूर्वी किनारे पर आधिपत्य जमा रखा था । कन्याकुमारी को पुर्तगालियों ने बिगाड़कर केप-कोमोरीन बना दिया ।

सोरठ से मालवा तक डोंगर का अर्थ है जंगल । डोंगरगढ़, डोंगरपुर, डोंगरगांव भारत में मशहूर हैं । 'डोंगर' शब्द गोंड प्रदेश की भाषा है । बंगाल की आदिवासी भाषा के 'बीर' शब्द से बीरभूम हुआ ।

सिंहल द्वीप पाली में सिंहलदीप, अरबी में सरन दीब, पुर्तगाली में सीलाओं, अंगरेजी में सीलोन बना । और अब श्रीलंका है ।

कुछ विदेशी देशों और शहरों के नामों की उत्पत्ति भी इतनी ही रोचक है । मिस्र अरबी में लाल-बादामी कीचड़ को कहते थे, इस पर से (देश का नाम) मिस्र या बाद में इजिप्ट हुआ है ।

ईरान के सम्राट सायरस की एक प्रस्तर-शिला पर 'हिंदुश' नाम से हिंदुस्तान का उल्लेख मिलता है । वियतनाम का अर्थ होता है दक्षिण की ओर जाना । 'नाम' का अर्थ वहां की भाषा में दक्षिण होता है । ईरान, आयरलैंड आदि शब्दों के गर्भ में आर्य शब्द निहित है । इन (हून) बस जाने से प्रदेश का नाम पड़ा हंगेरी । डैन्यूब नदी पार करके बस जानेवाले रोमनों ने उस प्रदेश को नाम दिया—रोमानिया । असम से मिलता-जुलता नाम है स्याम (थाईलैंड) । हमारी मलयालम भाषा, मलय देश तथा संस्कृति शब्द मलय (पवन) का बहुत घनिष्ठ संबंध है । सुमात्रा स्वर्णद्वीप तथा जावा यवद्वीप था । लाओस मूललव कहा जाता था । कंबोडिया का नाम था कंबोज । यमन शब्द यमनी से आया है । आज भी गुजराती में 'जमणी' शब्द दक्षिण (दायें) के

लिए इस्तेमाल होता है । यह स्थान अरब में काबा के दायीं ओर स्थित है । यूरोपीय तुर्किस्तान रूम तथा एशियाई तुर्किस्तान शाम कहा जाता था । अरबों ने तत्कालीन विश्व के प्रदेशों के नाम प्रास (वर्णसाम्य) में रखे थे, जैसे—रूम, शाम, ईरान, चीन, तूरान, हिंद और यूनान !

विलायत का अर्थ परराष्ट्र

विलायत का अरबी में अर्थ है—परराष्ट्र । पहले ईरान, तुर्किस्तान आदि को कहते थे । अब विशेषतया इंगलैंड को कहते हैं । दुनिया शब्द भी अरबी 'दुनु' से बना है—दुनिया का अर्थ है बहुत ही समीप में रहनेवाली स्त्री । परलोक से इहलोक या दुनिया समीप है इसीलिए ।

विदेशी शहरों के मूल नाम कुछ भिन्न थे । काठमांडू काष्ठमंडप था । पेशावर का पूर्व नाम पुरुषपुर तथा सिंगापुर का सिंहपुर था । अदन का अर्थ है स्वर्ग । बाइबल मे भी स्वर्ग के लिए 'ईडन' शब्द का प्रयोग हुआ है । बगदाद का मूल बागेदाद था—बाग का मतलब बगीचा और दाद का मतलब है न्याय इनसाफ, अर्थात बगीचा जहां शाह नौशेरखां हफ्ते में एक दिन बैठकर इनसाफ करता था । बुखारा का आदि शब्द है बुखार, फारसी में जिसका अर्थ है विद्या—वह शहर जिसने बहुत-सारे विद्वान पैदा किये । सूरत को एक जमाने में बाबुल-मक्का कहा जाता था—मक्का का दरवाजा । हज के यात्री यहां से आया-जाया करते थे ।

भारत के नगरों के नाम भी कम रोचक नहीं हैं । अयोध्या का अर्थ होता है, ऐसा प्रदेश जहां युद्ध नहीं होता । अयुद्ध से अयोध्या आया । इसी से संबंधित है अवध । राजपूत इतिहास का विख्यात रणथंभोर मूलतः रण+थंभ+भ्रमर था, अर्थात युद्ध के थंभ का भ्रमर । कश्मीर-युद्ध का प्रसिद्ध बारामूला असल में वराहमूलम् था । प्रयाग का संबंध यज्ञ से है । अजंता के बारे में माना जाता है मूल शब्द था अचिंत्य । खजूर के वृक्ष आसपास होने के कारण खजुराहो नाम पड़ा । स्थाण्वीश्वर थानेसर बन गया, प्रतिष्ठानपुर पैठण हो गया । कन्नौज का आदिनाम था कान्यकुब्ज । ताम्रलिप्त तामलुक बन गया । तिरुपति संस्कृत तमिल समास है, अर्थ होता है पवित्र अथवा पूजनीय ईश्वर । अजमेर का मूल नाम था अजयमेरू और मंगलोर मंगलपुर से आया है ।

वाराणसी गंगा-जैसी महान नदी के किनारे बसा है, लेकिन उसके नाम के पीछे दो छोटी नदियां हैं—वरुण और असी । संस्कृत के शब्द देहली से दिल्ली की उत्पत्ति हुई है । मद्रास का भी मूल महेरास बताया जाता है । इस नाम से पुराने अंगरेजी प्रवास-वर्णनों या रेकॉर्ईज में उल्लेख है । मुंबई शायद मुंब+आई (मराठी में आई का मतलब माता है) से आया है, मुंबादेवी का यहां मंदिर है ।

—निकट ए. एस. पी. ऑफिस
काजीचक, बाढ़, पटना

जब सियासत मजहबों से खेलना कर देगी बंद
फिर से यह हिंदोस्तां, हिंदोस्तां हो जाएगा
—तसव्वुर नसरानी

अब न पनघट है, न चौपाल, न झूले, न बसंत
गांव को शहर बनाने की सजा पायी है
—शफक [illegible]

एशिया का सबसे बड़ा कैक्टस उद्यान

नागफनी में नाग नहीं है !

• हेमन्त चौहान

शिवालिक पहाड़ियों के दामन में स्थित 'पंचकुला' हरियाणा का एक आधुनिक एवं सुंदर नगर है । यह नगर हरियाणा की राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र तथा राज्य की संभावित राजधानी के कारण पहले ही अपनी पृथक पहचान बना चुका है । हरियाणा का पेरिस पंचकुला गत दो-तीन वर्षों से जिस वजह से राष्ट्रीय स्तर पर उभरा है, वह यहां पर स्थित विशाल कैक्टस उद्यान है, जिसका पूरा नाम कैक्टस व सक्यूलैंट बौटेनिकल गार्डन है । यह उद्यान एशिया का अपनी ही तरह का सबसे बड़ा कैक्टस गार्डन है । उद्यान की प्रसिद्धि तथा महत्ता को राष्ट्रीय स्तर पर भुनाने के लिए हरियाणा सरकर ने गत वर्ष दिल्ली में हुए गणतंत्र दिवस समारोह में इस सुंदर उद्यान को राज्य की झांकी के तौर पर प्रस्तुत किया था, जिसकी काफी प्रशंसा हुई थी ।

कैक्टस की ढाई हजार किस्में

घग्घर नदी के किनारे बसा यह खुला एवं खूबसूरत नगर चंडीगढ़ से मात्र आठ किलोमीटर दूर है । नगर के पांच सैक्टर में स्थित कैक्टस उद्यान के स्थल का विकास कार्य इसके संग्रहाध्यक्ष डॉ. जे. एस. सरकारिया की देखरेख में जुलाई, १९८७ को आरंभ हुआ था, जबकि इसका विधिवत उद्घाटन हरियाणा के वर्तमान मुख्यमंत्री भजनलाल ने १२ मई, १९९२ को किया था । करीब छह एकड़ भूमि पर विकसित इस उद्यान में विश्व के पांच उपमहाद्वीपों से कैक्टस की २५,०० के लगभग किस्मों का संग्रहण किया गया है । यह विशाल उद्यान अमरीका के लॉस एंजिल्स शहर के नजदीक स्थित प्रसिद्ध 'डजर्ट बौटेनिक तथा लोटस गार्डन' के नक्शे पर बनाया गया है ।

इस उद्यान में संग्रहीत कैक्टस वनस्पति के अधिकतर पौधे पूर्वी तथा दक्षिण अफरीका के भागों में पाये जाते हैं । उद्यान का 'मामीलारिया कलैक्शन' नामक एक भाग दक्षिण अमरीका और मैक्सिको के प्रसिद्ध कैक्टस वैज्ञानिक एलफ्रेड बी. लायो को समर्पित किया गया है ।

दवाइयां और मदिरा बनाने में उपयोग

कैक्टस प्रजाति के पौधे केवल देखने योग्य या किसी बगीचे की सुंदरता बढ़ाने के काम ही नहीं आते, बल्कि दुनिया में इनका प्रयोग कई प्रकार की दवाइयां तथा खाद्य सामग्री आदि बनाने में किया जाता है । विश्व के विभिन्न देशों में पाये जानेवाले ये दुर्लभ पौधे मुख्यतः प्राणियों के भोजन, खेती की बाड़, सजावट के काम एवं दवाइयां इत्यादि बनाने के काम आते हैं । कैक्टस के पौधे पश्चिमी देशों में सौंदर्य प्रसाधनों तथा मैक्सिको में विभिन्न प्रकार की मदिरा एवं

मिष्ठान्न बनाने में प्रयोग किये जाते हैं ।

कैक्टस की कुछ विशिष्ट प्रजातियों से कई महत्त्वपूर्ण एवं बहुमूल्य पदार्थ बनाये जाते हैं । 'यूफोरबिया' नामक कैक्टस पौधा अफरीका में त्वचा के कैंसर के इलाज के काम आता है, जबकि 'ओपनसिया' पौधा पशुओं के इलाज, जैम एवं कैंडी बनाने में प्रयोग किया जाता है । बहुआ कैक्टस प्रजाति के पौधों में, 'अल्कोयड' में जो रस पाया जाता है, उसे ब्लड प्रैशर के इलाज हेतु इस्तेमाल किया जाता है । भारतीय प्रजाति के 'कैरालूमा' को जोड़ों के दर्द के लिए बननेवाली दवाई में प्रयोग किया जाता है ।

दुर्लभ पौधों का विकास

इस उद्यान में मैक्सिको, पेरू, वैनृजुयेला, इजराइल एवं अमरीका आदि देशों में मिलनेवाले कैक्टस के कुछ दुर्लभ पौधे विकसित किये गये हैं । करीब दो दर्जन पौधे ऐसे हैं जो विश्व में मिलनेवाले दुर्लभ ही नहीं बल्कि अप्राप्य भी हैं । यह नागफनी, रसदार एवं गूदेदार-जैसे दिखनेवाले कैक्टस के पौधे शुष्क स्थानों एवं पानी की कमी में भी उगाये जा सकते हैं । वर्णनीय है कि दूसरे पौधों के मुकाबले कैक्टस की देखभाल काफी मुश्किल है । सरदियों और बरसात के मौसम में इनको पानी की कम जरूरत होती है । आमतौर पर इन पौधों को सप्ताह में एक बार पानी देना पड़ता है, जबकि गरमियों में दिन में तीन-तीन बार पानी देना जरूरी होता है । इन पौधों को सुरक्षित रखने के लिए भीषण गरमी में 'सन-बर्न' से बचाने की खातिर पॉलिथिन से भी ढकना पड़ता है ।

विभिन्न देशों में पाये जानेवाले दुर्लभ पौधे मुख्यतः प्राणियों के भोजन, खेती की बाड़, सजावट के काम एवं दवाइयां इत्यादि बनाने के काम आते हैं । कैक्टस के पौधे पश्चिमी देशों में सौंदर्य प्रसाधनों था मैक्सिको में विभिन्न प्रकार की मदिरा एवं मिष्ठान्न बनाने में प्रयोग किये जाते हैं ।

इस विशाल बगीचे में कैक्टस एवं बौटेनिकल प्रजाति के दुर्लभ पौधों को सामान्य तापमान मुहइया कराने के लिए चार बड़े-बड़े ग्लास घरों में रखा गया है । गार्डन में ऐसे ही छह और पारदर्शी ग्लास घर बनाने की योजना है । उद्यान के बोटेनिकल संग्रहालय में छह हजार से ज्यादा पौधे हैं, जबकि खुले स्थल में डेढ़ लाख के करीब पौधे संग्रहीत किये गये हैं । उद्यान के एक तरफ पत्थरों में से निकलता पानी पहाड़ों में गिरते किसी झरने का आभास कराता है, जबकि सर्पनुमा छोटा-सा जलाशय एवं उस पर बनी पुलिया उद्यान में आनेवाले पर्यटकों का दिल मोह लेती है । पंचकुला में वैसे तो और भी कई देखने योग्य स्थल हैं जैसे टपियारा पार्क चितवन पार्क तथा 'यावनिका' ओपन एयर थियेटर आदि, परंतु इन सबमें कैक्टस उद्यान अति दर्शनीय है । इस मनमोहक, आकर्षित तथा ज्ञानवर्धक उद्यान का आनंद उठाने स्थानीय

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के मध्य रात्रि मथुरा में कंस के कारागृह में श्रीकृष्ण का जन्म तो हुआ परंतु उसका उत्सव संपन्न हुआ जमुना के उस पार बसे ग्वालों के गोकुल ग्राम बस्ती में नंद के घर ! इसका स्मरण कर आज भी ब्रज के लोग उत्साह से नाचते-कूदते गाते हैं—

आज ब्रज भयौ सकल आनंद
नंद महर घर ढोटा जायौ— पूरन परमानंद !

श्रीकृष्ण का बालपन बीता गोकुल-वृंदावन की कुंज गलियों में । नटखट बालक का यह बाल्यकाल सजीव हो उठता है सूरदास के भावभीने पदों में वात्सल्यभरे माधुर्य से रससिक्त शब्दों से जड़े इन पदों में श्रीकृष्ण का मोहक बालरूप ऐसा उभर आता है जैसा दही बिलोने से ऊपर आया शुभ्र मुलायम नवनीत !!

बालक को पालने में झुलाने का आनंद तो माता ही जाने ! सूरदास कहते हैं—

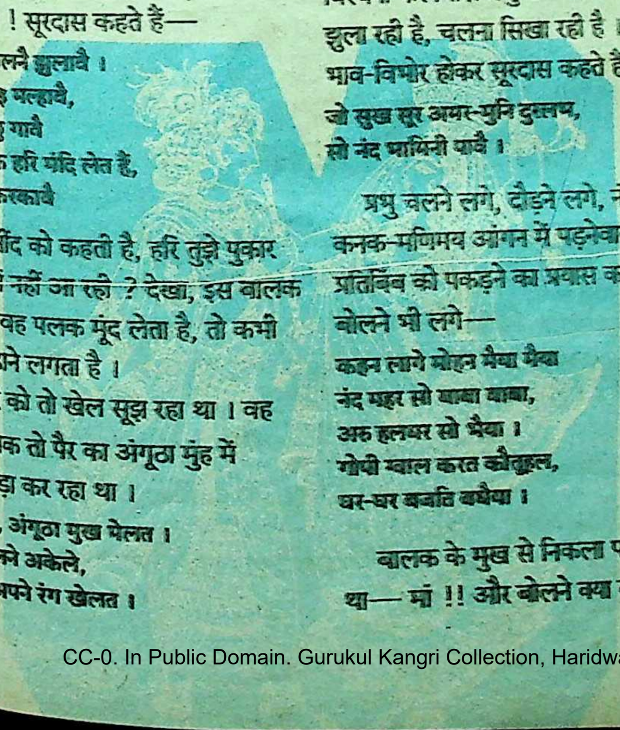

जसोदा हरि पालनै झुलावै ।
हलरावै दुलराइ मल्हावै,
जोइ-सोइ कछु गावै
कबहुंक पलक हरि मूंदि लेत हैं,
कबहुं अधर फरकावै

यशोदा नींद को कहती है, हरि तुझे पुकार रहे हैं, तू क्यों नहीं आ रही ? देखा, इस बालक को ? कभी वह पलक मूंद लेता है, तो कभी होठ फड़फड़ाने लगता है ।

परंतु हरि को तो खेल सूझ रहा था । वह नटखट बालक तो पैर का अंगूठा मुंह में डालकर क्रीड़ा कर रहा था ।

कर पग गहि, अंगूठा मुख मेलत ।
प्रभु पौढ़े पालने अकेले,
हरषि हरषि अपने रंग खेलत ।

समय बीतता है, प्रभु पालना छोड़कर चलना सीख रहे हैं—

सिखवति चलन जसोदा मैया
अरबराइ कर पानि गहावत,
डगमगाइ, धरनी धरे पैया ।

लड़खड़ाते हुए चलते बालक को देखकर माता को अपार आनंद होता है । यह आनंद सूरदास ने इन शब्दों में व्यक्त किया है —

चलत देखि जसुमति सुख पावै ।
ठुमकि-ठुमकि पग धरनी रेंगत,
जननी देखि दिखावै ।
कोटि ब्रह्मांड करत छिन भीतर,
हरत बिलंब न लावै ।
ताकों लखि नंद की रानी,
नाना खेल खिलावै ।

क्षण भर में कोटि ब्रह्मांडो की रचना और विरचना करनेवाले प्रभु को नंद की रानी पालना झुला रही है, चलना सिखा रही है ।
भाव-विभोर होकर सूरदास कहते हैं—

जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ,
सो नंद भामिनी पावै ।

प्रभु चलने लगे, दौड़ने लगे, नंद के कनक-मणिमय आंगन में पड़नेवाले अपने ही प्रतिबिंब को पकड़ने का प्रयास करने लगे और बोलने भी लगे—

कहन लागे मोहन मैया मैया
नंद महर सो बाबा बाबा,
अरु हलधर सो भैया ।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल,
घर-घर बजति बधैया ।

बालक के मुख से निकला पहला शब्द था— मां !! और बोलने क्या लगा कि

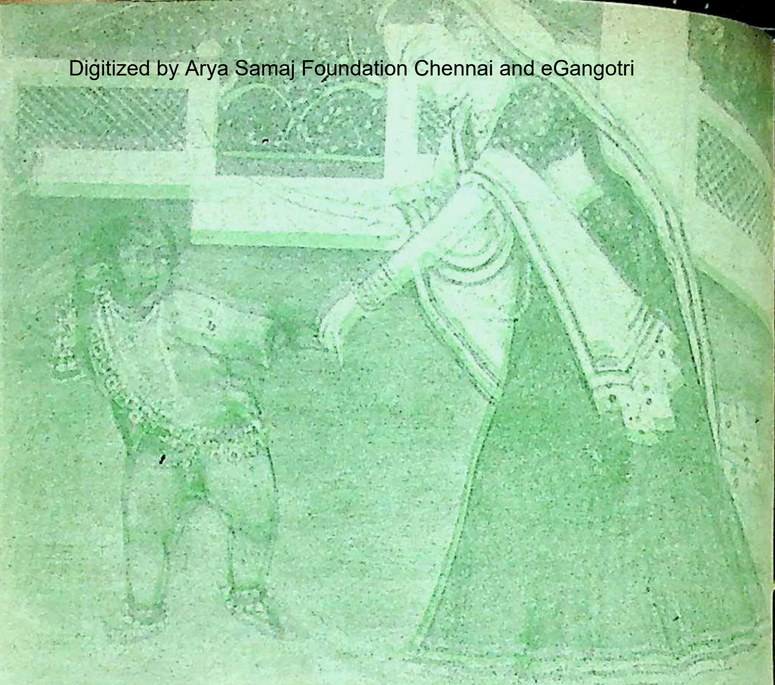

गोपियों में, ग्वालों में उसकी चर्चा होने लगी। बोलना क्या आया कि प्रभु की मांगें बढ़ने लगीं। अब वे मांग करने लगे पकी हुई, कोमल मोटी रोटी की। दधि की, माखन की।

गोपालराइ दधि मांगत अरु रोटी।
माखन सहित देहि मेरी मैया,
सुपक सुकोमल मोटी।
कत हौ आरि करत मेरे मोहन
तुम आंगन में लोटी।
जो चाहौ सो लेहु तुरतही,
छांडो यह मति खोटी।
करि मनुहारि कलेऊ दीन्हौ
मुख चुपर्यौ अरु चोटी।

प्रभु रोटी मांगते, दधि-माखन मांगते वह ही हठी बालक जैसे आंगन में लोटकर। यह भी कोई बात हुई ? मैया उसे समझाती है, यह भी कोई बात हुई ? उठो, चाहो सो ले लो !' ऐसा कहकर उसने बालक का मुंह पोंछा, उसकी चोटी की।

मैया ने बालों को हाथ क्या लगाया प्रभु पूछ बैठे, 'मैया, यह मेरी चोटी बड़ी कब होगी ?'

मैया, कबहिं बढैगी चोटी ?
किती बार मोहिं दूध पियत भई,
यह अजहूं है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी
ज्यौं, ह्वै है लांबी-मोटी।
काढत-गुहत न्हवावत जैहै,
नागिनि सी भुई लोटी।
काचौ दूध पियावति पचि पचि,
देति न माखन-रोटी।

प्रभु कहते हैं, 'मैया, तू तो कहती थी कि दूध पीने से चोटी बढ़ती है। तेरी चोटी भी बलदाऊ भैया जैसी हो जाएगी। सच बात तो यह है कि दूध पीने मात्र से थोड़ी ही बढ़ती है

चोटी ? डर तू मुझे कच्चा दूध पिलाती है, मुझे माखन रोटी नहीं देती ।

तो दूध छोड़कर प्रभु माखन-रोटी खाने लगे । उनके कलेवा में अब भांति-भांति के मेवा, खारिक, चिरौंजी, किसमिस, गरी बादाम, सफरी, सेव, छुहारे, पिस्ता, तरबूजा आने लगे । परंतु सूर के स्याम कहते हैं—

मैया री, मोहिं माखन भावै ।
जो मेवा पकवान कहति तू,
मोहि नहीं रुचि आवै ।

और कितना प्रिय था प्रभु को माखन ? घर में विपुल गोधन होते हुए भी वे माखन चुराते, खुद खाते तो खाते, बंदरों को भी खिलाते और पकड़े जाने पर कहते—

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायौ

कितनी कहानियां माखन की हैं और कितनी ही माखन-चोरी की ।

बड़े क्या होने लगे, झगड़ने बलदाऊ भैया से । भैया भी वैसे ही नटखट थे । वे कहते—'पता नहीं तू किसका छोरा है । मां गोरी, बाबा गोरे और तू ?'

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ ।
मो सौ कहत मोल कौ लीन्हौ,
तू जसुमति कब जायौ ।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता,
को है तेरौ तात ।
गोरे नंद जसोदा गोरी तू कत स्यामल गात ।

किसका बेटा ? कहां पला ? कहां दुलार पाया ? किसने बड़ा किया ? और बड़ा हुआ तो इतना बड़ा कि फिर किसी के हाथ नहीं आया ।

— ४१९ ध्रुव एपार्टमेंट्स,
आईपी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-११००९२

इनके भी बयां जुदा-जुदा

कासिद के आते आते खत इक और लिख रखूं
मैं जानता हूं वह जो लिखेंगे जवाब में ।

—गालिब

यूं वफा उठ गयी जमाने से
कभी जैसे किसी में थी ही नहीं

—दाग

नहीं आती तो याद उनकी महीनों तक नहीं आती
मगर जब याद आते हैं तो अकसर याद आते हैं

—हसरत मोहानी

हक व इंसाफ की बेखौफ हिमायत की है
यह बगावत है ? तो हां हमने बगावत की है

—दिवाकर राही

ले के उस पार न जायेगी जुदा राह कोई
भीड़ के साथ ही दलदल में उतरना होगा ।

—मख्मूर सईदी

किसी भी शहर के कातिल बुरे नहीं होते
दुलार करके हुकूमत बिगाड़ देती है

—मुनव्वर राना

मैं चौंकता हूं जब भी कोई आये है नजर
इस दौर में भी हंसते हुए जोर-जोर से

—लक्ष्मीशंकर वाजपेयी

सफर मुश्किल मगर मां की दुआएं
खुदा महफूज रखे हादसों से

—हामिद इकबाल सिद्दीकी

यह कैसे जानता गर शहर में आया नहीं होता
यहां दीवार होती है मगर साया नहीं होता

—कैसर सिम्तीपुरी

तुम रख न सके अपनी वफाओं का भरम भी
तुमने मेरा उम्मीद से कम साथ दिया है

—अफजल गौहर

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

संसद हमारी भी सुनो

पुरुषों की तबाही : नारी स्वतंत्रता का महल!

● अर्चना सौशिल्य

'मेरा देवर बेकसूर है । मेरे सास-ससुर ने देवरानी को जलाने की कोशिश नहीं की । मैंने उसकी तिजोरी नहीं तोड़ी । आप लोगों ने गलत धाराओं के तहत हम पर मुकदमे दायर किये हैं । ४९८, ४०६ सी.आर.पी.सी. एवं ५०० धाराओं के अंतर्गत मुकदमे दायर करके आप लोगों ने अंतरिम जमानत देने से इनकार किया है । देवरानी एक अधिवक्ता की बेटी होने का नाजायज फायदा उठा रही है ।'

यह कहानी नहीं, बल्कि आपबीती है, एक भद्र महिला की—जिन्हें दहेज के नाम पर मारने-पीटने व जलाने के जुर्म में हिरासत में रखा गया । दहेज-विरोधी कानून की ओट में कुछ स्त्रियों ने सामाजिक उथल-पुथल मचा दी है । समाज में नारियों के प्रति सदभावना है। यह हमारी संस्कृति की अपनी विशेषता है, किंतु इसका दूसरा पहलू भी है ।

पुरुष पीड़ित हैं !

केवल नारियों को ही प्रताड़ना नहीं मिलती, बल्कि कई परिवार ऐसे हैं, जहां पुरुष भी पीड़ित हैं । औरत समाज का वह पक्ष है, जिसे हर व्यक्ति श्रद्धा, इज्जत, प्यार व वात्सल्य के रूप में परिवर्तित करता है—उसके हर रूप के लिए अनेकानेक कानून बने हैं । सामाजिक संस्थाएं उनकी छोटी-छोटी समस्याओं पर ऊंची आवाजें देती हैं । किंतु न्यायिक स्वतंत्रता के तहत दहेज-विरोधी कानून की आड़ में कुछ औरतों ने खुलकर इसका दुरुपयोग किया है । वह पुरुष वर्ग, जिसने दहेज के कारण प्रताड़ित स्त्रियों की सुरक्षा हेतु खुलकर संघर्ष किया था, उनकी ही मांगों पर संसद ने सख्त से सख्त कानून बनाये किंतु आज उसी पुरुष-वर्ग में औरतों के प्रति बेहद आक्रोश भर गया है । न्यायालयों के एकाकी निर्णयों पर उन्हें विश्वास नहीं रहा । आज वही प्रताड़ित पुरुष-वर्ग संसद से अपनी सुरक्षा की मांग कर रहा है । उन्हीं पुरुषों का आक्रोश आज समाज के लिए एक ज्वलंत समस्या बन गया है ।

एक प्रतिष्ठित वृद्ध सज्जन के ही शब्दों में 'आज की तथाकथित कुछ नयी पीढ़ी की बहुओं ने दहेज-उन्मूलन संबंधी कानूनों को बदनाम कर दिया है । दोष चाहे किसी का भी हो, बहू के झूठे आंसुओं पर ससुराल के बेकसूर लोग ही गहरे दलदल में फेंक दिये जाते हैं ।

कानूनी दांवपेंच तो कानूनी सलाहकार ही जानते हैं, लेकिन वह यह भी बखूबी जानते हैं कि हर वक्त लड़की का पक्ष ही सही नहीं होता । नयी पीढ़ी की कही जानेवाली ज्यादातर यह समझदार लड़कियां अपने ससुराल जाकर सास-ससुर, जेठों एवं देवरों की इज्जत नहीं करतीं, कुछ तो गालियां देने से भी नहीं कतरातीं और ऐसी हालत में ससुरालवालों के समझाने पर मायके में जाकर शिकायत करती हैं कि ससुरालवालों ने उन्हें पीटा है । संस्कारी व सुशिक्षित माता-पिता लड़कियों को समझा-बुझाकर शांत कर देते हैं, किंतु ज्यादातर घरों में मां-बाप, भाई-बहन बेटी के ससुराल जाकर दंगा-फसाद करते हैं और मामला पुलिस व कोर्ट तक पहुंचा देते हैं, जिसे कानूनी ठेकेदार दहेज का रूप देकर इन औरतों को विजय दिलाते हैं । बहू किसी भी कारणवश घर छोड़े या मर जाए—दोष ससुरालवालों पर ही मढ़ा जाता है ।

यही पुरुष वर्ग, जिसने दहेज के लिए प्रताड़ित की जानेवाली महिलाओं के पक्ष में खुलकर संघर्ष किया था और संसद से दहेज-विरोधी कानून बनवाया था, महिलाओं द्वारा इस कानून के दुरुपयोग से उनके प्रति आक्रोश से भर उठा है और अपनी सुरक्षा की मांग संसद से कर रहा है ।

आदमी भला क्या करे !

महाराष्ट्र के एक एक्टिंग चीफ जस्टिस ने यह बात खुलकर कही है कि पति द्वारा देवर के लिए चाय बनाने को कहने पर पत्नी ने आत्महत्या कर ली, किंतु उसे दहेज का नाम देकर पति को जेल भेज दिया गया ।

दिल्ली में पचास-साठ घरों के सर्वेक्षण से मैंने पाया कि दहेज के विरोध में बने कानून ४०६-दहेज इंडियन पीनल कोड ने स्त्रियों को सुरक्षा तो दी है, किंतु ज्यादातर औरतों ने इसे एक हथकंडा बनाकर इस्तेमाल किया है ।

जेवर ले गयी : मामला दहेज का बना

दक्षिण बिहार की एक नयी ब्याहता के पति ने बताया कि शादी के बाद भी पत्नी के गैर-पुरुषों से संबंध रखने पर ससुरालवालों द्वारा मना करने पर उसके माता-पिता, बहन व बहनोई ने घर में आकर दंगा-फसाद किया, जिसके कारण लड़के की दादी की अकाल मृत्यु हो गयी और मां इसी सदमे से अस्पताल पहुंच गयी । इतना ही नहीं, पत्नी ने आंखों में आंसू भरकर पति से कहा कि वह अपने कमरे में जाना चाहती है । सुशिक्षित व बेकसूर ससुरालवालों ने उसे अपने कक्ष में जाने दिया । बहू ने कमरा बंद कर सारे जेवर व कपड़े उठा लिये । फिर अपने मायके जाकर दहेज मांगने व सारे जेवर छीनने के आरोप में केस कर दिया । उस परिवार की छोटी ननद व देवर ने बताया कि भाभी अपने गलत संबंधों में हमें भी भागीदार बनाती थी और हमारे मना करने पर अपने रिश्तेदार जज से भाई को जेल भिजवाने की धमकी देती थी । वह रोज अपनी मां-बहन

के साथ जाकर कोर्ट में झूठे आंसू बहाती कि हमने दहेज के कारण उसे घर से निकाल दिया है। घर में मां-पिता की परेशानी देखकर हमारे संबंधी समझौते के लिए उनकी हर मांग मानने को तैयार हो गये। किंतु अब वह कहती है—पैसे भी लूंगी और तुम लोगों को जेल भी भिजवाऊंगी। उन मासूमों का यह अंतिम सवाल कि 'हमें कानूनी दांव-पेंच नहीं मालूम, लेकिन वकील उनकी झूठी बातों को सही मनवाकर क्या हमें जेल भेज देंगे? क्या आपका लेख हमें बचा लेगा?' इसका जवाब मेरे पास तो नहीं है, शायद संसद के पास हो।

प्रेम कहीं : नाटक संस्कार का

एक दूसरे व्यक्ति ने बताया कि बहू को हल्की-सी फटकार अमर्यादित अवस्थाओं में दी गयी, तो उसने ४९८ सेक्शन का मामला दर्ज करा दिया, जो अपने आप में संगीन जुर्म है। ससुरालवाले मान-मर्यादा की खातिर बहू की बातें अनदेखी करते रहे, किंतु ४९८ के आरोपों से जलील होकर प्रतिष्ठित डॉक्टर ससुर की हृदयगति रुक जाने से मृत्यु हो गयी। बहू हर मुकदमे की तारीख को कोर्ट में आकर घंटों उनके विरुद्ध केस पर केस करवाती रही, क्योंकि उसे चाहिए थे वे पूरे पैसे जो उसके पिता ने शादी में लगाये थे, साथ ही उसका वह हिस्सा, जो पुत्र के नाम था। इसी संपत्ति से उसे एक दूसरा घर बसाना था। पड़ोसियों ने बताया बहू आये दिन मारपीट पर आमादा हो जाती। उसके बहनोई और दोस्त आकर घर में रहते। क्योंकि निम्न घर से आयी इस बहू का उद्देश्य इस की संपत्ति से अपने पूर्व साथी के साथ अपना नया घर बसाना था। लोगों ने यह भी बताया कि उसके इस काम में लड़की के माता-पिता भी शरीक थे, जिन्होंने अपने दामाद को पागल करार दिलाने का हरदम प्रयास किया था। और अंततः जीत उसी की हुई।

सभी जानते हैं कि इस ४०६, ४९८, ३०४बी धाराओं के तहत क्या हो रहा है। कानून कितना गुमराह हो रहा है। विवाह-जैसी पवित्र सामाजिक संस्था कुछेक के कारण किस अपवित्र हो रही है? लोगों की यह सवालिया नजर कि यह कानून उन पच्चीस प्रतिशत औरतों के पक्ष में बनाया गया था, जिन्हें यातनाएं दी जाती थीं। किंतु इन पच्चीस प्रतिशत से लेकर पिचहत्तर प्रतिशत में वह दंपत्ति भी आये हैं, जो सामान्य जीवनवाले हैं। उनकी जिंदगी में थोड़ी-बहुत हलचल आकर चली जाती है। यह कानून इस पचास प्रतिशत के हित में नहीं बना है और फलतः इसका दुष्परिणाम उन पच्चीस प्रतिशत पुरुषों पर हो रहा है, जहां औरतें पुरुषों को प्रताड़ित कर रही हैं। क्या संसद उसके लिए कानून नहीं बनाएगा?

निर्दोष पुरुष फंसता है

अल्पसंख्यकों के पक्ष में बने इस संसदीय कानून ने पचास प्रतिशत को अविश्वासी तथा पच्चीस प्रतिशत को उदासीन व भयभीत बना दिया है। यह राय तो आम जनता की है, देखें कानूनी सलाहकार क्या कहते हैं? एम.एल. पंडसे, बंबई उच्च न्यायालय के एक्टिंग चीफ जस्टिस भी इस बात से सहमत हैं (टाइम्स ऑफ इंडिया, ६ अप्रैल) कि धारा-४९८ (ए) का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है। पटना के उच्च न्यायालय के अधिवक्ता ने बताया कि

दहेज संबंधी केस अत्यंत नाजुक होते हैं । सौ में से बीस ही केस सही होते हैं । वकीलों की नजर तो सही और गलत को पहचान लेती है । एक अधिवक्ता ने बताया इस विकसित दौर में ज्यादातर केस तलाक के आते हैं । जब पति-पत्नी के विचारों में मेल नहीं बैठता और दोनों ही अलग होना चाहते हैं । अगर दोनों ही शिक्षित, संस्कारी व जिंदगी के प्रति सजग होते हैं, तो एक-दूसरे को गलत आरोपों में फंसाने की कोशिश नहीं करते, न ही दहेज का मामला बनाते हैं, न मानहानि का और न ही मानसिक यंत्रणा का । किंतु ज्यादातर देखा गया है लड़की पक्षवाले दहेज का यह आरोप लगाकर अपनी पूरी क्षतिपूर्ति कर लेते हैं—ताकि उससे मिले धन से दूसरी व्यवस्था की जा सके । साथ ही यह भी सही है कि कुछ मामलों में पति-पक्ष दोषी होता है, इसका पता उसके घरवालों से मिलने पर चल जाता है लेकिन, आजकल ज्यादातर निर्दोष ससुरालवाले फंस जाते हैं ।

यह रचना स्त्री-विरोधी या पुरुष विरोधी होने का आयाम नहीं रखती । यह एक ऐसी सशक्त व ज्वलंत समस्या है, जिसने स्त्री के अस्तित्व पर प्रश्नसूचक-चिह्न लगाया है । कानूनी दांव-पेंचों के तले बेकसूरों को सजाएं दी जा रही हैं । मासूमों की जिंदगियां तबाह हो रही हैं । अगर इस कोढ़ को खत्म नहीं किया गया तो यह हमारी मानसिकता से इस भांति चिपक जाएगी कि औरत की गरिमा ही खत्म हो जाएगी । भाई-बहन पर विश्वास नहीं करेगा । पति-पत्नी को इज्जत नहीं दे पाएगा । हमारे संस्कारों से माता-पिता, सास-ससुर का नाम मिट जाएगा । इस मानसिकता को बदलने के लिए किसी कानून, किसी संसद की आवश्यकता नहीं होगी ।

पूरा समाज पागल हो जाएगा ?

एक कहानी उस घर की भी है, जिसमें एक आदर्शवादी परिवार की आहुति चढ़ गयी । स्वभाव से आदर्श, विवेकपूर्ण, अत्यंत ही शिक्षित सास-ससुर की मध्यमवर्गीय कम पढ़ी-लिखी बहू ने पति को सास-ससुर से अलग रहने की जिद की, पति द्वारा इनकार किये जाने पर उसने उस पर मारने-पीटने का आरोप तथा अनैतिक काम करवाने का आरोप लगवाकर जेल भिजवा दिया । आदर्शवादी भावुक पिता बहू के वकीलों द्वारा बेटे पर लगाये लांछनों को सही मान बैठे और अंततः मानसिक व शारीरिक रूप से विक्षिप्त हो गये । बेटे के मरते वक्त के शब्दों ने कि 'मेरी पत्नी व कानून ने मेरे साथ अन्याय किया है', उन्हें सच्चाई का बोध कराया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी । औरतों की स्वतंत्रता की

आवाज लगानेवाले इस आदर्शवादी ससुर की आदर्शवादिता ही आज ध्वस्त हो चुकी है । आज तो सिर्फ एक बाप पागल हुआ है, अगर इसी तरह यह सत्य हर पल नंगा होता रहा, तो यह पूरा समाज पागल हो जाएगा । आज आवश्यकता है, जब हर कानून को उसी के क्षेत्र में कार्यान्वित किया जाए, यह सिर्फ पुरुषों की आवाज नहीं, हम स्त्रियों की भी है ।

सहारा आंसुओं का !

समाज में कमजोर शब्द की संज्ञा पानेवाली नारियां, अगर अपने आंसुओं का सहारा लेकर कानून की आड़ में बाजी जीत लेती हैं, तो भी घर तो उनका ही तबाह होता है । यह भी सच है, तबाह तो वह घर होता है जहां आबाद करानेवाले स्त्री या पुरुष नहीं होते । एक वृद्ध सास-ससुर ने बताया कि भगवान साक्षी है, 'हमने बहू को बेटी से भी ज्यादा समझा, बचपन से पूरी न हुई उसकी दमित इच्छाओं को हमने पूरा किया, किंतु उसने हमें ही बरबाद कर दिया । न जाने न्यायालय उसकी बातों पर विश्वास कैसे कर लेता है ? खैर, सही फैसला तो भगवान की अदालत में होगा ।' कितना कड़वा सत्य है यह, जो हमें, आपको, समाज को, न्यायालय किसी को भी गवारा नहीं, किंतु यह सच है बरबादी का । यह नंगा सच समाज को तबाह कर देगा । आनेवाले कल में सास-ससुर होना एक अभिशाप बन जाएगा ।

इसी संदर्भ में एक पुलिस इंस्पेक्टर ने बताया कि उसके भावी ससुर ने यह कहकर उसे जेल में डलवा दिया कि फोन पर बातें नहीं हो सकतीं, अतः पत्र में लिखकर भेज दें कि गाड़ी की कीमत क्या होगी, क्योंकि उनकी बेटी गाड़ियों में घूमने की आदी है । इस तरह वह पुलिसवाला भी एक बेटी के बाप के हाथों फंस गया और वही पत्र उसकी तबाही का कारण बन गया । दूसरी घटना उस अधिवक्ता की है, जब उनके भावी ससुरालवालों ने 'तिलक' के समय की वीडियो कैसेट कोर्ट में दर्ज करा दी, जब तक वह अधिवक्ता अपनी दलीलें तैयार कर पाता, उससे पहले ही धारा ४०६ के तहत उस पर मुकदमा दायर किया जा चुका था ।

अनैतिक रास्ते : नैतिकता का दाग

कानून की भाषा लोगों की अनैतिकता नहीं समझ पाती और उसी अनैतिकता, निम्न-मानसिकता के गिरफ्त में आकर बेकसूरों को सूली पर चढ़ा दिया जाता है । लड़कीवाले शादी करना चाहते हैं या फिर लड़की को मुहरा बनाकर समाज को कलंकित करना ? इसका गुबार निकलता है दूसरी लड़कियों पर, जब लड़के अपनी कीमत आंक लेते हैं और बेबस मां-बाप बच्ची की खुशी के लिए उसे बेच देते हैं । किंतु पुरुष का आक्रोश व अहं शांत होता है, उसे तबाह करके, जब बेटी सही में घर से बेघर हो जाती है या जला दी जाती है । किंतु सदमे व गरीबी से जूझते मां-बाप कोई कंपलेंट नहीं कर पाते । फिर यह कानून बना है किसके लिए ? यह कहानी उन पचास प्रतिशत व्यक्तियों की है, जिन्होंने इस परिस्थिति से समझौता किया है । किंतु आज यह वर्ग गौण हो चुका है । किंतु सत्य तो यह है, अगर समाज बचा है, तो इसी वर्ग के स्त्री-पुरुष के कारण ।

झूठी गवाही : फंसते निर्दोष

लोहे और सोने का मेल संभव नहीं । जब समाज सहज रूप में चलता है, तो कोई भूचाल

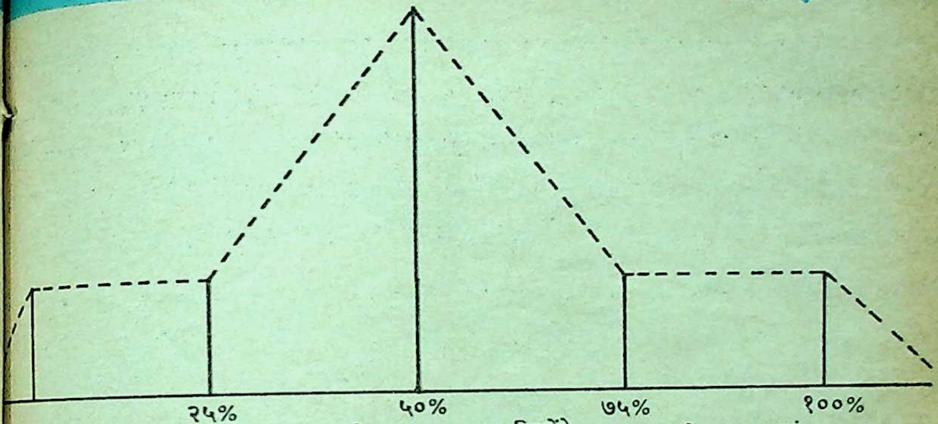

२५ प्रतिशत वे घर जहां औरतों को यातनाएं दी जाती हैं

५० प्रतिशत सामान्य घर, जिन्होंने इस हलचल के साथ जीना सीख लिया है

२५ प्रतिशत घर जहां पत्नियां द्वारा पतियों को यातना दी जाती है

नहीं आता, परंतु जब कोई अनियमितता घटती है, तो कुछ न कुछ अप्रिय होता है । यही बात हमारे समाज में भी लागू होती है । महिला वर्ग के उद्धार व सुधार के लिए अनेकानेक कानून बनाये गये, जिनमें दहेज-विरोधी कानून बहुत बड़ी अहमियत रखता है । कानून तो सही है, किंतु इसके पालन में, प्रतिपादन में, इसके आत्मसात करने में, इसका हवाला देने में, इसकी आड़ के तहत मानवता की, चरित्र की बलि दी जा रही है । हम और आप कोर्ट-कचहरी की भाषा नहीं समझते, किंतु इतना जानते हैं कि इस भूचाल में कानूनी अधिकारी ही हमारे अवतार हैं—अगर हमारा कोई रक्षक है, तो वह है निष्पक्ष न्यायपालिका और हमारी संसद ।

कानून अंधा नहीं होता, निर्णय सबूतों पर होते हैं । गवाहों पर होते हैं । किंतु हर वकील जानता है, झूठी गवाहियों से हर रोज 'गीता' अपवित्र होती है । अच्छे कर्मों के सबूतों को तोड़-मरोड़ दिया जाता है । एक व्यक्ति का कहना है, 'बहू की वजह से बेटा पागल हो गया और शारीरिक रूप से अपंग । बहू को समझाने के उद्देश्य से मैंने जो पत्र लिखे, उन पत्रों की भाषा को तोड़-मरोड़कर मुझ पर मानहानि का दावा कर दिया गया । बहू की भावा ने मुझे जीने के लायक नहीं छोड़ा ।'

सवाल यह उठता है कि क्या कानून बनाते समय लोगों की नैतिकता व मानसिक स्तर का ध्यान रखा जाता है । हर कानून सामाजिक व मानसिक अवस्था का सूचक है । जब यह कानून बना था, इसकी आवश्यकता थी, किंतु आज इसी की आड़ में लोगों के साथ अन्याय हो रहा है । जनता न्याय की मांग कर रही है । वह इसमें परिवर्तन चाहती है । अपनी रक्षा हेतु नये नियम चाहती है । समाज की आवश्यकता व मानसिकता के अनुरूप कानूनी बदलाव समय की मांग है । न्यायपालिका और संसद को आम जनता में यह विश्वास पैदा करना है कि कानून की आंखों पर पट्टियां होती हैं, किंतु यह अंधा कानून नहीं है । ●

अम्लरोग? भूख की कमी? कब्ज़?

पेट की गड़बड़ी?

स्वास्थ्य और सुन्दरता का रक्षक-लिवर।

सर्वाधिक रोगों का कारण -- पेट की खराबी, अस्वस्थ्य लिवर, और अनिद्रा।
स्वस्थ्य लिवर हर रोग का निदान।
....डा. सरकार

LIVOSIN
LIVER CORRECTIVE
CARMINATIVE • APPETIZER
RESTORATIVE & TONIC
LIVOSIN

पेट की गड़बड़ी दूर करने
और लिवर सुरक्षित रखने के लिए

डा. सरकार का एक अनोखी खोज
आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक।
लिवोसिन

सेवन विधि :
जब तक सीने की जलन, पाचन शक्ति में वृद्धि, अम्लरोग, कब्ज़ियत, भूख की कमी, पेट की गड़बड़ी, यकृत की अस्वस्थ्यता दूर न हो तब तक एक ग्लास गुनगुने पानी के साथ **लिवोसिन** सुबह खाली पेट और रात को सोने के समय नियमित सेवन करें।

लिवोसिन
एक आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर निर्माता का
सहयोगी संस्था Jupiter - की
आयुर्वेदिक खोज का एक अनोखा उपहार।
जुपिटर फार्मासिटिकल्स प्रा० लि०
२५, इडन हॉस्पिटल रोड, कलकत्ता-७३
दूरभाष-२६०१५६/२७-०२२४

Jupiter
Emars Allen
allen's india
Dr. Sarkar Group
एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषध प्रस्तुतकारक

Marketed by :
allen's india Allen's India Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment,
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. India

जिसके सहयोग से आपको मिले आरोग्य में विश्वास।

Branch Office : Duggal House, [illegible] 800 001, Ph : 23-4953
Branch Office : 84/77B, Narayan Bagh, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph : 24-2844

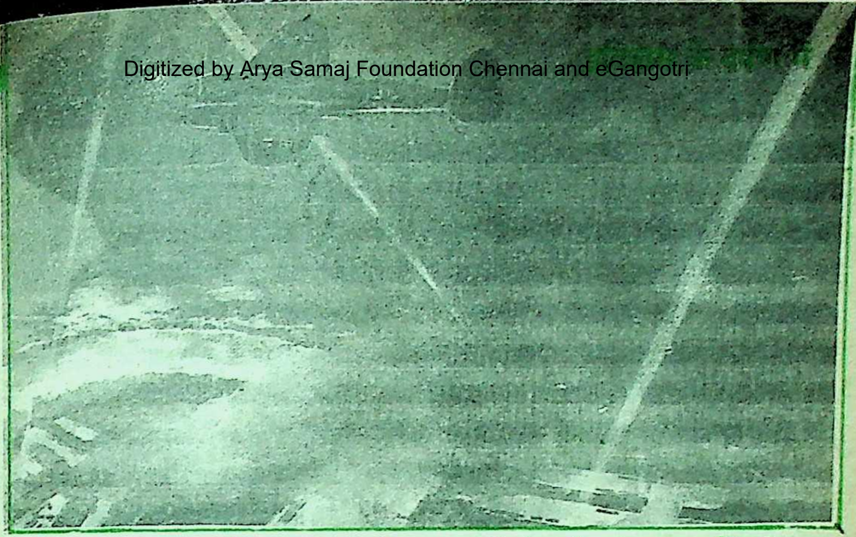

द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान के खिलाफ किये गये परमाणु बमों की विभीषिका ने संसार के सम्मुख विनाश का एक अत्यंत भयावह चित्र प्रस्तुत किया है । जापानी आज भी उन संहारक बमों के दुष्परिणामों से उभर नहीं पाये हैं । प्रस्तुत है जापान पर परमाणु बमों से हमला किये जाने के बाद का आंखों देखा लेखा-जोखा जिसे एक विदेशी समाचारपत्र के संवाददाता डेनिस वारनर ने खुद देखा था ।

बमों की आंखें नहीं होती !

द्वितीय विश्वयुद्ध ! जरमनी की पराजय के पश्चात मित्र राष्ट्रों का अगला निशाना जापान था । फलस्वरूप समुद्री बेड़े, हवाई और स्थल सेना जापान के विरुद्ध भेजी जाने लगी ।

सन १९४५ जून के आरंभ में जापान का अंतिम सैन्य गढ़ 'ओकीनावा' खतरे में पड़ गया और अंत में पराजय के बाद द्वीप के दक्षिण स्थित शूरी के किले पर अमरीकी झंडा फहरा दिया गया । उस समय की स्थिति भयावह थी । गुफाओं में और भूमिगत स्थानों में लाशों के ढेर पड़े थे । कितने ही जापानियों ने आत्महत्या कर ली थी । यह दृश्य देखकर अमरीकी सैनिकों ने राहत महसूस की । शेष जापानी सैनिकों ने भी आत्म-समर्पण कर दिया । युद्ध की इतनी बड़ी विभीषिका इतिहास के पृष्ठों में कम ही मिलती है ।

जून के अंतिम दिनों में लगभग सात हजार जापानी सिपाही युद्ध की भेंट चढ़ चुके थे । आत्महत्या और आत्म-समर्पण का जो दृश्य यहां दिखायी दे रहा था वैसा ही दृश्य जापान में

भी था । अमरीका के बी-२९ बमवर्षक तोक्यो और अन्य शहरों पर अग्नि-बम बरसा रहे थे । शहर के शहर मिट्टी के ढेर में तबदील हो रहे थे । पूरवी जापान के औद्योगिक कारखाने नष्ट किये जा रहे थे । इसके बावजूद जापान के तानाशाह प्रशासक हथियार डालने के लिए तैयार नहीं थे । जापान की सुरक्षा के लिए छोटे-छोटे कारखानों में हवाई जहाज बनाये जाने लगे । नागरिकों को हथियारों से सुसज्जितकर व्यूह बनाया गया । जापानियों ने अपने देश की रक्षा के लिए मानवीय दीवार बनायी ।

अमरीका के बी-५२ बमवर्षक शहरों, कस्बों और गांवों पर केवल बम ही नहीं गिरा रहे थे बल्कि बहुत संख्या में परचे भी गिरा रहे थे । इन परचों में वे स्थान बताये गये थे, जहां अमरीकी बमवर्षक बम गिराने वाले थे । जापानी सरकार ने इन परचों को उठाने और पढ़ने पर पाबंदी लगा रखी थी । तब भी इनकी संख्या इतनी अधिक थी कि उनको नागरिकों द्वारा उठाने और पढ़ने से रोकना एकदम असंभव था । पूरे जापान में 'ब्लैक आउट' की स्थिति थी । लोग मोमबत्ती और लैंप की रोशनी में उन परचों को पढ़ रहे थे । परचों के एक तरफ बम बरसाते बी-२९ बमवर्षक विमानों की तसवीर थी । इसी तरफ कुछ स्थानों पर गोल निशान लगे हुए थे । जो इस बात के प्रतीक थे कि उनका अगला लक्ष्य क्या है । परचे के दूसरी तरफ एक संदेश छपा था— ''जापान के नागरिको ! अमरीका तुम्हारा शत्रु नहीं है । जापानी जनता से हमें प्यार है । हमारे शत्रु जापान के तानाशाह हैं । जो अपनी ही जनता का खून हमारे हाथ से करा रहे हैं । उन्होंने तुम्हें युद्ध में झोंक दिया है । हमें विश्वास है इन तानाशाहों के जुल्मों का अंत होगा और एक नये जापान का उदय होगा । आप याद रखिए बमों की आंखें नहीं होती हैं । वे देख नहीं सकते कि कहां और किन पर गिरेंगे या गिर रहे हैं ।

इन परचों का असर यह हुआ कि जापान के तानाशाह घबरा गये । उनमें भय पैदा हो गया । तानाशाहों के हौंसले बुलंद करने के लिए वाइस एडमिरल 'ताका-जीरो-ओनीशी' को जल सेना की कमान सौंपी गयी । उसने जापानी नागरिकों को 'कामीकाजी' के लिए तैयार किया । 'कामीकाजी' आत्महत्या का पर्याय था । इससे जनता के मन में अपने प्रति प्यार टूटने लगा और वे देश के लिए मरने को तैयार होने लगे । वे स्वयं 'मानव बम' बने और शत्रु का मुकाबला करने लगे । ओनीशी का नारा था— 'हमारा उद्देश्य किसी को मारना नहीं है परंतु अधिक से अधिक संख्या में शत्रुओं के सिपाहियों को मारना हमारा धर्म है । उन्हें मार न सकें तो स्वयं मरना बेहतर है । इसी से हम अपनी जन्मभूमि को बचा सकते हैं ।'

जापानवासियो ! हम यह बताना चाहते हैं कि अमरीका मानवता की रक्षा करना चाहता है । वह मासूम और निर्दोष लोगों की हत्या नहीं करना चाहता । इसलिए आप लोग उन स्थानों को छोड़कर चले जाइए, जहां हम बम गिराने वाले हैं ।''

जब एडमिरल ओनीशी जापानियों को आत्महत्या के लिए तैयार कर रहे थे, तब वहां उसके साथ ही एक ऐसा आंदोलन भी चल रहा था जो शांति चाहता था । यह आंदोलन बढ़ता चला जा रहा था । इस आंदोलन में शामिल

> *अमरीका के बी-२९ बमवर्षक तोक्यो और अन्य शहरों पर अग्नि-बम बरसा रहे थे । शहर के शहर मिट्टी के ढेर में तबदील हो रहे थे । पूरबी जापान के औद्योगिक कारखाने नष्ट किये जा रहे थे ।*

आंदोलनकारियों के सामने एक खतरा था कि वे सरकार की नजर में न आ जाएं । उनमें से एक आंदोलनकारी 'शीगेरु योशीदा' युद्ध से पहले जापान का इंगलैंड में राजदूत था । वह बेचारा फौज के गुस्से का शिकार हुआ । उसकी नीति थी कि १९४२ में सिंगापुर लेने के बाद अंगरेजों से सुलह कर ली जाए, क्योंकि तब जापान शक्तिशाली स्थिति में था ।

सन १९४५ में गुप्तचर पुलिस ने उसके मकान को घेर लिया । मकान की तलाशी लेने पर कुछ दस्तावेज बरामद किये और उसे जेल में डाल दिया । स्विट्जरलैंड में जापानियों ने मिस्टर जॉन फॉस्टर डलेस से शांति वार्ता आरंभ की । डलेस अमरीकन सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसी चला रहा था । वार्ता का परिणाम कुछ नहीं निकला । कुछ जापानी ऐसे भी थे जो चाहते थे कि 'स्तालिन' की सहायता से सम्मानपूर्वक समझौता जाए । उन्होंने स्टालिन से संपर्क किया किंतु स्टालिन ने कोई पहल नहीं की । शांति वार्ता की असल शुरुआत 'मामोरु शिगेमित्सू' द्वारा की गयी । मामोरु ओकीनावा युद्ध के समय जापान का विदेशमंत्री था । उसने जापान के राजनीतिज्ञों को बताया कि अंतरराष्ट्रीय स्थिति हमारे एकदम विपरीत है । यदि हमने शांति की पहल नहीं की तो सब कुछ तहस-नहस हो जाएगा । हमारी बेकसूर जनता मारी जाएगी, फिर हम किस पर शासन के लिए रहेंगे । उसकी बातों पर जापान के तानाशाहों ने ध्यान नहीं दिया । तब उसने स्वीडन के दूतावास से बातचीत की ।

स्वीडिश दूतावास के जरिए उसने जानना चाहा कि अमरीका और ब्रिटेन आखिर चाहते क्या हैं ? मामोरु के लिए यह जानना आसान नहीं था क्योंकि दूतावासों को भी सीमित जानकारी होती है । तब भी मामोरु शिगेमित्सू अपने काम में लगा रहा । उसका अंतिम लक्ष्य था— शांति । जापान पर बम वर्षा बंद हो और जापानी जनता की जिंदगी बची रहे । मामोरु को बहुत समय लगा । उसने अपनी पूरी शक्ति लगा दी ।

युद्ध हमेशा विनाशकारी होता है । एक बार युद्ध शुरू हुआ कि प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है । बाहरी ताकतें शत्रु या मित्र जो भी बनें, अंत में नुकसान उस देश का होता है । यह सन १९४५ के युद्ध का किस्सा है । आखिर जापान तबाह हुआ । युद्ध ने 'सूरज के देश' जापान को तोड़ दिया । यह अलग है कि आज का जापान उस टूटन और घुटन से उबर चुका है और दुनिया भर में अपनी धाक जमा रहा है । पर यह भी सत्य है कि आज भी जापान के पास अपनी निजी सेना नहीं है ।

(साभार : इंटरनेशनल हेराल्ड ट्रिब्यून से)

अध्ययन, मनन एवं श्रवण का
एक सहज एवं सर्वग्राही संस्करण

श्रीरामचरितमानस
सचित्र शब्दकोष
अवधी-हिन्दी
एवं
मूल पाठ
अनुक्रमणिका सहित

रामचरित मानस शब्दकोष
518 पृष्ठ
साइज 22.50 x 27.50 से.मी.
350 रेखाचित्र

श्री रामचरित मानस
1153 पृष्ठ
साइज 13.50 x 24.00 से.मी.
8 रंगीन चित्र

संस्थागत
एवं सामूहिक
खरीद पर आकर्षक
उपहार योजना-
"10 प्रतियों पर
एक प्रति मुफ्त"

आमंत्रण मूल्य
मात्र रु. 1100/- (भारत में)
U.S. $ 74.99 (अन्य देशों में)
पोस्टेज एवं पैकिंग मुफ्त

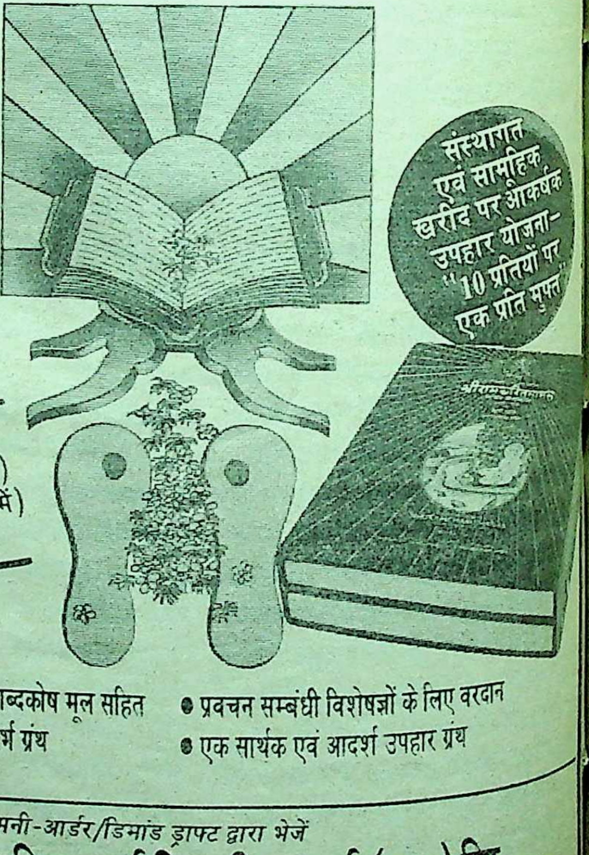

- प्रथम मानस शब्दकोष मूल सहित
- प्रवचन सम्बंधी विशेषज्ञों के लिए वरदान
- एक अनूठा संदर्भ ग्रंथ
- एक सार्थक एवं आदर्श उपहार ग्रंथ

सम्पूर्ण राशि मनी-आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें

dk डी.के. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि.
1, असारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002 फोन : 3261465, 3278368. फैक्स : 326-4368

विधि-विधान

वकालत और नौकरी

अनिल कुमार तिवारी ; मुजफ्फरपुर : मैंने १९९४ में एल. एल. बी. (प्रोफेशनल) के अंतिम सत्र की परीक्षा रेगुलर छात्र के रूप में दी थी । मैं पूर्णकालीन सरकारी कर्मचारी हूं । यह योग्यता मेरी सर्विस रिकार्ड में दर्ज है । वर्तमान सेवा में रहते हुए क्या मैं बार कौंसिल में वकील के रूप में पंजीकरण करा सकता हूं । क्या ४५ वर्ष की उम्र के बाद पंजीकरण नहीं हो पाएगा ? यह भी बताएं कि क्या न्यायिक सेवा में जाने के लिए वकील के रूप में प्रैक्टिस अनिवार्य है ?

कुछ विशेष पदों पर कार्य कर रहे सरकारी कर्मचारी, सेवाकाल में बार कौंसिल में वकील के रूप में पंजीकरण करा सकते हैं । आपने यह नहीं लिखा कि आप किस पद पर हैं ? सरकारी रिकार्ड में आपकी एल.एल. बी. की योग्यता लिखी होने मात्र से आपको वकील के रूप में पंजीकरण का अधिकार नहीं मिलता ।

आपकी यह धारणा की ४५ वर्ष की आयु के बाद पंजीकरण संभव नहीं, ठीक नहीं है । सर्वोच्च न्यायालय ने यह प्रतिबंध हटा दिया है । कहीं-कहीं न्यायिक सेवा में निश्चित अवधि की प्रैक्टिस का प्रावधान है ।

मुकदमा कैसे हल हो

के. पी. शर्मा ; पटना : मेरे तथा मेरे पिता के ऊपर १९८६ में दफा ३०६ के अंतर्गत मुकदमा चलाया गया था । सत्र न्यायाधीश के सम्मुख मार्च १९९२ में मुकदमा शुरू हुआ और उक्त तारीख में हम लोग अदालत में उपस्थित भी हुए, लेकिन अभी तक मामला आगे नहीं बढ़ा । मामले में दो मुद्दई हैं । उनका कहना है कि मैं पक्ष या विपक्ष में कोई काम न करूं तथा ऐसा करता भी हूं । मामले का हल शीघ्र हो, उसके लिए किया जाए, कोई उपाय बताएं ।

मुकदमा सत्र न्यायाधीश को भेजा जा चुका है और आगे की कार्यवाही उसी न्यायालय में होगी । कार्य की अधिकता के कारण कभी-कभी कुछ मुकदमों के निपटाने में विलंब हो जाता है । आप उसी न्यायालय में मुकदमे की शीघ्र सुनवाई के लिए आवेदन कर सकते हैं तथा न्यायाधीश महोदय से अपने मुकदमे की सुनवाई कर निर्णय करने का अनुरोध कर सकते हैं ।

पेंशन नहीं मिली

कैलाशनाथ गुप्त, वाराणसी : मैं इलाहाबाद बैंक में १९८८ में प्रबंधक पद पर था । कुछ आंतरिक राजनीति के कारण मुझे बैंक से निकाल दिया गया । मुझे भविष्यनिधि तो मिली, लेकिन पेंशन नहीं मिली,जबकि बैंक में पेंशन योजना पहले से ही लागू है । क्या मैं पेंशन पाने का अधिकारी नहीं हूं ? मुझे किस तरह पेंशन मिल सकती है । ग्रेच्यूटी भी नहीं मिली,जबकि २९ वर्षों की सेवा के बाद मेरी सेवाएं समाप्त की गयीं ।

आपको बैंक से निकाल दिया गया, परंतु इससे बैंक से निकालने का कारण स्पष्ट नहीं होता । यह ठीक है कि आप सेवानिवृत नहीं हुए, न ही आपने त्यागपत्र दिया । आपको सेवा से निकालते समय बैंक ने कुछ आदेश दिये

होंगे और उनमें आपकी पेंशन, ग्रेच्यूटी आदि के विषय में भी आदेश रहे होंगे। तथ्यों की पूरी जानकारी के बिना यह कहना संभव नहीं है कि पेंशन आदि नहीं देने का आदेश कहां तक विधिसम्मत है।

दवा की कंपनी का झूठा दावा

राजेश झाम्ब ; मंदसौर : कील-मुंहासे निरोधक दवा निर्मात्री एक कंपनी अपने उत्पादन के पक्ष में यह दावा करती है कि दवा के प्रयोग के पांच दिन के भीतर कील-मुंहासे ठीक न होने पर खरीददार को दवा की कीमत लौटा दी जाएगी। उस दवा के उपयोग के बाद लाभ न होने पर कंपनी द्वारा दिये गये 'मनी-बैक फार्म' को भेजे एक माह से ज्यादा हो गया, पर कोई प्रत्युत्तर नहीं आया। अब क्या किया जा सकता है ?

उत्पादन का प्रचारित लाभ उपभोक्ता को प्राप्त होना चाहिए। यदि प्रचारित लाभ उपभोक्ता को नहीं मिलता तो वह सेवा या लाभ में कमी का द्योतक है। इनके लिए आवश्यक है कि दवा का उपयोग निर्धारित तरीके से किया गया हो।

इस संबंध में अपनी शिकायत जिला उपभोक्ता फोरम में करनी चाहिए। जिला उपभोक्ता फोरम संबंधित कंपनी को नोटिस तथा उसे सुनवाई का अवसर देगा, फोरम आपकी शिकायत ठीक पाये जाने की स्थिति में दवा के मूल्य के साथ आपको हर्जाना भी दिलवा सकता है।

वसीयतनामा मेरे नाम

गोपाल कुमार गर्ग ; राजनांदगांव : मेरे नाना ने १९८७ में अपनी सारी जायदाद एक वसीयतनामे के द्वारा मेरे नाम पंजीकृत करा दी थी। वसीयतनामे के दौरान दो गवाह भी थे। नाना का स्वर्गवास १९८९ में हो गया। अब मेरी दो मौसियां भी उस जायदाद में हिस्सा लेना चाहती हैं। बताएं, न्यायालय में किसकी जीत हो सकती है ?

आपके नानाजी ने आपके पक्ष में उत्तराधिकार-पत्र लिख दिया तथा पंजीकृत करवा दिया। यदि उक्त उत्तराधिकार-पत्र पर नियमानुसार गवाही है तथा वह पूरी तरह से ठीक प्रकार लिखा गया है, तो संपत्ति का निर्धारण आपके नानाजी द्वारा की गयी वसीयत के अनुरूप होगा। मौसियां किस आधार पर हिस्सा मांग रही हैं, इसका उल्लेख आपके पत्र में नहीं है। इसलिए उनकी मांग के औचित्य पर कोई अन्य राय बताना संभव नहीं है।

ग्रीन कार्ड से कोई लाभ नहीं

अनिल शर्मा ; रामपुर : मैं एक चिकित्सक हूं तथा अपना निजी चिकित्सालय चलाता हूं। मेरी पत्नी एक गैरसरकारी स्कूल में अध्यापिका है। पत्नी ने १३ वर्ष पहले आपरेशन से एक बेटी को जन्म दिया था। उसके पांच वर्ष बाद आपरेशन से एक बेटा हुआ तथा मेरी सहमति के बाद तभी पत्नी का बंध्याकरण आपरेशन भी करा दिया गया। लेकिन जन्म के १४ घंटे बाद बेटे की मृत्यु हो गयी। एक या दो बच्चे के आधार पर स्वास्थ्य विभाग की ओर से मुझे ग्रीन कार्ड भी मिला, परंतु पिछले आठ वर्षों से मुझे उस ग्रीन कार्ड से कोई लाभ नहीं हुआ। क्या मुझे इस कार्ड से कोई सहायता मिल सकती है ? यदि नहीं तो क्या मैं अदालत का सहारा ले सकता हूं ?

आपने पत्नी का बंधीकरण आपरेशन स्वेच्छा से करवाया। आपके बेटे की मृत्यु विधि संयोग ही कही जा सकती है। इससे आपरेशन का कोई सरोकार नहीं है। आपको स्वेच्छा से परिवार नियोजन अपनाने के लिए ग्रीन कार्ड दिया गया। उस ग्रीन कार्ड में वर्णित सुविधा आपको उक्त कार्ड में वर्णित नियमों के आधार

पर ही प्राप्त हो सकती है । नियमों के अंतर्गत यदि आप किसी सुविधा विशेष के अधिकारी हैं और वह सुविधा आपको नहीं दी जा रही, तब ही आप न्यायालय की शरण में जाकर संबंधित विभाग को नियमानुसार कार्रवाई करने का आदेश देने की प्रार्थना कर सकते हैं ।

मैं चौहान हूं, वह ब्राह्मण

दीपक सिंह, कानपुर : मैं एक लड़की से प्यार करता हूं और हम दोनों शादी करना चाहते हैं । हम दोनों स्नातक हैं और बाइस साल की उम्र पार कर चुके हैं । यदि घर में कोई शादी की बात कहता है, तो सभी भाई-बंधु मरने-मारने को तैयार हो जाते हैं, पर हम दोनों किसी की मौत पर अपने विवाह की नींव नहीं रखना चाहते । सुझाव दें कि हम किस प्रकार विवाह करें क्योंकि, वह उच्च वर्ग—ब्राह्मण है, मैं राजपूत चौहान ?

आप अपना मन पक्का करें । आपको विवाह करना है । बंधु-बांधवों की धमकी के बारे में तो आप ही जानें, जहां तक कानून का सवाल है, आप दोनों विवाह कर सकते हैं ।

पिता के नाम में अंतर

पुन्ना प्रसाद, पटना : मैट्रिक के प्रमाण-पत्र में मेरे पिता का नाम सुरेश साव है, जबकि इंटर, स्नातक एवं जाति प्रमाण-पत्र में सुरेश प्रसाद है । पिता का उनके आफिस में नाम सुरेश साव ही है । इन विसंगतियों के आधार पर भविष्य में सेवा नियुक्ति में मुझे कोई परेशानी तो नहीं उठानी पड़ेगी ?

व्यक्ति तथा उसके पिता का नाम सभी प्रमाण-पत्रों में एक ही होना चाहिए । ऐसा न होने पर दोनों प्रमाण-पत्रों को एक ही व्यक्ति का मानने में परेशानी हो सकती है । आपके पिता के कार्यालय का नाम आपके मैट्रिक के प्रमाण-पत्र से मिलता है । आपके पिता का ठीक नाम भी वही है । आपको आवेदन देकर

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—

रामप्रकाश गुप्त

अपने अन्य प्रमाण-पत्रों में भी अपने पिता का नाम ठीक करवाने की कार्यवाही करनी चाहिए ।

हक मिलेगा या नहीं ?

अनाम, झालावाड़ : पुरुष 'क' की दो पत्नियां थीं, अब दोनों स्वर्गवासी हैं । बड़ी पत्नी के एक लड़की है तथा छोटी पत्नी के कोई संतान नहीं है । छोटी पत्नी ने मेरे पिताजी को गोद ले रखा था, जिसका कोई लिखित प्रमाण नहीं है । बड़ी पत्नी की लड़की का पति घर जमाई था, जिसे लड़की ने छोड़ दिया । अब लड़की अकेली अपने लड़के के साथ रहती है । क्या अब अदालत के जरिये उसकी संपत्ति में से हिस्सा प्राप्त किया जा सकता है या नहीं ? पुरुष 'क' व मेरे पिताजी परस्पर चाचा-भतीजे थे और हम पहले से ही अलग रह रहे हैं ।

आपके पिताजी को जिस महिला ने गोद लिया, उसका प्रमाण उपलब्ध नहीं है । क्या आपके पिता अपने आपको उक्त महिला व उसके पति की संतान के रूप में स्वीकार करते रहे हैं तथा प्रमाण-पत्रों में लिखते रहे हैं । आपके पत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि गोद के बारे में कोई किसी प्रकार का प्रमाण उपलब्ध नहीं है । ऐसी स्थिति में आपके पिता का उक्त महिला का उत्तराधिकारी प्रमाणित कर पाना कठिन है । आपका पहले से ही अलग रहना भी इसका प्रमाण माना जाएगा कि गोद के संबंध को स्वीकारा या माना नहीं गया । ●

रक्षाबंधन पर विशेष

जब भाई की कलाई पर बहन ने हथकड़ी पहनायी

● डॉ. सुमित्रा शर्मा

खट ! खट !! खट !!!
खट । खट ॥ खट !!!

अंधियारी कजरारी रात । घिरे हुए बादलों से बोझिल आसमान । वर्षा अभी थमी ही थी । ऐसी अंधेरी रात में कौन द्वार खटखटा रहा है । "उठिए जी, कोई कुंडी खटखटा रहा है । ... लालटेन कहां है ?"

"तुम तो ऐसे कह रही हो, जैसे तुम्हारे पीहर से कोई सौगात लेकर आया हो ।"

पत्नी ने पुनः पति से उठने के लिए निहोरा किया, "उठियेगा नहीं ?"

पतिदेव पहले तो बहुत भुनभुनाये किंतु, पत्नी के आग्रह से द्वार के साथ लगकर स्वर ऊंचा करके कहा, "कौन इतनी रात गये दरवाजा पीट रहा है ?"

"मैं हूं जीजाजी ! जरा आहिस्ता बोलिए । जल्दी द्वार उघाड़ियेगा ।"

पति का स्वर थोड़ा मुलायम हुआ, "कौन है भाई ?"

"मैं... मधुकर ।"

द्वार खुल गया । दौड़कर पत्नी भी आ गयी । परिचित स्वर की महक पाकर वह गदगद हो बोली, "अरे भैया मधुकर, सब कुशल तो है ?"

"राखी का त्यौहार निकट है जिज्जी, इस खातिर हम आ गये । कुशल तो कछु नाहीं । कुछ न पूछो, हम ही बड़ी कठिनाई से लुकते-छुपते पहुंचे हैं । हम दोनों भाइयों के पीछे तो फिरंगी सरकार ऐसन पड़ी है कि का बतावें ? कौन जाने फिर कब भेंट हो । हमने सोचा राखी पर जिज्जी कहीं उदास न हो जावे, इसलिए आ गये । ई बरसात भी निगोड़ी रुकने का नाम ही नहीं ले रही । तुम तो हमें अबै ही राखी बांध दो, तो हम भिनसारे निकर जाईं..."

"अच्छा भैय्या । तुम आराम से सो जाओ, सारी बातें भोर के बाद ही करेंगे ।"

भाई-बहन का यह संवाद एक ऐतिहासिक सच्चाई है, जिसने कंपनी की अंगरेज़ सरकार की नींद हराम कर दी थी । मधुकर शाह बुंदेला क्रांति का सूत्रधार था । उसका भाई गणेशजू उसका दाहिना हाथ था । ये दोनों भाई नरहुत के स्वर्गीय सरदार विजयबहादुर के बेटे थे ।

बुंदेला-क्रांति का आरंभ

यह घटना सन १८५७ के पूर्व की है । देश

के कोने-कोने में विद्रोह की धीमी आग सुलग रही थी और अंगरेजी सरकार उससे बेखबर थी । कंपनी के प्रतिनिधि भारत में कंपनी राज के सुदृढ़ होने का दम जता रहे थे । ब्रिटिश नौकरशाही सत्ता के मद में चूर थी । उन्हीं दिनों बुंदेलखंड में बुंदेला-क्रांति का बिगुल बज उठा । बुंदेले सरदार क्रांति के झंडे के नीचे एकत्र होने लगे । सन १८२० में कंपनी सरकार ने अपनी सत्ता को इस क्षेत्र में सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से सागर और नर्मदा प्रदेशों को मिलाकर एक प्रशासनिक इकाई बनाया और वहां एक ब्रिटिश एजेंट नियुक्त किया । ये प्रदेश अंगरेजों को पेशवा और भोंसले से प्राप्त हुए थे । यह प्रदेश उतार-चढ़ाववाली सुरम्य घाटियों तथा सघन जंगलों से भरे हुए थे । मैदानी क्षेत्रों में केवल सागर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद और जबलपुर शहर थे । यहां निवास करनेवाली प्रजातियां थीं— गोंड, लोधी और बुंदेल राजपूत । इन लोगों के पास उपजाऊ जमीनें थीं, फिर भी गरीबी की मार से परेशान थे । कारण था, कंपनी सरकार की दोषपूर्ण मालगुजारी, न्याय एवं प्रशासन व्यवस्था । अतः लोगों में भी असंतोष बढ़ता जा रहा था ।

सन १८३९-४२ के प्रथम अफगान-अंगरेज युद्ध में अंगरेजों की पराजय से उनकी प्रतिष्ठा धूल में मिल गयी थी । झांसी में यह चर्चा गरम थी कि रामचंद्र रघुनाथ राव को शीघ्र ही उनकी गद्दी मिल जाएगी । इससे प्रेरित होकर बुंदेल खंड में जिगनी और बिल्हारी के ठाकुर बागी हो गये । ओरछा नरेश ने अपने दीवान हरिती शाह को तो फतेहपुर बिजना तथा घिंगी के जागीरदारों को छिरगांव सहायता के लिए भेजा क्योंकि उसे डर था कि अंगरेज झांसी की तरह ओरछा को भी न हड़प लें । सागर-नर्मदा प्रदेश का कमिश्नर फ्रेजर बहुत परेशान था क्योंकि, इसी समय नरहुत के स्वर्गीय सरदार के दोनों बेटे मधुकर शाह और गणेशजू ने आगे बढ़कर क्रांति की मशाल अपने हाथों में संभाल ली थी । हुआ यह कि मधुकर शाह ने होली उत्सव में नाचने के लिए एक बेड़नी (नर्तकी) को तय किया ।इस नर्तकी को पासवाले थाने के कंपनी सरकार के एक कांस्टेबल ने अगुवाकर लिया । बात बढ़ी और राजपूतों की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गयी । मधुकर

अंगरेजों द्वारा दी जानेवाली पुरस्कार की राशि के लालच में भाई-भाई का दुश्मन बन गया । अपने स्वार्थ के लिए लोगों ने विद्रोहियों को कुर्बान कर दिया । बहन ने रुपयों की खातिर बानपुर के राजा मर्दनसिंह से मिलकर मधुकरशाह के हाथों में राखी की जगह हथकड़ी पहनवा दी

शाह इस अपमान से तिलमिला उठे, यद्यपि असंतोष के बीज तो पहले से ही उग रहे थे क्योंकि, कंपनी ने मधुकर शाह की जमीनों को जब्त करके उसे बेदखल कर दिया था । इसकी कोई न्यायिक सुनवाई भी नहीं हुई । निराशा और अपमान से उत्तेजित होकर ८ अप्रैल, १८४२ को दोनों भाइयों ने नरहुत के पुलिस थाने पर धावा बोल दिया । दूसरे सरदार भी उनसे जुड़ने लगे । जवाहरसिंह बुंदेला ने ईसरवाड़ा में आग लगा दी । पंछन सिंह, दरियाव सिंह, अजीत सिंह, परिक्षित, लक्ष्मणसिंह भी आकर इनसे मिल गये और उन्होंने खिमलसा गांव को भी आग लगा दी । बंगाल इंफेंट्री पर भी उन्होंने धावा बोल दिया, किंतु लेफ्टिनेंट ट्रेनन ने उन्हें पीछे हटा दिया । फिर भी बुंदेलों के हौसले पस्त नहीं हुए । उन्होंने नर्मदा के घाटों के कई महत्त्वपूर्ण ठिकानों पर सुदृढ़ नाकेबंदी कर ली । बेल्हारी घाट पर सरदार चिमन, दरिया घाट पर बृजभूरवन जमादार, सागर घाट पर राव माखनसिंह और जीरा घाट पर से तुहल्का सरदार तैनात थे । गवर्नर जनरल लार्ड एलनबरो और ब्रिटिश सेनाध्यक्ष दोनों ही घबरा उठे क्योंकि, इस समय उनका पूरा ध्यान अफगानिस्तान में अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करने में लगा हुआ था । दूसरे, यह प्रदेश अंगरेज सैनिकों के लिए बिलकुल अपरिचित भी था । ठाकुर मदनसिंह को अंगरेजी फौजों के लिए मार्गदर्शक बनाया गया किंतु, वह क्रांतिकारियों से मिला हुआ था । उसने सेना को जंगलों में ऐसे भटकाया कि उन्हें रास्ता ही नहीं मिला । इसी बीच उसने विद्रोहियों को सूचना देकर उन्हें पिटवा दिया ।

निराश होकर गवर्नर जनरल ने 'फूट डालो राज करो' युक्ति से काम लिया । इलाहाबाद, बनारस, नागपुर, झांसी, कानपुर, इटावा से मदद के लिए और फौजें मंगवायी गयीं । मेजर स्लीमन को फौजों की कमान सौंपी गयी । होल्कर, दतिया, झांसी, बिजनोरा, पन्ना, छत्तरपुर, शाहगढ़ और रींवा के राजाओं से विद्रोहियों को पकड़वाने के लिए सहायता मांगी गयी । सरकार की ओर से हिंदी में लिखकर घोषणा की गयी कि 'विद्रोहियों को पकड़वाने पर एक बड़ी पुरस्कार-राशि प्रदान की जाएगी । कंपनी सागर और नर्मदा क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिए कृत-संकल्प है । सरकार अपनी प्रजा, किसानों और महाजनों की सुरक्षा करेगी । जिन लोगों को किसी गलती से न्याय नहीं मिल सका हो, कंपनी उनकी पुनः सुनवाई करेगी ।

पुरस्कार की राशि के लालच में भाई-भाई का दुश्मन बन गया । अपने स्वार्थ के लिए लोगों ने विद्रोहियों को कुर्बान कर दिया । शाहगढ़ के राजा ने स्वयं के लिए खिल्लत और अपने भाई लक्ष्मणसिंह के लिए कंपनी से क्षमा-याचना प्राप्त करके क्रांतिकारियों का साथ छोड़ दिया । कवर्धा के जमींदार ने आंदोलन के नेता नर्मदाबक्ष को पकड़वा दिया । चंदेरी के राजा ने गिरवर के सरदार परिक्षित को बंदी बनवाकर पांच हजार का इनाम पा लिया । राजा हिरदेशाह को जबलपुर जेल में बंदी बनाकर रखा गया ।

बहन ने धोखा दिया

रात के सन्नाटे में बहन के आश्रय में मीठी नींद सो रहे मधुकर शाह को अचानक बंदूकों की नोक पर मध्य रात्रि में जगाकर बंदी बनाया

गया । उसे कल्पना भी नहीं थी कि उसकी बहन रुपयों की खातिर बानपुर के राजा मर्दनसिंह से मिलकर, उसके हाथों में राखी की जगह हथकड़ी पहनवा देगी । मधुकर शाह अपनी बहन के इस व्यवहार से स्तंभित रह गया । उसके हृदय से आवाज निकली, 'हाय बहन ! राखी की बजाय हथकड़ियां डलवा दीं । काश ! इन कलाइयों को अंगारों से दाग देती, तो मैं उफ् न करता ।'

राखी के कच्चे धागे, जिन पर राजपूतों ने अपनी जान तक निछावर कर दी थी, इसका इतिहास साक्षी है, तब बरबस टूट गये । बाद में गणेशजू भी बंदी बना लिये गये । सागर में खुली अदालत में दोनों भाइयों पर मुकदमा चलाया गया । गणेशजू को देश निर्वासन और मधुकर शाह को फांसी की सजा सुनायी गयी ।

लोगों को आतंकित करने के लिए मधुकर शाह को सागर जेल के पीछे खुलेआम फांसी पर लटकाया गया । लेकिन लोगों ने उसे शहीद मानकर उसकी वहां समाधि बना दी । समाधि पर आज भी हर बरस मेला लगता है । इस स्वतंत्रता-सेनानी की याद बुंदेले हरबोलों के लोकगीतों में अजर-अमर हो गयी है । मधुकर शाह का नाम आज भी सागर में आदर से लिया जाता है । एक पुस्तकालय और एक सड़क का नाम भी उनके नाम पर रखा गया है ।

— ए-२/८ तिब्बिया कॉलेज क्वार्टर्स
करौलबाग, नयी दिल्ली-११०००५

मस्तिष्क के किस भाग को अपनाते हैं ?

मस्तिष्क शोधकर्ता नेड हरमन ने ७,००० लोगों की जांच की कि वे मस्तिष्क के किस भाग से काम लेना अधिक पसंद करते हैं । उन्होंने पाया कि लोगों की जीवनचर्या का इस बात से गहरा संबंध है कि वे मस्तिष्क के कौन-से भाग का अधिक प्रयोग करते हैं । बायें मस्तिष्क की विचार प्रक्रिया से संचालित लोग प्रायः वकील, लेखक, डॉक्टर, लेखाकार, कर विशेषज्ञ आदि ऐसे लोग थे जो तर्कयुक्त तथा स्पष्ट भाषा पर आधारित सूचना प्रणाली के विचार माध्यम का उपयोग करते हैं । दाहिने मस्तिष्क से अधिक काम लेनेवाले लोग कवि, राजनेता, संगीतकार, स्थापत्यविद, उद्योगकर्मी, नृत्यांगनाएं और आश्चर्यजनक रूप से उच्च अधिकारी वर्ग के लोग थे । हरमन के विश्लेषण से पता चला कि हर क्षेत्र में सबसे सफल व्यक्ति वे थे जो अपने मस्तिष्क के बायें और दाहिने— दोनों भागों का उपयोग करते थे ।

कोई व्यक्ति मस्तिष्क के किस भाग की विचार प्रक्रिया से अधिक परिचालित होता है, इसे इस प्रकार जांचिए— यह देखिए कि आप अपने सामने बैठे व्यक्ति द्वारा कोई बात पूछने पर सोचने की मुद्रा में सिर और आंखें किस ढंग से हिलाते हैं । अनुसंधान से पता चलता है कि अगर आप सिर को सामान्यतः बायीं ओर मोड़ते हैं तो इससे स्पष्ट है कि आप में दाहिने मस्तिष्क का अधिक उपयोग करने की प्रवृत्ति है । इसके विपरीत, यदि आप सिर को दायीं ओर घुमाते हैं तो इससे यह आभास होता है कि आप तर्क या भाषा पर आधारित दाहिने मस्तिष्क की विचार प्रक्रिया से काम करने के आदी हैं ।

—सुबोध सहर

अदृश्य संग्रह

• डॉ. के. सी. जो

ड्रेसडन के बाद जब पहला जंक्शन आया, तब एक प्रौढ़ सज्जन हमारे कंपार्टमेंट में घुसे । उन्होंने हम सबकी ओर एक प्रेमपूर्ण मुसकान छोड़ी और मेरी ओर इस तरह देखा मानो मुझसे पूर्व-परिचित हों । यह देखकर कि मैं उन्हें नहीं पहचान रहा हूं, उन्होंने अपना नाम बताया । अब मैं उन्हें पहचान गया, वह बरलिन के जाने-माने आर्ट-डीलर और कलात्मक वस्तुओं के विशेषज्ञ थे । विश्वयुद्ध से पूर्व अनेक बार मैंने उनसे कई हस्तलेख और दुर्लभ पुस्तकें खरीदी थीं । वह मेरे सामनेवाली खाली सीट पर बैठ गये और कुछ समय हम लोग इधर-उधर की बातें करते रहे, फिर वार्तालाप का विषय बदलने के लिए उन्होंने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताया, जिससे वह अभी लौट रहे थे । उन्होंने बताया कि आर्ट-डीलर के पेशे जबकि वह पिछले ३७ वर्षों से लगे हैं, य अनुभव अब तक के सारे अनुभवों में स विचित्र था । मैं समझता हूं अब काफी प हो चुका । मैं उन्हें वह कहानी उन्हीं के श कहने दूंगा ।

उन्होंने कहना शुरू किया कि आप ज मेरे पेशे की क्या हालत है, एक रात जब मैं अपनी दुकान में झांका तो पाया कि वहां को सामान इतना कम था कि दुकान को बंद क देना ही बेहतर था । यह मेरे पिता और दा समय से चला आ रहा एक अच्छा-खासा कारोबार था, लेकिन अब तो दुकान में मह कूड़ा भरा पड़ा था ।

इसी उधेड़बुन में मुझे सूझा कि क्यों न अ

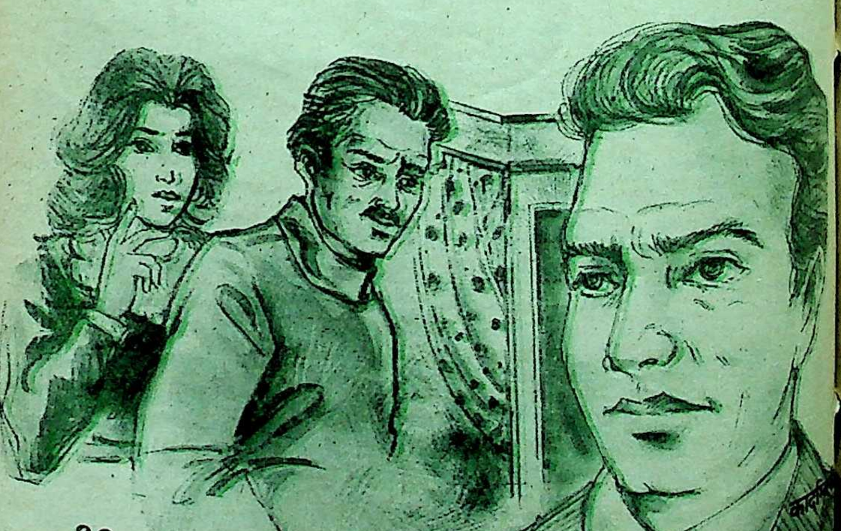

पुराने खातों के पन्ने पलटे जाएं । शायद इनसे मुझे अपने पुराने ग्राहकों तक पहुंचने की राह मिल जाए, जिन्होंने अपने अच्छे दिनों में हमसे ऐसी चीजें खरीदी हों और अब उन्हें बेचना चाहते हों । लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि ऐसे ग्राहकों में अधिकांश तो स्वर्गवासी हो चुके होंगे, और जो शेष बचे होंगे वे इतने खस्ताहाल होंगे कि हमारी फर्म से खरीदी गयी ऐसी कोई भी कीमती चीज अब उनके पास शेष नहीं होगी । लेकिन तभी मुझे पत्रों का एक पुलिंदा मिला जो एक ऐसे ग्राहक द्वारा भेजे गये थे जो (अगर जीवित होंगे तो) मेरे ग्राहकों में सबसे बूढ़े होंगे ।

मामला मुझे इतना रोचक प्रतीत हुआ कि अगले दिन मैं जरमनी के उस सुदूर कस्बे के लिए चल पड़ा । जब मैं कस्बे के छोटे-से रेलवे स्टेशन से निकलकर मुख्य मार्ग पर आया तो वहां के मकानों की हालत देखकर मुझे नहीं लगा कि वहां कोई ऐसा व्यक्ति भी रह सकता है जिसके पास बेशकीमती रैम्ब्रैंट नक्काशी या लकड़ी की ड्यूरर नक्काशी और मैनटेगना के संग्रह होंगे । खैर, मैं पूछताछ के लिए पोस्ट-ऑफिस गया और यह जानकर हैरत में पड़ गया कि किसी समय फॉरेस्ट-रेंजर और आर्थिक सलाहकार रह चुके वह (व्यक्ति) जिनसे मैं मिलने का इच्छुक था, अभी जीवित थे । उनके घर का रास्ता पूछकर मैं उधर ही चल पड़ा । मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था ।

उनकी पत्नी मुझे छोड़ने आयीं । बाहर निकलने का दरवाजा खोलते हुए उन्होंने फुसफुसाकर कहा— "आपको ऐतराज तो नहीं होगा अगर आपकी वापसी से पहले अन्ना मारिया आपसे मिलने होटल में आयें ? यह कई कारणों से अच्छा रहेगा, जिन्हें मैं फिलहाल नहीं बता सकती ।"

दोपहर होने में अभी कुछ समय था । मैं जिस व्यक्ति की तलाश में आया था वह मकान की दूसरी मंजिल में रहते थे । पहली मंजिल एक टेलर-मास्टर द्वारा अधिकृत थी । सीढ़ियां चढ़ने पर बायीं ओर स्थानीय पोस्ट-ऑफिस के मैनेजर के नाम की तख्ती लगी थी और दायीं ओर पोर्सिलेन की प्लेट में मेरे इच्छित व्यक्ति का नाम लिखा था । मेरे घंटी बजाते ही एक बहुत बूढ़ी सफेद बालोंवाली महिला बाहर निकली । उसने काली डोरीदार टोपी पहन रखी थी । उसके हाथ में अपना कार्ड देते हुए मैंने पूछा कि क्या गृहस्वामी घर में हैं ? उस महिला ने एक संदेहास्पद दृष्टि से मुझे और मेरे कार्ड को देखा । इस सुदूर कस्बे में राजधानी से किसी व्यक्ति का आना बहुत बड़ी बात थी । फिर भी अपने लहजे को, जहां तक उससे बन पड़ा, स्वाभाविक बनाते हुए मुझसे हॉल में इंतजार करने को कहा और स्वयं भीतर चली गयी । मैंने पहले फुसफुसाहट और फिर एक ऊंची और दिलकश मरदाना आवाज सुनी— "तुम कहती

हो कि बरलिन से प्राचीन वस्तुओं के मशहूर डीलर हर रैकनर आये हैं ? मुझे उनसे मिलकर बेहद खुशी होगी ।" इसके फौरन बाद वह वृद्ध महिला फिर प्रकट हुई और मुझसे भीतर चलने को कहा ।

मैंने अपना ओवरकोट उतारा और उनके पीछे चल दिया। जिस कमरे में हम प्रविष्ट हुए उसकी सजावट बहुत मामूली थी । कमरे के बीच में एक व्यक्ति मेरे स्वागत के लिए खड़े थे । बूढ़े होने के बावजूद वे काफी तंदुरुस्त और प्रफुल्लित थे । उनकी गुच्छेदार मूंछें थीं और वह एक फौजी जैकेट पहने थे । अत्यंत प्रेमपूर्ण ढंग से उन्होंने अपने दोनों हाथ मेरी ओर बढ़ाये । यद्यपि उनके चेहरे का भाव एकदम स्वाभाविक था, फिर भी वह उनके खड़े होने के तनावपूर्ण अंदाज के अनुकूल नहीं था । वह मुझसे मिलने के लिए खुद आगे नहीं बढ़े, इसलिए मजबूरन मुझे ही हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ना पड़ा । बहुत पास आ जाने पर भी उनका हाथ मेरी ओर नहीं बढ़ा, वरन इस इंतजार में था कि मैं उसे पकडूं । अब मैं समझ गया कि गड़बड़ कहां थी— वह नेत्रहीन थे ।

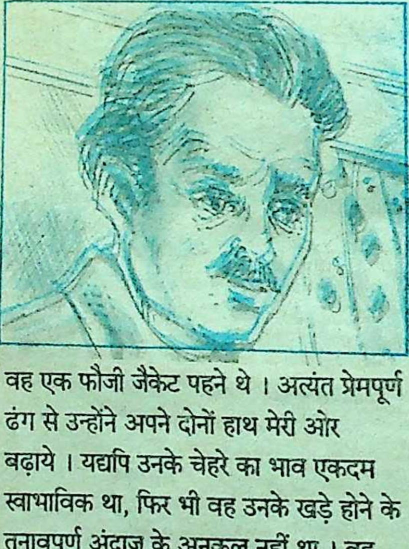

लेकिन उस नेत्रहीन व्यक्ति ने मुझे इस कष्टप्रद स्थिति में नहीं रहने दिया । एक जोरदार ठहाका लगाकर कहा— "बहुत शुभ है आज का दिन ! एक चमत्कार ही समझिए कि बरलिन से आप-जैसा जाना-माना व्यक्ति आज हमारे घर आया है । मैंने अनुमान लगा लिया है कि आपने यहां तक आने का कष्ट क्यों किया ! कारोबार मंदा पड़ गया है, खरीददार नाममात्र को रह गये हैं, इसलिए लोग अपने पुराने ग्राहकों को खोज रहे हैं । मुझे अफसोस है कि आपसे कुछ नहीं खरीद पाऊंगा । कभी मैं ऐसी चीजें खरीदकर संग्रह करता था । लेकिन अब मेरे खरीदने के दिन गये । पेंशन के सहारे दाल-रोटी चल जाए, यही बहुत है ।"

मैंने उन्हें बताया कि मैं उनके पास कुछ बेचने नहीं आया था । पास से गुजर रहा था इसलिए अपने पुराने ग्राहक को नमस्कार करने का मौका नहीं छोड़ पाया । मेरा इतना कहना था कि उनके चेहरे में एकाएक परिवर्तन आया । वह तनकर खड़े हो गये । उनका चेहरा खुशी और गर्व से दमक रहा था । उन्होंने उस ओर अपनी गरदन घुमायी जिधर उनके अनुमान से उनकी पत्नी खड़ी थीं, मानो कह रहे हों— 'सुनती हो !' और फिर मेरी ओर मुड़कर अत्यंत कोमल और प्रेमपूर्ण स्वर में कहा— "आप कितने अच्छे हैं ! मुझे अफसोस है कि आपको यहां तक आने से कुछ प्राप्त नहीं होगा, सिवाय एक बूढ़े की दोस्ती के । फिर भी मेरे पास आपको दिखाने के लिए कुछ ऐसी चीजें हैं जो आपको बरलिन, अल्बर्टिना, वियना और लूवरे तक में देखने को नहीं मिलेंगी । लिजबेथ ! कृपया मेरी अलमारी की चाबी दो ।"

"मैं आपसे विनती करती हूं", उसने लड़खड़ाती आवाज में कहा — "आप उनके इस भ्रम को बना रहने देंगे और उनके इस विश्वास को नहीं तोड़ेंगे कि जिस बहुमूल्य खजाने को वह आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं वह सचमुच वहां देखने के लिए है ।

"प्रिय फ्रैंज, क्या आप आगंतुक से यह भी पूछना भूल गये कि उन्हें कहीं और तो नहीं जाना और अब तो भोजन का वक्त भी हो चला है ।" फिर मेरी तरफ मुखातिब होकर बोलीं— "मुझे अफसोस है कि अचानक आ गये मेहमान के लिए घर में पर्याप्त भोजन नहीं है । आप जिस सराय में टिके हैं, वहीं भोजन भी करेंगे । उसके उपरांत यदि आप एक कप कॉफी हमारे साथ लें तो मेरी बेटी अन्ना मारिया भी तब यहां होगी । उसे अपने पिता के संग्रह की मुझसे बेहतर जानकारी है ।"

मैंने उन्हें बताया कि मेरा दोपहर का भोजन होटल गोल्डन स्टैग पर पूर्व-निर्धारित है, लेकिन मैं वहां से तीन बजे तक निबटकर आ जाऊंगा और तब मेरे पास हर क्रोनफैल्ड के संग्रह को देखने के लिए पर्याप्त समय होगा । मेरी वापसी शाम छह बजे की है । मेरी बात सुनकर वृद्ध यूं उदास हो गये मानो किसी बच्चे से उसका प्रिय खिलौना छीन लिया गया हो ।

"ठीक है !" वह गुर्राये । "आप बर्लिनवाले हमेशा समय की कमी की दुहाई देते हो । फिर भी, मुझे उम्मीद है कि आप मेरे लिए दो-चार घंटे अवश्य निकाल लेंगे । मुझे आपको दो-चार प्रिंट नहीं दिखाने वरन २७ चमड़े के थैलों में भरे अनगिनत प्रिंट दिखाने हैं । फिर भी, अगर आप ठीक तीन बजे आ जाएंगे तो मुझे उम्मीद है कि हम छह बजे तक निबट जाएंगे ।"

उनकी पत्नी मुझे छोड़ने आयीं । बाहर निकलने का दरवाजा खोलते हुए उन्होंने फुसफुसाकर कहा— "आपको ऐतराज तो नहीं होगा अगर आपकी वापसी से पहले अन्ना मारिया आपसे मिलने होटल में आये ? यह कई कारणों से अच्छा रहेगा, जिन्हें मैं फिलहाल नहीं बता सकती ।"

"मुझे बहुत खुशी होगी" मैंने कहा—" मैं होटल में अकेला ही रहूंगा । आप भोजन कर अपनी बेटी को लेकर वहां पहुंच जाएं ।"

एक घंटे बाद, जब मैं भोजन के उपरांत होटल के पार्लर में बैठा था, अन्ना मारिया क्रोनफैल्ड वहां पहुंची । वह एक उम्रदार कृशकाय महिला थी जिसकी निगाहों से घबराहट झलक रही थी । मैंने भरसक प्रयास किया कि वह सामान्य हो जाए और कहा कि यदि उसके पिता बहुत अधीर हों तो मैं तत्काल उसके साथ चलने को तैयार हूं । इस पर वह और भी घबरा गयी और लगभग हकलाते हुए उसने मुझसे विनती की कि यहां से चलने से पहले वह कुछ बात करना चाहती है ।

"कृपया बैठ जाइए", मैंने कहा, "मैं

आपकी सेवा में हाजिर हूं ।''

उसे बात शुरू करने में काफी दिक्कत हुई । उसके होंठ और दोनों हाथ कांप रहे थे । उसने कहना शुरू किया— ''मेरी मां ने मुझे भेजा है । हमें आपकी मदद चाहिए । जैसे ही हम घर पहुंचेंगे, पिताजी आपको अपना संग्रह दिखाना चाहेंगे । उनका संग्रह ! उसका तो अब नाममात्र ही शेष है ।'' सिसकते हुए उसने फिर कहना शुरू किया, ''मुझे सब-कुछ आपके समक्ष खुलासा रखना चाहिए । आप तो जानते हैं कि हम लोग गरीबी के किस दौर से गुजर रहे हैं, इसलिए मुझे उम्मीद है कि आप सब-कुछ समझ जाएंगे ।

"यही कारण था कि आज आपके आने से मेरी मां सशंकित हो गयी । जैसे ही वह थैले खुलेंगे, हमारी यह पवित्र धोखाधड़ी भी खुल जाएगी । पिताजी हर अदद को छूकर पहचानते हैं । इसलिए ज्यों एक प्रिंट बिका, हम लोग उसकी जगह ठीक उतना ही बड़ा और मोटा कारतूस का कागज लाकर रख देते थे ताकि उन्हें कोई फर्क न मालूम हो । हर अदद को एक-एक कर गिनने और छूने में उन्हें ऐसा आनंद मिलता है मानो वह सचमुच उसे देख रहे हों । वह यहां किसी को अपना संग्रह नहीं दिखाते जहां कोई इन चीजों के बारे में जानकारी नहीं रखता । लेकिन उन्हें अपनी ये चीजें इतनी प्रिय हैं कि अगर उन्हें मालूम पड़ गया कि वे बिक चुकी हैं तो उनका दिल टूट जाएगा । अंतिम बार जिसे उन्होंने अपना संग्रह दिखाया वह ड्रेसडन के तांबे की नक्काशीदार प्लेटों के संरक्षक थे ।''

''मैं आपसे विनती करती हूं'', उसने लड़खड़ाती आवाज में कहा — ''कि आप उनके इस भ्रम को बना रहने देंगे और उनके इस विश्वास को नहीं तोड़ेंगे कि जिस बहुमूल्य खजाने को वह आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं वह सचमुच वहां देखने के लिए है । उसके बिक जाने का सदमा वह बरदाश्त नहीं कर पाएंगे । मैं स्वीकार करती हूं कि हमने पिताजी से यह सब छिपाकर बहुत गलत किया । लेकिन इसके सिवाय हम करते भी क्या ? अनाथ बच्चों का जीवन उन पुराने प्रिंटों से ज्यादा कीमती था । पिताजी प्रतिदिन तीन घंटे उस काल्पनिक संग्रह के प्रत्येक नमूने से इस तरह बातें करते हैं मानो वह उनका मित्र हो । जब से उनकी आंखों की रोशनी गयी है, तब से आज का दिन उनके जीवन का सबसे रोमांचक दिन होगा । एक विशेषज्ञ को अपना संग्रह दिखाने की उन्हें कितनी ललक है ! अगर आप हमारे साथ इस धोखाधड़ी में शामिल हो जाएं तो...''

मैंने अन्ना मारिया से वादा किया कि 'मैं उसका साथ दूंगा ।' हम दोनों एक साथ उनके घर को चले । रास्ते में अन्ना मारिया से यह जानकर मुझे बहुत दुःख हुआ कि इन सरल निष्कपट महिलाओं ने जानकारी न होने के कारण बहुत से कीमती और दुर्लभ प्रिंटों को निहायत कम दामों में बेच दिया था । इससे मेरा यह निश्चय और भी दृढ़ हो गया कि मैं उन्हें हरसंभव सहायता दूंगा । जब हम उनके घर की सीढ़ियां चढ़ रहे थे तो एक खुशी से भरी तेज आवाज सुनायी दी— ''आइए ! आइए !!'' एक नेत्रहीन की तीव्र श्रवण शक्ति से उन्होंने वह पदचाप पहचान ली थी जिसका वह बेताबी से

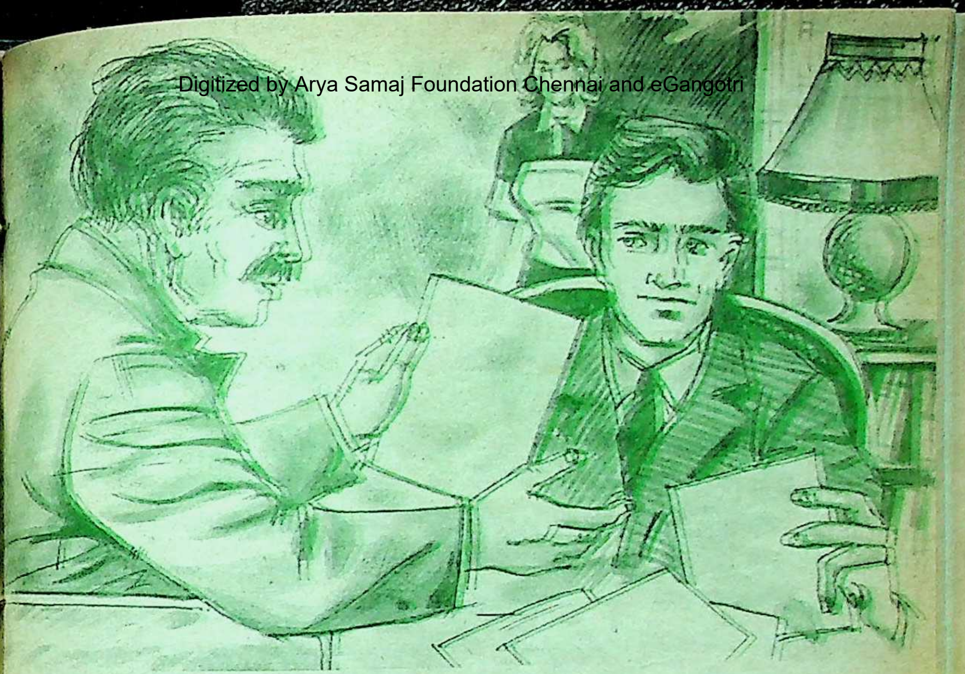

इंतजार कर रहे थे ।

"फ्रैंज, दोपहर के भोजन के बाद एक झपकी लेते हैं । लेकिन आज मारे खुशी के जागते रहे"— उनकी पत्नी ने मुसकराकर कहा । फिर अपनी बेटी के चेहरे पर एक नजर डालकर वह आश्वस्त हो गयीं कि सब ठीक-ठाक है । ढेरों चमड़े के थैले मेज पर एक के ऊपर एक रखे थे । बूढ़े संग्रहकर्ता ने मेरी बांह पकड़ी और मुझे एक कुरसी में धकेल दिया जो पहले से मेरे लिए लगायी गयी थी । "हमें जल्द शुरू करना चाहिए, बहुत-कुछ देखने को है और समय निकला जा रहा है । (पहले थैले में ड्यूरर्स का लगभग पूरा सैट है । आपको प्रत्येक कट दूसरे से बेहतर लगेगा । क्या अद्वितीय नमूने हैं ! आप ही देखिए, उन्होंने कहा ।) उन्होंने एक थैला खोला और कहा— "हम एपोकैलिप्स सीरीज से शुरू करते हैं ।"

"आपने इससे बढ़िया प्रिंट कभी देखा है ? हर बारीकी कितनी स्पष्ट है ! मैंने ऐसा प्रिंट ड्रेसडन में देखा था । लेकिन वह भी इसके मुकाबले धुंधला था । फिर मेरे पास इसका पूरा ब्यौरा मौजूद है," उन्होंने कहा । "यह नेगलर संग्रह की मुहर है । इसके बाद क्रम से रैमी और ऐसडेल की मुहरें लगी हैं । वे मशहूर लोग सोच भी नहीं सकते कि उनका खजाना इस छोटे-से कमरे में मौजूद है ।"

मेरे शरीर में भय से सिहरन छूट गयी जब उस सरल, निश्शंक व्यक्ति ने कागज की खाली शीट की मुक्तकंठ से प्रशंसा करनी शुरू की । जब उन्होंने कब के स्वर्गवासी हो चुके पुराने संग्रहकर्ताओं द्वारा लगायी गयी तथाकथित मुहरों के स्थान को अंगुली के नाखून से इंगित किया तो मुझे लगा कि मेरा शरीर निश्चेष्ट हो गया है ।

मैंने उच्च स्वर में कहा— "आपका कहना एकदम दुरुस्त है । ये नमूने बेजोड़ हैं ।"

वह फूलकर कुप्पा हो गये । "ये तो कुछ भी नहीं है", उन्होंने कहना जारी रखा, "अब इन दो को देखिए— 'दी मैलंकोलिया' और 'दी पेंशन' का चमचमाता प्रिंट । इसके मुकाबले का तो कोई है ही नहीं । जरा रंगों की ताजगी तो देखिए ! बरलिन में आपके मित्र या पब्लिक गैलरीज के मालिक अगर देखभर लें तो ईर्ष्या से जल-भुनकर खाक हो जाएंगे ।"

सिर्फ एक ही बार खतरा आते-आते टला । वह मुझे रैमस्टैड के एंटिओप का पहला प्रूफ दिखा रहे थे, जो निश्चय ही अमूल्य रहा होगा और कब का मिट्टी के भाव बिक चुका होगा । जब वह उस प्रिंट की बारीकी का बखान कर रहे थे तो अंगुली के पोर से उसे छूते हुए उन्हें महसूस हुआ कि एक निश्चित स्थान पर खुरदरापन गायब है । उनका चेहरा लटक गया, कांपते होंठों से उन्होंने कहा— " क्या यह एंटिओप ही है ? मेरे सिवाय इन्हें कोई नहीं छूता । पता नहीं यह कैसे इधर-से-उधर हो गया ?"

"यह एंटिओप ही है हर क्रोनफैल्ड !" मैंने रिक्त कागज उनके हाथ से लेते हुए कहा और जहां तक उक्त प्रिंट की बारीकियां मेरी याददाश्त में थीं, मैंने उनका बखान कर दिया ।

उनकी घबराहट दूर हो गयी । जितना मैं प्रशंसा करता गया, उतने ही वह संतुष्ट दिखायी दिये । अब एक विजेता के स्वर में उन्होंने अपनी पत्नी और बेटी से कहा— "आज एक ऐसा आदमी मिला जो चीजों की कद्र करना जानता है । तुम लोग इस संग्रह के लिए मेरा पैसा बहाना पसंद नहीं करते थे । यह सच है कि लगभग पचास वर्षों तक मैंने सिगरेट, शराब, थियेटर, किताबें, घूमना-फिरना आदि सबका त्याग कर जो भी बचाया उसे उन चीजों को खरीदने में लगा दिया जिन्हें तुम लोग हिकारत की नजर से देखते रहे ।

"आपके आने से मुझे बेइंतहा खुशी मिली", उन्होंने कांपते स्वर में कहा । "किसी जानकार को अपना संग्रह दिखा पाने की खुशी मामूली नहीं होती । एक अंधे और बूढ़े व्यक्ति के लिए आपने जो किया, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं और कृतज्ञता स्वरूप आपके लिए कुछ करना चाहता हूं । मैं अपनी वसीयत में इतना और जोड़ दूंगा कि मेरे मरणोपरांत आपकी फर्म, जो ईमानदारी के लिए मशहूर है, मेरे संग्रह की नीलामी के लिए अधिकृत होगी ।" उन्होंने फिर से उन थैलों पर प्यार से हाथ फेरा ।

मैंने उनकी पत्नी और बेटी की ओर देखा जो किसी तरह अपनी सिसकियां रोके थीं । वे दोनों दरवाजे तक मुझे छोड़ने आयीं ।

जब मैं गली में आगे बढ़ा तो मैंने एक खिड़की खुलने की आवाज सुनी और किसी ने मेरा नाम लेकर पुकारा । यद्यपि वह बूढ़े व्यक्ति मुझे देख नहीं सकते थे, वह इतना एहसास कर सकते थे कि मैं किस ओर जा रहा हूं और उनकी दृष्टिहीन आंखें उधर ही लगी हुई थीं । वह खिड़की पर इतना अधिक झुक गये कि उनकी पत्नी और बेटी को उन्हें पकड़ना पड़ा ताकि वह गिर न पड़ें । " आपकी यात्रा मंगलमय हो, हर रैकनर !" उन्होंने हवा में अपना रूमाल लहराकर कहा ।

— बी-१२, शिवम कार्यालय
लंका, वाराणसी-२२१

वे आकाशचारी मनुष्यों के नेता थे

● डॉ. श्याम सनेही लाल शर्मा

रामायण काल में भारत के पश्चिमी समुद्र तट और उसकी समीपवर्ती पर्वत-श्रेणियों पर एक जाति निवास करती थी । यह बड़ी शक्तिशाली और यायावरी प्रवृत्ति की जाति थी । भ्रमणशीलता इसका स्वभाव था । अपने पर्यटनशील स्वभाव के कारण ही जहां इसने समस्त भू-मंडल का परिभ्रमण किया था, वहां इनके नेता भ्रमण करते हुए एक बार सूर्य लोक तक जा पहुंचे थे, पर सूर्य के तेज को सहन न कर सकने के कारण एक बीच से ही वापस लौट आया और दूसरा अपने अभिमान में सूर्य तक पहुंच गया था । वह वहां अधिक समय तक टिक नहीं सका । और सूर्य के तेज से आहत हो दक्षिण दिशा में समुद्र तट के आस-पास की पर्वत-कंदराओं में आ गिरा । यह गृध्रों और सुपर्णों की जाति थी । इस जाति के नेता संपाति और जटायु थे । ये दोनों सगे भाई थे । इन दोनों भाइयों के मरने के बाद गृध्रों का राजनीतिक अस्तित्व ही समाप्त हो गया ।

पक्षी नहीं मनुष्य

शक्ति, शौर्य और पराक्रम संपन्न इस गृध्र जाति को बाल्मीकि और तुलसी ने पक्षी बतलाया है, पर यथार्थतः ये पक्षी नहीं, मनुष्य थे । इस संबंध में श्री अविनाश चंद्र दास का स्पष्ट मत है कि 'प्राचीन भारत की कुछ 'घुमंतू जातियां अपने पर्यटनशील स्वभाव के कारण पक्षियों— गृध्रों या सुपर्णों— के नाम से संबोधित की जाती थीं ।' (ऋग्वैदिक इंडिया, पृ.१४८) । बाल्मीकि रामायण और तुलसी के रामचरितमानस में इस जाति का विस्तृत परिचय नहीं मिलता तथा संकेतरूप में जितना भी उल्लेख है, वह भी बड़ी विचित्रताओं से भरा हुआ है । विचित्रता यह कि इन कृतियों में प्राप्त उल्लेख एक ओर जहां इस जाति को पक्षी सिद्ध करता है, तो दूसरी ओर इनके आचार-विचार, क्रिया-कलाप और स्वभाव में मानवीय संस्कृति का दिग्दर्शन कराता है । मानस के निम्नलिखित उद्धरण उक्त कथन की पुष्टि में दिये जा सकते हैं

धावा क्रोधवंत खग कैसे ।
छूटइ पबि परबत कहुंजैसे ।।
३/२९/१०

चोंचन्ह मारि विदारेसि देही ।
दंड एक भई मुरुछा तेही ।।
३/२९/२०

काटेसि पंख परा खग धरनी ।
सुमिरि राम करि अद्भुत करनी ।।
३/२९/२२

सुनि खग हरष सोक जुत बानी ।
आवा निकट कपिन्ह भय मानी ।। ४/२७/९

गीध अधम खग आमिष भोगी ।
गति दीन्ही जो जाचत जोगी ।।

३/३३/२

मैं देखऊं तुम्ह नाहीं,
गीधहि दृष्टि अपार ।।

४/२८

निस्संदेह,यह जाति शक्तिशाली, मांसभक्षी किंतु संवेदनशील और दूरदर्शी थी । भ्रमणशीलता और तीव्रगामिता में यह आधुनिक अर्थों में गृहीत गृधों या सुपर्णों की समानता करती रही होगी । इस जाति की सबसे बड़ी विशेषता अपार-दृष्टि और आकाश-संचरण थी । आकाश भी इनका भ्रमणक्षेत्र था और यह एक ही स्थल से बहुत दूर तक देखने की क्षमता रखती थी । जटायु ने राम के प्रति प्राणियों की उत्पत्ति का वर्णन किया था (बा. रा. ३/१४/६-३३) और संपाति ने वानरों को पक्षियों के विविध भेद बताये थे (बा. रा., ४/५८/२४-२७) । रामायण के ऐसे वर्णनों के अध्ययन से प्रतीकवाद (टोटेमिज्म) की उत्पत्ति तथा उसके भेदों के संबंध में बहुत कुछ संकेत मिल जाते हैं ।

खग अर्थात आकाशचारी

खग (ख =आकाश, ग =गवन, संचरण) अर्थात आकाशचारी यानी आकाश को भी अपना भ्रमणक्षेत्र समझनेवाली इस गृध्र जाति के मुखिया जटायु के लिए तुलसी ने गीधराज संबोधन प्रयुक्त किया है ***गीधराज सुनि आरत बानी*** (मानस—३/२९/७) तथा इस जाति के लोगों के लिए खग जाति-सूचक शब्द का प्रयोग । पर इतने से ही ये पक्षी सिद्ध नहीं किये जा सकते । इनकी प्रकृति, प्रवृत्ति, स्वभाव, आचार-विचार, रीति-नीति के विश्लेषण से यह निस्संदेह निरुपित किया जा सकता है कि रामकालीन अनार्य जातियों में गृध्र जाति ही एक ऐसी मानव जाति थी, जिनके घनिष्ठ और आत्मीय संबंध तत्कालीन आर्य जाति से थे । जटायु अवधनरेश महाराज दशरथ के सखा थे—

उवाच वत्स मां विद्धि वयस्यं पितुरात्मन:

(बा. रा. ३/१४/३

इसी सख्य भाव के कारण जटायु ने राम-लक्ष्मण और सीता को अपनी संतान की तरह स्नेह दिया । पंचवटी में राम-लक्ष्मण के मृगयार्थ चले जाने पर एक पिता की तरह जटायु सीता की रखवाली करता था । रावण के बंधन में सभीत मृगी की तरह विलाप करती सीता को सांत्वना देते हुए जटायु उनके लिए पुत्रि संबोधन प्रयुक्त करता है —

सीते पुत्रि ! करसि जनि त्रासा ।
करिहउं जातुधान कर नासा ।।

(मानस ३/२९/१)

स्मरणीय है कि रावण के बंधन से सीता को मुक्त कराने के प्रयास में ही जटायु की मृत्यु हुई, जिसका दाह-संस्कार स्वयं राम ने स्वबंधुवत अपने हाथों से किया था—

ददाह रामो धर्मात्मा स्वबंधुमिव दुःखित:

(बा. रा. ३/६८/३२)

तुलसी ने भी इस तथ्य की ओर मानस में संकेत किया है (मानस, ३/२०/७-२२, ३/३२) । वस्तुतः राम के समय तक गृध्र जाति के लोगों ने आर्यों की धार्मिक रीतियों को अपना लिया था । दक्षिण दिशा में सीतान्वेषण हेतु गया हुआ वानर-दल जब हताश हो समुद्र-तट पर बैठा हुआ था, तब संपाति ने

पर्वत-गुफा से निकलकर जटायु के भाई के रूप में अपना परिचय दिया था । संपाति ने अपने दिवंगत भाई के पितरों को जलांजलि भी अर्पित की थी –

ततः कृतोदकं स्नातं तं गृध्रं हरियूथपाः

(बा. रा. ४/६०/१)

इस जाति के नेताओं के आर्यों से स्नेहिल संबंध रहे हैं, इस बात को राम भी जानते थे । गृध्रराज जटायु से राम ने प्रथम भेंट पंचवटी के निकट पहुंचते ही की थी, जहां उन्होंने उसे पिता-सदृश्य ही आदर देते हुए उसके साथ अनेक प्रकार से प्रेम-भाव को बढ़ा लिया था (मानस ३/१३) । सीता को बचाने में अपने प्राण-त्याग करनेवाले जटायु से राम ने यह निवेदन किया था कि, 'हे तात ! सीता-हरण की बात आप स्वर्गलोक में जाकर पिताजी से न कहिएगा । यदि मैं राम हूं,तो दशमुख रावण परिवार सहित वहां आकर स्वयं ही कहेगा। (मानस ३/३१) ।

यह आर्येतर जाति बड़ी पराक्रमी और शक्तिशाली थी । रावण के साथ युद्ध करते हुए जटायु की शक्ति का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि उसने रावण के बाल पकड़कर रथ से नीचे उतार लिया था और रावण पृथ्वी पर गिर पड़ा था । एक बार तो उसने रावण के बंधन से सीता को मुक्त भी करा लिया था और उन्हें एक ओर बैठाकर पुनः चौंचौं से मार-मारकर रावण के शरीर को विदीर्ण कर डाला था । उसके प्रहारों से एक क्षण के लिए रावण मूर्च्छित भी हो गया था ।

पराक्रमी एवं शक्तिशाली

यह आर्येतर जाति बड़ी पराक्रमी और शक्तिशाली थी । रावण के साथ युद्ध करते हुए जटायु की शक्ति का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि उसने रावण के बाल पकड़कर रथ से नीचे उतार लिया था और रावण पृथ्वी पर गिर पड़ा था । एक बार तो उसने रावण के बंधन से सीता को मुक्त भी करा लिया था और उन्हें एक ओर बैठाकर पुनः चौंचौं से मार-मारकर रावण के शरीर को विदीर्ण कर डाला था । उसके प्रहारों से एक क्षण के लिए रावण मूर्च्छित भी हो गया था (मानस ३/२९/१९-२०)।

जटायु और संपाति दोनों भाइयों में बड़ा प्रेम था । ये महत्त्वाकांक्षी भी बहुत थे । अपनी तरुणाई में अंतरिक्ष-भ्रमण करते हुए सूर्य तक पहुंचने का अभियान इनकी महत्त्वाकांक्षा को ही संकेतित करता है । साहित्य-सर्जकों ने संपाति को साहित्यकार का प्रतीक मानकर अत्यधिक महत्त्व दिया है । ललित निबंधों के प्रणेता कुबेरनाथराय लिखते हैं— 'हर-एक साहित्यकार थोड़ा-बहुत संपाति होता है और प्रायः सभी तथ्यों की प्रखर ज्वाला में अपने 'युटोपिया'(काल्पनिक आदर्श)के पंखों को झुलसा हुआ पाते हैं । सलीब पर झूलता हुआ

मसीहा स्वतः एक बहुत बड़ा संपाती था । परंतु पैगंबर या साहित्यकार ऐसे संपाती हैं, जो पंखों के जल जाने पर भी हार नहीं मानते, पछताते नहीं । चारों ओर पराजय है, निराशा है, रिक्तता है, दुर्गंध है । फिर भी कोई पश्चात्ताप नहीं, संघर्ष का रथ आगे बढ़ेगा । यदि पथ नहीं मिलता, तो अपने इस एकाकी अकेले रथ की लीक ही पथ है । कोई चिंता नहीं, कोई परवाह नहीं । भविष्य के अजन्मे मनु के लिए सर्वस्व समर्पण ।'(प्रिय ! नीलकंठी— संपाती के बेटे— पृ. ७६,

मानवीय मूल्यों के संरक्षक

जटायु और संपाति गरुड़ के पुत्र हैं । अवधनरेश दशरथ शनि की कोप-दृष्टि से भस्म होकर जब आकाश से नीचे गिर रहे थे, उसी समय जटायु ने आकाशमार्ग में लौटकर उन्हें बचा लिया । सीता को रावण से बचाता वृद्ध जटायु एक पराक्रमी ही नहीं, अपितु श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों के लिए संघर्षरत योद्धा लगता है । कर्त्तव्य और उदात्त मूल्यों के लिए किया गया प्राणोत्सर्ग उसे महान मानव बना देता है । वह नारी की अस्मिता और उसके सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों की परवाह नहीं करता । उसमें अप्रतिम साहस और अपार वेग है । संपाति ने भी अपनी शक्तिभर राम-कार्य में सहयोग किया । वही सहयोग हनुमान को लंका तक पहुंचाता है । मानवीय मूल्यों के संरक्षक गृध्र जाति के ये नेता सदैव स्मरणीय रहेंगे ।

इतिहास पुरुष

जटायु का अस्तित्व ऐतिहासिक है । बाल्मीकीय रामायण और महाभारत में उसका उल्लेख है । इसने बहुविध आर्यों की सहायता की थी । दशरथ को आकाश-पतन से बचाकर, सीता को रावण के बंधन से मुक्त कराने का प्रयास कर, राम को सीता-हरण की सूचना देकर मृत्यु का वरण करनेवाला जटायु गृध्र जाति, तत्कालीन आर्येतर मानव-जाति का नेता था । जैन ग्रंथ पउमु-चरिउ में जटायु का उल्लेख एक भिन्न प्रकार से है ।

राम-कथा से संबंधित ग्रंथों में इन अलौकिकताओं और अतिरंजनापूर्ण वर्णनों को यदि आधुनिक संदर्भों में ग्रहण किया जाए, तो निष्कर्ष यही निकलता है कि जटायु और संपाति मानवीय मूल्यों के संरक्षक श्रेष्ठ मानव ही थे । राम रावण के विरुद्ध जिस सांस्कृतिक विजय का अभियान प्रारंभ करते हैं, ये अपनी शक्तिभर उस अभियान को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देते हैं । वस्तुतः ये इतिहासपुरुष हैं ।

जहां तक इनकी नभचारिता आर पंख संयुक्तता का प्रश्न है उसे हमें लाक्षणिक अर्थ में स्वीकार करना चाहिए गृध्र नेताओं की नभचारिता अंतरिक्ष अन्वेषण के अर्थ की व्यंजक है । पंख संयुक्त प्रतीकवाद के कारण है । रामायणकालीन वानर भी तो टाटेम जाति ही थी, उसी प्रकार ये भी टाटेम जाति के लोग थे । अस्तु जटायु और संपाति आकाशचारी मनुष्यों के नेता थे ।

— सहायक प्राध्यापक हिन्दी-विभाग
कुकुमबाई जैन कन्या महाविद्यालय
भिंड-४७७००१

बुद्धि विलास

१. क. कलियुग का प्रारंभ कब से बताया जाता है ?

ख. इस युग की कुल आयु कितनी है ?

२. क. अकबर के दरबार में कौन अंगरेज व्यापारी आया था ?

ख. उसके विरोध में पुर्तगालियों ने अंगरेजों के बारे में क्या कहा था ?

३. क. पड़ोसी देश की किस महिला को शांति का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है और 'जवाहरलाल नेहरू अंतरराष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया है ?

ख. उनकी प्रसिद्ध पुस्तक का क्या नाम है ?

४. क. गंगा को प्रदूषण-मुक्त करने की योजना पर कितना व्यय अब तक हो चुका है ?

ख. कितना काम बाकी है ?

५. क. १९९३-९४ में भारत में बाह्य ऋण में कितनी वृद्धि हुई है ?

ख. इस वर्ष बाह्य ऋणों पर ब्याज का भुगतान कितना हुआ ?

६. क. वर्ष १९९४-९५ में निर्यात में कितनी वृद्धि होने का अनुमान है ?

ख. कथित वर्ष में व्यापार में लाभ हुआ या घाटा ?

७. विगत मई में उच्चतम न्यायालय ने सामाजिक क्षेत्र में कौन-सा महत्त्वपूर्ण निर्णय दिया था ?

८. क. चरार-ए-शरीफ में किसकी दरगाह है, जिसे आतंकवादियों ने जला दिया ?

ख. वह कितनी पुरानी है ?

९. क. आज अमरीका का सबसे अमीर आदमी कौन है ?

ख. उसकी कुल कितनी पूंजी है ?

१०. निम्नलिखित पुरस्कार किन्हें प्रदान किये गये हैं—

क. प्रथम 'रामकृष्ण डालमिया श्रीवाणी अलंकरण',

ख. १९९४ का बिरसा-मुंडा पुर.

ग. १९९५ का राष्ट्रीय एकता पुर.

११. क. इस वर्ष की राष्ट्रमंडल फ्री स्टाइल कुश्ती प्रतियोगिता में कौन जीता है ?

ख. विश्व टेबल टेनिस चैंपियनशिप में किस देश ने विजय प्राप्त की ?

१२. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

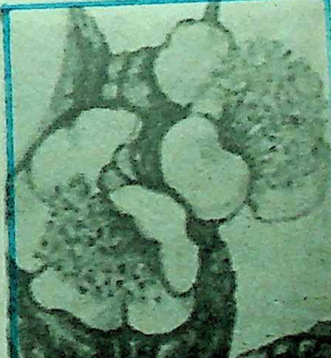

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

नरवद अपने सज्जित कक्ष में बैठा-बैठा कसूंबर (अफीम का घोल) पी रहा था ।

कक्ष में शांति थी । पूर्ण नीरवता । सरदी का मौसम था । वह मखमली शैया पर अर्धशायित सा । सोचने लगा सुपियारदे के बारे में । खवास चेतू ने उसकी अपरिचित प्रशंसा करते हुए कहा था, वह इंद्र की अप्सरा है । इस पृथ्वी पर वे बेजोड़ रूपवती हैं । गांव 'रुण' के ठाकुर सींहड़ा सांखला की बड़ी पुत्री ।'

नरवद के मन में उसके प्रति आकर्षण उत्पन्न करने में खवास सफल रहा । नरवद परमवीर था और उसके शौर्य के किस्से सर्वत्र फैले हुए थे । उसे अपने रूप पर भी गर्व था ।

पर न जाने सुपियारदे के रूप की प्रशंसा सुनकर उसमें एक बेचैनी क्यों उत्पन्न हो गयी ? क्या इसे ही प्रेम कहते हैं ।... वह सोचने लगा कि वह ऐसी सर्वांग रूपसी को कैसे देखें ? उस रात नरवद सुख से सो नहीं सका ।

□ □ □

संयोग कहिए -- नरवद को सुपियारदे को देखने का अवसर मिल गया ।

उसके एक अभिन्न मित्र रायमल का विवाह था । उस विवाह की बारात रुण गांव के ठाकुर सींहड़ा सांखला के यहां जानेवाली थी ।

बारात समय पर 'रुण' पहुंची । अगवानी में कई सरदार-उमराव खड़े थे । जालीदार झरोखों में रावले की स्त्रियां व युवतियां खड़ी थीं ।

परिवार की स्त्रियां बींद (दूल्हा) की अगवानी के लिए तोरण द्वार पर खड़ी थीं ।

नरवद ने अपने मित्र सम खवास चेतू को कोहनी मारकर कहा, "बता न, सुपियारदे कहां है !"

"कुंवर सा ! मैंने सब ठीक-ठाककर रखा है । सवासण पनड़ी को सब समझा दिया है । वह सुपियारदे के साथ है । वह हमें संकेत कर देगी ।"

पर नरवद को एक-एक पल एक-एक दिन लग रहा था । तभी चेतू बोला, "वह रही

आपके सपनों की रानी, आपके नैनों की ज्योति ... आपके हिवड़े का हार... ।"

आकुलता से देखा नरवद ने उसे । सिर से पांव तक मानो झंकृत हो उठा हो ।

ऐतिहासिक कहानी

टूटते बंधन

● यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

उसी पल खवासन पनड़ी ने सुपियारदे को बताया कि वह रहा शूरवीर, कीर्तिवान, रूपवान कुंवर नरवद ।

दोनों की आंखें टकरायीं । दोनों की आंखों से प्रथम दृष्टि प्रेम की अदृश्य भावनाएं दीप्त हो उठीं ।... सुपियारदे भी नरवद को बस देखती रही ।

चेतू ने कहा, "वह आपको देख रही है, तुरंत मुजरा कीजिए ।"

आरती हो गयी । दूल्हेराजा भीतर गये । आखिर अवसर मिल ही गया । एक स्तंभ की ओट में सुपियारदे खड़ी हो गयी । नरवद लपककर उसके पास गया । उसने झट-से कहा, "आपने मेरे मुजरे (नमस्कार) को कबूल किया, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं ।"

सुपियारदे ने गहरे अपनत्व से उसकी ओर देखा । फिर कहा, "इसमें आभार मानने की क्या बात है ? असल में मेरे हृदय में न जाने आपके प्रति आकर्षण एकाएक क्यों जन्म गया ? आपके शौर्य की यशगाथाओं से मैं परिचित हूं । ...

"सच ।"

उसने पलकों से स्वीकृति दी ।

तभी किसी ने पुकारा, "सुपियारदे बाईसा !"

वह सांप की तरह सरक गयी । नरवद ने मन-ही-मन निश्चय किया कि वह इस अभूतपूर्व रूपसी को अपनी अर्धांगिनी बनाएगा ।

"यात्रा अच्छी रही न बेटा !"

"जी मां सा । पर... ।"

"पर क्या ?"

□ □ □

"मां सा !" नरवद ने मां का हाथ नन्हे शिशु की तरह अपने हाथ में लेकर कहा, "मैं विवाह करना चाहता हूं ।"

"मेरे 'कलेजे की कोर' तुमने मेरे मुंह की बात छीन ली । मैं भी इन दिनों यही सोच रही थी ।"

"मां सा ! मुझे भला विवाह के लिए कहने

की क्यों जरूरत पड़ी । आप जरा सुनिए, मुझे एक लड़की पसंद है, मैं उससे विवाह करना चाहता हूं ।''

''तुम्हें एक लड़की पसंद है । तुमने उसे कब, कैसे और कहां पसंद किया ?'' मां की आंखों में विस्मय था !

''रुण ठिकाने की बेटी सुपियारदे है ।'' उसने सिर झुकाकर कहा, ''मां सा ! वह अनुपम रूपसी है । घर ठिकाना भी अच्छा है ।''

''पर बेटा राजघरानों के कुछ अपने धर्म-नियम होते हैं, मर्यादाएं होती हैं,... परंपराएं व रूढ़ियां होती हैं । इस तरह के इच्छित कार्य यहां सहजता से पूरे नहीं होते ?''

मां ने मातृत्व भाव से उसके सिर पर हाथ फेरकर कहा, ''मैं प्रयास करूंगी ।''

आश्वासन से नरवद के होंठों पर मुसकान थिरक गयी ।

□ □ □

नरवद के पिता राजा सत्ता, रानी के मुख से इस प्रस्ताव को सुनकर चौंके । वे हुक्के की चांदी की नली को मुंह से बाहर निकालते हुए गंभीर स्वर में बोले, ''राणी जी ! यह तो हमारे कुलीन कुल के लिए अच्छी बात नहीं होगी । प्रस्ताव उनकी ओर से आना चाहिए ।''

''मैं यह जानती हूं कि पुत्र की इच्छा का ध्यान रखकर यदि हम थोड़ा-सा अपने को विनम्र कर लें तो हरज ही क्या है ? नरवद को सुपियारदे बहुत पसंद है ।''

□ □ □

परोक्ष रूप से मंडोर के कुंवर से अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव पाकर ठाकुर सींहड़ा सांखला आत्म-विभोर हो गया । उसने तुरंत मंडोर अपनी बेटी के विवाह का नारियल भिजवा दिया ।

सुपियारदे यह जानकर भावात्मक कल्पनाओं में उड़ने लगी ।

□ □ □

कुछ दिनों बाद चेतू ने भागकर जाजम पर पीठ तकिये के सहारे शायित नरवद को घबराहट से कहा, ''अन्नदाता, गजब हो गया ?''

''क्या गजब हो गया ।'' उसने ललाट में बल डालकर पूछा ।

''सुपियारदे का विवाह जैनारण के ठाकुर के पुत्र नवसिंह बीदावत से हो गया ।''

नरवद एकदम आग-बबूला हो उठा । चिल्लाकर बोला, ''क्या बकते हो ?''

''सच कह रहा हूं । पक्के आदमी ने यह समाचार दिया है । मेरी पनड़ी भी सुपियारदे के साथ दहेज में दे दी गयी । यह कितनी घिनौनी और अमानवीय प्रथा है कि स्त्री-पुरुष भी दायजे (दहेज) में दे दिये जाते हैं ।''

नरवद को अविश्वास जनित क्रोध आ गया । वह चिल्लाकर बोला, ''क्या बक-बककर रहा है ?''

''मैं देवी मां की सौगंध खाकर कह रहा हूं कि आपके मन-मंदिर की पुजारिन तथा मंगेतर का विवाह हो चुका है ।''

नरवद खड़ा हो गया । उसने दीवार पर सज्जित दो तलवारों के बीच ढाल को देखकर कहा, ''मैं रुण ठिकाणे को धूल में मिला दूंगा । जिसने मेरी सुपियारदे को अपनी अर्धांगिनी

नरवद— एक रूपवान योद्धा जो रूण के ठाकुर सींहड़ा सांखला की बड़ी बेटी सुपियारदे पर आसक्त हो गये । सुपियारदे ने भी उसके प्रेम का प्रत्युत्तर दिया । दोनों का विवाह तय होकर भी नहीं हो सका । उसके पश्चात क्या हुआ ? एक मर्मस्पर्शी कथा

बनाया है, उसका मैं धड़ से सिर अलग कर दूंगा ।"

"कुंवर सा धीरज रखिए... लड़ाई से पहले बातचीत से पता कीजिए । आखिर क्या कारण है इसके पीछे ।"

"कोई भी कारण हो, पर यह मुझ पर अन्याय है ।"

चेतू खेला-खाया मिनख था । उसने शांत स्वर में कहा, "कुंवर सा, आप लड़ाई के पहले बातचीत से सच्चाई का पता चलाइए । फिर आप आजकल महाराणा के विश्वासी व खास सरदार हैं ।"

नरवद ने लंबा सांस लेकर पछतावे से कहा, "हां, यह तो एक समस्या ही है । पर चेतू मैं बिना सुपियारदे के निर्जीव-सा हो जाऊंगा ।"

"फिर आप राणाजी से निवेदन कीजिए ।"

'यही ठीक रहेगा । अवसर देखकर कहूंगा ।" और उसने हताशमन से निरभ्र-निलय की ओर देखा ।

नरवद को अपनी बात कहने का अवसर राणाजी को नहीं मिला । उसे बार-बार विवाह के लिए कहा जाता था और वह बार-बार टाल जाता था ।

उम्र बीती जा रही थी । अंत में इस बात का पता राणाजी को भी चल गया । उन्होंने भी सोचा कि वह विवाह क्यों नहीं कर रहा है । इतना विकट योद्धा विवाह नहीं करेगा तो उसका वंशज कौन होगा ? कौन होगा कायलाणा का उत्तराधिकारी ? आखिर उन्होंने नरवद को बुलाया ।

नरवद ने सिर झुका कर प्रणाम किया । आदरपूर्वक कहा, "बड़ो हुक्म ।"

"नरवद ! तुम हमारी संतान के बराबर हो, हमारा अनुराग तुम पर अपार है । हम यह जानना चाहते हैं कि तुम विवाह क्यों नहीं कर रहे हो ?"

नरवद ने सिर झुकाये हुए कहा, "राणाजी ! यूं ही, मन ही नहीं करता ।"

उसे देखते ही कुंभाजी बोले, "नरवद ! जो मुखमंडल सदा अंगारों जैसा दपदपाता है, अदम्य साहस और अटूट विश्वास को बताता है, वह पीड़ाओं से भरा-भरा लगता है । यदि तुम्हें मंडोर के खो जाने का दुःख है तो हम उसका भी तुम्हें अधीश्वर बना सकते हैं ।

"नहीं राणाजी, यह बात नहीं है ।"

"फिर बताओ तुम्हें हमारी सौगंध है कि वास्तविकता क्या है ?"

नरवद ने सुपियारदे और अपने बीच के संबंधों, उसके उपरांत हुए छल-कपट और वचन भंग की सारी कहानी बता दी ।

कूटनीतिज्ञ राणा कुंभा क्रोध में भर गये । उन्होंने कहा, "सींहड़ा सांखला की यह

मजाल ? हम उनको और उनकी सत्ता को नष्ट कर देंगे । उसे पश्चाताप करना होगा ।'' तुमने यह बात पहले क्यों नहीं बतायी ?

राणा कुभा ने तुरंत सींहड़ा सांखला को बुलाया । उसे धमकाते हुए कहा, ''आपने नरवद से अपनी बेटी का विवाह न करके अपने वचन को भंग करके क्षत्रिय मान-मर्यादा का उल्लंघन किया है । जानते हैं, इसका परिणाम ?''

''बड़ो हुक्म, मेरी मति मारी गयी थी । जैतारण के बीदावतों का दबाव तथा नरवद की गिरती हुई राजनीतिक साख और मंडोर के छिन जाने के कारण मेरा इरादा बदला । राणाज़ी ! मैं सच कहता हूं कि बाद में मैं खूब पछताया । मुझे मेरी गलती शूल-सी चुभती रही ।''

''लेकिन आपने तो यह कहकर पश्चाताप कर लिया, अपनी गलती को मान लिया पर नरवद-जैसे महान योद्धा का जीवन तो सूना कर दिया ।'...

''मैं अब और क्या प्रायश्चित करूं/ कैसे उनकी क्षतिपूर्ति करूं ? मेरी समझ में कुछ नहीं आता ।''

क्षणिक सन्नाटा पसर गया ।

अचानक सांखला ठाकुर इस तरह बोला जैसे कुछ याद हो आया हो । उसने कहा, ''राणाजी । आप चाहें तो मैं अपनी छोटी बेटी दुलारदे का विवाह नरवदजी से कर दूं ।''

राणा कुंभा ने कुछ सोचकर कहा, ''अच्छा, हमें यह स्वीकार है पर इससे पूर्व हम नरवद की इच्छा को जानना चाहेंगे ।... उभोदादार को कहिए कि वह नरवद को बुलाकर लाये ।''

थोड़ी देर में नरवद आ गया । उसने हाथ जोड़कर 'बड़ो हुक्म' कहा ।

''भई नरवद !'' कुंभा ने सहज स्वर में गहरी आत्मीयता से कहा, ''ठाकुर सांखला ने अपनी गलती को स्वीकार कर लिया है । प्रायश्चित के रूप में उसने अपनी छोटी बेटी का विवाह तुमसे करना निश्चय किया है ।'' नरवद कुछ बोले, इसके पहले कुंभा ने फिर कहा, ''और हमने इन्हें स्वीकृति भी दे दी है ।''

''क्या...'' अवाक रह गया नरवद ।

''क्या सोचने लगे नरवद ?'' कुंभा ने उसकी विचारधारा को भंग किया । ''हमारा निर्णय तुम्हें मान्य नहीं है ।''

नरवद ने दीवार पर टंगी बाघ की खाल पर दृष्टि जमाकर फिर सोचा और कहा, ''एक शर्त पर ।''

''क्या ?''

''जब मैं बींद बनकर सांखला के गढ़ के तोरण द्वार पर पहुंचूंगा तो मेरी आरती इनकी बड़ी बेटी सुपियारदे ही उतारेगी ।''

''यह तो हमारे यहां की रीति है । इसमें भला किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ? क्यों ठाकुर सा ?'' कुंभा बोले ।

''हां... हां... इसमें हमें क्या आपत्ति हो सकती है ।''

''फिर जाइए विवाह की तैयारियां कीजिए । दारूड़ी (शराब) और मारूड़ी (पिलाने वाली) की जोरदार व्यवस्थाएं कीजिए ।''

''हुक्म... हुक्म... राणाजी हुक्म !''

□ □ □

सारा वातावरण मानो लहूलुहान लग रहा था । आक्रोश, क्रोध, अपशब्द की लपटें

भड़क रही थीं । सुपियारदे का पति नरसिंह बीदावत मानो विरोध का अग्निपुंज बना हुआ था । उसने चीखकर कहा, "यदि तुमने नरवद की आरती उतारी तो मैं तुम्हें विवाह में जाने की आज्ञा ही नही दूंगा । पीहर भेजूंगा ही नहीं । मुझे सब मालूम है कि तुम उससे प्रेम करती हो, तुमने उसे मन से अपना पति भी मान रखा है, पर अब तुम मेरी ब्याहता हो, मैं यह आरती तुम्हें नहीं उतारने दूंगा ।"

"अच्छा आरती नहीं उतारूंगी ।

"वचन दो कि तुम आरती नहीं उतारोगी ?"

"वचन देती हूं ।"

बेदावत नरसिंह ने उसे अपनी छोटी बहन के विवाह में सम्मिलित होने पीहर जाने की आज्ञा दे दी ।

दुलारदे तेल चढ़ गयी । पनड़ी सुपियारदे को लंबे समय तक समझाती रही कि वह नरवद की आरती न उतारे । पर उसने दृढ़ स्वर में कहा, "मैं उनकी आरती उतारूंगी और अवश्य उतारूंगी । नरवदजी से मेरा प्रथम पावन प्रणय है जो दुर्भाग्य से परिणय में परिवर्तित नहीं हो पाया । ओह ! उनकी आरती-वंदन करने के लिए मेरा मन तड़प रहा है । पनड़ी ! तुम नहीं समझती मेरे अंतस के अथाह दुःख को ?"

सुपियारदे को उसकी मां और कई दूसरी समझदार स्त्रियों ने समझाया, पर वह नहीं मानी ।

सुपियारदे ने नरवद की आरती उतारी । अत्यंत ही अपनत्व से उतारी । आरती उतारते-उतारते सुपियारदे के नयन भर आये । अस्फुट स्वर में बोली, "मेरा मुजरा कबूल कीजिए कुंवर सा ।"

राणा कुंभा के लिए नरवद की निरंतर लड़ाइयां लड़ते-लड़ते एक आंख चली गयी थी । उसने उस आंख को बंद करके संकेत किया कि उसे उसका मुजरा कबूल है ।

नरवद को डेरे के भीतर ले जाया गया । उसका विवाह दुलारदे से हो गया ।

□ □ □

"तुमने मेरे लाख मना करने के बाद भी उस काने की आरती क्यों उतारी ?" भयंकर घृणा थी नरसिंह बीदावत के स्वर में ।

"हां उतारी ।" सुपियारदे दृढ़ता से बोली ।

"मालजादी कहीं की ।" नरसिंह ने उसके गाल पर चांटा मारा । फिर तो पीटने का सिलसिला रात-दिन चल पड़ा ।

पनड़ी ने किसी भी तरह इन अमानवीय अत्याचारों के कच्चे चिट्ठे की जानकारी चेतू के माध्यम से नरवद तक पहुंचा दी । नरवद का खून खौल उठा । उसने निश्चय कर लिया कि वह सुपियारदे को उस बर्बर कैदखाने से मुक्त कराएगा ।

उस रात नरवद ने दुलारदे को दुःखी मन से सुपरियारदे पर हो रहे अत्याचारों की कथा बता दी और पूछा, "उसकी मुक्ति के लिए तुम्हारी क्या राय है । तुम्हारी बहन की हत्या हो या आत्महत्या, उसके जन्म की समाप्ति ही होगी । हम जब मानवीयता और संवेदनशीलता से पृथक होते हैं तो अमानुष हो जाते हैं । तब हमें नैतिक मूल्यों, परंपराओं, रीति-रिवाजों और संस्कारों का उल्लंघन कर ही लेना चाहिए ।

दुलारदे ने कहा, "देवी मां आपको सफल करें ।"

नरवद अपने विशेष साथियों को लेकर जैतारण की ओर चल पड़ा ।

□ □ □

रात के अंधेरे का लाभ उठाकर सुपियारदे किले की दीवार से रस्सी की सीढ़ी के सहारे उतर गयी । उसने रस्सी की बीच-बीच में गांठें लगा ली ताकि उतरने में सरलता रहे । नरवद अपना तीव्रगामी अश्व लिये खड़ा ही था, उसने सुपिरयादे को उस पर बिठाया और वह नौ-दो ग्यारह हो गया ।

सन्नाटे में केवल अश्व की टापें ही सुनायी पड़ रही थीं ।

मेवाड़ में इस अकल्पनीय घटना से रोष की लहर फैल गयी । सारे सामंत, उमराव, सरदार और प्रतिष्ठित नागरिकों ने इसके विरुद्ध राणा कुंभा को शिकायत की ।

कुंभा ने पूछा, "आप अपनी इच्छा से नरवद के साथ आयी या आपका अपहरण किया गया ।"

सुपियारदे ने घूंघट निकाल रखा था । उसने बांदी से कहा, "मैं अपनी इच्छा से आयी हूं । मुझ पर जो-जो अमानुषिक, घिनौने व विकृत अत्याचार हुए हैं, वे सोच के बाहर हैं । मेरी मुक्ति समस्त शोषित स्त्रियों की मुक्ति है, मनुष्यता की मुक्ति है ।"

कुंभा के सिर का बोझ उतर गया । वे महान कूटनीतिज्ञ थे उन्होंने कई सामंतों व उमरावों की इच्छाओं के विरुद्ध में अपना निर्णय सुना दिया— सुपियारदे पर हुए अन्याय-अत्याचारों को जानकर मुझे लगा कि नरसिंह को मृत्यु दंड देना चाहिए ।

और कुंभा दरबार से चले गये । सारी उपस्थिति में सन्नाटा पसर गया । नरवद प्रसन्नता से घिर गया । उसने कुंभा की जय-जयकार की ।

सुपियारदे और नरवद जीवनभर आनंदपूर्वक रहे ।

— आशा लक्ष्मी, नया शहर,
बीकानेर-३३४००४

तपकर जो स्वर्ण बने

● अनंतराम गौड़

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी के ऐसे शीर्षस्थ साहित्यकारों में हैं, जिन्होंने अपनी प्रकांड प्रतिभा से हिंदी वांग्मय के एक विराट युग को प्रकाशित-प्रभावित किया है । वे आधुनिक काल के ऐसे मनीषी थे, जिन्होंने संस्कृत एवं हिंदी साहित्य का गहन अध्ययन एवं अनुशीलन किया और साहित्य को अपनी रचनाओं से संपन्न किया । वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । बीसवीं शताब्दी के इस भारतीय मनीषी ने यह प्रतिभा, यह पांडित्य, यह वैदुष्य क्या सहज ही प्राप्त कर लिया था ?

उनका प्रारंभिक ज़ीवन कंटकाकीर्ण तथा आर्थिक विपन्नता के कारण कष्टमय रहा । उन सबसे संघर्ष करके उन्होंने अपना मार्ग स्वयं कैसे बनाया, इसकी कहानी उनके एक बड़े भाई श्री विश्वनाथ द्विवेदी ने इस प्रकार बतायी है, 'हमारी आर्थिक स्थिति साधारण थी । कृषि ही अपना आधार था, श्री बांके द्विवेदी, जिन्हें हम पंडितजी कहा करते थे, हमारे लिए पुस्तकादि का प्रबंध कर दिया करते थे । हम दोनों का नाम उनकी ही प्रेरणा से रेपुरा में लिखा गया,... यहां की शिक्षा इसके आगे नहीं थी तथा मिडिल स्कूल के लिए पंडितजी ने ही वसरिकापुर में हमारा नाम लिखाया । यह हमारे घर से दो-तीन फर्लांग दूर था । सबेरे जाते, दोपहर की छुट्टी में घर खाना खाने दौड़ते हुए आते और फिर दौड़ते वापस जाते ।'

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने अपने संस्मरण में लिखा है, 'उन्होंने मुझे बताया था कि आरत दुबे के छपरा (अपने गांव) से विद्याध्ययन हेतु काशी के लिए प्रस्थान करते समय वे अपने खर्च के लिए एक रुमाल में कौड़ियां बांधकर लाये थे ।'

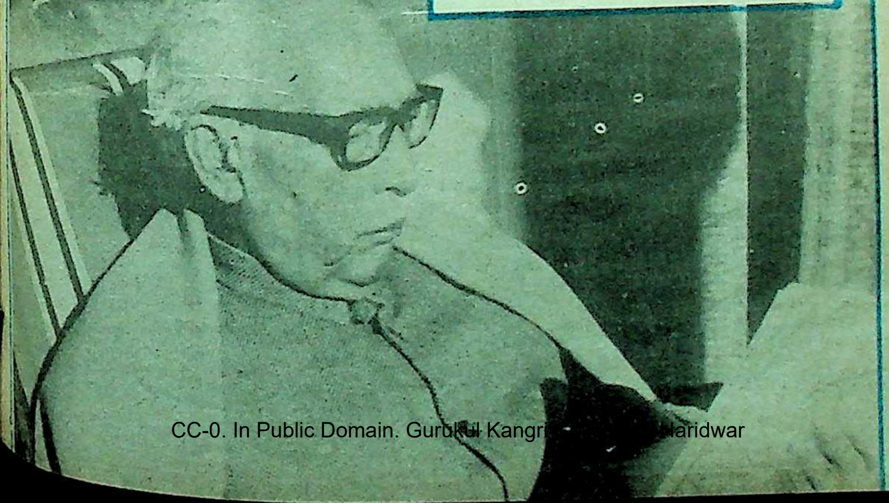

वह क्या पढ़ना चाहते थे और किस विषय को उन्होंने अपने अध्ययन का केंद्र बनाया था, लेकिन आर्थिक विपन्नता के कारण वे कहां पहुंच गये, इसका हाल उन्होंने पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी को १९ सितंबर, सन १९४५ में शांति निकेतन से लिखे अपने पत्र में बताया था कि, 'मेरी आर्थिक स्थिति पहले से अच्छी है । बच्चों का स्वास्थ्य ठीक है । यद्यपि, सबसे छोटे दो बच्चों को ही थोड़ा-थोड़ा दूध मिल पाता है ।... पिछले आठ महीनों से मैं हिंदी भवन का डायरेक्टर हूं और इसलिए मेरी तनख्वाह सौ की जगह दो सौ रुपये हो गयी है । पुराना कुछ उधार और ऋण है । उसको चुका रहा हूं । पिछले आठ महीनों से ऋण लेने का मौका नहीं आया है ।'

अपने विद्यार्थी जीवन में उन्होंने क्या-क्या कष्ट भोगे और कैसे-कैसे संघर्ष किये । इस संबंध में भी उन्होंने अपना मन इसी पत्र में पंडित बनारसीदासजी के आगे खोला है— आप लिखते हैं, 'प्रिंसिपल ध्रुववाली घटना मैं आपको सुना देता हूं । परंतु, इसे अभी छापिए नहीं । ध्रुवजी अब स्वर्गीय हो गये हैं और मेरे साथ जो घटना हो गयी, वह शायद आकस्मिक ही थी, स्वभाव से वे दयालु ही थे । बात यों हुई, मैं संस्कृत कॉलेज में पढ़ता था । इतना आप ध्यान रखें कि हिंदू विश्वविद्यालय का संस्कृत कॉलेज न होता, तो मैं शायद कुछ भी पढ़ नहीं सकता था । मैंने इधर-उधर से सीखकर थोड़ी अंगरेजी पढ़ी और एडमिशन की परीक्षा में बैठा । प्रथम श्रेणी में पास हो गया । हिंदू विश्वविद्यालय के सेंट्रल हिंदू कॉलेज में मैं बड़े उत्साह से इंटरमीडिएट में पढ़ने गया । मेरे घर की आर्थिक अवस्था की बात न कहना ह ठीक है । मुझे याद आता है कि पिताजी ने बड़ कठिनाई के बाद गांव के एक व्यक्ति से चाल रुपये उधार लिये थे । यह मेरी इंटरमीडिएट भर्ती करायी की प्रथम बलि थी । मैं इसके ब केवल क्लास में बैठता और फीस नहीं देता था । हिंदू विश्वविद्यालय में उन दिनों बहुत-से गरीब छात्र थे, जो जबरदस्ती क्लास में बैठा करते थे । साल के अंत में ध्रुवजी और मालवीयजी की कृपा से उनका उद्धार हो जात था । मैं भी उसी श्रेणी में था । कई बार चेतावनी मिली, पर मेरे पास एक कौड़ी नहीं थी । संस्कृत कॉलेज में पंद्रह रुपये वृत्ति मिल थी (विशेष योग्यता के कारण बिरला स्कॉलरशिप मिलती थी— विश्वनाथ द्विवेदी, बड़े भाई के संस्मरण से), और पांच रुपये क ट्यूशन करता था । कुछ खाता था, कुछ बचाकर घर भेज देता था । घर की अवस्था बड़ी दयनीय थी, आज भी याद करता हूं तो रों खड़े हो जाते हैं । साल के अंत में मेरा नाम कट गया । मैंने सुना था कि ध्रुवजी के पास जाने से सब ठीक हो जाता है । मैं डरते-डरते प्रिंसिप ध्रुवजी के कमरे में गया । वे कुछ झल्लाये हु बैठे थे, शायद, मेरे-जैसे और भी लक्ष्मी ल पुत्र उनकी सेवा में हाजिर हो चुके थे । मैंने अपनी कहानी सुनायी । बीच में ही झल्लाकर बोल उठे, 'जाओ, मैं नहीं सुनना चाहता । युनिवर्सिटी गरीबों के लिए नहीं है । जाओ ईं ढोओ ।' मेरा अनुमान है कि वे किसी कारण गुस्से में थे । नहीं तो उनका स्वभाव दयालु थ परंतु मुझे तो जैसे बाण लग गया । मैंने आधी बात जहां की तहां छोड़ दी और उठकर प्रण

करके तुरंत लौट आया । वे दरवाजे तक मुझे जाते देखते रहे । संभवतः मुझे पागल समझा । मैं अपने संस्कृत कॉलेज के होस्टल में, जिसे विश्वविद्यालय के धनी-साथी विद्यार्थी 'अस्तबल' कहा करते थे लौट आया और खूब रोया । मेरी पढ़ाई वहीं रुक गयी । मेरे एक अध्यापक ने कहा कि चलो मैं तुम्हें फिर से ध्रुवजी के पास ले चलता हूं । गरज पड़ती है तो सौ बार जाना होता है, पर मेरी रीढ़ टूट चुकी थी, मैं नहीं गया । मालवीयजी के पास जाने की भी हिम्मत नहीं हुई । बाद में मैंने केवल अंगरेजी लेकर परीक्षा दी । संस्कृत की शास्त्री परीक्षा पास विद्यार्थी केवल अंगरेजी लेकर बी.ए. तक की परीक्षा दे सकते थे । वह भी एक मजेदार कहानी है । परीक्षा में फीस बहुत कम लगती थी, पर उतना दे सकने लायक पैसा भी मेरे पास नहीं था । मेरे पास ओढ़ने के लिए कपड़े भी नहीं थे । मुझे किसी से मांगने की कला भी नहीं आती थी । सो मैंने बगल में पोथी दबायी और कथा बांचने चल पड़ा । मेरे एक मित्र थे । श्री सीताराम द्विवेदी । वे अगस्त आंदोलन में गिरफ्तार हुए और जेल में ही स्वर्ग सिधार गये । उन्होंने कोआथ (आरा) में मेरी कथा बैठा दी । वे खुद आर्य समाजी थे, पर मेरी सहायता के लिए उन्होंने इस बात की परवा नहीं की । कथा सात दिन तक हुई । और आठवें दिन चढ़ावा चढ़ा । ३५ रुपये, एक रजाई, कुछ साड़ियां, कुछ कपड़े, कुछ धोतियां और प्रचुर अन्न मुझे मिला । रजाई कोआथ के हकीम बंधुओं ने दी थी । मेरे जीवन में इससे बड़ी सहायता न कभी मिली और न मिलेगी । आप आसानी से समझ सकते हैं कि साड़ियों और धोतियों का मेरे घर में कैसा स्वागत हुआ होगा । ३५ रुपये तो मेरे लिए बहुत बड़ी सिद्धि थी । सो मैं इंटरमीडिएट की नदी पार कर गया ।'

आचार्य द्विवेदी अपने पुत्रों को समझाया करते थे, 'कोई बात नहीं, कष्ट होता है तो सहो । सोना तपकर ही कंचन बनता है ।'

दरअसल, वह स्वयं खूब तपे और तप कर स्वर्ण बने और स्वर्ण से अधिक मूल्यवान— सुगंध युक्त स्वर्ण, जो अपनी सुगंध को चहुंओर फैला गये ।

— बी-२, सी जनकपुरी नयी दिल्ली

अधिक कैल्शियम से फ्रैक्चर की संभावना कम

अभी किये गये एक शोध में यह पाया गया है कि एक गिलास से अधिक दूध का सेवन करने पर शरीर को अतिरिक्त कैल्शियम की आपूर्ति होती है, जिससे फ्रैक्चर या "ऑस्टियोपरोसिस" जैसे रोग के होने की संभावना भी कम हो जाती है ।

—श्याम मनोहर व्यास

कहानी

सरहदों के पीछे

● सुरेशचन्द्र शुक्ल

वह चार दिन की लंबी यात्रा करके आयी है। पहले नाव से फिर बस से यात्रा, वह भी उन हजारों शरणार्थियों की तरह है, जो प्रतिदिन अपने घर-द्वार और देश को छोड़कर न जाने कहां-कहां भटकते हैं। न भरपेट भोजन, न चैन की नींद, न सुख, न शांति बस अपनी जान बचाकर भाग खड़े हुए हैं।

वह शरणार्थी शिविर में आ गयी है। उसके पिता सेना में उन लोगों में से थे जिन्होंने प्रजातंत्र के लिए कूप (विद्रोह) किया था। कूप सफल न हुआ और वह मारे गये। उसकी मां अपना घर-बार नहीं छोड़ना चाहती थी। उसने चाहा था कि उसकी मां भी अपना देश छोड़कर उसके साथ चली जाए पर उसकी मां ने कहा था, ''मैं घर नहीं छोड़ सकती। घर छोड़कर हिम्मत हारकर कुछ नहीं होगा। संघर्ष में बदलाव आएगा।'' मां ने उसे आते समय बहुत रोका था और कहा था, ''निकीटा मत जा, अपना देश छोड़कर।''

निकीटा के मस्तिष्क में धीरे-धीरे घर छूटने की घटनाएं चलचित्र की भांति घूमती जा रही थीं। वह जमीन पर बैठी, अपना मुख अपने दोनों घुटनों के बीच छिपाये थी। वह समझ गयी थी कि आदमी अपने आप से नहीं छिप सकता, दूसरों से भले ही छिपता फिरे। प्रजातंत्र के लिए तानाशाही शासन एवं प्रजातंत्र के लिए विरोधी दलों द्वारा लड़ा जा रहा युद्ध उसके देश में चल रहा है।

निकीटा को शरणार्थी शिविर में आये पांच सप्ताह बीत चुके थे। घर से भी कोई समाचार नहीं मिला। वह दूर शिविर द्वार की ओर नजर बिछाये थी।

''हाय निकीटा''

''हाय, जान एरिक'' कहते हुए दौड़ती निकीटा आयी। जान एरिक के कंधों पर बाहें डालकर उसे चूमने लगी। एरिक ने भी निकीटा को बाहों का सहारा दिया।

कितना आकर्षण है यौवन में। निकीटा एक १७ वर्ष की युवती, हिरन-जैसी आंखें, सुडौल गठा शरीर, काले बाल, थोड़ा लंबा चेहरा, स्कर्ट एवं बनियान पहने बहुत आकर्षक लग रही थी। जो भी इस युगल जोड़ी को आलिंगनबद्ध देखता वह देखते ही रह जाता। किसी युवती को उसके प्रेमी के बिछुड़ने का गम है तो वह इन्हें देखकर क्षण-भर संतोष कर लेती। बुजुर्ग शरणार्थियों को अपने बिछुड़े हुए बच्चे याद आते हैं।

एरिक के शरणार्थी शिविर में आते ही निकीटा का चेहरा खिल जाता, एक नयी आशा की चमक झलकने लगती। जब से वह इस नये देश के शिविर में आयी है। हर व्यक्ति उसे अपनी गिरफ़्त में लेने को उत्सुक रहता। कितने

लोगों ने उसे आश्वासन दियां, प्रेम का नाटक किया पर दो-चार दिनों में ही किनारे हो जाता ।

पर जान एरिक सबसे अलग था । जब से निकीटा का संपर्क एरिक से हुआ है, निकीटा किसी दूसरे आदमी की तरफ नजर उठाकर नहीं देखती । एरिक रेडक्रास की ओर से शिविर में सहायतार्थ आता था । एरिक को निकीटा पर दया आती थी । शिविर में निकीटा के भले ही अपने देशवासी थे परंतु वह किस पर विश्वास करे ? इस प्रश्न का उत्तर उसे मिल चुका था । उसकी ओर प्रायः वे युवक आकर्षित होते जो चार दिन की मित्रता में ही विश्वास करते थे । एरिक में निकीटा को सुरक्षा महसूस होती ।

निकीटा कहती, "मुझे तुम्हारी नीली आंखें और रेशम की तरह सुनहरे बाल बहुत सुंदर लगते हैं ।"

एरिक जवाब देता, "मुझे तुम्हारा गेहुंआ रंग, नशीली भूरी आंखें और भरे-भरे गाल सम्मोहित करते हैं ।"

एरिक प्रतिदिन शिविर में आता और अपना कार्य करके चला जाता । वह निकीटा का आकर्षण एवं निमंत्रण ठुकरा न पाता । कुछ समय निकीटा के साथ जरूर व्यतीत करता । सुंदर एवं युवा लड़की किसको सम्मोहित नहीं करती ?

जान एरिक के वापस लौटते निकीटा उदास हो जाती । वह अपने को पिंजड़े में बंद पक्षी की भांति निरीह एवं असहाय पाती । वह चाहकर भी उड़ नहीं सकती थी । पासपोर्ट एवं वीजा के बिना व्यक्ति परकटे पक्षी की भांति होता है । चाहकर भी वहां से भाग नहीं सकता ।

उसने खिड़की की ओर देखा । खिड़की से

सूरज की किरणें आ रही थीं । कितनी प्यारी लगती हैं, ये प्रकाश की किरणें । सोचती एरिक ही उसे इस शिविर से मुक्त कराएगा ? स्वच्छंद, स्वतंत्र जीवन किसे रास नहीं आता । वह विचारों में लीन थी । इतनी कम आयु में कितने अनुभव किये हैं, निकीटा ने । शरणार्थी शिविर में एक बड़ा हॉल है । उसका ध्यान शिविर के सामने कोने पर से आ रही गिटार पर बज रही ध्वनि एवं गीत की तरफ गया । कुछ लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़े, एक युवक एवं युवती के चारों ओर घूम रहे थे । लड़की को गोद में लिए लड़का नाच रहा था । निकीटा को समझते देर न लगी कि यह सगाई की रस्म है जो पूरी हो रही है ।

> **कितना आकर्षण है यौवन में । निकीटा एक १७ वर्ष की युवती, हिरन-जैसी आंखें, सुडौल गठा शरीर, काले बाल, थोड़ा लंबा चेहरा, स्कर्ट एवं बनियान पहने बहुत आकर्षक लग रही थी । जो भी इस युगल जोड़ी को आलिंगनबद्ध देखता वह देखते ही रह जाता ।**

इस दृश्य ने निकीटा के दुखते घाव पर हाथ रख दिया । वह सिहर उठी । कितना नाच नचाता है विधाता । उसे धीरे-धीरे सभी कुछ याद आ रहा है । एक वर्ष पहले की ही बात है, उसकी सगाई हुई थी । उसके माता-पिता ने सगाई के शुभ अवसर पर एक छोटा-सा उत्सव किया था, उस दिन उसे भी शराब पीने को मिली थी । कितना सुंदर और प्यारा था उसका मंगेतर । सेना में हेड-कांस्टेबल था । उसके पिता के साथ ही कार्यरत था । कितने स्वर्णिम-आनंदभरे दिन उसने अपने मंगेतर के साथ व्यतीत किये थे ।

एक दिन उसके पूरे परिवार पर कहर ढा गया, जब उसके पिता को विद्रोह करने के अपराध में सैनिक अदालत ने गोली मारकर मृत्यु की सजा दे दी । उस समय निकीटा का मंगेतर भी उपस्थित था, जो मृत शरीर लेकर घर आया था । निकीटा के पांवों तले जमीन खिसक गयी थी । वह स्तब्ध खड़ी रह गयी थी । तब उसके मंगेतर ने आकर कंधे का सहारा दिया था । क्या बीता था निकीटा पर उस समय । क्या बीता होगा उसके मंगेतर पर, जब उसके होनेवाले ससुर को मृत्युदंड उसके सामने दिया गया ।

उस दिन निकीटा से सब-कुछ छिन गया था । पिता, सुख, शांति और मंगेतर । कितनी बेबस होती हैं व्यक्ति की मजबूरियां और मजबूरियों से बंधा आदमी । पिता के अंतिम संस्कार के दिन निकीटा ने एक अजीब भयानक सपना देखा, कि उसका विवाह उसके मंगेतर के साथ होने जा रहा है । तभी सैनिक उसके मंगेतर को पकड़कर ले जाते हैं । नगर में कर्फ्यू लगा है । सेना की बख्तरबंद गाड़ियां एवं टैंक दौड़ रहे हैं । उसके पिता निकीटा से कह रहे हैं मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा । वह चिल्लाती है— बचाओ-बचाओ ।

उसकी मां उसे जगाती है ! निकीटा पसीने से सराबोर थी । धड़कनें तेज चल रही थीं, रेलगाड़ी की तरह । सुबह हो गयी थी ।

"नगर में कर्फ्यू लगा है । कोई घर से बाहर नहीं निकलेगा । जब तक कर्फ्यू में ढील दिये जाने की घोषणा न हो ।" सैनिकगाड़ी स्पीकर, से ऐलान कर रही हैं । निकीटा और उसकी मां खिड़की के परदे की आड़ में घर के बाहर झांकती हैं । चारों तरफ सेना की गतिविधियों का शोर एवं जोर है । निकीटा अपनी मां से लिपटकर रोती है, "मां मैं अब और यहां नहीं रह सकती । मेरा दम घुटता है ।"

"हिम्मत रखो मेरी बेटी"—उसकी मां धीरज दिलाती है ।

दोपहर में घोषणा होती है कि कर्फ्यू में दो घंटे के लिए ढील दी जा रही है । रेडक्रास की गाड़ियां, खाना और पानी बांट रही हैं । तभी संयुक्त राष्ट्र का झंडा फहराते हुए एक गाड़ी निकलती है । लोग कानाफूसी कर रहे हैं कि दूसरे देश में जिन्हें शरण लेनी है वे चुपके से उस गाड़ी में भागकर जा रहे हैं । निकीटा ने अपना पासपोर्ट लिया और मां से कहकर चली गयी । मां ने बहुत समझाया था परंतु वह नहीं मानी और रेडक्रास की गाड़ी में जाकर बैठ गयी । उसे ज्ञात नहीं था कि वह किस ओर जाएगी । एक आशा थी उसके मन में । प्रतीक्षा नहीं कर सकती थी वह । इसीलिए अकेले ही दुनिया का सामना करने निकल पड़ी ।

"निकीटा ! निकीटा", शिविर के एक व्यक्ति ने उसे हिलाया । वह अतीत की स्मृतियों में खो गयी थी । "आओ चलें, देखो ! सगाई की पार्टी है", उसकी हमवतन एक लड़की ने कहा । निकीटा भी सगाई की पार्टी में सम्मिलित हो गयी ।

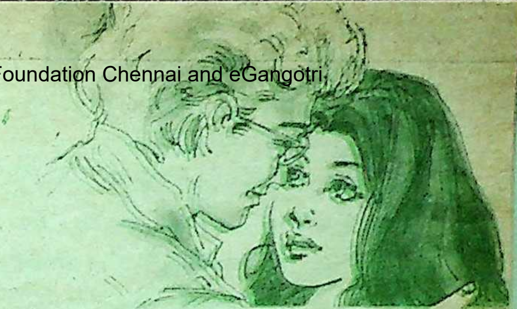

दूसरे दिन जब निकीटा सोकर उठी तो उसने देखा, शिविर में बहुत हलचल है । लोग बोरिया-बिस्तर बांध रहे हैं । तभी उसने शिविर के सूचना-पट पर देखा और सूचना पढ़कर उसका माथा ठनका । उसे लगा कि उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया है । निकीटा को उस लड़की ने सहारा दिया ।

तभी लाउडस्पीकर से घोषणा होती है कि इस देश ने, जहां शिविर लगा है, उसने अपने कोटे से अधिक लोगों को शरण दी है । अतः इस शिविर के सभी शरणार्थियों को दूसरे देश के शरणार्थी शिविर में जाना है । एक घंटे में पहला ट्रिप लेकर बस जाएगी ।

धीरे-धीरे सभी शरणार्थी बसों पर सवार होकर जाने की तैयारी में हैं । निकीटा बस के बाहर किसी की प्रतीक्षा में है । शायद एरिक आ जाए और एक देश से दूसरे देश, एक शिविर से दूसरे शिविर में भटकना न पड़े । लेकिन एरिक नहीं आया । उसकी आंखों से आंसू टपकने लगे । पुलिस का एक सिपाही निकीटा को बस में जाने को कहता है । वह बस में आ जाती है, बस चल पड़ती है, अनजान डगर की ओर, इस देश की सीमा के पार... ।

BEVERVEICAN-19-L-31
0596 OSLO—5 (Norway)

उसने अपने भाई की गरदन कटवा दी !

● शैलेन्द्र सिंह

दाराशिकोह, शाहजहां का सबसे बड़ा पुत्र था । उसका जन्म सन १६१५ में हुआ था । इसलिए शाहजहां चाहते थे कि उनके बाद दाराशिकोह को ही राज सिंहासन का भार सौंप दिया जाए । लेकिन शाहजहां के अन्य पुत्रों को यह बात स्वीकार नहीं थी । शाहजहां का सबसे छोटा पुत्र औरंगजेब अलमगीर चाहता था कि उसे ही राजगद्दी मिले । यही कारण है कि शाहजहां के चारों पुत्रों में अलमगीर दाराशिकोह के खून का सबसे अधिक प्यासा था ।

जहां एक तरफ दाराशिकोह शांत, सौम्य और अध्ययनशील प्रवृत्ति का था, वहीं अलमगीर उसके ठीक विपरीत । अलमगीर हमेशा इस अवसर की तलाश में रहता था जिसमें वह दाराशिकोह को मौत के घाट उतार सके । लेकिन दाराशिकोह अलमगीर की इस बात से हमेशा अनभिज्ञ बना रहता था । ऐसा भी नहीं था कि दारा को इस बात का पता नहीं था, किंतु वह अपने अध्ययन और अन्य धार्मिक कार्यों में इतना संलग्न था कि उसे इस बात की कदापि चिंता नहीं थी कि कौन उसके विरुद्ध क्या षड्यंत्र रच रहा है ।

दो सागरों का मिलन

सन १६५५ का वर्ष दाराशिकोह के जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण वर्ष है । इस वर्ष दारा की विवादित पुस्तक 'मज़मए— बहरिन' (दो सागरों का मिलन) का प्रकाशन हुआ । इस पुस्तक में दारा ने हिंदू ब्रह्म-विद्या और सूफी पंथ के रहस्यों को उद्धृत किया है । सूफियों के प्रति दारा के मन में इतनी श्रद्धा कहां से उत्पन्न हुई, वैसे तो यह विवाद का विषय है, परंतु इतिहास बताता है कि शाहजहां स्वयं भी सूफीवाद के प्रति आकर्षित थे । सूफियों के कादरिया पंथ के सदस्य थे मुल्ला—शाह बदख्शी । उनके पूर्वाधिकारी का नाम मियां मीर था जिससे मिलने शाहजहां अकसर लाहौर जाया करते थे । एक बार नहीं बल्कि कई बार शाहजहां ने मियां मीर से अपनी राजधानी आगरा या नवनिर्मित राजधानी शाहजहानाबाद में स्थायी निवास करने के लिए आग्रह भी किया । पर, मियां मीर शाहजहां से दूर रहना ही उचित समझते थे । संभवतः वे बादशाह से दूर इसलिए रहना चाहते थे कि सूफी पंथ पर किसी राजनयिक छाया का प्रभाव न पड़े । मियां मीर चाहते थे कि सूफी पंथ मुगल साम्राज्य में अधिक-से -अधिक धार्मिक लोकप्रियता के साथ कायम रहे । लेकिन, हुआ ठीक इसके विपरीत । मुगल साम्राज्य में, यदि देखा जाए तो

सबसे अधिक फायदा चिश्तियों को पहुंचा । इसका कारण था बादशाह अकबर द्वारा अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन गरीब नवाज और फतेहपुर सीकरी के शेख सलीम में पूर्ण आस्था का प्रकटीकरण । शेख सलीम के परिजनों को तो अकबर ने अपने राज्य में कई उच्च पदों पर भी आसीन किया । वैसे तो धर्मों के प्रति अकबर का दृष्टिकोण भी इतिहास में सराहनीय स्थान पाता है । पर, मुगल वंश में दाराशिकोह एकमात्र ऐसा व्यक्ति हुआ जिसने न सिर्फ धर्मों की गहराई तक जाने का काम किया, बल्कि उसने अपने जीवन में जो कुछ भी अनुभव किया, उन्हें भी संसद के सामने अपनी लेखनी के माध्यम से परोस दिया ।

दाराशिकोह और उसकी बहन राजकुमारी जहांआरा ने स्वेच्छा से सूफी पंथ को स्वीकार किया था । सन १६३१ में मुमताज महल की मृत्यु के बाद दाराशिकोह एक तरह से शाहजहां का दाहिना अंग बन गया था । सिर्फ कहने भर के लिए वह राजा नहीं था । लेकिन राज्य का सारा काम वह देख रहा था । सन १९३९ में शाहजहां ने अपनी राजधानी में परिवर्तन की इच्छा प्रकट की । प्रस्ताव यह रखा गया कि नयी राजधानी शाहजहानाबाद में होगी और राजधानी का राजमहल १०९ एकड़ भूमि में भव्यता के साथ निर्मित कराया जाएगा । संभवतः यह वह दौर था जब राजकुमार दाराशिकोह की अंतरात्मा में अध्यात्म के लिए प्यास जाग उठी थी । हालांकि उस समय तक वह एक कुशल योद्धा, निपुण राजा और साहसिक व्यक्तित्व का स्वामी बन चुका था । इतना ही नहीं सन १६४२ में दाराशिकोह को लोग एक कुशल चित्रकार की तरह भी जानने लगे । उसने अपनी पत्नी नादिरा बेगम को शादी के दस साल बाद अपने चित्रों का संकलन भेंट किया था । सन १६४० के दशक तक दारा के पास वे सभी वस्तुएं विद्यमान थीं जो जीवन के लिए आवश्यक मानी जाती हैं । सन १६४० तक दारा दो बच्चों-सुलेमान शिकोह और सिफर शिकोह का पिता भी बन चुका था । ऐसी अवस्था में दारा का रुझान अध्यात्म की तरफ हुआ । यह निश्चित ही आश्चर्यजनक है । पर विडंबना भी तो इसे ही कहते हैं ।

सूफी धर्म क्यों अपनाया !

मौर्य वंश के शासक सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया तो उसके पीछे तात्कालिक कारण थे । कलिंग के युद्ध में हजारों निर्दोष व्यक्तियों को उन्होंने हताहत होते देखा था । इसलिए यदि वे द्रवीभूत हो गये तो इसमें बहुत आश्चर्य की बात नहीं । किंतु दाराशिकोह के साथ तो ऐसी कोई घटना नहीं घटी । अलबत्ता उसके व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि बताती है कि वह एक बेचैन व्यक्ति था । कहा जा सकता है कि वह आदतन बेचैन था । हर पल कुछ नये की तलाश । हर पल यह अहसास कि कहीं कुछ खो रहा है । कुछ है जो भीतर से बाहर आना चाहता है । और यह सब-कुछ, यह खोजबीन, स्वयं की तलाश राजा रहते हुए करना कठिन था। अध्यात्म ही था जहां दारा को पल दो पल का चैन नसीब होता था ।

वह वेदांत का अध्येता था

अध्यात्म में उतरा तो वह सूफीवादी कादरिया पंथ के माध्यम से लेकिन उसकी बेचैनी उसे सिर्फ कादरिया पंथ की सीमाओं तक

> *उस रात राजमहल के पहरेदारों ने अलमगीर द्वारा भेजे गये हत्यारों को चुपके से महल में प्रवेश करने दिया । जब पहरेदार दारा के कक्ष में पहुंचे तो उन्होंने देखा कि दारा आत्म-हत्या का प्रयास कर रहा है । लेकिन, हत्यारों ने उसे ऐसा नहीं करने दिया । बाद में हत्यारों द्वारा उसकी गरदन काटकर औरंगजेब के सामने पेश की गयी ताकि वह समझ सके कि जो सजाये-मौत उसने दारा के लिए तय की थी, उसका पालन कर दिया गया है ।*

सीमित नहीं रख सकीं । उसने वेदांत का अध्ययन किया, ईसाइयत की गूढ़ता को परखा, अधिकांश धर्मों के महात्माओं की जीवन-यात्रा के विषय में शोध किया । फिर सन १६४० में जब उसने पहली बार लिखने के लिए कलम उठायी तो सबसे पहले संत-महात्माओं पर लिखना प्रारंभ किया । उसने अनेक महापुरुषों पर पुस्तकें लिखीं । इनमें चंद नाम, कबीर पंथ के बाबा लालदास वैरागी, शाह दिलरुबा, शाह मुहिब्बला, शेख सरमद सूफी तथा दार्शनिक कवि जगन्नाथ मिश्रा उल्लेखनीय है ।

सफीनत-उल-ऑलिया, रिसाला-इ-हकनुमा, तरीकत-उल-हकीकत, हसनत-उल-अरफीन आदि दाराशिकोह द्वारा रचित प्रारंभिक दौर की रचनाएं हैं ।

एक कुशल लेखक के रूप में

'मजमए-बहरिन' दाराशिकोह के उस दौर की पुस्तक है जब वे आध्यात्मिक संसार में एक तरह से अपने आपको स्थापित कर चुके थे । इस पुस्तक के प्रकाशन के तुरंत बाद ही कट्टरपंथी मुसलमानों ने उन्हें हाशिए पर ला खड़ा किया । क्योंकि दारा की उक्त पुस्तक दो परंपराओं, भारतीय रहस्यवाद और सूफीवाद के मध्य संधि स्थापित करने का माध्यम बन गयी । मुसलमानों को लगा कि दारा ने जान-बूझकर कुरान-शरीफ को अनदेखा किया है । इसके लिए सन १६५५ में दाराशिकोह मुसलिम समुदाय में एक बार जो आलोचना के पात्र बने तो वह उनके जीवन पर्यंत चलता रहा । सन १६५८ में समूगढ़ और सन १६५९ में देवरिया के सैनिक युद्ध में पराजय के बाद अलमगीर ने दारा को कैदी बना लिया था । ये वे वर्ष थे जब दारा मुसलमानों में आलोचना के शिकार बन चुके थे । अलमगीर ने भी इस अवसर का लाभ उठाया । बंदी बनाने के बाद उसने दारा को मौत की सजा सुना दी । इसका कारण बताते हुए अलमगीर ने बताया कि दारा ने न सिर्फ स्वधर्म त्याग किया है, बल्कि स्वधर्म की आलोचना भी की है ।

सबसे बदसूरत हाथी पर बैठाया जाए

दारा ने एक कविता के माध्यम से अपनी बात को और अधिक स्पष्ट किया है— 'वह एक है... उसका कोई नाम नहीं है... तुम चाहे जिस नाम से पुकारो... वह अपना सर तुम्हारी आवाज को सुनने के लिए हर स्थिति में उठाता है... ।'

लेकिन दारा की विवशता भी यही थी कि वह आम लोगों को अपनी बात समझा भी नहीं सकता था । उधर अलमगीर ने फतवा जारी कर उसे अपने रास्ते से हटाने का प्रबंध कर ही दिया था । देखते-ही-देखते दारा के वे सुखद दिन अतीत के गर्भ में समा गये, जब वह अपने पिता के साथ पहली बार शाहजहानाबाद में प्रवेश कर रहा था । राज्य के सबसे खूबसूरत हाथी पर बैठकर दाराशिकोह ने हजारों लाचार भिखारियों के सामने सोने और चांदी के सिक्के लुटाये थे और अब वे दिन भी देखने पड़ रहे थे जिसमें अलमगीर ने आदेश दिया था कि दारा को राजधानी और दिल्ली की गलियों में सबसे बदसूरत हाथी पर बैठाकर घुमाया जाए ।

ओफ ! हाय ! अब मेरा क्या होगा !

कहा जाता है कि अलमगीर के इस आदेश का पालन किया गया । पर दाराशिकोह के चेहरे पर कोई भाव नहीं उभरा । वह उस समय भी अपने पुत्र को सूफीवाद के रहस्यों की शिक्षा दे रहा था । उसकी तन्मयता में तब खलल पैदा हुई जब अचानक उसने एक भिखारी को चिल्लाते हुए सुना । ओह ! हाय ! अब मेरा क्या होगा...

मैं तो सिर्फ तुम्हारी दया पर जीवित था दारा... और आज तुम्हारी यह हालत... कि तुम्हारे पास स्वयं के लिए कुछ नहीं है...

विवश और लाचार दारा ने अपने कंधे से अपना शॉल उतारकर भिखारी की ओर फेका । भिखारी को वह शॉल भी नहीं मिल सकी, क्योंकि मलिक जीवन नामक पठान ने उसे बीच में ही रोक लिया । थोड़ी ही देर में भीड़ भड़क उठी । लोगों ने मलिक को नीचे घसीट लिया तथा उसकी पसलियां तक तोड़ दीं ।

वह काल-रात्रि

दारा शिकोह की हत्या के संबंध में इतिहासकारों में दो मान्यताएं प्रचलित हैं— अखिलेश मित्तल के अनुसार, औरंगजेब ने दाराशिकोह को कबीजाबाद (आज के नये ओखला के पास) के राजमहल में बंदी बनाकर रखा । वह एक स्याह रात थी जो, दारा के खून से स्वयं को रंगना चाहती थी । शायद दारा को यह अहसास था कि आज की रात उसके साथ कुछ अप्रिय घटनेवाला है । उस रात राजमहल के पहरेदारों ने अलमगीर द्वारा भेजे गये हत्यारों को चुपके से महल में प्रवेश करने दिया । जब पहरेदार दारा के कक्ष में पहुंचे तो उन्होंने देखा कि दारा आत्म-हत्या का प्रयास कर रहा है । लेकिन, हत्यारों ने उसे ऐसा नहीं करने दिया । बाद में हत्यारों द्वारा उसकी गरदन काटकर औरंगजेब के सामने पेश की गयी ताकि वह समझ सके कि जो सजाये-मौत उसने दारा के लिए तय की थी, उसका पालन कर दिया गया है । इतिहासकारों का दूसरा मत यह है कि दाराशिकोह को लंबे समय तक ग्वालियर के किले में नजरबंद रखा गया और यहीं कई दिनों तक यंत्रणाएं देने के बाद उसे औरंगजेब की आज्ञानुसार फांसी पर लटका दिया गया और बाद में उसकी गरदन काटकर शाहजहां को भेज दी गयी । बहरहाल हत्या कहां और कैसे की गयी यह अलग बात है, मगर एक भाई की अपने भाई के प्रति क्रूरता की यह जघन्य मिसाल इतिहास में एक ही है ।

— २७-ए कृष्णकुंज एक्सटेंशन
पार्ट-२
लक्ष्मीनगर, दिल्ली-९२

हाय रे !

वे कहें कविता को कविता
तब तो वह कविता
वर्ना 'ऊँऽऽऽऽह'
वे कहें कोयल को कोयल
तो वह कोयल
वर्ना 'यूँऽऽऽह'
याने कि
सर्जना और सूर्योदय तक
की कसौटी
वे...वे और बस वे ॥

और आप ?
आप बस निरे पाठक
निकम्मे श्रोता
निरर्थक मनुष्य
याने कि कुछ भी नहीं ॥

अगर उनका बस चलता
तो वे बारूद को बर्फ
धरती को बाँझ
आकाश को अंधा
पहाड़ को पुड़िया
सागर को पोखर
प्रकृति को पागल
और सत्य को गत्य
साबित कर देते
रुमाल की तरह
तह कर लेते
दसों दिशाओं की
और कीर्ति कुमारी के
अंत:पुर को
अपना चरागाह मानकर
तिनका तिनका चर लेते ॥

पर हाय रे !
ऐसा हो नहीं पा रहा है
वे तत्पर खड़े हैं
बांटने को प्रमाण पत्र
पर कोई
लेने नहीं आ रहा है ॥

—बाल कवि बैरा
मनासा (म.
जिला मंदसौर—४५८

गीत

मेरे मन का पागल शिल्पी

अंगारों के पथ पर चलकर
मैंने पाले अनगिन छाले

ज्वाला सरि में तपन तरी है
तट से उस तट सेतु न कोई

दीप अधूरा मंदिर सूना
सांझ घिरी नीराजन रोयी

पथ की ज्वाला चंदन बनकर
अर्चन-दीपक निशि-दिन बाले...

दूर दिशा की निर्मम बाधा
तोड़ सकी न भ्रम के ताले

नाप रही मैं प्रिय-पथ दूरी
सहलाकर दो पल पग छाले

बरस गये निशि पहरों कितने,
नयन घिरे घन उजले-काले

ज्वाला सब वरदान बनी है,
मोती से भर ली उर सीपी

बना रहा नित देव-घरौंदा
मेरे मन का पागल शिल्पी

मैं प्रलय तक भर-भर दूंगी
गान कसक के जीवन प्याले

—कृष्णा अनुराधा
118 NEWLANDS ROA
LANCASTER LA
ENGLAND (U.K
ENGLAND (U.K

मधुर मिलन

नयन दुभाषी बन जाते हैं
तन तो रहते दूर, किंतु दो मन
रस में क्यों सन जाते हैं ?

भाषण एक अजानी होती
बिना वर्ण की वाणी होती
नयनों को वाणी मिलती है
क्या-क्या आमंत्रण आते हैं ।

जब सारी जगती सो जाती
थककर सपनों में खो जाती
तब सुधि के वन-विहग न जाने
क्या-क्या अंतर में गाते हैं

जब नयनों में अमित प्यास हो
जब अंतर का सुख उदास हो
तब छवि के मधु ध्यान बीच कुछ
चिर आकर्षक क्षण आते हैं ।

जब करती है खेल भावना
जब अनियंत्रित रहे कल्पना
विरह देखता तब सुधियों में
कितने मधुर मिलन आते हैं ।

—डॉ. चंद्रप्रकाश वर्मा

ई-२/२३३ अरेरा कॉलोनी
भोपाल—४६२०१६

क्यों न छेड़ें तान हम ?

बांस की जब बांसुरी अमृत संगीत बरसा सकती
जीवन भी तो बांसुरी है क्यों न छेड़ें तान हम

काल के थिरकते चरण अनहद की तालों पर सधे
जल थल नभ भी सूरज चांद तारे भी सब लय से
बंधे

स्वर्ग गाएं नर्क गाएं सुंदर या असुंदर गाएं
बस थोड़ी-सी साधना से सीखें इसका ज्ञान हम ।

चाहे पनघट का हो गाना या मरघट का दुख मनाना
सब है अलौकिक मुरली के अनुगुंजन का
ताना-बाना

जिंदगी के रंगमंच का परदा गिरने से पहले
चलो गाएं मिलकर जीवन के अनंत गान हम ।

हवाओं में फूलों में लहरों में ऋतुओं का सरगम है
सबमें झूमने मचलने लहराने का एक क्रम है

जैसे गाने या बजानेवाले स्वर को साधें वैसे
यह तन मन झंकृत हो जाए रखें इसका ध्यान हम ।

—रामकृष्ण दीक्षित 'विश्व'

१८३ तुलाराम चौक
जबलपुर (म. प्र.)

गीतों भरा आकाश

प्राण हो गये विभोर

प्राण हो गये विभोर
निरख-निरख श्याम-श्याम, सजल-सजल घटा
घोर !
कृष्ण गगन मेघ-मुग्ध
कहीं-कहीं द्युति विदग्ध
सुप्त मोर चिहुंक-चिहुंक उठता, सुन वज्र रोर !
भीग रही सुधि संगीत
दृग-जल में विकल प्रीत
एक ओर मिलन-मुकुर, एक ओर विरह-भोर !
उषा-चंद्र ज्यों प्रिय-मुख
रस-भीना पावस-सुख
सूखा ही रहा आज आंचल का एक छोर !

उनकी सुधि आज रे !

घन पर घन, मन पर मन
उनकी सुधि आज रे !

प्राण-पवन सनन-सनन
पायल ज्यों झनन-झनन

बादल के वन में क्यों
चपला को लाज रे !

झिहिर-झिहिर बरसे घन
झिमिक-झिमिक झूमे मन

सावन में बजे सजल
सांसों के साज रे !

रुक-झुक रिमझिम झकोर
नयनों में जल-हिलोर

अवनी से अंबर तक
उनका ही राज रे !

बादल में बिजली

सघन गगन गरजे रे, गरजे
लुक-छुपकर लरजे रे, लरजे

घोर रोर के कनक-ठनक से

कांपे काम कली !
चपल चाह को राह न सूझे
मन धड़कन की बात न बूझे

चंचल-चंचल अविरल जल से

भीगे प्राण-गली !
कड़क-धड़क से कंपित छाती
बुझ-बुझ जाती जलती बाती

कहता कौन-कान में चुप-चुप,
मुझसे कौन बली ?

मेघों पर मेघ घिरे

मेघों पर मेघ घिरे !
आषाढ़ी उत्कंठा आंखों में अकुलायी
गीत-भरी सांसों में बिजली-सी भर आयी
सुधियों के आंगन में
सुधियों के दिवस फिरे !
लिखा पत्र तुमने भी लाल-लाल अक्षर में
पावस में भी वसंत रहता है अंतर में
चुपके दो चार बूंद
लाली के लोर गिरे !
टकटकी-सी कविता की एक कली ले लो तुम
खिलने दो खुशबू की नील घटा दे दो तुम
उड़ती परछाईं पर
ताकि प्राण-प्राण तिरे !

—पोद्दार रामावतार अरुण

कवि निवास
समस्तीपुर-८४८१०१ (बिहार)

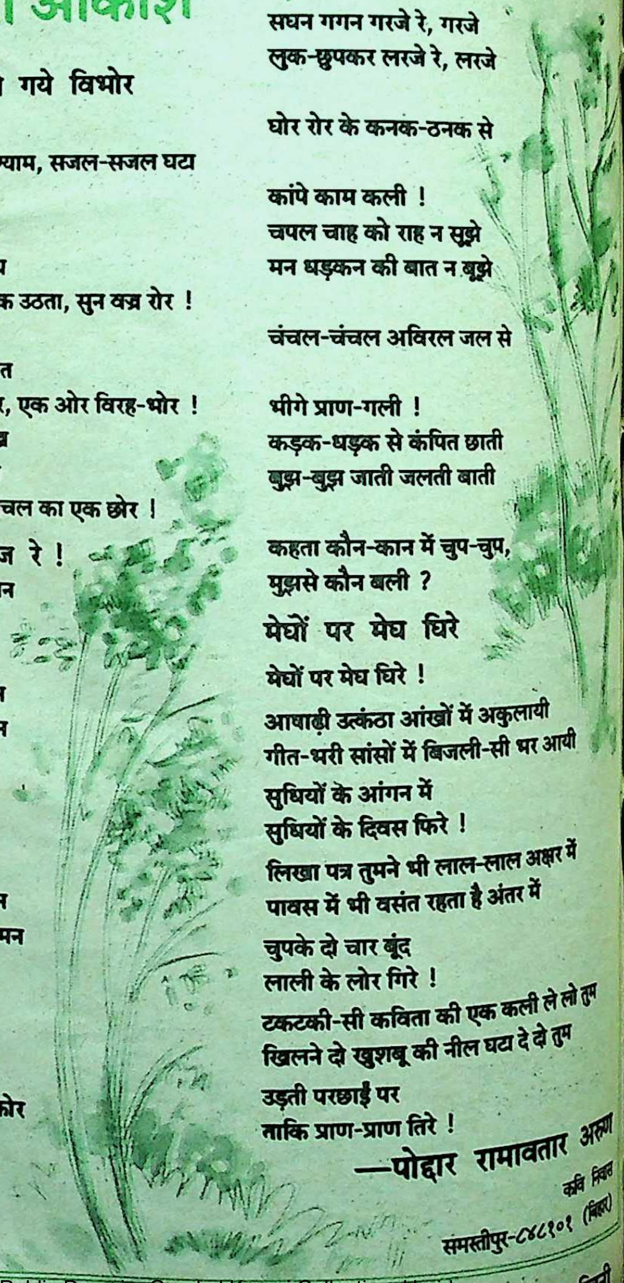

परियां : यादों की

मैं तुम्हारी छवि
बटोर लेता हूं
फूलों की क्यारी से
और बांध लेता हूं
अपनी इच्छाओं से
उतर आती हैं परियां
तुम्हारी यादों की
और लपेट लेती हैं मुझे
अपनी सुगंध में
वातावरण करता है प्रतीक्षा
तुम्हारे शब्दों की
बिखरे हुए रंग
ढल जाते हैं जब
तुम्हारे चेहरे में
चांद फिसल जाता है
मेरे हाथों से
जब तुम चलती हो
मेरे सपनों में
तुम्हारे शब्द उतने ही सुंदर हैं
जितनी कि तुम
जब आती है तुम्हारी याद
शब्द बन जाते हैं तितलियां ।

—बलदेव मिर्जा

कोठी जमीराबाद : रघुवीरपुरी
अलीगढ़, उ. प्र.

पीढ़ियों का संघर्ष

एक जवां हाथ
पास आ गया मेरे हाथ के
मुझे लगा
दो पीढ़ियां पास आ गयी हैं ।

जवां हाथ के जवां खून की गरमी
छूने लगी मेरा ठंडा खून
देखते-देखते
मेरा दिल जवान हो गया ।
सच है कि एक पीढ़ी
ताकत देती है दूसरों को ।

अचानक
उसने हाथ खींच लिया
इतनी जल्दी शुरू हो जाएगा
पीढ़ियों का संघर्ष
नहीं सोचा था !!

—डॉ. सुधेश

फ्लैट १३१७ पूर्वांचल,
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
नयी दिल्ली-११००६७

इतिहास ने सभी के हाथ काटे हैं !

● डॉ. समर बहादुर

इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज कराने की आदिम इच्छा, मानव-मन की सबसे बड़ी कमजोरी है । यही कारण है कि अनेक प्रकार की सनक और जुझारू दुस्साहस से हमारे इतिहास के पृष्ठ अटे पड़े हैं । भव्य इमारतें, मकबरे, किले, महल तथा कीर्तिस्तंभ राजा-महाराजाओं और नवाबों के समय के सीने पर अपने अमिट हस्ताक्षर करने के ललकभरे दस्तावेज ही हैं । और इस ललक की पूर्ति के लिए इतिहास को कई-कई बार सल्तनतों और शासनों के लोमहर्षक नरसंहार और यातना-क्रीड़ाओं का चश्मदीद गवाह भी बनना पड़ा है । विद्वानों और कलाकारों का सम्मान करना, उन्हें अपने दरबार का नवरत्न बनाना जहां राजा-महाराजाओं की सुरुचि संपन्नता को दर्शाता है, वहीं कलाकारों और विद्वानों के ऊपर इनके द्वारा ढहाये गये कहर और सितम के जुल्मभरे सिलसिले भी इतिहास की झोली में बेशुमार भरे हुए हैं । कवि भूषण, चंदबरदाई, संगीत सम्राट तानसेन और बीरबल जहां अपनी प्रतिभा के कारण इतिहास पुरुष बनकर आज भी अमर हैं, वहीं उन हतभाग्य कलाकारों की व्यथा-कथाएं भी कम नहीं जिन्हें अपनी उत्कृष्ट कला के पुरस्कार में मौत और यातना के सिवाय और कुछ नहीं मिला ।

कटे हाथों के ढेर पर खड़ा ताजमहल

अमर प्रेम और सौंदर्य के अक्षुण्ण प्रतीक ताजमहल का निर्माण, शाह खुर्रम (शाहजहां) और अर्जुमंद बानो बेगम (मुमताज महल) के अमर प्रेम को चिरस्थायी बनाये रखने की रूमानी इच्छा को आकार देनेवाले कुशल शिल्पी आज कहां हैं ? उनके नामों के इतिहास में उल्लेख करने की बात तो दूर, उन हतभाग्यों को अपने हाथ कटवाकर अपनी कला की कीमत चुकानी पड़ी । बाईस वर्षों तक बीस हजार कुशल और प्रशिक्षित मजदूरों एवं कलाशिल्पियों की अनवरत कला-साधना का सुफल उन्हें अपने हाथ कटवाकर मिलेगा, इसकी कल्पना पूनम की चांदनी रात में नहाये श्वेतधवल ताजमहल की दूधिया खूबसूरती देखकर क्या कभी किसी पर्यटक के मन में जागती है ? एक रसज्ञ और कला मर्मज्ञ प्रेमी-हृदय बादशाह इतना क्रूर होगा, इसकी गवाह तो सदियों से बहती यमुना नदी है । उसका पानी हजारों कला-शिल्पियों के कटे हाथों के खून के बहाव से आज भी खारा है । इन कला-शिल्पियों के साथ हुए इस क्रूर खिलवाड़ के पीछे बादशाह का एक भय था जो काम कर रहा था । उसे आशंका थी कि कहीं ये कलाकार इस कलाकृति-जैसी कोई और

विद्वानों और कलाकारों का सम्मान करना, उन्हें अपने दरबार का नवरत्न बनाना जहां राजा-महाराजाओं की सुरुचि संपन्नता को दर्शाता है, वहीं कलाकारों और विद्वानों के ऊपर इनके द्वारा ढहाये गये कहर और सितम के जुल्मभरे सिलसिले भी इतिहास की झोली में बेशुमार भरे हुए हैं । कवि भूषण, चंदबरदाई, संगीत सम्राट तानसेन और बीरबल जहां अपनी प्रतिभा के कारण इतिहास पुरुष बनकर आज भी अमर हैं, वहीं उन हतभाग्य कलाकारों की व्यथा-कथाएं भी कम नहीं जिन्हें अपनी उत्कृष्ट कला के पुरस्कार में मौत और यातना के सिवाय और कुछ नहीं मिला ।

कलाकृति कहीं और जाकर न बना दें । उसके प्रेम की निशानी कहीं नंबर दो पर न आ जाए । इसलिए उस संभावना को ही समाप्त करना श्रेयस्कर है । इसी सोच का प्रतिफल था हाथ कटवा देने का अमानुषिक निर्णय । हाथ काटे जाने का यह सिलसिला काल, देश, समय कुछ भी रहा हो, कलाकारों को अच्छे कलाकार होने की सजा हाथ कटवाने के अभिशाप के रूप में हमेशा भुगतनी पड़ी है । इस संदर्भ में कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत का इतिहास एक ही है ।

अभिशप्त सतपती

सतपती दक्षिण भारत के एक बेजोड़ मूर्ति-शिल्पी थे । एक बार ग्रेनाइट पत्थर के एक साधारण से शिलाखंड को उन्होंने अपनी छैनी-हथौड़ी की तिलिस्मी दक्षता से तराश कर एक ऐसी देवप्रतिमा का सृजन कर दिया कि दूर-दूर तक से लोग इस दिव्य एवं भव्य प्रतिमा के दर्शन के लिए निरंतर आने लगे । प्रतिमा का सौंदर्य इतना मनमोहक एवं चित्ताकर्षक था कि वे आस्तिक, जिनकी श्रद्धा किसी अन्य देवी या देवता में थी, वे भी इस प्रतिमा के आगे श्रद्धा से सिर झुकाकर अपने मन में संतोष का अनुभव करते । इस प्रतिमा की कीर्तिगाथा राजा के कानों तक पहुंची । वे स्वयं प्रतिमा के दर्शन के लिए आये । प्रतिमा का सौंदर्य देखकर वे भी हतप्रभ रह गये । सतपती को दूसरे दिन दरबार में उपस्थित होने का आदेश देकर राजा प्रस्थान कर गये । इस प्रतिमा की शोहरत ने राजा को समकालीन राजाओं की कतार में सर्वश्रेष्ठ और अग्रणी बना दिया था । वह इस उपलब्धि से प्रफुल्लित थे, प्रतिमा के सौंदर्य पर मुग्ध भी थे, मगर यह सोचकर कांप उठते थे कि कहीं कलानिपुण सतपती को कोई और राजा लोभ और लालच देकर अपने राज्य में न बुला ले । कहीं सतपती उस राजा के लिए इससे भी अधिक सुंदर प्रतिमा का निर्माण न कर दे । फिर उनकी कीर्ति को कालिमायुक्त बादल ढक नहीं देगा ? यह कुशंका के मन में आते ही राजा ने सतपती के हाथ काट डालने का अमानुषिक निर्णय ले डाला । दूसरे ही दिन अपनी कलात्मक श्रेष्ठता का पुरस्कार और पुरस्कार के

रूप में जीवनभर एक निरीह अपाहिज की जिंदगी जीने के लिए अभिशप्त सतपती दरबार में सिर झुकाये उपस्थित खड़ा था । एक बार फिर कलाकार की साधना सामंती सनक का शिकार हो गयी ।

रक्तरंजित ढाका की मलमल

ढाका की मलमल । शीर शक्कर ! आबे रूबा ! रुई के धागे से बनी-मलमल के ये नाम हैं जो इतिहास की किंवदंतियों एवं जनश्रुतियों में आज भी अपनी चमक-दमक के साथ विद्यमान हैं । एक प्रसंग है कि बादशाह औरंगजेब ने अपनी कवयित्री शहजादी जेब्बुन्निसा को एक अत्यंत चमकीले और पारदर्शी परिधान में देखा । देखकर वे हतप्रभ रह गये । जेब्बुन्निसा ने जब अपने बादशाह पिता को बताया कि यह इतनी बारीक मलमल है कि एक पूरा थान अंगूठी में से निकल जाता है, तो बादशाह की हैरत का ठिकाना नहीं रहा ! इसके बाद बादशाह को मलमल की कई और किस्में दिखायी गयीं । उसमें एक थी— शबनम । शबनम इतनी खूबसूरत कि-जैसे सुबह घास का मैदान ओस से ढक गया हो । शायद इसलिए नाम दिया गया— शबनम । मलमल की दूसरी किस्म थी— 'आबेरूबा' । ऐसी मलमल जिसे देखकर बहते हुए पानी का एहसास हो जाए । मलमल एक और अजीब किस्म की थी । जैसे दानेदार शक्कर पर सीर (दूध) की परत जम रही हो । नाम दिया गया— 'सीरशक्कर' मलमल । इस मलमल का दुनिया में कोई सानी नहीं था । इस मलमल की खूबसूरती पर बादशाह औरंगजेब फिदा हो गये । गनीमत रही कि इस बेहतरीन मलमल बनाने पर बादशाह ने कोई कहर नहीं ढाया । हां, ईस्ट इंडिया कंपनी के फिरंगी इसकी आब और चमक-दमक को सहन नहीं कर सके । उन्होंने भी इन सिद्धहस्त कलाकारों के साथ वही सलूक किया जो कि इतिहास, हर दौर में अपने कलाकारों के साथ करता आया है । मलमली सपनों को रुई के रेशों में बुननेवाले इन कलाकारों के हाथ भी निर्ममतापूर्वक काट दिये गये । इसके पीछे एक ही भावना थी कि विलायती वस्त्र उद्योग को चुनौती देने के लिए, कभी कोई अपना सिर न उठा सके ।

सुंदरता की सजा

खूबसूरती के बल पर अनेक रूपसियां सड़क से चलकर सिंहासन तक जा पहुंची हैं । ग्वालियर की मृगनयनी इसका एक उदाहरण है । यह बात अलग है कि वह जितनी सुंदर थी उससे ज्यादा वह बहादुर भी थी । उसके हिरण-जैसे नयनों के तीर ने राजा मानसिंह का मन ऐसा मोहा कि वह नैनी नाम की साधारण गूजर कन्या से मृगनयनी नामक महारानी बन गयी । मगर यह खूबसूरती हमेशा लाभदायक

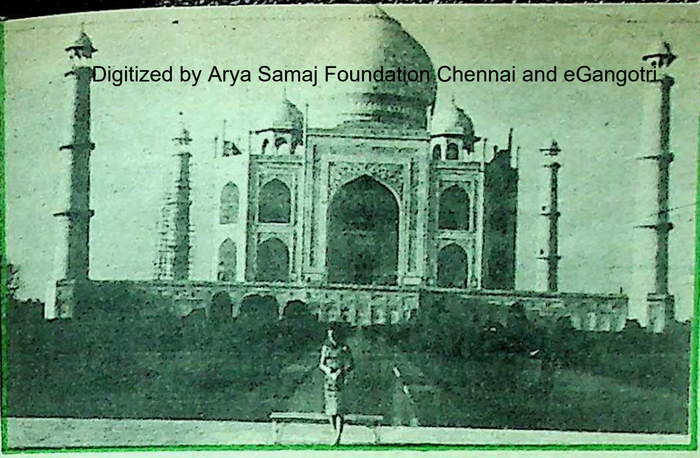

ही नहीं होती । इस खूबसूरती की कीमत कभी-कभी प्राणों की बलि देकर भी चुकानी पड़ती है । चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी के साथ ऐसा ही हुआ था । अलाउद्दीन खिलजी ने जब पद्मिनी की खूबसूरती के चर्चे सुने तो उसे पाने के लिए इतना उतावला हो गया कि उसने चित्तौड़ पर चढ़ाई ही कर दी । पानी में रानी के प्रतिबिंब को देखने तक के लिए बेताब बादशाह को रानी की झलक की जगह मिली केवल-राख ! इससे पहले की कोई कुदृष्टि सुंदरता की पावन गंगा को दूषित कर सके, रानी ने जौहर कर लिया । अपने सुंदर होने की सजा उसने स्वयं अपने-आप को दे दी । खूबसूरत होने की सजा को झेलनेवाली अकेली पद्मिनी ही नहीं है । अनारकली के साथ जो हुआ वह सब जानते हैं । मीरा को जहर पीना पड़ा । यह सब राज-सत्ता के लिए ही तो होता है । यह परंपरा बहुत पुरानी है । महाभारतकालीन प्रसंगों में भी यही देखने को मिलता है । एकलव्य को अपना अंगूठा काटकर द्रोणाचार्य को देना पड़ा । यह केवल इसलिए कि वह अर्जुन से श्रेष्ठ धनुर्धर होने का अपराधी था । हाथ काटने से लेकर अंगूठे मांगने तक की वीभत्स यात्रा में सत्तापक्ष किसी-न-किसी मुखौटे में उपस्थित अवश्य रहा है । इतिहास में असाधारण होना जघन्य अपराध है । इतिहास से जो टकराकर अपने कद को उससे बड़ा करना चाहता है । वह इतिहास द्वारा अपने समय का अपराधी बना दिया जाता है । न जाने कितने मसीहा इतिहास के सलीब पर सिर्फ इसीलिए लटकाये गये क्योंकि उन्होंने अपने दौर के मूल्यों से भिन्न कोई नयी बात कहने का जोखिम उठाया । बहादुर होना, आत्मविश्वास की जमीन पर खड़े होकर साहस की कविता को पढ़ना है । राणा सांगा, महाराणा प्रताप और वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान के जीवन संघर्ष से कौन परिचित नहीं है ।

शरीर पर अस्सी घाव लिए राणा सांगा, घास की रोटी के लिए भी मुहताज महाराणा प्रताप और सत्रह बार अपने शत्रु को पराजित करनेवाले वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान अंत में अपने ही शत्रु के युद्धबंदी बने । आखिर क्यों ? विश्वासघात, षड्यंत्र और दमन आखिर क्यों इनकी जिंदगी में घुसपैठ करते रहे ? इसीलिए न, क्योंकि ये सब विलक्षण और असाधारण थे । इतिहास की नजर में शायद विलक्षण होना सब से बड़ा अपराध है । ●

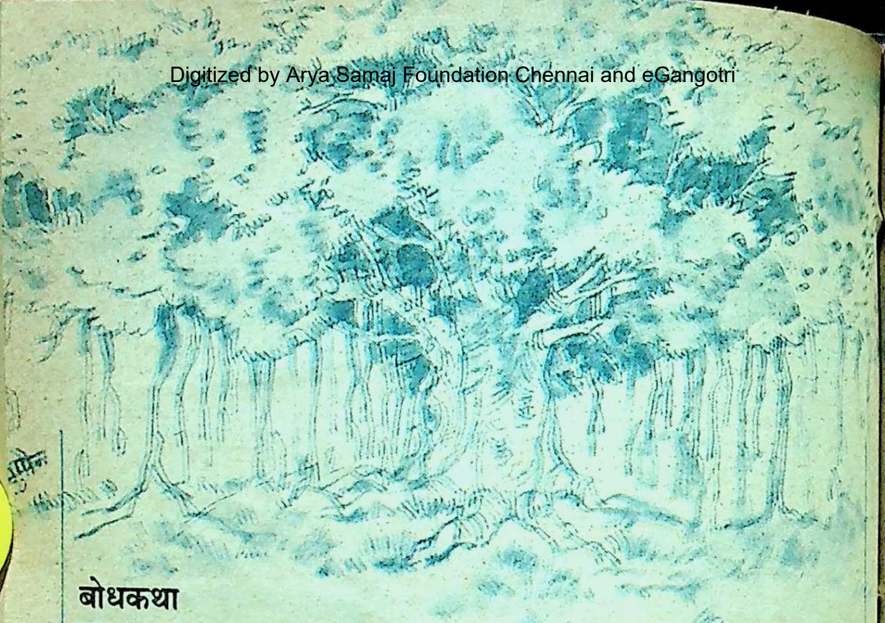

बोधकथा

असाधारण होना अभिशाप है !

बरगद का वह वृक्ष बहुत घना और विशाल था । इतना विशाल कि उसके घने साये तले सैकड़ों लोग अपने घोड़े, बैल और ऊंटों के साथ हफ़्तों विश्राम करते । मगर उस वृक्ष के आसपास दूर-दूर तक कहीं कोई वृक्ष या हरियाली नहीं थी । लाओत्से ने जब इस असाधारण वृक्ष को देखा तो उसका मन कौतुहल से भर गया । उसने वृक्ष से पूछा— हे वटराज ? आपके आसपास के वृक्ष कहां गये और आप ही अकेले जीवित क्यों हैं ? लगभग हांफते हुए बूढ़ा बरगद बोला— जानते हो मेरी उम्र पांच सौ वर्ष है । यहां पहले कभी एक घना जंगल हुआ करता था, चंदन और सागौन का घना जंगल । इतना असाधारण चंदन और इतना उत्कृष्ट सागौन दूर-दूर तक कहीं उपलब्ध नहीं था । जंगल काटनेवालों की नजर चंदन और सागौन पर ही जाती । कुल्हाड़ियां उन पर ही चलतीं । मुझे तो कोई ध्यान से यदि देखता भी तो दूसरा लकड़हारा कहता— इसे छोड़ दो । बहुत साधारण किस्म की लकड़ी निकलेगी इसमें से । साधारण, सस्ती और जलाने पर धुएंदार ! देखते-देखते मेरे आसपास के सभी पेड़ कट गये । असाधारण होने के अपराध की मानो सभी सजा भुगतते रहे । मैं निरापद रहा, क्योंकि साधारण था । आज पांच सौ वर्ष होने को आये, कोई मेरी एक शाखा भी नहीं काटता । मैं बढ़ते-बढ़ते इतना विशाल हो गया । मेरा साधारणपन ही असाधारण हो गया । जो असाधारण होते हैं, इतिहास उनके प्रति बड़ा कठोर होता है ।

— **लाओत्से**

प्रकृति के अनूठे तिलिस्मों के बीच गढ़वाल हिमालय में एक स्वपनिल जगह है— कागभुषंडिताल । अभी तक अपरिचित इस अलौकिक स्थल के बारे में यह मान्यता है कि कौए यहां मरने के लिए आते हैं । जब हम कुछ साथियों ने यहां की यात्रा की तो हमें इस दुर्गम पर्वत पर कौओं के पंख पड़े हुए मिले । निसंदेह इस जगह को हम साक्षात रहस्य की भूमि कह सकते हैं ।

कौए यहां मरने के लिए आते हैं।

● प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

पर्वतों के उच्च भाग में चलते हुए पदयात्रा कब पर्वतारोहण में बदल जाए... हरी-भरी घाटी कब गद्‌गद्‌ कर दे... खौफनाक हिमनद कब सहमा दें... कुछ कहा नहीं जा सकता । बादल गरजते कहीं हैं, तो बरसते कहीं हैं । न आरोह-अवरोह के क्रम का पता चलता है, न मौसम के मिजाज का ही अंदाजा लगता है ।

कागभुषंडिताल : स्वपनिल स्थल

प्रकृति के अनूठे तिलिस्मों के बीच गढ़वाल हिमालय में एक स्वपनिल जगह है— कागभुषंडिताल । अभी तक अपरिचित इस अलौकिक स्थल के बारे में यह मान्यता है कि कौए यहां मरने के लिए आते हैं । जब हम कुछ साथियों ने यहां की यात्रा की तो हमें इस दुर्गम पर्वत पर कौओं के पंख पड़े हुए मिले । निसंदेह इस जगह को हम साक्षात रहस्य की भूमि कह सकते हैं ।

जर्जर शिलाखंडों व पत्थरों के ढेर के बीच यहां विशाल झील का होना स्वयं में एक आश्चर्य है ।

चमोली जनपद में हाथी पर्वत (२२,१४१ फुट) की गोद में स्थित यह झील समुद्रतल से १६,८०० फुट ऊंचाई पर है । विश्वविख्यात 'फूलों की घाटी' के रास्ते पर मोटरहेड से १० कि.मी. दूर एक गांव है—भ्यूंडार । यहीं से शुरू होती है कागभुषंडिताल की यात्रा । ऋषिकेश, गढ़वाल का प्रवेशद्वार है । यहां से बदरीनाथ धाम के लिए एक मार्ग जाता है, जिसकी दूरी २९४ कि.मी. है । बदरीनाथ धाम से मात्र २९ कि.मी. पूर्व एक जगह है— गोबिंदघाट (३५०० फुट) । यहां से फूलों की घाटी व हेमकुंड साहिब के लिए पैदल मार्ग जाता है । दोनों स्थलों की दूरियां गोबिंदघाट से १७ व २० कि.मी. हैं । गोबिंदघाट से १० कि.मी. दूर स्थित है— भ्यूंडार गांव । यह

विडंबना ही है कि कागभुषंडि झील पर्यटन की दृष्टि से उपेक्षित रही है। पुराणों में इस सरोवर का वर्णन है।

ब्रह्म की व्याख्या

लोकश्रुति है कि अयोध्या में एक विद्वान ब्राह्मण रहा करते थे। वे परम राम भक्त थे। सारा समय सत्संग स्वाध्याय व भजन-कीर्तन में बिताते। एक बार उनकी भेंट एक सत्संग में प्रकांड विद्वान ऋषि लोमश से हो गयी। ऋषि लोमश ब्रह्म शब्द की व्याख्या कर रहे थे। विद्वान ब्राह्मण ऋषि के ज्ञान से बहुत प्रभावित हुए। किंतु ऋषि के कुछ विचारों से ब्राह्मण विद्वान सहमत नहीं थे। उन्होंने नम्रतापूर्वक ऋषि के विचारों का खंडन किया। ऋषि लोमश एक साधारण ब्राह्मण से इस विरोध की आशा नहीं कर रहे थे। क्रुद्ध होकर उन्होंने श्राप दिया कि ऋषियों के विचार में जो सत्य निहित है उस पर संदेह करना पाप है। तुमने सत्य को झुठलाया है इसके दंडस्वरूप तुम कौआ बन जाओगे।... फिर अयोध्या का वह ब्राह्मण कौआ बन गया और वे कागभुषंडि कहलाये। इस श्राप से कागभुषंडि के मन में कोई कटुता नहीं आयी और श्रीराम के प्रति उनकी अनन्य आस्था व भक्ति पूर्ववत बनी रही।

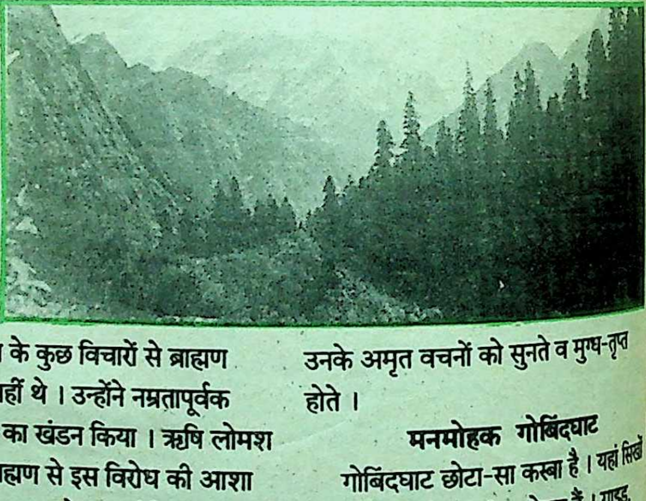

हिममंडित हाथीपर्वत : गोद में बिखरा वैभव

सृष्टि का स्वर्णयुग

वह समय सृष्टि का स्वर्ण-युग था। पहाड़, नदी, पशु-पक्षी, चल और अचल सभी मनुष्य की वाणी बोलते थे। अयोध्या के ब्राह्मण कौआ जरूर बन गये पर वे मनुष्य की तरह अपने विचार व्यक्त करते थे। सो कागभुषंडिजी सुदूर हिमालय पर सुमेरु पर्वत पर जा पहुंचे, वहां एक सुरम्य सरोवर के किनारे कल्पवृक्ष में उन्होंने आसन जमाया। वे इस मनोरम झील में स्नान करते व कल्पवृक्ष पर बैठकर श्रीराम कथा का वर्णन करते। पशु-पक्षी, मानव-देवता सभी उनके अमृत वचनों को सुनते व मुग्ध-तृप्त होते।

मनमोहक गोबिंदघाट

गोबिंदघाट छोटा-सा कस्बा है। यहां सिखों का लंगर, धर्मशालाएं व होटल हैं। गाइड, पोर्टर , घोड़े यहां उपलब्ध हैं। जून से सितम्बर, अक्तूबर तक यहां पर्यटक एवं श्रद्धालु यात्रियों की चहल-पहल रहती है। गोबिंद घाट से "फूलों की घाटी" मार्ग पर ४ कि.मी. पर पुलना गांव है तो १० कि. मी. पर भ्यूंडार गांव (८००० फुट)।

५० परिवारों का यह गांव पुष्पावती नदी के किनारे मोहक जंगल व घाटी के बीच बसा है।

गांव के लिए फूलों की घाटी का रास्ता छोड़कर, उत्तर की ओर चलना पड़ता है । एक बड़ी अधखुली घाटी कौतुहल पैदा करती है । २-३ जगहों पर उफनती नदी को पार करके उसी घाटी में पहुंचा जाता है । जहां दुर्गम पर्वतों के बीच स्वपनिल सौंदर्य लेटा हुआ है ।

घ्यूंडार गांव से किसी दक्ष अनुभवी युवा गाइड को लेकर चलना चाहिए । गांव की सरहद को छोड़ते निर्जन पथ पर दो-तीन जगह नदियों पर पुल की जगह केवल लकड़ी के बड़े लट्ठे रखे हुए हैं । उन पर संतुलन बनाकर चलना पड़ता है । जरा नजर चूकी नहीं कि गिरने का अंदेशा बना रहता है । फिर घनी झाड़ियां शुरू हो जाती हैं । ४ कि.मी. बाद रिख उडियार गुफा आती है । यहां सुस्ताया जा सकता है और खाना-पीना बनाया जा सकता है ।

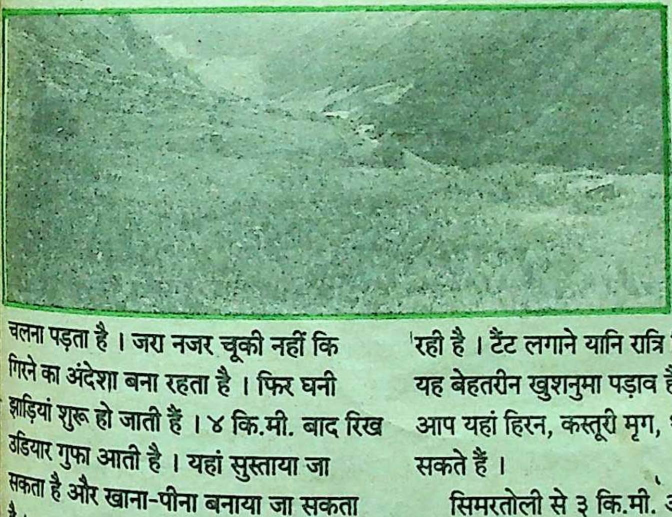

सुरम्य सिमरतोली घाटी

अनंत सन्नाटा

घनी आदमकद झाड़ियों से 'संघर्ष' करते चढ़ाई का रास्ता शुरू हो जाता है । मौन, निःशब्द जंगल के बीच कहीं-कहीं ही कोई पक्षी का स्वर सुनायी देता है । अन्यथा सन्नाटा फैला रहता है । कहीं-कहीं चट्टानों का जमघट है तो कहीं रेतीला विस्तार । संकरा क्षेत्र पार करने के बाद एक बड़ी मनोरम घाटी के दर्शन होते हैं । यहां प्रकृति की जटिलता गायब हो गयी है । मखमली घास के चितचोर मैदान देखकर सारी थकान उड़नछू हो जाती है । यहां असंख्य फूल खिले रहते हैं । फूलों की इस दिलकश घाटी का नाम है— सिमरतोली खर्क (१०,००० फुट) । रिख उडियार से जिसकी दूरी ६ कि.मी. है । वर्षाकाल में जब राशि-राशि फूल हंसते हैं तब यहां अवर्णनीय सौंदर्य बिछ जाता है । घाटी के एक छोर में देवदार वृक्ष के घने जंगल हैं तो दूसरे छोर में एक दुग्ध धवल नदी प्रवाहित हो रही है । टैंट लगाने यानि रात्रि निवास के लिए यह बेहतरीन खुशनुमा पड़ाव है । संयोगवश आप यहां हिरन, कस्तूरी मृग, थार को देख सकते हैं ।

सिमरतोली से ३ कि.मी. आगे नागतोली है । यहां बताते हैं कि नाग अजगर रहते हैं । फिर एक बड़ी पथरीली घाटी डांगखर्क (१२,००० फुट) में हम दाखिल होते हैं ।

भोजपत्र के जंगल

डांगखर्क से दुर्लभ भोजपत्र वृक्षों का जंगल शुरू हो जाता है । एक हरी-भरी पहाड़ी रिज पर लगातार चढ़ते हुए सांस बेतरह फूलती है । ऑक्सीजन की मात्रा कुछ कम होने लगती है ।

३ कि.मी. बाद हम १४,००० फुट की ऊंचाई पर एक बड़े हिमनद (ग्लेशियर) के ऊपर होते हैं । यह रोंगटे खड़े कर देनेवाला स्थल हाथी पर्वत पर विशाल ग्लेशियर के ऊपर जमे मलवे पर स्थित है । ये हिमखंड जमकर कठोर हो गये हैं । मलवे के कारण बर्फ की सफेदी नहीं दिखती । सिर्फ कंकड़-पत्थर का ऊबड़खाबड़ मैदान ही प्रतीत होता है । यह फैलाव कम-से-कम एक कि.मी. तक है । इसी फैलाव से आगे को जाना पड़ता है ।

जगह-जगह पर बड़ी डरावनी दरारें हैं । यहां संभलकर चलना पड़ता है ।

फूलों की घाटी और पर्वतीयबाला

पालसी : मेहनतकश लोग

ग्लेशियर से पार होते ही एक रिज से नीचे उतरकर पुनः हलके बढ़ते ३ कि.मी. बाद हम चित्ताकर्षक बुग्याल (मखमली घास के चरागाह) राजखर्क (१५,००० फुट) पहुंचते हैं । सामने गर्वोन्नत हाथी पर्वत शिखर खड़ा है । घाटी के सीने पर बीसियों जलधाराएं फिसल रही हैं । असंख्य फूल खिले रहते हैं ।

राजखर्क से विकट चढ़ाई है । चट्टानों पर भी चढ़ना पड़ता है तो कहीं बरफ में भी चलना पड़ता है । यहां से ४ कि.मी. की समयखाऊ बीहड़ यात्रा के बाद पहुंचते हैं— कनकुलखाल दर्रा (१८००० फीट) । दर्रे से दूसरी तरफ एक बड़ी झील दिखायी देती है । यही है— कागभुषंडिताल । दर्रे से एक कि.मी. बाद झील में पहुंचकर अद्‌भुत आनंद की अनुभूति होती है । यह झील डेढ़ कि.मी. परिधि की है । झील की लंबाई अधिक है । झील के किनारे चट्टान व पत्थरों का अटूट सिलसिला है ।

यहां ३-४ महीने स्थानीय भेड़पालक लोग सैकड़ों भेड़-बकरियों को लेकर रहते हैं । ये बहुत सरल स्वभाव के मृदुभाषी व आतिथ्य-सत्कारवाले लोग हैं । आपके आते ही वे नमस्कार करेंगे, मोटा कंबल बिछाएंगे, बकरी के दूध की बनी गरम चाय पेश करेंगे । अपनी छोटी-सी कुटिया में आपके रहने का प्रबंध भी कर देंगे । पड़ाव के लिए यह सर्वोत्तम स्थल है । इन लोगों को 'पालसी' कहते हैं । ये बेहद साहसी, संघर्षप्रिय, मेहनती लोग हैं । कठिन दर्रों, ग्लेशियरों, पर्वतों पर ये हंसते-हंसते चले जाते हैं । बकरियां इनके पीछे-पीछे चलती हैं । जहां अच्छी घास दिखी, सुरक्षित पड़ाव मिला, वहीं कुछ समय तक डेरा डाल देते हैं । फिर अगले पड़ाव की ओर चल देते हैं ।

एक पालसी व्यक्ति अकेले सैकड़ों बकरियों की देख-भाल करने में पारंगत होता है । गांववाले अपनी-अपनी बकरियों को इनके भरोसे दे देते हैं, बदले में इन्हें अनाज, पैसा देते हैं । सिध्वा-बिध्वा इनके ईष्ट देवता हैं । कोई अनिष्ट की आशंका हो तो ये देवता नचाते हैं । जागर गीत गाते हैं ।

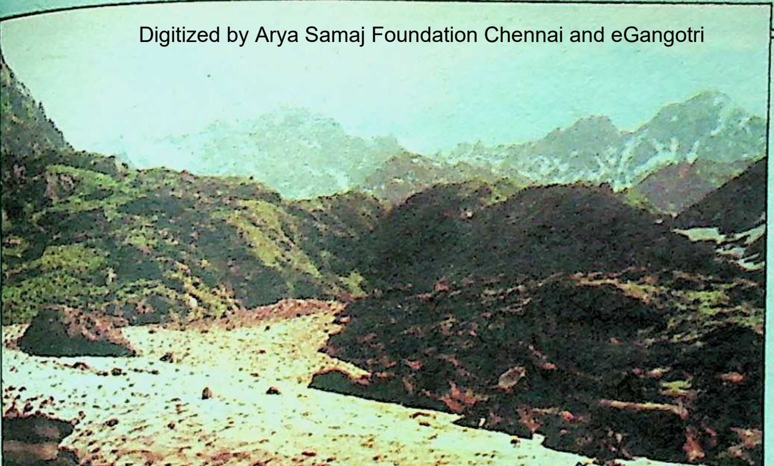

कौवों का मुक्तिस्थल : राजखर्क के निकट पहाड़ी स्थल

दुर्लभ पुष्प ब्रह्मकमल व फेनकमल बहुतायत में खिले रहते हैं ।

झील का रंग बदलता रहता है । झील के किनारे कुछ जगहों पर कौओं के पंख गिरे हुए मिलते हैं । मान्यता है कि **कौवे** मुक्ति के लिए यहां आते हैं ।

—द्वारा रूपसागर स्टूडियो
उत्तरकाशी, गढ़वाल (उ.प्र.)

डांगरवर्क से आगे भोजपत्र का एक वृक्ष : यहां भी कौवों के पंख मिले ▶

खामोशी के बीच फैली कागभुषंडि झील

छाया : प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

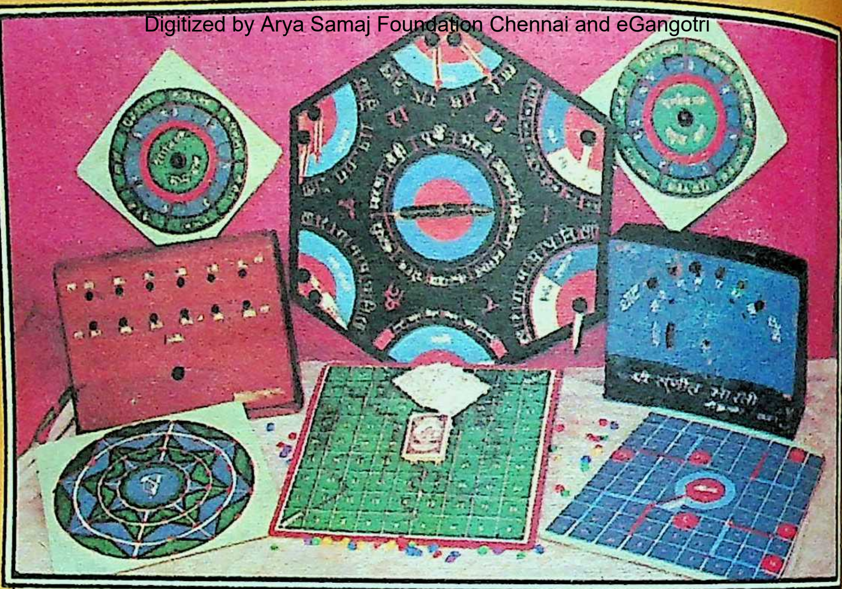

संगीत के रोचक खेल : मूच्छना चक्र, राग बनाओ खेल, मूर्च्छनाचक्र, थाटयंत्र, रागयंत्र, तालतरंग, नृत्यगति खेल, ताश, ताल तलैया, लूडो आदि

खेल-खेल में सीखें संगीत

संगीत का लूडो

संगीत के अनूठे खेल

छाया : अशफाक कादरी

• अशफाक कादरी

> संगीत के खेलों का देश में सभी जगह स्वागत किया गया । डी.वी. पलुस्कर औंकारनाथ ठाकुर, पी.एन. चिंचोर, वी.जी. जोग, एस.एम. हारकर, फिल्म संगीतकार तिमिरबरन, एस.एन. त्रिपाठी सहित अनेक संगीतज्ञों ने इन खेलों को सराहा । बिड़ला एज्युकेशन ट्रस्ट, पिलानी में इन खेलों को तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू, गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल, लेडी माऊंटबेटन, शिक्षाविद् मैडम मांटेसरी ने देखा था । उन्होंने खेलों की सराहना की । थाईसो विश्वविद्यालय, टोकियो के प्रो. शोदो ताकी ने इन खेलों को देखकर इसके व्यापक प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया था, जिससे भारतीय संगीत सरलता व सुगमता से आत्मसात किया जा सके ।

खेल ही खेल में संगीत सीखने की कल्पना को प्रख्यात संगीतज्ञ डॉ. जयचंद्र शर्मा ने आज से ५० वर्ष पूर्व ही साकार कर दिखाया था । 'कत्थक नृत्य', संगीत सुधा, कलानुसंधान, घुंघरू के बोल, नृत्य कौमुदी नृत्य मंजरी, विष्णु दिगंबर पद्धति पुर्नमूल्यांकन सहित १७ पुस्तकों के रचयिता डॉ. शर्मा संगीत की सरल व सुगम प्रणाली की आवश्यकता महसूस करते हैं । उसी उद्देश्य से उन्होंने अपनी अष्टसूत्री संगीत योजना के तहत १९४५ में संगीत के खेलों का आविष्कार कर संगीत जगत में हलचल मचा दी थी ।

संगीत के खेलों का देश में सभी जगह स्वागत किया गया । डी.वी. पलुस्कर औंकारनाथ ठाकुर, पी.एन. चिंचोर, वी.जी. जोग, एस.एम. हारकर, फिल्म संगीतकार तिमिरबरन, एस.एन. त्रिपाठी सहित अनेक संगीतज्ञों ने इन खेलों को सराहा । बिड़ला एज्युकेशन ट्रस्ट, पिलानी में इन खेलों को तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू, गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल, लेडी माऊंटबेटन, शिक्षाविद् मैडम मांटेसरी ने देखा था । उन्होंने खेलों की सराहना की थी । थाईसो विश्वविद्यालय, टोकियो के प्रो. शोदो ताकी ने इन खेलों को देखकर इसके व्यापक प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया था, जिससे भारतीय संगीत सरलता व सुगमता से आत्मसात किया जा सके । मगर आज यह खेल समुचित संरक्षण व प्रोत्साहन के अभाव में लुप्त हो रहे हैं । प्रमुख खेलों का विवरण इस प्रकार है—

संगीतमय सांप-सीढ़ी

सपेरे की बीन पर झूमनेवाले सांप का संगीत से मधुर रिश्ता हो सकता है मगर सीढ़ी का संबंध कभी देखा-सुना नहीं । डॉ. जयचंद्र शर्मा ने अपनी मौलिक सूझबूझ व कल्पना से सांप-सीढ़ी को संगीत जगत के लिए उपयोगी बना दिया । इस खेल में सीढ़ी के माध्यम से

ऊपर चढ़नेवाले को जितना मजा आता है, उतना ही सर्पदंश से पीड़ित खिलाड़ी को आनंद आता है । यह समान्य सांप-सीढ़ी होती है जिसे बच्चे प्रायः खेलते रहते हैं । इसमें गोटियां व पासा होता है, बारी-बारी खिलाड़ी इसे शुरू करते हैं और आगे बढ़ते हैं, जहां सीढ़ी से चढ़कर ऊपर पहुंचता है उस जगह किसी राग का नाम होता है । वहां पहुंचनेवाले खिलाड़ी को उस राग का आरोह गाकर सुनाना होता है ।अगर वह इसे सुनाने में असफल रहे तो उसे सीढ़ी का लाभ नहीं मिलेगा और उसे वापस पूर्व स्थान पर आना पड़ेगा । इसी प्रकार खेल ही खेल में किसी अंक पर जाने पर सर्पदंश होने पर उस अंक पर अंकित राग का अवरोह सुनाना होगा, तब वह नीचे उतरने के नुकसान से बच जाएगा । अगर वह उस राग का अवरोह सुनाने में असफल रहे, तो उसे सांप के सहारे नीचे आना पड़ेगा । यह रागों के आरोह -अवरोह के खेल ही खेल में अभ्यास का अच्छा प्रयोग है । इसमें जो सर्वप्रथम अंतिम अंक पर पहुंचता है, वह विजेता होता है ।

संगीतमय ताश

यह ३६ पत्तों की रोचक ताश है, जिसमें संगीत के सुर विविध रूपों में अंकित हैं । इसमें १५ पत्तों में शुद्ध स्वर, १२ पर कोमल स्वर एवं ३ पत्तों पर तीव्र स्वर शामिल हैं । इन्हीं में जोड़ी स्वर ५ पत्तों पर दिये गये हैं । इसका विवरण निम्न प्रकार है—

सारे म म प ध नि
सा रे ग म प ध नि
सा रे गम प ध नि
सा रे ग म प ध नि
सा रे ग म प ध नि
सा रे ग म प ध नि

इसमें जो स्वर जुड़े हुए हैं, वे जोड़ीवाले हैं। जिन स्वरों के नीचे रेखा है, वे कोमल स्वर हैं। जिन स्वरों के ऊपर खड़ी रेखा है, वे तीव्र स्वर हैं जिनके ऊपर कोई चिन्ह नहीं है वे शुद्ध स्वर हैं। अहिंदी भाषियों के लिए इस ताश पर अंगरेजी में सुर छपे हैं तथा नेत्रहीनों के लिए ब्रेल लिपि भी खुदी है ।

संगीत का साधारण ज्ञान रखनेवाले चार खिलाड़ी ३६ पत्तों की यह ताश आसानी से खेल सकते हैं । खेल के प्रारंभ में ६-६ पत्ते सभी खिलाड़ियों में बांट दिये जाते हैं, बाकी पत्ते जमीन पर उलटे कर डाल दिये जाते हैं । इसमें छः पत्तों का राग बनाना होता है, इसलिए

खिलाड़ी बारी-बारी से जमीन पर पड़े पत्तों में से एक पत्ता उठाकर अपने पत्तों में शामिल करता है तथा अपने पत्तों में से एक अनावश्यक पत्ता जमीन पर डाल देता है । इस प्रकार हर खिलाड़ी अपनी चाल में जमीन से पत्ता उठाकर आवश्यकतानुसार शामिल करता है या उसे वापस रखता है । जो खिलाड़ी सबसे पहले राग बनाता है वह अपने पत्तों को सभी खिलाड़ियों को दिखाता है और अपने अंकों के आधार पर जीत जाता है । यह खेल १०० नंबर का होता है ।

इस ताश के माध्यम से संगीत के ५०४०७२ थाटों एवं प्रत्येक थाट के ४८४ रागों की उत्पत्ति व हर जाति की रोचक जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

ताल तरंग

यह ताल रचने का खेल है । इसे प्रचलित तालों के संकेतों की सामान्य जानकारी रखनेवाले खिलाड़ी खेल सकते हैं । सभी खिलाड़ियों को सम, ताली व खाली की बराबर गोटियां दी जाती हैं, जिनका प्रयोग उनके बीच रखे नक्शे पर किया जाता है । एक बार में एक ही गोटी का प्रयोग कर सकते हैं । खिलाड़ी अपने-अपने ढंग से गोटी क्रमानुसार रखकर कोई ताल शीघ्र बनाने की कोशिश करते हैं । खिलाड़ी अन्य खिलाड़ियों की गोटियों के क्रम में रुकावट डालते हुए अपना ताल पहले बनाने की कोशिश में रहते हैं । जो सबसे पहले ताल बनाता है, उसे हाथ से ताली, खाली दर्शाते हुए उस ताल के बोल सुनाने होते हैं । यदि वह उन्हें सही ढंग से सुनाता है तो उसे विजेता घोषित किया जाता है । अगर वह बोल सुनाने में असफल रहता है, तो उसे विजेता नहीं बनाया जाता । उसे आगे भी खेलना पड़ता है ।

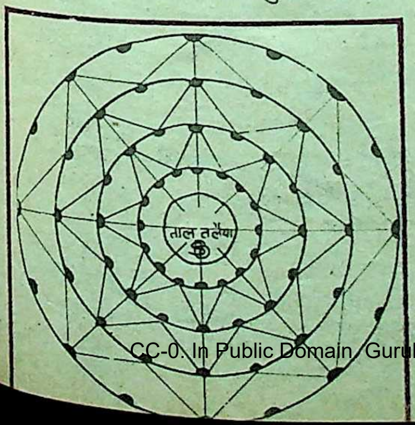

ताल तलैया—लूडो

यह लूडो तालाभ्यास का रोचक खेल है । इस खेल में भारतीय संगीत की प्रचलित मात्राओं की संख्या के संकेत दर्शाये गये हैं । एक समान मात्रा के अनेक ताल हिंदुस्तानी संगीत-पद्धति में प्रचलित हैं, जब किसी खिलाड़ी की गोटी उस मात्रा पर पहुंच जाती है तो उसे किसी ताल को उसे सुनाना होता है । इस प्रयास में वह विफल हो जाए तो उसकी गोटी पीछे धकेल दी जाती है । इस खेल को अधिकतम ६ खिलाड़ी खेल सकते हैं । यह खेल समान मात्राओं के ताल को याद रखने के लिए उपयोगी है ।

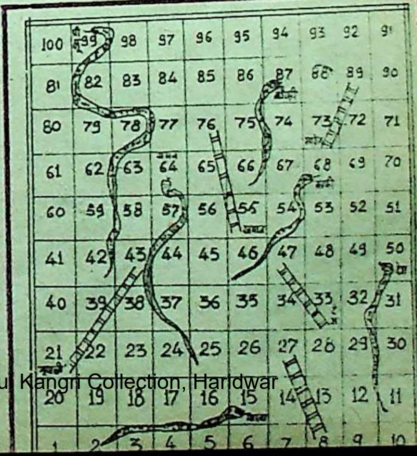
100 99 98 97 96 95 94 93 92 91
81 82 83 84 85 86 87 88 89 90
80 79 78 77 76 75 74 73 72 71
61 62 63 64 65 66 67 68 69 70
60 59 58 57 56 55 54 53 52 51
41 42 43 44 45 46 47 48 49 50
40 39 38 37 36 35 34 33 32 31
21 22 23 24 25 26 27 28 29 30
20 19 18 17 16 15 14 13 12 11
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

इसमें जो स्वर जुड़े हुए हैं, वे जोड़ीवाले हैं । जिन स्वरों के नीचे रेखा है, वे कोमल स्वर हैं । जिन स्वरों के ऊपर खड़ी रेखा है, वे तीव्र स्वर हैं जिनके ऊपर कोई चिन्ह नहीं है वे शुद्ध स्वर हैं ।

नृत्य गतियों का खेल

यह सांप-सीढ़ी सदृश्य खेल है । इसमें प्रचलित नृत्य गतियों के संकेत दिये गये हैं, जिनके नामों के कार्ड अलग से रखे जाते हैं । जब किसी खिलाड़ी की गोटी किसी गति पर पहुंच जाती है, तो उसे उसका नाम बताना होता है । अगर वह इसमें सफल हो जाए तो वह गति का कार्ड जीत सकता है । नाम न बताने पर उसे कोई लाभ नहीं मिलेगा । जो सर्वाधिक कार्ड जीत जाता है, वह सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी कहलाता है ।

राग बनाओ खेल

भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख रागों की सरल व सुगम जानकारी के लिए यह उत्कृष्ट खेल है । इसमें एक गोल बोर्ड के बीच में प्रमुख रागों का गोल घेरा बना है, इसके केंद्र में एक चक्री है । इस घेरे के बाहर ६ अन्य अर्द्धगोलाकार घेरे हैं, जो रागों के आरोह, अवरोह, वादी-संवादी, जाति, समय, पूर्वांग-उत्तरांग निधाररित् करने में काम आते हैं । इसे छः खिलाड़ी खेलते हैं । उसमें निर्णायक चक्री को घुमाकर खेल का प्रारंभ होता है । चक्री जिस राग पर ठहरती है, पहला खिलाड़ी अपने ठेरे में उसका आरोह तैयार करता है, अगला खिलाड़ी उसका अवरोह बनाता है । वह अगर चाहे तो अपने चातुर्य से उससे मिलती-जुलती अन्य रागों में परिवर्तन भी कर सकता है । बाकी चार खिलाड़ी आरोह-अवरोह से बने राग का वादी संवादी, जाति, समय, पूर्वांग, उत्तरांग दर्शाते हैं । इस खेल को रागों की समान्य जानकारी रखनेवाला भी खेल सकता है ।

मेल बनाओ खेल

इस यंत्र में पूर्वांग के शुद्ध मध्यम में ६ कार्ड तथा उत्तरांग के ६ कार्ड रखे गये हैं, जिनमें ३६ मेल (थाटों) की रचना आसानी से समझायी जा सकती है । इसी प्रकार तीव्र मध्यम के पूर्वांग के ६ कार्ड तथा उत्तरांग के ६ कार्ड भी शामिल हैं जिनसे शेष ३६ मेलों की रचना भी की जा सकती है । यंत्र में पूर्वांग, उत्तरांग के क्रमानुसार स्वर निर्धारित एवं मेल रचना के सिद्धांतों को संक्षेप में तथा सरल ढंग से दर्शाया गया है । इस यंत्र में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है । संगीत के ७२ थाटों की रचना बनाने व समझने में यह उपयोगी खेल है ।

भारतीय संगीत के लिए बहुपयगी यह खेल तेजी से लुप्त हो रहे हैं और मात्र श्री संगीत भारती बीकानेर में सीमित रह गये हैं । भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए इन खेलों को समुचित संरक्षण व प्रोत्साहन दिया जाना आवश्यक है, तभी संगीत की जटिल प्रणाली मनोरंजक बन सकेगी ।

—मोहल्ला चूनगरान,
बीकानेर-३३४००५ (राज.)

कहानी

मेरी देहाती बीवी न प्रेम जाने न आशनाई

● परिपूर्णानंद वर्म्मा

वकालत तो मेरे पिताजी करते थे । वही पेशा मैंने भी अपनाया है । फर्क इतना है कि पिताजी की हर अदालत में कद्र होती थी । बड़े विनम्र ढंग से वे मैजिस्ट्रेट या जज के सामने पैरवी करते थे । पर, मैं बदले जमाने का वकील हूं । वकालत चलती न हो, पैरवी करनी न आती हो तो अदालत से भिड़ जाना, अदालत में गुंडई करना, हड़ताल कराना, जजों के खिलाफ नारा लगवाना, यह सब मुझे आता था इसीलिए हरेक अदालत मुझसे घबराती थी और मैं भी अदालती गुंडई की रोटी खाता था ।

पर सच तो यह है कि घर का खर्च भी चलना मुश्किल था । यदि मेरी शादी शहर के पास के गांव न हुई होती—दहेज भी खूब मिला था ससुराल में अच्छी खेती थी, गल्ला, घी, साग, सब्जी बराबर आता रहता था । पुराने जमाने के श्वसुर तो दामाद की कद्र करते थे । पत्नी भी बड़ी भोली, सुंदर मिली पर शुद्ध देहाती । किसी प्रकार रामायण तो पढ़ लेती थी । आजकल की माडर्न पत्नियों की तरह न तो शाम को टेनिस खेलने जाती थी और न रसोईघर या नौकरानी का भार मुझ पर छोड़कर क्लब जाती थी और न रात को परिवार नियोजन पर मुझे उपदेश देती थी । जब सूर्य ग्रहण की लगने की सूचना मिली तो उसने मेरे इस कथन को माना ही नहीं कि चंद्रमा की छाया लगी है । उसका देहाती विश्वास था कि 'गरहन' में राहु सूर्य को निगल जाएगा । कुछ घंटे कष्ट उठाकर वे उसके शरीर रहित गले से निकल पाएंगे । हरेक हिंदू का कर्त्तव्य है कि गरहन के समय गंगा स्नान कर भगवान से सूर्य का कष्ट दूर करने की प्रार्थना करें । सूर्य ग्रहण लगते ही हम गंगा तट पर पहुंच गये । घाट किनारे स्नान का संकल्प करानेवाले तथा दक्षिणा लेनेवाले पंडितजी, जिन्हें हम 'घाटिया' कहते थे, लंबा टीका लगाये इतने विद्वान अवश्य थे कि 'मंगलम् भगवान विष्णु मंगलम् गरुड़ाध्वजम्' को 'घुड़ोजनम' कहते थे । पर इतना ही नहीं । मैंने देखा और मेरी पैनी निगाहों में यह भी साफ था कि घाटिया जी युवती स्त्रियों को संकल्प कराते समय हाथ पर जल रखते तथा दक्षिणा लेते हाथ दबा देते थे । कोई युवती मुसकराकर रह जाती, कोई झिटककर हाथ खींच लेती पर बोलती कोई नहीं थी । जब मेरी स्त्री की बारी

आयी तो वह देहाती मूर्ख चिल्ला पड़ी—

"ई का करत हो, हाथ काहे दबावत हो ?"

जब तक मैं कुछ कहता इस दृश्य को देखनेवालों को इस चीख से मौका मिल गया । कई टूट पड़े—"मारो इस पतित को । बहू-बेटियों को छेड़ता है"—और घाटियाजी पर कितनी मार पड़ी, मैं नहीं कह सकता । मैं अपनी पत्नी को लेकर चल पड़ा ।

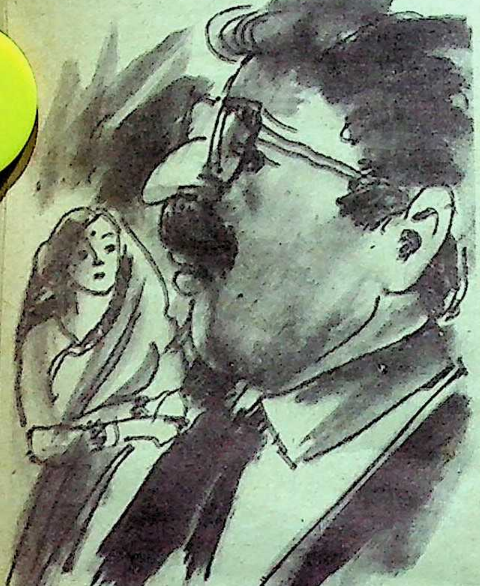

बिना मंदिर में दर्शन किये न गंगा स्नान पूरा हो सका, न गरहन का दोष जाता । शहराती पढ़ी-लिखी बीवी होती, तो इस समय या तो सोती होती, या चाय-पार्टी में होती या अपने पति से किसी राजनीतिक मामले पर बहस कर रही होती । हम मंदिर की गली में पहुंचे । गरहन के समय विग्रह तक के पट बंद रहते हैं, यह ध्यान न रहा । लंबी कतार दर्शन की प्रतीक्षा में खड़ी थी । हम भी लाइन में लग गये । मेरी स्त्री के पीछे एक बड़े भक्त पुजारीजी झारी-पीतल की डोलची में पूजन की सामग्री लिये खड़े थे । यकायक पीछे की भीड़ में रेला आया । रेले को ढकेलकर मैं आगे आया तो मेरी पत्नी उस पुजारी का हाथ पकड़े चीख रही थी— "हमारी छाती पकड़े थे । तुमको मां-बेटी है या नहीं"—फिर एक तहलका मचा । किसी ने ऐसा हाथ जड़ा कि उनकी टोकरी एक तरफ और वे दूसरी तरफ ! मैं घबरा गया । बे-पढ़ी जवान बीवी भी एक मुसीबत है । बाज आया दर्शन से । मैं उसे खींचकर घर ले चला । थक गया था । भूख लग आयी पर विज्ञान की दृष्टि से जो मना है, वही धर्म की दृष्टि से मना था । गरहन के बाद भोजन बनेगा । एक प्याला चाय से काम चला

प्रदेशभर की वेश्याओं, दुश्चरित्र स्त्रियों तथा सरकारी आश्रम की निदेशिका हमारी वही सुमीता देवी हैं जो समाज कल्याण विभाग में एक निदेशिका हैं । पब्लिक सर्विस कमीशन से चुनकर आयी हैं । बड़ा रौब है उनका । चरित्र-निर्माण पर वे सार्वजनिक संस्थाओं में भाषण देने के लिए बुलायी जाती हैं । रामधन से ही उनकी बचपन में शादी हुई थी । यह पता लगते ही उसे नौकरी से निकाल दिया था । वह ठेला या बोझा ढोकर पेट चला रहा है । देवीजी कार से नीचे पैर भी नहीं रखती हैं ।

लो ।

हम दोनों थक गये थे । बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गयी ।

बाहर से आवाज आयी—वकील साहब ! नींद और भूख दोनों के चपेट में यह व्याघात बुरा तो लगा पर बाहर जाना ही पड़ा, वही पिटनेवाले घाटियाजी खड़े थे । बड़े परेशान थे । दुःखी थे । कथा यों थी कि उनकी एम.ए. की छात्रा लड़की अपनी माता के संग गरहन नहाने गयी थी । दोनों ने एक समय पानी में डुबकी लगायी पर जब मां ने ऊपर उठकर देखा तो लड़की लापता । जहां स्नान कर रही थी वहां तो इतना गहरा भी नहीं था कि एक कुत्ता भी डूब सके । आखिर लड़की गयी कहां ! वह तो तैरना भी जानती थी । नाचना, गाना, व्याख्यान देना—सब में बड़ी गुणी । वह गयी कहां ! थाने पर रपट लिखाने गये तो पुलिसवाले बदमाश हंसने लगे । और बोले—"अरे मियां, पढ़ी-लिखी है । किसी यार के संग भाग गयी होगी ।" घाटियाजी रूंधे गले से बोले :—

"सरकार, बचपने में शादी-विवाह कर दिया है । भला अभी तो गौना भी नहीं हुआ है । तारीख पड़ती गयी और वही राजी न थी । आप तेज वकील हो । पुलिसवालन से जूझ सकत हो..."

मैं सोच रहा था कि दाल में कुछ काला है । पर सामने बीस के रुपये ने मन मोड़ दिया । कहां घर बैठे-ठाले में मेरे-जैसे वकील को कोई पूछता है । मैं थाने चला ।

रिक्शा की तलाश ही कर रहा था कि मेरे मित्र तथा कॉलेज के मेरे सहपाठी प्रोफेसर साहब मिल गये । बड़े घबराये, परेशान । मुझे देखते ही दौड़ पड़े और जैसे चिपट गये ।

"मैं तुम्हारे यहां ही जा रहा था । बड़ी मुसीबत में फंस गया हूं ।" हांफते-हांफते वे कह गये ।

उनकी छात्रा सुमीता से उनका प्रेम हो गया था । इस संबंध में कई बार उसने कहा कि भाग चलो पर मैं नौकरी छोड़कर कहां जाता । फिर मुझे बीवी है, दो बच्चे हैं । मैं भला उन्हें कैसे छोड़ सकता हूं । पर वह तो मेरे पीछे दीवानी थी । थोड़ा-बहुत तो मैं भी । पर आज वह गंगा नहाने मां के संग गयी और घाट से ही बुत्ता देकर मेरे यहां भाग आयी है । मेरी पत्नी बच्चों को लेकर मायके गयी हैं । आजकल में आनेवाली है । मैं बड़ा परेशान हूं कि क्या करूं । तुम मेरे मित्र हो । सुमीता को अपने घर में रख लो । बाद में प्रबंध हो जाएगा ।"

मैं उछल पड़ा ।

"क्या कहते हो ! मेरी देहाती बीवी न प्रेम जाने न आशनाई । वह तहलका मचा देगी । ना बाबा..."

मैं थाना भी नहीं गया । घर की ओर मुड़ गया ।

युग बीत गये । मेरी देहाती पत्नी भी बूढ़ी हो गयी पर उसने सुबह उठकर मेरा चरण-स्पर्श करना जारी रखा । मुझे कभी हंसी भी आ जाती थी । मैंने अपने मित्र रमेश की पढ़ी-लिखी पत्नी को एक बार रमेश से कहते सुना था—

"डार्लिंग, जरा मेरी चप्पल उस कमरे से ला दोगे । मैं सुबह की मीटिंग में बहुत थक गयी हूं ।"

"ओह यस" कहकर प्रसन्नवदन दूसरे कमरे की ओर रमेश बढ़ गया था । मेरी वकालत

दिन-ब-दिन गिरती गयी । अब मुझसे भी ज्यादा उद्दंड गुंडे वकील और उससे भी बढ़कर घूसखोर तथा शरारती कर्मचारी मैदान में आ गये थे । यह तो कहिए कि मेरे सास-ससुर के मर जाने पर भी मेरे किसान साले तथा सरहज ने उनका क्रम जारी रखा । देहात के गल्ला से खाना-पीना चल जाता था ।

प्रोफेसर साहब दिन-ब-दिन आगे बढ़ते गये । विद्या में, चरित्र में, आचरण में उनका यश बढ़ता गया । पत्नी के आने के पहले ही वे अपने एक सहयोगी विधुर अध्यापक के क्वार्टर में सुमीता को रख देने में सफल रहे पर वे यह पुराना सिद्धांत भूल गये थे कि—"दारा-पुस्तक लेखनी पर हस्ते गता गता ।" यानी स्त्री, पुस्तक और लेखनी दूसरे के हाथ गयी तो फिर वापस नहीं आती । डंडेबाजी तो नहीं हुई, पर काफी झगड़ा होने पर भी सुमीता को वे प्राप्त न कर सके । उसने यूनिवर्सिटी की अंतिम परीक्षा भी पास कर ली । आजकल हमारे यह चरित्रवान प्रोफेसर साहब इस विश्वविद्यालय के कुलपति हैं—वाइस चांसलर तथा चरित्र निर्माण पर बड़ा अच्छा भाषण देते हैं । वह विश्वविद्यालय के छात्रों को छोड़कर और किसी से नहीं डरते हैं ।

दो-तीन दिन पहले जो घटना हुई उसने मेरे शरारती दिमाग को भी गोल कर दिया । रामधन समाज कल्याण विभाग में चपरासी था । वह कई बार घाटियाजी के यहां गया यह पूछने कि बचपन में जिस लड़की से उसकी शादी हुई थी वह कहां है, कब गौना होगा ! घाटियाजी कहकर टालते रहे कि परदेश पढ़ने गयी है । वापस आते ही उसका घर भर देगी । कई बरस बीत गये—घाटियाजी भी मर गये । उनकी बीवी यानी अपनी सास से वह एक दिन भिड़ गया ।

"नहीं पता चले न सही । मुझे मुक्ति दो । मैं भी अपनी दूसरी शादी कर गृहस्थी बसाऊं । एक औरत के रहते दूसरी शादी कर लूं तो सरकारी नौकरी चली जाएगी ।"

बूढ़ी सास सुनती रही । शायद उसे अपनी बेटी का खयाल आ गया । उसने आंसू पोंछ लिये । रामधन ने निराश होकर अपने अफसर से सलाह करना ठीक समझा । वह बड़ी तेज-तर्रार-सांचे में ढली-समाज कल्याण विभाग के अनैतिक व्यापार अधिनियम-इम्मारेलट्रौफीक ऐक्ट विभाग की निदेशक थीं । रामधन ने उन्हीं से पूछा कि उसकी शादी स्थानीय घाटियाजी की पुत्री से चार-पांच वर्ष की उम्र में हुई थी । तब से बराबर कहने पर भी गौना नहीं हुआ तो क्या वह उस स्त्री को मरा समझकर दूसरी शादी कर ले तो नौकरी पर तो आंच नहीं आएगी । निदेशक महिला ने गौर से उसकी ओर देखा— उसके गांव का पता-वगैरह नोट किया तथा न जाने क्यों तीन दिन बाद उसकी अस्थायी नौकरी समाप्त कर दी । दोष लगाकर कि वह कामचोर है । एकदम अस्थायी सेवा, एक महीने की तनख्वाह दिला दी । अब वह बेचारा तबाह हो रहा है । किसी ने सलाह दी कि चार्जशीट नहीं निकली है । वह मुझसे मिले । तभी मेरे पास आया था । पता नहीं क्यों, बिना फीस लिये मैं इस मामले में दिलचस्पी ले बैठा ।

— ४ एल.आर. बंगला
कालपी रोड
कानपुर-२०८०१२

पच्चीस सैनिक — पांच सवार

संवत १७२८

अठारह दिनों के सारे प्रयत्नों पर पानी फिर गया था । वे एक स्वप्न, एक संकल्प लेकर अपने बड़े भाई रतनशाह के पास विजौरी आये थे, लेकिन बड़े भाई ने उनकी योजना में शामिल होने से न केवल असमर्थता व्यक्त की वरन उससे अपनी असहमति भी जतायी ।

कहा, 'छत्रसाल, दिल्लीपति के विरुद्ध विद्रोह का खयाल मन से निकाल दो । आलमगीर बादशाह गाजी औरंगजेब के पास शक्तिशाली सेना है । एक से बढ़कर एक बहादुर सरदार हैं । आलमगीर कूटनीति में भी निपुण हैं । तुम अपने सर्वनाश पर तुले हो । तुम्हारा साथ देने का अर्थ होगा अपने भी सर्वनाश को न्यौता देना । नहीं, मैं तुम्हारी किसी भी योजना में शामिल नहीं होऊंगा ।'

छत्रसाल बड़ी उम्मीद लेकर अपने बड़े भाई के पास आये थे । पर सारी आशाएं ध्वस्त हो चुकी थीं !

छत्रसाल की आंखों में रह-रहकर अतीत के कुछ दृश्य बिजली की तरह कौंध रहे थे ।

उनके पिता चंपत राय ने सहरा के राजा इंद्रमणि धंधेरे को शाहजहां के जमाने में कारागार से मुक्ति दिलाने में मदद की थी और जब रानगिर (सागर) के जंगलों में मुगल सरदार बाकी खां के साथ हुए युद्ध में वे घायल हो गये तो अपनी पत्नी लाल कुंवरि और नन्हें बेटे छत्रसाल के साथ निरापद स्थान की खोज में निकल पड़े थे । राजा इंद्रमणि से उन्हें बहुत आशा थी और सहरा के मार्ग में ही उससे उनकी भेंट हो गयी थी । इंद्रमणि ने चंपत राय का स्वागत भी किया था, लेकिन शत्रु उनके पीछे लगे हुए थे । उन्हें चकमा देकर चंपत राय पत्नी और बेटे के साथ एक नाला पार कर गये । लेकिन इंद्रमणि समय पर नाला न पार कर पाया और शत्रुओं ने उसे घेर लिया । इंद्रमणि वीरगति को प्राप्त हुआ ।

उदास चंपत राय सपरिवार सहरा पहुंचे थे, लेकिन उन्हें शीघ्र ही अहसास हो गया कि सहरा के लोग ऊपरी तौर पर भले उनके स्वागत-सत्कार और कृतज्ञता-ज्ञापन में लगे हों, लेकिन अवसर पाकर वे उन्हें मुगलों को देने की योजना भी बना रहे हैं । चंपत राय चिंतित हो उठे । अंततः अपने बेटे छत्रसाल को उन्होंने मामा के पास चले जाने के लिए कहा । मां लाल कुंवरि ने भी बेटे को समझाया कि उसका यहां से समय रहते निकल जाना ही ठीक है । एक दिन छत्रसाल मामा के पास जाने के लिए निकल पड़े ।

छत्रसाल के जाने के तत्काल बाद चंपत राय ने भी पत्नी के साथ नये आश्रय स्थल की खोज में सहरा छोड़ दिया । धंधेरे राज्य के सैनिक प्रत्यक्षतः तो उनकी सुरक्षा के लिए साथ चल रहे थे, पर असल में उनकी मंशा कुछ और

थी । वे चंपत राय और लाल कुंवरि को बंदी बना लेने की फिराक में थे । उनके षड्यंत्र का अहसास होते ही लाल कुंवरि ने विष खा लिया । वह जीते-जी किसी की बंदी नहीं बनना चाहती थी । उसने पति को भी वही संकेत किया ।

छत्रसाल का संकल्प

छत्रसाल को बाद में जब यह सब पता चला तो उनका हृदय प्रतिशोध की भावना से भर उठा । उन्होंने संकल्प किया वे सहरा के धंधेरों से इस विश्वासघात का बदला अवश्य लेंगे ।

छत्रसाल को बाद में जब यह सब पता चला तो उनका हृदय प्रतिशोध की भावना से भर उठा । उन्होंने संकल्प किया वे सहरा के धंधेरों से इस विश्वासघात का बदला अवश्य लेंगे ।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, छत्रसाल युवा होते गये और उनका संकल्प भी दृढ़ से दृढ़तर होता चला गया । वे अपने शौर्य का प्रदर्शन करना चाहते थे ताकि आगे चलकर लोगों को संगठित कर सकें ।

उन्हीं दिनों शिवाजी को 'सबक' सिखाने के लिए औरंगजेब ने आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह को नियुक्त किया था । मिर्जा राजा जयसिंह से छत्रसाल मिले । उसे अपना परिचय दिया । मिर्जा राजा जयसिंह चंपत राय को जानते थे । उन्हें यह भी पता था कि औरंगजेब चंपत राय से बेहद खफा था । शाही कोप शांत हो जाए, इसलिए मिर्जा राजा जयसिंह ने छत्रसाल को दिलेर खां रोहिल्ला की सेना में भरती करा दिया । उसकी फौज में रहकर छत्रसाल ने देवगढ़ के युद्ध में अपने शौर्य का प्रदर्शन भी किया, पर उन्हें मिला क्या, प्रशंसा-सराहना की बजाय दिलेर खां से उपेक्षा—अपमानभरी उपेक्षा !

छत्रसाल का मन खिन्न हो उठा । उन्हें स्वयं पर खीज भी आयी, 'क्यों शाही सेवक बनने का विचार मन में आया । बस, अब कभी नहीं ! अब किसी की नौकरी नहीं ! कम-से-कम मुगलों की सेवा तो कभी नहीं । पर किससे मार्गदर्शन प्राप्त करें, किससे सहायता लें !'

शिवाजी से मदद

सहसा उन्हें शिवाजी का ध्यान आया। आलमगीर गाजी बादशाह औरंगजेब को यदि कोई हिला पाया था तो शिवाजी ही थे । छत्रसाल ने शिवाजी से मिलने का निश्चय कर लिया ।

वे अपनी पत्नी देव कुंवरि और कुछ विश्वस्त साथियों के साथ शिवाजी से भेंट करने चल पड़े । पर यात्रा इतनी आसान न थी । जगह-जगह मुगल चौकियां थीं, सिपाही थे । फिर मुगलों के खैर-ख्वाह राजा, सरदार थे । फिर मार्ग भी तरह-तरह के खतरों से भरा हुआ था । बीहड़ वन प्रांतर—हिंस्र पशुओं से भरा हुआ ।

लेकिन यात्रा तो करनी ही थी । कोई और विकल्प भी नहीं था ।

छत्रसाल एक रात दक्षिण की यात्रा पर निकल ही पड़े ।

रास्ते में उन्हें भीमा और कृष्णा नदी पार

करनी पड़ीं । बरसात के दिन थे । दोनों नदियां बाढ़ से उफना रही थीं । छत्रसाल ने पत्नी और सहयोगियों के साथ किसी तरह दोनों नदियां पार कीं और शिवाजी से भेंट के लिए पहुंचे ।

छत्रप्रकास में उल्लेख

अपनी प्रसिद्ध कृति 'छत्रप्रकास' में कवि लाल ने छत्रसाल और शिवाजी की भेंट का वर्णन इस प्रकार किया है :

दोहा :
सिवा किसा सुनि के कही, तुम छत्री सिरताज
जीति अपनी भुंम कौ, करौ देश कौ राज

दोहा :
राखि हिए ब्रजनाथ को हाथ लेऊ करवार
ये रक्षा करिहैं सदा, यह जानो निरधार
चौपाई :

……

……

तुम हौ महावीर मरदाने, करिहौ भूमि भोग हम जानै

……

यह कहि तेग मंगाइ बंधाई, वीर बदन दूनी दुति आई

दोहा :
आदर सौं कीन्हो बिदा, सिवा भूप सुख पाइ
मिली मकौ उर उगग में, भूमि भावती आई

शिवाजी ने छत्रसाल का स्वागत किया । उनका उत्साह बढ़ाया । औरंगजेब के विरुद्ध अपने विद्रोह की भूमिका समझायी । कहा कि इस विद्रोह को अब व्यापक बनाना है, अपने प्रदेश में जाकर मुगलों से मोरचा लो और विजय पाओ ।

चौपाई :
करौ देस को राज छतारे, हम तुम तैं कबहूं नहिं न्यारे
दौरि देस मुगलन के मारो, दबरि दिली के दल संहारो

तुरकन की परतीत न मानौ, तुम के हरि तुरकन गज जानौ

तुरकन में न बिबेक बिलोक्यो, मिलन गये हमकौ उन रोक्यौ

हमको भाई सहाई भवानी, भय नहिं मुगलन की मनमानी

छलबल निकसि देस में आये, अब हम पै उमराइ पठाये

हम तुरकनि पर कसी कृपानी, मारि करैंगे कीचक घानी

तुमहूं जाइ देस दल जोरौ, तुरकि मारि तरवारिन तोरौ

शिवाजी ने छत्रसाल का स्वागत किया । उनका उत्साह बढ़ाया । औरंगजेब के विरुद्ध अपने विद्रोह की भूमिका समझायी । कहा कि इस विद्रोह को अब व्यापक बनाना है, अपने प्रदेश में जाकर मुगलों से मोरचा लो और विजय पाओ ।

छत्रसाल का अभिषेक

शिवाजी ने छत्रसाल का विद्रोही सरदार के रूप में अभिषेक किया । उनकी कमर में अपनी हाथों से 'भवानी' तलवार बांधी ।

● ● ●

वही तलवार इस समय छत्रसाल की कमर में बंधी थी । वह उन्हें सतत् अपने संकल्प की याद दिलाती थी ।

शिवाजी से भेंट के उपरांत छत्रसाल अपने

ही कुल के बुंदेले राजा शुभकर्ण से मिले थे । पर उसने उन्हें निराश किया । फिर वे ओरछा के राजा सुजान सिंह से मिले । राजा सुजान सिंह ने उनकी योजना में शामिल होने में असमर्थता तो व्यक्त की, पर असहमति नहीं । सुजान सिंह ने भी उन्हें एक तलवार भेंट की ।

वहां से वे अपने चचेरे भाई बल दीवान से मिलने गये । बल दिवान नौरंगाबाद (औरंगाबाद) में शाही सेना में नियुक्त था । उसने छत्रसाल का न केवल उत्साहवर्धन किया, वरन युद्ध में साथ देने का भी वचन दिया ।

संवत १७२८ में छत्रसाल ने पांच सवार और पच्चीस पैदल सैनिकों को संगठित कर 'आलमगीर बादशाह गाजी औरंगजेब' के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया । इन्हीं सैनिकों के साथ छत्रसाल अपने बड़े भाई रतन शाह के पास सहायता मांगने आये । पर बड़े भाई ने उन्हें निराश किया । उदास मन छत्रसाल पुनः बल दीवान के पास पहुंचे और दोनों भाइयों ने और किसी की राह न देख मुगलों के समर्थक सरदारों पर हमला करने की ठान ली ।

छत्रसाल अपने पिता का बलिदान भूले नहीं थे । सबसे पहले उन्होंने सहरा के धंधेरों पर हमला किया ।

युद्ध की बारीकियां समझायीं

धंधेरों ने पहले तो उनका सामना किया, पर शीघ्र ही पराजित हो उन्होंने उनसे क्षमायाचना कर ली । छत्रसाल दूरदर्शी थे । वे नहीं चाहते थे कि धंधेरे भी प्रतिशोध की आग में जंलते रहें । उन्होंने उनके परिवार की एक कन्या से विवाह कर शत्रुता को सदा-सदा के लिए समाप्त कर दिया ।

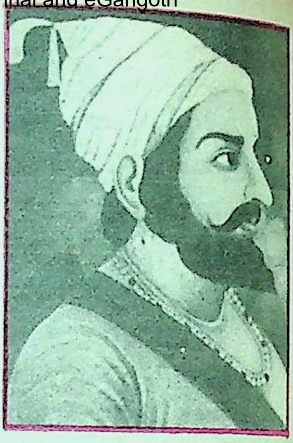

छत्रसाल के संकल्प का एक अंश पूरा हो चुका था ।

अब मुगल सम्राट की बारी थी ! वही उनके पिता का वास्तविक शत्रु था । उसी की नीतियों के फलस्वरूप उनके पिता चंपत राय और मां लाल कुंवरि को असमय ही प्राण त्यागने पर विवश होना पड़ा था ।

शिवाजी ने छत्रसाल को छापामार युद्ध की बारीकियां समझायी थीं । जब शत्रु प्रबल हो तब उससे सीधे लोहा लेना आत्मघाती होता है । पर इसका अर्थ यह नहीं कि चुपचाप बैठा जाए । न स्वयं चुपचाप बैठो, न शत्रु को चैन से बैठने दो । हमला करो । संगठन के लिए धन एकत्र करो । अपने बाहुबल से मुगलों के स्थानीय प्रशासकों को 'चौथ' देने के लिए विवश करो । धीरे-धीरे अपने प्रभाव का, प्रदेश का विस्तार करो । मजबूत बनो !

छत्रसाल ने यही मार्ग अपनाया ।

सहरा से छत्रसाल ने उत्तर-पूर्व की ओर बढ़कर मालवा प्रदेश के विदिशा और सिरोंज के शाही इलाकों पर हमला बोला ।

इस इलाके का फौजदार मुहम्मद हाशिम था । छत्रसाल के आक्रमणों को वह झेल नहीं पाया । छत्रसाल ने शाही संपत्ति लूटी और फिर वे दक्षिणी बुंदेलखंड की ओर बढ़े । यहां धामौनी इलाका मुगलों के आधीन था । औरंगजेब ने वहां खालिक को फौजदार तैनात किया था । मुहम्मद हाशिम की तरह खालिक भी छत्रसाल का सामना न कर पाया ।

दो मुठभेड़ों में छत्रसाल ने उसे बुरी तरह हराया । खालिक को जान के लाले पड़ गये । अंततः उसने प्राणरक्षा के लिए छत्रसाल को तीस हजार रुपये दंड देना स्वीकार किया ।

छत्रसाल को लगा, जैसे उन्होंने औरंगजेब को हराया है । खालिक उसी का तो प्रतिनिधि था ।

पांच घुड़सवारों और पच्चीस सैनिकों के साथ छत्रसाल ने जो अभियान शुरू किया था, अब वह निरंतर सफलता की ओर बढ़ रहा था । छत्रसाल की सेना का विस्तार भी हो रहाथा। बुंदेले वीर उनकी सेना में शामिल होना अपना गौरव समझ रहे थे ।

● ● ●

समय बीतता रहा ।

छत्रसाल एक अजेय शक्ति बनते गये । उनका विधिवत राजतिलक किया गया । अब वे एक ऐसे राजा थे, जिनकी वीरता की चारों ओर धाक थी । औरंगजेब भी उनसे परेशान हो उठा था । उसकी मौत के बाद बहादुरशाह दिल्ली के तख्त पर बैठा । वह छत्रसाल के साथ निरंतर शत्रुता की पिता की नीति की निस्सारता समझ चुका था ।

उसने छत्रसाल की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया ।

छत्रसाल का संकल्प अब पूरा हो चुका था । अब वे मुगल सम्राट के अधीन नहीं थे । अब उससे उनका बराबरी का व्यवहार था ।

प्रस्तुति : दु. प्र. शु.

हंसिकाएं

शिक्षिता

बेटी हिंदुस्तान की,
"रामायण तो पढ़ लेती है
महाभारत नहीं जानती"

श्रम

श्रृंगारकाल में नारी के
नख-शिख वर्णन को उछाल रहे थे
कवि थे या कोल्हू के बैल
तिलों से तेल निकाल रहे थे ।

अवश

वह बोली
टीका कुंकुम बिंदी रोली
रोली न थी इसीलिए रो 'ली'

वाहन

लक्ष्मीजी की चरणधूलि भी चंदन
वरदायिनी के कारण
उल्लुओं का भी होता रहा अभिनंदन

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

ताड़ी न पीयें

विजयकुमार कर्ण, हंसपुरा : २० वर्ष का छात्र हूं। सब कुछ खाते हुए भी दुबला-पतला हूं। कुछ मित्रों के कहने पर मैंने ताड़ी पीना आरंभ कर दिया है, ताकि शरीर का विकास हो सके। कृपया बतायें कि मोटा होने के लिए ताड़ी पीना सही है कि नहीं ?

आपने यह सही नहीं किया। ताड़ी में शराब है जो कि आपको नशा का आदी बना सकती है। उसमें कोई भी पौष्टिक तत्त्व नहीं है। हमारी सलाह से आप ताड़ी छोड़ अपना ध्यान केवल संतुलित तथा पौष्टिक आहार व व्यायाम आदि पर ही रखें। फिर भी मोटे न हों तो इस बारे में चिंता न करें, न ही अपना वजन बार-बार तोलें। चिंता से समस्या और बढ़ती है। आप धीरज से काम लें। वास्तव में मोटापा भी एक बीमारी है। आप यदि चुस्त हैं तथा रोगों से दूर रहते हैं, तब सब सही है। व्यर्थ में कुंठा न पालें, न ही किसी व्यसन का सेवन करें। ताड़ी पीना एक गलत कदम की ओर बढ़ना है।

पागलपन

अ. सिंह, श्रीनगर गढ़वाल : २१ वर्षीय एम.एस-सी. का छात्र हूं। अधिक समय पढ़ाई व दिमागी कार्य में गुजरता है। दो-तीन वर्ष से सिर-दर्द, चक्कर, दिल घबराना, बेचैनी, उदासी आदि होने लगी। दवा लेने पर ठीक हो जाती थी। अब कुछ माह से डर बैठ गया है कि अवश्य ही मैं पागल हो जाऊंगा। जब भी बाहर किसी पागल व्यक्ति को देखता हूं, तब अनेक चेहरे आंखों के सामने घूमने लगते हैं। डरता हूं पागलों-जैसी हरकत न कर बैठूं। मन में बैठ गया है कि अंतर्मुखी लोग व अधिक पढ़नेवाले लोग पागल हो जाते हैं। इसलिए पढ़ाई की ओर उदासीन हो गया हूं। क्या यह सिर्फ वहम है या मैं वाकई में पागल हो जाऊंगा ?

पागल शब्द अब मनोवैज्ञानिक पद्धति में प्रयोग नहीं होता। वास्तव में पागलपन शब्द आम भाषा में किसी भी व्यवहार को जो अलग से, हटकर हो, कह दिया जाता है। हमने देखा है कि लोग मंद-बुद्धि के हों, अथवा लकवा मार गया हो, उन्माद रोग से पीड़ित हों, उदास हों या स्कीजोफ्रेनिया से या फिर बुढ़ापे में स्मृति क्षीण हो गयी हो, सभी के लिए इस्तेमाल किया जाता है। वास्ताव में इन सब रोगों के कारण भिन्न-भिन्न होते हैं। केवल किसी ऐसे रोगी को देखभर लेने से कोई रोग नहीं होता। यह कोई छूत का रोग भी नहीं। वास्तव में आप में विपरीत सोच व हीन-भावना घर कर गयी है। हमेशा हर-कोई अपने से अच्छे व्यक्ति की पहचान की छाप मन में रख अपने आपको वैसा बनाना चाहता है। आपको भी अच्छे लोगों का ही ध्यान रखना चाहिए। 'डर' भी एक ऐसी मानसिक स्थिति है, जिस पर काबू पाना चाहिए। आप चाहकर भी पागल नहीं हो सकते। हां, अपने को डर, तनाव व उदासीनता से उबारें। यदि आवश्यकता हो तो मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ की सलाह लें।

मन नहीं लगता

के. रा., कुक्षीधार म.प्र. : ४५ वर्ष की आयु है, न्यूजपेपर एजेंट हूं। २,००० रुपये प्रतिमाह पाता

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

हूं । दो वर्ष से, हर समय सुबह, दोपहर, शाम को सुस्ती बनी रहती है । पत्र, पत्रिका पढ़ते हुए, लिखते हुए एवं बस में सफर करते समय नींद आ जाती है । डॉक्टरों ने किसी प्रकार की कोई कमी व बीमारी नहीं बतायी । कार्य में मन नहीं लगता, बाध्य होकर करता हूं । कृपया कोई योग्य मार्ग बतायें ।

हम आपके डॉक्टरों की राय से कतई सहमत नहीं कि यह कोई रोग नहीं । हम यह बता देना चाहते हैं कि पहली बार जब कोई भी तकलीफ चालीस वर्ष की आयु के पश्चात नजर आये तो डॉक्टर को उसे गंभीरतापूर्वक लें, डॉक्टर से उसकी पूरी जांच-पड़ताल करवानी चाहिए । कार्य करते-करते नींद आना भी एक बीमारी होती है । आपको किसी अच्छे स्नायु विशेषज्ञ को दिखाना चाहिए । उदासीनता के भी ऐसे लक्षण हो सकते हैं । मनोरोग विशेषज्ञ इस रोग को पहचान कर इसका उपचार कर सकते हैं ।

गुस्सा बहुत आना

अ. ब. स., उ.प्र. : मेरी दो समस्याएं हैं । मुझे शोर से बहुत तकलीफ होती है । बच्चों का भी शोर सहन नहीं हो पाता । गुस्सा बहुत आता है । शादी के २२ वर्ष हो गये । दूसरी समस्या हमारे नये पड़ौसी जो कुछ माह हुए आये हैं, उनसे जुड़ी है । मैंने हमेशा अपने पति की आज्ञा मानी । उन्हें ताश खेलने का शौक कॉलेज के दिनों से है । अब वह पड़ौस में ताश खेलते हैं । मैं उन्हें पड़ौसी की पत्नी के संग ताश खेलते कतई नहीं देख सकती । सोचती हूं शादी के शुरू से ही इनके ताश न खेलने का सुझाव देती तो आज यह समस्या न आती । हालांकि हमेशा उसके पति साथ होते हैं, फिर भी मैं ईर्ष्या से अपने पर काबू नहीं कर पाती । ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण संस्कृति व मर्यादा का पालन भली-भांति सिखाया गया । गीता का अध्ययन अभी तक रोज करती हूं । ताश तो मुझे नापसंद शुरू से थी अब तो नफरत से भर जाती हूं । यदि मैं भी खेलने लगूं तो बच्चे क्या सीखेंगे । कृपया मार्गदर्शन करें ।

वास्तव में आपकी दोनों समस्याएं एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं । पहली समस्या का कारण है अत्यधिक तनाव । तनाव में शोर पसंद नहीं होता । साथ ही अपनी जिंदगी को नियम में डालने की वजह से भी शोर पसंद नहीं होता है । आपके विचार व दृष्टिकोण जो भी हों, उन्हें बदलते समय जमाने से जूझना ही पड़ेगा । यदि नहीं तो जिन बच्चों का आप इतना खयाल करती है, क्या वह इस तेजी से बदलते युग में ढल पाएंगे । कभी-कभी मनोरंजन के लिए तो कोई भी खेल ठीक हो सकता है । वास्तव में आपको पति व पड़ौसन की घनिष्ठता का डर तो है ही, साथ ही अपने मूल्यों को, जिन्हें आपने बचपन से सीखा तथा एक जीवन का तरीका बनाया, इसे बदलते समय की कसौटी पर पूरा न उतरने का डर भी है । हो सकता है कि आपके पति व पड़ौसन के बीच कुछ भी न हो और आप अपने शक, ईर्ष्या व द्वेष से और समस्याएं खड़ी कर दें । फिर जिद्द में आपके पति और अधिक झुकाव पड़ौसन के प्रति दिखायें । इसलिए समय के साथ चलें । वातावरण आजकल स्वच्छंदता का है । सीमाओं का उल्लंघन न करते हुए आपको कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए ।

अपने पर नियंत्रण नहीं

गो. कृ. मिश्र, गोरखपुर : प्रथम घटना १९८९ की है, जब मेरे व पिताजी के बीच मतभेद रहता था। पिताजी चाहते थे, नौकरी करूं। मेरे द्वारा व्यवसाय स्थापित करने में सहयोग के बजाय अड़ंगेबाजी करते थे। इस पर गुस्से में आकर मैंने पिताजी को जूते से मारा। इस पर पिताजी ने समझ लिया कि मेरा दिमाग खराब हो गया। तब दवा खिलायी। वह 'ट्रांकुलाइजर' दवा सालों साल खाता रहा, जिससे नपुंसकता, कब्ज, नींद न आना, भूख न लगना आदि गड़बड़ी हो गयी। दवा डॉक्टर ने छुड़ायी तो नपुंसकता दूर हुई। नींद के लिए नींद की गोली दी। एक साल पश्चात दूसरी घटना यह हुई कि मेरे एकतरफा प्रेम को जब एक लड़की ने ठुकरा दिया, तब मैंने उसी दिन सारी मार्कशीट, कागज जलाकर जीवन समाप्त करने के लिए अधिक मात्रा में नींद की गोली खायीं। इस कारण गोरखपुर मैडिकल कॉलेज में दिखाया, डॉक्टर ने बिना व्यवहार व कारण जाने बिना ही दवा लिखी। इससे फिर नपुंसकता, नींद व भूख न लगने की स्थिति आयी। दवा छोड़ने पर नपुंसकता बराबर बनी हुई है। क्या इसका कारण दवा है या अन्य कोई।

आपके पत्र से यह बात निकलती है कि आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण नहीं रहता। सीमा पार कर बड़ों का लिहाज तक नहीं रहता। स्वयं का भला-बुरा सोचने की क्षमता खो देते हैं। वास्तव में यही आपका रोग भी है, जिसे कुछ लोग पागलपन समझकर इलाज कर रहे हैं। साथ ही कोई भी दवा सालों-साल बिना डॉक्टरी सलाह के कभी नहीं खानी चाहिए। आप अभी सत्ताइस वर्ष के हैं। अब यदि प्राकृतिक तौर पर जिएंगे तो कुछ समय बाद नपुंसकता भी हट जाएगी। इसके लिए दवा न लें।

शरीर में चकत्ते

स. गु., गुना (म.प्र.) : मेरी आयु ३८ वर्ष की है। मैं सरकारी नौकरी में ४,००० रुपये पाता हूं। मुझे 'सोरेसिस' नामक बीमारी है जिसमें पहले सि, कोहनी व पीठ पीछे चकत्ते बनते हैं व खुजली होकर सफेद पपड़ी जम जाती है। शरीर पर ऐसे कई जगह निशान बनते जा रहे हैं। रात में नींद देर से आती है। किसी काम में मन नहीं लगता, डॉक्टर कहते हैं कोई इलाज नहीं। क्या करूं सलाह दें?

आपका रोग वाकई में 'सोरेसिस' है, आशा है इसकी पुष्टि आपने किसी अच्छे चर्म रोग विशेषज्ञ को दिखाकर करवा ली होगी। इस रोग में मनोवैज्ञानिक कारण भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इसलिए तनाव, उदासीनता, हीन भावना से दूर रहना अति आवश्यक है। मन में झांकें, व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन, सभी का खयाल करें। चर्म रोग विशेषज्ञ से दवा करें और भी जो आवश्यक जांच हो, जैसे जिगर, छाती आदि की, करा लें।

असमंजस

भा., औरंगाबाद : जब अपने कमरे का ताला मैं बंद कर देता हूं, तब कुछ दूर चलने पर हमें ऐसा महसूस होता है कि ताला बंद नहीं किया। पुनः आकर देखता हूं तो बंद होता है। क्या स्मृति खो जाने की बीमारी है या कोई और रोग है। समझ में नहीं आता।

आपको 'ऑवसेसिव कंपलसिव डिसऑर्डर' नामक मानसिक रोग है। यह स्मृति खो जाने का रोग कदापि नहीं। कई बार ऐसे रोग से पीड़ित व्यक्ति की याद रखने की क्षमता औरों से अधिक होती है तथा फिजूल की बातें भी याद रहने लगती हैं। आपको चाहिए कि इसका मनोचिकित्सक द्वारा इलाज करायें। ●

एक विस्तृत विद्या

गुनतरी

● डॉ. हीरालाल बाछोतिया

पहले घटनाओं के आधार पर लोग समय बीतने की गणना करते थे । ऐसी ही एक घटना थी सिंध में अलौर बांध का निर्माण । अलौर का बांध बन जाने से वहां के निवासी सुमरा लोग अत्यंत समृद्ध हो गये थे । समृद्धि अहंकार उत्पन्न करती है । सुमरा अपने आप को दूसरों से खासकर उसी इलाके में रहने वाले सम्मा लोगों से स्वयं को श्रेष्ठ समझने की दूषित मनोवृत्ति से ग्रस्त हो गये । घमंड से भरे सुमरा लोगों ने एक सम्मा के घर से बलपूर्वक एक पशु छीन लिया । उस समय गृहस्वामी सम्मा बाहर गया था । वापस लौटने पर उसकी पत्नी ने घटना की सूचना उसे दी । पत्नी ने कहा— 'आज तो वे भैंस के बच्चे को भूनने के लिए छीन ले गये हैं । कल ऐसे ही तुम्हारी स्त्रियों को ले जाएंगे । वे कहेंगे या तो अपनी पत्नियों को हमारे हवाले कर दो या यह स्थान छोड़कर चले जाओ ।'

सम्मा एक वीर पुरुष था— प्रतिष्ठित भी । उसने अपने कुछ मित्रों और बंधु-बांधवों को एकत्रित किया । विचार-विमर्श किया । फिर जोर-जोर से आवाजें लगायीं । इस पर कई सुमरा लोग एकत्र हो गये । फिर वह सम्मा उन पर टूट पड़ा । द्वंद्व-युद्धों में कई सुमरा मारे गये । फिर वह सम्मा अपना सामान-असबाब बांधकर कच्छ के रन की ओर रवाना हो गया । उसके अनेक रिश्तेदारों ने भी उसका अनुसरण किया । ये सारे लोग रन तक जा पहुंचे जो समुद्र और सिंध तथा गुजरात के बीच में स्थित था ।

इनके वहां पहुंचने के साथ ही सुमरा लोग भी सेना सहित वहां जा पहुंचे ताकि सम्मा लोगों को शांत किया जा सके । किंतु सम्मा लौटने को तैयार नहीं हुए । इस पर युद्ध छिड़ गया । अनेक सम्मा वीर युद्ध से विमुख पलायन कर कच्छ देश जा पहुंचे । सम्मा कच्छ के रन या मरुस्थल में बस गये । यह पता लगने पर कि कच्छ देश के अधिपति चावड़ा हैं, सम्माओं ने प्रस्ताव रखा कि उन्हें कुछ भूमि जोतने के लिए दी जाए । जो कुछ पैदावार होगी उसी से उनका गुजारा हो जाएगा तथा मालिकों को उन पर कुछ भी अतिरिक्त खर्च करने की जरूरत नहीं होगी । इस पर चावड़ा मुखिया ने शर्त रखी कि जो परती की जमीन उन्हें दी जा रही है उसके बदले में फसल से निकलने वाला चारा उन्हें सरकारी किलों या दुर्गों में भेजना होगा । दोनों पक्षों द्वारा पक्का इकरार किया गया । जमीन जोती जाने लगी ।

कालांतर में सम्मा कच्छ के शासक बन गये । उनके शासक बनने की कहानी बड़ी

अकस्मात उन्हें अनुभव हुआ कि यदि युक्ति और सावधानी से काम किया जाए तो वे और ताकतवर और अंततः वहां के शासक भी बन सकते हैं । इस हेतु उन्होंने युक्ति बनायी जिसे निमाड़ी-गालवी में 'जुगत' कहते हैं । कच्छ में इस विद्या को 'गुनतरी' कहते हैं ।

रोमांचक और साहसिकता की अनोखी दास्तान है । कच्छ के रन में सम्माओं के जत्थे आते गये और बसते गये । इनमें स्वामिभक्ति भी खूब थी । वे नियमपूर्वक चावड़ा दुर्गों में घास से लदी गाड़ियां पहुंचाते रहे । ऐसा करते-करते वे उस भू-भाग से अच्छी तरह परिचित हो गये । अकस्मात उन्हें अनुभव हुआ कि यदि युक्ति और सावधानी से काम किया जाए तो वे और ताकतवर और अंततः वहां के शासक भी बन सकते हैं । इस हेतु उन्होंने युक्ति बनायी जिसे निमाड़ी-गालवी में 'जुगत' कहते हैं । कच्छ में इस विद्या को 'गुनतरी' कहते हैं ।

युक्ति यह थी कि प्रत्येक घास की गाड़ी में दो सशस्त्र पुरुष छिपकर किले में भेजे जाएं । एक वर्ष में कुल मिलाकर ५०० गाड़ी घास देनी होती थी । योजनानुसार यह घास एक साथ ५०० गाड़ियों में भेजी गयी । प्रत्येक गाड़ी में दो सशस्त्र आदमी छिपे हुए थे और तीसरा घास के ऊपर गाड़ीवान के रूप में बैठा हुआ था । इस प्रकार १५०० आदमी किले के अंदर दाखिल हो गये । शेष किले के बाहर मुख्य द्वार के आसपास तैयार खड़े रहे कि इशारा हो और वे भी आक्रमण कर दें । कहते हैं दुर्ग के द्वार पर रक्षकों के अलावा एक ज्योतिषी भी नियुक्त था । ज्योतिषी का काम था आनेवाली घटनाओं से पहरेदारों को सचेत करना । ज्यों ही आगे की गाड़ियां दुर्ग-द्वार पर पहुंची, ज्योतिषी ने कहा कि उनमें कच्चा मांस है । इतना सुनते ही द्वारपालों ने अपने भाले हाथ में लिये और उछालकर उन्हें गाड़ी में भरी घास में धंसा दिया । भाले उन नवयुवकों के जिस्मों में घुस गये जो घास में छिपे हुए थे । घास में छिपे युवकों ने आह तक न की । भालों की नोक पर लगे खून को फौरन साफ कर दिया । इससे जब भाले बाहर निकाले गये तो उन पर खून का धब्बा तक नहीं था । ज्योतिषी की बात झूठी साबित हुई । इससे बाद में किसी गाड़ी की तलाशी नहीं ली गयी । सारी ५०० गाड़ियां किले के अंदर पहुंच गयीं । योजना के अनुसार रात में दुस्साहसी सम्मा लोग गाड़ियों से बाहर निकल आये और हाथों में तलवार लेकर किले के द्वार पर दुर्ग रक्षकों पर टूट पड़े और उन्हें मार डाला । अपनी विजय की सूचना देने के लिए उन्होंने ढोल बजाए । जो लोग किले के बाहर तैयार खड़े थे उन्होंने दुर्ग-द्वार पर बाहर से आक्रमण कर दिया । जिन द्वार रक्षकों ने बाधा डाली उन्हें धराशायी कर दिया गया ।

समुद्र तट के साथ लगे इस देश पर सम्मा लोगों का अधिकार हो गया । यह घटना ६२५ ई. के आसपास की मानी जा सकती है क्योंकि ६२५ ई. के एक शिलालेख में वर्मतृदात का उल्लेख है जो प्रमुख चावड़ा अधिपति था । उसके अवसान के बाद ही सम्माओं ने कच्छ के रन को आबाद किया प्रतीत होता है । यई,

और जाम सहित छोटे-बड़े कच्छ के राजा सम्मा जाति के वंशज हैं । किंतु उनमें टीका राई (राय) का ही किया जाता है । छोटे कच्छ का कोई जाम मर जाता है तो उसके स्थान पर दूसरे को नियुक्त कर दिया जाता है किंतु उसका टीका नहीं किया जाता या राजगद्दी नहीं दी जाती । इस तरह राई खेमार ही कच्छ की राजगद्दी पर बैठते थे ।

यह विवरण मुसलिम विजेताओं के साथ आये लेखकों ने अपने मुल्क वापस लौटने पर अपने बादशाह के आदेश पर लिपिबद्ध किया था । इलिएट ने इस इतिहास वर्णन को जो अरबी-फारसी में लिपिबद्ध था, को अंगरेजी में लिखा और कई सालों बाद यह विवरण हिंदी में अनूदित हुआ ।

आलोच्य पुस्तक 'भारत का इतिहास' कई खंडों में प्रकाशित है ।

—के-४०, एफ. साकेत
नयी दिल्ली-११००१७

विनाशकारी संख्या '१३'

१३ की संख्या को प्राचीनकाल से ही अशुभ माना जाता रहा है । आज तक कोई भी व्यक्ति इसके भयावक रहस्य को समझ नहीं पाया है । हमेशा से महामारी, भूकंप, बाढ़, दुर्घटना आदि में '१३' का महत्त्व जरूर रहा है । महाभारत के युद्ध में भी 'तेरह' का उल्लेख बराबर आता रहा है ।

'१३' से ईसाई, यहूदी, हिब्रू आदि सभी धर्मों के लोग भय खाते हैं । ईसाई लोग कभी भी 'तेरह' की संख्या में बैठकर खाना नहीं खाते हैं । प्रसिद्ध तैलचित्र 'द लास्ट सपर' में जिन १३ व्यक्तियों ने एक साथ मिलकर भोजन किया था, वे सब जल्द ही मौत के मुंह में समा गये । प्रसिद्ध भविष्यवक्ता 'काउंट लूइस हेमन' उर्फ 'कीरो' का मानना है कि विनाश के 'तेरह' कारण होते हैं । अतः '१३' को विनाश का द्योतक समझा जाता है ।

चार्ल्स प्रथम महीने की तेरहवीं तारीख को कोई काम नहीं करता था । उसे डर था कि अगर उस दिन वह कुछ करेगा तो अवश्य ही वह दुर्घटना का शिकार हो जाएगा । एक बार '१३' तारीख को भूल से वह बिस्तर से उठकर बगीचे में घूमने चला गया । उसी दिन बगीचे में सांप के काट लेने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी । बेलफांस्ट के चर्चों में '१३' मोमबत्तियों को जलाने की सख्त मनाही थी । एक दिन एक अबोध पादरी ने १३ मोमबत्तियों को एक साथ जला दिया । लोगों ने देखा कि रात को उस चर्च में आग लग गयी । आग में वह पादरी भी जलकर मर गया । इस प्रकार की कई अन्य घटनाएं भी प्रकाश में आयी हैं, जिनसे पता चलता है कि '१३' वास्तव में अशुभ और विनाशकारी है ।

—मनोज राय

उसने नाजी नेता को जाल में फंसाया

• अभय कुमार दुबे

'जासूस' शब्द के कानों में पड़ते ही तत्काल जो नाम दिमाग में आता है, वह है '००७ ब्रिटिश सीक्रेट एजेंट जेम्स बांड' का । इस काल्पनिक जासूस चरित्र के रचियता थे इयान फ्लेमिंग, जो स्वयं भी द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले और लड़ाई के दौरान ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस के एक अत्यंत सफल एजेंट रह चुके थे । फ्लेमिंग ने सीक्रेट सर्विस से अवकाश लेने के बाद ही जेम्स बांड को नायक बनाकर उपन्यास लिखने शुरू किये थे । जेम्स बांड के कारनामों का आधार काफी हद तक अंतरराष्ट्रीय जासूसी में फ्लेमिंग के अपने ही अनुभव थे । उन्होंने अपने सक्रिय गुप्तचर जीवन में एक ऐसा कारनामा अंजाम दिया था, जिसका पटाक्षेप सन १९८७ में जाकर हुआ । बरलिन (प. जरमनी) की स्पांडाऊ जेल की एक एकांत कोठरी में अगस्त महीने में वार्डन को खिड़की से एक बूढ़े कैदी की लाश लटकती हुई मिली । दूसरे दिन सारी दुनिया के अखबारों में इस कैदी के आत्महत्या कर लेने की खबर छपी । यह कैदी था—हिटलर का दायां हाथ रूडोल्फ हेस, जिसे नाजी जरमनी में डिप्टी फ्यूहरर की उपाधि प्राप्त थी । द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने से पहले हेस को धोखा देकर बरलिन से स्काटलैंड बुलाकर गिरफ़ार करा देने की कुटिल योजना इयान फ्लेमिंग के ही दिमाग की एक नायाब उपज थी ।

लंदन में उन दिनों अफवाह गरम थी कि जरमन फौजें ब्रिटेन पर हमला करनेवाली हैं । इस माहौल में मई, १९४१ को सारी दुनिया उस समय बिलकुल भौंचक्की रह गयी थी, जब एक मेसर्सस्मिट ११० नामक जरमन विमान अचानक स्काटलैंड के हवाई अड्डे पर उतरा । विमान में एक ही व्यक्ति था—जरमनी का डिप्टी फ्यूहरर रूडोल्फ हेस । लोग उस समय और भी आश्चर्यचकित रह गये जब उन्हें यह पता चला कि रूडोल्फ हेस अपने ग्रह नक्षत्रों के मुताबिक की गयी भविष्यवाणी के आधार पर ब्रिटेन भाग आया है । हेस को उसके प्रमुख ज्योतिषियों ने उसके भविष्य के बारे में यह बताया था कि अगर जरमनी और ब्रिटेन की लड़ाई हुई तो हिटलर और नाजी जरमनी का नाश निश्चित है । इस सारे घटनाचक्र में फ्लेमिंग का कारनामा यह था कि उन्होंने हेस के दिमाग में ज्योतिषियों के वेष में अपने एजेंटों के द्वारा यह कूट-कूटकर भरवा दिया था कि उसके और उसके नेता

हिटलर के सितारे गर्दिश में हैं । ऑपरेशन रूडोल्फ हेस का पूरा विवरण रिचर्ड डीकन की पुस्तक ए हिस्ट्री ऑव ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस में मिलता है ।

उन दिनों फ्लेमिंग ब्रिटिश नौसेना के खुफिया विभाग में काम करते थे । उन्हें यकीन था कि अगर किसी भी तरह किसी बड़े नाजी नेता को ब्रिटेन में 'डिफेक्ट' करा लिया जाए तो शायद ब्रिटेन पर हिटलर के हमले की संभावनाएं कम हो जाएंगी । उन्होंने हिटलर के सभी साथियों की फाइलों का अध्ययन किया और पाया कि उनका दांव डिप्टी फ्यूहरर रूडोल्फ हेस पर चल सकता है । उसने पाया कि हेस एक ऐसा अकेला नाजी है, जो चाहता है कि जरमनी और ब्रिटेन में शांति समझौता हो जाए, ताकि जरमन फौजें अपनी पूरी ताकत के साथ इत्मीनान से रूस को कुचल सकें । हेस के व्यक्तित्व में दूसरी विशेष बात जो फ्लेमिंग को अपने मतलब की लगी, वह थी, हेस का ग्रह-नक्षत्रों में अंधविश्वास ।

इयान फ्लेमिंग को सारी दुनिया में जासूसी चरित्र 'जेम्स बांड' के रचियता के रूप में जाना जाता है । अपने जीवन में वे स्वयं कमाल के जासूस थे—यह तथ्य बहुत कम लोगों को ही पता है । द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने जो-जो कारनामे अंजाम दिये, वो कहीं-कहीं तो जेम्स बांड के काल्पनिक कारनामों को भी मीलों पीछे छोड़ देते हैं ।

सन १९३९-४५ के बीच ब्रिटेन और जरमनी एक-दूसरे से मनोवैज्ञानिक संघर्ष में लगे हुए खींचातानी कर रहे थे । एक तरफ हिटलर का प्रचारमंत्री पाल जोसेफ गोएबल्स था तो दूसरी ओर ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस थी । गोएबल्स अपने संपर्क के ज्योतिषियों से ऐसी भविष्यवाणियां करवाता, जो हिटलर के पक्ष में जातीं और लंदन से ब्रिटेन समर्थक ज्योतिषी सीक्रेट सर्विस की मदद से हिटलर की बरबादी की भविष्यवाणी अखबारों में छपवाते । फ्लेमिंग ने जरमन भाषा की कुछ पत्रिकाओं की नकली प्रतियां छपवायीं जिनमें हिटलर की तबाही के बारे में कई भविष्यवक्ताओं के दावे प्रस्तुत किये गये थे । इन पत्रिकाओं को चतुराई से जरमनी में भेजा गया । नाजी नेताओं की निगाह इन पत्रिकाओं पर पड़ी । वे भविष्यवाणियां पढ़कर आतंकित हो गये । ब्रिटेन के युद्ध मंत्रालय को लुई डि वोल नामक जरमन शरणार्थी के जरिए सारी खबरें मिलती रहती थीं । रूडोल्फ हेस के पास निजी ज्योतिषियों की पूरी फौज थी । फ्लेमिंग ने सोचा कि इसी में घुसपैठ की जाए ।

फ्लेमिंग ने लिस्बन और तानगीर में ब्रिटेन-जरमन मैत्री संगठन 'द लिंक' को

लंदन में उन दिनों अफवाह गरम थी कि जरमन फौजें ब्रिटेन पर हमला करनेवाली हैं । इस माहौल में मई १९४१ को सारी दुनिया उस समय बिलकुल भौंचक्की रह गयी थी, जब एक मेसर्सस्मिट नामक जरमन विमान अचानक स्काटलैंड के हवाई अड्डे पर उतरा । विमान में एक ही व्यक्ति था—जरमनी का डिप्टी फ्यूहरर रूडोल्फ हेस ।

पुनर्गठित किया । उसे यह जानकारी थी कि हिटलर के खुफिया प्रमुख एडमिरल कनारिस की प्रतियोगिता में हेस ने भी एक अपनी सीक्रेट सर्विस बना डाली है, जो लिस्बन और तानगीर में सक्रिय थी । फ्रेमिंग ने हेस के एजेंटों के कान में डाला कि कुछ असरदार अंगरेज लॉर्ड जरमनी और ब्रिटेन की दोस्ती के लिए रास्ता साफ कर रहे हैं । इसी बीच स्विटजरलैंड की मार्फत फ्रेमिंग ने चुपके से अपना एक एजेंट हेस के ज्योतिषियों के दल में शामिल करवा दिया था । इसने हेस को कई मनगढ़ंत भविष्यवाणियां सुनायीं और बताया कि स्काटलैंड के लॉर्ड ड्यूक ऑव हैमिल्टन दोनों देशों में दोस्ती चाहते हैं ।

फ्रेमिंग को इस योजना में दो फायदे लगे । पहला तो यह कि ड्यूक ऑव हैमिल्टन स्काटलैंड में थे । वहां उनकी ओर हेस की मुलाकात बिना शक के दायरे में आये हुए हो सकती थी । दूसरा यह कि हेस के एजेंट ड्यूक के खिलाफ कोई खास जानकारी इकट्ठी नहीं कर सकते थे । ड्यूक का व्यक्तित्व शक के दायरे से एकदम परे था ।

इसके बाद फ्रेमिंग ने धड़ा-धड़ अपने एजेंटों से ब्रिटेन से जरमनी की लड़ाई की सूरत में होनेवाले खौफनाक हादसों की जाली भविष्यवाणियां करवानी शुरू कीं । हेस किसी एक व्यक्ति की बातों पर यकीन न करता, इसलिए झूठे ज्योतिषियों के पूरे दल ने यह काम किया । उन्हीं दिनों अप्रैल के आखिर में और मई १९४१ की शुरुआत में फ्रेमिंग की किस्मत से आकाश में तारों और ग्रहों की मौजूदगी में कुछ अजीब-सा परिवर्तन हुआ । फ्रेमिंग के एजेंटों ने, जो अब तक हेस के विश्वासपात्र बन चुके थे, फौरन भविष्यवाणी की कि हिटलर का वक्त बहुत खराब चल रहा है । ऐसे में ब्रिटेन से युद्ध छेड़ना जरमनी के लिए बहुत घातक होगा—लगभग आत्महत्या के समान । हेस की जन्मपत्री के माध्यम से यह साबित कर दिया गया कि अगर वह विदेश यात्रा करे और शांति की कोशिश करे तो बहुत फायदा हो सकता है तथा बुरी दशा को टाला जा सकता है । दो ज्योतिषियों ने तो हेस को यह भी बताया कि इस काम के लिए मई का महीना सबसे लाभदायक रहेगा ।

इसी आधार पर हेस अपना विमान खुद चलाते हुए स्काटलैंड पहुंचा । पुलिस और गश्ती होमगार्डों ने उसे गिरफ्तार कर लिया । इस खबर से अमरीकनों ने खुशी मनायी पर ब्रिटेन

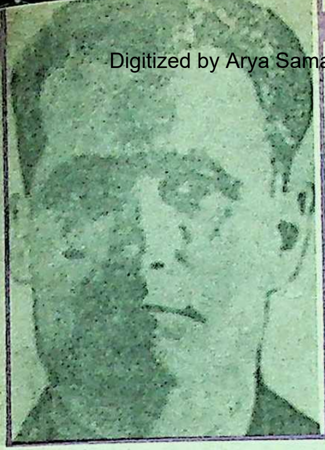

रूडोल्फ हैस

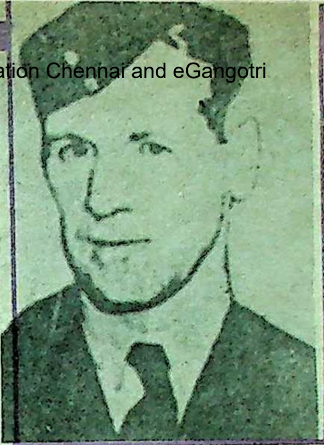

ड्यूक ऑफ हैमिल्टन

के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने हेस के 'डिफेक्शन' को कोई बहुत फायदेमंद काम नहीं माना। उन्हें डर था कि कहीं गोएबल्स की प्रचार मशीनरी बड़े अंगरेज नेताओं की चरित्रहत्या में न लग जाए। इसलिए उन्होंने हेस के बारे में जरमनों की अधिकारिक राय को ही मान्यता दी कि अपनी मानसिक विक्षिप्तता के कारण हेस ने यह हरकत की थी।

पर असलियत में यह हिटलर के ऊपर बहुत बड़ा आघात सिद्ध हुआ। उसने नाराज होकर अपनी खुफिया पुलिस गेस्टापो को आदेश दिया कि तमाम ज्योतिषियों से पूछताछ की जाए। सैकड़ों लोग गिरफ़्तार कर लिए गये। एक महीने के बाद जरमनी में ज्योतिष का धंधा, भविष्यवाणी और टेलीपैथी, इत्यादि सभी परामनौवैज्ञानिक धंधे गैरकानूनी घोषित कर दिये गये।

सोवियत संघ के नेताओं ने भी हेस के मामले को बहुत गंभीरता से लिया। उन्होंने तय किया कि वे हेस को कभी माफ नहीं करेंगे। वजह साफ थी। हेस चाहता था कि ब्रिटेन से दोस्ती करके रूस को कुचल दिया जाए। द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ। हिटलर का डिप्टी फ्यूहरर उन दिनों ब्रिटेन के जेल की एकांत कोठरी में अपने दिन गुजार रहा था। हिटलर की पराजय हुई। न्यूरेंबर्ग में नाजी युद्ध अपराधियों पर मुकदमे चले, जिनमें हेस को आजन्म कैद हुई। रूसियों ने लगातार इस बात का विरोध किया कि हेस को दया करके छोड़ा जाए। उसे पूर्वी बरलिन की स्पांडाऊ जेल में डाल दिया गया। आत्महत्या की कई असफल कोशिशों के बाद आखिरकार हेस को अपनी लंबी कैद से छुटकारा पाने का मौका मिल ही गया। उसने खिड़की से लटककर आत्महत्या कर ली।

इसी के साथ-साथ इयान फ्लेमिंग के जासूसी कारनामे का अंतिम अध्याय भी खत्म हो गया। जेम्स बांड की रोमांचक लेकिन काल्पनिक दुनिया और जासूसी के असली रूप में कितना गहरा फासला है, यह फ्लेमिंग के 'ऑपरेशन रूडोल्फ हेस' से भली प्रकार समझा जा सकता है।

(पुस्तक महल खारी बावली, दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक विश्व प्रसिद्ध जासूस से साभार) ●

वैद्य की सलाह

बृजमोहन सिंह, जोगपाना (पोढ़ी)

प्रश्न : पुत्र की आयु २४ वर्ष । मानसिक रोग से पीड़ित है । नींद असामान्य, सोचता है, हंसता है । दो-तीन बार पुकारो तब जवाब देता है । अधिकतर खामोश रहता है । दिनचर्या ठीक है, कोई नशा नहीं ।

उत्तर : ब्राह्मी वटी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से दें । शंखपुष्पी चूर्ण आधा चम्मच आंवला चूर्ण आधा चम्मच दोपहर-रात पानी से दें सारस्वतारिष्ट दो चम्मच बलारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

—शकुंतला देवी, पूर्णिया

प्रश्न : उम्र ४५ वर्ष । गत दो वर्षों से ब्रान कायटिस्ट नायक बीमारी डॉक्टरों ने बताया है । खांसी होती है । कफ खूब निकलता है । कफ निकलने के बाद ठीक रहती हूं ।

उत्तर : तालीशादि चूर्ण साठ ग्राम चंद्रमृतरस दस ग्राम टंकण भस्म दस ग्राम साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । च्यवनप्राश एक-एक चम्मच रात को दूध से लें ।

अ. ब. स., राजस्थान

प्रश्न : २१ वर्षीया अविवाहिता हूं । पांच वर्ष की अल्पायु से कुकर्म का शिकार होती रही । पहले यह बलात् किया जाता रहा, फिर हस्त मैथुन की आदत पड़ गयी, अब बिल्कुल छोड़ दिया है । किंतु उत्तेजित होने की अवस्था में बाध्य होना पड़ता है । योनि में दर्द होता है व सूजन है । हाथ भी नहीं लगा पाती । मासिक भी खुलकर नहीं होता, सिर्फ धब्बे से निकलते हैं । यह ठीक है मुझे संयम से रहना चाहिए था, किंतु अबोध अवस्था में इस प्रकार की आदत डाल दी गयी । मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं ।

उत्तर : पिछली स्थिति पर ध्यान न दें । विशेष चिंतित भी न रहें । पूर्ण स्वस्थ हो जाएंगी । गृहस्थ जीवन पर भी कोई प्रभाव नहीं होगा । हीन भावना न लायें । पुष्यानुग चूर्ण साठ ग्राम, चंद्रप्रभावटी तीस ग्राम, आरोग्य वर्धनीवटी दस ग्राम मुक्ता शुक्ति भस्म दस ग्राम सभी औषधियों की साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा गरम पानी से लें । अशोकारिष्ट दो चम्मच दशमूलारिष्ट दो चम्मच सम भाग पानी मिलाकर भोजन बाद पीयें । स्फटिक भस्म एक चम्मच दो गिलास पानी में डालकर योनि प्रक्षालन करें । खटाई दही का परहेज कर तीन माह औषधि सेवन करें ।

प्रेम लता, इंदौर

प्रश्न : पति की उम्र ७१ साल है । खुलकर पिशाब नहीं आता है । जब भी जाते हैं बहुत देर लगती है । भूख नहीं लगती—चिड़चिड़ापन बहुत हो गया है । कमजोर हो गये हैं ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक वटी गोक्षुरादि गुग्गुल एक वटी सुबह-शाम पानी से लें ।

मुकेश कुमार, इंदौर

प्रश्न : लगभग ६ वर्ष पूर्व सड़क-दुर्घटना में सिर में चोट के कारण शरीर के बायें भाग में आंख तक विकलांग हो गया हूं । दो माह बेहोश रहा । १६ माह बाद धीरे-धीरे याददाश्त वापस आ गयी । अभी भी याददाश्त कम है । बायीं आंख से सिर्फ नब्बे अंश देख सकता हूं । कृपया अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : सप्तामृत लोह तीस ग्राम, रसराज रस तीन ग्राम साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । ब्रहम रसायन

एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

अरुण, नागपुर

प्रश्न : उम्र १८ वर्ष । कुछ दिन के अंतराल से शरीर में फुंसी निकल आती है । कई बार तो ऐसे स्थान पर हो जाती है, बहुत परेशान हो जाता हूं । अंगरेजी दवा से स्थायी लाभ नहीं ।

उत्तर : गंधक रसायन तीस ग्राम, रसमाणिक्य रस दस ग्राम गिलोय सत्व दस ग्राम औखमात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

दिनेश कुमार, चितरंजन

प्रश्न : उम्र २२ साल । बचपन में दायें पैर की शक्ति चली गयी । पिछले आठ सालों में बायें पैर व हाथों की शक्ति कम होती जा रही है । काफी इलाज किये विशेष लाभ नहीं । अच्छी दवा सुझायें ।

उत्तर : मुक्ता शुक्ति भस्म दस ग्राम, अश्वगंधाचूर्ण साठ ग्राम, रसराज रस पांच ग्राम, महायोगराज पंद्रह ग्राम

साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें । महा नारायण तेल यथास्थान प्रतिदिन मालिश करें ।

शांति देवी, राघोपुर

प्रश्न : उम्र ४३ वर्ष । नींद नहीं आती कब सोती हूं, कब जागती हूं पता नहीं । फिर भारी बेचैनी—सुन्न-जैसा लगता है । गुस्सा जल्दी आता है । कब्ज-पेट में हल्का दर्द । १५ साल से परेशान हूं । अभी तक अंगरेजी इलाज किया ।

उत्तर : ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच सारस्वतारिष्ट दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

प्रवीण कुमार, हिलसा

प्रश्न : उम्र ३८ साल । १ साल से दाहिने हाथ की अंगुली में अचानक सूजन होकर फूलकर टेढ़ी हो गयी । कुछ समय के बाद बायें हाथ में भी ऐसा ही हुआ, अनेक चिकित्सा की, लाभ नहीं ।

उत्तर : केशोर गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । पुनर्नवा गूगल एक वटी चंद्रप्रभावटी एक वटी रात दूध से लें । दशमूलारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । गरमपानी में नमक डालकर यथा स्थान सेक करें ।

विजय, इलाहाबाद

प्रश्न : उम्र २६ वर्ष । पेट अक्सर खराब हो जाता है । सुबह के समय सुस्ती बहुत आती है । मौसम बलदने पर जुकाम होता रहता है । शारीरिक दुर्बलता है ।

उत्तर : लक्ष्मी विलास रस एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

मुनेन्द्र शुक्ल, लखनऊ

प्रश्न : उम्र ४८ वर्ष । लगभग सात वर्षों से लिखने में दायां हाथ कांपता है । हाथ पूरा दर्द करने लगता है । वैसे कोई परेशानी महसूस नहीं होती ।

उत्तर : त्रयोदशांग गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें । ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

कृष्ण कुमार, गोण्डा

प्रश्न : उम्र ४२ वर्ष । पेचिस का पुराना रोगी हूं । पैर के निचले भाग में दर्द रहता है । दोनों गालों पर झांई विस्तृत रूप से फैल रही है ।

उत्तर : कुटजारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन बाद पीयें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

बी ५/७, कृष्णा नगर,
दिल्ली-११००५१

जयपुर दरबार और उनके परामर्शदाता

• राबर्ट डब्लयू स्टर्न

जयपुर के महाराजा माधो सिंह ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में मानसिंह का चुनाव किया था । महाराज ने अपने चुनाव को रहस्य ही बना रहने दिया और इस लड़के के नाम के रहस्य को प्रकट करने पर रोक लगा दी । अन्यथा गद्दी पर बैठने से पहले ही वह मार डाला जाता । माधो सिंह अपने कुलीन उत्तराधिकारी को एक संपन्न हुए कार्य की तरह प्रस्तुत करना चाहता था । इसके अनुसार उसकी मृत्यु के तत्काल बाद उसकी सबसे वरिष्ठ विधवा महाराजा के चुनाव की घोषणा करती ।

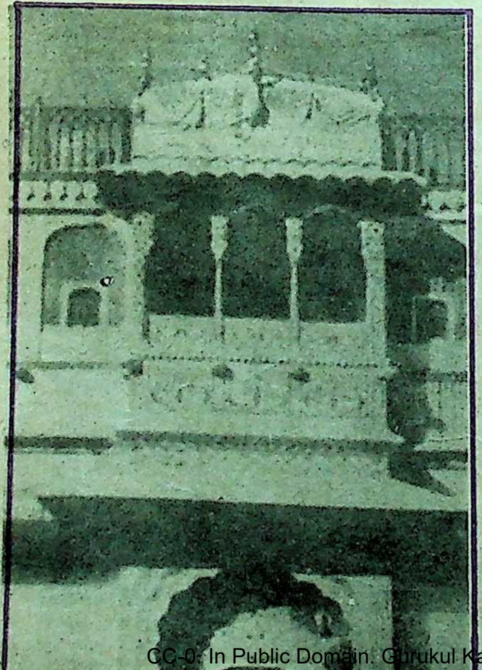

जयपुर महल का भीतरी भाग

महाराजा ने अपनी मृत्यु के एक-डेढ़ वर्ष पहले अपने दत्तक पुत्र का नाम घोषित किया । परंतु यह घोषणा न सार्वजनिक रूप से थी न व्यक्तिगत । इसमें उन ठाकुरों को छोड़ दिया गया जो उस चुनाव का विरोध करते । सवाई मानसिंह को गोद लेना, जयपुर सिंहासन को अपना अगला उत्तराधिकारी दिये जाने को साम्राज्यवादी सरकार ने भी बिना शर्त मान्यता दे दी ।

जीवन के अंतिम तथा सबसे विवादास्पद उत्तराधिकारी प्रकरण में भारत सरकार का सबसे नामी वकील चार्ल्स क्लीवलैंड माधोसिंह के साथ था । क्लीवलैंड की महाराजा के मंत्रिमंडल में सबसे अधिक गरिमा थी और वह अन्य मंत्रियों से तिगुना वेतन पाता था । माधोसिंह की विशेष इच्छा थी कि पुराने मित्र उनके द्वारा चयनित उत्तराधिकारी को गद्दी प्राप्त करने में सहायक बनें और सवाई मानसिंह के नेतृत्ववाली रियासत के लिए अपनी सेवाएं प्रदान करते रहें ।

भारत को मंहगा पड़ा

जिस तरह माधोसिंह ने अपने मामले का संचालन किया, जयपुर रियासत ने ब्रिटिश सरकार को दखल देने का एक अच्छा अवसर दिया । इच्छा या अनिच्छा से माधोसिंह का

उत्तराधिकारी अंगरेज के हाथों में जा रहा था। मूल प्रश्न फिर भी जयपुर महाराजा के सामने था क बदतर में से सबसे बढ़िया को चुन लेना। बूढ़े व चालाक महाराज ने अपने दत्तक वारिस के लिए स्वयं की पसंद का ब्रिटिश प्रतिशासन का चुनाव कर लिया। अवकाश प्राप्त प्रसिद्ध ब्रिटिश अफसर को जयपुर का दीवान नियुक्त किया जाना भारत सरकार को मंहगा पड़ा। सरकार ने माधोसिंह मंत्रिमंडल में नियुक्ति हेतु उसका नाम पहले ही अनुमोदित कर दिया था। वह पहले साम्राज्यवादी सरकार में उच्च पदों पर रह चुका था। साम्राज्य के प्रति उसकी निष्ठा प्रश्नातीत थी। वह जासूस पुलिस का मुख्य अधिकारी था, उसे बुलंद प्रबल व्यक्तित्व का स्वामी व प्रथम श्रेणी का प्रशासक होने की ख्याति मिल चुकी थी। क्लीवलैंड को नियुक्त करके माधोसिंह ने घाटे के सौदे को निकृष्ट होने से बचा लिया।

कुछ समय के लिए माधोसिंह की चालाकी काम आयी। भारत सरकार विशेष रूप से इसका विदेश तथा राजनीतिक विभाग यह नहीं चाहता था कि क्लीवलैंड जयपुर में रहे। परंतु इसका विरोध करने के लिए उसके पास कोई आधार नहीं था, जबकि वे जान चुके थे कि माधोसिंह ने कब्र से भी एक अंगरेज को खरीद लिया था। सितंबर १९२२ में महाराज की मृत्यु के बाद उनके द्वारा सताये गये लोगों में ऐसा कोई नहीं था जो उनके आश्रितों की महल के षड्यंत्रों से रक्षा करते, यहां तक कि ब्रिटिश पुलिस के जासूस भी अपने आप को इसमें अक्षम पा रहे थे। अफवाह थी कि क्लीवलैंड ने जयपुर में बहुत से सट्टेबाजी के उद्यमों के द्वारा खासा पैसा जमा कर लिया था। इसमें उनके परामर्शदाता और भागीदार कोई और नहीं स्वर्गीय महाराजा के निकटतम खासजी बालबक्स थे जिसे राजा ने जयपुर दरबार के भ्रष्टाचार और अव्यवस्था का मुख्य स्रोत माना था।

क्लीवलैंड के मंत्रिमंडलीय सहयोगियों ने उसकी गंभीर मनमानी के विरोध में अपना इस्तीफा दे दिया। रियासत के वैकल्पिक प्रशासन के लिए 'जनाना' या रनिवास जीवंत हो गया। उन्होंने प्रस्ताव किया कि शाही रानियों के रिश्तेदारों के द्वारा चलायी जानेवाली वैकल्पिक प्रशासन व्यवस्था स्थापित हो। उधर जयपुर शहर में क्लीवलैंड के इस्तीफे की मांग को लेकर कई सार्वजनिक सभाएं हुईं। भारत सरकार की राय थी कि क्लीवलैंड लापरवाह तो था, लेकिन वह बेईमान नहीं था और उसे जयपुर से हटाने की बजाय मामले को आपस में बात कर निबटा लिया जाए। १९२३ में सरकार ने जयपुर के निवासी को अपना अधिशासी अर्थात प्रथम मंत्री नियुक्त कर दिया। उसे क्लीवलैंड से उच्च स्थान दिया गया। इस पर क्लीवलैंड ने इस्तीफा दे दिया।

१९१७ के निर्देशों के कारण १९२२ तक जयपुर में अराजकता की स्थिति बनी रही। सवाई मानसिंह के ब्रिटिश अधिशासी ने उन आदेशों को रद्दी के कागजों—जैसा माना किंतु घटनाचक्र इस तरह घटित हुआ कि वे स्वयं शक्तिहीन हो गये। ब्रिटिश, भारत में महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का संगठित होना, विदेशी और राजनीतिक विभागों के लिए अशुभ था। भय इस बात का था कि

अन्य जगहों की तरह किसानों का असंतोष रियासतों में भी फैल जाएगा और तब आंदोलनकारियों के पास बहुत सारे मुद्दे होंगे। जिस बुरी तरह से ब्रिटिश प्रांतों में किसानों को सताया गया, जिस तरह यातनामय तरीके से लगान और बेगारी ली गयी, इससे कई गुना अधिक यातनाएं जिन रियासतों में हुईं उनमें जयपुर भी एक था। जयपुर में किसानों की हालत सबसे खराब थी।

शेखावटी से संबंध

१९२० के शुरू में बोलशेविक विचारधारा ने जयपुर के देहातों में कुछ वातावरण तैयार किया तो सांप्रदायिक तनाव उत्पन्न हो गया। जहां राजपूत राज्य में शायद ही कभी धार्मिक फूट थी, हिंदू मुसलमानों के बीच मैत्री भाव था, वहां शांति भंग हुई और सांप्रदायिक घटनाएं बढ़ने लगीं। खिलाफत आंदोलन जिसने शेष भारत में सांप्रदायिक सहयोग उत्पन्न किया वहां राजस्थान में यह विद्वेष का कारण बना। राजस्थान के राजनीतिक अधिस्वर में भी फूट पड़ गयी। इस राजनीतिक फूट में जो बड़ा सहायक बना वह था आर्य समाज। यह उत्तर भारत की सबसे उद्यमशील तथा हिंदुत्व को पुनः जीवित करनेवाली सबसे बड़ी संस्था थी। यह शेखावटी के शहरों के बनियों और गांवों के जाट किसानों में बहुत सक्रिय थी। यही हिंदू राष्ट्रीयता और हिंदू महासभा या कांग्रेस के साथ जुड़ने की पहली शुरुआत थी। इसके कारण शेखावटी में जाट राजनीतिक रूप से जागरूक और धनाढ्य बन गये।

जयपुर और जाट राजनीति

१९१७ के निर्देश में राजनीतिक शांति बनाये रखने और राजपूतों के राजनीतिक अखाड़े में कोई हस्तक्षेप नहीं करना शामिल था, परंतु ये निर्देश राजा और उनके कुलीन व्यक्तियों तक ही सीमित रह गये। किसानों और इनके मध्य वर्ग के बुर्जुआ जयपुर अखाड़े में केवल कुछ समय के लिए आये थोड़े ही समय में सवाई मानसिंह के जयपुर की गद्दी पर आने के तीन वर्ष के अंदर जाट जयपुर राजनीति को हिलाकर रख देनेवाली ताकत बन गये।

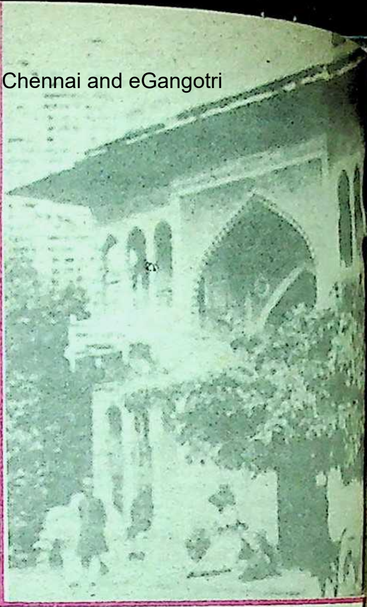

महल का प्रवेश द्वार

जयपुर के उत्तर पश्चिम से कोई पचास कि. मी. दूर उदयपुर का बिजोलिया ठिकाना एक गंभीर संकट था जागीरदार का विरोध करने वाले किसान कई वर्षों से सक्रिय थे, परंतु १९१६ से १९२२ के मध्य इस विरोध ने क्रांति का रूप ले लिया। भूपसिंह उर्फ विजय सिंह पथिक स्वयं मूलतः किसान था। ब्रिटिश भारत के पेशेवर क्रांतिकारी ने बिजोलिया पंचायत में किसानों को इस क्रांति के लिए इकट्ठा किया। पंचायतें किसानों के समानांतर स्थानीय प्रशासक

पद्धति के रूप में चलती थीं । बिजोलिया ने प्रेरणा का काम किया । पास-पड़ोस के बहुत से किसानों की ओर उदयपुर दरबार से भागे हुए लोग आकिर्षत हुए और इस तरह राजस्थान की स्वतंत्रता का संघर्ष एक दंतकथा बना । इस तरह बिजोलिया राजपूताने में बोलेशविक संकट की कहानी बन गया ।

बिजोलिया विद्रोह

बिजोलिया के प्रकरण में साम्राज्यवादी सरकार ने उदयपुर के राजा से कहा कि वह अपने पुत्र के लिए गद्दी का त्याग कर दे । उनका मानना था कि उदयपुर के महाराजा स्वामिभक्त नहीं रह गये थे तथा बिजोलिया के प्रकरण में कुछ नहीं करना चाहते थे । अंततः अंगरेज अधिकारियों ने ठिकानों में जाकर और किसानों की मांगें मंजूर कर बिजोलिया विद्रोह को समाप्त कर दिया । अंगरेज बिजोलिया का फायदा उठाकर महाराजा को दंडित करना चाहते थे किंतु, इन्हें राजपूत राजनीतिक पद्धति की बदनामी भी झेलनी पड़ी जो अपने सामंतों और किसानों पर शासन करने की परंपरा से बंधी थी ।

जयपुर में किसान असंतोष के बारे में जो नीति हो वह एजेंसी के मन के अनुकूल हो । इसके लिए जयपुर दरबार को पूर्ण रूपेण नौकरशाही का रूप देना प्रस्तावित था, ताकि यह किसान असंतोष को दबा दे । दूसरा जहां तक हो जागीरदारों को समाप्त करना, क्योंकि वे ही दरबार के प्रशासनिक निर्णयों को गांवों तक फैलाते हैं । इससे राष्ट्रीय कार्यकर्ता या तो जयपुर के गांवों में परेशानियां महसूस करेंगे या दरबार अपने प्रशासन को बनाये रखने या ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति स्वामिभक्ति जताने के लिए उन्हें निकाल बाहर करेगा ।

जयपुर के मुख्यमंत्री की भूमिका

१९३१ में नौ साल बाद जयपुर दरबार में नौकरशाही स्थापित हो गयी । सवाई मानसिंह को पूरे शासन के अधिकार दिये गये । सवाई मानसिंह के शासन के प्रथम दो दशकों में जयपुर के प्रशासन का विकास ब्रिटिश अधिकारियों के मार्गदर्शन में हुआ । महाराजा अभी बालिग नहीं हुए थे । १९२२ से १९३१ तक उनका दरबार रेसीडेंट की देखरेख में चलता रहा । जयपुर का मुख्यमंत्री प्रभावी रूप से अध्यक्ष होता था । वह राजपूताना एजेंसी का एक वरिष्ठ अधिकारी भी होता था और महाराजा के संगी पार्षदों के बजाए एजेंट के प्रति उत्तरदायी होता था । १९३१ से १९४२ तक जयपुर का मुख्यमंत्री, साम्राज्यवादी सरकार की सलाह या मनोनयन और उसके अंतिम अनुमोदन पर महाराजा के द्वारा नियुक्त किया जाता रहा ।

मुख्यमंत्री के अलावा सभी अंगरेज थे

नौकरशाही के दौरान और बाद में जयपुर प्रशासन में जितने ब्रिटिश अधिकारी नियुक्त किये गये वे मुख्यमंत्री के अलावा सभी अंगरेज थे । राजस्व, राज्य के सार्वजनिक कार्यों और बंदोबस्त परिषद के सदस्य पुलिस और जेल के इंस्पेक्टर जनरल, राज्य रेलवे के प्रबंधक, अदालतों के अधीक्षक, शैक्षिक और चिकित्सा सेवाओं के निदेशक, जयपुर नगरपालिका का अध्यक्ष और खेतड़ी तथा सीकर के मुख्य प्रशासक ब्रिटिश अधिकारी थे । १९३० में ब्रिटिश एजेंट ने दर्ज किया कि भारत में जयपुर

के अतिरिक्त कोई जगह नहीं थी जहां यूरोपियन नियंत्रण पूरी तरह लागू हो । माधोसिंह की बीमारी के दौरान जयपुर प्रशासन शाही परिषद के अंतगर्त मंत्रिमंडल के हाथ की कठपुतली बना दिया गया । मंत्रिमंडल के मुखिया के रूप में सत्तारूढ़ होने के बाद क्लीवलैंड ने जयपुर प्रशासन को १८ महीनों तक महाराजा की राजनीतिक बपौती के रूप में चलाया, फिर इसे खंडित और आधारभूत रूप से विक्षिप्त घोषित कर दिया । सैनिक सदस्य के रूप में चोमू के ठाकुर को नियुक्त किया, तथापि माधोसिंह ने अपनी वसीयत में विशेष रूप से यह आदेश दिया था कि चोमू के कामकाज की मानसिंह के नौकरशाह द्वारा जांच-पड़ताल की जाएगी ।

दो राजकुमारियों से विवाह

राजा द्वारा वारिस बनाये जाने के थोड़े समय बाद मानसिंह का जोधपुर की दो राजकुमारियों से विवाह हुआ । एक चाची और उसकी भतीजी । चाची अपने पति से ग्यारह वर्ष बड़ी थी, घर रहकर पढ़ी थी और अंगरेजों के भय को साकार करती थी । वह पूर्ण महिला थी, ब्रिटिश यह समझ गये कि मानसिंह की बड़ी महारानी उसका पहला पुत्र पाने के लिए उत्सुक थी, परंतु उन्हें इसका भी भय था कि वह उसे यौन अतिरेक भूख में लिप्त कर लेगी और इस आयु में वह उन्हें युद्धबंदी-जैसा बनाकर रख लेगी । इसी भय से ब्रिटिश अभिभावकों ने महाराजा को स्कूल की छुट्टियां होने पर जयपुर से दूर रहने के लिए प्रेरित किया । साढ़े सत्रह का होने के कुछ ही महीने बाद उसे बड़ी महारानी के साथ रहने की अनुमति मिलती तभी मानसिंह को औपचारिक शिक्षा पूर्ण करने के लिए विदेश में वूलविच की ब्रिटिश सैनिक अकादमी में भेज दिया गया । मुद्दे की बात थी, युवा महाराजा मानसिंह का काम व्यवहार की ओर झुकाव ।

अंगरेजों को राजा (मानसिंह) की कामुक नैतिकता से कोई मतलब नहीं था, जबकि राजपूताने में लंबे समय तक सेवा में रहे अंग्रेज अधिकारियों को यह स्वीकार्य नहीं था कि महाराजा के 'काम' अकसर उसके स्वास्थ्य एवं रुचि तक सीमित रहते हैं । अंगरेजों का स्वार्थ इतना ही था कि राजपूत राजा को बरबाद कर रनिवास को किलकारी विहीन कर दे । न केवल जयपुर महल की महिलाओं के भवन को बल्कि दुर्बलताओं को भी । राजनीति को दिशा प्रदान करने के लिए भले न हो, लेकिन 'जनाना' ताकत का प्रभाव इन लावण्यपूर्ण वर्षों में महत्त्वपूर्ण था । या ऐसा माना जाता था कि कुल मिलाकर 'जनाना' ही महाराजा की तबाही का कारण थी । माधोसिंह के अंतर्मुखी हो जाने के बाद जयपुर के मामले गड़बड़ा गये । महाराज 'शैतान औरत' रूप राय और उसके अभिभावक कासजी के इतने भुलावे में थे कि १९२० तक जयपुर बदनाम हो चुका था । १९२७ में जयपुर शहर में गंभीर दंगे हुए, पुलिस को भीड़ पर गोली चलानी पड़ी, लोग मरे भी, घायल भी हुए । एजेंसी को दंगे का कोई कारण पता नहीं चला, तब उसने अनुमान लगाया कि यह महाराजा को मेयो कॉलेज से दूर उड़ने का 'जनाना' षड्यंत्र है ।

प्रशासनिक प्रगति और नौकरशाह दरबार के लिए 'रनिवास' एक तरह का खतरा था, जिसे सवाई मानसिंह के प्रतिशासक रियासत में

संगठित कर रहे थे । महाराजा अपने रियासती मामलों के प्रति उदासीन थे !

'रनिवास'—जिसे 'जनाना' के नाम से जाना जाता था, में बंदी राजा के लिए समस्या यह थी कि वे नाममात्र के राजा नहीं बने रहना चाहते थे क्योंकि नाममात्र के रहने पर 'रनिवास' का हित साधन नहीं हो सकता था । उनकी व्यक्तिगत चरित्रहीनता जनता पर बोझ बन गयी । 'रनिवास' के ऋण का और अपनी चहेती बीवियों के भुगतानों के लिए वे दरबार की संपत्ति और स्रोत को विकृत कर देना चाहते थे। 'रनिवास' सवाई मानसिंह पर कभी काबिज न हो पाया उधर अंगरेज भी उसे काबू में न ला सके। वह जयपुर की जनता के बीच बेहद लोकप्रिय हो गया, वह खूबसूरत था, तेजतर्रार, ताकतवर और मिलनसार था, लेकिन उसका मन काम में नहीं, पोलो के मैदान में रहता था । इंगलैंड में बूलविच में रहने के दौरान वह पोलो का चैंपियन बन गया और उसने अपनी जीवन शैली, फैशन परस्त ब्रिटिश घुड़सवार अधिकारी की बना ली ।

जयपुर में उसका मन नहीं लगता था । ब्रिटिश अधिकारी मानते थे कि ऐसा करके वह 'प्रजातंत्र' को बुलावा दे रहा है । भारत सरकार यह मानने लगी कि जयपुर के महाराजा यहां नहीं रहते नाममात्र के राजा हैं इसके चलते सीकर के राजा ने हजारों अपने समर्थक राजपूत भूस्वामियों के साथ जयपुर दरबार के खिलाफ

राजप्रमुख से सम्मानित

दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान मानसिंह ने अपनी ताकत इस बात में लगा दी कि वाइसराय उन्हें फिलीस्तीन मे 'घरेलू घुड़सवार' की सक्रिया सेवा में जाने की इजाजत दे दें । लार्ड वावेल ने इसका विरोध किया, 'आप एक भारतीय रियासत के राजा हैं ।'' किंतु मानसिंह अंत में मध्य-पूर्व में 'काहिरा बोइट्स' अभियान में शामिल होने जा पहुंचे, ब्रिटिश खुफिया विभाग की यही रिपोर्ट है । युद्ध के दौरान ब्रिटिश महाराजा का कमीशन बरकरार रखना तथा अपने बड़े पुत्र के लिए 'एटोन' में स्थान सुरक्षित करवाना, उनका लक्ष्य था । यद्यपि महाराजा की आत्मकेंद्रित गैरपक्षपाती मुद्रा ने लोक प्रशासन के उबाऊमन से स्वयं को पृथक रखा था, तथापि मनमाने ढंग से शासन करने के उल्लास के कारण अंगरेज भड़क उठे । उन्होंने यद्यपि महाराजा को विवेकपूर्ण और व्यावहारिक तो माना था लेकिन 'राजकाज' में उसका मन नहीं लगता था, इसलिए वह राजा होने योग्य नहीं था ।

१९४२ में महाराजा ने सार्वजनिक मामलों के उस्ताद मिरजा इस्माइल को जयपुर में कांग्रेस राज की सहायता से शांति स्थापित करने के लिए अपने पूर्णाधिकारी के रूप में नियुक्त कर लिया । ऐसा कर ब्रिटिश सरकार को चुनौती दे डाली । १९४८ में स्वराज्य मिलने के साथ ही सरदार वल्लभ भाई पटेल ने जयपुर के इस खूबसूरत महाराजा को, 'राजस्थान' का सर्वेसर्वा और आलंकारिक शिखर राजप्रमुख की पदवी से सम्मानित किया । वे राजपूतों में पहले राजा थे जिन्हें यह सम्मान दिया गया ।

(उक्त संक्षिप्त विवरन 'द कैट एंड द लायन' पुस्तक से लिया गया है । लेखक हैं डब्लयू. स्टर्न । प्रकाशक हैं : एलाइड पब्लिशर्स प्रा. लि., नयी दिल्ली, मूल्य—१५० रु.)

प्रस्तुति : चेतन कुमार

किसी राष्ट्र के जीवन में चार वर्ष क्या होते हैं?

वे बन जाते हैं इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ!

जब उन चार वर्षों में अर्थव्यवस्था की शक्ल ही बदल जाए, उदारीकरण से तमाम बाधाएं दूर हो जाएं और कमजोर वर्गों को आम लोगों के मुकाबले विशेष दर्जा मिल जाए।

जून 1991 में

ऐसा था

- खेती की घटती पैदावार
- औद्योगिक विकास में मंदी का दौर
- निर्यात में गिरावट
- विदेशी मुद्रा का घटता भंडार
- विदेशी देनदारी चुकाना मुश्किल
- देश का सोना विदेशी बैंक में गिरवी
- राजनीतिक अनिश्चितता का दौर
- देश दिवालियापन के कगार पर

अब जून 1995 में

ऐसा है

- नई अर्थव्यवस्था से बिजली, दूरसंचार, पैट्रोलियम, इस्पात, खाद्य प्रसंस्करण आदि क्षेत्रों में निवेश बढ़ने लगा।
- अनाज की पैदावार 18 करोड़ 60 लाख टन—अब तक की सर्वाधिक है।
- 1992 से प्रारंभ की गई पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली सुदूर अगम और पहाड़ी क्षेत्रों के 1775 विकास खण्डों में लागू।
- किसानों को पैदावार की अधिक लाभकारी कीमतें। उर्वरक सब्सिडी जारी।
- 1994-95 में अब तक का सब से अधिक अर्थात 92,338 करोड़ रुपये का निर्यात हुआ—जिससे हमारे आयात का 90 प्रतिशत मूल्य चुकता हो गया।
- आर्थिक विकास से प्रतिवर्ष 60 लाख नये रोजगार के अवसर खुले।
- जवाहर रोजगार योजना से 567 करोड़ श्रमदिवस सृजित।
- सुनिश्चित रोजगार योजना से लगभग एक करोड़ 40 लाख से अधिक लोग लाभान्वित।
- परती भूमि विकास कार्यक्रम 23,000 हेक्टेयर क्षेत्र में लागू।
- ग्राम स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए पंचायती राज लागू।
- हथकरघा बुनकरों के लिए 682 करोड़ रुपये की कल्याण योजनाएं।
- महिलाओं को समृद्धशाली बनाने के लिए महिला समृद्धि योजना तथा राष्ट्रीय महिला कोष।

- 1997 तक देश के सभी गांवों में टेलीफोन सुविधा।
- उपग्रह मनीआर्डर सेवा शुरू।
- दूरदर्शन नेटवर्क कार्यक्रम अब 72 करोड़ 60 लाख दर्शक
- आकाशवाणी के क्षेत्रीय कार्यक्रम का देश के सभी भागों में

कमजोर वर्गों के कल्याण पर ध्यान

- केन्द्रीय सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों में अन्य लिए नौकरियों में 27 प्रतिशत आरक्षण लागू।
- राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग गठित।
- राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास वित्त निगम तथा राष्ट्रीय पिछड़ा और विकास निगम गठित।

शांति और सौहार्द्रता के लिए प्रयास

- पंजाब और असम में शांति और सामान्य स्थिति बहाल।
- जम्मू और कश्मीर में आतंकवाद पर काबू पाने और सामान्य बहाल करने के प्रयास जारी।

पांचवें वर्ष में प्रवेश करते समय हमारा संकल्प है जन-
की आकांक्षाएं पूरी करना।

एक **जीवंत राष्ट्र** ही नई बुलंदियां छूने का इरादा
और हम सब मिलकर देश को उन बुलंदियों तक ले

नई दृष्टि
नई आशा

पी.वी. नरसिंह राव सरकार के चार वर्ष

प्रवेश

पहचान

तुमने नहीं देखा
आग-सी धधकती मुझे
तुमने नहीं देखा
बाढ़-सी उमड़ती मुझे
तुमने नहीं देखा
घटा-सी घिरती मुझे
नहीं, तुमने नहीं पहचाना
अपने दिल के कोने में भी,
पहचानोगे, तब जब खो दोगे
जानोगे तब जब आंधी में
उड़ जाऊंगी
मुझे, तुम पा लो
मैं बार-बार नहीं आऊंगी ।

— निशा

पता : १६ अरावली अपार्टमेंट्स अलकनंदा, नयी दिल्ली

संप्रति : हिंदी (विशेष) में स्नातक एवं पत्रकारिता में अध्ययनरत

आत्मकथ्य : कविता मेरे लिए प्राकृतिक देन है एवं शब्द तथा विचार आंतरिक पीड़ा से उपजे उद्गार हैं ।

हाथों का सहारा

समुद्र तट पर
नफरतों के, संप्रदायवाद-जातिवाद के, स्वार्थ के ।
मैंने छोटा-सा बनाया है घरौंदा
विश्व-बंधुत्व का, प्रेम-शांति का, सहयोग का ।
उसमें जलाया है अपने हृदय को
बनाकर एक दीपक ।
वहशी अंधा तूफान उमड़ आता है
जब संसार में चारों ओर
मैं ढक नहीं पाता अपने दोनों हाथों से
उसके चारों छोर ।
दो छोर खुले रह जाते हैं
दो हाथ और चाहिए मुझे कि
प्रेम का दीप जलता रहे दुनिया में
किसी को अगर मिले फुरसत कभी
तो चाहिए मुझे इन क्षणों में और
दो हाथों का सहारा ।

—दिनेश चंद्र जोशी

आत्मकथ्य : हृदय (अंतःस्थल) रूपी सागर में आये भयंकर तूफान के स्मृति चिह्न हैं, मेरी कविताएं।

शिक्षा : एम.ए. (राजनीति) अध्ययनरत

संप्रति : शिक्षक-वॉर्डन

आयु : २२ वर्ष

पता : राष्ट्रीय विद्या केंद्र
'आवासीय उच्च विद्यालय'
कुसुमपटी, शिमला,
[हिमाचल प्रदेश]

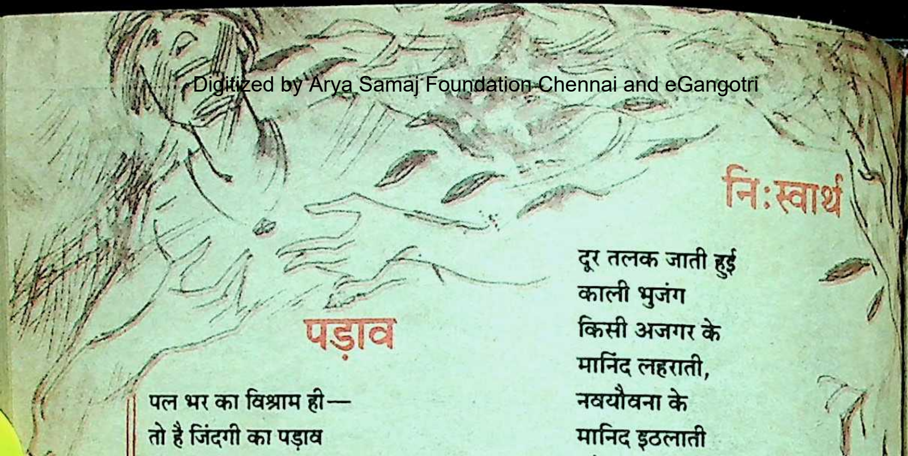

पड़ाव

पल भर का विश्राम ही—
तो है जिंदगी का पड़ाव
राहें अंतहीन
जिंदगी के पृष्ठों की तरह
अध्याय दर अध्याय
छूटते जाते हैं
पड़ाव दर पड़ाव
और एक दिन—
चुक जाती है जिंदगी की किताब
तब याद आते हैं
वे छूटे अध्याय
उस पड़ाव की तरह
जहां हमने विश्राम किया था
पलभर
जिंदगी की राहों पर चलते हुए
थककर ।

— सरला पाण्डेय

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी)
आत्मकथ्य : मन की मूक अकुलाहट का रहस्यमयी प्रकृति से जुड़ना और उसका प्रत्यावर्तन ही शब्दों में प्रतिबिंबित हो, कविता बन जाती है ।
पता : प्रा.वि. महनुआं, सोनहा बस्ती (उ. प्र.)

निःस्वार्थ

दूर तलक जाती हुई
काली भुजंग
किसी अजगर के
मानिंद लहराती,
नवयौवना के
मानिंद इठलाती
और कहीं-कहीं पर
किसी वृद्ध शरीर
की तरह जर जर
ये बेजुबान सड़क
बिना मंजिल को
पाने की चाह लिए
हम मुसाफिरों को
मंजिल तक
पहुंचाती है
और हमें फिर भी
शर्म नहीं आती है ।

— संजय समर्पित अशां

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी)
संप्रति : मुक्ति बोध के काव्य में सागर विश्वविद्या के शोध केंद्र महाविद्यालय छिंदवाड़ा से डॉ. आशा पाठक के निर्देशन में शोध कार्य
पता : गांधी चौक, बरघाट
जि. – सिवनी (म. प्र.)
आत्मकथ्य : मेरी घायल संवेदना का मूर्त-रूप है मेरी कविताएं ।

गोली से मनुष्यता नहीं मरती !

● बी.आर. नंदा

भारत ने ही नहीं पूरी दुनिया ने महात्मा गांधी की हत्या के बाद अपने आपको निर्बल महसूस किया, किंतु उनके संदेशों ने अपनी प्रासंगिकता नहीं खोयी । अब वे इतिहास का अंग बन चुके हैं । मनुष्यता की जीती मिसाल थे महात्मा गांधी, जिनके दृढ़ विचारों से विश्व के अनेक विद्वान नतमस्तक थे । प्रस्तुत है इस संबंध में चेकोस्लोवाकिया के महान मानवतावादियों के उद्गार । इनके लेखक हैं विख्यात गांधीवादी और नेहरू मेमोरियल म्यूजियम से संबद्ध रहे श्री बी.आर. नंदा । उन्होंने एक पुस्तक संपादित की है, 'महात्मा गांधी १२५ वर्ष', प्रकाशक हैं : इंडियन कौंसिल फॉर कल्चरल रिलेशन्स । प्रस्तुत हैं उसके कुछ अंश—

प्रो. परटोल्ड १९०९ में एक वर्ष के लिए भारत अध्ययन के उद्देश्य से आये थे । जब यहां वह उच्चायुक्त बने तो उन्होंने अपने समय का उपयोग भारत भ्रमण तथा अधिक से अधिक शोध पर किया । भारत की प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ आदिवासियों की खोज में वह जंगलों में भी गये । उन्होंने आदिवासियों की संस्कृति, शैली और उनके रहन-सहन पर विस्तृत शोध किया । अन्ना के प्रयासों के चलते उन्हें एक दिन महात्मा गांधी के प्रथम दर्शन का भी सौभाग्य मिला । महात्मा गांधी के साथ अपनी भेंट का वर्णन १९२८ में एक पत्रिका में उन्होंने इस प्रकार किया :

''बसंत ऋतु की बात है । मेरे पास काफी खाली समय था । तीन छुट्टियां आगे भी थीं । मैंने तैयारी शुरू कर दी । अपना बेंडिंग तैयार किया और नौ बजे के पहले-पहले रेलवे स्टेशन पहुंच गया । रेलवे कुली ने डिब्बे में मेरा बिस्तर लगाया । इस दौरान जब मैं प्लेटफार्म पर टहल रहा था तब मैंने सुसज्जित भारतीय परिधानों में एक व्यक्ति को देखा जो उस ट्रेन की खिड़की से बाहर झांककर लोगों का अभिवादन ग्रहण कर रहा था ।

कुछ लोग उसके लिए फूल लाये थे तो कुछ पुष्प-गुच्छ और कुछ माला लेकर आये थे । मैंने लोगों से पूछा । पता चला कि गाड़ी के

भीतर बैठा व्यक्ति गांधी है । वह व्यक्ति जो भारतीयों के दिलो-दिमाग में छाया हुआ है । वह गांधी जो एक आदर्शवादी है और जिसने बंबई और फिर लंदन में शिक्षा ग्रहण की...''

जनता का असीम प्रेम

गांधीजी के प्रति जनता के इस अगाध प्रेम को प्रख्यात मानवतावादी जे.एल. होमादका ने महसूस किया । भारत में महात्मा गांधी की जो छाप उन्होंने घूम-घूमकर भारतीयों के हृदय में देखी उससे वे बड़े अभिभूत हुए । गांधीजी के प्रति जनता के असीम प्रेम को देखकर उन्होंने उनसे मिलने का निर्णय किया ।उन्होंने लिखा—

''हम लोग उनके आलोचक हैं लेकिन हमने पाया कि वह व्यक्ति तो मनुष्यता का धनी है । इतना ही नहीं वह व्यक्ति तो राजनीतिक तथा व्यक्तिगत जीवन, दोनों में गहराई तक मानवता से जुड़ा हुआ है ।''

गांधीजी ने उन्हें आश्रम में आमंत्रित किया गांधीजी के साथ प्रथम भेंट में वह इतना प्रभावित हुए कि इस बात का पता उनके उस पत्र से लगाया जा सकता है जो उन्होंने अपनी पत्नी को लिखा था :

इस विलक्षण व्यक्ति के बिना आधुनिक भारत की स्थिति असोचनीय है । कभी-कभी यह कहा जाता है कि भारत ब्रिटिश सामंतवादी शक्तियों के कारण एक सूत्र में है पर प्रश्न केवल बाहरी एकता का नहीं है । गूढ़ प्रश्न तो उसकी आंतरिक एकता का है । इस एकता को राजनीतिक, संगठनात्मक अथवा तकनीकी शक्तियों से बनाये नहीं रखा जा सकता है । शायद महात्मा गांधी उन लोगों के हृदय का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने अपना कभी अस्तित्व महसूस ही नहीं किया । यह स्थिति एक तरह के राजनीतिक खतरे का भी संकेत है । यह वैसी स्थिति है जिससे लगता है कि उनके बिना भारत के लोगों का जीवन रिक्तता से भरा है । एक सच्चे राजनीतिज्ञ को सदैव सामान्य राजनीतिक व्यवहारों की सीमा के बाहर चिंतन करना चाहिए और उस दृष्टिकोण की ओ ध्यान देना चाहिए कि किस प्रकार मानव समुदाय को एक सूत्र में रखा जा सकता है व एक सच्ची सेवा प्रदान की जा सकती है । जो लोग आज के भारत से थोड़ा-बहुत परिचित हैं उन्हें यह सवाल पूछना चाहिए कि क्या गांधीजी असफल रहे ? जहां तक भारत की बात है तो उनके बिना स्थितियां अकल्पनीय हैं । गांधीजी भारत की रीढ़ की हड्डी हैं, वह भारत की आश की किरण हैं तथा मानवता के भंडार हैं । उन्हें भविष्य के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए ?

उन्होंने अस्थायी आश्रम बनाया

चेकोस्लोवाकिया के एक अन्य विद्वान जो गांधीजी के जीवन और संदेशों से प्रभावित थे वे थे चिंतक तथा ज्योतिषी कारेल ह्यूजर । १९३ की गरमी में वह दिल्ली में डॉ. अंसारी के अतिथि थे । यहां वह छोटे राष्ट्रों की समस्याओं पर डॉ. राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में आयोजित कांग्रेस कार्यकर्ताओं की एक बैठक को संबोधित करने आये थे । उस समय गांधीजी गांव के गरीबों के उत्थान कार्यक्रम को लेकर व्यस्त थे । इस कार्यक्रम की व्यस्तता के कारण उन्होंने अपना अस्थायी आश्रम भी वहीं बना लिया था । आश्रम दिल्ली से ज्यादा दूर नहीं था । सरोजिनी नायडू ने प्रो. ह्यूजर के लिए

अगस्त माह में उस गांव के दो दिन के दौरे का कार्यक्रम निर्धारित किया । ये दो दिन ही ह्यूजर के जीवन में एक अमूल्य घटना के रूप में अंकित हो गये ।

'... मैं उस क्षण को नहीं भूलूंगा । उन्होंने चेकोस्लोवाकिया के एक दैनिक समाचारपत्र में लिखा— उनके साथ बिताये गये दो दिनों से मेरी आत्मा तृप्त नहीं हुई । मैंने महसूस किया कि यदि मेरे सारे काम भी असफल रहे तो भी मेरी यात्रा के वे दो दिन मेरे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण रहेंगे । मैंने गांधीजो को चेकोस्लोवाकिया के मित्रों की ओर से बधाई दी जो उन्होंने एक मोहक मुसकान के साथ स्वीकार कर ली । फिर मैंने मीराबेन को फ्रांस की श्रीमती फ्रैमैरियन तथा रामेन रोलैंड की ओर से बधाई दी । फ्रैमैरियन के बारे में बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि वह फ्रांसीसी ज्योतिषी के कार्यों से बहुत प्रभावित हैं । उनके बारे में उन्होंने जेल में पढ़ा । गांधीजी ने फिर ज्योतिष के महत्त्व तथा समकालीन विज्ञान पर भी चर्चा की ।'

युग के दुर्लभ व्यक्ति

गांव के गरीबों के उत्थान में लगे महात्मा गांधी को चरखा कातते हुए देखकर वह इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने लिखा—

महात्मा ! हमारे युग का एक दुर्लभ और अनोखा व्यक्तित्व । वह शांत और विनम्र हैं तथा उतना ही दृढ़ तथा सच्चाई से न हटनेवाला । उसके व्यक्तित्व को देखकर ऐसा लगता है कि वह आध्यात्मिक सौंदर्य और शक्ति से परिपूर्ण हैं । जब मैं महसूस करता हूं कि यह व्यक्ति तो दुनिया को राह दिखा सकता है तो मैं यह भी देखता हूं कि वह व्यक्ति कितना दुर्बल और साधारण है जो प्रतिदिन थोड़ा-सा अन्न खाता है । भौतिकवाद से त्रस्त तथा भ्रष्टाचार में डूब रहे इस युग में तो यह व्यक्ति एक अनोखा उदाहरण है । वह भारत की शक्ति तथा ताकत का केंद्र है । इस शक्ति ने ही उसे विश्व का एक महान नेता तथा गुरु बनाया है । गांधीजी चरखा घुमा रहे हैं, खादी तैयार कर रहे हैं, उपवास कर रहे हैं, ये बातें अनोखी हैं जिन्हें संसार के लोग सहजता से समझ नहीं पाये ।

मानवता की नीति

पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के प्रो. जीरी नेहनेवाजसा ने चेकोस्लोवाकिया के एक दैनिक पत्र में लिखा—

'यह गांधी है । यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे लाखों लोग प्यार करते हैं । उसने अपने को मात्र एक मनुष्य के रूप में ही नहीं बांधा है । उसकी नीति मनुष्यता की है । उसकी प्रेरणा का एक कारण है । यह वह व्यक्ति है जिसका नाम भारत शब्द की प्राकृतिक उपज है । वह चेकोस्लोवाकिया के बारे में जानना चाहता है । उसका हित केवल आने-जानेवाले और मिलनेवाले व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है । उसका हित भारत से है, सबसे है । वह भारत में सामाजिक तथा राजनीतिक पुनर्गठन की तैयारी कर रहा है । उसकी रुचि जरमनी से भी

है । वह यह भी जानना चाहता है कि चेकोस्लोवाकिया कितने लोगों का हस्तांतरण किया गया तथा अभी कितने लोग बचे हैं । वह यह सुनकर सुख का अनुभव करता है कि उदार जरमन, चेकोस्लोवाकिया नागरिकों से उदारता का व्यवहार कर रहे हैं । उसके मुखमंडल में यह सुनकर मुस्कान बिखरती है कि ऐसे लोगों की संख्या अधिक नहीं है । मेरे हाथ उनके हाथों पर कुछ क्षण के लिए ठहरते हैं । छोटी, सफेद हथेली तथा पीली अंगुलियां, हाथ मिलाते समय उनका हाथ दृढ़, एक पुरुष की तरह लेकिन इतना कोमल कि अंधकार में ऐसे लगेगा जैसे उनका हाथ न हो, किसी बच्चे अथवा किसी वृद्ध का हाथ हो । क्या यह वही हाथ है जिसमें महान देश का भाग्य छिपा है ? क्या यह वही हाथ है जो लाखों लोगों के दिलों में उनकी आस्थाओं, स्वप्नों, प्रार्थनाओं तथा भविष्य का प्रतीक है ।'

हत्या के बाद

दुःख की बात तो यह है कि गांधीजी की हत्या के बाद उसी दैनिक पत्र में श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए प्रो. नेहनेवाजसा ने शोकाकुल होकर लिखा—

दुनिया में इस तरह के व्यक्तित्व से भरा हुआ व्यक्ति पाना बड़ा कठिन है, जिसमें सच्चाई, उदारता और सहजता का रहस्य भरा पड़ा हो । जीवन-यात्रा के इस पड़ाव में ऐसे व्यक्ति का, चाहे जितना खोजें, मिलना दुष्कर है, वह ऐसा व्यक्ति था जिसे विश्वभर के लोग प्यार करते थे । उसकी समाज में आस्था तथा मानवता में विश्वास अखंड था । वह सामाजिक समुदाय, दलों, राज्यों और शायद विश्व से भी ऊपर था ।

मसारिक और गांधी विश्व के दो महान मानवतावादी थे । यह शायद उनके भीतर की अंतरात्मा की आवाज थी जिसके कारण दोनों नेता एक ही लक्ष्य को लेकर आगे बढ़े । गत वर्ष जुलाई की बात है गांधीजी चेकोस्लोवाकिया के तीन छात्रों के साथ बैठे थे । उनके होंठों में इस आशय के प्रश्न थे कि क्या उनका देश चेकोस्लोवाकिया— मसारिक के स्वप्नों का चेकोस्लोवाकिया बनेगा ।

गोली से मनुष्यता नहीं मरती

दैनिक पत्र के उसी अंक में एक पृष्ठ पर प्रख्यात विद्वान ल्यूबर हैजेक की भी श्रद्धांजलि छपी थी । महात्मा गांधी को भारत का महान सपूत बताते हुए उन्होंने गांधीजी की श्रद्धा में जो सुमन अर्पित किये वे इस प्रकार थे—

हम आज गांधीजी की हत्या की खबर सुनकर उतना ही टूटे हैं जितना बंबई, लंदन, पेरिस, मास्को और न्यूयार्क के लाखों लोग टूटे हैं । महात्मा गांधी मानवता, अहिंसा, सहिष्णुता और स्वतंत्रता के प्रतीक थे । उनकी हत्या से हिंसा, घृणा और निर्दयता को बल मिला है । अब हम जब अपने हाथ में कलम लेते हैं तो एक आम लक्ष्य के लिए लेते हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए कि गांधीजी की हार नहीं हुई है, वे पराजित नहीं हुए हैं, उनकी विचारधारा पराजित नहीं हुई है । उनकी मनुष्यता को गोली से समाप्त नहीं किया जा सकता है । ईश्वर सत्य है, सत्य ही ईश्वर है, गांधीजी ने एक बार कहा था कि सत्य को अहिंसा के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है । सत्य और ईश्वर को केवल अहिंसा से ही प्राप्त किया जा सकता है । गोली से मनुष्यता नहीं मरती है ।

सांस्कृतिक समाचार

अक्षर आदित्य सम्मान

लेखक संघ भोपाल ने इस वर्ष प्रदेश के नौ नाकारों को अक्षर आदित्य पुरस्कार देकर म्मानित किया । सम्मानित लेखक हैं— श्री न्द्र अवस्थी, बालकवि बैरागी, जगदीश चतुर्वेदी, लाला जगदलपुरी, भैयालाल व्यास, श्रीकांत जोशी, मालती जोशी, कृष्णा अग्निहोत्री और शंकर पुणतांबेकर । पुरस्कार वितरण किया, म.प्र. की संस्कृतिक मंत्री डॉ. विजय लक्ष्मी माधो और प्रभुदयाल अग्निहोत्री ने । संस्था के अध्यक्ष श्री बटुक चतुर्वेदी ने आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया ।

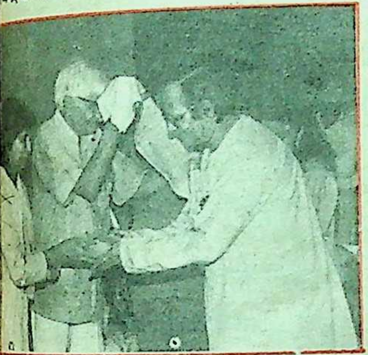

श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल, सिंचाई मंत्री, मध्य प्रदेश के सुपुत्र डॉ. प्रदीप शुक्ल ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा को मध्य प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र पर लिखी पुस्तक 'उदयाचल से उत्तरायण' भेंट की ।

हरारे में पुस्तक विमोचन

हरारे । गत दिनों प्रतिष्ठित लेखक श्री नरेन्द्र कुमार की पुस्तक 'मुगाबेज रिफलेक्शंस : जिंबावे एंड द कनटैमपाररी वर्ल्ड' का लोकार्पण समारोह 'हरारे' में संपन्न हुआ । पुस्तक के सह-लेखक जिंबावे के विदेशमंत्री डॉ. नाथन शामूयारिरा और राजदूत तिरीवाफी जॉन कांगय हैं ।

भारतीय लेखक श्री नरेंद्र कुमार ने इस पुस्तक में अफरीकी देश के राजनीतिक घटनाक्रमों तथा वहां की सामाजिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला है ।

प्रज्ञा सम्मान समारोह

नयी सड़क प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ की ओर से वर्ष १९९५ के प्रज्ञा पुरस्कार प्रदान किये गये ।

पुरस्कार के लिए विभिन्न विधाओं के दस विद्वानों का चयन किया गया । डॉ. प्रशांत वेदालंकार (मरणोपरांत)—साहित्य, डॉ. जीतसिंह 'जीत'—हिंदी प्रचार, श्री अक्षय कुमार—साहित्य, श्रीमती अनुराधा प्रसाद—टी. वी. धारावाहिक, हेमंत कुमार बिशनोई—पत्रकारिता, डॉ. जय भगवान गुप्ता—साहित्य, आशा रानी—प्रकाशन/साहित्य, श्री यशपाल पुरंग—शिक्षा, श्री सोहन लाल पुरंग—साहित्य और श्रीमती शशिकांता सेठ ।

सम्मान

हाफिज मेरठी के साथ कवि श्री भारत भूषण । मेरठ के नागरिकों ने श्री भारत भूषण का सम्मान किया—एक लाख एक रुपये और स्मृति चिह्न द्वारा । बधाई । (सं.)

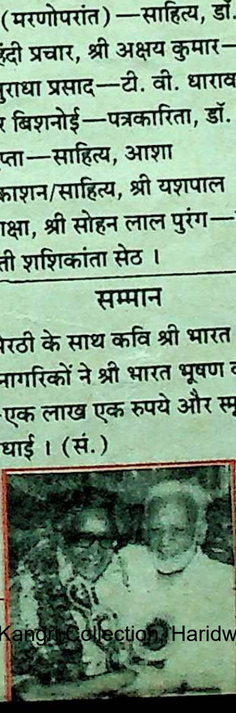

कादम्बिनी क्लब समाचार

पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

बीकानेर । स्थानीय बीकानेर कादम्बिनी क्लब की ओर से आयोजित लघु कथा प्रतियोगिता के विजेताओं का पुरस्कार वितरण समारोह लाली बाई पार्क में आयोजित किया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि साहित्यकार लक्ष्मी नारायण रंगा ने प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया । विद्यालय तथा महाविद्यालय के स्तर के छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित इस लघु कथा प्रतियोगिता में विद्यालय वर्ग में मधुलिका व्यास की लघु कथा (बरसात) को प्रथम, प्रेमलता बिस्सा की (विरासत) को द्वितीय तथा नंद कुमार व्यास की लघु कथा (बंधन) को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया ।

बीकानेर
कादम्बिती क्लब

महाविद्यालय स्तर की लघु कथा प्रतियोगिता में विनोद शर्मा की लघु कथा (खुशी) को प्रथम, अशोक व्यास की (शुरुआत) को द्वितीय तथा आरती पुरोहित की (ममता) को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राजस्थानी भाषा के वरिष्ठ साहित्यकार श्री शिव राज छंगाणी ने कहा कि बीकानेर की धरती साहित्य के लिए उर्वरा धरा रही है । डॉ. शंकर लाल स्वामी के गीतों ने कार्यक्रम की शोभा में चार चांद लगाये । विनोद शर्मा, अनुराधा किराडू, सुश्री दर्शना उत्सुक, महेन्द्र रंगा, राम किशन रंगा, अशोक व्यास, मोहम्मद इरशाद, माणक चंद सुथार व संदीप गयाड़ ने काव्य पाठ किया तथा कादम्बिनी क्लब के संयोजक डॉ. अजय जोशी ने क्लब के उद्देश्य त गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रस्तुत की । क्लब की सदस्या सुश्री चंद्रकला जैन का राजस्था न्यायिक सेवा में चयनित होने पर अभिनंदन कि गया ।

राजस्थानी भाषा साहित्य व संस्कृति अकादमी के सचिव श्री सत्य प्रकाश आचार्य ने अकादमी कार्यक्रमों की जानकारी दी । इस अवसर पर गो कृष्ण जोशी ने कार्यक्रम के माध्यम से नये व पु रचनाकारों को मंच प्रदान करने में कादम्बिनी क्लब की भूमिका की सराहना की ।

वडोदरा नगर में कादम्बिनी क्लब की स्थापना

श्रीमती भारती पांडे के आवास सानंद ४०३ ओएनजीसी कॉलोनी में कादम्बिनी क्लब के सदस्यों की एक बैठक आयोजित की गयी । बै में सर्वश्री आर. पी. वर्मा, राजेंद्र मेहरा, नरेंद्र पां डॉ. नलिनी पुरोहित, इंदिरा जौहरी, कल्पना शी भारतीय पांडे, पारूल शाह, डॉ. पायल अग्रवा व डॉ. माणिक मृगेश उपस्थित थे । बैठक में सर्वसम्मति से डॉ. माणिक मृगेश को वडोदरा न कादम्बिनी क्लब का संयोजक मनोनीत किया गया ।

काव्य गोष्ठी

कादम्बिनी क्लब पेटलावद द्वारा काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें क्लब के सदस्यों श्री हरिशंकर पंवार, शीतला प्रसाद गुप्ता, डॉ. अरुण प्रकाश, कु. प्रीति घोड़पकर एवं उमेश जोशी ने अपनी रचनाओं द्वारा श्रोताओं का मन मोह लिया । विशेषकर क्लब की छोटी सदस्या प्रीति की रचनाओं की सभी ने प्रशंसा की । आभार प्रदर्शन डॉ. एस. के. गौड़ ने किया एवं अध्यक्षता शीतला प्रसाद गुप्ता ने की ।

दुश्मन की अदालत में इनसाफ नहीं होता

● *रीता पल्लवी*

बचपन से ही मातृविहीन खुदीराम बोस ने अपने पथ-प्रदर्शक श्री सत्येन्द्र नाथ के सामने मातृभूमि की आजादी के लिए अपनी जान की बाजी तक लगा देने की बात कही । सत्येन्द्र नाथ को शायद खुदीराम बोस-जैसे युवक की ही तलाश थी जो हंसते-हंसते अपने वतन पर कुरबान हो जाए ।

अपने नेता सत्येंद्र नाथ के निर्देशानुसार बम और पिस्तौल लेकर खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी १८ अप्रैल १९०८ को बंगाल से रवाना हुए । मुजफ्फरपुर पहुंचकर उन्होंने रेलवे स्टेशन से कुछ ही दूर स्थित मेहता वार्ड एस्टेट (अब पुरानी धर्मशाला नाम से प्रसिद्ध) में शरण ली और किंग्सफोर्ड की गतिविधियों का बारीकी से जायजा लेने लगे । तभी उन्हें यूरोपियन क्लब (अब मुजफ्फरपुर क्लब) के विषय में जानकारी हुई, जहां किंग्सफोर्ड प्रतिदिन नियत समय पर अपनी काली रंग की बग्घी में आया करता था । उन लोगों ने तय किया कि किंग्सफोर्ड के क्लब से वापस आते समय बम मारकर उसकी हत्या कर देंगे ।

३० अप्रैल १९०८ की रात थी । दोनों क्लब और किंग्सफोर्ड के निवास के बीच एक पेड़ पर छिपकर बैठ गये । निर्धारित समय पर बग्घी आयी, दोनों ने बम मारा और भाग खड़े हुए पर नियति को कुछ और ही मंजूर था । छुपते-छुपाते दोनों रेलवे लाइन के किनारे-किनारे शहर से करीब २५ मील पूरब वैनी (पूसा रोड रेलवे स्टेशन) पहुंचे और एक हलवाई की दूकान पर दम लिया, जहां कल की घटना का ही जिक्र चल रहा था । जब खुदीराम बोस ने यह सुना कि उनके बम से किंग्सफोर्ड नहीं मरा बल्कि वकील कैनेडी की पत्नी और लड़की मारी गयी तो अचानक ही उनके मुंह से निकल पड़ा— ''किंग्सफोर्ड मोरलो ना ?'' यह सुनते ही उनकी भाषा और हुलिए से पास ही में खड़े दो सिपाहियों को उन पर शक हो गया । खुदीराम बोस तब पानी पी रहे थे । दोनों सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया पर प्रफुल्ल चाकी वहां से भाग निकले और समस्तीपुर पहुंचे, जहां भृगुराम चरण बोस ने उनकी मदद की । उन्होंने उनके कपड़े बदलवाये और मोकामाघाट जानेवाली ट्रेन में उन्हें बिठा दिया । संयोगवश सिंहभूम जिले में पदस्थापित आरक्षी अवर निरीक्षक श्री नंदलाल बनर्जी की नजर उन पर पड़ी । श्री बनर्जी को उन पर शक हो गया । उन्होंने अपने दादा, जो मुजफ्फरपुर में सरकारी वकील थे, को सूचना देते हुए एस. पी. से बातें कर उस युवक की गिरफ्तारी का आदेश निर्गत कराने को कहा ।

मोकामा स्टेशन पर पहुंचते ही चाकी को गिरफ़्तार करने के लिए सिपाहियों का एक जत्था उनकी ओर बढ़ा, उन्हें पकड़ने की कोशिश की पर चाकी उन सबसे बचते रहे । जब निकल भागना कठिन हो गया, तब अपनी ही जेब में रखे रिवॉल्वर से उन्होंने खुद को गोली मार ली । सरकार के हाथ उनकी लाश भर आ सकी । लाश को पहचान के लिए खुदीराम के सामने लाया गया, जिसे उन्होंने दिनेश चंद्र राय बताया क्योंकि प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम को एक-दूसरे का सही नाम न बताकर क्रमशः दिनेश चंद्र राय और दुर्गा दास बताया गया था और वे एक-दूसरे को इन्हीं नामों से जानते थे ।

गिरफ़्तारी के बाद खुदी राम बोस को मुजफ्फरपुर लाया गया, जहां उन्होंने निर्भीकतापूर्वक सारी बातें कबूल कर लीं और इसके लिए उन्हें फांसी की सजा सुनायी गयी लेकिन जज को भी तब कम आश्चर्य नहीं हुआ, जब उन्होंने खुदी राम बोस को निर्भीक मुसकराते देखा । उन्होंने खुदी राम से पूछा—"तुम्हें पता है, तुम्हें क्या सजा मिली है ?" "हां, मुझे मालूम है", खुदी राम का जवाब था । "तुम सात दिनों के अंदर अपील कर सकते हो ।" जज की बातों को अनसुना करते हुए खुदी राम ने कहा—"यहां उपस्थित लोगों से मुझे कुछ कहना है ।" "लेकिन मैं इसके लिए तुम्हें कोई वक्त नहीं दूंगा", जज ने कहा । तब शरारत से मुसकराते हुए कहा—"अगर आप मुझे इजाजत दें तो मैं बता सकता हूं कि वह बम कैसे बनाया गया था ।" निर्भीकतापूर्वक कही गयी उनकी इन बातों पर वहां उपस्थित लोगों को आश्चर्य भी हुआ था और गर्व भी । इस बीच उनकी सजा कम करने की सिफारिश भी वकीलों ने की लेकिन ब्रिटिश सरकार किसी भी कीमत पर इसके लिए तैयार नहीं थी सो फांसी की सजा बहाल रखते हुए इसकी तारीख ११ अगस्त तय कर दी गयी ।

फांसी के एक दिन पहले खुदी राम बोस से वकील कालीदास बसु के मुलाकात का जिक्र उस समय की ख्यातिलब्ध पत्रिका 'संजीवनी' में कुछ इस तरह अंकित है—खुदीराम को आज रात्रि के अंतिम पहर फांसी पर चढ़ाया जाना था लेकिन उनके चेहरे की रौनक और ताजगी में जरा भी फर्क नहीं आया था । कालीदास बसु को देख उन्होंने कहा था—"प्राचीनकाल में जिस तरह से राजपूत औरतें चिता की आग में बिना किसी भय के कूद पड़ती थीं, मैं भी उसी निर्भीकता के साथ मरूंगा । फांसी के वक्त भी खुदीराम उसी तरह खड़े रहे—निश्चल और निर्भीक । फिर हंसते-हंसते उन्होंने मौत को गले

"वह कहा करता था कि उसके हृदय की आग सिर्फ आग से ही बुझ सकती है । या तो वह आग ब्रिटिश साम्राज्य की चिता की होगी या फिर खुद उसकी चिता की । ब्रिटिश साम्राज्य की जलती चिता तो वह नहीं देख सका लेकिन अपनी चिता में आग तो वह लगा ही गया ।"

लगा लिया । सच्च के कितना निकट है उनके द्वारा फांसी के वक्त गाया गया यह अंतिम गीत—

"एक बार बिदाय दे मां, घूरे आसी ।
हांसी-हांसी पोरिबो फांसी, देखबे
जोगोतवासी ।"

खुदी राम बोस की बड़ी बहन अपरूपा देवी ने अपने संस्मरण में लिखा है—"वह कहा करता था कि उसके हृदय की आग सिर्फ आग से ही बुझ सकती है । या तो वह आग ब्रिटिश साम्राज्य की चिता की होगी या फिर खुद उसकी चिता की । ब्रिटिश साम्राज्य की जलती चिता तो वह नहीं देख सका लेकिन अपनी चिता में आग तो वह लगा ही गया ।"

उन्होंने आगे लिखा है—"पहले हमारे दो भाई एक-एक कर मर चुके थे । जब हमारा छोटा भाई पैदा हुआ तो हम सब बहुत खुश हुए । हमारे समाज में एक रिवाज था कि अगर किसी घर में लड़के जीवित नहीं रहते तो मां उसे बेचने का स्वांग करती और कोई उसे खुद्दी (चावल के छोटे-छोटे टुकड़े) या ऐसी ही किसी चीज से खरीद लेता । सो मैंने अपने ही छोटे नवजात भाई को तीन मुट्ठी खुद्दी देकर खरीद लिया । मेरे मन की दबी चाह यही थी कि वह सिर्फ मेरा होकर रहे । उस पर सिर्फ मेरा अधिकार हो लेकिन मुझे कहां पता था कि वह तो देश के हाथों पहले ही खरीदा जा चुका है । मैंने उसे मुट्ठीभर चावल में खरीदा था लेकिन देश के निर्भीक लड़कों ने उसे मुट्ठीभर खून से खरीद लिया था ।"

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपनी पत्रिका 'केसरी' में बेहिचक लिखा—"ये हत्याएं अन्य हत्याओं से बिलकुल दूसरी तरह की हैं क्योंकि इन हत्याओं को करनेवालों ने अत्यंत उच्च भावना के वश होकर यह किया ।"

इतना तो अवश्य है कि जिंदगी की कच्ची दहलीज पर खुदी राम बोस को अपनी मातृभूमि की फिक्र थी । उन माताओं-बहनों की फिक्र थी, जिनसे उनका बेटा, भाई और सुहाग अंगरेजी हुकूमत के शाहंशाहों ने छीन लिया था ।

यह उनका निर्भीक देश-प्रेम ही था, जब शहादत के समय उन्होंने कहा था—"अंगरेज हमारे देश के दुश्मन हैं और दुश्मन की कोई भी अदालत, कभी इनसाफ नहीं कर सकती है । फांसी मेरे लिए सजा नहीं उपहार है । मैं इसे सहर्ष स्वीकार करता हूं ।"

उनकी इस ओजपूर्ण वाणी ने वहां उपस्थित लोगों को झकझोर कर रख दिया । कहते हैं, उनके इस कथन पर मुजफ्फरपुर जिला जेल के जल्लादों ने उन्हें फांसी पर लटकाने से इनकार कर दिया । तब कलकत्ते से दूसरा जल्लाद बुलाया गया, जिसने उन्हें फांसी दी ।

दुर्गा प्र. चौधरी पथ मुजफ्फरपुर

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : साहसिक प्रयासों से सफलता मिलेगी । नवीन कार्यों एवं दायित्वों की अधिकता होगी । रक्त संबंधियों से व्यर्थ विवाद होगा । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । संपत्ति के कार्यों में सुलहकारी स्थितियों का योग होगा । प्रवास में सावधानी हितकर होगी । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से राजकीय कार्यों में वांछित सफलता मिलेगी । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें ।

वृषभ : पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । व्यर्थ मानसिक तनाव रहेगा । राजकीय कार्यों में नवीन मित्रों का सहयोग मिलेगा । जीवन साथी अथवा उनके संबंधियों के कारण धन लाभ होगा । परोपकारी कार्यों में परेशानी का सामना करना होगा । जमानती, लेन-देन के कार्यों में सावधानी रखें । मासांत में उदासीनता की अधिकता होगी । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । धार्मिक कार्यों की सफलता से प्रसन्नता होगी ।

मिथुन : विवादास्पद कार्यों में सफलता मिलेगी । आकस्मिक धन लाभ से वांछित कार्यों की पूर्ति होगी । उच्चाधिकारियों पर प्रभाव में वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से चिंता होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों से सफलता मिलेगी । नवीन संपत्ति कार्यों की पूर्ति होगी, न्यायालयीन कार्यों में अनपेक्षित परिस्थितियों का परिवर्तन होगा ।

कर्क : उच्चाधिकारियों से लाभ मिलेगा । नवीन योजनाओं में व्यस्तता होगी, पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । संपत्ति के विवादों का निराकरण होगा । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । जोखिमपूर्ण कार्यों से पीड़ा होगी । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों से प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी ।

सिंह : आजीविका संबंधी परिवर्तन से उत्साह में वृद्धि होगी । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से लाभदायी स्थितियों का उदय होगा । निकटजन की अस्वस्थता से परेशानी बढ़ेगी । व्यर्थ व्ययों की अधिकता होगी । सामाजिक तथा राजनीतिक दिशा में नवीन अवसरों का उदय होगा । जीवन स्तर में सुधार होगा ।

कन्या : आर्थिक स्थायित्व बढ़ेगा, धनागम के नवीन संसाधनों का विकास होगा । पारिवारिक दायित्वों की अधिकता होगी । संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय होगा । व्यर्थ के व्ययों से चिंता होगी । प्रवास में विशिष्ट लाभ मिलेगा । नवीन मित्रों का समागम धनदायी होगा । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों से प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी ।

ग्रह स्थिति : सूर्य १७ अगस्त से सिंह में, मंगल २८ से तुला में, बुध ६ से सिंह में, २४ से कन्या में, गुरु वृश्चिक में, शुक्र १८ से सिंह में, शनि वक्री ९ से कुंभ में, राहु तुला में केतु मेष में, हर्षल मकर में, नेप्च्यून धनु में प्लेटों वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

तुला : आय के नवीन साधनों का उदय होगा। परोपकारी कार्यों से प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नवीन संपर्कों का आर्थिक लाभ मिलेगा। शत्रु पक्ष के पराभव से प्रसन्नता होगी। संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय होगा। प्रवास की अधिकता होगी। आमोद-प्रमोद में संयम रखें।

वृश्चिक : मास में साहस तथा आत्मविश्वास से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी। राजकीय कार्यों में विरोधाभास की अधिकता होगी। न्यायालयीन कार्यों में व्यर्थ विलंब होगा। मानसिक पीड़ा की अधिकता होगी। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। लंबित धन प्राप्ति से कार्यों की पूर्ति होगी।

धनु : मास में उतार-चढ़ाव की अधिकता होगी। परिस्थितियों में अनपेक्षित परिवर्तनों से तनाव में वृद्धि रहेगी, स्वजनों के सहयोग से उत्साह में वृद्धि होगी। संपत्ति के कार्यों में सुलहकारी स्थितियों का उदय होगा। आमोद-प्रमोद की अधिकता होगी, संपत्ति अथवा विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा। सामाजिक क्रिया-कलापों में विवादास्पद स्थितियों का उदय होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

मकर : मास में धीमी प्रगति होगी। पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। उच्चाधिकारियों पर प्रभाव में वृद्धि होगी। आर्थिक कार्यों में अकारण विलंब तथा व्यवधान होंगे। शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से चिंता रहेगी। सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी। परोपकारी अथवा रचनात्मक कार्यों से यश वृद्धि होगी।

कुंभ : भौतिक सुख एवं संसाधनों में वृद्धि होगी। पारिवारिक दायित्वों के प्रति उदासीनता रहेगी। व्यर्थ भावनात्मक पीड़ा होगी। शत्रु-पक्ष की सक्रियता से कार्यों में अवरोध उपस्थित होगा। नवीन स्थान की यात्रा से आनंदानुभूति होगी, लंबित धन प्राप्ति से प्रसन्नता होगी। अनियमित दिनचर्या से अस्वस्थता का उदय होगा। संभाषण में संतुलन हितकर होगा।

मीन : नवीन दायित्वों में वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा विद्यमान रहेगी। व्यर्थ संभाषण टालना हितकर होगा। संयमित व्यवहार रखें। मास के मध्य में पुराने मित्रों से भेंट होगी। धनागम होगा। आर्थिक कार्यों में जोखिमपूर्ण निर्णय लाभदायी होंगे।

— १२/४, पुराना सुभाष नगर, गोविंदपुरा,
भोपाल (म.प्र.)

पर्व और त्योहार

१ अगस्त—नागपंचमी, २ कल्कि जयंती, ३ तुलसीदास जयंती, पुत्रदा एकादशी, ८ भोम प्रदोष, १० स्नानदान व्रतादि की श्रवणयुता पूर्णिमा, रक्षाबंधन, १२ अशून्यव्रत, १३ कज्जली तीज, संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, १५ स्वतंत्रता दिवस, १७ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, १८ उदय व्यापनी अष्टमी में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, १९ गोगा नवमी, २१ जया एकादशी, २३ प्रदोषव्रत, २४ अघोर चतुर्दशी, २५ श्राद्धादि की सिनी अमावस्या, २६ ऋशोत्पाटनी अमावस्या, २९ हरतालिका व्रत, ३० भटषि पंचमी, ३१ लोलार्क षष्ठी।

उनके हाथों में बेड़ियां पड़ी हुई थीं !

● बनारसीदास चतुर्वेदी

सन १९२१ में साथी श्री संपूर्णानन्दजी जेल गये, मेरे भी सत्याग्रह संग्राम में शामिल होने की इच्छा हुई थी, तब मैं सत्याग्रह आश्रम में था, यूं ही चलते-चलते प्रसंगवश मैंने अपनी बात बापू से प्रकट कर दी थी । उन्होंने तुरंत कहा, 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' भारतीयों का जो काम तुमने अपने सिर ले लिया है उसी को करते रहो । जेल जाने की मत सोचो ।' महात्माजी ने स्वामी भवानी दयालजी संन्यासी को भी यही उपदेश दिया था । उन्होंने भवानी दयालजी से कहा था— "जेल जानेवाले तो हजारों ही हैं, पर प्रवासी भारतीयों का काम करनेवाले तो बहुत थोड़े हैं । उसी अपने कार्य में लगे रहो ।"

जेल से भागना

प्रोफेसर रंजन (जिनका असली नाम शायद रघुनाथ था) अजमेर जेल से भागकर कुण्डेश्वर पहुंचे थे और मेरे पास कई महीने रहे थे । मैंने उनके लिए पचास रुपये महीने का प्रबंध कर दिया था । वह एम.ए. की परीक्षा देने नागपुर गये पर वहां पकड़े गये । उन पर मुकदमा चला और जेल भी हुई । एक अन्य सज्जन तार काटकर शरण लेने पहुंचे थे । वह मऊ आजमगढ़ के निवासी थे । मैंने उनका नाम भी नहीं पूछा और बनावटी नाम 'तिवारी' रख दिया । वह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे । वह चांद के गंजे थे और मुझे पता लगा कि ब्रिटिश खुफिया पुलिस उनकी तलाश में है । तब मैंने उन्हें पचास रुपये देकर एक टेढ़े-मेढ़े रास्ते से जबलपुर भिजवा दिया ।

एक साम्यवादी लेखक बरेली से वहां पहुंचे थे और कुछ दिन वहां रहे भी थे । महाराज श्री वीरसिंह जूदेव को जब मालूम हुआ कि अंगरेजी खुफिया पुलिस की कुदृष्टि हमारे कुण्डेश्वर आश्रम पर है तो उन्होंने मुझसे प्राइवेट तौर पर कहा था, "कुण्डेश्वर तो अब काफी प्रसिद्ध हो गया है और वहां किसी क्रांतिकारी को ठहराना खतरे से खाली नहीं । अगर किसी को शरण देनी ही है तो जतारा के जंगल में भेज दिया कीजिए ।" भाई रामसेवक रावत, जो आजकल झांसी में कार्य कर रहे हैं, जिनका हाथ बम बनाने में जाता रहा था, कई महीने कुण्डेश्वर में मेरे साथ रहे थे और वहीं से आंदोलन का संचालन भी करते रहते थे । झांसी की पुलिस को इस बात की आशंका हो गयी थी और उसने ओरछा दरबार को इस बारे में लिखा भी था पर महाराज ने उन्हें झांसी जिले के अधिकारियों के सुपुर्द न होने दिया ।

प्रोफेसर राजन अजमेर जेल से भागकर कुण्डेश्वरपहुंचे थे और मेरे पास कई महीने रहे थे । मैंने उनके लिए पचास रुपये महीने का प्रबंध कर दिया था । वह एम.ए. की परीक्षा देने नागपुर गये पर वहां पकड़े गये । उन पर मुकदमा चला और जेल भी हुई । एक अन्य सज्जन तार काटकर शरण लेने पहुंचे थे ।

कठोर यातनाएं

जब मैं 'विशाल भारत' का संपादन करता था, तब तैयब शेख नामक एक क्रांतिकारी को मैंने अपने यहां टाइपिस्ट मुकर्रर कर दिया था । वह एम. एन. राय के खास आदमी थे और जरमनी में रह भी चुके थे । वह बंबई में साम्यवादी संस्थाओं के सेक्रेटरी थे और यरवदा जेल में दो वर्ष तक कठोर यातनाएं भोग चुके थे । बंबई में उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया और वह मुकदमा चलाने के लिए उन्हें कलकत्ता ला रही थी । नागपुर पर उनके सिपाही बदले गये । उन सिपाहियों से तैयब शेख ने दोस्ती कर ली और कलकत्ते पहुंचकर जब लाल बाजार थाने में वह ले जाए जा रहे थे तो उन्होंने सिपाहियों से कहा— ''आप लोग कृपा करके मेरी बेड़ियां खोल दीजिए । मैं यहां से नजदीक 'हिंद जदीद के कार्यालय में पाखाने हो आऊं ।'' सिपाहियों ने बेड़ी खोल दी । तैयब शेख 'हिंद जदीद' ऑफिस में गये और पिछवाड़े से भागकर डेढ़ मील दूर एमहर्स्ट स्ट्रीट में मेरेवाले कमरे में पहुंच गये । मैंने उन्हें आश्चर्य से देखा और कहा, ''डॉक्टर सिंह, तुम यहां कैसे ?'' वह बोले, ''पंडित, मुझे बचाओ । कुत्ते मेरा पीछा कर रहे हैं ।'' उनके हाथ में बेड़ियां पड़ी हुई थीं । मैंने तुरंत ही 'विशाल भारत' के चपरासी रामधन को रेती लाने के लिए भेजा और तैयब शेख को एक छोटी कोठरी में ही ठहरा दिया । रेती आने पर मेरे छोटे भाई रामनारायण ने बेड़ियां काट दी थीं । मैंने उन्हें नये कपड़े पहनाकर रामधन के साथ 'विशाल भारत' कार्यालय की छत पर ठहरने के लिए भेज दिया । प्रातःकाल के अखबारों में बड़ी सनसनीखेज खबर छपी— ''कम्युनिस्ट कार्यकर्ता सिपाहियों को चकमा देकर भाग गया ।'' प्रातःकाल उठकर मैं 'विशाल भारत' ऑफिस गया और शेख को अपने साथ एक बंगाली क्रांतिकारी सज्जन के पास ले गया और भागीरथ कनौडिया से लाकर पचास रुपये उन्हें दे दिये । वह मारवाड़ी सेठ के वेश में फैजाबाद जाकर आचार्य नरेन्द्रदेव के यहां ठहरे थे । आचार्यजी से उनका परिचय मैंने अपने मकान पर कलकत्ते में ही करा दिया था । आचार्यजी ने उन्हें रेलवे गार्ड के साथ बिठलाकर गुजरात भिजवा दिया था । उसके बाद वह पकड़ लिए गये और उन पर मुकदमा भी चला और कई महीने की जेल भी हुई । अगर पुलिस को इस घटना की पूरी-पूरी जानकारी होती तो मुझे भी अवश्य जेल की यात्रा करनी पड़ती ।

कलकत्ते में तैयब शेख मेरे मकान पर ही रहते थे और रात में बड़ी देर से आ पाते थे ।

एक बार कहीं बाहर भोजन करने के बाद उन्हें हैजा हो गया । सौभाग्य से कपूरारिष्ट मेरे पास था और समय पर उसके प्रयोग ने उनकी जान बचा दी । उनके पाखाने और कै साफ करने का काम मुझको ही करना पड़ा था । पूर्ण स्वस्थ होने पर मैंने पचीस रुपये देकर उन्हें बंबई भिजवा दिया था । एम. एन. राय के आगरा आने पर मैंने यह घटना उन्हें सुनायी थी, इस पर उन्होंने एक शब्द भी धन्यवाद का नहीं कहा था ।

कलकत्ते में रामधन को एम. एन. राय एवं उनकी पत्नी एलिन राय से मैंने ही मिलाया था ।

हजारों रुपये का पुरस्कार

कलकत्ते में ही आसामी बाबू दो बार मेरे कमरे पर ठहरे थे । वह क्रांतिकारी पार्टी के मुखिया थे और उनके सिर पर नौ हजार रुपये का पुरस्कार था । वह कटियारी (हरदोई) रियासत में पहलवान के रूप में रहते थे । उन्होंने तरनतारन में एक सिख (सरदार) के यहां भी डाका डाला था । सुभाष बाबू के वह कृपापात्र थे और किदवई साहब भी उन्हें जानते थे । भाई श्रीराम शर्मा ने ही उनको मेरे पास ठहरने के लिए भेज दिया था । वह कई बंगाली क्रांतिकारियों को स्त्री के वेश में कटियारी ले गये थे । कटियारी के राजा साहब रुक्मांगद सिंह पहलवानों के संरक्षक थे । उनके यहां पचास पहलवान आश्रय पा रहे थे । आसामी बाबू बड़े चरित्रवान व्यक्ति थे । एक बार प्रातःकाल पांच बजे जब वह दंड-बैठक लगा रहे थे, तब तीन-चार युवतियों ने उन्हें घेर लिया । वह उन्हें धक्का देकर यह कहते हुए भाग गये कि मैं बदमाशी नहीं करूंगा । आसामी बाबू को लखनऊ में किसी ने जहर दे दिया था । उस समय वह श्री जगन प्रसाद रावत के कमरे में ठहरे थे । उनके असली नाम का किसी को भी ज्ञान न था ।

झांसी के क्रांतिकारी

शहीदों के श्राद्ध का काम लेने के बाद मुझे अनेक क्रांतिकारियों के संपर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानियों के शिरोमणि बाबा पृथ्वीसिंह आजाद से मेरा परिचय सन १९५३ में हुआ था, जब वह स्वयं मेरे पास पधारे थे और चीन जाने का प्रयत्न कर रहे थे । पिछले तीस वर्षों से मैं उनका कृपापात्र बना हुआ हूं । झांसी के क्रांतिकारी भगवानदास माहौर तथा उनके सहयोगी सदाशिवराव से भी मेरा घनिष्ठ परिचय हो गया । माहौरजी की रचनाओं को प्रकाश में लाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ । झांसी के पंडित परमानंदजी के भी निकट संपर्क में मैं आ सका । उनको भेंट किये गये अभिनंदन ग्रंथ का संपादन भी मेरे द्वारा ही हुआ था । लाहौर के क्रांतिकारी भाई परमानंदजी से भी मेरा परिचय था । दीनबंधु एंड्रूज ने उनके बारे में लेख लिखकर उन्हें काला पानी से मुक्त कराया था । वह एंड्रूज से मिलने के लिए शांतिनिकेतन आये थे और वहीं मैंने दर्शन किये थे । भाई परमानंदजी ने मुझसे कहा था— "मैं एक ऋषि से मिलने शांतिनिकेतन आया हूं ।" आगे चलकर श्रीयुत शिव वर्मा, काशीराम, वैशंपायन और सुशीला देवी से भी मेरा परिचय हुआ । मैनपुरी षड्यंत्र केस के क्रांतिकारियों में श्री दम्मीलाल पांडेय फर्रुखाबाद भी मेरे शिष्य रह चुके थे और भाई शंभूदयाल सक्सेना मुझसे मिलने फिरोजाबाद पधारे थे । उन्होंने बताया कि

'फ़िजी में मेरे इक्कीस वर्ष' पुस्तक उन सब को पढ़ने को दी जाती थी और उन सबने उससे बड़ी प्रेरणा ग्रहण की थी । बाबू शंभूदयाल सक्सेना के सहयोगी मथुराप्रसाद मानव, जो इस पुस्तक के लिपिक थे, मेरे पूज्य चाचा थे । इस पुस्तक से लोकनायक जयप्रकाश नारायणजी ने भी प्रेरणा प्राप्त की थी । उनके जीवन-चरित में श्री रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी ने इसका उल्लेख किया है । स्वयं जयप्रकाशजी ने भी फिरोजाबाद के भारती भवन की निरीक्षण पुस्तिका में यह लिखा है । सन १९४४ में मैंने १५-१६ दिनों तक बिहार के छपरा जिले की यात्रा की थी और अमर शहीद फुलैना बाबू के बारे में भाषण दिये थे । उन्हें सुनकर पुलिस ने मेरे नाम वारंट जारी कर दिया था । जब मैं सिवान में ठहरा हुआ था तब एक रात पुलिस ने मुझे खबर दी कि आपके नाम वारंट कट चुका है । इस कारण बचने के लिए कल ही बिहार छोड़ जाइए । बस दूसरे दिन मैं गोरखपुर के लिए रवाना हो गया । ब्रिटिश-शासनकाल में यह नियम था कि एक प्रांत में जारी किया गया वारंट अन्य प्रांत में भी लागू हो जाता था । इसलिए वह वारंट यू. पी. में भी जारी हो गया था । तब मैं गोरखपुर छोड़कर टीकमगढ़ पहुंच गया । वहां मैंने महाराज साहब श्री वीरसिंह जूदेव से कहा— "मुझे भी जेल की हवा खा आने दीजिए ।" महाराज साहब ने राज्य के पुलिस सुपरिंटेंडेंट से मेरे सामने तो कहा— "चौबेजी को झांसी पुलिस के सुपुर्द कर दो ।" पर उन्हें मना कर दिया था । कुछ दिनों बाद महाराज साहब ने कहा— "चौबेजी, जेल से तुम जिंदा नहीं लौटते । वहां तुम्हारे पेड़ों का और जवाकुसुम का इंतजाम कौन करता ? इसलिए मैंने सुपरिंटेंडेंट से मना कर दिया था ।" पुलिस सुपरिंटेंडेंट साहब सेंट स्टीफेंस कॉलेज दिल्ली में दीनबंधु एंड्रूज के शिष्य रह चुके थे और क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी थे और वह मेरे प्रति श्रद्धा भी रखते थे । इस प्रकार मैं जेल जाते-जाते बच गया । ●

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. ई.पू. ३१०२ वर्ष की १३ फरवरी (पौष अमावस्या) से, ख. ४ लाख ३२ हजार वर्ष, २. क. जोन मिल्डेनहाल, लंदन से १५९९ ई. में रवाना हुआ और १६०६ ई. तक भारत में रहा, ख. 'चोर तथा जासूस', ३. क. म्यांमार (बर्मा) की आंग सान सू ची— स्वतंत्रता तथा लोकतंत्र का आंदोलन छेड़ने के कारण नजरबंद, ख. 'फ्रीडम फ्राम फियर', ४. क. ३७१ करोड़ १३ लाख रु., ख. ३१ संबद्ध उप-योजनाएं अधूरी पड़ी हैं, ५. क. करीब ८० हजार करोड़ रु. की वृद्धि, ख. ३७ अरब २४ करोड़ रु. का, ६. क. २६,२२३ अरब डॉलर (१८.२७ प्र.श.), ख. घाटा— २.०२ अरब डॉलर का, ७. पूरे देश के नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता बनाने पर संविधान के अनुच्छेद ४४ पर फिर से गौर करने का केंद्र सरकार से अनुरोध, ८. क. सूफी संत शेख नूरुद्दीन नूरानी की, ख. ५३५ वर्ष पुरानी, ९. क. वारेन बफेट ('फोर्ब्स' पत्रिका के अनुसार), ख. ८५० करोड़ डॉलर (शेयर बाजार से प्राप्त), १०. क. प्रो. रामानुज ताताचार्य, ख. स्व. राजीव गांधी (मरणोपरांत), रा. विश्वबंधु गुप्त, ११. क. भारतीय दल (८ स्वर्ण, १ रजत पदक), ख. चीन ने सभी सातों खिताब जीते, १२. चाय

ज्योतिष : समस्या और समाधान

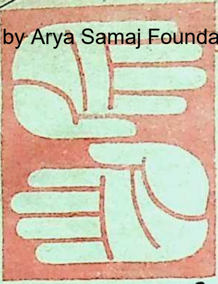

● अजय भार्गव

अरुण कुमार सिन्हा, मनोरा (रायगढ़)

प्रश्न : शादी करना ठीक होगा या संन्यास लेना ?

उत्तर : गृहस्थ आश्रम के बिना संन्यास सफल नहीं होगा ।

प्रेम शंकर शर्मा, फिरोजाबाद

प्रश्न : फिरोजाबाद छोड़कर दिल्ली कब शिफ्ट होंगे ?

उत्तर : अगले वर्ष प्रयास करें, सफलता मिलेगी ।

अशोक कुमार सिंह, गया

प्रश्न : ससुराल के मकान का मुकदमा मेरे पक्ष में कब होगा ?

उत्तर : अभी संभावना कम है ।

स्मिता, देहरादून

प्रश्न : विवाह कब तक ?

उत्तर : १९९६ में ।

जनार्दन शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : आर्थिक समस्या कैसे सुलझायें ?

उत्तर : समस्या सुलझने में समय लगेगा । थोड़ी राहत अगले वर्ष से मिलेगी ।

अनूप वाजपेयी, कानपुर

प्रश्न : नौकरी कब लगेगी, रत्न सुझायें ?

उत्तर : अच्छी नौकरी शीघ्र मिलेगी । मूंगा और पुखराज धारण करें ।

संगीता गुप्ता, जमशेदपुर

प्रश्न : अगस्त के अंत में संतान योग है, पुत्र होगा या पुत्री ?

उत्तर : पुत्र होने की संभावना है ।

अरुण, लुधियाना

प्रश्न : राजनीति में कहां तक जाऊंगा ?

उत्तर : राजनीति में अच्छी सफलता अर्जित होगी लेकिन अभी समय लगेगा ।

भूपाल सिंह, फरीदाबाद

प्रश्न : एल.पी.जी. डिस्ट्रीब्यूटरशिप कब तक शुरू होगी ?

उत्तर : प्रयास करें, सफलता मिल जाएगी।

मंजू, नौएडा

प्रश्न : रोग, हानि, अपमान व स्वार्थियों से बचाव कब तक होगा ?

उत्तर : नवम्बर के बाद ।

शशि, उदयपुर

प्रश्न : विवाह कब तक ? बाधा दूर करने के लिए क्या करें ?

उत्तर : विवाह अगले वर्ष, पुखराज धारण करें ।

अपर्णा मिश्रा, अलीगढ़

प्रश्न : क्या सन १९९६ तक सी.पी.एम.टी. परीक्षा में सफल हो पाऊंगी ?

उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों के बाद सफलता मिल सकती है ।

राकेश शर्मा, नयी दिल्ली

प्रश्न : क्या विदेश में नियुक्ति होगी ? कब तक ?

उत्तर : प्रबल संभावना है और अक्तूबर के बाद योग बनेगा ।

रजनी, बूंदी

प्रश्न : सुख-शांति एवं समस्याओं से मुक्त जीवन कब ?

उत्तर : समस्याओं से वास्तविक मुक्ति दो वर्ष के बाद ही होगी ।

दीपाली रश्मि, ललपनिया बोकारो

प्रश्न : पहली संतान की गर्भ में मृत्यु, अब संतान सुख कब मिलेगा ? कोई रत्न बतायें ?

उत्तर : पन्ना धारण करें और शनिवार का व्रत

करें, इस बार समस्या नहीं आएगी ।

योगेश सिंह, इंदौर

प्रश्न : पुलिस सब-इंस्पेक्टर बनने का योग कब तक ?

उत्तर : बन जाएंगे ।

संजीव कुमार दास, शुभंकरपुर (दरभंगा)

प्रश्न : क्या मैं एक प्रख्यात हस्तरेखाविद् बन सकता हूं ?

उत्तर : फरवरी' ९७ से बुध की सत्रह वर्षीय दशा शुरू होगी, तब मन की अभिलाषा पूरी होगी ।

कपिल परुथी, दिल्ली

प्रश्न : इस वर्ष १९९५ में मेडीकल में सेलेक्शन होगा या नहीं ?

उत्तर : संभावना कम है ।

पंकज, मेरठ

प्रश्न : विदेश यात्रा कब और कैसे होगी ?

उत्तर : अभी विदेश यात्रा में अड़चनें आएंगी ।

कृष्ण कुमार शर्मा, कोटा

प्रश्न : कर्ज से मुक्ति कब, कोई उपाय ?

उत्तर : मार्च' ९५ से शुभ समय प्रारंभ हो रहा है तभी कष्टों से मुक्ति मिलेगी । पन्ना धारण करें ।

रामप्रकाश गुप्ता, ग्वालियर

प्रश्न : धन की प्राप्ति कब तक ?

उत्तर : अगले वर्ष से थोड़ी राहत मिलेगी, लेकिन उसके बाद ढाई वर्ष और लगेंगे, तब ही पूर्ण मुक्ति प्राप्त होगी ।

—'नक्षत्र निकेत'

४०६, ढाका चैम्बर-I २०६८/३८, नाईवाला
करोलबाग, नयी दिल्ली-११०००५

प्रविष्टि—१६१

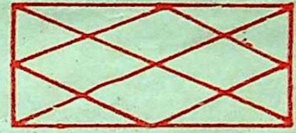

नाम..

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .... **महीना** .... **सन** ....

जन्म-स्थान..

जन्म-समय ....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण ,...

पता..

आपका एक प्रश्न ....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें ....

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि १६१ 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० अगस्त, १९९५

अकबर के सेनापति की डेढ़ हजार पत्नियां थीं !

● अखिलेश मित्तल

बीसवीं शताब्दी का अंत अब बहुत दूर नहीं है । इस शताब्दी ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं । किंतु इस शताब्दी की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि इस पर श्वेत समुदाय के लोगों का वर्चस्व किसी भी अन्य समुदाय की अपेक्षा अधिक कायम रहा । खासकर अमरीकी तथा ब्रिटिश लोग तो एक तरह से इस शताब्दी में सिद्धांत सृजक और निर्णयकर्ता बनकर विश्व के सामने उभरे । इसी श्वेत समुदाय से कार्ल-मार्क्स और सिग्मंड फ्रिअड जैसे मसीहा भी सामने आये, जिन्होंने विश्व को लाभ कम और हानि अधिक पहुंचायीं । इन दोनों ने मनुष्य को मात्र लालची और ऐश-आराम की जिंदगी व्यतीत करना जीवन का लक्ष्य बताया ।

इन्हीं के विचारों के मार्फत विश्व के सामने एक संकट पैदा हो गया । वे लोग जिनके सोचने का दृष्टिकोण अलग था, जो सोचते थे कि भूख और काम से अलग भी जीवन का कुछ महत्व है, दृष्टि पटल से विमुख होने लगे । उन्हें बासी विचारधारा वाले असामयिक महत्त्व का व्यक्ति समझा जाने लगा । यही कारण है कि भारतीय अध्यात्म, जो भूख और कामना से ऊपर उठकर जीवन के विषय में सोचने को बाध्य करता है, को पश्चिम में महत्त्वहीन भी समझा गया । कहने के लिए तो यहां तक कहा गया कि भारत से अधिक कामनापूर्ण जीवन जीनेवाले लोग कहीं अन्यत्र नहीं हैं ।

२१वीं सदी का समृद्ध भारत

जो भी हो इस शताब्दी के अंत के बाद और इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में इस संभावना से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता है कि भारत एक सफल देश बनकर उभरेगा । दुनियाभर में भारत के धनपतियों और संफल भारत-वंशियों का आधिपत्य होगा । जो समृद्धि अभी तक किसी और के पास रही है, वह कल भारत के पास होगी । तमाम अप्रवासी भारतीय एक दिन भारत और विश्व के अन्य भागों में अपना प्रभुत्व साबित करने में अवश्य सफल होंगे । हालांकि भारत और भारतीयों के किसी भी अन्य देश या समुदाय के लोगों के साथ तुलना करना व्यर्थ ही है, क्योंकि भविष्य का सही मूल्यांकन करना किसी के अधिकार में तो है नहीं । कब, कहां, क्या हुआ या हो सकता है, इस पर कुछ कहा तो नहीं जा सकता । किंतु अतीत बताता है कि कामना से पूर्ण कई उदाहरण ऐसे हैं जिनकी मिसाल नहीं है और यदि कहीं है भी तो वह भारत में ही है । ब्रिटेन के महाराज हेनरी (अष्टम) की कामुकता मिटाने के लिए यदि

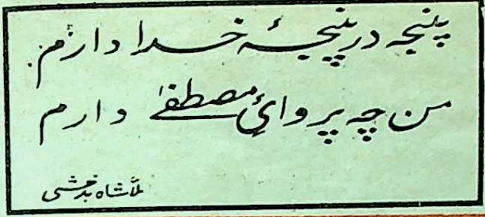

پنجه در پنجهٔ خدا دارم
من چه پروای مصطفیٰ دارم

ملا شاه بدخشی

उनके पास आठ पत्नियां थीं तो भारत में ऐसे कई राजा-महाराजा हुए हैं जिनके पास हेनरी से कई गुना अधिक पत्नियां थीं। यहां तक कि मुगल राज्य में सेनापति के पद पर आसीन मानसिंह के डेढ़ हजार पत्नियां थीं। इस संबंध में मा'सीर-उल-उमरार में कहा गया है :

"ऐसा कहा जाता है कि राजा मानसिंह की १,५०० पत्नियां थी और हर पत्नी से दो या तीन बच्चे भी हुए। उनमें राजा मानसिंह की अपने पिता के जीवनकाल में ही मृत्यु हो गयी। यहां यह बात याद रखने योग्य है कि भारतीय 'वास्तविक पाप' के अपराध बोध से दुखी नहीं होते। भाग्य निर्माण के लिए यहां और भी वस्तुएं प्रचुरता के साथ विद्यमान हैं। अकबर और जहांगीर ने अपने हरम में सैकड़ों औरतों को रखा और फिर भी उनके खजानों में हीरे-जवाहरात की कभी कमी नहीं हुई। इन बादशाहों के मनोरंजन के लिए शिकार का आयोजन होता था। दरबार और कैंप हमेशा कवियों, संगीतकारों, नर्तकों, जादूगरों आदि से भरा रहता था। यह सब मात्र कुछ इसीलिए तो था कि जीवन का कोई भी पल उदास और थका हुआ न लगे। जीवन के हर क्षेत्र में उनकी उत्पादकता का उदाहरण दिया जा सकता है। चाहे तलवार बनाने की बात हो, चित्रकारी की बात हो या कोई अन्य।'

उक्त सभी चीजों की प्रचुरता के अतिरिक्त कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि 'आध्यात्मिक वस्तुओं' की उपेक्षा हुई हो। बादशाह अकबर धर्म की पारंपरिकता से हटते हुए सूफीवाद की तरफ उन्मुख हुए। फतेहपुर सीकरी के फकीर सलीम चिश्ती के तो वे इतने बड़े-भक्त बन गये कि उन्होंने अपनी गर्भवती पत्नी को सलीम के दरबार में बच्चा जनने के लिए भेज दिया। कालांतर में अकबर के इस राजकुमार को 'सलीम' के नाम से ही जाना गया जो बाद में 'सलीम जहांगीर' के नाम से मशहूर हुआ। कहा जाता है कि सलीम, गुफा में रहनेवाले एक हिंदू संत के प्रति काफी निष्ठावान था। वह मीलों चलकर उस संत की गुफा में न सिर्फ जाता था बल्कि घंटों समय भी व्यतीत करता था। अकबर और जहांगीर दोनों ने ही सूफी संतों की बातों को प्रतिष्ठित किया और साथ ही उनकी आज्ञा का पालन भी।

इसी तरह सन १६४० में जहांआरा बेगम और राजकुमार दारा शिकोह ने मुल्ला शाह बदख्शी की देख-रेख में सूफी पंत को स्वीकार किया। इस पंथ की यदि विशेषता समझनी हो तो मुगल साम्राज्य के उन चित्रों का अवलोकन किया जा सकता है जिनमें इन संतों और उनके अनुयायियों को चित्रित किया गया है।

इन चित्रों में मुल्ला शाह बदख्शी को उनके

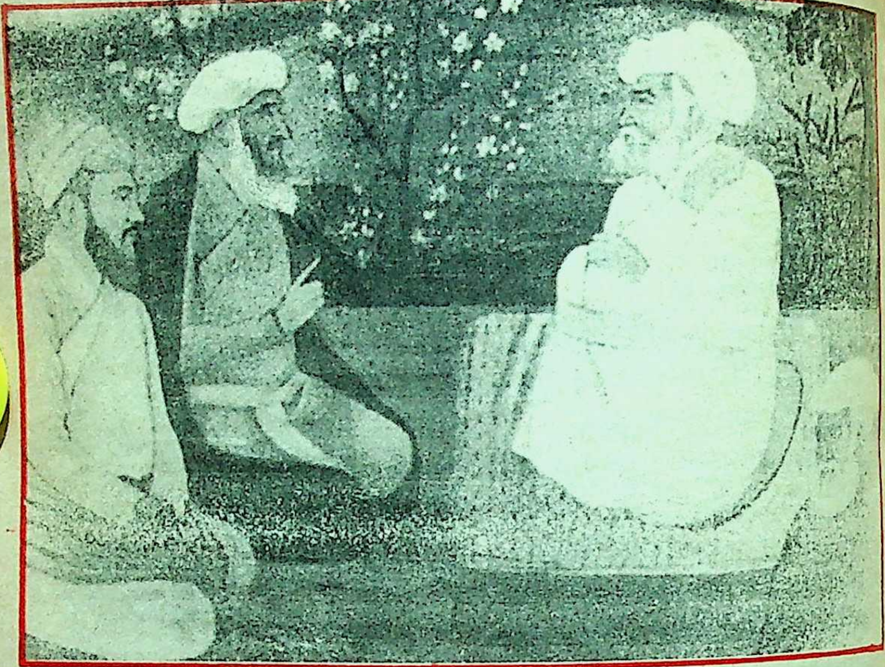

गुरु का शेख, जो सूफीवाद के महान संत थे, के साथ वार्तालाप करते हुए देखा जा सकता है। यह चित्र मुगलकाल के कई खूबसूरत और सराहनीय चित्रों में से एक है जिसके पास खड़े होकर कुछ भावुक क्षणों को गुजारा जा सकता है।

इसी तरह कुछ अन्य चार चित्र और भी हैं जिनमें से तीन में शेख, मियां मीर और उनके प्रमुख शिष्यों को दिखाया गया है जिनके नीचे उनका नाम भी अंकित है। चौथा चित्र इन तीनों की तरह नहीं है। इसमें वह विश्राम की मुद्रा में बैठे हुए हैं, जैसे किसी दूसरे की तलाश है कि वह आये और उनका स्थान ग्रहण करे। एक तसवीर में मुल्लाशाह बदख्शी किसी समस्या पर अपने गुरु से विचार करते हुए नजर आते हैं। वह सावधान हैं और अच्छे वस्त्र धारण कर विराजमान हैं। वस्त्र के नाम पर उनके शरीर पर अंगरखा है जिसकी बांहें कसी हुई हैं। कमर में कमरबंद है। मुल्ला अपने सर पर सफेद पगड़ी बांधे हुए हैं।

उक्त सारे परिधानों को हर उस शिष्य को पहनना पड़ता था जो अपने गुरु के समक्ष उपस्थित होता था।

तमाम चित्रों में एक चित्र सबसे कम वय के एक संत का भी है, जिसकी पगड़ी औरों से अलग ढंग से बंधी हुई है। वह अपनी एड़ी के बल ठीक वैसे ही बैठा हुआ है। जैसे मुल्ला बैठे हैं। उसके हाथ आपस में प्रणाम की मुद्रा में बंधे हुए हैं और यही अपनों से बड़ों के सम्मुख बैठने का तरीका भी माना

ब्रिटेन के महाराज हेनरी (अष्टम) की कामुकता मिटाने के लिए यदि उनके पास आठ पत्नियां थीं तो भारत में ऐसे कई राजा-महाराजा हुए हैं जिनके पास हेनरी से कई गुना अधिक पत्नियां थीं। यहां तक कि मुगल राज्य में सेनापति के पद पर आसीन मानसिंह के डेढ़ हजार पत्नियां थीं।

जाता था। उसकी आंख मियां मीर पर इस तरह टिकी हुई हैं जैसे वह उनके एक-एक हाव-भाव को अपने भीतर उतार लेना चाहता है।

तमाम चित्रों को ध्यान से देखने के बाद प्रतीत होता है कि जो कुछ भी पहनावा-ओढ़ावा था,बोलने-चालने का तौर-तरीका था, वह सब कुछ किसी खास व्यक्ति विशेष के प्रभाव से पैदा हुआ था न कि किसी समुदाय विशेष के प्रभाव से। जहां तक चित्रों में प्रदर्शित अंगरखा का प्रश्न है, तो कुछ विद्वान मानते हैं कि हिंदू-संत अंगरखा को दाहिनी तरफ से बांधते हैं और मुसलिम फकीर बायीं तरफ से। यदि यही सत्य है तब तो चित्रानुसार मियां मीर एक हिंदू थे।

यह भी सत्य है कि मुगल जन्म और आस्था दोनों से मुसलमान थे। राजकुमार दारा शिकोह अपने नाम के बाद 'हनाफी' लगाता था जिसका अर्थ है 'इसलाम का उपासक'। यह शब्द महान नीति निर्धारक 'अबू हनीफा' के नाम के कारण प्रचलित हुआ।

लेकिन बताया यह भी जाता है कि दारा शिकोह अपने नाम के पीछे 'हनीफ' शब्द का प्रयोग शायद इसलिए भी करता था क्योंकि उस समय सूफियों के साथ प्रताड़ना का क्रम भी अनवरत चल रहा था, जैसा कि मंसूर-अल-हलाज के संदर्भ में हुआ। धर्म परिवर्तन के कारण उन्हें कट्टरपंथियों द्वारा कई तरह की प्रताड़नाएं दी गयीं। लेकिन, दारा शिकोह भी अपने जीवनकाल में इन सब चीजों से बच कहां पाया ? उस पर भी धर्म-त्याग और इसलाम विरोधी रवैया अपनाने का दोषारोपण लगाया गया।

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूफियों की स्थिति तथा इस पंथ के पैगंबरों और अनुयायी के संबंध में मुल्ला शाह बदख्शी की बातों को समकालीन बीसवीं शताब्दी में पुनः प्रकाशित किया गया है। वैसे इसकी लिपि 'नास्तालिक लिपि' है जैसा कि बॉक्स में दिखाया गया है, लेकिन इसके विषय बोध के लिए अनुवाद भी उपलब्ध है :

पुंजा दुर पुंजा—ये
खुदा दारूम
मन ये परवाह
मुस्तफा दारूम

अर्थात जैसा कि मैंने अपने हाथों में स्वयं तुम्हें ही उतार लिया है, हे मालिक ! सर्वशक्तिमान ! परमात्मा मैं अन्य नश्वर मनुष्यों की क्या खबर करूं ! मैं उनका ध्यान ही क्यों करूं।

प्रस्तुति : शैलेन्द्र सिंह

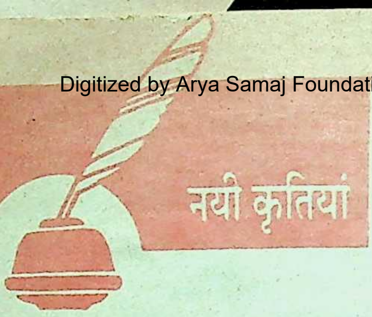

नयी कृतियां

श्री मद्भगवद्गीता : गीता की अनेक टीकाएं, टिप्पणियां और भाष्य छपे हैं। प्रत्येक भाष्यकार गीता के माध्यम से अपने मत और संप्रदाय के पक्ष को पुष्ट करता है। किंतु इस गीता का व्याख्याकार किसी एक मत, किसी एक संप्रदाय की विचारधारा से बंधा हुआ नहीं है अपितु श्रीकृष्ण के अवतार काल में प्रचलित शब्दों का आशय आज की सरल भाषा में स्पष्ट करने का यत्न करता है।

इस पुस्तक के आरंभ में महाभारत की वे मुख्य-मुख्य घटनाएं दी गयी हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि गीता क्यों कही गयी। प्रत्येक अध्याय के आरंभ में उस अध्याय के मुख्य-मुख्य विषयों का परिचय दिया गया है। तत्पश्चात मोटे अक्षरों में संस्कृत के श्लोक तथा उन श्लोकों का सरल हिंदी भावार्थ दिया गया है। अनुवाद की जगह भावार्थ देने का कारण व्याख्याकार ने पुस्तक की भूमिका में इस प्रकार बताया है—

'गीता जिस युग में कही गयी थी, उस समय शब्दों के जो अर्थ प्रचलित थे, वे शब्द आज अन्य अर्थों के लिए प्रयोग में लाये जा रहे हैं। उदाहरणतः आज 'पुरुष' शब्द 'नर' के अर्थ में प्रचलित है। प्राचीन काल में पुरुष का अर्थ चेतन तत्व था, परमात्मा था। पुरुषोत्तम, पुरुषार्थ आदि शब्द इसी पुरुष शब्द के विस्तार में रचे गये थे। आज 'काम' शब्द 'सैक्स' तक सीमित रह गया है, उस युग में 'काम' सभी प्रकार की कामनाओं का प्रतिनिधित्व करता था।' सकाम, निष्काम आदि शब्द इसी शब्द परिवार के अंतर्गत आते थे। गीता में धर्म शब्द का प्रयोग संप्रदाय या मजहब के अर्थ में नहीं हुआ है बल्कि व्यक्ति के स्वभाव, प्रकृति, धारण करने योग्य नियम और कर्त्तव्य के रूप में हुआ है। यह बात तीसरे अध्याय के पैंतीसवें श्लोक में विस्तार से कही गयी है।

इसी प्रकार माया, ब्रह्म, नित्य, अनित्य, विकार, अविकार, सत्य, असत्य, योग, तप, यज्ञ, गुण, निर्गुण, द्वैत, अद्वैत, त्रैत, उत्तरायण, दक्षिणायन आदि बीसियों शब्द हैं, जिनको गीत के अनुवादों में ज्यों का त्यों रख दिया जाता है, किंतु इस व्याख्या में उन शब्दों का तात्पर्य सरल शब्दों में बताया गया है।

भावार्थ सहित दयानंद वर्मा की यह व्याख्या पढ़ते हुए अनुभव होता है कि जिन आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर हम लंबे समय से खोज रहे थे, वे उत्तर इस व्याख्या द्वारा हमें अनायास मिलते जा रहे हैं। भाषा में कहीं पांडित्य प्रदर्शन नहीं हुआ है, कहीं उबाऊपन नहीं है।

व्याख्याकार : दयानंद वर्मा; प्रकाशक : माइंड एं बॉडी रिसर्च सेंटर, डब्लू-२१। ग्रेटर कैलाश पार्ट-। नयी दिल्ली; मूल्य : दो सौ पिचानवे रुपये।

डॉ. जीवनप्रकाश जोशी की दो पुस्तकें

डॉ. जीवनप्रकाश जोशी समकालीन हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट नाम है—विशिष्ट इसीलिए कि वे स्वयं अच्छे गीतकार, कवि और कविता-समीक्षक हैं और साथ में वे

अव्यावसायिक पत्रिका 'संधान' के संस्थापक-प्रकाशक हैं। आजकल जब हिंदी में साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं की कमी होती जा रही है, तब 'संधान' ऐसी सुरुचिपूर्ण साहित्यिक पत्रिका का हिंदी पाठकों में निःशुल्क वितरण हिंदी साहित्य जगत में एक विचित्र घटना है।

'जीवन यात्रा में' : डॉ. जीवनप्रकाश जोशी का नया कविता-संग्रह है, जिसमें उनकी ३३५ कविताएं दर्ज की गयी हैं। उन्होंने अपनी जीवनयात्रा में संघर्ष-संशय और विडंबना-विरोधाभास की स्थितियों में जो 'विशेष रमणीय-स्मरणीय' पाया वह स्वयंमेव ही उनकी कविताओं में आ गया है। इस यात्रा में वे अपने घर की नारी को—श्रीमती को— नहीं भूले हैं। जैसा कि यह कहा जाता है कि हरेक सफल व्यक्ति के पीछे कोई नारी होती है, डॉ. जीवनप्रकाश जोशी की सफलता के पीछे उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उषा जोशी हैं। उन्हीं के शब्दों में—सबसे अलग/अकेले हुए/मुझ बेघर को/तुमने जिस घर में बसाया, उसमें/उसकी तुम मात्र गृहणी ही नहीं/चलती-फिरती, कितना कुछ करती-धरती/अकृतिवान आत्मा हो।

आधुनिक मानक गीतकाव्य : डॉ. जीवनप्रकाश जोशी की आलोचनात्मक कृति है, जिसमें उन्होंने सर्वश्री जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और श्रीमती महादेवी वर्मा के गीत-काव्य पर दृष्टिपात किया है। लेखक का मानना है कि श्रेष्ठ गीत कविता— कामिनी का श्रीमुख होता है। वह आदिम भाव का प्रभावशाली रागमय रूप है। उसमें 'मैं' का नहीं, बल्कि मन का जन से, व्यक्ति का समाज से स्वच्छंद सीधा संवाद होता है।

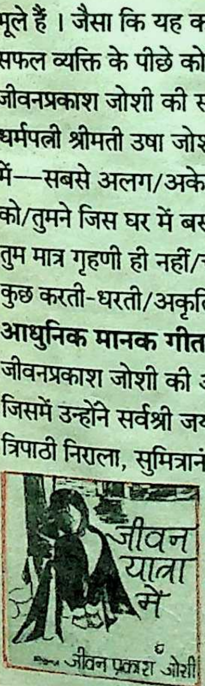

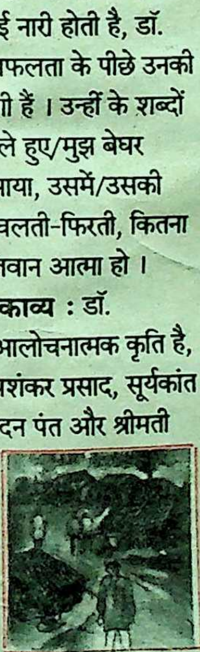

जहां इस पुस्तक में छायावादी श्रेष्ठ गीतकारों— प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी— की मानक गीतोपलब्धि पर प्रकाश डाला गया है, वहां इसके प्राख्यापन में अंचल, नीरज, बालस्वरूप राही, ठाकुर प्रसाद सिंह आदि समकालीन गीतकारों की रचनाओं पर भी विचार किया गया है। यह पुस्तक हिंदी गीत का महोत्सव है।

कवि— डॉ. जीवनप्रकाश जोशी, प्रकाशक : स्वयं कवि, द्वारा संधान, हिंदुस्तान टाइम्स अपार्टमेंट्स, मयूर विहार, नयी दिल्ली-११००९१।

डॉ. मोतीलाल जोतवाणी

बस्ती : बस्ती के प्रांगण में है झुग्गी-झोपड़ियों में रहनेवाले प्राणी। उनका जीवनयापन अपनी ही तरह की दारुण-गाथा है। महानगर की बड़ी-बड़ी इमारतें, वैभव में सरपट भागती जिंदगी और झुग्गियों के छोटे-छोटे दायरे। दो परिवेशों में कितना बड़ा अंतराल है। छोटी-छोटी चीजों के लिए तरसना, अज्ञानता और अशिक्षा के घुप्प अंधेरे में रेंगना—सब मिलाकर एक वीभत्स दृश्य साकार होता है उनकी नियति का। इसी नियति को लेखक ने अपनी कृति में समेटा है और बाध्य किया है दो महाद्वीपों के जीवन के अंतराल पर सोचने को।

लेखक : धर्मपाल; प्रकाशक : सुयोग्य प्रकाशन, डब्लू-११६, ग्रेटर कैलाश, पार्ट-।, नयी दिल्ली; मूल्य : पचास रुपये ।

सामुदायिकता का आधार : एक अनुशीलन : व्यक्ति एक ही समय पर निजी भी है और सार्वजनिक भी । निजी होकर वह स्वहित-साधन करता है और सार्वजनिक होकर परमार्थ की ओर अग्रसर होता है । लेकिन अधिकाधिक अवसरों पर उसके दोनों पक्षों में सामंजस्य नहीं रहता । वह या तो अपने को इतना स्वतंत्र मानने लगता है कि उसकी नाक के आगे का संसार कोई अर्थ नहीं रखता या फिर वह इतना सार्वजनिक हो जाता है कि उसके अपने आसपास की दुनिया नष्ट होकर रह जाती है । इस पुस्तक में प्रसिद्ध समाजशास्त्री डॉ. रामाश्रय राय ने इस मूलभूत प्रश्न से जूझने का सफल प्रयास किया है कि व्यक्ति के अस्तित्व के निजी और सार्वजनिक पक्षों में कैसे सामंजस्य स्थापित हो । ऐसा उन्होंने इस बात को पाश्चात्य और भारतीय परिप्रेक्ष्यों में रखकर किया है ।

पुस्तक के.के. बिड़ला फाउंडेशन के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित हुई है ।

लेखक : डॉ. रामाश्रय राय; प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली; मूल्य : १२५ रुपये ।

विश्व के धर्म एवं कौमी एकता : यह एक अनोखी पुस्तक है और एक अनोखे व्यक्ति द्वारा लिखी गयी है । इसके लेखक कानपुर में बूट पालिश करते थे और उन्होंने अपनी उम्र के साठ साल तक आते-आते जेब में आठ हजार डॉलर रखकर विश्व के छत्तीस देशों का भ्रमण किया । अपनी जीवन-यात्रा के दौरान उन्हें एक सत्य की अनुभूति हुई कि विश्व के सारे धर्मों का उद्देश्य मनुष्य को बेहतर बनाना है और जो लोग धर्म के नाम पर लड़ते हैं, वे अपने धर्म की भी सही पहचान नहीं रखते । वे चण्डीदास की इस उक्ति में विश्वास करते हैं— **"सबार उपरि मानुष सत्य, ताहार उपरि कुछ नाइ ।"**

पुस्तक में वैदिक, हिंदू, यहूदी, बौद्ध, जैन, पारसी, कनफ्यूशस, ताओ, शिन्टो, ईसाई और इसलाम धर्मों पर चर्चा की गयी है । अंत में यह भी बताया गया है कि वैज्ञानिक धर्म क्या है ?

लेखक : ईश्वरचन्द्र राही; प्रकाशक : प्रकाश बुक डिपो, बरेली; मूल्य : पचीस रुपये ।

महाप्रज्ञ जीवन-दर्शन : अभी हाल ही में जैन धर्म आचार्य महाप्रज्ञ का पदाभिषेक हुआ । उस अवसर पर प्रकाशित इस ग्रंथ में बताया गया है कि सुदूर अतीत के मुनि नथमल वर्तमान में आचार्य महाप्रज्ञ कैसे बने । इस यात्रा में उनके व्यक्तित्व का गरिमामय रूप उभरकर सामने आया है । उन्होंने स्वयं प्रतिबिंब, प्रतिरूप और प्रतिध्वनि की दुनिया से ऊपर उठकर साधारण जन-समुदाय को बिंब, रूप और ध्वनि की मौलिकता से परिचय कराने का प्रयत्न किया है ।

महाप्रज्ञ ने भगवान महावीर के अनुसार जो अभय नहीं है, वह अहिंसक नहीं हो सकता । अभय अहिंसा की पहली शर्त है । 'कायर आदमी अभय नहीं है, इसीलिए वह अहिंसक नहीं हो सकता ।'

पुस्तक में आचार्य महाप्रज्ञ का जीवन-दर्शन सरस, सुबोध शैली में वर्णित है ।

लेखक : मुनि धनंजयकुमार; प्रकाशक : आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, चूरू; मूल्य : पचास रुपये ।

जौहर प्रथा कैसे और क्यों शुरू हुई ?

● योगेश

आग का जलता हुआ गोला सनसनाता हुआ आया और हाथी से जा टकराया । गोले का टकराना था कि हाथी हड़बड़ाकर बिगड़ गया और रणक्षेत्र में अपने ही सैनिकों को कुचलते हुए भाग निकला । सैनिकों ने देखा कि हाथी पर सवार उनका राजा मैदान छोड़कर भाग रहा है तो वे भी भाग खड़े हुए और इस तरह जीत के निकट पहुंची बाजी हार गया सिंध का राजा दाहिर । रणक्षेत्र में उसके सामने था मुहम्मद इब्न कासिम । मुहम्मद इब्न कासिम यानी पहला मुसलमान सिपहसालार, जिसने भारत यानी सिंध-पंजाब पर पहले पहल हमला बोला था ।

मुहम्मद इब्न कासिम ने जब सिंध के हिंदू राजा दाहिर पर हमला बोला तो वह भी मैदान में आ डटा था । संयोगवश हाथी पर लगे इस गोले से उसे पीछे हटना पड़ा लेकिन वह दुश्मन के हाथों से बच नहीं पाया । उसने बहुत बहादुरी और दिलेरी दिखायी पर अंततः लड़ाई के मैदान में खेत रहा ।

राजा दाहिर के मरने के बाद मुहम्मद इब्न कासिम ने उसकी राजधानी को घेर लिया । किला मजबूत था जो दुश्मन से लोहा लेता रहा । राजा दाहिर की पत्नी भी दाहिर की भांति साहसी और बहादुर थी । वह बराबर अपने किले की रक्षा करती रही । लेकिन जब किले का दाना-पानी चुकने लगा और बचने की कोई उम्मीद नजर नहीं आयी तो रानी ने निर्णय लिया कि दुश्मन के आगे सिर झुकाने से बेहतर है कि लड़ते-लड़ते मरा जाए । लिहाजा उसने निर्देश दिया और उनके अनुसार तैयारियां की गयीं । किले की महिलाओं ने दुश्मन के हाथों अपनी इज्जत-आबरु गंवाने की बजाय जौहर यानी आत्मदाह का रास्ता चुना । किले में जगह-जगह चिताएं जलायी गयीं जिनमें महिलाओं ने हंसते-हंसते प्राणोत्सर्ग किया । महिलाओं के प्राणोत्सर्ग के उपरांत समस्त पुरुष-वर्ग विधि-विधानपूर्वक अपने इष्ट देवी-देवता की पूजा-अर्चना करके हाथों में नंगी तलवार लिये किले से बाहर निकल आया साका करने । मृत्यु तो निश्चित थी ही फिर भी बहादुरी से लड़े और दुश्मनों को मारते हुए वीरगति को प्राप्त हुए ।

प्रथा कैसे शुरू हुई !

जौहर की प्रथा कैसे शुरू हुई ? इस संबंध में इतिहास के पन्नों पर जो उल्लेख मिलता है वह यह है कि शत्रुओं के हाथों अपवित्र होने से बचने के लिए राजपूताना महिलाओं ने अपने प्राणों की आहूति दी । युद्ध के अखिरी क्षणों में

इधर जैसे ही यह आत्मघाती दस्ता रणभूमि के लिए कूच करता, उधर राजपूताना महिलाएं शत्रुओं के हाथों से बचने के लिए चिताओं पर कूद जातीं तथा मान-मर्यादा की रक्षा के लिए चिताओं में अपने प्राणों की आहूति दे देती थीं । इतिहास में इस बात का उल्लेख कई बार मिल जाता है कि शत्रुओं के हाथों अपवित्र होने से बचने के लिए महिलाओं ने जौहर किया ।

जब सारे राजपूत सैनिक खेत रहे होते थे तब उस शहर के युवक आत्मघाती दस्ता बनाते । अपने आपको एक-दूसरे के वस्त्रों की छोर से बांधते हुए वे रणक्षेत्र के लिए इस बात का दृढ़ निश्चय करते हुए रवाना होते कि अब शत्रुओं को अधिक से अधिक तबाह करते हुए अपने प्राणोत्सर्ग करना है ।

इधर जैसे ही यह आत्मघाती दस्ता रणभूमि के लिए कूच करता, उधर राजपूताना महिलाएं शत्रुओं के हाथों से बचने के लिए चिताओं पर कूद जातीं तथा मान-मर्यादा की रक्षा के लिए चिताओं में अपने प्राणों की आहूति दे देती थीं । इतिहास में इस बात का उल्लेख कई बार मिल जाता है कि शत्रुओं के हाथों अपवित्र होने से बचने के लिए महिलाओं ने जौहर किया ।

हिंदू महिलाओं द्वारा जौहर करने की और पुरुषों द्वारा साका यानी केसरिया बाना पहनकर आत्मबलिदान करने की यह संभवतः पहली घटना थी । लेकिन बाद में इस तरह जौहर करने की घटनाएं तो कई बार घटी हैं जिनके विवरण इतिहास में दर्ज हैं ।

क्षत्रिय राजपूत-राजपूतानियों की इन दोनों जातीय विलक्षणताओं की घटनाओं के साथ एक और विलक्षण घटना इस प्रसंग के साथ जुड़ी हुई है जो हिंदू क्षत्राणी की बुद्धि संपन्नता और चातुर्य की अद्भुत शौर्य-गाथा कहती है । यह प्रसंग भी दुश्मन के शिकंजे में फंसे होने के बावजूद समझते-बूझते आत्म-बलिदान से कम नहीं है ।

राजा दाहिर के किले पर कब्जा करते समय कासिम को राजा दाहिर की दो नौजवान राजकुमारियां हाथ लग गयीं । वे दोनों शायद समय न मिल पाने के कारण आत्मदाह न कर पायी होंगी । कासिम ने उन दोनों को देखा तो देखता ही रह गया । एक तो सुंदर नवयुवतियां, दूसरे उच्चवंश की राजकुमारियां, उसे लगा कि अपने खलीफा को भेंट करने के लिए इन दोनों राजकुमारियों से बढ़कर और कोई दूसरी सौगात नहीं होगी । अतः उसने किले में मिले धन-दौलत के साथ दोनों राजकुमारियां खलीफा की सेवा में भेज दीं ।

खलीफा ने जब उन राजकुमारियों को देखा तो वह भी उनकी सुंदरता पर मुग्ध हुए बिना नहीं रहा । खलीफा ने बड़ी राजकुमारी को पसंद कर अपनी अंकशायिनी बना लेना चाहा तो राजकुमारी फूट-फूटकर रो पड़ी । खलीफा ने रोने का कारण पूछा । राजकुमारी ने कहा, मैं इस योग्य नहीं हूं कि आप जैसे खलीफा का

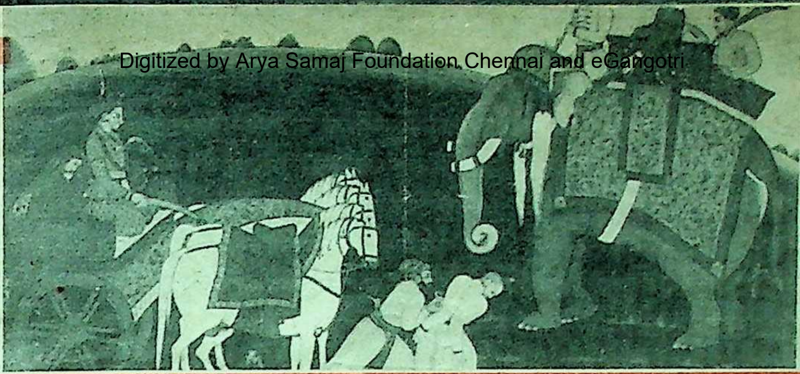

साथ पा सकूं क्योंकि कासिम ने हमें पहले ही अपवित्र कर दिया है ।

राजकुमारी की यह बात सुनकर खलीफा आगबबूला हो उठा । कासिम हालांकि उसका सबसे वफादार और बहादुर सिपहसालार था लेकिन उसकी यह हरकत उसकी सीमा से बाहर थी । उसने फौरन हुक्म दिया कि कासिम को जिंदा या मुरदा उसके सामने जल्द से जल्द हाजिर किया जाए ।

खलीफा के हुक्म का पालन हुआ और कासिम की लाश खलीफा के सामने हाजिर की गयी । कासिम की लाश जब राजकुमारी को दिखायी गयी तो राजकुमारी की आंखें खुशी से चमक उठीं । उसने कहा, 'मैंने अपने मां-बाप के हत्यारे और अपने राज्य के दुश्मन से बदला ले लिया । कासिम बिलकुल निर्दोष था, उसने हमें छुआ तक नहीं था लेकिन मैंने उसके बारे में जो कहा वह उससे बदला लेने के लिए कहा और मैंने बदला ले लिया ।'

—सी.बी. ६६ डी, जी-८ एरिया
राजौरी गार्डन, नयी दिल्ली-११००६२

अदृश्य होनेवाली मछली

वैज्ञानिकों ने एक ऐसी मछली का पता लगाया है जो अदृश्य होने की अद्‌भुत क्षमता रखती है । इस मछली का नाम है टेट्रा और इसकी खोज फ्रांस के जीव वैज्ञानिक डॉ. गैस्टन मोरो ने की है । लगभग तीन इंच लंबी टेट्रा मछली का रंग काला होता है । इस रंग के कारण यह अन्य मछलियों के बीच आसानी से पहचानी जा सकती है । यह मछली अपनी अदृश्य होने की क्षमता का उपयोग अपने शत्रुओं से बचाव के लिए करती है । जब भी इसे खतरा महसूस होता है, तब शरीर परिवर्तित होकर पारदर्शक बन जाता है और इसके तुरंत बाद यह मछली पूरी तरह गायब हो जाती है । टेट्रा मछली एक घंटे से भी अधिक समय तक विलुप्त रह सकती है । डॉ. गैस्टन मोरो के अनुसार खतरा सामने आने पर इसके शरीर से एक प्रकार का रासायनिक पदार्थ निकलता है जो अदृश्य होने में इस मछली की सहायता करता है । अभी तक इस पदार्थ को अलग करने में सफलता नहीं मिली है क्योंकि यह बहुत कम मात्रा में निकलता है । डॉ. मोरो का अनुमान है कि इस पदार्थ की सहायता से एक ऐसा रसायन तैयार किया जा सकता है जिससे मनुष्य भी कुछ समय के लिए अदृश्य हो सकेगा ।

—संजय शर्मा

व्यंग्य

सुरेश—"उस हैंडपंप का पानी इतना प्रदूषित था कि दो दिन तक मेरे पेट में दर्द होता रहा ।"
मनसुख—"हां यार, उसका पानी मैंने कार में डाला था, तो मुझे उसके 'रेडिएटर' की मरम्मत करवानी पड़ी ।"

●

जुगल—"मैंने अपनी बीवी का फोटो अपने बटुए में लगा रखा है ।"
प्रदीप—"तभी...तुम्हारा बटुआ हमेशा खाली रहता है ।"

●

पागलों में बहस छिड़ गयी कि, "सबसे बड़ा पागल कौन है ?" काफी हो-हल्ले के बाद तय हुआ कि, "सबसे बड़ा पागल डॉक्टर है ।" कुछ ने शंका व्यक्त की "डॉक्टर ही क्यों ?" "अरे अच्छा-भला पागलों के बीच रह रहा है ।"

●

दिलीप—"मैं शादी इसलिए नहीं करना चाहता कि मुझे औरतों से डर लगता है ।"
प्रेमिका—"मुझसे शादी कर लो । फिर तुम्हें सिर्फ मुझसे डर लगेगा ।"

एक शख्स का ऑपरेशन करके उसे बंदर का दिल लगा दिया गया । कुछ सप्ताह बाद डॉक्टर ने फोन करके उसकी बीवी से मरीज के बारे में पूछा—"कोई परेशानी तो नहीं ?"
"जी नहीं", बीवी ने खुश होकर कहा—"वे दिनभर छत पर बैठे पीठ खुजाते रहते हैं ।"

●

लड़की की मां—"आपने शास्त्री गायन में निपुण मेरी बेटी को ही क्यों पसंद किया ? क्या आपको गायन बहुत पसंद है ?"
लड़के की मां—"ऐसी बात नहीं है बहन ! दरअसल हम पड़ोसियों से अपना मकान खाली करवाना चाहते हैं ।"

—सुभाष बुड़ावनवाला

"आपने मेरा नया कहानी-संग्रह पढ़ा है ? आजकल सभी जगह उसकी ही चर्चा है ।"
"माफ कीजिए, मैंने नहीं पढ़ा है । असल में, मैं एक संपादक हूं और मुझे कुछ भी पढ़ने का वक्त ही नहीं मिलता ।"

●

स्वाभिमान—"एक ऐसा गुण, जो शादी न होने तक हर पुरुष के पास रहता है ।"

●

एक प्रश्न—"शादी के बाद सुख की नींद कौन सोता है, पति या पत्नी ?"
एक उत्तर—"दोनों ही । यह बात दूसरी है कि पत्नी अपने घर में सोती है और पति दफ्तर में ।"

—राजकुमार जैन

तरंग

ढाई आखर बनाम

गणितज्ञ है
प्रेम को
इस तरह से
रहा है बांच
दो दशमलव पांच

ओर

हमारा—
राष्ट्रीय पक्षी मोर है ।
गैर विपक्षी सांप—
दूसरी ओर है ।

अकारण

एक कुत्ता—
भौंकने लगा अकारण।
मैंने कहा—
क्यों झाड़ता है रे भाषण ।।

—गफूर 'स्नेही'

सबक

सुनाते हैं हम सबको
गमें दिल की दास्तां,
कोई सबक ले शायद
हमारी गलतियों से ।

मकसद

ना है मंजिल कोई
ना है कोई मकसद,
बेकार-सी जिंदगी को
बस जीये जा रहा हूं ।

दिल

नहीं आती है खुशबू
ठहरे हुए पानी से,
टूटा हुआ दिल किसी को
खुशियां दे नहीं सकता ।

घूंघट

पहली ही मुलाकात में
ऐसा क्या पाया मुझमें,
हसरत से देखा उसने
घूंघट उठा-उठाकर ।

वतन

खुशहाल है मेरा वतन
आता नहीं मुझको यकीं,
मैंने देखा है गरीबों को
बेचते हुएं खून अपना ।

—एसे. के. [illegible]यल

078833

समस्या-पूर्ति— १९१

रसधार

प्रथम पुरस्कार

थक-थक के चूर हुए दोनों ये पांव
दूर-दूर दिखे नहीं अपना घर-गांव
डाल-डाल दुर्दिन ने डाली झकझोर
कांप-कांप जाती है साहस की डोर
सिर पर है धूप तपे जैसे अंगार
मन चाहे फिर भी मैं पा लूं रसधार

— शशांक दीक्षित 'सोम'

सी-१,२४५-इन्द्रा नगर
कानपुर—२०८०२६ (उ.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

उर्वरा धरित्री, निस्सीम व्योम
बूंद-बूंद टपक रहा सोम
उसकी महिमा का
नहीं पारावार
ऊपर से वज्र काष्ठ
भीतर मृदु रसधार

—रजनी सहाय

काली बाजार
अररिया (बिहार)-८५४३११

तृतीय पुरस्कार

जहां आदमी का
प्रयास और पसीना है
वहां हर वस्तु है सरल-सुलभ
और इन हाथों से ही होंगे
अपने सपने साकार
निरंतर बहती रहेगी रसधार

—राजा चौरसिया

उमरियापान
जिला—जबलपुर (म.प्र.)
— ४८३३३२

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८/२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित